अवधी बृहत् लोकोक्ति कोश



कमला शुक्ल
संकलनकर्ता

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान

कृति के विषय में !

ाषा लगभग एक हजार वर्ष पुरानी
बहुसंख्यकता की दृष्टि से यह हिन्दी
ों में सर्वोपरि है। उत्तर प्रदेश,
ा, छत्तीसगढ़ और बिहार के लगभग
जिलों में इसके विभिन्न रूप लोक
हैं। अवधी भाषी अपने वार्तालाप में
कोक्तियों, मुहावरों और मसलों का
रते हैं, इसलिए अवधी में लोकोक्तियों
ट भण्डार है। किसी भी जनपदीय
भाषा में जब साहित्यिकता और
ता का सन्निवेश हो जाता है तो
त उद्गीथ बन जाती है और
द दोनों एकाकार हो जाते हैं अवधी में
साहित्य है और बेहतर लोक वाङ्मय
में लगभग पाँच लाख की शब्दसंपदा
अनुमानतः पचास हजार लोकोक्तियां
वरे हैं।

ोक्तियों को लेखिका ने बड़े श्रम के
कलित किया है। कई वर्षों का सर्वेक्षण
है इसमें। इन लोकोक्तियों का
है, सम्पादक का अपना
परिवेश अर्थात् पूर्वी अवधी के
पश्चिमी, मध्यअवधी; बैसवारी,
छत्तीसगढ़ी और मुजफ्फरपुरी अवधी
रूपान्तर मिल सकता है किंतु, मूल
जैसा ही सिद्ध होगा।

ा में अकारादिक्रम से लोकोक्तियों,
र्थों और प्रयोगों को स्थान मिला है।

होगा कि अवधी क्षेत्र में किया गया
ढंग का प्रथम प्रयास है।

ति के विषय में !

लगभग एक हजार वर्ष पुरानी
हुसंख्यकता की दृष्टि से यह हिन्दी
में सर्वोपरि है। उत्तर प्रदेश,
छत्तीसगढ़ और बिहार के लगभग
जिलों में इसके विभिन्न रूप लोक
। अवधी भाषी अपने वार्तालाप में
ोक्तियों, मुहावरों और मसलों का
ते हैं, इसलिए अवधी में लोकोक्तियों
भण्डार है। किसी भी जनपदीय
ाषा में जब साहित्यिकता और
ा का सन्निवेश हो जाता है तो
उद्गीथ बन जाती है और
द दोनों एकाकार हो जाते हैं अवधी में
साहित्य है और बेहतर लोक वाङ्मय
में लगभग पाँच लाख की शब्दसंपदा
अनुमानतः पचास हजार लोकोक्तियां
वरे हैं।

कोक्तियों को लेखिका ने बड़े श्रम के
कलित किया है। कई वर्षों का सर्वेक्षण
त है इसमें। इन लोकोक्तियों का
है, सम्पादक का अपना
परिवेश अर्थात् पूर्वी अवधी के
पश्चिमी, मध्यअवधी; बैसवारी,
छत्तीसगढ़ी और मुजफ्फरपुरी अवधी
रूपान्तर मिल सकता है किंतु, मूल
जैसा ही सिद्ध होगा।

श में अकारादिक्रम से लोकोक्तियों,
र्थों और प्रयोगों को स्थान मिला है।

न होगा कि अवधी क्षेत्र में किया गया
ने ढंग का प्रथम प्रयास है।

हिन्दी समिति ग्रंथांक – २८६

अवधी बृहत् लोकोक्ति कोश

संकलनकर्ता
कमला शुक्ल



उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान
(हिन्दी समिति प्रभाग)
राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन हिन्दी भवन
६, महात्मा गांधी मार्ग, हजरतगंज
लखनऊ २२६००१

प्रकाशक :
डॉ. सच्चिदानन्द पाठक
निदेशक
उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ

प्रथम संस्करण : २००२

प्रतियाँ : ११००

मूल्य : ३००.००

मुद्रक : प्रकाश पैकेजर्स
२५७–गोलागंज, लखनऊ–२२६०१८

प्रकाशकीय

'लोकोक्तियाँ' आदिकाल से सतत प्रवहमान मानवीय संस्कृति का विचार, स्रोत्र हैं, जिसकी जीवन में अत्यधिक उपयोगिता है। लोकोक्तियाँ, जिन्हें 'कहावत' या 'मसल' कहा जाता है, लोकव्यवहार तक व्याप्त होती हैं। अपने शाब्दिक अर्थ–लोक + उक्ति अर्थात् सामान्य जन द्वारा कही गयी उक्ति के अनुसार लोकोक्तियों का प्रयोग लोक व्यवहार एवं लोक प्रज्ञा तक होता है।

लोकोक्तियों द्वारा देश–विशेष की जातीय संस्कृति के प्राचीन से प्राचीन स्वरूप का संज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। इस रूप में वे हमारी अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर हैं। इसलिए अतीत के चित्तवृत्ति–बोध की दृष्टि से लोकोक्तियाँ परम संग्रहणीय एवं संरक्षणीय हैं। साहित्यिक दृष्टि से लोकोक्तियाँ प्रायः लाक्षणिक अर्थों से परिपूर्ण होती हैं। लक्षणा के सहयोग के बिना उनका सही अर्थ समझ में नहीं आता।

'अवधी' कई प्रान्तों में बोली जाने वाली भाषा है। अवधी जनमानस की सहज अभिव्यक्ति का माध्यम है। इसमें प्राचीन काल से ही साहित्य संरचना होती चली आ रही है। गोस्वामी तुलसीदास कृत 'रामचरित मानस' अवधी भाषा का ऐसा महाकाव्य है, जिसके द्वारा मर्यादापुरुषोत्तम श्री राम जन–जन के हृदय में विराजमान हो गये हैं।

अवधी साहित्य और लोक साहित्य में लोकोक्तियों का प्रयोग बहुलता में हुआ है। 'अवधी बृहत् लोकोक्ति कोश' की विदुषी लेखिका श्रीमती कमला शुक्ल ने अत्यधिक अध्यवसाय, लगन, निष्ठा और समर्पण भाव के द्वारा इस ग्रंथ का निष्पादन किया है। लोकोक्तियों के अर्थ को समझने के लिए जहाँ जिस प्रकार की मनोभूमि की अपेक्षा होती है वहाँ उसी प्रकार की टिप्पणी (सूत्ररूप में) देकर उसका मर्मोद्घाटन किया गया है। इससे कोश सहज और सम्प्रेषणीय बना गया है। इस प्रकार यह कोश एक ओर तो अवधी साहित्य में प्रयुक्त लोकोक्तियों के अर्थ का उद्घाटन करेगा तो दूसरी ओर अवधी लोक साहित्य के क्षेत्र में भी एक आधार ग्रंथ के रूप में प्रयुक्त हो सकेगा। यह अपने प्रकार का एक अनूठा ग्रंथ है।

'अवधी बृहत् लोकोक्ति कोश' की संकलनकर्ता श्रीमती कमला शुक्ल के प्रति उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान कृतज्ञ है। सामग्री संग्रह से लेकर कोश पद्धति के अनुसार उसे व्यवस्थित रूप देने तथा लोकोक्तियों को अर्थोद्घाटन करने में जिस श्रम और विदग्धता का परिचय उन्होंने दिया है, वह अत्यन्त सराहनीय है।

ग्रंथ सम्पादन एवं प्रूफ पठन में सहयोग देने वाले डॉ. कमलाशंकर त्रिपाठी, रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, जयनारायण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लखनऊ के प्रति भी संस्थान आभारी है। उनके परिश्रम के परिणामस्वरूप ही हिन्दी समिति ग्रंथमाला के २८६ वें पुष्प के रूप में इस 'अवधी बृहत् लोकोक्ति कोश' का प्रकाशन हो सका।

इस शुभेच्छा के साथ कि 'अवधी बृहत् लोकोक्ति कोश' उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के अन्य महत्त्वपूर्ण प्रकाशनों की भाँति अपनी उपयोगिता सिद्ध करेगा, पुस्तक सुधी समीक्षकों, अवधी भाषा के साहित्यानुरागियों, जिज्ञासु पाठकों और शोधार्थियों को सादर समर्पित है।

डॉ. सच्चिदानन्द पाठक

निदेशक

आत्मकथ्य

लोक और लोकोक्ति का वही संबंध है जो मोती और धागे का है। लोक रूपी धागे में लोकोक्तियों की मोतियों को अलंकार रूप में पूरे विश्व ने पहन रखा है। लोकोक्तियों का स्वरूप जानने के लिये हमें ''लोक'' शब्द का अर्थ समझना आवश्यक है। ''लोक'' से आशय है– विश्व, पृथ्वी, मानव जाति, प्रान्त, निवास, स्थान, सांसारिक व्यवहार आदि। साधारणतः स्वर्ग, पृथ्वी, पाताल ये तीनों लोक माने गये हैं। ऋग्वेद में 'लोक' को स्थान माना गया है। वेद में लोक शब्द निम्न श्रेणियों के लोगों के लिये आया है। गीता में कहा है – अतोऽस्ति लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः। लोक का तात्पर्य है मानव जाति का सरल जीवन, जो प्रकृति के अति निकट हो, जिसमें किसी प्रकार का दिखावा या नकलीपन न हो। डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल के शब्दों में – लोक हमारे जीवन का महासमुद्र है। इसमें भूत, भविष्य, वर्तमान सभी कुछ है। लोक ही राष्ट्र का स्वरूप है। आज के मानव के लिये लोक सर्वोच्च प्रजापति है।

संसार की वितृष्णा, कष्ट, यातनाओं को देखकर महात्मा बुद्ध जन–पीड़ा के नाश हेतु घर का त्याग करके जंगल चले गये। इन्हीं तमाम महात्माओं के द्वारा लोक कल्याण हुआ। ये ही हमारे युग के चेतनाधार–मूलाधार हैं। ये ही भारतीय संस्कृति के मेरुदण्ड हैं। लोक संस्कृतियों का इतिहास इन्हीं विभूतियों की देन है। 'लोकोक्ति' शब्द लोक + उक्ति के मेल से बना है। इसे ही कहावत, कथनी, मसल, कहकूल, फिरका, कथन, उक्ति, मिसरा, रोजमर्रा, तर्जेकलाम और कहाउति कहते हैं।

लोकोक्तियाँ, रामायण, महाभारत, वेद, पुराण शास्त्र सब में मिलती हैं। ये स्वास्थ्य, यात्रा, शकुनापशकुन, ऋतु, कृषि, षोडस संस्कार, आदि से जुड़ी हैं। आमतौर पर ये व्यंग्यपरक पाई जाती हैं। ये ग्राम जीवन से अधिक जुड़ी रहती हैं। भारत के कृषि प्रधान देश होने के कारण यहाँ प्रत्येक क्षेत्र में कहावतों की अपार संपदा भरी पड़ी है। युगों से ये अलिखित तथा मौखिक साहित्य बनकर रहीं। इनमें से न जाने कितनी लुप्त हो गईं।

प्रस्तुत पुस्तक के संदर्भ में पाठकों से मुझे जो भी निवेदन करना है वह 'अवधी बृहत् लोकोक्ति कोश' से संबंधित प्रविष्टियों पर' जो कहावतें 'कानन सुनी, आँखिन देखी, कागज लेखी' पायी हैं और बचपन से जो भी मेरी स्मृतियाँ रहीं, वे सभी यहाँ में यथावत् प्रस्तुत हैं। इस संकलन का प्रथम श्रेय यदि मैं अपने अग्रज साहित्यकार स्व. अमृतलाल नागर जी को दूँ तो बड़ी आत्मसन्तुष्टि होगी।

सन् १९८४–८५ में जब उनसे भेंट हुई तो मैंने उनसे कुछ सुझाव माँगे के बोले– 'अवधी लोकोक्तियाँ, कहावतें मरणासन्न हो रही हैं बहन! राजनीतिक प्रभाव लोगों के चित्त पर छा गया है। भारतीयता गर्त में चली जा रही है। आप यदि इस लुप्त होती विधा का संकलन कर लें तो बड़ा अच्छा रहेगा। यह अति उत्तम और पावन कार्य होगा।'

नहीं जानती, उनकी वाणी में कौन सी ऐसी विलक्षणता थी? विचार–शक्ति में कितनी बड़ी प्रेरणा, एवं स्नेह–शक्ति थी कि एक–एक शब्द ने मेरे मर्मस्थल को छू लिया। उनकी प्रेरणा के गहरे अविरल स्रोत में डूबती–उतराती मैं गहरे जल में पैठती–उबरती, घर आते–आते कहावतों के लिये व्याकुल हो उठी।

कहावतों के प्रवाह में जीवित रहने वाले पूर्वज जो आज नहीं हैं, उन्हीं के द्वारा पाई गई धरोहर को मैं अपनी आगत पीढ़ी को सौंप कर मुक्त हो रही हूँ।

आज अपनी पीढ़ी को सब कुछ सौंपने के बाद दिल–दिमाग, भारमुक्त हो गये हैं। लोकेषणा भारतीय लोकदर्शन का मूलाधार है। कहावतोग्राफी के अन्तर्गत विषय विस्तार का, नई विधा की जानकारी एक बार फिर से मैं अपने प्रेरक स्व. श्री नागर जी जिन्होंने हमारे डेढ़ हजार कहावतों की प्रति देखकर आशीर्वचन दिया था– "आपके द्वारा संकलित कहावतें देख चुका हूँ। आपका श्रम स्तुत्य है। आपको इस श्रम से यश मिले यह कामना करता हूँ।"

जनपद सुलतानपुर की डॉ. ऊषा सक्सेना ने बड़ा सहयोग दिया, उनकी आभारी हूँ।

डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित जी, लखनऊ विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष हैं, और अवधी के महान मर्मज्ञ हैं। मैं उनको धन्यवाद देती हूँ। इस संकलन के प्रति जिन–जिन महान मनीषियों ने अपना अमूल्य समय देकर मुझे अपनी शुभकामनायें दी हैं, उन सभी की सम्मतियों का स्वागत करते हुये आभार प्रकट करती हूँ।

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के निदेशक डॉ. सच्चिदानंद पाठक तथा हिन्दी संस्थान की प्रधान सम्पादक डॉ. मंजु लता तिवारी को मैं बहुत–बहुत हार्दिक धन्यवाद देती हूँ। 'अवधी बृहत् लोकोक्ति कोश' के प्रकाशन में वे निमित बने हैं।

जनपद सुलतानपुर के अवधी साहित्यकार श्री त्रिलोचन शास्त्री जी को भी धन्यवाद देती हूँ। श्री आनंद कुमार त्रिपाठी जी के प्रति मैं आभार प्रकट करती हूँ।

अंत में मैं अपने देव स्वरूप पति चिकित्सक डॉ. हरिदत्त शुक्ल की स्मृति को साष्टांग प्रणाम करती हूँ जिन्होंने जीवन साथी का उत्तरदायित्व संभालते हुये तन–मन–धन से इस संकलन में साथ दिया। दुर्भाग्यवश १०.४.६५ को वे देवलोक जा पहुँचे। अब तो उनके प्रति अश्रुभीनी श्रद्धांजलि ही मेरी एक मात्र अवलंब है।

मैं संशोधनकर्त्ताओं को धन्यवाद देती हूँ जिन्होंने अपनत्व, एवं धैर्य के साथ अपने सुझाव मुझे दिये हैं। विद्वानों से मैं अपनी त्रुटियों के प्रति क्षमा चाहती हूँ। "अवधी बृहत् लोकोक्ति कोश" अब आपके हाथों में दे कर मुक्त हो रही हूँ। अंत में–

"यह तो वस्तु तुम्हारी है प्रभु !
ठुकरा दो या प्यार करो।"

निवेदिका
कमला शुक्ल



मेरे प्रेरणा स्रोत, सच्चे जीवन साथी तथा साक्षात् पति-परमेश्वर
स्वर्गीय डॉ. हरिदत्त शुक्ल की
पुण्य स्मृति को मेरे दशकत्रय का
यह श्रमसंग्रह सश्रद्ध समर्पित !

अवधी वृहत् लोकोक्ति कोश

अम्बा होय तो फरि रहै, रेंड़ तनेने पात,
तिरिया होय तो, नै रहै तिनिउ कुला की लाज।

श० – अम्बा–आम का फल। फरि–फलना। रेंड़–एक जंगली पेड़/तनेने–तना हुआ, सीधा, लम्बा/ तिरिया – नारी, स्त्री/ नै–झुकना, शालीनता/ तिनिउ कुला–तीनों कुल, मैका, ससुराल और ननिहाल यानी नाना के घर/लाज–शर्म।

अ० – आम और रेंड़ के पेड़ की तुलना से नारी जाति को महान् उपयोगी सीख दी गई है। जैसे आम का पेड़ फल के लग जाने पर, बोझ के कारण धरती पर नम्रतापूर्वक झुक जाता है, उसी प्रकार से सर्व सम्पन्ना, सर्वगुण स्वरूपा नारी अपने शील स्वभाव द्वारा मैके, ससुराल और ननिहाल तीनों वंश की लज्जा को रखने वाली होती है। इसीलिये हमारे भारतीय समाज में नारी को गृहलक्ष्मी कहा गया है। संस्कृत में एक श्लोक है–

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता।"

अतः नारी कुंलागना होती है, उसे सदैव आम के फलते पेड़ की भाँति नम्र रहना चाहिए।

आम का पेड़ हमें फल देता है, पक्षियों को छाया देता है और थके राही को आश्रय देता है, उसी स्थान पर रेंड़ का पेड़ जिसके नीचे न पंथी बैठ पाता है, न पक्षी बसेरा ले पाते हैं। जिस पेड़ से किसी मानव जाति को या जीव को कोई लाभ नहीं होता वह आकाश की ओर लंबा होता, तनता, बढ़ता जाय तो उससे क्या लाभ? महात्मा कबीरदास के शब्दों में–

बड़ा भया तो क्या भया, जैसे पेड़ खजूर।
पंथी को छाया नहीं फल लागै अति दूर।।

अपने मरे बिना सरग नहीं देखाय परत।

श० – सरग—स्वर्ग, मोक्ष पाना।

जब कोई काम अपने स्वजनों के द्वारा या किसी से कहने पर भी न हो पाये तो लोग यह कहावत कहते हैं–

अ० – बिना अपने मरे हुये स्वर्ग नहीं दिखाई देता। यानी बिना अपने किये कोई काम नहीं हो पाता। दूसरों के भरोसे पर रहने में काम या तो समय पर नहीं हो पाता या ठीक नहीं हो पाता है।

जैसे बिना अपने मरे स्वर्ग नहीं दिखाई पड़ता, उसी प्रकार से दुनिया में कुछ ऐसे भी काम होते हैं जो बिना अपने किये नहीं होते।

अपने घर कै पुरखिन, आन के घरे कै बिलार।

श० – पुरखिन–घर की मालकिन, घर की सबसे वयोवृद्ध स्त्री/आन–दूसरा।

अ० – जब कोई वयोवृद्ध स्त्री अपने संबंधियों के यहाँ जाने पर उपेक्षित होती है तो यह कहावत चरितार्थ होती है। अपने घर में तो वह मालकिन की तरह रहती है किन्तु दूसरे घर में उसे भीगी बिल्ली बनकर रहना पड़ता है। अपमानित होकर रहना उसे असह्य होता है।

अब पछताये होत का, चिड़िया चुग गई खेत।

श० – पछताये–पश्चाताप करना, झंखना/ चुग–चुनना।

उपरोक्त कहावत समय का मूल्यांकन कराती है।

अ० – जब चिड़िया सारे खेत का दाना चुग गई तो पछताने से क्या फायदा? जब काम बिगड़ गया तो उसके लिये दौड़–भाग करने से कोई फायदा नहीं। इसीलिये समय रहते हर कार्य को सम्पन्न करना चाहिए।

अनमिले त्यागी, राँड़ मिले बैरागी।

श०– अनमिले–बिना मिले, त्यागी– उदासीन, छोड़ना, विरक्त, राँड़–विधवा स्त्री, बैरागी–साधु, सांसारिकता से अलग रहने वाला।

कहावत ऐसे अवसरवादी लोगों के ऊपर चरितार्थ है जो समय की तलाश में रहते हैं। जैसा उनको समय मिलता है, उसी के अनुरूप उनका कार्य एवं उनका व्यवहार भी होता है।

अ० – जब कोई न मिले या कुछ न मिले तो लोग त्यागी बन जाते हैं, उनको विरक्ति हो जाती है एवं यदि विधवा स्त्री के सम्पर्क में रहें तो वैराग्य ले लेते हैं। परिस्थितियों के साथ बदलते रहने का कुछ लोगों का स्वभाव होता है।

अखाड़ा का लतमरुवा पहलवान होत।

श० – अखाड़ा– जिस भूमि पर पहलवान लोग लड़ते हैं। लतमरुवा–लतियाये जाने वाला।

कहावत विशेष रूप से नई पहलवानी सीखने वालों के ऊपर कही गयी है।

अ० – जो पहलवान अखाड़े में मार खाकर दाँव–पेंच सीख लेता है, उसी को धीरे–धीरे पहलवानी का अनुभव हो जाता है। यानी "गिरते हैं शह सवार ही मैदाने जंग में।" इसी तरह से जो अखाड़े में मार खाता है, वही पहलवानी सीख कर पहलवान बन जाता है। यानी कार्य करने वाला ही कार्य सीख सकता है।

अपने हूँ पग को मरम, आप न जान्यो जात।
सावधान ह्वै नहिं चलत, नर नित ठोकर खात।।

श० – पग–पैर, मरम–भेद, सावधान–सचेत होकर, नर–मनुष्य।

इसमें मनुष्य को सावधानी से कार्य करने की सीख दी गई है।

अ० – मनुष्य अपने ही कर्मों के द्वारा हानि–लाभ का भागी होता है। जो अपने ही पैरों की चाल को नहीं समझ पाते, वे सचेत होकर न चलें तो सदैव ठोकर लगने का भय बना रहता है।

अफसर की अगाड़ी, घोड़ा की पिछाड़ी बच के रहै चाही।

श० – अफसर–मालिक, अधिकारी / अगाड़ी– आगे / पिछाड़ी–पीछे /

अ० – चूँकि अफसर के हाथ में अधिकार होता है, इसलिये उसके सामने पड़ने पर उसके दिये आदेश का अनुपालन आवश्यक हो जाता है। इसी तरह गधे, मूर्ख व्यक्ति, अनपढ़ लोग कब, किस समय पीछे से वार कर दें, पता नहीं चलता। उनसे सचेत रहना चाहिये।

अनरथ करत जाहि डर नाहीं,
सो जइहैं थोरे दिन मांहीं।

श० – अनरथ–अनर्थ, बुरा काम।

अ० – संसार में आकर जिस व्यक्ति को अत्याचार, अन्याय, अनाचार या ग़लत काम करने में तनिक भी भय नहीं लगता या समाज के प्रति किंचित् भी मान–सम्मान का ध्यान नहीं रहता, उसका नाश बहुत थोड़े समय में ही हो जाता है।

अति सर्वत्र भली नहीं, कहि गये संत अनंत।

श० – अति–किसी बात का सीमा से आगे हो जाना। सर्वत्र–सब जगह, हर स्थान पर, पूरी तरह, हर प्रकार से, अनंत–जिसका कोई अन्त न हो, बहुत से, अंतहीन।

जब किसी काम या किसी बात की सीमा बहुत ज्यादा बढ़ जाती है तो वह हानिकारक होती है।

विद्वान चाणक्य के शब्दों में –

अतिरूपेण वै सीता, अति गर्वेण रावणः
अतिदानाद् बलिर्बद्धो ह्यति सर्वत्र वर्जयेत्।

यानी – अति सुंदरता के कारण सीता का हरण हुआ, अति गर्व के कारण रावण का नाश हुआ, अति दान के कारण बलि को बँधना पड़ा। अतः अति सर्वत्र वर्जित है।

अतः अच्छे कार्यों का अंत भी हानिकारक होता है। एक ग्रामीण कहावत है –

बहुती मिठाई कीरा परत।

अथवा

बहुती मिठाई गुड़ लिटहा होत।

'अजब तेरी दुनिया अजब तेरा खेल,
छछूंदर के सिर में चमेली का तेल।'

श० – अजब–अनोखा, निराला।

कहावत विधि की विडम्बना एवं ईश्वर के अनोखेपन पर कही गई है। कहीं–कहीं पर विचित्र घटनायें भी देखने में आती हैं। जैसे–गिरगिट के गले में फूल माला पहना दी जाय या जब किसी अयोग्य व्यक्ति को कोई ऊँचा पद प्राप्त हो जाय। इन्हीं विषयों पर कहावत लागू होती है।

अ० – ईश्वर की क्या विडम्बना है कि छछूँदर जैसे बदबूदार जीव को सिर में लगाने के लिए चमेली का तेल मिला है, जो कीमती व सुगंधित है।

अपना क रोई–रोई, भतरा क मोट पोई।

श० – भतरा–भर्तार, पति/पोई–पोना, रोटी बनाना/ जब घर में ग़रीबी हो, खाने के सामान की कमी हो तो इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

अ० – स्त्री स्वयं खाये, चाहे रोये, चाहे पेट में कुछ जाय, चाहे न जाय, भूखी ही रह जाय मगर पति को तो मोटी रोटी बनाकर पेट भर खिला ही देना है। हमारे देश में यही भारतीय नारी की परम्परा रही है जो स्वयं भूखे रह कर भी अपने पति–पुत्र का पेट भरती है।

अमवा लगायो फरइ की ताईं
बहै पुरवइया लागि गवा लासा।
बेटवा बिआने बुढ़ौती की ताईं
आई पतोहिया टूटि गवा नाता।
जिनि करा राम बुढ़ौती कै आसा।।

श० – पुरवइया–पूरब दिशा से बहने वाली वायु/ लासा–आम के बौर का एक प्रकार का रोग है जो पुरवइया हवा बहने के कारण लग जाता है/बिआने–पैदा किया/नाता–रिश्ता/पतोहिया–बेटे की स्त्री।

अ० – कहावत घर–परिवार से सम्बन्धित है। अपने बेटे–बहू या स्वजनों द्वारा किसी प्रकार की कमी, निराशा या मन की भावनाओं को ठेस पहुँचती है तो कहावत चरितार्थ होती है। आम का पेड़ इसलिए लगाया कि जब फल आयेंगे तो आम खाने को मिलेंगे मगर पुरवइया हवा ऐसी बही कि उस फल में लासा लग गया, आम खाने को न मिला। इसी तरह बेटे को जन्म दिया कि बुढ़ौती में बेटा–बहू सेवा करेंगे, मगर ऐसा दुर्भाग्य कि बहू के आते ही बेटे से भी रिश्ता खत्म हो गया–यानी पुरवइया की प्रतीक बहू ने सारी आशाओं पर पानी फेर दिया। इस कारण बुढ़ापे में कोई आशा करना व्यर्थ है।

अकेल चना भाड़ नहीं फोड़त।

या

चना अस बरियार न होय जाये कि भारै फोरि डारे।

श० – बरियार–जबरदस्त, जोरदार/भारै–भाड़। एक आदमी बड़ा या कठिन कार्य अकेले नहीं कर सकता है। यही कहावत का मूल भाव है।

अ० –चना इतना ज़ोरदार न हो जाये कि भाड़ फोड़ डालेगा। इतने बड़े भाड़ के सामने चने की क्या बिसात है ?

आपन धन दीजै, दुस्मन कीजै।

श० – धन–रूपया–पैसा/दुसमन–दुश्मन, बैरी। कर्ज़ देने के ऊपर कहावत चरितार्थ क़ी गई है। कहते हैं कि कर्ज़ का लेना तथा कर्ज़ का देना, दोनों ही बुरा होता है।

अ० – एक तो किसी के बुरे दिनों में अपना पैसा देकर उसके साथ भलाई करिये, उस पर यदि अपनी आवश्यकता पर अपना ही पैसा मांगने जाइये तो उस समय आपसे बढ़कर दुश्मन व बुरा आदमी कोई भी न होगा। इसीलिये कहा गया है कि अपना पैसा दीजिये और उससे बुरे भी बनिये, साथ ही दुश्मन भी तैयार कर लीजिए।

अन्न क पूत अनवादी।

श० – अन्न–अनाज, अनाज की बनी रोटी/पूत–पुत्र,

लड़का/अनवादी–शैतान, बदमाश। कहावत ऐसे लोगों के ऊपर कही गई है जो पेट भर जाने के बाद् तरह–तरह की शैतानियां, एक से एक ऊधमबाजियां दिखाना शुरू कर देते हैं। इसी पर एक कहावत कही गई है "पेट परा चारा, तो नाचै लाग बेचारा।" उछल–कूद भाग–दौड़ तभी शुरू होती है जब पेट भरा हो।

अ० – पेट भरे रहने पर मनुष्य से तामसी प्रवृत्तियां अधिक होने के कारण असामाजिक कार्य तो होता ही है, इसके साथ ही वह भोजन रोग–दोष को बढ़ाता तथा आयु को कम करता है।

अपने मन से जानिये पराये मन की बात।

श० – पराए–दूसरे।

कहावत व्यावहारिक व सिद्धान्तवादी है।

अ० – आप अपने मन में दूसरों के प्रति क्या चाहते या क्या सोचते हैं वैसा ही दूसरा भी आपके प्रति सोचता है। अतः आप जो व्यवहार दूसरों को देंगे, वही व्यवहार दूसरों से आप को भी मिलेगा। जैसा आपने किया होगा, उसे मन में अवश्य जानते होंगे। तभी अपने मन से दूसरों की बात समझ सकते हैं।

अपने दूर पड़ोसी नेरे।

श० – नेरे–पास में, निकट/पड़ोसी–घर के पास के घर में रहने वाला। निकटतम पड़ोसी के प्रति यह कहावत उद्धृत की गई है।

अ० – पड़ोस के रहने वाले पास होने के कारण वक्त–जरूरत पर या अचानक कोई घटना–दुर्घटना हो जाने पर समय पर पहुँचते हैं। उसी स्थान पर घर का आदमी यदि दूर है तो वह दूरी के कारण देर से पहुँचेगा। इसी पर कहा गया है कि समय पर अपने दूर हो जाते हैं जो पास में रहता है, वही मदद करता है।

अपनी लिट्टी पर सबै आग धरत।

श० – लिट्टी–भउरी, जो कंडे की आग पर बनाते हैं। पूर्वी क्षेत्रों में इसे लिट्टी या बाटी बोलते हैं।

अ० – अपना–अपना काम सभी कर लेते हैं। कहावत का आशय यही है।

अपने खाने–पीने की व्यवस्था सभी कर लेते हैं।

'अपने बैल कुल्हाड़ी नाथब'।

श० – नाथब–बैल के नाक में सूजे से छेदकर नथ पहनाने को नाथना कहते हैं।

अ० – कहावत में कुल्हाड़ी नाथने का मतलब हुआ अपनी वस्तु का अपने मन अथवा अपने ढंग से इस्तेमाल करना। बैल अपना है तो हम चाहें सूजे से नाक छेद दें चाहे कुल्हाड़ी से, किसी से क्या मतलब? अपनी वस्तु पर पूर्णाधिकार का होना ही कहावत का मंतव्य है।

'अपनी करनी पार उतरनी'।

कहावत में कर्मों की प्रधानता पर बल दिया गया है। किसी ने कहा है : जो जैसा करेगा वैसा भरेगा' तथा गोस्वामी तुलसीदास जी के शब्दों में 'करम प्रधान विस्व करि राखा, जो जस करइ सो तस फल चाखा'। 'अतः कर्म ही फल का भोग है। संसार में मानव जैसा करेगा वैसा ही फल पायेगा। जिस प्रकार से कुँआ खोदने वाला मज़दूर नीचे की ओर जाता है तथा मकान बनाने वाला राज ऊपर की ओर चढ़ता है। महात्मा कबीर के शब्दों में **'बोया पेड़ बबूल का आम कहाँ ते होय?**

अ० –मनुष्य अपने ही कर्मों से अपने भाग्य को बनाता है। किसी महान् विद्वान मनीषी ने कहा है–दौड़ने वाले का भाग्य दौड़ता है, बैठे रहने वाले का भाग्य बैठा रहता है तथा सोने वाले का भाग्य सोने लगता है। अतः लोक में और परलोक में पार उतरना अच्छे कर्मों द्वारा ही संभव हो पायेगा।

अस गुर बजारे न बिकाई।

सुअवसर बार–बार हाथ नहीं आता है या समय कभी किसी के लिए रुकता नहीं है। किसी महान् विद्वान ने कहा है –

सबै वस्तु का मोल है, समय अमोल पिछान।
समय व्यर्थ खोते नहीं सो जन चतुर सुजान।।

महाकवि शेक्सपियर के अनुसार 'जीवन क्षणिक है, कार्य बहुत है और सूर्य भागा जा रहा है'।

कहावत भी इसी तथ्य को लेकर उद्धृत की गई है। यानी जैसा गुड़ बाजार में बिकने आया है, वैसा अच्छा फिर नहीं आयेगा। अतः समय का लाभ उठा लेना चाहिए। गया समय दुबारा हाथ नहीं आता है।

अस जोड़ा से निगोड़ा भला।

जोड़ा–साथी, पति–पत्नी का जोड़ा, निगोड़ा–निकम्मा, निठल्ला।

जब कोई नारी अपने पति की दुष्टता, नीचता आदि दुष्कर्मों से अत्यधिक परेशान हो जाती है तो अपने भाग्य को कोसती है।

'पुरुषार्थ नहीं जिस पुरुष में, वह पुरुष वृथाकार है।

पुरुषार्थ बिन उस पुरुष के, जीवन पै शत धिक्कार है।।

अ० – ऐसे पति से तो भला था कि कोई निकम्मा ही आदमी मिला होता, कम से कम कहने को तो होता कि बेकार, निकम्मा पुरुष इसे मिला है।

'अरहरी की टाटी माँ गुजराती ताला'।

श० – अरहरी–अरहर जिसकी दाल बनती है। टाटी–टट्टर, आड़, झोपड़ी के दरवाजे पर जो टट्टर आड़ के लिए लगाया जाता है।

कहावत व्यंग्य में किसी मामूली वस्तु पर अधिक कड़ा पहरा देखकर कही गई है।

अ० – जहाँ झोपड़पट्टी बनी हो तो उसमें भला क्या ऐसा समान हो सकता है कि उसके टट्टर में एक विशेष प्रकार का ताला लगाया जाय? यहाँ तो वही कहावत हो गई कि 'जितने की मुर्गी नहीं, उतनी बेहनाई'। वस्तु के खरीद दाम से कहीं ज़्यादा ही उसके तामझाम पर खर्चे हो जायं। उसी प्रकार से कम कीमती सामान के लिए दुगने दाम का ताला लगाना ठीक नहीं है।

'अपनी पगिया नियाव करि लेव'।

श० – पगिया, पगड़ी, सिर पर बाँधने की पाग/नियाव–न्याय, इंसाफ, सही फैसला। पुराने ज़माने में सिर की पगड़ी का बड़ा मान–सम्मान होता था। इस पर लोग तरह–तरह के मुहावरों का प्रयोग करते थे। जैसे पगड़ी की लाज रखना, पगड़ी ऊँची होना, पगड़ी की शान रखना, पगड़ी उतरना, पगड़ी झुक जाना इत्यादि।

उपर्युक्त कहावत का अर्थ है – अपनी पगड़ी को ध्यान में रखकर इंसाफ करना। पहले के ज़माने में जब जनता की समस्याओं को हल करने के लिए पंचायत बैठती थी तो उसमें एक सरपंच होता था जो न्यायकर्ता के रूप में न्याय करता था। उससे सही न्याय देने की मांग की जाती थी। कहा जाता था, अपनी इज़्जत का ध्यान रखकर अपनी सिर की पगड़ी की लज्जा को बचाते हुए स्वयं न्याय कर लो। यानी न्याय में, संयम मर्यादा का ध्यान अवश्य रखना चाहिए।

'अपनी गली मां कुकुरौ बरियार रहत है'।

श० – गली–रास्ता, पैडा, बरियार–ज़बरदस्त।

अपनी सीमा में कमज़ोर भी हो तो मनुष्य क्या कुत्ते भी बलवान बन जाते हैं।

अ० – अपनी गली के निर्बल कुत्ते भी जब बाहरी कुत्तों को भूँकते सुनते हैं तो वो भी खूब भूंकने लग जाते हैं। इसलिए कि उन्हें अपनों का संबल मिलता है कि कोई कुछ भी बोलेगा तो आपस के सभी लोग मेरी सहायता करेंगे।

अनपढ़ होय सो सेवै।

अर्थ स्पष्ट है।

अपने देसे के टूका भल, परदेस के समूच नाहीं।

श० – टूका–टुकड़ा, थोड़ा ही/परदेस–विदेश, दूसरे देश की/ समूचा–पूरा। कहते हैं संतोष से प्राप्त धन से शान्त लोगों को जो सुख मिलता है वह इधर–उधर दौड़ने वाले धन के लोभियों को नहीं मिल सकता है।

महात्मा कबीरदास के शब्दों में –

'रूखा–सूखा खाय के, ठंडा पानी पीव।
देखि पराई चूपड़ी, मत ललचावै जीव।।

अ० – अपने देश में परिश्रम करके, थोड़ा भी पाकर शांति से जीवन बिताने में जो सुख है, वह परदेश के पूरे या भरपेट भोजन करके भी नहीं है। एक उक्ति है 'परदेश, नरेस' कलेस। परदेश में राजा को भी कष्ट उठाना पड़ता है।

'अपने घर के मोट भल, दूसरे घर के पातर नाहीं'।

श० – मोट– मोटी रोटी / पातर–पतली रोटी या गेहूं की रोटी।

उपरोक्त कहावत की भांति यह भी है। उसमें देश–परदेश के ऊपर कहा गया है, इसमें अपने व पराये घर के ऊपर कहावत चरितार्थ की गई है।

अ० – अपने घर के मोटे अनाज की मोटी रोटी भली है, मगर दूसरे के घर की गेहूँ की पतली रोटी अच्छी नहीं है। तात्पर्य है कि अपने घर का खराब भोजन भी दूसरों के घर से कहीं अच्छा होता है।

अनोखे गांव मां ऊंट आय, बड़ी ऊंट कै बड़ाई।

श० – अनोखे – अनोखा, नया / अचम्भापूर्ण।

जब गांव में कोई आदमी विदेश से कमाकर आता था, या कोई नई वस्तु लेकर आता था तो गांव भर में उसकी या उसकी वस्तु की अत्यन्त चर्चा उठा करती थी। जिसको देखो वही घर–घर उस बात को छेड़े रहता था कि फलाने के यहाँ फलां वस्तु आई है।

अ० – यह कहावत गाँव की पुराने ज़माने की है जब यदा–कदा एक–आध के पास कोई चीज़ दिखाई देती थी।

अकिल न मिलै उधार, प्रेम न मिलै बजार।

श० – अकिल – बुद्धि / उधार–बिना पैसे के वस्तु लेकर बाद में पैसा चुकता करना / प्रेम–प्यार, अपनत्व ममता / कहावत सिद्धान्तवादी है।

अ० – यह बात सही है कि यदि किसी व्यक्ति के पास बुद्धि नाम की चीज नहीं है तो वह उधार नहीं मिल सकती है और न किसी के देने से प्राप्त हो सकती है।

गोस्वामी जी ने लिखा है –

'मूरख हृदय न चेत जो गुरु मिलइ बिरंचि सम'। फिर भला जब गुरु के देने से शिक्षा नहीं मिल पा रही है तो उधार कौन देगा?

इसी प्रकार से किसी व्यक्ति के प्रति प्रेम भी स्वतः ही उत्पन्न होता है, उसे बाज़ार में नहीं खरीदा जा सकता है।

महात्मा कबीरदास के कथनानुसार –

'प्रेम न बाड़ी ऊपजै, प्रेम न हाट बिकाय।
राजा परजा जेहि रुचै, सीस देय लै जाय''।।

अकिल से बकरी नौ बच्चा जनमै'।

अ० – उपरोक्त कहावत का मुख्य लक्ष्य है बुद्धि से तो बकरी नौ बच्चे जन्म सकती है। तात्पर्य यह है कि बुद्धि हो तो उतने समय में ज्यादा से ज्यादा काम संभव हो सकता है। उतने ही परिश्रम से कार्य बड़ी सफलता से आगे बढ़ सकता है।

अजगर करै न चाकरी, पंछी करै न काम।
दास मलूका कह गये सब के दाता राम।।

यह मलूकदास का दोहा है जिसे लोग भाग्यवादी व्यक्ति को कह देते हैं। जब कोई आदमी कामचोरी, आलस, नक्कारापन, निठल्लापन दिखाता है तो लोग इस दोहे का इस्तेमाल करते हैं।

अ० – आलसी आदमी की तुलना अजगर से की गई है। जैसे अजगर सदैव पड़ा रहता है तथा पंछी कोई काम नहीं करता, मगर उनका पेट ईश्वर सदैव भरता है, उसी प्रकार हाथ पर हाथ धरे निकम्मे आदमी का भी पेट ईश्वर भरेगा ही। वही सबको देने वाला है।

अहुवा–महुवा ताल–तिराई,
इनके भरोसे कर्ज न खाई'।

श० – महुआ–एक वृक्ष। ताल–तालाब / तिराई–नदी का किनारा। जब तक घर में कोई ठोस वस्तु न हो तब तक कर्ज न लेना चाहिए। कर्ज लेना तो वैसे भी बुरा है। उक्ति है 'पहले तुम कर्ज लेकर खाते हो फिर कर्ज तुम्हें खाता है। 'किसी विद्वान ने कहा है 'मंगिबो भलो न बाप सों, जो विधि राखै टेक'। यदि मांगना ही पड़े तो यह ध्यान रखो कि समय पर कर्ज़ वापस

करने का साधन तुम्हारे पास मौजूद हो। यानी घर, द्वार, जमीन आदि अवश्य होनी चाहिए। हल्की–फुल्की वस्तुओं के भरोसे कर्ज़ नहीं लेना चाहिए।

'अक्लमंद को इशारा काफी'।

श० – अक्लमंद, बुद्धिमान/इशारा–सुझाव, संकेत।

किसी को प्रतिभावान, होनहार देखा जाता है तो बहुधा लोग कह बैठते हैं।

अ० – बुद्धिमान व्यक्तियों को किसी कार्य के लिए बताना नहीं पड़ता है। वे इतने अनुभवी, समझदार होते हैं कि तनिक संकेत पर स्वयं सारा काम समझ जाते हैं या कर डालते हैं।

'आपन भाग्य, अपने हाथ'।

जब आदमी भाग्यवान या अभागा साबित होता है या दुनिया में उन्नति या अवनति हो रही है, तो लोग बहुधा कहा करते हैं।

अ० – अपने भाग्य का बनना–बिगड़ना अपने कर्मों द्वारा, अपने हाथों में होता है। इसलिए हमारे गुरुजनों ने या महान मनीषियों ने सदैव चेतावनी दी है कि 'जो जैसा करेगा वैसा ही फल उसे मिलेगा'। गोस्वामी तुलसीदास के शब्दों में 'काहु न कोउ सुख दुख कर दाता। निज–कृत कर्म भोग सुनु भ्राता। कवि श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर की अमृतवाणी में 'अप्पा दीपो भव' यानी अपने मार्ग का दीपक स्वयं बनो'। यानी अपना भाग्य बनाने में आदमी का बहुत बड़ा हाथ होता है।

अपमान के घिव चुपरी नाय, मान कै सूखी खाय।

श० – अपमान–निरादर, बेइज़्जती, घिव चुपरी–घी लगी हुई रोटी/सूखी–बिना घी लगी रोटी। जब कभी कहीं पर मान–अपमान, आदर–निरादर का प्रश्न उठता है, तो यह कहावत चरितार्थ होती है।

अ० – अपमान, व्यंग्य या कटु वचनों द्वारा खिलाया गया भोजन ज़हर के समान होता है। कवि रहीम के शब्दों में–

'रहिमन रहिला हूँ भली जो परसै चित लाय।
परसत मन मैला करै सो मैदा जरि जाय।।'

अतः प्रेम से खिलाया गया खाना कितना भी खराब हो अमृततुल्य होता है। यहाँ तक कि भगवान कृष्ण जी ने प्रेम वश –

दुर्योधन घर मेवा त्याग्यो, साग बिदुर घर खाई,'
सबसे ऊँची प्रेम सगाई'।

अतः अपमानित होकर कभी किसी के यहाँ भोजन नहीं करना चाहिए।

अनोखे घर माँ नाती भतार भा।

श० – अनोखे–निराला, अनूठा/नाती–लड़की का पुत्र दौहित्र। भतार–पति, घर का स्वामी।

किसी के घर में नाती को घर के मालिक की तरह रहते देखकर या घर का सर्वे–सर्वा बना देखकर कहावत कही गई है।

अ० – घर में एक ही मालिक होता है जो घर का मुखिया होता है मगर जब घर का कोई छोटा लड़का स्वयं को मालिक समझने लगता है या लोग नाती को बड़ा महत्व देने लग जाते हैं तो उक्त कहावत कही जाती है।

'अटर–मटर के सोरा रोटी
खाँय सुकुल सोहरावैं पेटी
अब ना करब मटर कै खेती'।

श० – सोहरावैं–सहलाना/पेटी–पेट।

चने–मटर की रोटी खाकर किसी का पेट भारी होने पर या हानि पहुँचने, दस्त आदि लग जाने के बाद यह कहावत चरितार्थ की जाती है। कहा भी गया है–अति सर्वत्र वर्जयेत्।

अ० – कहावत व्यंग्य में कही गई है कि चने–मटर की १६ रोटी खा जाने के बाद सुकुल (शुक्ल) जी ने तय किया कि अब से वे कभी भी चना–मटर की खेती नहीं करेंगे। तात्पर्य यह कि अधिक खाया गया भोजन सदैव हानिकारक हो सकता है।

भगवानदास वामन के शब्दों में –'

'अधिक वायु के भरने से फुटबाल फटि जाय,
बड़ी कृपा भगवान की, पेट नहीं फटि जाय।'

यदपि न दीखत पेट फटा, फटत मनुज की देह,
रोग भयंकर होत है, बने नरक की गेह।

अतः देखा गया है कि 'कम खाना, गम खाना' सदा अच्छा होता है।

अपने नाहीं ना तो सपने नाहीं ना।

श० – अपने–अपने पास/सपने–स्वप्न में भी उस वस्तु का न मिल पाना। जब कोई वस्तु आस–पास, नाते–रिश्ते में हो और उसके मांगने के बाद भी संतोष न हो तथा अपने पास चीज़ न होने की कमी खटकती रहे, तो कहावत कही जाती है।

अ० – यदि कोई वस्तु अपने पास नहीं है तो उसका सुख स्वप्न में भी नहीं मिल सकता है।

अगसर खेती अगसर मार,
घाघ कहै ते कबहुँ न हार।

श० – अगसर – आगे, पहले/ घाघ–अवधी लोकोक्तियों के महाकवि/कहावत सिद्धान्तवादी है।

अ० – घाघ कवि का कहना है कि पहले की गई खेती एवं पहले की गई मार कभी भी हार नहीं दिलाती। वह व्यक्ति कभी नहीं पिछड़ता तथा खेती और लोगों की तुलना में पहले लहलहाने लगती है तथा मार की पहल करने वाला ही अव्वल होता है।

'अपनी माता डायन ही अच्छी'।

श० – डायन, चुड़ैल–डरावनी शक्लवाली स्त्री।

संस्कृत में एक श्लोक है' कुपुत्रो जायते क्वचिदपि कुमाता न भवति' यानी कि पुत्र नालायक हो सकता है किन्तु माता कभी भी कुमाता नहीं हो सकती है। कहावत है – अपनी माँ कितनी भी खराब है तो अच्छी होती है। माता कभी कुमाता नहीं हो सकती है। अपनी बुरी वस्तु भी भली होती है चाहे जितनी भी बुरी हो।

'अपनी छींक महा दुखदाई
अपनी छींक राम बन गयऊ।

दसरथ मरन तुरंते भयऊ,
सीता हरन तुरंते भयऊ।।'

अ० – कहावत छींक विचार से संबंधित है। छींक को अशुभ माना गया है। कहा है अपनी छींक से रामचन्द्र जी वन गये तथा पिता दशरथ का भी मरण एवं सीता–हरण हुआ। अतः किसी शुभ समय या यात्रा के समय अपनी छींक हो तो सचेत होकर कार्य थोड़े समय को रोक देना चाहिए।

'अपने ओसारे, गोड़ पसारे'।

श० – ओसारे – घर के बाहर का बरामदा/ पसारे–फैलाये।

अ० – कहावत अपने घर की स्वतंत्रता पर उद्धृत की गई है –

अपने घर में आज़ादी से, आराम से, पैर फैलाकर बैठे हैं न किसी का रोब है न धौंस। अपने घर में अपनी मनमानी आजादी होती है। अपनी वस्तु का शांतिपूर्वक इस्तेमाल करना।

'आसमान से गिरी खजूरी मँ अटकी'।

श० – आसमान–आकाश, ऊपर/खजूरी – ताड़ की जाति का एक पेड़।

जब कोई कार्य होते–होते बीच ही में रुक जाता है तो कहावत चरितार्थ होती है। अर्थात् कितनी कठिनाइयों के बाद काम शुरु भी हुआ तो वह बीच में ही पुनः रुक गया। कार्य में बाधा उत्पन्न हो गई।

'अटर–मटर के कौन नवा
जब होय जवा तो होय नवा।

श० – नवा–गाँव में जब रबी की फसल खेतों में लहलहाती है तथा हरी मटर की फलियाँ टूटती हैं तो जो भी किसान नवा की रस्म मानते हैं वे बिना नये अनाज की पूजा किये, बिना भगवान को चढ़ाये नहीं खाते हैं। होता यह है कि चना–मटर से नहीं, बल्कि जब जौ की बालियाँ खेतों में हो जाती हैं जो कि लगभग बसंत पंचमी तक होती हैं, कहा है,– "जब होय जवा तौ करै नवा" तभी लोग नवा का पर्व मनाते हैं। साइत (मुहूर्त) बिचरवा कर जौ की बाली भगवान पर चढ़ाकर पट्टीदारों तथा अपने शुभ–चिन्तकों को भोजन कराते हैं। इसलिए जौ के अनाज को 'देवअन्न' कहा गया है।

कहावत का अर्थ है कि जब जौ का अन्न खेतों में हो जाय तो नवा करना चाहिए।

'अस जो होती कातनहारी
काहेक फिरती जाँघ उधारी'।

श० – कातनहारी – सूत कातने वाली/उधारी–नंगी, नग्न।

कहावत व्यंग्य में ऐसी स्त्रियों पर कही गई है जो आलसी, कामचोर, बिना हाथ–पैर चलाये चाहती हैं कि हमारे सभी काम अपने आप हो जायं।

अ० – यदि ऐसी ही तेज़, फुर्त, कामकाजी होती तो इतनी बुरी दशा न हो जाती कि नंगी सारे सड़कों पर घूमा करतीं। इतनी हयादार ही होती तो सूत कातकर अपना तन तो ढक लेतीं।

'अपने घरे खाया जिन, बिना बोलाये आय जिन'।

जब कोई काम न अपने द्वारा हो पाये और न जिसने आश्वासन दिया हो उसी के द्वारा हो पाये, तो यह कहावत कही जाती है। यानी कोरा आश्वासन देकर भ्रम में रखना।

अ० – कहावत में किसी ने किसी को अपने यहाँ खाने पर बुलाया यह कहकर कि खाने के समय बुला लेंगे, तो वह व्यक्ति ऐसे धर्मसंकट में पड़ा है कि न तो अपने ही घर खा पा रहा है और न न्योते की जगह से कोई खाने को बुलाने ही आ रहा है। ऐसी दुविधाजनक स्थिति में आदमी न घर पर ही खा सकता है न बुलाने की जगह जा ही सकता है। एक अजीब असमंजस में डाल देना यानी न काम को दूसरे के द्वारा होने दे रहा है न स्वयं ही कर रहा है।

अच्छर–अच्छर के पढ़े, मूरख होय सुजान।
कौड़ी–कौड़ी जोरि के निर्धन होय धनवान।।

श० – अच्छर–अक्षर, मूरख–बेवकूफ, सुजान–समझदार, अक्लमंद।

यह दोहा बहुधा लोगों द्वारा बच्चों को सीख देने के लिए प्रयोग में लाते रहने के कारण कहावत सा बन गया है।

अ० – अक्षर–अक्षर के पढ़ने से कितना भी बेवकूफ आदमी हो वह धीरे–धीरे समझदार होकर विद्वान बन जाता है। इसी प्रकार एक–एक पैसा जोड़कर बिना पैसा वाला भी अमीर हो जाता है। वृन्द कवि के शब्दों में–

'उत्तम विद्या लीजिए जदपि नीच पै होय।
पर्यो अपावन ठौर में कंचन तजै न कोय।।

'अपनी कोख का पूत नौसादर'।

श० – कोख–पेट, गर्भ/पूत–पुत्र/नौसादर एक प्रकार का क्षारीय पदार्थ है जिसको सोना गलाते समय डाल देने पर सोने में चमक आ जाती है।

अ० – अपनी कोख का जन्मा पुत्र नौसादर की भांति है, जो वंश रूपी सोने में पड़ने पर पूरे कुल को चमका देता है। वह अपने कुल खानदान का दीपक होता है।

अपुना खाय बिलार क लावै
ओके जिव दइव संतावै।'
या
ओके जीवन अकारथ जावै।

श० – दइव–दैव, भगवान/संतावै–सतावे, तंग करना/ अकारथ–बेकार/बहुधा देखा गया है कि कुछ लोग दुनिया में ऐसे भी होते हैं जो गलती स्वयं करते हैं किन्तु गलती को दूसरों के मत्थे लगा देते हैं।

अ० – कोई वस्तु स्वयं खाकर दोष बिल्ली के सिर दे देना। ऐसे लोगों को भगवान कभी भी माफ़ नहीं करते हैं। अपनी गलती कर दूसरों पर कलंक लगाने वाले का जीवन व्यर्थ हो जाता है। किसी ने कहा है कि अपनी गलती को मानना ही अपना प्रायश्चित करना है।

'अकड़ी खेती, तड़की गाय
तब जाना जौ मुँह में जाय।

या

दइव करय तो मुँह माँ जाय।'

श० – अकड़ी–जिस खेत में बालियाँ न हों या नाममात्र को हों अथवा सूख रही हों/ तड़की–जो गाय बिगड़ैल हो। दूध ऊपर चढ़ा लेती हो।

कहावत गाय तथा खेती के ऊपर है।

अ० – जिस खेत में बालियाँ एकदम मरी–मरी हों तथा गाय बिगड़ैल स्वभाव की हो उस खेती का अनाज एवं ऐसी गाय का दूध जब भगवान चाहेंगे तभी मुँह में जा सकता है, वर्ना बड़ा कठिन है।

अरहर छरहर उर्द के ठाढ़
मूंग के पातर, नांही गाढ़।

श० – छरहर–छिटकी/ठाढ़–खड़ी।

कहावत दालों के ऊपर कही गई है।

अ० – भोजन बनाते समय ध्यान दिलाया गया है कि अरहर की दाल छिटकी व उर्द की खड़ी तथा मूंग की दाल पतली बनानी चाहिए न कि गाढ़ी हो जाय।

'अद्रा धान पुनर्वस पइया,
गये किसान जो बोवै चिरैया'।

श० – अद्रा, पुनर्वस, चिरैया (पुष्य) ये तीनों नक्षत्रों के नाम हैं।

उपरोक्त कहावत में नक्षत्रों के नाम दिये गये हैं अतः ज्योतिष शास्त्र के अनुसार नक्षत्र सत्ताइस (२७) होते हैं जो निम्नांकित हैं।

१. अश्वनी, २. भरणी, ३. कृतिका, ४. रोहिणी, ५. मृगशिरा, ६. आर्द्रा, ७. पुनर्वस, ८. पुष्य इसे चिरैया भी कहते हैं। ९. श्लेषा, १०, मघा, ११. पूर्वा १२. उत्तरा, १३. हस्त, १४. चित्रा, १५. स्वाती, १६. विशाखा, १७. अनुराधा, १८. ज्येष्ठा, १९. मूल, २०. पूर्वाषाढ़, २१. उत्तराषाढ़, २२. श्रवण, २३. घनिष्ठा, २४. शतभिषा, २५. पूर्वभाद्रपद, २६. उत्तरभाद्रपद, २७. रेवती।

इन २७ नक्षत्रों के अतिरिक्त एक नक्षत्र और भी होता है जिसे अभिजित कहते हैं।

कहावत कृषि संबंधी है

अ० – धान हमेशा अद्रा नक्षत्र में ही बोना चाहिए, कहीं यदि पुनर्वस में बोया गया तो बजाय धान के भूसी निकलेगी और कहीं चिरैया में बोया तो उसमें कुछ भी पैदा न होगा।

'अबै तो बेटी बाप के घरे अहै'।

श० – बाप के घर अहै–मैके में रहना।

जब किसी दूसरे की वस्तु अपने अधिकार में हो तो कहावत चरितार्थ की जाती है।

अ० – बेटी पराई हो गई तो क्या हुआ, अभी तो अपने यहाँ से गई ही नहीं इसलिए अधिकार तो अभी पूरा ही है। यानी कि अपनी वस्तु अपने पास ही होना, काम बनाने का कुछ मौका बचा रहना।

'अपने हथवा कै पोई, बलि–बलि जांव'
जस के रुचै तस के खांव'।

श० – बलि–बलि जांव–न्योछावर हो जाना, प्रसन्न हो जाना/रुचै–अच्छा लगना, पसंद आना।

कहावत भोजन विषयक रुचि के ऊपर कही गई है।

अ० – अपने हाथ का बनाया हुआ खाना इतना रुचिकर होता है कि जैसा मन भावे वैसा बना–बना के खाये।

'अमृत मट्ठा एक दवाई
रक्तचाप हो लो या हाई'।

श० – रक्तचाप–खून का दौड़ा। लो – नीचे होना/ हाई–ऊपर होना।

कहावत स्वास्थ्य संबंधी है, रक्तचाप के अधिक या कम होने पर।

अ० – कहते हैं शरीर में जब खून का दौड़ा अधिक बढ़ जाय या कम हो जाय तो मट्ठा पीने से अधिक लाभ होता है। ऐसे रोगी को मट्ठा अवश्य पिलाना चाहिए।

'अपने घरे मनई दिया बारि के तो दुसरे के घरे दिया बारै जात'।

अ० – अपने घर आदमी पहले उजाला करता है तो कहीं दूसरे के घर दिया जलाने पहुँचता है। यानी

अपना भी भला हो और दूसरे के भलाई का भी ध्यान रखे मगर पहले अपना पूरा कर ले तो दूसरों का काम करने जाना चाहिए।

अगहन दवादस मेघ अकास, अषाढ़ बरसै अखनाधार।

श० – दवादस–दवादशी की तिथि/अखनाधार–घनघोर बरसात का होना।

कहावत आसमान में बादलों को देखकर वर्षा होने के लक्षण का अनुमान लगाने पर कही गई है।

अ० – कवि भड्डरी का कथन है कि यदि अगहन की दवादशी को आकाश में बादलों के समूह चारों ओर घुमड़ रहे हैं, तो आषाढ़ में पानी घनघोर बरसने के आसार हैं।

कहावत के अनुसार यहाँ पर तिथियों की जानकारी होना बहुत आवश्यक हो जाता है, अतः हमारे हिन्दू धर्मशास्त्र के अनुसार पक्ष एवं तिथियाँ निम्नांकित हैं।

पक्ष – एक माह में दो पक्ष होते हैं

१. उजाला पाख, इसे शुक्ल पक्ष भी कहते हैं।

२. कृष्ण पक्ष, इसे अंधेरा पक्ष भी कहते हैं।

उजाले पाख में चंद्रमा धीरे–धीरे बढ़ने लगता है तथा अंधेरे पाख में चन्द्रमा धीरे–धीरे घटने लगता है। अंधेरे पाख की अंतिम १५वीं तिथि अमावस्या कहलाती है।

उजाले पाख की अंतिम तिथि पूर्णमासी कहलाती है। इस दिन आसमान में चंद्रमा सम्पूर्ण रूप से उदित रहता है, फिर धीरे–धीरे घटने लगता है।

शेष १४ तिथियाँ निम्नांकित हैं।

१. परेवा (प्रतिपदा), २. दुइज (द्वितीया), ३. तीज (तृतीया), ४. चौथ (चतुर्थी), ५. पंचमी, ६. छठ (षष्ठी), ७. सप्तमी, ८. अष्टमी, ९. नौमी, १०. दसमी, ११. एकादसी, १२. दुआदसी, (द्वादशी) १३. तेरस (त्रयोदशी), १४. चौदस (चतुर्दशी)

'अद्रा रेड़ पुनर्वस पाती
लाग चिरैया दिया न बाती'।

श० – अद्रा–नक्षत्र। रेंड़–धान का मोटा होना, पाती–पत्ती।

कहावत धान की खेती के सम्बन्ध में कही गई है।

अ० – धान की फसल अद्रा नक्षत्र में बोने से बहुत बढ़िया होती है। मगर पुनर्वस नक्षत्र में बोने से मात्र पत्ती ही हाथ आती है। चिरैया में बोने पर पत्ती भी हाथ नहीं आती घर में दिया जलाने की भी सामर्थ्य नहीं होती है।

'अषाढ़ जोते लड़के बारे,
सावन भादों तें हलवाहे,
कुवार में जोते किसान क बेटा,
तब ऊँचे हो, होनहारे'।

श० – लड़के–बारे–बड़े बच्चे, छोटे बच्चे, हलवाहे–हल चलानेवाला। किसान का बेटा–किसान का लड़का, होनहारे–होनहार, बहुत बढ़िया।

अ० – खेती के लिए आषाढ़ मास इतना अच्छा माना गया है कि यदि इस माह में किसान के बड़े और छोटे–छोटे बच्चे भी खेतों में हल चलाकर अनाज बो दें तो खेत जम कर हरा–भरा हो जायेगा और सावन मास में जवान हलवाहे को लगना होता है। क्वार मास में किसान का बेटा ही खेत संभाल सकता है। कवि घाघ का कहना है कि खेत को बोने के योग्य बनाना, बाद में सिंचाई, पताई, निराई करना एक महान कला है। एक किसान ही समझ सकता है कि खेत किस प्रकार से जोता–बनाया जाय कि मिट्टी भुरभुरी हो जाय, किस प्रकार से खेतों की अनावश्यक घासों को निकाला जाय कि खेत बलशाली बन सके। किसी ने बहुत सही कहा है कि 'माटी के साथ माटी बन जाय क परत है।'

अदरा माँ जो बोवै साठी
दुखै मार निकारै लाठी।

श० – साठी उस धान को कहते हैं जो बोने के साठ दिनों बाद तैयार हो जाता है।

अ० – अद्रा नक्षत्र में जो साठी धान बोते हैं वे किसान दुःख को मार भगाते हैं। यानी फसल बहुत बढ़िया होती है।

अगाई, बोआई, सवाई, लवाई।

श० – अगाई–आगे, पहले, सवाई–सवाया।

अ० – जो किसान आगे बोता है, वह उतना ही सवाया काटता है। घाघ कवि ने एक स्थान पर कहा है, आगे की खेती आगे–आगे, पाछे की खेती भागे–भागे।

अब्बर खेती जो जुट्ठी खाय
सड़े बहुत तो बहुत मोटाय।

श० – अब्बर–कमजोर/ जुट्ठी–खाद।

अ० – कमज़ोर खेती बेकार होती है, कमजोर खेत में जितनी ही खाद पड़ती और सड़ती है खेत उतना ही उपजाऊ होता है।

'अगहन बरसे हून पूस बरसै दून
माघ बरसै सवाई, फागुन बरसै मूर गंवाई'।

श० – हून–बहुत ज्यादा/ दून–दुगना/ मूर–मूल, असल धन।

कहावत किस माह में वर्षा होने से लाभ होगा तथा किस माह की बरसात से हानि होगी, इस विषय पर कही गई है।

अ० – अगहन में वर्षा होने से अनाज दूना होगा, पूस में पानी बरसने से फसल अच्छी होगी, माघ के बरसने से सवाया अनाज होगा, मगर यदि फागुन में पानी बरसा तो जो कुछ अनाज बीज के रूप में बोया वह भी न मिल पायेगा।

'अंबाझोर चले पुरवाई, तब जानो बरखा ऋतु आई'।

श० – अंबाझोर–झकझोर कर पूरे वेग के साथ बहने वाली हवा/पुरवाई–पूरब दिशा से चलने वाली हवा। वर्षा होने के लक्षण पर कहावत कही गई है।

अ० – पुरवा हवा यदि पूरे वेग के साथ चले तो समझो कि पानी तेजी के साथ बरसेगा।

'अगहन सरवा भर, फिर करवा भर'।

श० – सरवाभर–सरवा–मिट्टी का एक पात्र। परई। चिल्लूभर पानी/करवा भर – मिट्टी या धातु का टोंटीदार लोटा।

अ० – अगहन माह में तालाब का पानी सूखकर चिल्लूभर यानी बहुत थोड़ा रह जाता है। फिर उसके बाद बढ़कर लोटाभर हो जाता है

अगहन में ना दी थी कोर
तेरे बैल क्या ले गये चोर।

श० – कोर–खेत की गोड़ाई।

खेत की गोड़ाई कम होने पर कहावत चरितार्थ की गई है।

अ० – अगहन में खेत की गोड़ाई क्यों नहीं की थी? क्या तुम्हारे बैलों को चोर उठा ले गये थे?

अमहा–जबहा जोतो आय
भीख मांगि के जाहु बिलाय।

श० – अमहा–गादर/जबहा–जिस बैल के थूथुन निकले हों या ओठ मोटा हो।

अ० – घाघ कवि के कहने के अनुसार बैलों को पहचान कर खरीदो क्योंकि अमहा, जबहा बैल भला खेत की जोताई क्या करेंगे? खेत में कुछ अनाज न होने से भीख मांगने तक की नौबत आ जायगी।

'अद्रा–भद्रा–कृतिका आद्रा रेख मघाहि।
चंदा उवे दूज को, सुख में नरा अघाय'।।

अ० – कहावत से स्पष्ट है कि उपरोक्त नक्षत्रों में यदि दूज का चंद्रमा निकलता है तो समझो कि मनुष्य को सुख मिलेगा। जनता सुखी होगी।

ऐसा कवि भड्डरी का कहना है।

अखैतीज के दिना जौ गुरु होवै संजूत।
तौ भाख्यों भड्डरी उपजै नाज बहूत।।

श० – अखैतीज–बैशाख मास की तीज/गुरु–बृहस्पतिवार। कहावत दिन व तिथियों की समानता परं कही गई है।

अ० – यदि बैशाख अक्षय तृतीया को दिन बृहस्पतिवार पड़े तो अन्न खूब पैदा होता है

ऐसा कवि भड्डरी का कथन है।

'असनी गलियाँ अन्न बिनासै, गली रेवती जल को नासै।
भरनी नासै तृनी सहूतो कृतिका बरसे अन्न बहूतो'।।

श० – असनी – अश्वनी नक्षत्र/रेवती–नक्षत्र/ नासै–नाश करे/भरनी–नक्षत्र/तृनी–तिनका/ सहूतो–सूखा/कृतिका–कृतिका नक्षत्र/बहूतो– बहुत।

अ० – यदि चैत मास में पानी अश्वनी नक्षत्र में बरस जाय तो बरसात के अंत में सूखा पड़ता है। यदि रेवती में बरसे तो नाम को ही पानी बरसता है, यदि

भरनी में बरसे तो कठिन सूखा पड़ता है और यदि कृतिका में बरसे तो अन्न खूब होगा।

'अगहन पंचमी मेघ घटा, भरि सावन मां कौन मिटा।
माघे सत्तमी मेघ बदरिया, चारो मास बहे जलधरिया'।।

अ० – यदि अगहन मास की पंचमी तिथि को घटा घिरी हो तो सावन में पानी खूब बरसेगा, यदि माघ की सप्तमी को मेघ छाये हों, तो बरसात के चारों महीने भर पानी बरसेगा।

'असनी गल, भरंनी गल गलियों ज्येष्ठा मूर।
पुरवाषाढ़ा बचै धूल बिन, उपजै सातौं तूर'।।

श० – असनी–भरनी, ज्येष्ठा, मूर–सभी नक्षत्रों के नाम हैं।

पुरवाषाढ़ा–नक्षत्र/सातौं तूर–सातों प्रकार के अन्न।

अ० – यदि अश्वनी, भरनी, ज्येष्ठा, मूल नक्षत्रों में घनघोर वर्षा हो चुकी है तो पूर्वाषाढ़ नक्षत्र में धूल समाप्त हो चुकी होगी। फलतः सातों प्रकार के अन्नों की खूब उपज होगी। जैसे–चना, मटर, गेहूँ, जौ, ज्वार, मक्का, बाजरा।

अगिन कोन जौ वहै समीरा, पड़े अकाल दुःख सहै सरीरा।
उत्तर से जल फूह परै, चूहा, साँप दुइनों अवतरै।।

श०– अग्निकोन–पूर्व– दक्षिण दिशा का कोना/अवतरै–पैदा हों।

कहावत अकाल के लक्षण पर कही गई है।

अ० – यदि वर्षाकाल में हवा पूर्व दक्षिण के कोने से बहती है तो अकाल पड़ने के लक्षण हैं या उत्तर दिशा में झींसियाँ पड़ें तो सांप चूहे दोनों बहुत बढ़ जाते हैं।

नोट– उपरोक्त कहावत में अग्निकोण आया है, अतः दसों दिशाओं के नाम निम्नांकित हैं–

१. अग्निकोण–पूर्व, दक्षिण का कोना, २. ईषानकोण–उत्तर पूर्व का कोना, ३. नैऋत्य कोण, दक्षिण, पश्चिम का कोना, ४. वायव्य कोण–पश्चिम उत्तर का कोना, ५. पूर्व, ६. पश्चिम, ७. उत्तर, ८. दक्षिण, ६. नीचे, १०. ऊपर।

अगुवा सहै बाँस कै मार।

श० – अगुवा– विवाह या शादी में दोनों पक्षों के बीच जो सम्बन्ध स्थापित करवाता है, विवाह करवाने वाला व्यक्ति, विवाह में विचौलिया करने वाला व्यक्ति/विवाह के बाद दोनों पक्षों में कभी भी किसी प्रकार का सम्बन्ध बिगड़ता है तो उस झगड़े, झंझटों के समझौते के लिए वही बीच वाला आदमी ही बुलाया जाता है तथा सभी उत्पन्न समस्याओं का दोषी बिचवलिया व्यक्ति ही माना जाता है। इस प्रकार की कोई समस्या जब भी उठती है, तो कहावत चरितार्थ होती है।

अ० – अगुवा ही बाँस की मार सहता है उसके ऊपर ही सारा दोष देकर उसे दण्डित किया जाता है।

"अब कथाकारी भये हैं बैपारी।"

श० – कथाकारी–किस्सा कहानी लिखने वाले, साहित्यकार/बैपारी–व्यापार करने वाले।

अ० – आज के समय में कथा–कहानी लिखने वाले साहित्यकार "स्वान्तःसुखाय" के स्थान पर अब साहित्य लेखन को पैसा कमाने का पेशा बना लिये हैं। आज लेखन लोक–कल्याण के लिये न होकर, पैसा कमाने का एक साधन बन गया है। लेखक व्यापारी बन बैठे हैं। तथाकथित साहित्यकार आज फुटपाथों पर, होटलों में होटलबाजी करता साहित्य सृजन कर रहा है। सरेआम वे फुटपाथी साहित्य लिखकर रोजी–रोटी का साधन बनाये हुए हैं।

"अब कुकरौ से बत्तर भा, पतरी चाटै मनई"।

श० – बत्तर–बुरा, नीच/पतरी–पत्तल।

आज की ग़रीबी, भुखमरी तथा कमरतोड़ मंहगाई को देखकर अनायास ही कहावत लोगों के मुँह से निकल ही जाती है।

अ० – भूख की आग से जलता हुआ मनुष्य पेट की क्षुधा से इतना विवश हो गया है कि बड़े–बड़े शहरों में बड़े आदमियों के द्वारा खाये गये चाट–पकौड़ों के पत्तों को उठा–उठा कर चाट रहा है। यह वास्तविक स्थिति, आंखो देखी घटना है तो इतनी दयनीय व सोचनीय होती है कि कहते नहीं बनता।

"अकेल मियां रोवें कि कबर खनैं"।

श० – कबर–मुर्दे गाड़ने को जो ज़मीन खोदी जाती है।

जब कोई आदमी अंदर बाहर दोनों स्थानों के काम में अकेले पड़ जाता है, तो यह कहावत चरितार्थ होती है।

अ० – किसी परिवार में कोई मर गया हो तो भला मियां जी अकेले ही क्या–क्या करें ? रोये कि मुर्दा गाड़ने के लिए कब्र खोदें। यानी आने–जाने वालों से मातम मनायें कि कब्रिस्तान में मुर्दा के लिए कब्र खोदें?

"अपनी पदनी उर्दन दोख"।

पदनी– पेट से हवा निकलना/उर्दन–उर्द जो खाने में थोड़ा भारी तथा बादी होता है।

अ० – अपना पेट तो हमेशा खराब रहता है। गैस बराबर निकलती रहती है और उसमें जब उर्द की चीज़ खा लिया तो सारा दोष उर्द को ही दे दिया। अपना दोष न मानकर दूसरे पर दोष डाल देना।

अद्रा बरसै पुनर्वस जाय, दीन अन्न कोऊ नहिं खाय।

श० – अद्रा, पुनर्वस–दोनों ही नक्षत्रों के नाम हैं।

अ० – आर्द्रा में यदि पानी बरस कर पुनर्वस में चला जाय तो ऐसे अनाज को यदि कोई देता भी है तो उसे कोई नहीं खाता है। वह अनाज विषैला माना जाता है।

अकेले पूत घर कै करै कि बाहेर कै।

श० – पूत–पुत्र, लड़का।

अकेले आदमी को जब चारों ओर काम रहता है तो कहावत कही जाती है।

अ० – अकेला लड़का घर की देखभाल करे कि बाहर की जिम्मेदारियाँ संभाले ?

अधजल गगरी छलकत जाय,
भरी गगरिया चुप्पे जाय।

श० – अधजल–आधा पानी भरा/छलकत–थोड़ा–थोड़ा करके पानी का ऊपर आना/चुप्पे–चुपचाप, बिना छलके।

जब कोई अवगुणी, असंपन्न, व्यक्ति अपने यश का बड़ा गुणगान करने लगता है, लंतरानी हाँकता है तो ऐसे आदमी की तुलना अधजल गागर से ही दी जाती है और जो व्यक्ति सर्वगुण सम्पन्न होता है, वह गंभीर रूप से रहता है उसकी तुलना भरे घड़े से दी जाती है जो रास्ते में भरा हुआ घर तक आ जाता है।

अ० – अधजल गगरी जिसका पानी लेकर चलते समय बार–बार मुँह तक आ जाता है, छल–छल छलक उठता है, वह अपना ओछापन बराबर दिखाती है मगर मुँह तक भरी गागर, सदैव चुपचाप, सम्पन्न व्यक्ति की तरह बिना छलके घर तक आ जाती है।

"अधेला न देय अधेली देय"।

श० – अधेला–पहले के ज़माने में एक सिक्के को कहते थे जो एक पैसे में दो होता था/अधेली–अधेले का स्त्रीलिंग है।

जब किसी को पर्याप्त पैसा या किसी वस्तु का मांगने पर संतोषजनक मूल्य नहीं मिलता है तो खीझ में कहावत कहते हैं।

अ० – अधिक या पर्याप्त मूल्य न देकर कम पैसा देना।

"अपनी–अपनी खाल मां सबै मस्त रहैं"।

श० – खाल–चमड़ा, ऊपरी कबर, खोल/ मस्त–मगन, खुश, प्रसन्न/

अपनी वस्तु में, अपने घेरे में, जिसके पास जो भी है, आदमी उसी में संतोष करता है।

अ० – जो कुछ अपने पास हो, उसी में संतोष करने से आदमी प्रसन्न रहता है।

"अपना घर दूर से सूझत है"।

जब आदमी घर से बाहर रहता है तो उसे अपने घर की सुख सुविधायें याद आती हैं। जैसे किसी ने कहा है "खटिया पकड़ने के बाद ही स्वास्थ्य का महत्व पता लगता है"। कहावत भी इसी आधार पर कही गयी है।

अ० – अपने घर का इतना प्रेम होता है कि वह दूर रहो तब भी दिखाई देने लगता है। घर का सुख, प्रेम, अपनत्व सभी की यादें आ जाती हैं।

"अपनी गरज लोग गदहा चरावत"।

श० – गरज–गर्ज, अपने मतलब पर।

कहते हैं कि गर्जमंद की खुशामद से सावधान रहना चाहिए। अतः जब कोई व्यक्ति गर्ज के कारण सही–गलत काम करने लग जाता है, तो ऐसे व्यक्ति को देखकर कहावत कही जाती है।

अ० – कहा है कि अपना काम किसी से कराने के लिए आदमी और तो और यहां तक नीच काम पर उतर आता है कि वह गधा तक चराने लग जाता है। यानी नीच से नीच काम तक करने में नहीं हिचकता है।

"अपनी पगड़ी अपने हाथ"।

श० – पगड़ी–इज्जत/अपने हाथ–अपने वश में।

जब भी कहीं किसी के द्वारा या छोटों से, किसी नीच व्यक्ति से इज़्ज़त जाने का प्रश्न उठता है, तो कहावत बड़े सटीक व व्यावहारिक ढंग से प्रयोग में आती है।

अ० – अपनी मान, मर्यादा, लज्जा अपने हाथों में ही सुरक्षित रह सकती है। किसी ने कहा भी है "खान, पान, सम्मान का सदा राखिये ध्यान" तथा "सील ढील जब देखिये तुरत कीजिये कूच"। इस तरह से अपने मान, अपनी मर्यादा के प्रति आपको सदैव सचेत रहना चाहिए।

गांवों में एक कहावत कहते हैं "न कीचड़ में ढेला फेंको न छिट्टा अपने ऊपर पड़ी"। यानी कि न व्यर्थ में किसी नीच आदमी के मुँह लगो, न गाली–गलौज गंदी बातें सुनने को मिलेंगी।

"अल्पाहारी सदा सुखी"।

श० – अल्पाहारी–कम खाने वाला।

कहावत भोजन सम्बन्धी है।

अ० – कहा गया है कि कम खाने वाला व्यक्ति सदा आराम से रहता है। इसी पर 'भगवानदास वामन' ने कहा भी है,

पेट की मोटर में भोजन की सवारी कम भरो।
फेल हो जायगी, ठूँस–ठूँस भरे जाने के बाद"।।

"असर्फिन पर लूट, कोयला पर मोहर छाप"।

श० – असर्फिन– सोने का कीमती सिक्का/मोहर छाप–मोहर लगाकर अपनी वस्तु प्रमाणित करना, प्रतिबंध रखना।

अ० – कोई व्यक्ति जब छोटी–छोटी वस्तुओं के पीछे बेहद परेशान रहे तथा कीमती बड़ी वस्तु की कोई खोज खबर न हो, तो ऐसी स्थिति में लोग कहावत को महत्व देते हैं।

अ० – मोहर जैसी कीमती वस्तु तो लुटी जा रही है और कोयले जैसी सस्ती वस्तुओं पर मोहरों के निशान लगाये जा रहे हैं, उस पर रोक हो रही है।

"अढ़ाई चाउर अलगै चुरत रहै"।

श० – अढ़ाई–थोड़ा सा, चुरत–पकना।

जब कोई अपना एक अलग मनोविचार बनाता रहता हो या सभी की राय सलाह में अपनी भी एक राय सही–गलत बकता जाय, तो यह कहावत लागू होती है।

अ० – कोई परवाह करे न करे, विचारों का कोई महत्व हो न हो, मगर अमुक व्यक्ति की अढ़ाई चावल की खिचड़ी अलग पकती रहती है। बड़े बुजुर्गों का कहना है, बिना मांगे राय नहीं देनी चाहिये।

"अबै गदहा खेत कम चरै अहै"।

अधिक नुकसान की संभावना होने की आशंका में कहावत कही जाती है या किसी को जब हानि के डर से सचेत करना होता है तो कहते हैं।

अ० – अभी तो फिर भी ग़नीमत है, अभी गधा खे़त कम खाये है और अभी बचाव करने का मौका है। सचेत हो जाओ अभी काम कुछ भी नहीं बिगड़ा है।

"अमीर क जान से प्यारी, गरीब क जान भारी"।

श० – जान से प्यारी–पैसा/जान भारी–पैसा

अ० – कहावत अमीर–गरीब के पैसे के प्रति कही गई है। यदि पैसा अमीर के पास है तो वह उसे अपने प्राणों से भी कहीं अधिक प्यारा होता है और वही पैसा कहीं यदि गरीब आदमी के पास है तो उस ग़रीब की

जान सांसत में पड़ जाती है कि कहां रखूँ क्या करूँ ? पैसा अमीरों के शान शौकत, ऐश आराम का साधन है तथा ग़रीब के लिए जाने बवाल है।

"अपुने खाऊँ, बिलरिया लगाऊँ"।

जब कोई आदमी किसी वस्तु को देखकर ललचा जाय, खाना चाहे तथा चुपके से खाने की चोरी, छिपाना ही चाहे तो उसका मन क्या कहता है ? यानी अपनी बात को दूसरों के सिर मढ़ना।

अ० – वह सोचता है कि खुद खा कर बिल्ली का नाम लगा दूँ ताकि अपनी बचत हो जायगी। तात्पर्य यह कि अपना दोष दूसरे के सिर मढ़ना।

अधकचरी विद्या दहै, राजा दहै अचेत।

ओछे कुल तिरिया दहै, दहै कलर का खेत।।

श० – अधकचरी–अधूरी, अधूरा ज्ञान का होना, विद्या–शिक्षा, दहै–जलावे, अचेत–अपनी ज़िम्मेदारियों के प्रति जानकारी न होना, लापरवाही ओछे–कम बुद्धि का आदमी, नीच, मूर्ख, निकृष्ट, तिरिया–नारी, स्त्री, कलर–कपास।

कवि घाघ ने इस सिद्धान्तपूर्ण कहावत के द्वारा सही चेतावनी तथा सीख दी है।

अ० – किसी भी विषय में अधूरी जानकारी का होना, राजा का अपने राज्य से अनजान रहना, राज्य में क्या हो रहा है, इसकी जानकारी न होना तथा नीच कुल की कन्या किसी ऊँचे ख़ानदान में आ जाना और खेत में कपास की खेती करना ये सभी कार्य जीवन में कष्टकारक होते हैं। अपने जीवन में मनुष्य को इन सभी बातों का मूरा–पूरा ध्यान होना चाहिए।

जैसे–अधूरी विद्या के प्रति है, **"नीम हकीम खतरे जान"** यानी कि अधूरे ज्ञान का हकीम (डाक्टर) किसी भी मरीज की जान ले सकता है।

अचेत राजा, जिसे देश–काल की जानकारी ही नहीं है, वह अपनी शासन व्यवस्था से अनजान है, तो राज्य की क्या देख–भाल कर सकता है ? किसी ने कहा है–

कसीदे से न चलता है, न ये दोहे से चलता है।
समझ लो खूब कारे–सल्तनत लोहे से चलता है।।

इसी प्रकार से संस्कृत में एक श्लोक है–

दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वादण्ड एवाभिरक्षति।

दण्डः सुप्तेषु जागर्ति, दण्डः धर्मावदुर्बुधाः।।

अ० – दण्ड ही सारी प्रजा का शासन करता है। दण्ड ही सबकी रक्षा करता है, वही सोते हुए पुरुषों को जगाता है। अतः बुद्धिमान लोग दण्ड को ही धर्म मानते हैं।

इसी प्रकार से नीच कुल की कन्या जब ऊँचे कुल में आ जाती है, तो सारे कुल खानदान की मान, मर्यादा का नाश करके तो छोड़ती है। रहीम कवि के शब्दों में देखिये–

रहिमन ओछे नरन सों, तजो बैर औ प्रीत।
काटे–चाटै स्वान के, दुहूँ भाँति विपरीत।।

कवि वृन्द के शब्दों में –

कुछ कहि नीच न छोड़िये भलो न वाको संग।
पत्थर डाले कीच में, उछरि बिगारै अंग।।

इसीलिए कहा गया है कि विवाह सम्बन्ध करते समय, कन्या के कुल, परिवार, चाल–चलन, आचार–विचार, बात–व्यवहार का अवश्य पता लगा लेना चाहिए, वर्ना बड़ा धोखा हो जाता है। कहावत में कपास की खेती में भी हानि बतायी गयी है।

अगस्त ऊगा मेघ न मंडे
जौ मंडे, तौ धार न खंडे।

श० – ऊँगा–उगना, अगस्त एक तारे का नाम है, मेघ–बादल, मंडे–मँडराना, धार–पानी।

कहावत बरसात के ऊपर कही गई है।

अ० – अगस्त तारा जब आकाश में दिखाई देता है, तो पानी नहीं बरसता। तुलसीदास.जी के शब्दों में–

उदित अगस्ति पंथ जल सोषा,

जिमि लोभहि सोषइ संतोषा।

अतः जब तक अगस्त तारा उदित नहीं होता है तब तक पानी बरसता है।

"असाढ़ सुदी हो नौमी ना बादल ना बीज।
हर फारि ईंधन करौ, बैठे चाबो बीज।।

श० – सुदी–उजाला पक्ष, बीज–बिजली, ईंधन–जलाने की लकड़ी, चाबो–चाभो, खाओ, बीज–बोने वाला बिया।

अ० – यदि असाढ़ की उजाले पाख की नौमी को आकाश में बादल–बिजली नहीं है तो, खेतों में हल चलाना बेकार है। तब हल को फाड़ कर चूल्हे में जलाने की लकड़ी बना डालो और आराम से घर में बोने वाला बीज भी खा कर बैठो। कहा है– "**तेरा कातिक, तीन असाढ़**" यानी यदि आषाढ़ में तीन दिन में खेत बो देना है तो पानी का बरसना बहुत आवश्यक होता है।

असाढ़ मास पुनि गौना, ध्वजा बाँधकर देखो पौना।
जो पै पवन पुरुब से आवै, बरसै मेह अन्न झरि लावै।।
अगिन कोन जौ बहै समीरा, पड़ै अकाल दुःख सहै सरीरा।
दक्षिण बहै जलद जलभीरा ताहि समय जूझै बलवीरा।
तीरथ कोन बूँद ना परै, राजा परजा भूखन मरै।
पश्चिम बहै नीक करि जानो, पड़ी तुषार के तेज उरआनो"।

कहावत वायु परीक्षा तथा उस वायु का परिणाम या प्रभाव–वर्षा या खेती पर क्या पड़ेगा, से सम्बन्धित है। किस दिशा से हवा बहेगी तो अन्न की कैसी उपज होगी ? राजा–प्रजा पर क्या बीतेगी ? कहावत इसी पर कही गई है।

अ० – आषाढ़ मास के अंत में बाँस में पताका (झंडा) बाँध कर देखो कि हवा किस तरफ की है। पूर्व दिशा से चल रही होगी तो पानी भी खूब बरसेगा तथा अन्न भी खूब पैदा होगा।

अग्नि कोण से यदि हवा चल रही है तो प्रजा को कष्ट होगा। यदि वायु दक्षिण दिशा से बह रही है तो वर्षा तो होगी, मगर युद्ध की आशंका भी है। यदि हवा नैऋत्य कोण से चलेगी तो न वर्षा ही होगी न प्रजा का पेट ही भरेगा। पश्चिम दिशा से चलने वाली वायु से पाला पड़ेगा तथा मौसम बहुत खराब रहेगा।

अपने घरे कै सूख भल, आन कै घर कै घिवचुपरी नाय"।

श०– सूख– सूखी, बिना दाल, सब्जी के / आन– दूसरा / घिव चुपरी–जिस रोटी में घी लगाया गया हो।

कहावत व्यावहारिक है।

अ० – अपने घर की रूखी–सूखी रोटी में जो सुख, शान्ति और संतोष मिलता है, वह दूसरे के घर के व्यंजन में भी नहीं मिल पाता। किसी महान् कवि ने कहा है–

ऐश्वर्य तीनों–लोक का संतोष के सम है नहीं,
संतोष जिसके पास है, उस सम धनी जग में नहीं।

इसी प्रकार चाणक्य ने कहा है–

"संतोषामृत तृप्तानां यत्सुखं शान्तचेतसाम्।
न च तद्धनलुब्धानामितश्चेतश्चधावताम्"।।

अ० – संतोष रूपी अमृत से तृप्त, शान्त लोगों को जो सुख होता है, वह इधर उधर दौड़ने वाले धन के लोभियों को नहीं प्राप्त हो पाता।

"आकाश–पाताल क अंतर है"।

किसी वस्तु में जब काफी फ़र्क दिखाते हैं या बहुत ज्यादा बदलाव रहता है तो कहावत कहते हैं।

अ० – दो चीजों की तुलना में इतना ज्यादा अंतर है जितना ज़मीन–आसमान की दूरी है। यानी काफी फर्क होना, अधिक से अधिक अंतर होना।

"अच्छर से भेंट नाहीं, नाव डाकखाना"।

श० – भेंट–मुलाकात / डाकखाना–जिसमें पत्र डाले जाते हैं।

कहावत नाम की विडम्बना पर कही गई है।

अ० – पढ़े लिखे एक अक्षर नहीं मगर नाम डाकखाना है। यानी नाम अधिक है काम तथा गुण पैसे भर को भी न हो। कहावत व्यंग्य में कही गई है। यानी पढ़े एक अक्षर नहीं है और बनकर ऐसी संस्था बैठे हैं जहाँ हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी सभी भाषाओं की जानकारी आवश्यक है।

"अउबै तौ जाबै कहाँ"।

अ० – क्रोध में बहुत कुछ अक–बक कह डालना। यदि मेरे वश में नहीं रहे तो जाओगे कहाँ ?

"अपने खाये बिहान अहै"।

अ० – जब अपना पेट भरा हो, तभी तो रात बीतती है और सुबह होती है, समय व दिन बीतते हैं। पेट की क्षुधा न शांत हो तो समय नहीं कट पाता। इसी प्रकार से अपने सुख से ही सुख है। "आप सुखी संसार सुखी"।

"अनदोषी क दोष जिनकी गति न मोष"।

श०– अनदोषी–जो दोषी न हो/ दोष–गलती/ गति–फल, नतीजा/मोष–मोक्ष।

अ० – जो दोष रहित हो उसके दोष में न उसको अपने किये का अच्छा–बुरा फल ही मिलता है और न कोई सजा ही झेलनी पड़ती है। अनजाने में किया गया पाप पुण्य बराबर होता है।

"अपने किये का क्या इलाज है"।

अ० – जो स्वयं ही गलती करे उसका भला क्या दंड है ? यानी कि दूसरों के द्वारा की गई गलती का तो सुधार दूसरा कर भी सकता है, दूसरे को दंड भी दिया जा सकता है मगर यदि खुद ही गलती करे तो वह तो अपने ही द्वारा सुधर सकता है। गलती करने वाला अपनी गलती मान ले, यही उसका प्रायश्चित है।

अगिन जवासा गाड़ीवान
छेड़ी छीपी ऊँट कोंहार,
बेस्या बानर बानिन
दस मलीन, जौ बरसै पानी।

श० – अगिन–आग, जवासा–एक प्रकार की घास, छेड़ी–बकरी, छीपी–रजाई का फ़र्द छापने वाले, वेस्या–वेश्या, पतुरिया, बानर–बंदर, बानिन–बनिया की स्त्री।

अ० – कवि घाघ का कथन है कि उपरोक्त दस लोग पानी बरसने से बेहद दुःखी होते हैं। उपयुर्क्त दस लोगों को पानी बरसने से हानि की आशंका होती है।

अपनी मोमबत्ती जलाना ठीक है
बजाय दूसरे को कोसा जाय।

अ० – अपनी परिस्थितियों से स्वयं निपटना कहीं अच्छा है, बजाय दूसरे को गाली दी जाय। रवीन्द्र नाथ टैगोर के शब्दों में–

अप्प दीपो भव।

यानी अपना प्रकाश स्वयं बनो। दूसरों पर क्रोध या खीझ उतारने पर तुम्हें कुछ भी न मिलेगा।

अपने से बड़े व गुणवान जन से याचना,
अच्छी लगती है, भले ही वह असफल हो जाय।

श० – जन–आदमी, याचना–मांगना।

अ० – कहावत कवि कालिदास जी की है जो शिक्षाप्रद होने के साथ ही सिद्धान्तवादी भी है। यानी अपने से बड़े व गुणी व्यक्तियों से कुछ मांगना अच्छा लगता है, भले ही उसमें सफलता न मिल पाये।

"अच्छी बात का विरोध करना ठीक नहीं है"।

कवि कालिदास की लोकोक्तियाँ संसार भर में प्रसिद्ध हैं।

अ० – जिस प्रकार से सत्य–सत्य होता है, उसी प्रकार से अच्छी बात सदैव अच्छी ही होती है। इसलिए अच्छी, शिक्षाप्रद बातों का विरोध नहीं करना चाहिए।

अपनी आंख में उंगली करके रोने का कारण पूछते हो।

कवि कालिदास की कहावत से तुलसीदास जी की पंक्ति स्मरण हो आई–

जानि–जानि नर करइ ढिठाई,
बूड़ा रहइ थाह ना पाई।

यानी जानबूझ कर गलती करना। इसी प्रकार उपरोक्त कहावत है।

अ० – अपने ही हाथ से अपनी आँख खोंच करके रोते हो, उस पर दूसरे से अपने रोने का कारण भी पूछते हो। अपनी गलती को स्वयं न मान कर दूसरे के मत्थे मढ़ना।

अच्छे बर से ब्याह करके बाप की चिंता दूर हो जाती है।

कवि कालिदास की लोकोक्तियाँ जनता के मनोभावों के एकदम निकट पहुँचा देने वाली होती हैं।

अ० – यह स्वाभाविक ही है कि कन्या के विवाह की चिंता माता–पिता को कितनी अधिक होती है किंतु जब कन्या को घर, वर अच्छा मिल जाता है, तो पिता निश्चिन्त हो जाता है। कन्या के विवाह विषयक कहावत है–

"घर देखो, वर देखो, दिया का तर देखो"।

यानी घर, वर और तब के ज़माने में जहाँ शाम को दिया जलता हो वह स्थान भी देखना चाहिए कि लक्ष्मी का वास है कि नहीं। पहले समय में नारियाँ 'सांध्यदीप' जलाकर दरवाजे के ताख पर रखा करती थीं जो सम्पन्नता का प्रतीक माना जाता था।

अति संचय करना ठीक नहीं, रेशम का कीड़ा काकून बनकर स्वयं उसी में फँस जाता है।

श० – काकून–कँगनी, चारों ओर से घिर जाना।

कहावत, अति के ऊपर कही गई है। अति किसी काम में न करना चाहिए। किशोरीदास वाजपेयी के शब्दों में–

अति की भली न बात कोउ कैसी हू संसार।
होत तुरत आचार हू, अति सो अत्याचार।।

अ० – अति सम्पत्ति का इकट्ठा करना अच्छा नहीं होता है, जैसे रेशम का कीड़ा अधिक रेशम बनाने के कारण चारों ओर से फँसकर स्वयं विवश हो जाता है।

अपनी इज्जत खुद करो,
दूसरों की इज्जत भी करो।

अ० – अपनी इज्जत तो करो ही, मगर दूसरों की इज्जत भी करना सीखो। जब दूसरों को सम्मान दोगे तभी दूसरे भी तुम्हें सम्मानित करेंगे। किसी ने कहा है–

"अपने मन से जानिए पराये मन की बात"।

यानी जैसा मनोविज्ञान आपका दूसरों के प्रति होगा, वैसा ही मनोविज्ञान दूसरा भी आपके प्रति बनायेगा।

अगर मछली पकड़ना है, तो पानी में कूदना पड़ेगा।

अ० – उपयुर्क्त कहावत महान् विद्वान अजरबैजान की है जो शिक्षाप्रद सिद्धान्तवादी है।

जब किसी व्यक्ति को किसी कठिन कार्य को करने तथा उसमें सफल होने की शिक्षा दी जाती है, तो आमतौर पर विद्वान, मनीषियों की कहावतों के उद्धरण दिये जाते हैं। उपयुर्क्त कहावत का भी यही तात्पर्य है।

अ० – यदि मछली को पकड़ना है, तो निश्चित ही पानी में पैठना पड़ेगा। कबीरदास जी के शब्दों में–

"जिन खोजा तिन पाइयाँ गहिरे पानी पैठ"।

इसलिए कोई भी कठिन काम के लिए उसकी कठिनाइयों के प्रति तैयार रहना चाहिए।

अपमान से फटा मन व
टूटी मोती जुड़ नहीं पाता।

श० – अपमान–अनादर, जुड़–इकट्ठा होना, मिल जाना, एकाकार होना।

अ० – अपने स्वजनों, इष्ट–मित्रों, शुभचिन्तकों के द्वारा या किसी के द्वारा जब अपमानित होना पड़ता है तो जो पीड़ा होती है, वह अकथनीय होती है। कहा है–

"मान की मकुनी भली किन्तु अपमान की घिव चुपरी नहीं खानी चाहिए।"

तुलसीदास जी के शब्दों में–

जदपि मातु पितु पति गुरु गेहा
जाइय बिनु बोलेउ न संदेहा।
तदपि बिरोध मान जंह होई,
तहाँ गये कल्यान न होई।

अतः अपमानित होने पर जो मन में भेद उत्पन्न हो जाता है, वह फिर कभी नहीं समाप्त होता बल्कि सदा के लिए मन में गांठ बन जाती है जैसे मोती टूट जाने पर जुड़ नहीं पाती, वैसे ही मन नहीं मिल पाता है।

"अन्न है तो टन्न है, नहीं तो सनासन्न है"।

श० – अन्न–अनाज, खाना, टन्न–प्रसन्न, तेज, ताकतवर, सनासन्न–चुपचाप, शान्त, मौन।

अ० – कहावत दो स्थितियों में कही जायेगी या तो कोई आदमी भूख से विह्वल हो, जो शान्त चुपचाप भूख की पीड़ा को सह रहा हो या फिर कोई खूब खा पी कर उछल–कूद मचा रहा हो।

अ० – पेट भरा है तो लोग खूब उत्साहित हैं और जब पेट खाली है तो भूख के मारे चुप हैं। एक कहावत है "अन्न क पूत अनवादी"।

"अपने मन का मनुवा, चाहे रस पिये चाहै पनुवा"।

श० – मनुवा–मनुष्य/पनुवा–गुड़ के कड़ाहे का धोवन/किसी मनमाने व्यक्ति को देख कर कहावत चरितार्थ की जाती है।

अ० – अपने मन के हैं, चाहे रस पियें, चाहे गुड़ के कड़ाहे का धोवन पियें कौन किसी बात के लिए मना कर सकता है ? मन के मनमानी करने वाले को कौन मना कर सकता है।

"अकिल न सहूर, गौने जावै जरूर"।

कहावत नारी–संसार की है जब किसी कन्या को ढंग से काम करते हुए नहीं पाया जाता, ससुराल विषयक कुछ आवश्यक समझदारी नहीं देखी जाती, तो यह कहावत चरितार्थ होती है।

अ० – कभी–कभी नई व्याहता, ससुराल आई बहू पर व्यंग्य में भी कहावत कही जाती है कि गुण है न बुद्धि मगर गौने ससुर के घर जाने के लिए तैयार होकर चली आई।

गाँवों में ऐसी कन्या के प्रति कहा जाता है–

लबलब लोला लाल खटोला
कब जाबू साजन के टोला।

अ० – जो कन्या चंचल है, जिसे गुण सहूर, बुद्धि से कोई मतलब नहीं होता, ऐसी निर्बुद्धिवान कन्या से नैहर वाले भी ऊब जाते हैं।

अकेले चलै ना बाट, झारि बइठै खाट।

श० – बाट–रास्ता, झारि–बिछावन साफ़ करके।

अ० – अकेले कभी रास्ता नहीं चलना चाहिए और बिना झारे बिस्तर पर नहीं सोना चाहिए। संभव है कि बिस्तर दिन भर के बाद बिछता है तो उसमें कीड़ा, बिच्छू, छिपकली कुछ भी बैठ सकता है। दूसरे इस पर एक कथा है। "कोई आदमी अपनी पत्नी को नहीं मानता था, अतः उसकी पत्नी रुष्ट होकर मैके चली आई। काफ़ी दिनों के बाद जब उसका आदमी लेने आया तो ससुराल वाले दांव लेने के चक्कर में थे तो अपने बहनोई को खिला–पिला कर बढ़िया साफ़ बिस्तर लगा कर सोने की व्यवस्था कर दी। उस खाट के नीचे एक बड़ा सा गड्ढा खोद दिया कि जैसे ही खाट पर बैठेगा, नीचे गिर जायेगा, तो हम सब मार लेंगे। मगर ऐसा न हुआ, इसलिये कि वह आदमी बैठने से पहले बिस्तर को झाड़ने की आदत के अनुसार जब बिस्तर को उठाया तो ऐसा देखकर दंग रह गया और वह मरने से बच गया। इसलिये बिस्तर को झाड़ने से कई लाभ हैं।

"अकेले हँसतै भल न रोउतै भल"।

अ० – अकेला आदमी कुछ नहीं होता। न वह अकेले हँस ही पाता है, न रो ही पाता है।

अकेल हसन रोवै, कि कब्र खोदै।

किसी दुर्भाग्यपूर्ण घड़ी में अकेला इंसान किसी के मरने के बाद रोवे कि जाकर गाड़ने के लिए कब्र खोदे? तात्पर्य है कि आपातकाल में तो अकेला इंसान कुछ भी नहीं कर सकता है।

अकेल कै किहानी, गुड़ से मीठी।

अपने जीवन की कहानी जितनी अच्छी लगती है उतनी शायद किसी की नहीं लगती। उसकी कल्पना उसकी मिठास गुड़ की सी लगती है या अकेला आदमी अधिक शान्ति अनुभव करता है।

अहै मनई अहै काम, नाहिन मनई नाहिन काम।

अ० – जब घर में आदमी रहते हैं तो जितने आदमी

रहते हैं उतना ही काम रहता है और यदि कम आदमी हैं तो काम भी कम हो जाता है।

अकेल लकड़ी जरै न बरै, न करै अंजोर।

श० – अंजोर–उजाला।

अ० – बात सही है कि अकेली लकड़ी बिना किसी दूसरी लकड़ी के साथ चूल्हे में जलती नहीं।

अकिल के पीछे डंडा लै के घूमत।

अ० – अक्ल से दुश्मनी होना। अक्ल की परवाह न करके अनाप–सनाप काम करना।

अकिल बड़ी कि भैंस ?

अ० – किसी ने पूछा कि अक्ल बड़ी होती है कि भैंस, तो उत्तर मिला– भैंस। तो उस आदमी को मूर्ख ही समझो और जो कहे अक्ल, तो वह समझदार है। अक्ल की अजमाइश करने के लिये ही यह कहावत कही गई है।

अगली मछरी–मछरी, पिछली मछली परधान।

कहावत पहले और पीछे की आने वाली बहू के प्रति कही गई है।

अ० – पहले जो बहू आई, वह तो मालकिन बन गई और जो बाद में आई वह बहू बनी रही। यानी पहले आने वाले का विशेष महत्व होता है।

अगले का घास, न पिछले का पानी।

कहावत कंजूस आदमियों के प्रति कही गई है।

अ० – आने जाने वाले किसी को दाना पानी न देना। घर आये का कभी स्वागत न करना।

अगहन हांड़ी अदहन।

कहावत दिन की छोटाई पर कही गई है।

अ० – अगहन माह से दिन इतना छोटा होता है कि हांड़ी में पानी गरम होने को रखो कि दिन गया।

अघान बगुला, क मछरी तीत।

जब पेट भरा होता है तो कितनी भी बढ़िया वस्तु हो वह अच्छी नहीं लगती।

अ० – जब बगुले का पेट भरा हो तो उसे मछली अच्छी नहीं लगती।

अच्छा किया खुदा ने, बुरा किया बंदे ने।

अ० – जो कुछ भी किया खुदा ने वह तो अच्छा ही किया मगर इंसान ने तो बुरा ही किया। अतः खुदा के रखने से तो दुनिया में रह गया, मगर आदमी की चलती तो क्या रह जाता।

अच्छा किया रहमान ने, बुरा किया शैतान ने।

अर्थ– स्पष्ट है।

अच्छे घर बायन दिया।

अ० – जब किसी को किसी की क्षमता का आभास न हो और वह अनायास रोब ग़ालिब करे और चुनौती दे तभी लोग कहते हैं कि बिना सोचे समझे अच्छे से मुकाबला करने की सोची।

अजगर के दाता राम।

इसी तरह मलूकदास ने कहा है–

अजगर करै न चाकरी, पंछी करै न काम।
दास मलूका कहि गये सब के दाता राम।।

अ० – भगवान जो पैदा करता है वही सबकी ख़बर लेता रहता है।

असौज मां जौ बरसै दाता, अनाज नियार का रहै न घाटा।

श० – असौज–क्वार/दाता–देने वाला, दानी/ घाटा–कमी।

अ० – क्वार के माह में भगवान जो पानी दे दें तो फसलें बढ़िया होती हैं।

अजीरन का अजीरन ठेलै, नहीं तो सिर चौहट्टै खेलै।

श० – अजीरन–कब्ज, पेट का साफ न होना।

कहावत तब कही जाती है जब किसी से मुक़ाबले की बात आती है।

अ० – जो जैसा हो उसका मुकाबला वैसा ही आदमी कर सकता है। कहावत के अनुसार पेट में यदि कब्ज हो तो ऊपर से डाला गया खाना ही उस कब्ज को ठीक कर सकता है।

अटकेगा सो भटकेगा।

अ० – अटक बुरी बला होती है। जो आदमी बार–बार अटकता है वही भ्रमित भी होता है।

अड़ते से अड़ जाइये, चलते से दूर।

श० – अड़ते– जो अड़ गया हो किसी बात में/

अ० – जो किसी बात में अड़ जाय, उसके साथ आप भी अड़ जाइये और जो अपनी राह चला जा रहा हो उसे कदापि मत छेड़िये।

अरसठ तीरथ कर आई तूमड़ी तऊ न गई कड़ुवाई।

श० – तीरथ– धर्मस्थल, तीर्थ की यात्रा/ तुमड़ी– एक पात्र है जो साधु लोग अपने साथ लिये फिरते हैं उसमें भिक्षा मांगते हैं तथा यह उनके जीवन की सूक्ष्मता की निशानी होती है। लौकी जाति का फल होता है, जिससे यह बनती है। कुछ लोग कहते हैं कि तीत लौकी की बनती है। कहावत जन्म जात दोष के प्रति कही गई है।

अ० – इस तुमड़ी की जाति तो देखो कि एक दो नहीं अरसठ तीर्थ करने बाद भी इसका दोष न गया। यानी जिसका जन्मगत जो स्वभाव होता है वह कभी नहीं जा सकता है। रहीम कवि ने कहा है–

मंदन के मरिहू गये, औगुन गुन न सिराहिं।
ज्यों रहीम बाधहु बधे, मुरहा होइ अधिकाय।।

अ० – मूर्ख के मर जाने के बाद भी उसका अवगुण नहीं जाता, जैसे बाध के मरने के बाद भी उसमें गांठें (ऐंठन) बराबर पड़ती ही रहती हैं।

अड़ी, घड़ी काजी के सिर पड़ी।

श० – काजी– मुसलमानों के यहां जो निकाह पढ़ा कर विवाह करवाते हैं, विवाह के न्यायाधीश/कहावत उस समय कही जाती है जब बिचौलिये के सिर पर किसी कार्य की अच्छाई या बुराई आती है।

अ० – जब समय के विपरीत कोई काम होने लगता है तो सारा दोष काजी के जिम्मे होता है।

अढ़ाई दिन के सिक्के ने भी बादशाहत कर ली।

अढ़ाई दिन का राज्य कोई राज्य नहीं होता। मगर जब कोई आदमी पद पर पहुँचते ही बादशाहत का रोब दिखाने लगे, पद का अभिमान हो तो कहते हैं।

अ० – ढाई दिन के बादशाह तो क्या हुये कि अपना रोब ग़ालिब करने लगे।

अढ़ाई हाथ की काकर, नौ हाथ का बिआ।

असंभव बात जब सामने आती है तो कहावत कही जाती है।

अ० – ढाई हाथ की ककड़ी का नौ हाथ का बीज कैसे संभव है ? मगर गप्पी लोगों की बातों के लिये क्या कहा जाय ? अनहोनी बातों के, लंतरानी गप्पें हाँकने में माहिर होते हैं।

अनखर खेती, अनखर गाय, वह पापी जो मारन जाय।

शब्दार्थ– अनखर–आनकी, दूसरे की/

अर्थात्– दूसरे की खेती काटना और दूसरे की गाय को मारना महापाप है।

'अनखर चोकर, अनखर घी, पांडे के बाप का लागा की?'

अर्थात्– दूसरे का आटा, दूसरे का घी खर्च हुआ, किसी के बाप का क्या गया ? किसी काम में खर्च–बर्च दूसरे का होना।

अनजान कै मिट्टी ख़राब।

अ० – अज्ञानी की दुर्दशा ही होती है। इसलिये कि वह कुछ जानता नहीं, इस कारण हर स्थान पर कष्ट उठाता है। जो दुनियादारी नहीं समझता, व्यवहार कुशल नहीं होता, उसे दुनिया में कष्ट उठाना पड़ता है।

अनजान औ सुजान कै सदा कल्यान।

कहावत एकदम विद्वान या एकदम मूर्ख पर उद्धृत की गई है।

अ० – या तो जो बहुत ज्यादा ही समझदार होता है, उसका या फिर जो बहुत ज्यादा मूर्ख, नासमझ होता है, कल्याण इन्हीं दोनों का ही होता है। अनजान के प्रति कहा गया है–

अनपढ़ होय से रोये।

अनदेखा चोर बाप बराबर।

अ० – जिसकी चोरी पकड़ी ही नहीं गई, वह साहु है। उसकी इज्ज़त भी उतनी ही करनी पड़ेगी पहले के जैसी।

अनदेखा चोर साले बराबर।

अर्थ–स्पष्ट है।

अनाड़ी का सौदा बारा बाट।

श० – अनाड़ी–अनजान, बेवकूफ / सौदा–सामान / बाट– जिससे सौदा सामान तौले जाते हैं। उसे बटखरा भी कहा जाता है।

अ० – जो नया बेचने वाला होता है या मूर्ख है, या लापरवाह है, उसका सामान इधर–उधर फेंका रहता है।

अनोखी के हाथ लगी कटोरी,
पानी पी–पी मरी।

जब किसी मूर्ख के या अनाड़ी लोगों के हाथ कोई नया सामान लगता है तो वह उसका इस्तेमाल गलत ढंग से करके अपना ही नुकसान कर बैठता है।

अ० – किसी स्त्री के हाथ कटोरी लगी तो उसने पानी ही पी–पी के प्राण दे दिये।

अनोखे गाँव ऊँट आय, लोग जानें परमेस्वर आय।

अ०– जब भी गाँव, घर में कोई नई वस्तु आती है तो लोग उसकी आवश्यकता से अधिक प्रसन्नता मनाते हैं। उसकी बेहद इज्जत करते हैं। लगता है कि भगवान ही उतर आये हैं।

अन्न धन अनेक धन, सोना धन केतिक धन ?

कहने का तात्पर्य यह कि जो सामान्य मनुष्य के जीवन के लिये सदैव इस्तेमाल की वस्तु होती है, उसकी कीमत बहुत होती है। उसका ज़ीवन में बड़ा ही मूल्यांकन होता है। उसके आगे मूल्यवान वस्तु भी बेकार होती है।

अ० – अन्न ऐसी चीज है कि आदमी उससे ही जीता है अतः अन्न–धन से बढ़कर सोना, हीरा, मोती, रत्न कुछ नहीं है।

अपना कुत्ता बरजो, हम भीख से बाजि आये।

श०– बरजो–मना करो, बाज़ आये–नहीं चाहिए।

यदि मनुष्य को थोड़ी सुविधा के लिये अधिक ख़तरा उठाना हो तो वह ऐसी सुविधा कदापि नहीं पसंद करता। कुत्ते ने यदि काट ही खाया तो भीख ले कर करेंगे क्या ?

अ० – इस पर एक कहावत है–

गये कूकुर बधियावै काटै से बचे।

तुम्हारी भिक्षा हमें नहीं चाहिए, अपना कुत्ता संभालो। तात्पर्य है कि पहले ही कटहे कुत्ते की तरह तुमने मुझे खदेड़ लिया तो तुम्हारी भीख अब मुझे नहीं चाहिए।

अपुना कन्न न जुरै, आन के दानी।

श० – कन–कण, अनाज का टूटन।

जिसमें कुछ दिखावटीपने की झलक आती है तो लोग व्यंग्य में कहते हैं।

अ० – अपने को तो खाने को मिलता नहीं दूसरे को अन्न दान देते हैं।

अपने घर का सत्तू, न कि उनके घर का पेड़ा।

अ०– दूसरे के घर का जितना पेड़ा मीठा होगा उतना ही अपने घर का सतुवा है। यानी दूसरे के घर की बढ़िया वस्तु भी, जो अपने काम न आये, वह अपने घर से बुरी है।

अपने घर मां संझौता ना, आनके घर मूसर अस बाती।

श० – संझौता– सांझ के समय जो घरों में सांध्य दीपक जलाये जाते हैं।

कहावत दूसरे के माल पर अधिकार करके उसे अधिक मात्रा में ख़र्च करने पर कही गई है।

अ० – अपने घर में तो तेल बचाने के कारण शाम को दिया ही न जले और दूसरे के घर जाकर मोटी सी बत्ती बनाकर दिया जलाये।

अपना मरन, जगत भी हाँसी।

अ० – विपत्ति के समय दुनिया हँसती है। रहीम कवि ने इसे बहुत ही सुंदर ढंग से समझाया है–

रहिमन निज मन की बिथा मनहीं राखहु गोय,
सुनि अठिलइहैं लोग सब, बांटि न लेइहैं कोय।

अपना कष्ट अपने ही काटने से कटता है। इसीलिये कष्ट के समय जितना ही धीरज रखा जाय उतना ही अच्छा होता है।

एक महान् विद्वान ने कहा है– 'कष्ट के समय धीरज रखना, आधी लड़ाई जीत लेने के बराबर होता है।'

अपना रख, पराया चख।

अ० – अपने माल को बचाकर दूसरे के माल को उड़ाना चाहिए। कहावत स्वार्थवादी है।

अपना वही जो काम आवै।

अ०– स्पष्ट है।

अपने माल जाय, अपने चोर कहवावै।

अ० – इसी पर कहा गया है कि –

जे के धन जाथ ओकै धर्मौं जात।

यानी कि सामान भी उसी आदमी का चोरी हुआ, और चोर भी वही कहलाया।

अपनी चिलम भरने को मेरी झोपड़ी जलाते हो।

अ० – अपने फायदे के लिये किसी का नुकसान करना। कहा है किसी ने "आग लगाय जमालो दूर खड़ी" तो दूसरे की झोपड़ी जला कर, अपना हुक्का भरना कहां तक उचित है ?

अपनी टांग उठाइये, आपहि लाजन मरिये।

अ० – अपने घर का भेद खोलने पर अपनी ही बदनामी होती है। कहा गया है "एक टांग खोलै तो नंगे दिखाय'। दूसरी टांग खोलै तो नंगे दिखाय" दोनों ही बराबर है।

अपनी बेटी ऐसन मारूँ कि पतोहू त्रास कै जाय।

अ० – बेटी के बहाने बहू को डरवाना।

अपने नैन गँवाय के, घर–घर माँगै भीख।

अ० – अपना नुकसान करके, अपनी वस्तु को खोकर दूसरों से माँगना। जब कोई आदमी अपनी वस्तु की सुरक्षा नहीं करेगा तो निश्चय ही लोगों की ठोकरें खायेगा।

अपने पूत कुंवारे फिरै, दूसरों के फेरे।

श० – कुंवारे–बिन ब्याहे, फेरे–विवाह या भांवरे पड़ना।

अ० – अपना लड़का तो बिना ब्याह के रहे और दूसरों का काम करवाते घूमें। दूसरे का विवाह करवावे। अपने काम की चिंता न करके दूसरों का काम निबटाना।

अपने मुँह धन्नाबाई बनी हैं।

अ० – अपने मुँह से अपनी बड़ाई करना।

अपने लगे तो देंह में, दूसरे के लगे तो भीत में।

श० – भीत–दीवाल।

अ० – जब अपनी बात हो तो बहुत खले और जब दूसरे की बात हो तो वह हवा में उड़ गई। यानी कि जब अपने चोट लगे तो शरीर में लगी और जब दूसरों के लगे तो वह किसी दीवार में लगी।

अफ़ीम खाय अमीर या अफ़ीम खाय फ़कीर।

अ० – नशे में अफीम या तो अमीर ही खा सकता है जिसके पास पैसा हो या फिर फ़कीर ही खा सकता है जिसे पैसे जोड़ने की कोई ज़रूरत ही नहीं है। जो बचा नशा पत्ती कर लिया।

अबकी बार, बेड़ा पार।

अ० – जब काम का आख़िरी दौर होता है तो कहते हैं कि अब इस बार काम समाप्त हो जायेगा। नाव किनारे लग जायेगी।

अबकी साल हम ना ब्याहे,
तो अगली साल धिक्कार भये।

अ०– इस वर्ष यदि मेरा विवाह न हुआ तो फिर अगली साल होने का धिक्कार ही है।

अब भी मेरा मुर्दा तुम्हारे जिन्दे पर भारी है।

अ०– मेरे घर के लोग मर गये तो क्या हुआ, कम न समझना मरने के बाद भी तुम्हारे जीवितों के लिए बहुत हैं। कहा है "मुई हाथी तबो सवा लाख की"।

अब सतवंती हो के बैठी, लूट लिया संसार।

श० – सतवंती–सीता, सावित्री, आचरण से पवित्र।

कहावत किसी चरित्रहीन, व्यभिचारिणी नारी पर कही गई है।

अ० – अब चली हो पवित्री पहनने, तब तो तमाम अनाचार मचा कर दुनिया भर में दुश्चरित्र होने का झंडा फहरा दिया। आज सीता–सावित्री बनी हो। बड़ी चरित्रवान बनी बैठी हो।

अबै एक चना दुइ दाल ना भै।

जब एक ही परिवार के लोग हों, सगे भाई के हों तो कहा जाता है कि अभी तो हम सब एक ही चने की दाल हैं, अभी तो दो दालें भी नहीं हुई हैं।

अबै दूध के दांत ना टूट।

अ०– अभी बचपना है। दूध के दाँत तक नहीं टूटे हैं।

अमीर के उगाल, गरीब क अधार आय।

अ० – अमीर जो कुछ खाकर छोड़ देता है, ग़रीब आदमी उसीसे अपना पेट भर लेता है। खानखाना रहीम के शब्दों में–

दीन सबन को लखत है, दीनहिं लखै न कोय,
जौ रहीम दीनहिं लखै, दीन बंधु सम होय।।

तथा

छोटेन को सोहै बड़े, कह रहीम यह रेख।
सहसन को हय बाधियत, लै दमरी को मेख।।

श०– सहसन–हजारों, मेख–खूँट, हय–घोड़ा।

अलबेली बनाई खीर, दूध की जगह डाला नीर।

श० – अलबेली–अनोखी, नीर–पानी।

कहावत बहुत होशियार जो समझती है अपने को, उस औरत के प्रति कही गई है।

अ० – खीर बनाते समय दूध बचाने के कारण पानी डाल कर खीर बना डाली। ऐसी होशियारी किस काम की?

अल्लाह यार है तो बेड़ा पार है।

अ० – जिसकी मदद खुदा करता है फिर उसका काम सब बना बनाया ही है। कहा है–खुदा मेहरबान तो गधा पहलवान।

अल्लाह सींग दे दे तो वह भी क़ुबूल है।

अ० – खुदा की मर्जी है तो उसे मानना पड़ेगा।

अस्तबल की बला, बंदर के सिर पर।

श० – अस्तबल– जहाँ पर घोड़े बांधे जाते हैं।

अ० – दोषी कौन होता है और दूसरे का दोष जब दूसरे किसी को झेलना पड़ता है तो कहावत कही जाती है कि घोड़े का दोष बंदर के सिर आया।

अस्सी की आमद, चौरासी का खर्च।

जब कहीं पर आमदनी से ज्यादा ख़र्च होता है तो यह कहावत कहते हैं।

श० – आमद–आमदनी

अ० – अस्सी की आमद है तो चौरासी का ख़र्च है। औकात के बाहर खाना–रहना, खर्च करना।

अपने पास पैसा, तो पराया कैसा ?

अ० – जब अपने पास पैसे हैं तो फिर दूसरे की आशा क्यों देखे ?

अन्न धन मूल धन, गहना धन आधा धन।
वस्त्र धन फूसफास, ओहू म लागय बाधा।।

श० – मूलधन–विशेष धन, आवश्यक धन, फूसफास–न ठहरने वाला हल्का फुल्का धन, बाधा–रुकावट, न मिल पाना।

कहावत सामान्य जीवन की आवश्यक आवश्यकताओं के प्रति चरितार्थ की गई है।

अ० – मनुष्य के जीवन का मूल धन अन्न है। बिना भोजन किये मनुष्य जीवित नहीं रह सकता है। अतः जीवन के लिये मूल पदार्थ भोजन है। इसीलिये सबसे बड़ा धन अन्न है।

गहना को आधा धन माना है। इसलिये कि गहना पहने बिना भी काम चल सकता है।

रही वस्त्र की बात। वस्त्र मूलधन इसलिये नहीं है कि स्थाई नहीं होता, कुछ समय के बाद फट जाता है।

किसी स्त्री का कहना है कि वस्त्र जो फूसफास धन है उसमें भी बाधा है वह भी पहनने को नहीं मिल पाता।

इस कहावत से ग़रीबी की विवशता प्रकट होती है।

अकिल क हीन बुद्धि कहं पाया है,
पानी में बोरि–बोरि, काहे न खाया है ?

श० – अकिल–बुद्धि, हीन–कम बुद्धिमान, जिसके अक्ल न हो।

यह चातुर्य भरी कहावत एक लोक कथा पर आधारित है।

कथा है– "एक कछुवा एक दिन एक सियार के शिकार में आ गया। सियार ने उसे दाँत से चबाकर खाना चाहा किंतु कछुये की हड्डी इतनी कड़ी थी कि सियार के दाँतों से न फूट पाई। अचानक कछुये के दिमाग़ में अपने बचने की एक बात सूझी। उसने सियार से कहा–तुम एकदम मूर्ख हो, किसने तुमको यह सलाह दी? फिर उपरोक्त कहावत कहते हुये कछुये ने कहा कि यदि तुम पानी में भिगोकर खाये होते तो ये हड्डियाँ दाँत से टूटतीं भी। सियार ने सोचा बात तो ठीक ही है। अतः वह कछुये को लेकर तालाब में जैसे ही गया कि कछुआ पानी को पाते ही वहाँ से खिसक गया। सियार अपना सा मुँह लेकर रह गया। तात्पर्य यह कि समय की सूझ बड़ी तीखी होती है। यदि कछुये को इतनी बुद्धि न आती, तो उसे अपनी जान गँवानी पड़ जाती।

अलि बिनु कमल को पहिचाने ?

श० – अलि–भँवरा।

गुण तो सभी में होते हैं, किसी में कम, किसी में ज्यादा, उसको पहचानने वाला होना बहुत आवश्यक होता है। कहावत का आशय भी यही है।

अ०– कमल के फूल की प्रशंसा तो सभी करते हैं किन्तु उसकी बारीकी भँवरा ही समझ पाता है जो उसकी सुगंध, उसके गुणों से पूर्णरूप से परिचित है।

अकुतान कोंहार अंगुरी से माटी खोदे।

श० – अकुतान–जल्दबाज, कोंहार–जो जाति मिट्टी का बर्तन बनाती है।

कहावत जल्दबाज़ों के प्रति कही गई है। उंगली से कहीं मिट्टी खोदने पर जल्दी हो सकती है। मिट्टी तो फावड़े या कुदाल के द्वारा ही जल्दी खोदी जा सकती है। मगर कहा है, "उतावला सो बावला"।

आ

आवै कातिक जाय आषाढ़,
का करै गंधक हरताल।

श० – कातिक व आषाढ़ महीनों के नाम हैं। हिन्दी में एक वर्ष में १२ महीने होते हैं जो संवत् बदलने के बाद से शुरू होते हैं–

१. चैत, २. बैसाख, ३. जेठ, ४. आषाढ़, ५. सावन, ६. भादों, ७. कुवार, ८. कार्तिक, ६. अगहन, १०. पूस, ११. माघ, १२. फागुन

उपरोक्त कहावत में कार्तिक–आषाढ़ तथा गंधक–हरताल के शब्दों का प्रयोग हुआ है। गंधक–हरताल आमतौर पर खुजली की दवा है। कहावत भी इसी पर है।

अ०– खुजली की बीमारी कार्तिक मास में आती है और आषाढ़ महीने में जाती है, चाहे जितनी भी हरताल या गंधक लगाओ।

आला से सुकुवार भई,
घिव परसत की फांस गड़ी।

श० – आला–बढ़िया, उत्तम–श्रेष्ठ/सुकुवार–कोमल, बहुत नाजुक, किसी की अच्छाई के बाद उसकी नजाकत पर व्यंग्य किया गया है। परसत–देते समय फाँस–बाँस का बड़ा रेशा, फाँस–किरिच।

अ० – कोमलांगी नारी इतनी कोमल हो गई है कि कठिन काम को कौन कहे, जब वह घी हाथों से देती है तो उसकी उंगलियों में घी कांटे की तरह चुभ जाता है।

आठ पहर लै फूहर सोवै, लै झाडू अंगना मां रोवै।

पुरवा–पछिवा तू मोरा भाय, अंगना क कूड़ा ले जा उठाय।।

श० – आठपहर– तीन घंटे का पहर होता है, यानि २४ घंटे तक। फूहर– भद्दे ढंग से काम करने वाली, बेशऊर स्त्री। पुरवा–पछिवा– पूरब–पश्चिम से चलने वाली हवा।

उपरोक्त कहावत हमारे भारतीय समाज की पारम्परिक नारी सभ्यता की याद दिलाती है। पहले के समय में अपने देश की स्त्रियाँ बड़े सबेरे, मुँहअंधेरे ही उठ जातीं थीं। नित्य नियम से निबटकर, भोर ही आंगन में बुहारी लगाना, चक्की चलाना, घर का चूल्हा–चौका संभालना, नन्हें–मुन्नें बच्चों की देखभाल करना आदि सुलक्षण नारियों के काम थे।

किसी ने कहा है–

ओनहीं अहीं कुलवंती नारि,
भोरवे देय बिप्र का दान
भोरवै कुंआ जगावै पानि।

उपरोक्त कहावत बिल्कुल इस कहावत के विपरीत है,

अ० – कहावत कही जाती है, किसी फूहड़ स्त्री को ले करके जो आठ घड़ी तक सोती है, फिर उठती है तो हाथ में झाड़ू ले आंगन में खड़ी–खड़ी रोती पछताती है। मन ही मन कहती है "हे पुरवा–पछिवा पवन! तू मेरा भाई है। अगर कहीं तुम झोंके से बहकर मेरे आँगन का कूड़ा बटोर ले जाते तो कितना अच्छा होता। इस तरह की कुलक्षिणी स्त्रियाँ घर की सारी सम्पन्नता, शान्ति, सुख सब कुछ नाश कर देती हैं।

इस समय फूहड़ स्त्री की एक छोटी सी कहानी स्मरण हो आई है जो निम्नांकित है–

"एक दम्पत्ति ऊपर की मंजिल में रहते थे। उनकी स्त्री बड़ी ही फूहड़ थी। एक दिन वे सज्जन अपनी पत्नी से तंग आकर बोले– "तुम्हें कूड़ा फेंकने तक का शऊर नहीं है। अरसे तक, विषय वाद–विवाद का रूप बना रहा। एक दिन सुबह नौ बजे के करीब उनकी पत्नी ने रोज की भांति ऊपर छत पर से कूड़े की बाल्टी से कूड़ा सड़क पर फेंका। एक सफेदपोश सज्जन नीचे से आवाज लगाने लगे। पति महोदय ने ऊपर से झांका तो वे सज्जन बोले– महाशय जी, यह आपका मकान है? देखिये ये है मेरी हालत, सज्जन ऊपर से नीचे तक गंदे बदबूदार कीचड़ सने पानी से नहाये खड़े थे। मुहल्ले के सभी लोग अच्छा खासा मजाक बना रहे थे। वे सज्जन बजाय दफ्तर जाने के आफ़त के मारे घर का रास्ता पकड़े और चले गये।

इसी को कहते हैं "**फूहर चलै तो नौ घर हालै**"।

आम के आम गुठलियों के दाम।

कहावत उस समय कही जाती है जब कहीं पर दोहरा लाभ हो, या किसी वस्तु का दोहरा परिणाम मिले।

जैसे – "**बाँस–फाँस औ मीसिरी एकै भाव बिकाय**" यानी मिश्री में लगी बांस का छोटा महीन टुकड़ा भी मिश्री के ही भाव बिक जाना।

अ० – आम के आम बिके और गुठलियों के दाम भी लग गये। दोहरा लाभ हो गया। दूसरे किसी ने दोहरे हानि के प्रति कहा है :

आब–आब कै पुतऊ मरिगे खटियातर धरि पानी।

काबुल गये मोगल बनि आये, बोलै मोगली बानी।।

श० – काबुल–एक जगह का नाम है, मोगल– मुगल बानी–बोली, आब–फारसी में पानी को आब कहते हैं, पुतऊ–पुत्र।

कहावत उस व्यक्ति के ऊपर घटित होती है जो विदेश से अपने देश आने के बाद अपनी बोली भूल जाये। जब कोई गाँव का आदमी घर आने पर विदेश की भाषा बोलने लगता है, तो लोग कहावत सुनाते हैं।

अ० – काबुल कमाने जाने वाला एक भारतीय व्यक्ति जब अपने गांव लौटा, तो वह बहुत बीमार पड़ गया। उसने आब–आब कहकर अपनी मां से पानी मांगा, मगर मां बेचारी आब क्या समझ पाये? पानी का लोटा खाट के नीचे रखा का रखा ही रह गया और

मरीज भगवान को प्यारा हो गया। बाद में जब लोगों ने बताया कि आब पानी को कहते हैं, तो बुढ़िया ने अपना सिर पीट लिया।

आन के गोड़वा धोवे नउनिया, आपन धोवत लजाय।

श० – आन–दूसरे। लजाय– शरमाना।

अपना काम करने में जब कोई आदमी बार–बार आलस करे या भूल जाय या झेंपे अथवा अपने किसी काम में संकोच करे, तो कहावत कही जाती है।

अ० – ऐसी भी नाइन क्या है, जो दूसरों के घर–घर जा–जा कर दूसरे का पैर धोये और अपना ही पैर धोने में शर्म करे।

आपन हारा, मेहरी क मारा के बतावै।

श० – हारा–हार खाया, मात खाने वाला / मेहरी–अपनी स्त्री, पत्नी।

अ० – अपनी स्त्री के द्वारा अपमानित हुआ या मार खाया व्यक्ति भला कैसे किस प्रकार इस लज्जाजनक बात को किसी से बतावे कि उसकी स्त्री ने उसे मारा है।

एक देहाती कहावत है "भितरी के मार दहिजरू जानै" यानी कि अंदर की चोट, भीतरी तकलीफ तो वही दाढ़ीजार ही जान सकता है, दूसरा क्या बता सकता है ? इस तरह पत्नी के हाथ का मार खाया आदमी अपना कष्ट स्वयं ही झेलता है।

आपन मराई केहिते कहै,
पेट मसोसा–मरोड़ना दै–दै रहै।

अ० – अपने द्वारा की गई गलती, अपनी चूक भला, किससे कही जा सकती है ? गलती खुद से हुई है, तो वह कष्ट, वह परेशानी उसके भोगने से ही समाप्त हो पायेगी। वह अपनी पीड़ा से बेचैन रहने के बाद अपने को चाहे जितना भी धिक्कारे व पश्चाताप करे, मगर कह किसी से कुछ भी नहीं कह सकता है।

आपन हाथ जगन्नाथ।

श० – जगन्नाथ–उड़ीसा के पुरी नामक स्थान की विष्णु मूर्ति।

अ० – अपने हाथ के द्वारा किये गये कर्म ही पुण्य कर्म हैं। अपने हाथ पर ही भरोसा रखना चाहिए। अपना हाथ ही सब कुछ है, उसी के द्वारा सभी अच्छे काम संभव होते हैं।

आपन नाक कटावै, आन क असगुन मनावै।

श० – नाक कटाना–बदनामी करना, दूसरे का बुरा करने के लिए ही अपना नुकसान करना। असगुन–बुरा करना, अनभल मनाना।

कहावत पर गोस्वामी जी की एक पंक्ति स्मरण हो आई है–

पर दुख सुनत बहुत हरषाहीं।

यानी दुनिया में बहुत से ऐसे भी लोग पाये जाते हैं जो दूसरों के दुखों से बड़े ही प्रसन्न होते हैं। कहावत भी ऐसे ही असज्जनों के ऊपर चरितार्थ की गई है।

अ० – दूसरे के अनभल मनाने के लिए उन्हें चाहे अपनी नाक ही क्यों न कटा लेनी पड़े मगर वे अपनी आदतों से बाज़ नहीं आते हैं। कभी भी किसी के शकुन के समय, जहाँ पर उन्हें नहीं पहुँचना चाहिए वहां भी "जे बिनु काज दाहिने बांये" की तरह वे अवश्य पहुँचे रहेंगे। दूसरों के यहाँ बिना बुलाये, अनावश्यक अपनी ज़रूरत बनाये रखेंगे, चाहे जितने भी अपमानित हों उन पर कोई असर नहीं पड़ता। इन्हीं जैसे लोगों पर कहा गया है–

नकटी की नाक कटी, अढ़ाई बीता रोज बाढ़ी।

आपन माठा केव पातर नाहीं कहत।

श० – माठा–मट्ठा। पातर–पतला, पनिहा।

जब लोग अपनी रद्दी से रद्दी वस्तु की भी प्रशंसा करते नहीं थकते तो कहावत कही जाती है।

अ० – कोई भी मट्ठा बेंचने वाला अपने मट्ठे को कभी भी पतला या ख़राब नहीं कह सकता है चाहे जितना भी पानी क्यों न मिला हो।

आये कनागत फूले कास,
बाभन उछरै नौ–नौ हाथ।

श० – कनागत–क्वार माह में पितृपक्ष लगते हैं। उसे अपने यहाँ पितृपक्ष या मरपख या गांवों में पितरपख

कहते हैं। उसी को राजस्थान की तरफ़ कनागत बोलते हैं। यह क्वार मास के प्रथम पक्ष में पड़ता है। इसमें लोग अपने मरे हुए पुरखों की श्राद्ध करते हैं, १५ दिन तक पानी देते हैं। इन १५ दिनों के बीच जिसके पिता जिस तिथि को मरे होंगे उसी दिन श्राद्ध करके ब्राह्मण भोजन कराते हैंञ। इसी प्रकार से बारी–बारी सभी ब्राह्मण अपने–अपने यजमानों के यहाँ श्राद्ध कराकर न्योता खाते हैं। कहावत उन्हीं लोगों के ऊपर कही गई है।

अ० – अब क्वार माह लग गया है और कास में फूल लग गये हैं। यानी बरसात समाप्त हो चुकी, पितृपक्ष लगने के कारण ब्राह्मण बड़े प्रसन्न हैं, खूब उछल रहे हैं इस प्रसन्नता के मारे कि अब तो १५ दिनों तक खूब घूम–घूम कर न्योता खाने को मिलेगा।

आग लगाय के पानी क दौड़े।

आग लगाने के दो अर्थ यहाँ पर निकलते हैं। एक तो आग लगाना, दूसरे किसी के घर में झगड़ा लगाना। कहावत का अर्थ है ऐन मौके पर विशेष वस्तु के लिये भागदौड़ करना।

अ० – ईर्ष्या–जलन के कारण किसी के परिवार या आपसदारी में झगड़ा लगाकर खुद की सफ़ाई देने के लिए, उसका निपटारा करने पहुँच जाना, या किसी के घर में दुश्मनी वश छिपे रूप से आग लगाकर और फिर चार लोगों के बीच में सफाई देने के लिए दौड़–दौड़ कर पानी लाकर बुझाने के लिए प्रयत्न करना।

आगे चीकन, पाछे रूख,
यह देखा बैसन का रूप।

श० – चीकन–साफ़, चिकना, अच्छा, साफ सुथरा, रुख–रूखा, नीरस, मन का बुरा/बैस–उम्र, वैश्य।

कहावत वैश्य के ऊपर कही गयी है।

अ० – वैश्य ऊपर से तो बड़े भले साफ़ सुथरा दिखाई देते हैं मगर बाद में दिल के बड़े खोटे व रूखे व्यवहार के होते हैं।

आकास से गिरी खजूरी माँ अँटकी।

श० – आकास–आकाश, बहुत ऊपर/खजूरी–खजूर का पेड़, खजूर के आकार का, खजूरी चोटी/कोई बहुत ऊँची चीज़ की भी तुलना खजूरी से दी जाती है।

अ० – जब कोई काम बड़ी मुश्किल से शुरू होता है या शुरू होते ही बीच में कार्य रुक जाता है तथा अनेक प्रकार की बाधायें उपस्थित हो जाती हैं तो यह कहावत चरितार्थ होती है।

अ० – जब कोई वस्तु किसी तरह मिलने को हुई, तो तमाम बाधायें आ पड़ीं।

आपन देखे जरि मरै, परावा देखि जुड़ाय।

श० – जरि मरै–जलन होना, क्रोधित होना। जुड़ाय–प्रसन्न होना, भला लगना। आपन–अपना।

कहावत उस समय घटित की जाती है जब किसी के मन में अपनों से कुढ़न या क्रोध और दूसरों से संतोष, सुख एवं शान्ति का अनुभव होता हो तो लोग कहते हैं–

अ० – अपनों को देखकर तो बदन में घृणा, क्रोध की आग लग जाती है, मगर दूसरों को देखने पर बड़ी खुशी व अपनापन उमड़ पड़ता है।

आन की पतरिया क लम्बा–लम्बा भात।

श० – आन–दूसरे/पतरिया–पत्तल/लम्बा–बड़ा।

जब अपने पास वस्तु हो और कोई आदमी उस वस्तु की बार–बार बुराई करे तथा दूसरों की प्रशंसा करे या दूसरों की बाहरी वस्तुएं उसे अच्छी लगें, तो कहावत कही जाती है।

अ० – दूसरों के पत्तल के भात बड़े दिखाई देते हैं। अपनी अपेक्षा दूसरों की वस्तुएँ अच्छी लगती हैं।

आवत मोगरी जात लुआठ,
पिंडा लेया जजमान के बाप।

श० – मोंगरी–एक लकड़ी की वस्तु है जिससे कपड़ा पीटकर धोते हैं, छत की गिट्टियां कूटी जाती हैं/लुआठ–चूल्हे की जलती या जलाई गई लकड़ी/पिंडा–पितरों के लिए श्राद्ध में दिया जाने वाला खीर का गोला। जजमान–मालिक, जिसके घर लोग पैसा लेकर काम करते हैं/बाप–पिता।

कहावत भारतीय परम्परागत लोकाचार–धर्म संबंधी विधियों के अंतर्गत कही गई है। पिता की मृत्यु के पश्चात् मृतात्मा को पिंड–दान देने का रिवाज़ होता है। उसके बाद से फिर जब भी पितृपक्ष या श्राद्ध पक्ष लगता है तो पुत्र क्वार मास की प्रथम तिथि से लेकर १५ दिनों तक यानी अमावस तक अपने बाप को पानी देता है। कहावत पितृपक्ष के ऊपर कही गई है।

अ०– आवत मोंगरी से मतलब है कि क्वार लगते ही प्रथम दिन से पित्तरों को पानी देने का रिवाज शुरू हो जाता है तो उस दिन मोगरी से मिट्टी को पीट कर दो गोल–गोल मिट्टी के पिंड रसोई घर के बाहर बनाये जाते हैं जो पित्तरों के प्रतीक होते हैं। उन्हीं पर रोज १५ दिन तक तिल पानी से हाथ में कुश लेकर तर्पण करके पानी देते हैं। यह कार्य पुत्र करता है। स्त्रियाँ जिनकी सास मरी होती हैं, वे सिर से रोज़ नहाकर थाली में पानी रखकर तिल डालकर सिर की बाँई लट अंजलि में लेकर अपनी सास को पानी देती हैं। १५ दिनों तक पुत्र न तो धोबी के यहाँ कपड़ा धुलायेगा, न धुला वस्त्र पहनेगा, न चारपाई पर सोयेगा, यानी पति, पत्नी दोनों का अपने माता–पिता व सास ससुर के प्रति बड़ा ही नियमित जीवन रहता है। दाढ़ी बनवाना, जूता पहनना सभी काम बंद रहते हैं। पिंड को रोज़ लीपते हैं। उस पर खाने की हर वस्तुएं डालकर ही पुत्र, पुत्र–वधू खाते हैं और फिर नौमी तिथि को सभी स्त्रियाँ अपनी सास को स्वाद युक्त भोजन के साथ सुहागन या विधवा जिसकी सास जैसी मरी हो, खिला–पिला कर विदा करती हैं। सुहागन स्त्रियों को सिंदूर, बिन्दी आलता आदि देकर श्रृंगार के साथ विदाई करती हैं। इसी प्रकार पुत्र अमावस्या को अपने पिता को विदाई देता है। वह कौवों, कुत्तों आदि को (ना जाने केहि रूप में नारायण मिलि जायं) भोजन कराता है और फिर उसी मिट्टी के पिंड पर लुआठी रखकर अगियार करके पिता को विदा करता है।

कहावत इसी पर है कि आते समय मोंगरी और जाते समय लुआठ लो जजमान के बाप पुत्र के हाथ पिंडा लो और विदा हो।

"आगे चलै तो दांते काटै। पीछे चलै तो लातैं मारै"।

जब किसी व्यक्ति को किसी के द्वारा किसी प्रकार से चैन नहीं मिल पाता, न अच्छाई करने पर, न बुराई करने पर चैन, तो कहावत चरितार्थ की जाती है।

अ० – जब आगे चलै तो दांत से काट खाये और पीछे चलै तो पैर से लात मार दे। हर तरफ समस्या ही समस्या खड़ी किये रहना।

'आपन कुसल – कुसल जग माहीं।

आन के कुसल होय चाहे नाहीं' ।।

जब किसी आदमी में स्वार्थ की पराकाष्ठा देखी जाती है, वह अत्यधिक मतलबी पाया जाता है तो यह कहावत कही जाती है।

अ० – अपना भला हो, दूसरे का हो चाहे न हो। अपनी ही कुशलता संसार में ज़रूरी है, दूसरे से क्या लेना–देना।

'आधी तज सारी क धावै।

सारी मिलै न आधा पावै' ।।

श० – तज–छोड़कर धावै–दौड़े।

कहावत से लालच एवं अधिक पा जाने की लालसा प्रकट होती है।

अ० – थोड़ी मिली हुई वस्तु को छोड़कर पूरी वस्तु पाने की लालच में दौड़े तो जो थोड़ी वस्तु हाथ आई थी वह भी चली गई और पूरी तो नहीं ही मिल पाई। इसी पर कहा गया है कि बना–बनाया काम लालच बिगाड़ देता है। एक लोककथा है जो निम्नांकित है–

'एक सियारिन थी जिसके मुँह में माँस का टुकड़ा था। वह नदी के किनारे मछली के शिकार के लिए बैठी थी। उसने जैसे ही दांव पाया और मांस का टुकड़ा नदी के किनारे रखकर पानी में गई वैसे ही मांस का टुकड़ा चील लेकर उड़ गई। इधर मछली तो मिली नहीं, सियारिन का मांस का टुकड़ा भी चला गया। इसीलिए कहा गया है कि लालच बुरी बला है।

आपन लाल गँवाय के घर–घर मांगै भीख।

श० – लाल – पुत्र / गँवाय – खोना / भीख–भिक्षा।

अपनी वस्तु की कमी होने पर कष्ट होना तथा जब

किसी व्यक्ति की अपनी संचय की वस्तु खो जाती है उसके द्वारा कष्ट होते देखकर कहावत कही जाती है।

अ० – अपना पुत्र जीवन में ऐसी वस्तु है जो वंश का दीपक तो है ही साथ ही. माता–पिता की जीवन–भर सुरक्षा का भार अपने कंधों पर ढोता है। उसके न रहने पर या रुष्ट हो जाने पर दूसरों से जो सहानुभूति की भिक्षा माँगनी पड़ती है वह पीड़ा अकथनीय, असह्य होती है। ऐसे में यही कहावत चरितार्थ होती है'।

'जो अपने नहीं तो सपने नहीं' बात सही ही है। अपनी वस्तु अपनी ही होती है। अपनी खोई प्रिय वस्तु का पश्चाताप जीवन भर है।

कहावत के अनुसार अपने पास वस्तु न होने पर लोगों से भीख मांगनी पड़ती है। दूसरों का मुँह देखना पड़ता है।

बाँड़ा तो बाँड़ा जायं चार हाथ पगहौ ले जायं।

श० – बाँड़–पूँछ कटा जानवर। पगहौ जिस रस्सी से गाय–भैंस आदि जानवर बाँधे जाते हैं। कभी–कभी ऐसा होता है कि नया आगन्तुक व्यक्ति स्वयं तो जाता ही है घर के लोगों को भी साथ ले कर चला जाता है। जो भी कार्य होते रहते हैं, उनको स्वयं तो करता नहीं, जो होता रहता है उसमें भी बाधा देकर कार्यकर्त्ता को भी साथ लेकर चल देता है। जब कार्य में बाधा उत्पन्न हो जाती है तो कहावत इस्तेमाल होती है।

अ० – बाँड़ खुद तो गये, सो गये ही, साथ में चार हाथ का पगहौ लेते गये।

यानी जानवर खूंटा तुड़ाकर भागा और पगहा भी ले गया। हानि करना।

आग देखे पाद आवै, सत्ती कइसे होउ दइय्या।

श० – पाद– पेट से हवा निकलना/सत्ती–सती, पहले ज़माने में राजस्थान में क्षत्राणियाँ जब अपने पति के माथे पर विजय का टीका लगाकर, क़मर में तलवार बाँधकर, देश के लिए लड़ाई में भेज देती थीं तो यदि वह मर जाता था उसकी पत्नी भी पति के शव के साथ जलकर जीवन–लीला समाप्त कर देती थी। इस प्रकार पति के न रहने पर तमाम नारियाँ जलकर भस्म हो जाती थीं।

आग देखते ही भय के मारे हवा खिसकने लगती है तो सती होने की हिम्मत कैसे पड़ सकती है? तात्पर्य यह कि छोटा ही काम नहीं हो पाता तो बड़ा काम कर पाना बड़ा ही कठिन है ।

आन की आसा नित उपवासा।

श० – आन–दूसरे/ आसा–आशा/ इच्छा/ नित–रोज, रोज, उपवासा–उपवास, बिना खाये।

जब कोई आदमी पराधीन रहकर दूसरे के अधिकार में रहता है और उसे दूसरे की कृपा पर जीवित रहना पड़ता है या किसी आवश्यक वस्तु के लिए दूसरे के सहारे कार्य करना होता है या जब समय पर वस्तु नहीं मिल पाती है, तो यह कहावत कही जाती है।

अ० – दूसरे की आशा रहने पर रोज ही रोज भूखे रहना पड़ता है। यानी पराधीन रहना बड़ी विवशता होती है।

आपन फूली न निहारै, आन के ढेढ़रे का दउड़ा जाय।

श० – फूली – आँख की पुतली पर पड़ा हुआ सफेद दाग़/ढेंढ़र– रोग के कारण आँख में उभड़ा हुआ मांस।

जब मनुष्य अपनी कमी, रोग, दोष–ऐब का ध्यान न देकर दूसरे के ऐब को देखने दौड़े, दूसरों की आलोचना करे तो यह कहावत कही जाती है।

अ० – अपनी फूली तो नहीं देखते, दूसरे के ढेंढ़र को देखने दौड़ते हैं। अपने दोष को दोष न मानकर दूसरों का दोष बड़ा भारी मानना।

'आसन बासन डासन देय क चाहीं'।

श० – आसन बैठने का स्थान, बासन–बर्तन, यानी खाने–पीने की व्यवस्था/डासन – बिछौना, बिस्तर सोने की व्यवस्था। कहावत व्यावहारिक है।

अ० – अपने यहाँ कोई अतिथि या मेहमान आये तो उनके बैठने को सबसे पहले स्थान देना चाहिए, फिर

खाने–पीने, भोजन की चिन्ता करनी चाहिए तथा उसके बाद फिर बिछौना। इस प्रकार उसकी सेवा का पूरा–पूरा ध्यान रखना चाहिए।

'आप भला तो जग भला'

यह एक आदर्शवादी कहावत है। अपनी तथा दूसरों की अच्छाई के समय कही जाती है।

अ० – दुनिया में यदि आदमी स्वयं भला है, तो उसके लिए संसार में सभी आदमी भले मिल जाते हैं।

आन के घरे से आग मांगि लावै नाँव धरावै भसन्दर।

श० – भसन्दर– भस्म रमाने वाला/आन–दूसरे।

कहावत तब लागू होती है, जब अपने पास तो कुछ भी न हो, दूसरे के बल–बूते पर अपनी प्रसिद्धि का डंका पीटे।

अ० – अपने घर तो आग भी न हो दूसरे के घर से आग माँगकर उसकी राख बनाकर शरीर में लगाकर भस्मधारी बाबा बनें व कहलावे महात्मा। दूसरे के बल पर यश कमाना।

आपन तेल अस दूसरे क पानी अस।

अपनी वस्तु की अधिक से अधिक कीमत लगाना तथा दूसरे की वस्तु की कोई भी इज्ज़त न करना।

अ० – अपने तेल को तेल समझना और दूसरे के तेल को पानी की भाँति खर्च करना।

आपन नैना मुझको दे, तू झुलौती रह।

श० – नैना–आँख/झुलौती–लटके रहना।

जब कोई व्यक्ति अपनी वस्तु को दूसरे को देकर स्वयं बेवकूफ बनकर अपना नुकसान करता है तो कहते हैं।

अ० – किसी ने हमारी वस्तु को लेकर अपना काम तो निकाल लिया और हम हैं कि दूसरे को अपनी चीज़ देकर बेवकूफ बने बैठे हैं। यानी किसी को आँख जैसी उपयोगी अमूल्य वस्तु देकर, हम अन्धे बने बैठे हैं। वस्तु के बिना कष्ट उठाना।

आम्र खाय से मतलब पेड़ गिनै से नाहिन।

कोई व्यक्ति जब किसी काम की व दूसरों के द्वारा पाई गई वस्तु की पूरी खोज–बीन व जानकारी चाहता है, उससे सारा लेखा–जोखा जानना चाहता है तो कहावत कहते हैं।

अ० – तुम्हें जो वस्तु चाहिए थी वह मिल गई, तुम्हारी आवश्यकता पूरी हो गई। अब तुमसे क्या मतलब कि वस्तु कहाँ से आई, कैसे आई, कौन लाया?

यानी आम चाहिए था आम मिल गया, अब पेड़ गिनने की क्या आवश्यकता है?

आग लगाय जमालो दूर खड़ी।

श० – आग लगाय – घर में झगड़ा झंझट पैदा करना/जमालो – इस नाम से किसी स्त्री का बोध होता है।

कहावत घरेलू फूट, आपसी मनमुटाव का प्रतीक है। जिस झगड़े को किसी दूसरे ने लगाया है।

अ० – कहावत झगड़े को लगाने वाले के प्रति कही गयी है। आग लगाकर झगड़े की नींव डालकर जमालो खुद दूर खड़ी हुई, यह सफ़ाई देने के मारे कि जैसे इनका कोई हाथ ही उसमें न हो।

आज मरै कल दूसर दिन।

कहावत बढ़ते हुए समय की गति के ऊपर कही गई है।

अ० – यही संसार का नियम है, जो आज दुनिया से विदा हो गया, चला गया, घरवालों के लिए दूसरे दिन वह ग़म वह रोना–धोना नहीं रह जाता है। धीरे–धीरे शोक कम होने लगता है।

आगि लागै मंड़ये, बजर परै बिआहे।

श० – आगि लागै – नाश हो जाय, जल जाय, बजर–वज्र। मंड़ये–मंडप।

आपसी बैर, मनमुटाव, ईर्ष्या, जलन, दुर्भावनाओं के प्रति लोग कहावत कहते हैं। जब कोई किसी से उदासीन हो जाता है तो कहावत कही जाती है।

अ० – उनके मंडप में आग लगे, उसके विवाह में वज्र

गिर जाय, मुझे उनसे क्या लेना–देना है। यानी किसी के प्रति दुर्भावनायें रखना या क्रोधवश दुर्भावनायें प्रकट करना।

आन के लड़िका मैं लरकोर,
देखय दइव कब आहट मोर'

श० – आन–दूसरा, लरकोर–बच्चेवाली माँ, दइव–भगवान, आहट–खबर, सुधि।

कहावत निःसंतान नारी के मनोभावों पर कही गई है।

अ० – कोई निःसंतान नारी कहती है कि अभी तक मैं दूसरों के बच्चों को खिलाकर, गोद में लेकर बच्चे वाली बनी हूँ, देखती हूँ भगवान कब मुझे बच्चा देते हैं और मेरी खबर लेते हैं। कब मुझे संतान का सुख मिल पाता है?

आदमी हो कि पैजामा हो।

किसी बेढंगे आदमी पर कहावत कही गई है। उसकी तुलना पैजामे से की गई है क्योंकि कपड़ों में पैजामा बेढंगा माना जाता है।

अ० – आदमी हो कि पैजामा हो? किसी बात का ढंग ही नहीं है। उल्टा काम करते हो।

आव जा घर तोहरे आय।

किसी बाहरी आदमी को जब अपने घर की सी छूट दी जाती है तो कहावत कही जाती है।

अ० – इस घर में पूरी स्वतंत्रता है तुम्हें, जब चाहो आओ – जब चाहो जाओ। घर तुम्हारा ही है। बाहरी व्यक्ति को घर वालों की सी छूट देना।

आवै न जाय लाला हमरौ नउना लिख देया।

किसी मूर्ख व्यक्ति का अपना नाम, अच्छे लोगों में लिखवाने की महत्वाकांक्षा करना।

अ० – बेवकूफ होने पर भी बुद्धिमान होने का दावा करना। अक्लमंदों में शामिल होने का शौक।

आगे मिलइ बिप्र जो काना।
बड़ी भाग जो उबरै प्राना।।

श० – विप्र–ब्राह्मण/ भाग–तकदीर, किस्मत/ उबरै–बचें। प्राना–प्राण।

कहावत किसी शुभ मुहूर्त के समय अपशकुन बचाने तथा विशेष रूप से यात्रा संबंधी अपशकुन के प्रति कही गई है।

अ० – यात्रा के समय निकलते ही यदि सामने काना मिले तो अपशकुन है ही और यदि कहीं काना ब्राह्मण हो तब तो बड़ा ही अपशकुन माना जाता है। कहते हैं बड़ा भाग्य हो तभी प्राण बचते हैं।

आपन कान न टोवै कउवा के पीछे दउड़ै।

श० – टोवै–टटोलना, छूना।

कहावत किसी दूसरे की बात पर बिना सोचे समझे विश्वास कर लेने पर कही गई है।

अ० – यदि किसी ने कहा कि कान कउवा ले गया तो अपना कान देखने के बजाय कौवे के पीछे–पीछे दौड़ना कहाँ तक अक्लमंदी होगी? इसलिए पहले अपनी वस्तु देख के तो किसी के पीछे दौड़ना चाहिए। एक कहावत है नाँद में थाली नहीं खोती। 'लेकिन लोग शंकावश नाँद में भी थाली टटोलते हैं। पहले अपने घर में देख लो फूहड़ न बनना पड़े, दूसरों को चोरी लगाकर, बदनामी न उठानी पड़े।

आध मास ऋतु आगे धावै।
आधा जेठ आषाढ़ कहावै।।

अ० – आधे जेठ से ही बरसात का आसार प्रकट हो जाता है यानी जून के तीसरे सप्ताह में बादल व पानी की बूंदा–बांदी शुरू हो जाती है। कहावत ऋतु संबंधी है।

आय–आय बदरा जो छिन–छिन जाय बिलाय।
भिखन, कहै वर्षा सही, रही अभी अंटकाय।।

श० – भिखन अवधी कवि का नाम है/ छिन–छिन–थोड़ी–थोड़ी देर में, बिलाय, बर्बाद होना/अंटकाय – रुकना, थमना।

अ० – कहावत वर्षा सम्बंधी है। अवधी के कवि भिखन का कहना है कि बार–बार जो बादल आकाश में आ–आकर समाप्त होते रहते हैं, इसका मतलब है कि अब पानी बरसने ही वाला है। निश्चय ही वर्षा सही समय पर होनेवाली है।

आज खाय बिहान क झंखे।
डेहरी धरै दलिद्दर हँसे।।

श० – बिहान–दूसरे दिन/ झंखे–पश्चाताप करना, डेहरी–घर का चौखट/ घर के अंदर आने–जाने का मुख्य दरवाजा/ घरे–पकड़े/दलिद्दर–निर्धनता, गरीबी। हँसे–खुश होना, हँसना।

किसी की दुर्भाग्यपूर्ण परिस्थितियों पर यह कहावत चरितार्थ होती है। जिसके घर में ग़रीबी, भुखमरी हो या किसी वस्तु का अभाव हो।

अ० – गरीबी ऐसी कि एक समय खाने के बाद दूसरे समय् की चिन्ता में परेशान होना। ग़रीब आदमी अपने दुर्भाग्य से परेशान है कि अब कैसे काम चलेगा खाने का क्योंकि उसके घर की देहली पर दलिद्र का वास हो चुका है। वह बीच राह में बैठा है कि जाने का नाम ही नहीं लेता है तथा घर के मालिक का मज़ाक बनाता रहता है।

आपन खिचड़ी अलगै पकावती।

अ० – जब कोई व्यक्ति बहुमत से अलग अपने विचारों को रखता है तो लोग इस कहावत का प्रयोग करते हैं कि इनकी खिचड़ी सबसे अलग ही बनती रहती है। यानी कि सब लोग कुछ कहते हैं, फलां सज्जन अलग ही अपनी राय से काम करते हैं। अन्य लोगों के विचारों से अपने विचारों का तालमेल न खाना।

आपन तिरिया मने ना भावे,
आन के मेहर मीठी–मीठी।

श० – तिरिया–स्त्री/ आन दूसरे/ मेहर–स्त्री, पत्नी। कहावत गृहस्थ जीवन से संबन्धित है। जब किसी व्यक्ति को अपनी घरेलू वस्तुओं से कहीं अधिक दूसरे के घर की वस्तुं पसंद आये, अपने घर के प्राणी से दूसरे के घर के लोग अधिक भले और सुन्दर प्रतीत हों, तो कहावत कही जाती है। कवि कबीरदास जी के शब्दों में –

माया मरी न मन मरा, मर–मर गया शरीर।
आसा तृष्ना नहिं मरी, कह गये दास कबीर।।

कहावत भी आशा–तृष्ना न मरने पर ही है।

अ० – अपनी स्त्री तो मन नहीं भाती है और, दूसरे की स्त्री बड़ी प्यारी और देखने में बड़ी सुन्दर लगती है।

आपन बिस्मिल्ला, दूसरे क नउजै बिल्ला।

श० – बिसमिल्ला – भला/ नउजे–नहीं।

कहावत स्वार्थपूर्णता से संबंधित है। इसी पर एक कहावत है 'अपने खाये बिहान अहै' तथा गोस्वामी तुलसीदास जी के शब्दों में–

सुर–नर–मुनि सब कै यह रीती।
स्वारथ लागि करहिं सब प्रीती।।

अ० – अपना भला हो, दूसरे का चाहे हो चाहे न हो। कहावत उर्दू की होते हुए काफी प्रचलित होने के कारण आमतौर पर सभी कहते हैं।

आन क लोखरी सगुन बतावै,
अपुवा कुकुरे से चिथावै।

श० – लोखरी–लोमड़ी, सगुन–शकुन, अपुवा–अपना, स्वयं। चिथावै–चिथड़े कराना, घायल होकर टुकड़े–टुकड़े हो जाना।

कहावत शकुन–अपशकुन के ऊपर कही गई है। हमारे यहाँ यात्रा के समय लोमड़ी का मिलना बड़ा शकुन माना जाता है। गोस्वामी जी के शब्दों में–

लोवा पुनि–पुनि सगुन देखावा।
नकुल दरस सब काहू पावा।।

अतः लोमड़ी, नेवला ये सभी यात्रा के समय शुभ एवं कल्याणकारी माने जाते हैं।

अ० जो लोमड़ी दूसरे को शकुन बताती है वही लोमड़ी कुत्तों से घायल हो जाती है। लोग कहावत किसी के ऊपर व्यंग्य में कहते हैं मगर वे यह भूल जाते हैं कि होनी की प्रबलता तो सभी के साथ है, चाहे शकुनी हो या अपशकुनी। रहीम कवि के शब्दों में :

राम न जाते हरिन संग सीय न रावन साथ।
जो रहीम भावी कतहुं, होत आपने हाथ।।

इस तरह से जहाँ विधि गति बलवान होती है, वहाँ किसी का वश नहीं चल पाता है।

आजा के बिआहे मां नाती बराती।

श० – आजा–दादा, बाबा/नाती–पौत्र।

यह कहावत नाती को महत्त्व देने के लिए व्यंग्य रूप में कही गई है। बाबा के विवाह में नाती बाराती बन कर जा रहा है। कभी–कभी दूर दराज नाते रिश्तों में घटना संभव भी हो जाती है।

आग जे लीली अंगार ऊ उगिली।

श० – लीली–निगलना–खाना। अंगार–जलता हुआ कोयला। उगिली – उगलना, मुँह से बाहर निकालना।

कहावत किसी असामाजिक तत्व को अनर्गल कार्य करते देखकर कही गई है।

अ० – आग खायेगा अंगार उगलेगा। दुनिया में जो भी गलत काम, अत्याचार, अनाचार, अन्याय करेगा वही उस कार्य का बुरा से बुरा परिणाम पायेगा।

आम की नाई बउरा
दूब की नाई फइला।

श० – बउरा–बौर लगना–आम का बौर/नाई–तरह/फइला–चारों ओर विस्तार पाना। धरती पर फैल जाना।

कहावत आशीष के रूप में कही गई है। पहले के समय में गांवों में स्त्रियां बेटी–बहुओं को आशीर्वाद देते समय कहा करती थीं।

अ० – ईश्वर करें जैसे आम में बौर एवं फल लगते हैं, उसी तरह अपने जीवन में तुम भी फलो–फूलो। संपन्नतापूर्ण जीवन हो और दूब जैसे धरती पर वर्षा का जल पाते ही फैल जाती है, वैसे ही तुम भी फैलो। कहावत है 'दूब जल गई जड़ न गई। 'यानी दूब जेठ की जलती, तपती गर्मी, बालू में भी सूख जाती है, किन्तु जलती नहीं, अपनी जड़ धरती में बनाये रहती है। पानी पाते ही हरी–भरी होकर दूर–दूर तक पृथ्वी पर फैलती चली जाती है। गुरु नानक के शब्दों में –

नानक नन्हें ह्वै रहो, जैसे नन्हीं दूब,
घास–पात सब जल गये, रही दूब की दूब।

आपन अकिल दूसरे क धन ढेर देखात।

कहावत मानवगत व्यावहारिकता पर कही गई है।

अ० – प्रत्येक व्यक्ति अपनी अक्ल को और दूसरे के पैसे को अधिक समझता है। इसलिए कि जब अक्ल की बात आती है तो वह पूरे जोर–शोर के साथ अपनी बुद्धि का प्रयोग करता है फिर वह अपने आगे किसी को अक्लमंद नहीं समझता है। इसी प्रकार से दूसरों का खर्च भूलकर लोग उसके पैसे को ही ज्यादा समझते हैं। दूसरे को दूसरे का धन अधिक दिखाई देता है।

आराम बड़ी चीज है मुँह ढक के सोइये।
किस–किस को याद कीजै, किस–किस को रोइये।।

कहावत बड़ी बेफ़िक्री व मस्ती की ज़िन्दगी का प्रतीक बनकर सामने आई है।

अ० – आराम से बेफिक्र होकर मस्ती से सोइये। तमाम लोग हैं, भला किसको–किसको याद किया और किस–किस को रोया जाय? यानी कि 'मस्तराम' बनकर ज़िन्दगी के दिन गुजार दें, चाहे कोई कुछ कहे या गालियाँ हज़ार दे।

आगे नाथ न पीछे पगहा,
तिनके पीछे रोवइ गदहा।

श० आगे, सामने, भविष्य में। नाथ, स्वामी, भगवान, संरक्षक, मालिक। बैल को नियंत्रित करने हेतु उसके नाक में पड़ी रस्सी। पीछे–पीछे, बाद में/ पगहा–जिस रस्सी से जानवर बाँधे जाते हैं।

कहावत अभागे, दुःखी, अनाथ व्यक्ति पर कही गई है। दुनिया में कुछ ऐसे भी अभागे व्यक्ति होते हैं, जो जीवन भर अकेले ही रह जाते हैं। कहावत उन्हीं लोगों पर कही गई है।

अ० न आगे कोई मालिक है, न पीछे संतान हैं।

आप–आप मां गाड़ी छूट जाये।

कहावत किसी दो तकल्लुफ़वाले व्यक्तियों के प्रति कही गयी है जो किसी कार्य के लिए पहले आप–पहले आप में काफ़ी समय लगा देते हैं। कहावत में व्यंग्य निहित है।

अ० – इस तरह से आप–आप में इतना समय व्यतीत हो जायेगा, कि गाड़ी छूट जायेगी। यानी पहले आप

चढ़ें—पहले आप चढ़ें में गाड़ी का समय यूं ही निकल जायेगा। तकल्लुफ़ में समय का दुरुपयोग करना।

आप जाय औ औरौ घालै।

श० – औरौ—दूसरों को, घालै—बरबाद करना।

कहावत उन व्यक्तियों पर लागू है जो स्वयं भी बरबाद होते हैं तथा दूसरों को भी अपने साथ—साथ बरबाद करते हैं।

अ० – स्वयं तो बरबादी के रास्ते पर हैं ही, अपने साथ—साथ दूसरों को भी बरबाद करने पर तुले रहते हैं। किसी ने इसी पर कहा भी है कि 'आप तो जायँ चार घरां लै के जायँ। 'अच्छे भले और चार घर ऐसे लोग नाश करके रख देते हैं।

आगे देखेउ दधि अरु मीना, कर पुस्तक दुइ विप्र प्रबीना।

श० – दधि—दही/अरु—और/मीना—मछली/कर—हाथ, प्रबीना—चतुर, प्रवीण, होशियार।

उपरोक्त पंक्ति गोस्वामी तुलसीदास जी की है। यह यात्रा—मुहूर्त पर कही गई है। यात्रा काल में शकुन को बहुधा लोग महत्त्व देते हैं।

अ० – यात्रा में निकलते समय यदि दही, मछली, जल से भरा घड़ा मिले तो कार्य पूर्णरूप से सफल माना जाता है। हाथ में पुस्तक लिए हुए दो ब्राह्मणों का मिलना भी बड़ा शकुन होता है।

आधे हथिया मूर मुराई,
आधे हथिया सरसों राई।

श० – हथिया—हस्त/वर्षाकाल के अंत का नक्षत्र। मूरमुराई—पतलीवाली मूली/ राई—सरसों की एक जाति जो सरसों से बहुत छोटी होती है।

अ० – जब हथिया नक्षत्र लगे तो नक्षत्र के आधे समय में मूली तथा आधे समय में सरसों—राई बोना चाहिए।

आकर कोदौं नीम जवा,
गांडर, गोहूँ, बेर, चना।

श० – गांडर—एक प्रकार की मूँज जैसी घास होती है। आकर— आक, मदार/कोदों—मोटा अनाज है मगर सात अनाजों में इसकी गिनती नहीं है।

सात अनाज हैं – गेहूँ, जौ, चना, मटर, मक्का, जोन्हरी, बाजरा। कहावत खेती सम्बंधी है।

अ० – जिस वर्ष मदार का पेड़ खूब फले उस साल समझना चाहिए कि कोदों भी खूब पैदा होगा। जिस साल नीम खूब फले, उस साल जौ खूब पैदा होगा और जिस साल गांडर घास हो उस साल गेहूं की फ़सल खूब होगी और जिस वर्ष बेर फले उस वर्ष चना खूब फलेगा। यही खेती की पहचान है।

आस—पास रबी बीच में खरीफ,
नोन मिर्च डालकर रख गया हरीफ।

श० – रबी—रबी फसल का नाम है। फसल तीन प्रकार की होती है। १. रबी २. खरीफ ३. जायद।

रबी—गेहूँ, चना, मटर, सरसों, जौ, इत्यादि।

खरीफ—ज्वार, बाजरा, सांवा, उर्द, मक्का, धान आदि।

जायद—खीरा, ककड़ी, फूट, खरबूजा, तरबूज आदि।

कहावत में किसानों को सचेत किया गया है कि कौन सा खेत कहाँ बोना चाहिए?

अ० – खरीफ की फसल वहाँ बोनी चाहिए जहाँ रबी की फसल न हो। यानी (पलिहर) खेत जहाँ लोग जानवरों को चराते हों। जो खेत कुछ समय तक के लिये बिना बोया छोड़ा गया हो ताकि मिट्टी की जलवायु बदल जाये। कड़कड़ी मिट्टी भुरभुरी हो जाय। ऐसी जगह में यदि खरीफ की खेती की जायगी तो छुट्टा जानवर यानी जो रात—दिन छूटे रहते हैं, वे खेत को ऐसे चरेंगे जैसे कि उस हरियाली में किसी ने नमक मिर्च डालकर और भी स्वादिष्ट बना दिया हो। अतः रबी व खरीफ की खेती एक साथ नहीं होनी चाहिए।

आदि न बरसे आदरा, हस्त न बरसे निदान।
कहै घाघ सुनु घाघिनी, भये किसान—पिसान।।

श० – आदि—शुरू में। आदरा, हस्त—एक नक्षत्र का नाम है। किसानपिसान—यानी किसानों की दुर्दशा होना, अधिक कष्ट उठाना, आटे की भाँति पिसते रहना।

कहावत वर्षाकाल के नक्षत्रों के ऊपर उद्घाटित की गई है।

अ० – यदि वर्षाकाल के शुरू के अद्रा तथा अंत में

हस्त नक्षत्र न बरसे तो किसान बरबाद हो जाता है।

अद्रा गइल तीन गइल, सन साठी औ कपास।
हथिया गेले सब गइल, आगिल पाछिल मास।।

श० अद्रा नक्षत्र का नाम है। गइल/ गया। सन–जिससे सुतली बनती है। साठी–एक प्रकार का धान है जो बोने के समय से साठ दिन बाद तैयार हो जाता है। कपास–जिसकी रूई बनती है, हथिया–एक नक्षत्र को कहा जाता है। गेले–गये। आगिल–आगे। पाछिल–पीछे।

कहावत नक्षत्रों से सम्बन्धित है।

अ० – अद्रा नक्षत्र में पानी न बरसने पर सन, साठी एवं कपास की ही हानि होती है। मगर जब हथिया नहीं बरसता तो आगे–पीछे की सारी फसलें बर्बाद हो जाती हैं। कहावत से ऐसा लगता है कि कवि घाघ को भी पूर्वी बोली लिखने में आनंद आता था।

आवत आदर ना दियो, जात न दीनों हस्त।
ये दोनों पछतात हैं, पाहुन और गिरस्त।।

श० आदर–सम्मान, अद्रा नक्षत्र। हस्त–हाथ, हस्त नक्षत्र, पाहुन–मेहमान, अतिथि, गिरस्त–गृहस्थ।

यहाँ पर कहावत के दो अर्थ निकलते हैं। एक तो घर–गृहस्थी संबंधी दूसरा नक्षत्र संबंधी।

अ० – कृषि सबंधी कार्यों में अद्रा और हस्त नक्षत्रों का बहुत बड़ा महत्व होता है। कवि घाघ के कथनानुसार यदि किसान भाई ने अद्रा तथा हस्त नक्षत्रों का आते ही आदर न किया तो उन्हें बड़ी हानि उठानी पड़ती है क्योंकि अद्रा के आते ही पानी बरसते ही खेतों की बोआई न की तथा जाते–जाते हस्त न बरसा तो किसान व गृहस्थ जिन्हें खेती पर ही गुजर करना है, वे बहुत ही पश्चाताप करते हैं।

कहावत का दूसरा अर्थ है – यदि घर आये मेहमान को आते ही स्वागत न किया और जाते समय हाथ पर कुछ धनराशि विदाई पर न दी तो बाद में मेहमान व गृहस्थ दोनों ही पछताते हैं, किन्तु बाद के पछताते होता ही क्या है? कहा है कि 'अब पछताये होत का चिड़िया चुग गई खेत' या 'समय चूकि पुनि का पछिताने।' अतः जो कुछ भी सोचना–समझना हो समय रहते ही सोच–समझ लेना ही ज्यादा अच्छा होता है।

आठ कठौती माठा पीवैं, सोरह मकुनी खाय।
वाके मरे न रोइये, घर का दरिद्दर जाय।।

श० कठौती – पुराने ज़माने में रोटी आदि रखने के लिए लकड़ी की गोल गहरी परात की तरह की वस्तु जो हर नाप की बनती थी। मकुनी–गेहूं–चने या चने की मोटी रोटी, दरिद्दर–दरिद्रता–गरीबी।

कहावत अधिक खाने वाले के ऊपर व्यंग्य में कही गई है। अधिक खाने वाला दलिद्र (दरिद्र) होता है।

अ० – चाहे जो भी व्यक्ति हो, यदि वह आठ कठौती मट्ठा पीवे और सोलह मोटी–मोटी रोटियाँ खाता है तो यदि वह मर भी जाय तो रोना नहीं चाहिए, समझ लो कि आज घर से ग़रीबी व दरिद्र चला गया।

आपन–आपन सब कोय कहै, दुख में नहीं संगाती।
अंग–वस्त्र खातिर झगड़ंत, घाघ कहै यह विपति क अंत।।

श० – संघाती–साथी, साथ देने वाला। अंगवस्त्र–पहनने को कपड़े। झगड़ंत–झगड़ा–लड़ाई करना।

कहावत पारिवारिक झगड़े–झंझट के ऊपर कही गई है। कष्ट के समय में कौन किसको पहचानता है? रहीम कवि के शब्दों में –

'दुरदिन परे रहीम कहि, भूलत सब पहिचानि।' अतः कहावत कष्ट के समय को लेकर कही गई है।

अ० – अपनी ही अपनी परेशानी सब कहते हैं। दुःख के समय में कोई बात भी नहीं पूछता कि 'तुम्हें क्या कष्ट है।' आज आदमी पेट की रोटी तथा पहनने के लिए वस्त्र को लेकर झगड़ा कर रहा है। खाना कपडा तथा जीने के लिए आवश्यक सामानों को लेकर घर–घर में कलह मची हुई है। इस आपसी झगड़े का होना कितनी बड़ी विपत्ति का कारण है। कवि का कथन है कि क्या इससे भी बढ़कर कोई विपत्ति हो सकती है भला?'

आठ गाँव का चौधरी, बीस गाँव का राउ,
अपने काम न आवै, अपनी अइसी तइसी मं जाय।

श० – चौधरी – किसी जाति या समाज का मुखिया, सरदार। राउ–राजा, दरबारी, सरदार, कच्छ राजपूताने के कुछ भागों के धनी–अमीर। अपनी अइसी–तइसी– एक प्रकार की गाली है।

कहावत स्वार्थपरक है। किसी परिचित के उच्च पद पर आसीन होने पर स्वजनों के स्वार्थ की पूर्ति न होने पर कही गयी है।

अ० – कोई भी यदि ऊँचे पद का अधिकारी है, यानी आठ गांव का मुखिया या बीसों गांव का राजा है, तो लाभ ही क्या है, जब किसी अपनों के काम न आवे। कहावत इसी पर कही गयी है कि 'हमरे बाबा के नौ हर चलै हमरे काहे लागै'

यानी बाबा के नौ हल चलने का क्या लाभ जब हमको कुछ भी न मिले, जब कोई अधिकार ही न प्राप्त हो सके। किसी अपनों से कोई भला न हो तो वह अइसी–तइसी में जाय।

आलस नींद किसानै नासै, चोरै नासै खांसी।
अंखिया लीवर बेसवे नासै, बाबै नासै दासी।।

श० – लीवर– कीचड़ भरी, गंदी। बेसवे–वेश्या, रंडी। बाबै–साधु, संन्यासी। नासै–नाश करे, दासी–नौकरानी, सेविका–चेली।

कहावत सिद्धान्तवादी होते हुए शिक्षाप्रद है। यानी वेश्या, किसान, चोर एवं साधु के लिए क्या–क्या हानिकारक है।

अ० – आलस्य एवं नींद किसान का नाश करती है, खाँसी चोर का तथा गंदी शृंगारहीन, कीचड़ भरी आँखें वेश्या का नाश करती हैं। जो वेश्या सजी–संवरी नहीं है तो भला कौन उसे पूछेगा? उसी प्रकार से साथ रहने वाली दासी, साधु की साधना, पूजा पाठ में बाधक बनती है। साधु के एकाग्रचित्त को भ्रमित कर जप–तप को भंग करने में सफल होती है। अतः बाबा के व्रत में बाधक बनती है।

आद्रा तो बरसे नहीं, मृगसिरा पवन न जोय।
तो जानो यों भड्डरी, बरखा बूंद न होय।।

कहावत वर्षा संबंधी लक्षण पर उद्‌घाटित की गई है। उसके लक्षण हैं–

अ० – यदि आर्द्रा नक्षत्र में पानी न बरसा तथा मृगशिरा में हवा न चली तो निश्चय ही बरसात तनिक भी न होगी, ऐसा कवि भड्डरी का कहना है–

आषाढ़ी पूनों दिना, बादर भीनों चंद।
सो भड्डर जोसी कहै सकल नरा आनंद।।

श० – आसाढ़ी पूनों–असाढ़ महीने की पूर्णमासी, भीनों–छिपा हुआ होना। चंद–चंद्रमा, ज्योतिषी नरा–आदमी। आनंद, खुश–प्रसन्न।

अ० – आकाश में घने बादल छाये रहें तो निश्चय ही पानी खूब बरसेगा तथा फसलों को लाभ होगा जिससे सभी मनुष्य बड़े प्रसन्न रहेंगे।

आगे रवि पाछे चलै, मंगल जो आसाढ़।
तौ बरसै अनमोल ही, भूमि अनंदै बाढ़।।

श० – रवि–सूर्य, अनमोल–अमूल्य, जिस वस्तु की कीमत बहुत ज्यादा हो कि कोई दे ही न पाये, अनंदै–प्रसन्नता।

अ० – कवि भड्डरी का कहना है कि आषाढ़ मास में आगे–आगे सूर्य तथा पीछे मंगल चलें तो वर्षा भरपूर होगी।

आसाढ़ मास पूनों दिवस बादल घेरे चंद।
तो भड्डर जोसी कहय, होवै परमानंद।।

कहावत भड्डरी की है, जो वर्षा संबंधी है।

अ० – आषाढ़ मास की पूर्णमासी को चंद्रमा के चारों ओर यदि बादल घेरे हों तो वर्षा का योग माना जायेगा।

असाढ़ मास आठै अंधियारी जौ निकरै चंदा जलधारी,
चंदा निकरै बादर फोर, साढ़े तीन माह वर्षा कर जोर।

अ० – यदि आषाढ़ मास की अंधियारी अष्टमी को बादलों को फोड़ कर चंद्रमा निकलता है, तो वर्षा खूब होगी, साढ़े तीन माह तक पानी ही पानी बरसता रहेगा।

आसाढ़ी पूनों की सांझ, वायु देखिये नभ के मांझ।
नैऋत भर बूंद परय राजा–परजा भूखन मरय।।

श० – पूनों–पूर्णमासी। नभ–आकाश। नैऋत–दक्षिण, पश्चिम का कोना।

कहावत अकाल के लक्षण पर कही गई है।

अ० – असाढ़ की पूर्णमाशी की संध्या के समय आकाश में हवा देखने से ज्ञात होगा कि हवा का झोंका किस तरफ है। यदि झोंके के साथ हवा चले तो समझो कि वर्षा बिलकुल ही न होगी, राजा–प्रजा दोनों ही भूखे–मरेंगे।

अद्रा भरनी, रोहिणी, मघा उत्तरा तीन।
दिन मंगर आंधी चलइ, तब लौं बरखा खीन।।

कहावत वर्षा ज्ञान सम्बन्धी है।

अ० – मंगल के दिन आर्द्रा, भरणी, रोहिणी, मघा और तीनों उत्तरा नक्षत्रों में आंधी चले तो समझना चाहिए, कि वर्षा बिल्कुल नहीं होगी।

आगे मंगर, पीछे भानु,
बरसा होवे, ओस समान।

श० – भानु–सूर्य।

कहावत ऋतु संबंधी है जो भविष्य की जानकारी देती है।

अ० – मंगल ग्रह आगे व सूर्य पीछे रहे तो वर्षा नाम मात्र को ही होगी।

आगे मेघा, पीछे भान, पानी–पानी रटत किसान।

श० – मेघा–मघा नक्षत्र, भान–सूर्य।

अ० – मघा नक्षत्र के पीछे सूर्य हो तो अकाल पड़ता है। किसान पानी–पानी रटता ही रह जाता है।

आगे मंगर, पीठ रवि, जौ असाढ़ के मास।
चौपट नास चहूँ दिसि, बिरलै जीवन आस।।

अ० – ज्योतिष शास्त्र के अनुसार आषाढ़ मास में यदि मंगल आगे हो सूर्य पीछे होने पर चारों ओर त्राहि–त्राहि मच जाती है।

आश्विन बदी अमावस्या, जो आवै सनिवार।
समया होवै किरवरो जोसी करो विचार।।

श० – आश्विन–क्वार माह, बदी–अंधेरा पाख, विखरो–खरा दिन, खराब समय।

अ० – क्वार मास की अमावस्या को यदि शनिवार का दिन पड़े तो भड्डरी ज्योतिषी का कहना है कि समय बहुत अच्छा नहीं बीतता है।

आसाढ़ी पूनो दिना निर्मल उगै चंद।
'पीव' जाव तुम मालवे, आवैंगे दुख दंद।।

श० – पूनो – पूर्णमासी, निर्मल–स्वच्छ, साफ, दंद–दुख क्लेश, झगड़ा।

अ० – यदि असाढ़ की पूर्णमासी को चंद्रमा साफ दिखाई दे तो समझो कि अकाल का संकट आने वाला है। इसलिए पत्नी कहती है कि पति, तुम परदेस यानी मालवे चले जाओ, यहाँ तमाम झगड़े, झंझट होने वाले हैं। अकाल पड़ने वाला है।

आन का आंटा आन क घीव,
खाय ल–खाय ल बाबा जीव।

कहावत – दूसरे की वस्तु का भरपूर इस्तेमाल से सम्बन्धित है।

अ० दूसरे का आटा, दूसरे का घी है, फिर संकोच किस बात का है? बाबा जी खूब प्रेम से खाओ। अंग्रेजी में किसी ने कहा है –

फूल्स मेक फीस्ट्स ऐन्ड वाइज़ मैन इट्स देम।

अ० – मूर्ख लोग भोजन का आयोजन करते हैं, चतुर लोग भोजन करते हैं।

आगे कै खेती आगे–आगे,
पीछे कै खेती, भागे–जोगे।

अ० – खेत की बोआई पहले होगी तो फसल भी पहले तैयार होगी। यदि खेत बाद में बोया जायेगा तो फिर वह फसल बाद में ही होगी।

आधे चित्रा फूटी धान,
विधि का लिखा न होई आन।

श० – चित्रा एक नक्षत्र का नाम है, फूटी–फूटना, विधि – ब्रह्मा, विरंचि, चतुरानन, सृष्टि के बनाने वाले, आन–दूसरा।

कहावत धान की खेती से संबंधित है।

अ० – चित्रा नक्षत्र के आधा बीत जाने पर ही धान की बालियों में से धान दिखाई देगा। यही ईश्वरीय नियम है, इसके अलावा दूसरा कुछ भी न होगा।

आद्रा चौथ मघा पंचक।

कहावत वर्षा के प्रति कही गई है।

अ० – आर्द्रा में पानी अवश्य बरसना चाहिए। यदि आद्रा में पानी बरसा तो समझो कि पुनर्वसु, पुष्य, श्लेषा चारों नक्षत्रों में पानी बरसेगा और मघा में पानी बरसा तो पांचों नक्षत्रों में यानी मघा, पूर्वा, उत्तरा, हस्त और चित्रा में भी पानी बरसेगा।

अखैतीज रोहिणि न होई। पौस, अमावस मूल न जोई।।
राखी श्रवण हीन विचारो। कातिक पूनों कृतिका टारों।।
मही–मही खल बलहिं प्रकासे।
कहत भड्डरी सालि बिलासे।।

श० – तज–छोड़ना, रोहिणि–एक नक्षत्र, पौस–पूस माह, मूल, नक्षत्र, राखी–रक्षाबंधन, कृतिका–नक्षत्र, मही–धरती, पृथ्वी, खल–दुष्ट, प्रकासे–सामने आना।

कवि भड्डरी नक्षत्रों की जानकारी एवं वर्षा होने के लक्षणों की पूरी–पूरी जानकारी रखते थे। तमाम जानकारी उन्हें नक्षत्रों के द्वारा थी। सभी जानकारियां उन्होंने जनता के सामने रखने में कोई कोर–कसर नहीं रखी है।

अ० – बैशाख अक्षय तृतीया को यदि रोहिणी नक्षत्र न पड़े, पौष की अमावस्या को यदि मूल न पड़े, सावन की पूर्णमासी को यदि श्रवण न पड़े, कार्तिक की पूर्णमासी को यदि कृतिका टल जाय तो समझना चाहिए कि धरती पर दुष्टों का राज्य होगा–तमाम असामाजिक तत्व, घूम–घूम कर पृथ्वी पर तरह–तरह के उपद्रव करेंगे।

आग जो आपन गुन छोड़ि देय तौ भुनगो चढ़ि जांय।

श० – भुनगा–छोटा कीड़ा।

कहावत–गुण–स्वभाव के ऊपर कही गई है।

अ० जिसका जो गुण हो उसे छोड़ने पर स्वयं की हानि होती है। जैसे अग्नि यदि अपनी जलन छोड़ दे तो उससे कौन डरेगा? एक भुनगा तक उसके ऊपर चढ़ने के लिए तैयार हो जायेगा। अतः अपने स्वाभाव के प्रभाव को छोड़ना नहीं चाहिए।

आधी खाब परदेस न जाब।

एक समय ऐसा था जब लोग अपना घर, गांव देश छोड़कर दूसरे देशों में काम करने नहीं जाते थे, चाहे कितना भी संकट का सामना करना पड़े। कहावत उसी पर चरितार्थ की गई है।

अ० – आधी रोटी खाकर गुज़र कर लेंगे, मगर दूसरे देशों में पैसा कमाने नहीं जायेंगे। अपने घर गांव स्वजनों को छोड़ना मंजूर नहीं था, भूखे रह जाना मंजूर था। आज उसका उल्टा है। आज लोग घर–गाँव, स्वजनों से दूर भागने के लिए परदेश जा रहे हैं।

आसाढ़ी पूनों दिना, गाज, बीज बरसंत।
नासै लक्षण काल का आनंद माने संत।।

श० गाज–गर्जन, बीज–बिजली, बरसंत– बरसना। नासै–नाश, लक्षण–चिह्न।

अ० – आषाढ़ मास की पूर्णमासी को यदि आकाश में बादल गरजे और बिजली चमके तो समझो कि वर्षा खूब होगी। अकाल का नाश होगा और सज्जन पुरुष प्रसन्न होंगे।

आगे कुआं है तो पीछे खाई है।

कहावत हर तरह से परेशानी ही परेशानी के ऊपर कही गई है।

अ० – जब मनुष्य चारों ओर से परेशानियों से घिर जाता है तो कहावत में कहते हैं कि दोनों तरफ से विपत्ति है। किसी तरह से निकलने का रास्ता नहीं दिखता है। एक तरफ कुयें में गिरने का भय है तो दूसरी तरफ खाईं है। जायें तो जायें किस तरफ?

आप काज महाकाज।

श० – काज–काम/ महा–बड़ा।

अ० – अपना काम सबसे बड़ा काम होता है।

आसन दृढ़, आहार दृढ़, निद्रा दृढ़ जो होय।
कहै भद्र रिषि, वह कभी, मरै न बूढ़ा होय।।

श० – आसन–व्यायाम, आहार–भोजन, खान–पान, दृढ़–नियमित, निद्रा–नींद।

कहावत नित्य कर्म व स्वास्थ्य के प्रति कही गई है।

अ० – किसी भी आदमी का यदि व्यायाम, खान–पान, निद्रा, आचार–व्यवहार नित्य नियम से निश्चित रूप से चलता रहता है तो वह स्वास्थ्य की दृष्टि से अत्यंत ही लाभकारी सिद्ध होता है। 'भद्र' ऋषि के कहने के अनुसार न वह मनुष्य कभी वृद्धा अवस्था को प्राप्त होता और न वह कभी जल्दी मरता है। किसी ने कहा है

आयु बढ़े शुभचार से पावन है आचार।
कुल से हीन मनुष्य भी प्राप्त करे अधिकार।।

कहते हैं दुराचारी मनुष्य को वेद भी पवित्र नहीं कर सकते हैं।

आप न काहू काम के, डार–पात, फल–फूल।
औरन को रोकत फिरै, रहिमन पेड़ बबूल।।

सूक्तियाँ मानव को प्रेरणा देती हैं। ये जनता के जीवन में समय–समय पर कहावत के रूप में भी सामने आ जाती हैं। मनीषियों ने बहुत सी ऐसी ही थातियाँ जन–जीवन को दी हैं, जिनका प्रयोग करके मानव जीवन में तमाम लाभ उठाता रहा है। रहीम खानखाना ने भी तमाम सूक्तिप्रद दोहे लिखकर जनता को ढेर सारी प्रेरणायें दी हैं।

कवि रहीम ने यह दोहा किसी ऐसे व्यक्ति पर लिखा है जो न तो स्वयं किसी के काम आता है और न दूसरों को ही किसी के काम आने देता है। बबूल के पेड़ के माध्यम से कितना बढ़िया कहा है।

अ० – इस बबूल के पेड़ के स्वभाव में ही है कि डाल, पत्ता, फल, फूल किसी काम में नहीं आता है। वह रास्ते भर में काँटे बिखेरकर मार्ग को अवरुद्ध करता है।

आवा तोहिका लइगा मोहिका।

घटना विशेष किसी से जुड़नी थी, मगर उससे न जुड़ कर कहीं और जुड़ जाती है। अपने लक्ष्य से हटकर कार्य का होना। घटना किसी पर घटनी थी, घट किसी पर गई।

अ० – कोई व्यक्ति आया था किसी और को ले जाने, मगर बात कुछ ऐसी हुई कि जिसे ले जाना था वह तो बैठा ही रह गया, चला गया साथ कोई दूसरा ही। जब कभी इस तरह की परिस्थिति सामने आती है तो कहावत कही जाती है।

आगी पानी से जितान नाहीं होत।

अ० –यह सही बात है कि आग, पानी, आँधी, बवंडर से कोई पार नहीं पा सकता है। प्रकृति प्रदत्त आपदाओं पर विजय नहीं होती है।

आपन इज़्जत अपने हाथ।

जब किसी नीच आदमी, नौकर–चाकर, दुष्ट प्रकृति वालों या अपने से छोटे बच्चों से किसी प्रकार की बदनामी या वाद–विवाद का भय होता है तो कहावत कही जाती हैं।

अ० – जब ऐसी स्थिति हो तो अपनी ज़बान बंद कर लेना चाहिए या चुपचाप वहाँ से टल जाना ही अच्छा होता है। कहते हैं सफेद कपड़े पर छीटें तुरंत दिखाई देते हैं। 'इसलिए नीच व छोटों के मुँह नहीं लगना चाहिए।

अपनी इज़्जत अपने हाथों रखना ही होता है।

'आम टपका, बबूल में अटका'।

श० – टपका–चूना, गिरना/बबूल–काँटेदार पेड़/अटका–रुकना।

किसी कार्य को होते–होते रुक जाने पर कहावत कही जाती है।

अ० – आम किसी प्रकार से पेड़ से टपका भी तो बबूल के पेड़ पर आकर रुक गया। वह कार्य होते–होते थम गया।

'आप मरे जग परले'।

अ० – कहावत उदासीनता का प्रतीक है। यथार्थपरक भी है। यानी जब आदमी दुनिया से चला जाता है तो उसके लिए सारा संसार ही समाप्त हो जाता है। निराश, उदास आदमी जब दुनिया से ऊब का अनुभव करता है तो कहता है मरने के बाद दुनिया में है क्या?

तुलसीदास जी के शब्दों में–

'तुलसी धन–धाम सरीररहिं लें।

'आप मियां मरिगे दुआरे खूंटा गाड़िगे'।

जब किसी आदमी के मरने के बाद भी उसके द्वारा उत्पन्न की गई बाधायें, बनाये गये अनर्गल नियम, लोगों के रास्ते के रुकावट हों, तो कहावत चरितार्थ की जाती है।

अ० – स्वयं तो दुनिया से चले गये मगर हमारे लिए ऐसे–ऐसे कार्य बाकी छोड़ गये हैं जो रास्ते के बाधक बने हुए हैं।

'आग लागे पे कुँआ खोदे दौड़े'।

यानी – किसी कार्य को उचित मौके पर करना या किसी भावी गतिविधियों से सतर्क न रहना जो मानव–जीवन में बहुधा होती ही रहती हैं। जैसे .. दुःख, क्लेश, आरामी, बीमारी, अन्यान्य दुर्घटनाओं के प्रति सचेत रहना चाहिए।

अ० – आग लगने पर कुंआ खोदना व्यर्थ है। तब तक तो सब कुछ जल कर राख हो जायेगा। इसलिए किसी कार्य के प्रति पहले से सचेत रहना चाहिए।

'आपन पूत सबै का पियार होत'।

यानी अपना पुत्र किसे प्रिय न होगा? किसी का बच्चा ऐबी है तो भी वह अपने माता–पिता को अत्यंत प्यारा होता है। कहते हैं 'खोटा सिक्का...खोटा बेटा वक्त के समय पर काम आता है।'

'आई है जान के साथ, जाई जनाजे के साथ'।

श० – जान–प्राण/जनाजा–अर्थी।

अ० – कुछ वस्तुएं, कुछ बीमारियाँ, कुछ आपत्तियाँ ऐसी भी होती हैं जो जन्मजात होती हैं जिनको मनुष्य जीवन भर झेलता है और फिर वे मौत के साथ जाती हैं।

जैसे किसी ने कहा है – 'दमा दम के साथ जाता है'।

'आयेगा हाथ तो सुख की रात
नहीं तो काली जुमेरात'।

कहावत पैसे के ऊपर चरितार्थ की गई है। किसी ने कहा भी है – 'बाप बड़ा न भैया, सबसे बड़ा रुपइया।

अ० यदि हाथ में पैसा आ गया तो समझो कि सुख की रात होगी, नहीं तो वृहस्पति की काली रात ही होगी। दो रोटी खाकर रात कट जायेगी, त्यौहार क्या मनेगा?

'आधा तेल उसुबांगेन बरिगा'।

श० – उसुबांगेन–बत्ती को उकसाते ही/इधर–उधर करने में। बरिगा–जल गया।

अ० – जब किसी कार्य में समय या सामान, इधर–उधर करने खोजने में ही समाप्त हो जाय तो कहावत कहते हैं कि 'दीपक का आधा तेल तो इधर–उधर बाती करने में ही समाप्त हो गया। काम अभी जैसा का तैसा ही पड़ा है।

'आन का दाना तान के खाना, मर जाना परवाह नहीं।

कहावत आसान व्यंगपरक है। यानी दूसरे का दाना अधिक खाना चाहिए, चाहे जान ही क्यों न चली जाय। इस पर एक हास्य–व्यंग्य की एक कथा स्मरण हो आई है। एक बार एक ब्राह्मण किसी के यहाँ निमंत्रण खाने गये। तो सास ने बहू से कहा कि 'बहू भइया का बिस्तर लगा दो, वे जैसे ही न्योता खाकर घर आयेंगे, वैसे ही तुरंत बिस्तर पर लेट जायेंगे। बहू अचानक रोने लग गई तो सास की समझ में न आया कि आखिर बहू को तो मैंने कुछ कहा भी नहीं और यह इस प्रकार क्यों अचानक रोने लग गई? डरते हुए सास ने बहू से पूछा 'बहू मैंने तो कुछ कहा भी नहीं, क्या बात हो गई जो तुम इस प्रकार से रोने लगीं? बहू बोली–सास जी यह भला आपके यहाँ का क्या रिवाज है कि न्योता खाने वाले घर तक पैदल चले आते हैं। हमारे मैके में तो चारपाई भी साथ जाती है। न्योता खाने वाले को उसी पर चार लोग लेकर आते हैं। अतः कहावत भी है कि मर जाना परवाहनहीं'।

आन के लरिका मैं लरकोर,
देख दइब फजीहत मोर।

श० – लरकोर–बच्चेवाली माँ, दइब–ईश्वर, भगवान, फजीहत–दुर्दशा, परेशानी।

कहावत किसी दूसरे के बच्चे को पालने–पोसने के ऊपर कही गई है।

अ० – दूसरों के बच्चे के पीछे इतनी दुर्दशा मेरी हो रही है। हे भगवान, मेरी हालत तो देखो। दूसरे के

बच्चे से लड़के वाली बनी हूँ, जिसके पीछे इतनी दुर्गति उठानी पड़ रही है।

आधे माघे कंबल कांघे।

अ० – आधे माघ के बाद से जाड़ा एक कंबल भर का ही रह जाता है। कहावत जाड़े के कम होने पर कही गई है।

आगे कै परसी थारी उठिगै।

जब सामने की कोई वस्तु या हाथ में आई रोजी–रोटी अचानक चली जाती है तो कहावत कही जाती है।

अ० – आगे का परसा हुआ भोजन उठ गया अर्थात् बना बनाया काम बिगड़ गया।

आलस कबहूं न करिये यार। चाहे काम परें हो हजार।।
मल की संका तुरंत छुड़ावै, वही सभी सुख फिर फिर पावै।

श० – मल–दीर्घ शंका, मल–त्याग, टट्टी जाना, संका–शक, तुरंत–जल्दी, शीघ्र।

कहावत स्वास्थ्य संबंधी है।

अ० – शौच क्रिया में कभी आलस नहीं करना चाहिए चाहे हज़ारों काम पड़े हों। शौच जैसे ही मालूम हो वैसे ही जाना चाहिए। इससे स्वास्थ्य ठीक रहता है। मस्तिष्क स्वच्छ रहता है।

आपन लड़का दूसरे के मेहरारू, बहुत नीक लागत।

कहावत मानव में स्वभाव के ऊपर कही गई है।

अ० – अपना लड़का, दूसरे की स्त्री देखने में बहुत भली लगती है।

आपन अपनै होत।

अ० – अपनी वस्तु या अपनी चीज़ पर जितना अधिकार होता है, उतना दूसरे की वस्तु पर नहीं हो सकता है यह स्वाभाविक है। अपने कष्ट में स्वजन, घर के प्राणी ही काम आते हैं।

आज भले घर बायन दीना।

श० – बायन–मुंडन, विवाह, जन्म इत्यादि संस्कारों पर आस–पास लोग मिठाई भेजते हैं। यहाँ पर झगड़े के चुनौती देने से है।

अ० – दुश्मनों ने भले घर चुनौती दी है। अब बदला लेकर ही रहूँगा।

आधी रात खाँसी आवै सांझे से मुँह बावै।

कहावत कार्य की अवधि से बहुत पहले ही तैयारी करने पर कही गई है।

अ० – जब खाँसी आनी हो तभी मुँह खोलो। खाँसी आनी है आधी रात को और तैयारी में शाम से ही मुँह फैला दिया। यानी नियत समय पर कार्य करना ही अक्लमंदी है, जल्दबाजी करना ठीक नहीं है।

आधी खाय न जाय, पूरी के मुँह बावै।

कहावत सरल है। खाने तथा लालच के ऊपर कही गई है।

अ० – आधी रोटी तो खाई नहीं जा रही है ऊपर से पूरी खाने के लिए मुँह फैलाये बैठे हैं। मन में असंतोष का होना लालच बढ़ाना है।

आमदनी अठन्नी, ख़र्चा रुपैय्या।

अ० – अठन्नी आमदनी में रुपये का ख़र्च होना, अत्यंत ही कष्ट कारक होता है। इसलिए सदैव ध्यान में रखना चाहिए कि आमदनी से ज्यादा खर्च का बजट न हो। कहा है:–

ओते पाँव पसारिये जाती लांबी सौर।

श० – ओते–उतना ही / पसारिये–फैलाइये / लांबी–लम्बी। सौर–चादर।

अ० – उतना ही खर्च करिये जितनी आमदनी हो। अधिक खर्च से बदनामी हो सकती है। यानी जितनी लंबी आपकी चादर हो उतना ही पाँव फैलाइये, वर्ना पैर खुला रहेगा।

आई है तो रोजी, नहीं तो रोजा।

श० – रोजी–काम, रोजगार, रोजा–वह धार्मिक उपवास, व्रत जो मुसलमान लोग एक माह तक रहने के बाद ईद का त्यौहार मनाते हैं।

कहावत काम के मिलने पर उद्धृत की गई है जिनमें पैसे मिलने की आशा रहती है।

अ० – यदि काम मिल गया तो समझेंगे कि रोजी मिल गई और यदि न मिला तो फिर समझो कि भूखे ही रहना पड़ेगा, जैसे कि रोजे में रहते हैं।

आई न गई कौन नाते बहिन?

अ० – ज़बरन रिश्ता जोड़ना। जो कभी आया ही नहीं, गया नहीं, उससे क्या नाता लगाना?

आई बहू आया काम' गई बहू गया काम।

अ० – जब घर में बहू नाम की कोई स्त्री आ जाती है, तो हमारे परंपरागत सभी काम उसके जिम्मे हो जाते हैं। कहा है कि बहू आई नहीं कि घर में काम बढ़ जाता हैं और जाते ही समाप्त हो जाता है।

आई मौज फकीर को दिया झोपड़ा फूँक।

फकीर का क्या है? वह तो "रमता जोगी बहता पानी है"।

मनमौजी, सैलानी आदमी उसे व्यर्थ के काम करने में ही आनन्द आता है। आराम से बैठे–बैठे झोपड़ा ही फूंक दिया और चलता बना।

आवा पूत सुलच्छने, घर ही का लै जाव।

कहावत व्यंग्य में किसी नालायक पुत्र के प्रति कही गई है। कुलच्छने के बजाय सुलच्छने कहा गया है।

अ० – यदि पुत्र कुलक्षणी है तो घर का जो सर – सामान है, वह ले जाता है, उसे भी नाश कर देता है। कहा है जैसे–

'पूत सपूत तो क्यों धन संचय।
पूत कपूत तो क्यों धन संचय।।

आग और फूस का बैर है।

कुसंग से बचना चाहिए। जब भी ऐसा प्रसंग सामने आता है, तो कहावत कही जाती है। तुलसीदास के शब्दों में –

तुलसी लोहा काठ संग, चलत फिरत जल माहिं,
बहे न डूबन देत हैं, जाकी पकड़ें बाँह।।

किसी कवि ने कहा है –

कदली, सीप, भुजंग मुख, स्वाति एक, गुण तीन।

अथवा

जैसी संगत बैठिये, तैसो ही गुण होत।।

कहावत इसी पर है।

अ० – भले लोगों और बुरे लोगों में आग और फूस का बैर होता है। अतः बुरे लोगों के बीच कभी नहीं बैठना चाहिए। वैसे आग–फूस का बैर तो स्वाभाविक ही है। ज़वानी के बहाव में भी लोग ग़लत काम कर बैठते हैं।

आग औ बैरी के, कम न समझै क चाही।

अ० – आग और दुश्मन को कभी कम नहीं समझना चाहिए। आग कब कहाँ भड़क जाय और दुश्मन कब किस समय वार कर बैठे, कहा नहीं जा सकता।

आग कहत मुँह नहीं जलत।

यहाँ आग से मतलब है कि मुँह से कटु क्रोधातुर वाक्य का निकालना। किसी को गंदी गाली देते क्या बुरा नहीं लगता है?

अ० – आग कहते समय उसकी जलन का उसकी भयंकरता का भी ध्यान नहीं होता।

आग खाये जे अंगार हगे।

श० – हगे– शौच होना, अंगार– आग के जलता कोयला।

अ० – जो अनुचित काम करेगा उसका नतीजा भी वही आदमी भुगतेगा। या जो अनाप–शनाप वस्तुयें खायेगा उसका नुकसान उसे उठाना पड़ेगा। पेट गड़बड़ हो जायेगा।

आग – पानी क बैर है।

दो विपरीत स्वभाव की वस्तुओं में निश्चय ही दुश्मनी होती है। पानी आग को बुझाता है, अतः आग की दुश्मनी पानी से होना स्वाभाविक है।

आग लगे पै घूर बुझावै।

अ० – किसी को धोखे में रखना। आग घर में लगी है। धुआँ देखकर घूरे की तरफ बुझाने को दौड़े।

आग लागे मंड़ये, बजर परै बरात।

जब आदमी उस काम से उदासीन रहता है तो यह कहावत चरितार्थ होती है।

अ० – हमसे क्या मतलब किसी के उत्सव से ? उनके मंड़ये में आग लगे, बरातियों पर बज्र गिरे। दुर्भावनायें रखना। किसी के प्रति मन का क्रोध प्रगट करना।

आगे जाय आगरा, पीछे जाय लाहौर।

अ० – भ्रमित अवस्था में कहावत सामने आती है। आगे जाने पर आगरा, पीछे लाहौर है। जाय तो किस रास्ते जाय ? गन्तव्य स्थान का निश्चय न होना।

आगे जाय तो घुटने टूटें, पीछे जाय तो आंखें फूटें।

दोनों तरफ़ से मुसीबतों का आना। साँप छछूंदर की गति का होना। आगे, पीछे कहीं भी कोई रास्ता नज़र न आना। इसीलिये किसी शायर ने कहा है–

ज़िन्दगी है एक तीर, जाने न पाये रांयगां।
पहले निशाना देख लो, बाद में खेंचो कमां' ।।

श० – रांयगां–व्यर्थ, कमां–कमान।

अ० – जीवन व्यर्थ न गंवाओं जीवन तीर के निशान वे बढतीर मारो।

आगे नाथ न पीछे पगहा,
सबसे भला कुम्हार का गदहा।

कहावत किसी स्वतंत्र, मस्त, निश्चिंत आदमी पर कही गई है।

अ०– न उनके आगे कोई है न पीछे कोई है। न सगा संबंधी का भय है, न दोस्त–यार का दबाव है। ऐसे भी आदमी दुनिया में हैं। इनसे भला तो कुम्हार, धोबी का गधा है जो उसके काम आता है।

आछे दिन पाछे गये, हरि से किया न हेत।
अब पछताये होत का चिड़िया चुग गई खेत।।

श० – आछे–अच्छे, हेत–प्रेम, पछताये–पश्चाताप।

कहावत समय के प्रति कही गई है। जब समय निकल जाता है तो फिर वे दिन लौटकर कभी वापस नहीं आते हैं।

अ०– अच्छा समय पीछे चला गया, अच्छे काम किये नहीं, भगवान से भी प्रेम न किया तो अब पछताने से क्या होगा ? खेत का सारा दाना चिड़िया चुग गई। खेत सूना पड़ा है, समय की पहचान या पकड़ न होना।

आज क बनिया, कल क सेठ।

जब किसी की उन्नति हो तो कहावत चरितार्थ की जाती है।

अ० – जो कभी बनिया था सामान तौलता था, आज वही बड़ा भारी सेठ–साहूकार बन गया है।

आज निपूती, कल निपूती, टेसू फूला, सदा निपूती।

किसी बंध्या स्त्री को व्यंग्य में कोसा जा रहा है।

अ० – तू आज निपूती है कल भी रहेगी, टेसू में फल आ गये मगर तू सदा ही बिना बेटे के रहेगी।

आज मोरे मंगनी, कालि मोरे बिआह।
परों मोरी धिया क, क्यों लै जाय।।

इस उतावलेपन की कहावत से लगता है कोई स्त्री अपनी पुत्री के प्रति इतनी विवाह की जल्दी में है कि कब विवाह हो और काम सिद्ध हो कि लड़की अपने यहां चली जाय। अपनी जिम्मेदारी से बरी हुई, कन्या चाहे जो ले जाय। किसी काम की उतावली में यह कहावत कही जाती है।

अ० – आज मेरे घर मंगनी है, कल ब्याह और परसों लड़की को कोई ले जाय जिससे सिर का बोझ हल्का हो।

आज हमारी, कल तुम्हारी, देखो लोगों फेरा फारी।

दुनिया में ऊँच–नीच, मरना–जीना तो लगा ही रहता है। जो आज राजा है, कल रंक भी हो सकता है। इसी पर कहा गया है–

दुनिया है दुनंगरी, मकंदरी सराय।
कहीं खूबखूबा, कहीं हाय–हाय।।

आते तो सबही भला, थोड़ा बहुता कुच्छ।
जाते तो दो ही भले, दलिद्दर औ दुःख।।

अ० – आते हुए सभी वस्तुएं अच्छी लगती हैं, जाते समय दुःख और दलिद्दर अच्छे लगते हैं। कहावत दुःख–दरिद्र के प्रति चरितार्थ की गई है।

आते–जाते मैना ना फँसी, तू क्यों फँसा रे कौवे।

अ० – होशियार आदमी तो बच जाता है मगर मूर्ख फंस जाता है। मैना होशियार थी इसलिए निकल गई, मगर कौवा बेवकूफ़ था इसलिए फँस गया। कहावत चतुराई पर कही गई है।

आदमी, आदमी अंतर, कोई हीरा कोई कंकर।

अ० – हर मनुष्य एक ही तरह का नहीं होता है।

सभी के विचार, मत, बुद्धि अलग–अलग होती है। कहावत में किसी ने कहा है जैसे –

मनई–मनई सबै मनई, मनई मां अहै भेद।
केऊ मनई अहय देवता, केऊ अहै परेत।।

आदमी देवता भी होता है और प्रेत भी होता है। किसी ने कहा है –

सज्जन से सज्जन मिले, होवे दो–दो बात।
गदहा से गदहा मिले, खावे दो–दो लात।।

आदमी की पहचान, आदमी से होती है।

अ० – मनुष्य ही मनुष्य को पहचान और इज्ज़त दे सकता है।

आदी क चंदन देय, लिलार, चर्राय।

श० – आदी–अदरक। चंदन–जो घिस कर ईश्वर के भक्त अपने मस्तक में लगाया करते हैं। लिलार –मत्था। चर्राय–खिंचाव होना, दर्द होना।

अ० – असंगत की बात करना या बुरे के संग पड़ने पर कष्ट का होना। अदरक खाने की वस्तु है न कि मस्तक पर लगाने की। कोई वस्तु का सही प्रयोग न करे तो उसका नतीजा भी बुरा होता है। इस प्रकार किसी भी बात के होने पर कहावत कही जाती है।

आध सेर के बर्तन कइसे सेर समाय?

अ० – यदि बर्तन आधा सेर का हो तो उसमें उसका दुगना सामान कैसे आयेगा? जब किसी मूर्ख की बात चलती है, तो कहते हैं कि मूर्ख आदमी के पास इतनी बुद्धि कहाँ से आई? या जब छोटे आदमी के पास कुछ भी योग्यता या पैसा आ जाता है तो वह छोटे बर्तन में अधिक सामान रखने की तरह बाहर की तरफ़ उबलने लगता है। जैसा कि तुलसीदास जी ने कहा है।

'छुद्र नदीं भरि चलीं तोराई।
जिमि थोरेहुँ धन खल इतराई'

आधा जोगवे पंडित, सर्वस तजे गंवार।

श० – जोगवे – संभालना, सहेजना, पंडित–बुद्धिमान, समझदार, सर्बस–सबकुछ, तजै–छोड़ना, त्यागना, गंवार–मूर्ख।

कहावत तब कही जाती है जब कहीं पर मूर्ख और बुद्धिमान की समता की जाती है या कहीं पर ख़र्च–बर्च में इज्जत का प्रश्न आता है।

अ० – बुद्धिमान आवश्यकता पर जितनी जरूरत होती है, ख़र्च करता है और बेवकूफ बचाने के चक्कर में सारा सामान ही बर्बाद करके रख देता है।

आधी छोड़ सारी क धावे, ऐसा डूबे थाह न पावे।

कहावत लालच के प्रति चरितार्थ की गई है।

अ० – आधी को छोड़कर जो मनुष्य पूरी के लोभ में रहता है, वह ऐसा डूबता है कि डूबते किनारा नहीं पाता। अपनी भी रही–सही वस्तु से हाथ धो लेता है।

आधे मां काजी कुद्दू, आधे मां बाबा आदम।

कहावत व्यंग्यात्मक है व सामयिक भी है। पहले ज़माने में लोगों के बच्चे बहुत हुआ करते थे। दंत कथा है कि कुद्दू काजी थे। उनकी औलादें बहुत ज्यादा थीं। तो आखिर औलादों के हिसाब से घर में हिस्से भी तो मिलने चाहिए। कहावत उन्हीं पर कही गई है।

अ० – आधे में तो काजी कुद्दू के नाती पोते लड़के रहेंगे और आधे में दुनिया के बाकी सब लोग रहेंगे। आज के युग में परिवार नियोजन है। यदि दो या तीन से अधिक बच्चे होते हैं, तो उनके लिए भी यह व्यंग्य के रूप में कहावत चरितार्थ हो सकती है।

आधे गांव देवारी, आधे गांव मां होरी।

जब आपस में ही फूट हो, सभी भाई–बन्धुओं में मतभेद हो तो उसके लिए कहावत बड़ी ही उपयुक्त सिद्ध होती है। एक ही गाँव में दो त्यौहार दो मौसम के मनाये जा रहे हैं। दिवाली कार्तिक माह में पड़ती है और होली फागुन के माह में पड़ती है। फिर भला दोनों पर्व एक साथ कैसे पड़ सकते हैं? मगर मनमाने की बात है। कोई होली खेल रहा है तो कोई दीवाली का दीप जला रहा है। यानी एक ही गाँव में मतभेद होना वह भी पर्व–त्यौहार पर। इस पर खानखाना रहीम का एक दोहा स्मरण आता है जो भिन्नता के प्रति लिखा गया है जैसे –

भीत गिरी पाखान के, अररानी उहि ठाम।
अब रहीम धोखो यहै, को लागै केहि काम।।

आधे घर मां देवारी, आधे घर मां अंधेर।

कहावत असमानता का प्रतीक है। जब अमीर और गरीब की तुलना की जाती है तो इतना बड़ा

अंतर सामने आता है। एक मकान के आधे हिस्से में दीपावली का प्रकाश है और आधे में अँधेरा है।

आप खाय बिलाई बताय।

ऐसे भी तमाम लोग दुनिया में हैं जो किसी ग़ल्ती को, चाहे जैसी भी हो दूसरे के मत्थे डालकर खुद दूध के धोये बन जाते हैं।

अ० – अपने तो कोई वस्तु खा जाते हैं और नाम बिल्ली का लगा देते हैं।

आन मारे, तान मारे, फिर भी न मरे तो रान मारे।

श० आन–बुलाकर, हाव, भाव दिखाकर, तान–गा बजाकर, तान अलाप कर रान – जांघ।

यह कहावत वेश्या के ऊपर कही गई है कि वह किस प्रकार से किसी पुरुष को वश में कर लेती है।

अ० – अपने हाव, भाव से बुलाकर, गाने, बजाने, नाचने व तान छेड़कर वश में करने का प्रयत्न करती है। जब इतने से भी कोई वश में नहीं आता तो अपनी सेज पर जंघों से वशीभूत कर लेती है।

आन बनी सिर आपने, छोड़ पराई आस।

अ० – जब अपनी जान पर संकट आ जाय तो उसे अपने बूते पर समाप्त करना चाहिए क्योंकि दूसरे की आशा देखने में आई मुसीबत जड पकड़ लेती है।

आप चले भुंइया, शेखी गाड़ी पर।

झूठी शान दिखाना। खुद तो पैदल चल रहे हैं मगर दावा यह कि मेरे सवारी है।

आव पड़ोसिन लड़ें।

अ० – बैठे – ठाले कोई काम ही न हो तो यही करें, चलो पड़ोसिन, दोनों झगड़ें ही।

फालतू समय में खुराफ़ात करना। खाली दिमाग शैतान का होता है।

आपन मामा मरि, मरि गये, जोलहा धुनिया मामा भये।

कहने का तात्पर्य है कि अपने तो सब मर गये या जो हैं भी वे किसी काम के नहीं हैं। अब दूसरों का ही मुँह देखना पड़ता हैं। दूसरे लोगों को मामा बनाना पड़ रहा।

अ० – संबंधी तो समय पर आने–जाने से रहे। अब इन्हीं दूसरी जातियों को संबंधी बताना व बनाना पड़ता है।

आपन थाप कड़ाकड़ बोले, जे मारे ते जीतै।

लड़ाई–झगड़े के समय कहावत कही जाती है।

अ० – अपनी थाप, थप्पड़, बराबर पड़ते रहना चाहिए। उसके बाद तो जो मार ले जाय जिसको, वही जीतेगा। अपनी तरफ से कभी पिछड़ना नहीं चाहिए।

आप रहें उत्तर, काम करें पच्छिव।

अ० – बेसहूरी से काम करना। खुद कहाँ हैं? काम कहाँ कर रहे हैं? चित्त का चंचल होना या किसी काम में मन न लगना। जैसा कि कहा है –

काढ़े कसीदा, देखै असमान।

काम में मन न लगना।

अ० – काम तो नीचे देखकर बारीक कढ़ाई का कर रही हैं और दिमाग दूसरी जगह आसमान की ओर लगा है।

आप राहे–राहे, दुम खेते, खेते।

अ० – चिलबिल्ले आदमी के प्रति कहा है कि खुद कहाँ है, धोती का फेंटा, अंगौछा दूसरा सामान कहॉं जा रहा है, कुछ परवाह नहीं है।

आ बड़े घर की बेटी है, तो पंजा कर ले।

श० – पंजा करना – हाथ की उंगलियों को आपस में फँसा कर जोर आजमाइश करना।

अ० – एक स्त्री शान बघारने वाली दूसरी स्त्री को चुनौती देती है कि बहुत बड़े घर की बेटी बनने का दावा है तो मुझसे मिलकर पंजे लड़ा तो समझूं कि कितना खाया पीया है।

आ बैल मुझे मार।

अ० – बैठे–ठाले अनायास में किसी से विपत्ति मोल लेना। बुलाकर झगड़ा–झंझट मोल लेना।

आम झड़े पताई, लरिका रोवे दाई, दाई।

बाल–हठ पर कहावत कही गई है।

अ० – आम के पत्ते झड़ रहे हैं तो बच्चा समझता है कि आम ही है। इसलिए आम पाने की जिद्द करता है।

आमदनी के सिर सेहरा।

श० – सेहरा–मौर।

अ० – जिसकी आमदनी है, जो पैसे वाला है, उसके सिर पर सदैव ताज होता है। इस पर किसी ने कहा है– धरा पताल मॉं, लिखा लिलार माँ। 'यानी कि

ख़ज़ाना कहीं ज़मीन के नीचे तहखाने में है, मगर असर इतना कि चेहरे पर लिखा होता है। उसकी चमक अपने आप दिखाई देती है। पैसे वालों का चेहरा छिपा नहीं रहता।

आम फरै तौ नै रहै, अरंड फरै अतिराय।

जो हर प्रकार से विद्या, गुण, धन–धान्य, कुल, परिवार, पुत्र, पौत्र से भरा होता है वह आम की भाँति विनम्र होता है और जो थोथा होता है, वह रेड़ के पेड़ की तरह ऐंठ दिखाता रहता है।

आय तो जाय कहाँ।

जब कोई आदमी किसी के जान को पड़ जाय तो कहावत कही जाती है।

अ० – जब आये हो तो जाओगे कहाँ? जाने दूँगा तब जा पाओगे?

आवा कातिक उठी कुतिया।

कहावत किसी दुष्टा नारी के प्रति कुतिया के माध्यम से कही गई है। कहते हैं कि कार्तिक माह में कुत्ते कामातुर होते हैं। वही हाल चरित्रहीन स्त्रियों का भी होता है।

आवा रमजान, भगा सैतान।

अ० – जब कोई भला आदमी पहुंचा नहीं कि बुरा आदमी धीरे से अपने आप ही खिसक जाना चाहता है। रोज़े का महीना आते ही शैतान भाग जाता है।

आया राजा पूस, बिल में घुस गये मूस।

अ० – जाड़े के दिनों में जानवर भी अपने प्राण लेकर अंदर ही रहना चाहते हैं। जाड़ा आते ही चूहे बिल में चले गये।

आटे का चिराग घर रखूँ तो चूहा खाय,
बाहर रखूँ तो कौवा ले जाय।

पहले समय में देवी–देवता की मनौती में स्त्रियाँ आटे का दीप बनाकर भगवान के सामने जलाती थीं।

अ० – जब किसी सामान की रक्षा कर पाना कठिन होता है तो कहते हैं कि दिया आटें का है, घर में भीतर चूहे खा जायेंगे और बाहर कौवा उठा ले जायेगा। करूँ तो क्या करूँ? हर दशा में परेशानी है।

आन क पानी मैं भरूँ, मेरा भरे कहार।

दूसरे – दूसरे का काम करता फिरे और अपना काम करने में आलस करना।

अ० – दूसरे का पानी तो मैं भरूँ और अपने पानी भरने को महरा लगा लूं। कहा है–

आगे के दिन पाछे आवै।

जब घर के बड़े–बूढ़े कोई अच्छा काम करते हैं तो उसका परिणाम बच्चों पर आता है।

आवा करो, जावा करो,
मुल टट्टी मत खड़काया करो।

श० – मुल–लेकिन। टट्टी–शौचालय। दरवाजेठी टाटी

व्यर्थ में जब कोई किसी को तंग करता है तो एक खीझ सी दिमाग में आती है। आवश्यक कार्य के समय बाधा मत डाला करो।

अ० – भले ही आया जाया करो मगर काम के समय बाधा न डाला करो।

आवे आम, भये लबेड़ा।

अ० – आम का मौसम आते ही गाँवों में झगड़े–लाठी डंडे तक उठ जाते हैं। हिस्से, बाँट पर मार पीट हो जाती है।

आवा चइत सोहावन, फूहरी क मइल छोड़ावन।

अ० – जाड़ों में मैल शरीर पर बैठता है। उसे साफ़ करना तो पड़ता ही है मगर आलसी फूहड़ स्त्री कहती है कि चलो चैत का माह आ गया अब ठीक से नहायेगी और बदन का मैल साफ़ करेगी क्योंकि जाड़े के मारे वह कभी नहाती ही नहीं थी।

आन कै उजरी, आपन लुगरिव नीक।

अ० – दूसरों की अच्छी वस्तु से अपनी बुरी वस्तु भी भली होती है। दूसरे की उज्जर सफेद साड़ी से अपनी फटी–पुरानी धोती भी भली जो अपने काम तो आती है।

आप मरे जग परलै।

अपने ऊपर जो बीतती है उसी का ज्ञान होता है। यदि किसी का कोई मर गया तो उसके लिए संसार ही ख़त्म हो जाता है।

आये थे तो हरि भजन को, ओटन लगे कपास।

श० – ओटन–कपास को चरखी में दबाकर रुई और बिनौले को अलग करना।

कुछ का कुछ करने लग जाना। आये थे भगवान का भजन–पूजन करने को, यहाँ बैठकर रुई धुनने लग गये। दुनियादारी में फँस गये।

आलसी गिरा कुयें में, कहिस, के उठै?

अ० – आलसी आदमियों के ऊपर व्यंग्य किया गया है। आलसी कुयें में गिर पड़ा तो बोला कि अब कौन उठे यहाँ से? यानी आलसी को मर जाना कबूल है मगर उठना मंजूर नहीं है।

आलसी गिरा कुयें में बोला हमय तो यहीं भल बा।

अ० – उपरोक्त कहावत की भाँति यह भी है।

आगे तोंद, पाछे कूबर, हमार भतार तुहीं ले जा सूघर।

श० – तोंद–जिनका पेट आगे की तरफ़ बहुत बढ़ जाता है। कूबर–पीठ के टेढ़ेपन के कारण होने वाला उभार। भतार–पति, भर्ता, सूघर–गुणी, सुचारु ढंग से चलने वाली नारी।

कहावत किसी वस्तु की अनुपयोगिता या किसी स्त्री का अपने पति के प्रति विरोध व कुरूपता के प्रति कही जाती है।

अ० – कोई नारी अपने पति की कुरूपता, नालायकी के लिए कहती है कि उसके आगे तोंद, पीछे से कूवड़ निकला है। ऐ सुघर औरत ! तुझे यदि पसंद है ऐसा आदमी तो तू मेरे पति को ले जा, मुझे उसकी आवश्यकता नहीं है। मैं उसके साथ निर्वाह नहीं कर सकती हूँ तो तू ही अपनी लायकी दिखाकर सुघर बन जा।

आय आम भै झोंटाहुज।

श० – झोंटाहुज–झगड़ा ऐसा कि एक स्त्री दूसरे का बाल खींच कर आपस में लड़ें।

जिस समय आम की बगिया में आम फलने लगते हैं तो उस समय गाँव के लोग एक दूसरे के बाग़ से आम चुरा–चुरा कर बीनने लग जाते हैं। ऐसे समय में तमाम लोग आम की लालच में रात–रात भर बागों में जा–जा आम बीना करते हैं तो आपस में ही, घर पट्टीदारों के बीच, गाँव के लोगों में मार–पीट, लाठी–डंडे चलने तक की नौबत आ जाती है। औरतें आपस में एक–दूसरे से गाली–गलौज करते–करते भिड़ कर गुत्थम–गुत्था करने लग जाती हैं। कहावत ऐसे समय पर ही कही जाती है।

आन के भतारे पै तीन टिकुल्ला।

श० – आन–दूसरे, भतारे–पति, टिकुल्ला–टिकुली, बिंदी जो स्त्रियाँ अपने पति के सुहाग के प्रतीक रूप में मस्तक में लगाया करती हैं। कहावत व्यंग्य में एक ऐसी स्त्री के प्रति कही गई है जो अपने नहीं दूसरे के पति को लुभाने व आकर्षित करने के लिए आवश्यकता से अधिक साज–शृंगार करती रहती है।

अ० – दूसरे के पति पर तीन–तीन बिंदी लगाये हुये है या दूसरे के बूते पर तमाम काम फैलाये हुये हैं।

आवत बाहुरि जनमत लरिका,
जौन लौ लगावे वहीं लौ लागै।

श० – बाहुरि–बहुरिया, नई बहू, दुलहिन। जनमत–पैदा होते ही। लरिका–बालक।

कहावत उस समय कही जाती है जब किसी की आदतों को सुधारने की या शुरू से बनाने की कोशिश की जाती है अथवा किसी की बिगड़ी आदतों को देखकर उसके विषय में बात कही जाती है।

अ० – कहते हैं कि घर में आने के साथ ही यदि नई बहू की आदतों को अपने घर के, परिवार के अनुकूल बनाना हो तो आरंभ से ही उसको बता–समझा कर अपने स्वाभावानुकूल बनाया जा सकता है। इसलिये कि वह दूसरे के घर से आई होती है। उसे इस नई जगह (ससुराल) के आचार–व्यवहार का क्या पता है कि किससे, कैसे, किस प्रकार के व्यवहार करें? उसे सबकुछ अपने घर की बातें बताकर ही अपने हिसाब से बदला व बनाया जा सकता है। उसी प्रकार से जन्म के साथ ही बच्चे को जिस आदत के अनुसार ढालना चाहो तो ढल सकता है। अतः आते ही बहू और जन्म से ही बालक को जो आदतें डाली जायेंगी वही वह सीखेगा।

आलस कबहुँ न करिये यार,
चाहे काम परे हों हजार।
मल की संका तुरंत छोड़ावै,
वही सभी सुख पुनि–पुनि पावै।

श० – मल–ट्टटी–दीर्घशंका, शंका। शक, मालूम हो तुरंत टट्टी जाना चाहिए, चाहे हजारों काम पड़े हों। तभी स्वास्थ्य–सुख मिल सकता है।

" इ "

इहै अम्बा भोजन, इहे गंगा स्नान।

श०– अम्बा–आम। भोजन – खाना, स्नान – नहाना

अ०– बहुत नियमित व सादे जीवन को व्यतीत करने वाले संयमी पुरुषों के प्रति कहावत कही गई है। यही फल–फूल आदि का भोजन तथा गंगा स्नान ही जीवन का कर्म है।

इतवार–मंगर न लावै तेला,
ओके लरिकै बिनिहैं बेला।

श०– तेला–तेल। वेला – बेल, जंगल में धूमना

कहावत सिर में तेल लगाने पर कही गई है। पहले के जमाने में स्त्रियां सिर में तेल भी दिन देख कर लगाती थीं।

अ०– इतवार–मंगल को जो औरतें तेल लगातीं हैं, उनके लड़के जंगलों में बेल बिनते हैं। यानी कि वे बन–बन भटकते हैं, दरिद्र होते हैं। "बेल बिनना मुहावरा हैं। अर्थात् बच्चे कष्ट उठाते हैं, घर में दरिद्रता आती है।

इतवार–मंगल न छोरे जूरा
हाथ पसार न पहिरै चूरा,
बिआहे–गौने पहिरै चूरा,
भाय मरय तो छोरै जूरा।

श०– जूरा– सिर के बालों को बांधने को जूरा कहते हैं। हाथ पसार– हाथ फैलाकर, चूरा–चूड़ी।

कहावत– सौभाग्यवती स्त्रियों के शृंगार विषय पर कही गई है। चूड़ी किस दिन पहननी व कंघी किस दिन करनी चाहिए और किस दिन नहीं।

अ०– इतवार–मंगल को बाल का जूड़ा नहीं खोलना चाहिए न तेल लगाना चाहिए और न चूड़ी पहननी चाहिए। कहा गया है कि यदि विवाह आदि का शुभ लग्न हो तो इतवार–मंगल को चूड़ी पहनने में कोई हानि नहीं है। इसी प्रकार यदि अपने घर या पट्टीदारों में मौत हो जाय तो जूड़ा खोलने में कोई हानि नहीं है क्योंकि ब्याह आदि में दिन न देखकर साइत से काम होता है। उसी प्रकार किसी भाई बंधु की मृत्यु पर अपशकुन के कार्य होते हैं।

इन तिलन मां तेलै नाहीं।

कहावत– रूखी वस्तुओं या रूखे स्वभाव वाले व्यक्तियों पर लागू होती है।

श० – तिलन–तिल

अ०– कुछ लोग इतने नीरस होते हैं कि उनसे कुछ भी कहना या किसी प्रकार का कार्य सम्पन्न करवाना या उनसे किसी बात की अपेक्षा करना व्यर्थ होता है।

इधर न उधर तो यह बला किधर।

श०– बला–झंझट, कष्ट–आपत्ति, भूत–प्रेत, बाधा–विपदा आदि। कहावत ऐसे व्यक्ति पर कही गई है जो हर समय आसुरी प्रवृत्तियों को लिये जहाँ–तहाँ घूमता–टहलता रहता है। जो अपने में स्वयं बला हो। असामाजिक तत्वों का ठेकेदार हो, कहावत ऐसे ही लोगों पर कही गई है।

अ०– लोग देखते ही घबड़ा कर बोल उठते हैं ऐसे लोगों पर कि यह प्रेत बाधा तो न इधर जा रही है न उधर जा रही है। भगवान ही जाने किधर यह जायेगी?

इक तो नागिन दूसरे पंख लगाये।

कहावत बहुत ही दुष्ट प्रकृति की स्त्री के प्रति कही गई है जिसमें अनेक दुर्गुण हैं।

अ०– एक तो वैसे ही विष भरी नागिन, उस पर ज़मीन पर चलकर कौन कहे उड़–उड़ कर डंसने वाली है। यानी खतरे से खाली नहीं है।

इतना खाय जितना दाल में नमक होता है।

कहावत घूस के मिले पैसे या क़िसी से नौकरी–चाकरी में खाने के प्रति कही गई है।

अ०– किसी को इतनी ही लालच करनी चाहिए जितनी बुरी न लगे तथा किसी को खले भी न। दाल में नमक जितना खाने पर कोई भी बेईमान या घूसखोर न कहलायेगा। फायदा भी सोच समझकर थोड़ा ही लेना चाहिए जितना पच जाय।

भरी जवानी मांझा ढील।

श०– जवानी–युवावस्था, मांझा ढील–कमजोरी का अनुभव। कमर का कमजोर होना।

कहावत युवा अवस्था में ही बुढ़ापे के लक्षण, आलस्य, शरीर का ढीलापन निस्तेज चेहरा आदि देखकर कही गई है।

अ०–जवानी की अवस्था में शरीर की यह दशा, इतना आलस्य, कामचोरी, उदासीनता छा गई है।

इहाँ कुम्हड़ बतिया कोउ नाहीं,
जे तरजनी देखि मरि जाहीं।

श०– कुम्हड़–कोंहड़ा, बतिया–किसी फल या सब्जी का छोटा प्रारम्भिक रूप। उंगली–तर्जनी अंगूठे के पास की उंगली।

उपरोक्त पंक्ति लक्ष्मण–परशुराम संवाद की है जो तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' से उद्धृत की गई हैं। दो विरोधी व्यक्तियों के वाद–विवाद के समय लोग बहुधा कहते हैं।

अ०– यहाँ पर कोई कोंहडे की बतिया नहीं है जो उंगली देखते ही सूख जाय। कहते हैं कि कोंहड़े की लगी बतिया को यदि उंगली दिखा दी जाय तो वह सूख जाती है।

इश्क न जानै जात कुजात,
भूख न जानै बासी भात।
नींद न जानै टूटी खाट,
प्यास न जानै धोबी घाट।।

श०– इश्क–प्रेम। जाति–कुजाति – अच्छी–बुरी जाति, बासी– एक दिन पहले का बना खाना। धोबी घाट– जहाँ धोबी कपड़े धोते हैं।

कहावत – प्रेम, भूख, नींद एवं प्यास को लेकर कही गई है।

अ०–मनुष्य जीवन के कुछ ऐसे आवेग, ऐसी कमज़ोरियां होती हैं, जिन पर काबू पाना कठिन हो जाता है। जब प्रेम का नशा चढ़ता है, तो उस समय कोई परवाह नहीं करता है। किसी ने कहा भी है कि "प्रेम अंधा होता है," या गदही से लगा दिल तो परी है क्या चीज"। रहीम कवि की पंक्ति हैं–

खैर–खून, खांसी, खुसी, बैर, प्रीत मदपान,
रहिमन दाबे ना दबै, जानत सकल जहान।

उर्दू में है..........

असर है जज्बए–उल्फ़त में खिंचकर आ ही जायेंगे।
हमें परवा नहीं हमसे अगर वो तन के बैठे हैं।।

लैला–मजनूं का प्रेम कौन नहीं जानता है। कहावत है कि प्रेम जाति नहीं देखता। भूख लगने पर अच्छा–बुरा, ठंडा–बासी जैसा भी खाना हो, वह बुरा नहीं लगता है। इसी तरह से प्यास लगने पर गंदा–साफ पानी कोई नहीं देखता। नींद के समय खाट कैसी भी हो सोने में बड़ा ही सुख मिलता है।

इनको कबहुं न लीजिये, मुफ्त देय चाहे कोय,
सात दांत उदंत का, बैल जो काला होय।

श०– मुफ्त–सेत–मेंत के। उदंत–जिसके दाँत न हों।

कहावत बैलों की पहचान पर कही गई है।

अ०– जिस बैल का रंग काला हो और जो सात दाँत का हो अथवा दंत रहित हो उसे कभी भी नहीं खरीदना चाहिए।

इकली हिरनी, दूजे स्यार, भैंस चढ़न्ता पावै ग्वार।

श०– इकली–अकेली, हिरनी–हिरन चढ़न्ता–चढ़ा हुआ, सीस–सिर पर, ग्वार–ग्वाला।

कहावत– यात्रा समय के मुहूर्त पर कही गई है।

अ०– घर से कहीं यात्रा पर जाते समय यदि अकेली हिरनी मिले, दो स्यार तथा भैंस पर चढा ग्वाला मिले यह सब अपशकुन माने जाते हैं।

इज्जत आय पगड़ी, इज्जत से रहे अकड़ी।

कहावत इज्जत के ऊपर कही गई है। पगड़ी के माध्यम से इज्ज़त का महत्व बतलाया गया है।

अ०– मर्द की इज्ज़त सिर की पाग यानी पगडी से होती है। पगड़ी हमेशा इज्ज़त सम्मान पाने पर ही अकड़ी यानी ऊंची रहती है।

इज्ज़त गये इज्जत नहीं मिलतै।

अ०– जब आदमी की इज्जत, मान मर्यादा एक बार चली जाती है तो वह दुबारा लौटकर वापस नहीं आती है। कवि रहीम के शब्दों में–

अमिय पिआवत मान बिनु, 'रहिमन' मोहिं न सुहाय,
मान सहित मरिबों भलो, जो विष देत पिलाय।

अतः "मान का पान" ही बहुत होता है। इसलिए अपनी मर्यादा का बड़ा ध्यान रखना चाहिए।

इक्का, वकील, गदहा, पटना सहर मां सदा।।

अ०– कहते हैं कि पटने में इक्का, वकील और गधे बहुत पाये जाते हैं।

इक्का चढ़के जहाँ जाय, पैसे देकर धक्का खाय।

कहावत इक्के की सवारी के प्रति कही गई है।

अ०– इक्के की सवारी इतनी खराब होती है कि उस पर बैठने वालों को इतने हिचकोले लगते हैं कि बैठने वाले का सारा बदन हिल जाता है। पैसा भी खर्च होता है, आराम भी नहीं मिलता।

इतना खाय, जितना कि पच जाय।

भोजन की मात्रा सदैव इतनी होनी चाहिए जितनी कि स्वास्थ्य के लिये आवश्यक हो। अनावश्यक भोजन शरीर के लिए हानिकारक होता है।

अ०– इतना खाओ जितना कि पचा सको। उसी प्रकार से जब कहीं पर रुपये पैसे के लेन–देन की बात हो तो भी कहावत सामने आती है।

इतनी सी जान, गजभर की जबान।

जब कोई आदमी अपनी उम्र या औकात से अधिक बातें करता या ज़बान लड़ाता है तो कहावत कही जाती है कि जरा सी तो जान है और ज़बान देखो तो हाथ भर की है।

इतनी कमाई नहीं, जितने का लहंगा फटिगा।

जब किसी काम में लाभ के बजाय हानि होती है तो कहावत कही जाती है।

अ०– इतनी कमाई का पैसा नहीं है जितने का नुकसान हो गया। यानी आमदनी से अधिक खर्च का होना।

इंदर राजा गरजै, हमार जिय लरजै।

श०– इंद्र–देवराज, जो पानी बरसाते हैं। लरजै–कँपना। कहावत तब कही जाती है जब किसी सामान का नुकसान होने या खेतों में पानी बरसने पर हानि होने की संभावना होती है अथवा किसी क्रोधी, चीखने, चिल्लाने वाले व्यक्ति द्वारा घर में उत्पात या तोड़फोड़ की आशंका हो।

अ०– जब बादल गरजते हैं तो मन काँपता है कि कहीं पानी न बरस ज़ाय कि खेत व सामान का नुकसान हो जाय।

इंसान लेय तो ऊँच क, नीच क लेन न जाय।
कुल लजवावै आपनो, कहै अकब्बर साह।।

अ०– अकबर शाह ने कहा है कि काम कराकर किसी से एहसान लेना है तो बड़े लोगों से लो, छोटे लोगों से एहसान लेना ठीक नहीं। इससे अपने को व अपने वंश को लज्जित होना पड़ता है।

" ई "

ईख तिस्सा, गोहूँ बिस्सा।

कहावत कृषि सम्बन्धी है। ईख और गेहूँ कितना बोना चाहिए?

अ०– ईख तीस गुना व गेहूँ बीस गुना बोना चाहिए।

ईख तक खेती, हाथी तक बनिज।

श०– बनिज–व्यापार।

अ०– ईख की खेती से बढ़कर कोई खेती नहीं है तथा हाथी के व्यापार से बड़ा कोई व्यापार नहीं है। कहावत बहुत पहले की है। आज के युग में तमाम व्यापार हाथी के व्यापार से भी बड़े हैं।

ई जांघ खोलै तौ लाज,
ऊ जांघ खोलै तौ लाज।

कहावत उस समय लागू होती है जब झगड़ने वाले दोनों पक्ष अपने ही स्वजन हों या उसमें स्वयं भी शरीक हों। धर्मसंकट की स्थितियों में पड़ना।

अ०– बुरा–भला कहूँ भी तो किसको, इसमें से किसको दोष दूँ? अपना कहूँ, तो शर्म की बात है, दूसरे का कहूँ, तो शर्म की बात होगी। दोनों ही अपने हैं, दोनों की कहने में इज्ज़त जाती है। दोनों ही अपने शरीर की जांघें हैं, दोनों में एक भी खोलने पर बदनामी होती है।

ई सुख छोड़िके परान कहां जइहैं?

श०– परान–प्राण, जीव।

जब कोई मनुष्य बहुत सुख, शान्ति, सम्पन्नता का जीवन अन्य स्थानों में व्यतीत करता रहता है तो उसकी आत्म संतुष्टि, चैन देखकर कहावत कहते हैं।

अ०– भला इतना बड़ा सुख, आराम छोड़कर प्राण कहां जायेंगे?

ई जुग मां गाय मइला खाति।

श०– जुग–समय, युग। मइला–गंदगी, टट्टी, मल।

कहावत युग के प्रभाव को दिखाती है।

हिन्दू–समाज में गाय को "माता" मानते हैं। उसकी पूजा की जाती थी। कष्ट और विपत्तियों के समय में गाय की गोहार लगाई जाती थी। कहते हैं संसार में पांच माता होती हैं जननी, धाय, गौ, धरती और गंगा।

गौ माता जो पूज्य हैं। वे मैला खाने लग गई हैं। ऐसा होना भी कलि का प्रभाव ही कहा जाएगा।

ईंट का जवाब पत्थर से देय चाही।

कहावत दुष्टों के प्रति कही गई है। दुष्ट को दुष्टता से ही मात दिया जा सकता है।

अ०– यदि कोई ईंट से तुम्हें मारता है तो उसे पत्थर से मारने पर ही उसकी बुद्धि ठीक होगी। तभी वह अपने ईंट की मार की गलती को समझ पायेगा। इसीलिए कहा गया है "जैसे को तैसा" या "शठे शाठ्यम–समाचरेत्"। यानी दुष्ट के साथ दुष्टता ही करनी चाहिए।

ई जवानी मोहे ना भावे, सींक डोले हँसी आवे।

कहावत नव युवावस्था के प्रति कही गई। कहते हैं "जवानी दीवानी होती है"। यह जीवन का एक ऐसा स्वर्णयुग होता है जिसमें सारी दुनिया ही रंगीन दिखाई देती है। जरा–जरा सी बात पर भी हँसी आती है, रंगीनी सूझती है। कल्पनाओं के घोड़े न जाने कहाँ, किस दुनिया में दौड़ा करते हैं।

मतलब यह कि जवानी इतनी मनमोहक है कि सींक जैसी भी कोई वस्तु गिरती है तो हँसी आने लगती है। बिना हँसी की बात पर भी हँसी, मज़ाक, चुहलबाजियाँ होती रहती हैं।

ई डर नहीं बा कि घोड़वा घसिया खाय डारे, डर बा कि परचि जाये।

श०– परचि–हिल जाना, लालच में आना।

कहावत किसी के परच जाने, रोज–रोज लालचवश खाने–पीने के लिए आने–जाने पर कही गई है। इसी पर किसी ने कहा है "हरका मानै, परका न मानै" यानी किसी को घर आने के लिये मना करने पर भले ही मान जाय, मगर यदि वह उस घर में खाये पिये है, तो कदापि नहीं मान सकता है।

उपरोक्त कहावत भी इसी आशय से कही गई है।

अ०– भय यह नहीं है कि घोड़ा घास या भूसा लेगा। भय तो यह है कि वह रोज़–रोज यहाँ आने के लिये विवश हो जायेगा, ऐसा परच जायेगा कि बिना यहाँ तक आये मानेगा ही नहीं।

ईसा पीर न मूसा पीर,
सबसे बड़ा पइसा पीर।

श०– ईसा–ईसाई धर्म के प्रवर्तक, मूसा–यहूदियों के धर्मगुरु। पीर–महात्मा। सिद्ध। कहावत पैसे के महत्व को लेकर कही गई है। किसी ने कहा है "बाप बड़ा न भइया, सबसे बड़ा रुपइया"।

अ०– दुनिया में यदि सबसे बड़ा कोई देवता है तो वह है पैसा। वह सबसे बड़ा भगवान है। उस पर भला आज के अर्थ प्रधान युग में तो पैसा ही सब कुछ हैं। किसी ने कहा भी है – "ए छूंछा तोहका के पूछा।

ई मुँह औ मसूर की दाल।

जब किसी व्यक्ति से कहीं ज्यादा किसी वस्तु की कीमत लगाई जाती है या किसी को नीचा दिखाने के लिए उस वस्तु का मूल्य बढ़ाया जाता है तो कहावत कहते हैं।

अ०– भला कहां तुम और कहा मसूर की दाल? तुम्हारा मुँह इसे खाने लायक नहीं है।

ईट की भवानी, मिष्ठान क परसाद मागै।

अपनी सही औकात से ज्यादा अपनी इज्जत कराने वाले के प्रति कहावत कही जाती है।

अ०– ईट की देवी मिष्ठान्न का प्रसाद चाहें तो कौन

चढ़ायेगा? जिस प्रकार से कहा गया है "काठ की भवानी क मकरा क अच्छत"। जो जैसा फलदायक होगा, वैसी ही उसकी पूजा होगी। इसी प्रकार से गुणी, बुद्धिमान, व्यक्ति को जो सम्मान मिलेगा वह मूर्ख, अज्ञानी को कदापि न मिल पायेगा।

ईद क चांद होइगे।

कहावत बहुत दिन के बाद आया वह व्यक्ति जो किंचित् झलक दिखाकर गायब हो जाये, उसके प्रति कही जाती है।

अ०– जैसे ईद का चाँद साल भर बाद, बहुत थोड़े समय को दिखने के बाद लुप्त हो जाता है उसी प्रकार से कोई आया और चला गया या कोई जमाने के बाद आकर चला गया, आदमी बहुत समय से न दिखाई पड़ा हो, ऐसे ही आदमी पर कहावत लागू होती है।

ई जान घघ्घा निर्बुद्धी,
अपने काल बिनासै बुद्धी।

श०– निर्बुद्धी...... अज्ञानी, मूर्ख, बेवकूफ़, काल–मौत, बुरे दिन का आना विपत्ति, बिनासै....... नाश होना, बर्बाद होना।

कहावत उस समय कही जाती है जब कोई व्यक्ति तरह–तरह के अनाचार, दुराचार, अन्याय, असामाजिक कार्य करता है और उन्हीं कार्यों से उस व्यक्ति का पतन होने लगता है या अंतिम परिणाम मौत होती है। वह किये कार्यों के कुपरिणामों का फल भोगता है। संस्कृत में एक श्लोक है–

विनाशकाले विपरीत बुद्धिः।

अ०– जब किसी मनुष्य का नाश, पतन होने वाला होता है तो सर्वप्रथम उसकी बुद्धि का नाश होता है। घघ्घा कवि के शब्दों में यही है कि यह न समझो कि घघ्घा अज्ञानी है बल्कि जब अपने नाश का समय आता है, तभी बुद्धि का भी नाश होता है।

ईंट के भवानी, झाँवा क परसाद।

जो जैसा हो उसका सम्मान भी वैसा करना चाहिए।

श०– झाँवा–जली हुई ईंट।

अ०– यदि ईंट की देवी है तो उनके ऊपर जली ईंटों के रोड़ों का प्रसाद भी चढ़ना चाहिए।

ईतर के घर तीतर, कबों बाहर, कबो भीतर।

बहुत से लोग कहते हैं– **"ईतर के घर तीतर, बाहर बांधू, कि भीतर?"**

कहने का तात्पर्य यह कि जब किसी के यहां कोई नई वस्तु आती है तो वह सबको दिखाना चाहता है कि मेरे यहाँ यह आया है। वह उसे कभी अंदर रखता है तो कभी बाहर। दिन रात इसी उधेड़–बुन में रहता है ताकि लोग उसे देखें। लोग पूछें कि कब आया, अच्छा है। कौन लाया आदि–आदि।

" उ "

उठा बहुआ साँस लेआ, चरखा छोड़ा जांत लेआ।

कहावत घर गृहस्थी से संबंधित, घर में आई बहू पर उद्धृत की गई है। वह बहुत पहले का ज़माना था जब बहुओं को "बहुआ नरक" झेलना पड़ता था। वे रात दिन चूल्हे–चौके, कूटने–पीसने, घर के सभी कामों में लगी रहती थीं। इसके बाद भी उन्हें तरह–तरह की यातनायें दी जाती थीं। हमेशा जली–कटी सुनाई जाती थीं। आज वह युग नहीं रहा। आज सारे नियम उल्टे हो गये हैं।

अब बहुधा बहुएं ही सासों पर हावी रहने लग गई हैं।

अ०– अब एक काम करने के बाद सांस लेकर दूसरा काम करो फुर्सत नहीं है काम से। यानी कि चरखा कातना बंद करके तनिक रुककर सांस ले लो, फिर जाता पीसो।

उही क तोरन, उही क बोरन,
मियाँ जी खाय कि रोवै।

श०– तोरन–तोड़ने वाली वस्तु, यानी रोटी, बोरन–बोरने वाली वस्तु, यानी दाल, सब्जी, कढ़ी इत्यादि।

कहावत भोजन को लेकर कही गई है तथा भोजन बनाने की मूर्खता पर कही गई है।

अ०– रसोई में एक ही वस्तु बनी है, जैसे चने की रोटी है, तो चने की दाल भी बनी है। अरहर की चूनी की रोटी के साथ अरहर की दाल डाली हुई है। किसी साग को काट कर यदि उसकी रोटी बनाई तो उसी का साग भी बना लिया है। यानी कोई परवाह नहीं कि एक दूसरें का स्वाद एक सा होगा।

अ०– उसी की रोटी है तो उसी का बोरन यानी उसी से खाना भी है तो मियाँ जी करें तो क्या करें, खायं कि अपने भाग्य को रोवें। संस्कृत में कहा है– "जन्म नष्टम् कुभार्या, दिनम् नष्टम् कुभोजनम्"।

अर्थात् दुष्टा पत्नी पाकर जन्म नष्ट हो जाता है और खराब खाना खाने पर दिन नष्ट होता है।

उपासे से पतोहू क जूठै भल।

विवशता में आदमी सब कुछ करता है। कहावत बड़ी विवशता, पेट की भूख को लेकर चरितार्थ की गई है। जब कोई भी विवशता मनुष्य के सामने आती है तो कहावत सामने आती है।

अ०– उपवास करने से कहीं भला है कि पतोहू, यानी बेटे की बहू का जूठा ही खा ले। जब कि हमारे धर्मशास्त्र में बहू का जूठा खाना निषेध है, मगर वही कहावत "मरता क्या न करता"। जब भूख लगी हो और नौबत यह कि खाने को कहीं कुछ भी न मिले तो उस उपवास से बहू का जूठन ही खाना अच्छा है। उसी प्रकार जहाँ कोई आशा न हो कार्य की और जैसे–तैसे कार्य हो जाय तो कहावत चरितार्थ होती है।

उजरी धोतिया जिन पतियाय तर लगुरिब बा।

श०– उजरी–सफदे, साफ, पतियाय–विश्वास मानना, तर–नीचे, लुगरिब– पुरानी, गंदी, चिथड़ा।

कहावत ऊपरी चमक–दमक, दिखावे पर उद्धृत की गई है।

अ०– ऊपरी चमक–दमक दिखने वाली वस्तुओं पर विश्वास मत करो। नीचे की हालत देखने पर ही असलियत का आभास हो सकता है। जैसे– बहुत से लोग होते हैं वे ऊपर तो बहुत अच्छा साफ वस्त्र पहने रहते हैं, मगर नीचे बनियाइन, अंडरवियर इत्यादि वस्त्र बड़े गंदे व फटे चीथड़े पहने रहते हैं।

किसी ने कहा है–

"न भूलें देखकर के आप ऊपर की सफाई पर।
बरक सोने का चिपकाया है, गोबर की मिठाई पर"।।

उधियान सेतुआ, पितरन क।

श०– उधियान–चक्की में पीसते समय जो सत्तू उड़ता है। जो गंदा ज़मीन का बिखरा होता है, सेतुआ–जौ–चने या मटर को भूनकर चक्की में पीसकर बनाया जाता है, पितरन–घर के मरे हुए लोग / पूर्वज।

कहावत दान संबंधी है यानी कि लोग दान कैसे देते हैं? नीयत कितनी साफ होती है? जैसे कि एक लोकोक्ति है– "मरी बछिया बाँभन के नांव" यानी दान भी दिया तो मरी बछिया का। बहुत से लोग कहते हैं" दान की बछिया क दांत नहीं निहारि जात। "यानी लोग भी जानते हैं कि जैसे– तैसे किसी प्रकार से दान दे दिया गया है। बछिया मरी है या मरणासन्न है, इसकी चिन्ता नहीं है। नाम होना चाहिए कि दान दिया।

इस पर एक लोकोक्ति बड़ी अच्छी स्मरण हो आई है। जो निम्नांकित है–

चोरी करइ निहाय के, देइ सुई कर दान।
ऊंचे चढ़ि के देखै, कितनी दूर विमान।।

श०– निहाय–लोहार लोग जिस लोहे के ठोस टुकड़े पर लोहा आदि धातुओं को रखकर पीटते हैं। एक विशेष प्रकार का लोहे का ठोस टुकड़ा। विमान–वायुयान।

अ०– चोरी की तो किसी ठोस बड़े से लोहे के टुकड़े की, और दान दिया है सुई का। उस पर उम्मीद क्या करते हैं कि बड़े ऊंचे पर खड़े होकर देख रहे हैं कि इतने बड़े दान के फलस्वरूप मरने पर मुझे जो विमान मिलना है वह भला कितनी दूर है यहाँ से? यानी, सुई के दान पर वे स्वर्ग की कामनायें लिए घूमते हैं।

उखुड़ी क काल मदार।

श०– उखुड़ी–ईख, गन्ना, काल–मौत, मदार–एक जहरीला पौध होता है।

अ०– ईख के खेत में यदि मदार का पेड़ जम गया है तो वह उसके लिए ज़हर के समान है। अतः गन्ने के खेत से मदार का पेड़ जैसे उगे, निकाल देना चाहिये।

उत्तम खेती मध्यम बान, निषिध चाकरी भीख निदान।

श०– चूंकि कहावत पुरानी है इसलिए उस ज़माने में सबसे उत्तम पेशा खेती का माना जाता था। बीच का पेशा वाणिज्य यानी कि व्यापार को माना जाता था। किसी की नौकरी करना नीच कामों में आता था तथा भीख मांगना सबसे खराब (बुरा) माना जाता था।

उतरि गई लोई तो क्या करेगा कोई।

श०– लोई–चादर, इज्ज़त, सम्मान।

कहावत ऐसे बेहया, बेशर्म लोगों पर चरितार्थ की गई है जो अपनी लाज, शर्म खो बैठे हैं। जिन पर किसी के कहने का कोई प्रभाव ही नहीं है।

अ०– वस्त्र लज्जा निवारण के हेतु होते हैं। अतः जब शरीर पर से पहना हुआ कपड़ा ही उतर गया है तो फिर शर्म ही किस बात की? किसी ने कहा है, नंगा नाचै फाटै का। जो नंगा ही है उसे शर्म–हया से क्या काम?

उपरोक्त कहावत इसी तरह की है।

अ०– जब तन का वस्त्र उतर गया तो बेहया को क्या शर्म। उसका कोई भी क्या बिगाड़ सकता है।

उलटा चोर कोतवाल को डांटै।

श०– उलटा–उलट के, कोतवाल–दरोगा, डांटे–बिगड़े, नाराज़ हो।

कहावत उस गलती करने वाले के ऊपर कही गई है जो गलती भी करे और ऊपर से माने भी न। दूसरों पर स्वयं ही रोब गालिब करे।

अ०– चोर ने चोरी की, मगर जब कोतवाल ने उसे पकड़ लिया तो दरोगा पर ही गुस्सा उतारने लगा।

उवत की भोरा, अँथवत तड़ेरा।
आधी रात चभोरी क चभोरा।।

श०– उवत–उदय का समय, अंथवत–सूर्यास्त होने का समय, चभोरी क चभोरा–ज़ोरों की बरसात का होना/ तड़ेरा–सूर्य अस्त होने के समय ऐसी ललाई जो बादलों से भरी हो।

कहावत घनघोर वर्षा होने के लक्षणों पर कही गई है।

अ०– सूर्य उदय के समय जब आसमान में धुंध हो और अस्त होने के समय आसमान में बादलों भरी लालिमा हो तो समझना चाहिए कि रात में पानी ज़ोरों का आयेगा।

उड़त चील हगासी होय, तो देख के बता देई।

श०– हगासी–शौच की इच्छा।

कहावत लोग तब कहते हैं जब अपने को बहुत जानकार व दूरदर्शी समझते हैं।

अ०– उड़ती हुई चील यदि पाख़ाना करने वाली हो, तो उसे देखते ही समझ लेना कि यह चील अब टट्टी करने वाली है। यानी भविष्य की जानकारी होना।

उतरि–पतरि के भये जब पारा,
केवट तब लागै मोर सारा।

श०– उतरि–पतरि– नदी पार होना। पारा–पार उतरना, सारा–साला, पत्नी का भाई।

कहावत अपना मतलब गांठने के ऊपर कही गई है।

अ०– जब अपना मतलब निकल गया यानी कि नदी पार हो गये तो उतराई का पैसा देने के दफ़े केवट से रिश्ता जोड़ने लगे, ऐसा रिश्ता जिससे पैसा लिया ही न जा सके। यानी तुम तो मेरे ससुराल के रिश्ते से साले लगते हो।

उतरे जेठ जो बोलै दादुर,
कहै भड्डरी बरसै बादर।

श०– उतरे–खत्म होते, जेठ–ज्येष्ठ मास। दादुर–मेढ़क।

कहावत वर्षा के लक्षणों पर कही गई है।

अ०– कवि भड्डरी का कहना है कि जेठ मास समाप्त होते ही यदि मेढक बोलने लगें तो समझो कि वर्षा खूब जोरों की होगी।

उदित अगस्ति पंथ जल सोषा,
जिमि लोभहिं सोखहिं संतोषा।

श०– उदित–उदय होना, अगस्त–एक तारे का नाम है, पंथ–रास्ता, सोखा–सुखा दिया, लोभहिं–लालच, संतोखा–संतोष।

उपरोक्त पंक्ति तुलसीदास जी की है। अगस्त तारा उदय होते ही वर्षा का अंत हो जाता है। रास्ते का सारा जल सूख जाता हैं। उसी प्रकार से जैसे लोभ से मन का संतोष समाप्त हो जाता है।

उए अगस्त फूले बन कासा,
अब छोड़ो वर्षा की आसा।

कहावत आसान है।

अ०– आकाश में अगस्त तारा उदय हो चुका है, अब बरसात की आशा छोड़। गोस्वामी जी ने कहा है–

फूले कास सकल महि छाई, जनु वर्षा कृत प्रकट बुढ़ाई।

कास में फूल आ चुके हैं, लगता है वर्षा ऋतु का वृद्धापन आ चुका है।

उलटा बादर जो चढ़े, विधवा खड़ी नहाय,
घाघ कहै सुन घाघिनी, ए बरसै वह जाय।

श०– उलटा बादर–बादलों के समूह का दूसरे बादल पर चढ़ना।

कहावत विधवा स्त्री की चरित्रहीनता पर कही गई है।

अ०– घाघ कवि का कहना है कि ए घाघिनी सुनो– आसमान में यदि बादलों का समूह एक दूसरे के ऊपर उमड़–घुमड़ कर चढ़े और विधवा स्त्री खड़ी होकर स्नान करती है तो समझो कि बादल बिना बरसे नहीं जायेगा और वह स्त्री बिना किसी पराये पुरुष के साथ गये नहीं मानेगी।

उगी हिरनी फूले कास, अब का बोवै निगोड़े माष।

श०– उगी–उदय हुई, हिरनी–अगस्त तारा, निगोड़े–निकम्मे–नाश करने वाले, माष–उड़द।

कहावत खेती संबंधी है। उड़द बोने के समय पर कही गयी है–

अ०– आकाश में जब अगस्त तारा उदय हो चुका है, धरती पर कास फूल चुके हैं, यानी वर्षा का समय तो गया, अब उर्द क्या बो रहे हो, किसान ! अब कुछ भी न होगा।

उलटे गिरगिट ऊंचे चढ़ै,
बरखा होय भुईं जल गिरै।

अ०– जब गिरगिटान किसी ऊंचे स्थान को चढ़े तो जानो कि धरती पर जल ही जल हो जायेगा।

उत्तर दिसि मलके करै, दखिन करै निसान।
कह दो जाइ अहिर से, ऊपर करै बंधान।।

अ०– उत्तर दिशा में जब बादलों का समूह उमड़–घुमड़ कर चले और दक्षिण दिशा की ओर बिजली चमके तो समझो कि वर्षा भरपूर होगी। अहीर जाति जो गाय भैंस पालते हैं, उनको चाहिए अपने जानवरों को बाँधने के लिए ऊंचे स्थान पर कहीं मचान बना लें या ऊपरी स्थान पर जानवरों को बाँधने का ठौर करें।

उत्तर चमके बीजुरी, पूरब बहती बाउ,
घाघ कहै सुनु घाघिनी, बरघा भीतर लाउ।

कहावत वर्षा के ऊपर कही गई है घाघ कवि की है।

अ०– यदि उत्तर दिशा में बिजली चमकती है और पूरब की हवा बहती है, तो बैलों को घर ला कर बांधो।

उड़द–मोठ की खेती करिहौ,
कूंड़ा तोड़, ऊसर मां धरिहौ।

श०– उड़द–उर्द, मोठ–बनमूंग, दाल में काम आने वाला अनाज, कूंड़ा–मिट्टी का बना हुआ बर्तन, ऊसर–जिस खेत में कुछ भी न पैदा होता हो।

कहावत खेती के विषय में है कि कौन सा अनाज खूब पैदा होता है।

अ०– उर्द व बनमूंग की खेती करने पर उपज इतनी ज्यादा होती है कि अनाज को किसी बड़े बर्तन में रखने की आवश्यकता पड़ती है। कूंडे में वह आ ही नहीं पायेगा। कूंडा बेकार होने के कारण उसे बाहर ऊसरहे खेत में रख आना पड़ेगा।

उदंत बरदे उदंत ब्याये,
आप जांय ओ खसमें खाये।

श०– उदंत–निडर, न दबने वाली गाय, खसमें–स्वामी, मालिक, बरदे–गाय व सांड का संयोग।

अ०– घाघ कवि का कहना है कि पशुओं के भी ऐसे तमाम लक्षण–कुलक्षण होते हैं जिनसे मालिक को भी नुकसान उठाना पड़ता है और ये जानवर अपनी जान से भी जाते हैं। कहावत से ज्ञात होता है कि पशुओं को खरीदते समय पूरी पहचान व जानकारी होनी चाहिए।

अ०– यदि गाय सीधी न होकर उदण्ड स्वभाव की है, तो उसका बछड़ा भी उसी प्रकार का होगा। अक्खड़, मरकही, निडर गाय का बछवा बड़ा ही उदण्ड होगा जो या तो स्वयं ही जीवित न रहेगा या अपने स्वामी को ही साफ़ कर देगा।

उजर बरौनी, मुंह का महुआ
ताहि देखि हरवाहा डरुवा।

श०– उज्जर–सफेद, महुआ–पीला, थूथुन का रंग महुए के रंग का होना, डरुवा–डरना।

अ०– जिस बैल के आंख की बरौनी सफेद हों, ओठों का रंग पीला महुए के रंग का हो जिसे देखकर हलवाला भी डर जाए, ऐसा बैल लेकर क्या करें?

उठि के बजरा यों हंसि बोला
खाये बूढ़ा, जुवा हो जाय।

श०– बजरा–एक प्रकार का मोटा अनाज होता है जिसकी तासीर बहुत गर्म होती है। आम तौर पर इसकी रोटी, दूध, दही, मट्ठा, साग, सगपहिता आदि से खायी जाती है।

अ०– बाजरे में इतनी गर्मी व ताकत होती है कि कहा गया है कि यदि बूढ़ा खाये तो वह जवान हो जाये। वैसे बाजरे की रोटी जाड़े के दिनों में ही खानी चाहिए।

उत्तरा उत्तर दे गई, हस्त गयो मुख मोर
भली बिचारी चित्रा, परजा लेइ बहोर।

श०– उत्तरा–उत्तरा नक्षत्र, उत्तर–जवाब, हस्त–नक्षत्र, मुखमोर–पीछे हो कर जाना, चित्रा–नक्षत्र, परजा–घर में काम करने वाले, प्रजा में नाई, धोबी, कहार, कोंहार इत्यादि आते हैं, बहोर–बटोर, इकट्ठा करना।

कहावत नक्षत्रों व खेती के ऊपर कही गई है।

अ०– उत्तरा चुपचाप धीरे से चला गया, हस्त जिसका बरसना खेती के लिए बहुत आवश्यक है, वह भी मुंह पीछे करके चला, अब तो बची खाली चित्रा जिसने कम से कम खेती में किसानों, मज़दूरों को समेट कर काम तो दिया।

उत्तम बिद्या लीजिए, जदपि नीच पहिं होय।

यह पंक्ति अत्यन्त शिक्षाप्रद है।

अ०– विद्या ऐसा ज्ञान है जिसे नीच से भी अपना लेना चाहिए।

उधार काढ़ि बिउहार चलावै, टटियै डारै ताला,
सारे के संग बहिन पठावै, तीनिउ के मुंह काला।

श०– उधार–कर्ज़, काढ़ि–लेकर, निकाल कर, बिउहार–आपसदारी, दुनियादारी, टटिये–झोपड़ी के दरवाज़े पर जो आड़ लगाते हैं, सारे–साला, पत्नी का भाई।

कहावत मूर्खों के प्रति कही गई है।

अ०– किसी से उधार का पैसा मांगकर उसे किसी दूसरे को उधार देकर बड़े परमार्थी बने हैं। दूसरे वे लोग जो टाटी जैसे झोपड़ पट्टी में ताला लगाते हैं और तीसरे अपनी बहिन को अपने साले के साथ भेजते हैं, इन तीनों के मुंह में कालिख लगती है।

उतावला सो बावरा, धीरा सो गंभीरा।

श०– उतावला–जल्दबाज़, बावरा–बौखल, झक्की, धीरा–धीरज रखने वाला, शान्त प्रकृति का, गंभीरा–गंभीर सोच–समझ का काम करने वाला।

अ०– किसी ने कहा है "जल्दी का काम शैतान का होता है।" इसी तरह से जो जल्दबाज़ होता है वह बना बनाया काम भी जल्दीपने से बिगाड़ कर रख देता है। वह बिना सोचे–समझे, जल्दी में बौखला उठता है, चाहे बाद में पछताना ही क्यों न पड़े? जो धैर्य के साथ, शान्त मन से, स्थिर दिमाग़ से काम करता है वह भारी, गम्भीर, स्वभाव का होता है। वह कठिन से कठिन कार्य को शान्तिपूर्वक निबटा देता है।

उधार क खाब, फूस क तापब एक्के आय।

कहावत उधार लेने व खाने वालों के ऊपर कही गई है।

अ०– फूस (घास) की आग भला कितनी देर टिक सकती है? जलते देर न हुई कि बुझ गई। उसी प्रकार से कहा गया है कि कर्ज़ लिया गया पैसां, जैसे लिया नहीं कि तुरंत समाप्त हुआ और पुनः वही स्थिति सामने आ जाती है।

उपजहिं एक संग जग माहीं,
जलज जोंक जिमि गुन बिलगाहीं।

उपरोक्त पंक्ति में तुलसीदास जी ने बड़ी कुशलता से सज्जन–असज्जन की पहचान बतायी है।

श०– उपजहिं–पैदा होना, जग–संसार, जलज–कमल, जोंक–पानी में रहने वाला जीव है जो खून चूसता है।

अ०— गोस्वामी जी का कथन सज्जन–असज्जन के प्रति बहुधा लोग कह देते हैं। कमल और जोंक दोनों ही एक ही साथ पानी में पैदा होते हैं किन्तु उनके स्वभाव बिलकुल भिन्न होते हैं।

उधार दिया कि गाहक खोया।

श०— गाहक–ग्राहक, सौदा लेने वाले।

कहावत उधार सामान देने पर कही गई है।

अ०— पेशे, रोज़ी, व्यापार में यदि ग्राहक को रोज़–रोज सौदा उधार दिया जायेगा तो रुपया न देने की इच्छा से ग्राहक टूटने लगते हैं। उसमें बहुत से लोग होते हैं जो उधार ही लेना पसंद करते हैं फिर तकाजा करने पर लोग नाराज़ होकर दुकान ही छोड़ देते हैं।

उल्टे बाँस बरेली धावै।

अ०— उसी दिशा से आये व्यक्ति को पुनः उसी दिशा में जाना पड़े। जब किसी को जाना किसी दिशा में हो और जाय विपरीत दिशा में तो यह कहावत चरितार्थ होती है।

उत्तम खेती जो हर गहा,
मध्यम खेती जो संग रहा।

श०— उत्तम–अच्छी। हर–हल, गहा–पकड़ना, संग–साथ।

कहावत खेती विषयक है। यानी खेती कैसे अच्छी हो सकती है?

अ०— सबसे अच्छी खेती उसकी होती है जो किसान अपने हाथों से हल, कुदाल, हंसिया आदि चलाता है। मध्यम खेती उसकी होती है जो किसान कार्य की निगरानी बराबर करता रहता है।

उतरा घाँटी, होइगा माटी।

श०— घाँटी–गले के नीचे। माटी–मिट्टी।

कहावत भोजन के विषय में कही गई है, चाहे भोजन स्वादिष्ट हो, चाहे ख़राब हो।

अ०— भोजन कैसा भी अच्छा हो या बुरा हो, गले के नीचे उतरा नहीं कि पेट में गया। फिर स्वाद–बेस्वाद से क्या मतलब? बाद में सब बराबर हो जाता है।

उड़ैक पिसान, उड़िगा जंतवै।

श०— जंतवै–जाँत जिसमें अनाज पीसा जाता है।

कहावत उस समय कही जाती है जब कोई बात अपनी असलियत से बहुत आगे ऐसी अफवाह बनकर फैले, जो असंभव हो या छोटी सी ग़लती को बहुत बड़ी गलती बना दिया जाये।

अ०— कहावत में उड़ने की वस्तु तो आटा है मगर बात कुछ ऐसी अफवाह के रूप में फैली कि पत्थर का जाँता ही उड़ गया। कुछ लोगों की आदत होती है कि वे बात का बतंगड़ बनाकर सचमुच ही जाँता उड़ा देते हैं। यह उनका अपना एक स्वभाव होता है जिससे वे विवश रहते हैं। यानी असंभव बात को संभव कर दिखाना। गप्प व झूठ की पराकाष्ठा होना।

उपदेस देय से भला अपुनौ करै तो जाना।

इस कहावत पर मुझे गोस्वामी जी की पंक्ति स्मरण हो आई है— "पर उपदेस कुसल बहुतेरे, जे आचरहिं ते नर न घनेरे" दूसरे को उपदेश लोग खूब देते हैं, मगर स्वयं वैसा नहीं करते हैं।

अ०— दूसरों को लोग ज्ञान के बड़े–बड़े भाषण देते हैं, मगर स्वयं उस रास्ते पर नहीं चलते।

उड़ै चिरई उड़िगा अंडा।

लोग जब बात करते–करते स्वाभाविकता से अस्वाभाविकता पर पहुँच जाते हैं तो कहावत कही जाती है।

अ०— उड़नी थी चिड़िया, उड़ गया अंडा। सही बात न कहकर ऐसी बात कहना जिस पर किसी को विश्वास ही न हो। गप्पें हाँकना, व्यर्थ की बातें करना। गोस्वामी जी के शब्दों में ऐसे लोग बातों के पीछे पगलाये रहते हैं। वे हमेशा उल्टा–पल्टा बोलते हैं गोस्वामी जी के शब्दों में–

बातुलभूत बिबस मतवारे, ते नहिं बोलइ बचन संभारे।

उवत सुरुज क सबै अर्घ देति।

किसी भाग्यवान, महान, उन्नतिशील, पुरुष के भाग्य को देखकर सभी प्रशंसा करते हैं। सभी उसे आदर की दृष्टि से देखते हैं, इस पर यह कहावत कही जाती है।

अ०– उगते हुए सूर्य को सभी जल चढ़ाते हैं। सभी प्रणाम करते हैं। उदयकाल उन्नति का प्रतीक है।

उहै तीज कै बायन, उहै गोबर कै कढ़ौनी।

कहावत उस समय कही जाती है जब किसी को, दोहरा नेग या तीज–त्यौहारों पर त्यौहारी कम मिले या किसी के देन–लेन, बात–व्योहार में कटौती की जाय।

अ०– एक ही बार के देने में तीज त्यौहार की त्यौहारी भी हो गई और वही उतना गोबर निकालने की मज़दूरी भी हो गई यानी वस्तु का आधार मिलना। चीज या पारिश्रमिक देने वाले की कंजूसी पर व्यंग्य कहावत में है। इसी प्रकार की अनेक स्थितियों में भी यह लोकोक्ति कही जाती है।

उत्साही पुरुष कठिन से कठिन काम को कठिन नहीं मानते।

श०–उत्साही–प्रसन्न मन वाले पुरुष, हिम्मत से काम लेने वाले पुरुष।

कहावत हिम्मती, दुःखों के समय धैर्य रखने वाले, तमाम बाधायें सामने आने के बाद भी शान्त चित्त से कार्य करने वाले मनुष्य को देखकर कही गई है।

अ०– जो हिम्मती व महान् पुरुषार्थी पुरुष होते हैं, तमाम मुसीबतों के पड़ने के बाद भी अपना धैर्य नहीं खोते। पूरे लगन के साथ साहस के साथ अपनी कठिन राहों की यात्रा पूरी करते रहते हैं।

उपदेश देने से स्वभाव नहीं बदलता। जैसे गरम किया जल, धीरे–धीरे समय के साथ शीतल हो जाता है"।

श०– उपदेश–ज्ञान, सीख, स्वभाव–आदतें।

अ०– किसी व्यक्ति के स्वभाव की जड़ता को देखकर ही कहावत कही गई है जो जल के माध्यम से सामने आई है। यानी किसी व्यक्ति को कितनी भी अच्छी बातों की सीख दो, मगर उसका स्वभाव पुनः वैसे ही हो जायेगा जैसे पानी गरम होने के बाद धीरे–धीरे ठंडा हो जाता है।

उल्लू के बच्चे की आंखें, मोर के,
बच्चे से ज्यादा खूबसूरत होती हैं।

उपरोक्त लोकोक्ति अजरबैजान की है। वैसे कहावत उस समय लागू की जा सकती है जब किसी खूबसूरत माँ–बाप के बच्चे से बदसूरत माँ–बाप के बच्चे किसी मायने में कुछ ज्यादा ही सुंदर लगते हैं।

उकतही कोंहारिन नाखून से माटी खोदै।

श०– उकतही–जल्दबाज़, कोंहारिन–कुम्हार की पत्नी।

कहावत अधिक जल्दबाज़ी पर कही गई है।

अ०– जब कोई बेहद जल्दबाज़ी मचाता है तो कहते हैं कि कुम्हारिन इतनी जल्दी करने लग गई कि मिट्टी के बर्तन बनाने का साधन यानी मिट्टी को बजाय खुरपे या कुदाल के अपने नाखून से ही खोदने लग गई कि इससे ही जल्दी हो जायेगी।

उजरे–उजरे सब भले, उजरे भले न केस।
नारी नवै, न रिपु दबै, न आदर करै नरेस।।

श०– उजरे–सफेद, केस–बाल, रिपु–दुश्मन, नरेस–राजा।

अ० – उपर्युक्त दोहा बुढ़ापे पर कहा गया है। सफेद सब चीज अच्छी लगती है मगर बाल सफेद नहीं भाते। स्त्री, राजा, बैरी, न कोई आदर देते हैं और न कोई रोब ही मानता है। कवि केशव के शब्दों में– "केसव केसनि अस करी, जसि अरिहूँ न कराहि। चन्द्र बदनि मृगलोचनी बाबा कहि–कहिं–जाहि"।

उज्जर बरन अधीनता, एक बरन दो ध्यान,
हम जाने तुम भगत हो, निरे कपट की खान।

श०– बरन–रंग। दो ध्यान–दो चित्त होना, निरे–एकदम। कपट–छल। खानि–खजाना, भंडार।

इसमें बगुला भगत अर्थात् 'मुँह में राम बग़ल में छुरी" वालों के प्रति कटु व्यंग्य किया गया है।

अ०– उज्ज्वल रंग का पूरा शरीर है तुम्हारा, मगर शरीर पूरे सफ़ेद होने के बाद भी तुम्हारा मन एकाग्र नहीं है। ध्यान बँटकर दूसरी जगह चला गया है। एक पैर से खड़े होने के कारण मैंने समझा कि तुम कोई साधु–संन्यासी होगे, मगर निकले बड़े ही कपटी। चुपचाप दाँव में रहे कि मछली देखते ही निगल गये, तो इससे बढ़कर धोखेबाज़ कौन होगा?

उठतै लात, बइठतै घूसा, के कहै पानिव क पूछा।

जब किसी के साथ घर में या समाज में कहीं भी अपमान की दशा होती है, तो कहावत कही जाती है।

अ०– उठते तो पैरों की मार पड़ती है और जैसे बैठे नहीं कि घूसा पड़ता है। कौन पानी–पीढ़े के लिये पूछता है कि कुछ खाया–पीया भी कि नहीं?

उठाव मोर भकना, मैं घर संभारूं अपना।

श०– भकना–घूँघट, पर्दा। कोई तेज़ तर्रार नई बहू के प्रति कहावत कहीं गई है।

अ०– हो चुका पर्दा, अब मेरा पर्दा उठा दो, मैं अपनी घर–गृहस्थी की देख–रेख करूँ।

उर्द कहै मोरे माथे टीका,
मोरे बिन ब्याह न होवै नीका।

श०– माथे टीका–उर्द के मुंह पर एक सफेद दाग सा बना होता है, नीका–अच्छी तरह, अच्छा।

हमारे हिंदू धर्म में शुभअवसरों पर उर्द का काम पड़ता है। विवाह में, लड़के के होने में करीब–करीब हर शुभ कामों में उर्द शुभ माना जाता है।

अ०– उर्द कहता है कि मेरे माथे पर इस बात का टीका है कि मेरे बिना ब्याह, शुभकाम अच्छे ढंग से नहीं हो सकते हैं।

उर्द की उर्दी भली, रस की अच्छी खीर।
लाज जो रखे पिया की वह भी अच्छी बीर।।

श०– उर्दी–कोहड़ौरी जो उर्द की दाल से बनती है, बड़ी। रस–गन्ने के रस की / बीर–स्त्री।

अ०– कोहड़ौरी उर्द की ही अच्छी होती है और गन्ने के रस की खीर, जिसे गाँव में रसियाव कहते हैं, अच्छी होती है तथा जो नारी अपने पति की मर्यादा को निभाये वही सही वीर महिला है अथवा सच्ची सहचरी है।

उतरा कबिर सराय में, गठकतरे के पास।
जस करनी तस पावसी, तू क्यों होत उदास।।

श०– सराय–धर्मशाला, यात्रियों के उतरने व ठहरने की जगह, गठकतरे–गठरी चुराने वाले, जेबकतरे।

कहावत अपनी मूर्खता के प्रति कही गई है।

अ०– यदि तू ही जानबूझ कर चोर व जेबकतरे की सराय में रुका है और यदि तेरा माल गायब हो गया तो फिर उसकी क्या गलती? गलत स्थान पर क्यों रुका? जैसे करनी की वैसा ही फल मिला।

उत्तर गुरु, दक्खिन चेला, कैसे बिद्या पढ़े अकेला?

जब तक गुरु और चेले का साथ न हो तो विद्या कैसे आवे? दोनों का अलग–अलग रहना।

उत्तरा हार जो बरसा होवे,
काल पिछवारे जाकर रोवे।

उत्तरा नक्षत्र भादों मास के अंत में लगता है। इन दिनों की वर्षा फसल के लिये बहुत लाभकर मानी जाती है।

अ०– उत्तरा नक्षत्र में यदि पानी बरस जाय तो सूखा, अकाल पिछवाड़े बैठ कर रोते हैं। यानी खेतों में फसल अच्छी तरह होगी।

उथली थारी फूला भात, लेया पंचों हाथों हाथ।

अ०– छिछली थाली में भुरभुरा चावल रखा जाय तो, बहुत कम आता है। उतने में कौन पंच कितन खा पायेगा?

उधड़े घाट मदार की, शुजा चले अजमेर।

किसी को क्यों बुरा लगे जब कोई कहीं जाय तो? कहावत इसी पर कही गई है।

अ०– यदि शुजा मदार की दरगाह मकनपुर न जाकर अजमेर जहाँ पर मुईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह है, गये तो मदार को क्यों बुरा लगे। इन दोनों ही स्थानों पर मुसलमानों का मेला लगता है मगर यह तो अपने–अपने विश्वास के ऊपर है। कोई कहीं जाता है तो कोई कहीं, इसमें बुरा लगने की क्या बात है?

उलटी गंगा पहाड़ चली।

अ०– उलटी–पलटी बातो का कोई न सिर है न पैर। भला गंगा पहाड़ पर कैसे चलेगी? धारा तो नीचे ही गिरेगी। कहावत उलटा काम करने पर है।

उसको सीख न दे कभी, जो हो कहर नीच।
लौह मेख नाहीं धंसे, कहूँ पाथर बीच।।

अ०– नीच को शिक्षा देना पत्थर में लोहे की कील ठोंकने की तरह है। उसके ऊपर कोई असर नहीं पड़ता।

उस्ताद, हज्जाम नाई, मैं और मेरा भाई,
घोड़ी और घोड़ी का बछेड़ा,
औ मुझको तो आप जनबै करते हो।

अ०– किसी दावत में नाई को खाना लेना था तो उसने परोसा खाना मांगा। जब लोगों ने पूछा कि तुम्हारे घर में कितने खाने वाले हैं? तो उसने उपरोक्त सदस्यों की सूची बता दी। जब कि वह बिलकुल अकेला था, उस समय घर में। तो जब बांट, बंटवारे में अधिक हिस्सा मांगा जाता है तो कहावत चरितार्थ की जाती है।

अ०– नाई बोला–मेरां गुरु, नाई, मैं, मेरा भाई, घोड़ी, घोड़ी का बच्चा और मुझे तो आप जानते ही हो। यानी, कि उसने अपने को तीन बार गिनाया– हज्जाम नाई, मैं और मुझे तो आप जानते ही हो। इस तरह से नाई एक ही जगह कई हिस्सों का खाना माँग कर अपने घर आया।

'ऊ'

ऊख कन्नई काहे से, स्वाती क पानी पाये से।

श०– कन्नई–ईख के पौधे में एक प्रकार का कीड़ा लगने से, ईख रोगा जाती है।, स्वाती–एक नक्षत्र का नाम है।

अ०– ईख का पेड़ पतला, टेढ़ा या किड़ाया क्यों? इसलिये कि उसमें स्वाती का पानी पड़ गया। ध्यान देने की बात है कि जहाँ पर स्वाती का जल पपीहा, हाथी, गाय, बाँस, सीप इत्यादि के लिये वरदान है वहीं इस ईख के खेत के लिये विष के समान है।

ऊँट चरावै निहुरे–निहुरे" या "ऊँट की चोरी निहुरे–निहुरे।

श०– निहुरे–झुके हुए, छिपे रूप में।

कोई बड़ा काम या बड़ी वस्तु को छिपाकर ले जाना या करना असंभव होता है उसी पर कहावत लागू होती है।

अ०– दोस्ती, दुश्मनी, कोई बड़ा काम, यह सब चोरी से या अकेले में नहीं किये जा सकते हैं। ऊँट जैसी वस्तु चाहे कि चुपके से छिपा लें या चुरा लें तो असंभव है। कोई बड़ा काम करना है तो खुलकर, सामने आकर करना पड़ेगा।

ऊधौ के लेने न माधव के देने।

अ०– किसी तटस्थ व्यक्ति के प्रति कहावत लागू होती है जो अपने काम से काम रखता हो किसी से न कुछ लेना और न किसी से कुछ देना, किसी से कोई अपेक्षा न करना और न किसी के काम में टांग अड़ाना।

ऊँट हेरान मटुका मां ढूंढ़ै।

श०– मटुका–मटका, कूंड़ा जो मिट्टी का बना बर्तन होता है।

जब किसी आदमी की कोई वस्तु खोती है, तो उसके मनोविज्ञान पर कहावत कही गई है कि उसका शंकित हृदय कहाँ–कहाँ, किस प्रकार से भ्रमित होता है?

अ०– ऊँट खोया किसी का तो उसने जाकर मटके में खोजा कि कहीं यहाँ तो नहीं है? जबकि ऊँट भला मटके में कैसे आयेगा?

ऊँट कउनी करवट बइठै।

जब किसी को दूसरे व्यक्ति पर विश्वास नहीं जमता, वह उसे शंका की दृष्टि से देखता है, तो कहता है।

अ०– देखना है कि ऊँट किस करवट बैठता है, दायें कि बायें?

ऊँच बखरिया क ऊँच मोहार,
आधा ढाँका, आधा उघार।

श०– बखरिया–बड़े आदमियों के बड़े घर को गांवों में बखरी कहते हैं। मोहार–ऊँचा बड़ा सा बाहर का दरवाज़ा। उघार–खुला।

बखरी के माध्यम से बड़े आदमियों के भीतरी विघटन और बाहरी दिखावे के प्रति कहावत कही गई है।

अ०– बड़े घरों की बातें बड़ी विचित्र होती हैं। घर के बाहर बड़प्पन होता है। मगर घरेलू रहन–सहन बड़ी कंजूसी का होता है तथा हालत बहुत खराब होती है। इसी पर किसी ने कहा है, "नाव गांव एतना, पतोह पहिरै पोतना"।

ऊँच बखरिया फोफर बाँस,
कर्जा खाये बरहो मास।

यानी बखरी तो इतनी ऊँची है, मगर बाँस एकदम पोले लगे हैं। छत बाँस से छाई है, उस पर भी बारहो महीने कर्ज कर खाना पड़ता है।

अ०– अंदर की हालत बहुत ही ख़राब है।

ऊख सरौती देहुला धान,
इन्हें छोड़ि जिनि बोया आन।

श०– सरौती–ईख की एक जाति होती है। देहुला–एक प्रकार के धान का नाम है, आन–दूसरा।

अ०– कहावत ईख के खेती के विषय में कही गई है कि सरौती ईख व देहुला धान बोने में बड़े लाभ हैं। इन्हें छोड़कर दूसरा कुछ भी नहीं बोना चाहिए।

ऊख गोड़ि के तुरन्त दबावै,
तो फिर ऊख बहुत सुख पावै।

अ०– खेत गोड़ के ईख मिट्टी में दबाने पर ईख की फसल बहुत बढ़िया होती है। ऐसा कहावत से प्रकट होता है।

ऊँच अटारी मधुर बतास,
घाघ कहै, घर ही कैलास।

श०– अटारी–कोठा, छत पर का ऊँचा स्थान। मधुर–हल्की, मीठी मन को भाने वाली, बतास–हवा, वायु, कैलास–हिमालय की चोटी, जिसे पुराणों में शिव व कुबेर का स्थान माना गया है।

अ०– ऊँची अटारी है और धीमी हवा चल रही हो, तो घर बैठे कैलास पर्वत का सुख मिलता है।

ऊँचे चढ़ि के बोला मड्डुवा,
सब नाजों का मैं हूँ भंड्डुवा।
आठ दिना जो मुझको खाय,
भले मर्द से उठा न जाय।।

श०– मंडुवा–एक प्रकार का साँबा के किस्म का मोटा अनाज होता है। अधिकतर पूर्वी क्षेत्रों में पाया जाता है।, भंडुवा–नाचने गाने वाले, वेश्याओं की दलाली करने वाले, रंडियों का तबला बजाने वाले।

कहावत मंडुवा अनाज कितना हानिकारक होता है, उसी पर चरितार्थ की गई है।

अ०– दूसरे को कौन कहे, मंडुवा अनाज स्वयं चिल्ला–चिल्ला कर कहता है कि मैं सभी अनाजों में भंडुवा की तरह बदनाम हूँ। यदि मुझे कोई मर्द आठ दिन खा ले तो समझो कि वह कितना भी हिम्मती, बलशाली हो, उससे उठा न जायेगा। यानी पुरुषार्थ को कमजोर बनाता है।

ऊँची छींक महा सुखदाई, नीची छींक महा भयकारी।

अपनी छींक महा दुखदाई, कह भड्डर जोसी समुझाई।।

कहावत भड्डरी ज्योतिषी की है, जो छींक विचार के उपलक्ष्य में कही गई है।

अ०– यात्रा के समय या किसी शुभ कार्य के समय यदि कोई ऊपर, छत इत्यादि से छींके तो वह छींक बड़ी सुख देने वाली होती है। कोई नीचे के स्थान से छींके तो वह छींक भय व शंका उत्पन्न करती है। स्वयं अपनी छींक दुखद व विनाशकारी होती है। कहा है" अपनी छींक राम बन गयऊ, दसरथ मरन (सीता हरन) तुरंतै भयऊ"।

ऊसर कृषि बउरहा भाय,
घाघ कहै दुख कहां समाय?

श०– ऊसर–खेती की अयोग्य ज़मीन, कृषि–खेती, बउरहा–झक्की, पगलेट, भाय–भाई।

कहावत खेती व बेवकूफ़ भाई के प्रति कही गई है। घाघ कृषि–विज्ञान के पंडित थे। यात्रा, शकुनापशकुन, कृषि आदि तमाम विषयों पर उनकी अकाट्य लोकोक्तियाँ हैं वे कहते हैं–

ऊसर खेत की खेती करना तथा महामूर्ख, पागल सरीखे भाई का होना अथाह दुःख का कारण होता है। ऐसा दुःख संभालने के समान नहीं होता।

ऊँट जब पहाड़ के नीचे पहुंचै,
तो जानै कि हमहूं से ऊँच कउनो चीज अहै।

कुछ लोग दुनिया में ऐसे भी होते हैं, जो अपने आगे किसी को कुछ नहीं समझते। ऐसे ही लोगों के ऊपर इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

अ०– ऊँट अपने को सबसे ऊँचा, समझता है। उसकी समझ में दुनिया में उससे ऊँची कोई वस्तु नहीं है, किंतु जब वह पहाड़ के नीचे गया और उसकी ऊँचाई देखी तो उसी दिन उसे ऐसा लगा कि मेरा घमण्ड करना

गलत है। संसार में मुझसे भी ऊँची कोई वस्तु है। इसीलिये कहा गया है कि दुनिया में एक से एक बढ़कर लोग हैं, वस्तुएं हैं। अतः अभिमान करना बुरा है। यह कहावत घमण्डी पुरुषों पर भी लागू होती है।

ऊसर मरन, बिदेस गमन,
तेहू के कुछ कारन और।

श०– ऊसर–उसरहा खेत जिसमें तृन तक नहीं जमता, केवल रेत, मिट्टी की ज़मीन होती है। मरन–मौत, बिदेस–परदेस, गमन–जाना।

कहावत घर की विषम परिस्थितियों को लेकर कही गई है। बिना कारण के कार्य नहीं होता, वह भी ऐसा कार्य जो अपवाद स्वरूप हो, दुःखद व सोचनीय हो।

अ०– ऊसर जैसे वीरान स्थान में मरना और विदेश जाने का भी कुछ न कुछ कारण जरूर होता है। किसी आदमी के साथ जब प्रतिकूल घटनायें घटती हैं, तो कहावत कही जाती है। असमय, कुस्थान पर, मृत्यु होने का कारण होता है।

ऊख क चुहब, सहनाई क बजाउब
दुहनों साथे नहीं होतै।

कहावत उस समय कही जायेगी, जब कोई आदमी एक ही समय में एक ही साथ दो–दो काम करना चाहेगा।

अ०– ईख का चुहना व शहनाई का बजाना एक ही समय में दोनों काम कैसे हो सकते हैं? तुलसीदास जी ने कहा है–

दुइ न होई एक संग भुआलू,
हंसब ठठाइ फुलाउब गालू।

यानी चाहे हंस लो चाहे मुंह फुलाकर बैठो। दोनों काम एक साथ असंभव है।

ऊँट क पाद न जमीन माँ, न आसमान माँ।

जब किसी वस्तु की, किसी बात की, किसी काम की कोई गिनती नहीं की जाती तो कहावत कही जाती है।

अ०– काम करते–करते परेशान होने के बाद भी किसी को कहा जाता है कि क्या किया तुमने? तो कहते हैं जैसे–ऊँट के पाद पर, न उसकी गिनती जमीन की तरफ जाने को होती है न आसमान की तरफ की होती है। हवा किधर गई? वैसे ही मेरे काम की कोई गिनती ही नहीं है?

ऊँचे चढ़ि के देखा, घर–घर रोटी क लेखा।

जब किसी के घर में लड़ाई–झगड़ा, तू–तू, मैं–मैं या किसी प्रकार की बात व बांट–बंटवारा, दुनियादारी के वाद–विवाद होते देखे जाते हैं तो कहावत कहते हैं।

अ०– जगह–जगह घर–घर में ऊँचे चढ़ि के यानी अच्छी तरह देखा गया है कि एक नहीं सभी घरों में मानव जीवन के आवश्यक–आवश्यकताओं के प्रति झगड़े हैं। रोटी का हिसाब–किताब है। कोई घर ऐसा नहीं है जहाँ थोड़ी–थोड़ी बातों में तकरारबाज़ी नहीं है।

ऊदल बीहे बिना न रहि जइहै,
रहि जाये बतिया कहै क।

श०– ऊदल–आल्हा के भाई सुप्रसिद्ध वीर उदय सिंह, बीहे–विवाह, बतिया–बात।

कहावत हमेशा के बात–व्यवहार पर कही गई है। सामाजिक जीवन में आये दिन लोगों के यहाँ उत्सव पड़ते रहते हैं उस समय आपसदारी में जब कहीं कोई मनमुटाव रहता है, तो कहावत का उपयोग होता है।

अ०– ऊदल का नाम फला नाम का संकेतात्मक है। कहने का मतलब है कि हमारे घर, हमारे किसी कार्य में फलां न आयेंगे तो किसी के बिना किसी का काम नहीं रुकेगा। यह तो मौके की बात है। काम तो होगा ही बस बात कहने भर को रह जायेगी।

ऊँच के बइठे, नीच के खाये,
ये दोनों गये ढोल बजाये।

कहावत सिद्धान्तवादी है। हमारे यहाँ गुरुजन भी बच्चों को सीख देते हैं। बड़े बच्चों से कहते हैं–

रहै बड़ेन संग खाय मुंह भरि पान,
रहै छोटन संग कटावै दुइनों कान।

अ०– अपने से ऊँचे लोगों के यहाँ खान–पान, बात–व्यवहार रखने वाला, अधिक उठने–बैठने वाला आदमी तथा अपने से नीच के यहाँ खाना खाने वाला

आदमी दोनों ही बर्बाद हो जाते है। इसीलिये कहा गया है कि दोस्ती–दुश्मनी, शादी, ब्याह, सदैव बराबर वालों के यहाँ होना चाहिए।

ऊंच लिलार दूसरे का देख के कपार नहीं फोरा जात।

श०— लिलार–मत्था, कपार–सिर।

कहावत ईर्ष्या, द्वेष, जलन, तथा दूसरों के भाग्य से अपने भाग्य की तुलना करके परसंताप करने वाले के ऊपर कही गई है।

अ०— दूसरे का ऊँचा मत्था यानी भाग्य देखकर अपना सिर न फोड़ना चाहिए। जो कुछ अपने पास हो उसी पर संतोष करना चाहिए।

ऊँची दुकान फीका पकवान।

श०— फीका–सादा, बेस्वाद, पकवान–व्यंजन, घी, तेल की बनी वस्तुएं।

कहावत ऊपरी दिखावे, साज–सज्जा, चमक दमक पर तथा अंदरूनी हालत खराब देखकर कही गई है।

अ०— ऊँची दुकान का आडम्बर दिखावा तो बहुत है किंतु जो उसमें पकवान बना कर रखा है वह एकदम बेस्वाद व रद्दी है। यानी अंदर की हालत खस्ता है। वह हालत जब लोगों की होती है तो कहावत कही जाती है।

ऊँच माथ के कामिनी, तीन पुरुष के खाय।
लोक लाज राखै नहीं, चउथेव के घर जाय।।

श०— कामिनी–स्त्री, लोकलाज–दुनिया की शर्म–लिहाज, इज्जत।

कहावत ऊँचे मत्थे की स्त्री को देखकर कही गई है।

अ०— कहावत सामुद्रिक लक्षण से सम्बंधित है। ऊँचे माथा वाली नारी पहले तीन पुरुषों को अपनाकर और समाप्त करके चौथे पुरुष से विवाह करती हैं और दुनिया की कोई शर्म–लिहाज, हया नहीं होती है।

ऊँट, उपध्या, ऊसर, तीनिव दइव क दूसर।

श०— उपध्या–सरयूपारीण ब्राह्मणों में एक आस्पद, दइव–भगवान, ऊसर–जो ज़मीन ऊँची, नीची खेती के लायक न हो, उसमें कुछ भी न उगता हो।

अ०— ऊँट, उपध्या, ऊसर तीनों के रूप भगवान के दूसरे रूप होते हैं। ये सभी भगवान से भी ज्यादा अपने को मानते हैं।

ऊँट रे ऊँट तेरी कौन चाल सीधी।

जब किसी आदमी का मंतव्य, उसके विचार, उसकी गति का अंदाज नहीं लगता तो संदेह होने पर यह आदमी किस समय क्या करेगा, पता नहीं लग पाता। यह कौन काम करेगा, कौन काम करने का विचार है, तो कहावत कहते हैं।

अ०— ऊँट बता दे तेरी कौन सी चाल सीधी है? पता लगना बड़ा मुश्किल है— किस करवट ऊँट बैठेगा?

ऊड़ का चूल्हा भये हैं।

श०— ऊड़ का चूल्हा–ऐसा चूल्हा जो उठौवा हो, उसे चाहे जहाँ उठाकर रखा जा सके। चाहे जहाँ रखकर जला लिया जा सके।

कहावत चूल्हे के माध्यम से ऐसे व्यक्तियों पर कही गयी है जिनका कहीं कोई ठिकाना नहीं रहता। ऊड़ के चूल्हे की तरह चाहे जहाँ जब बैठ गये, चले गये, कहीं कोई बुला लिया तो वहां बैठे नहीं कि फिर उठकर चल दिये। अस्थिर मस्तिष्क का होना। बेढंगापन होना।

ऊधो करमन की गति न्यारी।

उपरोक्त पंक्ति सूरदास जी की हैं जिसे आमतौर पर अपने या किसी के भाग्य की विवेचना पर कहावत रूप में इस्तेमाल करते हैं।

अ०— कर्मों की गति बड़ी विचित्र होती है। कोई राज्य करता है तो कोई माँगी भीख भी नहीं पाता है। इस पर सूरदास जी की दो पंक्तियाँ देखें–

ऊधो करमन की गति न्यारी।
काहे क बगुला स्वेत बरन भये, काहे कोयल भई कारी।
काहे क तुलसी रन–बन उपजै, काहे रेंड़े घर भारी..।।

ऊख से गंडेरी प्यारी, गुड़ से प्यारा गाड़ा,
माँ बहिन से जोरू प्यारी, जिससे होय गुजारा।।

कहावत घर की स्त्री के प्रति कही गई है कि स्त्री जीवनसंगिनी होती है। उसके साथ ही सारी ज़िन्दगी बीतती है।

प्रा०– गंडेरी–ईख को छीलकर छोटे–छोटे टुकड़े, गाड़ा–गुड़ से बनी मिठाई।

अ०– ऊख से छिली बनी गड़ेरी प्यारी होती है और गुड़ से अच्छा गाड़ा (गट्टे की तरह की मिठाई है) जो कन्नौज में मिलती है, वह अच्छी लगती है। इसी प्रकार से माँ, बहिन से पत्नी प्यारी होती है क्योंकि उसी के साथ जीवन भर गुज़र करना पड़ता है।

ऊजर माँ गूजर नाचै, ढाक देख बैरागी।
खीर देखि के बाभन नाचै, तन–मन होवै राजी।।

श०– ऊजर–उजाड़ स्थान या जंगल आदि, गूजर–एक जंगली जाति होती है, ढाक–खंजड़ी की तरह का एक बजाने वाला बाजा, जिसे साधु लोग बजाते हैं।

अ०– ऊजाड़ जगह को देखकर गूजर प्रसन्न होता है, इसलिये कि उसे ढोर चराने का स्थान मिलता है तथा ढाक नामक बाजा देखकर बैरागी खुश होता है। उसी प्रकार खीर देखकर ब्राह्मण प्रसन्न होता है क्योंकि कहा है– "ब्राह्मणं मधुरप्रियम्" ब्राह्मण को मीठी वस्तु प्रिय लगती है।

ऊजड़ ही घर सास का बैर करे हरबार।
पीहर घर सुजस बसै, जब लगि है संसार।।

श० – ऊजड़–उजड़ा। अजस–यश।

अ०– सास के व्यवहार से ऊबी बहू का कहना है कि सास के घर में तो बैर की भावना रहती है जिससे बुराई मिलती है और नैहर में माँ के यहां यश मिलता है।

ऊँच नीच मां बोई क्यारी,
जो उपजे सो भई हमारी।

अ०– ऊबड़, खाबड़ में जो बो दिया जाय, यदि मिल गया कुछ तो समझो कि वही अपना है।

ऊंचे–ऊंचे सब चलें, नीचे चलैं न कोय।
तुलसी नीचे वै चलै, जो गरब से ऊँचों होय।।

अ०– सभी आदमी अपने को बड़ा आदमी ज़ाहिर करने के लिये उत्सुक रहते हैं। तुलसीदास जी के शब्दों में– बड़ा आदमी वह है जो सदैव नम्र होकर चले।

ऊँट, घोड़ा धँसि गये, गदहवा पूछे केतक पानी?

जब बड़े–बड़े हार मान गये तो छोटों की क्या बिसात कि उस काम को कर पायें?

अ०– जहाँ पर ऊँट और घोड़े के जैसे बड़े जानवर थाह नहीं ले पाये। वहाँ गधा अपने को बहादुर समझ कर पूछता है कि "कितना पानी है, अभी पार उतरता हूँ।"

ऊँट जो दागिगा तो मेंढ़किव आपन टांगें फैलाय दीने।

जानवरों की बीमारी में या निशान बनाने के लिये दागना आवश्यक होता है। गरम जलती लोहे की सलाक को शरीर में छुआ देने को दागना कहते हैं।

अ०– ऊँट के दगने के समय मेंढकी ने भी अपने पाँव फैला दिये कि मुझे भी दागो। मेंढकी सींक तो छुआ नहीं सकती बदन पर फिर सलाक की तो बात ही अलग है। मगर बड़ों की बराबरी करना कुछ लोगों की आदत होती है चाहे प्राण ही क्यों न चले जायं। काम मुझे भी वही करना है।

ऊँट बलबलाता ही लदता है।

किसी आदमी के हर समय या काम के समय व्यर्थ बोलने पर यह कहावत कही जाती है।

अ०– ऊँट की आदत होती है कि वह सामान लादते समय भी बलबलाता रहता है।

"ए"

एक तो करैला दुसरे नीम चढ़ा।

जब किसी आदमी में किसी भी प्रकार का प्राकृतिक, स्वाभाविक, मनुष्यकृत दोष होने के साथ–साथ और भी दोष बढ़ जायं जैसे "कोढ़ में खाज" का होना तो कहावत कही जाती है।

अ०– एक तो करैला कड़ुये स्वाद का होता ही है, उस पर नीम के पेड़ पर चढ़कर और भी ज्यादा ही कड़ुआ हो जाता है। स्वाभाविक दुर्गुणों में बुरे की संगति का पूर्ण रूप से असर आना।

एक तो तितलौकी, ऊपर से नीम चढ़ी।

उपरोक्त कहावत की भांति यह कहावत भी है यानी एक तो लौकी कड़ुवी उस पर नीम के पेड़ पर चढ़ने के बाद और भी ज्यादा ही कड़ुवी हो गई।

एक हाथ के लउकी, नौ हाथ के बिया।

कुछ लोगों का बढ़ा–चढ़ा कर बोलने, गप्पें हाँकने, एक को चार बताने का स्वभाव होता है। ऐसे लोगों को देखकर ही कहावत स्मरण हो आती है।

अ०– एक हाथ की लौकी है और उसका बीज नौ हाथ का बताते हैं।

एक हाथ रस्सी नौ हाथ पगहा।

श०– पगहा–बटी रस्सी जिसमें जानवर बाँधे जाते हैं।

लोग जब मूल बात या सामान्य स्थितियों को, असामान्य रूप देने लगते हैं तो यह कहावत चरितार्थ होती है।

अ०– एक हाथ रस्सी का नौ हाथ पगहा कैसे संभव हो सकता है? वह बटने के बाद और छोटी हो जायेगी।

एक बार जोगी, दुई बार भोगी, तीन बार रोगी।

श०– जोगी–साधु, महात्मा, भोगी–बिलासी, ऐश–आराम में रहने वाला, रोगी–बीमार, अस्वस्थ रहने वाला आदमी।

कहावत स्वास्थ्य पर कही गई है।

अ०– कहते हैं योगी (महात्मा) चौबीस घंटे में एक बार दीर्घशंका यानी टट्टी जाते है क्योंकि भोजन बहुत कम यानी संतुलित आहार लेते हैं। भोगी दो बार जाता है और रोगी तीन बार जाता है।

ए संखियऊ बजबिउ, मुला बाबा के पदाय के।

अ०– शंख तुम बजी मगर बाबा को परेशान करके।

एक पाख दुइ गहना, राजा मरै कि सहना।

श०– पाख–पखवारा, एक पाख में १५ दिन होते हैं, गहना–ग्रहण, सहना–सेठ, प्रजा, साहूकार।

कहावत ग्रहण पर कही गई है।

अ०– यदि एक पाख में दो बार ग्रहण लगे तो महा अनर्थ होता है, या तो देश का राजा मरता है या बड़े व्यापारी प्रजा आदि की मृत्यु होती है।

एक बूंद से समुद्र न सुखाये।

जब कोई वस्तु बहुत ज्यादा हो तो उसमें से थोड़ी वस्तु निकल जाती है तो उससे कोई असर नहीं पड़ता है। जब कभी ऐसी स्थिति आती है तो इस कहावत का इस्तेमाल किया जाता है।

अ०– अपार धनराशि में से थोड़े रुपये निकल जायं तो कोई अंतर नहीं पड़ता। जैसे समुद्र में से एक बूंद जल निकल जाय तो भला क्या पता लगेगा? धनाढ्य आदमी का थोड़ा बहुत धन खर्च हो ही जाय तो उस पर क्या अंतर पड़ सकता है?

एक दांव जाय भार देखै,
एक दांव जाय दाना भुजावे।

कहावत समय की बर्बादी व मूर्खता पर कही गई है। जब कोई आदमी एक ही काम के लिये दो बार रास्ता नापे।

अ०– जो काम एक ही बार में, एक ही समय में हो सकता है उसके लिए दो बार जाना और दुगुना समय लगाना, बुद्धिमानी नहीं है। एक बार जाय भाड़ देखने कि जला है या नहीं, फिर दूसरी बार दौड़े भुनाने के लिये।

एक म्यान में दुइ तलवार नहीं रहतीं।

एक ही स्थान पर दो प्रधानमंत्री नहीं रहते अथवा एक वस्तु पर दो का अधिकार नहीं होता।

अ०– एक म्यान में एक ही तलवार रह सकती है, उसमें दो तलवारें नहीं रखी जा सकती हैं।

एक तो लोनी बंदरिया दुसरे काने उतन्ना।

श०– लोनी–खार, नमकीन। सुन्दर। उतन्ना–पुराने ज़माने का कान का एक ज़ेवर होता था जिसे स्त्रियाँ कान के ऊपरी भाग में गोल–गोल बाली की तरह पहना करती थीं।

कहावत व्यंग्य में कही गई है। किसी कुरूप स्त्री को जेवर, कपड़े आदि बेढंगेपन से पहने देखकर, कहावत कही जाती है।

अ०– एक तो बंदरिया वैसे ही बड़ी सुंदर है उस पर कान में उतन्ना भी पहन लिया है।

एतना बड़ा बरगद बिना भूते के?

कभी–कभी जब कोई आश्चर्यजनक बात या दृश्य दिखाई देता है अथवा जो जहाँ की स्वाभाविक वस्तु हो वहाँ न रहे तो आश्चर्य होता है। उस समय यह कहावत सटीक बैठती है। आमतौर पर बरगद, पीपल आदि पर भूतों का वास होता है, ऐसा लोग कहते हैं।

अ०— इतना बड़ा बरगद का पेड़ और उस पर एक भी भूत न होना, कैसे संभव है? जिस प्रकार से मंदिर की विशेषता किसी न किसी देवी–देवता की प्रतिमा से है उसी प्रकार बरगद के पेड़ की उपयोगिता भूत से है। न होने पर ताज्जुब होता है। जहाँ पर जिसका जो स्थान या निवास हो वहाँ उसके रहने की पूरी आशा जाती है।

एक बिली मां दुइ मुसरी,
पादे ओसरी–ओसरी।

जब कहीं पर जगह कम हो, किसी परिवार में कम सदस्य हों या किसी काम को करने के समय बहुत कम लोग हों तो कहावत चरितार्थ होती है।

अ०— जैसे एक बिल में दो ही मुसरी हों कभी एक गैस निकाले तो कभी दूसरी। बारी–बारी से उन्हीं को अच्छा–बुरा करना हो। वैसे ही कम लोग में काम दो ही चार पर आधारित होता है।

एकहिं साधे सब सधे, सब साधे सब जाय।

कहावत सिद्धान्तवादी तथा शिक्षाप्रद है, कार्य को सम्पन्न करने से सम्बन्धित है।

अ०— एक काम जिसे शुरू करे उसी को यदि एकाग्र चित्त होकर, मन लगाकर करता जाय तो धीरे–धीरे उसी एक लक्ष्य से और भी कार्य हो सकते हैं मगर यदि चाहे कि एक साथ ढ़ेर सारे काम कर लें तो वह एक काम भी न हो पायेगा और अन्य कामों की तो बात ही छोड़ दो। प्रभावशाली व्यक्ति को साधने से ही सारे काम बन जाते हैं। सभी को प्रसन्न रखने के प्रयास में कोई भी काम बन नहीं पाता है।

एक चुप हजार बला टारत।

कहावत शिक्षाप्रद तो है ही, दो के झगड़े में एक को चुप रहने की सीख देती है।

अ०— क्रोध या झगड़े के समय यदि एक चुप हो जाय तो दूसरा भी चुप हो जाता है। उससे सभी झगड़े–झंझट समाप्त हो जाते हैं। कहा गया है कि झगड़ा व प्यार एक तरफ से नहीं दोनों तरफ से होता है।

एक बियानी सहस जुड़ानी,
एक बियानी अपुए ललानीं।

श०— बिआनी–बच्चा पैदा होना, सहस–हजारों, सहस्त्रों, जुड़ानी–सुखी होना, शान्त होना, तन–मन शरीर ठंडा रहना, ललानी–ललचाना, खाने की इच्छा होना, किसी वस्तु को पाने व खाने की प्रबल भावना का होना।

कहावत में नारी के स्वभाव की कंजूसी व शाहखर्ची दोनों पर कही गई है। स्त्रियाँ समय पड़ने पर कितनी ज़िंदा व मुर्दा दिल की होतीं हैं?

अ०— जब किसी स्त्री के पुत्र पैदा होता है तो एक तो वह सुखी होती है, साथ ही साथ तमाम स्त्रियों, घर की सास, ननद, देवरानी, जिठानी, पास–पड़ोस, प्रजा सभी प्रसन्न होते हैं। वह सब को अपने सौर (प्रसूतिगृह) के खाने को बाँटकर स्वयं खाती है। एक दूसरे प्रकार की जच्चा होती है जो बस अपना ही पेट देखती है। किसी ने कहा है "मोर पेट हाहू, मैं ना देइहौ काहू", उसके यही हाल होते हैं।

एक टका मोरी गांठी,
चूड़ी लेब कि माठी।
या चिउरा लेब कि माठी?

श०— टका–पुराने ज़माने में एक सिक्के को कहते थे, दो पैसे अधन्ना, गांठी–गांठे, पास में, माठी–एक प्रकार की चूड़ी होती है जिसे राजस्थान में माठी बोलते हैं। चिउरा–धान कूटकर चर्बन के काम आता है। माठी–माठ। शादी ब्याह में मैदे का माठ बनता है जो लड़की के साथ जाता है। चीनी में पगा पक्वान्न।

किसी के पास जब पैसा कम हो और सामान ज्यादा लेना होता है या थोड़े से पैसे को वह आदमी बार–बार इधर से उधर रखता–उठाता रहता है तो कहावत कहते हैं।

अ०— कहावत है कि मेरे पास एक टका तो है इसकी चूड़ी खरीदूं कि माठी ले लूँ? क्या इसी में लूँ? चिउरा खा लूँ या मिठाई?

एक गड़रिया सौ भेड़ें हांक सकत।

कहावत किसी विद्वान, गुणी कलाकुशल व्यक्ति को देखकर कही गई है जो अपने गुणों से लोगों को प्रभावित किये रह सकता है।

अ०— एक गड़रिया क़ई भेड़ों को संभाल सकता है, वैसे

ही गुणवान मनुष्य कई मूर्खों को समझाने की बुद्धि रखता है या समय पर बुद्धि का प्रयोग कर सकता है।

एक–एक बीछी के नौ–नौ आँड़ा।

श०– आँड़ा–डंक।

कहावत महादुष्ट आदमी के प्रति कही गई है जिसमें एक नहीं अनेक प्रकार की दुष्टता भरी हुई है।

अ०– यहाँ एक–एक बिच्छू के एक दो नहीं नौ–नौ डंक भरे पड़े हैं। यानी उससे पाला पड़ने पर बड़े कष्टों का सामना करना पड़ सकता है। एक ही व्यक्ति कितनी प्रकार से तंग कर सकता है, दुष्ट का साथ कितना कष्टदायी हो सकता है, यह तो भुगतने वाला ही बता सकता है।

एक टका कै मुर्गी, नौ टका बेहनाई।

श०– टका–पुराने ज़माने में एक बहुत छोटे सिक्के को कहते थे, दो पैसा, अधन्ना। बेहनाई–अलग करना, फाड़ना, जुदा करना, सफ़ाई करना।

किसी वस्तु में उसके मूल्य से भी ज्यादा, उसके बनवाने में जब खर्च होता है तो यह कहावत चरितार्थ होती है।

यानी– जितने की मुर्गी न हुई, उससे ज्यादा पैसे तो उसके साफ़ करने में लग गया।

एक रात महाभारत, एक रात कर्बला।

श०– महाभारत–द्वापर युग में कौरवों–पांडवों का महायुद्ध हुआ, जिससे "महाभारत" ग्रंथ की रचना हुई। आज भी जब किसी के घर में लड़ाई होती है तो कहते हैं महाभारत मचा है। कर्बला–हमारे महाभारत की भांति अरब में एक स्थान है, जहाँ मुहम्मद साहब के दामाद, नातियों, पोतों व अनुयायियों को विरोधी लोगों ने युद्ध में मार डाला था। सबको प्यासे भूखे मरते तड़पते देखकर हुसैन शहीद हो गये।

कहावत में इन्हीं दोनों स्थानों का हवाला देकर लोगों को अपने कष्टों का आभास कराया गया है।

अ०– किसी का जीवन जब लड़ाई, कष्टों में बीतता है तो कहते हैं कि मेरा क्या, मेरी ज़िन्दगी तो एक रात महाभारत व एक रात कर्बला की ही तरह कटती आई है।

एक चोरी करता, खोदाय नहीं जानता।

जब कोई इंसान गलितयाँ करके यह दावा करे कि इसे भगवान् या खुदा भी नहीं जानता तो आश्चर्य सा होता है। एक आस्तिक आदमी जो भगवान् पर विश्वास करे और कहे कि कोई बात खुदा नहीं जानता तो उसकी भूल व उसका भ्रम है। अन्तंकथा इस प्रकार है– ईद के रोज़े के समय कुछ मुसलमान नदी नहाने जाते थे एक नदी से "खुदा नहीं जानता" आवाज आती बाहरी लोगों को आश्चर्य होता अंत में जब गले में मछली का काँट अंटका तो समझ में आया कि यह हर बुढ़ाव में पानी पी लेता था –खुदा तुरंत जान गये।

एक बाप का बेटा क्या लहुरा, क्या जेठा।

श०– लहुरा–छोटा, जेठा–बड़ा।

कहावत हास्य–व्यंग्य के समय कही जाती है।

अ०– अरे भाई, एक बाप के बेटे में क्या अंतर है? चाहे छोटा हो चाहे बड़ा, है तो एक ही बाप का। भाभी के लिये क्या, जैसे अपना आदमी वैसे ही देवर क्या फ़र्क पड़ता है? कहावत भाभी–देवर की चुहलकदमी व मज़ाक पर कही गई है।

एक तो कटही कुकुर,
दूसरे कपारे परा कीरा।

श०– कटही–काटखाने वाली, कपारे–सिर।

कहावत किसी बिगड़ैल, चिड़चिड़े स्वभाव की स्त्री के ऊपर कही गई है, जो स्वभाव से दुष्ट, क्रोधी, नीच प्रकृति की है।

अ०– एक तो कुतिया वैसे ही कटखनी है दूसरे उसके सिर में कीड़े भी पड़े हैं।

एक बर तो तीन बीसा,
दूसरे क एक्कै दिसि दीखा।

श०– बीसा–बीस, एक्के–एक ही तरफ, दीसा–दिखाई पड़ना।

कन्या की वर दिखाई में जब कोई अवरोध उत्पन्न होता है, तो कहावत कही जाती है।

अ०– एक वर तो है जिसकी उम्र तीन बीस यानी– २०+२०+२०= ६० साल की है। दूसरा है जो एक ही

तरफ देखता है, यानी काना है। यानी कार्य में बाधा उत्पन्न होना।

एक तवा की रोटी क्या छोटी, क्या मोटी।

कहावत से समानता की भावना प्रकट होती है, एक ही वंश के दो व्यक्तियों की तुलना की जाय तो कहावत कहते हैं।

अ०— एक ही तवे की रोटी है क्या मोटी—क्या छोटी, कोई अंतर नहीं पड़ता है। है तो एक ही तवे की।

एक गुन रूप, सहस गुन बासा।

श०— गुन—गुना, रूप—सौन्दर्य, सुंदरता, सहस—हजार, बासा—वस्त्र।

किसी को सुंदर वस्त्र पहिने देखकर लोग कहावत कहते हैं।

अ०— अगर एक गुण सुंदरता होती है तो वस्त्र उसे हजार गुने बढ़ा देते हैं।

एक ठाकुर, एक बाभन्ना, एक ने एक की नारि चुराई
एक ने एक को मार गिराई, बस इतनी सी बातन्ना
तुलसी लिख गये पोथन्ना"।

हास—परिहास व्यंग्य—विनोद में लोग गोस्वामी जी का मजाक उड़ाते हैं या घर की छोटी—छोटी बातों पर व्यंग्य में कहते हैं। बात कुछ भी नहीं ऐसे ही थी।

यानी— एक ठाकुर था, एक ब्राह्मण था। एक ने एक की स्त्री को चुरा लिया। एक को एक ने मार गिराया, बस बात कुल इतनी ही सी थी जिसपर तुलसी पूरा पोथा ही लिख गये। रामचरितमानस की रचना कर डाली।

एकनूर मनई, हजार नूर कपड़ा
लाख नूर गहना, करोड़ नूर नखरा।

श०— नूर—सुंदरता, नखरा—नज़ाकत, भावभंगिमा।

कहावत उन सुंदर स्त्रियों पर कही गई है, जो कपड़े व गहने पहनने के बाद सुंदर व नखरे वाली हो जाती हैं।

अ०— कहा है कि यदि नारी में सुंदरता एक गुनी है तो कपड़ा पहनने के बाद सुंदरता हजार गुनी और गहना पहन लेने पर लाख गुनी बढ़ जाती है, उसी पर नखरे हों तो करोड़ गुनी हो जाती है।

एक मुर्गा न बोले तो का भिनसारै न होये।

कहावत मुर्गे के माध्यम से ऐसे लोगों के ऊपर उद्धृत की गई है जो समय पर सहयोग न दें या मौके पर न पहुँचें, या अपना बड़ा महत्व लगाकर वक्त पर आने में आनाकानी करें तो कहावत कहते हैं।

अ०— क्या एक मुर्गा न बोलेगा तो सुबह ही न होगी? यानी कोई नहीं आयेगा तो काम ही न होगा।

एक्कै लड़िका जाबू खोय
जौ पहिलौठी बिटिया होय।

श०— खोय—बिगड़ना, पहिलौठी—पहिले पहिल।

किसी स्त्री को पहले पहल कन्या का जन्म होने के बाद स्वास्थ्य खराब देखकर कहावत कही गई है। यानी चिन्ताओं का बढ़ जाना।

अ०— कहावत में कहा है कि एक ही बच्चे के होने के बाद स्वास्थ्य ख़राब हो जायेगा, यदि पहली बार ही लड़की हो गई तो।

पहिलौठी कन्या होने से स्वास्थ्य खराब होने का मतलब यही है कि दिमाग़ी चिन्तायें स्वास्थ्य खराब कर देती हैं।

एक तो धिया वइसेन गोर
ऊपर से हाथे लुआठ लिये।

श०— लुआठ—जो लकड़ी जली या अधजली हो, धिया—पुत्री, लड़की।

कहावत किसी बदशक्ल काली लड़की को देखकर व्यंग्य में कही गई है।

अ०— एक तो लड़की वैसे ही गोरी, यानी इतनी काली है, उस पर हाथ में कोई काली चीज़ लेने पर और भी शोभा यानी कुरूपता व कालापन प्रकट होने लगता है।

हाथ में जली लुआठ ले लेने से काले में कालापन और भी बढ़ जाना।

एक मास ऋतु आगे धावै,
आधा जेठ असाढ़ कहावै।

कहावत ऋतु संबंधी है, जब जेठ मास में बादलों से बूँदा–बाँदी होती है।

अ०– ऋतु या मौसम एक मास पूर्व ही अपना प्रभाव व्यक्त करने लगता है। आधे ज्येष्ठ से ही बादलों की बूंदा–बांदी शुरू हो जाने से उसे आषाढ़ की संज्ञा मिलने लगती है कि अब आषाढ़ आ गया है।

एक पानी जौ बरसै स्वाती,
कुरमिन पहिरै सोने कै पाती।

श०– स्वाती–एक नक्षत्र को कहते हैं, कुरमिन–एक जाति।

कहावत स्वाती के पानी के महत्व के ऊपर कही गई है।

अ०– यदि कहीं स्वाती नक्षत्र में एक बार पानी बरस जाय, तो अनाज इतना होगा कि छोटी से छोटी जाति की स्त्रियां भी सोने के गहने बनवा कर पहनने लग जायेंगी।

एक बूँद जो चइत मां परै,
सहस बूँद सावन की हरै।

श०– चइत–चैत्र। सहस–हजार, हरै–ले ले, सोख ले।

कुछ कहावतें हमारे देश में ऐसी भी हैं जिनसे बड़ी ही शिक्षाप्रद जानकारियां मिलती हैं। उपरोक्त कहावत में कवि घाघ का कहना है कि.....

अ०– यदि चैत माह में पानी की एक बूँद भी पड़ती है तो वह इतनी हानिकारक होती है कि सावन की हजारों बूँदें समाप्त कर देती हैं। फलतः बरसात में पानी न बरस कर फ़सलों को भारी हानि होती है।

एक बात तुम सुनो हमारी
बूढ़े बैल से भली कुदारी।

कहावत खेती विषयक है।

अ०– घाघ कवि का कहना है कि खेती में बूढ़े बैलों को कभी मत रखो, उससे तो कहीं अच्छा है कि कुदाल से खेतों की गोड़ाई कर दो।

एक हर हत्या, दो हर काज
तीन हर खेती चार हर राज।

श०– हर–हल, हत्या–मार डालना, राज–राजा की तरह सुख।

कहावत घाघ की खेती विषयक है।

अ०– जिस किसान के पास एक ही हल है, उसकी खेती की तो मानो हत्या ही हो गई। जिसके पास दो हल हैं, उसके घर समझो कुछ काम है। यदि तीन हल हैं, तो खेती अच्छी होगी और कहीं यदि चार हल हैं, तो समझो कि उसकी खेती का क्या कहना है उसका तो राज ही है, सब सुख उसे मिल सकते हैं।

एक समय बिधिना का खेल
रहा ऊसर में चरत अकेल।

एक बटोही हर–हर कहा,
ठाढ़े गिरा होस ना रहा।

श०– बिधिना–भगवान, ब्रह्मा, बटोही–यात्री, राही, हर–हर–शंकर भगवान के लिये संबोधित किया जाता है, होस–याद।

कहावत विधि के विधान पर कही गई है। ईश्वर की गति इतनी प्रबल है कि वह सभी का तरन–तारन करता है।

अ०– एक बार एक गादर बैल ऊसर के खेत में चर रहा था। इसलिये कि वह गादर था, विवश व अनाथ था वर्ना ऊसर में क्या था चरने को? ईश्वर को उसके ऊपर दया आई। अचानक एक आदमी उधर से हर–हर कहते हुए निकला, वैसे ही बैल गिरा और मर गया। हर हर शब्द सुनते ही उसका उद्धार हो गया। उसके कर्म इस माने में अच्छे थे कि अपनी अंतिम साँस में 'हर–हर' शब्द सुनते ही शिवलोक का अधिकारी हो गया।

एक तो बसे सड़क के गाँव
दूजे बड़ेन–बड़ेन माँ नाव।

तीजे हुवे दरब से हीन
ददुआ हम पर बिपदा तीन।।

श०– बड़े बड़न–बड़े आदमियों में, दरब–धन, विपदा–आपत्ति।

कहावत में तीन विपदायें बताई हैं।

अ०– पहली विपत्ति है कि सड़क के किनारे पर गाँव है, यानी आने–जाने वाले लोग बिना किसी बाधा, व परेशानी के दूर–दूर से रिश्ता लगाते हुए पहुँच जाया करते हैं।

दूसरी विपदा है कि बड़े–बड़े लोगों में नाम लिख उठा है, इसलिये शरमाते–शरमाते भी स्वागत–सत्कार में काफी पैसा चाहिए।

तीसरी विपदा है पास में पैसा भी नहीं है। इस प्रकार हे भाई ! इस समय मेरे ऊपर ये तीन विपत्ति साथ हैं।

जहाँ पर पैसे की कमी, आने जाने वालों का तांता लगा हो और इज़्ज़त का सवाल हो वहाँ कहावत फिट बैठती है।

एक मास में ग्रहण जो दोई,
तो भी अन्ना महंगा होई।

अ०– एक महीने में दो बार ग्रहण पड़ने पर अनाज महंगा होता है।

एक सूद्र, दो बैस, असारा
तीन बिप्र औ खत्रिय चारा।

कवि भड्डरी का कहना है कि यात्रा में जाते समय एक शूद्र, दो बनिया, तीन ब्राह्मण, चार क्षत्रिय को एक साथ नहीं जाना चाहिए। आगे पीछे या घट–बढ़ कर यात्रा शुरू करनी चाहिए।

एगहन बरसै बाँझ बियाय
लकड़ी बूड़े, सिल उतिराय
ओरी क पानी बड़ेरी जाय
कुत्ता पानी पिये सरुक्का
तबौ न करै बिस्वास दुसरक्का।

श०– बाँझ स्त्री के कोई संतान न हो रही हो, बियाय–बच्चा पैदा होना, ओरी–छप्पर–छाजन का छोर जहाँ से वर्षा का पानी नीचे गिरता हो। बड़ेरी–छाजन के बीचोबीच लगाया जाने वाला बल्ला जिस पर ठाठ का बोझ रहता है, सुरुक्का–सुड़क–कर नाक से, दुसरक्का–दूसरे का।

कहावत देश, काल, को देखते हुए उद्धृत की गई हैं। जब भारत देश पर मुसलमानों, यवनों के हमले बराबर होते रहते थे।

अ०– लोकोक्ति में उलटवासी है। यदि अगहन का मास बरसने लगे, बाँझ स्त्री के बच्चा हो या लकड़ी पानी में डूब जाय, पत्थर की सिल पानी के ऊपर तैरने लगे, छज्जे के नीचे का पानी ऊपर चढ़ जाय, कुत्ता पानी सुड़क कर नाक से पिये, फिर भी दूसरे का विश्वास नहीं करना चाहिए।

एक तौ डाइन दुसरे हाथ मां लुआठा ले के फिरे।

श०– डाइन–डरावनी, सबको मारकर खा जाने वाली राक्षसी, लुआठा–चूल्हे की जली लकड़ी।

कहावत एक ऐसी कुरूप डरावनी शक्ल वाली स्त्री पर कही गई है जो शक्ल सूरत में तो भयावनी है, उस पर हाथ में लुआठा लेकर घूम–घूम कर और भी भय उत्पन्न कर रही है।

एक नीम, सारा गाँव सितलहट।

श०– सितलहट–शीतला माता को माना जाना।

कहावत उस समय चरितार्थ होगी, जब वस्तु विशेष कम हो, खाने वाले बहुत हों या श्रद्धालु तमाम हों। जैसे– "एक अनार सौ बीमार"।

गाँव भर में एक ही नीम का पेड़ है और शीतला की पूजा करने वाला पूरा गाँव है।

एक हाथे ताली नाहीं बजतै।

अ०– एक तरफ से झगड़ा नहीं होता। जैसे एक हाथ से ताली नहीं बजती। यानी दोस्ती–दुश्मनी, विवाह, प्रेम, भलाई–बुराई, नेकी, बदी एक तरफ से नहीं हो पाती। इनमें दोनों का हाथ रहता है।

ए छूंछा तोहका के पूछा?

कहावत ऐसे व्यक्ति पर कही जाती है जो धन से हीन है, जिसके पास पैसा नहीं है।

अ०– ए छूंछा, खाली हाथ वाले, तुमको कौन पूछेगा? इसी पर कहावत स्मरण हो आई है। "निर्धन गिरा पहाड़ से कोई न पूछे बात"। यानी जो ग़रीब है, उनका कोई आदर नहीं होता समाज में, उसी स्थान पर कहा है– "धनवंती को कांटा लगा दौड़े लोग हज़ार।"

एक लाख पूत सवा लाख नाती
तेहि रावन घर दिया न बाती।

जब किसी मनुष्य को अभिमान, अहंकार, काम, क्रोध, मद, लोभ हो जाय तो कहावत चरितार्थ होती है। लोग रावण से उसकी तुलना करते हैं।

अ०– जिस रावण के एक लाख पुत्र व सवा लाख नाती थे उसकी यह हालत कि उसके घर में कोई दिया जलाने वाला न रह गया। किसी ने कहा है–

तिमिर गया रवि देखते, कुमति गई गुरु ज्ञान।
सुमति गई अति लोभ से, भक्ति गई अभिमान।।

गोस्वामी जी के शब्दों में–

संसृति मूल सूलप्रद नाना,
सकल लोक दायक अभिमाना।

'एक–एक दुइ होत'' या ''एक–एक ग्यारह होत।'

कहावत उस समय चरितार्थ की जाती है जब कोई कमज़ोरी या हीनता का अनुभव करने लगता है तो कहते हैं कि आपस में मिलकर रहने में बड़ी ताकत होती है। जैसे एक–एक दो से दुगुनी शक्ति हो जाती है। एक और एक ग्यारह होते हैं उससे ग्यारह गुनी शक्ति बढ़ जाती है। कहावत शिक्षाप्रद है।

एक हाथे देय, एक हाथे लेय।

कहावत लोकाचार पर है। आपसी लेन--देन पर कही गई है। लेन–देन का हिसाब–किताब बराबर का होना चाहिए। वस्तु एक हाथ से दी जाय तो दूसरे हाथ से ली जाय।

एक फूल से माला नहीं बनतै।

कोई बड़ा कार्य अकेले करना चाहें तो असंभव है। अतः कहते हैं– ज्यों, ''अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता।

अ०– एक फूल से माला नहीं गुही जाती। उसके लिये बहुत से फूलों की आवश्यकता पड़ती है। यानी बड़े कार्य के लिये बड़ा संगठन चाहिए।

एक झूठ बोलै के बरे सौ,
झूठ बोलै के परत।

कहावत सिद्धान्तवादी व शिक्षाप्रद है। जब कोई आदमी झूठ बोले और उस झूंठ में कई प्रकार के प्रमाण पेश करने पर भी या पकड़े जाने की आशंका हो तो कहते हैं–

अ०– एक झूठ बोलने व उसको सच बनाने के लिए तमाम कई तरह के झूठ बोलने पड़ते हैं।

एक पूत क पूत न कहे, एक आँख क आँख न कहे।

कहावत अकेले पुत्र पर कही गई है। लोग एक लड़के के होने से थोड़ा दुःखी रहते हैं। अकेला लड़का जब भी कहीं चला जाता है तो घर सूना हो जाता है।

अ०– एक लड़का को क्या लड़का कहें और यदि एक आँख है तो क्या कहें, दो हों तो यह भी सोचें कि एक आँख जायेगी तो दूसरी रहेगी, मगर जब एक ही आँख हो तो सदा भय बना रहता है।

एक पूत जिनि जनम्या माई।
के घर रहै के बाहेर जाई।।
घर में रहै उनकी माता खुसी है,
बाहेर जाय तलफि मरै माई।

श०– जनम्या–पैदा होना, तलफि–तड़पना, छटपटाना।

कहावत माता–पुत्र के वात्सल्य के प्रति स्पष्ट की गई है। जिसके एक ही लड़का होता है वह माँ किस प्रकार से दुःखी होती है।

अ०– कहा है कि एक पुत्र कभी न होना चाहिये, क्योंकि यदि पुत्र घर में है तो उसकी माँ प्रसन्न रहती है मगर यदि वह कहीं बाहर चला जाता है तो माता तड़प कर रह जाती है।

एक दखिनही दुइ के जाना,
घर के पिसान अलगे साना।

जब किसी दखिनही स्त्री से पाला पड़ा, उससे घर में किसी प्रकार के लड़ाई–झगड़े का माहौल सामने आया तो कहावत कहते हैं।

अ०– यदि एक दक्षिण दिशा की कन्या घर में आ गई है तो एक का दो चूल्हा करवा कर अलग–अलग आटा सनवा देगी। यानी घर में अलगा–बिलगी होने की आशंका है।

एक के तीते तीनिउ तीत,
पूत पतोहू, नातिब तीत।

कहावत सास–बहू के झगड़े का संकेत करती है।

अ०– एक बहू के बुरे होने के कारण घर में बेटा, पोता, बहू सभी बुरे लगने लगे हैं। झगड़े की स्थिति में जब एक से झगड़ा होने पर कई–कई लोगों में मन मुटाव होने लगे तो कहावत कही जाती है।

एक चना दुइ दाल हैं।

अ०– एक ही खानदान का होना, एक वंश में पैदा होना। जैसे एक चना को फोड़ने पर दो दाल निकलती है।

एक कान से सुने दुसरे कान से निकाल देय।

अ०– किसी गंदी बात या व्यर्थ की बातों को सुनकर उस पर ध्यान न देना।

पाँच सात के लकड़ी एक मनई के बोझ ।

जो लकड़ी का बोझ बाँधने पर एक आदमी के लिए बोझ के रूप में होता है, वही पाँच सात लोगों के लिए सुगम बन जाती है। यानी मिल बाँटकर काम करने में काम हल्का हो जाता है। जब किसी आदमी को अकेले कोई भारी काम सौंप दिया जाता है तो कहावत कही जाती है। बांट के बोझ उठाओ बांट के रोटी खाओं।

एक दाँत काटी रोटी अहै।

जब दो आदमियों में आपस में अभिन्नता हो खाने, पीने, उठने, बैठने में बड़ा प्रेम होता है तो कहा जाता है कि दोनों रोटी तक एक ही दाँत से काट कर खाते हैं। यानी अनन्य मित्रता होगी।

एतने पै जो गोरी एतना
कजरा देइहैं तो केतना।

कहावत अपने को रूपवती समझने वाली व रूप पर घमंड करने वाली स्त्री के प्रति कही गई है।

अ०– इतने पर जब इतना गरूर है और जब कहीं गोरी साज–श्रृंगार करके काजल लगाकर चली तो कितना गरूर होगा? फिर तो जैसे धरती पर पैर ही न पड़ेंगे।

एक छलांग पर आदमी कुंये में गिर सकता है,
मगर सौ छलांग लगाकर ऊपर नहीं आ सकता है।

कहावत शिक्षाप्रद है। किसी को गलत काम का परिणाम भुगतते देखकर लोग कहते हैं।

अ०– पतन में, यानी नीचे जाने के लिए एक ही छलांग काफी होती है। एक बार ग़लती करने से एक कुदान में आदमी नीचे से नीचे जा सकता है किन्तु ऊपर आने के लिए वह लाख प्रयत्न करने पर भी आ पाने में असमर्थ होता है। कवि रहीम ने कहा है–

'रहिमन' ओछे नरन ते तजो बैर औ प्रीत।
काटे चाटे स्वान के दुहूं भाँति विपरीत।।

एक बार पैर कीचड़ में धँसने के बाद, पैर धंसते कहां चले जा रहे हैं, पता नहीं लगता। कहावत ग़लती करने वाले के प्रति कही गई है। चाहे जानबूझ कर चाहे अचानक जब कोई व्यक्ति ग़लत फँस जाता है तो फिर उसका उबरना बड़ा कठिन हो जाता है।

अ०– एक बार किसी ने ग़लती की तो वह बारबार अपराधों का आदी हो जाता है जिसका उसे स्वयं आभास नहीं हो पाता कि हम कहाँ जा रहे हैं। तुलसीदास जी ने कहा है–

नीच निचाई नहिं तजै, सज्जन हू के संग।

तुलसी चंदन बिटप बसि, विष नहिं तजत भुजंग।।

एक साँप दूसरे को नहीं काटत।

जब दो व्यक्ति एक ही स्वभाव के, एक ही गुण के मिल जाते हैं तो कहते हैं।

अ०– साँप एक दूसरे को नहीं काटते। एक ही प्रकार के दो दुष्ट मिल जाते हैं तो एक दूसरे का साथ देते हैं। दूसरे दोनों की दुष्टता एक सी है अतः विष पर विष नहीं चढ़ता।

एक हजार मनई भले मरि जायं,
मगर एक मूर्ख कुरसी पर न बइठै पाय।

कहावत राजनीतिक परिपेक्ष्य में मूर्ख की मूर्खता देखकर ही कही गई है।

अ०– चाहे एक हजार आदमी मर जायं मगर मूर्ख आदमी किसी भी पद का अधिकारी न होने पाये क्योंकि वह अपनी मूर्खता से पूरे देश, राज्य, जनता, सभी का सर्वनाश कर सकता है। महात्मा कबीर ने कहा है–

मूरख को समुझावते ज्ञान गाँठि को जाय।
कोयला होय न ऊजरो, नौ मन साबुन लाय।।

एक अनार सौ बीमार।

जब वस्तु कम हो और खाने वाले अधिक होते हैं, और उन सभी को उतनी ही आवश्यकता वस्तु की हो, जितनी एक को तो यह कहावत चरितार्थ होती है।

अ०– वस्तु थोड़ी हो और आवश्यकता कई लोगों को हो तो स्थिति बड़ी गंभीर हो जाती है। चूँकि वस्तु की

आवश्यकता सभी को बराबर की है तो उस विवशता के समय कहावत कही जाती है कि अनार एक है और बीमार सौ लोग हैं।

एक तो रही वइसेन गोर
दुसरे नहाय बइठी खोर।

श०– गोर–शरीर का रंग साफ़ होना, खोर–गली, संकरी गली, गंदी जगह।

कहावत किसी गंदी, काले रंग की स्त्री के प्रति व्यंग्य में कही गई है।

अ०– एक तो वैसे ही गोरी थी, बड़ा साफ़ रंग था देह का, उस पर नारे–खोरे में, गंदी खुली जगह नहाने भी बैठ गई।

एक होय तौ समुझावै, हियां तो कुँवनै मा भाँग परी अहै।

श०– कुँवनै–कुँआ। भाँग–एक प्रकार का नशीला पौधा।

अ०– एक, दो, चार हों तो समझाया जा सकता है, मगर यहाँ तो कुंये में ही भाँग पड़ी है। यानी पूरा समाज–जनसमुदाय ही नशे में पड़ा है। सामूहिक स्तर पर ग़लितयों का होना।

एक रोज क दहिजरा भल,
रोज – रोज क नाहीं।

श०– दहिजरा–गाँवों में स्त्रियां गाली देती हैं।

अ०– जब गाँव में औरतें पुरुषों पर कोपती हैं तो कहती हैं कि इसकी दाढ़ी जल जाय, क्योंकि मर्दों की यही शान है। एक रोज की गाली–गुप्ता तो ठीक है मगर रोज–रोज कौन बर्दाश्त कर सकता है। अच्छाई इसी में है कि एक दिन में ही झगड़े की जड़ समाप्त कर दो।

एक गाँव मां तीन नकटे बसै, कबो रोवै कबो हंसै।

कहावत बेहयाओं के प्रति कही गई है जिन्हें कोई शर्म नहीं है।

अ०– एक गाँव में तीन नकटे बसे हैं उनका काम केवल हँसना–रोना है। इससे ज्यादा उन्हें कुछ भी नहीं करना होता। कहावत बेशर्मी के ऊपर कही गई है।

एकादसी अन्न दोस, दुआदसी तेल दोस।

अ०– एकादशी की तिथि को अन्न नहीं खाना चाहिए और द्वादशी को तेल खाना व लगाना नहीं चाहिए।

एकै घुडुक मोरी सेखी बिगड़िगै।

श०– घुडुक–डाँट, सेखी–गर्व, गरूर।

जब कोई आदमी किसी को दुलार के बाद बुरी तरह से डाँटता है तो कहावत कही जाती है।

अ०– एक ही डांट के बाद तो मेरी सारी हेकड़ी बंद हो गई।

एक दिन मेहमान, दूसरे दिन बेईमान,
तिसरे दिन बलाये जान''

श०– बलाये–झंझट।

कहावत घर आये मेहमान के प्रति उद्धृत की गई है कि उनके रुकने के बाद घर में क्या प्रतिक्रिया होती है।

अ०– आया व्यक्ति एक दिन तो मेहमान की तरह होता है। दूसरे दिन बेईमान समझा जाता है और तीसरे दिन तो वह एकदम से आफ़त समझा जाता है। जान की बला माना जाता है। ऐसे मेहमानों की मेहमानी करना जाने बवाल होता है।

एक सुगंधित बिरिछ से सब बन होत सुबास।
जैसे कुल सोभित रहै, लहि सुपुत्र गुन रासि।।

उपरोक्त पंक्तियां महा विद्वान चाणक्य की हैं। लोग आमतौर पर कह देते हैं कि–

अ०– एक महकदार पेड़ से सारा जंगल महक उठता है। जैसे एक लायक पुत्र से सारा कुल शोभित हो उठता है।

एक अकेला, दुइ से ग्यारह।

अ०–जैसे एक और एक अंक से ग्यारह की गिनती होती है उसी प्रकार एक आदमी से दूसरा आकर मिल जाता है तो उसके पास ताकत ग्यारह गुनी अधिक हो जाती है।

एक असामी सौ अर्जियां।

श०– असामी–प्रजा, राज्य की जनता, अर्जियां। प्रार्थना–पत्र।

एक अहिर के एक गाय, नाय लगे, छूंछा जाय।

अ०– जब किसी के पास एक ही वस्तु होती है उसके

न होने पर काम रुक जाता है। अहीर के पास यदि एक ही दुधारू जानवर है तो जबं वह दूध देना बंद कर दे तो फिर दूध नहीं मिल सकता उसे।

एक आँख मटर क बिआ, उहो आँख भवानी लिया।

जब किसी के पास सीमित सामान या सीमित साधन हो तो कहावत कही जाती है।

अ०— एक आँख बेचारी जरा सी बची थी, वह भी चेचक में देवी जी ने ले ली। यानी निःसहाय हो जाना। एक वस्तु का होकर समाप्त हो जाना। विवशता का जीवन व्यतीत करना।

एक आँख में लहर—बहर,
एक आँख पर खुदा का कहर।

श०— लहर—बहर—ऐंचातानी, कहर—आफत, कष्ट, कोप।

अ०— एक आँख तो वैसे ही गड़बड़ थी, ऐंचातानी थी दूसरे पर खुदा ने दुःख ढा दिया, वह भी फूट गई। अपनी प्रिय वस्तु से "हाथ धो लेना"।।

एक आँख से हँसै और एक से रोवै।

कभी—कभी मानव जीवन में स्थिति जब ऐसी आ जाय कि आदमी न तो रो सकता हो और न हँस सकता है तो कहावत कही जाती है

अ०— एक आँख से हँसना और दूसरी से रोना। एक प्रकार से मनुष्य का धर्म—संकट में पड़ जाना।

एक आम दुइ फांक अही।

अ०— एक पेट के दो भाइयों का होना।

एक आंवा क दुइ बर्तन हैं।

अ०— स्पष्ट है।

एकबार के भूखे से, जनम कै कोढ़ नहीं जाते।

अ०— थोड़ा सा व्रत, उपवास, पूजा पाठ से चाहे कि जीवन भर का पाप चला जाय तो असंभव है। किसी ने कहा है— "नित का दान महा कल्यान"। तो पुण्य एक दिन नहीं किया जाता, इसे तो हमेशा ध्यान में रखना चाहिए।

अधिक पाप का प्रायश्चित कम पुण्य करके नहीं हो सकता या कोई बहुत समय का बिगड़ा काम थोड़े समय में नहीं हो पाता है।

एक ओर चार बेद, एक ओर चतुराई।

अ०— बहुत चतुर ज्ञानी आदमी के प्रति कहावत कही गई है तथा झूठे के प्रति भी लागू होती है। यानी कि एक तरफ़ चारों वेद और दूसरी तरफ़ ज्ञानी पुरुष का ज्ञान ही बहुत है। दूसरे अर्थ में यदि कोई लबार झूठ बोलने वाला हो तो उसके झूठ के सामने भी चारों वेदों का ज्ञान पीछे पड़ जाता है। ऐसा लोग व्यंग्य में कहते हैं।

एक कान बहिर, एक कान गूँग।

अ०— बुराई सुनों तो बहिरे बन जाओ, गूँगे का मतलब, कि कुछ बोलो ही मत। किसी ने कहा है— "एक कान से सुनै दूसरे से निकार देय" यानी कि कोई परवाह ही न करे।

एक क सैर, दुइ क तमाशा,
तिसरे क मेला, चार क झमेला।

अ०— एक आदमी निकले तो घूमना हुआ, दो एक साथ निकलें तो तमाशा देखने के लिये जाना हुआ, तीन साथ हों तो मेले जाना और चार हों तो समझो कि झगड़ा या झंझट होने में कोई कोर कसर नहीं है। कुछ लोग कहते हैं—

एक क सैर, दुइ का तमाशा,
तीन क पिटना चार क स्यापा।

यानी चार लोग हों तो समझो कि जनाज़ा निकल रहा या मारपीट की संभावना बन जाती है। एक हो तो सैर पर जाना, दो हों तो तमाशा देखने जाना, तीन में मेला, चार में मारपीट होना।

एक के दुगुने से सौ क सवावा भल।

कहावत व्यंग्य में कही गई है। अधिक मुनाफे पर कम माल बेचना अच्छा नहीं बल्कि कम मुनाफे पर अधिक माल बेचना भला है।

एक क देइहै रुतबा—आली,
एक क देइहै खुरपा जाली।

दुनिया में भगवान सबको अपने—अपने कर्म के अनुसार फल देता है। किसी को अमीर बना दिया तो किसी को गरीब बनाया।

अ०— एक को तो बड़ी भारी इज्ज़त, धन, घर—बार दे

दिया। उसी स्थान पर दूसरे को खुरपा लेकर घास छीलने को बना दिया।

एक को सांई, एक को बधाई।

अ०– किसी को घरबारी एवं सौभाग्यशाली बनाना, किसी को साधु–सन्यासी बना देना। कहा गया है– "जन्म, विवाह, मरन गति सोई, जहं जस लिखा तहाँ तस होई"।

एक बूड़े तो जग समझावे, सब जब बूड़ा जाय।

अ०– एक यदि ग़लती करता है तो संसार समझाता है। जब सभी ग़लती कर रहे हैं तो उसे भला कौन समझावे?

एक तो कानी बिटिया कै माई,
दूसरे पूछनवालेन जान खाई।

अ०– एक तो अपनी ही वस्तु खराब उस पर लोग जब आ–आ कर पूछते हैं तो और भी दुःख होता है। जब कोई किसी दुःखी के साथ झूठी हमदर्दी दिखाता है तो कहावत चरितार्थ होती है। यानी ऐब में ऐब होने पर लोगों का व्यंग्य सहना।

एक तो दिवाना, दूसरे बहार आई।

अ०– एक तो वैसे ही रसिक आदमी, दूसरे प्रकृति में भी रस रंग आ गया तो उन्माद और भी ज्यादा हो गया। यानी किसी आदमी को उसके मन पसंद अवसर मिलना।

एक तो भालू दूसरे कांधे कुदार।

जब किसी आदमी की शक्ल बहुत खराब हो उस पर किसी सामान के द्वारा या खराब वस्तु से और भी भयंकर हो जाती है तो कहावत कहते हैं।

अ०– भालू तो अपने में ही भयंकर जीव है, उस पर उसके कंधे पर कुदाल हो तो क्या कहना? सीधे यमराज का बाप ही मालूम होता है।

एक तो भीख मांगे, दूसरे पछोर के?

अ०– भीख के दाने को कौन साफ करके देगा? कहने का मतलब है एक तो मांगे भीख, दूसरे से चीज़ भी लो और उसमें अच्छाई और ख़राबी भी देखो।

एक नीम सौ कोढ़ी।

कोई वस्तु इस्तेमाल करने वालों से कम होती है तो कहावत कही जाती है।

अ०– एक नीम का पेड़ उस पर सौ कोढ़ी हैं। कहते हैं कि नीम का तेल चर्म रोग में फायदा करता है।

एक पेड़ हर्रे गाँव भरके खांसी।

खाँसी में हर्र फायदे मंद होती है। कहा गया है कि कहाँ से हर्रे मिले? एक ही पेड़ तो कुल है, उस पर गाँव भर को खाँसी आ रही है। औसत से सामान का कम होना।

एक फूहर–फूहर के हियां गई,
तो कोठिला अस ठाढ़ भई।

श०– फूहर–मूर्ख, बेसऊर, कोठिला–एक मिट्टी का बड़ा सा गोल बर्तन जिसमें गाँवों में अनाज रखते हैं।

कहावत दो फूहड़ मूर्ख स्त्रियों पर कही गई है। इसमें हास्य–व्यंग्य का पुट भी है।

अ०– एक फूहड़ स्त्री दूसरी फूहड़ के यहाँ गई तो वह कोठिले की तरह जाकर सामने खड़ी हो गई। न वह कुछ बोली और न जिसके घर गई उसने बैठने को कहा, यही मूर्खता के लक्षण हैं।

एक बोली, दो बोली, मेरी नकटी सटासट बोली।

कहावत बातूनी औरतों के ऊपर कही गई है।

अ०– कोई आदमी अपनी वेहया पत्नी पर कहावत कह रहा है कि एक बार बोली, दो बार बोली, यही नहीं मेरी नाक कटाने वाली पत्नी बराबर संटासट ज़बान चलाती जा रही है।

ए कुकुर तू दूबर काही। दस घर की आवा जाही।

कहावत किसी ओछे आदमी पर कही गई है जो घर–घर फेरे लगाया करता है।

अ०– ऐ कुत्ते, क्यों दुबला है तू? तो उत्तर मिला कि दस घरों में आने जाने के कारण, इधर–उधर की दौड़बाजी में।

एकै साधे सब सधे सब साधे सब जाय।

अ०– किसी काम को करना है ढ़ंग से तो एक ही करो, एक साथ कई काम करने से काम बिगड़ जाता है। इस कहावत का आशय यह भी है कि एक प्रभाव सम्पन्न

व्यक्ति को वश में करने पर ही सारे काम बन जाते हैं किन्तु अनेक ऐसे लोगों को वश में करने का प्रयास हानिकारक है। उससे हानि ही होती है।

" ऐ "

ऐसी खेती करै मोर भतरा
एक दिन खाय, तीन दिन अंतरा।

कहावत कोई स्त्री द्वारा अपने पति के ऊपर, खेती करने के ढ़ग पर व्यंग्य के रूप में कही गई है।

अ०– भतरा यानी मेरे पति ऐसी कमाई खेती में करते हैं कि एक दिन खाने को मिलता है तो तीन–तीन दिन उपवास हो जाता है। काम का आलसी होना, काम में मन न लगाने पर कहावत कही गई है। पति का निठल्ला होना।

ऐसा सोना कउने काम कि काने फारि डारय।

जब किसी वस्तु की उपयोगिता कीमती होने पर भी सिद्ध न हो या उससे हानि हो तो वह वस्तु चाहे कितनी भी कीमती हो बेकार होती है।

कहावत के अनुसार ऐसा सोना पहनकर क्या करे जिससे कान ही फट जाय अथवा असहय पीड़ा को सहन करना पड़े। इसी पर किसी ने कहा भी है– "वा सोने को जारिये, जासों टूटै कान" तथा कहा है– "जब काने मां लहरे नहीं, तो सोन लै के का करै?" तो जब कभी अनुपयोगी वस्तु सामने आ जाती है तो कहावत कही जाती है।

ऐंठा कान ओ लंबी पूंछ
ऐसा बरदा ले बेपूछ।

कहावत बैलों की पहचान पर कही गई है कि किस प्रकार का बैल लेना चाहिए जो खेती के लिए उत्तम हो।

अ०– जिस बैल का कान ऐंठा हो और लंबी पूंछ हो, ऐसा बैल बिना पूछे ले लेना चाहिए।

ऐब करे वाले को भी हुनर आवै क चाही।

श०– ऐब–दुष्टता, बदमाशी, हुनर–अक्ल, बुद्धि, सऊर।

कहावत ऐसे लोगों पर कही गई है जो हमेशा तरह–तरह की शरारतें करते रहते हैं, जिनके दिमाग़ में दिनरात खुराफात ही सूझती रहती है।

अ०– कहा गया है कि जो लोग शरारत करते हैं, उनकी बुद्धि कम तेज़ नहीं होती। उन बदमाशियों को सीखने के लिये भी बुद्धि लगती है। किसी ने कहा है– "नकल के लिये भी अकल होनी चाहिए", वैसे ही खुराफ़ात के लिए भी सऊर होना चाहिए।

ऐंठन छोड़ घसीटन मां पड़िगे।

श०– ऐठना–खींचना, बंटे हुये बाध की ऐंठन घुमाना, घसीटन–घिसियाना।

अ०– ऐंठने की मुसीबत से छुट्टी मिली तो घसीटने के काम में लग गये। यानी कि एक मुसीबत से छुटकारा मिला नहीं कि दूसरी आफ़त में पड़ना।

एतवार तब जानों, जब हट्टी लीपै बनिया।

चूँकि इतवार को आमतौर पर बाज़ार बंद होता है तो कहावत है।

अ०– जब बनिया अपनी दुकान की झाड़–पोंछ लीपा–पोती करे तो समझो कि आज इतवार है। यानी आज दुकानें नहीं खुलेगी। बैठा बनिया दुकान ही साफ कर ले।

ऐसा किन दिल गुरदा कि रूपया दीन खुरदा।

अ०– कहावत किसी कंजूस आदमी पर कही गई है कि इतनी हिम्मत की कि रुपया पूरा न दिया उसको भुनाकर पैसे करके किसी प्रकार से दिये।

ऐसी छट्ठी बलि–बलि जाऊँ
नौ–नौ पतरी भातै खाऊँ।

श०– छट्ठी–बच्चे के जन्म के छठे दिन बच्चे को काजल लगाने के संस्कार को कहते हैं।

अ०– राम करे कि बच्चे की ऐसी ही छट्ठी रोज़ ही हुआ करे कि ढेर–ढेर सा भात तो खाने को मिले।

ऐसी बहू सयानी कि उधार मांगे पानी।

अ०– बहू इतनी होशियार है कि पानी भी उधार मांग कर लाती है। इसलिये कि उससे कोई भी उधार सामान कभी न मांगे।

ऐसी लटकी कि भुंइ मा पटकी।

अ०– इस प्रकार से लटकाया कि ज़मीन में ही लाकर गिरा दिया। किसी को नीचा दिखाना, उसकी बेइज्ज़ती करना।

ऐसे मूरख रेवाड़ी जाय, आटा बेंच के गाजर खाय।

श०— रेवाड़ी—राजस्थान में एक गल्ले की बड़ी मंडी का नाम है।

अ०— पत्नी कहती है ऐसे बेवकूफ़ हैं कि जाते तो हैं बाज़ार में सौदा बेचने और आटा को बेचकर गाजर खाते हैं। यानी कि खा—पीकर सब सामान साफ कर देते हैं, तो घर आते हैं।

ऐसे गये जैसे गदहा के सिर से सींग।

जब कोई आदमी चुपचाप बिना किसी को बताये, क़िसी स्थान से चला जाता है तो कहते हैं कि ऐसे गये जैसे कि गधे के सिर से सींग। गधे के सिर पर सींग होती ही नहीं।

ऐसे गये जैसे महफ़िल से जूते।

कहावत मज़ाक में कही गई है, सही भी है। किसी सभा सोसाइटी से या मंदिर से जूते ग़ायब तो होते ही हैं, तो उसी पर कहा गया है।

अ०— ऐसे चुपचाप चले गये जैसे कि महफिल से कोई उतारे हुये जूते लेकर चुपचाप खिसक जाये।

ऐसे पै ऐसी गोरी कजरा देय तो कैसी?

अ०— ऐसे पर तो इस तरह लगती है यदि गोरी आँखों में काजल लगा ले तो कितनी सुंदर लगेगी?

ऐसे बूढ़े बैल को कौन बांध भुस देय?

कहावत किसी बूढ़े आदमी पर भी लागू हो सकती है जो बेकार रहता है।

अ०— ऐसे बुड्ढे बैल को जो हल न चला सके, कौन बाँध कर खिलायेगा?

" ओ "

ओनहीं अहीं कुलवंती नारि
भोरवै देय बिप्र का दान,
भोरवै कुंआ, जगावै पानि।

कहावत उन सुलक्षणी स्त्रियों पर कही गई है जो कुल की लक्ष्मी होती हैं, जिन्हें गृहलक्ष्मी कहा जाता है।

श०— कुलवंती—कुलांगना, गृहलक्ष्मी, भोरवै—बड़े सबेरे, मुँह अंधेरे, बिप्र—ब्राह्मण।

अ०— वही स्त्री कुल की लाज रखने वाली, अच्छे लक्षणों की होती है, जो प्रातः उठती है, ब्राह्मणों को दान देती है और बड़े भिनौखे (सबेरे) ही कुंये पर जाकर कुयें से पानी भरकर लाती है। पहले के युग में नारियां गांवों में कुयें से पानी भरती थीं। घर के सभी कार्य वे स्वयं करती थीं।

ओखरी मां मूड़ दीन तो पहरुआ क कौन डर।

श०— ओखरी—कांडी—जिसमें धान आदि कूटे जाते हैं, पहरुआ—मूसल जिससे धान कूटा जाता है।

उपरोक्त कहावत कठिन परिस्थितियों में निर्भयतापूर्वक कार्य करने के प्रति कही जाती है।

अ०— जब धान की जाति में पैदा हुए ही तो कुटाना तो पड़ेगा ही, फिर काँड़ी—मूसल से क्या डर है? यानी जन्म ही ऐसे गर्भ से पाया है तो कष्ट उठाने में क्या हिचक?

ओस के चाटे पियास नहीं जातै।

जब किसी की आवश्यक आवश्यकतायें थोड़ी वस्तु के कारण पूरी न हो पायें तो कहते हैं।

अ०— अरे भई! प्यास तो पानी से ही बुझेगी। ओस के चाटने से प्यास नहीं बुझ पायेगी। यानी आवश्यकता की वस्तु पर्याप्त चाहिये, थोड़े में काम नहीं चलेगा।

ओते पाँव पसारिये, जाती लांबी सौर।

श०— ओते—उतना ही, पसारिये—फैलाना, लांबी—लंबी, सौर—चादर।

जब कोई भी कार्य अपनी सीमा अपने बूते से ज्यादा बढ़ने लगता है, तो कहावत कही जाती है।

अ०— उतना ही कार्य करिये, उतना ही बोझ संभालिये, जितना उठा पाइये। उतना ही पैर फैलाइये जितनी लंबी चादर हो। सबका आशय यह है कि औकात से ज़्यादा किसी कार्य को करने में सिवाय हानि के और कुछ भी न मिलेगा।

ओतने गुदगुदावै जेतनी हँसी आवै।

प्रत्येक कार्य की एक सीमा होती है, चाहे काम कितना ही अच्छा क्यों न हो। कहावत उस पर लागू होती है, जब किसी बात की या कार्य की अति होने लगती है। अति किसी भी दशा में अच्छी नहीं होती है।

अ०— कहा गया है कि गुदगुदाना बुरा नहीं है, मगर उतना ही जितना कि हँसी आवे। किसी पर उतना ही

दबाव डालना चाहिए जितना आसानी से वह झेल सके और कार्य भी न रुके।

ओनवत की डर लागे, परे बजर होइ जाय।

श०– ओनवत–झुकाव पड़ते समय, नीचे गिरते समय, बजर–बज्र, कठोर, कहावत दैवी आपत्ति के आगमन की ओर इशारा करती है। जब किसी पर कष्ट पड़ने वाला या विपत्ति आनी होती है, तो लोग कहते हैं।

अ०– जब कोई भी आपत्ति अचानक सिर पर आ जाती है तो उस समय कलेजा काँप जाता है। मन घबड़ा उठता है मगर जब आपत्ति आ ही जाती है तो फिर इंसान पत्थर से भी अधिक कठोर हो जाता है।

ओस मां बसै, बैद बइठा हँसै।

ओस में सोना हानिकारक है। कहावत स्वास्थ्यप्रद है।

अ०– ओस में रहने–सोने पर वैद्य बड़ा प्रसन्न होता है कि जब बीमार पड़ेंगे तो मुझे बुलाया जायेगा। मेरी आमदनी होगी, रोज़ी बढेगी। इसलिए कहावत के अनुसार ओस में सोना हानिकारक है।

ओछे के प्रीत, बालू के भीत आय।

श०– ओछे–छिछोरा, कम बुद्धि वाला, प्रीति–प्रेम, भीत–दीवाल।

कहावत ओछे लोगों पर कही गई है जिन्हें अपनी बात, अपने वचन पर चल पाना कठिन हो जाता है। उन्हें दूसरे को कौन कहे स्वयं को ही अपनी कही बात का विश्वास नहीं रहता है। उनकी तुलना बालू की दीवार से की गई है।

अ०– नीच लोगों क़ी प्रीति, वैसे ही गिर जाने वाली होती है, जैसे बालू की दीवार। उनकी बातें भी स्थाई नहीं होती हैं।

ओझा किमिया, बैद किसान,
आँडू बैल तो खेत मसान।

श०– ओझा–ओझाई करने वाले, झाड़, फूँक, भूत प्रेत उतारने वाले, किमिया–कामगार, मजदूर, खेत का हलवाहा, वैदकिसान–जो किसान बैद्यकी करता हो, आंडू–जिस बैल की बधिया न हुई हो, मसान–श्मशान, जहाँ मुर्दे जलाये जाते हैं।

कहावत कृषक जीवन से सम्बन्धित है।

अ०– यदि कामगार, मज़दूर ओझाई, झाड़फूँक करने लग जाये, किसान बैद्यकी करने लगे और बैल बिना बधिया के हो तो समझ लो कि खेती का सत्यानाश ही हो जायेगा। वह खेती क्या रह जायेगी श्मशान–घाट बन जायेगी।

ओछा मंत्री राजा नासे,
ताल बिनासे काई।
सान साहिबी घर बिनासे
घघ्घा पैर बेवाई।।

श०– ओछा–नीच, मूर्ख, छिछोरा, मंत्री–सलाहकार, राजनीति को बताने वाला, बिनासे–नाश करे, काई–जहाँ पानी जमता या बराबर गिरता रहता है वहाँ हरे, काले रंग की एक प्रकार की घास होती है जो फिसलती बहुत है। सान साहिबी–बड़प्पन, रईसी, बेवाई–पैरों के रूखे हो जाने पर पैर फटने लगते हैं। यह जाड़ों में अधिक होता है।

कहावत नीतिपरक है। इससे शिक्षा मिलती है कि कौन किसका सर्वनाश करता है?

अ०– ओछा, अस्थिर बुद्धि का मंत्री राजा का नाश कर देता है। यहाँ ओछे को कौन कहे? गोस्वामी जी ने तो यहाँ तक कहा है– "सचिव, बैद, गुरु तीन जो, प्रिय बोलहिं भय आस, राज धर्म तन, तीन के होय बेगही नास" और यदि मंत्री कहीं छिछोरा है तो राजा की नाव डूब जाती है। इसी प्रकार से ताल कुंये में यदि काई लग गई तो उनका विनाश हो जाता है। घर में यदि कोई भी अपने को नवाब समझता है या बड़ी रईसी से रहना चाहता है तो उससे फूट उत्पन्न हो जाती है। आपसी मनमुटाव, ईर्ष्या पैदा होती है। पैर का नाश बेवाई फटने पर होता है।

ओछे बैठक ओछे काम,
ओछी बातें आठो याम,
घाघ बतावें तीन निकाम
भूलि न लीजो इनके नाम।

श०– ओछे–नीच, आठोयाम–आठ पहर, तीन घंटे का समय, यानी चौबिसों घंटे, २४ घंटे में आठ पहर होते है।

कहावत ऐसे लोगों के ऊपर लागू की जाती है जो हर समय अपना समय बर्बाद करते हैं।

अ०– घाघ कवि का कहना है कि जो आदमी ओछे की संगत में आठों पहर बैठकर बिताते हैं, नीच काम करते हैं, छोटी बातें करते हैं वे बिलकुल बेकार के होते हैं।

ओनामासी धम्म् ना बाप पढ़े न हम्म्।

कहावत बच्चों की है। कोई बच्चा नंगई करके बैठ जाता है कि न मेरे बाप पढ़े न हम पढ़े। उल्लेखनीय है कि यह शब्द (ओनामासी) संस्कृत भाषा के प्राचीन वैयाकरण महर्षि शाकटायन के व्याकरण का प्रथम सूत्र है। "ओऽम् नमः सिद्धम्"। पुराने समय में बालक को विद्यारंभ कराते समय, पहले इसी सूत्र की शिक्षा दी जाती थी।

ओका कबौ न पतियाय, जे कहै सब तोहरै आय।

श०– पतियाय–विश्वास मानना।

कभी–कभी लोग अक्सर कह ही देते हैं– "अरे भई सब आपका ही है, आपही का तो घर है या जो चाहो ले लो, सब आपका ही है, उसी पर व्यंग्य में कहा गया है।

अ०– उस पर कभी विश्वास मत करना जो कहे कि सब आपका ही है।

ओखरी–मुसरे क कौन डर, जौ धान की कोख मां जनम लीनै।

अ०– धान की जाति में जन्म पाने पर फिर मूसर की चोट का क्या भय? कुटाना तो पड़ेगा ही। उसे परिस्थितियों का सामना करने में क्या डर है जब जन्म ही परिस्थितियों का सामना करने के लिये हुआ है।

ओहि ओर भूलि न जाय भाई,
जेहि ओर होवै मार पिटाई।

अ०– जिस तरफ मारपीट, लड़ाई–झगड़ा होता हो या आशंका हो उस ओर कभी भूल कर भी न जाना चाहिए। कहावत सिद्धान्तवादी है।

ओहि ओर मत बैठो प्यारे, जेहि ओर बइठे बइरी सारे।

अ०– जिस ओर दुश्मन बैठे हों, उस तरफ कभी नहीं बैठमा चाहिए।

ओहि ओर कबौं न जाय मितवा,
जेहि ओर खूँखार जानवर चितवा।

अ०– स्पष्ट है।

ओहि ओर से आंधर घर आवै,
एहि ओर से आंधर जाय,
अंधरे क अंधरा मिलै के बतावै राह?"

अ०– जब दोनों एक ही जैसे होते हैं तो कहावत कही जाती है कि जब आने–जाने वाले दोनों ही लोग अंधे ही हैं, तो कौन किसको रास्ता दिखाये।

ओछा बर्तन उछरै ढेर।

अ०– छिछला बर्तन में अधिक सामान रखने पर नीचे गिरने लग जाता है। कहा है– "अधजल गगरी छलकत जाय, भरी गगरिया चुप–चुप जाय" यानी जो जल का बर्तन भरा होता है, वह बिना छलके रहता है। जैसे कोई गंभीर स्वभाव का बड़ा आदमी बिना घमंड के लोगों से बात करता है। उसी जगह घमंडी, आदमी आधी भरी गागर की तरह अपना रुतबा दिखाये बिना रहता नहीं।

ओछी पूँजी, खसमें खाय।

श०– ओछी–कम, थोड़ी, पूँजी–धन, रुपया पैसा, खसमें–आदमी, पति।

अ०– जब घर में पैसा कम होता है तो उससे घर के मालिक को चिंता होती है। उससे उसका स्वास्थ्य खराब हो जाता है। वह पैसे की चिंता में रात–दिन अपने को गला देता है।

ओछे के घर खाना, जनम–जनम का ताना।

नीच आदमी के घर खाना खाने से केवल ताना सुनने को मिलता है। जब देखो तब ही वह अपने खिलाने के लिये स्मरण दिला देता है। इसी पर कहा है "अंटकी कै खाय उटकी कै ना खाय"।

ओछी लकड़ी फरीस की, बिन बारे फर्राय।
ओछे के संग बैठ के, सुघड़ो की पत जाय।।

श०– फरीस–फर्री, पतली लकड़ी, सुघड़–इज्जतवाला, पत–आबरू, इज़्ज़त।

अ०– फर्री की हल्की लकड़ी को जलाओ तो बिना बरे ही फरफराती है। वैसे ही नीच लोगों के बीच बैठने पर बड़ों–बड़ों की इज़्ज़त चली जाती है।

ओछे के साथ एहसान करै बालू मां पेसाब करै।

अ०— नीचों के साथ भलमनसाहत करना वैसे ही है जैसे बालू में पेशाब किये जाव सोखता चला जाता है कहीं पता ही नहीं चल पाता। अतः नीच आदमियों के साथ भलाई करना भी व्यर्थ ही है।

ओढ़ी चादर भइउं बराबर— "हम बादसाह कै खाला हन"।

श०— बादशाह—राजा, खाला—मौसी।

जब कोई स्त्री किसी स्त्री के बराबर की पोशाक पहिन—ओढ़ लेती है तो वह भी अपने को किसी नवाब की रिश्तेदार से कम नहीं समझती है।

अ०— चादर ओढ़कर मैं भी बादशाह की मौसी हूँ। उससे कम नहीं।

ओरी क पानी बड़ेरी नहीं जातै।

श०— ओरी—(ओरौनी) छप्पर जो नीचे की ओर लटका हो, बड़ेरी—जो ऊपर का हिस्सा हो।

अ०— उलटी रीति नहीं होती, नीचे का पानी नीचे को ही आता है। वह ऊपर नहीं चढ़ सकता है। यह स्वाभाविक होता है। यानी नीच का व्यवहार नीचतापूर्ण ही होगा।

ओछे के संग ना बैठिये, ओछा बड़ी बलाय।
पल में ही घी—खीचड़ी, पल में बिसयर खवाय।।

श०— बलाय—बला, कष्ट, पल—ज़रा सी देर में, बिसयर—विष, ज़हर, माहुर। ओछै—हल्की प्रकृतिवाले।

कहावत ओछे लोगों के प्रति कही गई है जो क्षणिक बुद्धि के होते हैं, कब क्या से क्या कर सकते हैं।

अ०— कहा है कि नीचों के संग कभी नहीं बैठना या व्यवहार बनाना चाहिए। वे ज़रा सी देर में क्या से क्या कर देते हैं? कभी तो घी—खिचड़ी खिला देंगे और कभी ज़हर की गाँठ दे देंगे। उनका कोई ठिकाना नहीं होता है।

ओंठ हील न जिभिया डोली
तबहूँ सास कहै बड़बोली।

अ०— कहावत सास—बहू की तनावपूर्ण दशा में कही जाती है। बहू का कहना है कि न तो मेरे ओंठ हिले, न जीभ हिली, फिर भी सास मुझे बहुत बोलने वाली, लड़ाका साबित करती हैं।

" औ "

औवा—कौवा बहै बतास,
तब होवे बरखा के आस।

श०— औवा—कौवा— चारों ओर बहने वाली हवा, चौवाई हवा, बतास—हवा।

कहावत वर्षा होने पर कही गई है यानी हवा कैसी हो तो पानी बरसता है?

अ०— जब हवा चारों ओर की हो तो पानी बरसता है।

औरत सुई से घर गोड़ै, तो गोड़ि डारै
मर्द कुदार लै के गोड़ै तौ न गोड़ि पावै।

हमारे देश भारत में स्त्रियों को गृहलक्ष्मी, देवी, मातृशक्ति आदि की उपाधियाँ दी जाती हैं। उपरोक्त कहावत उन स्त्रियों पर कही गई है जो अपने कुलक्षणों से घर का सत्यनाश करके रख देती हैं। उन्हीं पर कहावत स्पष्ट कही गई है।

अ०— कुलक्षणी नारी चाहे तो सुई से— एक छोटी सी वस्तु से, ज़रा सी मूर्खता के पीछे सारा घर नाश कर दे क्योंकि वह गृह स्वामिनी होती है, घर की रक्षा करती है। कहा गया है— "बिन घरनी घर भूत क डेरा"। नारी तो श्रद्धा की मूर्ति होती है, गृहलक्ष्मी होती है तथा पुरुष वाह्य जगत का स्वामी होता है। इसलिए पुरुष फावड़ा लेकर भी चाहे तो घर को नहीं खोद पाता है।

तात्पर्य यह कि घर सदैव स्त्रियों से ही सम्पन्न रहता है। अच्छे—भले स्वभाव व लक्षण की स्त्रियाँ ही घर को व्यवस्थित रख सकतीं है। जैसा कि गोस्वामी जी ने लिखा है "सब लच्छन सम्पन्न कुमारी "तो सब लच्छन सम्पन्न नारियां ही घर की देखभाल कर सकतीं हैं।

और की भूख न जाने, अपनी भूख आटा साने।

अ०— जब अपने भूख लगे तो खाने का प्रबन्ध करे और जब दूसरे को भूख लगे तो उसकी चिन्ता ही न करें।

और की फुल्ली देखे आपन ढेंढर न देखै।

अ०— दूसरे का ही ऐब देखने में आता है अपना ऐब कोई नहीं देखता है। अपनी आँख की फूली तो न देखे और दूसरे की आँख का ढेंढर देखकर हँसे।

औरत और ककड़ी की बेल की बाढ़ जल्दी बढ़ती है।

अ०– कहते हैं कि औरत और ककड़ी की बाढ़ जल्दी ही आती है। कहा है लड़कियाँ घास की तरह बढ़तीं हैं।

औरत का खसम मर्द, मर्द का खसम रोज़गार।

अ०– जिस तरह से स्त्री का पति मर्द होता है, वह पुरुष के सहारे रहती है, उसी प्रकार से पुरुष का सहारा उसका पेशा, काम, रोजगार, व्यापार होता है।

औरत रहे तो आप से, नहीं तो जाय अपने बाप से।

अ०– स्त्री अपने आप से अपना कर्म, धर्म रखती है, वर्ना वह अपने बाप के साथ भी दुर्व्यवहार कर सकती है। दूसरे अर्थ में स्त्री अपने आप ही रह सकती है वर्ना उसका बाप भी उसे संभाल नहीं सकता है।

और दिन तो खीर पूड़ी पर्व के दिन दाँत निपोरी।

श०– पर्व–त्यौहार। दाँत निपोरी–शर्मिंदा होना।

अ०– हमेशा तो पकवान बना–बना कर खाय और समय पर जब बनाना चाहिए तो सिर पर हाथ रखकर खीस दिखा के बैठ जाय कि अब क्या करूँ? इसलिए भविष्य की चिन्ता अवश्य रखनी चाहिए ताकि आस–पास हँसी का न हो।

औसर चूकी डोमिनी, गावै ताल, बेताल।

अ०– जब किसी काम में देर हो जाती है तो काम बिगड़ने की संभावना रहती है। समय की चूकी डोमिनी, जिस प्रकार जल्दबाज़ी में क्या से क्या गाना गा डालती है उसे बस गाने की धुन चाहिए। इसलिये समय से किया गया काम सही व स्वाभाविक होता है। यानी–अच्छा समय हाथ से निकल जाने पर वह शोभा काम की नहीं होती जो होनी चाहिए। कहावत समयानुसार कार्य से संबंधित है।

" अं "

अंटका बनिया देय उधार।

कहावत जातिगत स्वभाव पर कही गई है।

अ०– बनिया सीधे–सीधे, कभी भी पैसा या उधार लिया गया रुपया नहीं देता है, जब तक कि उसका मामला कहीं फँस नहीं जाता है। इसका तात्पर्य यह भी है कि वह अपना सौदा बहुत गाढ़ पड़ने पर उधार देता है।

अंगनू करै बजाजी, नौ गज लावै, दस गज बेचै तबौ न घर के राजी"

श०– अंगनू–नाम है, बजाजी–कपड़े की दुकानदारी करना, राजी–खुशी।

कहावत एक घुमक्कड़, लापरवाह लड़के के ऊपर कही गई है।

अ०– अंगनू नामक लड़का बाज़ार जाकर नौ गज़ कपड़े का थान लाकर खींच तानकर उसे दस गज बनाकर बेईमानी करके बेचता है। तब भी घरवाले उससे प्रसन्न नहीं रहते हैं। उससे दो अर्थ निकलते हैं एक तो उसकी नालायकी पर पहले से ही नाराज हैं, प्रसन्न नहीं होते हैं। दूसरे काम शुरू भी किया तो बेईमानी का पैसा कमाने की भावना बनाने पर दुकानदारी क्या चलती?

अंधे को अंधेरे में बड़ी दूर की सूझी।

जब कोई काम या कोई बात पहुँच के बाहर की हो तो उसमें सोचना या कल्पना करना ही हाथ आता है।

अ०– अंधे को अंधेरा या उजाला क्या? कहावत के माध्यम से बात मूर्खों पर भी कही जा सकती है जब कोई विवश इंसान लंबी–चौड़ी बातें करने लग जाता है।

अंधरे के आगे रोवै दीदा कै पत खोवै" या आपन दीदा खोवै।

श०– दीदा–आँख, पत–लज्जा, इज्ज़त।

यह कहावत तब कही जायेगी जब बात सुनाने वाले के ऊपर कोई भी असर न पड़े। कहा है "जहाँ बेदर्द हाकिम हो वहाँ फरियाद क्या करना?" उसी तरह से किसी अंधे आदमी के सामने रोने से, दुःखदर्द सुनाने से सिवाय बेइज्ज़ती के और कुछ भी न मिलेगा। मूर्ख की तुलना भी अंधे से की गई है। यानी कि मूर्ख, नीरस, कठोर, व्यक्ति से कोई मन की व्यथा, चिन्ता कहने से कोई लाभ नहीं होता।

जिस प्रकार जीवन के अनुभव के बिना पुस्तकें बेकार होती हैं उसी प्रकार अंधा जो दृष्टि विहीन है, उसके सामने रोना न रोना बेकार है। वह किसी भी प्रकार की सहानुभूति कैसे व्यक्त कर सकता है?

अंधा बाँटै सिन्नी अपने कुल का टोय।

श०– सिन्नी–प्रसाद, कुल–खानदान, वंश, परिवार, टोय–टटोल कर।

यह व्यंग्यात्मक कहावत आज के युग के लिये बड़ी महत्वपूर्ण है। यह उन ऊंचे–ऊंचे पदाधिकारियों के प्रति चरितार्थ की गई है जो अधिकारी बनते ही स्वार्थवाद, भाई–भतीजावाद का अवसर अपनाने लग जाते हैं। अपने अधिकारों को स्वजनों तक ही सीमित रखना चाहते हैं। कहावत काफी हद तक स्वार्थवाद को सिद्ध करती है। यानी अंधा सिन्नी बाँटता है तो वह हाथ से टटोल–टटोल कर अपने परिवार वालों को देता है।

अंटकी कै खाय, उटकी कै न खाय।

श०– अंटकी–जिससे गरज निकलती हो, जहाँ रोक हो, उटकी–ताना देने वाला, उटकने वाला, खिलाकर जो खाने पर व्यंग्य बोले।

अ०– यदि किसी से अपनी गर्ज अंटकी हो उसके यहाँ चाहे खाना खा ले मगर जो भोजन कराकर खिलाने का ताना दे, उसके यहाँ भोजन कभी नहीं करना चाहिए।

अंधा न्योतै, दुइ जन साथ।

श०– न्योतै–खाने का निमंत्रण देना या पाना।

अ०– कहावत उस समय लागू होती है जब किसी ऐसे व्यक्ति से कार्य कराना हो जिसका सहायक भी बुलाना पड़े क्योंकि वह बिना अपने सहायक या साथी के आ न पायेगा। इसलिये अंधे को बुलाने में दो व्यक्तियों को खिलाना पड़ेगा।

अंधी पीसै कुत्ता खाय।

जब कोई वस्तु बर्बाद होती रहती है। इस लापरवाही से ख़राब होती है जैसे उसकी कोई कीमत ही न हो। उसकी बर्बादी को कोई देखने वाला न हो तो यह कहावत कही जाती है। वक्त का फायदा उठानेवाले पर भी यह कहावत कही गयी है।

अ०– अंधी अनाज पीसती जा रही है और कुत्ता बड़े आराम से उसे खाता जा रहा है क्योंकि कोई इस बर्बादी को देखने वाला तो है नहीं। बेसहूर व मूर्ख स्त्रियों पर भी कहावत लागू होती है जो अंधी की ही तरह देखकर भी अनदेखी रहती हैं या जिसके घर वस्तुएँ लगातार बर्बाद होती रहें और परवाह करने वाला कोई न हो।

अंतरे खोतरे डंड करे,
ताल नहाय, ओस मा परे
दइव न मारै अपुयै मरै।

श०– अंतरे–खोतरे–बीच–बीच में, नागा देकर, डंड–कसरत। कहावत स्वास्थ्य विषयक है। स्वास्थ्य के प्रति क्या–क्या हानिकारक है।

अ०– रोज़–रोज़ कसरत न करके कभी–कभी कसरत करना, तालाब का नहाना तथा ओस में सोना, हानिकारक है। कहा है कि उसे भगवान् नहीं मारते वह स्वयं अपने लिये हानि उत्पन्न करता है। उसे ईश्वर दंड नहीं देते, वह खुद ही अपनी मौत बुलाता है। किसी काम में मनमानी करना।

अंत भला सो सब भला।

कहावत सभी के ऊपर कही गई है। साधारणतः लोगों के भाग्य पर कही गयी है।

अ०– जिस आदमी का अंत–समय अच्छा होता है वही सबसे अधिक भाग्यवान माना जाता है।

अंवरा क खाब औ बड़े क समुझाउब
बाद मां मिठात।

कहावत छोटों के प्रति कही गई है जो शिक्षाप्रद व सिद्धान्तवादी है।

अ०– बड़ों की सीख, उनका समझाना, किसी बात का बताना, सीख के समय तो बहुत बुरी लगती हैं मगर बाद में जैसे आँवला खाने के समय तो कडुवा, कसैला लगता है किन्तु बाद में मीठा लगता है, उसी तरह बड़ों की सीख बाद में लाभकारी व सुखदाई होती है। शुरू में बच्चों को बहुत बुरी लगती है, मगर समय के साथ सभी बातें उन्हें अपने प्रति लाभकारी लगने लगती हैं। प्रारम्भ में अच्छे कार्यों को करने में कठिनाई मालूम होती है। परिणाम मिलने के बाद कार्य में लगन बढ़ती है।

अंधरू बरै पंड़रू चबाय।

श०– अंधरू–अंधा, पंड़रू–भैस का पड़वा।

जब कोई किसी की विवशता का लाभ उठाने लग जाता है तो यह कहावत कहते हैं।

अ०— अंधा मजबूर आदमी तो किसी तरह से जानवरों को बाँधने के लिये रस्सी बना रहा है और पड़वा उसे चबा–चबा कर बर्बाद करके कमजोर बना रहा है। यानी कमजोरी व विवशता का लाभ दुनिया उठाना चाहती है।

अंधे के हाथ बटेर लाग।

कहावत व्यंग्य में कही जाती है जब किसी आदमी को कोई कीमती वस्तु अनायास या बिना परिश्रम के हाथ लग जाय तो कहावत कही जाती है।

किसी अंधे आदमी के हाथ बटेर लग गया है। भला अंधे के लिये बटेर की क्या कीमत? न वह देख सकता है न उसे लड़ा सकता है न उसकी कीमत लगा सकता है। यानी अयोग्य व्यक्ति को योग्य (अच्छी) वस्तु का बिना परिश्रम के मिलना।

अंधेर नगरी चौपट राजा,
टका सेर भाजी, टका सेर खाजा।

श०— भाजी–साग–तरकारी इत्यादि, खाजा–एक प्रकार की मिठाई।

कहावत किसी कुव्यवस्था के प्रति उद्धृत की गई है।

अ०— ऐसा चौपट राजा होना कि सारे नगर भर में अंधेर, मचा रखा हो, जिसके राज्य में छोटे–बड़े, ऊंच–नीच, अच्छे–बुरे में कोई अंतर ही न हो, पूरे राज्य भर में अव्यवस्था ही अव्यवस्था फैली हो। मिट्टी में, सोने में कोई अंतर ही न हो, टका सेर साग है तो टका सेर मिठाई बिक रही हो। चौपट राजा के प्रति गोस्वामी जी ने कहा है–

जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी,
सो नृप अवसि नरक अधिकारी।

अंधे मां काना राजा।

जहाँ पर एक ही जैसे कई मूर्ख, अनपढ़, बुद्धिहीन लोग इकट्ठा हुए हों वहाँ पर यदि एक दो भी कुछ थोड़ी बुद्धि वाले मिल जाते हैं तो वे उनके मध्य सम्मानित होते हैं। अनपढ़ या अयोग्य व्यक्तियों के मध्य कम पढ़े या थोड़े योग्य व्यक्ति का आदर होना।

अ०— जहाँ पर सभी अंधे ही अंधे हों, उनमें एक भी काना हुआ तो उसकी कम से कम एक आँख तो है, इसीलिये वह राजा कहा जायेगा। उसी को लोग सम्मान देने लग जाते हैं। यानी बड़े–बड़े मूर्खों में कम मूर्ख ही पंडित माना जाता है।

अंडा सिखवै बच्चे को, चीं–चीं मत कर।

जब छोटे लोग अपने से बड़ी उम्र वालों को बड़ी–बड़ी बातें बताने और सिखाने लगते हैं तो व्यंग्य में कहा जाता है।

अ०— अंडा भला क्या बच्चे को सिखायेगा कि चीं–चीं मत कर, मगर वह बच्चे को अपने से कम बुद्धिमान समझता है। वही कहावत है– ''छोटे मुँह बड़ी बात''। बच्चे भी यह जानते हैं कि आज यह मुझे सिखा रहा हे कल को स्वयं चीं–चीं करेगा।

अंड़े–बच्चे बाप के मां चरवाहिनी।

हमारे समाज में पुरुषों की प्रधानता है। पुरुष प्रधान समाज होने के कारण प्रत्येक वस्तु पुरुष की थाती है। बच्चे जो माता के गर्भ में नौ मास रहते और माता के तमाम कष्टों के बाद पैदा होते हैं, उन पर भी माता का नहीं पिता का अधिकार रहता है। मां जो पालन–पोषण करती है उसका काम केवल बच्चे पैदा करना तथा पालना ही है। पुरुषों ने अपने स्वार्थ के लिए सभी सामाजिक नियम बनाये हैं, कहावत इसी पर है।

अ०— बच्चे बाप के हैं। मां तो एक नौकरानी है, जो बच्चों की देखभाल करती है। बच्चे पैदा करती है। उनकी देखभाल करती है बस यही उसके जीवन नियति है।

अंजुरी भर पानी मां बूड़ि मर।

जब किसी व्यक्ति को लज्जित करना होता है या उसकी गलतियों का आभास कराना होता है तो कहते हैं।

यानी– अंजुरी भर पानी में डूब मरो अर्थात् तुम्हें डूबने भर को भी पानी नहीं मिलेगा। तुम्हारे डूबने को एक अंजुरी पानी ही काफी है।

दूसरे अर्थ में पानी उतरने के कारण, डूब जाने को भी पानी न मिलेगा यानी डूबने के लिये भी तुम्हें कोई सहारा न मिलेगा। इतने पातकी हो कि अपनी इज़्ज़त मिट्टी में मिलाकर रख दी।

अंगूर खट्टे हैं।

आदमी को जब कोई मनचाही वस्तु प्रयास के बाद भी नहीं मिलती तो वस्तु की तरफ़ से उसकी अनिच्छा हो जाती है।

अ०– अरे जाने दो, अंगूर खट्टे थे। वह वस्तु बेकार थी, किसी काम की नहीं थी।

अंधरे कै लाठी एक्कै दांव हेरात।

एक बार धोखा खाने पर, या हानि उठाने पर, आदमी उस कष्ट से सचेत हो जाता है। किसी ने इसी पर कहा है– "दूध की जली बिलार मट्ठा फूँककर पीती है।"

अ०– अंधे आदमी की लाठी एक ही बार खोती है फिर तो वह उसे अपनी जान के पीछे रखता है। यानी एक बार धोखा खा लेने के बाद आँखें खुल जाती हैं।

अंधाधुंध दरबार मां गदहा पंजीरी खाय।

श०– अंधाधुंध–अंधा समय, जहाँ कुछ भी अच्छा–बुरा दिखाई न दे रहा हो। क्या हो रहा है, क्या नहीं, क्या होना चाहिए, क्या नहीं। गदहा–गधा, पंजीरी–भगवान् सत्यनारायण का प्रसाद, जब किसी भी स्थान की रीति–रिवाज, रहन–सहन चाल–चलन बिगड़ जाती है, उलटी गंगा बहने लगती है तो यह कहावत कही जाती है।

अ०– घर हो, समाज हो, राज्य हो, यदि दुर्व्यवस्था ही फैली हो तो अनाचार का कहना ही क्या है? उस राजा के दरबार में गधे पंजीरी खाते हैं, जो भक्तों, श्रद्धालुओं को मिलनी चाहिए वह गधे खा रहे हैं। विद्वानों को आदर मिले न मिले और असज्जनों, मूर्खों को आदर दिया जाये।

अंधरे सियारे क पिपरै मेवा।

श०– पिपरै–पीपल का फल।

जब किसी भूखे, गरीब व्यक्ति को मामूली सी वस्तु मिल जाय और वह उसकी भूरि–भूरि प्रशंसा करके खाता है, तो कहावत उद्धृत होती है।

अ०– जैसे अंधे सियार को जंगली फल मिलता है तो वह बड़े मन से, प्रसन्न हो कर खाता है। उसी प्रकार से किसी विवश भूखे आदमी को जो कुछ भी मिलता है वही उसके लिए अमृत बन जाता है।

अंग्रेजी फूल तो देखा जाय,
ना यह महकै, ना गंधाय।

उपरोक्त कहावत अंग्रेज़ी व अंग्रेज़ियत के ऊपर व्यंग्य में उद्धृत की गई है। गंधहीन विलायती फूल के माध्यम से विलायती नारी पर प्रहार किया गया है।

अ०– इस अंग्रेज़ी फूल में न तो सुगंध है, न दुर्गंध है, बस देखने मे ज़रूर सुंदर है। इसी प्रकार से विलायती नारी भी देखने में तो बहुत सुंदर होती है, मगर गुणहीन होती है। इनके गुण–दोष समझ में ही नहीं आते हैं। भारत देश की रीति नीति में और अंग्रेजी नीति–रीति में ज़मीन आसमान का अंतर होता है।

अंधरे की जोइया क राम रखवार।

श०– जोइया–स्त्री, रखवार–रखानेवाला, देख–भाल करने वाला।

जब किसी विवश, कमज़ोर या किसी तरह से परेशान आदमी के बच्चे, पत्नी का कहीं से किसी प्रकार से सहारा नहीं मिल पाता है तो कहते हैं उसका भगवान उसका मालिक है।

अ०– जो अंधा, मजबूर, अपाहिज है, उसकी स्त्री का भी भला ईश्वर करता है, वही उसका रक्षक होकर सामने आता है।

बुरे का अंत बुरा।

जब कोई मनुष्य अपने जीवन में हमेशा बुरा काम करता रहेगा, अनर्थकारी कार्य करेगा तो अंत में उसका फल उसे बुरा ही झेलना पड़ेगा।

अंधा सिपाही, कानी घोड़ी,
विधि ने खूब मिलाई जोड़ी।

कार्यकर्ता तथा सहयोगी जब दोनों एक ही समान होते हैं तो कहावत लागू होती है।

अ०– सिपाही अंधा है, घोड़ी कानी है, अंधे काने दोनों का जोड़ खूब भगवान ने मिलाया है।

अंधा बांटय रेबड़ी फिर–फिर अपने को देय।

मनुष्य के अंदर भी जब स्वार्थ तथा अपनेपन की भावना निहित होती है तो कहते हैं।

अ०— अंधा रेवड़ी बाँटते समय अपने को ही बार–बार देता है, इसी प्रकार जब हम किसी स्वार्थी व्यक्ति को देखते हैं, तो अंधे की कहावत याद आ जाती है। यानी अपने स्वार्थ व लालच में दूसरों को भूल जाना, अपनों को याद रखना।

अंधी बाटै जेवरी, पीछे बकरा खाय।

जब किसी की मजबूरी का अनुचित लाभ किसी को उठाते देखा जाता है, तो यह कहावत याद आ जाती है।

श०— जेवरी–रस्सी, बाटै–बंटना, ऐंठ–ऐंठकर रस्सी बनाना।

अ०— अंधा रस्सी बँट रहा है, उसे पीछे से बकरा खाता चला जा रहा है। अंधे को क्या पता कि उसकी सारी मेहनत व माल का नुकसान हुआ जा रहा है। परिश्रम कोई दूसरा करे फल कोई अन्य प्राप्त करे।

अंधरे क, आंधर कहे तो बुरा मानिगा।

मनुष्य में कुछ कमियां तथा कमजोरियां होती हैं, जिन्हें कह देने पर मन को कष्ट हो जाता है। सत्य होते हुए भी कटु सत्य कभी नहीं कहना चाहिए। वह भी ऐसा सत्य जिसमें विधिगति हो।

अंधे क राह बतावै घर तक पहुंचावै।

बात सही है कि क़िसी विवश की मदद करे तो उसको आवश्यकतानुसार पूरी मदद करनी पड़ जाती है।

अ०— जब अंधे को सहारा देकर कुछ दूर तक लाये ही हैं तो उसे फिर घर तक पहुंचाना पड़ ही जाता है, ताकि वह अपने निश्चित स्थान तक तो पहुंच ही जाय। यानी किसी विवश इंसान की मदद पूर्णरूप से करनी चाहिये। कहावत उसी पर लागू की गई है।

अंधरे के सील, निरबंसिया के दाया नाहीं होतै।

श०— सील–संकोच, निरबंसिया–जिसके लड़का नहीं होता है, दाया–दया।

कहावत विशेष रूप से निर्वंशी व अंधे आदमी की कठोरता पर चरितार्थ की गई है।

अ०— अंधे आदमी को शील तथा निःसंतान को दया नहीं आती है। अंधा किसी को खरा–खरा सुना देता है तथा निःसंतान भी किसी पर करुणा, दया नहीं दिखाता है।

अंग्रेज की नौकरी, बंदर का नचाउब बरबरै आय।

कहावत दूसरे की गुलामी करने पर या विदेशियों के व्यवहार पर कही गई है।

अ०— जैसे बंदर को नचाने में खुद को भी नाचना पड़ता है वैसे ही विदेशियों के यहां काम करने में भी चूका सो गया। तुरंत नाराजी पैदा हो गई।

अंग्रेजी राज, तन को कपड़ा, न पेट को अनाज।

अ०— दूसरे के राज्य में हमेशा ही बंधन होता है। वैसे ही अंग्रेजों के राज्य में जब हम पराधीन थे न तन ढ़कने को कपड़ा मिल पाता था और न पेट भर खाना नसीब होता था।

अडुवा बैल जी का बवाल।

श०— अंडुवा–अड़जाने वाला, गादर, जी–जान, बवाल–परेशानी, झंझट।

अ०— जो बैल अड़ने वाले होते हैं उनसे बड़ी ही परेशानी होती है।

अंडा सेवै कोई, बच्चा लेय कोई।

जब महेनत कोई करे और फायदा दूसरा उठाये तो कहावत कही जाती है।

अ०— अंडे को सेता पालता कोई है और बच्चा कोई लेता है। कोयल कौवे के बच्चे को अपना समझकर पालती है मगर जब बच्चा बड़ा हो जाता है तो वह कौवों के साथ उड़ जाता है।

अंदर तो छूत नहीं, बाहर की दुर–दुर।

कहावत पाखंडी लोगों पर कही गई है।

अ०— कुछ लोग बनावटी छुआछूत का विचार करते हैं। अंदर से तो कहीं कुछ नहीं मानते और बाहर से दूर हटो–दूर रहो कहा करते हैं। पाखंड करना।

अंधी गइया, धरम कै रखवाली।

कहने का तात्पर्य यह कि दीनहीन, अन्धे, अपाहिज की सेवा करने में अत्यधिक पुण्य मिलता है।

अ०— अंधी गाय धर्म की रक्षा करने वाली होती है। उसकी सेवा से विशेष पुण्य मिलता है।

अंधा का चाहै दुइ आँख।

अ०— जिसे जिस वस्तु की आवश्यकता होती है वह उसे ही चाहता है। अंधा आदमी निश्चित ही आँखें चाहेगा।

अंधा गावै, बहरा बजावै।

दो के दोनों ही मूर्ख और काम करने की प्रक्रिया से वंचित रहने वालों के प्रति कहावत कही गई है।

अ०— अंधा गाना गाता है तो बहरा बजाता है। अंधे के पास तो गाने की शक्ति होती भी है मगर बहरा क्या सुन पायेगा कि वह क्या और किस गाने को गा रहा है।

अंधा गुरु बहिर चेला, मांगे हड़ दिखावै बहेड़ा।

अ०— चेला बहरा है और गुरु अंधा है वह हड़ मांगता है तो चेला बहेड़ा देता है।

अंधा बकुला कीचड़ खाय।

अ०— जो मजबूर व विवश होता है, वह सदैव दुःख ही भोगता है। बगुला अंधा होने के कारण ताल का कीचड़ खाता है। विवशता आदमी को भी कुछ का कुछ करा सकती है।

अंधा बेईमान, बहिरा भगवान।

अंधे के ऊपर एक कथा है जिससे वह बेईमान कहा गया है। कथा है— "एक अंधा किसी भोज में गया, तो उसने सोचा कि लोग दोनों हाथों से खाते होंगे। अतः वह दोनों हाथों से खाने लग गया। फिर सोचा कि लोग थाली में मुंह लगाकर खाते होंगे तो वह थाली में मुंह लगाकर खाने लगा। उसके बाद उसने सोचा कि लोग थाली भी अपने घर ले जाते होंगे तो वह थाली लेकर चलने लगा तो नौकर ने उसके हाथ से थाली लेकर कहा— अंधा बेईमान। तब से यह उक्ति चल पड़ी। बहिरा सुनता कब है, वह किसी की बुराई नहीं सुन सकता इसलिये कहावत कही गई है कि बहरा किसी की अच्छाई–बुराई, दुःख–सुख कुछ भी नहीं सुनता इसलिये वह समदर्शी यानी भगवान् का रूप है। इसलिए अंधा बेईमान, बहिरा भगवान होता है।

अंधी नाऊन आइने की तलाश।

आवश्यक वस्तु के लिये खोज करना। अंधे को शीशे का क्या काम है?

अ०— नाइन अंधी है तो उसके लिये शीशा किस काम का? मगर नहीं, बिना काम की चीज़ ढूँढ़ रही है? जो वस्तु जिस मनुष्य के काम की न हो उसकी तलाश व्यर्थ है।

अंधे ने चोर पकड़ा, दौड़ो मियां लंगड़े।

कहावत हास्यास्पद है। न तो अंधा चोर पकड़ सकता है और न लंगड़ा दौड़ ही सकता है। जब आदमी किसी विशेष काम के लायक नहीं होता कि वह ऐसा काम कर सके तो कहावत कही जाती है।

अ०— अंधे ने चोर पकड़ा लंगड़े मियाँ दौड़ आओ।

अंधेरी रात जेवरी क साँप।

अ०— जब अंधेरा हो तो वहाँ पर कुछ का कुछ समझ में आता है। यदि रस्सी पड़ी हो तो वह भी साँप मालूम होती है। कहावत भ्रामक स्थिति पर कही गई है।

अंधरन जोतै घुमाय कै, जब चढ़ा हवै कतिकहवा ताव।

श०— कतिकहवा–कार्तिक की खेती का ताव।

अ०— कार्तिक माह में खेती का समय होता है तो खेत जोतने के ताव में अंधे बैलों को ही घुमाफिरा कर जोतता हूँ। यानी जब काम की गर्ज हो तो जैसे भी हो वैसे ही काम निकालना।

अंधे रानी, अंधे राजा,
वइसे मंगइया, वइसे दाता।

अ०— स्पष्ट है।

" आँ "

आँधी के आगे, बेना कै बतास नहीं लहतै।

कहावत बलवान और निर्बल के मुकाबले के ऊपर कही गई है। जब बलवान के सामने कमज़ोर, निर्बल की नहीं चलती तो कहावत लागू की जाती है।

अ०— जब ज़ोरों की आँधी चलने लगती है तो उसके सामने बेना जैसी वस्तु की क्या बिसात है? जैसे सूर्य के सामने दीपक को कौन सम्मान दे पायेगा।

आँख न दीदा काढ़ै कसीदा।

कहावत व्यंग्य में कही गई है। जो आदमी विवश हो, मजबूर हो, जिसमें काम करने की क्षमता न हो फिर

भी वह काम करने बैठ जाय तो लोकोक्ति का प्रयोग होता है।

आँख फूटै पीर जाय।

कहावत किसी व्यक्ति के अतिशय कष्ट से किसी भी तरह छुटकारा पाने पर कही जाती है।

अ०– आँख से प्रिय वस्तु मनुष्य के लिये और क्या हो सकती है किन्तु जब उसमें बराबर पीड़ा, चुभन, किरकिराहट हो तो कहते हैं कि फूट जाती तो यह असह्य पीड़ा तो समाप्त हो जाती।

आंधर बैल घुमाय के जोते।

अंधे बैल को घुमा फिरा कर जोतना चाहिए ताकि उसको रास्ता भारी न मालूम पड़े। मन न घबराये, इसी प्रकार से किसी विवश मजबूर व्यक्ति को बहला–बहला कर काम निकालना चाहिए।

आँख क काजर काढ़ि लेत।

कहावत किसी अत्यन्त ही कुशल चोर के लिए कही गई है जो बड़ी बारीकी से काम निकलता हो।

अ०– और तो और यदि आँख में काजल लगा है तो उसे भी बड़ी चतुरता से निकाल लेता है। सामान कहीं भी रखा हो वह ऐसा चोर है कि सुरक्षित स्थान से भी सामान उठा लाने में कोई परेशानी नहीं होती।

आँख देखै साखी देय।

श०– साखी–गवाही, प्रमाण।

कहावत आँखों देखी घटना के प्रति कही गई है।

अ०– आँखों देखी घटना का ही बयान देना चाहिए। जो बात अपनी आँख से न देखो उसकी गवाही नहीं देना ही ठीक होता है। किसी बात का पुष्टीकरण सही होना चाहिए।

आँख ओट, पहाड़ ओट।

जब कोई प्रियजन आँखों से दूर चला जाता है, चाहे वह बहुत थोड़ी ही दूर पर गया हो तो यह कहावत कही जाती है या विरोधी व्यक्ति से दूर रहने की कामना में कही जाती है।

अ०– जब आँख से दूर कोई चला गया तो चाहे पास ही क्यों न हो किंतु न देख पाने की विवशता से लगता है मानों पहाड़ जैसी दूरी हो गई हो। न देख पाने का कष्ट चाहे पास हो चाहे दूर हो दोनों ही बराबर हैं।

आँख फूट, भवानिन फोरा।

अपने भाग्य तथा कर्मों का दोष न दे करके, सारा दोष दूसरे के मत्थे मढ़ना।

अ०– आँख फूटनी ही थी मगर सारा दोष भवानी पर आया। यानी देवी निकली थी इसी कारण आँख फूटी।

आँख क आंधर, गांठ का पूर।

श०– गांठ–अंटी, पास में।

कहावत मूर्ख पैसे वाले के ऊपर कही गई है या पैसे का उपयोग सुख, शान्ति से न कर पाने की विवशता पर।

अ०– आँख के अंधे हैं। एक तरफ से विवशता है तो दूसरी तरफ से मजबूत हैं। यानी धन से भरपूर होना मगर पैसे का भरपूर लाभ न उठा पाना।

आँधर अढ़वै बहिर ओनाय।

कहावत विसंगतियों के समय कही जाती है।

यानी अंधा किसी बात की आज्ञा देता है, काम करने वाला भी बहिरा है तो वह सुनेगा क्या? अतः दोनों का काम पूरा न होना। जब दो आदमी दोनों ही काम न करने वाले होते हैं तो व्यंग्य में कथनी कही जाती है– "तेऊ तइसे, तेऊ तइसे।

आँधर गुरु बहिर चेला, मांगै आम देखावै ढेला।

उपरोक्त कहावत की भांति यह भी है। कुछ का कुछ करना।

अ०– गुरु अंधा होने के कारण अपने मतलब की वस्तु मांगने पर यानी वे आम मांगते हैं तो चेला बहिर होने के कारण गुरु को ढ़ेला दिखा रहा है।

आँख एक्कौ नाहीं कजरौटा नौ ठी।

श०– कजरौटा–लोहे की वह वस्तु है जिसमें काजल बनाकर बच्चे की आंख में लगाया जाता है।

कहावत व्यंग्य में कही गई है।

अ०– सामान खूब हो मगर, इकट्ठा करके सामान का क्या करे जब उसके इस्तेमाल की वस्तु ही न हों। जैसा

कि कहा गया है कि आँख तो एक भी नहीं और कजरौटा नौ–नौ ठू रखा हो। क्या करे उसे लेकर? जैसे कान में सोना पहनने का स्थान ही न हो तो सोना या जेवर बनवाकर क्या करें? कहा है "कान मां लहरै नहीं सोना लै के क्या करै? इसी प्रकार बिना आँख के कजरौटे का क्या काम है?

आँख मां सुअर का बार जमिगा है।

किसी बहुत ही एहसान फरामोश कठोर व्यक्ति, को देखकर कहावत कही गई है जिसके साथ लोग तमाम भलमनसाहत करते जा रहे हों और वह सब मेटता जा रहा हो। जिसके शील, संकोच, लाज, लिहाज सब कुछ खत्म हो चुका हो तो कहते हैं।

अ०– इसकी आँखों में सुअर का बाल जो बहुत कड़ा होता है, वही जम गया है। चाहे जितना भी जान दे दे कोई, इसके लिए सब बराबर है।

आँख क अंधा, नाम नयन सुख।

कहावत नाम की विडंबना पर कही गई है। यहाँ पर नाम गुण के विपरीत है।

अ०– अंधे विवश आदमी को भला क्या आँखों का सुख मिल सकता है? एक तरफ अंधा दूसरी तरफ आँख का सुख पाना असंभव है। यानी स्थिति नाम के विपरीत होना।

आँख झंपी माल यारों का।

श०– झंपी–पलक गिरना, यारों–दोस्तों।

जब कोई आदमी दोस्त होने के बाद भी पलक गिरते ही वस्तु को ले कर चल दे। तनिक चूक हुई नहीं कि आँख में धूल झोंक कर सामान लेकर चलता बने, तो कहावत कही जाती है।

अ०– पलक गिरी नहीं कि माल दोस्तों का हो गया। ऐसे लोग इसी ताक–झांक में रहते हैं कि मौका लगते ही हाथ साफ कर दें।

आंगन मां कीच काच, भीतर तू अउब्या ना।
ताजे कै जून नाहीं, बासी तू खाब्या नां।।

श०– कीचकाच–कीचड़, गंदा, जहाँ मिट्टी पानी सना गंदा हो जून–समय वक्त।

यह लोकोक्ति घर आये मेहमान को खिलाने पिलाने व स्वागत–सत्कार में जब टाल–मटोल करना हो तो कहते हैं।

अ०– घर का स्वामी घर आये मेहमान से कहता है कि मेरे आंगन में तो इतना कीचड़ है कि तुम भीतर आ न सकोगे तथा यह समय ऐसा है कि ताज़ा खाना तो मिलेगा नहीं क्योंकि ताजे खाने का समय नहीं है और बासी खाना तुम खाओगे नहीं। तो इस तरह की परिस्थितियों में स्वागत कैसे किया जाये?

आटा उड़ि जाय मुल पाटा न फूटै पावै।

श०– पाटा–चक्की (जांत) का एक हिस्सा होता है।

कहावत घर गृहस्थी संबंधित व्यावहारिक है तथा शिक्षाप्रद भी है। यह पारिवारिक प्रेम तथा एकता के प्रति उद्धृत की गई है।

अ०– पहले के ज़माने में गांव में स्त्रियां घर में ही जांते से अनाज पीस कर आटा तैयार कर लेती थीं। उसी पर एक तरह की चेतावनी में कहा गया है कि आटा भले ही उड़ जाय किन्तु चक्की का पाटा (एक भाग) भी नहीं फूटना चाहिए। यानी आटा तो उड़ने पर फिर भी पिस जायेगा मगर पाटा फूटने पर आटे का साधन ही समाप्त हो जायेगा। आशय यह है कि घर में लड़ाई–झगड़ा, मन मोटाव तो सभी के यहाँ होते ही रहते हैं मगर कहीं प्रेम रूपी पाटा फूट गया तो पूरा परिवार ही बिखर जायेगा। किसी ने कहा है:–

बन में फूटै सब कोई खाय,
घर में फूटै घर खा जाय।

उपरोक्त पंक्ति फूट के प्रति कही गई है। यानी कि फूट (कांकर) बन में फूटती है तो सारा घर परिवार खाता है और घर की फूट सब घर में फैलती है तो सारा घर का घर ही बर्बाद हो जाता है। आपसी मतभेद घर का सत्यानाश करके रख देता है। इसी पर कहावत में कहा गया है कि घर में फूट का कोई स्थान नहीं होना चाहिए।

आंधर परसै घर धरान।

श०– परसै–देना, भोजन परोसन, धरान–संभाल कर देना, धरना

अ०— जब कोई आदमी बहुत सावधानी के साथ काम करता है या बहुत धीरे– धीरे टटोल–टटोल कर काम करता है तो कहावत कही जाती हैं कि क्या अंधे की तरह बहुत सँभाल–सँभाल कर परोस रहे हो। थमा–थमा कर परोस रहे हो।

आँधी के बाद पानिव आवत।

कहावत आशावादी है। कोई आदमी जब दुःखी या निराश हो जाता है तो उसे सान्त्वना दी जाती है।

अ०— जब आँधी आई है तो पानी बरसने के भी आसार हैं, पानी भी बरसेगा। यानी एक शुभकार्य के आसार दिखाई पड़े हैं तो दूसरा शुभ कार्य भी सामने आयेगा।

आँख में अंजन, दाँत में मंजन,
नित कर, नित कर, नित कर
नाक में उंगली, कान में लकड़ी
मत कर, मत कर, मत कर।

इस को लोग बहुधा कहावत के रूप में कहकर बच्चों को सीख देते हैं जो स्वास्थ्य के प्रति लाभकारी है।

अ०— कहा गया है कि आँख में अंजन, सुरमा तथा दाँत में मंजन, दातून रोज–रोज करना चाहिए तथा नाक में अंगुली, कान में लकड़ी(कान खोदना) कभी नहीं चाहिए। इससे नुकसान होता है।

आँख कान मां चार अंगुल क फरक होत।

कहावत बहुत मार्के की है। यों तो कहने को वाकई में कान तथा आँख में चार ही अंगुल का अंतर है मगर सोचिये तो कि आँखों देखी घटना और कानों सुनी बात में कितना ज्यादा अंतर है? आँखों देखी बातों की दिमाग में सही प्रक्रिया होती है और कानों सुनी बातों की प्रक्रिया गलत व बहुमुखी होने के कारण सही तथ्य की जानकारी नहीं हो पाती है। इस पर एक कथा है–

"एक दिन गुरु जी ने चेले से कहा– "कान कौवा ले गया"। चेले को अपने गुरु के ऊपर अति विश्वास व श्रद्धा थी। वह बिना कान को टटोले कौवे के पीछे–पीछे दौड़ा तो गुरु ने चेले को समझाया क़ि ऐसा अति विश्वास ठीक नहीं, पहले कान तो टटोला होता। जहाँ चार अंगुल का फर्क था वहाँ न देखकर कौवे के पीछे दौड़ना कहाँ की अक्लमंदी थी?

आँख से दूर, तो दिल से दूर।

कहावत उदासीनता की दशा में कही जाती है। जो चला गया वह दूर ही दूर होता चला जाता है।

अ०— आँखों से दूर चला गया हो वह धीरे–धीरे मन से भी दूर होता चला जाता है। धीरे–धीरे उसकी याद आनी कम होती जाती है।

आँख के बदी, भौंह के आगे।

श०— बदी–बुराई, नुकसान, भौंह–आँख के ऊपर का हिस्सा।

अपनों के द्वारा की गई बुराई अपने स्वजनों के ऊपर ही उतरती है। दूसरे अर्थ में बुरी नियत हमेशा सामने फलती है।

अ०— आँख फूटी तो उसका नुकसान आँख की भौं को ही देखना पड़ा तथा जब नियत खराब होती है किसी की तो उसका परिणाम हमेशा सामने आता है।

आँख के नीचे नाक, सूझे क्या ख़ाक।

यह कहावत उस समय व्यंग्य में कही जाती है जब किसी को बेवकूफ बनाना हो और लोग उसकी बातों में आकर उसकी नकल बिना सोचे समझे करने लग जायं। इस कहावत पर एक कथा है जो इस प्रकार से है– "एक नकटे ने तमाम नकटे बनाने की सोची– तो उसने कहना शुरू किया "मुझे भग़वान के दर्शन होते हैं"। उस पर लोगों ने कहा कि भाई हमारे भी तो आँख है। मुझे भगवान् क्यों नहीं दिखाई देते? तो नकटा बोला "तुम्हारी आँखों के नीचे नाक जो लगी है।" इस पर लोगों ने अपनी नाक कटवानी शुरू कर दी मगर उन्हें भगवान् के दर्शन नहीं हुये। तो उन लोगों ने भी अपने को मूर्ख बना देखकर कहना शुरू कर दिया कि नाक की वजह से ईश्वर–दर्शन नहीं होता। अंत में धीरे–धीरे तमाम नकटों की जमात इकट्ठी हो गई। कहावत इसी पर है।

अ०— आँख के नीचे नाक है तो खाक दिखाई दे भगवान्?

आँख फड़कै दहिनी, मइया मिलै कि बहिनी।
आँख फड़के बाईं, भइया मिलै कि सांई।।

कहावत अंग के फड़कने के प्रति कही गई है।

अ०– यदि दाहिनी आँख फड़कती है तो मां–बहिन से भेंट होती है और यदि बांई फड़कती है, तो भाई या पति से मुलाकात होती है।

आँखि आय कि बटन।

अ०– जब किसी को कोई वस्तु दिखाई न दे या जिसकी बहुत छोटी आँखें होती हैं तो कहते हैं

अ०– आँखें है कि कुर्ते में टांकने वाली बटन हैं।

आँखों की सुइयां निकारय क बाकी है।

जब कोई काम थोड़ा सा ही बाकी रह जाता है तो कहावत कही जाती है। यह कहावत लोक विश्वास पर आधारित है। वह है– "कहा जाता है कि यदि आटे की मूर्ति बना कर उसमें अपने शत्रु का नाम ले–ले कर सुइयां चुभोई जायं और उस मूर्ति को उसके मरने की कामना करके मरघट में रख आया जाये तो वह शत्रु सुइयों की चुभन की पीड़ा की यातना की तरह ही तड़प–तड़प कर मरेगा। अगर कोई मंत्र द्वारा सुइयों को अलग करना जानता है तो अलग करके जीवित भी किया जा सकता है। कहते हैं कि किसी ने उपर्युक्त रीति से किसी को मार डाला। उस मृत पुरुष की स्त्री जादू जानती थी। पति को जीवित करने के लिये उसने सारी सुइयाँ निकाल डालीं। आँख की बाकी थीं तभी कार्यवश बाहर जाना पड़ गया। उस समय नौकरानी ने आँखों की सुइयां निकाल डाली। उस आदमी ने जीवित होते ही देखा तो नौकरानी थी। उसने समझा कि उसी ने प्राण बचाये और उसके साथ विवाह कर लिया।

आँखि चलै भौं चलै अउर चलै पपनी,
सात रंग कै बात करै, वइ सही कुटनी।

श०– पपनी–पलकें, कुटनी–जो दूसरों के घर में झगड़ा लगाती हैं, जो घर के आपस के लोगों में या बाहर जाकर इधर की बात उधर किया करती हैं।

अ०– कहावत कुटनी स्त्रियों के स्वभाव को देखकर कही गई है कि जिन नारियों की बात करते समय आँख, भौहें, पलकें बार–बार झपकती रहती हैं तथा एक ही बात को कई प्रकार से बढ़ा–चढ़ा कर झूठ–सही किया करती है वही कुटनी हैं।

आँधर आँख पावै तो जानै कि डिढ़ियार भये।

श०– डिढ़ियार–आंखवाला, देखनेवाला।

जब किसी आवश्यक, उपयोगी वस्तु के प्रति आदमी निराश होता है तो कहावत कहता है। मनचाही वस्तु को पा जाने की प्रबल कामना होना।

अ०– जब अंधा आँख पावे तो समझे कि हाँ अब मुझे मेरे काम की वस्तु मिली है। जब तक वस्तु न मिले तब तक क्या विश्वास कि वस्तु मिल ही जायेगी।

" क "

कटही कुकुरि मरकही गाय,
ओकरे घरे कबौ ना जाय।

अ०– कहावत कुकुरी और गाय के माध्यम से किसी ऐसी चिड़चिड़ी, क्रोधी, बात–बात में बिगड़ जाने वाली स्त्री के ऊपर कही गई है जो स्वभाव से कटु, नीरस, व्यवहार–कुशल नहीं है। जो दूसरों को अपने घर आया देखकर एकदम उबल जाती तथा भला–बुरा कहने लग जाती है। ऐसी ही तमाम स्थितियों का सामना करने पर लोग कहावत कहकर उनकी स्वभावगत आदतों को चरितार्थ करते हैं।

यानी– जिसके घर काट खाने वाली कुतिया हो तथा मारने वाली गाय हो उसके घर कभी नहीं जाना चाहिए।

कम खाना गम खाना अच्छा होत।

कहावत का तात्पर्य स्वास्थ्य तथा संतोष से है।

अ०– कम भोजन करने से स्वास्थ्य ठीक रहता है तथा कभी किसी बात पर चुप रहने पर काम बन जाता है। क्रोध पाप कर मूल, जेहि बस जन अनुचित करहिं, परहिं बिस्व प्रतिकूल।

कर भला तो हो भला।

कहावत शिक्षाप्रद होते हुए व्यावहारिक है। लोग बच्चों को सीख देते हैं।

अ०– दूसरों का भला करने पर अपना भी भला होता है।

कसाई क सुखवन पड़वा नहीं चबात।

श०– कसाई–जो जानवरों का वध करते हैं, सुखवन–जो वस्तु धूप में सूखने के लिये डाली जाती है, पड़वा–भैंस का बच्चा।

कहावत से किये गये पाप के पैसे में बू आती है जिसकी बू आदमी तो क्या जानवर तक को ज्ञात हो जाती है।

अ०— कसाई के द्वारा बलि किये गये पशुओं से जो कमाई के पैसे से अनाज आकर धूप में सूख रहा है उसे भैंस का पड़वा इसलिये नहीं चबाता कि उसमें उसे अपने बलि किये गये साथियों की बू आती है, जिससे एक ऐसा भय उत्पन्न हो जाता है कि उसे खा कर कहीं मैं भी न बलि पशु बन जाऊँ।

अतः पाप के पैसे से तथा हिंसक व्यक्ति से आदमी तो क्या पशु भी घबड़ाते हैं किन्तु आज स्थिति दूसरी है। पेट की क्षुधा वही अन्न खाने पर विवश कर देती है।

कबो गाड़ी नाव पै, कबो नाव गाड़ी पै।

कहावत समय के उलट–फेर पर कही गई है। कहा है–

पाँव थर्राते थे जिनके सामने जाते हुए
देखा उन्हीं को झोपड़ी में ठोकरें खाते हुए।

समय–समय की बात होती है। धूप छांव की तरह परिस्थितियां मनुष्य के जीवन में आती–जाती रहती हैं।

अ०— कभी गाड़ी नाव पर तो कभी नाव गाड़ी पर चलती है। जीवन में उलट–फेर लगा रहता है। यही संसार का नियम है। इसी का नाम दुनिया है।

कर नाहीं तौ डर केकै।

जब किसी पर झूठा दोषारोपण किया जाता है तो दोषी स्वयं को निरपराधी साबित करने के प्रति कहता है–

अ०— जब कोई अपराध किया नहीं तो भय किस बात का?

कथनी–करनी मां भेद होत।

श०— कथनी–कहनी, करनी–काम करने में, भेद–अंतर।

कहावत बकवास करने वाले, गप्पें हांकने वाले के ऊपर तथा करनी करने वाले के ऊपर है।

अ०— किसी कार्य को करने और कहने में बड़ा अंतर होता है। कहना जितना आसान है उतना ही काम का करना कठिन है। महात्मा कबीरदास के शब्दों में–

कथनी मीठी खांड़ सी, करनी विष की लोय,
कथनी तज करनी करै, विष से अमृत होय।

कहे आम करे इमली।

जब आदमी की अपनी बात की कोई कीमत न हो, वह वचनवद्ध न हो तो उसे इस कहावत में उतारना पड़ता है।

अ०— ऐसे आदमी की बात का क्या विश्वास जो कहे कुछ और करे कुछ और।

कहता बाउर–सुनता सरेख चाही।

श०— बाउर–पागल, सरेख–चतुर, अक्लमंद।

किसी व्यक्ति को जब किसी से कोई भेद की बात लेनी हो तो वह केवल बता करके चुप हो जाता है। सुननेवाला चुपचाप रहस्य समझ लेता है।

इस प्रकार की स्थितियों के आने पर कहावत चरितार्थ होती है।

अ०— बात करने वाला पागल सरीखा बोलता जाय और सुनने वाला इतना होशियार हो कि सारी बातें चुपचाप सुनता चला जाय। कहने वाले की बातों को गहराई व गंभीरतापूर्वक सुनना।

कउड़ी पइसा पास नहीं, घर मां भूजी भाँग नहीं।

श०— कउड़ी–पुराने ज़माने में कौड़ियों का सिक्कों की तरह प्रचलन था, भूजी भांग–घर में दरिद्रता होना।

कहावत अर्थ की कमी पर उद्धृत की गई है। जिसके पास पैसे रुपये की कमी होती है तो लोग कहते हैं–

अ०— घर में कुछ भी न होना, पास में एक फूटी कौड़ी भी न हो।

कउने भतारे ढपहरवा काजर लगाई?

श०— भतारे–पति, अपना आदमी, ढपहरवा–ढेर सा, मोटा सा काजल आंखों में लगाना।

भारतीय नारी का जीवन हमेशा पति के ऊपर निर्भर रहा है, इसलिये पारिवारिक, सामाजिक–व्यावहारिक किसी भी रूप से कहीं भी वह अपमानित हुई या किसी के द्वारा उसे कुछ भी अपमान मालूम हुआ तो वह अपने पति को ही दोषी बनाती है। इसलिये कहावत दूसरे पर नाराज़ होने पर या पति के प्रति भी किसी निकम्मेपन या दूर रहने की कमी को लेकर कही गई है।

अ०— चूँकि नारी सारा श्रृंगार पति के लिये करती है तो कहा गया है कि किस भतार पर हम मोटा सा काजल लगाकर बैठें? कौन है मेरा करने धरने वाला? किस बल–बूते पर मैं साज–सिंगार करूं? किसकी कमाई पर घमंड करूं?

ककरी क चोर कटारी से नाहीं मारि जातें।

जब किसी छोटे से अपराध पर कड़ी से कड़ी सज़ा लोग देने लग जाते हैं तो कहावत उद्‌धृत की जाती है।

अ०— ककड़ी जैसी छोटी व खाने की वस्तु की चोरी पर चोर को बर्छी–भाले से नहीं मारा जाता। उसे भारी दंड देना उचित नहीं है।

कही तो बाप कुत्ता खाय, नाहिं तौ माई मारी जाय।

श०— बाप–पिता, माई–माता।

जहाँ पर सत्य बात को कहना भी बुरा और छिपाना भी बुरा होता है वहाँ पर स्थिति बड़ी गम्भीर हो जाती है। समझ में नहीं आता कि किया क्या जाय। ऐसी ही ऊहापोह वाली स्थिति में कहावत कही गई है।

अ०— पति से रुष्ट पत्नी ने घर में बकरे के बजाय कुत्ते का मांस बना दिया। यह बात लड़की को मालूम थी, माँ ने जब भोजन परोसा तो लड़की से न रहा गया। वह बार–बार कहती–यदि सही बात बता दूँ तो माँ मारी जायेगी और नहीं तो बाप कुत्ता खायेगा। इस प्रकार से कई बार कहने पर पिता की समझ में जब आ गया तो वह खाना छोड़कर उठ गया।

कटी अंगुरी पै पेसाब नहीं कै सकतें।

कहावत किसी अत्यन्त कंजूस, निर्दयी, नीच व्यक्ति के प्रति कही गई है जो किसी की मुसीबत में काम नहीं आता।

अ०— अगर किसी की उँगली कट जाय और नीच आदमी से कितना ही कहा जाय कि इस चोट पर पेशाब कर दो तो चोट ठीक हो जायेगी तो वह ऐसा भी नहीं कर सकता। उस समय उसे अपनी पेशाब भी बहुत मूल्यवान लगेगी।

ककही क ओट जेठ जी का पर्दा।

श०— ककही–कंघी, जिससे सिर के बाल झाड़े जाते हैं, ओट–आड़ छिपाना, जेठ–पति के बड़े भाई।

कहावत तथाकथित पर्दे के ऊपर उद्‌धृत की गई है। यानी पर्दे का मज़ाक बनाया गया है।

अ०— किसी स्त्री के जेठ उसके बाल झाड़ते समय अचानक आ गये तो उसने झट कंघी को मुँह के सामने लगाकर पर्दा कर लिया। कंघी से भला क्या पर्दा होता। मगर घटना, स्थिति को गंभीर बताकर कहावत में व्यंग्य किया गया है।

करमहीन खेती करै, बरधा मरै कि सूखा परै।

श०— करमहीन–अभागा, सूखा–अकाल।

कहावत किसी आदमी के दुर्भाग्य पर है।

अ०— अभागा आदमी खेती करने चला तो या तो बैल ही मर गया या अकाल की दशा आ गई। गोस्वामी जी के शब्दों में 'करमहीन नर पावत नाहीं'' यानी भाग्य के खोटे आदमी को हर प्रकार की आफत घेरे रहती है।

कब मरी बुढ़िया, कब आई आँसू।

किसी काम को समय पर न करके समय बीत जाने पर करना अशोभनीय होता है। किसी ने कहा है "बेसमय की शहनाई नहीं बजाई जाती"। वैसे ही असमय में रोने से क्या लाभ? या कोई भी कार्य असमय करना मूर्खता है।

अ०— बुढ़िया कब मरी रोना अब आया? उस रोने का कोई मतलब नहीं है।

करम लिखी मकुनी, तो कौन खवावै खीर।

श०— करम–भाग्य, मकुनी–जौ चने की मिली रोटी, खीर – दूध, चावल शक्कर से बनी वस्तु।

कहावत भाग्यवादी है। कभी–कभी अचानक मिला हुआ भोजन उठ जाय या कोई लाभ होने वाली घटना बीत जाय तो लोग अपने भाग्य को कोसते हैं।

अ०— जब भाग्य में जौ–चने की रोटी ही खाना है तो उसको खीर कौन खिला सकता है?

ऊधो करमन की गति न्यारी हो।

यह कहावत भी भाग्यवादी है। पंक्ति सूरदास जी की है किंतु लोग बहुधा कहावत के रूप में इस्तेमाल करते हैं। लोग दूसरों के भाग्य तथा अपने भाग्य की जब आलोचना करते हैं तो कहते है।

अ०— भाग्य की बात ही अनोखी होती है जिसके आगे दुनिया में कभी किसी की नहीं चल पाई।

करम–धरम उठाय के ताखे पै धै उठा।

आस्थावादी जब लोगों को अधर्म, अनाचार, अनैतिकता करते देखते हैं कहते हैं।

ककरी क ओर भा, गोड़–मूड़ टेढ़ भा।

ककड़ी के खेत में या कहीं भी ककड़ी को कड़ा या टेढ़ा–मेढ़ा देखकर कहावत कह दी जाती है। कहावत लाक्षणिक है।

अ०— ककड़ी यदि दोनों धरों से टेढ़ी होने लगे तो समझो कि उसकी अब समाप्ति है।

"करमवा तौ आगे–आगे चलतै"।

श०— करमवा–भाग्य।

कहावत भाग्य को लेकर कही गई है जो निराशावादी है।

अ०— कहीं किसी स्थान पर जब कोई बात बनते–बनते बिगड़ जाती है या कोई अच्छी बात रुक जाती है, यानी किसी भी तरह का नुकसान होने पर कहते हैं।

अ०— किया क्या जाय, किसी भी काम को करने चलो तो भाग्य पहले ही अपना रंग–ढंग दिखा देता है। कोई न कोई बाधा कहीं न कहीं से अचानक आ पहुँचती हैं। अतः कर्म के आगे कुछ होने नहीं पाता।

कौवा बड़ेरी नाहीं बइठतै।

श०— बड़ेरी–गांव में जो खपड़े से घर छाये होते हैं, उनका ऊपरी भाग।

कौवा बैठने से संपन्नता का मतलब लगाया जाता है। जूठन गिरने पर ही कौवे आते हैं।

अ०— "कहावत आर्थिक दृष्टि से विशेष रूप से ग़रीबी फिर कंजूसी के प्रति कही गई है। खाली आंगन कौवा बैठने का सवाल ही नहीं उठता। जब तक घर के अंदर जूठन–छूटन न गिरा होता, कुछ सुखवन या खाने–पीने की वस्तु न पड़ी होगी तब तक कौवा क्यों बैठेगा?

करिया अच्छर भइस बराबर, मात्रा जइसे पड़वा।

कहावत मूर्खों, बेवकूफ़ों, निरक्षर लोगों के प्रति कहीं गई है।

अ०— मूर्खों के लिये अक्षर भैंस और मात्रा पड़वे की तरह है। अनपढ़ों के ऊपर व्यंग्य किया गया है।

कपड़ा पहिरै तीन बार,
बुद्ध, बीफै, सुक्रवार,
हारे, खांगे इतवार।

कहावत कपड़ा नया किस–किस दिन पहनना चाहिए उसी पर कही गई है क्योंकि पहले के ज़माने में लोग हर नई वस्तु को दिन समय देखकर पहनते थे। आज तो हमारे देश की हर अच्छी, शुभ परंपरायें पाश्चात्य परंपराओं से समाप्त होती जा रही हैं। कहावत पुरानी भारतीय रीति–नीति पर कही गई है।

अ०— नया कपड़ा बुद्धवार, वृहस्पतिवार, शुक्रवार को पहनना चाहिए। कभी–कभी आवश्यकता के समय इतवार को भी पहना जा सकता है।

कन्या धान मीन लौ, जहां चाहै तहां लौ।

श०—कन्या–क्वार माह, मीन–माघ माह का प्रथम पक्ष, लौ–कटनी।

कहावत घाघ कवि की खेती सम्बन्धी है।

अ०— क्वार मास के शुरू में धान बो देना चाहिए और माघ लगते ही काट लेना चाहिए।

कहा होय बहु बाँहे, जोता जाय न थाहे।

श०— बाहें–कई बार, थाहें–गहरा करके जोतना।

अ०— खेतों को कई बार जोतने से क्या होता है, यदि गहराई से न जोता गया। गहराई से जोतने से ज़मीन के नीचे की दूब मोथा निकल आता है तथा मिट्टी मुलायम हो जाती है। भुरभुरी मिट्टी से बीज निकलने में आसानी हो जाती है।

कच्चा खेत न जोतै कोई,
नाहीं बीज न अंकुर होई।

श०— कच्चा खेत–गीला खेत, अंकुर–जमते बीज से जो शुरू–शुरू पत्तियां निकलती हैं।

अ०— खेत को गीला रहने पर जोतने से न तो खेत ही ठीक से तैयार होता है न बीज ही जम पाता है।

कहै जाट जाटिनी से, इही गांव में रहना।
मूस बिलैया लै गई तो हाँजी–हाँजी कहना।।

श०— जाट–पश्चिमी उत्तर प्रदेश में बसने वाली एक

जाति होती है। हाँजी–हाँजी – बात में बात मिलाना।

कहावत खुशामद, हाँ–हुजूरी पर कही गई है। यानी दूसरे की बात को मानना।

अ०– जाट कहता है अपनी पत्नी से कि इसी गाँव में, इसी स्थान पर रहना है तो यदि कोई नुकसान भी हो, यदि बिल्ली चूहे ले जाय तो चुपचाप हां में हां मिलाते रहना।

कजवा न बुतवा हिलाये दुइनो चुचवा।

श०– कजवा–काम, बुतवा–बूता, जांगर, चुचवा–स्तन।

कहावत किसी ऐसी स्त्री को देखकर कही गई है जो काम कुछ करती नहीं, बस इधर–उधर अपने दोनों दुधुआ को हिलाती घूमती है। फालतू में घूमने वाली महिला के प्रति व्यंग्य किया गया है।

अ०– न कोई काम है, न काज है और न काम करने का जांगर है। फालतू में बेकार अपने को बड़ी कामकाजी दिखाने के लिए चारों ओर घूमते रहना।

करिया काछी धोरे (झबरे) कान,
इन्हय छांड़ि नहिं बेसह आन।

श०– काछी–कसने वाली वस्तु। यहाँ पूंछ से मतलब होगा, धौरे–सफेद, झबरे–लंबे कान वाले ।

कवि घाघ के कथनानुसार बैल काली पूँछ तथा सफेद कान का झबरे बाल वाला ही खरीदना चाहिए।

कथरी ओढ़ि परागे गईं, कब से बूढ़ा भगतिन भईं?

जो भाव–भक्ति, पूजा–पाठ से बहुत दूर रहने वाला हो तो उसके लिए अचानक तीरथ–व्रत का समाचार मिलता है तो कहावत याद आ जाती है।

अ०– भला बूढ़ा माई कब से भगतिन हो गईं जो वे कथरी ओढ़ के प्रयागराज तीर्थ करने चली गई। इसी तरह किसी आदमी को जब ऐसे किसी काम से मतलब न रहे और वह कर बैठे तो आश्चर्य तथा व्यंग्य में लोग कहावत कह ही डालते हैं।

कत्थर गुद्दर सोवै, मरजदी बाबू रोवै, या मरजादा बैइठी रोवै।

श०– कत्थर–कथरी जो पुराने कपड़ों को सीकर मोटा सा बिछावन बना लिया जाता है, गुद्दर–गुदड़ी, जो पैरा लंबा–लंबा सिलकर बिछाने के काम में लाते हैं। दोनों ही वस्तुएं गांवों में गरीब लोग जाड़ों में ओढ़ने तथा बिछाने के काम में लाते हैं, मरजादी–मर्यादा में रहने वाले, बड़े आदमी, रोवय–झंखे या रोयें।

कहावत जाड़ों के दिनों में किसी को नज़ाकत में कम कपड़े पहने हुए कांपता हुआ देखकर कहते हैं। झूठी शान में रहने वाले लोगों को कहा जाता है कि कथरी–गुदड़ी ओढ़ने वाले लोग जो झूठी शान नहीं दिखाते, उन्हें जो मिल गया पहन लिया, वे अच्छे रहते हैं, मगर ठसक लगाने वाले चाहे कितनी भी सर्दी खा जायं मगर वे अपनी लिफाफाशाही में रह जाते हैं। इसके लिये एक छोटी सी कथा है।

"एक बार एक ठाकुर साहब एक नाई को साथ लेकर अपनी सुसराल गये। नाई को जो भी मिला वह ओढ़ कर सो गया मगर ठाकुर साहब अमीरी की शान में रात भर बिना कुछ ओढ़े ही जाड़े में जगते रह गये। तो किसी ने झूठी दिखावटी शान पर कहा कि कथरी गुदड़ी वाले सो रहे और मर्जादा बाबू बैठे पछता रहे हैं।

कउनी चक्की क पीसा खात।

कहावत किसी मोटे आदमी पर कही गई है।

अ०– इतना ज्यादा मोटाई चढ़ी है, आखिर किस जाँते, चक्की का पीसा आटा खा कर इतने मोटे होते हो।

करमहीन नर पावत नाहीं।

श०– करमहीन–भाग्य न होना, अभागा, नर–आदमी।

कहावत भाग्यवादी है। ऐसे लोगों के ऊपर उद्धृत की गई है जो जीवन में बार–बार असफलता या हानि उठाने के बाद भी नहीं संभल पाते हैं।

अ०– इस दुनिया में सब कुछ है। भाग्यवानों के लिए सभी साधन इकट्ठा हो जाते हैं। न होने वाले काम भी होने की स्थिति में आ जाते हैं किन्तु अभागे तथा निष्क्रिय व्यक्ति के लिए सभी दुर्लभ हो जाते हैं। उसे प्राप्त होती हुई वस्तु भी अप्राप्त हो जाती है अथवा स्वर्ण अवसर दुर्भाग्य में बदल जाते हैं।

कबहूँ पाँड़े घिव पूरी कबहूँ कटक उपवास।

श०– कटक–एकदम, उपवास –भूखे रहना।

कहावत संयोग के ऊपर कही गयी है।

कहावत पांड़े के प्रति भोजन पर कही गई है किन्तु

समयानुसार यह कहावत कई–कई स्थितियों में कही जाती है। यानी किसी ने कभी ढ़ेर सा पैसा ख़र्च कर दिया कभी ऐसा मौका लगा कि पास में एक पैसा भी नहीं है। कभी किसी को ज्यादा दे–ले दिया, कभी पानी पीने तक को भी न पूछा। तमांम तरह की स्थितियों में कहावत का रूप सामने आता है। समय–समय की बात होती है, जैसा समय हो।

अ०– कभी तो पांड़े घी पूड़ी खाते हैं और कभी लगातार उपवास ही उपवास हो जाता है।

कबौ छठ उपवास, कबौ सत्तर बायन।

श०– छठ– छः दिन, ज्यादा दिन तक, सत्तर बायन–ढेर सा सामान का मिलना, बायन– जो वस्तु किसी दूसरे के यहाँ से किसी उत्सव के उपलक्ष्य में पास पड़ोसियों को आपसदारी में मिठाई–पकवान के रूप में भेजते हैं।

कहावत का मतलब है कि कभी स्थिति ऐसी कि ढेर सा पकवान खाने को मिल गया और कभी ऐसी कि खाने को कई–कई दिनों तक लाले पड़ गये।

अ०– किसी दिन तो कई दिनों तक फाका ही फाका करना और कभी ऐसा भोजन खाने को मिल गया कि तमाम पकवान पूड़ियों का ढ़ेर लग गया।

कहिया पूत जनम्या, कहिया बाजी ढोल?।

श०– कहिया–कब, पूत–पुत्र, बेटा, लड़का, जनम्या–पैदा हुए, ढोल–बजाने का वाद्य।

कहावत व्यंग्य में किसी लड़के की नालायकी पर कही गई है।

अ०– भला तुम्हारे होने में भी सोहर (बच्चे के होने में जो गाना गाया जाता है) हुआ था? कब पैदा हुए कब ढोल बजी? कब किस घड़ी में इतनी खुशियां मनाई गईं। यानी इन खुशियों के बदले कुछ तो लायक पैदा हुए होते तुम्हारा जन्म तो मालूम ही न हुआ कि कब हुआ, कब उत्सव मनाये गये।

कतहुं सिधाइउ ते बड़ दोसू।

श०– सिधाइउ–सीधा, सिधाई, दोसू–गलती।

लोगों के स्वभाव के प्रति कहावत प्रयोग करते हैं।

अ०– कहीं–कहीं पर अधिक सिधाई भी हानिकारक होती है। जैसे किसी ने कहा है सीधी अंगुरी घी नहीं निकरत या "सीधे क मुँह कुत्ता चाटय"। अतः अधिक सिधाई ठीक नहीं होती। जैसे "वक्र चन्द्रमा ग्रसइ न राहू"।

कहो मेहमनउ पहिंती मीठि बा हो?
संइया बरजि गये, तू कस बोल्यू हो?
तू तो बोल्यू, वे तो बोलीं, मै तो नाहीं बोले हो।

कहावत हास्य–व्यंग्य के साथ ही एक कथा पर आधारित है जिसमें स्त्रियों की चपलता प्रकट होती है।

अ०– पुराने ज़माने में पर्दा का रिवाज़ था। किसी के घर कोई मेहमान आये तो मालिक अपने घर के अंदर खाना खिलाने के समय अपनी तीनों पत्नियों को बोलने से मना कर दिया था। जब मेहमान खाने बैठे तो सबसे बड़ी पत्नी ने अंदर चौके से पूछा–कहो मेहमान दाल अच्छी बनी है? इतने में दूसरी पत्नी बोली– अरे ! सइँया मना कर गये बोलने को तुम कैसे बोलीं? उसके बाद तीसरी पत्नी बोली– तू बोली, वे बोली, मैं तो नहीं बोली। इस प्रकार :; बारी–बारी तीनों स्त्रियां मेहमान के आगे बोलती रहीं। घर के मालिक को बहुत लज्जित होना पड़ा।

कहूं क ईंट कहूं क रोड़ा,
भानमती ने कुनबा जोड़ा।

भानमती का पिटारा बहुत मशहूर है। अतः जब तमाम कबाड़े की वस्तुएं इकट्ठा करके कोई रखता है तो कहावत कही जाती है।

अ०– कहीं से कुछ सामान–कहीं से कुछ सामान, जोड़ बटोरकर भानमती का पिटारा बन गया है। ईंट पत्थर के रोड़े को बटोर कर तमाम दुनिया भर के सामानों को इकट्ठा करना। भानमती का पेटारा कहलाता है।

करिया बादर जिव डेरवावै,
भूरा बादर पानी आवै।

अ०– कहावत बादलों व वर्षा के ऊपर कही गई है। यानी जब काला बादल उठता है तो उससे भय लगता है मगर पानी भूरे बादलों से ही बरसता है।

कसर रही थोड़ी, जीन, लगाम, घोड़ी।

जब किसी काम में कार्य व सामान इकट्ठा करने में कुछ ही वस्तु बाकी हो तो या कार्य में कुछ कसर हो तो कहावत कही जाती है।

अ०— कार्य करीब–करीब पूरा हो चुका है, बस थोड़ी सी कमी और रह गई है यानी घोड़ी और घोड़ी की जीन, लगाम और मिल जाय तो यात्रा शुरू हो जाय।

कहाँ राजा भोज, कहाँ गंगू तेली।

दो व्यक्तियों की असमानता में कहावत का पुट दिया जाता है। तुलना में जब बहुत अधिक अंतर हो तो कहते हैं।

अ०— राजा भोज और गंगू तेली की क्या बराबरी? दोनों में ज़मीन आसमान का फर्क है। इसीलिये कहा गया है कि समानता (मैत्री) हमेशा बराबर वालों में करनी चाहिए जिसमें कहीं कुछ तो बराबरी का दर्जा होता।

करत–करत अभ्यास से जड़मति होत सुजान।

श०— अभ्यास–किसी काम को बार–बार करना, जड़मति–मूर्ख, सुजान–बुद्धिमान, समझदार।

अ०— रोज़–रोज़ के कार्य करने व अभ्यास करने से बेवकूफ से बेवकूफ आदमी भी अक्लमंद हो सकता है।

कपास चुनाई, खेती खनाई।

अ०— कपास (रूई) की खेती खर पतवार बीन कर करनी चाहिए तथा अनाज की खेती करनी हो तो खेत की गोड़ाई खूब करनी चाहिए।

कलियुग मां दुइ भगत हैं, बैरागी औ ऊंट।
वे तुलसी बन काटहीं ये पीपर किये ठूंठ।।

श०— बैरागी–साधु, महात्मा, ठूंठ–सूखा पेड़।

कहावत व्यंग्य में कही गई है ऐसे भक्तों को देखकर जो ढोंग के पीछे वस्तुओं की हानि कर देते हैं।

अ०— इस कलियुग में दो ही ऐसे भक्त हैं यानी एक वैरागी साधु, दूसरा ऊंट। एक जो वैरागी भक्त हैं वे तुलसी वृक्ष का बन काट रहे हैं। दूसरे ऊंट जो पीपर के पेड़ की पत्तियां खा–खा का पेड़ ही नंगा करके रख देते हैं।

कर्क के मंगल होय भवानी,
दैव भूलि बरसैंगे पानी।

अ०— कवि भड्डरी का कहना है कि यदि मंगल ग्रह कर्क लग्न में होंगे तो पानी खूब बरसेगा। कहावत ग्रह–लग्न संयोग पर कही गई है।

कल का पानी गरम है, चिड़िया नहाये धूरि,
अंडा लै चींटी चलै, तौ बरखा भरपूर।

श०— कल–नल, धूरि–मिट्टी, भरपूर–अच्छी तरह।

अ०— कहावत वर्षा के प्रति उद्धृत की गई है। यानी यदि नल का पानी गरम है, गौरैया धूल, मिट्टी में खूब नहाती है और चींटी अपना अण्डा लेकर दूसरी जगह जा रही है तो समझो कि पानी खूब बरसेगा।

कउवा से कउवा का बच्चा सयान होत।

अ०— पिता से पुत्र को अधिक चतुर देखकर कहावत कहते हैं कि अपने बाप से भी ज्यादा होशियार कौवा का बच्चा होता है।

कपड़ा फाट गरीबी आय।

गरीबी के भी तमाम लक्षणों में कपड़े की कमी, कपड़े का फटा पहनना भी होता है।

कखरी माँ बिटिया गाँव गोहार।

या

बगल में लल्ला गाँव में हल्ला।।

श०— कखरी–बग़ल, गोहार–चारों ओर खबर करना।

कहावत उस समय कही जाती है जब कोई वस्तु पास ही में रखी हो किंतु उसकी खोज घर के इर्द–गिर्द चारों ओर होने लगे।

अ०— बिटिया तो गोद में लिये हैं और चारों ओर बिटिया की खोज चल रही है। कहावत में फूहड़पन भी कम नहीं है, पास की वस्तु को स्वयं न खोजकर गाँव भर में शोर मचा दे। जैसे– **"कान न टोवै कौवे के पीछे दौड़े"**।

कमाऊ पूत से गँवाऊ बेटा बनिगे।

घर के लड़के हों या बाहर के जब कभी नालायकी करने से बाज़ नहीं आते या अच्छे खासे काम करते–करते साथ–संगत से बिगड़ने लग जाते हैं तो कहावत कही जाती है।

अ०— पूत जो कमाऊ, बड़े लायक थे, वे गंवार पूत बनते चले जा रहे हैं।

करु बहियाँ बल आपनी छाड़ि पराई आस,
जाकै आँगन है नदी सो कस मरत पियास।

कबीरदास के इस दोहे को आमतौर पर लोग कहा करते हैं। जब किसी परमुखापेक्षी को देखते हैं।

अ०— अपनी बाहों में बल करो, दूसरे की आशा छोड़ो, सारे साधन तुम्हारे पास हैं। यानी जिसके आंगन में नदी बह रही हो वह भला कैसे प्यासा मर सकता है? मगर पानी भर लाने की हिम्मत तो करो अपनी भुजाओं में।

कब मरा कब परेत भा।

बहुधा लोग दुष्ट आत्माओं को भला–बुरा कहते हैं। कहावत भी किसी दुष्ट आत्मा का परिचय दे रही है।

अ०— फलां आदमी कब मरा और वह मरते ही प्रेत कब बनकर लोगों को सताने भी लग गया। इतना दुष्ट था कि मरते ही प्रेत बन गया।

कटि के परें वस्त्र बहुरंगा,
गुदा परे मिलै मित्र अभंगा।

श०— कटि–कमर, बहुरंगा–बहुत रंग के।

उपरोक्त कहावत का संकेत छिपकली (बिस्तुइया) गिरने के शकुनापशकुन पर है क्योंकि हमारे भारत देश में बिस्तुइया के गिरने पर शकुन विचार किया जाता है। अतः कहावत छिपकली पतन पर कही गई है।

अ०— कमर पर गिरे तो अनेक प्रकार के रंग बिरंगे वस्त्र पहनने को मिलते है और यदि गुदा पर गिरे तो मित्र से मिलन होता है। ऐसा कवि भड्डरी का कथन है।

कर्कराशि में मंगलवारी ग्रहण पड़ै दुर्भिक्ष बिचारी।

श०— कर्कराशि–ज्योतिष विद्या के अनुसार एक राशि का नाम है।, ग्रहण–सूर्य या चंद्र का दूसरे ग्रह की छाया में कुछ काल के लिए छिप जाना, सूर्य और पृथ्वी के बीच में चंद्रमा का या सूर्य का तथा चंद्रमा के बीच पृथ्वी की छाया का आ जाना। पौराणिक मतानुसार राहु का सूर्य या चंद्रमा को निगलने की कोशिश करना। इस तरह से सूर्य ग्रहण अमावस्या को तथा चंद्र ग्रहण पूर्णमासी को लगता है, दुर्भिक्ष–अकाल।

अ०— कवि भड्डरी का कहना है कि यदि मंगलवार के दिन चंद्रमा कर्क राशि में हो और ग्रहण हो तो निश्चय ही अकाल पडेगा।

कर्क राशि में गुरु जो आवै, सिंह राशि में शुक्र सोहावै।
ताल मां बरसै सीधे धूर, कहूं न उपजै सातौ तूर"।।

कवि भड्डरी कहते हैं— यदि कर्कराशि पर वृहस्पति, सिंह राशि पर शुक्र है तो सभी जल के स्थान सूख जायेंगे, घूल ऐसी उड़ेगी मानो पानी की तरह बरस रही हो और कहीं भी सातों प्रकार के अनाज की उत्पत्ति न होगी। यानी पूरी तरह से अकाल पड़ जायेगा।

कर्क संक्रमी मंगलवार, मकर संक्रमी सनिहि बार।
पन्द्रा मूरतवाली होय देस उजाड़ करै यों जोय।।

अ०— लग्नविचार का फल उपरोक्त कहावत में है।

यदि कर्क की संक्रांति मंगलवार तथा मकर की संक्रांति शनिवार को पड़े तथा १५ मुहूर्त तक रहे तो देश उजड़ जाने का भय है। यह योग बड़ा अनिष्ट कारक होता है।

कउवा चला हंस की चाल तो–
अपनी चाल भूलिगा" या टंगियै फाटिगे।

कहावत व्यावहारिक जीवन पर बड़े उपयुक्त ढंग से कही गई है। हंस की टाँगे लंबी होती हैं और कौवे की टाँगें छोटी होती हैं, तो कौवा यदि हंस की चाल चलेगा तो टाँग फटने के सिवा होगा क्या? लंबे–लंबे डग भरने वाले हंस की ऊंची चाल चलने वाले का मुकाबला कौवा क्या करेगा? मगर कहावत के अनुसार कौवा हंस की चाल चलकर अपनी टाँगें फाड़ लेता है, या अपनी चाल ही भूल गया। जलन और ईर्ष्या में अपना भी नुकसान करके बराबरी या नकल करने वालों के ऊपर कहावत बहुत सही कही गई है।

कर्क जो भीजै कांकरी, सिंह अबोने जाय।
कहै ऐसा भड्डरी, टीड़ी फिरि–फिरि खाय।।

श०— कांकरी–कंकड़ी, अबोनो–बिना बोये, टींड़ी–एक प्रकार का कीड़ा होता है जो फसलों को बर्बाद करके रख देता है।

कहावत ज्योतिष विद्या के अनुसार कही गई है जो खेती विषयक है।

अ०— यदि सावन मास में सूर्य कर्क राशि पर होंगे तो पानी इतना ही बरसेगा कि कंकड़ भीज जाय। जब सिंह राशि पर सूर्य होगा तो सूखा पड़ेगा जो फसल होगी भी उसे कीड़े, जो फसलों के दुश्मन हैं, खा जायेंगे।

कहै आम करै इमली।

अ०— कहय कुछ करय कुछ। जिसकी बात की कोई

कीमत न हो। जो अपनी बात पर अटल न हो।

करकट बुजकट कतराकेस,
राह चलत की लागय ठेस,"
जो केव पूछै जैब कहाँ,
बना काम नसाय तहाँ।

श०– करकट=हथकट, बुजकट=टूटा बर्तन।

कहावत यात्रा के शकुनापशकुन के समय कही जाती है।

अ०– यात्रा के समय कभी भी यदि विकलांग मिले तो यह अपशकुन माना जाता है। हथकटे व्यक्ति, जो बाल बनवाकर आ रहा हो तथा कोई टूटा बर्तन हाथ में लिए, कोई यदि पूछ बैठे कि कहाँ जा रहे हो तो बना काम भी बिगड़ जाता है।

कम खाय, गम खाय, हाकिम–हकीम के पास कबहूं न जाय।

कहावत दो बातों की शिक्षा देती है।

अ०– कमखाना खाने से स्वास्थ्य ठीक रहेगा, इसलिए किसी वैद्य–हकीम के पास कभी न जाना पड़ेगा। उसी तरह से यदि अफसर या किसी भी ऊँचे अधिकारी की डांट सुनकर चुप हो जाय तो उसे कभी भी उससे ऊँचे अफसर के पास न जाना पड़ेगा। किसी ने गम खाने पर एक कहावत कही है "एक चुप हजार बला टालत।"

कढ़े तेल पाखान ते, फूल बेंत के माहिं,
ऊसर में अंकुर बढ़ै, पर खल में गुन नाहिं।

कहावत दुष्टों के प्रति कही गई है।

श०– पाखान–पत्थर, बेंत–एक ऐसा पौधा है जिसमें न फूल लगते हैं, न फल, ऊसर–ऐसी जमीन को कहते हैं जिसमें एक तृन भी नहीं जम सकता है।

अ०– यदि पत्थर से तेल निकले, बेंत से फूल निकले, और ऊसरही धरती से घास–फूस निकले तो भी दुष्ट आदमी में गुण नहीं पैदा हो सकता है।

करनी न करतूत का जनम्या पूत?

श०– करनी–कर्म, करतूत–काम करने की क्षमता, पूत–पुत्र। निकम्मे, कामचोर, नवयुवक को देखकर कहावत कही जाती है।

अ०– ऐ पुत्र, तुम्हारे जन्म को धिक्कार है। न कुछ कर पाते हो, न कुछ कर सकने की हिम्मत रखते हो, क्या दुनिया में जन्मे हो? अर्थात् तुम्हारा पुरुषार्थहीन जीवन व्यर्थ है।

करनी न करतूत, लागै जइसे भूत।

अ०– न काम के न धाम के हैं। देखने में जैसे भूत सी भयावनी शक्ल बनाये घूमते दिखाई देते हो।

कहिन तोहका खरबोटबै,
कहिन–तोहरे नह तौ जामै।

श०– खरबोटब–नाखून से घाव करना, कुरेदना।

जब धमकी देने वाला कमज़ोर हो, वह केवल बंदर घुड़की दे रहा हो तो यह कहावत चरितार्थ होती है।

अ०– किसी आदमी ने किसी को धमकी दी कि हम तुम्हारे ऊपर नाखून के द्वारा हमला करके तुम्हें खरबोटेंगे, तो वह बोला–पहले तुम्हारे नाखून तो हों यानी वह कार्य करने की क्षमता हो।

कलियुग मा पाप के कमाई फलत।

जब कोई किसी को अंधाधुंध घूस लेते, बेईमानी करते, अन्याय, अनाचार करते देखता है तथा उसके बाद भी हर तरह की संपन्नता देखता है तो कहता है।

अ०– इस कलियुग में बेईमानी की कमाई से लोग खूब तरक्की करते हैं। कहावत व्यंग्य में कही गई है।

कभी घनीघना कभी मूठी भै चना, कभी ओभी मना।

श०– घनीघना–ज्यादा से ज्यादा, मूठी–मुट्ठी भर, थोड़ा सा, मना–कुछ भी न मिलना।

कहावत कभी ज्यादा, कभी बहुत ज्यादा और कभी बिल्कुल पैसे न मिलने की बात पर कही गई है जो कभी ग़रीबी, क़भी अमीरी, कभी दरिद्रता को व्यक्त करती है।

अ०– जिसकी आमदनी बंधी नहीं होती, उसकी आमदनी का कुछ भी पता नहीं होता कि कब क्या, कितना मिल जाय। कभी ज्यादा कभी कम, कभी कुछ भी नहीं मिलता।

कउनी मुंह सुरुज निकरा।

अ०– जब कोई बात बहुत दिनों पर या अचानक होती है तो कहते है कि यह बात कैसे संभव हुई? आश्चर्य

मिश्रित व्यंग्य आने वाले के ऊपर किया जाता है कि जैसे आज प्रकृति में कोई बदलाव आ गया हो, मानों सूर्य के उदय होने की पूरब दिशा बदल कर कोई और दिशा हो गई है।

कड़हर भंदई बोओ यार, तब चिउरा की होय बहार।

श०– कड़हर–खूब जोती बोई ज़मीन, भंदई–भादौ माह वाला धान, बहार–मज़ा, आनंद, समय।

अ०– खूब जोत कर ज़मीन में धान बोने पर ही भदई धान बढ़िया पैदा होता है। उसी धान का चिउरा बनाकर खाने में बहुत अच्छा लगता है।

कदम–कदम पै बाजरा, ददुर कुदौनी ज्वार
ऐसे बोवै जो कोई, घर भर भरै बखार।

श०– कदम–एक एक डग, पर, बजरा–एक प्रकार का मोटा अनाज है, ददुर–मेढक, कुदौनी–कुदान जितनी, ज्वार–जोन्हरी, एक मोटा अनाज, कोठार–कोठ जिसमें गल्ला रखते हैं, गांवों में अनाज कोठार में ही रखा जाता है।

कहावत खेती विषयक कही गई है तथा बताया गया है कि खरीफ़ की खेती के बीज किस प्रकार बोये जाते हैं।

अ०– बजरा एक–एक डग पर बोना चाहिए। जोन्हरी बोने की दूरी उतनी ही होनी चाहिए जितनी मेढक कूदता है। ऐसे अनाज बोया जाय तो समझो कि इतना होगा कि घर–कोठार सब भर जायेगा।

कउने खेते कै मुरई अहै।

अ०– जब किसी आदमी की कोई गिनती नहीं होती तो कहते हैं कि वे होते कौन हैं, उनकी कौन गिनती है यहाँ? वेसे ही जैसे मूली की गिनती नहीं होती है कि किस खेत की है ?

कलह बाढ़ि गै देस मां, बहुरुपियन के भेस मां।

श०– कलह–पाखंड, छल–प्रवंचना, इत्यादि–इत्यादि बहुरूपिया– जो तरह–तरह के रूप बनाकर घूम–घूम कर लोगों को दिखा–दिखाकर पैसा कमाने का साधन बनाये रहते हैं।

अ०– कहावत युगीन व यथार्थवादी है। देश के कुवेशधारियों को देखकर ही कहावत चरितार्थ की गई है। आज देश की दशा अत्यन्त शोचनीय है। तरह–तरह के भेषधारी अनेकानेक भेष बनाये घूम रहे हैं। छिपे रूपधारी का असली रूप न समझ में आने के कारण आदमी जीवन से हाथ धो रहा है। जान–माल की सुरक्षा एक दम ख़तरे में है। आम आदमी की ज़िन्दगी का क्षण भर भी ठिकाना नहीं, कब, किस घड़ी क्या हो जाय? कौन आदमी किस वेशधारी आदमी के धोखे में आ जाये।

कहै कबीर अंत की बारी, हाथ झारि के चले जुआरी।

श०– अंत–आखिरी बार, हाथझारि–सब कुछ छोड़कर, जुआरी–जुआ खेलने वाला।

उपरोक्त पंक्ति महात्मा कबीरदास जी की है। दुनिया से जानेवाला जिस समय जाता है या जाने लगता है तो लोग अक्सर उदासीनता के भाव में कह बैठते हैं।

अ०– दुनिया से जाते समय जानेवाला इस तरह से माया, मोह सांसारिकता व वस्तुएं छोड़कर जाता है जैसे कोई जुआड़ी हारकर सर्वस्य गवांकर हाथ हिलाता हुआ घर को चल देता है।

कंमल भंवरा की पंक्ति में नहीं,
सेवार में भी लिपटा सुंदर लगता है।

श०– कमल–कमल का फूल, सेवार–पानी का एक पौधा।

कवि कालिदास जी की पंक्ति है जिससे यह ज्ञात होता है कि सुंदर वस्तु कहीं भी हो शोभायमान होती है।

अ०– कमल का फूल भंवरों की पंक्ति के अतिरिक्त वहां भी अच्छा लगता है जहाँ शैवाल हो।

करे कोई भरे कोई।

कहावत ऐसे समय में कही जाती है जब गलती कोई दूसरा करे और उसका दंड या उसके किये का अभिशाप कोई दूसरा भोगे।

अ०– अपराध कोई और करे उसकी सजा दूसरे के मत्थे जाये।

अति विचित्र भगवंत गति, को जग जाने जोग।

अतः दूसरे की करनी का दंड जब किसी और को भोगना होता है तो यह कहावत चरितार्थ होती है।

करवा चौथ करवारी, ओकरे बरहें दिन दीवारी

ओकरे ग्यरहें दिन डियोठान, डियोठान कै डूढी आग, ओकरे चौथे महीना खेलो फाग।

श०— डियोठान—देवोत्थानी एकादशी। करवाचौथ—कार्तिक मास के प्रथम पक्ष की चौथ को स्त्रियां सुहाग के लिये व्रत करती हैं।

अ०— करवाचौथ के बारहवें दिन दीवाली पड़ती है। दीवाली के ग्यारहवें दिन देवोत्थानी एकादशी पड़ती है, उसमें लोग हड़ाहड़ाई खेलते हैं। सनई को बाँधकर आग लगाकर द्वार—द्वार पर घूमते रहते हैं। कहते हैं— "हड़ा हड़ाई खेलितहन् (साले, बहनाई) का नाम लेकर फंला की बहिन खदेरितहन्" तो उस आग टूटने के चौथे माह होली का पर्व पड़ता है।

कंबल पर जौ परै पिछौरी, जाड़ बेचारा करय चिरौरी।

श०— कम्बल—भेड़ के बालों से बना जाड़े में ओढ़ने का वस्त्र, पिछौरी—चादर, चिरौरी—घिघियाना, प्रार्थना करना।

अ०— कहते हैं जाड़ों में यदि कम्बल के ऊपर एक चादर डालकर ओढ़ा जाय तो जाड़ा एकदम काफूर (गायब) हो जाता है।

कहा होय तेहि धेनु जौ, दूध न गाभिन होय।
कौन अर्थ वहि सुत भये, पंडित भक्त न जोय।।

यह कहावत चाणक्य की सूक्ति है जिसे लोग गाय या पुत्र के प्रसंग में कह देते हैं।

श०— धेनु—गाय, गाभिन—गर्भवती होना, अर्थ—काम का, सुत—पुत्र, पंडित—ज्ञानी, भक्त—श्रद्धावान।

अ०— ऐसी गाय को लेकर क्या करें जो न तो दूध दे और न बच्चा जनने के काबिल हो। उसी प्रकार से ऐसे पुत्र से क्या लाभ जो ज्ञानी व पंडित न हो, बुद्धिमान व श्रद्धालु न हो।

कबौ दूध दही कै नदी बही, अब पानिव पर मोहर छाप लगी।

कहावत देश की संपन्नता का ध्यान दिलाती है और आज की दशा का विवरण देती है।

अ०— एक समय था जब इस भारत देश में दूध, दही की नदियाँ बहा करती थीं। आज है कि अब पानी पर भी सरकारी की मोहर छाप (कर) लग रही है। यानी पानी पर भी टैक्स लग गया है।

कहिन भले मार्‌या, हम रोवइयै रहे।

अ०— जब कोई आदमी, बच्चे, स्त्री कोई भी पहले से ही मखाये हो, उसके मन में रोने की इच्छा हो रही हो, इसी में कोई ऐसी बात भी हो जाय कि उसके रोने में मदद मिले तो कहावत कही जाती है। भले हुआ कि तुमने मुझे उकसाया मार दिया। अब मारने का बहाना तो मिल गया रोने के लिये वर्ना मुझे तो पहले से ही रोना था। अपयश किसी और को मिलना।

कलछुल रखत मनई की हाथ न जरै।

अ०— कोई भी आदमी औजार या अपना सहायक इसलिये रखता है कि उसे उससे मदद मिले, उसका कष्ट दूर हो, न कि उससे कष्ट मिले।

कस निश्चिंत रे मानुष, अपने चेते आव।

अ०— हे मनुष्य, क्यों इतना बेफिक्र होकर बैठा है तू? आगे की भी सोच कर चल। कहां है— तेरी गठरी में लागा चोर, मुसाफिर जाग जरा"। समय के चोर से सचेत रहो।

कमीना मस्त भवा, अपुयै क भूलि गवा।

अ०— दुष्ट आदमी अपने साथ ही ऐसी दुष्टता कर बैठता है। वह और की कौन कहे अपने को भी भूल बैठता है। बिना विचारे, आवेश में भूलवश अनर्थकारी कार्य कर डालता है।

कमीने कै जोरू, रोजै तलाक।

श०— कमीना—नीच, दुष्ट, तलाक—मुसलमानों के यहाँ जब मियाँ—बीबी में पटरी नहीं खाती तो एक दूसरे को छोड़ने को तलाक देना कहते हैं।

अ०— जो नीच का स्वभाव होता है वह जब भी अपनी स्त्री से नाराज़ हुआ नहीं कि तलाक की धमकी देने लग जाता है, जैसे तलाक देना भी कोई रोज़मर्रा के काम की बात है। तुनक मिजाज़ी या दुर्बुद्धि का होना।

करै खेतहरी, मेहरी चाही नौ ठी।

अ०— ऐश आराम की ज़िन्दगी बसर करने का शौक चर्राना। करते तो खेत में काम है। मजदूरी से दिन कटता है और नौ पत्नियां रखने की इच्छा है। खिलाने की चिंता नहीं है, मौज मस्ती ज्यादा ही चाहिए।

करज विदेसियन कै देस पर चढ़ा,
तबो यहि देस क दांतै कढ़ा।

अ०— देश के ऊपर विदेशियों का करोड़ों का कर्ज चढ़ा है मगर आज भी यह देश कर्ज के लिये विदेशियों के सामने दांत निकाले हाथ पसारे खड़ा है।

कचरी खाय दिल बहलाय,
कपड़ा फाटै, घर को आय।

श०— कचरी—एक लता का फल जिसकी सब्जी बनती हैं। कचरी—फूट की जाति का एक फल होता है,

कहावत ऐसे आदमी पर कही गई है जो कहीं बाहर रोज़गार करने जाता है तो वहां लाभ के बजाय हानि उठाता है।

अ०— कचरी खा–खा कर किसी तरह मन बहलाया और यहां तक पूंजी खत्म हो गई कि तन पर पहनने को जब कपड़े न रह गये तो घर की याद आई।

माँ का दूध सबै पिये अहै।

अ०— मां का दूध सभी ने पिया है, कोई किसी से कम नहीं है। तावबाजी पर कहावत कही गई है।

कच्चा तो कचौड़ी मांगे, पूरी मांगे पूरा,
नोच मिर्च तो कायथ मांगे, बाभन मांगे बूरा।।

श०— कच्चा—बच्चे या जवान, पूरा—जो बुड्ढ़ा हो, बूरा—पिसी शक्कर।

कहावत खाने की पसंद पर कही गई है।

अ०— बच्चे व जवान जो उम्र में कम हैं, वे कचौड़ी मांगते हैं, बूढ़े आदमी पूरी मांगते हैं। लाला मिर्च आदि खाते हैं और ब्राह्मण चीनी मांगते है।

कच्ची कली कचनार की तोड़त मन पछताय।

अ०— कच्ची कली या कम उम्र की कन्याओं को छेड़ने में दुःख होता है तथा मुलायम बतिया तोड़ने से फल की हानि होती है।

कच्चे बांस झुकाय लो, पक्का टेढ़ न होय।

कहावत छोटे बच्चों पर कही गई है। छोटे बच्चों को किसी बात को सिखाना, समझाना आसान है मगर जब वे बड़े हो गये तो उन्हें मोड़ पाना कठिन है। जैसे शुरू में बांस को झुकाया जा सकता है, पक जाने पर टेढ़ा तक नहीं हो सकता।

कजा के आगे हकीम अहमक।

श०— कजा—मौत, अहमक—बेकार, निरुपाय।

अ०— मौत के आगे डाक्टर, हकीम किसी की नहीं चलती।

कटेगा बटाऊ का, सीखेगा नाऊ का।

श०— बटाऊ—राही, रास्ते में चलने वाला, नाऊ—नाई की तरह कतर ब्योंत करना। कटेगा—जेबकतरी।

अ०— जेब कटेगी तो कटे, उसमें काटने वाले को तो लाभ ही मिलेगा। नाई की तरह धर के कतर दिया। लोग इसे इस प्रकार कहते हैं— "कट सिर काऊ का, बेटा सीखे नाऊ का।"

कड़का सोहे पाली क, बिरहा सोहे माली क।

श०— कड़का—एक प्रकार का गीत/पाली—गड़रिया, बिरहा—शृंगार गीत है, जो जाति प्रधान है, अहीरों में खूब गाया जाता है। माली को देवी को प्रसन्न करना होता है तो गाते हैं।

अ०— कड़का गीत गड़रियों को और बिरहा मालियों को गाते हुये अच्छा लगता है। वैसे बिरहा आमतौर पर अहीर लोगों का गीत कहा जाता है।

कड़कड़ बाजे थोथो बांस।

श०— थोथो—खाली।

जो बांस अच्छे नहीं होते, वे कर्कश आवाज़ में बजते हैं। यानी जो आदमी गंभीर न होकर ओछा होता है, वह व्यर्थ की अपनी प्रशंसा में रहा करता है।

कदर उल्लू कै उल्लुए जानै,
हुमा चिड़िया क कब चुक़द पहिचानै।

कहावत का मतलब है कि जो जैसा होता है वह अपने जैसों की ही क़दर करता है। उल्लू की इज्ज़त उल्लू ही कर सकता है, वह हुमा चिड़िया की क़दर क्या जाने? कहते हैं कि हुमा एक काल्पनिक चिड़िया है जो किसी के सिर पर बैठ जाये तो उसे राजयोग होता है।

कद्र की जूतियाँ उठाइयो, बिन कद्र को, जूतियाँ मारने भी न जाइयो।

अ०— गुणवानों की श्रद्धानत होकर इज्ज़त करना चाहिए। मगर जो गुणहीन हो उससे कुछ कहने–सुनने की आवश्यकता भी नहीं है। छोटे, ओछे, नीचों के मुंह नहीं लगना चाहिए। उन्हें जूता भी मारने में बेइज्ज़ती है।

कनखजूरे की कै टांग टूटी?

जब कोई आदमी गुणवान हो, संपन्नवान हो तो उसकी थोड़ी हानि होने पर कुछ पता नहीं चलता। मगर जब किसी के पास गिनती की वस्तु या धन है तो उसमें से एक पैसा की भी हानि कष्टकारक होती है। कहावत इसी पर उद्धृत की गई है।

अ०— कनखजूरा वह कीड़ा होता है जिसकी बहुत ज्यादा टांगें होती हैं। वह कहा गया है कि एक, दो, चार, छः, भला कितनी टांगें कनखजूरे की टूटेंगी? इस पर भी कमी नहीं होगी।

कमजोर बिल्ली चूहों से कान कटावै।

मनुष्य हो या जानवर जब शरीर कमज़ोर हो जाता है तो फिर दुश्मन भी बड़े आराम से उस पर हमला बोल देते हैं। विवशता का जीवन आदमी हो या जानवर बेकार होता है।

कपटी की पीत मरन की रीत।

श०— कपटी–छली/प्रीत–प्रीति।

अ०— किसी छली आदमी से प्रेम करना बालू की दीवाल की तरह है। उसका कोई ठिकाना नहीं कि कब धोखा दे जाय?

कपड़ा कहे तू मुझे कर तह, मैं तुझे दूं शह।

श०— तह–चौपर्तना, तहियाना।

अ०— किसी ने सच ही कहा है कि जब कपड़े की कदर करोगे तो कपड़ा भी तुम्हारी क़दर करेगा। जब वह ढंग से रखा रहेगा तो पहनने के बाद जहां भी जाओगे वहीं पहनावे से मनुष्यता पहचानी जाती है।

अ०— कपड़े का कहना है कि तुम मुझे इज्ज़त देकर तह करके रखते हो तो मै भी जहाँ कहीं पहन कर जाओगे लोगों की आंखें लगी रहेंगी।

कपड़ा पहिनिये जग भात, खाना खाइये मन भात।

श०— भात–भाये, पसंद आये।

अ०— जो सबको अच्छे लगे ऐसे वस्त्र पहनाना चाहिए और जो खुद को रुचे ऐसे खाना खाना चाहिए। स्त्रियों के लिये किसी ने कहा है– "अपरुच भोजन, पुरुष सिंगार" यानी अपनी पसंद का खाना और पति की पसंद का कपड़ा पहनना चाहिए।

कब दादा मरिहैं कब बैल बटिहैं?।

जब कोई काम किसी के कारण रुका होता है तो कहावत सामने आती है। या मालिक बनने का शौक चर्राता है तो कहावत कही जाती है।

यानी– जब दादा मरेंगे तो बैलों का बंटवारा होगा, उसके बिना खेती का सारा काम पड़ा हुआ है।

कब रजाई सुर भये, कोदो के दिन भूलि गये।

अ०— भला कब राजा–महाराजा बनके बड़े आदमियों का राग अलापने लग गये? क्या मोटे अनाजों का खाना–पीना, अपनी गरीबी को भूल गये?

कबित सोहै भाट क, खेती सोहै जाट क।

अ०— जिसका जो काम होता है वही उसके लिये अच्छा माना जाता है। कविता, गीत, गायन, भाटों का काम है, और खेती जाटों को भली लगती है।

कहे खेत की, सुने खलिहान की।

श०— खलिहान–खेत कटने के बाद गांवों में जहां पर अनाज के बोझ रखे जाते हैं। जब किसी आदमी का ध्यान बात सुनने में नहीं रहता तो कहते हैं।

अ०— कोई कह कुछ रहा है सुननेवाला दूसरे ही ध्यान में है। बात को कुछ का कुछ सुन रहा है। कही जा रही बात खेत के विषय की, सुन रहे हैं खलिहान की बातें। मन एकाग्र न होना

कहे से कोउ कुंआ मां नाहीं फाट परतै।

अ०— कभी–कभी आदमी क्रोधवश न जाने क्या–क्या अनर्गल कह जाता है। इसका मतलब है कि जो कुछ गुस्से में कहा गया है वह हो नहीं जाता।

कहीं सुहानी चुनरी और कहीं ढेले लात।

कहावत भाग्य के प्रति कही गई है। हर किसी का भाग्य अलग–अलग होता है।

अ०— किसी स्त्री को तो सुहानी रंग–बिरंगी चुनरी पहनने को मिलती है, किसी को मार गाली मिलती है। उसको ढेला व लात से मारा जाता है।

कड़ुवा—कड़ुवा थू, मीठा—मीठा गप्प्।

जब कोई अच्छा काम हो तो मैंने किया, गलत काम खुद करके दूसरे के ज़िम्मे डाल देना या बढ़िया चीज़ तो ले लेना और बुरी वस्तु को स्वीकार न करना।

करे एक भरे सब।

अ०— ग़लती एक करता है भुगतते उसको सभी घरवाले हैं।

कडुए से मिलिये, मीठे से डरिये।

यहाँ पर कडुए से मतलब है जो स्पष्ट बोलने वाला हो। सही बात चाहे बुरी भी हो साफ—साफ कह देने वाला खरे दिमाग़ का हो। मीठे से मतलब है कि मीठा बोलकर गला काटने वाला आदमी। ऐसा व्यक्ति समय पर कभी काम नहीं आता।

कमर न बूता, साँझे सूता।

अ०— आलसी आदमी के न जोर रह जाता है न जांगर। वह साँझ से ही बिस्तर पर पड़ कर सोने लग जाता है।

कमर में तोसा बड़ा भरोसा।

श०— कमर में—पास में, जोसा—खाना, खाने का सामान, या गांठ में पैसा।

अ०— जब पास में खाने पीने का सामान या पैसा रहता है तो मन को बड़ी निश्चिंतता रहती है।

कल्ला चलै तो सत्तर बलाय टरै।

श०— कल्ला—कलाई, हाथ का अगला हिस्सा।

कहावत परिश्रम करने पर कही गई है।

अ०— यदि आदमी मेहनत करे, हाथों की कलाई मोड़ने की ताकत हो तो फिर कौन कष्ट? फिर तो कितनी ही परेशानी क्यों न हो अपने आप ही दूर हो जाती है।

कलवार की बेटी डूबे चली, लोग कहें मतवारी।

कलवार जो शराब बनाता है उसकी बेटी चाहे दुःख ही में डूबने चली हो मगर व्यंग्य रूप में कहा जाता है कि नशे में मतवाली होकर डूब रही है।

कमाऊ आवै डरता, निखट्टू आवै लड़ता।

श०— कमाऊ—कमाई करके पैसे लाने वाला, निखट्टू—जो काम धाम न करता हो, जिसे किसी का भय न हो।

अ०— कमाई करके दिन भर के बाद घर आने वाला इंसान तो इज्ज़त आबरू रखता रखाता घर में घुसता है और काम न करने वाला शेर की तरह से लड़ता—भिड़ता आता है। किसी ने कहा है— "बेज़र का मर्द बिल्ली चाहे घर रहे चाहे दिल्ली। जर का मर्द नाहर,चाहे घर रहे चाहे बाहर।।"

कमाऊ पूत, करेजे क सूत।

अ०— कमाने वाले बेटे को सभी प्यार करते हैं। कहा है कमाने वाले पुत्र, आ कलेजे से लग कर सो जा। भागवान की सभी इज्ज़त करते हैं।

कमान से निकला तीर, मुँह से निकली बात फिर नहीं अउतै।

अ०— धनुष से छोड़ा गया तीर और मुंह से निकली बात कैसे वापस आ सकती है? इसीलिये कहा गया है कि दोनों ही काम सोच समझ कर ही तो करना चाहिए।

कमानी न पहिया, गाड़ी जोत हमरे भइया।

अ०— जब काम करते समय कोई समान ही न हो या किसी वस्तु का कोई पुर्जा या सामान ठीक न हो तो काम कैसे हो सकता है? गाड़ी में जब न कमानी है न पहिया तो चलेगी भला कैसे? उसका सामान जुटाने में समय लगेगा। मुँह का कौर थोड़े ही है कि जल्दी से गाड़ी चलाने लग जाय।

कमाय खानखाना, उड़ावै फहीम।

अ०— स्पष्ट है। यानी "बहि—बहि मरै बैलवा, बइठे खायं तुरंग", कमाय कोई मौज उड़ावै कोई।

कमाय धोती वाला खाय टोपीवाला।

अ०— स्पष्ट है। उपरोक्त कहावत की भांति यह भी है।

करघा बीच जोलाहा सौहै हल पर सोहै हाली।
फौजन बीच सिपाही सोहै, बागन सोहै माली।।

सभी अपनी—अपनी कर्मभूमि पर शोभा पाते हैं।

अ०— जुलाहा करघे के बीच, किसान हल के बीच, फौज के साथ सिपाही और बाग़ो में माली सोहते हैं।

करघा छोड़ जोलाहा जाए नाहक चोट बेचारा खाए।

दूसरों के झगड़े के बीच जाने वाला आदमी हानि उठाता है। दो के बीच में न बोलना चाहिए और न व्यर्थ के झगड़े में पड़ना ही चाहिए।

अ०– अपने काम का हर्ज करके, जुलाहा किसी के झगड़े को देखने या सुलझाने गया तो नाहक चोट उसे आई।

करनी खाक की बात लाख की।

जो आदमी केवल बातूनी, गप्पबाज होता है, उसके लिये कहावत उद्‌धृत की गई है।

अ०– किया धरा तो कुछ होता नहीं बस बातें ले लो गट्‌टा जैसी। करनी एक रवा भर की नहीं बस बातें गट्‌टा जैसी ले लो।

करे क चाकरी, चाही सोने के घर।

अ०– कहाँ तो नौकरी करते हैं और रहने को महल चाहिए। दिमाग़ इतना बड़ा–इतना खराब कि रहे झोपड़ी में सपने देखै लाख टका का'।

करम हीन जब होत है सभी होत है बाम।
छाँह जान के बैठिए तहाँ होत है घाम।

कहावत अभागे लोगों के ऊपर कही गई है। जब भाग्य साथ नहीं देता तो फिर दुनिया में कोई भी साथी नहीं होता। जहाँ अच्छी जगह देखकर जाया या बैठा जाता है उस पेड़ की छाया भी उससे दूर कहीं चली जाती है। कहा है–

'भो विधिना प्रतिकूल जबै तब ऊंट चढ़े पर कूकुर काटत'।

करमहीन सागर गये जहाँ रतन का ढेर।
कर परसत घोंघा भये सही करम का फेर।।

अ०– उपरोक्त कहावत की भांति।

करै सेवा खाय मेवा

सेवा करने वाला ही सुख पाता है।

करै मन की, सुनै सब की।

कहावत वसूलन कही गई है। आदमी का सिद्धान्त होना चाहिए।

अ०– सुनने को सबसे राय ले, सुन ले मगर जो अपने को ठीक लगे वही करना चाहिए। आत्मा की वाणी एक सहीं और स्वाभाविक सुझाव देती है। उसी में संतोष मिलता है।

करै कल्लू भरै लल्लू।

अ०– बुरा काम करता कोई और है भोगता दूसरा है। कल्लू की करनी का फल लल्लू को भोगना पड़ रहा है।

करय परपंच कहवावै पंच।

अ०– ऐसे लोगों पर कठिन व्यंग्य किया गया है जो न्याय देते समय भी अपने मन में छल–कपट रखते हैं। यानी दुनिया भर का प्रपंच करे और बने पंच है, लोगों के प्रति वफादार।

कर्जा काढ़ि करे व्यवहार, मेहर से जो रूठै भतार।
बे–बुलाये बोलै दरबार, ये तीनों मूरख के यार।।

कहावत स्वभावतः मूर्ख लोगों के प्रति कही गई है कि वे करते क्या हैं?

अ०– जो आदमी रूपये कर्ज़ लेकर आपसी बात व्यवहार लेनदेन चलाता हो या जो आदमी अपनी स्त्री से नाराज़ होता हो तथा जो बिना किसी के बुलाये, बिना कुछ पूछे ही भरी सभा में बोल दे उससे बढ़कर मूर्ख कौन होगा?

कर्जदार छाती पर सवार।

अ०– कर्ज लेने वाले के पास कर्ज़ देने वाला समय असमय जब देखेंगे तब ही उससे अपना पैसा लेने के लिये हाज़िर हो जाता है। इसलिये कर्ज़ का लेना बहुत बड़ा बुरा है।

कर्जा काढ़ि मेहमानी की, लौंडे मार दिवानी की।

अ०– पिता ने कर्ज लेकर लोगों की मेहमानी की। लड़कों को नहीं पसंद आया क्योंकि बाप का लिया कर्ज बेटे को ही भुगतना पड़ता है। इसलिये लड़कों ने पिता को मार–मार कर दीवाना कर दिया।

कलवारिन की अगाड़ी और कसाई की पछाड़ी रहै चाही।

श०– कलवारिन–कलवार की स्त्री, आमतौर पर यह जाति शराब बनाती और बेंचती है। कसाई–मुसलमानों की वह जाति जो जानवरों मांस बेंचने का धन्धा करती है।

अ०– कहावत से स्पष्ट होता है कि कलवार की अगाड़ी यानी कलवार अपनी दुकान पर आगे की तरफ बढ़िया व शुद्ध शराब रखता व ग्राहकों को देता है। पीछे रद्दी व पानी मिली शराब होती है। इसलिये उसका सौदा आगे ही अच्छा होता है। इसी प्रकार से कसाई अपनी मांस जो बासी होती है उसे आगे पहले बेचने के लिये

रखता है। उसका सौदा पीछे अच्छा होता हैं। वह माल पीछे ताजा रखता है बासी बिकने के बाद निकालता है, तो इन लोगों के यहाँ सचेत रहना चाहिए।

कलवारी कलकल करै, दूहारी छू होय।
अपनी–अपनी बान से कभी न चूकै कोय।।

अ०– लड़ाका औरतें हमेशा झगड़ा करेगीं जो आग लगायेगीं और चल देगीं। आदत से कोई नहीं बाज़ आता चाहे जो हो। कलवारिने आपस में हमेशा लड़ती व झगड़ा लगाती हैं।

कउड़ी–कउड़ी पे जान देत।

अ०– एक–एक कउड़ी को बचाते हैं कि कहीं ख़र्च न हो जाय। महा कंजूस आदमी के लिये कहावत कही जाती है। नाली से कउड़ी दाँत से उठावति है।"

कउड़ी–कउड़ी माया जोरी, कर बातें छल की।
भारी बोझ धरा मूड़े पर, कइसे होय हल्की।।

अ०– स्पष्ट है। दमड़ी–दमड़ी जोड़ जोड़कर धन बटोरा वह भी छल, बल, धोखे से। तो प्रवंचना के बोझ से तो दबे हो कैसे हल्का हो सिर और मन?

कउड़ी गाँठ की, जोरू साथ की।

अ०– पैसा कउड़ी गाँठ में यानी पास में रहे और पत्नी साथ रहे तो अच्छा लगता है।

कउड़ी न होय तो कउड़ी के तीन।

श०– कवड़ी–पैसा / कउड़ी के तीन–बेकार।

अ०– पास में पैसा न हो, तो आदमी बर्बाद रहता है। कवि रहीम के शब्दों में–

जब लगि वित्त न आपने, तब लगि मित्र न कोय।
रहिमन अंबुज अंबु बिनु, रवि ताकर रिपु होय।।

श०– वित्त–धन, अम्बुज–कमल, अम्बु–पानी, रबि–सूर्य, रिपु–शत्रु।

कमल के पास तालाब में यदि पानी है तो सूर्य की रोशनी पाते ही फूल जाता है मगर यदि पानी नहीं है तो सूर्य उसे सुखा देता है।

अ०– यदि पास में पैसा है तो ठीक वर्ना लोग मित्रता के बजाय शत्रुता निभाने लगते हैं।

कउन कहे कि राजा जी नंगे दिखत हो।

यह कहावत उस समय कही जाती है जब किसी बड़े आदमी की ग़लती को किसी के कहने की हिम्मत नहीं पड़ती। सही बात कितनी ही क्यों न हो बड़े आदमी के अप्रसन्न होने से सभी लोग घबड़ाते हैं। यह कहावत एक कथा के आधार पर कहीं गई है। "एक बार कुछ ठगहार आये और राजा से बोले– मैं ऐसा कपड़ा बनाता हूं उसे वही आदमी देख सकता है जो कभी झूठ न बोले हो। राजा ने ठगों को अपनी पोशाक बनाने को मुँह मांगा पैसा दे दिया। कुछ दिनों के बाद ठगहारों ने राजा को पोशाक लाकर दिया, पहनने को कहा और पहनी पोशाक उतरवा ली। झूठमूठ को दूसरी पोशाक राजा को पहनाने का स्वांग भरा। राजा को अपने बदन पर कहीं कपड़े ही न दिखें तो यह सोचकर संतुष्ट हुआ कि जो जीवन में कभी झूठ न बोला होगा, उसे दिखाई देगा। ठग तो चले गये, राजा दरबार में पोशाक दिखाने गये और दरबारियों को भी यही बताया तो उन लोगों ने भी सोचा कि कभी झूठ बोला होगा, इसलिये पोशाक दिखाई नहीं दे रही। सब चुप रहे। इतने में एक छोटा बालक बोल उठा–राजा जी तो नंगे हैं।

कउन केव के आवै–जावै
सबका दाना–पानी लावै।

अ०– कोई किसी के यहाँ आता–जाता नहीं जिसका जहाँ पर दाना–पानी होता है वह वहाँ पर अचानक व अनायास भी पहुंच जाता है।

कउनी कमाई पर तेल बुकवा?

श०– बुकवा–सरसों को भूनकर सिल पर पीसकर जो बच्चों को उबटन लगाया जाता है।

कहावत व्यंग्य में कही गई है उस आदमी पर जो घर में कमाकर पैसा न लाये, जो निठल्ला हो, कामचोर हो, बेकार बैठा हो।

अ०– किस कमाई–धमाई पर सेवा की जाय। पैर दबाया जाय, तेल उबटन लगाया जाय।

कउने रूपे प एतना सिंगार?

किसी कुरूप स्त्री पर व्यंग्य में कहावत कही गई है।

अ०– शक्ल न सूरत किस सुंदरता पर इतना सिंगार किया गया है?

कउवा कान लै गा।

कहावत ऐसे आदमी पर कही गई है जो किसी की कही बात पर बिना सोचे समझे विश्वास कर बैठे।

अ०– कभी कोई काम बिना सोचे समझे, देखे, भाले मत करो वर्ना कौवा कान तो न ले जायेगा मगर तुम तमाम लोगों के सामने मूर्ख बनकर रह जाओगे।

कउवा के कोसे ढोर न मरिहैं।

कहावत उस समय कही जाती है जब कोई आदमी अपने स्वार्थ में किसी का बुरा चाहे, उसे सरापे, गालियाँ दे।

अ०– कउवा चाहे जितना भी कोसे, सरापे उसके सरापने से कभी कोई जानवर नहीं मरेगा।

कइल कै दाम गइल।

श०– कइल–पीला रंग मिला सफेद रंग, गइल–गया।

अ०– कहावत यहां पर बैलों पर कही गई है कि पीले रंग मिश्रित सफेद रंग का बैल खरीदने पर दाम डांड़ जाता है। वह बहुत ढीलाढाला, शिथिल और आलसी होता है।

कहै घाघ घाघिन से रोय, बहु संतान दरिद्री होय।

कहावत अधिक बच्चे के होने पर कही गई है।

अ०– अति संतान का होना बुरा है। इसका यह कारण है कि माता–पिता अपनी संतान पर उतना ध्यान नहीं दे पाते हैं जितना कि देना चाहिए और न इतनी काबिलियत किसी में आ पाती है।

कहाँ हगास, कहाँ परछन?

श०– हगास–टट्टी लगना, परछन–जब हमारे यहाँ दामाद या बहू पहले पहल आती है तो घर की बड़ी बुजुर्ग महिलायें सूप के द्वारा उन्हें परछती हैं।

कहावत उस समय कही जाती है, जब कोई दो आवश्यक कार्य साथ आ जाते है और उसमें एक कोई कार्य ऐसा हो कि पहले उसे करना ज़रूरी हो जाय। असमय में कार्य में बाधा होना।

अ०– कहाँ तो किसी को दीर्घशंका लगी हो और कहा परछन की साइत निकल रही हो। काम दोनों ही आवश्यक हैं, मगर उसमें शौच क्रिया एक अति आवश्यक है।

कहै क रानी चोरावै चमरौधा।

श०– चमरौधा–चमड़े का जूता। चोरावे–छिपाना, चोरी करना।

कहावत उस समय कही जाती है जब कोई भला, धनवान आदमी या स्त्री किसी निम्न कार्य चोरी आदि पर उतर आये। बड़े से बड़े आदमी की छोटी से छोटी वस्तु पर नियत खराब होना।

अ०– कहने को तो इतने बड़े आदमी की स्त्री, रानी है। मगर चमड़े का चमरौधा चप्पल चुराती है। यहां पर आदतों के प्रति व्यंग्य किया गया है। अपनी आदत से मजबूर इंसान गलत व निम्न से निम्न कार्य कर सकने को मजबूर हो जाता है।

ककरी के चोर क लाते, मुक्का बहुत आय।

अ०– छोटे अपराध के लिये छोटी सज़ा ही बहुत है। मामूली दंड दे कर उसे समझाया जा सकता है। अतः अपराध के अनुसार ही किसी को दंडित करना चाहिए।

" काँ "

काँटा बुरा करील का, ज्यों बदरी का घाम,
सौत बुरी है चून की, औ साझे का काम।

श०– करील–पत्ते का काँटादार पेड़/बदरी–बादल, घाम–धूप, सौत–पति की दूसरी पत्नी, चून–आटा, साझे–दो आदमियों का कोई काम एक में होना।

अ०– घाघ कवि की कहावतें भी बड़ी सिद्धान्तवादी होती हैं। कहावत में उन्होंने चार बातें बताई हैं।

१. करील का काँटा लगने के बाद बड़ा ही दुःखदाई होता है।

२. सौत, सशरीर नारी तो क्या यदि आटे की भी बनी है तो समझो वह भी आँख की किरकिरी की तरह से हर समय दुःखद बन जाती है।

३. बदरिया घाम, इतना तेज़ होता है कि उसमें रह पाना बड़ा कठिन हो जाता है। जेठ माह की धूप सही जा सकती है मगर बीच–बीच में जो बादलों से धूप निकलती है वह आग की तरह गर्म होती है।

४. कोई भी काम सम्मिलित रूप में करते हैं तो उसे साझे का काम कहते हैं।

उपर्युक्त कहावत के अनुसार ये चारों बातें बहुत बुरी होती हैं। इस विषय पर तीन कहावतें निम्नलिखित हैं–

१. माघ पूस की बादरी और कुँवारी घाम।
ये तीनों जो सहै तौ करै बिराना काम"।।

२. सौत पर है– "मरी सौत सतावै, काठेव कै ननद बिरावै"।

३. साझे कै खेती सियार खात।

इस प्रकार से चार विषयों को लेकर कहावत कही गई है। किसी भी एक विषय के प्रसंग पर कहावत चरितार्थ की जा सकती है।

काँध कुदारी खुरपी हाथ,
लाठी हँसिया राखै साथ।
काटे घास औ खेत निरावै,
सो पूरा किसान कहलावै।।

अ०– कवि घाघ ने किसान के लक्षण बताये हैं। किसान कंधे पर कुदाल रखे। खुरपी हाथ में रखें। लाठी एवं हसियां साथ रखें। खेत पर जाकर उसके खर को निकाल कर, निराई करके खेत की सफाई करे तथा घास छीले उसी को लोग किसान कहते हैं। यही किसान की पहचान होती है।

काँसी फूली चौथ के चाँद,
अब का बोय धान किसान।

श०– काँसी–कास जो एक प्रकार की घास होती है। उसी का स्त्रीलिंग है। चौथ के चाँद–भादौ की उजाली चौथ, जब आकाश में बादल नहीं के बराबर होते हैं। आकाश में चंद्रमा दिखाई देने लगता है।

अ०– कवि भड्डरी का कथन है कि अब तो आकाश में भादौ की उजाली चौथ का चाँद दिखाई देने लगा है, कास फूल गये हैं, अब धान को बोने से क्या लाभ होगा? वर्षाकाल तो समाप्त हो चुका है।

काँटे से काँटा निकरत

अ०– बुराई को बुराई से या शत्रु को शत्रु से दूर करना।

" का "

काजू काज करै फूहर बोलौनी।

श०– काजू–काम करने वाले, काज–काम, फूहर–मूर्ख, बेवकूफ, बोलौनी–बातचीत, बकवास।

उपरोक्त कहावत उन बकवासी तथा बेवकूफ स्त्रियों पर कही गई है जो अपना कीमती समय केवल बात करने में खराब करती हैं और बात भी व्यर्थ की होती है। जो बुद्धिमान होती है वे समय की इज्ज़त करती हैं।

अ०– काम करने वाला अपना काम पूरा करता है और उसी समय को मूर्ख आदमी बातों में गंवा देता है। उसकी दृष्टि में समय का कोई मूल्य नहीं होता।

का बरखा जब कृषी सुखाने,
समय चूकि पुनि का पछिताने।

श०– कृषि–खेती, समय चूकि–समय निकल जाने पर, पुनि–फिर, पछिताने–झंखना, अफसोस करना।

उपरोक्त पंक्ति 'गोस्वामी जी' की है जिसे लोग बहुधा समय निकल जाने पर पश्चाताप करने वाले के ऊपर कहा करते हैं।

अ०– जब समय हाथ से निकल जाय तो बाद में उसके लिये चिन्ता करे, उसके लिये सिर धुने तो कोई लाभ नहीं होता। जैसे जब खेत की सारी फसल सूख ही गई तो पानी बरसने से क्या लाभ होगा? इसलिये कहा गया है कि समय रहते ही कार्य को कर डालना चाहिए।

कान न टौवै कउवा के पीछे दउड़ै।

किसी दूसरे की कही गई बात को बिना सोचे समझे जो मूर्खता में मान बैठते हैं, कहावत उन्हीं पर लागू की जाती है।

अ०– किसी ने कहा कि कान कउवा ले गया। फिर क्या कान न देखा, दौड़ पड़े कउवे के पीछे–पीछे। हाथ उठाकर कान न देख पाये। इससे बड़ी मूर्खता क्या हो सकती है?

का ई बरवा छिउले तर या घामें मां पाक बा।

श०– बरवा–बाल, घामें–धूप, छिउलेतर–ढ़ाक के नीचे।

ये बाल धूप से या किसी ढाक के पेड़ के नीचे

सफेद वहीं हुए बल्कि इन पके बालों ने अपने जीवन काल में बड़े–बड़े अनुभव पाये हैं तथा बड़ी–बड़ी स्थितियों–परिस्थितियों का सामना किया और समझा है।

काहे क गर्जे? मारे बल के,
काहे क भागे? मारे डर के"।

अ०– कहावत डरपोक आदमी के ऊपर कही गई है जो पहले तो बड़ी उछल–कूद मचाता है, बड़ा ताव दिखाता है, "बंदर घुड़की" देता है फिर बाद में पीछे पिछड़ जाता है, तो कहा जाता है कि गर्जे क्यो? बोले–बल के मारे। किसी ने पूछा–भागे क्यों? तो बोले–डर के मारे। अतः बिना अपने को टटोले किसी बात में आगे बढ़ना नहीं चाहिए। ऐसे ही लोगों के ऊपर कहावत कही गयी है।

काल क लीपा गवा हेराय,
आज क लीपा देखा आय।

श०– लीपा–गोबर या मिट्टी को पानी के साथ ज़मीन पर फैलाकर चिकनी बना देना, हेराय–खो जाना, देखा आय–प्रमाण देना, स्वभाव से किसी की भलाई को न मानने वाले आदमी के प्रति कहावत कही गई है।

अ०– अभी तक जो कुछ भी भलमनसाहत, अच्छाई की गई वह सब तो ऐसे भुला दी गई जैसे ज़मीन पर कोई लीप दे। इससे मन को निराशा मिली कि किया कराया सब पर पानी पड़ गया। अब आज से फिर जो करने चले है, देखो उसका क्या फल मिलता है?

काटी सुपारी कटत नाहीं
चित फाटे पै अंखिया मिलत नाहीं।

कहावत किसी के प्रति घृणा, द्वेष, बैर होने के प्रति उद्धृत की गई है। जिस आदमी से बात करने की तबीयत नहीं होती उससे बातें करते नहीं बनता।

अ०– जिस प्रकार से कटी हुई सुपारी फिर नहीं काटी जा सकती है, उसी प्रकार से किसी आदमी के हृदय में जब दरार पड़ जाती है, मन में क्रोध उत्पन्न हो जाता है तो उससे आंख मिलाकर बात करने की तबीयत नहीं होती है।

का मुहें के कौर आय?

किसी व्यक्ति को जब बेहद जल्दबाजी रहती है इतनी कि वह कार्य की जल्दीबाजी में एकदम उतावला हो जाता है तो कहा जाता है।

अ०– इतनी आफत मचाये हो क्या मुंह का कौर है कि मुंह में ही खा लें? काम करने में देर लगती है।

वशीकरण एक मंत्र है तज दे वचन कठोर।

कटु बोलना महाकष्टकारक होता है।

काम करत की मूँड़ पिरात।

अ०– जब काम करते हुए किसी को बहुत ही बुरा लगता है तो कहते हैं कि जब काम करना पड़ता है, तो बहुत बुरा लगता है।

का पर करूं सिंगार, पिया मोर बाउर।

कोई स्त्री जब अपने पति से संतुष्ट नहीं रहती तो उपरोक्त कहावत का इस्तेमाल करती है।

श०– सिंगार–श्रृंगार।

अ०– मैं भला किस पर श्रृंगार करूं? पति मूर्ख हैं। यानी कि श्रृंगार स्त्रियां पति के लिये करती हैं किन्तु जहां पति के द्वारा संतोष न हो मन को वहां श्रृंगार करना व्यर्थ सा लगता है।

का फूलन तउली अहै।

श०– फूलन–फूल, तउली–तौलना, वजन लेना।

कहावत ऐसी स्त्री के प्रति कही गई है जो काम बिल्कुल ही न करना चाहे, जो कामचोर हो।

अ०– कोई स्त्री सम्मिलित परिवार में हो तो काम तो करना ही होगा। बिना काम के घर का काम कैसे संभव हो सकता है। वहाँ पर बड़े घर या छोटे घर की लड़की होने से कोई अंतर नहीं पड़ता है। कहा जाता है कि "क्या फूल से तौली गई है यानी बहुत कोमल या सुकुमार है।

काहे क नौ मन तेल जुहाये,
काहे क राधा गौने जइहै।

श०– तेल जुहाये– इकट्ठा, गौने–ससुराल जाना।

अ०– काहे को नौ मन तेल होगा और काहे को कोई काम होगा। किसी कारण से कार्य का रुक जाना।

काम न धाम बड़ी बी सलाम।

श०– बड़ी बी–बड़ी बीबी।

आदमी को देखकर कहावत कही जाती है जिसका काम खाली घूम–घूम कर सलामी दाग़ कर प्रसन्न करने का हो।

अ०– कोई काम धंधा नहीं, बस चारों ओर सलाम मारते हुए चाटुकारिता में घूम–घूम कर कामचोरी करना।

का पराये बजने, जौ न बाज अपने।

अ०– कहावत स्वतः सुखों पर आधारित है। किसी दूसरे के यहाँ उत्सवों से क्या लाभ, जो अपने यहाँ प्रसन्नता–बधावा न बजा तो।

का चिआरी पै दिया जलउब।

श०– चिआरी–कब्र, मजार, समाधि।

कहावत के अनुसार कोई दूसरे वंश का या पराई औलाद जब अनधिकार चेष्टा करे तो लोग कहावत कहते हैं।

अ०– क्या तुम मेरे वंश के हो या खानदान के हो जो अधिकार जमाये रहते हो, हमेशा? क्या मेरी कब्र पर दिया जलाओगे? तुम्हीं पानी पिंड दोगे क्या, जो इतना अधिकार रखना चाहते हो?

कातिक बोवै अगहन भरै,
ताको हाकिम फिर का करै।

श०– भरे–खेत सींचने से मतलब है, हाकिम–मालिक, ज़मीनदार।

कहावत समय–समय पर खेतों की देखभाल, बोने व सींचने पर कही गई है। अच्छी खेती न होने पर किसान को लगान देने में कष्ट होता था। कहावत ज़मीदारी के ज़माने की है।

अ०– यदि किसान कार्तिक में खेतों को बोये और अगहन में खेतों को पानी से भर दे तो उस किसान का हाकिम यानी मालिक कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता। जब भी मालिक देन पोत मांगेगा किसान के पास इतना गल्ला रहेगा कि वह बड़ी खुशी से पैसा बेबाक कर देगा।

कालेफूल न पाया पानी, धान मरा अधबीच जवानी।

श०– अधबीच–आधे समय में।

कहावत धान की खेती पर कही गई है।

अ०– यदि फूल निकलने के समय धान में पानी न मिला, खेतों की सिंचाई न हुई तो धान की फसल बीच में ही चौपट हो जाती है।

का कउवा कछु लै गयो, का कोयल कछु दीन,
मीठी–मीठी बोल से जग आपन कै लीन।

कहावत समानता पर कही गई है कि मीठी व कटु बानी के बोलने में कितना अंतर है?

अ०– कौवा न किसी का कुछ लेता है और न कोयल किसी को कुछ दे ही देती है किन्तु कोयल अपनी मीठी–मीठी बोली से सारे संसार को अपने वश में कर लेती है। कौवा तनिक बोला नहीं कि लोग उसे उड़ाने लगते हैं मगर कोयल की बोली सुनने से लोग दूर–दूर तक आनंदित होते हैं।

का पेट न भरै तो मुहौ न पिराय।

कहावत बड़ी सरल व हास्यपूर्ण है जो किसी को बहुत देर तक खाना खाते देखकर कही जाती है।

अ०– क्या पेट नहीं भर रहा है तो मुंह भी दर्द नहीं कर रहा है? यानी कितनी देर से खा रहे हो अभी तक पेट नहीं भरा? अब और कितनी देर तक खाओगे?

का कुआं क मेधा-अस टर्रात अहा।

यानी जब कोई आदमी अंदर से बोले बाहर न आये तो कहते हैं।

अ०– क्या कुयें में बैठे मेढक की तरह टर्र–टर्र कर रहे हो? तमाम जली कटी सुनाए जा रहे हो सामने आकर बोलो तो समझ में भी आये।

का नांग नहाये, का ओरौनी चुए?

श०– नांग–नंगा, निर्वस्त्र, ओरौनी–गांवों में जो ओसारा इत्यादि छाते हैं उसका ढाल का हिस्सा जिससे पानी नीचे की ओर गिरता है।

कहावत ओरौनी के माध्यम से किसी महा नीरस, कंजूस, रूखे स्वभाव के व्यक्ति के ऊपर उद्धृत की गई है।

अ०– भला निर्वस्त्र आदमी जब नहायेगा तो वह क्या और कौन सा वस्त्र ओरौनी पर फैलायेगा जिससे पानी टपकेगा। पहले ज़माने में लोग गांवों में नहाकर कपड़े छान–छप्पर पर ही फैलाया करते थे तो ओरौनी से भी पानी टपकता था।

कातिक मास रात हल जोतो,
टांग पसारे घर मत सूतो।

श०– टांग पसारे–पैर फैलाकर, सूतो–सोना।

कहावत गांव के किसान को चेतावनी देने के लिए है।

अ०– कातिक मास में रात को पांव पसार कर घर में सोओ मत, खेत की जोताई कर डालो, ऐसा घाघ कवि का कथन है।

का कारूं का खजाना गाड़ा अहय।

श०– कारूँ–मूसा का चचेरा भाई जो धनवान व कंजूस था।

अ०– क्या यहां अपार धन जमीन में गड़ा हुआ है?

का तोहरेव भये बारह रोज सोहर भा रहा।

किसी आदमी या लड़के को मूर्खता, नालायकी, उद्दंडता करते देखकर कहावत व्यंग्य में कही गई है।

अ०– क्या तुम्हारे जन्म के समय १२ रोज तक सोहर गाकर खुशियां मनाई गई थीं? लड़के के होने में खुशियां मनाई गई थीं कि "पूत के पांव पालने में होंगे", वंश का नाम होगा, किंतु यहां तो आशायें निराशा में बदल गईं।

काना भतार कहां पाइब,
एनहूं क बन–बन रोये।

आपसी बात व्यवहार में एक स्त्री दूसरी स्त्री से पूछती है।

अ०– काना पति कहां से मिला? कहती है कि इसके लिए भी तो गली–गली जंगल–जंगल भटकना पड़ा। यानी कहावत किसी निकम्मे, ऐवी, आलसी, ग़रीब पति के प्रति कही गई है जो बड़ी मुश्किल से मिला।

काना भइया ऊख देआ, तोहरी मीठी बोलिया।

कहावत शिक्षाप्रद है।

अ०– किसी ने काने को ईख ले जाते देखकर उससे ईख चूसने के लिए मांगा–काने भाई! जरा ऊख दे दो, तो वह बोला–हां जो इतना मीठा बोले हो उसी से दे दूंगा। भला काना कहने पर कौन ईख दे देगा? चिढ़ाने या नाराज करने पर कौन किसी को कोई वस्तु दे देता है?

काना उहव आँख मारय।

कहावत हास्य व्यंग्य पर कही गई है। काने आदमी के आँख मारने का महत्व ही क्या है? मगर अपनी–अपनी समझ की बात है कि काना भी अपने को किसी खूबसूरत आँख वाले से कम नहीं समझता। वह भी आँख मारने का दावा रखता है।

अ०– किसी कार्य में असमर्थ होने के बाद भी अपने को कार्य के काबिल समझना तथा अपने आप अपनी कीमत लगाना।

काटौ सांप जहा मन भावै।

दुश्मन से परेशान होकर उसके हवाले अपने को सौंपना, वर्ना साँप को कौन काटने देगा?

अ०– जब आदमी हर तरह से परेशान हो जाता है, चारों ओर से निराश हो जाता है, कहीं कोई सहारा नजर नहीं आता है तो वह हारकर दुश्मनों को स्वयं को समर्पित कर देता है। कहावत के अनुसार ए सांप! जहाँ ज़ी चाहे काटो, कोई रोक–टोक नहीं है।

का सूप क ओलारा सूपे मां रहिहैं।

श०– सूप–जिससे अनाज साफ किया जाता है। हमारे देश में विशेष रूप से गांवों में जब बच्चा पैदा होता है तो उसे सबसे पहिले सूप में ही लिटाया जाता है। उसी पर कहावत है।

अ०– जब कोई बड़ा हो जाता है तो उसे बहुत दिनों बाद देखकर कि बड़ा हो गया है, खूब होशियार हो गया है तो प्रशंसा में कहा जाता है कि क्या जैसे सूप में लेटे थे वैसे ही थोड़े रहेंगे?

कातिक में जो सीत पियै तो पावै लाभा।
जो भादव मां पियै कोऊ तो ताप चढ़ावै।।

श०– सीत–मट्ठा, लाभा–लाभ, फायदा, ताप–गर्मी बुखार।

कहावत स्वास्थ्य व मौसम विषयक कही गई है।

अ०– कार्तिक माह में मट्ठा पीने से लाभ होता है और यदि भादों के महीने में पियें तो बुखार हो जाता है। यानी भादों में मट्ठा नुकसानदायक है।

काजी दूबर सहर के अंदेसे से।

श०– काजी–नीति और न्याय की व्यवस्था देने वाला। अंदेशे–भ्रम, शंका।

कुछ लोगों की आदत होती है कि जहाँ उनकी कोई आवश्यकता भी नहीं है वहाँ भी बिना काम के, बिना आवश्यकता के पहुंचे जरूर रहेंगे। गोस्वामी जी के शब्दों में– "जे बिनु काज दाहिने बायें"। बिना काम के चारों ओर घूमते रहेंगे, कहां क्या हो रहा है? कहां कौन क्या कर रहा है? पूरी जानकारी लिये बिना उन्हें चैन नहीं पड़ता। कहावत का पुट उसी पर है।

अ०– काजी, दुबले क्यों हुए जा रहे है? इसलिये कि उन्हें पूरे शहर भर की चिन्ता लगी हुई है।

कान क कच्चा (बंहिर), नाव श्रवनकुमार।

श०– कच्चा–सुन न पाने वाला, किसी बात को समझ न पाने वाला।

कहावत नाम की विडंबना पर कही गई है। श्रवण कुमार–सुननेवाला श्रवण कुमार जिन्हें राजा दशरथ का तीर लगा था।

अ०– कान के तो बहिरे है और नाम पड़ा है सुनने वाले कान वाले यानी श्रवण कुमार।

का कंता के घर रहे का चलि गये बिदेस?

श०– कंता–पति, अपना आदमी।

कहावत तो घर के या काम के किसी भी सदस्य के प्रति कहीं जा सकती है। कोई भी जब किसी से उदास, दुःखी, परेशान होता है तो कहता है।

अ०– किसी के रहने न रहने से मुझें क्या लाभ है, चाहे कोई रहे या न रहे। मगर कहावत आमतौर पर पति के प्रति पत्नी कहती है कि मुझे क्या, मेरे लिए सबकुछ वैसा ही है चाहे मेरे पति घर रहें चाहे परदेश में रहें। जैसे उनके घर रहने पर है वैसा ही परदेश जाने पर भी है। मुझे कोई सुख नहीं है।

काल क भोगी, आज क जोगी।

श०– भोगी–भोग करनेवाला, रासरंग, हास, विलास, आराम, मस्ती में दिन बिताने वाला आदमी/जोगी–साधु महात्मा।

कहावत ऐसे जानकार व्यक्ति पर व्यंग्य में कही गई है कि जो व्यक्ति अभी कुछ दिनों पहले तक मौज मस्ती में छैल–छबीला बनकर, निश्चिन्त ज़िन्दगी बिताता था, आज वह बदल गया है।

अ०– जो कल तक मौज मस्ती करता था आज संन्यासी हो गया है।

काने नं लहरै नहीं तो सोन का होई?

कितनी भी मूल्यवान वस्तु क्यों न हो जब उसका कोई उपयोग ही न हो तो उसे कोई लेकर करे भी तो क्या करे?

श०– लहर–पहनने का स्थान जहाँ कान में सोने के ज़ेवर पहने जाते हैं।

अ०– जब कान में लहरे न हो तो सोने के गहने को लेकर क्या करें? तात्पर्य यह है कि किसी वस्तु का महत्व उसके अधिक मूल्य से नहीं उसकी उपयोगिता से आंकी जाती है। यदि वस्तु का सदुपयोग है तो एक नये पैसे की होने पर भी मूल्यवान है और यदि उसका उपयोग ही नहीं है तो लाखों की हो तो भी कोई लाभ उससे नहीं है।

काट कछोटी, सुनहले बाल।
इन्है छोड़ि जिनि बेसहो आन।

अ०– कहावत बैलों की पहचान पर कही गई है कि जिनके सुनहले बाल, काली काठी हो, ऐसे बैलों को छोड़कर दूसरा मत खरीदो।

कामिनि गरभ औ खेती पकी
ये दोनों ही दुर्बल बदी।

श०– कामिनि–स्त्री, गरभ–गर्भवती, जिस स्त्री के पेट में बच्चा हो, दुर्बल–कमजोर।

अ०– जिस स्त्री के पेट में बच्चा हो तथा जो खेत की फ़सल बिल्कुल पक कर तैयार हो, ये दोनों ही कमजोर माने जाते हैं। स्त्री को बच्चा सुरक्षित हो जाय, खेती का पका अनाज घर आ जाय तो समझो कि अब लाभ मिला।

कातिक सुदी एकादशी, बादल बिजुली होय
तो असाढ़ मां भड्डरी बरखा चोखी होय।

श०– सुदी–कातिक माह का दूसरा पाख, चोखी–तेज़, अधिक।

अ०– कवि भड्डरी का कथन है कि यदि कार्तिक माह की एकादशी को बिजुली चमके तो समझो कि असाढ़ में पानी खूब बरसेगा।

कातिक सुदी पूनों दिवस, जो कृतिका रिख होय तामें बादल बीजुली जो संयोग से होय।

अ०– यदि कार्तिक माह की पूर्णमासी को कृतिका नक्षत्र हो तथा बादल दिखाई दे, बिजुली चमके तो वर्षा अच्छी होगी। कहावत वर्षा के लक्षण पर कही गई है।

कातिक मावस देखो जोसी,
रबि, शनि, भौमबार जौ होसी।
स्वाती नखत औ आयुष जोग,
काल पड़ै औ नासै लोग।।

श०– मावस–अमावस, जोसी–ज्योतिषी, रवि–इतवार, भौमबार–मंगलवार, स्वाती नक्षत्र तथा आयुष्य–योग का नाम।

अ०– यदि कार्तिक माह की अमावस्या को इतवार, शनिवार, मंगलवार, पड़े, स्वाती व आयुष्य योग पड़े तो निश्चय ही या तो अकाल पड़ेगा या लोगों का किसी न किसी प्रकार से नाश होगा।

का पूत बतनौ से गयो।

अ०– पुत्र से अनेकानेक आशायें की जाती हैं मगर यदि कोई पुत्र मुँह से बात न करे तो कहावत कही जाती है कि क्या पुत्र और सब से गये। तो गये अब क्या बात करने से भी गये, बात करने का भी मन नहीं करता।

काहे पंडित पढ़ि–पढ़ि मरो,
पूस अमावस की सुधि करो।
मूल बिसाखा पूर्वाषाढ़,
झूरा जानौ बहिरे ठाढ़।

अ०– ए पंडित, पढ़–पढ़ कर काहे परेशान हो, पूस की अमावस्या की याद करो। यदि अमावस्या को मूल, बिशाखा तथा पूर्वाषाढ़ नक्षत्र पड़ता है तो निश्चित ही अकाल पड़ेगा, ऐसा घाघ कवि का कहना है।

काँख पाद बहुतेरी, खाय के डेढ़ पसेरी।

श०– काँख–कराहना, पाद–पेट से हवा निकलना, डेढ़ पसेरी–पहले के जमाने में सेर का बाट होता था, अतः दो सेर की पसेरी होती थी। डेढ़ पसेरी का मतलब हुआ तीन सेर।

कहावत ऐसी स्त्री के प्रति कही गई है जो काम करने में कामचोर हो। काम के समय बहानेबाजी करना।

अ०– कहावत पुराने ज़माने के संयुक्त परिवार की कही गई है। काम करने में तो स्त्रियाँ बहुत ज्यादा कांखने लगती हैं और जब खाना खाने बैठेंगीं तो पूरे डेढ़ पसेरी खा जायेंगी। यानी खाना खाने के समय तबीयत बिलकुल ठीक हो जायेगी।

का पैरा से डाभी होय क है।

कहावत किसी वृद्ध के प्रति कही गई है जिससे निराशा मिलती है या जो स्वयं के जीवन से निराश हो।

श०– पैरा–पुआल, धान के खेत से निकलता है, डाभी–आम की नई कोपलें, कुस जैसी एक घास।

अ०– क्या अब हमें बूढ़े से जवान होना है।

काबुल मां सब घोड़ै नाहीं बसते।

श०– काबुल–अफगानिस्तान की राजधानी, एक प्रांत।

कुछ ऐसे स्थान हैं जहां की कुछ वस्तुएं बहुत मशहूर होती हैं। किन्तु यदि यह मान लिया जाय कि जहां पर मशहूर वस्तुएं मिलती हैं वहाँ खराब मिलती ही नहीं तो यह असंभव है। कहावत इसी पर कही गई है या कहीं अक्लमंद ही अक्लमंद बसते हैं, ये तो असंभव है।

अ०– काबुल के घोड़े मशहूर होते हैं किन्तु यह कहा जाय कि काबुल में गधे नहीं होते, सब घोड़े ही बसते हैं, तो असंभव है। यानी बेवकूफ अक्लमंद हर स्थान पर मिलते हैं।

सावन हुर्रे भादों चीत क्वार मास गुड़ खायउ मीत।
कातिक मूली अगहन तेल, पूस मं करय दूध से मेल।
माघ मास घिव खिचरी खाय, फागुन उठि के प्रात नहाय।
चइत मांस मां नीम बेसहती, बैसाखे मां खाय जड़इती।
जेठ मास जो दिन मां सोवै, ओकै जर असाढ़ मां रोवै।

कहावत कवि घाघ की है जो स्वास्थ्य विषयक है कि किस माह में क्या–क्या खाना चाहिए? कैसे रहना चाहिए?

अ०– सावन में हर्रे, भादों में चीत और क्वार में गुड़ खाना चाहिए। कातिक महीने में मूली, अगहन में तेल

खाना चाहिए? पूस माह में दूध पीना चाहिए। माघ मास में खिचड़ी के साथ घी खाना चाहिए। फागुन में प्रातः नहाना तथा चैत में नीम का सेवन करना। नीम के पेड़ के नीचे रहना व पत्तियाँ खाना चाहिए। बैसाख में जड़हन का चावल खाना चाहिए तथा जेठ महीने में जो सोता है दिन में उसका कष्ट उसे आषाढ़ माह में मिलता है। आषाढ़ में बुखार आदि आ जाता है। शरीर में आलस्य छाया रहता है।

सावन साग न भादौं दही, क्वार करैला न कातिक मही।
अगहन जीरा, पूसै धना, माघै मिश्री, फागुन चना।
चइतै गुर, बैसाखै तेल, जेठे पंथ असाढ़े बेल।

अ०— सावन में साग, भादों में दही, क्वार में करेला, कार्तिक में मट्ठा, अगहन में जीरा, पूस में धनिया, माघ में मिश्री, फागुन में चना, चैत में गुड़, बैसाख में तेल ज्येष्ठ मास में रास्ता तथा आषाढ़ में बेल से परहेज करना चाहिए। जेठ माह में रास्ता नहीं चलना चाहिए। ये सभी कहावतें स्वास्थ्य के प्रति कही गई हैं।

का बांगर के अन्ने, का जोलाहा के धन्ने।

श०— बांगर—उसरही ज़मीन, अन्ने—अन्न, अनाज; धन्ने—धन।

अ०— न ऊसर की ज़मीन में अनाज हो सकता है और न जुलाहा जो कपड़े बुनता है उसके धन में बढ़न्त बरकत हो सकती है। जब जुलाहे के धन की तरह किसी के धन में बरकत नहीं होती या रद्दी ज़मीन के कारण अनाज कम मिला तो कहावत कही जाती है।

कानी क को सराहै, कानी कै माय।

जब आपस में ही एक दूसरे की प्रशंसा करने लग जाते हैं तो कहावत कही जाती है। अपने घर की व रद्दी वस्तु या ऐबी मनुष्य की प्रशंसा करना।

अ०— एक तो कानी, उस पर उसकी प्रशंसा की तो मां ने, और भला कौन कानी की प्रशंसा करेगा?

का सावन से भादौ दूबर बा?

अ०— क्या किसी से कोई कम है? आपसी तुलना के समय कहावत कही जाती है।

काम जो आवै कामरी का रे करय कुमाच।

श०— कामरी—कमरी, कुमांच—रेशमी चादर।

उपयोगी वस्तु की बहुत ज्यादा कीमत होती है। जिसका कोई इस्तेमाल न हो वह कितनी भी कीमती हो तो उससे क्या लाभ हो सकता है?

अ०— जब अपने काम कमरी आती है तो रेशमी चादर लेकर क्या किया जाय? इसी भांति मूल्यवान वस्तु यदि व्यर्थ में पड़ी है तो उसका क्या फायदा उठाया जा सकता है। कवि रहीम के शब्दों में "जहाँ काम आवै सुई, काह करै तलवार"।

काम के न काज के दुस्मन अनाज के।

जब कोई मनुष्य नमक हरामी करता है, निठल्ला बैठा रहता है तो कहावत चरितार्थ होती है—

अ०— न किसी काम के हैं न कुछ करते हैं, बस अनाज के भारी दुश्मन हैं, खाना ढेर सा चाहिए। निघर घट की तरह बेर्शमी से घूमने को मिल जाय और खूब खाने को मिले, फिर क्या है?

कानी के बराते मां सब असगुन—असगुन।

श०— असगुन—बुरा ही बुरा, अपशकुन होना।

जब किसी के ब्याह, बारात या किसी भी शुभ कार्य में बाधाएं ही बाधाएं आती जाती हैं तो कहावत चरितार्थ होती है।

अ०— जो स्वयं अपशकुनी है, उसके शुभ कार्यों में भी तमामं रुकावटें आती रहती हैं।

कानी अपने मने सोहानी।

कुरूप तथा ऐबी व्यक्ति की कौन प्रशंसा करेगा? मगर ऐसा व्यक्ति अपने को सुंदर नहीं तो कुरूप भी नहीं समझता। ऐसा पुरुष या स्त्री मन ही मन गरूर करती है तो कहते हैं।

अ०— कानी को भले कोई पसंद न करे किन्तु वह अपने आप में अपने को भली समझती है।

कानी बिना चैन न आवै, कानी देखे जरी जाय।

कभी—कभी बड़ी कठिन परिस्थिति आदमी के सामने आती है कि जिस आदमी को देखे बिना रहा नहीं जाता और उसको देखते ही क्रोध, जलन भी होने लगती है।

अ०— कानी के बिना रहा नहीं जाता और उसी को देखकर क्रोध भी आता है। एक ही आदमी के प्रति तरह–तरह के भाव–संचार होना, कभी ईर्ष्या तो कभी प्रेम।

काना रहै खोंचि जाय, लूला रहै टोंकि जाय।

किसी भी व्यक्ति में किसी प्रकार का ऐब होता है तो वह हमेशा अपनी कमी की हीन भावनाओं से ग्रस्त रहता है। घटना कहीं भी होगी, किसी के ऊपर होगी वह तुरंत अपने ऊपर ले लेगा।

अ०— काना, लूला लंगड़ा, ऐंचाताना कैसा भी आदमी हो अपनी हीनता के प्रति अकारण ही खोंचा (रुष्ट) रहता है।

का करै पतनी, जौ होय घरैतिन जतनी।

श०— पतनी–अयोग्य, घरैतिन–घरवाली, पत्नी, जतनी–यत्नपूर्वक सुचारुरूप से घर की व्यवस्था करने वाली।

हमारे समाज में, देश में स्त्रियां गृहलक्ष्मी कही जाती हैं। कहावत विशेष रूप से सुघर नारियों पर कही गई है।

अ०— यदि गृहणी चतुर एवं गृह कार्य में निपुण है तो अयोग्य व्यक्ति भी होगा तो कुछ नहीं कर सकता। स्त्री अपनी समझदारी से तथा अपने यत्न के द्वारा घर को कम पैसे में कम खर्च में चला लेगी जिससे घर की अनेक समस्यायें सुलझ सकती हैं।

काठ की भवानी क मकरा क अच्छत चाही।

अ०— जो जैसा हो उसका सम्मान भी वैसा ही होता है। पत्थर की प्रतिमा को चावल का अच्छत चढ़ता है। यदि काठ यानी लकड़ी की प्रतिमा है तो मकरा, जो एक बहुत मोटा व गर्म अनाज होता है, उसका अच्छत चढ़ाकर पूजा होती है।

काना मनई बदरिहा घाम,
इनसे परा दइव से काम।

श०— बदरिहा–बादलों के साथ–साथ की धूप, दइव–ईश्वर, भगवान। काना आदमी और धूप छांह का बादलों वाला घाम दोनों ही महा कष्टकर माने गये हैं।
अ०— काना आदमी और बादल का घाम इनसे पाला पड़े तो समझो कि भगवान से पाला पड़ा है। दोनों से बड़ी परेशानी होती है, दोनों ही कष्टकारक होते हैं।

काठ की हांड़ी बार–बार चूल्हे पै नहीं चढ़तै।

अ०— कपट, छल, धोखे का व्यवहार बार–बार नहीं चल पाता है या इज्ज़त के प्रश्न पर भी लोग कहते हैं।
अ०— जैसे एक बार इज्ज़त जाने पर फिर वापस नहीं आती, वैसे ही काठ की हांड़ी एक बार चूल्हे पर चढ़ने के बाद दूसरी बार नहीं चढ़ाई जा सकती।

काग दाहिने खेत सुहाये,
सुफल मनोरथ समझो भाये।

श०— सुहाये–शोभित होना, काग–कौवा, सुफल–सफल, पूर्ण, मनोरथ–इच्छायें।

कहावत कवि भड्डरी की है जो यात्रा–शकुन के समय उद्धृत की गई है। इसी भांति गोस्वामी जी ने भी कहा है– "'दाहिन काग सुखेन सुहावा, नकुल दरस सब काहू पावा"।

अ०— यात्रा के समय यदि दाहिने हाथ की तरफ़ खेत में कौवा दिखाई पड़े तो बड़ा शुभ माना जाता है। कहते हैं कि ऐसा शकुन होने पर मन के सभी कार्य पूर्ण होते हैं, ऐसा समझनना चाहिए।

कान छोड़ कनपटी क धुन–धुन।

कहावत किसी ऐसे मूर्ख को देखकर कही गई है जो आवश्यक बात तो छोड़ दे और फालतू की बातों को ओटता रहे।

अ०— मूर्खों की बातें ही न्यारी होती हैं। जब भी कोई कठोर आवाज सुनाई देती है तो कान कनपटीं दोनों ही सन्न हो जाते हैं मगर मूर्ख आदमी की कनपटी पर आवाज़ का असर पड़ता नहीं है। कान में उसे कुछ नहीं जान पड़ता। बस वह अपनी कनपटी की धुन–धुन ही की सनक में रहता है।

कान छेदउतै बनी, गुर कोचइया खाते बनी।

श०— कान छेदाना–हमारे हिन्दुओं में कान छेदाना १६ संस्कारों में से एक संस्कार माना गया है, कोचइया–गुड़ का कोचा गुलगुला।

जब किसी को काम करने की हिदायत दी जाय जिसके बिना काम नहीं चलता तो कहते हैं।

अ०— कान तो छेदवाना ही पड़ेगा, उसी के साथ–साथ

गुड़ का गुलगुला खाना पड़ेगा। कान छिदवाते समय बच्चे के हाथ में कोई मीठी वस्तु इसलिए रख दी जाती थी कि वह कान छिदवाते समय उचके–पचके नहीं और उसका ध्यान बंटा रहे। इस प्रकार दोनों ही मजबूरी थी। कान छिदाने की भी और गुड़ खाने की भी। यानी कष्ट के साथ आराम भी मिलना।

कागद कै नाव पानी मां नहीं चलतै।

कहावत उस समय कही जाती है जब लोग बेईमानी पर उतारू हो जाते है।

अ०– जिस प्रकार से कागज़ की नाव पानी में गल जाती है, चल नहीं पाती, उसी प्रकार से बेईमानी, घूसखोरी का पैसा भी ज्यादा दिन नहीं चल पाता या जबानी या कागजी घोड़ा दौड़ाने से काम नहीं होता, काम करने से होता है।

काम का काम सिखावे।

कहावत सिद्धान्तवादी है। काम करने से काम आता है।

अ०– कठिन से कठिन काम हो, जब उसे बराबर लगन से नियम से किया जायेगा तो वह निश्चित ही थोड़े समय के बाद सीख ही नहीं लिया जायेगा बल्कि काम करते–करते आसान भी लगने लगेगा। कोई भी काम हो वह परिश्रम करने से आता है। परिश्रम करने से काम आसान व ढंग का होता है।

का सूक सनीचर अस ठाढ़े भये।

किसी व्यक्ति की नज़रें जब बहुत बुरी होती हैं या वह कुछ न कुछ नुकसान करने की दृष्टि से खड़ा हो या उससे भय हो कि यह कुछ न कुछ हानि अवश्य कर देगा तो कहते हैं। कहावत व्यंग्य में भी कही जाती है।

अ०– क्या शुक्र शनि की तरह खराब नजर लिये यहां पर खड़े हो।

का तोहरे खोदाये गंगा खोदिहैं?

किसी आदमी से किसी कार्य को सम्पन्न कराना यदि लंबी प्रतीक्षा के बाद भी संभव नहीं हो पाता है तो लोग रोब में कहते हैं।

अ०– क्या तुम्हारे बिना काम ही न हो पायेगा? तुम्हारे ही खोदे गंगा खोदी है क्या? तुम्हारे ही भरोसे दुन्रिया के काम होते हैं क्या? तुम नहीं करोगे तो होगा नहीं क्या?

कातिक बात कै घातिक, कुवार चूल्ही कै दुआर। अगहन हांड़ी अदहन, माघ तिलै–तिल बाढ़य, फागुन गोड़ पसारै।

कहावत समय, काल, दिन के छोटे होने पर उद्धृत की गई है।

अ०– कार्तिक माह में दिन इतना छोटा होता है कि किसी से बात करने लग जाओ तो समझो कि काम का घातिक हुआ, यानी काम में नुकसान हुआ। क्वार माह में दिन इतना छोटा होने लगता है कि चूल्हे के पास बैठकर खाना बनाओ कि दिन गायब हुआ। अगहन के माह में चावल–दाल के लिये अदहन, यानी चूल्हे पर दाल चावल बनाने को पानी चढ़ाओ कि दिन खत्म हो गया। फिर माघ महीने से एक–एक तिल–तिल करके दिन का बढ़ना शुरू होने लगता है और फागुन के माह तक दिन काफ़ी बड़ा होने लगता है। गोड़ पसारने का मतलब हैं कि आराम से सो भी सकते हो। काफी समय होना।

"कालिक बानिन आजुइ सेठ"।

श०– कालिक–कल की, अभी कुछ ही दिन पूर्व, बानिन–बनिया की स्त्री, सेठ–बहुत बड़े आदमी, रईस।

कहावत किसी नये बड़े आदमी को देखकर कही गई है। यानी जो अभी कल तक या कुछ दिनों पहले तक वाणिज्य व्यापार कर रहा हो, वही आज बड़े गर्व से बड़ा आदमी बना हुआ है।

अ०– अभी तक परचून की दुकान–बनिया का काम कर रहा था वही आज सेठ महाजन हो गया है।

काबुल गये मोग़ल बनि आये, बोले मोगली बानी, आब–आब कै पुतऊ मरिगे खटिया तर धर पानी।

श०– काबुल–अफगानिस्तान की राजधानी, एक प्रांत, मोग़ल–एक तातारी प्रसिद्ध लड़ाका जाति, आब–फारसी या उर्दू में पानी को कहते हैं/पुतऊ–पुत्र, लड़का।

कहावत परदेश जाने वालों की बोली–बानी, रहनसहन के बदलाव के ऊपर व्यंग्य में कही गई है। किस प्रकार से लोग दूसरे देशों में जाकर अपने देश की बोली भूल जाते हैं।

अ०– कोई आदमी काबुल गया तो वहां से मोगली भाषा बोलना सीखकर अपने देश लौटा तो काबुल की ही बोली बोलता था। एक बार वह बीमार पड़ा तो अपनी बूढ़ी मां से आब मांगने लगा, तो बुढ़िया बेचारी आब क्या समझें? वह बार–बार मोग़ली बोली में आब कह कर पानी मांगता किंतु मां समझ न पाई जब कि खाट के नीचे पानीं का भरा लोटा रखा हुआ था। अंत में बीमार बेटा मर गया जब मां की समझ में आया तो उसने अपना सिर पीट लिया। इसलिये अपने देश की रीति रिवाज, भाषा, बानी कभी छोड़नी नहीं चाहिए।

काहेव कै सहूर नाहीं, चिउरा बांटे क लबलब।

अ०– किसी बेसहूर स्त्री को देखकर कहावत कही गई है कि किसी काम को करने की बुद्धि है नहीं उस पर काम लेना चाहा तो बांट बंटवारे का, जिसके लिये बड़ी बुद्धि की आवश्यकता होती है।

काजर की कोठरी मां जाये पर,
कारिख जरूर लगिहै।

काजल की कोठरी में कितना भी साफ, पवित्र व्यक्ति क्यों न जाय, उसके कहीं न कहीं काजल ज़रूर छू जायेगा, कहावत भी इसी पर है जो किसी को असज्जनों के साथ देखकर या किसी को गलत काम करते देखकर कही गई है।

कवि रहीम खानखाना ने लिखा है–

रहिमन नीचन संग बसि लगत कलंक न काहि।
दूध कलारी हाथ में, मद समुझै सब ताहि।।

तो नीचों की संगत करने पर कितना भी कोई ग़लत काम मत करो, किंतु निचाई का दोष तो लगेगा ही चाहे जितनी भी सफाई क्यों न दी जाये? जैसे कलवारिन हाथ में दूध लिये है मगर देखने वाले सभी लोग उसे समझते हैं कि शराब लिये है।

काहे का बाँझ बिअइहैं, काहे क टुर्रक बाजे?।

श०– बांझ–जिस स्त्री को बच्चा हुआ ही न हो, जो गर्भ धारण के योग्य न हो, बिअइहैं–बच्चा पैदा होना, टुर्रक–तुरही, एक प्रकार का बाजा है।

कहावत कार्य विशेष रुकने के कारण से सम्बन्धित हैं। कारण ऐसा जो कि असंभव है तो न कार्य होने की संभावना होगी और न कार्य होगा।

अ०– वंध्या नारी के न बच्चा होगा और न तुरही बजने की नौबत आयेगी।

का नेनुआ बाढ़े नतौ रूखाबो न करे?

श०– नेनुआ–जल तोरई, घिया तोरई, रूखाबो–रूखा होना, कड़ा होना।

कहावत व्यक्ति विशेष की लंबाई या अधिक उम्र होने पर कही गई है या बहुत छोटे नाटे कद के आदमी पर व्यंग्य किया गया है कि छोटा नाटा आदमी क्या बुड्ढ़ा या बड़ी उम्र का भी न दिखेगा?

अ०– नेनुआ क्या बड़ा नहीं हुआ तो रूखा भी न होगा? बढ़ती उम्र का अंतर तो शरीर पर आ ही जाता है। चेहरे पर कुछ न कुछ प्रभाव तो पड़ेगा ही।

काहे जल्दी–जल्दी चलती हौ?
अकेले के मारे,
काहे धीरे–धीरे चलती हौ
पांच सात के मारे।

कहावत बहुत पुराने समय की है जब लोग सम्मिलित परिवार में रहते थे। कोई स्त्री बहुत जल्दी–जल्दी चलकर काम को निबटा रही थी तो किसी पराई स्त्री ने पूछा आज काहे बड़ी जल्दी में हो। क्या बात है? तो बोली कि आज घर में अकेली हूं सभी काम मुझे ही करने हैं।

दूसरे दिन वही स्त्री वही काम बड़े आराम से धीरे–धीरे कर रही थी तो फिर वही स्त्री पूछने लगी कि आज तो बहुत आइस्ते–आइस्ते काम कर रही हो तो वह बोली कि आज तो घर में बहुत से लोग काम करने वाले हैं। क्या जल्दी है?

का तोहरे बाप कै कर्जा खाये हैं।

जब किसी आदमी पर किसी काम के द्वारा या किसी प्रकार की धौंस व अधिकार जमाया जाता है तो कहावत चरितार्थ करते हैं।

अ०– क्या तुम्हारे पुरखों से, बाप से कर्जा लेकर खाया है जो तुमसे दबा रहूं। तुम्हारा कर्ज़दार नहीं हूं जो इतना रौब झाड़ते रहते हो।

कागा कउवा औ खरगोस,
ये नहिं मानै तीनों दोस।

अ०– जंगली काला कौवा, मैदान में रहने वाले कौवे

और खरगोश इन तीनों को पाला नहीं जाता। जंगली कौवे एकदम काले होते हैं। इनकी गर्दन भूरे रंग की होती है। ये चारों ओर उड़ते–दौड़ते रहते है। इनका न कोई स्थान होता है न देश गाँव होता है।

काजर गवा बिहार, बहुरिया निहुरी ही है।

जब किसी बात या वस्तु की अत्यधिक प्रतीक्षा की जाय और वह देर से भी न आ पाये या मिल पाये तो कहावत चरितार्थ की जाती है।

अ०– कोई नायिका काजल लगाने की आशा में झुकी, तो वह झुकी ही रह गई, मगर काजल उसे न मिल पाया। वह बहुत दूर पर चला गया।

कातिक कुतिया, माघ बिलाई,
चैत चिड़िया, सदा लुगाई।

कहावत में स्त्री–पुरुष के संभोग प्रसंग पर कहा गया है कि किस माह में किस को काम की इच्छायें अधिक होती हैं और किस माह में कौन गर्भधारण करने की शक्ति रखता है।

अ०– कातिक के माह्न में कुतिया, माघ के माह में बिल्ली और चैत में चिड़िया तथा नारी सदैव कामातुर रहती है।

कातिक जे अंवरा तर खाय,
कुटुंब सहित बैकुंठे जाय।

अ०– कार्तिक का माह हमेशा दानपुण्य का माह होता है। ऐसा लोक–विश्वास है कि जो कार्तिक के माह में आंवले के पेड़ के नीचे भोजन बनाकर खाता है वह और उसके परिवार वाले सभी को स्वर्गधाम मिलता है। वह पापों से मुक्त हो जाता है।

कांकर तीत, ककरी कै बियौ तीत।

अ०– कहावत किसी नीच, दुष्ट ऐबी आदमी पर कही गई है जो स्वयं भी दुष्ट है, उसकी औलादें भी दुष्ट हैं। कहा गया है– "जइसे कांकर वइसे बिया, जइसे माई वइसे धिया"।

काम पियार होत, केव क चाम नहीं पियार होते।

किसी मनुष्य की महत्ता काम से मापी जा रही है उसके शरीर की सुदरता से नहीं।

अ०– किसी आदमी की खूबसूरती या उसके डील डौल को देखकर कोई उसे प्यार नहीं करता। आदमी की इज्ज़त उसके कार्य से होती है कि वह कितना परिश्रमी है, कितना परोपकारी है, दूसरों के हित के लिये कितना काम आता है? कोई देखने में बहुत सुंदर हो, मगर जब किसी के काम न आ सके तो कौन उसको पूछेगा?

काटा औ उलटिगा।

अ०–कहावत दुष्ट आदमियों के प्रति कही गई है। काट के उलटंने के लक्षण साँप के होते हैं।

" कि "

कि पाके सुख कि लड़िकये सुख होय।

कहावत किसी बच्चे वाली मां को बच्चे के बहाने आराम करते देख कहते हैं।

अ०– या तो किसी औरत की गोद में छोटा बच्चा है तो उसके पास तमाम बहाने हैं, जैसे– दूध पिलाना, कपड़े बदलना, टट्टी–पेशाब साफ करने के तमाम बहाने मिल जाते हैं कि काम न करना पड़े। उस बहाने से या फिर किसी के पाका या फोड़ा होने पर मजबूरन काम करने से फुर्सत मिल जाती है। इन दो अवसरों पर कोई काम करने को कह भी नहीं सकेगा और न वह कर सकता है।

कि तो गादर चलबै न करै,
औ चलै तौ मेड़वै ओदारै।

श०– गादर–जो बैल बैठोल होते हैं, मेड़वे–खेत की सीमा बंदी, खेत की मेंड़, ओदारय–उचारना, चौपट करना, हदबंदी तोड़ डालना।

कहावत किसी ऐसे व्यक्ति पर कही जाती है जो इतना आलसी हो कि कोई काम ही न करना चाहे और जब करने को चले भी तो इतना जोश आ जाये कि चाहे काम बिगड़ ही क्यों न जाये मगर इतनी मेहनत के साथ जुट जाय कि ढ़ेर सा काम करके रख दे तथा काम करके वस्तु का नाश कर दे।

अ०– कहावत है कि या तो गादर बैल रात दिन बैठे ही रहे या फिर जो खेत जोतने चले तो खेत ही नहीं खेत की मेंड़ ही साफ़ कर दे।

किस बित्ते पर तत्ता पानी।

श०– बित्ते–बूतेपर, किस हिम्मत पर, तत्ता–गरम, बनाबनाया खाना।

यह कहावत तब कही जाती है जब आदमी एकदम निठल्ला, बिना काम–धाम किये घर बैठा हो, उसकी कोई कमाई–धमाई न हो, बेकार हो तो उसको व्यंग्य में कहते हैं।

अ०– किस कमाई–धमाई पर तुम्हें खाना–पीना दिया जाये? कौन सी लायकी दिखाई है तुमने जो खाने पीने की अपेक्षा करते हो और तुम्हें पूछा जाय, खाना–पीना या बड़ी इज्ज़त दी जाय।

कितो कर होय, कितो डर होय।

श०– कर–कर्त्तव्य, कार्यशीलता, डर–भय, लगन, चिन्ता।

कहावत ऐसे पुरुष पर कही गई है जो कार्य करने में लापरवाही दिखाता हो, काम की चिन्ता न हो जिसे, तो कहावत सिद्ध की जाती हैं।

अ०– कोई कर्तव्यपरायण हो, जिसे काम की लगन हो, काम या तो वह व्यक्ति कर सकता है और या तो फिर वह जिसे कार्य पूर्ण न होने का भय हो। काम इन्हीं दो स्थितियों में हो पाता है।

किहनी ऐसी झूठी कि बात ऐसी मीठी।

श०– किहनी–कहानी।

अ०– किहनी झूठी होती है। आमतौर पर वह मीठी–मीठी बातों के द्वारा बढ़ा–चढ़ा कर कही जाती है।

किस्मत न दे यारी तो क्यों करे फौज़दारी।

अ०– यदि भाग्य साथ न दे तो फिर लड़ाई करने से कोई लाभ नहीं होता। जब तक भाग्य साथ नहीं देता, तब तक कोई कार्य सिद्ध नहीं हो सकता।

" की "

कीन करावा जस ना पावा,
नोन चोरउनी नाव धरावा।

श०– कीन–करावा–किया धरा, किया कराया, जस–यश, भलाई, नोन–नमक, चोरउनी–चुराने वाली, नाव–नाम, धरावा–रखा जाना।

कहावत उस समय कही जायेगी जब कोई किसी के साथ भलमनसाहत करते–करते परेशान हो जाये, किन्तु उसका नतीजा बुराई के रूप में मिले। प्रशंसा करने को कौन कहे, उलटे दोषारोपण हो।

अ०– भलाई करने के बदले में मिला क्या? चोरी का दोष, कलंक यानी जी–जान से भलमनसाहत करने के परिणाम में "नोन चुराने वाली" नाम रखा गया, यश के बदले में अपयश देना। कहा है– "राम क बन केकई क अपजस"।

कीचड़ मां ढेला फेंकै,
तो छींट अपनेन पैं परै।

श०– कीचड़–मिट्टी व पानी मिला कींच, ढेला–पत्थर, ईंट का टुकड़ा, छींट–छीटे।

अ०– किसी गड्ढे में यदि कीचड़ जमा है तो उसमें यदि छोटे–बड़े पत्थर के टुकड़े फेंके जायें तो छिट्टा अपने ही ऊपर पड़ता है। यानी गंदे लोगों के साथ रहने पर कुछ न कुछ कलंक लगना स्वाभाविक होता है। रहीम कवि के शब्दों में–

रहिमन नीचन संग रहि, लगत कलंक न काहि
दूध कलारी हाथ में मद समुझत सब ताहि।

यानी कि कलवारिन के हाथ में चाहे दूध ही क्यों न हो उसे सभी लोग शराब समझते हैं।

की हंसा मोती चुगै, की भूखे रहि जाय।

यहाँ जन्म स्वभाव के ऊपर कहावत कही गई है।

अ०– जो ऊंचे ख़ानदान में जन्म ले चुका है वह उसी स्तर से रहेगा।

अ०– या तो हंस मोती ही चुगेगा या तो फिर भूखा ही रह जाता है। यानी कि जो जिस खान–पान में पलता है वह उसी का आदी होता है।

कीन कराये पै पानी परिगा।

समय के अनुकूल यदि किसी की मदद की जाय, उसके अवसर पर उसके साथ भलाई की जाये और वह उसे न माने तो कहावत सामने आती है। कार्य होकर बिगड़ जाये तो भी कहावत चरितार्थ होती है।

अ०– जो कुछ भी किया कराया था उसके प्रति किसी प्रकार का कोई एहसान न मानना। सभी कार्य जो

भलाई के लिए किये गये हों उसके प्रति एहसान फरामोश होना या फिर बना बनाया काम बिगड़ जाना। जिस कार्य को अधिक परिश्रम व कष्ट के साथ किया गया उसमें सफलता का न मिल पाना।

की दुःख जानै दूखिया, की दुखिया की माय की दुःख जानै माछरी, जो थोरे जल मां सिराय।

श०– दूखिया–दुःखी आदमी, माया–माता, सिराय–ख़त्म होना, शांत होना, डुबो देना।

कहावत से मां का वात्सल्य व्यक्त होता है।

अ०– संतान के कष्टों की छटपटाहट और पीड़ा तो माँ ही समझ सकती है। जिस प्रकार से पानी घटने पर मछली किस प्रकार छटपटाती है, इसका दुःख तो मछली ही समझ सकती है कि थोड़े से पानी में वह किस प्रकार से ज़िन्दा रहती है?

कीकर, पाकर, सिरस हल,
हरियाने का बैल।
लोधा डाल लगाय के,
घर बैठा चौपड़ खेल।

श०– कीकर–बबूल, पाकर–बरगर की जाति का एकपेड़, सिरस–शीशम, हरियाने–हरियाना प्रांत। लोधा डाल–एक फूल का पेड़।

किसानों को कैसे बैल व हल की आवश्यकता होती है, कहावत इसी विषय पर कही गई है।

अ०– जिस किसान के पास शीशम, बबूल अथवा पाकर की लकड़ी के मजबूत हल हों तथा हरियाणे का बलिष्ठ, स्वस्थ बैल हो, उसको क्या चिन्ता? वह अपने घर पर लाल–सफेद फूलों की डाली लगाकर बैठे–बैठे चौरस खेल सकता है। यानी साधन सही होने के बाद कार्यभार भी कम हो जाता है तथा आदमी निश्चिन्त हो जाता है।

कील कहाँ गड़ती है? यह जूता पहनने वाला ही बता सकता है।

किसी भी दुःख–सुख का भुक्तभोगी ही उसके कष्टों व दुःखों को बता सकता है।

अ०– व्यक्ति को किसी के साथ सम्पर्क पड़ने पर क्या कष्ट होगा वह तो भुक्त भोगी बता सकता है। दूसरा उसी प्रकार नहीं बता सकता है जिस प्रकार से जूता पहनने वाला ही उस जूते की काट को तथा गड़ने वाली कील को बता सकता है। दूसरे को क्या पता कि कील जूते में है भी कहाँ? यानी कहावत है– "जाके पैर न होय बेवाई, सो का जाने पीर पराई"। तो पीर तो पीड़ित ही बता सकता है।

कीन करावन जिन होइब, ओंठ बिचकावन होइब।

श०– कीन करावन–करने धरने–वाली, कार्यशील होना, ओठ बिचकावन–मुंह बनाना, मुंह टेढ़ा करना, नाक–भौं चढ़ाना।

कहावत ऐसी स्त्रियों या पुरुषों के ऊपर लागू की है जो स्वयं तो कुछ काम करेंगे नहीं, यदि कोई दूसरा भी करता रहेगा तो उसके काम को देखकर तरह–तरह के मुँह बनायें।

कीचड़ में कमल खिलता है।

यह कहावत उस समय लागू होती है जब माता–पिता तथा संतानों में स्वभावतः बहुत बड़ा अंतर पाया जाता है। यह सही है कि कमल का फूल कीचड़ से जन्म पाकर विकसित होकर सुरभि फैलाता है। वह देवताओं के मस्तक पर चढ़ाया जाता है। उसी प्रकार से किसी असज्जन माता पिता की औलादें सज्जनतापूर्ण कार्य करती हैं तो कहावत चरितार्थ की जाती है।

अ०– कीचड़ में जन्म पाकर भी कमल सुंदर व सुरभित होता है, वैसे ही कभी–कभी नीच प्रकृति के माता–पिता के बड़े उच्च विचारों वाली संतानें जन्म ले लेती हैं।

की खाँय रोरा की खाँय ढोरा।

श०– रोरा–रोड़ी, गिट्टी, जो मकान बनवाते समय छत के ऊपर या ज़मीन में डाली जाती है।, ढोरा–बच्चे ढेर से।

अ०– कहावत रुपये पैसे संबंधी है। कहा गया है कि पैसा या तो मकान बनवाते समय अधिक ख़र्च होता है, या फिर जिसके घर में बच्चे खाने वाले हों उसके घर में ख़र्च होता है।

" कु "

कुल कापड़ जोगये क आय।

श०– कुल–वंश, ख़ानदान, कापड़–कपड़ा, वस्त्र, जो–गये–संभालना।

कहावत सिद्धान्तवादी है। गृहस्थ जीवन की व्यावहारिकता पर आधारित है।

अ०– जिस वंश में जन्म लिया जाय उसकी तथा कपड़े की गरिमा को बनाये रखेने में ही सुख, शान्ति व कल्याण है। उनकी सुरक्षा करनी चाहिए। कुल के प्रति गोस्वामी जी ने स्पष्ट लिखा है–

रघुकुल रीति सदा चलि आई,
प्रान जाय पर बचन न जाई।

इस तरह से अपने कुल की मर्यादा को बनाये रखना महापुरुषों का कर्तव्य होता है। वस्त्र शरीर की लज्जा का निवारण करते हैं, इसलिये उन्हें संभाल कर रखना आवश्यक होता है। अतः अपने कुल की व कपड़े की मर्यादा को बनाये रखना चाहिए।

कुकुरे कै चोट अढ़ाई घरी कै।

किसी बेशर्म आदमी के ऊपर कहावत कुत्ते के माध्यम से कही गई है।

अ०– जैसे कुत्ते को मारने पर थोड़ी ही देर में वह अपनी मार को भूलकर पुनः उसी स्थान पर कुछ न कुछ खाने व पाने के लालच से फिर आ जाता है, उसी प्रकार से बेहया आदमी भी कितना कुछ भी कहो, जब देखो तब वह हाज़िर हो जाता है। कुत्ता व बेहया को डांट–मार केवल थोड़े समय तक याद रहती है। कुछ समय बाद वह सब कुछ भूल जाता है।

कुकुरे के पूँछ की तरह टेढ़ानै रहति।

कहते हैं कुत्ते की पूँछ कभी सीधी नहीं होती है। चाहे उसे सालों किसी लोहे की नली में रखे रहो वह निकलने के बाद ज्यों कि त्यों टेढ़ी हो जाती है।

कहावत कुछ ऐसे ही क्रोधी, अहंकारी स्वभाव के लोगों के ऊपर स्पष्ट की गई है।

अ०– जैसे कुत्ते की पूँछ सीधी नहीं होती वैसे ही टेढ़े लोग कभी भी सीधे नहीं होते। उन्हें कितना भी खुश करो, सदैव ऐंठे ही रहते हैं। यानी कुछ लोग अपनी आदतों से बाज़ नहीं आते।

कुपथ मांग रुज ब्याकुल रोगी,
बैद न देय सुनहुं मुनि जोगी।

उपरोक्त पंक्ति तुलसीदास जी की है। लोग सदैव व्यावहारिक रूप में कहते हैं कि किसी कार्य से किसी शुभचिन्तक का नुकसान होता हो तो उस कार्य को कभी भी नहीं करना चाहिए, चाहे वह व्यक्ति रुष्ट ही क्यों न हो जाये।

श०– कुपथ–जो भोजन किसी रोगी के लिये हानिकारक हो, व्याकुल–दुःखी, परेशान, निराश।

अ०– यदि कोई बीमार अपनी लंबी बीमारी से निराश होकर कुछ अपाच्य भोजन की इच्छा अपने वैद्य से करे, तो वैद्य स्वास्थ्य के लिये हानिकारक आहार रोगी को कभी भी खाने को नहीं देगा। इसलिये कभी किसी की इच्छा–पूर्ति के लिये नहीं, उसकी भलाई के प्रति ही सचेत रहना चाहिए। बीमार की भलाई कुपथ्य देने में नहीं है।

कुँआ प्यासे के पास नहीं जातै।
पियासा कुँआं के पास आवतै।।

कहावत गर्जमंद की गर्ज के ऊपर उद्धृत की गई है। गर्जमंद हमेशा उसके पास जाता है जिससे गर्ज पूरी होनी होती है। कहावत इसी को लेकर कही गई है।

अ०– प्यासा व्यक्ति कुवें के पास जायेगा न कि कुआँ उठकर प्यासे के पास आयेगा। इसी तरह से गर्जमंद आदमी ही अपनी गर्ज लेकर किसी काम कराने वाले तक पहुंचता है।

कुकुरा अढ़वै बिलरिया क,
बिलरिया अढ़वै पुँछिया क।

श०– अढ़वै–किसी काम को करने के लिये कहना, आदेश देना।

कहने पर काम न हो और कार्य को बार–बार दूसरों पर छोड़ा जाये तो कहावत कहते हैं कि किसी काम को कुत्ता बिल्ली पर छोड़ता है तो बिल्ली अपनी पूँछ पर छोडती है। इस तरह से काम न हो पाना ही सामने आता है।

कुजगहा कै पाका ममियाससुर बैद।

श०– कुजगहा–ऐसे स्थान पर फोड़े होना जहाँ दिखपाना संभव न हो पाये, लज्जाजनक स्थान पर फोड़े का होना, ममियाससुर–पति के मामा/जब कार्य विशेष की परिस्थितियां विपरीत हों, काम में बाधा आती हो तो कहावत स्पष्ट की जाती है।

पुरानी रीति–रस्मों के अनुसार स्त्रियां अपने ममिया ससुर को छूना दोष मानती थीं। कहते हैं पति के मामा या पति के बड़े भाई यानी जेठ को छूना मना था। किंचित् भूले–भटके यदि छू भी जाता तो ममियाससुर या जेठ बहू को चुनरी पहनाते थे। मिठाई का प्रसाद बांटकर दोष का प्रायश्चित करते थे। जेठ के प्रति तो गोस्वामी जी की पंक्ति है– "अनुज वधू, भगिनी, सुतनारी, सुनु सठ कन्या सम ए चारी"।

फिलहाल आज के युग में अब ऐसी कोई भी मान्यता नहीं है। आज तो छोटे भाई की पत्नी, या भाँजे की स्त्री, जेठ, ममियाससुर सभी के साथ बैठकर खाना खाती हैं।

अ०– एक तो फोड़ा ही ऐसी जगह निकला है कि किसी को भी दिखाना असंभव हो गया है, उस पर बैद्य भी मिले तो ममियाससुर, जिन्हें फोड़ा तो क्या देखना छूना तक मना है फिर काम रुकना स्वाभाविक है।

कुघरे कै हींग पटाखे खोंसी।

श०– कुघरे–जिस घर में व्यवस्था खराब हो, पटाखे–पाटा हुआ स्थान, छान–छप्पर का या ओसारे का पाटा गया स्थान, खोंसी–अंदर की तरफ डाल दी गई हो।

गांव घर में जब कोई भी वस्तु ठीक ढंग से न रखकर कहीं छान–छप्पर में खोंस दी जाती है तो उसका समय पर मिल पाना बड़ा असंभव हो जाता है। उपरोक्त कहावत का यही तात्पर्य है।

अ०– जिस घर में सही देख रेख नहीं रहती उस घर में हींग जैसी रसोई में काम आने वाली वस्तु को, ऊपर पटाव की जगह रखने को कौन कहे अन्दर की तरफ खोंस दी जाती है। फिर भला समय पर कैसे कोई भी सामान मिल पावे। लापरवाही व फूहड़पने के फलस्परूप फूहड़ों के घर में कभी कोई सामान ही नहीं मिल पाता।

कुत्ता भूकै, हाथी जात।

कहावत उस समय कही जाती है जब किसी भी व्यक्ति के कार्यशील होने से पहले तमाम लोग तरह–तरह की अड़ंगेबाज़ियां लगाना, व्यंग्य बोलना, रास्ते में अड़चने डालना आरंभ कर देते है। मगर अपने पथ का संकल्प लेने वाला मनुष्य भला ऐसे लोगों की चिंता करता है? उसे तो अपने काम से काम रहता है।

अ०– कुत्ता कितना भी रास्ते में आकर भूकता रहे, हाथी उसकी कब चिन्ता करता है? वह अपने ही रास्ते पर चलता चला जाता है।

कुछ न कुछ किया कर , पैजामा उथेड़ सिया कर।

कहावत हल्की फुल्की है जो एक चेतावनी के रूप में कही गई है।

अ०– कहते हैं खाली दिमाग़ शैतान का घर होता है। "लो खाली मत बैठो, कुछ न कुछ काम अवश्य किया करो, चाहे पैजामा ही उधेड़ कर, फिर से उसे सिलाकरो। मगर खाली मत बैठो।

कुवार, चइत के भरोसे किसान कर्जा लेवा करत।

कहावत में क्वार तथा चैत मास पर प्रकाश डाला गया है।

अ०– चैत तथा क्वार का मास ही ऐसा होता है, जिस माह में किसान को खेत से अनाज मिलता है। इन दो माहों में रबी तथा खरीफ की फसलें कटती हैं। किसान का घर अनाज से भर जाता है। अतः इसी माह के भरोसे, इसी माह के बल पर किसान कर्ज लेते हैं कि जब अनाज होगा तो उसे बेचकर कर्ज अदा कर दूंगा।

कुँई अस फुलाय गे।

श०– कुँई–एक प्रकार का फूल है जो तालाब में फूलता है।

अ०– जब किसी का मन बहुत प्रसन्न होता है, तो कहते हैं कि इतने खुश हैं मानों तालाब में कुँई का फूल, फूल गया हो।

कुकुर सब परागे जइहै तो पतरिया के चाटी?

श०– परागे–प्रयागराज, इलाहाबाद का संगम क्षेत्र।

कुछ लोगों का काम ही नीच कार्य करने का होता है चाहे वह किसी भी स्तर का हो? हर काम में वे अपनी नीचता दिखाने में आगे रहते है। यहां पर उन्हीं के लिए कहावत व्यंग्य में चरितार्थ की गई है।

अ०– जब ऐसे किसी अच्छे कार्य में चले जायेंगे तो भला उनकी जगह छोटे, ओछे, नीच कामों को कौन करेगा? तात्पर्य यह कि जब कुत्ते सभी तीर्थ प्रयाग को चले जायेगे तो पत्तल कौन चाटेगा? भोज में परसे गये जूठे पत्तलों की जूठन को कौन चाट–चाट कर साफ करेगा?

कुकुरे बिलारी बीच अहै।

चूंकि कुत्ते बिल्ली की दुश्मनी प्रसिद्ध है, इसलिये, जब भी दो व्यक्तियों में आपस में बैर की भावना होती है तो कहावत चरितार्थ की जाती है।

अ०– दोनों लोगों में वैसा ही बैर है जैसे कुत्ते और बिल्ली में होता है।

कुछ गुड़ गीला, कुछ बनिया ढीला।

कहावत में कार्य की ढिलवाही तथा कार्य करने वाले को निरुत्साही दिखाया गया है।

काम क्यों नहीं हो पा रहा है, उसका कारण है कि दोनों में कुछ न कुछ कमी है।

अ०– कुछ तो काम करने वाला ही लापरवाह है और कुछ काम भी ऐसा है कि करने को जी नहीं चाहता है। उधर गुड़ गीला होने के कारण बनिया भी गुड़ बेचने में ढिलवही कर रहा है। काम में कोई उत्साह न होना।

कुम्भे नाचे धेनुआ, कि नर बानर बैसाख।

श०– कुम्भे–माघ माह में जब नहावन का पर्व लगता है। वैसे कुंभ तो १२ वर्ष में एक बार ही लगता है मगर यहाँ पर हर वर्ष के लिये कहावत का तात्पर्य निकलता है। धेनुआ–गाय। बानर–बंदर।

अ०– कहावत मौसम को लेकर कही गई है कि माघ महीने में जब कड़ाके की सर्दी पड़ती है तो मारे जाड़ा के गाय का रोम–रोम काँपने लगता है। वह जाड़े के मारे नाचने लगती है। उसी प्रकार मनुष्य और बंदर गर्मी के महीने में मारे गर्मी के नाचकर रह जाते हैं। यानी जाड़े में गाय को और गर्मी में आदमी और बंदर को बहुत खलता है।

कुहिरा पाछे बदरी होय
घाघ कहे कुछ होनी होय।

श०– कुहिरा–पाला हवा में मिले जुले कण जो ठंड से जमकर नीचे गिरते हैं। होनी–आगे, भविष्य में कुछ घटना घटने वाली है।

अ०– कुहिरा व बादलों को देखकर होनी के प्रति सचेत होना कि कुहिरा के बाद जब बादल आकाश में होते हैं तो कोई नयी घटना होती है। कहावत कवि घाघ की है मगर उन्होंने इसे गुप्त रखा कि क्या होनी होने वाली है। तात्पर्य यह है कि खेती में हानि पहुंचने की संभावना होती है।

कुल्हण भदई बोओ यार
तब चिउरा की होय बहार।

श०– कुल्हण–कुदाल से गोड़कर ज़मीन को धान के लायक बनाना, भदई–क्वारी धान, खरीफ की फसल।

अ०– कवि घाघ का कथन है कि कुदाल से ज़मीन गोड़कर क्वारी धान यदि बोया जाये तो उसका चिउरा खाने में स्वादिष्ट होगा।

कुम्भे आवै मीने जाय
पैडी लागै, पालो खाय।

श०– कुम्भे–माघ माह की संक्रान्ति, मीने–मीन की संक्रान्ति, पेड़ी–जड़, पालो–पाला, हवा में मिले हुए भाप के सूखे कण जो अधिक ठंडक पड़ने पर सफेद तह के रूप में ज़मीन पर जम जाते हैं। बर्फ, ठंडक, सर्दी।

कहावत कृषि संबंधी घाघ कवि की है जो फसलों के प्रति स्पष्ट की गई है।

अ०– गेरुई एक प्रकार का गेहूँ के फसल का कीड़ा होता है जो माघ की संक्रान्ति से शुरू होकर, मीन नक्षत्र की संक्रान्ति तक रहने के कारण गेहूँ की फसल की जड़ खाकर गेहूँ को कमजोर और पीला कर देता है।

कुतुब सुतानी मरकनी, सरब लील कुश काट,
घग्घा चारों परि रहो, तब तुम पौढ़ो खाट।

श०— कुतुब सुतानी—कुत्ते जिस खाट पर सोते हों।, मरकनी—जो खाट उठते बैठते मरमराती हो, सरबलील—जिस खाट पर बैठते ही नीचे को धंस जाय, जो गड़ती हो, चुभती हो।

कहावत घाघ कवि की खाट के ऊपर कही गई है।

अ०— घाघ कवि का कथन है कि चार प्रकार की खाट पर कभी नहीं सोना चाहिएः—

१. जो चारपाई गंदी पड़ी हो, जिस पर कुत्ते सोते हों
२. जो खाट उठते बैठते मरमराती हो।
३. जो झिनगे के समान इतनी ढ़ीली हो कि आदमी उस पर बैठते ही नीचे को धंस जाये।
४. जो नसकट हो। इन चारों चारपाइयों को छोड़कर दूसरी खाट पर ही सोना चाहिए।

कुही अमावस मूल बिन, बिन रोहिनि अख तीज,
श्रवण बिना ही श्रावणी, आधा उपजै बीज।

कहावत भड्डरी कवि की फसलों के ऊपर कही गई है।

अ०— यदि बिना मूल नक्षत्र के अमावस्या हो, बिना रोहिणी नक्षत्र के अक्षय तृतीया हो और बिना श्रवण के (सावन) पूर्णिमा हो तो समझो कि खेत में आधा ही बीज जमेगा शेष आधा नष्ट हो जायेगा।

कुकुर कौरा पाये, लड़िका मुंह पाये।

कहावत बच्चों और कुत्तों पर कही गई है। बच्चे व कुत्तों की एक ही जाति होती है।

अ०— जिस घर में कुत्तों को रोटी का एक टुकड़ा कौर मिल जाता है तथा बच्चों से प्रेम से बोल दिया जाता है, उस घर में कुत्ते व बच्चे हिल जाते हैं। इतना परचते हैं कि मारने पर भी नहीं हटने का नाम लेते हैं।

कुकुरिव चलीं पराग नहाय।

कहावत कुकुरी के माध्यम से किसी ऐसे व्यक्ति के प्रति कही गई है जिसे नहाने धोने—पूजा पाठ, धर्म कर्म से कोई मतलब न हो, या फिर जिस काम को आज करने चला है उससे उसका कभी कोई लगाव न रहा हो, तो लोग आश्चर्य में कहावत का प्रयोग कर बैठते है।

अ०— क्या कुतिया भी प्रयाग नहाने चली? यह कैसे संभव हुआ?

कुलिया मां सेतुआ साने।

श०— कुलिया—मिट्टी का एक कुल्हणनुमा छोटा सा बर्तन, सेतुआ—सत्तू।

अ०— कहावत से कंजूसी व मूर्खतापूर्ण व्यवहार का पता लगता है कि सत्तू जैसी चीज़ को कहीं छोटे से बर्तन में सानना संभव हो सकता है? उसके लिये तो एक बड़े बर्तन की आवश्यकता पड़ती है जिसमें वह अच्छी तरह से साना जा सकता है। यानी कि किसी कार्य को करने से पूर्व उसके लिये उपयुक्त पात्र की आवश्यकता पड़ती है।

कुम्हार आपन बर्तन सेवर नहीं कहते।

श०— सेवर—अधपका, कम पका।

कहावत कुम्हार के पेशे पर पर कही गई है।

अ०— कुम्हार अपना बर्तन कच्चा या ख़राब नहीं कहता। कोई भी पेशेवर व्यक्ति अपना माल कभी भी ख़राब नहीं कहता।

कुंजड़िन आपन बइर खट्टी नहीं कहत।

अ०— उपरोक्त कहावत की ही भांति यह भी है। कुंजड़िन, जो साग भाजी बेचती है वह अपनी बेर को खट्टी नहीं बताती है।

कुकुर नहवाये बछवा न होये।

यह कहावत तो वैसे ही हुई जैसे कि "कौवा हंस नहीं बन सकता है"। यह सब तो पशु—पक्षियों की बातें हुईं, मगर कहावत इन्हीं माध्यमों से व्यक्ति विशेष पर उद्धृत की गई हैं जो कौवा से हंस बनना चाहता हैं। कहावत के अनुसार कुछ लोग सोचते हैं कि कुत्तें को खूब नहलाया जाय तो वह गाय के सुंदर सफेद बछड़े की तरह स्वच्छ व सुंदर हो जायेगा मगर ऐसा होना असंभव है। जो जैसा होगा वही रहेगा, उसमें परिवर्तन आना कठिन है।

कुल मां कुदार तुहीं पिया जनम्या।

श०— कुल—वंश, खानदान, कुदार—जिस लोहे के औजार से खेत गोड़ा जाता है।, जनम्या—पैदा हुए।

कहावत में किसी भी नालायक आदमी को असामाजिक कार्य झगड़ा–झंझट–गुंडागर्दी आदि करते देख कर पति पत्नी के माध्यम से कहा गया है।

अ०– पत्नी अपने पति से कह रही है– हे पिया ! तुम्हीं इस वंश में नासपीटे होकर पैदा हुए हो। इस कुल में तुम कुदाल बने हो, यानी कि घर का सत्यनाश करके रख दिया है।

कुकुरे कै किलना काढ़ि लीन,
कहिस हमार मोती काढ़ि लीन।

श०– कुत्ते के शरीर में पड़े कीड़ों को जब निकाल दिया गया तो उसे बुरा लगा कि मेरे शरीर में मोतियां थीं उन्हीं को निकाल लिया गया। तात्पर्य यह है कि जो जिस वातावरण में, जिस कुल, घर में पैदा होकर जिस तरह का रहने का आदी होता है वह यदि बहुत खराब भी है तो उसके लिये बहुत अच्छा है।

कुंए की मिट्टी कुंवे मा लागी।

इस कहावत पर एक और कहावत स्मरण हो आई– "जौने पेड़ क बोकला उही मां लागत"। बात सही है, जिस पेड़ का छिलका जहां से निकला होगा उसी में वही सही बैठेगा।

अ०– कुंआ खोदते समय जो मिट्टी कुंए में से निकलती है, वह उसी कुंए में ही खप जाती है। कहावत के माध्यम से लोगों को यह बताया जाता है कि जो जिसका अपना होगा वह चाहे लाख रुष्ट होगा, कितनी भी नाराज़गी होगी किन्तु अपना–अपना ही होता है। ज़रूरत पर वही एक दूसरे के काम आयेंगे।

कुतिया जब चोरन से मिल गई।
तो पहरा को देय?

अ०– कहावत देश, समाज व घर की कठिन सुरक्षा को लेकर व्यंग्य के रूप में उद्धृत की गई हैं जिसका मतलब है "घर का भेदी लंका ढावै"। यानी जो घर का भेद जानने वाला हो, जो घर की रखवाली करने वाला हो, जब वही दुश्मनों या चोरों से मिल जाय तो भला घर की क्या सुरक्षा हो सकती है? तात्पर्य यह है कि जब पहरे पर बैठी कुतिया ही चोरों के साथ मिल गई, तो भला घर की क्या रक्षा हो सकती है?

कुकुरे के पेटे घिव नाहीं पचतै।

जब किसी व्यक्ति को कोई वस्तु अपच कर जाती है, पेट में भारी पड़ती है तो कहते हैं कि कुत्ते के पेट में घी नही पचता।

कुवार करैला, चइत गुड़, भादौं मूली खाय,
पैसा खर्चे गांठ का, रोग बिसावन जाय।

श०– गाँठ–पास में, पास का , बिसावन–खरीदना।

कहावत स्वास्थ्य संबंधी, खाने–पीने के विषय में चरितार्थ की गई है।

अ०– क्वार माह में करैला, भादों माह में मूली, चैत महीने में गुड़ खाना हानिकारक होता है। शरीर अस्वस्थ हो जाता है तो फिर पैसा खर्च करने पर भी रोग पीछा नहीं छोड़ता है।

कुसंगति का ज्वर, बड़ा भयानक होता है।

श०– कुसंग–बुरे लोगों का साथ, दुष्टों के साथ रहना,

अ०– बुरे लोगों के साथ रहकर उनके कुलक्षणों को सीखकर, जो प्रभाव रूपी बुखार चढ़ता है वह अत्यन्त ही कष्टदायी होता है। कुसंग के प्रति रहीम कवि के शब्दों में देखें–

बसि कुसंग चाहत कुसल, यह रहीम जियसोस,
महिमा घटी समुद्र की रावन बसे परोस।

गोस्वामी जी के शब्दों में–

ओछे नर के संग ते, निसि–दिन होत बिकार।
नीर चुरावैं संपुटी, मार खात घरियार।।

यानी पानी सीप चुराता है मार घड़ियाल पर पड़ती है। कवि बृंद के भाव भी देखें–

दुर्जन के संसर्ग से सज्जन लहत कलेस,
ज्यों दसमुख अपराध तें, बंधन लह्यो जलेस।

यानी अपराध किया रावण ने और बांधा गया समुद्र।

ओछे को संग साथ, 'अहमद' तजै अंगार ज्यों।
तातो जारै हाथ सीरो पै कालो करै"।।

इस प्रकार से बुरी संगति व्यक्ति का सर्वनाश कर देती है।

कुंवारी खाय रोटी, ब्याही खाय बोटी।

कहावत उस समय कही जाती है जब ब्याही लड़कियां अपने मैके में रहा करती हैं।

अ०— क्वारी लड़कियों का तो स्थान पिता के यहाँ ही होता है। मगर जब लड़कियाँ ब्याह कर अपने घर, ससुराल चली जायं तो पिता के घर में उनका उतना ही स्थान होना चाहिए जितना कि बुलाने पर रखकर कुछ दिनों के बाद विदा कर देने में होता है। यदि वह ससुराल से बोझ स्वरूप रहना चाहें तो अपने पिता के लिये दुःखदाई सिद्ध होती हैं। फिर वे पिता के घर उनका हाड़—मांस खाने के लिए अर्थात् बोझ बनकर रहतीं हैं।

कुंआ क बिआह, गीत गावै मसीद कै।

अ०— असंगत का काम करना । कुँआ के ब्याहने जाने में मसज़िद का गाना गाना। कुछ का कुछ करना।

कुंए मां भांग परिगै अहै।

यही एक—दो नहीं सबके सबकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है। तो कहा जाता है कि—

अ०— जब कुंये में ही भांग पड़ी है तो क्या कहा जाय? सभी उसी का पानी पी कर बौराये हैं।

कुवल के संग फिरै अपुये मूत मां गिरै।

अ०— बुरी संगत में रहने पर गंदगी ही हाथ आती है।

कुछ गोहूँ गील, कुछ जाँत कै कील ढील।

अ०— जब दोनों की ग़लती होती है तो कहावत स्पष्ट की जाती है कि कुछ गेहूँ गीला था और कुछ जाँत के मध्य की कील भी ढीली थी।

कुछ तो बावली, कुछ भूतों खदेड़ी।

अ०— कुछ तो दिमाग़ ही ख़राब था और कुछ भूतों ने तंग कर रखा था। दोहरा दोष होना।

यानी— विपत्ति में विपत्ति का होना।

कुछ लोहा खोटा, कुछ लोहार खोटा।

अ०— कुछ तो लोहा खराब है और कुछ लोहार भी बुरा है। दोनों की बुराई से बुराई होती है।

कुटनी से राम बचायें, प्यारी हो के पत उतरवावै।

श०— कुटनी—घरफोरी,, पत—लज्जा।

अ०— बुरी औरत से भगवान कभी भी पाला न डाले। वह किसी न किसी के साथ प्यार ज़ाहिर करके उसकी इज्ज़त तक उतरवा लेती है।

कुकुरे के आटा होय तो लिट्ही लगाय के खाय।

जब कोई आदमी किसी बात से विवश होता है तो वह दूसरो का मुंह देखता है

अ०— जब कुत्ते के पास आटा ही होता तो फिर भला वह एक—एक टुकड़ा रोटी के लिये क्यों दूसरे के दरवाज़े पर दौड़ता? खुद ही न बना खा लेता।

कुत्ता चउके बइठाये तबौ हांड़ी चाटे जाये।

कहावत आदत के ऊपर कही गयी है। आदत जिसकी जो होती है वह कभी नहीं छूटती चाहे कितना कुछ भी करो।

अ०— कुत्ते को बड़े आदर से चौक के ऊपर बैठाया गया मगर उस पर भी वह हांड़ी चाटने दूसरों के यहाँ चला गया क्योंकि वह अपनी आदत से मजबूर है।

कुत्ता पालै वह कुत्ता, सास के घर जंवाई कुत्ता।
बहन के घर भाई कुत्ता और सब कुत्तन क सरदार,
वही जो बाप रहे बेटी के द्वार।

कहावत सिद्धान्तवादी है।

अ०— जो कुत्ता पाले वह कुत्ते के साथ कुत्ता बन के रहे, सास के घर में रहने वाला दामाद कुत्ता, बहिन के घर रहने वाला भाई कुत्ता, और सबसे बड़ा कुत्ता वह है जो बाप अपने बेटी के यहां आ कर, उसके घर रहे। इससे बढ़ के नीचता का क्या काम हो सकता है?

कुकुरौ बइठै तौ दुम हिलाय के बइठै।

जब कोई आदमी सफाई की चिंता नहीं करता है तो कहावत कही जाती है।

अ०— कुत्ते भी बैठने की जगह पूँछ से साफ करके बैठते हैं।

कुत्ते की दुम बारह साल नलके में रखी जाय तबौ टेढ़ी की टेढ़ी ही रही।

अ०— कुत्ते की पूँछ कभी सीधी नहीं हो सकती। लोगों की आदत के बारे में भी कहावत कही जाती है।

कुम्हार के घरे बर्तन क अकाल।

अ०— जब किसी के यहाँ वह वस्तु भरी हो और कोई यह कहे कि वह वस्तु उसके पास नहीं है तो आश्चर्य होता है। कुम्हार के घर भला मिट्टी के बर्तन न हों ऐसा कैसे हो सकता है? कांसे पीतल न सही मिट्टी का बर्तन तो भरा ही होगा।

कुकुर भूके हाथी नहीं डरतै।

अ०— समझदार आदमी किसी के कहने—सुनने की चिन्ता नहीं करते।

कुकुरा कै चलै तौ कठौतै खाय डारै।

श०— कठौता—पहले के ज़माने में लकड़ी का परातनुमा तथा छोटे बड़े कई आकार के कठौते, कठौतियां बना करतीं थी जिनमें स्त्रियां रोटी आदि रखती थीं।

कहावत ऐसे आदमी के प्रति कही गई है जो खाने पीने में बड़ा ही असंतोषी है।

अ०— कुत्ते की चले तो वह बर्तन का सामान तो क्या बर्तन ही खा डाले।

कुँवारे क अरमान, बिहये क कलकान।

श०— कुँवारे—क्वारा, अनब्याहा, अरमान—इच्छायें, साध, शौक, बिहये—विवाह हुआ व्यक्ति, कलकान—झंझट, बखेड़ा, परेशानी।

अ०— विवाह होने की उत्सुकता किसको नहीं होती। जो क्वांरे लोग हैं वे तो अपने विवाह के प्रति अत्यन्त उत्सुक हैं तथा उनके मन में बड़ी—बड़ी कल्पनायें होती हैं। मन के लड्डू फूटते हैं कितनी जल्दी विवाह हो जाये। मगर जिनका विवाह हो चुका है उन्हें विवाह एक समस्या, परेशानी लगने लगता है क्योंकि रोटी, कपड़ा, मकान, बच्चों की जिम्मेदारियाँ, घर खर्च जैसे अनेक प्रश्न उनके सामने खड़े हो जाते है।

" कू "

कूटनवाली कूटि जइहै, सास पतोहू एक्कै होइहै।

उपर्युक्त कहावत घर गृहस्थी संबंधी होने के साथ—साथ सामाजिक है। झगड़े—झंझटों पर कही गई है।

अ०— कुटनियाँ, जो बातों को इधर से उधर लगाती हैं, जो दूती का काम करती हैं, जो घरों में, परिवार में एक दूसरे से झगड़ा लगाती हैं उन्हीं पर कहावत कही गई है कि कितना भी कुटनियां घर फोड़ने की कोशिश करे मगर सास—बहू एक ही हो जायेंगी। इसलिय इन कुटनियों से सदैव सावधान रहना चाहिए। बिना समझबूझ दूसरों की बातों में कदापि न आना चाहिए। इससे अपनी ही हानि होती है।

कूटब धान औ कखरी क ढांकब,
दुइनों एक साथे नाहीं होतै।

अ०— चूंकि धान के कूटने में हाथ ऊपर तक उठाना पड़ता है, इसलिये कहा है कि यदि धान कूटना है तो बगल का ढंक पाना असंभव है।

कूटै तौ चूना, नहीं खाक से भी दूना।

अ०— चूने को खूब पानी डालकर मकान बनाने के समय छत की कुटाई करवाये तो मज़बूत होता है नहीं तो मिट्टी से भी ज्यादा कमज़ोर होता है।

" के "

केव कहै जेठ पूत, केव कहै कनवा।

श०— जेठ—बड़ा, पूत—पुत्र, बेटा, कनवा—काना।

अ०— अपनी वस्तु दुनिया में सबसे प्यारी, सुंदर व मूल्यवान लगती है चाहे वह कितनी असुंदर, बुरी, घटिया ही क्यों न हो। कहावत के माध्यम से बात स्पष्ट है।

अ०— किसी का बड़ा लड़का काना था। कोई तो उसे घर का जेठ पुत्र कहकर आदर देता है और कोई उसे कनवा कहकर बुलाता है।

केला, बीछी केंकरा, बांस, अपने अपने जन्मे नास।

श०— केंकरा—एक छोटा जल जंतु जिसके आठ टांग होती हैं।

अ०— कहावत दैवीगति की विचित्रता पर उद्धृत की गई है। जब पुत्र कुपुत्र हो जाता है तो लोग बहुधा क्रोधवश कहावत कह देते हैं। केला, बिच्छू, केकड़ा और बांस एक ही बार के वंश पैदा करने पर विनाश को पहुँच जाते हैं। कहते हैं केला, बाँस एक ही बार गर्भ धारण करने के बाद दूसरी बार गर्भित नहीं होते

और केकड़ा तथा बिच्छू का पेट फट जाता है तो वह बच्चा देती है, अतः इनका एक बार में बच्चा देने के बाद नाश हो जाता है।

केव क भांटा पंथ, केव क बैर।

श०– पंथ–पथ्य, बीमारी के बाद जो पहली बार अन्नाहार लिया जाता है।

अ०– कभी–कभी एक ही वस्तु दो मनुष्यों के स्वास्थ्य पर अलग–अलग असर दिखाती है। कोई वस्तु किसी के लिये अमृत बन जाती है तथा वही वस्तु किसी दूसरे के लिये ज़हर बन जाती है। जैसे किसी के लिये बैगन अमृत है तो किसी के लिये ज़हर बन जाता है। शरीर में वस्तुओं को पचाने की भिन्न–भिन्न क्षमता होती है। वही वस्तु किसी को सुगमता से पच जाती है, किसी को अपचकारक होकर नुकसान कर देती है।

केतनौ भइया बैरी, तबहूं दाहिन बाँह।
केतनौ निमिया करुई तबहूँ सीतल छाँह।।

श०– भइया–भाई, दाहिन बांह–दाहिना हाथ, करुई–कड़ुई, सीतल छांह–ठंडी छाया, शीतल छाया।

अ०– कहावत से पारिवारिक एकता, अपनत्व की भावना का दिग्दर्शन होता है। यह भातृ–प्रेम के प्रति कही गयी है कि अपना भाई कितना भी बैरी होगा, फिर भी दाहिने हाथ की तरह उससे बड़ा ही संबल मिलता है। जैसे नीम कितनी ही कड़ुई होगी किंतु उसकी छाया एकदम ठंडी, मधुर व मीठी होती है। भातृ–प्रेम के प्रति गोस्वामी जी ने लिखा है–

अस बिचारि जिय जागहु ताता,
मिलहिं न जगत सहोदर भ्राता।

केउ नागनाथ तौ केउ साँपनाथ।

अ०– जब दो व्यक्तिओं में एक ही जैसे अवगुण होते हैं, एक दूसरे की तुलना में कोई किसी से कम नहीं होता है तो कहते हैं कि कोई नागनाथ तो कोई साँपनाथ है। न वे उनसे कम हैं, न ये इनसे कम हैं। दोनों एक समान हैं।

केउ कै भंइस मरिगै, केउ आपन हांड़ी फोरि के बोली
हमरे–तोहरे करिया चीज नाही सहतै।

कहावत अत्यन्त ही हास्यपूर्ण व मूर्खता से भरी है। कहाँ मूल्यवान भैंस की मौत और कहाँ दो पैसे की हाँडी? मूर्खतापूर्ण बराबरी की भावना कितनी हास्यास्पद है, इसकी ओर संकेत है।

अ०– भैंस मरने के बाद ही पड़ोसिन ने हांडी फोड़कर यह प्रकट किया कि हमारे–तुम्हारे कोई काली वस्तु नहीं रह पाती है। इस तरह के पड़ोसियों के "घाव में नमक छिड़कने वाले" व्यवहार बड़े ही कष्टकारक साबित हो जाते हैं।

के राजा राज करी, के परजा सुख भोगी?

अ०– इस निराशापूर्ण कहावत से उस युग का ज्ञान होता है, जब राजतंत्र था। प्रजा इतने लंबे अरसे से राजा का अन्याय सहते–सहते परेशान हो चुकी थी, अपने भोग–विलास में डूबे राजा को प्रजा का कोई ध्यान ही न रहता था।

अ०– कौन राजा राज्य करेगा और कौन प्रजा सुख पायेगी? कहने के ढ़ंग से ही ज्ञात हो जाता है कि ऐसा कोई भी राजा न होगा जिसके राज्य–काल में प्रजा पूर्ण सुखी हो पायेगी।

केव के दाल गिरिगै, तो
कहेसि हमका सूखय नीक लागथ"।

अ०– कहते हैं विवशता में आदमी को सब कुछ सहना पड़ता है। जब कोई परिस्थिति सामने आ जाती है तो स्वयं को उसी के अनुसार बदलना व बनाना पड़ता है। यहाँ दाल गिरने से मतलब विवशता से है। अतः दाल गिरने के बाद सूखा खाना ही पड़ेगा। इसलिये परिस्थितियों को सहर्ष स्वीकार कर लेना ही बुद्धिमानी है। सूखा खाना ही खाकर संतोष कर लेना।

के हाथी मारी, तो के दांत उखाड़ी।

अ०– जब कहीं किसी प्रकार की कठिन परिस्थितियों का सामना करना हो या काफी दुरूह वस्तु को पाना हो तो कहावत चरितार्थ की जाती है कि इतने कठिन कार्य को करना तो हाथी मारकर दाँत निकालने के बराबर है। भला यह इतना कठिन काम करे तो कौन करे? किसके मान का है?

के राजा के कहै कि आपन ढांक के बइठौ।

कहते हैं, पैसा हर ग़लती को छिपाता है। कहावत से स्पष्ट होता है कि राजा या उच्चपदाधिकारी व्यक्ति कुछ भी गलती करें, तो उसको कोई कहने वाला नहीं होता हैं। जैसा कि कहा गया है–

अ०– भला राजा से किसकी हिम्मत है जो कहे कि तनिक अपना वस्त्र संभाल कर बैठो, क्योंकि नंगे दिखाई दे रहे हो।

केऊ लंगड़, केउ लूल,
केऊ चलै मटकावत कूल।

श०– मटकावत–ऊपर नीचे करती। कूल–कूल्हा।

कहावत से तो शंकर जी की बारात का रूप उपस्थित हो जाता है।

अ०– अपने समाज, घर, नाते रिश्तों में यदा–कदा ऐसे लोग भी मिल जाते हैं, जिनमें कोई दोष होता है। उन्हीं पर कहा गया है कि कोई पैर से लंगड़ा है, कोई हाथ से लूला है, कोई कूल्हों को मटकाता हुआ चलता है।

केउ नृप होय हमहिं का हानी
चेरि छाँड़ि अब होब कि रानी।

श०– नृप–राजा, हानी–हानि, चेरि–दासी, छांड़ि–छोड़ कर।

उपर्युक्त पंक्ति गोस्वामी जी की है जिसे आमतौर पर स्त्रियाँ जब नाराज़ होती हैं या किसी बात से खीझ जाती हैं या उनके मन की बात नहीं हो पाती है तो अपनी खीझ उतारने के लिए उदासीन होकर कहती हैं।

अ०–चाहे कोई राजा हो या न हो मुझे क्या लेना–देना, मैं तो जो हूँ वही रहूंगी। मुझे तो कोई राज्य मिल नहीं जायेगा फिर मैं भला क्यों चिन्ता करूं? मैं तो दासी से रानी होने की नही हूँ।

केउ क बार पियार, केउ क बूढ़ पियार।

श०– बार–छोटा बच्चा। पियार–प्यारा, प्रिय।

अ०– कहावत से स्पष्ट है कि जिसके पास जो है वही वस्तु उसके काम आती है। वही प्यारी भी होती है। किसी के पास बच्चा है और किसी के पास बूढ़ा है तो वही उसके काम आता है। दूसरे की वस्तु दूसरे के काम नहीं आती है। चाहे वह कितनी भी अच्छी क्यों न हो।

केउ क घर जरै, केउ तापै।

कहावत उस समय कही जाती है जब कहीं पर किसी पड़ोसी का तो नुकसान हो रहा हो और दूसरा पड़ोसी उसकी मदद तो क्या करे, उलटे उसका फायदा लेता रहे।

अ०– जब किसी का घर जल रहा हो तो निकट के लोग अपनी ठंड कम करने के लिए ताप रहे हों।

केउ क मुंह चलै, केउ क हाथ।

जब दो आदमियों में झगड़ा होता है तो मारने वाला यह कहावत कहकर अपनी सफाई पेश करता है।

अ०– किसी की ज़बान चलती है तो किसी का हाथ उठ जाता है। कोई कहाँ तक सहन करेगा?

केउ के बधाई, साई केउ कै।

श०– बधाई–शुभ कार्यों में लोग एक दूसरे को बधाई देकर अपनी खुशी व शुभकमनायें प्रकट करते हैं, या फिर लड़के आदि के होने में मांगलिक गीत भी बधाई के रूप में गाये जाते हैं।, साई–बयाना, पैसा लेना, मंगल कार्यों पर लोग गाने बजाने वालों को, नाचने, गानेवालियों को उनके मेहनत के रूप में जो पैसा पहले ही दे आते है ताकि मंगल कार्य में गाने बजाने आयें।

कहावत तब कही जाती है जब पैसा तो कोई दूसरा दे आया हो और मंगल कार्य के समय गाने बजाने किसी और के यहाँ पहुंच गये हों।

अ०– पैसा किसने दिया और कार्य किसके यहाँ हो रहा है? गाने बजाने की व्यवस्था किसने की, बयाने का पैसा किसने दिया और बधाई किसके घर बज रही है।

केहू क आँवा बिगड़ै, केहू क खदान क खदानै बिगड़ै।

श०– आँवा–जिसमें कुम्हार लोग बर्तन बनाकर पकाते हैं, खदान–जहाँ से कुम्हार मिट्टी खोद कर लाता है।

जब किसी का काम सामूहिक रूप से बिगड़ जाता है तो कहावत कही जाती है।

अ०— किसी कुम्हार का तो आँवा ही बिगड़ा, मगर किसी का खदान का खदान ही बिगड़ा जिसके बल बूते पर वह मिट्टी लाकर बर्तन बनाकर बेंच कर अपनी रोज़ी रोटी चलाता है।

" कै "

कै जु सनीचर मीन को, कै जु तुला क होय,
राजा बिग्रह, परजा छय, बिरला जीवै कोय।

श०— सनीचरी—सनीचर, मीन व तुला—राशि।

कहावत कवि भड्डरी की है जो ज्योतिष विद्या के अनुसार कही गई है।

अ०— यदि मीन व तुला राशि पर शनि की दशा हो तो यह निश्चित है कि राजा का विघटन होगा, प्रजा का नाश होगा और राजा—प्रजा दोनों में लड़ाई होगी।

कैथिनी क डोला होइगा।

श०— कैथिनी—कायस्थ कन्या, डोला—पहले के ज़माने में बहू जब ससुराल आती थी तो डोले पर ही चढ़कर आती थी जिसे चार कहार अपने कंधे पर ढोकर लाते थे, चाहे रास्ता कितना भी दूर होता था।

अ०— कहते हैं कि जब कायस्थ के यहाँ बहू विदा होती थी तो उसके सजने—सँवरने में इतनी देर लगती थी कि उसकी विदाई होते—होते न जाने कितनी देर लग जाती थी कि लोग घबड़ा जाते थे। कैथिनी का डोला देर समय लगने के लिय मशहूर हो गया था। आज भी जब किसी को किसी काम में देर होने लगती है तो कहावत का उपयोग किया जाता है।

" को "

चार—कोस पर पानी बदलै
आठ कोस पर बानी"।

श०— कोस—कोस— पहले के ज़माने में ज़मीन की नाप या दूरी कोस में नापी जाती थी।

अ०— कहा है कि चार कोस जाने पर पानी में बदलाव आ जाता है। कहीं का पानी मीठा, कहीं का खारा, कहीं का नमकीन, कहीं का फीका मिलता है तथा आठ कोस के आगे चला जाय तो बोली भाषा का बदलाव आ जाता है।

कोदो फरै कि धान सुसाली।

श०— कोदो—एक प्रकार का मोटा अनाज है, जिसे आम तौर पर पहले के ज़माने में ग़रीब आदमी खाते थे। सुसाली— सारयुक्त, अच्छा।

अ०— बहुधा लोग उस समय कहते हैं जब किसी अच्छी वस्तु को ख़राब वस्तु से जोड़ते हैं। कहीं कोदों के खेत में धान जैसी अच्छी वस्तु के फर लग सकते हैं? बुरे व्यक्ति में बुराई एकदम समाप्त होना संभव कैसे हो सकता है?

कोकी बोलय जाय अकास,
तब नाहीं बरखा कै आस।

श०— कोकी—चकवी।

कहावत मौसम के लक्षण हैं पर कही गई है।

अ०— यदि चकवी उड़कर आकाश की ओर जाय तो समझो कि अब वर्षा का मौसम समाप्त हो चुका है, पानी नहीं बरसेगा।

कोयले की दलाली में हाथ काला।

श०— दलाली—किसी सामान के बेचवाने में बिचौलियापन करना। कहावत से स्पष्ट होता है कि ग़लत काम करने का परिणाम भी बुरा होता है। बुराई का कलंक अवश्य लग जाता है।

अ०— दलाली वैसे ही अपने में बुरा परिणाम देती है उस पर कोयले की दलाली में तो हाथ में कालिख लगकर कलंक को ऊपर कर देती है। उसमें कोई चाहे कि हाथ साफ़ रह पाये तो असंभव हैं।

कोठीवाला रोवै छप्परवाला सोवै।

अ०— पैसे वाले कब आराम की नींद सो पाते हैं? उन्हें तो हर समय अपने पैसों की चिन्ता रहती है। कितना भी आराम से कोठी, महल में वे रहें, मगर चोरी, डकैती, माल हड़पने वालों से वे हर समय चिन्तित रहते हैं। उधर छप्परवाला आराम से सोता है।

कोठे ऊपर कोठरी, तापर बैठा नवाब
जोरू—खसम का झगड़ा है, कौन करे नियाव?

श०— कोठे—अटारी, कोठरी—कमरा, जोरू—बीबी—पत्नी, खसम—पति, नियाब—न्याय, इंसाफ। कहावत वैसे तो

किसी निकटतम आपसी संबंधियों पर भी लागू की जा सकती है किन्तु यहां पर विशेष रूप से कहावत पति–पत्नी के ही ऊपर उद्धृत की गई है।

अ०– कोठै के ऊपर की कोठरी में आराम से पति–पत्नी दोनों एकांत में बैठे हैं, पति–पत्नी का झगड़ा हमेशा आभ्यन्तरिक ही होता है जिसे आमतौर पर दूसरा नहीं जानता और यदि जानता भी है तो वह उसमें अपनी कोई विशेष राय नहीं दे पाता। तो फिर भला उन दो व्यक्तियों के पारस्परिक झगड़े को कौन सुलझा सकता है? पति–पत्नी ही आपस में समझौता कर सकते हैं।

कोई मरे, कोई जिये,
सुथरा घोल बतासै पीवै।

कहावत स्वार्थवाद के ऊपर कही गई है।

अ०– चाहे कोई मरे चाहे जिये इससे स्वार्थियों को कोई मतलब नहीं रहता। उनका स्वार्थ अवश्य पूरा होना चाहिए। यानी जब किसी को बताशे का घोल, रस पीना है तो अवश्य पीना है उसमें कटौती नहीं हो सकती।

कोख हरियराय, माँग जुड़ाय।

यह कहावत तो कम किन्तु आशीर्वाद अधिक है। गाँवों में बहुधा वृद्ध स्त्रियाँ, बेटी–बहुओं को आशीर्वाद के रूप में कहती है।

अ०– कोख हरियराय का अर्थ बच्चे से गोद भरी रहे, सिंदूर से मांग भरी रहे।

कोयल होय न ऊजरी, सौ मन साबुन धोय।

अ०– जो जन्मजात जैसा होता है वह वैसा ही रहता है, चाहे जितना भी कुछ करो। कहावत किसी काली स्त्री के प्रति व्यंग्य में कही गई है। कोयल को चाहे सौ मन साबुन लगा डालो, मगर वह काली है, तो काली ही रहेगी, उसमें अंतर नहीं आ सकता है। जैसे किसी ने कहा है:–

"कुकुर धोये बछवा न होये"। उसी प्रकार कोई काला है तो वह काला ही रहेगा।

कोरियवा की बिटिया क न नइहरै सुख न ससुरे।

श०– कोरियवा–एक जाति!

अ०– कहावत उस समय लागू की जाती है, जब किसी स्त्री को हमेशा ही परेशानी रहती है, हर जगह उसे चिंतित ही रहना पड़ता है। वह जहाँ भी जाती है वहीं कुछ न कुछ झंझट–झगड़ा, कोई न कोई बवाल शुरू हो जाता है तो कोरियवा की बेटी से तुलना दी जाती है कि उसी की तरह न नैहर में सुख और न ससुराल में चैन मिल पाता है।

कोहनी नेरे, मुँह ना जाय।

श०– कोहनी–हाथ की गांठ, जहां से हाथ मुड़ता है।, नेरे–पास में, नज़दीक।

अ०– जब कोई वस्तु अपने अति निकट हो, अगल–बगल, आस ही पास हो और अपने काम न आवे, उससे कोई लाभ न हो, किसी प्रकार का कोई सुख न मिल पावे तो कहते हैं कि हाथ की कुहनी एकदम पास है मगर उसे कितना भी करो मुँह में नहीं जाती।

कोदों मडुआ अन्न नहीं, जोलहा, धुनिया जन नहीं।

श०– कोदों–एक प्रकार का मोटा आनाज है, मडुआ–यह एक प्रकार को मोटा अनाज है, अन्न–अनाज, जोलाहा–बुनकर, एक जाति होती है जो कपड़ा बुनती है, धुनिया–जो रूई धुनते हैं, जन–आदमी।

अ०– कोदों, मंडुआ ये इतनी निम्न श्रेणी के अनाज हैं, कि इनकी गिनती अच्छे अनाजों में नहीं होती। उसी प्रकार से जुलाहा और धुनिया की गिनती सेवकों में नहीं होती है।

कोरी संचय तीतिर खाय,
पापी कै धन पर लै जाय।

श०– कोरी–एक जाति, चींटी, संचय–इकट्ठा करना।
अ०– जो अन्न चींटी इकट्ठा करती है उसे तीतर खा जाता है जिस प्रकार से पापी का धन दूसरे–दूसरे लोग खा जाते हैं। मगर यहाँ पर चींटी को पापी कहना एकदम ग़लत साबित होता है। इसलिये कोरी का मतलब यहाँ पर सही लगता है क्योंकि कोरी

आमतौर पर तीतर पालने के शौकीन भी होते हैं। दूसरा अर्थ निकलता है कि जो धन जुलाहा संचय करता है वह तीतर उसी तरह खाता है जैसे कि किसी पापी का धन दूसरे लोग खाया करते हैं।

कोपै दई मेध न होय, खेती सूखै नइहर जोय, पूत बिदेसे, खाट पै कंत, घाघ कहै ई बिपति क अंत।

श०— दई—दैव, भगवान्, मेघ—बादल, नैहर—मैके, जोय—स्त्री, पत्नी, पूत—पुत्र, बिदेस—परदेश, कंत—स्वामी, पति, अंत—आखिरी।

अ०— कहावत कई लोगों पर है। घाघ कवि का कथन है कि यदि दैव का कोप हो जाय वर्षा न हो, खेती सूख जाय, स्त्री अपने पिता के घर हो, पुत्र परदेश गया हो और घर का स्वामी बीमारी के कारण खाट पर पड़ा हो तो इससे बढ़कर दूसरी कोई भी आपत्ति नहीं हो सकती है।

कोठिला बइठे बोली जई,
आधे अगहन क्यों न बई।
जौ कहुँ बोते बिगहा चार,
तौ मैं डरतेऊं कोठिला फार।।

श०— कोठिला—बखार, जिसमें अनाज रखा जाता है। जई—जौ, बई—बोना।

अ०— जौ कोठिला के अंदर से बोला कि यदि किसान तुम मुझे अगहन में बोते तो मैं इतना ज्यादा होता कि चार बीघे में ही पूरा बखार भर जाने के बाद बच भी जाता।

कहने का तात्पर्य यह है कि जौ को अगहन माह में ही बोना चाहिए उससे जौ की उपज बहुत होती है।

कोहरी के गाँव मां धोबी पटवारी।

श०— कोहरी—एक जाति, पटवारी—पहिले के ज़माने में खेतों का सरकारी देन, पोत वसूलने कं लिये एक सरकारी आदमी होता था जो लोगों के यहाँ जा—जा कर लगान वसूली करता था।

अ०— जहाँ जैसे लोग रहते हैं, वहाँ उसी प्रकार के अन्य लोग काम भी करते हैं। गाँव कोहरी का है और उसका पटवारी धोबी है।

कोऊ आँख क आँधर कोऊ हिये क आँधर।

श०— हिये—मन, मन का अंधा होना, मानवता से दूर रहने से तात्पर्य है। जिस मनुष्य के मन में दया, क्षमा, दान, धर्म न हों, वही मन का अंधा होता है। किसी ने बहुत ही सुंदर ढंग से कहा है— "जाके दया धर्म ना तन में, मुखड़ा क्या देखें दर्पन में"। कहावत ऐसे ही व्यक्तियों के प्रति उद्धृत की जाती है।

अ०— कोई तो आँख का अंधा है मगर कोई मन का अंधा भी होता है।

कोऊ आइने मां देखै तो कोऊ आरसी मं देखै।

श०— आइनै—शीशा, आरसी—छोटा शीशा, अँगूठीदार गोल छल्ले में लगा शीशा जो नग की ही तरह होता है। आरसी उस छोटे शीशे को कहते हैं जिसे स्त्रियां अँगूठी की तरह अँगूठे में पहनती है।

अ०— कहावत भाग्य पर कही गई है कि अपने—अपने भाग्य के अनुसार लोगों के पास वस्तुयें भी होती हैं। कोई अपना मुख बड़े से शीशे में देखता है तो कोई नगनुमा शीशे में देखता है। किसी के पास वही वस्तु शानदार सुंदर है, किसी के पास कामचलाऊ है।

कोऊ अकिल क यार, कोऊ रुपये से पियार।

अ०— कोई आदमी किसी से उसकी बुद्धि को देखकर यारी करता है और कोई किसी के पास पैसे को अधिक देखकर प्यार व यारी करता है। अपनी—अपनी बुद्धि से सभी काम करते हैं।

कोऊ कहके सुनाये, कोऊ करके देखाये।

कहावत यहाँ पर दो प्रकार के आदमियों के प्रति कही गई है। एक तो वे, जो केवल काम को कहते रहते हैं, किंतु करते नहीं, दूसरे वे जो कहते नहीं, करके दिखाते हैं।

अ०— कोई ऐसे व्यक्ति हैं जो सुनाते रहेंगे मगर काम नहीं करेंगे, कोई काम को सुनते रहने के बाद बिना कुछ कहे सुने पूरा करके रख देंगे।

कहावत है— कोई कहके सुनाता है कोई करके दिखाता है, जैसा जिसका स्वभाव हो।

कोऊ काम करै दाम से, कोऊ दाम करै काम से।

अ०— कोई पूँजी, पैसा लगाकर काम शुरू करता है, और कोई है कि काम धंधा करके उससे जो पैसा मिला उससे अपना रोज़गार चला लेता है।

कोऊ खींचै लांग लंगोटी, कोऊ खींचै मूँछरिया।
कोठे चढ़के दी दुहाई कोई मत करियो दो जनिया।।

श०— लांग लगोटिया–मर्दानी धोती में पीछे जो बाँधते हैं, जनिया–स्त्री, पत्नी। कहावत उन पर लागू की जाती है जिनकी दो शादियां हुई हों, उससे क्या दुर्दशा होती है?

अ०— कोई स्त्री तो पहनी हुई धोती को खींचती है, दूसरी मूँछों के बाल खींचती है। यानी हर प्रकार से दुर्दशा ही दुर्दशा होती है दो बीबी के रहने पर। इसलिये दो विवाह कभी नहीं करना चाहिए।

कोऊ तउलै कम, कोऊ मोलै कम।

श०— मोलै–मोलभाव।

अ०— कोई सामान कम तौलता है तो कोई मोल भाव कम करता है। कोई बेईमानी पर रहता है तो कोई ईमानदारी पर रहता है। अपने–अपने ढंग सभी के अलग–अलग होते है।

कोउ महतारी के पेटे से नहीं सीखिके आवत।

अ०— कहावत उस समय कही जाती है जब किसी आदमी को कोई काम सिखाया जाता है या करने को कहा जाता है, उससे काम नहीं बन पड़ता ।

अ०— कोई माँ के पेट से नहीं सीख कर आता है, सभी किसी न किसी से बाहर ही समाज में सीखते हैं।

कोऊ मरे कोऊ मलार गावै।

अ०— दुनिया में तरह–तरह के लोग बसते हैं। कोई परेशानी में पड़ा है तो कोई मौज उड़ा रहा है। कोई तो दुःख से परेशान है कोई बैठा सावनी गीत गा रहा है। अर्थात् किसी को किसी के दुःख सुख से कोई मतलब न होना। अपने–अपने स्वार्थ में रहना, अपनी–अपनी मौज में रहना।

कोउ माल मां मस्त, कोउ खियाल मां मस्त।

अ०— कोई अपने धन, संपदा, वैभव में मस्त है, तो कोई अपनी धुन में सोचने, समझने में मगन है। उसे धन की चिंता नहीं है।

कोख की पीर सही जात है,
पेट की पीर नहीं सही जात है।

अ०— गर्भस्थ बालक की प्रसव वेदना का दर्द तो बर्दाश्त हो जाता है मगर भूख के कारण पेट में दर्द नहीं सहन हो पाता है।

कोठी, कोठरी में हाथ न लगाओ,
घर बार सब तोहरै आय।

जब कोई किसी से नकली प्रेम या अधिकार देने की बात करता है तो कहावत कही जाती है।

अ०— घर, द्वार, कोठरी में हाथ न लगाओ। वैसे घर बार सभी तुम्हारा ही तो है। ऐसे ही सास बहू से या पिता पुत्र से कहकर उसे आश्वासन देता है। मगर जब किसी वस्तु में किसी जगह हाथ ही न लगाओ तो अपनापन कहाँ? इसी पर किसी ने कहा है "ओका कबौ न पतियाय जो कहै सब तोहरे आय"।

कोठी मां चाउर, घर मां उपवास।

श०— कोठी–जिसमें अनाज रखा जाता है।

भला घर के अंदर के कोठ में चावल रखा हो और घर में भूखा रहा जाये। लोगों में तो यह कहावत उसी आदमी पर लागू हो सकती है जो या तो अत्यधिक कंजूस हो, अपार धन का लालची हो कि खाना तक न बनाने को मिले या फिर किसी को तंग करके उसे घर से बाहर निकाल देने का इरादा हो। तात्पर्य है कि वह इतना अभागा हो कि घर में सामान होते हुये भी बना खा न सके।

कोठी में से मूठी नहीं निकली।

अ०— जहाँ अनाज रखा था, वहाँ से एक मुट्ठी दाना तक न निकल पाया। महा कंजूस आदमी के लक्षण हैं ये जो कौड़ी को नाली से उठाता है।

कोठे से गिरा संभरत, नजर से गिरा नहीं सँभरत।

अ०— ऊपर से गिरने के बाद तो आदमी चोट–चपेट खाने के बाद स्वस्थ हो जाता है मगर जो व्यक्ति नज़रों से गिर जाता है किसी के वह फिर इज्ज़त के काबिल नहीं होता।

कोढ़ मां खाज होइगे।

जब कोई आदमी विपत्ति में फँसा हो और उस

पर कोई और आफत चाहे जैसी भी हो पड़ जाय तो कहावत चरितार्थ की जाती है।

अ०— एक तो कोढ़ थी ही उस पर खुजली और हो गई।

कोढ़ी कटनिया, मुगरा सन आँटी
आर – पार बइठे गिरस्त डांटी।

श०— कोढ़ी–यहाँ पर आलसी से मतलब है, कटनिया–खेतों को काटने वाला, मुगरा–मोटा सा डंडा, आर–पार–एक कोने से दूसरे कोने तक, गिरस्त–गृहस्थी कराने वाला, मालिक, डांटी–डांटना।

कहावत तभी कही जाती है जब काम करने वाला आलसी हो। उससे उम्मीद की जाती है कि वह और काम करें और जो नहीं करता है उसे कोई कुछ भी नहीं कहता कि तुमने काम क्यों नहीं किया?

कोढ़ी के जूँ नहीं परतै।

अ०— स्पष्ट है।

कोढ़ी क दाल, भात, कमासुत कै जरै आँत।

अ०— आलसी आदमी को दाल चावल खाने को मिले और काम करने, पैसे कमाने वाले को कुछ भी न मिले, उसकी आंत भूख के मारे जलती रहे।

कोढ़ी डेराय थूक से।

अ०— कोढ़ी आदमी को अपने थूक से अधिक डर लगता है।

कोताही गर्दन, तंग पेपेसानी,
दग़ाबाज के यही निसानी।

श०— पेपेसानी–मत्था। कोताही–कम।

अ०— छोटी गर्दन व कम मत्थे के आदमी बड़े खतरनाक, दगाबाज होते हैं। कहावत के अनुसार वे स्वभाव से बड़े दुष्ट माने जाते हैं।

कोदों क भात केहि भातन मं,
ममिया सास किन सासन मं?

अ०— कोदों एक प्रकार का मोटा अनाज है उसका भात किस काम का? उसी प्रकार से ममियासास का क्या महत्व है। कुछ कहते हैं– 'सग सास मोर ऐसी तैसी, पितिया सास मोर जैसी'।

कोदौ दै के नहीं न पढ़े।

जब कोई लड़का या आदमी अपनी पढ़ाई या किसी बुद्धिमानी के काम में पूरा उतर जाता है तो कहावत कही जाती है या फिर जब किसी को कुछ नहीं आता तो कहते है कि का कोदो दैके पढ़े हो का? पढ़ा लिखा कहता है– फीस पैसा देकर पढे हैं। कोदौ बेचिके नहीं पढ़े।

अ०— कोदई देके नहीं न पढ़ें, यानी कि अक्ल रखते हैं किसी बात की।

कोयली करिया, कउवा कै जोरू।

अ०— जब पति–पत्नी दोनों ही काले होते हैं तो व्यंग्य में कहा जाता है कि कउवा की स्त्री कोयल होती है। इसलिये कि दोनों का जोड़ खूब मिलता है।

कोरमा बासिव दाल से बढ़िया।

श०— कोरमा–मसाले में भुना मांस जिसमें पानी न हो।

अ०— अच्छी चीज़ खाने वाली बासी भी हो तो भी ताजे रद्दी खाने से बढ़िया होती है।

कोल्हू के बैल हुइगे।

अ०— अधिक मेहनत करने वाला आदमी की गाँवों में कोल्हू के बैल से तुलना देते हैं कि बड़े परिश्रमी हैं। बैल अस दिन में खटतै रहत।

कोल्हू के बैल क घर ही पचास कोस।

अ०— चूंकि कोल्हू का बैल चाहे कितना ही चले घूम फिर कर उसी कोल्हू के इर्द–गिर्द ही घूमता रहता है। उसी प्रकार से जब कोई आदमी घर से बाहर जाने की फुर्सत नहीं पाता तो कहावत कही जाती है कि कोल्हू के बैल की तरह घर में ही पचास कोस का चक्कर लगाता है।

कोसे जियय, असीसे मरय।

श०— कोसे–सरापना, गाली देना, असीसे–आशीर्वाद देना।

कहावत है कि किसी को सरापने से उसकी उम्र बढ़ती है और जितना ही असीसो (आशीर्वाद दो) उतनी बढ़ नहीं पाती। आमतौर पर न कोई किसी के

सरापने से मरता है, न आशीर्वाद से जीता है। वैसे मानव मन की शुभकामनायें, दुआयें लगती भी हैं।

" कं "

कंठी पहिरै काठ की,
तिलक देय ठढ़ियाय
खेती काटै आन कै
क कंठी चिचिआय।

श०– कंठी–एक ही बड़ी गुरिया रहती है जो कंठ के ऊपर रहती है। काठ–लकड़ी/तिलक–मस्तक में चंदन या रोली आदि का तिलक लगाना/ठढ़ियाय–मस्तक पर लंबा टीका लगाना/आन–दूसरे/चिचिआय–चिल्लाना, चीखना।

संसार में ढोंगी मनुष्यों की कमी नहीं है। ऐसे भी बहुत से लोग हैं जो अपने तथाकथित ढोंग की महानता मनवाकर बड़प्पन से अपने को पुजवाना चाहते हैं किंतु उनके मुंह में 'राम बग़ल में छूरी' रहती है। जैसा कि कहावत से स्पष्ट होता है।

अ०– कुछ ढोंगी लोग गले में क़ाठ की कंठी पहनते हैं। मस्तक पर चंदन, रोली का लंबा टीका लगाते हैं। ऊपर से अपने को ईमानदार व ईश्वर–भक्त होने का वे पूरा–पूरा स्वाँग बनाते हैं मगर नियत इतनी गंदी होती है कि रात में दूसरों की खेती काटते हैं, ऐसा विश्वास मानकर कि क्या कोई देख रहा है? क्या यह काठ की कंठी चिल्लायेगी कि मैंने चोरी की है? ऐसे ही असज्जनों के लिये गोस्वामी जी ने लिखा है–

उधरे अंत न होइ निबाहू,
कालनेमि जिमि रावन राहू।

कंगाल से जंजाल भला।

श०– कंगाल –दरिद्र, जंजाल–झंझट, झगड़ा, बवाल।

अ०– दरिद्र होने से कहीं अच्छा है कि तमाम परेशानियां, झंझट को झेलना।

कंठ मिलावै पिय को लाई,
कांधे पड़य विजय दरसाई।

श०– कंठ–बीच् गले पर, पिय–पति, कंधे/कांधे – कांधे, विजय–जीत। दरसाई–दिखाई।

कहावत कवि भड्डरी की है जो छिपकिली पतन के ऊपर कही गई है।

अ०– यदि कंठ के ऊपर गिरती है तो प्रियतम से मिलन होता है, यदि कंधे के ऊपर गिरती है तो जीत होने के लक्षण हैं।

कंजूस कै धन सैतान खात।

अ०– किसी कंजूस व्यक्ति को देखकर कहावत कही गई है। कंजूस का धन शैतान ही खाता है या तो फेंक दिया जाता है या फिर दूसरा दुष्ट व्यक्ति ही उसका इस्तेमाल करता है।

" क्या "

क्या रोहिणी वर्षा करे, बचे जेठ नित मूर,
एक बूँद कृतिका पड़े नासै तीनों तूर।

श०– रोहिणी–नक्षत्र। जेठ–माह। मूल–मूल, कृतिका–नक्षत्र।

अ०– रोहिणी के बरसने व जेठ के बचने से कुछ भी न होगा। यदि कृत्तिका में पानी की एक धारा न बरसी तो समझ लो जौ, गेहूँ, चना तीनों प्रकार के आनाज बर्बाद हो जायेंगे।

क़ोई भीख न देई तौ,
कमंडल न फोरि डारी।

अ०– कहावत ऐसे आवेश में कही गई है जिसमें स्वाभिमान झलकता है। किसी के द्वार पर ही जाकर भिक्षा माँगना या पाना संभव होता है तो कहते हैं कि कोई यदि भिक्षा न देगा तो कम से कम मेरा कमंडल (भिक्षा पात्र) तो न फोड़ डालेगा। यदि कोई फायदा नहीं करेगा तो नुकसान भी न करेगा।

कोई ईर घाट तौ कोई मीर घाट बसथ।

अ०– जब लोग घर, परिवार से दूर इधर–उधर रोज़–रोटी के चक्कर में चले जाते हैं तो कहते हैं कि कोई दूसरे घाट का कोई उस घाट का पानी पीता है। जहाँ जिसका मन होता है वह वहीं बसा है। दूर–दूर रहना।

कोई दाबि–दाबि भेंटै, कोई दूर–दूर भागै।

श०– दाबि–दाबि– प्रेम से ज़ोरो से चिपकाना, भेंटय–आपस में गले मिलना।

कहावत में एक तरफा प्रेम की भावना को दिखाया गया है।

अ०– कोई तो मारे प्रेम के ज़ोरों से चिपकाकर गले मिले और दूसरा है कि वह गले मिलने से घृणा करे। मिलना ही न चाहे। महात्मा कबीर के शब्दों में–

प्रेम प्रीति से जो मिलै, तासों मिलिये धाय।
अंतर राखे जो मिलै, तासों मिलै बलाय।

जौ गुड़ दिहे मरे तौ जहर काहे क देय?

कहावत सुलह, समझौते को लेकर कही गई है। किसी से यदि किसी बात को लेकर झगड़ा–झंझट या मन–मोटाव है तो उसे धैर्यपूर्वक कह सुनकर, समझा–बुझाकर यदि झगड़ा समाप्त हो जाता है तो फिर उससे लड़ाई–झगड़ा करने से क्या फायदा? कहावत उसी पर उद्धृत की गई है।

अ०– कोई यदि गुड़ दिये से मरता है तो उसे ज़हर क्यों दिया जाय? यदि नरमी से काम बन जाये तो गर्मी क्यों दिखाई जाये? क्रोध का उतावलापन बुरी बात है।

क्यों जाति लै के चाटे,
तन जरय मन धूर फाँके।

श०– जाति–वंश, कुल, उत्तम जाति/चाटय–चाटना, प्यार कना/तन–शरीर/धूर–मिट्टी।

पहले के ज़माने में लोग उच्चकुल में लड़की का विवाह कर देते थे मगर यह आवश्यक नहीं था कि ऊंची जाति में शील एवं संपन्नता ही हो।

अ०– जाति लै के क्या करें? शरीर तो भूख के मारे जलता रहे और ख़ाने के नाम पर रोज़–रोज़ मिट्टी फाँकनी पड़े, घर में कुछ खाने को ही न मिले। इसी पर एक कथा है– कोई बहू मारे भूख के, घर की ग़रीबी के कारण बैठी महुआ भून रही थी। किसी ने पूछा कि यह क्या भून रही हो? तो उस बहू ने व्यंग्य में कहा कि यह तो मै जाति भून रही हूं। यानी मेरे माँ–बाप जाति देखकर मेरी शादी एक दरिद्र के यहाँ कर दिये हैं, तो यह जाति लेकर भून रही हूँ।

कोई चढ़ै हाथी–घोड़ा, कोई चढ़ै भिटउरै।

श०–भिटउरे–खँड़हरी दीवार।

अ०– कहावत भाग्यवादी है। सभी मनुष्य का भाग्य एक जैसा नहीं होता । इस कहावत से दो अर्थ निकलते हैं।

१. कोई तो हाथी घोड़े की सवारी करता है। वह बड़ा भाग्यवान होगा और कोई बेचारा टूटी दीवार पर चढ़ता है। उसका भाग्य नहीं कि वह हाथी पर चढ़ पाये।

२. कोई तो हाथी घोड़े की सवारी करता है और कोई है जो दौड़कर खंडहरी दीवार पर चढ़कर बराबरी करता है कि मैं तुमसे कम नहीं हूँ। हूँ तो उतनी ही ऊँचाई पर मैं भी। कभी–कभी लोग व्यंग्य में कहावत कह देते हैं।

कोई खाये–खाये मरय, कोई बिना खाये मरय।

अन्न न मिले तो लोग मर जायँ, और यदि अन्न अधिक खा लें तो मर जायँ। उपरोक्त कहावत भी इसी पर कही गई है।

अ०– कोई तो इतना खाना खा ले कि खाते ही खाते प्राण चले जायँ और कोई खाना ही न पाये, बिना खाये ही मर जाय। कहने का मतलब यह है कि अमीर तो खा–खा कर मरता है और ग़रीब बेचारा बिना खाये भूख के मारे मरता है।

कोई के आँगन में धूप ज्यादा दिन नहीं ठहरती।

कहावत से मानव जीवन के भाग्य व समय के उतार–चढ़ाव का आभास होता है। धूप–छाँव मानव–जीवन का क्रम है।

अ०– किसी के आँगन में धूप ज्यादा दिन नहीं टिकती। यानी उजाला ही उजाला नहीं रहता। सुख–दुःख जीवन में लगा रहता है।

क्यों दुइ जन बोलायै, क्यों अंधा न्योत्या।

अ०– अपने आप ही विपत्ति का मोल लेना। क्यों अंधे को खाने पर न्योते में बुलाया? और क्यों दो जन को बुलाया। यह आफत तो अपने आप ही लिये हो।

" कृ "

कृष्ण असाढ़ी प्रतिपदा, जौ अम्बर गर्जन्त,
तौ छत्री–छत्री लड़ै, निहचै काल पड़न्त।

श०– कृष्ण–अंधेरा पाख, प्रतिपदा–परिवा, अम्बर–आकाश, गर्जन्त–गरजना, छत्री–ठाकुर, निहचै–निश्चय, काल–सूखा, पड़न्त–पड़ता है।

उपर्युक्त कहावत भी कवि भड्डरी की है। इसमें भी प्रकृति के लक्षण को देखकर अकाल की भविष्यवाणी की गई है।

अ०– यदि आषाढ़ कृष्णपक्ष की प्रतिपदा को आकाश में बादल गर्जते हैं तो आपस में दो क्षत्रियों की लड़ाई होगी और अकाल पड़ेगा, यह निश्चय है।

कृष्ण असाढ़ी प्रतिपदा, जौ उत्तर गर्जन्त
शार कि भाखै यों जमी, निश्चय काल पड़न्त।

अ०– कवि भड्डरी की उपर्युक्त कहावत की भांति ही यह कहावत भी है जो 'शार' कवि की है। कृष्ण आषाढ़ी परिवा को यदि उत्तर दिशा में गरजता है तो निश्चय ही अकाल पड़ेगा।

शार कवि ने इन्द्र धनुष को देखकर भी वर्षा संबंधी घोषणायें की हैं। जैसे– "संझे धनुष, बिहाने पानी" यानी सांझ को यदि इन्द्रधनुष दिखाई दे तो दूसरे दिन पानी अवश्य बरसता है।

कृतिका जौ कोरी गई, अद्रा मेह न बुंद,
तो यों जानो भड्डरी काल मचावे दुंदं।

श०– कृतिका–एक नक्षत्र का नाम है।, कोरी–खाली, अद्रा–एक नक्षत्र है, मेह–वर्षा, दुंदं–द्वंद्व, झगड़ा, लड़ाई।

अ०– कवि भड्डरी का कथन है कि यदि अद्रा में पानी न बरसा और कृत्तिका एकदम खाली गई तो देश में अकाल अवश्य पड़ेगा।

" ख "

खर कहवइया दाढ़ीजार।

श०– खर–खरी, सही, डाढ़ीजार–गावों में स्त्रियाँ नाराज़ होती हैं तो दाढ़ी जलने की ही गाली पुरुषों को देती है।

जो आदमी सही–सही बोलता है, कटुसत्य कहता है वह गाली पाता है।

अ०– सही बात का कहने वाला दाढ़ीजार यानी कि जिस पुरुष की दाढ़ी जल गई हो, वह हैं।

कहते है पुरुषों के लिये यह गाली बड़ी बुरी मानी जाती है। कहा है–

"दाढ़ी मूंछे मर्द, सीगीं पूछ बर्द"

खड़ी मजूरी चोखा काम।

अ०– बात पैसा देने मजदूरी का साफ–साफ हिसाब रखने पर कही गई है। सीधे–सीधे मज़दूरी से, मेहनत से, काम लेना व उनका पूरा पैसा दे देना चाहिए। तुरंत काम कराओ तुरंत पैसे का हिसाब करके पैसा अदा करो।

खरबूजा को देखकर खरबूजा रंग पकड़ता है। या रंग बदलता है।

जब एक दूसरे को देखकर कोई काम किया जाता है तो कहते हैं।

अ०– कहते हैं कि खरबूज़े का यह लक्षण है कि यदि खेत में एक भी खरबूजा पका है तो धीरे–धीरे करके सभी खरबूज़े पकने लग जाते हैं। तो खरबूज़ा को देखकर खरबूज़ा रंग पकड़ता है। ऐसे ही कोई आदमी किसी की देखा–देखी काम करता है तो कहावत चरितार्थ की जाती है।

खड़ा होय द, बइठै कै जगहा तो कइन लेब।

जब थोड़े से सहारे के बाद आदमी अधिक से अधिक लाभ दूसरों के द्वारा ले लेने की चालाकी में रहता है तो कहते हैं–

अ०– खड़े होने भर को स्थान मिल जाता तो फिर क्या है? बैठने की जगह तो धीरे–धीरे बन ही जाती है। आदमी थोड़ा–थोड़ा अपना स्थान बढ़ाता व अधिकार विस्तृत करता जाता है।

खग जानै खगही कै भाखा।

श०– खग–पक्षी, चिड़िया। आमतौर पर जब एक ही देश के, एक ही जाति के, एक ही भाषा के लोग परस्पर मिलते हैं तो वे एक दूसरे की बोली–बानी,

भाषा, भंगिमा समझ जाते हैं, यह सामान्य सी बात है। ऐसे दो आदमियों के बीच में जब तीसरा कोई भेद की बात या कोई चर्चा नहीं समझ पाता तो कहते हैं।

अ०– पक्षी की बात को पक्षी ही समझ सकता है। दूसरे की समझ में नहीं आ सकता है।

खवावै क घिव सक्कर, मारै क एकै टक्कर।

खिलाने के ऊपर व किसी को खिलाने के बाद व्यंग्य करने औंर उसके बाद अपमानित करने पर कहावत कही गई है।

अ०– किसी को खिलाया तो बढ़िया खाना, घी–चीनी मगर उस खिलाने से क्या लाभ कि खिलाकर धक्के लगा दिये। इसी पर कवि रहीम ने लिखा है–

'रहिमन' रहिला हू भलो, जो परसै चित लाय,
परसत मन मैला करे, सो मैदा जरि जाय।

तो रूखा सूखा भोजन खिलाइये मगर प्रेम पूर्वक। किसी को खिलाकर उस पर व्यंग्य नहीं करना चाहिए या धक्के नहीं देना चाहिए।

खंडहर बता रहे हैं इमारत बुलंद थी।

श०– खंडहर–जो मकान या भवन क्षतिग्रस्त हो जाते हैं या बहुत ही ज्यादा पुराने होकर गिरने लगते हैं।, इमारत–भवन, महल। बुलंद–खूबसूरत, भव्य, ऊँची, बहुत सुंदर।

किसी की ढलती उम्र को, किसी बहुत पुरानी वस्तु को, किसी स्थान की ख़राब दशा के समय भी उसकी रूप–रेखा, उसकी रही–सही सुंदरता, उसका गौरव देखकर कहावत चरितार्थ की जाती है।

अ०– ये भवन जो आज समय की गति से इस कदर ढह गये है इन्हें देखकर समझा जा सकता है कि अपने समय में ये कितने सुंदर व भव्य थे। कहावत उर्दू की होने पर भी लोग बहुधा इस्तेमाल करते है।

खत क मजमूं जान लेते है लिफाफा देखकर।

श०– खत–चिट्ठी, पत्र, मज़मूं–इबारत, भाषा, भाव।

कहावत उर्दू की होते हुए भी बहुधा अवधी में इस्तेमाल हुआ करती है। यानी जो अनुभवी लोग होते हैं वे तनिक इशारे से या किसी चीज़ को देखते ही अंदर की या भविष्य की बातों की जानकारी पा लेते हैं।

खर कै होब बेवाय क फाटब
मूंड़े चढ़ी मेहर कै डाटब,
जेहि पर पड़ै उहै सब जानै
अउर लोग सब धोखा मानै।

श०– खर–जुकाम, बेवाय–पैर में जो ख़राश पड़ जाते हैं। आमतौर पर पैर में बेवाई जाड़े के दिनों में चमड़ी सूखने पर ही पड़ती है जो बड़ी ही दुःखदाई होती है।, मुड़े चढ़ी–सिर चढ़ी, निडर, मेहर–स्त्री।

अ०– कुछ कष्ट ऐसे होते है जिन्हें मनुष्य स्वयं ही झेलता है, अपना दुःख एवं पीड़ा को वह दूसरों से नहीं कह पाता तथा उसकी वह तकलीफ़ दूसरा नहीं बता सकता है। जैसे–जुकाम का होना, पैर में बेवाई के फटने का कष्ट, सिर चढ़ी, निडर स्त्री का अपने पति को डांट लगाना, जिसके ऊपर पड़ती है वही समझता है दूसरे लोग तो उसे धोखा या झूठ मानते हैं। उपरोक्त तीनों परिस्थितियों के आने पर लोग इस कहावत को प्रयोग में लाते है।

खटि–खटि मरै बैलवा, बइठे खाँय तुरंग।

श०– खटि–खटि–खटना, जान तोड़ काम में लगना, तुरंग –घोड़ा।

कहावत उन परिस्थितियों में कही जाती है, जब घर में कुछ लोग तो जान लगाकर परिश्रम करके पैसा कमा कर लावें और उसी जगह घर का दूसरा सदस्य बिना किसी काम के, बिना कुछ किये हुए, आराम से घर बैठे मौज मस्ती उड़ाता रहे।

अ०– बैल जो खेतों को रात–दिन हल जोतते हैं, फिर दंवाई करके अनाज का भूसा अलग करते हैं, अनाज उपजाते हैं, वे तो खेतों में खटते हैं जानतोड़ मेहनत करते हैं मगर घोड़ा तो कोई काम खेतों में नहीं करता है, वह खेत का चना बैठे–बैठे खाता है। वह बैलों की कमाई का पूरा–पूरा फायदा उठाता है।

खनि के काटे, घन के मराये,
जब बरदा के दाम सुनाये।

कहावत ईख के खेत के लाभ पर कही गई है।

अ०– ईख को खूब नीचे से जड़ से काटने के बाद जब कोल्हू में पेरे तो बरधा का दाम वसूल हो जाता है। जब गन्ने का रस पीने को मिले और पकाया, गुड़ खाने को मिले तो बैल का दाम समझो कि वसूल हो गया।

खटमल मारि के हाथ न गंदा करो।

अ०– खटमल जैसे गंदे जीव को मारकर अपना हाथ गंदा न करो। यानी छोटी–छोटी बुराइयों से बदनामी नहीं लेनी चाहिए। खटमल तो मार दिया मगर उससे कहीं ज्यादा बदबू से हाथ गंदा हो गया।

खपरी क तोर, तवा क मोर।

किसी कार्य में बहुत ज्यादा जल्दबाज़ी दिखाने के समय कहावत कही गई है।

अ०– दो लोग खाना बना रहे थे। उसमें से एक मारे जल्दी के बोला खपरी की बनी वस्तु तुम ले लो और तवे की बनी हमें दे दो। बात दोनों की वही पड़ी, खपरी, तवा दोनों ही वस्तुएं गर्म हैं, मगर कौन समझाये? इसलिये अधिक जल्दबाज़ी अच्छी नहीं होती जो नाक में दम कर दे। तकरारबाजी में भी कहावत सामने आती है।

खलु जहर पियै तबौ न मरय।

श०– खलु–दुष्ट, बदमाश, असज्जन।

कहावत दुष्टों के प्रति कही गई है।

खसी कै जिव जाय, खवइया स्वादै न पावै।

श०– खसी–बकरी, बकरा, खवइया–खानेवाला।

अ०– कहावत तब चरितार्थ होती है जब कोई तो तन, मन, धन चाहे जिस तरह भी हो, अपना सर्वस्व दे डाले, सुख देने का ध्यान रखे परन्तु जिसके लिये सब कुछ किया जाय, उसके ऊपर कोई असर ही न पड़े। जैसे कि कहा गया है कि खसी की तो जान चली गई किंतु खाने वाले को कोई स्वाद ही न मिला। यानी कि दूसरे के काम का या उसके पैसे का, उसके परिश्रम का कोई महत्व ही न हो। एहसान फरामोश होना।

खंटेटी खाट पर सोये हैं।

श०– खंटेटी–निखरहरी, विना विस्तर की ढीली, झिनगा।

अ०– जब कोई आदमी सुबह उठते ही बक–झक करने लगता है या आफिस दफ्तर में नाराज़गी जाहिर करता है, बिना बात के किसी को बुरा भला कहता है तो कहा जाता है कि का भाई रात भर सोये नहीं? किसी निखरहरी खटिया पर या बिना बिस्तर की खाट पर सोये थे कि सभी के ऊपर इतना बिगड़ रहे हो।

खलु, जाय हलाहल क्यों न पियै।

अ०– किसी दुष्ट की दुष्टता से ऊबकर या उससे परेशान होकर, लोग कह देते हैं कि ऐ दुष्ट, तू इतनी दुष्टता कर रहा है कि एक तुम्हारी कुटिलता से तमाम लोग हर तरह से परेशान हैं, तुझे लज्जा नहीं आती बेशर्म जाकर ज़हर खा कर मर क्यों नहीं जाता है तू?

खरे से मिताई करे, चरै कहाँ जाय?

श०– खरे–खर, तृण, घास, तिनके, मिताई–मित्रता दोस्ती।

कहावत लोग तब कहते हैं जब आये दिन आपसी व्यवहार के कारण व्यवसाय, व्यापार में या घरेलू वातावरण में हमेशा, मँगनी माँगी जाय, बेबियाज कर्ज कोई माँगता रहे। कहने का तात्पर्य यह है कि जब हर तरफ से आपसदारी में घाटा ही घाटा होता है तो लोग अपने लिए कहावत का इस्तेमाल करते हैं।

अगर घोड़ा घास–पात से मित्रता करे तो भला क्या खाय? कहाँ चरने जाय?

खरब अरब लौं लच्छमी उदय अस्त लौं राज।
तुलसी हरि की भगति बिन, सब आवै केहि काज?

अ०– स्पष्ट है।

खरबूजा चाहे धूप, औ आम चाहे मेह।
नारी चाहे पुरुष बल, बालक चाहे नेह।।

अ०– खरबूज़े को धूप और आम को पानी चाहिए। स्त्री को पुरुष का ज़ोर पुरुषत्व और बच्चे को प्रेम की आवश्यकता है।

खरसा यारी बीजना, स्याले यारी आग।
वर्षा यारी तीन चीज, कंबल, छावा, राग।।

श०– खरसा–गर्मी। बीजना–बिजन। पंखा,

स्याले–जाड़ा, छावा–छाया हुआ घर, छप्पर। राग–गाना, बजाना, रास–रंग।

अ०– गर्मी में पंखा, जाड़े में आग और बरसात में सर्दी होती है तो कंबल, छाया हुआ घर और गाना–गीत चाहिए।

खरी मजूरी चोखा काम।

अ०– अच्छी रेट की मज़दूरी देने से काम भी बढ़िया होगा। जब किसी को उसके काम के अनुसार पैसा ही न मिलेगा तो काम करने वाले का मन काम में कैसे लगेगा?

खर्चा बड़ा पैदा थोड़ी केहि पर बांधूँ घोड़ा घोड़ी।

अ०– ख़र्च अधिक है और आमदनी कम है किस बूते पर घोड़ा–घोड़ी लाकर रखूं?

खरी–गुड़ एक्कै भाव।

जहाँ पर कुशासन हो, कहावत वहां पर कही जाती है।

अ०– जानवरों को खिलाने वाली खली और गुड़ एक ही दाम का मिलना।

ख़लील खां फाख्ते उड़ावत हैं।

कहावत है गये वे दिन जब खलील खां फ़ाख्ते उड़ाते थे। यानी कि मौज के दिन अब समाप्त हो गये।

खसम कीन सुख सोवै का,
कि पाटी धै के रोवै का।

अ०– कोई काम सुख के लिये किया जाता है न कि दुःख सहने के लिये। पुरुष सुख से सोने के लिए किया जाता है न कि पाटी पकड़कर रोने के लिए।

खसम हटावै भाई क गावै।

जब कोई स्त्री पति से अधिक अपने भाई की तारीफ करती है तो कहावत कही जाती है।

अ०– पति को तो दूर करे और भाई का यशगान गावे। ऐसी स्त्रियाँ मैके की ओर ज्यादा प्रभावित रहती है। ऐसी ही नारियों पर कहा गया है–

सइयां क बिरता, भइया क नाव,
पहिर ओढ़िधन सासुर जाव।

खरिहान और घर सून न छोड़ै चाही।

श०– खरिहान–गांवों में जहां पर पकी फसलों के बोझ रखे जाते हैं।

अ०– कहावत सिद्धान्तवादी है कि खलिहान व घर कभी अकेला नहीं छोड़ना चाहिए। अनेक प्रकार की गड़बड़ियां होने का भय रहता है।

" खा "

खाय के परि रहै, मारि के टरि रहै।

अ०– यह कहावत एक नीतिपरक है। खाना खाकर आराम करना चाहिए और मार करने के बाद वहाँ रुकना नहीं चाहिए। तुरंत भाग जाना चाहिए। हट जाने पर मार खाने या अधिक झगड़ा बढ़ने की आशंका नहीं रहती है।

खात रहें दूध भात चरावत रहे गइया,
ठिकरा क साथ लाग, भीखदेआ भइया।

श०– ठिकरा–कंकड़, पत्थर। साथ–शौक।

कोई मनुष्य यदि आरामपूर्वक रह रहा हो, उसे कभी किसी प्रकार की परेशानी झंझट–झगड़ा न हो तो उस पर भी अपने हाथों झंझट मोल ले ले तो कहावत घटित होती है।

अ०– कहां तो आराम से घर बैठे दूध भात खाते थे, निश्चिंत होकर चैन से घर बैठे रहते थे और कहां अपने ही हाथों झंझट उठाने, परेशानी मोल लेने का शौक चढ़ा कि भीख मांगने व व्यर्थ के कार्य के पीछे दौड़ने लगे। अपने हाथों अपना नुकसान करना या जी का जंजाल पैदा करना।

खायें भीम हगें सकुनी।

जब कोई आराम का काम स्वयं और कष्ट का दूसरा कोई करें तो कहावत कही जाती है।

अ०– खाना तो खाय भीम और टट्टी करें शकुनी, आराम का काम खुद और कष्ट कोई दूसरा उठाये।

दूसरा अर्थ है– कोई है कि गरिष्ठ भोजन पचा लेता है और कोई है कि सादा खाना भी न पचा पाता। खाते भीम हैं मगर टट्टी करने शकुनी दौड़ते हैं। एक की बला दूसरे के सिर पर ।

खाय के मूतै, सूतै बाउँ,
काहे बैद बसावै गाउँ।

अ०– कहावत स्वास्थ्य विषयक है। खाना खाकर बायें करवट लेटना तथा तुरन्त पेशाब करना स्वास्थ्य के लिए अति उत्तम होता है। इसलिये कि पेशाब की थैली पर दबाव न पड़ने पर किडनी का काम ठीक तरह चलता है। बायें लेटने पर लीवर (जिसे वैद्य लोग यकृत कहते हैं) पर दबाव नहीं पड़ता है तथा पाचन क्रिया ठीक तरह से काम करती है।

खाद परै तौ खेत, नाहीं तो कूड़ा रेत।

अ०– कहा गया है कि खेतों में यदि खाद डाली जाय तो वही खेत खेत होता है नहीं तो सारा खेत मिट्टी ही है क्योंकि बिना खेत में खाद डाले हुए कुछ भी अनाज पैदा नहीं हो सकता है।

खादी कूरा न टरै, करम लिखा टरिजाय।

कहा गया है कि खेतों में डाली गई खाद का प्रभाव, उसका असर नहीं टल सकता है चाहे भाग्य का लिखा टल जाये। जिस खेत में खाद डाली गई है उसमें अनाज हुए बिना नहीं रह सकता है। अतःखेतों में खाद डालना बहुत ज़रूरी हो जाता है।

खाय न पावै तौ अड़ाय देय।

श०– अड़ाय–गिराना।

कहावत स्वयं तथा दूसरों पर भी लागू होती है।

अ०– जब कोई आदमी किसी वस्तु को न पा सकने की स्थिति में हो, प्रयत्न के बाद भी सामान या खाने–पीने की वस्तु हाथ न लग पावे तो उसको नष्ट कर दे। इसी पर यह कहावत है– "तोका न मोका ले भारे मां झोंका" यानी न तुम्हारे काम आये, न हमारे काम आये तो इसको लेकर भाड़ में झोंक दो, तो सारी जलन समाप्त हो जाय। कहावत से अधिकार एवम् वस्तु के प्रति अत्यधिक आकांक्षा की भावना प्रकट होती है।

अ०– खा न पावे तो उसे गिरा ही दे जैसे छोटे लड़के पतंग लूटने के लिये जी जान लगा देते हैं, मगर जब जानते हैं कि वह मिल नहीं पायेगी तो कई लड़कों के बीच में उसे फाड़ देते हैं।

खाय न खाय देय।

अ०– किसी भी वस्तु को जब लोग रखकर सड़ा गला देते हैं, या बेस्वाद कर देते हैं फिर भी उसे न तो स्वयं ही खाते हैं और न किसी को देते हैं कि कोई खा पी ले, या वस्तु है तो कोई इस्तेमाल ही कर ले तो कहावत कही जाती है।

खाय लेआ समधी माछरि भात,
इही भाते भात।

अ०– माछरि का मतलब है मछली, जिसमें बंगाली भोजन की झलक मिलती है। कहावत से लगता है कि कोई आदमी घर आये मेहमान से कुछ रुष्ट सा है जो कहता है कि समधी, यह मछरी भात, साग सालन खा लो इसके बाद तो अब आना न होगा। इसी भाते हमारा, तुम्हारा खाना पीना समाप्त है। इसी वर–विदाई के बाद तुम्हें आना नहीं है।

दूसरा मतलब निकलता है जो बना है बस यही इतना ही भोजन है, इसके बाद कुछ भी नहीं है।

यानी जो भी स्थिति है उसके बाद आगे कुछ भी नहीं होना।

खावा भात, अड़ावा पात।

किसी अलगर्ज़ू, अहसान फरामोश व्यक्ति के ऊपर कहावत चरितार्थ हुई है।

अ०– खाना खा लिया पत्ता फेंक दिया चलते बने, न नुकसान से मतलब न किसी काम से मतलब। बस केवल खाने से मतलब था, खा लिया, चलते बने। फिर इज्ज़त जाती है कि रहती है, कौन आया, गया, क्या स्थिति है, ऐसे गर्जमंद व्यक्ति से क्या मतलब है?

खाय क कठवत भै लादै क सूप
सुपवा न उठै दीदी मोरे तू।

श०– कठवत–कठौता या काठ की गोल गहरी परातनुमा वस्तु । पहले के ज़माने में स्त्रियां रोटी आदि इसी में रखती थीं, लादय–उठाना, सूप–जिससे अनाज इत्यादि पछोरा जाता है, बूत– ताकत, हिम्मत।

जब कोई स्त्री दोनों समय भरपूर भोजन कर रही हो, स्वस्थ्य हो, काम करने की स्थिति में हो किंतु

काम के समय तमाम बहाने ढूंढ़ ले तो कहावत चरितार्थ की जाती है।

अ०— खाने को तो एक कठौता भरकर खा लेगी और उठाना है सूप जैसे हल्की–फुल्की चीज़, उस पर भी नज़ाकत यह कि यह तो हमसे उठता ही नहीं यानी कि इतनी कमज़ोर हैं कि सूप भी नहीं उठा पातीं। कहावत से नज़ाकत व आलस्य प्रकट होता है। काम के समय निकम्मापन और भोजन के समय भरपूर भोजन करना।

खाय क नहीं दाने, अम्मां चलीं भुनाने।

अ०— घर में खाने को दाना नहीं है और अम्मां चली है भड़भूजे के यहां दाना (चबेना) लेकर भुनाने। उपर्युक्त कहावत ग़रीबी का प्रतीक है। यानी–जहां खाने को लाले पड़े हों वहां दाना से कब तक काम चलेगा?

खाय चना रहे बना।

अ०— कहते है चना घोड़े का खाना है। चना खाकर घोड़ा ताकतवर व चुस्त रहता है। कहावत के अनुसार जो चना खाता है उसकी तन्दुरुस्ती अच्छी भली बनी रहती है।

खाय के झटपट चलिये कोस,
मरिये आप, दइव कै दोस।

श०— झटपट–जल्दी–जल्दी, दइव–भगवान्।

कहावत स्वास्थ्य विषयक कही गई है।

अ०— खाना खाने के बाद आराम करना बहुत आवश्यक होता है। कहा है कि भोजन के बाद जल्दी–जल्दी चलकर कोसभर की यात्रा करें तो अपना दोष न देकर भगवान को दोषी ठहराये। अतः खाना खाकर कभी भी दौड़ना या तेज़ चलना नहीं चाहिए।

खाय लेव–खायलेव, जउधी धी नहीं।
पहिरि–लेव–पहिरि लेव जउधी बहू नहीं।।

श०— जउधी– जब तक, धी–बेटी।

कहावत बेटी और बहुओं के आने के बाद माँ और सास के खाने तथा पहनने से संबंधित है।

अ०— जब बेटी थोड़ा बड़ी हो जाती है तो वह जब भी मां को खाते देखेगी तभी मां से खाने को मांगेगी, कभी रोकर, गाकर, ठुनक कर। स्वाभाविक है कि मां बच्ची के सामने कब खाना चाहेगी। उसी तरह से जब घर में बहू आ जाती है तो जो वस्त्र उत्तम होगा वह बहू पहनना तथा ले लेना चाहेगी। तो जब तक लड़की नहीं है तभी तक खालो और जब तक बहू नहीं तभी तक पहन लो, वर्ना बच्चों के आगे फिर खाना–पहनना नहीं हो पायेगा क्योंकि पहले बच्चों को खिलाया पहनाया जाता है, फिर खुद खाया पहना जाता है।

खाय पियै का रोसा बीबी,
हर जोतै का ताहिर।

जब कोई व्यक्ति एक आदमी से तो कठिन से कठिन काम लेने के बाद भी खिलाने पिलाने में लापरवाही करे और किसी स्त्री को बिना काम के ही खिलाता पिलाता रहे तो लोग कहावत कहते हैं–

अ०— यानी खाने–पीने के लिये तो रोसा बीबी है और हल जोतने के लिये ताहिर। जैसा किसी ने कहा है–

मजा मारै गाजी मियां, धक्का खाय मुजाहिर।

'ख़ाली दिमाग़ सैतान क होत'।

अ०— जिस आदमी को कोई काम नहीं रहता वह हमेशा उलटी–सीधी फालतू की बातें अपने दिमाग में सोचता रहता है क्योंकि खाली दिमाग आदमी का बेकार का होता है।

खाई मीठ, कि माई।

अ०— यह स्वाभाविक है कि बच्चे को मां सबसे अधिक प्यारी होती है किन्तु अच्छा खाना भी ज्यादा ही महत्वपूर्ण होता है। जिस स्थान पर बच्चे को बढ़िया चीजें खाने को मिलती हैं फिर वह मां को भी भूल जाता है। इसलिये कि माई मीठ की तुलना में बढ़िया खाना अधिक मीठा है।

खाली बनिया का करै? यहि कोठी क–
धान वहि कोठी करै।

अ०— जब आदमी के पास कोई काम नहीं रहता है तो वहीं "खाली दिमाग़ शैतान" वाली कहावत लागू होती है। यहाँ पर बनिया खाली बैठा है। एक मकान

में रखा धान दूसरे मकान में अनायास ही रख रहा है। इसी तरह से जो व्यक्ति अनायास का काम बढ़ाये रहता है तो यही कहावत चरितार्थ होती है।

खाय क दाना नहीं नहाय क तड़के।

अ०— कहते हैं कि नहाने के बाद भूख लग जाती है जो स्वाभाविक ही है।

अ०— कोई आदमी बड़े सबेरे ही नहा लेता है तो उसी पर गरीबी के कारण व्यंग्य किया गया है कि घर में खाने को तो कुछ भी नहीं है और नहाने के लिए बड़े सबेरे ही नहाकर खाने को तैयार हो जाते हैं।

खावा घर नहीं भूलतै।

अ०— जिस घर में आदमी सुख पाये रहता है, खाये पिये रहता है, वह घर उसे कभी नहीं भूलता है।

खावा पिया साथ, हांड़ी मारा लात।

कहावत काम निकल जाने पर किसी को तिरस्कृत करने एवं त्याग देने पर कही गई है।

अ०— कहावत उस हांड़ी के ऊपर कही गई है जिसमें लोग खाना बना—खाकर लात मारकर फेंक देते हैं।

खाक डारे चाँद नहीं छिपत।

श०— ख़ाक—मिट्टी, यह कहावत लोग उस समय इस्तेमाल करते हैं जब किसी यशस्वी पुरुष, महात्मा, उच्चपदस्थ व्यक्ति पर छीटाकशी करते रहते हैं।

अ०— "चन्द्रमा के ऊपर धूल डालने से वह छिपता नहीं है जैसे— कहा है कि "सूरज पर थूकने पर छिट्टा अपने ही मुँह पर पड़ता है।" किसी भी प्रभावशाली व्यक्ति की कोई चाहे ईर्ष्या वश निंदा कर पाये तो असंभव है। ऐसे व्यक्तियों पर गाल बजाने का कोई असर नहीं पड़ता है। कोई बकवास करता है तो करता रहे।

खाय क निबौरी, बतावै क दाख।

श०— निबौरी—निमकौरी, दाख—बादाम।

अ०— कोई व्यक्ति अपने घर में खाता कुछ है बताता कुछ है जिससे अपनी तारीफ हो, इज्ज़त बढ़े तो उस पर व्यंग्य में कहा गया है कि खाते तो निमकौरी हैं, और सबसे कहते हैं कि अंगूर खाता हूं। फालतू की झूठी शान दिखाना व बात करना। कहाँ कड़ुवी निबौरी, कहाँ स्वादिष्ट अंगूर?

खाय रोड़ा कि खाय घोड़ा।

बात पैसे की कही गई है।

अ०— कहावत के अनुसार पैसा दो ही काम में सबसे ज्यादा लगता है या तो घोड़ा रखने में या फिर रोड़ा यानी मकान बनवाने में ख़र्च होता है।

खाय क नौ बरा, बजावै क झांझ।

कहावत व्यंग्य में ऐसी महिला के ऊपर कही गई है जो काम करने में महा आलसी हो और काम अधिक करने का स्वांग खूब दिखा सके।

अ०— कहा है कि खाने के लिये तो पूरे नौ बड़े चाहिए और काम क्या करती हैं? कभी इधर तो कभी उधर घूम—घूम कर पैरों में पहनने का गहना झांझ बजाती रहतीं हैं, दिखाती हैं कि मैं बड़ा काम कर रही हूँ।

खान—पान सम्मान माँ सदा रहो होसियार,
या सदा रहो अगुवान।

श०— खान, पान—खिलाने पिलाने में, सम्मान—आदर, मान आवभगत, होसियार—समझदार, सतर्क बुद्धिमान, अगुवान—आगे, पहले।

कहावत में आने वाले अतिथि या मेहमान के प्रति सतर्क किया गया है। अतिथि सत्कार हमारे देश में बड़ा महत्व रखता है।

अ०— अपने यहां आये अतिथि या मेहमान को खिलाने—पिलाने व पूरा आदर सत्कार देने में सदैव तत्पर रहना चाहिए। व्यवहार कुशलता में सबसे आगे रहना ही अपनी भारतीय परंपरा का प्रतीक है। यही हमारे देश की सभ्यता व संस्कृति है।

खाय क गोजई, हगे क पक्का पै।

श०— गोजई—जौ व गेहूँ, हगे—टट्टी करने को, पक्का—जिस ज़मीन पर सीमेंट की फर्श बनी हों।

अ०— किसी ऐसे आदमी के प्रति व्यंग्य किया गया है, जिसे खाने को तो ठिकाना नहीं हो, किन्तु रहने को बहुत ऊंची जगह चाहता हो। गोजई, अधगेहुंआ की

खाते हैं, चाहते हैं कच्ची नहीं पक्की ज़मीन में टट्टी करने को। जैसे कहा है– "सोवै घोड़साल में सपन देखै लाख टका का"।

शेख चिल्ली की तरह ऊंची कल्पना की उड़ान होना। औकात छोटी शान बड़ी।

खाने को भंग नहाने को गंग
चढ़न को तुरंग, ओढ़न को दुसाला।

श०– भंग–भाँग, गंग–गंगा जी, तुरंग–घोड़ा, दुसाला–कीमती ऊनी वस्त्र जो जाड़ों में ओढ़ा जाता है।

कहावत के गंग, भंग, तुरंग आदि शब्दों से ही ज्ञात होता है कि कहावत बाबा विश्वनाथ की पावन नगरी काशी की ही है। जहां गंगा की पवित्र धारा बहती है। भंग के प्रेमी भोले बाबा के गण व भक्त भंग पी करके ही मस्त हैं। गंगा का स्नान, भंग का गोला, चढ़ने को घोड़ा, ओढ़ने को दुशाला फिर चाहिए ही क्या? किसी ने कहा है–

चना चबैना गंगजल जौ पुरवै करतार
कासी कबहुं न छांड़िये विश्वनाथ दरबार।

यानी– चना का चबेना, गंगा जी का जल, जब बराबर मिलता रहे तो काशी नगरी, बाबा जी का दरबार कभी नहीं छोड़ना चाहिए।

काशीपुरी में बड़े जीव भी बसते हैं। काशी के विषय में प्रसिद्ध हैं–

पान, पराग, सोहागिनि सुंदरि,
दे मृगनैनि कि दे मृगछाला।

काशी नगरी में या तो रसिकों को पान, पराग व सुन्दर सोहागिन नारी चाहिए या फिर किसी वैरागी को मृग छाला ही चाहिए कि अब बैठो, भोले बाबा का भजन करो। यहां के लिये मशहूर है–

रांड़, सांड़, सीढ़ी, संन्यासी।

इनसे बचे तो सेवइ कासी"।।

यहां पर उपर्युक्त वस्तुओं की भरमार है, जो इनसे बच निकलता है वही काशी में रह सकता है।

खाय आपन कमाई, मरय भइसी के अंडेर।

श०– अंडेर–झगड़ा, लड़ाई।

कहावत उस समय लागू की जाती है जब कोई भी व्यक्ति अपने ही घर में अपनी ही कमाई का पैसा दूसरों के मारे इस्तेमाल न कर पावे। दूसरों की लड़ाई–झगड़े के कारण शान्ति न मिल पाना।

अ०– कहा है कि खाना पीना अपनी कमाई के पैसे का, मगर जान जा रही है भैसों के झगड़े के कारण। दूसरों के कारण अपनी स्वतंत्रता में बाधा उत्पन्न होना।

खाना खाय मुस्कराय के,
प्यार जतावै गाय के।

अ०– कहा गया है कि जब खाना खाओ तो हंसी खुशी, मुस्करा कर तथा यदि किसी से प्यार प्रकट करना हो तो गाना गा–गा कर प्यार का इजहार करना चाहिए।

खाय पिये संगे, हिसाब करे अलगे।

कहावत उस समय कही जाती है जब पैसों के हिसाब–किताब की बारी आती है।

अ०– खाना–पीना साथ–साथ अच्छा लगता है। पैसे का हिसाब अलग–अलग हो।

खाब–खाब कहे से पेट न भरी।

अ०– किसी आवश्यक वस्तु की उपलब्धि और तृप्ति के बाद ही आत्मसंतोष संभव होता है। केवल मुंह से किसी काम को कहते रहने पर काम नहीं होता, खाना–खाना कहने से पेट ही भरता है। पेट तो खाने के बाद ही भर सकता है।

खाई करै कमाई, कपड़ा करै सिंगार।

अ०– खाने के बल पर ही परिश्रम कर सकता है आदमी और कपड़े से ही शृंगार होता है।

खात पियत की जग मिले, अवसर मिले न कोय।

श०– खातपियत–यानी जब घर में खाने पीने को हो। अवसर–समय पर।

अ०– जब घर में संपन्नता होती है तो सभी साथी हो

जाते हैं मगर जब कोई अड़चन का समय आता है तो कोई नहीं दिखाई पड़ता। कवि रहीम ने बहुत अच्छा कहा है—

रहिमन तीन प्रकार ते हित, अनहित पहिचान।
पर बस परे, परोस बसि, परे मामला, जान।।

यानी कोई पराधीन हो या फिर पड़ोस में रह रहा हो, या कोई काम अटक गया हो ऐसे समय पर दूसरों की या मित्र की पहचान होती है।

खाना उहां खाना, पानी यहां पीना।

जब कोई काम बेहद ज़रूरी आ जाये, या आनेवाले की सख्त ज़रूरत महसूस की जाय तो कहावत कही जाती है।

अ०— यदि खाना वहां खाये तो पानी यहां आकर पीना, या हाथ यहीं पर आकर धोना।

खाय महुआ, पहिरै अमौवा।

श०— अमौवा—बढ़िया मूंगिया रंग का कीमती कपड़ा होता था जो अब नहीं मिलता।

अ०— खाने की कोई चिन्ता नहीं है, महुआ भी खा लेंगी, मगर पहनने के लिये अमहे रंग की साड़ी चाहिए।

खाय कांसा भै, चलै आसा भै।

कहावत आलसी लोगों के प्रति कही गई है जो खाने में बड़े माहिर होते हैं, मगर काम में आलसी होते हैं।

अ०— खाने को तो कांसा भर यानी थाली भर खा जायेंगे मगर चलने को कहो तो जितना मन होगा उससे आगे कदम नहीं रखने के।

खाय तो घी से नहीं जाय जी से।

अ०— खाय तो बढ़िया ही, नहीं तो न खाय, चाहे प्राण भले ही चले जायँ।

खावा गाल, नहावा बाल जानि परत।

अ०— जो लोग खाने—पीने में बढ़िया खाना खाते हैं उनका स्वास्थ्य बता देता है और नहाकर आते हैं उनके बालों को देखकर समझा जा सकता है कि नहाये हैं या नहीं। बाल गीले दिखाई पड़ते हैं या फिर साफ संवरे दिखाई पड़ते हैं।

खाय बकरी की तरह, सूखे लकड़ी की तरह।

अ०— जो लोग दिनभर खाते रहते हैं, उनकी सेहत से पता ही नहीं लगता कि खाया पिया शरीर है। बहुत से लोग होते हैं कि कितना भी खायें उनके बदन में खाना लगता ही नहीं। बहुत से लोग थोड़ा भी खाकर स्वस्थ रहते हैं।

" खि "

खिसियान बिल्ली, खम्भा नोंचे।

श०— खिसियान—शर्मिदा, लज्जित होना।

किसी लज्जित हुए व्यक्ति को देखकर कहावत चरितार्थ की गई है। ऊपर की रखी वस्तु को जब बिल्ली नहीं पाती तो वह खीझ कर खम्भा नोंचने लगती है। इसी प्रकार से मनुष्य हो या जानवर जब मनचाही वस्तु नहीं पाता तो वह लज्जित होकर खीझ उठता है। उसी पर कहावत कही जाती है।

अ०— खिसिया कर बिल्ली खम्भा नोंचती है।

खिचड़ी के चार यार, घी, दही, पापड़, अचार।

अ०— खिचड़ी के साथ चार वस्तुओं का जोड़ है। घी, दही, पापड़ व अचार अवश्य होना चाहिए।

खिचरी से दिन उबरी।

अ०— क़हा गया है कि जिस दिन से खिचड़ी का त्यौहार पड़ता है, उसी दिन के बाद से दिन बड़ा होना शुरू हो जाता है।

खिसियान बकुलिया कादौं खाय।

श— कादौं—कीचड़।

अ०— जब कोई व्यक्ति बहुत ज्यादा मान, सम्मान चाहता है या खाने पीने में आवश्यकता से अधिक नख़रापन दिखाता है तो कहावत कही जाती है। बकुली तालाब में ही रहती हैं। पानी के किनारे कांदों, यानी कीचड़ खाती है। इसी प्रकार खिसियाया मनुष्य भी जो मिल गया, उसी को खा लेता है। यानी अंत में शर्मिन्दा होने के बाद उसी काम को करना।

खलावै का नांव नहीं, दै मारै क नांव।

कहावत ऐसे समय पर चरितार्थ होती है, जब किसी के साथ लाख भलाई करने के बाद भी जरा सी भूल हो जाने पर अपयश मिलता है।

अ०– बच्चे के माध्यम से कहावत कही गई है कि बच्चे की सेवा की, दूध पिलाया, पाला–पोसा, उसको तो कभी किसी ने अच्छा कहा नहीं और जरा सा गुस्सा आ गया, बच्चे को डांट दिया, तो उसकी गिनती रोज़ ही की जाती है। रोज दो बात सुनने को मिलती है।

" खु "

खुदा कदरदान तो गदहा पहलवान।

श०– खुदा–भगवान्, कदरदान–इज्ज़त करने वाला, मानने वाला, गदहा–गधा, पहलवान–ताकतवर, साहसी।

कहावत ईश्वरवादी है। गोस्वामी जी के शब्दों में–

जेहिपर कृपा राम कै होई,
तेहिपर कृपा करै सब कोई।

कहावत उर्दू की होते हुए भी हिन्दी प्रयोग में आती है।

अ०– जिस पर ईश्वर की क़ृपा होती है, तो वह कमजोर से कमजोर हो तो बड़ा से बड़ा काम कर डालता है।

खुदा गंजे को नाखून नहीं देत।

अ०– जो मनुष्य कुछ कर पाने की क्षमता रखता है, जो कोई काम कर डालना चाहता है उसे भगवान कार्य करने का अधिकारी नहीं बनने देते।

खुदा की लाठी मां आवाज नहीं होत।

कहावत दैवी कष्टों के प्रति कही गई है। ईश्वर के द्वारा मारे गये लाठी डंडों में कोई आवाज़ नहीं होती। अचानक एकदम से क्या से क्या हो जाता है, इसे कोई भी नहीं जान सकता, न बता सकता है।

अ०– भगवान के दिये गये दुःख को न कोई जान ही सकता है न हटा ही सकता है।

खुदा देत तो छप्पर फारके देत।

यह भी खुदा की खुदाई पर ही कहावत कही गई है। जब किसी को अचानक कोई लाभ या सुख मिलता है तो लोग कहते हैं।

अ०– धन, संपदा, सुख, परिवार जब खुदा देता है तो जैसे ऊपर से गिरा देता है यानी खूब देता है।

खुदा सक्करखोर क सक्कर देत।

खुदा भी खूब है। वह भी उसी की मदद करता है जो बढ़िया–बढ़िया खाने वाला, पैसे वाला है। शक्कर खाने वाले को वह भी शक्कर ही देता है।

" खे "

खेती करै अधिया,
न बैल मरै न बधिया।

श०– अधिया –खेती की ज़मीन को ज़मीदार लोग किसान को दे देते थे। उसके बाद ज़मीदार को उस खेती से कोई मतलब नहीं रहता था। किसान अपना खेत जोतता–बोता–सींचता काटता था। जब अनाज निकलता था तो उसे ज़मीन का मालिक आधा बटवा लेता था। कहीं–कहीं पर भूसा भी आधा बंटता था, बधिया–बैलों के गुप्तांग को कटवा देने से बैल बधिया हो जाते थे। कहावत पुराने जमाने की है।

अ०– खेती को अधिया दे देने के बाद ज़मीदार या ज़मीन के मालिक को क्या चिंता? चाहे बैल मरे, चाहे बैलों की बधिया हो चाहे नहीं। इसलिये खेती अधिया पर करवाना चाहिए। उसमें सारी चिंता किसान को होती है मालिक निश्चिंत रहता है।

खेती खसम, खसम खेती।

श०– खसम–पति, मालिक।

अ०– खेती एक पति की तरह है, जैसे अपने पति की कमाई से पेट भरता है वैसे ही खेती से भी अपना पालन–पोषण, जीवन यापन होता है। जितना प्रिय पति होता है उतनी ही प्रिय खेती भी होती है।

खेती करै बनिज का धावै,
ऐसा डूबै थाह न पावै।

श०– बनिज –व्यापार, धावै–दौड़ै।

जब कोई आदमी दो काम एक साथ करना चाहता है तो कहावत लागू होती है। विशेष रूप से खेती के लिए सख्ती से कहा गया है।

अ०— जो खेती करे और व्यापार करने के लिये भी पांव पसारे वह ऐसा डूबता है कि ढूंढ़े किनारा नहीं मिलता। वह किसान न आधी पाता है न पूरी, खेती से उसे हानि ही हानि मिलती है। गोस्वामी जी के शब्दों में—

दुइ कि होई इक संग भुआलू,
हंसब ठठाइ फुलाउब गालू।

यानी दो कार्य एक साथ हो पाना असंभव है या तो हंस ही लो या गाल ही फुला लो।

खेत चरै गदहा, मार खाय जोलाहा।

अ०— हानि कोई करे, मार कोई सहे। अपराध का फल अपराधी को न मिलकर किसी दूसरे बेचारे निर्दोष आदमी को मिलना। खेत चरता है गधा और मारा जाता है जोलाहा। इसी पर कहा गया है—

और करै अपराध कोउ, और पाव फल भोग।
अति विचित्र भगवंत गति, को जग जानै जोग।।

खेती, पाती, बीनती, औ घोड़े की तंग।
अपने हाथ संवारिये लाख लोग हों संग।

श०— पाती—पत्र, बिनती—अर्ज, प्रार्थना, तंग—बागडोर

कहावत सिद्धान्तवादी एवं महत्वपूर्ण है।

अ०— खेती, पत्रलेखन, किसी से कोई प्रार्थना करनी हो, और घोड़े की जीन कसना ये चारों कार्य अपनी ही हाथों से करना चाहिए। चाहे लाखों लोग साथ क्यों न हों?

बाढ़ै पूत पिता के धरमे।

खेती उपजै अपने करमे।।

अ०— पहले के ज़माने में लोग कहा क़रते थे कि खेती अपने कर्मो के द्वारा उत्तम होती है तथा पुत्र की उन्नति पिता के कर्मों से होती है।

खेती करे ऊख कपास,
घर करे व्यवहरिया पास।

घाघ कवि का कहना है कि खेती करना है तो ईख व कपास की खेती करो तथा घर यानी मकान बनाओ, तो ऐसी जगह कि व्यावहारिक, अच्छे लोगों का पड़ोस हो जो कभी दुःख—सुख पड़े तो साथ दे सकें।

खेती करै खाद से भरै
सो अन्न लै कोठिला मां भरै।

अ०— खेती करना है तो खेत को खाद से अवश्य भरना चाहिए तभी अनाज से कोठ भर सकती है।

खेते पासा जो न किसान,
उसको करे दरिद्र मसान।

श०— पासा—पांस, मसान—श्मशान, मुर्दाघाट।

अ०— खेती में रखवाली की अत्यधिक आवश्यकता होती है। अतः जो किसान खेत में नहीं जाता है उसका खेत बिना अनाज के श्मशान की तरह हो जाता है।

खेती वह जो खड़े रखावै,
सूनी खेती हरिना खावै।

कहावतें खेती विषयक कहीं गई हैं। खेती असली माने में वही है जिसे खड़े होकर काम को देखे, भाले, स्वयं करवावै, वर्ना जो खेती बिना देखी रहती है उसे जानवर खा डालते हैं।

खेती तो थोरी करै, मेहनत करै सेवाय,
घाघ कहै वहि मनुष को टूटा कबहुं न जाय।

श०— थोरी—थोड़ी, कम। सेवाय—ज्यादा। टूटा—नुकसान, हानि, घाटा।

अ०— कहा गया है कि खेती चाहे कम ही करो मगर मेहनत अधिक करनी चाहिए। घाघ कवि का कहना है कि उस मनुष्य को कभी घाटा नहीं हो सकता है जो खेती में कठिन मेहनत करता है।

खेती तो उनकी, जो करै अहान—अहान
और उनकी खेती क्या जो देखे साफ बिहान।

श०— अहान—अहान—निगरानी, देखभाल।

अ०— घाघ कवि का कथन है कि खेती तो उन्हीं की अच्छी होती है जो ठीक—ठीक खेतों की देखभाल करते हैं। उनकी खेती क्या बढ़िया होगी जो काम को संझा—सबेरे पर टरकाते हैं।

खेती करै सांझ घर सोवै
काटै चोर हाथ धरि रोवै।

अ०— कहते हैं कि जो किसान खेती करके शाम से

ही घर में घुसकर सोता रहता है उसकी खेती चोर काट ले जाते हैं तो फिर वह बाद में सिर पर हाथ रखकर पश्चाताप करता है।

खेती करै तौ अपने बहै,
ना तौ जाय कन्हौड़े रहै।

अ०– यदि खेती करनी है तो स्वयं को कठिन परिश्रम करना पड़ेगा, खेती के साथ–साथ पूरी मेहनत से काम करना पड़ेगा, नहीं तो यदि काम न कर सके तो कहीं दूर जा कर रहे।

खेत बेपानी, बूढ़ा बैल, सो गृहस्थ, सांझ गेह गैल।

श०– बेपानी–बिना पानी।

घाघ कवि का कथन है कि यदि खेत के पास सिंचाई करने का कोई साधन नहीं है तथा बैल बूढ़ा है तो किसान व खेत दोनों ही बर्बाद हो जाते हैं।

खेत न जोतै रोड़ी, ना भैंस बेसाहो पाड़ी
ना मेहर मरद कै छाड़ी, क्यों परसवै बिपदा गाढ़ी।

श०– रोड़ी–एक प्रकार की घास होती है।, बेसाहो–खरीदो, पाड़ी–पड़िया, बिना ब्याई, मेहर–बीबी, स्त्री, मरद–पुरुष, मर्द, बिपदा–विपत्ति, परेशानी, गाढ़ी–ज्यादा गहरी।

अ०– जिस खेत में रोड़ी घास हो उसे न जोतना चाहिए। भैंस लेना है तो पड़िया यानी जो गर्भित न हो, उसे नहीं लेना चाहिए और जो स्त्री पहले से किसी पुरुष के साथ रही हो, जिसको उसके पति ने परित्याग किया हो ऐसी स्त्री को ग्रहण नहीं करना चाहिए चाहे जितनी आफत हो या परेशानी हो।

खेते क दांव मेड़े न लीन तौ कह्यो।

श०– दांव–बदला, मेड़ें–खेत की मेंड़, हदबंदी, खेतों के बीच में बंटवारे में बनी सीमा।

अ०– खेत पर हार खाने के बाद उसका बदला मेंड़ पर चुकाने के चक्कर में रहना, अवसर के ताक में रहना। इसी प्रकार जब मनुष्य एक स्थान पर मात(हार) खाता है तो वह किसी अन्य स्थान पर बदला लेने के अवसर में रहता है। उस समय कहावत चरितार्थ की जाती है।

खेती खदान न भरै किसाना
ओकरे घरे दलिद्र समाना।

अ०– जो किसान खेत में खाद नहीं डालता है उसके घर में दलिद्र का वास हो जाता है।

खेत नवा भल, सूप क नवा नाहीं।

श०– नवा–देहातों में जब नया अनाज खेत में होता, है तो किसान लोग उस नये अनाज को पहले पहल भगवान को भोग लगाकर तब स्वयं खाते हैं।

अ०– खेत पर नवा अच्छा होता है, सूप का नवा अच्छा नहीं होता।

खेत जोते राजा क, कर्ज खाय साहूकार क।

कहावत एक विडंबना पर कही गई है। काम किसका करे.और खाय किसका।

अ०– खेत में काम करे राजा के और खाय बनिया से उधार लेकर। पहले के ज़माने में मज़दूर–किसान आदि से काम कराकर कभी उन्हें समय से पैसा नहीं दिया जाता था। बड़ी हुज्जत से कहे सुने आधी, तीही मज़दूरी मिली तो मिली, नहीं तो नहीं, कौन पूछता है कि तुम भी खाना खाते हो क्या? आमतौर पर रईस रजवाड़ों के यहां बेगार कराया जाता है ग़रीब किसान मज़दूरों से। सभी खाने के लिए बनिया से अनाज कर्ज़ लेकर अपना दिन काटते थे।

खेत–खेते क पोत, देहीं–देहीं क नात।

श०– पोत–किसान जो खेत ज़मीदारों का जोतता था उसके बदले में ज़मीदारों को पोत (इसी को लगान भी कहते हैं) देता था। नात–रिश्ता, सम्बन्ध।

जब कभी देन–पोत की या नाते रिश्ते की बात आती थी तो कहावत कही जाती थी।

अ०– भाई, जब तक खेत है तब तक पोत तो देना ही होगा और जब तक यह शरीर है तभी तक सारा नाता रिश्ता है। मरने के बाद क्या नाता और क्या रिश्ता? सब यहीं छूट जाता है।

खेती तो उनकी, जो अपने कर हल हाँके,
उनकी खेती कुछ नहीं जो साँझ–सबेरे झाँके।

अ०– कहावत खेती व किसान विषयक है। खेती तो

उन किसानों की अच्छी व उपजाऊ होगी जो अपने हाथों से हल लेकर ज़मीन की जोताई करें। जो कुछ काम ही न करेंगे बस खेत पर आकर संध्या सवेरे खेत को देखकर चले जायेंगे उनकी खेती में क्या उपज हो सकती है? बिना काम को किये सफलता पाना असंभव है।

खेती नासै कोल बेकोल
नारी नासै पुरुस केबोल।

श०— नासै—बर्बाद हो, कोल बेकोल—जिन खेतों में गाटे या मेंड़ न बने हों, बोल—बोली बोलना, व्यर्थ के हर समय कटु वाक्य बोलते रहने पर ताना, व्यंग्य सुनाते रहना।

अ०— खेत का नाश होता है यदि उसमें जगह—जगह गाटे व खाने न बनें हो क्योंकि अधिक लंबा खेत होने पर पानी देने व खेत में पानी भरने में बाधा उत्पन्न होती है। उसी प्रकार से यदि पुरुष हर समय स्त्री को ताना, व्यंग्य देता रहेगा तो रुष्ट हो जायेगी। सदैव अपने भाग्य को कोसा करेगी। फिर रोज़—रोज़ के ताना देने से स्त्री की भावनायें कुंठित होने लग जाती हैं और फिर वह बिगड़े स्वभाव की चिड़चिड़ी हो जाती है। किसी ने कहा है—

दुर्जन को मुख बिबर है, निकसत बचन भुजंग,
ताकी औषधि मौन है, डसै न एको अंग।

खेत परे बिआ जामिहै, उलटा परै कि सीध।

अ०— कभी—कभी कार्य का होना निश्चित होता है, जब कोई काम होना ही होता है तो लोग कहावत कहते हैं— कि खेत में बीज चाहे उलटा पड़े चाहे सीधा जम तो वह जायेगा ही। उसी तरह से किसी अच्छे कार्य का परिणाम निश्चित रहता है।

" खे "

खेत बिगाड़े खरतुआ, औ सभा बिगाड़े दूत।

श०— खरतुआ—घासपात, कूड़ा—कर्कट, दूत—दुताई करने वाला, जो आदमी इधर की बातें उधर करने वाला हो, चुगलखोर।

कहावत सिद्धान्तवादी है।

अ०— यदि खेत में कूड़ा—कर्कट, मोथा घास है तो वह खेत अच्छा नहीं होता, उससे खेत बिगड़ जाता है। उसी प्रकार से भीड़—भाड़ के माहौल में यदि कोई एक आदमी भी चुगली करने वाला पहुंच गया तो समझ लो कि कहीं न कहीं पर आपसी झगड़ा रखा है।

खेत जोरू जोर क
बल घटै तौ अउर क।

श— जोरू—पत्नी। जोर ताकत। घटै कम हो।

अ०— स्पष्ट है।

" खो "

खोदा पहाड़ निकली चुहिया।

जब कोई कठिन परिश्रम करता है उस पर भी परिणाम एकदम नकारात्मक हो जाता है तो कहते हैं—

अ०— खोदने को तो पहाड़ उलट डाला मगर मिली क्या एक चुहिया। परिणाम आशा के एकदम विपरीत होना।

खोदा केंचुआ, निकला साँप।

अ०— उपर्युक्त कहावत के एकदम विपरीत यह कहावत है। ऊपर पहाड़ खोदने पर चुहिया निकली थी। यहाँ पर सोचा था कि केंचुआ निकाल रहे हैं मगर निकला साँप, एक भयंकर जीव। आशा के विपरीत परिणाम का पाना।

खोदी आग उललाई पतोह टिकतै नाहीं।

श०— खोदी—बार बार आग को उकसाना, उललाई—किसी काम में ऐब लगाते रहना, ज़रा—ज़रा सी बात पर टोंका—टांकी लगाये रहना, टिकतै—रहना, रुकना।

अ०— आग को बार—बार यदि उकसाया जाय तो वह जल्दी ही बुझ जाती है उसी प्रकार यदि बहू यानी पतोहू को किसी काम के बीच बीच में लगातार टोका जाय, तो वह भी परेशान हो जाती है। उससे घर में झगड़ा मन मोटाव, द्वेष होने की संभावना बन जाती है।

" खौ "

खौरही देह मखमले क कुरती।

श०— खौरही—खौरा, जिसकी देह सड़ गई हो।

कोई अस्वस्थ, कुरूप, चर्म रोग से ग्रस्त व्यक्ति जब बढ़िया मलमल का कुरता पहन ले तो कहावत चरितार्थ होती है।

अ०— शरीर तो इस क़दर का है कि देह भर से खून चू रहा है, खौराया है, उस पर मलमल का कुरता पहने हैं। कहावत कटु व्यंग्य में कही गई है।

खौरही कुतिया रेसम की झुलिया।

अ०— उपरोक्त कहावत की भांति यह भी है। कुतिया के माध्यम से किसी बदशक्ल या रूखे शरीर वाली स्त्री को अच्छे वस्त्र पहने देखकर कही गई है। एक तो खौरही कुतिया उस पर रेशमी झबला पहना दिया गया है।

" खूं "

खूंटा के बल बछरू कूदै।

श०— खूंटा—जिसमें जानवर बांधे जाते हैं।

जब किसी दूसरे की ताकत से आदमी कुछ बोलता है, किसी दूसरे की शह से लड़ाई—झगड़ा करता है तो कहावत उद्धृत की जाती है।

अ०— किसी कमज़ोर बछड़े को भी उछल—कूद मचाते देखकर कहते हैं कि खूंटा मज़बूत है उसी के बल बूते पर बछड़ा इतना उछल कूद मचाये है।

खूंटी हारय लीलि लै गै।

कभी—कभी मनुष्य के जीवन में ऐसी भी चमत्कारी घटनायें घटित हो जाती हैं कि उन पर विश्वास ही नहीं हो पाता। जैसे जब कभी कोई वस्तु अचानक ही घर से बिना किसी कारण के, बिना किसी ग़ैर के आये देखते—देखते ग़ायब हो जाय उसका कुछ भी अता—पता न लगे तो वह आश्चर्य का विषय बन जाता है। कुछ कहा ही नहीं जा सकता है। ऐसे समय में लोग एक पारंम्परिक घटना का प्रमाण देते हैं—

राजा नल पर बिपति परी
भूजी मंछरी जल मां परी।

मछली जैसा जीव जो पानी से निकलते ही मर जाती है, उस पर भूनी मछली भला पानी में कैसे जाती? मतलब यह कि यदि किसी पर विपत्ति आती है तो भाग्य भी प्रतिकूल हो जाता है।

" ग "

गर्ज परे पर मनई गदहा क मामा या बाप कहत।

कहते हैं कि गर्ज बावली होती है। इसलिये कहा है—

अ०— गर्ज पड़ने पर आदमी गधे को भी मामा कहता है। कोई—कोई गर्ज पर गधे को बाप भी कहते हैं। यानी अपना काम कराने के लिये लोग नीच से नीच लोगों से भी अच्छा—अच्छा रिश्ता जोड़ लेते हैं। गोस्वामी जी के शब्दों में—

स्वारथ के सब ही सगे, बिन स्वारथ कोउ नाहिं,
सेवें पक्षी सरस तरु, निरस भये उड़ि जाहिं।

तथा—

सुर, नर, मुनि, सब कै यह रीती,
स्वारथ लागि करहिं सब प्रीती।

अतः गर्ज जब अंटकती है तो उस समय ऊँच—नीच, छोटा—बड़ा कुछ भी नहीं दिखाई पड़ता है।

गदहा क नोन दीन कहेस—
हमार आंखिन फोरि दीन।

अ०— बेवकूफ के साथ भलमनसाहत करना भी ग़लत होता है। जैसा कि कहा है—

"कीन नेकी, होइगै बदी" कहाँ तो गधे को नमक दिया गया कि खाने में स्वाद आ जाये, उसने चट से अपयश दे दिया कि हमारी आँख ही फोड़ दी।

गये कुकुर बधिआवै, काटै से बचि आये।

श— बधिआवै—अंडकोष की बद्धी करवाना।

अ०— किसी के साथ बुरा व्यवहार करने जाने के बाद उससे अच्छा व्यवहार पाना या अच्छे व्यवहार की अपेक्षा करना एकदम ग़लत होगा। कुत्ते की बद्धी करने गये तो वह काटने दौड़ा किन्तु बच गया।

गइयो गाभिन, बैलव गाभिन।

श०— गाभिन—पेट में बच्चा रहने पर गाय भैंस को गाभिन कहा जाता है।

कहावत उस समय चरितार्थ की जाती है जब कोई आदमी "चित भी मेरी और पट भी मेरी" दोनों तरफ़ की बातों का समर्थन करे।

अ०– गाय भी गाभिन और बैल भी गाभिन। भला बैल कैसे गाभिन हो जाता? यह असंभव है किंतु अपनी बातों को मनवाने की ज़िद्द व धुन में असंभव बात को भी संभव कर दिखाना चाहता है। यानी वह गाय बैल दोनों को गाभिन दिखाना चाहता है।

गदहा धोये, घोड़ न होय।

किसी अनपढ़, मूर्ख, कुरूप, बुद्धू आदमी के प्रति कहावत चरितार्थ की गई है।

अ०– गधे को चाहे जितना धोया जाय, साबुन लगाया जाय वह वैसा का वैसा ही रहेगा। उसमें परिवर्तन नहीं हो सकता है।

'गगरी अनाज भवा, जोलहा क राज भवा'।

अ०– किसी छोटे आदमी के पास तनिक भी संपत्ति हुई नहीं कि वह अपने को किसी राजा से कम नहीं समझता है।

अ०– जुलाहों को खेत से थोड़ा सा भी अनाज मिल गया तो वे अपने को किसी राजा से कम नहीं समझते हैं। मानों उन्हीं का राज्य हो गया हो।

गदहा कै दोस्ती, लातन कै सनसनाहट।

गधे की दोस्ती में न तो अक्ल मिलती है न कोई सहयोग, गधे को आती है केवल दोलत्ती झाड़ना। अतः लोकोक्ति गधे के माध्यम से मूर्खों पर कही गई है।

अ०– मूर्ख से दोस्ती करने पर सिवाय तकलीफ़ के कुछ भी हाथ नहीं आता है। जिस तरह गधे की दोस्ती से लगातार दोलत्ती ही सहनी पड़ती है, उसी प्रकार से, दुष्ट व मूर्ख की दोस्ती से अपयश, कष्ट–क्लेश सभी कुछ बरदाश्त करना पड़ता है।

गदहा खवाये पाप न पुण्य,
बूढ़ खवाये गांठ ते दीन।

हमारे सनातन धर्म में हिन्दू–संस्कृति के अनुसार कहा गया है कि गाय को अग्रासन खिलाना या रोटी खिलाना पुण्य है, कुत्ते को कौरा देना भी पुण्य कार्य है, किंतु गधे के लिये कुछ भी नहीं कहा गया है। अतः कहा गया है–

अ०– गधे को खिलाने में न पाप है न पुण्य, उसी प्रकार बूढ़े व्यक्ति को खिलाना भी बेकार कहा गया है।

म खाय, कम खाय,
हाकिर हकीम के पास कबौ न जाय।

अ०– कम खाने से शरीर नीरोग रहता है। गम खाने से घर में या किसी से झगड़ा–लड़ाई होने की संभावना नहीं रहती है। शरीर नीरोग रहने पर डाक्टर, हकीम के पास न जाना होगा तथा झगड़ा न होने पर अदालत कचेहरी न जाना होगा न हाकिम के पास जाना होगा। कहावत सीखपूर्ण है।

गड़रिया क अस चूतर भुई नाहीं परतै।

यह लोकोक्ति गड़रिया के ऊपर चरितार्थ की गई है। बहुधा देखा गया है कि गड़रिया कभी ज़मीन में नहीं बैठता है। वह अपने बैठने के स्थान पर चूतड़ के नीचे लाठी, लोटा, कुछ न कुछ अवश्य रख लेता है। यानी कीमती से कीमती वस्तु तक वह ज़मीन में बिछा लेता है। दूसरी बात यह जाति कभी भी एक जगह नहीं बैठ सकती है। अपने गल्ले के साथ इधर उधर भटका ही करती है। इसलिये जो आदमी कभी थोड़ी देर भी एक जगह नहीं बैठ सकता है तथा जो कपड़े मैले होने के डर से ज़मीन में नहीं बैठता उसकी तुलना गड़रिये से की जाती है।

उसी की तरह इनको भी ज़मीन में बैठना बुरा लगता है।

गवा मर्द जो खाय खटाई
गई नारि जो खाय मिठाई।
गवा कुआं जो परिगै काई
गई बहू जो हंसै ठठाई।।

श०– मर्द–पुरुष, ठठाई–ठहाके मार कर, तेज़ हंसी में हंसना।

अ०– लोकोक्ति सिद्धान्तवादी है। कहा है– जो पुरुष खटाई ज्यादा खाता है, जो स्त्री मिठाई ज्यादा खाती है वह बेकार हो जाती है। उसी प्रकार से जिस प्रकार कुंए के जल पर काई जम गई तो वह बेकार हो जाता है तथा जो स्त्री जोरों से मर्द की तरह ठट्ठा मार कर हँसती है वह निर्लज्ज कहलाती है।

गरीब कै जोय, गांव भर कै भौजाई।

अ०— गरीब आदमी बेचारा निर्बल होता है, लोग समझते हैं कि उसकी बीबी से हँसी मज़ाक कर लेंगे तो एकबार नाजायज़ होने पर भी वह कुछ कह न पायेगा।

अतः कहा है कि ग़रीब की स्त्री से सभी गाँव के लोग हँसी ठट्ठा कर लेने के कारण भाभी बना लेते हैं। ग़रीब की वस्तु को अपनाने व अधिकार रखने के प्रयास में रहना।

गरीबी मां आटा गीला।

अ०— मुसीबत में मुसीबत का बढ़ जाना। कहावत के अनुसार ग़रीबी में एक तो वैसी ही आटा, दाल कम होता है, उस पर जब आटा गीला हो गया तो उसे सूखा करने के लिए और आटा आये कहाँ से, फिर रोटी कैसे बने? समस्या पर समस्या का बढ़ते जाना।

गरीब कै जवानी, गरमी क घाम,
जाड़े कै चाँदनी देय न काम।

अ०— कहावत यर्थाथवादी है। यानी गरीब आदमी, उसके लिए बचपन, बुढ़ापा, जवानी सब एक तरह बन जाती है। न कोई ऐश है न आराम, न रास रंग न घूमना—फिरना, बस एक काम रात—दिन मेहनत—मज़दूरी करो तो शाम को एक रोटी खाओ। उसी प्रकार से गर्मी की धूप जिससे सभी बचना चाहते है, बेकार हैं। जाड़ों की चाँदनी रात में भी भला बाहर कौन खुले में बैठना चाहेगा? इस तरह से ये तीनों वस्तुएँ बेकार होती है।

गई जवानी फिर ना अइहैं, चाहे रोज मलीदै खाव।

श०— मलीदा—आटे में घी का मोयन देकर जो रोटी बनती है। कहावत वक्त (समय) की बात पर कही गई है। गया समय फिर नहीं वापस आता है उस समय के लिए चाहे जितनी कोशिश की जाय। किसी ने लिखा है—

गया वक्त फिर हाथ आता नहीं
सदर दौर—दौरा दिखाता नहीं।

अतः बीती जवानी की उम्र फिर वापस नहीं आती चाहे रोज़ मलीदा ही क्यों न खाओ। कितना भी घी दूध, मेवा, फल खाओ मगर वह जवानी एवं जोश फिर नहीं आता है।

गदही से लगा दिल तो परी है क्या चीज़?

किसी ने बहुत सही कहा है— "प्रेम न जाने जात कुजात"।

जवानी जिस किसी की हो भली मालूम देती है।
शबाब आने पर चुड़ैल भी परी मालूम होती है।

या

गदहिया दुम हिलाती है, परी मालूम होती है।।

अतः जवानी में गधी से दिल लगा तो परी उसके सामने क्या है? यह तो अपनी—अपनी पसंद का सवाल है।

गड़रिया क दुसाला मिला तौ ऊ चुतरे के तरे धै कै बइठा।

अ०— कहते हैं कि गड़रिया का चूतर ज़मीन पर नहीं टिकता है। वह कुछ न कुछ बैठने की जगह बिछाकर ही बैठता है चाहे जितनी भी मंहगी चीज़ क्यों न हो। उसे जब दुशाला जैसी मंहगी चीज़ भी मिली तो वह बिछाकर ज़मीन में बैठ गया।

गले पड़ी ढ़ोल तौ बजावै क परी।

अ०— चाहे वस्तु हो या आदमी जो भी हो, यदि वह अपने पाले, अपने साथ है तो फिर उसका पालन—पोषण, व इस्तेमाल करना ही पड़ेगा। उसके निर्वाह की ज़िम्मेदारी लेनी ही पड़ेगी। जब बजाने की ढोल गले में लटक रही है, तो निश्चित ही बजाना होगा, इसके अलावा कोई चारा नहीं है। कहावत उत्तरदायित्व का निर्वाह करने पर कही गई है।

गर्जमंद की खुशामद से होशियार रहना चाहिए।

अ०— जो अपना काम किसी दूसरे से करवाना चाहता है, गर्ज के मारे वह इतना स्वार्थान्ध हो जाता है कि खुशामद में नीच से भी नीच काम करके अपना काम बनाना चाहता है, इसलिए ऐसे व्यक्ति से सावधान रहना चाहिए।

गहिरै जोत, बोवै धान
सो घर कोठिला भरै किसान।

अ०— लोकोक्ति खेती विषयक कही गई है। यदि

धान के खेत को गहरा जोता जाय तो फ़सल बहुत बढ़िया होगी। किसान की कोठ भर जायेगी।

गवन समय जौ स्वान, फरफराय दै कान।

श०– गवन–कहीं जाते समय, स्वान–कुत्ता, फरफराय–फटकारना, कान चलाना।

अ०– कहावत यात्रा संबंधी शकुनापशकुन पर कही गई है। जब यात्रा पर जाते समय कुत्ता कान फटकारे तो वह अपशकुन समझा जाता है। ऐसे समय में यात्रा स्थगित कर देनी चाहिए।

गरीब के हानि किहा अपजस कै टीका लिहा।

अ०– किसी ग़रीब आदमी को सताना अत्यन्त ही हानिकारक है। कहा है कि किसी ग़रीब का नुकसान करने पर अपयश ही मिलता है। रहीम कवि के शब्दों में–

दीन सबहिं को लखत हैं दीनहिं लखै न कोय।
जौ 'रहीम' दीनहिं लखै दीन बंधु सम होय।।

महात्मा 'कबीरदास' के शब्दों में–

दुर्बल को न सताइये जाकी मोटी हाय।
मुई खाल की सांस सों सार भसम होइ जाय।।

अतः दीन–दुर्बल को सताने पर वही गति होती है जैसे चमड़े की धौकनी से लोहा गलकर पानी हो जाता है जब कि चमड़ा मरे हुए जानवर का होता है। इसीलिये सदैव ध्यान रखना चाहिए कि ग़रीबों की हाय कभी नहीं लेनी चाहिए।

गये रोजा छुड़ाने, नमाज़ गले पड़ी।

श०– रोज़ा–एक माह का उपवास।

अ०– रोज़ा छुड़ाने गये तो नमाज़ गले पड़ी। यानी एक काम से फुर्सत लेने गये तो दूसरा काम साथ लग गया।

गरीब के तीन नाम,
झूठा, पाजी, बेईमान।

कहावत ग़रीबों के ऊपर उदधृत की गई है जिसका कोई विश्वास नहीं करता है। जो सच्चाई पर भी रहे, तो लोग सच्चा रहने नहीं देते है।

अ०– ग़रीबों के तीन नाम रखे गये है झूठा, पाजी और बेईमान क्योंकि वह अपनी ग़रीबी की मजबूरी से सदैव दबा रहता है। सही भी है तो कुछ बोल नहीं सकता है। अन्याय, अत्याचार, अपने साथ हुए दुर्व्यवहारों को कह नहीं सकता है। किसी बड़े आदमी के खिलाफ आवाज नहीं उठा सकता है।

मुद्दई सुस्त गवाह चुस्त।

कहावत उस व्यक्ति के प्रति कही गई है जो अपने ही मामलों में ढीला–ढीला लापरवाह है मगर उसके मददगार उससे कहीं ज्यादा ही तेज़–तर्रार हैं।

अ०– जिसका मुकद्मा चल रहा है, जो मुद्दई है, वह ढीलाढाला है और गवाही देने वाला इतना तेज़ है कि उससे भी पहले कचहरी में उपस्थित है।

गरीब क रोज़ा पड़ा तौ दिन बड़ा होइगा।

तात्पर्य यह कि ग़रीब बेचारे के पास खाने को है है ही क्या? वह किसी न किसी तरह से अपना गुजर, जो कुछ कर पाता है, उसी, से करता है। वह रोजे में क्या खाय और क्या न खाय? जहाँ पेट भरने को कुछ नहीं वहाँ पूड़ी, मालपुआ, हलुवा, दूध, घी कहाँ से आये कि दिनभर के उपवास के बाद कुछ तो पेट में जाये। कहावत उसी पर है।

अ०– रोज़े का दिन तो सभी के लिए एक समान बड़ा है मगर किसी ने रोज़ा माल से खोला तो घी, दूध से पेट भारी रहा। गरीब ने रूखी रोटी से खोला तो उससे क्या पेट भरना? इसीलिये दिन और भी भारी पड़ता है।

गरीब क दइव दूसर, अमीर क दइव दूसर होत।

अ०– कहावत व्यंग्य में कही गई है कि क्या भगवान भी ग़रीबों के तथा अमीरों के बँटे हुए हैं। ऐसी बात नहीं है मगर जब आदमी न्याय–अन्याय की बात झेलता है तो कहता है कि भगवान भी क्या अमीर और ग़रीब के अलग–अलग हैं कि किसी को तो पूड़ी हलुवा खाने को देते हैं और ग़रीबों को नमक–रोटी भी पेटभर नहीं देते। यह कैसा भगवान है जो अमीरों के साथ दूसरा व ग़रीबों के साथ दूसरा व्यवहार करता है?

गर्ज के सहूर नहीं होत।

अ०– कहावत किसी गर्जमंद को देखकर, उसका

उतावलापन, परेशानी, काम को पूरा करने की अर्ज, विनती, खुशामद को समझकर कही गई है कि जो अपना काम कराने की धुन में होते हैं वे कभी–कभी बेअक्ल का काम तक कर डालते हैं। जब गर्ज का मारा गधे को बाप या मामा बना लेता है तो इससे बढ़कर बेवकूफी और क्या हो सकती है?

गट्टा अस आँखि निकरि आई।

अ०– कहावत अपने या दूसरे दोनों के ऊपर स्पष्ट की गई है। कठिन परिस्थितियों के समय ही कहावत कही जाती है। जब ख़र्च अधिक हो या लड़ाई झगड़ा किसी से हो या दुर्बल शरीर हो गया हो तो कहते हैं कि आँख बाहर आ गई जैसे गट्टा। हिम्मत छूट गई, किसी परिस्थितिवश आदमी जब हताश हो जाता है तो अपनी या दूसरे की हालत को कहता है।

गई बहुत रह गई थोड़ी।

कहावत निराशावादी है। आमतौर पर उम्र के प्रति मनुष्य कहा करता है कि अब तो थोड़े समय की बात और रह गई है। मगर कभी–कभी आशावादी भी हो जाती है जैसे कोई कठिन कार्य का समय काफ़ी बीत चुका हो और थोड़ा ही बाकी रह गया हो। अतः कहावत है–

यानी– बहुत समय बीत गया है अब थोड़ा ही शेष रह गया है। चिन्ता किस बात की है? या सारी जिन्दगी तो कट गई अब थोड़ी ही और बाकी है।

गदोरी पर बार जामा।

अ०– हथेली पर बाल नहीं होते हैं। अतः कहावत भी तभी कही जाती है, जब कोई असंभव कार्य या कोई निराशाजनक काम हो जाय। अनहोनी के प्रति कही गई है कि गदोरी पर बाल जम गया। जो काम असंभव हो गया था वह अब संभव हो गया।

गर्ज बावली होत।

अ०– अपना काम सिद्ध करने में आदमी पगला जाता है। फिर वह गर्ज के आगे कुछ सोचता नहीं है।

गटई मां अंटका है।

अ०– जब कोई बात या कोई काम, किसी घटना की स्थिति इतनी गंभीर हो कि उससे चैन न मिल पाये, काम को बिना पूरा किये मन में शांति न आये तो कहते हैं कि काम ऐसा कि न गले से नीचे उतरता है, न थूकते बनता है, गले में अंटका है।

गली–गली कै घूर फँकाय दिहें।

जब किसी के द्वारा कोई भारी कष्ट हो, बुरे दिन आ जायें, कोई किसी के पीछे हाथ धोकर पड़ जाये कि उसका अनिष्ट ही करता रहे, तो उसके द्वारा जो कष्ट मिलता है, उसे कहते हैं कि ऐसा पीछे पड़ गये कि किसी काम का न छोड़ा, गली–गली में भटकना पड़ गया। राह–राह की ठोकरें झेलनीं पड़ीं।

गटई कै जुआठ होइगे।

श०– जुआठ–जो बैलों को खेत जोतते समय गले में पहनाया जाता है

अ०– कोई आदमी जब किसी के पीछे पड़ा रहे, सदैव साधिकार खाये–पिये, उस व्यक्ति का जीना, रहना दुश्वार कर दे तो उसकी तुलना जुआठ से की जाती है जो जानवरों को रोकने के लिये गले में पहनाई जाती है। उसी की भांति ये सज्जन भी गले में पड़े हैं।

गले पड़ी डफली, बजायेन बाटै सिद्ध।

अ०– जो वस्तु गले पड़ गई है, जिसकी जिम्मेदारी अपने ऊपर आ गई है उसका निर्वाह तो करना ही पड़ेगा। कहा है कि गले पड़ी डफली तो बजाने पर ही सफल हो सकती है।

गरीब मां सराफत कम नहीं होत,
टूटे हीरा की कीमत कम नहीं होत।

अ०– कहते है कि ग़रीब आदमी में भलमनसाहत की कमी नहीं होती। वह भी भला होता है जैसे हीरा यदि टूट गया है तो उसकी किरच की कीमत हीरे के ही हिसाब से लगेगी, वह मिट्टी के भाव नहीं बिकेगा। उसी भांति ग़रीब आदमी के पास भी उतनी इज्ज़त, भलमनसाहत, ईमानदारी होती है जितनी कि अमीर के पास होती है। ये सब बातें किसी के बाँटे की नहीं होती है।

गरम लोहा, गरम लोहे से जुड़ता है।

कहावत अजरबैजान की है जिसका तात्पर्य है

कि जैसे को तैसा मिलना बहुत आवश्यक हो जाता है।

अ०– गरम लोहा ही गरम लोहे से जुड़ पाता है। किसी ने कहा है–

जैसे को तैसा मिलै, मिलै नीच से नीच।
पानी से पानी मिलै, मिलै कीच से कीच।।

अतः गरम लोहे को जलता तप्त लोहा ही जोड़ सकता है।

गड़रिये से ज्यादा हों तो भेड़ ज़रूर
भेड़ों के मुंह में पहुंच जाती हैं।

जब कोई कार्य अपनी सामर्थ्य से ज्यादा हो जाता है, सीमा ज्यादा बढ़ जाती है तो उसको संभाल पाना बड़ा मुश्किल हो जाता है। उसी पर कहा गया है।

अ०– जब भेड़ें हांकनेवाले गड़रिये के पास ज्यादा भेड़ें होंगी तो निश्चित है कि वह सँभाल नहीं पायेगा। कहीं न कहीं गड़बड़ी अवश्य होगी। फलतः एक भेड़ दूसरे को या तो खा जायेगी या घायल कर देगी। इसलिये अपनी शक्ति या सामर्थ्य से ज्यादा ज़िम्मेदारी नहीं लेनी चाहिए।

गइय्या मोरी मइय्या,
गोपाल मोरा भइय्या।

कहावत गाय के ऊपर चरितार्थ की गई है।

अ०– गाय मेरी माता है और गो पालने वाला (गोपाल) मेरा भाई है।

गढ़ तो चित्तौर गढ़, अउर सब गढ़इया हैं,
रानी में पद्मावती अउर सब रनइया हैं।

चित्तौड़गढ़ हमारे देश में एक ऐतिहासिक स्थल है जो राजस्थान में है। यह गढ़ महाराणा प्रताप का था। रानी पद्मावती भी ऐतिहासिक नारी थी जिसका वर्णन अवधी के महाकवि मलिक मुहम्मद जायसी के ग्रंथ– "पद्मावत" में है। वह अत्यधिक खूबसूरत थी। अलाउद्दीन खिलजी ने पाने के लिए राजा रत्नसेन के ऊपर चढ़ाई कर दी। कहावत उन्हीं पर उद्धृत की गई है।

अ०– गढ़ में तो चित्तौरगढ़ के तुलना में कहीं का किला नहीं है और रानियों की खूबसूरती में पद्मावती की तुलना किसी रानी से नहीं हो सकती है।

गरभ खुला तो बहू क सोन से तउला।

श०– गरभखुला–बच्चा होना, सोन–सोना।

बहू–बेटियों को यदि संतान होती है तो अपने वंश, कुल में एक नई पीढ़ी का जन्म होता है। वंश–परंपरा को चलाने वाली बहू ही होती है जो खानदान को आगे बढ़ाती है। कहावत उसी पर कही गई है।

अ०– बहू को बच्चा हुआ तो उसे इतना सम्मान दो कि सोने से तौलो। यानी उसकी बहुत ज्यादा इज्ज़त करनी चाहिए।

गये कटक रहे अंटक।

जब कोई आदमी किसी को कहीं भेजता है काम से और वह आने में देर लगाता है तो कहावत कही जाती है।

अ०– गये जहाँ वहीं के वहीं रह गये। वापस ही न आये।

गदहा क खावा खेत, न यहि लोक क परलोक क।

अ०– गधे को खिलाने से कोई पुण्य नहीं मिलता।

गड़ही के पानी मुंह धोय आओ।

अ०– किसी को शर्मिन्दा करना हो तो कहावत कहते हैं।

गदहा गर्मी मां मोटात।

इसलिये कि जब गधे घास चरने के बाद पीछे की ओर देखते हैं तो लगता है कि खेत खाली है, इतना सब मैं चर गया। कहावत बेवकूफी पर कही गई है।

गदहा पियै पानी घंघोर के।

गधा–गधा होता है वह पानी को गंदा करके ही पीता है।

गदहा जौ हर मं चलतै तो बैल के बेसाहतै।

अ०– स्पष्ट है।

गवा गांव जहं ठाकुर हंसा, गवा रूख जंह बकुला बसा।
गवा ताल जहँ उपजी काई, गवा कुआं जहं भई अथाई।।

श०– हँसी–हँसी मज़ाक करने वाला, रूख–पेड़, अथाई–जिस कुंये की तली बैठ जाय।

अ०— जिस गाँव का मुखिया, ज़मींदार हँसोड़ हो, वह नष्ट हो जाता है। जिस पेड़ पर बगुले बैठें, जिस ताल में काई जमी हो और जिस कुयें का तल धंस गया हो वे नष्ट हो जाते हैं।

" गाँ "

गाँजा पिये राजा, तमाकू पिये चोर,
सूरती खाय चूतिया, जे थूके चारिव ओर।

लोकोक्ति नशे की दुनिया से सम्बन्धित है। कौन नशा करने वाला क्या है?

अ०— जो गाँजा पीता है, वह राजा तबीयत का इंसान है। जो तम्बाकू खाता है वह चोर है और सुरती लोग खाते हैं और जो चारों ओर थूक—थूक कर गंदा करते हैं, वे मूर्ख हैं।

गाँव बसा नहीं कि, उचक्के पहुँच गये।

जहाँ मनुष्य मंडली रहती है उन्हीं में से कुछ चोर, उचक्के, चालबाज, धोखेबाज भी अपने आप पैदा हो जाते हैं।

अ०— कहीं गाँव बसना शुरू हुआ नहीं कि चोर, बेईमान, छली, कपटी सभी पहुंच जाते हैं। इसलिए कोई ऐसा स्थान नहीं बचा है जहाँ कि खुराफाती लोग न पहुंच जायं। गोस्वामी जी ने ठीक ही कहा है—

"जे बिनु काज दाहिने बायें"।

ये लोग बिना काम के चारों ओर अपना महत्व बनाने के चक्कर में रहते हैं।

गाँव मां ऊँट बदनाम।

जब किसी एक आदमी को बारबार बदनामी दी जाती है या उसकी चर्चा बुरे लोगों में की जाने लगती है तो कहावत सामने आती है कि पूरे गाँव भर में एक बेचारा ऊँट ही बदनाम होने को मिला है।

गाँवा छोड़े, बांवा दाहिन।

श०— गाँवा— गाँव, बांवा, दाहिन— बायें, दहिने, अगल—बगल।

कहावत गाँवों के आपसी मतभेद, लड़ाई, झगड़े, प्रवंचना, तू—तू, मैं—मैं, तमाम तरह की बाधाओं, आपसी पट्टेदारी आदि विषयों को लेकर कही गई है क्योंकि गाँवों में आये दिन रोज़ ही झगड़े—झंझट होते रहते हैं, कभी किसी से तो कभी किसी से। इसके पीछे मार—पीट, लाठी—डंडा, कत्ल, फौजदारी तक की नौबत भी आ जाती है।

अ०— जब गाँव में इस प्रकार का विघटन हो तो गाँव का दाहिन बांया छोड़ दो। यानी अपने काम से काम रखो, अगल—बगल किसी से भी किसी प्रकार का संपर्क या संबध न रखो। जब किसी के यहाँ जाओगे ही नहीं, किसी से कोई बात ही न करोगे, न किसी की कोई बात सुनोगे, तो उसमें पूछा—ताछी, कहा—सुनी होगी ही क्यों? अपने मतलब से मतबल रखो।

गाँव का धतूरौ काम आवत।

श०— धतूरा—एक नशीला पौधा। अपने घर गाँव के पास की ख़राब वस्तु भी कभी न कभी काम आती है, प्रयोजन पर कहावत लागू होती है।

अ०— कहावत तब कही जाती है जब किसी छोटी वस्तु के न मिल पाने से परेशानी हो या बहुत मामूली वस्तु दर—दर ढूँढ़ना पड़े, तभी अपने निकट की चीज़ों का मूल्यांकन होता है। पास की अनावश्यक वस्तु भी कभी न कभी काम अवश्य आती है।

गाँजा पिये से ज्ञान घटे, और घटे तन अंदर का।
खों खों करत जान जात, मुँह देखे जइसे बंदर का।।

अ०— गँजेड़ियों की गाँजा पीने से बुद्धि कम हो जाती है तथा अंदर से शरीर खोखला हो जाता है। रात दिन खांसी आती है और शक्ल इतनी ख़राब हो जाती है जैसे बंदर की हो। इसलिए नशीली वस्तुओं का खाना पीना छोड़ देना चाहिए।

गाँव तोहार, नांव हमार।

अ०— झूठी प्रशंसा की इच्छा रखना। वाहवाही में चूर रहना। भले ही घर—गाँव तुम्हारा हो किन्तु वहाँ नाम मेरा है।

गांठ दाम नाहीं पतुरिया देख रोवाई आवै

श०— जब किसी शौक या खर्च करने की जगह पैसा नहीं होता तो कहावत चरितार्थ की जाती है।

अ०— पास में पैसा नहीं है और रंडी के कोठे पर जाने की इच्छा है तो भला कैसे इच्छा पूरी हो?

" गा "

गाय पाल, गोपाल न कहवउब्या।

किसी के नाम पर नाम या किसी के यश से यश नहीं मिलता है। नाम या कीर्ति सदैव अपने कर्मों द्वारा प्राप्त की जाती है। उसी पर कहा गया है।

अ०— गाय पालकर गोपाल यानी कृष्ण बनने का अभिमान छोड़ दो। बिना कर्म किये यश पाना असंभव है।

गाय न बाछी नींद आवै आछी।

श०— बाछी—बछिया, आछी—अच्छी।

अ०— जब किसी को निश्चिन्त देखा जाता है तो कहा जाता है कि क्या चिंता है न गाय है न बछिया, फिकर किस बात की है? आराम से सोना ही सोना है।

गाय मरे खर होय तो काहे लागे?

श०— खर—घास। लागे = क्या फायदा।

अ०— आवश्यकता पर आवश्यक वस्तु का न मिलना और बाद में वही वस्तु मिलने से क्या लाभ? जब गाय मर ही गई तो घास होने से फायदा? गोस्वामी जी के शब्दों में—

का बरखा जब कृषी सुखाने,
समय चूंकि पुनि का पछिताने।

'गादर बैल घुमाय के जोतै।।

कहावत आलसी व कामचोर व्यक्ति को देखकर कही गई है।

अ०— गादर —जो बैल बार—बार बैठ जाता हो उसको आँव—बाँव दे कर घुमा—फिराकर हल में चलाना चाहिए, उसी प्रकार से कामचोर आदमी से भी बराबर उलट—पलट कर काम करवाते रहना चाहिए।

गाढ़ टहलिया तीन, कुटना, पिसना, औ गउ घिसना।

अ०— लोगों ने दुनिया में तीन काम कठिन बताया है—

१. अनाज का कूटना २. अनाज को जाँत में पीसना ३. चूल्हे के जले बर्तन माँजना। कहावत इसी पर चरितार्थ की गई है।

गाजर, गंजी, मूरी,
तीनिउ बोवै दूरी।

अ०— कहा गया है कि, गाजर, गंजी, मूली इन तीनों वस्तुओं को दूर—दूर पर बोना चाहिए। ऐसा घाघ कवि के शब्दों में बोने का तरीका है।

गाल कट जाय पर चावल न उगिलै।

कहावत लालची व कंजूस व्यक्तियों पर लागू की गई है।

चाहे जितना भी नुकसान हो जाय मगर लालच व कंजूसी के मारे वस्तु को बचाये रखे। गाल कट गया, मगर चावल के लालच में चावल मुंह में ही रखा रह गया। वह न उगला गया भले ही गाल में दर्द हो, घाव हो गया हो। चाहे जितना भी कष्ट हो।

गाडर पाली ऊन को, खाने लगी कपास।

श०— गाडर—भेड़। कपास—जिस पौधे से रूई निकलती है।

भेड़ें इसलिए पाली गई कि उनसे ऊन मिलेगा तो लाभ होगा मगर लाभ के बजाय जब हानि होने लगी तो कहा है।

अ०— भेड़ें पाली थी ऊन होगा मगर वे ऐसी कि रूई का पेड़ ही खा जाने लगीं। बजाय फायदे के नुकसान भुगतना पड़ गया। इसी प्रकार से जब किसी को रखने से भलाई के बजाय बुराई आने लगती है तो कहावत स्मरण आ जाती है।

गाय मार के, जूता दान मं देय।

कोई महापाप करने के बाद, कहे कि एक छोटे से दान के बाद प्रायश्चित हो जाय तो वह महाअसंभव है।

अ०— गोवध करके जूते का दान देना, यह कहाँ का धर्म है?

गाढ़े पसीना कै कमाई है।

किसी दूसरे के द्वारा अपनी कमाई का पैसा गलाना या दूसरे की हराम की कमाई समझना या पैसे का आये दिन बराबर दुरुपयोग होने पर कहावत कही जाती है।

अ०— बड़े कठिन परिश्रम की कमाई का पैसा होना। ऐसा परिश्रम जिसको करने में पसीना चूने लग जाय, उसी को गाढ़े पसीने की कमाई कहते हैं।

गाये–गाये बिआह होत।

अ०— जब किसी काम में विलम्ब होने लगता है तो कहावत बनी है कि कहते–कहते काम होता है। विवाह का गाना गाते–गाते, धीरे–धीरे घर के लोगों का दिमाग़ व वातावरण वैसा ही बनने लगता है।

गाय दुहे, बिन छाने लावै,
गरमा, गरम तुरंत चढ़ावै।
बाढ़ै बल अउर बुद्धि भाई,
घाघ कहे सच्ची बतलाई।

कवि घाघ ने दूध किस प्रकार से दुहा व पिया जाय वह युक्ति कहावत के द्वारा बतायी है।

श०— छाने–छानकर।

अ०— गाय को दुहकर उसी समय कच्चादूध गरम–गरम बिना छाने पी ले तो उससे बल व बुद्धि बढ़ती है।

गारी, तौ आ बयारी, अरै चट्ठा आ सोहारी।

श०— चट्ठा–तमाचा, बयारी–हवा।

अ०— कहावत उस समय कही जाती है जब कोई गाली दे रहा हो और सुननेवाले पर उस गाली का कोई असर न हो। उसके लिये जैसे हवा बह रही हो। यानी गाली तो हवा की तरह बह रही है। क्या परवाह है? बहती जाय, कोई असर नहीं पड़ता। यदि दो एक थप्पड़ लगते हैं तो समझो पूरी खा रहे हैं। या तो कोई एकदम बेहया हो या मूर्ख या फिर इतना सज्जन कि "चंदन विष व्यापै नहीं, लपटे रहत भुजंग।"

"गाय भइस कै मान नही है, जेतना मान बकरिया कै।
माई बाप कै मान नहीं है जेतना मान मेहरिया कै।।"

अ०— कहावत आज के युग को समेटते हुए स्पष्ट की गई है कि आज के युग में महत्वपूर्ण वस्तु की कोई कीमत नहीं रह गई है। बकरी के आगे गाय भैंस का मान नहीं है। वैसे ही बीबी के आगे माता–पिता को कोई इज्ज़त ही लोग नहीं देते हैं।

गाड़ी की पहिया, नेता की बात रोज घूमती रहती है।

अ०— गाड़ी के पहिये की तरह नेता की बात रोज ही अस्थिर रहती है।

गाये बजाये, कउड़िव न पाये।

अ०— जब किसी को किसी मांगलिक पर्व के समय गाने–बजाने के आयोजन के बाद प्रसन्नतापूर्वक कुछ इनाम या दक्षिणा न दी गई तो उसे हार्दिक कष्ट होता है। ऐसी दशा में कहा जाता है कि काम सब किया गाया–बजाया, नाचा–कूदा मगर ऐसे कंजूस आदमी हैं कि एक कौड़ी भी न दिये कि शुभ काम की बधाई गवाई ही दे देते।

गाछ मां कटहर तो ओंठ मं तेल।

किसी काम की तैयारी पहले से करने पर कहावत कही जाती है।

अ०— कटहल अभी पेड़ पर है किन्तु वह ओठों से चिपके नहीं इसलिए पहले ही तेल लगा रखे हैं।

गाड़ी देख लउड़ी क पाव पिरान।

श०— लउड़ी–दासी।

किसी का आराम देखकर नौकर भी आराम चाहता है।

अ०— जब मालकिन के लिये गाड़ी आई चढ़कर कहीं जाने के लिये आई तो दासी के भी पैर में दर्द शुरू हो गया। उसने सोचा कि मैं भी गाड़ी से चलूं तो अच्छा होता।

गाय क दूध, सो माय क दूध जानो।

अ०— गाय का दूध इतना हल्का होता है कि वह माँ के दूध के बराबर होता है।

गाय क लेरुवा मरिगा तो खलड़ा देख पन्हाय।

श०— लेरुवा–बच्चा, खलड़ा–बच्चे की मरी खाल में भूसा भर के उसे खड़ा करके गाय को या भैंस को दुहते हैं। पन्हाय–दूध दुहने के लायक होना।

अ०— मां या किसी प्रियजन से इतना मोह होता है कि उसकी आकृति, तस्वीर, स्वभाव को देखकर प्रेम उत्पन्न हो जाता है। गाय खलड़ी में बच्चे को देखकर

समझती है कि ज़िंदा है तो वह खड़ी होकर दूध दुहने देती है।

गालवाला जीतै, मालवाला हारै।

अ०– बकवासी, लड़ने वाला, अपनी गलत बात को भी सही साबित करने वाला आदमी से, कितना भी पैसे वाला व्यक्ति हो, उसे हार माननी ही पड़ती है।

" गि "

गिरे पापड़ा हंसे गोफला का हस्या?
हमार–तोहार. एक्कै यात्रा।

श०– पापड़ा–पपड़ा या, सूखा पुराना पत्ता, गोफला–कोपलें जो पत्तियां पतझड़ के बाद पेड़ों में अंकुर लेकर निकलती है, यात्रा–सफ़र, रास्ता।

कहावत में दो पीढ़ियों का अंतराल दिखाया गया है। एक न एक दिन सभी का दुनिया से जाना तथा नई पीढ़ी का आना प्राकृतिक प्रक्रिया है। ऐसा ही काल चक्र बराबर घूमता रहता है जो जड़ चेतन सबके लिए लागू होता है। पत्तों के माध्यम से मनुष्य या सभी चेतन–अवचेतन के प्रति कहा गया है।

अ०– वृक्ष के पुराने पपड़ाये, झंखड़ पत्ते जब पतझड़ के समय झड़ने लगे तो पेड़ की नई पत्तियां जो गोफलें बनकर पेड़ों में आईं, वे सुंदर हरियायी पत्तियाँ उन रूखे, झड़े पत्तों को देखकर हंस पड़ीं। पत्ते गोफलों की व्यंग्यात्मक हँसी बराबर सुनते रहे। अंत में बोल पड़े– अरी गोफलें! क्या हँस रही हो? एक न एक दिन तुम्हारी भी यही दशा आयेगी, जब तुम झड़ोगी और तुम्हारी ही तरह की नई दूसरी गोफलें तुम्हारी उस बदशक्ल सूरत पर हँसेंगी। आज नहीं अगले साल, तुम्हारी भी यही दशा होगी, जो आज हमारी है। हँसों नहीं, हमारी–तुम्हारी एक ही जीवन यात्रा है। ऐसा सोच कर कभी किसी को हँसना नहीं चाहिए। संसार का यही नियम है।

गिलहरी क कोइने मीठ।

अ०– जब किसी आदमी को कोई एकदम मामूली वस्तु ही पसंद आ जाती है, तो कहते हैं कि गिलहरी को अच्छी–भली चीज अंच्छी न लगी। उसको महुआ का कोयना ही पंसद आ गया।

गिरगिट कै दौड़ कड़उरे लै।

अ०– जो सीमित वातावरण में रहता हो, जो स्वयं अधिक जानकार न हो, उसका दायरा भी बहुत सीमित व जाना समझा होता है। कहा गया है कि गिरगिट ज्यादा दूर जाय भी तो कहाँ जायेगा? उसकी सीमा है उपले, कंडों के बने ढ़ेर तक ही। इसलिए गिरगिट कड़उर तक ही जायेगा उसके आगे उसकी सीमा ही नहीं है।

गियानी जन क संग, छन मां करै मोह भंग।

अ०– ज्ञानी महात्माओं से ज्ञानवर्धन करने पर जरा सी देर में ही मोह–माया का जाल–बंधन समाप्त होने लगता है। बुद्धिमान को यदि बुद्धिमान की संगत पड़ जाय तो वह शीघ्र ही गुणों को ग्रहण कर लेता है।

गिन के पायो, संभार के खायो।

ग़रीब आदमी बेचारा बहुत सीमित जीवन बिताता है। उसके घर में रोटियाँ भी बनती हैं तो इस हिसाब से कि सभी लोग बराबर रोटी पा जायं, कम बेस न हो वर्ना झगड़े की आशंका होती है। उन रोटियों से किसी का पेट भरे, न भरे, कोई मतलब नहीं है इससे। ऐसे ही लोगों के भविष्य की चिंता करके कवि रहीम ने लिखा है–

ज्यों नाचत कठपूतरी, करम नचावत गात,
अपने हाथ 'रहीम' त्यों, नहीं आपुने हात।

अथवा–

खर्च बढ़ो, रोजी घटी, नृपति निठुर मन कीन,
रहिमन वे नर का करैं, ज्यों थोरे जल मीन।।

कहावत भी इसी आशय पर निर्भर है।

अ०– ग़रीब किसान, मज़दूर के घर की स्त्री कहती है कि देखो रोटियाँ सब घर वालों के हिसाब से गिनकर सेंकी है। सँभाल कर हिसाब से खाना।

गिरगिट अस रंग बदलते।

गिरगिटान के शरीर का रंग एक सा नहीं होता है, वह हर मिनट पर रंग बदलता रहता है। उसी प्रकार से जब किसी मनुष्य का कोई ठिकाना नहीं

रहता है उसके काम का, उसकी बात का, उसके स्वभाव का, तो कहावत स्पष्ट की जाती है।

अ०— फलां आदमी भी गिरगिटान की तरह अपना रंग बदलता रहता है।

गिरह मं कउड़ी नाहीं करै चलें बजार कै सैर।

अ०— कहावत व्यंग्य के लिये कही गई है। पास में एक कानी कौड़ी भी नहीं है लेकिन चले हैं बाजार घूमने को। झूठा रौब ग़ालिब करना या अपनी इज्ज़त को संभाले रहना, मर्यादा की रक्षा करना। दिखावा करके भ्रम में लोगों को रखे रहना।

" गी "

गीत कंठ का मीत अंट का।

श०— कंठ—गला, अंट—पास में पैसा होना।

कहावत उसं समय कही जाती है जब गीत या मीत का मसला छिड़ता है।

अ०— कहा है कि जिसका गला सुरीला, मीठा होता है उसका गीत बढ़िया होता है। अतः गीत, गउनई कंठ से ही अच्छी लगती है। उसी तरह कहा है कि मित्र तभी तक आदमी के पास होता है जब तक उसकी अंटी में पैसा रहता है। कवि रहीम के शब्दों में—

जब लगि बित्त न आपने, तब लगि मित्र न कोय,
रहिमन अम्बुज, अम्बु बिन, रबि ताकर रिपु होय।।

अतः जब जेब खाली होती है तो मित्र भी शत्रु बन जाते हैं।

गीत गउनई गै बिसरि,
जब बिटिया भै तीसरि।

घर परिवार में नवजात शिशु के पैदा होने की कितनी प्रतीक्षा व उमंग रहती है मगर पुत्र जन्म की जिसमें लोग गाने—बजाने का बड़ा से बड़ा आयोजन करने की कामनायें रखते हैं। किंतु यदि कन्या का जन्म हो गया तो लोगों के ऊपर घड़ों पानी पड़ जाता है। उपरोक्त कहावत भी कन्या के जन्म पर कही गई है जब कि एक दो नहीं तीसरी बार भी कन्या का जन्म हुआ।

अ०— गाना बजाना सब कुछ भूल गया जब तीसरी कन्या का जन्म हो गया। इस पर भी एक लोकोक्ति स्मरण हो आई है—

बिटिया बिआनी डेहरि चढ़ि बइठी
उतरि गई सबके मन से
बेटवा बिआनी पलंग चढ़ि बइठी
हुकुम डोलावै सारे घर का।

यानी बेटी के जन्म से सब के मन से गिरना तथा घर के बाहर की चौखट पर बैठना और बेटा होने पर सभी से इतना इज्ज़त पाना कि सारे घर वालों के ऊपर हुक्म चलाना। यह सब सामाजिक कुरीतियों का ही परिणाम है।

गीदड़ कै मउत आय तो गाँव की ओर भागा।

कहा यही जाता है कि यदि गीदड़ के मरने का समय आता है तो वह जंगल छोड़ कर आबादी की तरफ (गाँव की ओर) भागता है। कहावत उसी पर कही गई है। उसी प्रकार से जब किसी मनुष्य का दुर्भाग्य आ जाता है तो वह न जाने कितने गलत काम कर डालता है। ग़लत रास्तों पर चलने लगता है।

गील लकड़िया न जरै, न बरै, न करै अंजोर।

अ०— गीली अकेली लकड़ी चूल्हे में न जलती है, न सुलगती है, ठीक से जब जलेगी नहीं तो फिर उससे उजाला क्या होगा? आमतौर पर गृहस्थ स्त्रियाँ खाना बनाते समय जब लकड़ी गीली रहती है तो यह कहावत कहती हैं।

गीदी गाय गुलिंदा खाय, बार—बार महुआ तर जाय।

श०— गीदी—परकी हुई, दौड़कर, गुलिंदा—महुए का फल। कोइना।

जब कोई आदमी किसी—खाने पीने की वस्तु को पाने पर परक जाता है तो वह लालच के मारे बार—बार वहीं जाता है। कहावत इसी समय चरितार्थ की जाती है।

अ०— गाय को गुलेंदा इतना पसंद आया कि वह बार—बार महुआ के पेड़ के नीचे ख़ाने के लिये जाती है कि वहीं पहुँचने पर वह सामान खाने को मिलेगा।

गीदड़ गिरा झाड़ मं, कहिस आज यही रहबै।

जब आदमी अपनी किसी बुरी हालत को या

समस्या को छिपाना चाहता है तो वह जिस दशा में होता है उसी को भला बताता है।

अ०– जब गीदड़ झाड़–झंखाड़ में गिर ही पड़ा तो कहा कि आज हम यहीं रहेंगे, यहाँ बड़ा आराम है। विवशता को छिपाना, कष्ट को प्रकट न करना। दूसरे अर्थ में जो जैसा होता है उसे वैसा ही स्थान पसंद आता है।

" गु "

गुरु, गुरुवै रहिगै, चेला सक्कर होइगै।

अ०– गुण देने वाले से गुण पाने वाले का अधिक तीव्र बुद्धि का होना। जब शिक्षक से शिक्षार्थी अधिक अक्लमंद निकलता है तो कहावत चरितार्थ होती है कि गुरु तो जहाँ के तहाँ ही रह गये चेला और भी ज्यादा बुद्धिमान निकला।

गुरु से घाटि मित्र से चोरी,
केउ होय निर्धन केउ होय कोढ़ी।

अ०– कहावत सिद्धान्तवादी है। गुरु से धोखा करने वाले चेला को कभी भी सुख नहीं मिलता है। जो गुरु के साथ छल–कपट का व्यवहार करता है वह या तो ग़रीब होता है या फिर उसके शरीर में कोढ़ जैसी असाध्य बीमारी हो जाती है।

गुन न हिरानों गुन गाहक हिरानो है।

श०– गुन–गुण, बुद्धि, सहूर, गाहक–ग्रहण करने वाला, लेने वाला, सीखने वाला, खरीदने वाला।

अ०– किसी महान विद्वान ने लिखा है कि गुण तो सभी में हैं गुण कभी खोता नहीं है। हां, सीखने वाले भले ही खो जाये।

गुरु द्रोण सा चाहिए, चेला अर्जुन होय।

कहावत गुरु–चेला पर कही गई है। द्रोणाचार्य सा गुरु तो मिल भी सकता है किंतु चेला अवश्य नहीं मिल पायेगा जो अर्जुन सरीखा हो या होना चाहिए। यदि चेला उत्साही, परिश्रमी, गुरु की आज्ञा का पालन करने वाला है तो वह अवश्य ही अपने कार्य में सफल होगा।

अ०– गुरु द्रोणाचार्य सा चाहिए किंतु चेला भी अर्जुन सा ही चाहिए जिसे अपनी शिक्षा में अकाट्य लगन व विश्वास हो।

गुड़ भरी हंसिया न लीलत बनै, न उगिलत बनै।

जब कोई कार्य या इस प्रकार की परिस्थिति सामने आ जाती है जिससे कि साँप छछूंदर की दशा का सामना करना पड़ जाता है तो कहावत कही जाती है।

अ०– एक तरफ हंसिया में गुड़ लगा है, गुड़ खाने का लालच और अगर गुड़ खाया जाता है तो जीभ कट जाती है, अतः स्थिति इतनी गंभीर कि न गुड़ खाते बनता है, न छोड़ते बनता है। यानी किसी कार्य के करने में अजीब असमंजस में पड़ना।

गुड़ क बाप कोल्हू।

अ०– जब कोई कार्य विशेष आ पड़ता है या किसी बड़े व्यक्ति को विशेष महत्व देना होता है तो कहते हैं कि गुड़ से भी बड़ा उसका बाप कोल्हू बैठा है क्योंकि गुड़ तो बिना कोल्हू के रस निकाले नहीं बन सकता है। अतः जो कार्य हो, बड़ों की राय से ही संभव होगा।

गुड़ दिहे मरै तौ जहर काहे क देय?

कहने का मतलब है कि कोई बात, लड़ाई–झगड़ा, या किसी से कोई समस्या सुलझानी है तो ठंडे दिमाग़ से क्यों न सुलझा ली जाय? या किसी के साथ कोई बुराई ही करनी है तो शान्त मन से क्यों न किया जाय कि मामला बिना किसी उद्दंडता के सुलझ जाय। मार पीट करने या असभ्य व्यवहार करने से क्या लाभ? कहा गया है समस्याओं को सुलझाने में चतुरता से कार्य करना चाहिए।

अ०– कोई यदि गुड़ खिलाने से मरता है तो उसे ज़हर क्यों दिया जाये?

गुजरा गवाह, लउटा बराती, केव नाहीं पूछत।

श०– गुजरा–जो समय या काम समाप्त हो चुका हो, बीता हुआ समय, गवाह–जो मुकदमें में गवाही–साखी भरता हो, जो बात परिस्थितियों घटनाओं की सही स्थिति की जानकारी रखते हुए कचेहरी में बयान दे, लउटा–वापस आया, बराती–जो बारात में गया हो।

अ०– कहा गया है कि जो गवाह मुकदमें में गवाही दे चुका हो तथा जो बराती लड़के की बारात से वापस आ गया हो उसकी इज्ज़त फिर इसलिये नहीं होती है कि गर्ज समाप्त हो चुकी होती है। यानी कि गर्ज खत्म हो जाने पर लोग अलगर्जू हो जाते हैं तो फिर उस आदमी को कोई नहीं पूछता है।

गुरु पादै नमोनमः, चेला पादै धत् सारे।

अ०– वही काम यदि बड़ा या सामर्थ्यवान आदमी करे तो अच्छी बात है और वही काम कोई छोटा या दीन–हीन आदमी करे तो उसे गाली मिलती है। कहावतानुसार यदि गुरु के हवा खारिज हुई तो जय नमोनरायन की, अच्छी बात हुई, वही चेला के हवा निकल गई तो कहा गया धत्तेरी की या धत् साले की, यह क्या बुरा काम किया। इतनी बड़ी गलती कर दी?

गुड़ खाय गुलगुला का परहेज़ करे।

श०– गुलगुला–गुड़ व आटे को थोड़ा गीला फेंटकर कड़ाही में बनाते हैं, परहेज़–मनाही, रोक लगना, निषेध।

कहावत किसी ढोंगी, बनावटीपन करने वाले आदमी के ऊपर कही गयी है।

अ०– गुड़ तो खाय और गुड़ से बनी वस्तु का बचाव करे। छूत की भावना रखे।

गुरु बासर धन करखा करई
घावर बारा राजा मरई।

श०–गुरु–वृहस्पतिवार–बासर–दिन। करखा–चन्द्रग्रहण।

अ०– कहावत ज्योतिष विचार पर स्पष्ट की गई है। यदि वृहस्पतिवार को धनराशि पर चंद्रग्रहण लगता है तो राजा की मृत्यु संभव है।

गुनी छाँड़ि मैं गुनी बोलायो
बकुचन छाँड़ि भकोसे लायों।

श०– गुनी–गुणी, छाँड़ि–छोड़कर, बकुचन–मुट्ठी में पकड़ना, अनुनय–विनय करना, हाथ पैर जोड़ना, भकोसे–जल्दी–जल्दी खाना।

अ०– कहावत किसी से असंतुष्ट होने पर कही गई है।

किसी व्यक्ति के कार्य से असंतुष्ट होने पर दूसरे को बुलाया गया कि इस व्यक्ति से काम ठीक तरह से हो सकेगा किंतु उससे भी असंतुष्टि को और ही ज्यादा पाने के बाद कहा है–

एक गुणी को इसलिये छोड़ा कि उसके कार्य से संतोष न था, दूसरे को बुलाया किंतु उसकी हालत उससे भी बदतर निकली। बजाय काम करने के हाथ लगाते उन्होंने तो खाना ही शुरू कर दिया। इसी पर एक कहावत स्मरण हो आई है–

गुरु शिक्षा मानै नहीं, ना काहू से नेह।
कलह करै बिन बातही, मूरख लक्षण एह।।

श०– काहू–किसी से, नेह–प्रेम, स्नेह, लक्षण–प्रमाण, एह–यही।

इस कहावत से मूर्खों के क्या लक्षण हैं, पता लगता है।

अ०– दुनिया में कुछ ऐसे भी लोग होते हैं जो अपने गुरु का कहना नहीं मानते, अपनी ही धुन में रहते हैं तथा न किसी से प्रेम की भावना रखते हैं। वे अकारण ही कलह फैलाते हैं। ऐसे लोगों की गिनती मूर्खों में की जाती है। किसी ने ऐसे ही मूर्ख के प्रति लिखा है–

बन में ही रहिबो भलो, बन पशुओं के साथ।
मूरख के संग स्वर्ग में अच्छा नहीं निवास।।

अतः मूर्ख न तो किसी भले आदमी की बात मानता है, न किसी के प्रति अपनी शुभकामनायें ही रखता है।

गुहे के किरवा क गुहे नीक लागत।

अ०– जो जहाँ जन्म पाता है उसे वही स्थल अच्छा लगता है। मैले गंदे पाखाने में जन्मा कीटाणु मैले में ही रहना चाहेगा, चाहे उसको कितनी भी सुविधा दी जाय। एक कहावत है– "नीम के किरवा क नीमे मिठात" जब कि नीम कड़ुई होती है। मगर जन्म का असर होता है। कहावत ऐसे किसी व्यक्ति पर कही गई है जो खराब वातावरण में जन्मा हो, उसके साथ कितनी भी भलाई की जाय किंतु वह अपने उसी वातावरण में रहने पर सुखी रहता है क्योंकि वह जन्म से ही कष्टों को सहने का आदी हो जाता है।

गुड़ न देय तो गुड़ की सी बात करे।

अ०– कहावत का मतलब है कि कोई किसी को कुछ दे भले ही न, क्या दो मीठी बातें करने से भी गया। कम से कम बात तो ठीक ढंग से करे।

गुहे मां ढीला फेंके छिट्टा अपनेन ऊपर परी।

जब किसी व्यक्ति को अनायास ही कलंक लगे या उसकी बदनामी होने लगती है तो कहा जाता है कि यदि बुरे की संगत में रहोगे तो अवश्य ही उसका असर पड़ेगा। जैसा कि 'बृन्द' कवि ने लिखा है–

कुछ कहि नीच न छेड़िये, भलो न वाको संग।
पत्थर डाले कीच में, उछरि बिगारे अंग।।

इसी तरह की कहावत भी है यानी यदि टट्टी में ढ़ीला फेंकोगे तो उसमें का निकला छिट्टा अपने ही ऊपर पड़ेगा।

गुन सिखे आप क, न माई क न बाप क।

अ०– कहावत सीख पर कही गई है। किसी गुण को सीखना अपने लिए ही कारगर होता है। सीखा हुआ गुण अपने काम आता है। उससे माता–पिता को चाहे कम ही लाभ हो किंतु कला सीखना भविष्य की भलाई व स्वयं की सफलता के लिए आवश्यक है। गुणवान की इज्ज़त देश–विदेश हर स्थानों में होती है। धनवानों का सम्मान मात्र परिचितों में ही या अपने सीमित दायरे में ही होता है। इसलिये गुण सीखना मनुष्य का प्रथम धर्म हो जाता है। किसी विद्वान ने स्पष्ट किया है–

जहाँ रहै गुनवन्त नर, ताकी शोभा होत।
जहाँ धरे दीपक तहाँ, निहचै करत उदोत।।

अतः गुणी मानव किसी दीपक या सूर्य से कम प्रकाशमान नहीं होता है।

गुदगुदावै ओतनै, जेतनी हँसी आवै।

अ०– कहावत एक सीख के तौर पर कही गई है। किसी व्यक्ति के द्वारा कोई अत्यन्त पीड़ित होकर कहता है कि उतनी ही गुदगुदी लगानी चाहिए जितनी सहन हो सके। गुदगुदाने से किसी को हँसी के बजाय कष्ट हो जाय तो उससे क्या फायदा? उसी तरह से किसी को उतना ही प्रताड़ित करो, उतना ही डाट–मार लगाओ जितना कि बरदाश्त कर सके। सभी कार्य सीमा के अंदर अच्छे होते हैं।

अंधे अंधा ठेलिया, दोऊ कूप पड़न्त।

जब दो व्यक्ति एक ही जैसे लुटिया डुबोने वाले होते हैं तो कहावत चरितार्थ होती है।

अ०– गुरु व चेला के साथ एक ही जैसी समस्या है जैसा गुरु वैसा चेला। गुरु अंधा है तो चेला भी अंधा है। अतः वे एक दूसरे की क्या देखभाल कर सकते हैं? यही समस्या यहाँ पर है। दोनों अंधे एक दूसरे को धक्का देते हैं तो दोनों ही कूएं में गिरते हैं। अतः जब दो या दो से अधिक लोगों की एक ही जैसी समस्या हो तो एक दूसरे की मदद नहीं कर सकते।

गुड़ कै हाल कूँड़ा जानै।

कहावत उन लोगों के ऊपर चरितार्थ की गई है जिनको एक दूसरे से पाला पड़ने पर एक दूसरे के विषय में पूरी–पूरी जानकारी रहती है।

अ०– कहा गया है कि गुड़ की हालत तो कूंड़ा जिसमें गांवों में गुड़ रखा रहता है, वही जानता है कि गुड़ कैसा है? अच्छा है या लिटाया है, अधिक मीठा है कि कम मीठा है। लिटाये गुड़ से कूंड़ा भी खराब हो जाता है। वही उसकी गतिविधि बता सकता है।

गुन एकांत मां बाढ़त,
व्यवहार संसार की भीड़ मां बाढ़त।

कहावत सिद्धान्तवादी है।

अ०– कला, अध्ययन, अभ्यास और गुणों की सीख व विकास हमेशा अकेले में ही हो पाता है। जब चित्त एकाग्र हो तभी किसी कला का अभ्यास हो सकता है। उसी प्रकार से बात–व्यवहार, आपसदारी, दुनियादारी का विकास हमेशा दुनिया की भीड़–भाड़ में ही हो सकता है। जो आदमी दूसरों को देखता है वह दूसरों से सीखता है।

गुजर गई गुजरान भी,
काव झोपड़ी, काव मैदान भी।

कहावत उस समय लागू होती है जब किसी आदमी की "गई बहुत रहि गई थोड़ी" उम्र का सवाल होता है। वह जीवन मनुष्य के जीवन में नीरस

उदासीनता, बीते दिनों के कष्टों की यादों का होता हैं जिसमें दुनियादारी से हटकर वैराग्य की ओर मन जाता है।

अतः कहावत का भी आशय है।

अ०— किसी तरह से गुजर हो गया। क्या किसी झोपड़ी के भीतर और क्या खुले आसमान के नीचे? गुजर होने से मतलब है, अब तो बहुत थोड़ी सी उम्र बाकी बची है।

गुनिया गुन कहै निरगुनिया बिंग बोलै"।
या निरगुनिया पांचर मारै"।

श०— निरगुनिया—बेअक्ल का, मूर्ख, बिंग—व्यंग्य, ताने, जब किसी अक्लमंद का मूर्ख से पाला पड़ जाता है तो उसकी बुद्धि काम नहीं करती है, इस कहावत में यही दिखाया गया है। कहावत यह ऐसे ही अवसर पर कही भी जायेगी जब किसी मूर्ख से अक्लमंद हारने लग जाता है।

अ०— गुणी आदमी तो अपनी क़ाबिलियत बता रहा है और मूर्ख ताने कस रहा है इसलिए कि उसे अच्छी बात अच्छी नहीं लग रही है।

गुरु करे जान के, पानी पिये छान के।

अ०— गुरु से ज्ञान मिलता है इसलिये गुरु बनाने के पहले समझ लो तब गुरु बनाओ और पानी हमेशा छान के साफ पीना चाहिए क्योंकि संक्रामक बीमारियों के कीटाणु पानी ही होते हैं।

गुरु—गुरु विद्या, सिर—सिर ज्ञान।

अ०— गुरुओं के पढ़ाने समझाने की अपनी विधियाँ भिन्न—भिन्न होती हैं। उसी प्रकार से शिष्यों के पढ़ने, समझने की अपनी—अपनी बुद्धि होती है।

गुरु बिन बाउर चेला, कंठ बिन बाउर गीत।

अ०— गुरु के बिना चेला नहीं समझता और गला अच्छा नहीं होता तो कोई भी गीत गाने में सुस्वर नहीं लगता।

गुरु बिन मिलै न ज्ञान, भाग बिन संपत्ति।

अ०— स्पष्ट है।

गुरु, बैद्य औ जोतिसी, देव, मंत्र अरु राज।
इन्हें "भेंट" बिन जो मिले सुफल होय नहिं काज।।

श०— भेंट—पैसा, चढ़ावा।

अ०— गुरु वैद्य, ज्योतिषी, देवता, राजा और राजा का मंत्री इन सभी सज्जनों के पास बिना कुछ द्रव्य या वस्तु भेंट के काम कभी नहीं बनता। इनके पास सदैव चढ़ावा लेकर ही जाना चाहिए।

गुरु, शुक्र की बादरी, रहै सनीचर छाय।
कहै घाघ सुनु घाघिनी, बिन बरसे ना जाय।।

अ०— स्पष्ट है।

" गू "

गूलर फोरे,मसा उधिराय।

श०— गूलर – एक प्रकार का फल है, मसा—मच्छड़, उधिराय—फैल जाना, चारो ओर छा जाना।

उपरोक्त कहावत उस समय कही जाती है जब छोटी बात को दूसरे लोग तूल बना लें। जिसे कहा जाता है "तिल का ताड़ बनाना"। कोई किसी बात को शुरू करे और दूसरा उसे बढ़ाता चला जाय,तभी कहा गया है।

अ०— जैसे गूलर फोड़ने पर कीड़े चारो ओर फैल जाते हैं क्योंकि गूलर के अंदर मसे बहुत होते हैं तो वैसे ही एक बात छेड़ा नहीं कि कुछ लोगों की आदत होती है कि गूलर के मसे की तरह भनभनाने लगते हैं। बात का बतंगड़ बना देते हैं।

गू कै भाय मूत।

अ०— जब दो व्यक्ति एक ही जैसे होते हैं तो कहा जाता है कि दोनों एक ही जैसे हैं। जैसे पाखाने का भाई ही मूत्र हैं। दोनो गंदे स्थान के हैं।

गूलर क फूल पीपल क मद घोड़ी की जुगाली
कबौ न पावै, पावै तो रैन दिवाली।

अ०— उपरोक्त तीनों वस्तुएं अनुपम बहुत होती है,यदि मिलती भी हैं तो दिवाली की रात को।

" गै "

गैर भला, मुल आपन नाहीं।

अ०— कभी—कभी मनुष्य जब अपनों के द्वारा उदास,दुःखी,निराश या सब प्रकार से अपने पर कष्ट का अनुभव करता है तो निराशा में कहता है कि

दूसरा भला होता है। वह समय पर चाहे तो बहुत कुछ कर देता है मगर अपना होकर भी अपना नहीं होता है। वही काम दूसरे भले ही कर दें किन्तु अपना करने में आनाकानी करता है। अपनों से उदासीनता की भावना में कहावत कही गई है।

गैऱ गैरे आय,आपऩ अपनै आय।

अ.– स्पष्ट है।

" गो "

गोहूं के साथ घुनों पीसि जाय।

जब किसी दोषी के साथ बेचारे निर्दोष व्यक्ति पर भी दोष लगे तो कहा जाता है कि–

अ०– गेहूं तो पिसे ठीक ही है किन्तु गेहूं के साथ–साथ घुन बेचारा रहने के कारण पिस जाता है जबकि दोष गेहूं का है। घुन की गलती इतनी ही है कि वह उसके साथ रहता है। इसी तरह से किसी बड़े आदमी के साथ छोटा आदमी भी मारा जाता है।

गोहूं तो सबै खात, रोटी केउ–केउ खात।

कहावत दो स्थितियों में लागू होती है। एक तो किसी ने गेहूँ की रोटी बहुत बढ़िया बनाई है या फिर बहुत ख़राब बनाई है। अतः रोटी की अच्छाई बुराई को देखकर कहावत है।

अ०– गेहूं तो सभी खाते हैं,मगर रोटी जो बढ़िया बना पाता है,वही खाता है। गेहूं की रोटी जला, भुनाकर रख दो तो कौन कहेगा कि यह गेहूं जैसे बढ़िया अनाज की रोटी है। यत्न से बढ़िया,साफ़ सिंकी रोटी बनाने वाले के चातुर्य पर प्रशंसा की जाती है या फिर कच्ची, अधपक्की, जली,भुनी रोटी बनाने वाले के ऊपर उसके फूहड़पने की बात लागू हो जाती है।

गोबर, मैला, नीम खली,
इससे खेती दुगनी फली।

अ०– कहने का तात्पर्य यह है कि गोबर, पखाना, नीम की खली खेतों में ड़ालने पर खेती की फसल दुगनी हो जाती है। अतःखेतों को बोते समय, खेतों में खाद डालने का ध्यान अवश्य रखना चाहिए।

गोबर मैला, पानी सड़े, तब खेत में दाना पड़े।

अ०– कहावत खेतों को तैयार किये जाने पर है कि जब तक खेतों में गोबर, पानी, सड़ी खाद पहले से डालकर सड़ा न लें तब तक खेत बोना नहीं चाहिए। इसके पहले दाना बो देने से कोई लाभ नहीं होता।

गोबर,चकवड़,रूसा उनको छोड़ होय नहिं दूजा,
या उनको छोड़ होय नहिं भूसा।

अ०– जो किसान खेतों में गोबर खाद नहीं डालते हैं,उनके खेत में चकवड़ (एक पौधा) और रूसा, छोड़कर भूसा तक भी नहीं होता है।

गोड़ फैलाया कब से, हाथ बटोऱ्या तब से।

श०– बटोऱ्या–हाथ का सकरा होना, कंजूसी करना। कहावत का स्पष्टीकरण तब होता है,जब कोई मनुष्य हाथ का सँकरा यानी कंजूस हो जाता है। इस कहावत में एक अंतर्कथा है।

अ०– एक बार बीरबल बादशाह अकबर के दरबार में कई दिनों तक नहीं गये। बीरबल को बादशाह ने कई बार बुलवाया। एक दिन बादशाह स्वयं घूमते हुए पहुंचे। देखा बीरबल आराम से पांव फैलाये लेटे थे। बादशाह ने पूछा पांव कब से फैलाया? बीरबल का उत्तर था—जब से आपने हाथ बटोरा तभी से मैने पांव फैलाया। यानी कि जब से आपने देने–लेने में, खिलाने पिलाने में कंजूसी की तो हम भी आराम से अपने घर बैठ गये। इसलिए हाथ के सकरे आदमी को कोई आदमी नहीं मिलता है। इसलिए हमेशा उसका काम रुका रह जाता है।

गोहूं भवा काहे? असाढ़ के दुइ बांहे,
गोहूं भवा काहे, सोलह बांहे, नौ गाहे।

कहावत खेत सबंधी है।

अ०– किसी ने पूछा कि गेहूँ क्यों हुआ? तो उत्तर मिला–आषाढ़ के माह में खेत की दो बार जमकर जोताई करने पर। फिर किसी ने पूछा गेहूँ क्यों हुआ—तो उत्तर मिला–सोलह बार जोतने व बार–बार हेंगाई करने पर, यानी नौ बार हेंगाई की है,तब यहां गेहूँ इतना पैदा हुआ है। कहने का मतलब है कि खेत जब तक एकदम जोतने व मिट्टी भुरभुरी करने के बाद खरपतवार निकाल न ले खेत बोने लायक नहीं

होता है और तभी उपज व अनाज अधिक मिल पाने की सम्भावना बन पाती है।

गोहूं भवा काहे? सोलह आहें–बाहें,
गोहूं भवा काहे? कातिक के चौबाहें"।

अ०– गेहूं क्यों हुआ?––उत्तर था–– सोलह बार आड़े–बेड़े जोतने पर, किसी ने फिर पूछा– गेहूं क्यों हुआ?– उत्तर था कातिक में चार बार जोतने से। उपरोक्त कहावत की भांति ही यह भी है।

गोहूं गाहे धान बेगाहे।

अ०– गेहूँ कई बार जोतने पर बढ़िया उपज देता है, और धान में अंकुर निकलने पर पाटा फेरने पर फसल अच्छी होती है।

गोहूं गेरुई, गाँधी धान, बिना अन्न के मरा किसान।

श०– गेरुई–एक प्रकार का गेहूं में लगने वाला कीड़ा होता है।

गाँधी–एक प्रकार का धान में लगने वाला कीड़ा।

अ०– गेहूँ में गेरुई व, धान में गंधी नामक कीड़ा जब लग जाता है तो समझो कि किसान बेचारा क्या खायेगा? दोनों ही फसलें बेकार हो जाती हैं। ऐसे में किसान बेमौत ही मर जाता है।

गोहूं जौ जग पछिवा पावै, तब जल्दी से दांवा जाये।

यानी– गेहूं व जौ जब पछिवा हवा चले तभी दांया जाता है।

गोहूं बाहें, चना दलाये, धान गाहे, मक्का निराये।

श०– बाहें–जुताई करना, दलाये–अंकुरण से तनिक बड़ा होते ही खोटाई करना, पैरों से लतियाना, गाहे– धान के खेतों में पानी भरने के बाद खेत में पाटा चलाना, निराये– खेतों के खर पतवार को निकालना, खेत की सफाई करना।

अ०– कहावत खेती संबंधी है। कहा गया है कि गेहूं का खेत जोताई करने से, चने का खेत पौधों की खोटाई करने, धान को पैरों से दबाये जाने से तथा मक्के का खेत निराई करने से उपज अधिक देता है।

गोहूं क गूदा, घिब क भूजा,
बेटवा क छोड़ि के पतोहू के मुंह का।

कहावत घरेलू जीवन के ऊपर कही गई है। वह भी पुराने जमाने की है, जब बेटे बहू में बहुत अधिक अंतर माना जाता था। माँ का वात्सल्य जितना बेटे पर होगा उतना बहू पर होना अस्वाभाविक है। उसका कारण है कि माँ अपने बेटे को जितना प्यार करती है उतना प्यार वह अपने से भी नहीं करती है। वह स्वंय भूखी रह सकती है किंतु बेटे को भूखा नहीं देख सकती है। किसी ने सच ही कहा है– "माई देखै पेट मेहर देखै टेंट" यानी बेटा जब बाहर से घर वापस आता है तो माँ सबसे पहले लड़के का पेट टटोलती है कि मेरा बच्चा भूखा तो नहीं है। किंतु स्त्री पति की टेंट यानी कमर पर पुरुषों के जो धोती बंधी होती है, उसी में पैसा टटोलती है कि क्या पैसा लेकर आये हैं? इसी संदर्भ में कहावत कही गई है–

अ०– गेहूँ के अंदर का गूदा यानी मैदा जो घी में खूब बढ़िया गुलाबी रंग का भूनकर हलुवा बनाया गया है, वह भला बेटे को छोड़कर पतोहू के लिए बना है क्या? कहावत प्रियजन से हटकर बाहरी लोगों के ऊपर भी चरितार्थ की जाती है।

गोहूँ की रोटी क फौलादी पेट चाही।

श०– फौलादी–लोहे के जितना कड़ा।

अ०– कहते हैं कि गेहूँ अनाजों में भारी पड़ता है। कहा गया है कि गेहूँ की रोटी को पचाने के लिए फौलादी, यानी कि बहुत कड़ा मजबूत मेंदा होना चाहिए क्योंकि गेहूँ की रोटी जल्दी पचती नहीं है।

गोद मां बइठि के आँख मां अंगुरी।

या बड़ा दुलार आँख मां अंगुरी।

अ०– प्यार दुलार या अपने से छोटे की शैतानी हरकतें तभी तक अच्छी व भली लगती हैं जब तक सीमा के अंदर हों या उम्र के अनुसार हों तो ठीक है, वर्ना गोद में बैठकर कोई बच्चा आँख में अंगुली करे या संरक्षण में रहकर कोई भी छोटा चाहे कि जरूरत से ज्यादा अधिकार ले लूँ तो असंम्भव है। कहावत का तात्पर्य भी यही है कि गोद में बैठकर आँख ही फोड़दे तो यह असह्य होगा।

गोड़े मां मेंहदी दीन है का?

यह कहावत उस समय कही जाती है जब कोई आदमी जल्दी चल नहीं पाता या उठने से कतराता है या बहुत धीरे–धीरे कछुये की चाल चलता है।

" गो "

गोंयड़े आई बरात, समधी के लाग हगास।

श०– गोंयड़े– गांव के बाहर, हगास– पाख़ाना।

ऐन समय पर किसी विशेष आदमी की अनुपस्थिति होने पर कहावत कही जाती है।

अ०– जब गाँव के पास बारात आ गई तो समधी शौच को चले गये। द्वारचार के समय समधी की आवश्यकता पड़ती है दूल्हे की आरती उतारने आदि आयोजनों में तो उनका पता ही नहीं।

गोंयड़े खेती, सिर पर साँप,
भाई भयानक वादी बाप।

श०– गोंयड़े– गाँव के बिलकुल ही पास, सिर पर– यानी छप्पर, छान में रहने वाला सर्प, भयानक– जिसे देखकर डर मालूम हो ऐसा चेहरा हो, वादी– झगड़ा करने वाला विपक्षी।

अ०– गाँव के बिलकुल निकट खेत या छान–छप्पर में लटकता साँप, डरावना भाई और दुश्मनी रखने तथा लड़ने वाला बाप बुरा होता है।

गोधन, गजधन, बाजिधन और रतन धन खान,
जब आंवै संतोष धन सब धन धूरि समान।

अ०– स्पष्ट है। संतोष से बढ़कर दुनिया में कोई धन नहीं होता।

गोयठा जरै गोबर हँसै।

श०– गोयठा–कंडा, उपले।

अ०– कंडे को जलते देखकर गोबर हँस रहा है। वह यह भूल जाता है कि एक दिन हमें भी इसी दशा को प्राप्त होना है। ऐसे भी मूर्ख होते हैं लोग जो अपने ही वंश खानदान का अहित होते देखकर प्रसन्न होते हैं। हमारे देश में जाति का गौरव तो अपना एक अलग ही महत्व रखता है। कवि रहीम खानख़ाना ने क्या सुन्दर ढंग से कहा है–

रहिमन अपने गोत कहँ, सबै चहत उतसाह।
मृग उछरत आकास कहँ, भूमि खनत बाराह।।
सुन 'रहीम' सुख होत है बढ़त देखि निज गोत।
ज्यों बड़री अँखियाँ निरखि आँखिन के सुख होत।।

अ०– स्पष्ट है।

गोइंया–गोइंया कइके रोवा घोंघा हुई गै आँख।

अ०– किसी के प्रेम में इतना अधिक रोई कि फलतः आँखें सूज गईं।

जायके देखो गोबर खाद, तब जानो खेती कै स्वाद।

अ०– कहावत खेती संबंधी है। खाद–पात डालने पर ही खेत में दाना उत्पन्न हो सकता है।

" गौ "

गौवे पानि देखावा, पापे, दोखे, छुट्टी पावा।

कहावत फ़र्ज अदायगी पर कही गई है। ज़िम्मेदारी को किसी प्रकार से निभा देना। कार्य प्रेम–व्यवहार से नहीं, बल्कि जैसे–तैसे पूरा करके छुट्टी ले लेना।

अ०– गाय को पानी दिखाने के बाद अपने पाप–दोष से बरी हो जाना, काम करने के बाद अपनी गलती का बचाव करना।

गौरइया माता गोहार लागा,
कहिन–हमहीं उतान हन।

कहावत उस समय लागू होती है जब सहारा देने वाला स्वयं विवश होता है। वह बजाय मदद देने के अपनी मजबूरी खुद प्रकट करता है।

अ०– किसी पर जब आफ़त आई तो उसने गौरइया माँ को गोहार लगाई तो वह बोली– क्या करें, हम ही उल्टी पड़ी हैं। हम तुम्हारी क्या मदद करें? स्वयं का विपत्तिग्रस्त होना।

" गं "

गंजेड़ी यार किसके, दम लगाये, खिसके।

कहावत मतलबी, स्वार्थी लोगों के लिए कही गई है। जब किसी आदमी की गर्ज निकल जाय और वह फिर दिखाई न पड़े तो कहा ज़ाता है।

अ०— किसी नसेड़ी आदमी के माध्यम से कहावत कही गई है कि गंजेड़ी को अपने नशा से मतलब, नशा पानी किया नहीं कि उठकर चल दिये। फिर उनको किसी से क्या लेना—देना, उनका काम बना दूसरे के फायदे—नुकसान से क्या काम?

गंगा बड़ी गोदावरी, तीरथ बड़ा प्रयाग,
सबसे बड़ी अयोध्या, जहँ रामलीन अवतार।

कहावत तीर्थ स्थलों व गंगा नदी के ऊपर उद्धृत की गई है।

अ०— नदियों में गंगा एवं गोदावरी सबसे बड़ी नदी हैं और तीर्थों में प्रयाग। इन सबसे बढ़के बड़ा महत्व अयोध्या जी का है जहाँ रामचंद्र जी ने जन्म लिया है।

गंगा गये गंगादास, जमुना गये जमुनादास।

कहावत अवसरवादी व्यक्तियों के ऊपर चरितार्थ की गई है जो थाली के बैगन की भाँति होते हैं।

अ०— गंगा गये तो गंगादास बन गये, जमुना गये तो जमुनादास बन गये। उनका कोई उसूल (सिद्धांत) ही नहीं रहता है। जहाँ गये वहीं के हो गये।

गंजी, गाजर, मूरी, तीनिव बोवै दूरी।

अ०— घाघ कवि के शब्दों में कहावत खेती संबंधी है। यानी— गंजी, गाजर, मूली इन तीनों को दूर—दूर बोना चाहिए।

दूध देय गाय भल, चाल चलै घोड़ी।
मरद जे रन में जाय, हयादार गोरी।।

कहावत लोकोपयोगी है।

अ०— गाय वह बढ़िया होती है जो दूध देती हो। घोड़ी वह बढ़िया होती है जो अच्छी चाल से चलती है। पुरुष वह जो युद्ध में जाये और गोरी यानी नारी वह भली लगती है जो हयादार हो।

गंवारिन का जानै घुंघुटवा कै आदि।

श०— गंवारिन— अनपढ़, मुर्ख, घुंघटवा—– घूंघट, पर्दा, आदि— कैसे घूंघट काढ़ा जाता है?

अ०— तात्पर्य यह कि गँवारिन जो घूंघट निकालना क्या जाने? घूंघट की शान तो इज्ज़तदार, शरीफ़ घर की स्त्रियां ही समझ सकती हैं जिनको घर में बैठकर घूंघट निकाले रहना है। वे घूंघट का महत्व जानती हैं।

गंगा के कगार फाट मोरे ऊपर छीट परी।

श०— कगार— नदी का ऊँचा किनारा, टीला, छिट—छिट्टा।

अ०— जब कोई व्यक्ति दूर की घटना को चाहे अच्छी हो या बुरी हो तो कहता है कि गंगा के किनारे का टीला फटा तो उसका छिट्टा मेरे ऊपर आया। कुछ लोगों की आदत होती है कि जिसका जहाँ कोई नाम निशान भी न हो वहाँ स्वयं को जोड़ लेते हैं।

गंगा गये मुड़ायेन सिर।

अ०— कहते हैं गंगा स्नान को जाने पर सिर अवश्य मुडवाना चाहिए तभी पूरा फल मिलता है, ऐसा हमारे पूर्वजों का कथन है।

गंगा कै धार, हाकिम क न्याय जानि नहीं जात।

अ०— गंगा की धारा और हाकिम का निर्णय किस तरफ जायेगा कहना संभव नहीं है। इस विषय में आधिकारिक रूप में कुछ भी नहीं कहा जा सकता। कौन हाकिम कैसा है?

" ग्र "

ग्रहणे कासी, मकरे प्रयाग,
चइत रामनवमी, दशहरा धोपाप।

श०— ग्रहणे— ग्रहण लगने पर, कासी— काशी, बनारस, धौपाप— यह स्थान ज़िला सुलतानपुर में स्थित दियरा गाँव से एक किलोमीटर दूर गोमती के तट पर है जहां पर भगवान् रामचन्द्र जी ने रावण का वध करने के बाद अयोध्या आते समय ब्रह्म—हत्या का अपना पाप धोने के लिए स्नान किया था। उसी घाट को धौपाप कहते हैं। यहाँ पर आज भी भक्तों की भीड़ जेठ के दूसरे पक्ष की दशमी को एकत्र होती है।

उपर्युक्त कहावत में यह बात व्यक्त की गई है कि किस स्थान पर, किस—किस पर्व पर जाकर नहाना चाहिए।

अ०— ग्रहण लगने पर काशी में गंगातट पर स्नान करना चाहिए। ग्रहण दो होते हैं— सूर्य और चन्द्र। दोनों ही ग्रहण में काशी स्नान शुभ माना गया है।

मकर संक्रान्ति माघ के पर्व पर प्रयाग में स्नान का अत्यधिक महत्व है। चैत रामनवमी को भगवान राम का जन्म हुआ था, इस कारण रामनवमी को अयोध्या में सरयू स्नान करना चाहिए। जेठ की उजली दशमी को भगवान राम ने ब्रह्म हत्या का पाप मिटाने को धौपाप में स्नान किया था, इसलिए दशमी को वहाँ गोमती में स्नान का प्रचलन है।

" घ "

घर देख्यो बर देख्यो, दिया क तर देख्यो।

वह पुराने ज़माने की बात थी कि जब कन्या का वर देखने के लिए पिता या नाई– ठाकुर निकलते थे तो घर की स्त्रियां वर देखने वाले को क्या– क्या चेतावनी देती थीं? यही कहावत से स्पष्ट होता है।

अ०– कहा गया है कि घर की दशा देखना कैसा बना है, कितने हिस्सेदार हैं? घर कितना बड़ा है, ठीक से रहने लायक है कि नहीं? दूसरी बात वर यानी लड़के को देखना कि कैसा है, स्वास्थ्य, सुंदरता, स्वभाव सब कुछ कैसा है? शक्ल–सूरत कैसी है, चाल–ढाल, तौर–तरीका, बोल–चाल कैसी है? तीसरे– देखना कि घर के दरवाज़े रोज संध्या को दीपक जलता है कि नहीं? यदि दिया जलता होगा तो दरवाज़े के ताख़ के नीचे तेल की कीच दिखाई पड़ेगी। इसका मतलब संपन्नता से है। इसलिए कि पुराने ज़माने में साँझ की गोधोली बेला में नारियां घर–घर तेल के दीप जलाया करती थीं जिसका मतलब संपन्नता व प्रकाश से था। उधर सूर्यास्त न होने पाये कि घर में दिया जलाकर संध्या मां का स्वागत करती थीं जो शुभ का प्रतीक मानती थीं। इसी प्रकार कहावत भी है– "जेहि घर दियना जले सबेरा वहि घर लछमी लेंय बसेरा" यानी– जिस घर में दिया जल्दी जलाया जाता है उस घर में धन की कमी नहीं रहती है। स्त्रियां सहेजती थीं कि दिया का तर देखना। इन सभी बातों को देख समझ कर लड़की की शादी का निश्चय करना।

घर आये नाग न पूजै बांबी पूजन जाय।

श०– नाग–साँप, बांबी—–जहाँ पर साँप रहता हो, साँप की बिल।

जब लोग घर आये लोगों को सम्मान नहीं देते, दूसरे–दूसरों को आदर का पात्र बनाते हैं या जो आसानी से मिली हुई वस्तु या निकटतम लोगों की इज्ज़त न करके, दूसरों को सम्मानित करने दौड़ेते तो कहावत ऐसे ही लोगों के ऊपर कही गई है।

अ०– घर में आये सर्पदेवता की पूजा तो न करे और बिल को दूर–दूर तक पूजने दौड़े। इसे ढोंग नहीं तो और क्या कहा जायेगा? जब नागदेव स्वयं ही आये हैं तो लकीर पीटने क्यों दौड़ते हो? अपने घर आये की इज्ज़त करना सीखो।

घर में आग लागि गै, घर के चिराग से।

आग लगना—–फूट पैदा हो जाना, बैमस्यता का बढ़ना, घर के चिराग—– घर के ही लोगों के द्वारा यानी कि घर के दिये से ही।

कहावत उर्दू की होते हुए भी ग्रामीण लोगों के मुख से भी सुनने और प्रचलन में आने के कारण दी जा रही है।

अ०– घर के ही लोगों के द्वारा घर का सत्यनाश फूट के कारण से होना। इसकी हिन्दी में कहावत है कि "घर का भेदी लंका ढावे। यानी घर का भेदी यदि विभीषण आकर राम से न मिल जाता तो राम को भेद का पता न लगता और न रामचंद्र जी रावण को मार ही पाते।

घर का भेदी लंका ढावे।

उपरोक्त कहावत की ही भांति यह भी है जिसके विषय में ऊपर कहा जा चुका है।

घर की खुनुस औ जर की भूख, छोट दमाद, बराहे ऊख,
पातर खेत बउरहा भाय, घाघ कहै दुःख कहाँ समाय?

श०– खुनुस– खहियट, घर का झगड़ा, झंझट, जर– बुखार, बराहे–बरहा, खेतों की सीचने वाली नाली, पातर– कमज़ोर, बउरहा– सनकी, पागल, भाय– भाई।

घाघ कवि की यह कहावत कई विषयों पर उदधृत की गई है। यानी जीवन में क्या–क्या परेशानियां या मन को कष्ट देने वाली बातें होती हैं।

छोटा दामाद, घर के अंदर की कहासुनी, आपसी कलह, बुखार उतरने के बाद की भूख, ईख के खेत की सूखी नाली, कमजोर खेत तथा मूर्ख भाई घाघ के अनुसार मन में दुःख के कारण हैं। इनके होने पर मन दुःखी होता है।

"घर घोड़ी पैदल चलै बात लेत हैं छीन,
थाती धरै दमाद घर, जाय क लच्छन तीन"।

कुछ लोग कहते हैं–

घर घोड़ी पैदल चलै, तीर चलावै बीन,
थाँती धरै दमाद घर, जग में भकुआ तीन।

अ०– कहा गया है कि संसार में बेवकूफ तीन लोग हैं। इन तीनों के दुनिया से चले जाने जैसे लक्षण हैं।

अ०– एक तो वे हैं जिनके पास घर में सवारी हो फिर भी पैदल चलते हैं। दूसरे हैं कि तरकस के तीर निशाना लगाते हैं छाँट–छाँट कर। दूसरा आदमी बात कर रहा है तो उसकी बात पूरी न होने पाई कि अपनी बात कहने लग जाते हैं। तीसरे हैं जो अपनी संम्पति या ज़मीन दामाद के यहां गिरवी रखते हैं। ये सभी नाश के लक्षण हैं। इसमें हानि व बदनामी छोड़ कुछ भी हाथ नहीं आता है।

घर में नारी आँगन सोवै, रन में चढ़ि के छत्री रोवै रात में सतुवा करै बिआरी, घाघ मरै तेहिके महतारी।

श०– नारी– स्त्री, पत्नी, रन– लड़ाई, युद्ध, बिआरी– रात का खाना।

अ०– घाघ कवि का कथन है कि जिसकी स्त्री रात में घर के आँगन में सोवे, यानी घर में बहू को कमरे के अंदर सोने को न मिले। जो क्षत्रिय युद्ध में साहस से काम न लेकर रुदन करने लगे तथा जो रात में सतुवा खाय, इन तीनों की मां को मरे के बराबर समझना चाहिए। उपर्युक्त कार्यों की ज़िम्मेदारी माता के ऊपर होती है। बहू तो घर की लक्ष्मी होती है, उसकी इज्ज़त करना, उसकी सुख–सुविधा पर ध्यान देना घर की मालकिन यानी सास का फर्ज़ होता है, दूसरे यदि क्षत्रिय लड़ाई में पीछे है तो समझो कि उसने अपनी मां के दूध की लाज समाप्त कर दी, कितने लज्जा का विषय है यह। तीसरे यदि रात में किसी लड़के को मां सत्तू खिलाकर पेट भरवाती है तो दुःख की बात है कि क्या वह मां बच्चे के लिए खाना नहीं बना सकती है?

घमंड़ी का सिर नीचा।

अ०– दुनिया में आज तक घमंडी, अभिमानी को हमेशा ही नीचा देखना पड़ा है। बड़े से बड़े लोगों का अभिमान चूर–चूर हो गया है। किसी भी कार्य में किसी भी विषय में जहाँ अहंकार आया कि भगवान ने रावण की तरह धन–जन दोनों का सत्यनाश किया।

घर कै कहिन छिनार, बाहर कै लिहिन विचार।

श०– छिनार– आवारा, बदचलन, चरित्रहीन, विचार— समझना।

कहावत साधारण बातचीत के दौरान किसी की चर्चा उठने या कोई वर्तमान घटना होने पर उद्धृत की जाती है।

अ०– यदि कोई बदनामी का विषय हो तो अंदर चाहे जितने गुप्त रूप से कहना चाहो मगर बाहर वाले सही बात तक पहुंचकर वातावरण या घर की बातचीत से उस बदनामी का अंदाज़ लगा लेते हैं। कहावत है कि घर का आदमी यदि घर के किसी सदस्य को चरित्रहीन कहता है तो बाहरी लोग अपने आप ही उस बात को विचार करके समझ लेते हैं।

घर मां अंधेर, मंदिर मां दिया बारे।

कहावत, जब भी अपनों से अपने घर के प्रति लापरवाही बरती जायगी, तो कही जायगी।

अ०– घर में तो अंधकार पड़ा है और मंदिर में दीया जलाने गये हैं। यहां घर में अंधेरा और मंदिर में दीया जलाने का क्या अर्थ है?

घर के देव ललचाय बहेरवांसू पूजा मांगै।

उपर्युक्त कहावत की भांति यह भी है। घर के लोग तो भोजन के लिए तरसें और बाहरी लोग सम्मान पावें।

घर की खाँड़ मने नहिं भावे, चोरी का गुड़ मीठो–मीठो।

श०– खाँड़– गन्ने के रस को गाढ़ा करके जो वस्तु

थोड़ी गीली ही उतार ली जाती है। मीठो–मीठो, मीठा होना।

जब कभी लोग अपने घर की वस्तुओं की बुराई करने लगते हैं तथा बाहर की उसी वस्तु की तारीफ़ करने लगते हैं तो कहावत चरितार्थ की जाती है।

अ०– घर की बनी खांड़ तो मन की नहीं होती और बाहर का गुड़ बड़ा बढ़िया लगता है। लोलुपता है कि घर की चीज़ तो बुरी लगे और बाहरी चीजों के लिये जान छिड़के।

घर की मुर्गी साग बराबर।

अ०– जो वस्तु घर में होती हो उसकी कोई क़ीमत न लगना। घर में मुर्गी है तो उसकी कीमत साग जैसे तुच्छ समझी जाती है। उसे कोई नहीं पूछता है।

घर मां भूजा भांग नाहीं अम्मा चलीं भजावै।

घर की स्थिति खराब होने पर कहावत लागू की जाती है।

अ०– घर में कुछ भी अनाज न होने पर अम्मा दाने भुनाने चल पड़ीं।

घर फूँक तमाशा न देखौ।

अ०– घर का किसी भी प्रकार का खर्च जब आवश्यकता से अधिक बढ़ता चला जाता है तो कहावत कही जाती है कि इतना खर्चा करने पर कैसे काम चलेगा? इस प्रकार से घर में नुकसान करना घर फूँकने के बराबर है, अतः घर फूँक कर तमाशा न देखो। अन्य की कमाई का पैसा पानी की तरह खर्च करने की दशा में भी कहावत सामने आती है।

घरी मां घर जरे, अढ़ाई घरी भद्रा।

श०– घरी– ६० पल या २४ मिनट का समय, अढ़ाई– ढ़ाई, भद्रा– ख़राब साइत।

कहावत अंधविश्वास पर व्यंग्य में कही गई है।

अ०– कहा गया है कि एक घरी अर्थात् थोड़े समय में तो सारा घर ही जलकर स्वाहा हो जायेगा और यहाँ साइत है कि ढाई घरी का भद्रा लगा है। कुसाइत में घर की लगी आग कैसे बुझाई जाय? घर जलने जैसी अचानक दुर्घटना के समय साइत विचार कर कोई आदमी काम करे तो पूरा घर ही जलकर राख हो जाये।

घर कै धिया घुरहगनी।

कहावत में घर की वस्तु या घर के मनुष्य की कोई क़ीमत नहीं आंकी गई है। कहा गया है कि घर की लड़की तो रोज़ की ही है, वह तो रोज़ ही घूर पर, जहाँ घर गाँव का कूड़ा फेंका जाता है, वहीं टट्टी करती है।

घर माँ गुड़ है तो बाहेर माछी लगबै करिहै।

अ०– जब घर में कोई अच्छी, मीठी वस्तु होती है तो निश्चित ही वहाँ मक्खी, चींटे तो आ ही जाते हैं। यानी घर में संपदा है तो मानी बात है कि लोगों का आना जाना बना ही रहेगा।

घर का जोगी जोगड़ा, आन गाँव का सिद्ध।

अ०– जब लोग अपने घर, अपरिचित–परिचित, नाते–रिश्ते, जाने–माने लोगों के किसी काम को महत्व नहीं देते हैं तो कहावत उद्धृत की जाती है कि घर के जोगी, संन्यासी, महात्मा को तो ढोंगी, बनतू कहकर लोग उपेक्षित कर देते हैं और बाहर से आये साधू, महात्मा को स्वामी जी, संत जी पहुंचे हुए महात्मा की पदवी देकर सेवा, सम्मान देते हैं।

घर कोवा तो बहेरेव कोवा, कोवै देखि बहुरियै रोवा।

श०– कोवा– कटहल या महुवे का कोआ, बहुरिया– बहू, दुलहन।

कहावत भाग्यवादी है। जो कुछ भाग्य में लिखा, बदा होता है, वह हर समय, हर स्थान पर मिलता है। जब कोई व्यक्ति इस आशा में जाता है कि चलो यहाँ न सही, वहीं कुछ बिगड़ा काम बन जायेगा या कोई बिगड़ी बात बन जायेगी इसके बावजूद काम ज्यों का त्यों वैसा का वैसा ही रह जाता है, तो कहावत चरितार्थ होती है।

अ०– कहा गया है कि बहू बेचारी जब रोज़–रोज़ घर की ग़रीबी के कारण कोआ खाते–खाते ऊब गई तो सोचा कि चलो और कहीं चलते हैं, कुछ तो भोजन में बदलाव होगा ही। किंतु दूसरी जगह पर भी उसे वही कोआ खाने को मिला। यानी जो स्थिति, रहन–सहन की दशा उसकी पहले स्थान पर थी, उसी तरह उसे यहाँ भी रहना पड़ा। जो दशा घर में

थी, यहाँ पर भी उसके साथ हुई। अपने दुर्भाग्य को देखकर वह रो पड़ी। भाग्य के आगे किसी की नहीं चलती।

घर बिआह, बहू पीहर।

श०– पीहर– मायका, नैहर।

कहावत ऐसे समय पर कही गई है जब घर में कोई त्यौहार या विवाह आदि पड़ा हो और घर का कोई सदस्य कहीं गया हो तो अजीब सी स्थिति लगती है घर में तो काम पड़ा है और घर के ही लोग कहीं और चले गये हैं।

अ०– घर में शादी है और घर की बहू जिसे तमाम काम करने हों वह मायके में हो। समय विशेष पर किसी घर वाले की अनुपस्थिति का खटकना।

घड़ा फूटे, घइलिन हाथे आवै।

अ०– जब किसी बड़ी वस्तु का दुरुपयोग किया जाय, या वह वस्तु हाथ से निकल जाय तो कहते हैं कि जब घड़ा फूट जाता है तो फिर वैसी चीज़ हाथ नहीं आती, फिर तो उससे भी ख़राब वस्तु मिलती है। इसलिए जो वस्तु अपनी हो, अपने पास हो, उसकी इज्ज़त करनी चाहिए क्योंकि कोई अच्छी वस्तु या भले मनुष्य दुनिया से चले जाते हैं या पास से दूर हो जाते हैं, तभी उनकी कीमत का पता चलता है।

घरौ जरै, घूरव जरै, डपोरनाँव ऊपर से परै।

श०– घरौ– घर, घूरव– जहाँ पर घर गाँव का कूड़ा कर्कट फेंका जाता है, डपोर– बेवकूफ़, बुद्धू।

कहावत उस समय कही जाती है, जब किसी का नुकसान भी हो और वह बेवकूफ़ भी कहलाये। यानी दो तरफ़ा नुकसान भी हुआ, घर से लेकर घूर तक जल भी गया, उस पर लोग उसी को बेवकूफ भी कह रहे हैं कि इसी की बेवकूफी से ऐसा हुआ है।

घर कै जानै खेत निरावै,
बइठि भगोले भउरी लगावै।

श०– निरावैं – खेत में जो खर, घास, पात हो उसे साफ करना। भउरी–लिट्टी।

भगोले – व्यक्ति का नाम, भउरी – कंडे पर सिकनेवाली बाटी।

कहावत या तो मूर्ख के ऊपर कही गई है या फिर जो काम में लापरवाही करता हो।

अ० – घर वाले तो समझ रहे हैं कि भगोले खेत पर जाकर काम कर रहा है, वह बीच में ही बैठे अपने लिये भउरी सेंक रहा है।

घनी – घनी सनई जबं बोवे,
तब सुतरी के आसा होवे।

श०– सनई – यह एक प्रकार पौधा जिससे सुतली बनाई जाती है। घनी–घनी–पास पास (सघन)।

कहावत घाघ कवि की है। उनका कहना है कि जब पास – पास सनई बोवे तो फिर सुतली की आशा करे क्योंकि सनई को सड़ाकर ही तो उसी से सुतली बनती है।

घर की चीज़ घर मां रही।

अ०– घर की वस्तु घर में ही रह जायेगी यानी कि, आपसदारी में स्वजनों के हाथ में वस्तु होने पर कहते है। घर जैसे हमारा वैसे तुम्हारा कोई कष्ट नहीं होगा। घर की अपनी वस्तु बाहर न जाकर घर में ही रहना। या कोई सामान खोने पर कहते हैं कहीं चली नहीं जायेगी, घर की वस्तु घर में ही रहेगी।

घर से खाय के निकले तो बहेरेव मिलत।

अ०– अपने घर से खाकर निकलो तो आगे भी खाना मिलता है। सही बात है–भूखे पेट जो अपने घर से निकलो तो फिर बाहर भी कहीं कोई पूछने वाला नहीं मिलता।

घर जरै घूर बुतावै।

जब किसी का अधिक नुकसान हो रहा हो तो बड़े को छोड़कर कम हानि की ओर दौड़ने वाले के प्रति कहावत कही जाती है।

अ० – कहाँ तो घर का घर ही जला जा रहा है और कहाँ जलने वाली जगह को छोड़कर गृहस्वामी कूड़े कर्कट की आग को बुझाने दौड़ रहा हो। जरूरत है इस समय घर की आग बुझाने की न कि घूर की आग बुझाने की। यानी उस तरफ देखो जहाँ काफी नुकसान की संभावना है।

घने दांत और बिड़रे बार
वही नारि कुलवंती नारि।

अ०– कहावत नारी क लक्षणों के ऊपर कही गई है कि जो नारी घने दांत व बिड़र बालों वाली होती है, वह भाग्यवान कहलाती है। वही अपने कुल की मर्यादा रखने वाली होती है एवं भाग्यवती होती है।

घर के भागे बन गयो, बनहूँ लागी आग,
बन बेचारा का करे, मोरे कर्महि लागी आग।

कहावत भाग्यवादी है जो कि दुर्भाग्य के ऊपर कही गई है।

अ०– दुर्भाग्य के मारे घर से भागकर तो बन में यानी दूसरी तरफ गये कि शायद वहीं कुछ शान्ति मिल पाये, मगर वहां भी वही हुआ कि बन में जाने पर वहाँ आग लग गई। बल्कि मेरे कर्म ही ऐसे खराब हैं कि जहाँ–जहाँ जाते हैं, वहाँ कुछ न कुछ गड़बड़ी पैदा हो जाती है,

घर में ब्याह, बहू कंडों को डोले।

अ०– कहावत से दो अर्थ निकलते हैं, एक तो बहू या घर वालों की लापरवाही , दूसरे कंडों के लिए जाने से घर की विपन्नता की परिचय। कहाँ तो घर में ब्याह की भीड़–भाड़ है और कहाँ बहू जलाने के लिये उपले बिनने गली–गली घूम रही है। यानी चूल्हा जलने के समय ईंधन ढूंढ़ने निकलना।

घर के पीरों को तेल का मलीदा।

श० – पीरों – वृद्ध, महात्मा, धर्म गुरु, मलीदा–आटे में मोयन देकर भौरी बनाकर उसे एकदम बारीक – बारीक करके खूब घी व शक्कर मिलाते है, फिर गोल–गोल लड्डू जैसा बनाकर परोसते हैं। राजस्थान में इसे चूरमा बोलते हैं। वहां का यह खाना बहुत ही मशहूर माना जाता है।

अ०– घर के लोगों को तेल का मलीदा और बाहर वालों को घी का। यानी कि बाहरी लोगों को इज्ज़त अधिक देना तथा घरवालों को सम्मान न देना।

घर–घर में शादी, घर–घर में ग़म।

कहावत दुनियादारी पर कही गई है। यानी कि कहीं खूब खूबा कहीं हाय–हाय। दुनिया में कहीं पर खुशी का मौका है तो कहीं पर ग़म का है। संसार का यही नियम है कि दुःख–सुख लगा ही रहता है।

घरे खाय के नाहीं, नौ परोसिन न्योति आई।

कहावत वाहवाही लेने, दिखावटपने की बातें या काम करने पर कही गई है।

अ०– घर में खाना–दाना नहीं है व्यर्थ में पड़ोसियों की बराबरी करने व झूठे बड़प्पन लूटने के लिये बाहरी लोगों को निमत्रण देना। घर में अपने ही खाने के लिये अनाज नहीं है, उस पर नौ – नौ पड़ोसन को खाने पर बुला आई है। भला इससे भी बढ़कर मूर्खता क्या हो सकती है।

घर घर देखा, एक्कै लेखा।

अ०– किसी के घर की अच्छाई – बुराई की चर्चायें उठने लगती हैं तो कहा जाता है कि एक नहीं, घर–घर का यही हाल है। सभी के यहाँ एक ही जैसा खान पान, लड़ाई–झगड़े की स्थिति है।

घरे भूजी भाँग नहीं भवानी मांगै पूजा।

अ०– खर्च का अधिक आ जाना। भवानी की पूजा घर व प्राणी की शान्ति के लिये आवश्यक है, मगर जब घर में कुछ हो ही न, तो पूजा कैसे की जाय? अतः जब घर में गरीबी हो, उस पर कोई आवश्यक खर्च बढ़ जाय तो कहावत याद आ जाती है।

घर के परसवइया औ पतरी खाली।

घर के लोग या परिचित होने के बावजूद भी खाने–पीने में बदइन्तज़ामी होने पर कहावत कही गई है अथवा आपसी लोगों के परोसने पर भोजन पूछकर खिलाने पर कहा गया है।

अ०– घर के लोग जब भोज में खाना परोसने में हों तब भी पत्तल में पूड़ी न हो आश्चर्य की बात है। अपने घर वालों को या नाते रिश्तेदारों को यदि खिलाने वाले घर के ही लोग व मालिक हैं तो निश्चय ही पूछकर प्रेम से खिलाना चाहिए।

घर कै दाह विभीषन होइगे।

श०– दाह – जलन, आग, विभीषन–नाश के कारण।

अ०– जब घर वाले के कारण ही घर वालों को कष्ट उठाना पड़ता है या अपनों के द्वारा किसी को क्लेश

होता है तो कहा जाता है कि घर का दाह विभीषण हो गये।

घर मां भूजी भांग नाहीं,
कोठा पै दहकच्चर।

श०– दहकच्चर – शोर–शराबा, उछल–कूद, रास–रंग।

कोठा – कोठे का मतलब यहाँ पर वेश्या के घर या वेश्या के कोठे से है।

अ०– घर में खाने–पीने की तो तबाही मची है मगर आदमी को कोई चिन्ता ही नहीं। वह अपनी विलासिता के लिए सारा पैसा वेश्या के कोठे पर खर्च किये बैठा हो। कहावत ऐसे ही लोगों के ऊपर कही गई है जो घर से तो तबाह हैं, गरीबी के कारण खाने को पैसा नहीं है मगर अपने रास–रंग में मस्त हैं जैसे उन्हें घर की कोई चिन्ता ही न हो।

घर के सजन हमारे जेते, बड़ी उपाधि मचाई।

अ०– घर के स्वजनों के द्वारा अत्यधिक परेशान होना। कहा है कि घर के जितने लोग हैं सभी बेहद अत्याचार मचाये हुये हैं।

घड़ी भर के बेसरमी, दिनभर के आराम।

कहावत ऐसे व्यक्ति के ऊपर कही गई है जो कामचोर हो, आलसी हो, जो कोई भी काम करने से जवाब दे दे।

अ०– एक घंटे की बेशर्मी करने पर यानी यह कहने पर कि मुझसे यह काम न होगा, बस उसके बाद तो दिन भर को आराम है, कौन काम कहने आता है? फिर चैन से सोयें चाहे घूमें, चिन्ता किस बात की?

घर के निरवइया औ खेते मां खर।

श०– निरवइया–खेत की निराई करने वाला। कहने का मतलब यह कि घर का कोई आदमी कोई काम करे और उस पर भी गड़बड़ी हो। खेत जब कोई घर का आदमी निराये फिर भी दूब रह जाय।

घइला क नास भा, जो आमिल भा माठा,
मर्द के नास भा जो मेहरारू डाटा।

श०– घइला – घड़ा। मेहरारू – स्त्री, पत्नी। आमिल खट्टा।

अ०– जब मट्ठा खट्टा हुआ तो समझो कि मटकी बर्बाद हुई और जब मर्द को उसकी पत्नी हर समय डाँटती ही रहेगी तो उसकी क्या जिन्दगी हो सकती है? समझो उस मर्द की ज़िन्दगी बेकार हो गई।

घम्मड़–घम्मड़ बाजै तो बहुत नीक लागै
नउवा नेग मागै तौ, घर छोड़ि के भागै।

श०– घम्मड़–बाजे की आवाज, नउवा–नाई, नेग–विवाह आदि शुभकार्य के समय नाई आदि को दिया जाने वाला धन।

अ०– जब गाना–बजाना हो तब तो बड़ा ही अच्छा लगे, मगर जब नेगहारू अपना–अपना नेग मांगें, खर्चे का समय आये और जब जेब से पैसा उठने लगे तो बहुत ही खले, तब तो खर्च के मारे घर ही छोड़कर भागना शुरू कर दें।

घने अच्छर बेगरी पांत, ऊ जानै लिखै क भांत।

यह कहावत लिखने वालों के प्रति कही गई है लिखावट पास–पास में, घनी हो और पक्तियां दूर हों वही लिखावट अच्छी मानी जाती है।

घर के बलाय घर ही रहै तो नीक आय।

श०– बलाय–झंझट, परेशानी, समस्यायें–घर ही में–अंदर ही अंदर।

अ०– घर की लड़ाई यदि आपस में में ही निपट जाय तो बहुत अच्छी बात होती है।

घर कुगांव,सुत मूढ़, तिय, कुल नीचनि सेवकाई।
कुभक सुता विधवा छहौ, तन बिन अगिन जराई।।

श०– कुगांव– खराब गाँव, सुत–पुत्र, तिय–पत्नी, कुल–वंश, नीचनि–नीच, सेवकाई–सेवा टहल, कुभक–खराब खाना, सुता–पुत्री, तन–शरीर, जराई–जलना।

चाणक्य नीति का यह कथन कहावत के रूप में यदा–कदा प्रयुक्त होता है।

अ०– खराब गाँव में घर का होना, मूर्ख पुत्र का होना, पत्नी का लड़ाका होना, नीच कुल की टहल करना, भोजन खराब मिलना तथा पुत्री का विधवा हो जाना, ये छहों कष्टों में से एक भी हो तो बिना आग के ही शरीर जल जाता है।

घड़ा से घड़ा नहीं भरते ।

कहावत तब कही जायगी जब कोई आदमी परिश्रम करने से कतराता हो। कभी–कभी लोग सोचते हैं कि काम न करना पड़े तो कितना ही अच्छा होता। एक घड़े का पानी दूसरे घड़े में उड़ेल देते हैं, मगर एक न एक घड़ा तो खाली रहेगा ही इसी पर कहावत कही गई है।

अ०– पानी भरने के लिये कुएं तक तो जाना ही होगा। घड़े से घड़ा नहीं भरेगा। आवश्यक वस्तुओं के लिए दूर–दूर तक भटकना पड़ेगा। पानी की आवश्यकता बिना जल–कूप तक गये पूरी न होगी।

थका घोड़ा रिसियान चाकर,
कबों इन पर विस्वास न कर।

अ०– सवारी से छूटा हुआ घोड़ा और एक बार का गुस्साया नौकर, इनके ऊपर विश्वास नहीं करना चाहिए। कभी भी धोखा दे सकते हैं।

घई की मेरी, तवा की तेरी।

श०– घई–जलते हुये चूल्हे के किनारे जगह बनाकर स्त्रियां चूल्हे के नीचे जहाँ रोटी सेकती हैं।

किसी जल्दबाज स्वार्थी आदमी के लिये कहावत कही जाती है।

अ०– जो रोटी तवे के नीचे घई में सिंक रही है वह मेरी है, तवे पर की तेरी है

घर क भेद तब जानै, पाये जब चौका पूरे के ढक्कन आय।

अ०– आदमी की अंदरूनी दशा का अनुमान तब लगता है जब दूसरा कोई घर के अन्दर का दृश्य देखता है। चौका लगाने को गहरा बर्तन चाहिए न कि ढक्कन। ढक्कन आने पर भेद खुल गया।

घर के बिल्ली, घर ही मां सिकार।

अ०– जब आदमी अपनों के साथ घाट करता है तो कहते हैं कि घर की बिल्ली जिसे पाला पोसा वह घर में शिकार कर रही है।

घर की औरत घुमनी, घर कुत्तन के जोग।

अ०– किसी मूर्ख, घूमनी, चारों ओर चक्कर लगानेवाली घुमक्कड़ लापरवाह औरत के लिये कहावत कही गई है। जिस घर की औरत रात–दिन घूमती रहे भला उस घर का काम कब होगा? वह घर फिर तो आदमी के रहने के क़ाबिल नहीं रहेगा। न उसमें सफाई होगी, न सजने सँवरने का सवाल होगा, उस घर की बर्बादी ही समझो।

घर–घर में माटी के चूल्हा अहै'।

अ०– घर–गृहस्थी में सभी के यहाँ कभी कुछ घटा तो कभी कुछ बढ़ा रहता है। सभी के यहाँ वही परेशानी, वही मिट्टी का चूल्हा है, तो जो समस्या एक की होगी, वही दूसरे की भी हो सकती है। अंतर अनुपात का है, किसी को कम किसी को ज्यादा। इस कहावत को स्त्रियां मध्यप्रदेश में कहती हैं – "घरौघर मातीच्या चूला।

घर जरिगा तो पंचोलिया क पूछ्या।

श०– पंचोलिया – जिस टोकरी या झबिया में स्त्रियां सादापान की ढोली भीगे कपड़े में रखती हैं, उसी में बहुत से लोग कत्था, चूना आदि पान लगाने वाला सामान भी रखते हैं। इसकी कथा इस प्रकार है – "कोई स्त्री पान की बहुत ही शौकीन थी मगर उससे कभी किसी ने नहीं कहा कि "तुम्हें तो पान बहुत ज्यादा पसंद है। तुम पान बहुत खाती हो।" उसे एक बात सूझी। उसने कुछ घर के कूड़ा कर्कट के साथ बगल में अपनी पंचोलिया रखकर आग लगा दी और चिल्लाई अरे घर में आग लग गई। गुहार सुनते ही पड़ोसी दौड़ पड़े। लोग बुझाने गये। इतने में एक बोला – अरे पान की पंचोलिया अभी बची है इसे तो हटाय लो। तभी वह स्त्री बोली – यही पहिले कहि देत्यो तो काहे के इतनो सब कुछ जरि जाते। अब घर जरिगा तो पंचोलिया के सुधि आई।

'घर बरिगा तौ बहुंटा क पूछै।

यह भी उपरोक्त कहावत की भांति एक कथा पर आधारित है। किसी स्त्री का पति परदेश से कमाकर आया तो उसके लिये बहुंटा बनवा कर लाया। बहुंटा पुराने जमाने में एक ठोस चाँदी का जेवर होता था, जिसे स्त्रियां बाँह में पहना करती थीं। तो बहुँठा पहनने के बाद स्त्री ने बड़ी कोशिश की कि कोई तो पूछे इसके बारे में कौन लाया, किसने

बनवाया, कब बना, कितने का बना, आदि तमाम बातें। मगर किसी ने उसके गहने के बारे में नहीं पूछा। एक दिन उसे बड़ा क्रोध आया। फलतः उसने अपने घर में आग लगा दी और गुहार लगाने लगी। दौड़ो –दौडो आग लग गई तो तमाम लोग आग बुझाने को इकट्ठा हो गये। वह उसी बाँह को उठा उठाकर बंहुटे के इशारे से बताती, इहां भी लगी है, अरे इधरौ भी लगी है तो लोगों को समझ में आया। किसी ने पूछा–यह तो बहुत कीमती है इसे कब बनवाया। इस पर वह स्त्री बोली – जब सारा घर जरिगा तो तुहै पूछय के सुधि आय कि कब बना। पहिलेन पूछ लेतेव।

घर तंग, बहू जबरजंग।

अ०– घर में ग़रीबी है मगर बहू खर्च में बड़ी तेज़ है।

घर फूंकि के तमासा न देखो।

अ०– घर में आवश्यकता से अधिक़ पैसा या सामान खर्च न करो।

घर फूटे गंवार लूटे।

अ०– घर की आपसी फूट का फ़ायदा दूसरे उठाते हैं।

घर मिलत तो बर नाहीं, बर मिलत तौ घर नाहीं।

अ०– लड़की के ब्याह का मसला बड़ा टेढ़ा होता है। ऐसे संबंध को जोड़ने में बड़ी सावधानी बरतनी पड़ती है। घर बर की समस्या तो बहुत पुरानी है। कहीं घर ठीक है तो बर नहीं, बर ठीक है तो घर नहीं अच्छा है।

घर मा आई जोय, टेढ़ी पगड़ी सीधी होय।

जब तक किसी लड़के की शादी नहीं हुई रहती, तब तक जिम्मेदारी का कोई बोझ सिर पर नहीं होता। यहाँ टेढ़ी पगड़ी का मतलब है फैशन करना। मगर जिस दिन से ब्याह हो जाता है बहू घर में आ जाती है तो उसके बाद से सारी शेखी बंद हो जाती है।

घर मां दिया न बाती, मेहरी डोलय रसमाती।

अ०– कोई स्त्री जब घूमने, घर–घर जाने के चक्कर में रहे और अपने घर की उसे कोई चिंता ही न हो तो कहावत कही जाती है।

अ०– घर में तो अंधेरा पड़ा है, सारा घर भूतों का डेरा बना है और औरत का यह हाल कि अपने गुमान में ही रसीली बनी चारो ओर घूमती फिरती है।

घर मां खान न पान,मेहरी के बड़ा गुमान।

अ०– घर में खाने पीने को कुछ नहीं और स्त्री को देखो तो उसके घमंड की सीमा ही नहीं है।

घर में नहीं धागा अलबेला मांगे पागा।

अ०– घर में एक सूत भी नहीं है, एक अनोखा व्यक्ति है जो पगड़ी की मांग कर रहा है।

'घर में रहे न तीरथ गये, मूंड़ मुड़ाय फजीहत भये।'

अ०– अपनी जिदगी का कोई भी काम पूरा न कर पाने पर कहावत कही गयी है। न तो घर ही रहे न तीर्थ–यात्रा की। सिर मुड़ाकर बेकार अपनी हंसी उड़वाई। किसी काम लायक न होना।

घर के खोवे तो आंखें होय।

अ०– जब अपने घर से कोई सामान जाये या ज्यादा खर्च हो तो फिर समझ में आवे कि दूसरे का सामान व्यर्थ में जाया करने पर कितना कष्ट उसे होता होगा।

घर मां बिलौटा बाघ होय।

अ०– अपने–अपने घर में सभी शेर हो जाते हैं। कहा है अपनी गली में कुकुरा बरियार होत। अपनी हद में आने के बाद सबको ताकत मिल जाती है, बिल्ली भी बाघ हो जाती है।

घर मां मूसै डंड मारै, ससुरारी, मां हाथी मांगै।

श०– मूसै–चूहे, डंड मारै–उठना–बैठना, कसरत करना। भूखे रहना।

कहावत उस समय कही जाती है जब कोई आदमी अपनी औकात से कहीं ज्यादा धन पाने की लालच करता है।

अ०–घर में अपने तो कुछ है नहीं, यहाँ तक कि खाने को दाना नहीं है। चूहे तक भूख के मारे उठक–बैठक लगाये है मगर ससुराल वालों से हाथी चाहिये। इतनी बड़ी मांग किस औकात पर आदमी देगा?

घर मां बेटी गुठली तरसै।

अ०– जब किसी को हर प्रकार की सुविधायें हों फिर

भी उपलब्ध न हो ऐसे जैसे करमहीन नर पावत नाहीं, तो कहावत कही जाती है। घर में बिटिया आम की गुठली खाने को तरस रही है।

" घा "

घाघ बात अपने मन गुनहीं
ठाकुर भगत न मूसर धनुही।

श०– गुनहीं–सोचना, समझना।

कहावत ठाकुरों पर कही गई है

अ०– ठाकुर कभी भी भगत नहीं हो सकता है, न झुक सकता है। जिस प्रकार से कि मूसर जैसी अनाज कूटने वाली वस्तु कभी झुककर धनुष नहीं बन सकती है उसी प्रकार से ठाकुर भक्त नहीं बन सकता है, न झुक सकता है।

सूके केरी बादरी, रहे सनीचर छाय,
कहे घाघ सुन घाघनी बिन बरसे ना जाय।

कहावत घाघ कवि की है। यदि आकाश में शुक्रवार के दिन बादल चढ़ते हैं और वे शनिवार तक आकाश में छाये रहते है तो वे बिना बरसे नहीं जाते हैं, ऐसा घाघ कवि अपनी पत्नी घाघिन से कहते हैं।

घाघ न देखै ऊ देखै बिलारी,
ठग ना देखै ऊ देखै पंसारी।

श०– बिलारी–बिल्ली। ठग–जो ठगी करता हो, किसी की वस्तु आँखों में धूल डाल कर उठा ले जाना, किसी से कोई सामान ले लेना। पंसारी – हल्दी, धनिया मिर्च, मसाला बेचने वाला, बनिया।

अ०– घाघ कवि का कथन है क़ि जो वस्तु जिसको लेनी होती है या जो वस्तु जिसके काम की होती है, वह उसी पर अपनी नजर गड़ाये हरदम उसी की ताक में रहता है। जैसे किं दूध का मालिक दूध हटाना या संभालना भले ही भूल जाय किंतु बिल्ली को तो दूध ही चाहिए, इसलिये उसका ध्यान हर समय दूध में रहता है। उसी प्रकार से जिस आदमी या पंसारी को ठगना होता है वह लूटने के चक्कर में अनजान बना रहता है लगातार पंसारी का ध्यान ठगी पर लगा रहता है। ध्यान चूका नहीं कि धोखा हुआ।

घायल की गति घायल जाने औरन जाने कोय।

यह पद मीराबाई का है। लोग जब अपनी व्यथा की जानकारी किसी को देते हैं तो कहते हैं।

अ०– जिसके ऊपर दुःख पड़ता है वहीं जानता है दूसरे को उस कष्ट का क्या अनुभव होगा? कहा है "जेहिके पाँव न फटै बेवाई ऊ का जानै पीर पराई' ।

घास खाये दिन कटे तो सबै खायँ।

कहावत हल्के रद्दी भोज्य पदार्थ पर कही गई है।

अ०– आदमी का दिन यदि घास खाने से बीतता तो सभी घास खाकर अपनी भूख शान्त कर लेते। घास जानवरों का भोजन है। अतः जिसको जिस वस्तु की जरूरत होती है उसका काम उसी से चलता है।

घर में का सांप, नहीं लोटते ।

यानी – अच्छी जगह भी दुष्ट लोग रहते हैं।

" घि "

घिव देत घोड़ नरियाय।

श०– कहावत किसी के साथ भलाई करने पर कही गई है जब वह आक्रोश प्रकट करे।

अ०– घोड़े को घी उसकी प्रिय वस्तु खिलाई जा रही है और वह बिना मतलब के चिल्ला रहा है। तात्पर्य यह है कि किसी के साथ भलाई की जाय और वह अनायास शोर मचाये।

घिव अड़ाय पहिती मां जाय।

श० – अड़ाय – गिरना, पहिती – साग व दाल जब एक साथ बनाई जाय तो उसे सगपहिता या पहिती बोलते है।

कहावत का मतलब है कि यदि कोई वस्तु अचानक गिर भी जाती है तो वह ऐसा गिरती है कि अपनों के ही किसी काम में आ जाती है। उस वस्तु के गिरने से हानि नहीं होती है तो इस कारण से संतोष रहता है।

अ०– यदि घी गिर भी गया तो वह पहिती में ही गिरा जो खा लिया जायेगा। यानी वस्तु का सदुपयोग होने पर पश्चाताप न होना।

घिव के लड्डू टेढ़व मेंड़।

अ०– कोई भी वस्तु जब अच्छी बनी होती है और शक्ल बढ़िया नहीं होती तो कहावत कही जाती है।

अ०– घी का बना लड्डू यदि बनाने में टेढ़ा भी बन गया है तो कोई बात नहीं है, खाने में तो स्वाद युक्त है ही।

घिव न लागे पक्की होइ जाय।

कहावत कम खर्च करने वाले के ऊपर कही गई है।

अ०– काम सभी हो जायं, मगर खर्च एक भी न लगे, जैसा कि कहा गया है कि पक्की यानी पूड़ियाँ बन जायें, किंतु घी न लगे। भला यह कैसे हो सकता है?

घिव खाय बाप हाथ सुंघावै बेटा।

बाप की कमाई या बाप के नाम पर नाम कमाने व उतनी इज्ज़त की आकांक्षा करने वाली औलाद के ऊपर कहावत कही गई है या किसी के नाम पर नाम कमाने वाले या यश लेने वाले पर कथनी कही गई है।

अ०– बाप घी खाता है तो बेटा हाथ इसलिये सुंघाता है कि मैने भी घी खाया है यानी मेरा भी महत्व है। इसका दूसरा अर्थ है कि बाप घी खाये और बेटा घर की इज्जत बनाये कि मेरे यहां घी खाया जाता है।

घिव पिसान केकै, परसवइया,
दलिद्दर अहय।

श०– परसवइया–भोजन परोसने वाले।

अ०– जब कोई खाना परोसते समय सामान परोसते समय कंजूसी करता है तो कहावत में कहते है कि घी और आटा किसी दूसरे का लगा, यहां परसने वाले की परसने में जान निकल रही है।

" घु "

घुसिया हाकिम, रुसिया चाकर।

श०– घुसिया– घूसखोर अफ़सर, रुसिया– रूठा हुआ, नाराज़, कुछ कहने पर जल्दी क्रोधित होने वाला नौकर।

अ०– बात–बात में नाराज़ होने वाला नौकर, मालिक को क्या डरेगा तथा आफ़िस में घूस लेने वाला अफ़सर अपने से ऊपर के हाकिम से क्या डरेगा?

घुटना मुड़ी तौ पेटेन की तरफ जाई।

श०– घुटना– जांघ और पैरों के बीच की गाँठ, मुड़ी– बटोरना, पेटेन– पेट।

कहावत अपनों अथवा अपने स्वजनों पर कही गई है।

अ०– जैसे अपने शरीर का कोई अंग मुड़ेगा तो वह अपने शरीर की ओर ही मुड़ेगा। इसी प्रकार से किसी भी समस्या या कष्ट में अपना ही सहायता देता है। कहा है–

केतनौ भइया बैरी तबहूँ दाहिन बाँह।

" घू "

घूस कै चोरी, वसूले पै बहस।

अ०– कहावत ऐसे व्यक्ति के ऊपर कही गई है जो छिपा रुस्तम हो। जो एक तरफ तो चोरी–चोरी घूस लेता रहे दूसरी तरफ कानून कायदे, नियमों, वसूल क्या–क्या है, उन पर बहस भी करता रहे।

घूरेव क दिन कबौ लउटत है।

श०– घूरेव– जहाँ पर कूड़ा फेंका जाता है। लउटत– वापस होना।

बुरे दिन अच्छे हो जाते हैं तो कहावत लागू की जाती है।

अ०– जब घूर जैसे नकारे स्थान पर भी हरियाली दिखाई दे सकती है तो फिर आदमी की तो बात ही क्या है? उसका समय कभी तो फिरेगा ही। देखने में आता है कि जहाँ पर कभी कूड़ा–कर्कट गांजे जाते थे, उस जगह पर विशाल इमारतें खड़ी हो जाती हैं।

घूमी फिरी बलि गई, परसै की दाँव टरि गई।

अ०– काम का जब समय आया खिलाने–पिलाने का तो धीरे से खिसक गई।

" घो "

घोड़ा गाड़ी नोना पानी,
अउर रंडी कै धक्का,

इन तीनिव से बचा रहै
तौ केलि करै कलकत्ता।।

श०– नोना पानी – नमकीन पानी, रंडी – वेश्या, केलि– रास रंग।

कहावत कलकत्ते के वातावरण के ऊपर कही गई है। क्या–क्या बचाने पर कलकत्ते में आदमी ठीक तरह से रह सकता है।

अ०– पहले के ज़माने में कलकत्ता में घोड़ा–गाड़ी का बड़ा प्रचलन था। घोड़ा गाड़ी, नमकीन पानी और वेश्या का धक्का ये तीनों बातें यदि आदमी सभाँल ले जाता है, तो कलकत्ते जैसे शहर में मौज से रह सकता है।

घोर अनीत भूप का नासै, धन नासै बिनु धर्मा।

श०– घोर–अत्यधिक, अनीत– गलत काम, अनाचार, भूप– राजा, नासै– नशा करता है, धर्मा– धर्म।

अ०– कहावत धर्मपरक व सिद्धान्तवादी है। यानी जब राजा अपने राज्य में अत्यधिक अत्याचार, अन्याय करता है तो उसका नाश निश्चित है। धन का नाश तब होता है जब कोई पूजा–पाठ, दान–दक्षिणा न करे। कहते हैं घर के अंदर एक दो नालियाँ होती हैं जिनसे घर का गंदा या फालतू पानी बहा करता है वर्ना घर के भीतर कचरा हो जाय। उसी प्रकार से मनुष्य के तन–मन की गंदगी धोने के लिये दान, पुण्य, धर्म, कर्म आवश्यक हो जाते हैं।

घोड़वा घसियै मां बिकाय जाये।

कहावत उस समय सामने जाती है जब कोई आदमी किसी के घर रोज़–रोज़ मेहमान बना रहे या रोज़ ही किसी न किसी प्रकार का खर्च सिर पर अपनों के द्वारा आया ही रहे तो कहतें हैं।

अर्थात्–घोड़ा तो रोज़–रोज़ की घास ही लेते खिलाते बिक जायगा। खर्चे को सँभाल न पाना।

घोड़ न कूदै, पहिले बछेड़वै कूदै।

कहावत उस समय कही जायेगी जब किसी झगड़े झंझट में जिसे बोलना चाहिए वह तो चुप रहे और बीच में दूसरा ही कोई बोल पड़े।

अ०– घोड़े को कूदना चाहिए वह तो न कूदा, बीच में आ कर बछड़ा ही कूदने लग जाय। जिसे बात करना है वह बोल ही नहीं पाये, अन्य कोई बोल उठे।

घोंची देख्या वहि पार,
थैली खोल्या यहि पार।

श०– घोंची– बैल की एक प्रकार की जाति है जो अच्छी मानी जाती है। थैली– पहले जमाने में थैली में ही रुपया पैसा रखा जाता था।

अ०– यदि घोंची बैल कभी भी, नदी के उस पार भी, दिखाई पड़े तो उसे खरीदने के लिए इसी पार से थैली खोलकर तैयार रहना चाहिए।

घोड़ा बेंचि के सोवति हैं।

अ०– बिना किसी चिन्ता, फिक्र के आराम से सोना।

घोड़न भैंसन बैर बा।

अ०– कहते हैं कि घोड़ा और भैंसे में दुश्मनी होती है जब दो आदमी में बैर होती है तो कहावत कही जाती है कि आपस में घोड़े भैंसे जितना बैर है।

घोड़ा कै घर केतनी दूर।

कहावत परिश्रमी व्यक्ति के ऊपर कही गई है। जो आदमी कठिन मेहनत करता है उसके लिए कोई भी काम मुश्किल नहीं है। इस पर कहा गया है।

अ०– घोड़ा जो सरपट दौड़ने वाला जानवर है उसके लिए घर दूर होकर भी निकट ही है। काम करने वाले के पैर के नीचे हर काम आ जाता है।

घोड़ा क गिरा सम्हल जाय,
नज़र का गिरा नहीं सम्हलत।

कहते हैं जब मनुष्य आपसदारी में एक दूसरे के साथ कटु व्यवहार करता है या किसी बात के कारण उसे कोई दुर्व्यवहार सहन करना पड़ता है और वह एक बार नज़र से उतर जाता है तो फिर कभी भी मन में उस व्यक्ति के प्रति प्रेम उत्पन्न नहीं होता।

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय।
टूटे से फिर ना जुड़ै, जुड़ै गांठ परि जाय।।

कहावत भी प्रेम पर कही गई है।

अ०– घोड़े का गिरा इंसान तो एक बार फिर भी सम्हल जाता है, मगर कोई आदमी किसी के मन, दिमाग से नीचे गिर गया तो वह जीवन में कभी उस स्थान पर नहीं आ सकता है। उसकी इज्ज़त, प्यार हमेशा को घट जाता है। यानी समय के साथ ऊपरी चोट का घाव भरता है किंतु बात का घाव राख की चिनगारी की तरह हमेशा मन में सुलगता रहता है। वह समय के साथ फिर कुरेद उठता है।

घोड़ा घास से यारी करै, तो चरै कहाँ जाय?

जो आदमी जिस वस्तु से अपना जीवन–निर्वाह करता है, जो जिसकी जीविका है, उसमें यदि हमेशा आपसदारी निभाने लगे तो उसका काम कैसे चले? जैसे कोई अपनी रोज़ी, पेशे में आये दिन संकोचवश नुकसान उठायेगा, तो खायेगा क्या? उसका जीवन–निर्वाह कैसे होगा?

अ०– यदि घोड़ा घास को मित्र बनाले, सोचे कि यह तो मित्र है इसे कैसे चरूं? तो वह रोज़ ही भूखा रह जायेगा। इसलिए शील, संकोच, मित्रता, आपसी व्यवहार उतना ही करना चाहिए जितने में अपनी कोई हानि न हो।

घोड़ेन क चढ़वइया गिरति।

अ०– जो घोड़े पर चढ़ता है वही गिरता भी है। जो चढ़ेगा ही नहीं वह गिरेगा क्या?

घोटत विद्या, खोदत पानी।

कहावत संस्कृत की है जो शिक्षाप्रद है।

श०– घोटत– घोटना, रटना, याद करना, परिश्रम करना, खोदत– खोदना, धरती की गहराई तक खोदाई करना।

अ०– बार–बार पढ़ने, रटने से विद्या आती है। किसी ने कहा है– "अनभ्यासे विषम् शास्त्रं" यानी बिना अभ्यास के, बिना रटे हुये कोई चाहे कि मैं विद्या ग्रहण कर लूँ, तो असम्भव है। उसी प्रकार से ज़मीन की खोदाई के बिना कोई चाहे पानी पा जाऊँ तो असम्भव है।

घोड़ा क लात, घोड़ै सहत।

अ०– घोड़े की लात घोड़ा ही बरदाश्त कर सकता है। यदि कहीं घोड़े की लात आदमी को लग गई तो वह घायल हो जायगा।

" घु "

घुइसिव मंड़ये चढ़ी।

श०– घुइस– छंछूदर, मंड़ये– मंडप, शादी में जिसे छवाकर विवाह कराया जाता है।

अ०– किसी भी कारण से जब किसी कन्या का विवाह समय से नहीं हो पाता विशेषकर कुरूपता के कारण तो कहते है कि चलो छंछूदर भी मंड़ये में गई।

घुंघुट ठेहुन तर, बोल बबुर तर।

श०– घुंघुट–घूंघट। सिर के पल्ले को स्त्रियाँ जो खीचकर पूरा मुख ढक लेती हैं। ठेहुन– लम्बा घूंघट, एक हाथ का घूंघट बोल– बोली, आवाज़, जोरों से बोलना बबुर– बबूल के पेड़ तक।

अ०– यह कहावत उस समय चरितार्थ की जाती है, जब कोई बहू घूंघट तो बहुत लम्बा निकालती हो, किंतु आवाज़ बहुत ही ज्यादा तेज़ हो, बोलने पर दूर तक सुनाई पड़ती हो। यानी कि घूंघट तो बहुत बड़ा है मगर बोली इतनी ज़ोरदार है कि बबूल के पेड़ के नीचे तक सुनाई पड़ती है।

" चं "

चंदन की चुटकी भली, गाड़ीभरा न काठ।

वस्तु अच्छी हो चाहे थोड़ी ही क्यों न हो। कहावत के अनुसार–

अ०– गाड़ी भर काठ लेकर क्या करें, चंदन जो शीतल है, मूल्यवान है, उसकी एक चुटकी ही बहुत है।

चन्द्रमा मां गहन लागिगे।

अ०– अच्छे भले आदमी के ऊपर कभी–कभी बड़े–बड़े दोषारोपण भी किये जाते हैं। जैसे कि कहा है कि चन्द्रमा जो प्रकाश का पुंज है उसमें ही कालापन का कलंक ग्रहण के रूप में लगता है।

चंदा बैठो मातनो सूरज बैठो कच्छ,
ऐसा बोले भड्डरी, बांगर लोटे मच्छ।

श०– मातनो –वर्षा ऋतु में चन्द्रमा–सूर्य के चारों ओर प्रकाश का एक घेरा सा बन जाता है। चन्द्रमा के घेरे को मातनो, व सूर्य के घेरा को कच्छ कहते है। बांगर–जमीन का वह भाग जहां बाढ़ आने पर भी पानी नहीं जाता ।

अ०– यदि सूर्य–चन्द्रमा ऐसे घेरे हो तो समझो कि इतना पानी बरसेगा कि बांगर जैसे स्थान में भी मछलियाँ तैरेंगी।

चंपा के दस फूल, चमेली के एक कली,
मूरख की सारी रात, चतुर की एक घड़ी।

कहावत मूर्ख व बुद्धिमान के ऊपर उद्धृत की गई है कि मूर्ख और बुद्धिमान में कितना ज्यादा अंतर होता है।

अ०– जहाँ चंपा के दस फूल वहां चमेली की एक कली ही काफी है। उसी प्रकार से जहां पर मूर्ख किसी बात को रात भर सोचकर भी नहीं समझ पाते, वहां पर बुद्धिमान मनुष्य एक घंटे में सब कुछ समझकर बता देता है।

चंडी घर लिप़बू? नाहीं, खोदबै।
चंडी घर खोदबू? नाहीं, लिपबै।

कहावत एक ऐसी ज़िद्दी, मनमानी, मूर्खा नारी पर चरितार्थ की गई है जो हर काम को उलटा ही करती है।

अ०– किसी ने कहा चंडी महारानी ! घर लीपोगी? तो बोली–नहीं खोद दूंगी यानी चिकना साफ़ करने के बजाय घर को छिन्न भिन्न करना। फिर दूसरी बार पूछा गया "हे चंडिका देवी, घर खोदोगी– बोली नहीं लीपूंगी। प्रबला स्त्री घर में किसी का कहना नहीं मानती है। अपनी ज़िद्द के मारे किसी की नहीं सुनती। इस प्रकार की स्त्रियों का अपना एक अलग ही मनोविज्ञान होता हैं।

चंचल नारि की चाल छिपै नहिं,
नीच छिपै न बड़प्पन पाये।
जोगी का जो नीक घरो?
कोई कर्म छिपै न भभूत रमाये।

अ०– जो स्त्री चंचल प्रकृति की होती है उसके कर्म उसकी चाल ढ़ाल छिपाने से नहीं छिपती। उसी प्रकार से नीच व्यक्ति जब बड़ा आदमी बन जाता है तो उसकी नीचपने की आदतें, स्वभाव, बात, व्यवहार नहीं छिपता, चाहे वह जितना भी बड़प्पन से रहने की कोशिश करे। कहीं न कहीं उसकी नीचता का प्रमाण अवश्य मिल जाता है। उसी प्रकार से योगी, संन्यासियों का कोई कर्म भभूत रमाने से नहीं छिपता है।

" च "

चमगादड़ के घर मेहमान आये,
हमहूँ लटके, तुमहूँ लटके।

श०– चमगादड़– एक ऐसा पक्षी होता है, जो छत के ऊपर उलटा होकर लटका रहता है।

कहावत तब कही जायेगी जब घर आये मेहमानों का स्वागत, सत्कार साधारण रीति से हैं, वैसे ही किया जाय।

अ०– चमगादड़ के यहाँ मेहमान आये तो बोला जैसे हम स्वयं लटके हैं वैसे ही मेहमान तुम भी आकर लटको। सामान्य व्यवहार देना।

चउथ, चतुर्दसि, नौमी रिक्ता,
बप्पा घर जिनि जायो पूता।

श०– चउथ, चतुर्दिस, नौमी– तिथियां हैं।

कहावत ज्योतिष के विचार से तिथियों पर कही गई है।

अर्थात्– चौथ, चतुर्दशी, नौमी तिथियाँ खाली मानी गई हैं। ज्योतिष के अनुसार इन तिथियों में बाप के घर भी नहीं जाना चाहिए। कुछ लोग प्रतिपदा (परीवा) का भेद भी नहीं मानते हैं।

चइत के पछताने, गोहूँ नाहीं होत।

कहावत समय के ऊपर कही गई है। जब समय बीत जाता है तो वापस नहीं आता। उस बीते समय के लिए कोई पश्चाताप करे तो गलत ही होगा।

अ०– चैत्र मास में जब गेहूँ की फसल कटने का समय आया तो किसी ने गेहूँ की राशि देखकर पश्चाताप करना शुरू किया तो उससे गेहूँ नहीं मिल सकता है। गेहूँ तो बोने के समय सचेत रह कर बोया जाय तो चैत में मिल सकता है। इसी प्रकार से कोई भी काम हो, हमेशा पहले से सचेत रहने पर ही समय पर कार्य पूरा होगा।

चट्ट रोटी, पट्ट दाल खानेवालो! हो तैयार।

यानी– जल्दी–जल्दी भोजन के लिए तैयार होना।

चना, चबैना, गंगजल जौ पुरवै करतार।
काशी कबहुँ न छाँड़िये विश्वनाथ दरबार।।

अ०– यदि काशी नगरी में विश्वनाथ बाबा की शरण में चना का चबैना, गंगा जी का पवित्र जल बराबर मिलता रहे तो काशी नगरी को कभी नहीं छोड़ना चाहिए।

'चट्ट मँगनी पट्ट व्याह'।

अ०– कहने का मतलब है कि जैसे ही मंगनी यानी वर छेकाई (वरीक्षा) हो वैसे ही तुरन्त ब्याह भी हो जाना चाहिए। किसी कार्य में शीघ्रता।

चना चित्रा चौगुना, स्वाती गोहूं होय।

अ०– घाघ कवि का कहना है कि चना चित्रा नक्षत्र में बोने से और गेहूँ स्वाती नक्षत्र में बोने से चौगुना होता है।

चढ़त जो बरसे आद्रा, उतरत बरसै हस्त,
केतनौ राजा डांड़ ले, हारै नाय गिरस्थ।

श०– चढ़त आद्रा नक्षत्र के चढ़ते ही, उतरत– समाप्त होते हस्त– एक नक्षत्र है, डांड–दण्ड जुर्माना, गिरस्थ– किसान, घर–गृहस्थीवाला।

अ०– कहा है यदि आद्रा नक्षत्र के चढ़ते ही पानी बरस जाय और हस्त उतरते बरसे तो अनाज खूब पैदा होता है, फिर तो राजा, जमींदार, किसान से चाहे जितना भी जुर्माना लें, वह कभी हार नहीं मान सकता है।

चटका मधा, पटकि गा ऊसर,
दूध–भात माँ परिगा मूसर।

अ०– मघा नक्षत्र का पानी खेतों के लिये अमृत होता है और कहीं यदि मघा में तेज़ धूप निकली, पानी न बरसा तो उसरही ज़मीन चटक कर फट जाती है ऊसर भूमि में केवल एकबार धान की फसल होती है। बिना पानी के घास भी सूख जाती है तो समझो कि मघा के न बरसने से धान की फ़सल चौपट हुई और धान न होने के कारण दुधारू जानवरों को चारे की तकलीफ़ हुई। उधर धान जाने के कारण चावल गया, इधर घास न होने के कारण जानवरों का दूध गया तो दूध भात दोनों से हाथ धोना पड़ गया।

चना अधपका, जौ पक्का काटय,
गोहूं कै बाली लरकी काटय।

घाघ कवि की खेती विषयक कहावत है। यानी चना अधपका हो और जौ एकदम पक गया हो तो काटना चाहिए। गेहूँ की बालियाँ जब एकदम से लटक गई हों तभी काटना चाहिए।

चना में सर्दी बहुत समाई,
ताको जान गधेला खाई।

श०– सर्दी– नमी, अधिक सींचने पर खेत में सीलन का होना, गधेला– एक प्रकार का कीड़ा होता है, जो चने के खेत में लगकर फसल को बर्बाद कर डालता है।

अ०– कवि घाघ का कथन है कि चने के खेत को यदि अधिक सीचा जाय तो उसमें गधेला नामक कीड़ा लग जाता है।

चना सींच कर जब हो आवै,
ताको पहिले तुरत खोटावे।

अ०– चने का यही दस्तूर है कि चना जब सींचने के काबिल हो तो उसकी खोटाई शीघ्र ही करवा देनी चाहिए। उससे एक गदृदे में कई– गद्दे फूटते हैं।

चमकै पच्छिव उत्तर ओर,
तौ जानौ पानी का जोर।

१अ०– जब पश्चिम, उत्तर की ओर बादलों में चमक हो, तो समझो कि अब पानी बरसेगा।

चलय न पावै कूदै नार।

अ०– चलने तो पाते नहीं और चले हैं नाला कूदने। यानी ज़रा सा काम करने की क्षमता शरीर में नहीं है, और चले हैं बड़ा काम उठाने।

चलै न पावै, 'कूदन' नांव।

अ०– जिसके चल पाने तक की शक्ति नहीं है और नाम पड़ा है "कूदन"। यानी कूदते बहुत हैं। कहावत नाम की विडम्बना पर कही गई है।

चलत बर्दा पैना से नहीं मारि जातै।

अ०– जब बैल चल रहा हो, हल जोत रहा हो या दंवाई में बराबर चलता हो तो उसे डंडे से नहीं मारा जाता है। इसी प्रकार से कोई आदमी यदि ठीक तरह से अपना काम कर रहा हो तो उसे बार–बार डांट या दुरियाना नहीं चाहिए।

व्यर्थ के बोलते रहने से भी आदमी का स्वभावत्रक्रोधी हो जाता है।

चलनी क चोकर, जौ क पिसान,
बिटिया क बेटवा कउने काम।

कहावत नाती यानी दौहित्र के प्रति कही गई है।

खून का रिश्ता जितना ही निकट होता है वह उतना ही ज़ोर मारता है। तभी कहावत है–

अ०– जैसे चलनी का चोकर, जौ का आटा हल्का होता है किसी काम का नहीं होता, वैसे ही लड़की का लड़का भी किसी काम का नहीं होता। वह हमेशा अपना पक्ष पकड़ेगा।

चउक मां जूता, गली में सलाम।

कहावत ऐसे लोगों के ऊपर कही गई है जो भरी सभा में तो बेज्जती करते हैं और अकेले में जयराम जी की बोलते हैं। ऐसे लोगों की जैरामी (अभिवादन) किस काम की?

यानी कि भरी बाज़ार के बीच तो जूतमपैजारी करना, इतनी बड़ी बेइज्ज़ती करना और गली, कूचे के बीच मिलें तो झुककर नमस्ते बोलना। दोहरी नीति चलना। भीड़ में बड़े आदमी बनना तथा अकेले में बिल्ली बनना।

चना अस बरियार न होइ जाये कि
भारय फोरि डारे।

श०– बरियार– जबरदस्त, शक्तिशाली।

कहावत किसी कमज़ोर, दीन हीन–दुर्बल व्यक्ति को देखकर कही गई है जो अपनी निर्बलता एवं गरीबी के कारण किसी से झगड़ा, लड़ाई नहीं कर सकता है। उसके साथ चाहे अन्याय भी हो तो भी वह कुछ कर सकने की स्थिति में नहीं आ सकता है।

अ०– चना इतना जबरदस्त न हो जायेगा कि भाड़ ही फोड़ डालेगा। दूसरे रूप में कहावत का उपयोग उस समय भी हो सकता है जब कोई अपने प्रतिद्वन्दी को चुनौती दे कि वह हमसे इतना बलवान न हो जायेगा कि हमारे ऊपर हमला कर देगा। यानी कमजोर से अधिक अपने को बलवान साबित करना।

चउदा गांठी क चउदा दूब,
चउदस तिथि क अनंता पूज।

कहावत अनन्त चौदस के पर्व के ऊपर कही गई है जो भादों मास के उजालेपक्ष की चतुर्दशी को पड़ती है। उसमें लोग अनंत भगवान् की पूजा चौदह गाँठ की दूब से करते हैं। दूब को रखकर अगियार करके वही दूब भुजा में स्वयं पहिन लेते हैं।

अ०– कहा गया है कि भादों मास की उजाली चतुर्दशी को १४ गाँठ की दूब को रख करके अनंत की पूजा करनी चाहिए।

चलत समय नेउरा मिलि जाय,
बाम भाग चारा भखु खाय,
काग दाहिने खेत सुहाय,
सफल मनोरथ समझो भाय।

श०– नेउरा– नेवला, बाम– बाई दिशा में, काग– कौवा, मनोरथ– मन की कामनायें।

कहावत यात्रा के शुभ लक्षणों के ऊपर कही गई है।

अ०– चलते समय यदि नेवला बाई दिशा में चारा खाते समय मिले, दाहिने हाथ के खेत में कौवा दिखाई पड़ जायं तो समझो कि सभी मन में सोचे गये कार्य पूर्ण होंगे।

चइत सोवै रोगी, बइसाख सोवै जोगी,
जेठ सोवै राजा, असाढ़ सोवे अभागा।

अ०– चैतमाह में जो दिन में सोता है वह रोगी है। बैसाख में योगी लोग दिन में आराम करते हैं। जेठ मास में रईस, राजा, बडे आदमी दिन में सोते हैं क्योंकि गर्मी, लू तपन इतनी होती है कि बाहर निकलना कठिन हो जाता है। अंत में कहा गया है कि आषाढ़ माह का सोने वाला अभागा कहलाता है। यह माह किसानों के लिये खेती, गृहस्थी के लिये सबसे महत्वपूर्ण होता है। इसमें ही किसान अपने खेतों की जोताई, बोवाई करता है। किसानों पर कहावत है– "तेरा कातिक, तीन असाढ़।

चना व चुगलखोर, मुँह लगा नहीं छूटता।

श०– चुगलखोर– एक आदमी की बात दूसरे से, दूसरे की बात तीसरे से कहने वाला आदमी चुगलखोर कहलाता है। मुँहलगा– निडर

कहावत किसी चुगलखोर को ही देखकर चरितार्थ की गई है।

अ०– कहा गया है कि चना व चुगलखोर अपनी आदतों से बाज़ नहीं आते। अतः चना व चुगलखोर मुंह लगे होने पर छूटते नहीं। उसी प्रकार जो चने का प्रेमी है वह चना खाना बेहद पसंद करता है।

चाहे घिव कै गगरी ढरकि जाय,
मुल उठि, न जाये।

कहावत– कामचोर, आलसी, लोगों को देखकर कही गई है।

अ०– चाहे जितना भी भारी से भारी नुकसान हो जाय देखने वाले ऐसे ही बैठे–बैठे देखते रहते हैं मगर उठेंगे नहीं । चाहे घी की मटकी ही क्यों न टेढ़ी हो जाय, सारा घी गिर जाय, मगर सीधा न करेंगे। उनके स्वभाव में बन गया है कि कुछ भी हो जाय, हिलना तनिक भी नहीं है।

चलती का नाम गाड़ी, गाड़ी का नाम चलती।

अ०– दोनों ही एक दूसरे के पर्यायवाची हैं। यानी– चलने का नाम ही चलायमान गाड़ी है, क्रियाशील होना। गाड़ी का नाम भी चलना है। इसलिये कि निष्क्रिय नहीं बैठना चाहिए।

चलनी मां दूध दुहै, करमन क दोस देय।

जानबूझ कर स्वयं गलती करके दोष किसी भले आदमी पर देने वालों के प्रति कहावत कही गई है। अनर्थ करने की आदत जायेगी नहीं, अपनी गलती दूसरों के सिर पर लगाने की आदत सी बन गई है।

अ०– चलनी में भला कहीं दूध दुहा जा सकता है? मगर मूर्खों को क्या कहा जाय? क्रोध या आवेश में दूसरों का व अपना नुकसान करके, झूठा आक्षेप दूसरों पर लगायेंगे कि फलां के कारण ऐसा हुआ या यह मेरे भाग्य में था। अपनी बात को न देखेंगे कि मैं क्या कर रहा हूँ?

चाटुकार, चलहिं जौ बिनहिं बोलाये।

श०–चाटुकार– जो हर समय दूसरों की प्रशंसा के पुल बाँधा करते हैं।

अ०– चाटुकार जो होते हैं वे किसी के बुलाने की प्रतीक्षा नहीं करते बल्कि उन स्थानों पर वे स्वंय ही पहुँच जाते हैं।

चलै न पावइ, रजाई क फांड़ बाँधैं।

श०– फांड़ कछनी, लंगोट या धोती का वह भाग जो लोग कमर में बाँधते हैं। जब कोई आदमी अपनी औकात से अधिक बोझ उठाता है तो उसी पर कहावत लागू की होती है।

चलइ बहुत सो बीर न होई।

अ०— जो बहुत दौड़ता भागता है अपने को बहुत परिश्रमी जाहिर करता है, वह बड़ा बहादुर नहीं कहलाता है।

चटोर ज़बान दौलत का जियान करती है।

अ०— चटोरों पर कहावत व्यंग्य में कही गई है। जिनकी ज़बान चटोरी होती है वे धन का नाश भी करते हैं, अपनी ज़बान के स्वाद के मारे पैसे की कोई कीमत नहीं लगाते। जबतक जेब में पैसा रहता है तबतक घर का खाना भला नहीं लगता है। अतः चटोरी जबान धन का नाश करती है।

चले हर, ना चले कुदारी,
बइठे भोजन, देंय मुरारी।

कहावत भाग्यवादी है। जिसका रखवाला ईश्वर है, उसको किस चीज़ की कमी हो सकती है? कवि 'मलूकदास' ने लिखा है—

अजगर करय न चाकरी, पंक्षी करय न काम।
दासमलूका कहि गये, सबंके दाता राम।।

यानी अजगर कोई काम नहीं करता है। पक्षी भी कुछ नहीं करता है किंतु ईश्वर सबका पेट भरता है। शामतक कोई भी जीव ईश्वर की दुनिया में भूखा नहीं सोता।

अ०— जिसके न हल है न कुदाल है न खेती न बारी, उसको भगवान भोजन पहुँचाता है। यानी -- "सबका दाता राम।" अतः कहावत ईश्वरवादी है।

चढ़त की राजा, उतरत की नखत।

अ०— जब राजा चढ़ाई करता है, तो उसका रूप भयंकर होता है। उसी प्रकार से नक्षत्र उतरते समय कष्टदायी होते हैं।

चटोर खोवै आपन घर,
बतोर खोवै दुइ–दुइ घर।

श०— चटोर— जो अधिक स्वाद लोभी हो, जिसे घर का खाना न भाये बाहर की व बाज़ारू चीज़ें अधिक अच्छी लगें। बतोर— जो बातूनी हो। ज्यादा बातों में अपना समय गँवाये तथा दूसरों का समय भी बर्बाद करे।

कहावत विशेष रूप सें बातूनी, व्यक्तियों के प्रति उद्‌घृत है।

अ०— चटोर आदमी तो अपनी चटोरी ज़बान के कारण अपने ही घर का पैसा बारह फूँकता है। इसलिये वह अपना ही घर बर्बाद करता है मगर जो बातूनी है वह तो जिससे बात करके समय बर्बाद करता है उसका भी घर नष्ट करता है। इस प्रकार से बातूनी आदमी दो–दो घरों को बर्बाद करके रख देता है।

चमड़ी जाय, मुल दमड़ी न जाय।

श०— चमड़ी— चमड़ा, दमड़ी— पैसा, रुपया, धन।

कहावत किसी महा कंजूस, मक्खीचूस के ऊपर चरितार्थ की गई है।

अ०— कंजूस आदमी के शरीर की खाल, चमड़ी चाहे उधड़ जाय, मगर पैसा खर्च न होने पाये। चाहे जितना नुक्सान हो जाये, चाहे महीनों खाट पर बीमार पड़े रहें, किंतु जेब से पैसा न निकल पाये।

कंजूस व्यक्ति भी शारीरिक कष्ट उठा लेगा, किन्तु गांठ का पैसा खर्च न होने देगा।

चक्की मां अनाज डरिहौ, तबै आटा पीस पइहौ।

यानी— परिश्रम व खर्च करने के बाद ही किसी वस्तु का सही व सुंदर रूप सामने आ सकता है। आटा चाहने से नहीं मिल सकता है उसके लिये चक्की में गेहूं डालना होगा, परिश्रम करना होगा या, दूसरा करेगा तो पारिश्रमिक देना होगा, तब कहीं जाकर आटा मिल पायेगा। ऐसे ही किसी कार्य को करने के लिये, पैसा, परिश्रम, साधन, समय सभी की आवश्यकता पड़ती है। कभी–कभी लोगों को जब कब्ज़ की शिकायत हो जाती है तो कहते हैं भई जब तक कुछ खावोगे नहीं तब तक शौच कैसे उतरेगा?

चकमक दीदा खाय मलीदा।

श०— चकमक— इधर, उधर चारो ओर बुरी नज़र से देखने वाली चंचल स्त्री, दीदा— चितवन, नज़र, मलीदा— घी सने आटे की रोटी।

अ०– कहावत दुराचारिणी नारी के ऊपर कही गई है। जो चंचल चितवन की चरित्रहीन नारी होती है वह अपने यारों के बदौलत बढ़िया–बढ़िया खाना हमेशा ही खाया करती है।

चकवा चकई दो जन, इन मत मारो कोय।
यह मारे करतार के, रैन बिछोहा होय।।

कहावत चकवा चकई के माध्यम से सताये हुए लोगों के ऊपर कही गई है।

अ०– चकवा और चकवी को कोई सताओ मत क्योंकि ये भगवान के ही सताये होते हैं। इनको तो रात में स्वंय ही वियोग हो जाता है। कहते हैं कि चकवा, चकवी रात में एक दूसरे से दूर नदी या ताल के दोनों छोर पर रहते हैं। ऐसा कवियों का विश्वास है।

चक्की तर घर तोरा, निकल सास, घर मोरा।

किसी उद्दंड बहू ने सास को झिड़कियां दी है।

यानी– जबतक जांता पीसो तब तक घर सास तुम्हारा, उसके बाद निकल जाओ घर हमारा है।

चाचा चोर, भतीजा काज़ी।

श०– काज़ी– न्याय करने वाला।

जब एक ही घर में दो प्रकार के लोग हों तो कहते हैं–

अ०– चाचा तो चोर है और भतीजा सच कहने वाला न्यायकर्ता बना है तो बात कैसे बनेगी? उस घर की दशा क्या होगी, कैसे निभेगी दोनों की?

चटोरा कुत्ता, अलोनी सिल।

श०– जो इधर, उधर पत्तल चाटता घूमे या जो चाट–पकौड़ा के लिये बाज़ार में घूमे उसे चटोरा कहा जाता है। अलोनी–बिना नमक की, सिल– जिस पर मसाला, दाल आदि पीसी जाती है।

अ०– चटोरे आदमी पर कहावत है कि उसे जो भी मिल जाये वही बहुत है। चटोरे को कहीं निराश होना पड़े तब भी कहते हैं कि चटोरा कुत्ता सिल भी चाटने लगा वह भी बिना नमक के थी। अर्थात् उसे नमक तक नहीं मिला।

चढ़ मार, गूलर पक्के।

कहावत समय के ऊपर कही गई है। समय अच्छा है, लाभ उठा लो।

चलो पेड़पर चढ़ जाओ गूलर पकी हुई है, तोड़ लायें।

चढ़ी कराही तेल न आये, तो कब आये?।

मौके पर जब कोई वस्तु नहीं मिल पाई तो फिर कब आयेगी?

अ०– जब चूल्हे के ऊपर कड़ाही चढ़ गई और तेल न आया तो कोई पकवान कैसे बन पायेगा? समय पर वस्तु की कमी होना।

चना कहे मेरी ऊँची नाक,
एक घर दरिये दुइ घर फाँक।
जो खावे मेरा एक टूक,
पानी पीवै सौ–सौ घूंट।।

श०– ऊँची नाक– इज्ज़त होना। चने में जो पीछे की ओर नोक निकली होती है, उसी को चना अपनी इज्ज़त मानता है।

अ०– चने का कहना है कि मेरी बड़ी इज्ज़त होती है। इसलिये कि एक तो मुझे जब चक्की में दरोगे तो एक चने में दो दाल होगी दूसरे जो मेरी रोटी का एक टुकड़ा भी खा ले वह पानी खूब पीता है।

चने चिरौंजी हो गये, गोहूं होइगा दाख,
घर मां गहना तीन हैं, चरखा, पुन्नी, खाट।

श०– चिरौंजी– मेवा है, दाख़– अंगूर।

कहावत युग की मंहगाई के प्रति बड़ी ही सुंदर कही गई है।

अ०— चना इतना मंहगा हो गया जितनी कि चिरौंजी, और गेहूं मुनक्का के बराबर मँहगा हो गया अब तो घर में तीन ही गहने बचे हैं जिसे स्त्रियाँ पहन सकतीं हैं चरखा, पुन्नी और खाट, बाकी तो सब इस मँहगाई में बिक गया। कहावत समसामयिक होते हुए बड़ी प्रभावकारी है।

चर्बी छाई आंखन मां, नाचन लागीं आंगन मां।

घमंडी औरतों के प्रति कहावत कही गई है।

अ०— आंखों में मुटाई चढ़ गई है, यानी किसी बात की गर्मी चढ़ गई तो आंगने में नाचने लग गई। घमंड़ के मारे चूर रहना। भले–बुरे, समय–असमय का ध्यान न रखना।

चलत फिरत धन पइहौ, बइठे देइहै कौन।

अ०— काम करने वाले को ही पैसा मिलता है। घर बैठे को कौन पैसा लाकर देगा। यानी कि बिना परिश्रम किये खाना नहीं मिलता है।

चलना भला न कोस का, बेटी भली न एक,
लेना भला न बाप का, जौ प्रभु राखे टेक।

अ०— एक कोस का चलना भला नहीं, न एक बेटी भली, और कुछ भी बाप से न मांगना ही भला है, जो भगवान् ज़िद्द रख लें तो।

यह कहावत बंगला में भी कही गई है —

चला भाल न एक कोश, बेटी भाल नय एक,
मांगा भाल न बापेर काछे, जदि विधि रखे टेक।

चलनी चमड़ा, घोड़े की लगाम,
कायथ गुलाम, ये तीनों नहिं काम।

यानी – चलनी चमड़े की, घोड़े की लगाम, तथा कायस्थ नौकर हो, ये तीनों बेकार होते हैं।

चलै रांड का चरखा, औ चलै बुरे का पेट।

अ०— विधवा स्त्री बेचारी तो पेट के लिये चरखा चलाती है और ठूस–ठूस कर खाने वालों का पेट चलता है, उन्हें खाने से ही फुर्सत नहीं मिलती।

चसका दिन दसका, पराया खसम किसका?

अ०— किसी दूसरे के पति के साथ थोड़े दिन भले ही मौज मस्ती कर लें, उसके बाद दूसरे का पति कब काम आता है? अंत में अपना ही पति अपने काम आता है।

चलनी मां पानी भरे माता मइय्या धरम तोहार।

अ०— खुद ही मुसीबत में पड़ना। माता माँ को गोहार लगाना । गलती स्वयं करना।

चल मेरे चरखे चर्रखचूं।
कहाँ की बुढ़िया! कहाँ क तू?

कहावत बल और बुद्धि को लेकर कही गई है।

इसकी एक मनोरंजक कहानी है जो बच्चों को सुनाई जाती है। ''किसी जंगल में एक बुढ़िया बनैले पशुओं से घिर गई। शेर, भालू जब उसे खाने दौड़े तो बुढ़िया बोली– अभी मैं बहुत कमजोर हूँ, क्या पाओगे मेरे अन्दर। अभी मैं अपनी लड़की के यहाँ जा रही हूँ जब मोटी हो कर लौटूँगी, तो खा लेना। बुढ़िया की बात से सबने उसे छोड़ दिया। जब बुढ़िया लौटी तो साथ में एक चरखा लेती आई। वह उसी चर्खे में बैठ गई। पशुओं ने कहा– बुढ़िया अपना वादा पूरा कर तो बुढ़िया चर्खे के अंदर से बोली– ''चल मेरे चर्खे......। तो जानवरों ने सोचा बुढ़िया नहीं, कोई मुसीबत है। डर के मारे सब भाग गये। तात्पर्य यह कि बल से ज्यादा बुद्धि काम करती है।

चरक मरक कै घानी, आधा तेल आधा पानी।

अ०— जल्दबाजी का काम। इधर–उधर करके ढ़ेर सा पानी डालकर सरसों पेर दिया। काम का सही ढ़ग से न होना । बेमन का काम करना।

" चा "

चार कौर भित्तर, देवता न पित्तर।

श०— भित्तर– भीतर, अंदर, पित्तर– मरे हुये पुरखे।

कहावत ऐसे लोगों के ऊपर कही गई है जो भूख को बिलकुल नहीं बरदाश्त कर पाते हैं। किसी

मौके पर पूजा–पाठ आदि अवसरों पर उन्हें भूखा रहना पड़ा तो उपरोक्त कहावत के द्वारा वे अपनी पेटपूजा कर लेते हैं।

अ०– लाओ चार कौर खायें, न देवता न पितर। भूख के आगे सब बेकार है।

चार दिन कै चाँदनी, फिर अंधेरी रात।

जब कभी ऐसी स्थिति आती है कि कोई नया परिवर्तन या नया माहौल, चहल–पहल का या धूमधाम का या किसी व्यक्ति के द्वारा आने पर घर में कुछ बदलाव आ जाय, इसी प्रकार की स्थितियों के आने पर कहावत कही जाती है।

अ०– यह सब चार दिन की चाँदनी की भाँति है जो थोड़े समय के बाद समाप्त हो कर पुनः वही पुरानी स्थिति में आ जायगी, जैसी कि पहले थी।

चार चौकड़ी चारदाँव, दुइपुनि,
दुइ पुनि का, कोऊ बरद आय।

अ०– किसी ने चार की चौकड़ी, यानी चार–चार रोटियाँ चारबार तो माँगी ही, उसके बाद दो–दो बार पुनः दो–दो रोटियाँ माँगी उसके बाद बोले अब बस भी करो क्या कोई बैल हैं।

कहावत हास्य, व्यंग्य में ज्यादा खानेवाले के ऊपर कही जाती है।

चार कोस की ढोवा पाही
लरिका मरिगा आवा जाही।

श०– कोस– ज़मीन की दूरी की नाप, ढोवा– सामान लाने ले जाने में, लरिका– लड़का, बच्चा, आवाजाही– आने–जाने में पाही– जो खेत गाँव में घर से दूर पर हो। घर के कुछ लोग वहीं पर समय बिताया करते हैं।

अ०– कहावत, जब किसी को बहुत ज्यादा ही दौड़ भाग करनी होती है तो उसे देखकर कही जाती है। चार कोस पर पाही होने के कारण बच्चे बेचारे तो सामान ही ढोने की दौड़ में थक जाते हैं। उनकी तो जान ही निकल जाती है क्योंकि पाही पर रहने वाले को, खाना पानी इत्यादि तो पहुँचाना ही पड़ेगा, अतः यह काम घर के बच्चों को ही सौंपा जाता है। बच्चे दिन भर के आने, जाने, सामान लाने ले जाने में थककर चूर हो जाते हैं।

चाकर, चोर, राजा, बेपीर
कहै घाघ का राखै धीर।

श०– चाकर–नौकर, राजा–राजा, बेपीर– निर्दयी

कहावत सिद्धान्तवादी है जो समय–समय पर चरितार्थ की जाती है।

अ०– नौकर चोर हो और मालिक या राजा निर्दयी, कठोर हो तो भला आदमी कितना धैर्य धारण कर सकता है? नौकर–मालिक का २४ घंटे का साथ होता है। उधर राजा के राज में प्रजा का राजा से बराबर पाला पड़ता रहता है। कहावत पुरानी होने के बावजूद भी आज भी लागू होती है।

चारा, चाषु, वाम दिसि लेई।
मनहुं सकल मंगल कहि देई।।

श०– चारा– चुगना, खाना, चाषु– नीलकंठ पक्षी, वाम– बाई दिशा की ओर, दिसि– दिशा, मंगल– शुभ संवाद

अ०– कहावत कवि तुलसीदास जी की यात्रा–गमन के अवसर या मार्ग में मिले शकुनों के ऊपर कही गई है। कहा गया है कि जब नीलकंठ पक्षी बायीं ओर चारा खाता हुआ दिखाई पड़े तो मानों सभी मंगल सूचनायें कहे दे रहा हो।

चार चुचुल्ला मै पियों, मोर खुरी झहनाय।

श०– चुचुल्ला– गाय, भैंस के चारों थन, चूची, खुरी– पैर के नाखून–खुर, झहनाय– जोश में आना, दूध पीने का बल दिखाना।

अ०– जब कोई आदमी खा पीकर बड़े जोश में बात करता है, बड़े ताव से काम करता है तो उसे देखकर लोग कहते हैं– क्या बात है ? तुम्हारी भी वही–बछड़े की हालत हो गई क्या जो कहता है कि चार चुचुल्ला का थन पीकर मैं आया हूँ, अब मेरी ताक़त के आगे

किसकी ताक़त लग सकती है? इसीलिये मेरी खुरी, पांव लड़ने के लिये झनझना रहे हैं। कोई मिल जाता तो मैं भिड़ जाता।

चार छावै, छे निरावै, तीन खाट, दो बाट।

किस कार्य में कितने आदमियों की जरूरत पड़ती है, कहावत से यही ज्ञात होता है।

अ०– कहावत गांवों की है। गांवों में छान–छप्पर छाये जाते हैं। उसको छाने के लिये चार आदमियों की ज़रूरत लगती है और खेत जब निराना हो तो छः आदमी चाहिए तथा खाट बिनने में तीन और रास्ते में चलते समय दो आदमी तो ज़रूरी होते ही हैं।

चावबांस औ उखुड़ सरौती,
जौ राजा, औ देहुला धान।

कहावत घाघ कवि की खेती विषयक है।

श०– चावबांस– बाँस की एक जाति होती है। उखुड़– ईख, गन्ना, सरौती– सरौती ईख की एक जाति होती है, देहुला– एक धान का नाम है।

अ०– घाघ कवि कहते हैं कि बाँस लगाना तो चावजाति का, ईख बोना तो सरौती तथा जौ, जो अन्नों का राजा है, उसे बोना और देहुला धान की खेती करना बस इन्हें छोड़कर और कुछ भी मत बोना।

चाम नाहीं, काम पियार होत।

श०– चाम– चमड़ा, खाल, पियार– प्यारा, प्रिय।

कहावत सार्वजनिक स्तर पर कही गई है। किसी का चमड़ा या खूबसूरती नहीं अच्छी लगती, सबको काम करना प्यारा होता है। निकम्मे, आलसी, निष्क्रिय व्यक्ति को कौन पूछता है? यानी किसी में सूरत नहीं, सीरत होनी चाहिये।

चाकर के चूकुर, चूकुर के पेसकार चाही।

श०– चाकर– नौकर, चूकुर– काम करने वाला, मददगार, पेसकार– जिससे और भी मदद मिले।

कहावत किसी ऐसे व्यक्ति के ऊपर कही गई है जो नौकरी करते हुए चाहता है कि हमारा काम कोई दूसरा ही करदे। दूसरा उससे भी ज़्यादा आलसी होता है।

अ०– किसी काम को किसी से करने को कहा तो उसने किसी दूसरे पर काम करने का हुक्म लगाया, दूसरे ने तीसरे पर काम डाल दिया।

चादर देख के तौ, पांव पसारै क चाही।

अ०– अपनी आमदनी और औक़ात देखकर ही ख़र्च करना ठीक होता है। यानी कि जितनी चादर हो उतना ही पैर फैलाने से पैर नहीं खुलेगा, वर्ना बेइज्ज़ती हो जायेगी। ख़र्च अधिक करने से काम के समय पैसा की ज़रूरत पड़ने पर पैसा कहां से आयेगा? कवि कबीरदास के शब्दों में– "ओते पांव पसारिये, जाती लांबी सौर"।

चाउर तो सबै राखिलेत,
भात कोउ नाहीं राखि पावत।

अ०– जब किसी के घर में बेटी बड़ी हो जाती है या बेटी अपनी ससुराल में नहीं टिकती है, चाहे जिस भी कारण से तो कहते हैं कि चावल तो लोग सालों रख लेते हैं, मगर भात जो पक जाता है, उसे कोई एक दिन भी नहीं रख सकता है, इसलिये कि वह सड़ जाता है। उसी प्रकार से बहू जो अपनी है उसे तो सभी रख सकते हैं किंतु बेटी पराया होती है उसे कोई भी पिता अपने यहां नहीं रख सकता है। यहां पर चावल बहू को भात बेटी को बताया गया है।

चाकरी में ना करी क्या।

अ०– जब नौकरी दूसरे की है तो उसमें किसी काम को नकार नहीं सकते हैं। काम तो सभी करना ही होगा नौकरी में हीला–हवाला नहीं चल सकता है। पराये काम में किसी काम को नहीं करने का सवाल कहाँ से आया?

चालू काम फरुक्काबादी।

श०– चालू– काम चलाऊ काम, बेगार की तरह कोई काम करना।

अ०— जिस काम में बेगार टाली जाती है, जैसे तैसे करके रख दिया जाता है। किसी तरह काम चलाने वाला, बेचनेवाला माल फ़रुक्खाबाद हिसाब से नकली कलई का दिखाकर बेंच कर चलता बने।

चातुर चेरी भली, मूरख भली न नारि।

श०— चातुर— चतुर, बुद्धिमान, चेरी— दासी।

अ०— कहावत मूर्खों के ऊपर कही गई है। मूर्ख स्त्री से तो अच्छी अक़्लमंद दासी ही होती है। उसका काम तो नहीं बरदाश्त करना पड़ता है। मूर्ख नारी से तो जीवन भर संघर्ष करना पड़ेगा, जो आँख की किरकिरी जैसा गड़ता—कुरेदता रहेगा।

चतुर नारि नरमूढ़ से ब्याह भये पछिताय,
जैसे रोगी नीम को, आंख मूंदि पी जाय।

अ०— किसी चतुर, बुद्धिमान स्त्री का किसी मूर्ख व्यक्ति से विवाह हो जाय तो वह ऐसे ही पश्चाताप करती है जैसे कोई बीमार आदमी नीम का काढ़ा आंख बंद करके ज़बरन गले के नीचे उतारता है। उसी प्रकार से वह सब कुछ सहन करती है तथा जीवन भर उसी कटुता से जीती है।

चाम का चमौधा औ कुकुर रखवार।

श०— चमौधा— चमड़े की बघौरी (चप्पल), जूता, रखवार—रखवाली करनेवाला।

अ०— चाम की चीज़ को कहे कि कुत्ता रखवाली करेगा तो यह असंभव बात होगी। कुत्ता मौका पाते ही चाम लेकर चम्पत हो जायगा।

अपनी उपयोगी वस्तु को कोई नहीं छोड़ता।

चार घरे चार भाई, तेकरे बीचे भीखनभाई।

जब चार लोगों के बीच में एक विरोधी पड़ जाय या चार अमीर लोगों में एक ग़रीब आदमी रहे तो असंगति, असुविधा को देखकर कहावत स्मरण आ जाती है।

चार चोर, चौरासी बनिया, एक—एक कर लूटा।

कहावत का तात्पर्य है कि जहां एकता न हो, वहां अधिक संख्या में लोग भी हों तो भी थोड़े से संगठित लोगों का मुकाबला किसी हालत से नहीं कर सकते हैं।

अ०— चार चोर थे और चौरासी बनिये। चोरों ने एक—एक करके चौरासी बनियों को लूट लिया मगर चौरासी होने के बाद भी बनिये कुछ न कर पाये क्योंकि, एक बनिये को जब एक चोर ने लूटा तो बाकी ८३ बनिये खड़े हुये तमाशा देख रहे थे तो चोरों को विश्वास हो गया कि सभी में आपसी मतभेद है। इसलिये आसानी से लूटा जा सकता है। इसलिये आपस में यदि एकता न हो तो तुम्हारा ही एक हाथ दूसरे हाथ के काम नहीं आ सकता है।

चार दिन की आई, सोंठ बेसाहन जाई।

श०— सोंठ— बच्चा होने पर सौर में खाई जाती है, बेसाहन—ख़रीदने।

जब कोई नई, आई हुई बहू बूढ़ी की तरह बात करे या हाट—बाजार जाने लगे तो कहावत कही जायेगी।

अ०— अभी चार दिन आये नहीं हुआ कि सोंठ मसाले की बातें करने लग गई। अपने लिए सोंठ भी खरीदने चली गई।

चार दिन के रंग बंग, छोड़ दाढ़ीजरवा मोरा संग।

कोई स्त्री अपने पति से उसकी दुष्टता से परेशान होकर कहती है— ऐ दाढ़ीजले। तेरा चार दिन का रासरंग मुझे नहीं चाहिए, तू छोड़ दे मेरा साथ।

चार महीना हालक, चार महीना तालक, चार महीना पालक।

कहावत १२ महीनों के ऊपर कही गई है कि किस माह में कैसा जल, किस पात्र का पीना चाहिए।

अ०— वर्षा ऋतु में ताज़ा, जाड़े में कूंये का पानी व गर्मी में घड़े का रखा पानी पीना चाहिए। स्वास्थ्य एवं मौसम परक कहावत है।

चाव घटे नित के घर आये।
भाव घटे नित के मुख बाये।।
रोग घटे कुछ औषध खाये।
ज्ञान घटे कुसंगति पाये।।

श०– चाव– इच्छा, इज़्जत, नित– रोज़–रोज़, भाव– भावनायें, मन की इज्ज़त, औषध– दवा, कुसंगत– बुरे लोगों का साथ।

अ०– कहा गया है कि रोज़–रोज़ किसी के घर जाने से प्रेम घट जाता है। मुँह से कुछ मांगने पर आदर कम हो जाता है तथा रोग किसी दवा के खाने के बाद ही ठीक होता है और बुद्धि किसी बुरे आदमी के साथ रहने, उठने, बैठने से ख़राब हो जाती है।

चावल पचै, टावल।

अ०– चावल ऐसा हल्का खाना है कि बहुत ही जल्दी पच जाता है।

चाहत की चाकरी कीजै,
अनचाहा का नाम न लीजै।

अ०– जो प्रेम से काम कराये उसकी नौकरी करना भला है मगर जो प्रेम से काम न ले, उसके घर जाने या काम करने का नाम नहीं लेना चाहिए।

चार वेद पांचवा लबेद।

श०– वेद– धार्मिक ग्रन्थ, लबेद– डंडा।

अ०– चार वेद तो धर्मशास्त्र के हैं ही और पाँचवें वेद से चारो वेद हार जाते हैं। यानी डंडे के आगे सब मात खाते हैं।

" चि "

चिरई क जिव जाय खवइया स्वादै न पावै।

अ०– जब कोई किसी के लिये अथक परिश्रम करे, उसके खाने–पीने, रहने की पूरी व्यवस्था करे या सभी प्रकार की सेवा करने में अपने को न्यौछावर कर दे, मगर उसके लिये जैसे कुछ किया ही नहीं गया हो तो कहावत ऐसे ही लोगों के ऊपर कही जाती है कि चिड़िया की तो जान गई किंतु खाने वाला स्वाद ही न पाया।

चिंउटिव चलीं पराग नहाय।

जब कोई आदमी या स्त्री किसी काम का महत्व या उस काम को करने में असमर्थ हो और अचानक कार्य के लिये तैयार हो जाय या कार्य कर ही डाले तो कहावत चरितार्थ की जाती है।

यानी– चींटी भी प्रयाग गंगा नहाने गई। जिसकी उम्मीद ही न हो वह काम कोई करे या अपने सामर्थ्य के बाहर करे तो कहावत कहते हैं।

चिरई क जिव गा, लड़िकन क खेलौना।

अ०– किसी की तो जान जा रही है और किसी के लिये मनोरंजन का अवसर बना है। चिड़िया की तो जान चली गई और बच्चे उसके साथ खिलवाड़ ही करते रह गये। यानी अपनी मौज के आगे किसी की चिन्ता न करना।

चित्थड़, गुद्‌ड़ सोवै, मरजादी बइठि के रोवै।

कहावत विशेषरूप से जाड़े के मौसम के ऊपर कही गई है जो जाड़े के समय में भी बहुत हल्का, फैशनदार पतला कामदार ऊनी शाल या कुर्ता पहने घूमा करते हैं।

अ०– जो घर का चित्थड़ गुद्‌ड़ सब बटोर कर ओढ़े हैं, वे तो जाड़े से मुक्त होकर आराम से सो रहे हैं और जो मर्यादित बने एक पतला सा कुर्ता पहने बैठे हैं वे रो रहे हैं। यानी झूठी शान में रहने पर नुकसान ही उठाना पड़ता है।

चिउरा, दही बारह कोस, लुचुई अठारह कोस।

श०– लुचुई– गेहूं की बहुत पतली रोटी को घी से तर कर देने को लुचुई कहते हैं।

अ०– चिउरा, दही आमतौर पर पूरब दिशा का प्रसिद्ध भोजन है। चिउरा, दही खाने को मिले तो बाराकोस तक लोग चले जाते हैं, यदि लुचुई मिले तो अठ्ठारह कोस तक चले जाते हैं। यानी जो लोग निमंत्रण के शौकीन होते हैं वे बहुत दूर–दूर तक न्यौता खाने निकल जाते हैं।

चित्रा गोहूं, अद्राधान
न उनके गेरूई, न उनके घाम।

कहावत कवि घाघ की है जो खेती संबंधी है।

अ०– यदि चित्रा नक्षत्र में गेहूं और आर्द्रा नक्षत्र में धान बोया जाय, तो न गेहूं में गेरुई नामक कीड़े लगेंगे और न धान में धूप ही लगेगी।

चिरैय्या मां चीरफार

असरेखा मां टार–टार
मघा मां कांदो सार।

श०– चीरफार– खेतों की जुताई– टार–टार– खेतों में मोटे–मोटे ढेलों को फोड़ना, कांदोसार– सड़ी खाद।

अ०– कहावत खेती विषयक कही गई है कि चिरैया नक्षत्र लगने पर कृषि विज्ञानदर्शन के अनुसार खेतों की जोताई करना तथा आश्लेषा में खेत के ढ़ेलों को फोड़कर अगहनी धान की बोआई करके, मघा नक्षत्र में खाद डाल देने से फ़सल बढ़िया होती है।

चित्रा स्वाती बिसाखड़ों, सावन नहिं बरसंत ।
हाली अन्ने संग्रहो, दूनों मोल करंत।।

अ०– सावन माह में तथा चित्रा, स्वाती व बिशाखा नक्षत्र में पानी नहीं बरसता है तो जल्दी से अनाज इकट्ठा करके रख लो क्योंकि अनाज बहुत मंहगा बिकेगा।

चित भुसउल, मन चना चबाय।

श०– चित– दिमाग़, भुसउल– भसौला, जहां भूसा रखा हो, चना चबाय– मनको सोंधा कुछ खाने की इच्छा हो।

कहावत किसी चरित्रहीन नारी पर उद्धृत की गई है जिसका मन चंचल हो।

अ०– किसी व्यभिचारिणी नारी को देखकर कहा गया है कि चित्त तो भुसौले की ओर लगा है और मन में चने की सुगंध आ रही है। यानी दिल, दिमाग़ दोनों ही चंचल है।

चिपरी रोटी, लिबरा भात
खा दाढ़ीजरऊ तू, रोय–रोय
हमरे बूते इहौ न होय।

श०– चिपरी– जो गोबर की छोटी–छोटी गोल–गोल पाथी जाती है। लिबरा– गीला, पिचपिचाया, दहिजरऊ –दाढ़ीजार एक प्रकार की गाली है जो गांवों में औरतें मर्दों को दिया करती हैं।

अ०– कोई औरत अपने घरवालों या किसी स्त्री का रद्दी बनाया खाना खाकर व्यंग्य में कहती है कि चिपरी ऐसी रोटी, लिबराया भात दाढ़ीजार तू रो–रो के खावो, किसी तरह इसे ही बना दिया है। हमारे तो यह भी बनाने की शक्ति नहीं है। हमसे यह भी नहीं हो सकता है।

चिड़िया क सिकार करै, सेर क सामान धरै।

अ०– काम करना है छोटा सा, सामान रख रहे हैं मानों कितना बड़ा काम करने जा रहे हैं। कहां चिड़िया का शिकार करने जा रहे हैं और कहां शेर के शिकार का सामान इकट्ठा कर रहे हैं।

चित्रा स्वाती, बिसाखा खड़ी जो बरसे असाढ़,
भागो लोग बिदेस को, पड़े अकाल प्रगाढ़।

अ०– यदि आसाढ़ माह तथा स्वाती, चित्रा, बिसाखा नक्षत्र में पानी नहीं बरसा तो निश्चय ही सूखा पड़ेगा, इसलिये कहा गया है कि लोगो। जल्दी ही विदेश को भागों, देश में भारी अकाल पड़ने वाला है।

चिल्ला जाड़ा दिन चालीस
पूस के पन्द्रह मकर पचीस।

श०– चिल्ला– जोरों का, पूस– माह का नाम है, मकर– माघ जिस माह में मक्रसंक्रांति लगती है, माघ का महीना।

अ०– कहावत जाड़े के ऊपर कही गई है। यानी जोर का जाड़ा केवल चालीस दिन तक पड़ता है। पूस में १५ दिन और माघ में २५ दिन तक। कहावत है– .....आधे माघे, कबंल कांधे''।

चिराग मां बत्ती आंख मां पट्टी।

किसी जल्दी ही सोने वाले आदमी के ऊपर कहावत कही गई है।

अ०– सांझ को जैसे ही दिया जला कि सोना शुरू कर देने पर कहावत कही गयी है। दिन डूबे सो जाना।

चित के फाटे मित्र नहिं, नहीं दूध की चाव।
तुमरे सोच मित्र की, हमरे सिर पर घाव।।

जब दो मित्रों में अचानक किसी कारण सें मनमुटाव या आपसदारी में गहरा अंतर आ जाता है तो कहावत स्पष्ट की जाती है।

अ०– जब चित्त फट जाता है तो चाहे मित्र हो या घर

का कोई प्राणी जो जितना ही निकटतम होता है उससे उतना अधिक वैमनस्य की सम्भावनायें घनी हो जाती हैं।

चिकना मुंह औ पेट खाली।

अ०– कहावत आज के यथार्थवादी युग की है। अब लोग खाने पीने से अधिक फैशनपरस्ती पर ध्यान देते हैं।

अ०– मुंह तो क्रीम पाउडर लगाकर चिकना कर लिया है मगर पेट में दाना नहीं गया है। खाने की व्यवस्था में कमी है किंतु ऊपर से चिकने, चुपड़े दिखने का अधिक शौक है। जब तक पेट न भरा होगा, तब तक चेहरे पर रौनक नहीं आती है। नतीजा आज के नौजवान भी बूढ़े दिखाई देने लगे हैं।

चिपरे सिंगार से तो रंडापै भला।

श०– चिपरे– गंदे, रद्दी, किसी भी प्रकार की अस्वाभाविकता, सिंगार– शृंगार सौभाग्यसूचक चिन्हों से सुसज्जित, रंड़ापा– वैधव्य, विधवा, यानी जिसका पति मर चुका हो।

कहावत किसी बहुत दुःखी निराश, पति के व्यवहारों से ऊबी या उसके शारीरिक, मानसिक दोषों से परेशान स्त्री के द्वारा उद्धृत की गई है।

अ०– ऐसे पति के चापर शृंगार करने से तो कहीं अच्छा था कि विधवापन ही होता।

चिकनियां फकीर, मखमले क लंगोट।

श०– चिकिनया– साफ़ सुथरा रहनेवाला।

कहावत ऐसे आदमी को देखकर कही गई है जो औक़ात का एकदम मामूली हो मग़र शौकीन हद से ज्यादा हो।

अ०– फकीर तो फकीर ही है किंतु मखमल का लंगोट पहने है।

चित भी मेरी, पट भी मेरी।

अंटा मेरे बाप का।

अ०– दोनो तरह से अपनी बात को मनवाना। अपना ही लाभ चाहना।

चिड़ी मारन क टोला, तरह–तरह क पंक्षी बोला।

श०– चिड़ीमार– चिड़िया मारने वाले, टोला– मुहल्ला।

जहाँ हर आदमी अपनी ही बात कह रहा हो वहाँ कहावत कही जायेगी। हर तरह की चिड़ियों का बयान चिड़ीमार करते हैं। उनके दिमाग़ में चिड़ियों की भाषा भरी रहती है।

" ची "

चीज न राखै आपन, चोर क गारी देय।

अ०– अपनी चीज़ को सँभालकर न रखे और चोरों को गाली दे। यानी अपनी वस्तु को स्वयं सँभाल कर न रखें दोष दूसरों को दें। अपनी वस्तु के लिए असावधानी बरतना।

चीरे चार, बघारे पांच।

कहावत दो स्थितियों में लागू होती है। किसी मोटे आदमी के प्रति या जो बातें बहुत बढ़ा–चढ़ा कर करता है।

अ०– एक सास का कथन है मेरी बहू तरकारी के चार टुकड़े करती है और भूनती पाँच है। यानी कि बातें बहुत लंबी–चौड़ी करती है। दूसरे किसी आदमी के लिये किसी ने पूछा कि कैसे हैं ? तो उसने कहा खूब ठीक हैं। " चीरे चार बघारे पाँच" यानी चीरने पर चारगुना और फैलाने पर पाँचगुना है, देख नहीं रहे हो।

चीलर के डरन, केव कथरी नाहीं छोड़ते।

श०– चीलर– जो कीड़े गंदगी के कारण कपड़ों में पड़ जाते हैं। कथरी– फटे चीथडे कपड़ों को समेट, जोड़ बटोरकर जो ग़रीब आदमी अपने ओढ़ने, बिछाने के लिए सिलकर बनाते हैं।

अ०– चीलर के माध्यम से गंदे, बुरे स्वभाव के मनुष्यों के ऊपर प्रहार किया गया है। गंदे चरित्र के कारण किसी मनुष्य को मत छोड़ो, बल्कि उसके स्वभाव को, उसकी दुष्टनीतियों को छुड़ाने की कोशिश करो दूसरे यह भी है कि दुष्ट के भय से कोई घर नहीं छोड़ता, अपितु दुष्ट का दमन करना चाहिए। कहा गया है कि किसी की कथरी में यदि चीलर पड़े हैं तो कोई कथरी नहीं फेंक देता है अपितु चीलर का बहिष्कार करता है।

चीत के बरसे तीन जाय,
मोथी, मास, उखार।

अ०– चित्रा नक्षत्र के बरसने से तीन चीजों का नुकसान होता है। मोथी, उड़द, ऊख यानी ईख।

चीत मां गोहूं, स्वाती मां भूसा,
लागत बिसाखा, भूसा न घासा।

अ०– कहावत घाघ कवि की खेती संबंधी है। गेहूं यदि चित्रा नक्षत्र में बोया जाये तो अच्छी उपज होगी। यदि स्वाती में बोयें तो भूसा और यदि बिशाखा में बोया जाय तो न दाना होगा न भूसा, कुछ भी न होगा।

चीलर बिने भगवा न हलुकाये।

श०– भगवा–– धोती की जगह पहनने की वस्तु, लंगोटनुमा वस्तु, गेरुए रंग वाली वस्तु, हलुकाये– हल्का होना, भगवा आमतौर पर साधु–संन्यासी के पहनने का वस्त्र होता है।

कहावत तब कही जाती है जब किसी छोटी सी वस्तु को हटा देने पर चाहें कि वज़न कम हो जाय, या जीवन में किये गये तमाम बुरे कामों को चाहें कि धीरे से पुण्य कार्यों को करके उनसे छुटकारा पाया जाय तो यह असंभव है।

अ०– किसी के कपड़े में चीलर हों तो उसका वज़न ही क्या होगा ? उससे चाहें कि किसी कपड़े के भारीपन में कमी आ जाय तो असंभव है या खाट से चाहे कि खटमल निकाल कर खाट का बोझ कम हो जायेगा तो ऐसा कहाँ होगा?

चीलर, मार, चिथड़ा, ये तीनों बिपत बखेड़ा।

अ०– कपड़े में चीलर हो, किसी को मार पड़ती हो और पहनने के कपड़े एकदम से फट कर तार–तार हो गये हों, ये सब आपत्ति की निशानी हैं।

चिट्ठी न परवाना, मार खाय बेगाना।

श०– परवाना–संदेश, बेगाना–दूसरा।

अ०– किसी बात की न ख़बर न कोई कारण, न कोई संदेश आया अनायास ही किसी को बिना बताये ही मारने लग जाना, या बिना बताये ही किसी का कोई सामान उठा लेना।

चीलर मारै चीतिर खाय।

श०– चीतिर– हिरण की एक प्रजाति।

जब कोई आदमी छोटी वस्तु में तो अपनी ईमानदारी बताये और बड़ी चीज़ को हड़प जाने के चक्कर में रहे तो कहावत कही जाती है।

अ०– चीलर मार कर अपनी बेरहमी बताना और चीतर को मार कर खाना।

चील के घर मां भला मांस के धरोहर धरै?।

श०– धरोहर– किसी से पास अपनी वस्तु को सुरक्षित रखना या उसके बदले उससे कुछ पैसे लेकर काम हो जाने पर पैसे वापस करके वस्तु को पुनः वापस लेना।

तो कहावत उस समय कही जाती है जब आदमी इतना घाघ होता है कि सामान को रखते ही सफ़ाचट कर जाता है या वह सामान ही उसके पेट भरने का साधन होता है।

अ०– चील से कहो कि मांस को सुरक्षित रखे रहना, तो वह उसे खा जायेगी, बचने पायेगा। इसलिये कोई सामान ऐसे आदमी के यहां न रखना चाहिए जो उसके अत्यधिक काम का हो या लालची हड़पने वाला हो।

"चीलर चमकौना, चिथरा
ये तीनों विपति क बखरा।

श०– चीलर– कपड़ों की गंदगी के कारण कपड़ों में कीड़े पड़ जाते हैं, चिथरा– सड़े, गले, फटे, पुराने कपड़े, बखरा– हिस्सा।

अ०– चीलर, चमकौना और चिथड़ा ये सभी आपत्ति के लक्षण हैं। इनसे अत्यन्त पीड़ा और दुःख मिलता है। ये भीषण गरीबी के लक्षण हैं।

"चु"

"चुगुलखोर राम (खुदा) क चोर।

अ०– जो चुगलखोर होता है उसे भगवान भी नहीं माफ़ करते हैं।

"चुटके कै खाय, उटके कै न खाय।

श०— चुटके— जो चुटकी मांग कर लाता हो, जो भीख माँगता हो, उटके—जो खिलाकर ताना दे दे।

अ०— एक भिखारी का खाना ठीक है मगर जो खिलाकर ताना दे दे, उसका खाना ठीक नहीं है।

"चुटिया को तेल नहीं, पकौड़े खाने को मन करे।

श०— चुटिया—सिर में लगाने को।

अ०— घर में ग़रीबी का होना। तेल दो बूंद नहीं और पकौड़े खाने की इच्छा होना। आवश्यक काम के लिये भी सामान का न होना।

"चुपड़ी औ दुइ—दुइ।

अ०— बढ़िया वस्तु का अधिक मिलना। घी की चुपड़ी रोटी उसपर दो—दो खाने को मिलना।

"चुल्लू—चुल्लू सधे तो दुआरे हाथी बंधे।

अ०— थोड़ा—थोड़ा पैसा इकट्ठा करने पर बड़ी वस्तु भी घर में आ सकती है।

"चुप्पे कै गुस्सा, भूसा कै आगि आय।

श०— भूसा की आग— भूसे में जब आग लगती है तो वह बहुत धीरे—धीरे सुलगती है। मन ही मन से क्रोध करता है, उसका क्रोध अंदर ही अंदर मन में भरा रहता है और वह बहुत ही खतरनाक होता है।

"चुवना घर औ रोउनी बहुरिया,
दुइनों बहावै उल्टी बयरिया।

श०— चुवना— टपकने वाला घर, जो बरसात में चूता हो। रोवनी— रोनेवाली, बहुरिया— बहू,दुल्हन, बयरिया— हवा।

अ०— चूनेवाला घर हमेशा टपकते रहने पर कमज़ोर हो जाता है। वैसे ही हर समय रोनेवाली बहू कुलक्षणी होती है, घर का नाश करके रख देती है।

"चुरैल से दिल लगा तो परी क्या चीज?।

अ०— यदि किसी कुरूप, डरावनी शक्ल वाली स्त्री से किसी का मन लग गया है, तो उसके आगे परी जैसी खूबसूरत स्त्री, भला क्या हो सकती है?

चुनायों, सेयों, पाल्यों धिया,
आय दमदवा लै गा धिया।

श०— चुनाया— दाने खिलाये। सेयों— सेवा करना, धिया—बेटी, दमदवा—बेटी का पति।

अर्थ— स्पष्ट है।

चुरावै नथियावाली, नाव लागै चिरकुटवाली क।

श०— नथवाली— पैसे वालों के घर की स्त्री नथ जैसे गहने पहनने वाली, चिरकुट वाली— गरीब आदमी की स्त्री जिसके पास न खाने को है, न पहनने को है।

कहते हैं कि दुनिया में गरीब आदमी बेईमान नहीं होता, उलटे अमीर आदमी ही बेईमान होता है। गलती करता है बड़ा आदमी, मगर पकड़ा जाता है छोटा आदमी।

अ०— चोरी किया है नथ पहनने वाली ने और लगा उस गरीब स्त्री को जिसके पास पहनने को कपड़े तक नहीं हैं। अपराधी कौन है, पकड़ा कौन जा रहा है।

और करै अपराध कोउ और पाव फलभोग।
अति विचित्र भगवंत गति को जग जानै जोग।।

" चू "

चून खाय मुसंड होवे, तला खाय रोगी होये।

श०— चून— आटा, मुसंड—स्वस्थ, बलवान, तला— घी, तेल की तली वस्तुएँ, रोगी—बीमार।

अ०— यदि आटे की रोटी खाये तो बलवान हो और यदि तली वस्तुएं खाये तो वह रोगी होता है। यानी तली—भुनी हुई चीज़ें स्वास्थ्य के लिये हानिकारक होती हैं।

चूनी कहै—हमें घी से खाव।

श०— चूनी – दाल को दलने के बाद जो दाल के टूटे हुये छोटे—छोटे कण होते हैं।

अ०— चूनी की रोटी हमेशा घी से ही अच्छी लगती है तथा घी से ही खाने पर फायदेमंद, स्वादयुक्त होती है।

चूल्हा कै रानी, गोहरावै लाव पानी।

अ०— जो स्त्री खाना बनाने बैठती है, वह सभी पर

हुक्म लगाती है– पानी लाओ, फलां सामान लाओ क्योंकि, खाना बनाने का काम बड़े महत्व का माना जाता है।

चूल्हा कै न चक्की कै, बात गढ़य पक्की कै।

अ०– जो औरत चूल्हा तक जलाना तो जानती न हो, अनाज तक पीस नहीं सकती है वह बात करें कि हम पूड़ी बना लेंगे, असंभव है।

चूहे के हाथ लगी हरदी की गाँठ तो, वह पंसारी बन बैठा।

अ०– किसी आदमी के हाथ थोड़ा पैसा आया या थोड़ी सी कोई उपलब्धि हुई तो वह अपने को सर्वेसर्वा समझ ले। जैसे चूहे के हाथ हल्दी की एक गांठ आई तो वह अपने को पक्का व्यापारी समझने लगा।

चूतिया कै घोड़ी बेलगाम दौड़ी।

श०– चूतिया– मूर्ख, बेअक्ल।

अ०– मूर्खों के हर काम ही मूर्खतापूर्ण होते हैं। जैसा कि कहा गया है कि बेवकूफ़ की घोड़ी के लगाम ही नहीं है। वह बिना कंट्रोल के दौड़ती चली जा रही है। कहीं बिना लगाम के घोड़ी चलानी चाहिए? मगर कौन समझाये?

चूतिया मर गये औलाद छोड़ गये।

अ०– मूर्ख जो है, वह मरा तो, मगर अपनी औलाद भी अपनी तरह बना गया। यानी किसी मूर्ख को देखकर कहा जाता है कि बेवकूफ़ तो गये मगर अपनी निशानी छोड़ गये।

चूहा क बच्चा बिलिन तौ खोदे।

अ०– चूहे का बच्चा अपनी परंपरा के अनुसार बिल ही तो खोद सकता है और कर ही क्या सकता है? अपनी औकात या वंश के अनुसार काम करना।

चूक हुई दो नैना से, पाँव में पड़ गई मोच।

श०– चूक– गलती, नैना–आँख, मोच– पांव को टेढ़ा–मेढ़ा करने पर नस का खिसक जाना।

अ०– गलती कोई करे और सज़ा कोई भुगते। आँखों की चूक या इधर उधर देखने के कारण पांव में मोच आ गई।

चूल्हा फूँकब औ दाढ़िउ राखब दुइनों नहीं होते।

अ०– दाढ़ी रखने पर चूल्हा फूँकने में आग लग जाने का खतरा है। इसलिये खतरे का काम करने के समय ख़तरे का साधन पास नहीं होना चाहिये। विपरीत स्थिति में काम नहीं करना चाहिए।

चूहा मारिके गोबर सुघावै चले।

अ०– दुश्मनी निकाल कर फिर उससे हमदर्दी दिखाना। एक तरफ़ तो जान ले ली अब. चले हैं जान डालने।

चूचिन माँ हाड़ ढूंढ़े।

अ०– जहाँ जिस चीज़ की संभावना न हो उसे उस स्थान पर ढूँढ़ना। व्यर्थ का काम करना।

चूड़ी क धोवन बदै ना।

जब किसी की शादी न हुई हो या नारी के घर न होने पर कहावत लोग व्यंग्य में कहते हैं।

चूड़ी पहने–पहने ही कोई औरत चूल्हे, चौके का काम करेगी तो चूड़ियों से पानी अवश्य ही चावल, दाल जैसी धोने की वस्तु में गिरेगा तो उसी को चूड़ी का धोवन कहते हैं। चूड़ी का धोवन तभी बदा होगा जब पत्नी घर में होगी। जिसके नहीं होती उसी पर व्यंग्य में कहावत चरितार्थ की जाती है।

" चे "

चेना जी का लेना, सोला पानी देना,
बीस–बीस के बच्छा हारे, हारे बलम नगीना
हाथ में रोटी बग़ल में पैना, दिन औ रात एक कर देना
एकबार जौ बह पुरवाई, लेना एक न देना भाई।

श०– चेना– एक प्रकार का अनाज है। बच्छा– बच्चा, नगीना– मूल्यवान, कीमती, बलम– पति, पैना जिससे बैलों को हांकते हैं।

अ०– चेना जो एक प्रकार का बहुत हलका अनाज

होता है उसकी खेती के विषय में कहावत कही गई है। एक किसान की पत्नी कहती है– चेना क्या हो गया जान का लेना हो गया। इसको सोलह पानी देना पड़ता है। इसका खेत जोतते–जोतते बैलों की आफ़त आ जाती है। हमारे नगीना जैसे इतने कीमती सुकुमार एवं सुन्दर पति को परिश्रम करना पड़ता है। रात दिन एक कर देना पड़ता है, चेंना के पीछे। हाथ में बैलों को हांकने का डंडा व बग़ल में रोटी लिये मेहनत करते–करते थक गये हैं, उसपर यदि कहीं पुरवाई हवा चल गई तो कुछ न मिलना न जुलना सब बेकार हो गया।

चेरिया रानी क कहिन तौ रानी हँसिमेंटीं औ जौ रानी चेरिया क कहिन तौ चेरिया जरि मरी।

श०– चेरिया– दासी, मेटीं– मेट देना, परवाह न करना, जरिमरी– बहुत बुरा मान गई।

अ०– जब कोई बड़ा आदमी, छोटे को कुछ समझाये, तो छोटे को बहुत बुरा लगता है इसलिये कि वह न उंतना समझदार होता है, न पढ़ा लिखा और जब बड़े आदमी को कोई छोटा आदमी उलटा सीख देता है तो वह उसको मूर्ख समझकर चुप हो जाता है। जैसा कि कहा गया है कि रानी को जब दासी को कहा गया तो हँसकर टाल गई और जब दासी को रानी को कहा तो वह जलभुन गई।

चेने के बस में सपूत भये माड़हा।

श०– माड़हा– चेने से भी हल्का व सस्ता अनाज है, सपूत– लायक पुत्र।

अ०– जब किसी निकम्मे परिवार में कोई लायक लड़का पैदा हो जाता है तो व्यंग्य में कहावत कही जाती है।

चेला लावै मांग के, बइठे खायँ महंत।
राम भजन के नामपर, पेट भरन का पंथ।।

श०– चेला– शिष्य। महंत– साधु–सन्यासियों की गद्दी होती है। श्रेष्ठ, बड़ा।

अ०– महंत महाराज को क्या कष्ट है, चेले माँग–माँगकर खाने की सामग्री लाते हैं महंत बैठे–बैठे खाते हैं। यानी चेलों के बल–बूते पर मौज–मस्ती करना।

" चै "

चैतमास दसमी खरी जो कहुँ कोरी जाय,
चौमासे भर बादला, भलीभाँति बरसाय।

अ०– चैत महीने की दशमी तिथि को यदि पानी न बरसा तो समझो कि चारो मास वर्षा बहुत अच्छी होगी।

चैत मास जो बीज भिजोवे,
भरि बैसाखहि टेसू धोवे।

श०– बीज– बिजली, टेसू– एक प्रकार का फूल होता है, जो लालरंग का होता है।

अ०– यदि चैतमास में बिजली चमके तो बैसाख में इतना पानी बरसेगा कि टेसू के फूलों का रंग तक धुल जायेगा। यानी बेतहाशा पानी बरसने की उम्मीद है।

चैत अमावस जे घड़ी परै पत्रा माँहि,
तेता सेरा भड्ड्री कातिक धान बिकाय।

श०– अमावस– अमावस्या, घड़ी–समय। पत्रा– ज्योतिष के अनुसार जिस पोथी में तिथियाँ व लग्न इत्यादि देखे जाते हैं, तेता– उतने, सेरा– सेर।

अ०– कवि भड्डरी के मतानुसार चैत माह की अमावस्या को जो तिथि व लग्न पड़ती है उतने सेर धान बिकने की संभावना होती है।

चैतमास उजियारी पाख
आठे दिवस जो बरसा राख,
नव बरसे जित बिजली होय
तो दिसि काल हलाहल होय।

श०– उजियारी– उजेला, पाख–पक्ष, आठे–अष्टमी, राख–मिट्टी, नव–नवें दिन; दिसि–दिशा, हलाहल– अकाल।

अ०– यदि चैतमाह के शुक्ल पक्ष की अष्टमी को आसमान में धूल भरी हो, ऊपर से धूल ही धूल बरसती हो तो नौमी को पानी भी बरसेगा। जिधर

बिजली चमकेगी, उस दिशा में अकाल पड़ने की संभावना है।

चैतमाह दसमी खड़ी, बादल बिजुली होय,
तौ जानो चित मांहि है, गर्म गला सब जोय।

अ०— यदि चैतमाह की दशमी को पानी बरसेगा व बिजली चमकेगी तो समझो कि वर्षा बहुत कम होगी।

चैत के पछिवां भादौ जला,
भादौ पछिवां माघ क पला।

श०— पछिवां—पश्चिम से चलने वाली हवा, जला—जल, पानी, पला—पाला, जो खेतों को बर्बाद कर देता है।

अ०— यदि चैत में पछुवा हवा चले तो भादौं में समझो कि पानी खूब बरसेगा और जब भादौं में पछुवा चले तो, समझो कि माघ महीने में पाला पड़ेगा।

चैत बरखा आई तो सावन सूखा जाय,
एक बूँद जो चैत मां परै, सहस बूँद सावन की हरै।

अ०— चैत माह में जब पानी बरसेगा तो सावन में अकाल पड़ेगा अैर एक बूँद भी यदि चैत में पड़ी तो सावन एकदम से वर्षा से खाली हो जायेगा, ऐसा कवि घाघ का कथन है।

" चो "

चोट लगी पहाड़ की, तोड़े घर की सील।

अ०— चोट तो कहीं बाहर लगी है और गुस्सा उतार रहे हैं सिल पर जो घर के अंदर है क्योंकि बाहर गुस्सा किसी पर नहीं उतारी जा सकती है। कहावत के अनुसार चोट लगी है पहाड़ से गुस्सा उतर रहा है घर की सिल फोड़कर।

चोर औ मोट, कस के बांधे क चाही।

श०— मोट—पहले ज़माने में मोट से ही खेतो में पानी दिया जाता था।

अ०— चोर और मोट को कसना इसलिए चाहिए कि चोर ढ़ील पाकर भाग सकता है और मोट कुँए में गिर सकती है।

चोर औ साँप दबे पर चोट पहुँचावत।

अ०— चोर जब निकलने का रास्ता नहीं पाता है तो फिर वह मारना शुरू करता है अपनी जान बचाने को, वैसे ही साँप कहीं किसी के पैरों के नीचे कुचल जाता है या फिर निकलने का रास्ता नहीं पाता तो जो सामने आ जाता है उसी को काटने दौड़ता है।

चोर का मन बकुचै मां।

अ०— चोर का मन सदा चोरी करने में लगा रहता है। कहीं गठरी दिखी नहीं कि उसकी नियत खराब हुई।

चोर कै जोरू कोने मां रोवै।

श०— जोरू—स्त्री, पत्नी।

अ०— चोर की स्त्री कोने में छिप कर रोती है क्योंकि चोर के पकड़े जाने का भय होता है। गोस्वामी जी के शव्दों में—

चोर नारि जिमि प्रगट न रोई।

चोर की दाढ़ी मां तिनका।

श०— तिनका—खर। अपनी की गई गलती के प्रति खुद ही शंकित रहना। अपराधी बात को सुनते ही तिनका टटोलने लगता है। इसकी एक कथा है—

"एक बार चोरों का पता न लगने से एक काज़ी बहुत परेशान थे। जिन लोगों पर उन्हें संदेह था सबको सामने खड़ा करवा कर बातें करते—करते काज़ी बोल पड़े—'चोर की दाढ़ी में तिनका।' उनके ऐसा कहने पर सभी ज्यों के त्यों खड़े रहे, मगर जो सही में चोर था तुरंत अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरकर देखने लगा कि कहीं मेरी दाढ़ी में तो तिनका नहीं लगा है? यह देखते ही काज़ी की समझ में आ गया कि असली चोर कौन हो सकता है?

चोर के घर मां मोर।

अ०— कहावत सम्बन्धी एक कथा है। एक बार एक चोर कहीं से सोने का हार चुराकर घर लाया तो उसे

मोर निगल गया। चोर बेचारा छटपटाता ही रह गया। जो जैसा होता है वैसे ही लोग उसे भी मिल जाते हैं।

चोर के पांव नहीं होते।

अ०— चोर एक स्थान पर खड़ा नहीं रह सकता है। उसका काम ही है लोगों के घर जा–जा कर चोरी करना। दूसरे अर्थ में यह कि वह अपना स्थान लगातार बदलता रहता है तथा चुपके से काम करता है।

चोर पकड़ै गांठ से, छिनार पकड़ै खाट से।

श०— छिनार— चरित्रहीन स्त्री।

अ०— कहा है कि चोर को गठरी देखकर सामान से पकड़ना चाहिए और आवारा बदचलन स्त्री को खाट देखकर अंदाज़ लगाना चाहिए।

चोर, चकार, चूकै, मगर चुगल न चूकै।

श०— चकार – उठाईगीर, चूकै – भूलना।

अ०— चोर, उठाईगीर चूक भी जाते हैं किंतु चुगलखोर कभी नहीं चूकता बिना चुगली के। चुगलखोरों से पूर्ण से सचेत रहना चाहिये।

चोर चोरी करि गवा, मुसरन ढोल बजाय गवा।

अ०— जब कोई आदमी खुलेख़जाने चोरी कर ले जाता है तो कहते हैं कि चोर चुपके से नहीं मूसल से ढ़ोल बजा–बजाकर सब ले गया। यानी घर की लापरवाही का नतीजा है जो कहावत से स्पष्ट है।

चोर चोरी से गा तौ का हेराफेरिव से गा?

श०— हेराफेरी – माल इधर से उधर – उधर से इधर करना

अ०— कहावत के पीछे कथा है– "एक चोर अपने पापों का प्रायश्चित करने के लिए साधु हो गया किंतु उसकी पुरानी आदतें उसे सदैव परेशान किये रहती थीं। रात में जब सब साधु सो जाते तो वह रातभर जगकर एक साधु की गठरी दूसरे के सिरहाने, दूसरे का कमंडल पहले के सिरहाने, किसी का झोला किसी के पास, किसी की तुमड़ी किसी के पास यही रात भर हेराफेरी करता रहता। तभी कहा गया है कि वह बेचारा चोरी तो नहीं कर रहा है, तो क्या लोगों के सामान की हेरा–फेरी करने से भी गया?

चोर न जानै चोर की सार।

अ०— एक चोर दूसरे चोर के तरीके नहीं जानता कि वह किस तरह से चोरी करता है।

चोर ले, न साहु छुये।

कहावत अचल संपत्ति के लिये कही गई है तथा विद्या— धन के ऊपर कही गई है।

अ०— विद्या ऐसी संपत्ति है कि न चोर चुरा सकता है, न भाई बंटा सकता है। न साहु या बनियां छू सकता है।

चोर जुआरी गंठकटा, जार औ नारि छिनार,
सौ सौगंधे खाएं जो, भूल न करै एतबार।

श०— गंठकटा – गांठ काटने वाला, सौगंधे – कसम, एतवार – विश्वास।

अ०— चोर, जुआ खेलने वाला, गाँठ काटनेवाला तथा बदचलन स्त्री ये सब चाहे सैकड़ों कसम खाकर अपनी सफ़ाई के लिये जान दे दें तो भी विश्वास न करना चाहिए।

चोर से कहै मूसा, साहु से कहै जाग।

श०— मूसा – लूटो, साहु – बनिया, व्यापारी, बड़े आदमी।

अ०— जो आदमी लड़ाई को उकसाता रहे और खुद अलग रहे। यानी कि चोर को तो कहे— जाओ चोरी करो और साहु से कहे कि जागते रहो, चोर तुम्हारे घर चोरी करने आ रहा है। ऐसा आदमी कभी कहीं किसी एक के पक्ष में नहीं रहता।

चोरी का गुड़ मीठा–मीठा।

अ०— चोरी की चीज़ बड़ी मीठी लगती है।

चोर छिनार बहुतै भावा,
आगी क जरा, पानी क धावा।

श०– भावा – अच्छा लगना।

अ०– चोरी और बदचलनी बहुत ही भाती है किंतु कोई सही बातों को कह दे तो ताप के मारे आग में जलने तथा पानी में डूबने की ही धमकी देते हैं। खुद पाक–साफ हो कर दूसरों को झूठा साबित करना।

चोर क चोरे सूझै।

अ०– चोर जो होता है उसे हर भला आदमी चोर ही दिखाई देता है। यह मानव–स्वभाव में आता है। अपने जैसा ही, दूसरों का स्वभाव तथा व्यवहार समझना।

चोरी और सीना जोरी।

अ०– गलती भी करे ऊपर से रोब भी दिखाये। जैसे–

उलटे चोर कोतवाल को डांटे।

चोर–चोर मौसेरे भाई।

श०– मौसेरे – दो सगी बहन के दोनो लड़के, मौसी का लड़का।

अ०– बराबर के व्यवहार वाले या व्यवसायवाले जल्दी ही मिल जाते हैं या एक दूसरे से समर्थक होते हैं। जैसे– चोर–चोर आपस में रिश्ता जोड़ लेते हैं।

चोरी करै तो छाड़ै घोड़,
नाहीं तो रहै राम की ओर।

यदि चोरी ही करना है तो किसी बड़ी वस्तु की करे, वर्ना छोटी वस्तु की चोरी से क्या फायदा? कहावत इसी पर कही गई है।

अ०– चोरी करो तो घोड़ा खोलो नहीं तो ईमानदारी से रहो। कीमती वस्तु की तो कीमत है, किंतु छोटी वस्तु से क्या लाभ मिलेगा?

चोरी का माल चोरी मां जात।

कहते हैं हराम का पैसा हराम में जाता है। बात सही है जो पैसा जैसे आता है वह वैसे ही चला भी जाता है।

अ०– चोरी का माल किसी न किसी बुरे काम में या अनायास ही ख़र्च होता है।

चोट्टी कुतिया जलेबी की रखवाली।

किसी ऐसे आदमी के हाथ में व्यवस्था को देना जो स्वयं लालची हो या सामान को चौपट करने वाला हो। किसी ऐसे आदमी का विश्वास कर लेना जो विश्वास के अयोग्य हो।

अ०– कुतिया जो स्वयं वस्तु को चट कर जाने वाली हो उसके भरोसे पर खाने पीने की वस्तु को देकर बचत की आशा करे, यह असंभव है।

चोरवा क बिरता सबकेव खाय,
चोरवा गोहनवे क्यो ना जाय।

श०– बिरता– कमाई, गोहनवे–निकट, पास में।

ग़लत कमाई का पैसा घर में आने पर सभी उसका उपयोग करते हैं। सभी खर्च करते, खाते–पीते व मौज उड़ाते हैं, मगर जब वह आदमी कहीं पर फंसता है तो सभी अलग हो जाते, कोई साथ नहीं देता है। कहावत भी उसी पर कही गई है।

अ०– चोर की कमाई यानी चोर का पैसा तो सभी खाते हैं, मगर जब वह पकड़ा जाता है तो कोई उसके साथ शामिल नहीं होता है।

चोटे पै, चोट लागत।

अ०– जहां चोट लगी रहती है वहीं पुनः चोट प्रायः लगती है।

चोरहिं चांदनी रात न भावा।

पंक्ति गोस्वामी जी की है। चोर कैसा वातावरण व कैसी रात चाहता है।

अ०– चोर को चाँदनी रात इसलिये अच्छी नहीं लगती है क्योंकि उजाले में दिखने का डर रहता है।

किसी ने कहा है— "घोर अंधियारी गई कि चोर गये"।

चोरन बकुचा लीन, बेगारी छुट्टी पावा।

श०— बकुचा— गठरी, माल, बेगारिन— कोई काम बिना पैसे के करने वाला

अ०— किसी से कोई आदमी बेगार में गठरी ढुलवा रहा था कि अचानक गठरी चोर उठा ले गये। मज़दूर ने सोचा—चलो गठरी चोर ले गये अब तो बेगार करने से फुर्सत मिली अच्छा ही हुआ।

चोर का माल सब कोई खाय,
चोर की जान अकारथ जाय।

अ०— चोर की कमाई सभी खाते हैं लेकिन बुरे फंसता है चोर ही। सारी सजा उसे ही भोगनी पड़ती है।

चोला नवा, जिव पुरान आय।

श०— चोला—शरीर, नवा— नया।

अ०— जब कोई नवयुवक या बच्चा बालस्वभाव से हटकर बहुत धीर गंभीर बुड्ढ़ों की तरह हो, तो कहावत चरितार्थ की जाती है कि शरीर ही खाली ऊपर से नया है और मन पुराना बुड्ढ़ों के जैसा है।

चोर क साथी गिरहकट।

श०— गिरहकट – जेब काटने वाला।

अ०— जो जैसा होता है वैसे ही उसके दोस्त, यार भी होते हैं।

चोर क जिव केतना।

अ०— चोर का मन हमेशा डरा रहता है। पापकर्म करनेवाला मनुष्य सदैव अपने से डरता रहता है। वह भी जानता है कि, मैं ग़लत काम कर रहा हूँ किंतु आदत से अपनी मज़बूर हो जाता है।

चोट गोड़े मां, मलहम मूड़े मां।

मूर्खता का काम करना। जो वस्तु जहाँ इस्तेमाल करना हो वहां न करके व्यर्थ में दुरुपयोग करना।

अ०— चोट लगी है पैर में और मलहम लगाया जा रहा है सिर पर।

चोर की जान हथेली पर।

अ०—चोर मार से नहीं डरता, न मरने से डरता है। उसके प्राण हर समय खतरे में रहते हैं।

चोर चुरावै, गर्दन हिलावे।

अ०— चोरी भी करे और इन्कार भी करे। चोरी करके न करने की आदत होना।

चोरी बिना सुराग के नहीं होत।

अ०— चोरी बिना घर के भेदी के नहीं होती। जब आदमी घर का भेद देता है तभी चोरी भी होती है, ऐसा सिद्धान्त है।

चोर के पेटे मं गाय अपने मने रंभाय।

अ०— बहुधा देखा गया है कि अपराधी कभी—कभी अपनी करनी अपने आप ही कह देता है। स्वयं अपना अपराध मान लेता है। कहा है कि चोर के पेट में गाय अपने आप ही बोलने लग जाती है। यानी स्वयं चोर मन की बात बता देता है।

चोर के हाथे अंगारिव नीक।

यह कहावत उस समय संबोधित होती है जब अपराधी के हाथों व जीभ पर जला हुआ अंगारा रखकर उसके अपराधों को कहलाया जाता था या फिर सज़ा के रूप में दंड दिया जाता था। कहावत उसी पर कही गई है।

अ०— चोर के हाथ पर यदि अंगारा रख दिया जाय तो वह भी मान्य है।

चोरवा न जाने मंगनी क माल।

चोर को भला इस बात से क्या काम कि माल कहां का है, कैसा है, किसका है, इसे लेना चाहिए कि न लेना चाहिए ? उसे तो माल से मतलब किसी का हो, कहीं से आया हो या शादी—ब्याह, मंगनी का हो। अतः कहावत इसी पर कही गई है।

अ०— चोर को क्या पता कि माल बेटी की ससुराल से मंगनी, शकुन पर आया है या बेटे की ससुराल का है। उसे तो चोरी का माल चाहिए।

चोर कै जिव कितना बड़ा?।

बात एकदम सही है यदि वह डकैत नहीं है मात्र चोर ही है तो उसका मन तो हर समय डरता रहेगा।

कोई कब, कहां पकड़ ले? ज़रा सी खुट्ट हुई नहीं कि डर गया। उसकी तो जान हथेली पर हर समय रहती है। इसलिये उसका जी बहुत छोटा होता है।

" चौ "

चौबे गये छब्बे बनने दूबे रहिगे।

अ०– किसी लाभ की आशा से कोई काम किया जाय और जब उसमें हानि हो तो कहावत कही जाती है कि गये थे बड़ी–बड़ी आशायें लेकर कि बड़ा लाभ होगा, मगर उलटे हानि हो गई।

चौबे की चौबाइन, पंडा के घर पंडाइन
यह तुक का कौतुक तो देखो
बनिया बेंच रहा बनियाइन।

कहावत व्यंग्यात्मक है। बनियों के ऊपर हास्यास्पद चुटकुले के रूप में उद्धृत की गयी है जिसमें तुकबंदी को माध्यम बनाया गया है।

अ०– चौबे की स्त्री चौबाइन, पंडा की स्त्री पंडाइन कहलाती है, किन्तु बनिया की स्त्री को बनियाइन कहते हैं। बनिया कपड़े की बनियाइन बेच रहा है। व्यंग्य में वह अपनी स्त्री बनियाइन को बेच रहा है।

चौथ अन्हरिया, सावन माहीं,
जौ महि पर मेघा बरसाहीं
लै पैंतालिस दिन घन बरसै,
साख सवाई हो मन हरसे।

श०–चौथ अन्हरिया–अंधेरी पाख की चौथी तिथि, महि–पृथ्वी, मेघा–बादल, घन–बादल, साख–बढ़न्त, सवाई–सवाया।

कहावत सावन माह की अन्धेरी चौथ को पानी बरसने पर कही गयी है।

अ०– यदि सावन की अंधेरी चौथ को पानी बरसता हो तो वह भी ४५ दिन तक लगातार वर्षा हो तो अनाज सवाया पैदा होता है।

" चां "

चांदी की चउकी मां, लोहे क कँाटां।

किसी वस्तु की बेइज्ज़ती करने पर कहावत चरितार्थ की गई है।

अ०– चाँदी की चौकी यदि टूटी है तो उसकी मरम्मत भी वैसी ही चाँदी की कीलों से होनी चाहिए। उसमें चाँदी का कीला न लगवाकर लोहे का कीला ठोंक दिया गया हो।

चाँद अकासे चढ़ै तो सबै देखत।

अ०– जो वस्तु ऊँचे उठकर आकाश में उदय हो उसे भला कौन नहीं देखेगा? वैसे ही गुणवान, संपन्न, सुशील व्यक्ति के गुणों को कौन नकार सकता है कलाकार, विद्वान, विलक्षण प्रतिभा वाले व्यक्ति को कौन नहीं इज्ज़त देगा? उस पर दुनिया की नज़र अवश्य पड़ेगी। और वह सभी की प्रशंसा का पात्र बनेगा।

" चुं "

चुँगी के डर से कोउ माल नाहीं फेंकत।

कहावत बेहद मूर्ख, नासमझ व महाकंजूस आदमी के ऊपर कही गई है।

अ०– माल लाते समय रास्ते में सरकारी स्तर पर माल पर चुँगी वसूली जाती है। कुछ ऐसे भी निहायत कंजूस, मूर्ख आदमी भी दुनिया में होते हैं जो माल की चुंगी न देने के लालच में अपना माल ही छोड़ देने को तैयार हो जाते हैं।

" चिं "

चिंउटी क मरे क होत तौ पर निकर आवत।

अ०– चीटियां जब मरने वाली होती हैं तो उनके पंख निकल आते हैं।

चिंउटी के खाये पहाड़ घटे।

अ०– कहावत आर्थिक दृष्टि पर कही गई है कि थोड़ा– थोड़ा खर्च होता है तो बहुत हो जाता है। चींटी जो कन–कन खाती है, किंतु उसके खाने से भी पहाड़ कम हो जाता है।

चिउंटिव कै बिल नाहिन, कि समाय जाई।

जब किसी के साथ महान समस्या हो कि वह कहां रहे? रहने भर की जगह मिलने लायक न हो। जीवन में जब कोई ऐसा काम हो जाय या ऐसी विकट समस्या आ जाय कि रहने को कहीं ठिकाना न मिल पाये या जान की आफत आ जाये तो कहावत कही जाती है।

" छ "

छ ग्रह एकै रासि बिलोकै,
महाकाल को दोनों कोकै।

अ०– यदि एक ही राशि पर छह ग्रह एक साथ पड़े तो पृथ्वी पर जल नहीं बरसेगा। महा अकाल के पूरे–पूरे लक्षण हैं।

छज्जे की बैठक बुरी, परछाई की छांह,
नियरे का रसिया बुरा, नित उठि पकरै बांह।

श०– छज्जा– जो छत के बाहर निकला हिस्सा होता है, बैठक एकत्र होना बैठकबाज़ी करना, परछाहीं–छाया, दूसरे की छाया, नियरे–नज़दीक, रसिया–प्रेमी, मनचला व्यक्ति, नित–रोज़। कहावत किसी प्रेमी, प्रेमिका के ऊपर कही गई है।

अ०– रोज़–रोज़ की छज्जे की बैठक व परछाई की छाया बुरी है तथा पास का प्रेमी भी बहुत बुरा होता है, इसलिये कि वह रोज़ ही मिलना चाहता है।

छद्दर कहै मैं आऊं–जाऊं,
सद्दर कहै गोसइयैं खाऊं,
नोदर कहै मैं नौ दिग जाऊं,
हिती कुटुम्बी, पुरोहित खाऊं।

श०– छद्दर–छः दातों का बछड़ा, सद्दर–सात दांतों का बछड़ा, नौदर–नौ दांतों का बछड़ा, दिग–दिशा, खाऊं–सफाया करना।

कहावत खेती के लिये ख़रीदे जाने वाले बैलों पर कही गई है कि कितने दांतों का बैल कितना अपशकुन करने वाला होता है।

अ०– छः दांतों का बछड़ा कहता है कि मैं जहां भी जाता हूँ वहीं मेरा गुज़ारा होता है। सात दांतों का कहता है कि मैं जहाँ भी जाता हूँ वहीं मालिक के प्राण का घातक सिद्ध होता हूँ। नौ दाँतों का कहता है कि मैं नवों दिशाओं में दौड़ता हूँ जिससे इष्ट, मित्र, पंडित, पुरोहित घर, कुटुम्बी सबका सफाया करके तो दम मारता हूँ। इसलिये इन दांतों वाले बैलों को कभी नहीं ख़रीदना चाहिए।

छठी मां धरा गा अहै।

कुछ चंचलता या कोई विशेष आदत जब किसी व्यक्ति विशेष में हो तो कहावत चरितार्थ होती है।

अ०– कहते हैं छठी में जो रखा जाता है वही हमेशा के लिये हो जाता है। जन्म से ही वह आदत पड़ जाती है। किसी ऐसे ही स्वभाव के व्यक्ति के प्रति कहावत कही गई है कि जन्म के छठें दिन जब छठी पूजी जा रही थी तो उसी समय जैसे इनके स्वभाव में वह भी रख दी गई थी।

छठी क दूध छाड़िके, आज सबै मं मिलावट अहै।

श०– छठी–बच्चे के जन्म के बाद माँ का दूध जो बच्चे को पिलाया जाता है, मिलावट–शुद्ध सामान में नकली वस्तुओं का मिला होना।

कहावत आज के वातावरण को लेकर कही गई है। आज बाज़ारों में तमाम नकली सामानों की बिक्री धुँआधार हो रही है।

कहावत में यह बात बड़े सुंदर ढंग से अवगत कराई गयी है। यानी आज केवल माता के छठी के दूध को छोड़कर सभी वस्तुओं में मिलावट है।

छपरा पै तिन नाहीं दुआरे पै नाच।

श०– छपरा–जो द्वार पर छान छवाई जाती है, तिन–तृण, तिनका तक न होना, दुआरे–द्वार पर।

अ०– कहावत ऐसे लोगों के ऊपर कही गई है जिनके खाने, रहने को तो जगह नहीं है, पैसा नहीं है, किंतु वाहवाही में बाहर दरवाज़े पर पैसे का दुरुपयोग मनोरंजन में करते हैं।

अ०– छप्पर तक रख न पाये, बैठने की छाया तक तो है नहीं और दरवाजे पर वेश्या का नाच हो रहा है।

छः महीना क कुँवर, सालभर का सुअर।

कहावत छोटे बच्चे के ऊपर कही गई है।

अ०— जब बच्चा छः माह का होता है तो वह साफ–सुथरा, राजसी पोशाक में होता है। जो पहना दो वह वस्त्र साफ इसलिये होता है कि बच्चा किसी न किसी की गोद में रहता है। किंतु जब सालभर का हो जाता है तो वह ज़मीन में खेलने के कारण सुअर की तरह ही लोटता, घिसटता रहता है। उसे फिर संभालना व साफ रखना कठिन हो जाता है।

छनन मनन होतै, केवरिया नाहीं खुलतै।

कहावत हास्य–व्यंग्य की होते हुए स्वातंत्र्य प्रधान है।

अ०— कोई अपने घर में कुछ भी कर रहा हो तो किसी के आने पर दरवाज़ा न खोलने का मतलब ही है कि वह अपनी स्वतंत्रता में बाधा नहीं चाहता है। बाहर वाला सोचता है कि कड़ाही में कुछ पकवान बन रहा है, अतः केवाड़ नहीं खुल रहे हैं।

छटाक भै चून औ चौबारे मां रसोई।

श०— चून – आटा, चौबारा – बाहर, बरामदा।

सामान का कम होना तथा दिखावा अधिक करना।

थोड़ा सा तो आटा है, खाने भर को खुद को ही नहीं है, किंतु दिखाने के लिये कि मेरे यहां भी खाना बन रहा है वह रोटी बाहर बरामदे में बना रही है।

छप्पर फारिके देत देने वाला।

अ०— कहावत ईश्वरवादी व भाग्यवादी है। ईश्वर की कृपा अपार है। देने वाला भगवान जब देता है, धन अचानक ही घर में आ जाता है, मानो छप्पर को बीच से फाड़कर किसी ने गिरा दिया हो।

छदाम की लड़ाई में करो पैसे से भलाई।

यदि झगड़ा झंझट थोड़ा बहुत है और पैसा दे देने से शान्त हो सकता है तो छदाम की लड़ाई को पैसा देकर शान्त कर देना चाहिए। यानी कुछ अधिक भी खर्च हो जाय तो झगड़ा शान्त कर लो दे–लेकर।

छठी क पोतड़ा अबहीं लै न धोयगा।

अ०— पोतड़ा यानी छठी के मल–मूत्र के कपड़े, अबही तक धोइ न गा, यानी अभी भी बच्चे ही बने हो।

छत्तिस तरह के खाब मां बहत्तर तरह क रोग होत।

अ०— तरह–तरह की बनाई गई खाने की वस्तुएं स्वास्थ्य के लिये हानिकारक होती हैं। सादा खाना व संक्षिप्त खाना स्वास्थ्य के लिये लाभकर होता है। तली–भुनी चीज़ें या बहुत ज्यादा चीज़े खानी नहीं चाहिए। किसी ने कहा है– "सादा जीवन उच्च विचार" मनुष्य के जीवन में बहुत आवश्यक है।

" छा "

छावा छोपा घर पाये, बंधी पाये टाटी।
आन क जनमा लरिका पाये, चुम्मा लै–लै चाटी।।

श०— छावा–ऊपर का छाजन, टाटी–मड़ई के दरवाज़े को बंद करने की वस्तु , कहावत किसी विधवा या पति से त्यागी नारी के साथ किसी पुरुष के विवाह करने के प्रति कही गई है।

अ०— बनाबनाया छाया हुआ टाटी लगा घर पाया और दूसरे का पैदा किया लड़का मिला। अब उस को लेकर दुलार पुचकार कर चूम–चाटकर सुख से दिन बिताऊं। आगे करना ही क्या है?

छावा मंड़वा गावा गीत,
पिय बिन लागै सब अनरीत।

अ०— शादी ब्याह रीति, रस्म, मंड़वा और गीत सब कुछ बिना पति के बुरा लग रहा है।

"छानी क काव घर, मेघा क काव डर"?

अ०— स्पष्ट है।

छाजा, बाजा, केस तीन बांगला देस,
चूना, चूची, दही, तीन बांगला नहीं।

अ०— छज्जा, बाजा, और बाल बंगाल में ये तीनों वस्तुएं खूब मिलती हैं। चूना, दही और स्त्रियों के स्तन वहाँ कम ही मिल पाते हैं। स्त्रियों के स्तन बहुत छोटे–छोटे होते हैं।

छान चुवनी, पतोह रोउनी,
नीक न आय सुनो बहिनी।

अ०— बहनो सुनो ! छान जो हमेशा चूती रहती है तथा घर में नई बहू जो सदा रोती रहती है, ये अच्छे लक्षण नहीं हैं। कुलक्षण की निशानी है।

" छि "

छिनरी क घर रहै बतकहिनी क जाय।

श०– छिनरी–आवारा, बदचलन और बतकहिनी–बातूनी।

अ०– कहावत बातूनी स्त्री व छिनाल स्त्री के प्रति कही गई है कि जो औरत व्यभिचारिणी हो, दूसरे आदमी के साथ जिसका नाजायज़ संबंध हो उसका घर तो एक बार बच भी सकता है किंतु बातूनी औरत जो हर समय बातों में मस्त रहती है, उसका घर एकदम से बर्बाद हो जाता है क्योंकि वह अपना सारा समय बातों में ही गुज़ार देती है। घर की व्यवस्था देखने का समय उसके पास कहाँ होता है?

छिनरी तुही डोला के तरे–तरे,
तुही डोला कै ऊपर–ऊपर।

अ०– जो स्त्री आवारा है, वही डोला पर है और जो डोला के नीचे है यानी डोले के साथ–साथ है उसमें भी तुम्ही हो, उसमें भी तुम्हारा मन लगा है।

छिनार क बेटवा, ललना रे, ललना।

अ०– किसी औरत के जब दूसरे पुरुष का पैदा किया बच्चा होता है तो उसका बड़ा दिखावा व दुलार किया जाता है। उसे लाल, ललन, जैसे विशेषणों से दुलारा पुकारा जाता है।

छिउली तरे ई बरवा नाहिंन पाक।

श०– छिउली–ढाक का पेड़, बरवा–बार। पाक–पक्का।

कहावत ऐसे अनुभवी योग्य व्यक्ति पर कही गई है। जो जीवन में आप बीती जगबीती का चढ़ाव–उतार देख चुका हो।

अ०– यह सिर के बाल पेड़ों की छाया–धूप में नहीं पके हैं। ये समय की धूप–छाँह में पके हैं।

छिनार लुगाई, चतुर सिपाही, दुरिये से लखि परत!

श०– लुगाई–स्त्री, चतुर–होशियार।

अ०– आवारा स्त्री व अनुभवी सिपाही दूर से ही पता लग जाता है।

" छीं "

छींकत खाय, छींकत नहाय,
छींकत रहिये सोय,
छींकत पर घर कबहूं न जाइय,
चाहै लाख सुबरनै होय।

श०– सुबरन–सोने का।

कहावत छींक विचार के ऊपर उद्‌धृत की गई है।

अ०– छींक होने पर खाना, नहाना व सोना नहीं मना है किंतु दूसरे के घर कभी नहीं जाना चाहिए। चाहे कितना भी अच्छा घर क्यों न हो।

छींकत गये, झींकत आये।

अ०– घर से छींकते निकले इसीलिये रोते हुये आये। अतः छींकते हुये घर से कभी नहीं निकलना चाहिए। ऐसा छींक विचार के अनुसार ज्योतिषियों का कहना है।

छींका टूटा बिलारी क भाग।

अ०– छींका यानी, सिकहर। डोरी की एक ऐसी वस्तु जिस पर पहले के ज़माने में बिल्ली से बचत के लिये स्त्रियां दूध, दही, इत्यादि रख कर खूंटी या छत के चुल्ले से टांग देती थीं। तो कहा है कि छींका बिल्ली की भाग से टूटा कि वह सारा दूध चट कर गई। तात्पर्य यह है कि दूसरे की कोई वस्तु जब आदमी को मिल जाती है तो कहावत कही जाती है।

छींक दाहिने सुख अभिलासै।

अ०– दाहिने हाथ की तरफ़ की छींक शुभकारक मानते हैं।

छींकते नाक कटाति।

यानी छींकते ही बदनामी मिली या किसी गलती पर तुरंत डांट देना।

छीछिल थरिया, भुरभुर भात
जहां परै निरासा क हाथ।

श०– छीछिल–जिस थाली में बारी बहुत कम हो, भर–भर – छिटका हुआ भात, निरासा–जो पेट भरकर भोजन न परोस पाये।

अ०– कहावत एक ऐसी नारी पर कही गई है जो ठीक से खाना भी न परोस पाये। जिसके परोसने से

किसी का पेट ही न भरे। एक तो थाली ही छिछली उस पर भात भी एक–एक दाने अलग–अलग तथा परोसने वाली का हाथ भी कंजूस कि पेट भर खाना भी न परोस पाये।

छीपा छेड़ी ऊँट कोंहार, पीलवान औ गाड़ीवान आक, अवासा, वेस्या, बानी, दसौ दुःखी जो बरसै पानी।

श०– छीपा–रंगरेज, जो साड़ी वगैरह रंगते हैं। कोंहार–जो मिट्टी का बर्तन बनाते है, पीलवान–जो हाथी चलाता है, गाड़ीवान जो बैल गाड़ी हांकता हैं, आक–मदार का पेड़, जवासा–एक कंटीला पेड़, जो बरसात में पत्तों से रहित हो जाता है, वेश्या–रंडी, पतुरिया, बानी–बनिया।

कहावत वर्षा के प्रभाव पर कही गई है।

अ०– कपड़ों पर छपाई करने वाले रंगरेज, बकरी, ऊँट, कुम्हार, हाथीवान, बैलगाड़ी चलाने वाले, मदार का पेड़ व एक कंटीला पेड़ जवासा का, जो बरसात में जल जाता है और शरद काल में फिर पनप जाता है, ये दसों पानी से दुःखी हो जाते हैं।

छीछी भली जौ चना, छीछी भली कपास
जिनकी छीछी ऊखड़ी, उनकी छोड़ो आस।

श०– छीछी–दूर दूर, ऊखड़ी–ईख, गन्ना।

कहावत घाघ कवि की खेती विषयक कही गई है।

अ०– जौ, चना, कपास, दूर–दूर बोना चाहिए किंतु ईख यदि दूर है तो वह ठीक नहीं है। ईख पास–पास बोनी चाहिए।

" छु "

छुआय पायेसि बानिन, चढ़ाय दिहिस दससेरा।

कहावत बानिन, यानी बनिया की स्त्री के प्रति कही गई है।

अ०– बानिन को ज़रा सी कुछ बात मिलनी चाहिए। तनिक इशारा हुआ नहीं कि जरा सी चूक पर, मोका लगते ही दस सेर का बाट तराजू पर रख कर तौलने लगी।

" छूं "

छूंछ पछोरे, उड़ि–उड़ि जाय।

श०– छूंछ–खाली, थोथा।

अ०– जब किसी के साथ कोई निराशाजनक घटना घटती है तो कहावत चरितार्थ की जाती है।

अ०– जिस कार्य में, जिस व्यक्ति से निराशा मिले उससे कुछ भी आशा की संभावना नहीं होती। जैसे बिना दाना अनाज के कोई भूसा पछोरे तो वह सिवा उड़ने के सूप में बचेगा ही क्या? इसी प्रकार से व्यर्थ के कामों को करने या व्यर्थ के लोगों के साथ सिर खपाने से क्या लाभ?

छूछा हो, तोहका के पूछा?।

अ०– बिना पैसे वाले को दुनिया में कौन पूछता है? किसी ने कहा है– "बाप बड़ा न भइया, सबसे बड़ा रुपइया"। कवि रहीम के शब्दों में–

जब लगि पैसा पास है, तब लगि तव सनमान।

पैसे से बढ़कर दुनिया में कुछ भी नहीं है, उस पर आज के अर्थयुग में? आज तो पैसे का भूत किसी को पहचानता ही नहीं। अतः पैसा न होने पर कोई किसी का यार नहीं होता है।

छूंछ कुँआ पतकोरन न भरी।

श०– पतकोरन–पत्ता।

अ०– खाली कुँआ पत्तों से नहीं भर पायेगा। एक तो कुँआ, उस पर पत्तों की क्या बिसात? इसलिये उसमें पानी की ज़रूरत है। यानी कठिन परिश्रम के बाद ही पानी मिल सकता है और पैसा खर्च करने पर ही कार्य की सिद्धि संभव हो सकती है।

छूंछ पैलगी, जिव छन्न।

कहावत हास्य–व्यंग्य में कही गई है।

अ०– अपेक्षित लोगों से जब समय पर कोई धन–लाभ नहीं होता तो कहते हैं कि खाली पैलगी करने पर प्राण उड़ गये, जी सनाका खा गया कि कुछ तो लेकर पैर छुआ होता। इसके अतिरिक्त कहीं पर कुछ पाने की अपेक्षा हो, अपना कोई हक निकलता हो पाने का यदि न मिला तो भी कहावत कही जाती है।

छूंछ के कोऊ संगी न साथी,
बड़ेन दुआरे बांधी हाथी।

अ०— जिसके पास पैसा नहीं है उसका कोई संगी साथी तक नहीं बनना चाहता और बड़ों के दरवाज़े पर हाथी झूमता है।

" छू "

छूटा घोड़ भुसौलै ठाढ़।

मनुष्य हो या पशु जहाँ परच जाता है, कुछ खाने को पाता है, वहाँ जब देखो पहुँचा ही रहता है। कहावत इसी पर कही गई है।

अ०— घोड़ा बाँधने की जगह से छूटा नहीं कि भूसे की कोठरी में जा पहुँचा।

छूटि परै गंगा, चोराय खाय बाभन।

कहावत दान संबंधी कही गई है कि गंगा जी में कोई वस्तु यदि गिर गई तथा किसी ब्राह्मण ने कुछ चुराकर खा लिया तो वह अकारथ नहीं जाता है। उसका कुछ न कुछ पुण्य–लाभ अवश्य मिलता है।

छूरी चहे खरबूजा पर गिरै
चहे खरबूजा छूरी पर गिरै,
कटी खरबूजै।

कहावत दीन, हीन, दुर्बल, ग़रीब के ऊपर उद्धृत की गई है।

अ०— हानि हमेशा कमज़ोर, दुर्बल, ग़रीब की ही होती है। हर हालत में ग़रीब, कमज़ोर ही मारा जाता है। कटेगा खरबूज़ा ही चाहे ख़रबूजा छूरी पर गिरे या छूरी ख़रबूजा पर गिरे।

" छे "

छेड़ी क मुंह कोंहड़ा नाहीं लीलत।

या

छेड़ी के मुँहे कोंहड़ा नाहीं अमात।

जब कोई आदमी कोई ऐसी बात करता है जो असंभव हो, तो कहावत कही जाती है

अ०— कहाँ बकरी का मुँह और कहाँ कोहड़ा बड़ा सा, भला वह कोहड़ा कैसे निगल सकती है? लोग जोश में व गप्पें मारते समय बात तो कह जाते हैं किंतु यह भूल ही जाते हैं कि मैं क्या बके जा रहा हूं?

छेड़ी क चरा बन, बिटिया क चरा घर,
नहीं रहि जात।

कहते हैं, छेड़ी दिन भर में बहुत कुछ चर जाती है। धीरे–धीरे बड़े–बड़े जंगलों का सफाया कर डालती है। कहावत छेड़ी (बकरी) व कन्या पर उद्धृत की गई है।

अ०— जैसे बकरी का चरा बन कुछ समय बाद खाली हो जाता है। उसी प्रकार घर में लड़कियों के अधिक होने पर दहेज में ही घर का सारा पैसा उठ जाता है।

छेगड़ी का दूध छत्तिस रोग मारत।

अ०— छेड़ी जो जंगलों में तमाम तरह की पत्तियाँ खाया करती है, प्रकृति के अति निकट रहती है, उसके दूध में प्रत्येक तरह के प्रकृति–पोषक तत्व होते हैं। उसका दूध अत्यन्त लाभकारी होता है विशेष कर बच्चों एंवम् टी.बी. के मरीज़ों के लिए।

" छो "

छोटे से न परसावै, न बड़े से भखावै।

श०— छोटे–ग़रीब, परसावै–कोई भी खाने पीने का सामान देना, भखावै–कहलाना, वचनबद्ध करना।

कहावत से यह तात्पर्य निकलता है कि छोटे लोगों के पास पैसा कम होता है। इसलिये खिलाने–पिलाने का दिल भी कम होता है तथा बड़े लोगों के पास पैसा तो होता है किन्तु वे किसी बात का वायदा करके भूल जाने में माहिर होते हैं।

अ०— न तो छोटों से खाना परसवाना चाहिए, न बड़ों लोगों से कुछ कहलाना चाहिए।

छोटी नसी, धरती धँसी।
हर लागा पाताल, तो टूट गया अकाल।

श०— नसी–हल का फाल, जो लोहे की धारदार वस्तु धरती के अंदर जाकर ज़मीन को जोतती है, पताल–धरती के नीचे, अकाल–सूखा।

अ०– कहा गया है कि हल में यदि फाल छोटा है तो धरती उसका मज़ाक बनाती है कि क्या हमें जोत रहे हों? हम तो वैसे ही हैं। हां, यदि नसी बड़ी हुई तो ज़मीन की जोताई गहराई तक हो सकती है। उससे अनाजों का ढेर लगने से, सूखा अकाल सब समाप्त हो जाता है।

छोटा मुंह और ऐंठा कान, यही बैल की है पहिचान।

अ०– कहावत बैलों के ऊपर उद्धृत की गई है कि जिस बैल के ऐंठा कान व छोटा सा मुंह हो वही बढ़िया बैल होता है।

छोटी, सींग औ छोटी पूंछ, ऐसे बरद लियो बेपूछ।

अ०– जिस बैल की छोटी–छोटी सींग व छोटी पूंछ हो, ऐसे बैलों को बिना पूछे हुए ले लेने चाहिए।

छोटे मियां, छोटे मियाँ, बड़े मियाँ सुभान अल्ला।

अ०– कहावत उर्दू की है। कहा गया है कि छोटे लोग तो जो जैसे हैं, वे तो हैं ही, बड़े लोग उनसे भी चार हाथ आगे हैं। यानी गड़बड़ी बडे लोगों में और भी अधिक होती है।

छोटा सबसे खोटा।

अ०– छोटा आदमी या छोटे बच्चों पर कहावत कही गई है। छोटा सबसे बुरा होता है। यह कहावत प्रायः हँसी मज़ाक में कही जाती है।

छोट ननदिया अंगिया क बंद,
बड़ी ननदिया बिजली बसंत।

अ०– छोटी ननद तो बहुत प्यारी है वह अंग में पहनने वाली अंगिया का बंद है और बड़ी ननद तो बिजली की तरह तेज़ होने के कारण भय पैदा करने वाली होती है।

छोट घर समधियान बड़ा।

जहां पर जगह की कमी होती है वहीं पर कहावत चरितार्थ की जाती है।

अ०– घर तो बहुत ही छोटा है, मगर समधियान यानी जहां लड़के–लड़की की शादी की जाती है, वह स्थान बहुत ही बड़ा है।

छोटी–मोटी कामिनी सब हैं बिस की बेल,
बैरी मारै दांव से, एइ मारै हंस–खेल।

श०– कामिनी–स्त्री, दांव–मौका, बिस–विष, ज़हर, कहावत स्त्रियों से संबंधित है।

अ०– ये छोटी मोटी स्त्रियां विष की बेल होती हैं। ये बैरी से अधिक कष्टदायी होती हैं क्योंकि बैरी तो दांव पाने पर ही मारता है और ये हंसबोल कर पुरुषों को मारती हैं।

छोटी सी बछिया बड़वार हत्या।

गाय हो या बछिया हत्या तो हत्या, किसी भी जीव की हत्या करना पाप है। कहावत भी इसी विषय पर कही गई है।

अ०– छोटी सी बछिया हो या बड़ी सी गाय, मारने का पाप सबको लगता है। बुरा कर्म बुरा ही कहलायेगा, हो चाहे भी जैसा।

छोड़ा जाट पराई खाट।

जब कोई मनुष्य किसी के साथ बहुत ज्यादा अत्याचार करता है, ज़बरदस्ती दूसरे की चीज़ पर कब्जा कर लिया जाता है, तो कहा जाता है कि अब तो दूसरे की वस्तु दे दो या छोड़ दो। किसी की वस्तु पर अनधिकार चेष्टा करना।

" जं "

जंगल में मोर नाचा, किसने देखा?।

कहावत उस समय चरितार्थ की जाती है जब कहीं दूर देश–विदेश में अपने घर–गांव से दूर लोग लाख बड़े आदमी हों, चाहे जितने ऐश–आराम से रह रहे हों, चाहे जितना भी सुखी हों, लाख खर्च करते हों, मगर अपने देश, गांव घर का वहाँ कोई भी देखने वाला न हो तो फिर फायदा ही क्या? इज्ज़त तो अपने ही गांव, घर से बनती है।

अ०– जंगल में मोर नाचे तो कौन देख रहा है? कोई नहीं, जब जहां कोई परिचित न हो वहां उसकी कोई कद्र नहीं होती है।

जंजाल भल कंगाल नहीं।

श०– जंजाल–झंझट, परेशानी, तरह तरह की चिन्तायें, कंगाल–गरीबी, भुखमरी।

कहावत उस समय चरितार्थ होती है जब कोई मनुष्य तमाम झगड़े, झंझटों, चिन्ताओं से परेशान हो जाता है।

अ०– जंजाल होना अच्छा है किन्तु कंगाल होना अच्छा नहीं है।

" ज "

जबरा मारै रोवै न देय।

श०– जबरा–जबर, बलशाली, बड़ा आदमी, जबरदस्त।

कहावत किसी बड़े, जबरदस्त, सबल आदमी के ऊपर कही गई है।

अ०– बड़े आदमी ग़रीब, छोटों, निर्बलों के साथ अन्याय भी करते हैं और उन्हें रोने भी नहीं देते हैं। किसी ग़रीब का अधिकार भी छीन ले और चोट लगने पर आँसू भी न बहाने दे।

जारे जोग, सुभाउ हमारा,
अनभल देखि न जाइ तुम्हारा।

यह पंक्ति गोस्वामी जी की है। जिस बनावटी रूप में मंथरा का रूप दिखाया गया है वैसी ही कुटनी स्त्रियाँ होतीं भी हैं। वे किसी के घर की व्यवस्था को बिगाड़ने में मंथरा ही जैसी कुटनी, मीठी, छलभरी, बातें करने में महानिपुण होती हैं।

अ०– ज़ब किसी नारी को किसी ऐसे आदमी को बहकाना होता है तो लोग शुभचिंतक बन जाते हैं। मंथरा कहती है कि हमारा स्वभाव जलाने लायक है कि तुम्हारा अनभल आंखों से देखा नहीं जाता।

जउधी मोट दूबर होइहै,
तउधी दूबर सरगे जइहैं।

कहावत हास्य–व्यंग्य में उद्धृत की गई है जो किसी अत्यधिक दुबले मनुष्य के प्रति चरितार्थ की गई है।

अ०– जब तक मोटा आदमी दुबला होगा तब तक दुबला भगवान के घर पहुंच जायेगा।

जब तक पांड़े भार देखिहैं,
तब ले पड़ाइन झूरै बुकइहैं।

यह कहावत भी हँसी में कही गई है जो कि जल्दीबाज़ी के लिये कही गई है।

अ०– जब तक कोई चबेना भुनाने को भाड़ देखने जायेगा तब तक पड़ाइन बिना भुना ही चबा डालेंगी। जब किसी काम में देर होते देखा जाता है तो कहावत उद्धृत की जाती है।

जहां जायं दूला रानी, उहां परै पाथर पानी।

श०– दूलारानी–कोई ऐसी ही स्त्री कहा गया है जो अपशकुनी होती है, पाथर–पानी – कार्य में बाधा का उत्पन्न होना।

अ०– जहां कुलक्षणी औरतें पहुंच जाती हैं, वहीं कुछ न कुछ गड़बड़ी हो जाती है। किसी ने कहा है– "जहं–जहं पावं परे संतन के तहं–तहं–बंटाधार"। यहाँ व्यंग्य में संत कहा गया है। यानी ऐसे कुलक्षण लोगों का कहीं जाना ही अभिशाप है। कभी–कभी आदमी अपने मुख से अपने दुर्भाग्य के ऊपर भी कहता है।

जबरदस्त क ठेंगा सिर पर।

अ०– जो बलशाली, जबरदस्त होता है उससे सभी भयभीत रहते हैं। वह कभी किसी की चिंता नहीं करता है, अपितु उसी की सब चिंता करते हैं।

जहां चाह है, वहीं राह है।

अ०– यदि मन में लगन है तो वह कार्य अवश्य पूर्ण होगा। उसमें कठिनाई भी हो तो रास्ता निकल आता है। यदि चाह नहीं है तो आसान कार्य भी कठिन हो जाता है।

जहां सुमति तहं संपति नाना,
जहां कुमति तहं बिपति निदाना।

श०– सुमति–सुबुद्धि, अच्छी अक्ल, संपति–धन, लक्ष्मी, सुख शान्ति, नाना– अनेक प्रकार के, कुमति– दुर्बुद्धि, बुरा व्यवहार, निदाना–मूल कारण, नाश।

उपरोक्त पंक्ति 'गोस्वामी जी' की है।

अ०— जहां पर एकता है, सद्‌विचार है और सद्‌बुद्धि है वहां पर सुख, शान्ति, संपत्ति सभी सुंदर साधन उपलब्ध हैं और जहां पर कुबुद्धि का राज है, वहां पर रोज़ आये दिन दुःख क्लेश, कष्ट भरे पड़े हैं।

जरै ऊगांव, जौन समझावा न मानै।

अ०— जब किसी को कोई बात बताई जाती है तो कहावत कहते है। विशेष रूप से जब बच्चे को कोई बात बताई जाय और वह ज़िद्‌द के मारे अपनी ही धुन में रहे, बात को न माने, तो कहावत चरितार्थ की जाती है

अ०— वह गांव जल जाय, जो कहने पर विश्वास न करे।

ज़हर के पेड़े में जहरै होत।

कहावत स्पष्ट है। जो जैसा होता है, उसकी संतान भी उसी प्रकार होती है।

अ०— कहा है कि जहर के पेड़ में जहर ही होता है। कहावत किसी के लड़के के स्वभाव की बुराई देखकर कही गई है। कहा गया है—

जेकै जइसे माई—बाप ओके वइसे लड़िका।
जस जेकै घर—दुआर वइसे ओकै फरिका।।

जहां पेड़ न रूख, तहां रेंड़ै प्रधान।

श०— रूख—पेड़, रेंड़—एक तरह का पेड़ है जिसमें पत्तियां ज्यादा नहीं होती है।

अ०— जब किसी व्यक्ति को विवशता में महत्व प्रदान किया जाय तो कहावत स्पष्ट की जाती है कि जहाँ पर सब मूर्ख ही मूर्ख बसते हैं वहाँ जो ज़रा सा भी नाम मात्र को बुद्धि रखता हो उसको महत्व दिया जाता है। जैसा कि कहा गया है कि जहाँ पेड़ रूख न हो वहां पर रेंड़ जैसा पेड़ प्रधान वृक्ष में गिना जाता है, वर्ना रेंड़ को कौन पेड़ की गिनती में जोड़ता है?

जब पुरवा पुरवाई पावै, झूरी नदिया नाव चलावै।

अ०— चूंकि पुरवा हवा चलने पर पूर्णरूप से वर्षा का वातावरण बन जाता है इसलिये, जब पूर्वा नक्षत्र में पुरवा हवा चले तो वर्षा इतनी होती है कि सूखी नदी में भी नाव चलने लगती है।

जस—जस भीजै कामरी, तस—तस भारी होय।

अ०— कमरी के माध्यम से कहावत उन लोगों के ऊपर कही गई है जो सुख—दुःख या ज़िम्मेदारियों के बढ़ते हुये बोझ को धीरे—धीरे निभाते जाते हैं। उसी प्रकार से जैसे कमरी भीगने पर भारी होती जाती है।

जने—जने कै लकड़ी, एक क बोझ।

कहावत किसी कार्य को मिल—जुल कर करने पर कही गई है।

अ०— जो काम एक आदमी के लिये बोझ है, वह यदि कई लोग आपस में बांट कर कर लें तो आसान व सुविधाजनक हो जाता है।

जब उठाय लिहिस झोरी तो का बाभन, का कोरी।

अ०— जब झोली उठा कर साधु का वेश धर ही लिया तो इसमें जाति—भेद कैसा? जब भिक्षा मांगने निकल ही पड़े तो चाहे ब्राह्मण हो, चाहे कोई अन्य, कोई अंतर नहीं पड़ता है।

जइसी करनी, वइसी भरनी।

अ०— जैसा कर्म किया होगा वैसा ही फल भी मिलेगा। गोस्वामी जी के शब्दों में— "निज कृत कर्म भोग सब भ्राता" या— "कर्म प्रधान बिस्व करि राखा, जो जस करइ सो तस फल चाखा।"

जइसे देखौ गांव कै रीत,
वइसे उठावै आपन भीत।

श०— रीत—रिवाज़, रस्म, तरीके, भीत—दीवाल।

अ०— कहावत देश, दुनिया, गाँव, समाज के ऊपर कही गई है कि जैसे गाँव के लोगों के रंग—ढ़ग, बात, व्यवहार, चाल, चलन देखें वैसे ही खुद भी करें। सभी को देखकर ही अपनी दीवाल भी उठानी चाहिए।

जउनी पतरी मां खाय,
उही मां छेद न करै क चाही।

कहावत एहसानफ़रामोश व्यक्ति के प्रति कही गई है जो मलमनसाहत करने वाले की उपेक्षा करता है।

अ०— जहां रहकर शरण पावे या जिस व्यक्ति से

अपना कोई भला हो उससे नमकहरामी नहीं करनी चाहिए। किसी का किया गया एहसान सदैव मानना चाहिए। जैसा कि कहा गया है कि जिस पत्तल में खाये उसमें छेद नहीं करना चाहिए। उसका बुरा नहीं सोचना चाहिए।

जस देस, वस भेष।

अर्थ स्पष्ट है।

जहां पानी चुकि जात, उहीं जमीनो चुकि जात।

कहावत पानी के ऊपर कही गई है क्योंकि पानी मानव जीवन के पाँच तत्वों में एक है। पानी का जीवन में बड़ा महत्व है। कहावत का अर्थ है—

अ०— जहां पानी नहीं, वहां मनुष्य नहीं। जहां मनुष्य नहीं, वहां धरती कैसी? गोस्वामी जी के शब्दो में—

छिति, जल, पावक, गगन, समीरा
पंच रचित यह अधम सरीरा।

बिना पानी के मनुष्य जीवित नहीं रह सकता है।

जब तक सांसा, तब तक आसा।

कहावत आशा के रूप में कही गई है।

अ०— जब तक मनुष्य के शरीर में सांस चल रही है, तब तक मनुष्य के जीवन की आशा की जा सकती है।

जब तक पढ़बै क ख खइय्या
तब तक जोतबै तीन हरय्या।

कहावत उस समय की है जब गांवों में पढ़ाई—लिखाई का कोई वातावरण या महत्व नहीं था।

अ०— कहते हैं जब तक क, ख पढूंगा तब तक तीन बार हल जोत कर खेत तैयार कर लेंगे। खाने भर को तो खेत से ही निकाल लेंगे। बेकार पढ़ने से क्या लाभ?

जब बांझ बिआनी तो सोंठ हेरानी।

श०— बांझ—जिस स्त्री को बच्चा न होता हो, बिआनी—बच्चा पैदा होना, हेरानी—खो जाना।

कहावत ऐसे समय पर कही जाती है जब कोई वस्तु अत्यन्त कठिनाई से मिले उसके बाद उससे संबंधित वस्तु ही खो जाय।

अ०— कहाँ तो बांझ स्त्री के लाख उपायों के बाद बच्चा भी हुआ तो सौर में देने वाली ख़ास वस्तु सोंठ जो जच्चा को दी जाती है, वही खो गई। यानी एक चीज़ हुई तो दूसरी ग़ायब हो गई। आवश्यकतानुसार साधन न मिल पाना।

जब बहै हड़वा कोनू, तब बनिया लादै नोनू।

श०— हड़वा – पश्चिमी हवा, लादै – लेने जाना, लादकर लाना।

अ०— जब पछिवा हवा बहने लगे तो समझो कि पानी नहीं बरसेगा। ऐसे समय में ही बनिया नमक लेने व लादने जाता है।

जबरा करै जबरई, नीमर करै नियाव।

श०— जबरा—जो जबरदस्त हो, नीमर—दुर्बल, कमज़ोर, नियाव—न्याय

अ०— जबरदस्त आदमी हमेशा जबरदस्ती की ही बातें करता है और कमज़ोर, ग़रीब इंसान हमेशा न्याय की बातें करता है।

जब बूढ़ी भई बिलारी, तब मूस बजावै तारी।

कहावत बुढ़ापे की विवशता, कमज़ोरी तथा जवानी में किये गये अन्याय पर है। शुरू के दिनों में तो आदमी को शारीरिक बल का बड़ा जोश व ताव रहता है, मगर जब बुढ़ापा आ जाता है तो मनुष्य अपने शरीर से विवश व लाचार हो जाता है।

अ०— जब बिल्ली बूढ़ी हो गई तो चूहों को स्वतंत्रता मिल गई। अब उन्हें खाने व तंग करने वाला कोई भी नहीं है। अतः वे प्रसन्न होकर तालियाँ बजाया करते हैं और कहते हैं कि अब तो तुम बुढ़ापे के मारे चल भी नहीं सकती हो, अब मेरा क्या करोगी?

जस लादन, तस पादन घोड़ी,
बिधिना आन मिलाई जोड़ी।

श०— लादन—बैठने वाला, पादन—बोझ पड़ने पर हवा खिसक जाना, कमज़ोर, बिधिना—ब्रह्मा, जोड़ी—साथी।

अ०— जब दो बराबर की कमज़ोर स्थितियों की तुलना की जाती है तो कहावत लागू की जाती है। जैसा बैठनेवाला, वैसी ही सवारी भी है। भगवान ने

दोनों लोगों की अच्छी जोड़ी मिलाई है। बैठनेवाला और बैठानेवाला, दोनों एक ही जैसे हैं।

जइसे माई, वइसे धिया,
जइसे कांकर वइसे बिया।

अ०– यह सही है कि जैसी मां होती है वैसी ही लड़की भी होती है और जैसा बीज होता है वैसा ही उस पेड़ का फल होता है। फल यदि बढ़िया है तो उसका बीज भी बढ़िया होगा।

जब लगि काग सराध पख, तब लगि तव सनमान।

श०– सराध–क्वार के माह में श्राद्ध पक्ष लगता है। जिसमें लोग अपने–अपने पितरों को पानी देते हैं। यह क्वार के अंधेरे पाख में पड़ता है। इसमें मृतक पूर्वजों को जो जिस तिथि को मरा होता है, उसी दिन पंडितों के द्वारा श्राद्ध करवाकर १५ दिनों तक अपने बाप–दादों को तिलांजलि देकर तब पुत्र खाता पीता है। इसमें कौवों को आमतौर पर खिलाया जाता है कि न जाने किस भेष में कौन आ जाये। कहावत उसी को लेकर स्पष्ट की गई है।

अ०– कौवा! जब तक श्राद्ध का पाख है तभी तक तुम्हारा सम्मान है, उसके बाद कौन पूछता है? यह कहावत कभी–कभीं उन लोगों के ऊपर भी लागू की जाती है जो कुछ ही दिन के मेहमान होते हैं और अनायास आकर टिके रहते हैं।

जहाँ अचानक होत है, अति आदर सम्मान
तहाँ सदा संकित रहै, जो चाहे कल्यान।

अ०– कहने का तात्पर्य यह है कि जहां पर सदैव आदर हो, तो सही है। पर जहां एकदम से कोई बदलाव हो उसका कारण अवश्य पता लगाते रहना चाहिए कि इसका क्या कारण हो सकता है?

इसी पर रहीम कवि के शब्दों में–

सुनु रहीम जग आइके कै सलाम, कै राम,
तब निहचै ही जानिये या कछु अंटक्यो काम।

तो उसी भांति रोज़–रोज़ के स्वागत–सत्कार से भी सावधान रहना चाहिए।

जरती आगी कोउ गोड़ नाहीं धरतै।

अ०– जानबूझकर कोई भी आदमी ख़तरे की जगह नहीं जाता है। जैसे कि आग जल रही हो तो कोई उसमें कूदना नहीं चाहेगा।

जइसे ऊड़ क चूल्हा।

श०– ऊड़ का चूल्हा–वह चूल्हा जिसको उठाकर जहां चाहे वहीं रखकर खाना बना लें। यानी उठउवा चूल्हा।

अ०– किसी आदमी की जब कोई खबर ही न हो कि वह कब, कहां, किस समय, किसके यहां बैठा है तो कहावत कही जाती है। जैसा उठउवा चूल्हा जहां मन कहे रख लो वैसे ही कुछ आदमी भी होते हैं कि जहां बैठ गये वहीं बैठ गये।

जग जीतिव मोरी कानी,
बर ठाढ़ होय तौ जानी।

यह कहावत एक कथा के आधार पर कही गई है। "कोई कन्या कानी थी। उसके लिये एक ऐबी वर की तलाश थी मगर नाई को जो वर मिला वह देखने में पूर्ण अंग का लगा। उसने सोचा चलो हमारी कन्या तो कानी है किंतु वर उसकी तक़दीर में अच्छा ही बदा है। अतः नाई प्रसन्न मन कन्या के पिता को सब कुछ बता गया।

जब विवाह के मुहूर्त के समय कन्या चौक पर बैठी तो नाई को बड़ी प्रसन्नता हुई बोला कि ऐ कानी बेटी, अब तो तुमने जग ही जीत लिया, एक अच्छे वर के साथ विवाह हो रहा है। इस पर वर पक्ष के नाई ने कहा– "वर ठाढ़ होय तौ जानी। यह बात कन्या पक्ष के नाई को नहीं मालूम थी कि वर लंगड़ा है।

जब देखो पिय संपति थोड़ी
बेसहो गाय, बियाउर घोड़ी।

श०– संपत्ति–धन, बेसहो–ख़रीदना, बियाउर–जो बच्चा देने वाली घोड़ी हो।

कहावत धन संबंधी है। पैसा किस प्रकार से घर आ सकता है? पुराने ज़माने में कुछ ऐसे ही धंधे अपनाये जाते थे।

अ०– स्त्री अपने पति से कहती है कि यदि घर में पैसे की कमी हो तो गाय ख़रीदनी चाहिए और उसके दूध को बेंच कर पैसा कमाना चाहिए या फिर घोड़ी ऐसी लेनी चाहिए जो ब्याने वाली हो। उससे घोड़ी व बच्चे दोनों से ही लाभ होगा।

जहां जाय भूखा, तहां परै सूखा।

कहावत भाग्यवादी है।

अ०– जहाँ कहीं भी भूखा जाता है, उसकी किस्मत ऐसी कि हर स्थान से किसी न किसी झंझट के कारण भूखा ही लौटता है। कोई न कोई परिस्थिति अवश्य सामने आ जाती है कि वह खाने को नहीं पाता है जैसे वहाँ भी अकाल पड़ गया हो।

जहां सूरू माठा क जांय,
पड़वा–भंइस दूऊ मरि जांय।

श०– सूरू – एक नाम।

अ०– जहां कहीं भी सूरू मट्ठा लेने जाते है वहीं भैंस व बच्चा दोनों ही मर जाते हैं। तात्पर्य यह कि कुछ लोग ऐसे नसुड्ढे होते हैं कि जो कुछ भी काम करने निकले तो काम ही चौपट कर आते हैं।

जहां सींक न आय उहां फार समाय।

अ०– किसी काम के लिये असंभव प्रयास करना। जहां सींक भी न जा सके, वहां फार जैसी वस्तु के लिये प्रयास करना मूर्खता नहीं तो और क्या है?

जब बर बरौठे आई, तब रबी की होय जोताई।

श०– बर–बर्र, बरौठे–ऊपर छत्ते में, रबी–तीन फ़सलों में से एक फ़सल का नाम है। इस फ़सल में गेहूं, चना, जौ, मटर इत्यादि अनाज बोये जाते हैं। कहावत फसल रबी के बोये जाने पर कही गई है।

अ०– जब बर्र (हड्डा–हाड़ी) अपने छत्ते में उड़ते हुये आने लगे तो समझो कि रबी के फ़सल की बोआई शुरू होने वाली है।

जहां देखो पटवा कै डोर,
तहां दीजिये थैली खोल।

श०– पटवा–पीले रंगवाला बैल, डोर–पगहा, थैली–रुपये की थैली।

अ०– कहावत बैलों की पहचान के ऊपर कही गई है कि जहां कहीं भी पगहा में बंधा पीले रंग का बैल देखो, वहीं तुरंत थैली खोल दो, यानी बैल खरीद लो। निश्चित रूप से ये बैल अच्छे होते हैं।

जहां देखिये रूपा धौर, सुकाचार बस दीहो और।

श०– रूपा–चाँदी, धौर–सफेद।

अ०– जहां पर श्वेत रंगवाला बैल हो वहाँ भले ही कुछ पैसा ज्यादा लगे किंतु उसे अवश्य खरीद लेना चाहिए। ये अच्छे माने जाते हैं।

जहा परै फुलवा कै राल, झाडू लिये बहारै सार।

श०– फुलवा–आँख की फूली पड़ा बैल, लार–जो मुंह से तरल पदार्थ गिरता है, सार–बैलों के रहने का स्थान।

अ०– कहावत है कि जहां पर आंख में फूली पड़े बैल हों वे इतने कुलक्षण माने जाते हैं कि यदि उनकी राल टपके तो तुरंत ही झाडू लेकर बहार देना चाहिए। अर्थात् ऐसा बैल नहीं खरीदना चाहिए।

जहंवां देखिह लोह बैलिया,
तहंवा दीह खोल थैलिया।

अ०– जहाँ पर लाल बैल दिखाई दे, वहां तुरंत खरीद लेना चाहिए।

जइसे जैकै चोट पिराय,
वइसे हरदी मोल बिकाय।

कहावत गर्ज के ऊपर कही गई है। जिसकी जैसी गर्ज होती है उसी के हिसाब से किसी वस्तु का मूल्य बढ़ता है या किसी भी कार्यक्रम का रूप बनता है, जैसा कि कहावत से स्पष्ट है।

अ०– किसी ने पूछा कि हल्दी का क्या भाव है? तो दुकानदार ने कहा– जैसी जिसके चोट लगी हो। यानी चोट लगने पर हल्दी लगाई जाती है। इसलिए दुकानदार का कहना है कि जैसी गर्ज हो। चोट हल्की होगी, तो हल्दी का दाम भी कम होगा। यदि चोट गंभीर होगी तो हल्दी का दाम भी इसलिये बढ़ जायेगा क्योंकि लेने वाले को उसकी विशेष आवश्यकता है। उसे हर हालत में वस्तु को लेना ही है।

जइसे नागनाथ, वइसे सांपनाथ।

श०– नागनाथ, सांपनाथ – दोनो ही सांप।

अ०– दो व्यक्तियों की तुलना में कहा गया है कि दोनों ही एक से बढ़कर एक हैं। कोई किसी से कम नहीं है। एक सांप है तो दूसरा भी नाग ही समझो।

जल मां रहिके मगर से बैर नाहीं होत।

कहावत उस समय कही जाती है जब कोई आदमी किसी निकटतम संबंधी के साथ रहकर उससे तनाव की स्थिति रखता है। साथ का बराबर रहना उठना–बैठना, खाना–पीना होते हुए दुर्भावना रखना बुरा होता है। कहावत के अनुसार–

अ०– जब मगर के साथ हमेशा पानी में रहना है तो उससे बैर करना कहाँ ठीक होगा?

जब दांत रहा तो चना नहीं,
जब चना भवा तौ दांत नहीं।

अ०– आवश्यकता के समय किसी भी वस्तु का न मिल पाना।

अ०– जब दांत थे तो चने खाये जा सकते थे। उस समय चना न मिला और जब चने मिले तो दांत ही गायब हो चुके हैं। अब चने के मिलने से क्या लाभ? अब तो उसे चबा ही नहीं सकते।

जहाँ बसै उहै उत्तिम देसा,
जे प्रतिपालै उहै नरेसा।

श०– उत्तिम–उत्तम, अच्छा, देसा–देश, प्रतिपालय–पालन करे, कहावत कहीं रहने व संरक्षण पाने पर कही गई है।

अ०– जहाँ जाकर रहने लगे वहीं सबसे अच्छा लगने लगता है और जो अपना संरक्षक हो, वही अपना स्वामी, हितैषी, शुभचिन्तक होता है।

जनम पूत तू लोलक लइय्या,
बोय धान पछोर पइया।

श०– लोलकलय्या–लबलब, अस्थिर, अशान्त, जल्दबाज़, पइय्या–खोखला धान। कहावत किसी ऐसे जल्दबाज़, लबलब आदमी के ऊपर कही गई है जो काम को ठीक से करना तो दूर रहा काम को बिगाड़ कर रख देता है।

अ०– ए पूत, तुम ऐसे चंचल अशान्त दिमाग़ के पैदा हुए कि बोते समय तो धान बोया किंतु जब काटने, पछोरने चले तो केवल खोखले धान पाये ऐसे तो काबिल पुत्र जन्में हो। काम करने में असावधानी करना।

जबरदस्त चोर, सेंधी में आल्हा गावै।

कहावत जबर, तेज़ तर्रार, ज़िद्दी, अपनी बात को मनवाने वाले के ऊपर कही गई है। यानी जो चोर जबर है वह चुपके से तो क्यों घुसे सेंध में बलवान बना वीर रस का गाना आल्हा गा रहा है।

जनमत खायों माई बाप, खुरखुरियै आजी–आजा
चलत फिरत ननियाउर खाये, सरबउली कै डंका बाजा।

श०– जनमत–पैदा होते ही, खुरखुरिये–चलने लगना, सरबउली–सबतरफ, डंका–बाजा।

कहावत किसी ने अपने दुर्भाग्य से ऊपर उद्धृत की है।

अ०– जब पैदा हुए तो मां–बाप को खत्म कर दिया, जब पैर ज़मीन पर पड़ने लगे तो बाबा–दादी को समाप्त करके बैठा और जब चलने लायक हुआ तो चारो ओर नाश का डंका बज चुका था। दुनिया में मेरे कोई भी न था। मैं ऐसा अभागा पैदा हुआ था।

जर का मर्द नाहर, चाहे घर रहे या बाहर
बेजर का मर्द बिल्ली, चाहे घर रहे चाहे दिल्ली।

श०– जर–रुपये पैसे वाला, संपत्ति वाला, नाहर–शेर, बेजर–बिना कमाई, बिना पैसे वाला।

कहावत धन संबंधी है।

अ०– जो मर्द पैसे वाला है, पैसा कमा रहा है, वह चाहे घर रहे या बाहर परदेश में रहे, वह हमेशा शेर की तरह रहता है और जो पैसा नहीं कमा रहा है, वह बिल्ली बना रहता है, चाहे घर रहे या दिल्ली में रहे।

जनमत होरिल पैठत बाहुरि।

अ०– कहावत सहन, असहन के ऊपर है। कहते हैं कि घर में पैर रखने के एक वर्ष तक नव वधू आने पर घर, परिवार में जो कुछ भी अच्छा–बुरा होता है वह उस नवागन्तुक के प्रति कहा जाता है कि बहू के पैर अच्छे थे या नहीं। इसी प्रकार से पुत्र जन्म के बाद

भी शकुनापशकुन का विचार लोग करते हैं कि बालक का जन्म किस घड़ी में हुआ? कैसा लग्न, मुहूर्त है? उसी प्रकार से लोग ग्रहों की शांन्ति वगैरह भी करवाते हैं। इस तरह से बहू के आते ही, बालक के जन्मते ही भाग्य का व सहन–असहन का निर्णय करने लग जाते है।

जर खोदि के माठा डारथि।

कहावत में अन्तर्कथा निहित है जिसका अर्थ है सर्वनाश पर उतारु होना।

अ०– चाणक्य नंदवंश के नाश करने की ठानी और यह प्रण किया कि जब तक नंद वंश का नाश न कर लूंगा शिखा न बांधूगा। एक दिन उनके पैर में कुश चुभ गया। उन्होंने उस कुश की जड़ को खोदकर मट्ठा डाल दिया ताकि फिर उगने की संभावना न हो।

जहांचार बर्तन रहति, उहीं खटखट होत।

अ०– बर्तनों की खटपट को घर का प्रतीक माना है कि जहाँ पर चार लोग रहते हैं वहाँ कुछ न कुछ झगड़ा–झंझट लगा ही रहता है। चार वर्तनों के रहने पर आवाज़ जरूर ही होती है।

जहां खाना वहीं दौलत खाना।

अ०– जहां भोजन की व्यवस्था हो वहीं समझ लो कि दौलतखाना है।

जनम कै कमाई मरघट मां गँवाई।

जब कोई बहुत बड़ा नुकसान हो या कहीं अचानक व्यर्थ को खर्च करना पड़े, अनायास ही संपत्ति की क्षति हो तो कहावत चरितार्थ होती है।

अ०– ज़िदगी भर की कमाई मरघट भर की ही हुई। परिश्रम से पैदा किया गया पैसा बेकार हो गया। बुरे कामों में कमाई के पैसों का लगना।

जनम भर दिल्ली रहे, भारय झोंका किये।

अ०– किसी अच्छी या ऊंची जगह रहने के बाद भी कोई आदमी यदि मूर्खता की बातें या काम करता है तो कहा जाता है कि जिंदगी भर अच्छे भले वातावरण में रहे, फिर भी अपनी आदतों से बाज नहीं आये।

जहाँ बूढ़ न होंय, उहां भिनसार न होय।

अ०– कहावत वृद्धजनों के ऊपर कही गई है कि उनके रहने पर कितनी अच्छी व्यवस्था घर की होती है। यदि उनका भय, दबाव, अदब न हो तो समझो कि घर के लोग सुबह बड़ी देर तक सोते रह जायें या घर का सारा काम–काज समय से हो ही न पाये। बड़े लोग समय–समय पर सुझाव देते हैं। पूर्व घटनाओं एवम् कार्यक्रमों की सूची का ज्ञान कराकर प्रेरणायें देते हैं, अतीत के जीवन की झाँकी दिखाते हैं, वर्तमान के पथप्रदर्शक होते हैं तथा भविष्य के प्रति सचेत करते हैं। अतः बड़ों का होना बहुत आवश्यक होता है।

जस पसु तस बंधना।

श०– पसु– जानवर, बंधना– बांधने वाली रस्सी।

अ०– जिसकी जितनी सहन शक्ति हो, क्षमता हो उसके प्रति उतना ही अनुशासन भी हो सकता है। कहावत के अनुसार जैसा पशु होगा उसी के अनुसार उसको नियंत्रित भी करना पड़ेगा। जैसे हाथी को लोहे की सांकल ही बांध सकती है। बकरी को पतली सी रस्सी ही काफ़ी है। गाय–भैंस को रस्सी को बटकर पगहा बनाकर बांधा जाता है। जो जैसा निर्बल या बलवान होता है उसकी क्षमता के अनुसार अनुशासन होना चाहिए।

जल्दी का काम सैतान क होतै।

कभी–कभी जल्दीबादी में काम बिगड़ जाता है, कहावत उसी पर कही गई है।

अ०– जल्दी का काम शैतान, भूत, प्रेतों का होता है, इसलिये कोई भी काम सोच–समझकर धैर्यपूर्वक करना चाहिए कि बिगड़ने न पाये।

जस–जस बिटिवा बाढ़ै– तस–तस गुन काढ़ै।

श०– बाढ़ै– बड़ी होना, बिटिवा–बिटिया, गुन– सहूर, अक्ल।

अ०– कहावत तब कहते हैं जब कोई कन्या बड़ी होने के साथ–साथ और भी मूर्खता के काम करने शुरू कर देती है। जैसे–जैसे लड़की बड़ी हो रही है वैसे–वैसे अधिक अक्लमंद होती जा रही है। कहावत व्यंग्य में कही गई है।

जस बाप तस बेटा।

अ०– जैसे बाप होता है वैसा ही बेटा का होना स्वाभाविक ही है।

जब सेर बूढ़ भा तौ कउवै मेंड़राय लागें।

कहावत वक़्त व बूढ़े होने पर कही गई है।

अ०– शेर तो शेर ही होता है किंतु जब वह असमर्थ हो जाता है बूढ़ा व कमज़ोर हो जाता है, शरीर में उठने–बैठने की शक्ति समाप्त हो जाती है तो उसके ऊपर कौवे उड़ते रहते हैं और वह चुपचाप बैठा देखता रहता है। यही हर मनुष्य या जीव का हाल है। अशक्त शरीर होने पर कोई कुछ भी नहीं कर सकता है।

जइसे आय वइसे गा।

कहावत रुपये पैसे या किसी नाजायज़ सामान के प्रति कही गई है।

अ०– कोई आदमी यदि घूस का पैसा या किसी की वस्तु का अपहरण करे और वह धन किसी न किसी व्यर्थ के काम में ख़र्च होता है तो कहते हैं कि जैसे लेकर आये थे वैसे ही पानी में चला भी गया।

जनम न देखा टाट, सपने आई खाट।

कहावत व्यंग्य में कही गई है। कोई भी मनुष्य जब अपनी औकात से ज्यादा ही किसी वस्तु या पद की लालसा करता है तो कहावत स्मरण आती है।

अ०– जब पैदा हुये थे तब तो टाट–बोरे तक के दर्शन न हुये थे और अब सपने में खाट दिखाई पड़ने लगी है। यानी कहावत भाग्यवादी है। किसी सुख व सम्मान के प्रति लालायित होना, सुखों की आकांक्षा करना।

जस गंधइली गड़ही, तस कंठेरा बकुला।

दो गंदी या एक तरह के स्वभाव की बात आती है तो कहावत चरितार्थ जाती है।

श०– गंधइली – गंदी, बदबूदार, कंठेरा–काना, ऐंचाताना।

अ०– दोनों ही वैसे हैं, गड़ही यदि गंदी, बदबूदार है तो रहने वाला बगुला भी ऐंचा–ताना है।

जब बस मां नहीं औलाद, तौ समझा घर बर्बाद।

अ०– जब अपनी संतान यानी पुत्र अपने वश में (कहने–सुनने में) नहीं तो समझो कि घर बर्बाद हो गया।

जब दांत न रहे तो दूध दियें,
अब दांत भये तो अन्न भी देहैं।

कहावत ईश्वरवादी है। भगवान पर मनुष्य को कितना विश्वास होता है।

अ०– जब अन्न खाने को दांत न थे तो ईश्वर ने पेट भरने के लिये दूध की व्यवस्था की और अब दांत हो गये हैं तो खाने को अन्न भी वही देंगे।

जब अपनी उतार ली, तो
दूसरे की उतारने में का देर है?।

कहावत इज्ज़त के प्रति कही गई है। किसी को जब कुल समाज, कुनबा, परिवार की कोई परवाह ही न हो तो फिर उससे निकृष्ट कौन होगा?

अ०– जब तक अपनी ही इज्ज़त धूल में झोंक दी तो दूसरे की इज्ज़त की उस आदमी को क्या परवाह हो सकती है?

जब तक जीना, तब तक सीना है।

अ०– जब तक आदमी को ज़िंदा रहना है तब तक उसे कुछ न कुछ करना ही होगा। नाते–रिश्ते, घर–परिवार, कुनबा, समाज, दुःख–सुख सभी से उसे जुड़े रहना ही होगा।

जबरा सब क भाई कि जमाई।

श०– जबरा–जबरदस्त, जमाई–दामाद।

कहावत जबरदस्त लोगों के ऊपर उद्धृत की जाती है।

अ०– जो मनमानी करने वाला तेज़, जबरदस्त होता है, उससे लोग बहुत ही घबड़ाते है। उसके साथ लोग कोई न कोई नाता जोड़ लेते हैं। वह किसी का भाई तो किसी का दामाद बन जाता है।

जर है तो नर है, नहीं तो पूरा खर है।

श०– जर–धन, सम्पत्ति, नर–आदमी, खर–गधा।

कहावत धन के बारे में कही गई है। आज का युग अर्थप्रधान है। पूरी दुनिया ही पैसे के बल पर टिकी है।

अ०— यदि आदमी के पास पैसा है तो वह आदमी, नहीं तो गधा है क्योंकि आज के युग में धनहीन को सभी मूर्ख व पागल समझते हैं। पैसे की ही पूजा चारो ओर हो रही है।

जहँ–जहँ पांव पड़य संतन के, तहँ–तहँ बंटाढार।

अ०— कहावत व्यंग्य में कही गई है। यानी जहाँ–जहाँ आज के साधु–महात्माओं के पैर पड़ते हैं वहाँ–वहाँ चौपट हो जाता है। कहावत ऐसे लोगों पर कही गई है जो सचमुच ही जहाँ जाते हैं वहीं बना–बनाया काम बिगाड़कर रख देते है। उन्हीं संतों के ऊपर कहावत कही गई है।

जहाँ गुड़ होय उहीं चींटी लगिहै।

अ०— यह स्वाभाविक है, गुड़ की जगह चींटे अवश्य पहुँचेंगे। उसी प्रकार जो सुन्दर, गुणवान, सम्पन्न व्यक्ति होगा, उसके पास लोग स्वयं ही पहुँचने को प्रयत्नशील होते हैं।

जहाँ फूल उहीं काटौ होति।

अ०— अच्छाई के साथ–साथ बुराई भी होती ही है। जैसा कि कहावत में कहा गया है कि जहाँ फूल होते हैं वहीं कांटे भी होते हैं। गुण, सम्पन्नता, सुंदरता में कहीं–कहीं नीरसता, कष्ट, क़टुता भी होती है। अतः मनुष्य को सब कुछ ग्रहण करना चाहिए।

जहां जाड़े मां घाम पावै,
उहीं गर्मी मां धाम गंवावै।

अ०— कहावत धूप–छांव, गर्मी–सर्दी के समय पर कही गई है। जहां लोग जाड़े के दिनों में धूप से बदन सेंकते हैं वहीं गर्मी में धूप से बचते है। अतः मनुष्य का जीवन ही धूप–छांव है। उसी प्रकार से कुल परिवार में भी अच्छाई–बुराई लगी रहती है। कभी जिस आदमी से विरोध होता है उसी से समय आने पर एकता भी हो जाती है। कवि रहीम के शब्दों में–

टूटे सुजन मनाइये, जौ टूटे सौ बार।
रहिमन फिर–फिर पोइये, टूटे मुक्ताहार।।

जहां देखे तवा परात, तहां गंवावै सारी रात।

कहावत हास्य–व्यंग्य में कही गई है।

अ०— यदि किसी के यहां देख ले कि खाने–पीने का डौल है तो उसके घर जाकर बैठकर सारी रात ही बिता देनी चाहिए। रात भर बैठे रहने से खाने–पीने का इन्तज़ाम तो हो ही जायेगा।

जइसे गुरु वइसे चेला, मांगे गुड़ देखावै ढेला।

जब एक ही स्वभाव के दो आदमी मिल जाते हैं तो कहावत चरितार्थ की जाती है।

अ०— जैसे गुरु हैं वैसे ही चेला भी हैं। गुरु गुड़ मांगते हैं तो चेला मिट्टी का ढ़ेला देते हैं। यानी गुरु यदि मूर्ख है तो चेला भी मूर्ख ही साबित होता है।

जस नकटे को आरसी, होत देखाये क्रोध।

श०— नकटे–जिसकी नाक कटी हो, जो बेहया हो, आरसी–शीशा।

कहावत किसी ऐबी आदमी के ऐब को प्रकट करने के ऊपर है।

अ०— किसी नकटे आदमी को शीशा दिखाया गया तो वह क्रोधित हो उठा। उसके मन में हीनता की भावनायें इतनी अधिक जागृत हो उठीं कि वह अपना क्रोध संभाल नहीं पाया।

जहां परै खैरा कै खूरी,
तौ करि डारै चापर पूरी।
जहां परै खैरा कै राल,
लेहु साहनी बहारौ सार।।

श०— खेरा–कत्थई रंग, खुरी–खुरा, पैर का नाखून, चापर–चौपट, राल–लार, मुंह से टपकने वाला तरल पदार्थ, साहनी–झाड़ू, कूंची, सार–सरिया, पशुशाला।

अ०— कहावत कत्थई रंग के बैल के अपशकुन पर कही गई है। ऐसे बैल कभी नहीं खरीदने चाहिए। इनके पैर जहां भी पड़ते हैं वह घर चौपट हो जाता है। इनकी लार जहां भी गिरती है वह इतनी विषैली होती है कि जैसे ही लार गिरे झाड़ू लेकर तुरंत ही पशुशाला बुहार डालना चाहिए वर्ना बड़ा ही अनिष्ट हो सकता है।

जब बरखा चित्रा मां होय,
सारी खेती जावै सोय।

अ०— यदि बरसात चित्रा नक्षत्र में होती है तो खेती के लिये भारी नुकसान की संभावना होती है। पूरी फसल बर्बाद हो जाती है।

जस नियत तस बरक्कत।

श०— नियत— स्वभाव, बरक्कत— बढ़त।

अ०— बात एकदम ही सच है। आदमी की नेकनियती ही फलती है। जिस मनुष्य के विचार, भावनायें साफ नहीं होती हैं तो वह गिरा हुआ, पतित इंसान होता है।

जहां साहु कै मंड़ई, उहां चोर क डेरा।

कहावत व्यंग्य में कही गई है।

श०— साहू—सेठ, महाजन, या ईमानदार, डेरा—जमात।

अ०— जहां सेठ, धनपती रहते हैं, जहां व्यापारी बसते हैं, वहीं पर चोरों का बसना स्वाभाविक ही है। जहां चोरों को दांव लगाने का अवसर मिलेगा वहीं तो वे भी अपनी जमात ले कर रहेंगे।

दूसरा अर्थ हो सकता है कि जहां पर ईमानदार लोग रहते है वहां पर भले लोगों के बीच में चोरों का रहना अभिशाप सा लगता है।

जइसे लहंगा पर कै सारी,
बइसे दूसर मेहर पियारी।

कहावत किसी पुरुष के दूसरे विवाहिता पत्नी के ऊपर कही गई है।

अ०— एक चीज़ खो देने के बाद जब कोई भी वस्तु दूसरी बार घर में आती है तो उसका अधिक महत्व होना स्वाभाविक ही है। तुलना की गई है कि जैसे लहंगा पहनने के बाद साड़ी पहनी जाय तो उसमें एक नये परिर्वतन के साथ नवीनता व नया रूप सामने आता है उसी प्रकार से नई पत्नी के आने के बाद जीवन में परिवर्तन के साथ नया प्रेम भी शुरू हो जाता है।

जहां झडुलवा खेलै जाय,
हुंवा बिगौना क बसेर।

श०— झडुलवा—जिस बच्चे का मुंडन संस्कार न हुआ हो, जिसके झबरे बाल हों, बिगौना—बाघ, भेड़िया, बसेर—रहना, रात बसना।

कहावत कोई स्त्री तब कहती है, जब उसका बच्चा खेलने जाता है वहीं बिगवा बैठा मिलता है।

जनमेंव ललन अपनी चलन।

पति पर रुष्ट नारी कहती है—

अ०— अपने भाग्य से बच्चे को पाया। जब भी किसी कार्य में स्त्री को सफलता मिलती है तो कहावत सामने आती है कि अपनी भाग्य से कुछ प्राप्ति की सफलता पाई है।

जतियो गे, लड़िको न भा।

श०— जतियो—जाति।

कहावत ऐसी विषम परिस्थिति में कही गई है कि कार्य भी संपन्न न हो पाया और धर्म भी गया।

अ०— जाति भी गंवाई और संतान का लाभ भी न हो पाया। कहावत से लगता है कि संतान की उत्सुक नारी मन संभाल न पाने से बच्चे की कामना हेतु पराये पुरुष से संबंध जोड़ने के बाद भी सफलता न पाने पर पश्चाताप करती है कि जाति, धर्म से भी हाथ धोया और जिस बच्चे की लालसा थी वह भी न मिला।

जस पियै पानी तस होय बानी।

श०— वानी— बोली।

अ०— जैसा खान—पान होगा वैसा ही व्यवहार व बोली—बानी होगी। नसैल व्यक्ति नसे की बातें करेगा, खूनी डकैत चोर अपने पेशे की बात करेगा। अच्छे कर्मों वाला अच्छी, ज्ञान संबंधी बातें करेगा। अतः खाने—पीने का सदैव ध्यान रखना ही श्रेयस्कर है।

जहां डेरा वहीं बसेरा।

जहां रात का बसना हो, अपना रुकना हो वहीं पर रात भी कटती है।

जब मैं हंसी तो पिय मोर रोवै,
सिसिकि—सिसिकि के गलवै टौवै।

यह कहावत भी है और पहेली भी। जब किसी को पैर की फटने वाली बेवाय से अधिक दर्द होने लगता है तो कहावत चरितार्थ हो जाती है।

अ०– जब पैर में बेवाई फटती है तो बड़ा दर्द होता है। उस पर कहते हैं कि बेवाय कहती है कि जब मैं हंसती हूँ यानी फटती हूं तो जिसके पैर में फटती हूं वह रोता है और परेशान हो कर वह बार–बार मुझे ही टटोलता है।

जब तक रहे बार कुंवार, तब तक सहे मार तोहार।
बिअहि के मार तौ हम जानी, तौ तोहका हम मर्द बखानी।।

श०– बार कुंवार–नन्हीं बारी, क्वारी, बिअहि–विवाह, बखानी–तारीफ करना।

अ०– यह कहावत और बुझौलिया (पहेली) भी है। किसी क्वारी लड़की पर विवाह से पूर्व अनुशासन के बाद और विवाह होने के बाद की स्थिति में किसी तरह की सख्ती को देखकर भी कहा जाता है कि अब शादी करने के बाद तुम्हारा कोई अधिकार नहीं है मारपीट करने का। दूसरे अर्थ में गागर कुम्हार से कह रही है कि जब मैं मिट्टी थी तो तुमने खूब कुटाई की मगर अब मैं पक कर गागर बन गई हूं अब मारो तो जानूं?

जहां परै कंकरहिया खोर,
बिन बाजन पिय नाचै मोर।

श०– कंकरहिया–कंकड पत्थर, खोर–गली।

अ०– जब किसी आदमी को रास्ते की कठिन परेशानी होती है, वह किसी कार्य में जाते समय खराब रास्ते के कारण लौट आता है तो कहावत कहते हैं कि जहा कंकड़ीली गैली, कठिन रास्ता चलना होता है वहां पर बिना बाजा के ही मेरे पिय नाचने लगते हैं। यानी कठिनाइयों को नहीं झेल पाते।

जब बरसेगा उत्तरा, नाज न खावै कुत्तरा।

अ०– जब उत्तरा नक्षत बरसता है तो अनाज ज़हरीले हो जाते हैं। कहा है कि उस अन्न को कुत्ते भी नहीं खाते हैं।

जब से खोवा दीन ईमान, तबसे मनई भा बेईमान।

अ०– जबसे आदमी का दीन, धर्म–कर्म, ईमानदारी कम होने लगी तभी से धीरे–धीरे आदमी बेईमान होता चला जा रहा है।

जस क तस चाही।

जो जैसा हो, उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए।

जब समुद्र बूंद से डेराय लागी तौ प्रलय आय जाई।

अ०– जिस समय कोई छोटा अपने से बड़े पर भय से प्रभाव जमाना चाहे तो कहावत स्मरण आ जाती है। यदि छोटों से बड़े डरने लगेंगे तो समझो कि आफत आ जायेगी। जैसा कि कहा है यदि समुद्र कहीं बूदों से डरने लगा तो उसके लिये तो अपार पानी आ जायेगा कि सब डूब ही जायेगा।

जरूरत के समय बिल्ली
शेर की आँखें नोच सकती है।

यहाँ पर बिल्ली व शेर के माध्यम से कहावत मनुष्य की आवश्यक आवश्यकताओं की पूर्ति के विषय में कही गई है।

अ०– जरूरत के समय निर्बल से निर्बल आदमी भी बलशाली बन जाता है क्योंकि उसकी ज़रूरतें अपने जीवन में जीने के लिये होती है। जैसे किसी को भूख लगी हो तो वह आदमी अपनी भूख के आगे जान की चिंता नहीं करता है कि यह बड़ा बलशाली है, मेरी जान ले लेगा। उसे तो लगता है कि भूख के मारे तो वैसे ही जान जा रही है तो छीन झपट कर खाना ही क्यों न ले आऊं? जब ज़रूरत होती है तो बिल्ली भी शेर की आँखें फोड़ सकती है।

जहां न पहुंचे रबि, तहां पहुचै कवि।

कहावत लेखक व कवियों की कल्पना के ऊपर कही गई है। अर्थात् कवि की कल्पनायें इतनी उड़ान की होती है कि उनकी बराबरी कोई भी नहीं कर सकता है।

अ०– कहा है कि जहाँ पर सूर्य भी नहीं पहुंचता है, वहाँ भी कवि, साहित्यकारों की कल्पनायें जा पहुंचती हैं। वह सर्वस्थलों का ज्ञाता होता है। उसकी भावनायें रवि की किरणों से भी ज्यादा ही तेज़ व तीखी होतीं

हैं। वह अपनी कल्पनाओं के संसार में ज्ञान की आँखों से सब कुछ देखता रहता है।

जब नीके दिन आइहैं, बनत न लगिहै बेर।

कभी–कभी जब मनुष्य जीवन की तमाम परिस्थितियों से घबड़ा उठता है तो कहता है।

अ०– जब अच्छे समय आयेगें तो बिगड़ी बनने में देर नही लगेगी। अतः मनुष्य को बुरे दिनों में बहुत धीरज से काम लेना चाहिए। सब दिन एक समान किसी का नहीं बीतता है। बुरे दिनों के बाद अच्छे दिन भी आते है।

जइसे पूना आप बिलार,
तइसे लाई कुल परिवार।

कहावत किसी कुरूप या फूहड़ स्त्री के ऊपर कही गई है।

अ०– जैसे पूना आप बिल्ली की तरह थीं, वैसा ही कुल परिवार को भी बनाया। यानी कि जैसे स्वयं थी वैसी ही संतान को जन्म देकर परिवार ही ख़राब कर दिया।

जब दांत मुंह से बाहेर निकरि आवत
तो भीतर नहीं जातै।

अ०– मुंह से निकली बात फिर वापस नहीं होती या ऐब छिपते नहीं

जथा राजा तथा प्रजा।

अ०– जैसा राजा होता है, वैसी ही प्रजा भी होती है। यह स्वाभाविक है। जैसा राजा का अनुशासन होगा उसी ढांचे में प्रजा भी पल कर वैसा ही रवैय्या अपनायेगी।

जगन्नाथ का भात जिसमें झगड़ा न झांस।

ऐसा काम जिसमें शंका की गुंजाइश न हो। धर्म के कार्य में न धोखा, न झंझट होना चाहिए।

अ०– पुरी में मंदिर में जब प्रसाद बंटता है या भोजन कराया जाता है तो उसमें जाति पांति का भेद–भाव नहीं किया जाता है। सभी लोगों को एक ही पंक्ति में बैठा कर भोजन परसा जाता है। लोग भी बिना भेदभाव के हाथ पसार कर प्रेम से भोजन करते है।

जड़ काटे जाय पानी देत जाय।

कहावत धोखा करने के ऊपर कही गई है। छल के साथ भले बने रहने का स्वांग भराना।

अ०– जड़ जिसमें जीवन हो उसे काट कर पानी देने से क्या लाभ? अंदर से बुरा चाहना ऊपर से मित्रवत् व्यवहार करना।

जड़ पकड़ो पुलुई पकड़े से का होये।

किसी मूल वस्तु या आदमी की ओर ध्यान देना।

श०– पुलुई– पेड़ का ऊपरी भाग।

अ०– कोई काम हो तो उस आदमी को पकड़ना जिससे कार्य कराने में सहायता मिल सके।

जेतने कै तीन रोटी ओतने कै टिकरी,
दूर कर तीन रोटी, लाव एक टिकरी।

कहावत हास्य व्यंग्य में कहीं गई है। नाम तो हुआ कि तीन रोटी खा गये मगर तीन के बराबर तो एक टिकरी बनी है।

अ०– जितने में तो तीन रोटी बनी उतने में एक टिकरी बनी, तो अच्छा है कि एक टिकरी ही खाने को दे दो। तीनों रोटियां खा कर कौन बदनाम हो?

कहा है सात सेर कै सात बनाई, नौ सेर के एक।
वै देहिजरऊ सातौ खायें, मैं कुलवंतिन एक।।

जनमाइत न, न ढोल बाजत।

श०– जनमाइत–पैदा करना।

कुपुत्र से दुखी हो कर मां अपने मन का दुख प्रकट करती है।

अ०– यदि पैदा न करती तो ढोल क्यों बजता? चूंकि पुत्र होने पर ढोल बजा है तो वह उसी पर पश्चाताप कर रही है।

दूसरे अर्थ में यदि ढोल बजी तो ढिंढोरा भी पिट गया। नहीं जानती थी कि तुझसे बदनामी होगी।

जनम क दुखिया, नाम सदासुख।

कहावत नाम की विडम्वना पर कही गई है।

गुण के विपरीत नाम का होना। पैदाइशी तो

दुखिया है और नाम है सदासुख पाने वाला। ऐसी कहावत व्यंग्य के रूप में नीचा दिखाने के प्रति भी कही जाती है।

जनम क दुखिया, करम क हीन,
तिनका राम तिलंगवा कीन।

श०— हीन—नीच, तिलगवा—अंग्रेजी फौज का भारतीय सिपाही।

अ०— चूंकि फौज का सिपाही कभी भी घर पर नहीं रहता हैं, उसी को लक्ष्यकर में कहावत कही गई है कि एक तो जन्म का दुखिया और कर्म से हीन है उस पर भगवान ने फौज का सिपाही भी बना दिया। अतः घर में रहने की आवश्यकता ही नही होती।

जनम क मंगता, नांव दाताराम।

अ०— अर्थ स्पष्ट है। कहावत नाम की विडंबना पर है।

जनम हेतु सब कहं पितु माता,
करम सुभासुभ देय विधाता।

अतः भाग्य में कोई हिस्सा नहीं बंटा सकता हैं।

जनम पत्र सब देखत, करमपत्र कोउ नहीं देखत।

कहावत भाग्यवादी है।

अ०— घर में पुत्र होने पर या विवाह के समय लड़के—लड़की की कुंडली तो सभी मिलाते हैं किंतु भाग्य—पत्र कोई नहीं मिला सकता हैं कि कल क्या होने वाला है?

जने—जने कै मन रखत, रंडी होइगै बांझ।

अ०— सबके मन को रखना बहुत कठिन काम है। आदमी इतना परेशान हो जाता है कि वह स्वयं ही कुंठित हो जाता है।

अ०— सभी का मन रखते—रखते वेश्या बांझ हो गई। यानी उसके मन की इच्छायें इतनी कुंठित हो गईं कि उसका नारीत्व समाप्त हो गया।

जब आवे बरसन की चाव,
पछिवा गिने न पुरवा बाव।

अ०— जब किसी काम की इच्छा जगती है तो फिर किसी बात की परवाह नहीं की जाती है। जैसे कि बादलों को जब बरसना होता है तो फिर पुरवा—पछिवां हवा की परवाह नहीं करते। वैसे पछिवाँ हवा चलने पर ही वर्षा होती है।

जब होय आस, तौ आय पास।

जब किसी से कोई आशा पूरी होनी हो तभी उसके पास तक जाना चाहिये।

कहावत स्वार्थ पर कही गयी है।

जब तक की बाबू—बाबू,
तब तक करै अपने पर काबू।

अ०— जब तक खुशामद करूं किसी काम के लिये तब तक अपनी ही हिम्मत क्यों न बाधूं। यानी अपने बाहुबल का प्रयोग क्यों न किया जाये।

जब तक बहू कुंवारी तबतक सास प्यारी।
जब बहू कूं लाल गोदमें, लाड़ गया हौद में।

कहावत पोते के होने के उपरांत बहू के प्यार पर कही गई है।

अ०— जब तक बहू क्वारी है यानी कि बच्चा नहीं हुआ है, तब तक तो वह सास की प्यारी रहती है। मगर जब बहू का बच्चा हो जाता है तो सास का सारा लाड़—प्यार बच्चे पर केन्द्रित हो जाता है और बहू के प्रति उसका प्यार हौदा में पड़ जाता है। कहा है —

"जब लग सास बहुरिया बहुवै कौन सिंगार।
जब लग सास बिआउर नाती कौन दुलार।।"

जब तक थारी में भात,
तब तक मेरा—तेरा साथ।

अ०— जब तक खाने पीने को है तभी तक दोस्ती होती है। जब आदमी के पास धन की कमी हो जाती है तो सारे दोस्त ग़ायब हो जाते हैं।

जब नटनी बांस पर चढ़ी,
तो घूंघट की कौन लाज?

काम के अनुसार ही पर्दा या व्यवहार, रहन—सहन संभव है।

अ०— नाचने—गाने वाली, खेल तमाशा दिखाने वाली पर्दा क्या करेगी? कोई जब किसी काम पर उतारू

ही हो जाय तो फिर लाज शर्म क्या होती? यानी नटनी जब खेल दिखाने बाँस पर चढ़ गई, तो फिर उसे घूँघट की क्या आवश्यकता रही है? कहा है–

"धान कूटत की कखरी कै, कौन लाज।"

जब बिगड़ै तब सुघर नर, का बिगड़ी जे मूढ़।
छाछ भला का बिगड़ै जब बिगड़े जब दूध।।

श०– सुघर–समझदार, नर–मनुष्य, मूढ़–बेवकूफ, मूर्ख, छाछ–मट्‌ठा।

अ०– कहने का तात्पर्य है कि चतुर जन ही नाराज़ भी होते हैं मूर्ख को क्या, उसकी समझ में बात आयेगी ही नहीं। या अच्छा भला व्यक्ति ही नाराज़ होता व बिगड़ सकता है।

अ०– जब नाराज़गी होती है तो समझदार व्यक्ति ही नाराज़ भी होता व बिगड़ सकता है। बेवकूफ को दस बातें कहते रहो उसके ऊपर असर ही नहीं होता। उसी प्रकार से जब खराब होगा तब दूध ही ख़राब होगा मट्‌ठा जल्दी ख़राब नहीं होता।

जब भागे पर होय लुगाई,
तूरि फारि के लांघे खाईं।

श०– लुगाई–स्त्री, खाईं–नारा–खोहा।

अ०– कहावत का अर्थ है कि जब कोई चरित्रहीन नारी भागना ही चाहती है तो उसे कोई भी पकड़ना चाहे तो पकड़ नहीं सकता है। वह नारा–खोहा, ऊंच–नीच सब डाकती–फांदती चली जाती है। वह किसी के वश की नहीं होती है।

जब भुखाने नासपीटे, तो रोटी कै सूझी,
और जब पेट भरा, तो दूर कै सूझी।

श०– नासपीटे–गाली है।

कोई स्त्री अपने पति से नाराज़ हो कर कहावत का प्रयोग करती है कि जब भूख लगी तो रोटी खाने की सूझी और जब पेट भरा तो फिर दुनिया भर की खुराफात करने की मन में आने लगी। यानी दिखावटी प्रेम करना।

जबर क जोय महतारी होय,
निबले कैं जोय मोर सारी होय।

अ०– कहावत में सबल व निर्बल का अंतर दिखाया गया है। बलवान व्यक्ति की स्त्री को तो लोग मां बनाते है क्योंकि उसे कुछ कहने में भय है मगर कमज़ोर, ग़रीब की स्त्री को साली कहकर मनोरंजन करने का रास्ता निकालते हैं।

जबरदस्त सब का जमाई।

अ०– जबर आदमी चाहे जैसे, जो भी किसी से रिश्ता बना ले, वह सबका दामाद बन कर अपनी जबरई दिखाता है। उसे कोई कुछ कह नहीं पाता।

जब लै कोठिला मां अनाज,
तब लै जोलाहा क राज।

अ०– जब तक साधारण आदमी के पास खाने के लिये घर में अनाज होता है तब तक वह अपने को किसी बादशाह से कम नहीं समझता है।

जबसे उये बाल, तबसे यही हवाल।

अ०– किसी आदमी में परिवर्तन होने पर कहावत कही जाती है। जबसे बड़े, हुए दाढ़ी मूंछवाले हो गये, तभी से इनका यह हाल है।

जबान हाथी चढ़ावै, ज़बान मूड़ कटावै।

अ०– आदमी की बोली ही आदमी को बहुत ऊंचा स्थान दिला देती है और आदमी की बोली ही उसे हानि करा सकती है।

जमुना किनारे घर करै, करज काढ़ के खाय।
जब कोई आवै मांगने, गड़प जमुना मां जाय।।

कहावत कर्ज़ लेकर न देने वालों के ऊपर कही गई है। साथ ही हास्यास्पद भी है।

अ०– कर्ज़ ले कर खाय व जमुना नदी के किनारे घर बनाकर रहे और जब कोई कर्ज़ मांगने आये तो जमुना के पानी में डूबकर गायब हो जाये। यानी कि न देने का साधन पहले से ही बना ले।

जइसे घर वइसे पिपरे क तर।

अ०– घर मे कोई इज्ज़त का न होना। घर एवं पीपल पेड़ के नीचे दोनों बराबर हैं।

जर है तो नर, नाहीं खंडहर।

अ०– पैसा है तो वही आदमी–आदमी की गिनती में आता है यदि पैसा पास में नहीं है तो वह आदमी नहीं गिरा भहराया टूटा–फूटा मकान है जिसका कि कोई महत्व नहीं है।

जरा सा खावै बहुत बतावै, वही बहू सुघड़ैली।
बहुत खावै कम बतावै, वही बहू बिगड़ैली।।

कहावत सुघड़ व समझदार बहू के ऊपर कही गई है जो अपने कुल–वंश की लज्जा रखने वाली सुलक्षणी होती है। बड़ी ही सुंदर ढंग की शिक्षाप्रद कहावत है।

अ०– जो बहू थोड़ा खा कर भी बहुत बताये वही कुल–वंश का गौरव रखने वाली होती है और जो बहुत खाने के बाद भी सबकुछ नकार दे वह बड़े बिगड़े स्वभाव की होती है। उससे भला क्या कुल, परिवार की इज्ज़त बचेगी?

किसी ने कहा है–

तिरिया वही जो तीनिहूं कुल तारै,
चंचल नारि भये से का भये?

नारी तो वही होती है जो अपने नइहर, सासुर व ननिहाल तीनों कुलों की शुभचिन्तक व रक्षा करने वाली हो। ऐसी नारी से क्या लाभ जो अपने कुल की लज्जा का ध्यान न रख सके।

जल सूर बाभन, रन सूर छत्री,
कलम सूर कायथ, गंड सूर खत्री।

अ०– ब्राहमण नहाने में यानी जल के लिये वीर होता है। क्षत्रिय लड़ाई के लिये और कायस्थ कलम चलाने में माहिर होता है तथा खत्री गाँठ या धर्माजन में कुशल होता है।

जरइ पराई धी औ हंसै परोसी लोग।

श०– धी–लड़की, जरै दुखी हो, कष्ट में जीवन बीते।

अ०– दूसरे का नुकसान देख कर पास पड़ोस के लोग मज़ाक बनायें। दूसरे की तो लड़की का जीवन कष्टों में बीते और अन्य देखने–सुनने वाले प्रसन्न हों।

जवान जाय पताल, बुढ़िया मांगै भतार।

श०– पताल–धरती के नीचे, ज़मीन में धंसना, भतार–पति।

असमय में शौक बढ़ना।

अ०– असंगत बातों पर कहावत है कि जवान तो जाय भाड़ में उसकी क्या गिनती, यहाँ बुढ़िया पति चाहती है।

जवान का चलाचली, बुढ़िया क बिआह क परी।

किसी उल्टे काम को करने पर कहावत चरितार्थ की जाती है। स्वार्थपरायण होना।

अ०– यहाँ जवान की तो मौत हो रही है और बुढ़िया को अपने विवाह ही की पड़ी है।

जस केले के पात में पात–पात में पात।
तस ज्ञानी की बात में बात बात में बात।।

अ०– जैसे केले के पत्ते में पर्त पर पर्त निकलते हैं, वैसे ही अक्लमंद, विद्वान पुरुष की बात से बात निकलती है।

जहाँ खाना वहीं ठिकाना।

अ०– मनुष्य की सबसे बड़ी आवश्यकता होती है भूख। जहाँ भूख का निवारण होता है वही वह शान्ति पाता है। अतः कहा गया है कि जहां खाना मिलता है उसी स्थान को ठिकाना बताया जाता है।

जहाँ गंग वहाँ रंग, जहाँ गंज, वही रंज।

कहावत, मौज मस्ती कहां है और कहां पर कष्ट है, उस पर कही गई है।

अ०– जहां पर गंगा का स्नान है, उसके बाद खाना–पीना है वहीं पर मस्ती व मौज है। किसी ने कहा है–

"चना चबैना गंगजल जो पुरवै करतार।
काशी कबहुं न छांड़िये विश्वनाथ दरबार"

उसी प्रकार से जहां पैसा बहुत है, गँजा हुआ है वहां पर क्लेश भी बहुत ही ज्यादा होता है। उसी जगह लड़ाई–झगड़े बहुत होते हैं।

जहां गुड़ होये वहीं माछी लगिहैं।

अ०– जहां रस होगा, पैसा होगा, व्यवहार अच्छा होगा वहीं पर लोग जायेंगे। जैसे मीठी वस्तु जहां कही भी गिरी होगी मक्खी अवश्य पहुंच जायेंगी।

जहां जाय भूखा वहां परै सूखा।

श०– भूखा– भुक्खड़, सूखा– अकाल।

कहावत भाग्यवादी है।

अ०— दुखी आदमी जहां भी जाता है वहीं उसे दुख उठाना पड़ता है।

जहां देखे रोटी उहीं मुड़ावै चोटी।

कहावत ऐसे लोगो के ऊपर कही गई हैं जो खाने के गुलाम होते हैं।

अ०— जहां पर रोटी पानी का सहारा देखा वहीं पर चेला बन गये।

जहं बालक तंह खेल खिलौना, जहं गोरस तहं घोर,
जंह राजा मिठबोलना, बसै बहुत से लोग।

कहावत स्पष्ट है।

अ०— जहां बच्चे होते हैं वहीं खेलवाड़ व खिलौने भी होते है। जहां गोरस यानी दूध होता है वहीं पर उससे शर्बत भी बनता है और जहां राजा या घर का मालिक मीठी वाणी बोलने वाला होता है वही लोग ज्यादा से ज्यादा बसते व आते जाते हैं। किसी ने कहा है—

कटही कुकुरि मरकही गाय,
ओकरे घरे कबहुँ ना जाय।

तो व्यवहार कुशल लोगों के यहां सभी जाते हैं।

जहां एक मुरगा न बोली, तो का सबेर न होये।

अ०— किसी के बिना किसी का काम रुका नहीं रहता। कहावत के अनुसार एक मुर्गा न बोलेगा तो सुबह ही न होगी। सुबह भला कब रुकती है।

जइसे छप्पन वइसे गप्पन,
जहां सौ वहां सवाव सौ।

अ०— जहां सौ का खर्च है वहां सवा सौ खर्च हो जाये तो क्या हुआ किंतु काम नहीं बिगड़ना चाहिए थोड़ा पैसा ज्यादा लग जाय।

जस गुर खाइ रहा हो गूंगा।

अ०— आदमी इतना भावुक हो जाय कि उस प्रेम की दशा का वर्णन न कर पाये तो कहते हैं कि जैसे गूंगे आदमी को गुड़ खाना स्वादयुक्त लग रहा है, मीठा लग रहा है किन्तु वह उसकी प्रशंसा नहीं कर पाता, उसकी एक विवशता है।

जवानिन मां मांझा ढील।

श०— मांझा—शरीर का मध्य भाग, कमर।

अ०— जवान स्त्री या पुरुष को बुड्ढो की भांति व्यवहार करते देखकर कहावत कही जाती है कि इस जवानी की उम्र में ही शरीर ढ़ीला हो गया। किसी ने कहा है—

किस काम की नदी वह जिसमें नहीं रवानी,
जब जोश ही नहीं तो किस काम की जवानी?

जब लै करबै पूता—पूता, तब लै लउबै आपन बूता।।

श०— पूता—बेटा, लड़का, बूता—जांगर, हिम्मत, ताकत।

कहावत किसी काम को आवश्यकता के समय कर डालने के प्रति कही गई है। बहुधा सुनने में आता है कि बड़ी—बूढ़ी स्त्रियां किसी से कोई काम करने को कहती रहती हैं। बच्चे या बड़े ही काम को टालने या टरकाने के चक्कर में रहते हैं तो उसी समय कहावत स्मरण आ जाती है।

अ०— जब तक कहेगी कि बेटा यह काम कर डालो या जल्दी से कर लो तब तक तो हम स्वयं ही कर डालेंगे।

जब लै निधन तब लै सधुआई,
धन के पाये साधु बउराई।

यहां पर कहावत सम्पत्ति को लेकर कही गई है।

अ०— जब तक आदमी के पास ऐश, आराम का साधन नहीं होता तब तक वह साधु रहता है किन्तु जैसे ही कहीं से कुछ रुपये पैसे की संपन्नता आ जाती है, वैसे ही वह भी बौरा जाता है। गोस्वामी जी के शब्दों में— "प्रभुता पाइ काहि मद नाहीं"।

जल मं केवट, बन मं अहिर, नैहर मं जोय,
कबो न आपन होय।

अ०— जब केवट पानी में रहता है तो उसके पास किसी भी राह जाने का साधन है। अतः वह किसी के वश का नहीं रहता। उसी प्रकार से अहीर वन में रहता है तो गाय भैंस चराते चराते न जाने कितनी दूर का रास्ता उसे मालू है। अतः वह भी वश में नहीं रहता है, निकल जाता है। उसी प्रकार से स्त्री मैंके में रह कर स्वतंत्र हो जाती है। इसलिये नारी का मैके में अधिक रहना ठीक नहीं होता है।

जब बरसै तो बांधो क्यारी,
बड़ा किसान जौ हाथ कुदारी।
पानी बरसै बहै न पावै,
तौ खेती के मजा देखावै।

अ०– स्पष्ट है।

जहं नदी नीर गंभीर, भंवर भल तँहवा परई।
छीछिल सलिल न परै, परै तो छबि नहिं करई।।

श०– नीर–पानी, गंभीर–गहरा, भंवर–नदी के गहरे स्थान पर, पानी का चक्कर, धुमाव, छीछिल–ओथी, उथली, जहां गहराई कम हो, सलिल–पानी, छवि–सुंदरता, आकर्षण।

कहावत नदी की गहराई व उथलेपन को लेकर मनुष्य के प्रति कही गई है।

अ०– जो मनुष्य, संपत्तिवान एवं कुलीन होते हैं उनमें गंभीरता होती है और जो छिछले, ओछे किस्म के आदमी होते हैं उनमें ओछापन प्रकट हो जाता है।

जब गीदड़ की मौत आवै
तौ उ सहर की तरफ भागै।

अ०– जब किसी आदमी का बुरा होना होता है तो दुर्भाग्य उसे निश्चित स्थान पर बुला लेता है।

जहां सत्य तहं धरम संघाता।

अ०– सत्य में ही विजय है।

" जा "

जान न पहिचान, बड़ी बीबी सलाम।

कहावत उन लोगों पर चरितार्थ की गई है जो कोई परिचय न होने पर भी परिचय स्थापित कर लेते है।

अ०– जब किसी से जान–पहचान न भी हो तो उससे दुआ–सलाम करके उसका या अपना महत्व बढ़ाना।

जाति सुभाउ कबौ न छूटे
कुत्ता टांग उठाय के मूते।

कहावत स्वाभावगत विशेषता पर कही गई है कि जिसकी जो आदत होती है वह कदाचित् कभी भी नहीं छूटती है। जब कोई आदमी लाख समझाने या कहने के बावजूद भी कहना नहीं मानता या समय पर अपनी आदतों को प्रकट कर ही देता है तो उस पर कहावत लागू होती है।

अ०– कुत्ते की आदत हमेंशा एक पैर उठाकर पेशाब करने की होती है, वह कभी नहीं छूटती हैं। किसी ने कहा है–

जे कै जौन सुभाव, छूटै नहिं जिव से
नीम न मीठी होय, सिंचै गुर घिव से।

जानि न जाय निसाचर माया।

श०– निसाचर–रात में चलने वाला, राक्षस, भूत–प्रेत, बैताल।

कहावत दुष्ट, नीच तथा असामाजिक लोगों के प्रति कही गई है।

अ०– दुष्टों की राक्षसों की चाल को कोइ भी नहीं समझ सकता है। कब वे क्या आकस्मिक दुर्घटना कर बैठें कहा नहीं जा सकता है? गोस्वामी जी की यह पंक्ति दुष्टों के प्रति कहावत रूप में कही जाती है।

जान है तो जहान है।

अ०– जब तक आदमी की जान है, शरीर सुख से है तो दुनिया की सारी बातें सही होती हैं, सभी कुछ अच्छा लगता है, वर्ना सब बेकार है।

जाड़ा गये जड़ावन, उमिर गये भतार नहीं होते।

श०– जड़ावन–ऊनी वस्त्र, जाड़े में पहनने वाले कपड़े, भतार–पति।

कहावत वख्त की बात पर कही गई है। हर काम, हर बात समय की भली लगती है। कहावत के अनुसार–

अ०– जाड़ा बीत जाने पर जाड़े के कपड़ों का कोई महत्व नहीं होता है। उसी प्रकार से उम्र यानी जवानी बीत जाने पर पति का कोई महत्व नहीं होता है।

जाको मारा चाहिए, बिन लाठी बिन घाव,
ताको यही बताइये, घुइयां पूरी खाव।

कहावत भोजन संबंधी है तथा भोजन का संबंध स्वास्थ्य से है। वह इस कहावत से स्पष्ट है।

अ०— जिसको मार डालना हो या बीमार करना हो उसे अरुई की सब्ज़ी और पूड़ी खाने को बताओ।

जाड़ो में सूतो भलो, बैठो बरखा काल,
गरमी मे उभो खड़ो, चोखी करै सुकाल।

कहावत घाघ कवि की है जो कि चंद्रमा के प्रति उद्धृत की गई है।

श०— सूतो—लेटा हुआ, चोखी—अच्छी, बढ़िया।

अ०— द्वितीया का चंद्रमा यदि जाड़े के समय में चुपचाप शान्त तथा वर्षाकाल में एक स्थान पर बैठा हो और गर्मी में तेज़ हो तो समय बहुत अच्छा जाता है।

जानि गरल जे संग्रह करहीं,
कहहु उमा ते काहे न मरहीं।

श०—गरल—विष, ज़हर, संग्रह—इकट्ठा।

यह पंक्ति गोस्वामी जी की है जो जन जीवन में समयानुसार कहावत के रूप में कही जाती है।

अ०— जो मनुष्य विष का संग्रह करेगा अर्थात् बुराई में लिप्त रहेगा उसे उसका फल मिलेगा। वह अपने कर्मों से मरेगा।

जासों खाब खइय्या नहिं तासों कौन प्रीत रे।

श०— खाब सइय्या—खाना पीना, प्रीत—प्रेम—व्यवहार।

कहावत से प्रकट होता है कि आपस में मनुष्य में प्रेम से रहने के क्या लक्षण होते हैं? संस्कृत में कहा गया है कि प्रीति के छेः लक्षण हैं— लेना, देना, गुप्त बातें करना, गुप्त बातें सुनाना, भोजन करना व भोजन कराना। जब ये छः बातें न हों तो प्रीति कैसी? कहावत का अर्थ है।

अ०— जिससे खाना पीना, आपसी उठना बैठना नहीं है, उससे कैसी प्रीति?

जानि—जानि नर करै ठिठाई,
बूड़ा रहै थाह ना पाई।

श०— नर—आदमी, ढिठाई—निडरता, धृष्टता, थाह—किनारा, उबरना।

ग़लती होती है एक तो अनजाने में, दूसरे जान बूझकर। कहावत जानबूझ कर जो ग़लती करते हैं उन पर चरितार्थ की गई है। जो आदमी जानबूझ कर बिना सोचे—समझे अपने को बहुत बुद्धिमान व बलवान समझता है वह बिना धोखा खाये नहीं रहता।

अ०— कभी—कभी आदमी अपने को बहुत ज्यादा ही महान समझ कर ऐसी ग़लती कर बैठता है जिसका परिणाम उसे भुगतना पड़ता है। इसीलिये कभी कोई काम बिना अपने को अज़माये नहीं करना चाहिए।

जाही बिधि राखै राम, ताही बिधि रहिए।

अ०— ईश्वर की महानता अपार है। वही जग का स्वामी है। चाहे सुख से या दुख से जैसे भी वह रखता है उसी के अनुसार रहना पड़ता है। उसी में बसर करना पड़ता है। महात्मा तुलसीदास के शब्दों में—

तुलसी बिरवा बाग में सींचत की कुम्हिलाय
रहै भरोसे राम के पर्वत पर हरियाय।

जाकी रही भावना जैसी,
प्रभु मूरत देखी तिन तैसी।

जब कभी मन के आदर व निरादर की बात सामने आती है तो गोस्वामी जी की उपर्युक्त चौपाई लोग कह देते है।

अ०— जिसकी जैसी भावनायें मन की होती है वह उन्हीं रूपों में ईश्वर को देखता है। यह प्रसंग जनकपुर में धनुष यज्ञ के अवसर का है। जब भगवान राम को राजागण भिन्न—भिन्न दृष्टियों से देख रहे हैं। मानव स्वभाव होता है कि एक ही आदमी को हर आदमी अपनी—अपनी अलग—अलग भावना से देखता है।

जाकी अच्छी सास, वाको घर में बास,
जाकी सास नकारा, वाको नहीं गुजारा।

यह कहावत परिवार संबंधी व्यवहार पर उद्धृत होती है।

अ०— जिसकी सास अच्छी होती है उसकी बहू का घर में गुजर होता है और जिसकी सास नालायक होती है उसकी बहू का गुजर घर में नहीं होता है।

जाको राखे साइयां,
मारि न सके ना कोय।

बाल न बांका करि सके
जो जग बैरी होय।

यह दोहा महात्मा कबीरदास का है। ईश्वर पर भरोसा रखने वाले लोग बहुधा कहावत के रूप में इसको प्रयोग में लाते है।

अ०– जिसको ईश्वर रखने वाला है उसे संसार में कौन मार सकता है। उसका बिना भगवान की मर्जी के बाल बाँका नहीं हो सकता है।

जाड़ कहे हम करीं चिरौरी,
ऊपर कंबल तरे पिछौरी।

कहावत जाड़े के मौसम ऊपर उद्धृत की गई है।

अ०– यदि कंबल के नीचे चादर लगा ली जाय तो जाड़ा बिल्कुल ही नहीं लगता। कहावत है जाड़ा हाथ जोड़ता है कि अब मैं भागा, अब नहीं लगूंगा।

जाड़ा न पाला कथरिया ओढ़े लाला।

अ०– कम सर्दी में किसी को अधिक वस्त्र पहने या ओढ़े देखकर कहावत कही गई है कि जाड़ा–पाला कुछ भी न होने के बाद भी लाला जी तमाम ओड़े–साटे बैठे हैं।

जाड़–जाड़ कहां जात?
गोरे क करिया करे,
करिया कै खराबी करे।

अ०– जाड़े के दिनों में सर्दी के कारण शरीर के ऊपर की चमड़ियाँ फटने व सूखने के कारण जाड़ों में रंग दब जाता है। जाड़ा का कहना है कि जो तो गोरी चमड़ी के हैं उन्हें काला करने जा रहा हूँ और जो काले हैं उनको और भी ज्यादा ही खराब करने।

जाने वाले चले गये, रोने वाला झूठा।

कहावत मनुष्य के अंतिम समय के प्रति कही गई है। यानी जो जाने वाला था वह तो वास्तव में सत्य था और जो उसके नाम को रो रहा है वह अब क्या रो–गा रहा है? वह सब झूठी दुनिया का मायाजाल है।

जान बची लाखों पाये।

जब किसी की जान संकट में हो या अचानक कहीं पचड़े में पड़ जाय, तो कहावत कही जाती है।

अ०– जान बच गई यही क्या कम था? समझ लो कि बहुत कुछ पा गये। यहां तो प्राण ही बचना कठिन था।

जापर कृपा राम कै होई,
ता पर कृपा करे सब कोई।

उपर्युक्त पंक्ति 'गोस्वामी' जी की है जो कि किसी के भाग्य को देखकर कही जाती है। जिसका ईश्वर सब कुछ दुरूस्त रखता है, उस पर मनुष्य की कृपा भी होती रहती है।

जानै न बूझै, कठौता लै के जूझै।

श०– कठौता– लकड़ी की परातनुमा वस्तु होती है। पहले के ज़माने में औरतें खाने की वस्तुएँ (विशेष कर खटाई वाली) उसी में रखतीं थी, जूझै–परेशान हों।

कहावत उन मूर्खों पर चरितार्थ की गई है जो काम को समझ तो पाते नहीं बस एक बार कुछ सुन लिया उसी को ले कर रट लगाये रहते हैं।

अ०– बात को समझ तो पाते नहीं एक कठौते का नाम सुन लिया उसी का लिये इधर–उधर डोल रहे हैं, जूझ रहे हैं।

जानि तब परत जब ऊंटवा पहाड़ के नीचे जात कि हमहूं से ऊंच अउर कुछ बा।

अ०– कहने का तात्पर्य यह कि ऊँट अपने को दुनिया में सबसे ऊंचा समझता है मगर एक दिन जब वह पहाड़ के नीचे से गुज़रा तो समझ में आया कि मुझसे भी ऊंची वस्तु दुनिया में और भी है। यानी अपने को इतना महत्व नहीं देना चाहिए कि मैं ही जो कुछ हूं, वह हू, मुझसे बड़ा कोई है ही नहीं। वह तब मालूम होता है, जब अपने से बड़ों से पाला पड़ता है।

जाके घर मां माई, ओकै राम बनाई।

यहां पर माता का क्या महत्व हैं, कहावत उसी पर लागू है।

अ०– जिसके घर में मां होती है उस बच्चे का समझो कि हर प्रकार से कल्याण है।

जाय लाख, रहे साख।

श०– लाख–लाखों रुपया, साख–मर्यादा, आन, इज्ज़त।

कहते हैं कि चाहे लाखों रुपये की हानि हो जाय किंतु शान, आन, इज्ज़त बनी रहनी चाहिए। उसमें दाग़ न आना चाहिए। किसी कवि ने लिखा है–

घटने न देना मान, करना मोह मत धन धाम का।
यदि मान ही जाता रहा, तो धन रहा किस काम का।।

जान मारै बनिया, पहिचान मारै चोर।

कभी–कभी आदमी आपसदारी में ही सिर काट लेता है। कहावत उसी पर उद्‌धृत की गई है।

अ०– जान–पहचान के लोगों को बनिया ठगता है। उसी प्रकार से चोर परिचय पाने के बाद ही, भेद ले कर ही चोरी करता है। अतः ऐसे लोगों से सचेत रहने की आवश्यकता होती है।

जाकी छाया रहिए, ताकी हीसी कहिए।

अ०– जिसकी संरक्षता में रहना हो उसी के मन की बात करने में ही कल्याण संभव है। उसके ही विचारों में स्वयं को भी ढालिये।

जहाँ गंगा तहाँ झाऊ, जहां बाभन तहाँ नाऊ।

अ०– कहावत नाई–बाभन पर है यानी शुभ–अशुभ सब कार्यों की जगह जहाँ बाभन होते हैं वहाँ नाई भी रहते हैं। बात सही है, जन्म, मरण, शादी–व्याह, किसी भी प्रयोजन में दोनों साथ रहने की ही आवश्यकत होती है।

जा पूत दक्खिन, इहै करम क लच्छन।

कोई माता अपने निकम्मे पुत्र से कहती है।

अ०– ऐ बेटा! अब तुम दक्खिन दिशा को कमाने निकल जाओ, यही भाग्य के लक्षण हैं।

जाके कारन पहिरी सारी, वाहे टांग रही उघारी।

अ०– जिस कष्ट से बचने के लिए इतनी झंझट मोल ली वह परेशानी तो बनी की बनी ही रह गई। सारी पहनी कि पैर ढंके रहेंगे मगर वे ज्यों के त्यों खुले के खुले ही रह गये। कोई भी समस्या समाप्त न होने पर कहावत कही जाती है।

जाको जो स्वारथ सधे, सोई ताहि सुहाय,
चोर न प्यारी चांदनी, जैसी कारी रात।

जिस बात से जिसका स्वार्थ सिद्ध होता है वही उसको प्यारी होती है।

अ०– जैसे चोर को चांदनी रात नहीं भाती। गोस्वमी जी के शब्दों में "चोरहिं चांदनि रात न भावा"। चोर को अंधेरी ही रात लाभकर लगती है मगर और लोगों को उजाली रात प्रिय लगती है। इसलिये जहाँ जिसका स्वार्थ टकराता है वहीं उसे अच्छा लगता है।

जाको डंडा ताकी गाय, काहे करो हाय–हाय।

कहावत बलशाली लोगों के ऊपर कही गई है।

अ०– जिसका डंडा होता है गाय उसी की होती है। जैसे– "जेकै लाठी ओकै भइस"। जो सबल होता है उसी के हाथ सबकुछ आता है।

जाका राम रच्छक, ताको कौन भच्छक।

अ०– जिसका राम रखवाला होता है उसका कोई कुछ भी बिगाड़ नहीं सकता।

जाको लोह, ताको सोह।

अ०– जिसकी चीज़ उसे ही शोभा देती है। जिसका हथियार है वह उसी के हाथ में अच्छा लगता है।

आग जगन्ते पहरुवा, लाग लगन्ते लोग।

श०– जगन्ते–जागनेवाले, पहरुवा–पहरा देने वाले।

जब पहरा देने वाले अपना काम करते है और चोर लोग अपना काम करते हैं तो कहावत स्पष्ट की जाती है।

अ०– पहरे वाले चाहे जितना भी सचेत रहें मगर चोर, बदमाश अपना काम करने से बाज़ नहीं आते हैं।

जाट कहे सुन जाटिनी इसी गांव में रहना।
ऊँट बिलैय्या ले गयी तो म्याऊं–म्याऊं कहना।।

अपनी गर्ज निकालने के लिये आदमी को सबकुछ करना पड़ता है। कहावत है–

अ०– जाट अपनी पत्नी से कह रहा है कि हमें तुम्हें इसी गांव में रहना है। कहीं जाना नहीं है। जब रहना है तो कोई कहे कि ऊँट को बिल्ली उठा ले गई तो मान लेना, वाद–विवाद मत करना। कहीं रहने के लिये या आश्रय पाने के लिये प्रश्रयदाता की हां में हां मिलाना ही होता है, वर्ना कौन रहने देगा?

जाड़ जाय रूई, कि जाड़ जाय दुई।

अ०– जाड़ा या तो रूई से जाता है या फिर जब दो आदमी एक साथ सोयें तो जाड़ा कम लगता है।

जात क बैरी जात, काठ क बैरी काठ।

अ०– एक जाति वाले हमेशा ही एक दूसरे के दुश्मन होते हैं। उसी प्रकार से काठ की बेंट लगी कुल्हाड़ी से ही पेड़ कट सकते है। इस तरह से अपनी ही जाति अपनी दुश्मन बन जाती है।

जाति पांति पूछै नहिं कोई,
कुर्ती पहिरि तिलगंवा होई।

श०– तिलगंवा–सिपाही।

कहावत का अर्थ है कि जब किसी पेशे में चले गये तो कौन जाति पूछता है? सिपाही की कोई जाति नहीं होती वर्दी पहनी और सिपाही बन गये, हिन्दू कि मुसलमान कौन पूछता है।

जाति पांति पूछै नहिं कोई,
हरि को भजै सो हरि का होई।

अ०– जो भगवान को भजता है वह ईश्वर का हो जाता है। उसकी कोई जाति–पांति नहीं होती है।

जान की जान गई, ईमान का ईमान गया।

अ०– हर प्रकार से हानि ही हानि का उठाना। प्राण भी गये ईमान भी गया।

जान के साथ जेवरी जाय।

दुगनी हानि का होना।

प्राण तो गये ही उसके साथ–साथ गले में बंधी रस्सी भी गयी।

अ०– किसी प्रकार से भी जान न छूटना।

जाननवाले जानिये मूरख मन पछिताय,
करनी भूली आपनी, औरो दोस लगाय।

अ०– समझने वाले इस बात को समझते हैं कि मनुष्य अपनी करनी का फल भुगतता है किंतु अनायास ही दूसरों पर दोष मढ़ता है और जब समझ में आता है तो वह मन ही मन में पश्चाताप करता है।

जानै ऊ चिलम जे पर चढ़ै अंगारी।

अ०– जिस चिलम से लोग हुक्का पीते हैं, वह रोज़ ही अंगारे भरती है। वह दुःख सहती है परन्तु कह कुछ भी नहीं सकती। इसलिये जिस पर पड़ती है उसकी पीड़ा तो वही बता सकता है कि कितना दर्द होता है।

जाही ते कछु पाइये, करिये ताकी आस।

अ०– जिससे कुछ भी सहारा मिल सके, उससे पाने की आशा भी करनी चाहिए।

जासों जाको काम, सोई ताको राम।

अ०– जिससे कुछ काम बनता है वहीं भगवान हो जाता है। गोस्वामी जी के शब्दों में–

स्वारथ के सबही सगे, बिन स्वारथ कोउ नाहिं।
सेवै पंछी सरस तरु, निरस भये उड़ि जाहिं।।

जाट अस मरद कोल्हू अस जोय।
ते कै लड़िकै सींकि अस होय।।

श०– जाट–एक जाति होती है जो बड़ी बलिष्ट, देखने में लंबी चौड़ी होती है। कोल्हू–जिसमें तिल, सरसों आदि को पेरते हैं। जोय–स्त्री पत्नी।

कहावत बलिष्ट माता–पिता की दुर्बल संतान को देखकर कही गई है क्योंकि मां पर पूत, पिता पर घोड़ा, और नहीं तो थोड़ा–थोड़ा।

अ०– जिसका बाप जाट सा लंबे चौड़े शरीर वाला हो, मां कोल्हू की तरह स्वस्थ एवं मोटी हो उसके बच्चे सीक की तरह इतने दुर्बल क्यों?

" जि "

जियत न दीन कौरा, मरे उठावै चौरा।

श०– कौरा–रोटी का कौर, चौरा–समाधि बनाना।

अ०– जब कोई आदमी अपने घर के बृद्धजनों का ध्यान नहीं देता तो कहावत चरितार्थ की जाती है कि जीते जिन्दगी तो एक टुकड़ा रोटी को भी नहीं पूछा। अब मरने पर चले हैं उसके नाम का चबूतरा व निशानी बनवाने।

जियत न कारै राधा, मरे करै सराधा।

श०— राधा–आदर सम्मान, सराधा–मरे आदमी को जो पानी, पिण्डा दिया जाता है।

उपर्युक्त कहावत का सा अर्थ इसका भी निकलता है।

जिय विनु देंह नदी बिनु बारी,
तैसेइ नाथ पुरुष बिनु नारी।

यह पंक्ति है तो बाबा तुलसीदास जी की, जिसे लोग पति–पत्नी के संबंध में बहुधा चरितार्थ करते है।

अ०— जैसे जीव के बिना शरीर नहीं रहता, वैसे ही पुरुष के बिना स्त्री भी नहीं रह सकती है।

जिन वारां रबि संक्रमें, तिनै अमावस होय,
खप्पर हाथ लै जग भ्रमै, भीख न घालय कोय।

श०— बारां–बार, रबि–इतवार, संक्रमें–संक्राति पर, खप्पर–भिक्षा मांगने का पात्र, घाल–डाल देना।

अ०— कहावत कवि घाघ की है जिस इतवार के दिन संक्रान्ति पर अमावस्या लग जाय तो समझो कि दुनिया में कोई माँगी भीख भी न देगा।

जिन कर सास बुराई, तोहरिव धी के आगै आई।

श०— धी– लड़की।

अ०— कोई बहू अपनी सास को चेतावनी देती है कि मेरी बुराई मत करो। यही बुराई तुम्हारी बेटी के सामने भी ससुराल में आयेगी।

जिव जाय, हक़ न जाय।

अ०— प्राण भले ही चले जाय किंतु अपना अधिकार,अपना हिस्सा नहीं छोड़ना चाहिए।

जियत माछी नहीं लीलि जातै।

अ०— जानबूझकर अपना नुकसान या अपनों का अपमान, या कोई ग़लत बात नहीं देखी जाती।

जिव पाते पे धरा बा।

अ०— मन का न लगना, दूर की चिंता रहना। यानी पत्ता जैसे उड़ जाना चाहता है उसी प्रकार से मन उड़कर चाहने वाले स्थान पर पहुंच जाना चाहता है।

जिमि आरत चित रहै न चेतू।

श०— आरत–आर्त, दुखी, चित–मन व दिमाग़ में, चेतू–चेतना, ज्ञान।

अ०— पंक्ति 'गोस्वामी' जी की है जिस समय कोई दुखी व्यक्ति अपने कष्टों से पीड़ित रहता और उसका चित्त ठिकाने नहीं रहता है। उस समय बहुधा यह पंक्ति लोग कह देते हैं।

जितने बड़े बाले मियां उतनी बड़ी पूंछ,
जहां जाये बाले मियां वहीं जाय पूंछ।

कहावत व्यंग्य में कहीं गई है। किसी आदमी को बहुत बड़ा वस्त्र पहने देख कर या कोई वस्तु व्यक्ति की लंबाई, मोटाई से भारी है, तो कहते है।

अ०— जितने बड़े तो बाले मियां खुदहैं उतनी बड़ी तो पूंछ ही है। वे जहां जहां जाते हैं वहीं–वहीं पूछ भी साथ–साथ जाती है।

जिभिया रोवा, दंतवा टोवा,
पेटवा कहे, कहां आग लागि।

श०— टोवा–टटोलना, छूना, आगि लाग–कहीं कुछ हुआ भी है क्या?

अ०— जब कोई वस्तु खाने की इतनी कम हो तो कहावत व्यंग्य में कही जाती है कि जीभ तो बस छू भर पाई, दांत उदास होकर रो पड़ा कि हमें तो मिला ही नहीं और पेट को तो कुछ पता ही नहीं कि क्या कोई वस्तु भी आई थी खाने को। कहावत कम पदार्थ के प्रति व्यंग्य स्वरूप कही जाती है।

जितने नर उतनी बुद्धि।

अ०— कहावत संस्कृत की एक कहावत पर आधारित है "मुण्डे–मुण्डे मतिर्भिन्ना"। यानी हर आदमी के अलग–अलग विचार होते हैं। कहा भी यही गया है कि जितने आदमी होते हैं उतने विचार भी सामने आते हैं। कहते हैं कभी–कभी दो आदमी की शक्ल तो फिर भी मिल जाती है मगर अक्ल नहीं मिलती।

जियत बाप हुरदंगी हुरदंगा, मरे बाप पहुँचाये गंगा।

श०— हुरदंगी हुरदंगा–लड़ाई झगड़ा, हाथापाई।

जब मनुष्य ज़िंदा रहता है तो लोग उसकी इज्ज़त नहीं करते हैं। यहाँ तक कि बाप बेटे में आये दिन हाथापाई– लड़ाई–झगड़ा, कहासुनी होती रहती है मगर जब मर गये, तो बड़ी इज्ज़त की। मरे

बाप को गंगा जी लेकर अन्त्येष्टि क्रिया करने गये। यानी जिस आत्मा को जीते जी तड़पा कर रख दिया आज जब वह दुनिया से चली ही गई चाहेगंगा पहुचाओं, चाहे नाले में ढ़केल दो, अब क्या रखा है उस मृत शरीर में?

जिन वारा रवि संक्रमें, तासों चौथे वार,
अशुभ परन्ते शुभ करै, जोगी ज्योति पसार।

अ०– जिस रविवार को संक्रान्ति पर्व हो उसके चौथे दिन यदि अशुभ भी हो तो भी घाघ कवि का कहना है कि वह समय शुभ माना जाता है।

जितने मुंह उतनी बात।

अ०– कोई भी बात चाहे अच्छी हो या बुरी जितने लोग होते है उतनी तरह की बातें होती हैं। यानी सभी के विचार एक दूसरे से भिन्न होते हैं।

जितना खाय ओतने परसावै।

अ०– जितना खा सके या पच सके उतना ही भोजन परसवाना चाहिए तथा खाना चाहिए, लालच करना बुरा है।

जिधर सूखी घास होती है, उधरै आग लगती है।

अ०– रूखेपन में जलन होना स्वाभाविक है। जहाँ निःशील व्यक्ति होते है वहीं ताप बढ़ता है। जहाँ गांठ होती है ईख में वहीं रस नहीं पाया जाता।

अ०– जहाँ रूखी–सूखी घास होती है वहीं आग लगने की संभावना भी होती है। उसी प्रकार से निःशील व्यक्ति के स्वभाव में क्रोध अधिक होता है।

जितना गुड़ पड़ी ओतनै मीठ होई।

अ०– किसी भी खाने–पीने के सामान में जितना ही अच्छा सामान डाला जायेगा वह उतना ही स्वादयुक्त होगा।

जितनै छोट, उतनै खोट।

श०– खोट– बुरा।

कुछ लोग बचपने से ही बड़े दुष्ट स्वभाव के होते हैं। ऐसे लोगों के प्रति ही कहावत कही गई है।

अ०– जितने छोटे हैं उतनी ही दुष्टता कूट–कूट कर भरी है।

जितनै तपी उतनै बरसी।

कहावत मौसम के ऊपर कही गई है।

अ०– जितनी ही गर्मी पड़ेगी उतना ही अधिक पानी बरसेगा।

जितना मंड़ये मां ढकेली क ढकेला,
ओतने कोहबरे क मेला।

श०– मंड़ये– विवाह मंडप, शरपत से छाकर उसके नीचे विवाह होता है।

कोहबर– वह स्थान है जहां विवाह के बाद वर–वधू को ले जा कर बैठाते और पांसा खेलाते हैं।

अ०– जितना मंड़ये में लोगों की भीड़ होती है, उतनी ही कोबहर में भी ठेलम–ठेला मच जाती है।

जितने सस्ते उतने ख़राब।

अ०– कोई भी वस्तु जितनी सस्ती होगी, उतनी ही ख़राब भी होगी। किसी ने कहा है– सस्ता रोवै बार–बार महंगा रोवै एक बार"। यानी कि सस्ता सामान लेने से रोज़ ही कुछ न कुछ ख़राबी पैदा हुई रहेगी और मंहगा लेने से जो कुछ ज्यादा दाम देना होगा, एक ही बार देना होगा, चीज़ तो टिकाऊ व अच्छी होगी। कोई शिकायत तो बार–बार नहीं होगी।

जितना सयाना उतना दिवाना।

अ०– जो जितना ही चतुर, सयाना बनना चाहता है, वह उतना ही परेशान रहता है।

जितना ओढ़ना, ओतना गोड़ पसरना।

कहावत अपनी–अपनी औकात के ऊपर कही गई है। जितना आमदनी हो उससे कम ही ख़र्च करना उचित होता है। यदि चादर के बराबर पैर न रहा तो पैर खुलने का डर है। व्यर्थ खर्च के बाद यदि आवश्यक खर्च आ गया तो फिर बुरी हालत हो जायेगी।

अ०– जितना ओढ़ने की चादर हो उसके अंदर ही पैर फैलाना चाहिए।

जितना बड़ा सांप, उतनी चौड़ी गोह।

जब दो खराब आदमियों की तुलना होने लगती है, तो कहावत चरितार्थ होती है।

अ०– कोई किसी से किसी में कम नही हैं, यदि सांप लम्बा है तो गोह (नेवले के आकार का जंतु) भी चौड़ी है। यानी एक से एक धूर्त एवं दग़ाबाज़ संसार में है जिन्हें समझ पाना बड़ा कठिन है।

जितनी मियां की लंबी दाढ़ी, ओतनै गांव गुलजार।

अ०– ग्रामीण लोगों को सम्पन्न देखकर या किसी की चिकनी दाढ़ी को देखकर लोग गांव की सम्पन्नता का अंदाज़ लगाते है कि इस गांव के लोग खाने–पीने में ठीक हैं। जब बड़े मियां की दाढ़ी इतनी लंबी है तो अवश्य ही गाँव फला–फूला–प्रसन्न होगा।

जितनै लाभ उतनै लोभ।

अ०– लोगों की आदत लाभ लेने की होती है। जिसको जितना ही मिलता जाता है, उसकी उतनी ही लालच बढ़ती जाती है।

जिधर जरना देख, उधर तापै।

अ०– दूसरे की हानि से खुद लाभ उठावै।

जिधर मौला, उधर आसफुद्दौला।

अ०– ईश्वर की मर्ज़ी के खिलाफ तो आसफुद्दौला भी नहीं जा सकते थे। जिसे कहा जाता था– "ऊपर मौला, नीचे आसफुद्दौला" तो फिर और की क्या कहें?

कहते हैं– आसफुद्दौला लखनऊ के नवाब थे। वे बड़े दानी थे। एक बार एक फकीर ने उनसे दस हज़ार रुपये मांगे तो नवाब ने उसे दस रुपये दिये। इस पर फ़कीर नाराज़ हुआ तो नवाब बोले कि 'तुम्हारे भाग्य में इतना ही बदा है। फ़कीर ने रुपये लेने से इनकार कर दिया। इस पर बादशाह ने कहा– कल फिर आना। दूसरे दिन फ़कीर के आने के पहले ही नवाब ने एक रुपये की एक एवं एक पैसे की एक थैली भरवा कर रखवा दी। फकीर ने एक पैसे वाली थैली उठा ली। नवाब ने कहा देखा तुम्हारे भाग्य में यही था।

कहावत इसी के आधार पर प्रचलित है।

जिनके चाव घनेरा, उनका दुख बहुतेरा।

अ०– जो लालची होते हैं, जिनको किसी बात की हविश अधिक होती है, उन्हें अनेक प्रकार के दुखः भी घेरे रहते हैं।

जिन पायन पनही नहीं, तिनहिं देत गजराज।
बिख देते बीखा मिले, साहेब गरीब नेवाज।।

श०– पायन–पैर, पनहीं–जूता, बिख–विष, ज़हर, बीखा–एक लड़की का नाम, गरीब नेवाज–गरीबों का दुख हरने वाले।

यह किसी विद्वान का दोहा है जो कहावत के रूप में लोग कहते हैं इसकी एक कथा है। जो भाग्य पर आधारित है।

"एक सेठ के पास एक भिखारी नित्य भीख मांगने आया करता था। तंग आकर एक दिन सेठ ने आढ़तियों को लिख दिया कि इसे विष दे दो। आढ़तिये की बेटी का नाम भी बीखा या विषया था। उसने बड़े प्रेम से अपनी पुत्री का विवाह भिखारी के साथ करके उसे हाथी पर चढ़ाकर विदा कर दिया। यह दोहा उसी के ऊपर लिखा गया है।

अ०– जिनके पांव में जूता नहीं उसे भगवान हाथी देता है और जिसे विष देने को कहा जाता है, उसे ईश्वर ज़हर खिलाये जाने के बजाय लड़की से विवाह करवा देते हैं।

जिन बैलन हरियरी चरी, सो कैसे चरें रवार।

अ०– जिन जानवरों ने हरी घासें खाई है वे भला सूखी रद्दी घास कैसे खा सकते हैं? यानी सुख भोगने के बाद दुख भोगना अत्यन्त कष्टकारक होता है।

'जियत पिता नहिं पूछी बाता,
मरे पिता को दूध औ भाता।

कहावत कुपुत्र के प्रति कही गई है।

अ०– जब पिता ज़िंदा थे तो उनसे बात तक नहीं की, दुख–सुख पूछना तो दूर रहा और जब मर गये तो चले हैं उन्हें दूध–भात खिलाने।

जिसका काम वही का भावै,
और करै तौ डंडा पावै।

अ०– जिसका जो काम, रोज़ी, पेशा है, वह उसे ही अच्छा भी लगता है और उसी के द्वारा ठीक तरीकें से

होता भी है। यदि कोई दूसरा करता है तो उसे डंडे की मार पड़ती है। कष्ट मिलता है।

जिसका खावै, उसका गावै।

अ०– जिसका अन्न खाये उसी का यश भी गाना चाहिए। कहते हैं नमक हलाल होना चाहिए, नमक हराम नहीं होना चाहिए।

जिसका चुन्न, वही क पुन्न।

अ०– जिसका चुन्न–आटा होता है उसी को पुण्य मिलता है।

जिस मुंह पान खाय, वहि मुंह कोयला न चबाय।

अ०– कहावत मान सम्मान व प्रशंसा पर कही गई है कि जौन मुंह से किसी की बड़ाई करो उस मुँह से उसकी बुराई नहीं करनी चाहिए। या जहां सम्मान पाया जाता है, वहां अपमान नहीं सहन करना चाहिए। जिस मुँह पान खाया है उस मुँह कालिख मत लगवाओ।

जिस तन लागे, वही तन जाने।

अ०– जिसके तन–मन पर बीतती है, जो कष्टों को भोगता है, वही बता सकता है कि क्या पेरशानी ऊपर गुज़री। कहा है–

जेहिपर परै उहै दुख जानै।
अउर लोग सब धोखा मानै।।

दुख जब स्वयं पर पड़ता है तो समझ में आता है कि दूसरे ने कैसे कष्ट झेला होगा?

" जी "

जीभ जली, स्वादौ न आय।

अ०– जब खाने में संतुष्टि नहीं मिलती तो कहावत कही जाती है कि जीभ भी जल गई और स्वाद भी खाने में न आ पाया। किसी काम में परेशानी भी उठायी और काम भी न हो पाया।

जीभि आय कि, कतन्नी आय।

जब कोई आदमी किसी बात पर बहुत बोलता ही चला जाता है और बात में बात काटता ही चला जाता है तो कहावत का उपयोग किया जाता है।

अ०– बराबर बोलते चले जा रहे हो, ज़बान रुकती ही नहीं मानों कैंची हो जो बराबर काटती ही चली जा रही हो।

जी जाय, मुल घी न जाय।

कहावत कंजूस आदमी के प्रति कही गई है कि जान भले ही चली जाय किंतु घी खर्च न होने पाये।

जीता सो हारा, हारा सो मरा।

अ०– जो जीत गया वह हारे के बराबर हो जाता है क्योंकि लाख झंझटें उसकी जान को फिर भी रहती हैं किंतु जो हार गया वह तो मरे के बराबर हो गया। जो कुछ था वह भी गया। कहावत मुकदमें, मामले पर कही गई है।

जीए आसा, मुए निरासा।

अ०– जब तक आदमी जीता रहता है तब तक आशा रहती है जब वह मर जाता है तो सारी आशायें समाप्त हो जाती हैं।

जीते क हाथ काला, हारे का मुँह काला।

कहावत जूए के खिलाड़ियों के ऊपर उद्धृत की गई है।

अ०– जो जीत गया उसका हाथ काला होता है। क्योंकि जुआ खेलना बुरे काम में आता है। जो हार गया उसका तो मुंह काला होना स्वाभाविक ही है। अतः जीतने के बाद भी इस विजय पर कलंक ही मिलता है।

जीवे मेरा भाई, है गली–गली भौजाई।

ननद अपनी भाभी को व्यंग्य में कहती है– तू घमंड किसी बात का मत कर। यदि मेरा भाई ज़िंदा है तो गली–गली में भौजाई मिल जायेंगी। मेरे भाई के रहते भौजाइयों की कमी नहीं है।

जी है तो जहान है।

अ०– जीवन का ही सारा नाता होता है। कहावत का आधार वही है। यानी जी है तो दुनिया अच्छी–भली दिखाई देती है और यदि तबीयत ठीक नहीं तो सारी दुनिया ही बेकार दिखाई पड़ती है।

जीजा के माल पर साली मतवाली।

कहावत जीजा, साली के हास्य–व्यंग्य पर कही गई है। आमतौर पर जीजा साली का मज़ाक चला ही करता है। कुछ रिश्ता ही ऐसा बनता है कि एक दूसरे को देखने के बाद बिना फुलझड़ियाँ छोड़े नहीं रहते। बिना कुछ नोक–झोंक किये चैन ही नहीं पड़ता, तो कहावत भी इसी विषय की है।

अ०– जीजा जी के माल, सामान पर साली दीवानी हो गई है। यानी उसे सबसे अच्छी जीजा की ही वस्तु लगी, इसलिये कि उसकी वस्तु पर साली का अधिकार पहुंचता है।

जीते न पूछै, मरे प छाती पीट के रोवै।

अ०– जब तक तो ज़िंदा रहे बात तक न की। दुःख–सुख न पूछा, मान सम्मान न किया और जब मर गये तो छाती, सिर, पीट–पीट कर रो रहे हैं।

जीती मच्छी नहीं निगली जात।

अ०– जान बूझकर कोई ग़लत काम नहीं करता है। या कोई अपनी जानकारी में ज़हर नहीं खाता है।

श०– अपनी इच्छा से कोई दुर्घटना या गंभीर स्थिति नहीं आती है। या सही बात को झूठा साबित नहीं किया जा सकता है।

" जु "

जुगल कान और जुगल भुजाहू,
जौ धाय गिरय तो होय धन लाहू।

श०– जुगल–दोनों, भुजाहू–हाथ, कंधे के नीचे, धाय–दौड़ कर, लाहू – लाभ।

कहावत छिपकिली पतन के प्रति उद्धृत की गई है।

अ०– यदि दोनों कान व दोनों भुजाओं के ऊपर छिपकिली दौड़कर गिर जाय तो धन का लाभ होता है। ऐसा छिपकिली विचार में कहा गया है।

जुगल जांघ पर आन जो परई
धन–जन सकल मनोरथ भरई
परे जांघ नर, होय निरोगी,
परब परे तन, होय वियोगी।

अ०– दोनो जांघों पर छिपकिली यदि गिरती है तो आदमी और धन दोनों ही का लाभ होता है। यदि जांघ पर गिरती है तो आदमी निरोग होता है और यदि किसी पर्व, त्यौहार पर छिपकिली गिरती है तो वह आपस में वियोग का कारण बनती है।

जुड़ती नहीं धुर की टूटी,
धरी रहे सब दारू बूटी।

श०– धुर–धुरी, जड़, दारू–दवा, बूटी–जड़ी से बनी औषधियाँ।

अ०– भगवान की ऐसी लीला है कि जब मृत्यु अपने स्थान से चल देती है तो लाख दवा दारू करो कोई लाभ नहीं होता। यानी समय के, काल के आगे आज तक किसी की नहीं चल पाई है।

जुलाहा चुरावै नली–नली, खुदा चुरावै एक बेरी।

अ०– जुलाहा तो थोड़ा–थोड़ा करके सूत को चुराता है मगर भगवान जब उसे सज़ा देने वाले होते हैं तो एक ही बार में इकट्ठा ही नुकसान करवा देते हैं। चोरी का सारा नफ़ा निकल जाता है।

जुलाहे की जूती–सिपाही की जोय,
घरी–घरी पुरानी होय।

यह कहावत उस समय उपयोग में आती है जब किसी को जूता पहनने की फुर्सत नहीं, या किसी की बीबी पति के परदेश रहने पर अकेली रह कर जीवन यापन करे।

अ०– जुलाहे को दिन भर बैठे रह कर सूत कातना पड़ता है तो जूते पहनने की फुर्सत कहाँ? उसी प्रकार से सिपाही हमेशा फौज में रहता है तो निश्चय ही उसकी पत्नी अकेला जीवन व्यतीत करेगी। इसी प्रकार उसके दिन बीतते जायेंगे और वह पुरानी होती जायेगी।

जुआरी क अपनै दांव सूझत।

कहावत स्वार्थी लोगों के प्रति कही गई है, जो केवल अपना ही मतलब गांठने में माहिर होते हैं।

अ०– जुआरी को तो अपने दाँव की ही पड़ी रहती है। 'तुलसीदास' जी ने भी कहा है– "सूझ जुआरिहिं आपन दाऊँ"।

जुलाहा का जानै जौ काटै।

इस कहावत पर एक कथा है– "किसी जुलाहे पर महाजन का कर्ज था। महाजन ने खेत में काम कराकर पैसा वसूलना चाहा। जुलाहे ने खेत काटने का जिम्मा ले तो लिया मगर जब वह जौ काटने गया तो जौ काटने के बजाय जौ की झुकी हुई बालों को इस प्रकार सुलझाने लगा जैसे कोई सूत–सूत को सुलझाता है। उसी पर यह कहावत है।

अ०– जुलाहा खेत में जौ काटना क्या जानें? जुलाहे का काम खेत काटना नहीं, सूत कातना है।

जुलाहा क तीर न होय।

या

जुलाहे को तीर लगा

खुदा भली करै या झूठ करै।

किन्हीं कष्टों की जब जानबूझ कर उपेक्षा की जाती है तो उसका परिणाम भी बुरा निकल सकता है, तभी कहावत कही जाती है। इसके अन्तर्गत कथा है। किसी जुलाहे की जांघ में तीर आ लगा। उसने उसको निकालने का उपाय तो न सोचा, भगवान से कहने लगा कि तीर का लगना झूठा हो जाता तो अच्छा था। कहते हैं– "जुलाहे को तीर लगा खुदा भली करे या झूठ करे।

जुलाहा कै बेगारी पठान करै।

श०– बेगारी–बिना पैसे का काम करना।

जब किसी कमज़ोर, दुर्बल आदमी के यहाँ बलवान व्यक्ति को बेगार के लिये बुलाया जाता है या कोई कहता है कि मेरे यहाँ तो वे बेगार करते हैं तो एक मज़ाक सा लगता है। कहावत भी इसी प्रकार की है कहाँ जुलाहा, कहाँ पठान। क्या बेगार करेगा जुलाहे के यहाँ पठान?

" जू "

जूता पहिरै साई का, बड़ा भरोसा ब्याही का।
जूता पहिरै नरी का, क्या भरोसा करी का।।

कहावत सिद्धान्तवादी है जो कि जूते व स्त्री पर लागू है।

श०– साई–कहकर बयाना देना, ब्याही–विवाहिता स्त्री, नरी–बकरी के चमड़े का, करी–रखैल स्त्री।

अ०– कहा है कि जूता हमेशा बनवा कर ही पहनना चाहिए, वह मज़बूत व अच्छा होता है। उसी प्रकार ब्याहता स्त्री पर बड़ा भरोसा होता है क्योंकि समय पर वही काम देती है। घटिया दाम का बकरी के चमड़े का जूता कभी नहीं पहनना चाहिए वह कमज़ोर होता है। उसी प्रकार से रखैल औरत पर विश्वास नहीं करना चाहिए।

जूठी पत्तल खात हैं, बारी, बायस, स्वान।

श०– बारी–एक जाति होती है। बायस–कौवा, स्वान–कुत्ता।

कहावत का अर्थ स्पष्ट है।

जूठ खाय मीठे के लालच आय।

ओछा काम भी अच्छे काम की लालच में करना पड़ता है।

अ०– मीठा खाने की लालच में आदमी जूठा भी खा लेता है।

जूता मारे जाय कहै बनारसी आय।

अ०– मीठी छूरी से वार करना । जूता तो जूता है क्या बनारसी क्या चमरौधा। यहाँ बनारसी जूते की बड़ाई में जूता मारना कहाँ तक उचित है? काम तो जूता मारने का ही हो रहा है।

जून, सितम्बर जानिये, अप्रैल, नवम्बर तीस
फरवरी अट्ठाइस दिन की, बाकी सब इक्तीस।

कहावत अंग्रेजी के बारहों माह पर उद्‌धृत की गई है।

अ०– जून, सितम्बर, अप्रैल, नवम्बर के चार माह तीस (३०) दिन के होते हैं। फ़रवरी अट्ठाइस (२८) या चौथे वर्ष (२६) दिन की होती है। बाकी जनवरी,मार्च, मई जुलाई, अगस्त, अक्टूबर तथा दिसम्बर महीने इकतीस (३१) दिन के होते हैं।

"जे"

जे करै सेवा ऊ खाय मेवा।

कहावत में सेवा का महत्व दिया गया है। गोस्वामी जी ने कहा है–

"सबते सेवक धर्म कठोरा"। अतः सेवा का धर्म पालन करना आसान बात नहीं है।

अ०– जो सेवा करता है, वह मेवा खाता है। यानी उसे सदा सर्वदा सुख ही सुख मिलता है। इसलिये सेवा करने वाले का स्थान बहुत ऊंचा माना गया है।

जेकै मइया राम रसोइया,
ओके लड़िकन भूखन मरे?

चूल्हे में स्वजनों का राज देखकर कहावत कही जाती है।

अ०– जिसकी मां ही रसोइये में हो उसके बच्चे भला भूखे रह जायें, यह तो असंभव सी बात है। एक कहावत स्मरण हो आई है– "घर का परसवइया, पतरी खाली"।

अ०– जब घर का परोसने वाला हो तो ठीक से भोजन न परोसा जाय यह बात तो आश्चर्य की है।

जे किहिस खाय मं सरम, ओक फूटे करम।

अ०– जो खाने में शर्म करता है वह बाद में पश्चाताप करता है।

जे कै खाय अन्न, उही के गावै गुन्न।

अ०– जिसका अनाज खाये उसी की बड़ाई करनी चाहिए।

जेतने ओढ़ना, ओतनै गोड़ पसरना।

जब किसी को उसकी आमदनी व ख़र्च के विषय में कहना या समझाना होता है तो कहावत का उपयोग होता है।

अ०– जितनी लंबी चादर हो पांव भी उतना ही फैलाना चाहिए वर्ना पांव नंगे दिखाई पड़ना लज्जाजनक है।

जे देखै चउथी कै चंद,
किये कराये बिन लागै फंद।

यहां चतुर्थी के चांद से मतलब केवल भादों के शुक्ल पक्ष के चंद्रमा से है। कहते हैं कि भादों के दूसरे पाख के चंद्रमा को देखने के बाद ही, उसी कारण से कृष्ण भगवान को बिना चोरी किये ही सम्यंतक मणि की चोरी लगी थी। जब से यह झूठा आरोप लगा तब से यह कहावत चल पड़ी।

अ०– जो भी चौथ का चंद्रमा देखता है बिना कुछ किये कराये उस पर चोरी का कलंक लगता है या उस पर किसी प्रकार का लांछन अवश्य लगता है। तबसे लोग जो जानते हैं वे चौथ का चांद नहीं देखते।

जेहिं घर दियना बरै सबेरा
वहि घर लछमी लेय बसेरा।

श०– दियना– दिया, दीपक, बरै–जले, सबेरा–शाम के समय जल्दी ही, लछमी–लक्ष्मी, धन, बसेरा–रात में बास करना।

कहावत बहुत पुराने ज़माने की है। आज सांध्य दीपक का महत्व कम से कम शहरों में तो नहीं है। शहरों में बिजली जलती है। पहले नारियाँ अपने–अपने घरो में सांध्यदीप यानी संझबाती जलाकर गोधूली मानकर पूजा–अर्चन करती थीं।

अ०– जिसके घर में दीप जल्दी जलता है उसके घर में लक्ष्मी सदैव निवास करतीं है।

जे छन हो रोहिणी परवेस,
धनपति इन्द्र धर्म जलेस।
जल पूरित घट रोहिणि अंत,
कहै डाक फल कही तुरंत ।
धनपति जलजौ पूरन देख,
सावन भर जल वर्षा लेख
जल खाली तत वर्षा थोड़,
खाली घइले मुख विदोड़
पूर्वहिं पश्चिम दक्षिण जलघट,
भादों–सावन कातिक के फल।

कहावत वर्षा विचार संबंधी है।

अ०– जब रोहिणी नक्षत्र का प्रवेश काल हो तो चार

द्वार का मण्डप बनाकर चार घड़ों में जल भरकर, गोबर से गोंठकर, चारो दिशा में रख दो। १५ दिन बाद सोलहवें दिन पहले उत्तर दिशा के घट को देखो यदि घट पूरा भरा है तो सावन में पूरी वर्षा होगी। आधा है तो अच्छी होगी। यदि घट में पानी नहीं है तो वर्षा न होगी।

इसी प्रकार से पूर्व दिशा के घट से भादों मास का व दक्षिण दिशा से क्वार मास का तथा पश्चिम के घट से कार्तिक मास की वर्षा का पता लग सकता है।

जे आन क दुखः हरै, जाना महायज्ञ करै।

अ०– जो दूसरों का दुःख हरता है वह मानो बहुत बड़ा हवन, पूजा–पाठ करता है।

जैके लाठी ओकै भैंस।

कहावत ताकतवरों के ऊपर कही गई है।

अ०– भैंस किसी की भी हो जिसके हाथ में लाठी है भैंस उसी की मानी जाती है। यानी बलशाली, कर्तव्यनिष्ठ को ही कार्यों में सफलता मिलती है।

जेतने कै मुर्गी नहीं, ओतनी बेहनाई।

जब किसी वस्तु की कीमत से भी ज्यादा कीमत उसको सुधारने या बनवाने में लगती है तो कहावत कही जाती है।

अ०– मुर्गी की कीमत उसकी सफाई करने से कम लगी।

जेकै बंदरी, उही से नाचै।

अ०– जिसकी वस्तु या सामान होता है वह उसी के द्वारा ठीक से प्रयोग में लाया जा सकता है। दूसरे से कोशिश करने के बाद भी सही काम नहीं हो पाता। बंदर जिससे सीखे रहेगा, उसकी आदतें, उसके विचार वही जान सकता है जो बंदरों को नचाता है।

जेकै खाय, वही क गुर्राय।

कहावत ऐसे अवसर पर व्यक्त की जाती है जब कोई आदमी एहसानफरामोश हो जाता है।

अ०– जिसका खाये उसी को आँख दिखाये। उसी को भलाबुरा कहे और उसी को दबाना चाहे।

जेह दिन जेठ बहै पुरवाई,
ते दिन सावन धूर उड़ाई।

अ०– स्पष्ट है।

जेहि घर हींग न हरदा, वहि घर जेवै बरदा।

श०– हरदा –हल्दी, बरदा–बैल।

कहावत खाने–पीने के स्वाद पर कही गई है। जिसके घर में खाने में हल्दी, मसाला, हींग आदि का इस्तेमाल नहीं होता उसके घर में आदमी नहीं बैलों का खाना होता है जो जानवरों की तरह खाये चले जाते हैं। भोजन स्वादयुक्त हो इसके लिये, तड़का, फोरन छौंकना–बघारना तो बहुत आवश्यक है।

जेकै धन जात, ओके धर्मो जात।

अ०– किसी का सामान चोरी हो जाना बड़ी समस्या का कारण बन जाता है। चोरी तो हुई है मगर चोरी एक करता है और शक तमाम लोगों के ऊपर जाता है जिससे धर्म की भी हानि होती है। यानी माल भी उसी आदमी का गया और नियत भी उसी की खराब हुई।

जे कै चर्राये, ते भेंय–भेंय मुड़ाये।

श०– चर्राये– खुजलाना।

अ०– जिसकी गर्ज पड़ेगी वह सब कुछ कर सकता है। यदि बाल में खुजली होगी तो पानी से भिंगो कर बाल बनवाना पड़ेगा। गर्ज़ के अनुसार कार्य को करना।

जेका केउ ना खाय, ओका घुरऊ खायं।

श०– घुरऊ–लद्धड़, बुद्धू।

कहावत किसी महामूर्ख बुद्धिहीन आदमी पर चरितार्थ की गई है।

अ०– जिसको कोई भी न खायें उसको घूरे खायें। लोग यह कहावत अपने ऊपर भी कहते हैं कि जो कोई न खायेगा तो लाओं मैं ही स्वार्थपूर्ति कर लूं, मैं ही खा लूं।

जेस क तेस चाही।

अ०– जो जैसा करता हो उसके साथ वैसा ही

व्यवहार करना चाहिए। जिसके साथ तुम जैसा व्यवहार करोगे, दूसरा भी वैसा ही व्यवहार तुम्हें देगा।

जेका देखे आंख फूटै या मूड़ पिराय,
ओकरे बिना रहि ना जाय।

कभी–कभी मनुष्य के जीवन में इतनी विषम परिस्थिति आ जाती है कि अजीब समस्या से निबटना पड़ता है। कहावत के अनुसार उस व्यक्ति विशेष से, जिसको देखने से मन में पीड़ा तो होती है मगर वह इतना निकटतम प्रियजन होता है कि उसको देखे बिना चैन भी नही पड़ता । जैसे–अपना बच्चा या पति या कोई भी स्वजन गलती करता है या कटु व्यवहारों के द्वारा जीवन में कटुता उत्पन्न करता है तो उसे देखने के बाद शरीरिक व मानसिक कष्टों के अलावा कुछ भी नहीं मिलता। इसलिये लगता है कि आंख से ओझल हो जाता तो ठीक था मगर कुछ समय बाद पुनः पूर्ववत् प्यार होना स्वाभाविक हो जाता है।

जे जरै ते हाय–हाय करै।

क्लेश व कष्टों को तो वही जानता है जो झेलता है। हमदर्दी में भले ही कोई साथ दे–दे मगर पीड़ा का अनुमान तो भुक्तभोगी ही जानता है। किसी ने कहा है–

जाके पांव न फटे बेवाई,
सो क्या जाने पीर पराई।

जिसकी पीड़ा वही जानता है।

जेकरे हाथै जोर, ओकरे हाथ बटोर।

अ०– कहावत बल व पुरुषार्थ पर कही गई है। यानी कि जिसके बल व पुरुषार्थ है उसी की विजय उसी के हाथ में सफलता आती है। वही धन–संपदा का भागी होता है।

जेकरी छाती न एकौ बार,
ओकरी बात का न कर एतबार।

कहते हैं कि जिस पुरुष की छाती में बाल न हो वह बड़ा बेवफ़ा होता है।

अ०– जिसकी छाती में एक भी बाल न हों ऐसे पुरुष का कभी भी विश्वास नहीं करना चाहिए।

जे नांची ते कांची का।

अ०– जो नाचेगा वह भला एक स्थान पर स्थिर क्या रह सकता है? उसके पैर तो बराबर चारो ओर नाचते थिरकते रहेंगे।

जेठ मास जो तपै निरासा,
तब जानो बरखा कै आसा।

अ०– जब जेठ माह में गर्मी इतनी ज्यादा पड़े कि तपन महसूस होने लगे, तो समझ लेना चाहिए कि अब पानी जम के बरसेगा।

जेतना न हगिन हगनहरी (न्योतहरी)
ओतना हगिन साथ कै ज्योनहरी।

कहावत उन पर कही जाती है जो किसी उत्सव–आयोजन में भोजन करके चले जाते हैं।

अ०– जितनी गंदगी तो न्योहरी लोगों ने न की उससे ज्यादा गंदगी तो जो लोग खानेवाले आये उन्होंने की। यानी जितनी टट्टी न्योते में आये लोगों ने की होगी, उससे अधिक खाना खाने आये लोगों ने की।

जेहिकै बिआह, ओहिका आधै बरा?।

जब किसी विशेष अवसर पर घर के विशेष सदस्य की पूछ कम होती है तो कहावत कही जाती है।

अ०– जिसका ब्याह उसी को इतना कम पकवान मिल रहा है। यानी सभी लोग खूब खा पी रहे हैं उसी की पूछ कम है। विशेष लोगों की महत्ता को घटाना।

जेहिकै पिया मानै वही सोहागिन।

अ०– जिसका पति सम्मान करता हो वही नारी सुहागिनि कहलाने की अधिकारिणी है। पति से सुहाग, सुहाग से पति। पति के लिये ही सुहाग सिंदूर लगाया जाता है। अतः पतिप्रिया सुहागिन होती है।

जेहि घर एक न बुड्ढा,
तेहि घर डगा क मगा।

श०– डगा–डुग्गी बजाने की लकड़ी। डगा देना एक मुहावरा है जिसका मतलब होता है नगाड़ा बजाना।

यहां कहावत में डगा का मतलब घर में शोर शराबा मचाने वाले बड़े वृद्ध से है।

अ०— जिस घर में एक भी वृद्ध नहीं होता, घर में बांग़ देने वाला मुर्गे की तरह सबको चेतावनी देने वाला कोई नहीं होता है, वह घर डगमगाने यानी अस्थिर होने लगता है क्योंकि वह एक मालिक के बिना बर्बाद जाता है। सभी अपने को मालिक समझने लगते हैं। उस घर की व्यवस्था सही नहीं चल पाती है।

जेहि घर सारै सारथी, औ तिरियै कै सीख।
सावन मां हर बैल बिन, मांगै तीनो भीख।

श०— सारे–साला, पत्नी का भाई, सारथी–जो रथ को चलाता है, जो दिशा दिखाता है। जो राय मशविरा देता हो, तिरिया–स्त्री, पत्नी।

कहावत साले की मलिकई पर कही गई है जो अपनी बहिन के घर की सारी व्यवस्था का मालिक होता है। उसी में नारी के विचारों पर चलने वाला पुरुष किस दिशा को पहुंच सकता है?

अ०— जिस घर में साले का राज पसार हो, जो बहिन के घर की व्यवस्था का मालिक हो तथा स्त्री की सीख पर पति सब काम करता हो, उस घर की दशा अत्यन्त ही शोचनीय कष्टकारक हो जाती है। सावन में हल बैल तक बिक जाते हैं। अंततः भिक्षा तक मांगनी पड़ सकती है।

जेहिकै ऊंच बइठका, जेहिकै खेत निचान,
तेहिकै बैरी का करै, जेहिकै मीत दिवान।

श०— बइठका–बैठक, बाहर की ओर के बैठने की जगह, निचान–ढलान, मीत–मित्र, दिवान–दीवान, मंत्री।

अ०— जिसकी बैठक ऊँची हो, खेत ढलान पर नीचे हो, जहां पानी रुकता नहीं हो और मित्र दीवान हो तो उसका दुश्मन कुछ नहीं बिगाड़ सकते हैं।

जे कै खाई, ओके दोहाई या ओ कै बजाई।

अ०— जिसका अन्न खाये। उसी की बात माननी चाहिए, उसी का काम नमक हलाली के साथ करना चाहिए।

जेठ मां जरै, माघ मां ठरै
तौ जीभी पै रोड़ा परै।

श०— जेठ–गर्मी की तपती दोपहरी, ठरै–माघ के ठिठुरती सर्दी, रोड़ा – यहां रोड़ा जीभ पर पड़ने का मतलब है गुड़ से।

अ०— घाघ कवि का कथन है कि जब जेठ की भीषण गर्मी में जले ईख को गोड़े, पानी दे व माघ मास में सर्दी की ठिठुरन में गन्ने को पेरे, कड़ाह में खौलाकर रस पकावे तो कहीं गुड़ की रोड़ी मुंह में डालने को मिलती है।

जेकरे ऊखर लगे लोहाई, तेकरे आवै बड़ी तबाही।

श०— ऊखर–ईख, लोहाई–सूखा रोग, तबाही–बर्बादी।

अ०— कहावत ईख के खेत के विषय में घाघ कवि की है कि जिसके ऊख के खेत में सूखे का रोग लग जाता है उसके घर फिर गुड़ के दर्शन नहीं होते हैं। बड़ी तबाही का सामना करना पड़ता है।

जेकरे खेत परा नहिं गोबर,
ते किसान को जानो दूबर।

अ०— जिस किसान के खेत में खाद या गोबर नहीं पड़ा है वह किसान कमजोर माना जाता है।

जेतना गहिरा जोतो खेत, बीज परे फल अच्छा देत।

अ०— कहावत खेती संबंधी है। यानी जितनी ही गहराई से खेत की जुताई होगी, उतना ही अच्छा बीज उगेगा और उतनी ही अच्छी फसल भी उस में पैदा होगी। यानी दाने उतने ही मज़बूत व दमदार होंगे।

जेठ मास मृगिसिरा दरसंत, पुनर्वसु असाढ़ चरंत।
जितो नक्षत्र कि बरतो जाई, तेतो सेर अनाज बिकाई।।

मृगसिरा–जेठ मास में मृगशिरा नक्षत्र बहुत तपन पैदा करता है। दरसंत–दिखाई देना यानी मृगशिरा आ जाय, बढ़ना, तेतों–उतना ही, पुनर्वसु–नक्षत्र, जितो–जितना ही।

अ०— यदि जेठ माह में मृगशिरा तपा एवं आषाढ़ में पुनर्वसु नक्षत्र लगा तो अन्न उतना ही मंहगा बिकायेगा।

जेठ बदी दसमी दिना, जो सनिवासर होय।
पानी होय न धरनि पर बिरला जीवै कोय।।

अ०— कवि घाघ के शब्दों में यदि जेठ की शुक्ल पक्ष

दशमी को शनिवार का दिन पड़े तो निश्चय ही पानी नहीं बरसेगा, अकाल के लक्षण हैं, फिर धरती पर बिरला ही कोई ज़िन्दा रह पायेगा।

जेठ उजारे पाख में, अद्रादिक दस रिच्छ।
सजल होय निर्जल कह्यो, निर्जल सजल प्रतिच्छ।।

श०– अद्रादिक–आर्द्रा आदि, नक्षत्र; निर्जल–बिना पानी के, सजल–जलसहित।

अ०– दस नक्षत्र यदि जयेष्ठ शुक्ल पक्ष तक बरस न जायें तो चारों माह पानी खूब बरसेगा।

जेठ पहिला परिवा दिना,
बुध बासर जो होय,
मूल असाढ़ी जौ मिलै
पिरथी कंपय जोय।

घाघ कवि का कथन है कि यदि जेठ की पहिली प्रतिपदा को बुधवार पड़े और आषाढ़ की पूर्णिमा को मूल नक्षत्र हो तो समझना चाहिए कि भूडोल का योग है।

जेठा अद्रा, शतभिखा, स्वाति सुलेखा माहिं,
जो संक्राति तौ जानिये, मंहगो अन्न बिकाय।

अ०– ज्येष्ठा, आर्द्रा, शतभिषा, स्वाती, श्लेषा आदि नक्षत्रों में यदि संक्राति पड़ती है तो निश्चित ही अनाज बहुत मंहगा बिकेगा।

जेठ उजारी तीज दिन, अद्रा रिष बरसंत
जोसी भावै भड्डरी, दुर्भित अंवस करंत।

अ०– यदि जेठ शुक्ल पक्ष तीज के दिन अद्रा नक्षत्र बरस जाय तो कवि भड्डरी का कहना है कि अकाल अवश्य पड़ेगा।

जे गरजै ते बरसै का, जे पुआन ते किहिस का।

अ०– जो गरजता है वह बरसता नहीं, उसी प्रकार से जो बहुत बोलता है वह कर कुछ नहीं पाता है।

जे लाई थारा वै भई उतारा,
जे लाई चलनी वै भई थपनी।

श०– थारा–परात, उतारा–नीचे पड़ना, छोटी होना, चलनी–आटा चालने वाली चलनी, थपनी–स्थापित होना।

अ०– कहावत घरेलू है जो नई बहुओं के प्रति कही गई है जिसमें छोटे–बड़े का भेद–भाव दिखाई देता है।

अ०– जो थाल, परात लेकर, ढ़ेर सा दहेज़ साथ लाई बहू वह तो कम इज्ज़त पाने लगी और जो ७२ छेद की चलनी, कम दहेज़ लेकर आई उसका बड़ा मान हो रहा है। कहावत व्यंग्य में कही गई है।

जे बिआनी, ते ललानी, पड़ोसिन पूत खेलानी।

कष्ट कोई सहे, फायदा जब दूसरा ही उठाता है तो कहावत चरितार्थ होती है।

अ०– जिसने पुत्र को जन्म दिया वह तो प्यार करने के लिये तरसती ही रह गई उसका फायदा पड़ोसिनों ने उठाया। वे ही बच्चे को खिलाती रहती हैं।

जे विधवा होय करे सिंगार,
वहिते सदा रहे होसियार।

अ०– विधवा नारी को नहीं श्रृंगार करने की आवश्यकता ही क्या है? श्रृंगार तो पति के लिये होता है। मगर जब विधवा स्त्री श्रृंगार करे तो उससे सदैव सचेत रहना चाहिए।

जेकरे भूसा चुका असाढ़।
ओकै दिन होइ गवा पहाड़।।

अ०– घाघ कवि का कहना है कि जिसके यहां भूसा असाढ़ माह में ही समाप्त हो गया उसका दिन पहाड़ हो जाता है क्योंकि गाँव में तो बैलों के बिना काम ही नहीं चल सकता है और बिना भूसा–चारा के जानवर कौन रख सकता है? अतः किसान को लगातार चिन्ता घेरे रहेगी कि किस प्रकार ये दिन बीत जाते और रबी की फसल का समय आता ताकि भूसे की समस्या समाप्त हो जाती।

मगर घाघ कवि की स्त्री ज्यादा ही अक्लमंद थी वह सुन रही थी तो बोली–

घाघ दहिजरा ना भल कहा,
बहुतै के चइतै न रहा।

श०– दहिजरा–गाँव में पुरुषों को स्त्रियां गाली देती हैं दाढ़ीजार, यानी जिस मर्द की दाढ़ी जल गई हो।

अ०– घाघ दाढ़ीजार ने ठीक नहीं कहा, बहुत से

लोगों के पास तो भूसा चैत माह से ही नहीं रहा, आखिर उनका दिन कैसे बीता?

जे हँसा, ते फँसा।

अ०— कहावत नारी के प्रति कही गई है कि जो नारी हंसी वह अवश्य ही किसी पुरुष से फंस जाती है। पराये पुरुष से उसका संबंध स्थापित हो जाता है।

जेतनै गुर डारै ओतनै मीठ होत।

अ०— जिस वस्तु में जितना ही गुड़ डाला जायेगा वह वस्तु उतनी ही मीठी होगी। अभिप्राय यह है कि जिस कार्य पर जितना अधिक ध्यान या परिश्रम अथवा धन लगाया जायेगा वह उतना ही अच्छा होगा।

जे गुड़ खाये ऊ कान छेदाये।

कहने का तात्पर्य है कि जो सुख उठायेगा, कष्ट भी बरदाश्त करेगा। वही कहावत यहाँ पर बच्चे के कनछेदन संस्कार पर लागू की गई है। प्रथा यह थी कि जब किसी बच्चे का कनछेदन संस्कार होता था तो पहले उसके हाथों में लड्डू या गुड़ की डली पकड़ा दी जाती थी ताकि बच्चा जब उसको खाने में लग जाय तो झट कान छेद दिया जाय।

अ०— जो गुड़ खायेगा वह कान छेदायेगा।

जेतने मुंह उतनी बात निकलती है।

कहावत दुनियादारी के प्रति कही गई है।

अ०— दुनिया में एक बात सौ आदमियों के बीच सौ तरह से होती है। यह बिलकुल सच है कि संसार में एक विचारधारा के लोग नहीं होते। एक ही बात कोई किसी ढंग से कोई किसी ढंग से सोचता है। कहा है—

"मुण्डे—मुण्डे मतिर्भिन्ना"। संस्कृत की यह कहावत इस बात को स्पष्ट करती है कि हर आदमी के विचार अलग—अलग होते हैं।

जे माई के थने न अघाये,
ऊ बाप के ठेहुने न अघाये।

बच्चे का जितना माता से लगाव होता है उतना बाप से नहीं होता है।

अ०— यदि बच्चा माँ से संतुष्ट नहीं है तो बाप से कदापि संतुष्ट नहीं हो सकता है। यदि वह माता के स्तन से अपना पेट नहीं भर पाता है तो बाप के अंगूठे से कब उसका पेट भरेगा? अंगूठा चूसने पर उसमें से कुछ भी नहीं मिलने का।

जेवा मोर छन्न हवेली, जेवा मोहन माला।

श०— छन्न—पहले के ज़माने का एक ज़ेवर है जिसे स्त्रियां चूड़ियों के बीच में पहना करतीं थीं, हवेली—पुराने ज़माने का गले में पहनने वाला ज़ेवर, मोहनमाला—यह भी गले में पहनी जाती थी।

कहावत ससुराल की किसी बहू की है जो अपने पति से या ससुराल वालों से असंतुष्ट है। जब किसी प्रकार से उसे जेवर बनवा दिये गये तो वह उन परिस्थितियों में झंखती है।

अ०— ए मेरी छन्न, हवेली, मोहनमाला, तुम्हारा बड़ा स्वागत है। बड़ा मान है तुम्हारा, लो, तुम्हीं जेवना जेओ। तुम्हीं से मुझे संतोष दिलाया गया है तो तुम्हीं खाओ मगर तुम्हें लेकर मैं क्या करूं? जब हमारी तुम्हारे सामने कोई इज्जत ही नहीं।

जेकरे माठा नौ मन पानी अमाय,
ओ के गहकी लउटि के जाय।

कहावत में दूध एवं मट्ठा बेचनेवालों के ऊपर व्यंग्य किया गया है। इसलिये कि दूध व मट्ठा बेचने वाले बिना पानी मिलाये दे ही नहीं सकते हैं।

अ०— "भला जिसके दूध या माठा में नौ मन पानी समा जाय उसके ख़रीदनेवाले गाहक वापस चले जायेंगे?

जेतना खाये न मरे, ओतना बिराये मरे।

श०— बिराये— मुंह चिढ़ाना।

कभी—कभी खाना गरिष्ट होने के कारण या अचानक ही हानिकर जाता है। उस समय लोग कटु आलोचनायें करके मरीज़ को और भी चिन्तित कर देते हैं।

अ०— जितना तो खाने से कष्ट नहीं हुआ उससे ज्यादा उसको लेकर ताना मारने से दुःख हुआ।

जे कै लाल हेराना, ओकै बुधि बिसराना।

कहावत परिस्थितियों में कही जाती है या तो

किसी का बच्चा मरणासन्न हो या मर गया हो या फिर किसी ने उसे ग़ायब कर दिया हो अथवा वह अपने माता–पिता से दूर अनजानी जगह में भेज दिया गया हो।

अ०– जिसका लाल–पुत्र, खोता है उसकी बुद्धि, ठिकाने नहीं रहती है। पुत्र–शोक महान शोक है। उससे जो कष्ट होता है वह तो भुक्तभोगी बता सकता है।

जेहिपर कृपा राम कै होई,
तेहि पर कृपा करै सब कोई।

चौपाई 'तुलसीदास' की है। किसी भाग्यवान को देखकर कहावत रूप में लोग इस्तेमाल कर देते हैं।

अ०– जिस पर भगवान की दया होती है उस पर सभी कृपा करने को उत्सुक रहते हैं। दैवी कृपा से भरपूर लोग इस दुनिया में महान माने जाते हैं, फिर जहां ईश्वर साक्षात् मददगार है वहां कौन होगा जो मदद न कर दे।

जेकरे उतरौना नाहीं रहत,
ऊ धाय के नाव पै चढ़त।

श०– उतरौना– नदी को पार करने के लिये नाव के लिये पैसा उतराई देने को, धाय–दौड़कर, झटपट।

कुछ लोग भीड़ का फायदा उठा लेना चाहते हैं तथा अपनी कमी भी ज़ाहिर नहीं होने देना चाहते। जैसे कि कहावत से स्पष्ट होता है–

अ०– यदि किसी के पास किसी चीज़ की या पैसे की कमी होती है तो वह भीड़ में अपने को शामिल करके अपना काम निकाल लेना चाहता है। जैसे किसी के पास यदि नाव से नदी पार करने के पैसे नहीं हैं तो वह भीड़ के साथ दौड़कर नाव पर जाकर बैठ लेना चाहता है।

जे करै टोटका, ओकरे रहै अंटका।

अ०– जो टोटका करता है उसे हमेशा ही टोटके की ही बातें आती हैं और क़दम–क़दम पर वह टोटके में ही अंटका रहता है।

जेठ मास जौ दिन मां सोवै,
ओ के जर असाढ़ मां रोवै।

अ०– कहावत स्वास्थ्य संबंधी है कि जो जेठ महीने में दिन में सोता है उसका कष्ट उसे आषाढ़ मास में भुगतना पड़ता है।

कहावत खेती का ध्यान रखकर कही गई है क्योंकि जेठ असाढ़ी में पानी बरसना शुरू हो जाता है। कहीं कहीं पर खेतों में हल भी चलने लग जाते हैं तो जेठ में सोने से जब असाढ़ लग जाता है तो पश्चाताप होता है कि पहले ही हल चला लेते तो कितना अच्छा होता।

जेहि घर सासु न ननदा, वहि घर जेवैं अनंदा।

कहावत सास–बहू के व्यवहार पर चरितार्थ की गई है।

अ०– जिस घर में सास ननद नहीं होती उस घर में बहू बड़े सुख व आराम से खाना खाती है। यानी कि बहू को हर प्रकार की आजादी रहती है।

जाके गुरु है आंधरा, चेला खड़ा निरंध,
अंधा अंधे ठेलिया, दुइनो कूप परन्त।

अ०– जब दो आदमी एक ही जैसे हों तो दोनों की तुलना में कहावत का उपयोग होता है।

अ०– जहां पर गुरु व चेला दोनों ही अंधे हों वहाँ पर एक दूसरे को धक्का देते–देते कुयें में धकेल देते हैं।

यानी राह दिखाने वाला व राह चलने वाला दोनों ही एक जैसे हों तो भला क्या कल्याण हो सकता है? दो में से एक को तो अक्लमंद होना चाहिए।

जेहिका मिढ़े आवत ओका बजावै आवत।

कहावत चमड़े के वाद्य यंत्र बजाने वाले के प्रति कही गई है।

अ०– कहा गया है कि जिसको तबला, ढोलक मिढ़नी यानी चमड़ा लगाना आता है वह अधिक नहीं तो इतना तो बजा ही लेता है कि कैसी आवाज़ निकल रही है। मिढ़नेवाले को बजाना भी आता ही है।

जेतनै कमाति मोर परदेसिया,
ओतने के कूंचै पान।

जब कोई स्त्री अपने पति की थोड़ी कमाई के

बावजूद उसके व्यर्थ के खर्चे से परेशान हो जाती है तो कहावत कही जाती है।

अ०— मेरे परदेसी पति जितना कमाते हैं उतने का पान ही खा जाते हैं। आवश्यक खर्च तो नहीं करते फालतू के तमाम खर्च बढ़ाये रहते हैं।

जेहि किसान के दूब न टूट,
वहि किसान के भागहि फूट।

कहावत खेती संबन्धी हैं। किसान व खेतों के ऊपर कही गई है।

अ०— जिस किसान के खेत में दूब नहीं समाप्त हुई समझो कि उसका खेत बिलकुल बेकार है। उस किसान के भाग्य फूट ही गये क्योंकि खेत व खेती ही तो किसान की जीविका है। यदि खेत ही ठीक न होगा तो फ़सल क्या पैदा होगी?

जे बरा, ते बुतान।

अ०— जो बहुत तपता है, जो बहुत क्रोध करता है, वह जल्दी ही शान्त भी हो जाता है।

जे लाग, ते भाग।

अ०— जो आया वह गया जो गया वह आया, यह दुनिया का नियम है। कोई बात या समय स्थिर नहीं रहता है। इसलिये कहा जाता है कि दिन जाते देर नहीं लगती है।

जे कै ठाढ़े न देखै, ओकै बइठे देखै।

अ०— जो आदमी खड़े रहकर काम नहीं कर सकता है वह बैठकर क्या कर सकता है? कहावत किसी महाआलसी व काम में टाल–मटोल करने वाले व्यक्ति के ऊपर कही गई है।

जे घोड़ा पै चढ़त, र्है गिरत।

अ०— जो कार्य करता है उसी से काम बनता–बिगड़ता भी है। जो करेगा ही नहीं तो उससे बनने–बिगड़ने का क्या सवाल उठता है? किसी ने उर्दू में कहा है—

गिरते है शहसवार ही मैदाने जंग में। जो मैदान में आयेगा वही तो गिरेगा। जो लड़ाई पर जायेगा ही नहीं वह आगे का काम क्या करेगा?

जे हँसा ओकै घर बसा।

अ०— जो हँसता है उसका घर बस जाता है।

जेकरे दुःखे अलगे भये वई परे बखरा।

श०— बखरा–बांटे, हिस्से में।

अ०— जिससे जान बचाना चाहे वही साथ में रहे। यानी जिसके कारण घर के लोगों से अलग हुए वही अपने हिस्से में आये। किसी से पीछा छुड़ाना जब मुश्किल हो जाता है तो कहावत का उपयोग किया जाता है।

जे कै कोड़ा ओके घोड़ा।

अ०— जिसके हाथ में ताकत होती है उसी के हाथ में सब कुछ होता है। घोड़ा उसी का माना जायेगा जिसके हाथ में कोड़ा रखने की निशानी व ताकत होगी।

जेस जेकै पैलगी, तइसेन तेकै आसीर्वाद।

किसी से प्रणाम करने के कई तरीके होते हैं। कोई श्रद्धानत होकर प्रणाम करता है, कोई चरणस्पर्श करता है तो कोई दण्डवत करता है। कोई श्रद्धा से झुककर हाथ जोड़कर प्रणाम करता है तो कोई फ़र्ज़ अदायगी करता है। कोई प्रणाम नहीं करता मक्खी उड़ाता है तो कहावत इसी बात को लेकर कही गई है।

"जेठ चलै पुरवाई, सावन सूखा जाई"

अ०— जब जेठ माह में पुरवा हवा चलती है तो सावन के महीने में बरसात बिल्कुल नहीं होती है।

जेठ कृष्ण की परिवा देखूं,
जो दिन हो उसका फल लेखूं ।
रवि से ज्यादा आवै बाढ़,
मंगल हो तो ब्याधि बतावै।
बुध को गल्ला तेज बिकाय,
शनिवार परजा को खाय।
जो शुक्र गुरु का हो बारा,
अन्न भरै जग का भण्डारा।

कहावत कवि घाघ की है जेठ माह की प्रतिपदा किस दिन पड़े तो क्या फल होता है? ज्योतिष के अनुसार बताया गया है—

अ०— जेठ कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा यदि इतवार को पड़ती है तो बाढ़ आती है, मंगल को पड़े तो रोग, कष्ट आते हैं। बुध को अनाज मंहगा होता है। यदि शनिवार है तो प्रजा को कष्ट होगा। यदि शुक्रवार या बृहस्पतिवार है तो इतना अन्न पैदा होगा कि सारे संसार का भंडार भर जायेगा।

जे सोवा, ते खोवा।

अ०— जो अधिक सोता है वह अपना समय तो गंवाता ही है। उसके आवश्यक काम में भी बाधायें उत्पन्न होती हैं। कहावत आलस्य के प्रति कही गई है।

जेकरे घरे गावे गये, उही कै मेहर बिरावै।

किसी के घर कोई आयोजन होने पर लोग बुलावा भेजकर पास–पड़ोसियों को अपने मांगलिक कार्य में गाने के लिये आमंत्रित करते हैं। स्त्रियां गाने–बजाने के अवसर पर इकट्ठी होकर गाने में हाथ बंटायेंगी। शुभ अवसरों पर औरतें जाती भी हैं उन्हें पूरा सम्मान देना चाहिए न कि उनकी आलोचना करनी चाहिए। कहावत है–

जिसके घर गाने गये उसकी स्त्री ही तरह–तरह से मुंह बनाकर बिचकाती रही, यानी अपमानित करती रही। फिर उसके घर कौन जायेगा कभी गाने बजाने?

जे कै खाज, उहै खजुआवै।

अ०— जिसकी जो गर्ज हो वह अपनी गर्ज पूरी करे, दूसरा उसमें कुछ भी नहीं कर सकता है। तात्पर्य यह है कि खाज जिसके हुई है वही उसे खुजला कर शान्त कर सकता है। दूसरे के खुजलाने से संतोष नहीं मिलेगा।

जे कै जाय उहै चोर कहवावै।

अ०— कभी–कभी बड़ी विडम्बना हो जाती है जिसका माल जाता है पता न लगने पर पुलिस उसी को चोर बता देती है।

जे कै पल्ला भारी होत वहीं क नौतम होय क परत।

अ०— जिसके पास ईश्वर सब कुछ देता है उसी को झुकना भी पड़ता है। यानी तराजू का जो पलड़ा भारी होता है वही झुकता भी है।

जे कै पाप उही कै बाप।

अ०— पाप मनुष्य के सिर पर चढ़ कर बोलता है। इसलिये पापी का पाप उसका बाप होता है।

जे कै बनिया यार,
ओकरे दुश्मन कै कौन दरकार।

अ०— कहावत में बनिया के ऊपर व्यंग्य किया गया है कि जिसका बनिया दोस्त होता है उसके दुश्मनों का क्या ठिकाना?

जेतनै मनई ओतनी राह।

अ०— हर आदमी के अपने अलग–अलग रास्ते होते हैं। सभी के विचार अलग–अलग होते हैं।

जे कै मंड़वा, ओकै गीत।

श०— मंड़वा जो शादी के समय सरपत से छाया जाता है और उसी के नीचे ब्याह होता है।

अ०— जिसका मांड़व है, जिसके घर ब्याह है, उसी के लिये गीत–गौनई होती है।

जेहि कारन मूंड़ मुंड़ावा,
उहै दुःख फिर आगे आवा।

अ०— जिस कारण तो मूंड़ मुड़ाया वह भी क़ाम पूरा न हुआ, दुःख जो था वह वैसा का वैसा ही रह गया।

जेकरी आंखी तिल, वह बड़ा बेसिल।

अ०— जिसकी आंख में तिल होता है वह मनुष्य बड़ा ही शीलरहित होता है।

जेकरी गोद बइठे, वही के दाढ़ी नोंचे।

कहावत बच्चे के प्रति अधिक दुलार के लिये कही गयी है कि इतना दुलार कि अपनी गोद में बैठालकर अपनी ही दाढ़ी को नोचवावै। अर्थात् बड़ों के प्रति कृतघ्नता व्यक्त करें।

अ०— इतने एहसान फरामोश हैं कि जिसके साथ रहें है उन्हीं से झगड़ा भी करें, उन्हीं का नुकसान भी करें।

जे कै खात चंदिया, ओ कै होत बंदिया।

श०— चंदिया–रोटी, बंदिया–बांदी, नौकरानी।

अ०— जिसकी रोटी खाये उसकी नौकरानी बन कर रहना पड़ता है।

जे कै जीभ चलत ओकरे जाना नौ हर चलत।

अ०— ज़बान के तेज़ आदमी को क्या है? वह हल की तरह अपनी ज़वान चलाता चला जाता है। उसे न कुछ सोचना है, न समझना है।

जेकरे घरे महल मां मइया,
मांगै पैसा मिलै ठपइया।

अ०— माता का महत्व बहुत होता है। जिसकी मां घर में हो वह लड़का पैसा मांगता है तो उसे रुपया मिल जाता है।

जेकरे पैसा नहीं है पास, ओका मेला लगै उदास।

अ०— स्पष्ट है।

जेकरे घरे भोज, ओकै घरही मां न खोज।

श०— भोज— दावत।

अ०— जिसके घर भोज भात है उसकी घर में कोई खोज खबर लेने ही वाला नहीं है। यानी मालिक की कोई इज्ज़त ही नहीं है।

जेकरे कारन जोगिन भयउं,
वे सइयां परदेस गये।

अ०— जिस पति के लिय योगिनी हुई, वे परदेश चले गये। जिसके लिये सब कुछ छोड़ा उनको मेरी कोई परवाह ही नहीं है।

जे करै बेहयाई, ऊ खाय दूध–मलाई।

अ०— जो खाने–पीने में निघरघट होता है, कोई कुछ भी कहे कोई चिन्ता नहीं, वह अपनी बेहयाई से दूध मलाई खा लेता है।

जेकरे बारा बिगहा बाग,
ओकरे तन पर एक न ताग।

अ०— कहने को तो बारह बिगहा (बीघा) की बगिया ही है किन्तु शरीर पर एक चिथड़ा तक मयस्सर (उपलब्ध या प्राप्त) नहीं है। बहुत से लोग बढ़बोलई द्वारा अपने को बहुत बड़ा आदमी साबित करना चाहते हैं मगर लक्षण देखने से लगता है कि इनके पास कुछ भी नहीं है। केवल लंबी–चौड़ी ज़बान भर है।

जेहि मुँह पान खाय ओहि मुँह कोयला न चबाय।

अच्छा काम करके बुरा काम नहीं करना चाहिए।

अ०— जिस मुँह से पान खाकर लाल मुँह करे उस मुँह को काला करके खराब न करे।

जेहि बन सुआ न सारका
हुंआ कागा खांय कपूर।

श०— सुआ–सुग्गा, सारका–मैना।

अ०— जिस वन में सुग्गा, मैना नहीं होते उस वन में कौवे ही कपूर खाते हैं। कहने का मतलब है कि जहां सुयोग्य मनुष्य नहीं होते वहां अयोग्य लोग ही सम्मानित होते हैं।

जे कै पुरखे न देखें पोई।
ओकरे घरे बैल कै गोई।।

श०— पुरखे–पूर्वज, बड़े बुजुर्ग, पोई–एक प्रकार के साग का नाम है जिसे बहुत ग़रीब लोग खाते हैं, गोई–जोड़ी।

पुरुषार्थ के बूते पर कमाये गये पैसे के प्रति कहावत है तथा पैसे के घमंड पर कहावत में व्यंग्य किया गया है।

अ०— जिसके बड़े–बूढ़ों ने पोई का साग तक न देखा, न खाया, आज उनके घर देखो तो बैलों की जोड़ी बंधी हुई है।

जे कर मइया पुआ पकावै,
ते कर धिया ललावै।

श०— पुआ–गेहूं का आटा और शक्कर एक साथ फेट कर घी में तलते हैं। ललावे–ललचाय।

अ०— जिसकी माता पुआ बनावे, भला मां के बनाते समय कैसे कोई बेटी ललचा सकती हैं? यानी मां तो अपने बच्चों को खिला ही देगी पेट भरकर।

जेब मां नहीं एकौ डली, छैला फिरै गली–गली।

श०— डली–सुपारी, छैला–मनचले, रसिया।

अ०— कोरी शान बधारने वाले रसिक जो अपनी इज्ज़त बहुत बताते हैं, बढ़चढ़ कर गप्प छांटते हैं, चिकने चुपड़े बने सड़कों पर घूमा करते हैं, उनके जेब में एक सुपारी का टुकड़ा तक नहीं है किन्तु रसिया बने गली–गली घूम रहे हैं।

जे पूत परदेसी भये, देवता पित्तर सबसे गये।

पहले के ज़माने में परदेश जाने पर लोग कहते थे कि आदमी बेधरम हो जाता है। उसी पर कहा गया है।

जे मुंह चीरत ऊ खाने को भी देत।

अ०– कहावत ईश्वरवादी है। जो भगवान मुंह में खाने का रास्ता बनाता है वह पेट की भी खबर लेता रहता है। भोजन भी देता है।

जेठ परा हेठ लहुरा बड़ा सरेख।

श०– जेठ–बड़ा, हेठ–नीचे छोटा बन कर रहना, लहुरा–छोटा, सरेख–चतुर, सयाना।

कहावत उस समय कही जाती है जब कोई अपने से छोटा बड़ों से ज्यादा ही होशियार व काइयां हो ।

अ०– बड़ा जो है वह तो नम्रता से व्यवहार करता है और छोटा बड़े से ज्यादा ही होशियारी कर रहा है। वह तो पीछे पड़ गया, छोटे ने आगे ही अपना करिश्मा दिखाने की कोशिश की।

जे देय रोटी कपड़ा उहै आपन भतरा।

कहावत उस समय कही जाती है जब किसी स्त्री का पति उसे कम मानता हो या उसकी बिल्कुल ही चिन्ता न करता हो। स्त्री जब उदासीन हो जाती है तो कहती है।

अ०– जो खाने को रोटी दे और पहनने को वस्त्र दे दे, वही अपना पति है। यानी पति की ज़िम्मेदारी अपनी पत्नी के जीवनयापन की होती है, यदि वह उससे वंचित है तो उस नारी को पति की क्या परवाह होगी?

जेस गांव क ठांव, वस रहवइया क नांव।

अ०– गांव का स्थान जैसा होगा, वैसे ही वहां के रहने वाले होते हैं तथा उसी प्रकार से उनका रहन–सहन, बात, व्यवहार–नाम भी होता है क्योंकि रहने के स्थान का बहुत अधिक प्रभाव लोगों पर पड़ता है।

जेहि पेड़ तर बइठ, ओहिकै जड़ काटे?

कहावत उस समय कही जाती है जब किसी आदमी के द्वारा किसी को लाभ हो, उसकी संरक्षता में वह रह रहा हो, उसके द्वारा उस आदमी का पालन पोषण हो रहा हो और वही आदमी उसके साथ किसी प्रकार का धोखा करे या बुराई चाहे।

अ०– जिस पेड़ के नीचे बैठकर छाया से पसीना सुखाओ, उससे ठंडक लो, जिसके नीचे बैठकर आराम करो, उस पेड़ की जड़ ही काट डालना चाहते हो? यानी–एहसान फरामोश होना। नमकहराम आदमी के प्रति कहावत कही गई है।

जेहि घर होय कुचाली नारी,
वहि घर पुरुस कै बड़ी खुवारी।

श०– कुचाली– व्यभिचारिनी, खुवारी– खराबी।

कहावत स्त्री की चरित्रहीनता पर कही गई है जो अपने पति को छोड़कर पराये पुरुष से प्रेम करती हो।

अ०– जो स्त्री बुरे रास्ते पर चलने वाली होती है उसके घर में सुबह से शाम काम से थककर आने पर भी पति का स्वागत नहीं होता। उस आदमी की बड़ी बदकिस्मती होती है।

जेकरे घर संपति नहीं ओका भले बिदेस।

जब घर में खाना–पीना न हो तो बाहर से काम करके पैसा तो लाना ही होगा। अच्छा है कि जहां चार पैसा मिले वहीं रहो।

जेहि का राखे साइयां, मारि सके ना कोय।

अ०–कहावत ईश्वरवादी है। यानी जिसे भगवान बचाता है उसे दुनिया में कोई मार नहीं सकता।

जेकर बरे रोये उनकी आंखी असुये नाहीं।

अ०– जिसके कारण कष्ट उठाया उसको कोई सहानुभूति नहीं। हम तो रोये और वे चुपचाप रहे, जैसे कोई मतलब ही न हो। यानी एक तरफा प्रेम का होना।

जेकै बाप कमरी न ओढ़ाये ऊ का कमरा ओढ़ाये?

कहावत ऐसे समय पर उद्धृत की जाती है जब किसी के जीवन में सुख–दुःख की या बीते समय के अपने पूर्वजों के दवारा पाई गई सुविधायें या सुख की चर्चा आती है। उन्हीं बातों को लेकर कहा जाता है।

अ०— जो अपने जीवन में किसी सुख का भागी नहीं हो पाया है वह दूसरों को क्या सुख दे पायेगा? जिस प्रकार से किसी के बाप ने सर्दी का ध्यान न करके बच्चों को कमरी तक ओढ़ने को न दी हो तो वह भला दूसरों को कंबल क्या ओढ़ा पायेगा?

जे तीनपाव से गा ऊ तीन लोक से गा।

श०— तीनपाव— एक आदमी की सही ख़ुराक तीनपाव मानी गई है, तीनलोक— तीन लोक माने गये है— आकाश, पाताल, मृत्युलोक।

कहावत किसी आदमी के भोजन करने के ऊपर उद्धृत की गई है। इससे बहुत बड़ी शिक्षा मिलती है। कहते हैं कि पैसे की खनक तो कुछ ही दूर तक सुनाई पड़ती है मगर रोटी की आवाज़ बहुत दूर तक सुनाई पड़ती है। भूखे पेट या आवश्यकता के समय जिसे पेट भर भोजन खिला दिया गया हो वह उसे बहुत बड़ा स्थान देता है।

अ०— जो मनुष्य किसी को पेटभर भोजन नहीं खिला सकता तो वह संसार में कुछ भी नहीं कर सकता है। वह तीनपाव से ही नहीं तीनों लोक से भी गया हुआ है।

जे के पुरखै भीख मांगै, ऊ का जानै धरम कै रीत।

अ०— कहावत पुरखों को लेकर कही गई है। जिसके बड़े बुजुर्ग भीख मांगकर जीवनयापन करते रहें, वह दान पुण्य क्या करेगा? उसी प्रकार से उसके बच्चे भी देखेंगे तो उनके जीवन में धर्म, कर्म दान—पुण्य का क्या महत्व होगा?

जिसका लेना कभी न देना,
का जग में फिर आना है?

कहावत किसी लेनदार के न देने पर व्यंग्य के रूप में कही गई है। यानी जिसका लेना उसे कभी वापस न करना, क्या संसार में फिर कभी आना है? एक बार मरने के बाद कौन ले पाता है और कौन देता है?

जे चोटी कै सकत ऊ रोटिव कै सकत।

अ०— कहावत स्त्रियोचित है। यानी जो स्त्रियां अपने हाथों से अपना काम कर सकती हैं, अपनी कंघी—चोटी कर सकती हैं, वे खाना भी बना सकती हैं।

" जै "

जै दिन जेठ चलै पुरवाई,
तै दिन भादौ सूखा जाई।

अ०— जितने दिन जेठ के माह में पुरवा हवा चलती है उतने दिन सावन का महीना सूखा जाता है। यानी कि जेठ के तपने पर ही सावन में पानी अच्छा बरसता है।

जैसी करनी, तैसी भरनी।

अ०— जैसा कर्म होगा वैसा ही फल भी भुगतने को मिलेगा।

जै दिन भादों बहय, पछार
तै दिन पूस मां परै तुसार।

अ०— जितन दिन भादों माह में पछुवा हवा बहती है उतने दिन पूसमाह में पाला पड़ता है। ऐसा घाघ कवि का कहना है।

जैसा तेरा ताना बाना, वैसी तेरी भरनी।

अ०— जैसा ताने—बाने का सूत होगा वैसा ही कपड़ा भी बुना जायेगा। यानी जैसा सामान होगा वैसी ही वस्तु अच्छी—बुरी तैयार होगी।

जैसा राजा वैसी प्रजा।

अ०— जैसा राजा या घर का मालिक होगा, वैसी ही प्रजा या रहनेवाले लोग होंगे।

जैसा देस वैसा भेष।

अ०— जैसा देश होगा जैसी देश की व्यवस्था रहन—सहन होगी, वैसा ही भेष भी होगा, वैसा ही पहनावा—ओढ़ावा होगा।

जेसा जेकै सुभाव, वैसा ओका निभाव।

अ०— जिसका जैसा स्वभाव हो, वैसा ही निर्वाह करना चाहिए। जिन्दगी में काम चलाने के लिये कड़ुए—मीठे घूंट पीने पड़ते हैं। इसका ध्यान बराबर रखना चाहिए।

जैसा तोर खोट रुपइया

वैसा मेरा खोखर पैसा।

कहावत के अनुसार जैसा तुमने मेरे साथ किया, वैसा मैंने भी तुम्हारे साथ किया।

अ०– तुमने मुझे खराब सिक्का दिया तौ मैंने भी तुम्हें ख़राब पैसा दिया।

जैसे तेरा देना लेना,
वैसा मेरा गाना–बजाना।

अ०– जैसा लेन–देन होगा, जहां जितना फायदा होगा, वहां वैसा ही काम भी होगा।

जैसा बोवै, वैसा काटै।

अ०– जो जैसा बोता है, वैसा ही काटता भी है। यदि दाने बढ़िया व खेत बढ़िया ढंग से बोया गया है तो निश्चय ही काटने वाले दाने अच्छे होंगे। दूसरे अर्थ में जैसा किया है वैसा ही फल भी मिला है। कहा है– बोया पेड़ बबूल का आम कहाँ से होय।

जैसे सुई चोर, वैसे बज्जर चोर।

चोर तो चोर ही कहलायेगा, वह चाहे सुई की चोरी करे चाहे लोहे की?

अ०– चोर का मुंह तो काला हो ही जाता है चाहे छोटी वस्तु चुराये, चाहे बड़ी।

जैसे सूत वैसे फेंटी, जैसी मां वैसी बेटी।

अ०– जैसा सूत हो वैसा ही लपेटा जायेगा और जिसकी माँ जैसी होगी वैसी ही उसकी बेटी भी होगी। लड़कियाँ अधिकतर अपनी माँ की शक्लसूरत व स्वभाव को ग्रहण करती हैं, ऐसा कहा जाता है।

जैसा किया वैसा पाया।

अ०– किसी के अच्छे–बुरे कर्मों को देखकर कहावत चरितार्थ की जाती है कि जैसी करनी होगी वैसा ही फल भी मिलेगा।

जैसी गई थी वैसी आई,
हक़ हकीकत मां बोरिया लाई।

कोई लड़की ससुराल से मायके गई। जब उसे कुछ न मिला तो कहावत कही जाती है।

अ०– वह जैसी गई थी वैसी ही वापस आई। मिला क्या खाली बोरी। यानी किसी लड़की का ससुराल खाली हाथ आना।

जैसी दाई आप छिनार, वइसे जानै सब संसार।

श०– छिनार–बदचलन, व्यभिचारिणी।

कहावत स्वभावगत है।

अ०– जो जैसा होता है वैसा ही सबको जानता है। दाई यदि खुद व्यभिचारिणी है तो वह दुनिया को चरित्रहीन समझती है।

जैसी नियत, वैसी बरक्कत।

कहावत अपनी–अपनी नियत पर कही गई है।

अ०– जिसके जैसे विचार, स्वभाव, अच्छा–बुरा किसी के साथ करने की नियत होती है, उसका वैसा ही भला भी होता है। किसी ने कहा है–

कर भला तो हो भला।

जैसी फूहर आप छिनार वैस लगावै कुल ब्यौहार।

अ०– कहावत किसी फूहड़, बदचलन स्त्री के प्रति कही गई है। फूहड़ स्त्री स्वयं तो बदचलन, आवारा है ही वैसा ही व्यवहार वह अपने कुल परिवार से भी करती है। कुल–परिवार वालों को भी अपने जैसा समझती है।

जैसी बहै बयार, पीठ तब तैसी दीजै।

कहावत समय का ध्यान दिलाती है। जैसा समय अपना हो उसी के मुताबिक काम करो।

अ०– अवसर पर रुख़ देखकर काम करना चाहिए। जैसी हवा हो, जैसा मौका हो, उसी प्रकार से काम भी करना चाहिए। यदि लाभ का सुअवसर मिलता है तो समय से लाभ उठा लेना अक्लमंदों का काम है।

जैसी होय भवितव्यता, तैसी उपजै बुद्धि,
होनहार हिरदय बसै, बिसर जात सब सुद्धि।

जैसी होनी होनी होती है वैसी अक्ल भी हो जाती है।

तुलसीदास ने लिखा है–

तुलसी जस भक्तिव्यता तैसी मिलै सहाय,
आपु न आवै ताहि पै ताहि तहां लै जाय।

किसी व्यक्ति की भवितव्यता उसे अपने पास तुरंत बुला लेती है। मनुष्य स्वयं नहीं जाता।

जैसे कंता घर रहे वैसे रहे बिदेस,
जैसी ओढ़ी कामरी वैसी ओढ़ी खेस।

श०– कोई स्त्री अपने पति से किसी प्रकार से सुख न पाकर एक तरह से कोसती व खीझती है। जिस प्रकार से वह पति के घर रहने पर है वैसे ही परदेश रहने पर है। चाहे घर रहें या बाहर कोई अंतर नहीं पड़ता है। मेरे ऊपर तो वैसे ही हमेशा बीतना है। जैसे कमरी ओढ़ी वैसे चादर ओढ़ लिया। मुझे तो दुःख ही दुःख उठाने हैं। मेरे जीवन में सुख व आराम कहाँ?

जैसे को तैसा।

अ०– जो आदमी अपने साथ जैसा व्यवहार करे उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए।

जैसे को तैसा, परखने को पैसा।

यानी जो जैसा करे उसके साथ वैसा ही व्यवहार करो। समय पड़ने पर, पैसे की ज़रूरत पड़ने पर, आदमी दूसरे को परखता है, जानकारी करता है कि कौन कितना साथ निभाता है?

जैसे को तैसा मिलै, मिलै बाभन को नाई,
इसने कहा आशीर्वाद, उसने आरसी दिखाई।

अ०– जैसे को तैसा ही मिला। ब्राह्मण को जब नाई मिला तो ब्राह्मण ने नाई को आशीर्वाद दिया तो नाई ने भी शीशा दिखा दिया।

तात्पर्य यह कि ब्राह्मण जब किसी को आशीर्वाद देता है तो उसके एवज़ में वह दक्षिणा चाहता है और नाई भी तीज, त्यौहारों पर शीशा दिखा अपना नेग चाहता है। यहां पर ब्राह्मण व नाई दोनों ने एक दूसरे को सूखा ही सूखा टरका दिया।

जैसे गंगा नहाये, वैसा फल पाये।

अ०– जैसी गंगा मां के प्रति श्रद्धा हो मन में वैसा ही फल भी मिला।

जैसा दाम वैसा काम।

अ०– जैसी मज़दूरी या काम के पैसे मिले वैसा ही काम भी किया गया।

जैसा दिया वैसा पावै, पूत भतार कै आगे आवै।

श०– पूत–पुत्र, भतार–पति, आगे–आवै–सामने आना।

कहावत स्त्रियों के प्रति कही गई है क्योंकि धर्म–कर्म आमतौर पर स्त्रियाँ ही अधिक करती हैं जो पुत्र व पति के लिये ही करती हैं। यह कहावत एक कथा के अंतर्गत कही गई है।

"एक स्त्री ने साधु की परीक्षा लेने के लिये साधु को दो रोटियां विष मिलाकर दीं। साधु ने दोनों रोटी ले जाकर अपनी कुटी में इसलिये रख दीं कि जब बहुत भूखा होऊंगा तो खाऊंगा। इतने में दो सज्जन भूख से व्याकुल साधु की कुटी में पहुंचे। साधु ने वही दोनों रोटी उन दो सज्जनों को खिला दीं। अंत में दोनों ही मर गये। ये दोनों आदमी उसी स्त्री के पति और पुत्र थे। कहावत इसी कथा के आधार पर कही गई है।

अ०– जो दूसरों के साथ जैसा करता है उसको वैसा ही परिणाम मिलता है।

जैसा मुंह तइसा थपरा।

अ०– जो जैसा हो उसी के अनुसार उसे दण्ड देना चाहिए। यदि छोटे बच्चे को अधिक मार पड़ेगी तो वह उसको सहन न कर पायेगा। वही मार बड़ों पर कोई असर नहीं करेगी।

जैसी माई वैसी जाई।

अ०– जैसी मां होगी वैसी ही बेटी भी होगी।

जैसी तेरी तानी जुलाहे वैसी मेरी बुनाई।

अ०– जैसा जुलाहे का सूत होगा, वैसी ही कपड़े की बुनाई भी होगी।

जैसी तेरी पैलगी वैसा मेरा आशीर्वाद।

अ०– जिस श्रद्धा से जिस रूप में तुम्हारा प्रणाम होगा वैसा ही उसी स्नेह के साथ मेरा भी आशीर्वाद होगा। कहावत आपसी प्रेम व व्यवहार पर कही गई है।

जैसे माई वइसे धिया, जइसे कांकर वइसे बिया।

अ०– कहावत मां–बेटी पर कही गई है कि जैसी मां होती है वैसी ही बेटी का होना भी स्वाभाविक है। इसलिये कि वह मां के ही संरक्षण में सदैव पलती है

या जो कुछ भी अपनी मां को करते देखेगी वही सीखेगी। दूसरों का असर उस पर कम पड़ता है। उसी प्रकार से जैसी अच्छी बुरी ककड़ी का बीज होगा उसी जाति व किस्म की वैसी ही बतिया भी लगेगी।

" जो "

जो काम हिकमत से होत ऊ हुकूमत से नहीं होत।

श०– हिकमत–चतुराई, तदबीर, हुकूमत–बल, हुक्म, ताव।

अ०– कोई भी काम हो, जो धीरज, होशियारी से हो सकता है वह तावबाज़ी या हुक्म देने पर नहीं हो पाता। कहावत् स्वभाव की नम्रता–शालीनता पर उद्धृत की गई है।

जो कोई कलपाई, ऊ कैसे कल पाई?

श०– कलपाई–तड़पना, तंग करना, कल–शान्ति, सुख, आराम।

अ०– जो दूसरों को तड़पाता है, वह सुख से नहीं रह सकता।

जो कोई खाय चने का ढूक,
पीवे पानी सौ–सौ घूंट।

चने खाने में तो सोंधे और स्वादिष्ट अवश्य होते हैं किंतु रूखे होने के कारण पानी बहुत पिलाते हैं। कहावत चने के सूखेपन पर कही गई है। चने की तासीर गर्म व रूखी मानी जाती है।

अ०– जो चने की बनीं वस्तुएं खाता है, वह पानी बहुत पीता है।

जो गदहा जीतै संग्राम
तो काहेक बुद्धि पर खर्चे दाम।

अ०– जो बादल ज्यादा गर्जते हैं वे बरसते नहीं। उसी प्रकार से जो आदमी बहुत बोलता व गप्पें हाँकता है वह कोई काम नहीं कर सकता है। अगर मूर्ख ही बहादुरी का काम कर ले तो फिर पैसा खर्च करने की क्या जरूरत है।

जो गिरा खाई के अंदर, सो बना फेरी का बंदर।

अ०– जो आदमी ग़लत काम करके एक बार कहीं ख़ाईं में गिरे या समाज की दृष्टि में नीचे आ जाए वह फिर नाचने वाले बंदर की तरह उसी में चक्कर काटता ही रह जाता है।

जोगी केकै मीत, कलंदर केहिके साथी?

श०– मीत–दोस्त, कलंदर–मुसलमान फकीर।

अ०– जोगी जो घाट–घाट का पानी पीता चारो ओर घूमता रहता है, वह भला किसका मित्र हो सकता है? उसी प्रकार से मुसलमान फकीर भी किसी का साथी नहीं हो पाता।

जोगी–जोगी लड़ मरे, खप्पर क नुकसान।

अ०– जोगी–जोगी आपस में लड़ गये, मगर नुकसान हुआ तो उनके भिक्षा–पात्र का, वही टूटा–फूटा। यानी आपस की लड़ाई में सामान की हानि होना।

जोगी मारे, छार हाथ।

अ०– किसी ग़रीब आदमी को मारने से लाभ ही क्या हो सकता है। उसके पास रहता ही क्या है? केवल मिट्टी की वस्तुएं ही होती हैं। जोगी अपने शरीर में राख भभूत ही लपेटे रहता है फिर उसे मारने से क्या हाथ लगेगा?

जो लप–लप आँख लपकावै,
ऊ रन मां का तीर चलावै?।

श०– लपलप–मुलमुलहा, रन–युद्ध।

अ०– जो मुलमुलहा यानी बार–बार आंख झपकाता है वह युद्ध में क्या निशाना लगा सकता है?

जो छावै सो पावै।

जो परिश्रम करता है, घर की देखभाल करके उसको पानी टपकने से बचाकर छान–छप्पर रखता है, वही सुख भी पाता है।

जोबन था तब रूप के, गाहक थे सब लोग।
जोबन रतन गंवाय के, बात न पूछै कोय।।

अ०– कहावत युवा अवस्था के प्रति कही गई है कि जब सुंदरता व जवानी थी तो सभी पूछते थे, जब जवानी समाप्त हो चुकी होती है तो कोई नहीं पूछता।

जो बर देख ताप मोहे आवै,
सोइ बर हमका ब्याहन आवै।

जिससे घृणा हो, कष्ट हो, वही पाले पड़े। उसी का जीवन भर साथ रहे।

अ०– जिसको देखकर मन दुःखित हो, कष्ट हो, वही सदैव साथ रहे। जिस काम से मन में घृणा या चिढ़ हो वही काम विवश होकर करना पड़े।

जो राह बतावै आगे चलै।

अ०– यह स्वाभाविक ही है कि राह बताने वाले को आगे चलना ही पड़ता है। दूसरे अर्थ में जो सलाह दे वही सब कुछ करे।

जो भादौं मां बरखा होय,
काल पछोरै पीछे रोय।

अ०– भादों माह की वर्षा का मतलब अनाज खूब पैदा होगा और अकाल पीछे जा कर पश्चाताप करेगा कि अब क्या हो? इस बार तो अन्न अच्छा पैदा हो गया है। अच्छे समय को देखकर दुष्टजनों का प्रलाप करना।

जो भूखे को देत हैं, जथा सक्ति जो होय।
ता ऊपर सीतल वचन लखैं आत्मा सोय।।

अ०– जो भूखे को भोजन कराता है और मीठे बोल बोल देता है उसी को दयावान कहते हैं।

जो हमरे, सो तुमरे, काहे दांत निपोरे।

अ०– कोई जब किसी को नीचा दिखाना चाहता है या किसी बात का मज़ाक बनाना चाहता है तो कहते हैं किसलिये हंस रहे हो? जो मैं हूं, वही तुम हो, जो मेरे पास है, वही तुम्हारे पास भी है, फिर क्यों मज़ाक बनाते हो?

जोरू क मरब, जूती क टूटब बराबरै है।

इस कहावत में नारी को बड़ी हेय दृष्टि से देखा गया है।

अ०– स्त्री का मरना व पुरानी जूती का टूटना लोग एक ही समान मानते हैं। जैसे जूती टूटने पर नई आ जाती है वैसे ही औरत मरने पर दूसरी आ सकती है।

जोरू, खसम के लड़ाई, दूध कै मलाई।

अ०– मियां–बीवी का झगड़ा कोई झगड़ा नहीं होता।

जो सादी चलता चाल, वही रहै खुसहाल।

अ०– जो अपना जीवन सादगी से व्यतीत करता है वह सुखी रहता है। दिखावे व बनावट की जिन्दगी बहुत कष्टकारक होती है।

जो सिर उठाय के चलत उहै ठोकरौ खात।

अ०– रास्ते में नीचे देखकर चलना चाहिए। दूसरे अर्थ में जो बहुत अभिमान करता है, वह नीचे को गिरता है।

जोरू न जाँता, अल्ला मियां से नाता।

श०– जोरू–पत्नी, जांता–जिसमें आटा पिसता है।, नाता–रिश्ता।

जब किसी को बिना पत्नी व बिना घर–गृहस्थी के देखा जाता है या गृहस्थी से उदासीन पाया जाता है तो कहावत के द्वारा यह चरितार्थ किया जाता है कि न घर में स्त्री है, न घर गृहस्थी का कोई सामान तो फिर है क्या? सीधे–सीधे भगवान से ही रिश्ता बनता है। साधु–महात्मा होने का संकेत मिलता है। यानी कि दुनिया संसार से उदासीन हो जाना।

जो तोको कांटा बोये ताहि बोय तू फूल।
तोको फूल को फूल है, वाको है तिरसूल।।

श०– तिरसूल–लोहे का नुकीला कांटा, त्रिशूल भगवान् शंकर का शस्त्र है।

कहावत मानवता व भलमनसाहत के ऊपर कही गई है। जो तेरे लिये बुरा करे उसके साथ भी बुरा व्यवहार मत करो। यदि कोई तुम्हारे लिये रास्ते में कांटा बोता है कि आते ही कांटे की बाड़ी में उलझकर रह जाये तो भी तुम्हें उसके प्रति बुरा न चेतना चाहिए बल्कि तुम्हें उसके लिये फूल लगाना चाहिए। एक दिन ऐसा आयेगा कि फूल तुम्हें मिलेंगे और कांटा उसे मिलेगा।

जोत न मानै अरसी चना,
पोस न मानै हरामी जना।

श०– जोत–ज़मीन की जोताई, पोस–पालन–पोषण करने वाला, हरामी– जो अपने बाप की औलाद न हो।

कहावत विशेष रूप से उस आदमी या ऐसे व्यक्तियों पर कही गई है जो नमकहराम होते हैं जो काम तो करा लेंगे किंतु उसका एहसान एक रत्ती भर भी न मानेंगे।

अ०– जोतने से अलसी–चना नहीं होता। ये अनाज बिना जोती हुई ज़मीन ही मांगते हैं। उसी प्रकार की

गई भलमनसाहत या परोपकार जो नमक हराम हों, नहीं मानते। यानी जितने नीच व एहसानफरामोश आदमी हैं, जो किसी की अच्छाई को मानने में संकोच करते हैं, वे कृतघ्न होते हैं।

जो तेरे कुनबा बना, काहे न बोये चना।

अ०– घाघ ने कहा है कि जब तुम्हारा कुल–परिवार बड़ा है तो फिर चने की खेती क्यों नहीं की? क्योंकि चने के खेत में परिश्रम भी कम है, सींचना नहीं पड़ता और फसल भी अच्छी होती है।

जोन्हरी बोवै तोर मरोर,
तब वह डावै कोठिला फोर।

श०– जोन्हरी–जो दो प्रकार की होती है। एक सफेद छोटे दाने की, दूसरी हल्के मटमैले सफेद रंग की होती है। कोठिला–जिसमें अनाज रखा जाता है, फोर–बहुत ज्यादा होना, रखने के बर्तन से ज्यादा होना।

अ०– जोन्हरी की बालों को खूब तोड़–मरोड़ कर दाने निकाल कर बोने से पैदावार खूब होती है। यहाँ तक कि रखने को बर्तन भी नहीं मिलते।

जोइगर, बसगर, बुझगर भाई
तिय सतवंती नीक सुहाई,
धनपुत हो मन होय बिकार
कहै घाघ ई सुख अपार।

श०– जोइगर–पत्नी वाला, बसगर–बलवान, बुझगर–लाठी डंडा वाला, समझदार तिय–स्त्री, सतवंती–पतिव्रता, सुहाई–अच्छी लगने वाली, पुत–पुत्र।

अ०– घाघ कवि का कथन है कि जिस घर में भाई विवाहित, बलवान व लाठी डंडा वाला हो, पत्नी सुंदर पतिव्रता हो, पुत्र व धन हो और मन के विचार समझदार हों इससे बढ़कर सुख और क्या हो सकता है? कहावत पारिवारिक सुख के प्रति स्पष्ट की गई है।

जो बदरी बादर मां खमसै,
कहै भड्डरी पानी बरसे।

कहावत पानी बरसने के लक्षणों के ऊपर कही गई है।

अ०– यदि बादल ढेर के ढेर एक दूसरे के ऊपर चढ़ें, तो भड्डरी कवि का कहना है कि यह लक्षण पानी बरसने के हैं।

जो चित्रा मां खेलै गाई,
निहचै खाली साख न जाई।

अ०– जो चित्रा नक्षत्र में गायें आपस में खेलने लग जाये तो निश्चय ही फ़सलें अच्छी होंगी।

जो कहुं हवा एक से जाय,
परै न बूंद काल परि जाय।

अ०– यदि कहीं हवा ऊपर आकाश की ओर जाय तो निश्चय ही बूंद भर भी पानी नहीं बरसेगा यह अकाल के लक्षण हैं।

जो शनि कन्या करे निवास
तौ पूरब कहं भाग विनास,
तुला, वृश्चिक जौ शनि होई
मारवाड़ ते कार बिलोई।

कहावत शस्त्र व राशि के ऊपर चरितार्थ की गई है।

यदि कहीं कन्या राशि में शनि का योग हो तो अवश्य ही भाग्यबुरे हैं। यदि तुला व वृश्चिक राशि में शनि पड़ा है तो भाग्योदय का योग माना जाता है।

जो कोई अगहन बोवै जौवा,
होइ–होइ नहिं खावै कौवा।

अ०– यदि कोई किसान अगहन के महीने में जौ की खेती करता है तो उसे हानि उठानी पड़ती है। हो कि न हो, उसे कौवा ही खाकर ख़त्म कर देंगे।

जो तू भूखा माल का, तो ईख करे नाल का।

अ०– यदि तू ईख की खेती बढ़िया चाहता है तो उस ओर बोवै जहाँ पर पानी बराबर मिलता रहे, जहाँ पर नहर आदि हो।

जो जौ चाहे तो उत्तरा गहे,
कांच पकै के जोतत रहै।

अ०– यदि जौ के अनाज की बढ़िया फ़सल चाहें तो उत्तरा नक्षत्र में कच्चे खेतों को जोतकर उसके ढेले रोड़ी फोड़कर, बारीक मिट्‌टी में ज़ौ को बोओ।

जोतै खेत घास न टूटै, तेकर भाग सांझ ही फूटै।

जिस खेत की जोताई करने पर घास न निकल पावे समझो कि उस किसान की तकदीर खराब ही है।

जो बरखा चित्रा मां होय, सगरी खेती जावै खोय।

अ०– यदि चित्रा नक्षत्र में पानी बरस गया तो समझो कि सारी खेती बेकार हो गई।

जो बरसै पुनर्वस स्वाती, चरखा चलै न बोलै तांती।

श०– पुनर्वस, स्वाती–नक्षत्रों के नाम हैं, तांती– तांत की धुनकी।

अ०– यदि पुनर्वस या स्वाती नक्षत्र में पानी बरस जाता है तो समझो कि रूई की फसल बिल्कुल ही न हो पायेगी। जुलाहे बैठे ही रह जायेंगे। चर्खे के चलने का सिलसिला बंद ही हो जायेगा।

जो कहु मधा बरसै जल, सब नाजों में होगा फल।

अ०– यदि मधा नक्षत्र में पानी बरस जाय तो सभी अनाज अच्छे होंगे। किसी ने कहा भी है– "माता के परसे मधा के बरसे"। माता के भोजन परोसने पर ही बच्चों का पेट भरता है और मधा नक्षत्र के बरसने पर ही धरती तृप्त होती है।

जोतै क पुरबी, लादै क दमोय,
हेंगा क काम देंय, जो देबहा होय।

श०– पुरबी–पूरब दिशा के बैल, दमोय–दक्षिणी सागर की ओर के बैल, देबहा–बैलों की जाति होती है।

अ०– खेत जोतने के लिये तो पुरबहे बैल चाहिए तथा पीठ पर लादने व बैल गाड़ी में चलने को दक्षिणी समुद्र के बैल तथा खेतों में ढेला आदि फोड़ने को देबहा बैल अच्छे माने जाते हैं।

जो हर होगें बरसनहार,
काह करै दक्खिनी बयार।

अ०– यदि भगवान बरसने वाले ही होगे तो दक्षिणी हवा क्या करेगी?

जो कहुं हवा अकासे जाय,
परै न बूंद काल परि जाय।
दक्खिने पच्छिम आधो समयो
भड्डर जोसी ऐसो भनयो।।

अ०– भडड्र ज्योतिषी का कहना है कि यदि आषाढ़–सावन में हवा चलकर आकाश में उड़ जाय तो पानी न बरसेगा। ऐसी दशा में दक्षिण–पश्चिम की दिशा में थोड़ी फसल पैदा होने की आशा है।

जो सोवा सो खोवा, जो जागा सो पावा।

अ०– सोने वाले से मतलब यहाँ पर ग़ाफिल रहने वालों से है यानी जो ग़ाफिल होते हैं वे हमेशा खोते हैं और जो समयानुसार सचेत रहते हैं वे अपनी जीवन–यात्रा की गाड़ी छूटने से बचा लेते हैं। इसलिये जो सोता है वह हर माने में बर्बाद रहता है और जो जागता रहता है वह जीवन में उन्नति करके दुनिया में कुछ कर दिखाता है।

जोरू का भाई सिर पर बाजार।

अ०– पत्नी का भाई यदि अपने यहाँ रह रहा है तो मानो बहुत बड़ा बोझ सिर के ऊपर तैयार रहता है। जब घर में साला रहता है तो घर में बड़ी ही अशांति रहती है। भाई की शह पाकर पत्नी का दिमाग़ भी सातवें आसमान पर रहता है।

जो मंगल क लगावै तेला,
और जंगल मां काटै बेरा,
दुइ गदहा के अवनी जाय,
एतना पाप होय जग माहीं,
जो जयद्रथ बधउं न तोहीं।

कहावत पाप–कर्म से संबंधित है।

अ०– जो मंगल के दिन सिर में तेल लगाता है तथा जंगल में मगल के दिन बेर का पेड़ काटता है और मंगल के दिन दो गधों के बीच की ज़मीन से निकले, इन सबसे उतना ही पाप लगता है जितना की जयद्रथ के वध न करने पर लगता है।

जो चोरी करत ऊ मोरिब रखत।

शब्दाथ– मोरिव–मार्ग, रास्ता।

अ०– जो आदमी अच्छा चाहे बुरा जो भी काम करता है वह अपनी सुरक्षा के प्रति पहले से ही सचेत रहता है। यानी जो दूसरे के अनजाने घर में चोरी करने घुसता है वह अपनी जान व चुराये माल की सुरक्षा के रास्ते भी खोजे रहता है कि किस तरह से सामान व अपनी जान बच सकती है?

जो बोलै, सो कुंडी खोलै।

अ०– जो कार्य की शुरूआत करे वही कार्य को पूरा भी करे।

जो अपने काम न आवै चूल्हे भाड़ मं जाय।

कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो बड़े ही स्वार्थी व अपनी गर्ज पर गधे को भी बाप कहने वाले होते हैं किन्तु उनसे जब किसी का मतलब पड़ता है तो वे बात तक करना पसंद नहीं करते। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो किसी उच्च पद पर होकर भी परमार्थ नहीं कर पाते। ऐसे लोग दूसरों की नज़र में क्या होते हैं, कहावत ऐसे ही लोगों पर उद्धृत की गई है?

अ०– ऐसे लोग जो किसी स्वजन के काम न आयें वे अपना भला–बुरा करायें व भाड़ में जायें। उनसे क्या लेना देना?

जो धावै सो पावै।

अ०– भागदौड़ करने वाला व्यक्ति ही सफलता पा सकता है। अतः किसी कार्य के लिए प्रयास करना बहुत आवश्यक होता है।

जो बोले सो घी को जाय।

हास्य–व्यंग्य विनोदी प्रकृति वाले बहुधा हँसी में कह देते हैं।

अ०– भाई, जो बोले वही जाकर घी ले आये और लाने का खर्च भी उठाये।

"एक बार चार मूर्खों ने मिलकर खाना बनाया तो बात यह हुई कि घी कौन लायेगा? इस पर तय यह हुआ कि जो पहले बोलेगा उसी को घी लाना होगा। इस तरह से चारों ने चुप्पी साध ली। इतने में एक पहरेदार आया बोला– यहाँ तुम सब क्या कर रहे हो? चारों चुप थे। उसने कड़क कर पूछा बोलते क्यों नहीं? तुम सब यहाँ पर क्या कर रहे हो? कौन हो तुम लोग? जब उत्तर न मिला तो पहरेदार उन्हें पकड़कर कोतवाली ले गया। वहाँ कोतवाल के पूछने पर भी वे सब न बोले तो कोड़े लगाने का हुक्म मिला। कोड़ों की मार न सह सकने के कारण एक पहले चिल्ला पड़ा। बस अब तुम्हीं घी लाना। तात्पर्य यह कि कभी भी मूर्खतापूर्ण हठ नहीं करना चाहिए।

एक दूसरी कथा है– "एक बार चार आदमियों ने मिलकर खिचड़ी पकाई। जब खाने बैठे तो एक ने कहा– तुम लोग खिचड़ी में घी डालना भूल गये। इस पर तीनों बोल उठे– हां–हां, तुम्हीं जाकर लाओ। इससे कहावत का अर्थ हुआ कि जो सलाह दे वही वह काम भी करे। किसी ने कहा है– "जो राह दिखावै वह आगे चलै।"

जो बिन समझे खेले जुआ, आज नहीं, तो कल मुआ।

श०– समझे–जानकार होना, बिना जाने बूझे, मुआ–मरना हारना, मात खाना।

अ०– जो बिना सोचे समझे कोई काम करता है या अपनी आदतों को बिगाड़ता है वह कभी न कभी नुकसान उठाता है।

जो हांड़ी मं होये ऊ थारी मां आगे आये।

अ०– जो कुछ भी रसोई में पका होगा वह सामने थाली में खाने को मिलेगा। यानी संतोष रखना चाहिए कि जो कुछ होगा वह सामने आयेगा।

" जौ "

जौ के खेते कड़ुआ उपजै।

श०– कड़ुआ– जौ गेहूं आदि की एक बीमारी है जिसमें दाना काना काला पड़ कर सड़ने लगता है। "कड़ुआ" एक पौधा है जिसकी पत्तियों में कांटे होते हैं। इसका फूल पीला और इसके फल में दाने कलौंजी के दानों जैसे होते हैं। देहात में इसे 'करुआ' कहते हैं।

कहावत ऐसे समय पर कही गई है, जब किसी अच्छे भले घर में (किसी लायक बाप के) नालायक पुत्र का जन्म हो जाय।

अ०– जौ के खेत में ऐसा दाना उत्पन्न हुआ जो सड़ा गला बदरूप बेकार का हो।

जौ को गये, तो सतुआ खाय, आय गये।

किसी से अपने सामान का बदला चुकाने की तत्परता में तुरंत वस्तु का मूल्य पाने की नियत रखना।

अ०– ऐसा मौका आया कि किसी के यहां सत्तू के लिये थोड़ा सा जौ मांगने गये जैसे ही मांग कर लाये और सत्तू बना नहीं कि सत्तू खाने पहुंच गये।

जौन रोगी भावै, उहै बैद बतावै।

अ०– जब किसी के मन की बात कही जाय और वह

उसके लिये हानिकारक हो तब भी सुनने वाले को भली मालूम दे।

यानी जो बीमार को अच्छा लगे वही वैद्य जी रोगी को खाने को बतावें तो वह रोगी के हित में भला न होगा फिर भी रोगी को अच्छा लगता है। रामचरितमानस में तुलसीदास जी ने कहा है–

सचिव, बैद, गुरु, तीन जौ प्रिय बोलहिं भय आस।
राज, धर्म, तन, तीन, कर, होय बेगहीं नास।।

जौन पंडित की पोथिया मां,
ऊ हमरी कंनगुरिया मां।

कई लोग इतने अनुभवी व जानकार होते हैं कि वे भविष्य के प्रति सच कह जाते हैं। यहाँ तक कि कम ज्ञान के लोग भी अपनी वाणी से सत्य कहने में पारंगत होते हैं।

अ०– पंडिताइन का कहना है कि जितना पंडित अपनी पोथी–पत्रा से देखकर बतायेंगे उतना मेरी हथेली की सबसे छोटी उँगली में ही लिखा है।

जौ हर जोतै खेती वाकी और नहीं तो जाकी–ताकी।

कहावत घाघ कवि की खेती संबन्धी है।

अ०– जो किसान अपने हाथों से हल जोतता है, खेती सच पूछो तो सबसे अच्छी उसी की होती है और जो दूसरों से खेत ज़ोतवाता है उसकी खेती जैसी रहती है वैसी ही रह जाती है। उसमें बढ़ोत्तरी नहीं होती। इसलिये खेती हो या कोई भी काम अपना काम अपने हाथों से ही ठीक होता है।

जौ गोहूं बोवै पांच सेर, मटर क बीघा तीस सेर।
बोवै चना पसेरी तीन, तीन सेर बीघा जोन्हरी।।

अ०– कहावत घाघ कवि की खेती संबन्धी है कि कितने खेत में कितना बीज डालना चाहिए। जौ व गेहूं के एक बीघा खेत में पांच सेर, मटर एक बीघा में तीस सेर, चना तीन पसेरी यानी एक बीघे में छह सेर और जोन्हरी एक बीघे में तीन सेर बोने पर खेत में फ़सल अच्छी जमती है।

जौन रानी ठेकवन चलै,
बिपति परे पिसौनी करै।

कहावत समय के प्रति कही गई है। सबका समय एक समान नहीं बीतता है।

अ०– जो रानी कभी सहायक लेकर चलती थी, बिना किसी के उठाये चल नहीं पाती थीं, समय की गति ऐसी विचित्र कि वे दिन गिर जाने पर दूसरे के घर में जांता चलाती व आटा पीसकर अपना समय व्यतीत कर रही हैं।

जो ईमाने गा तो जइसे मनई वइसे शैतान।

अ०– दुनिया में ईमान से बढ़कर कुछ भी नहीं होता है। कहते हैं जब आदमी का ईमान ही चला गया तो फिर आदमी या शैतान में क्या अंतर है?

जौ लजाधुर होतीं तो घर–घर न रोउतीं।

कुछ स्त्रियों की आदत होती है वे अपना दुःख तमाम सारे घरों में जा–जाकर रो आती हैं किन्तु जैसा कि कवि रहीम ने लिखा है–

'रहिमन' निज मन की विथा मन ही राखो गोय,
सुनि अठिलैहैं लोग सब, बांटि न लैहैं कोय।।

अतः अपना दुःख तो अपने ही काटे से जाता है। कहावत इसी पर कही गई है।

अ०– यदि इतनी समझदार, सहनशील, मर्यादित होतीं तो घर–घर घूम–घूम कर अपना दुःखड़ा किसी को न सुनातीं, न घर की इज्ज़त लेतीं और न ऐसे व्यक्ति से कोई सहयोग की उम्मीद ही करती।

जौन करै मनई, उहै कहै बानी
उही क सुनै सब कहति कहानी।

अ०– जो कुछ भी आदमी करता है, सही कहानी है। उसी को सब गढ़ते हैं, सब सुनते हैं और सब लिखते हैं। जो यथार्थ होता है उसी को सब पढ़ते व सही मानते हैं।

जौ ना होय दहिव दंगरा
फूँक कै, करेज धरै मकरा।

श०– फूँक के–बड़ा गर्म स्वभाव का होना, जिसकी तासीर गर्म हो, मकरा–सरसों की जाति का सरसों से बड़ा एक अनाज होता है। खाने में जिसकी रोटी बड़ी गर्म तासीर की मानी ज़ाती है।

यदि मकरे की रोटो के साथ दही आदि ठंडी चीज खाने को न मिले तो वह पेट में जलन उत्पन्न करती है।

जौ कुंयै मां भांग परी होय, तौ का होय?।

अ०— जब किसी विशेष स्थान या विशेष आदमी ही में गड़बड़ी पैदा हो जाय तो फिर उसकी नकल तो सभी करना चाहेंगे। जैसे यदि घर का मालिक ही कोई ग़लत काम करे तो घर के अन्य सदस्य या छोटे लोग तो अवश्य ही उस ग़लती को दुहरायेंगे।

जौ मोर गिना पिसान मोर जोखा
कइसे भवा रोटी मां धोखा?

किसी वस्तु का या काम का हिसाब–किताब पूर्णरूप से रखना। कहावत जांच–पड़ताल विषयक है।

अ०— जौ मेरा गिना और आटा तराजू का तौला हुआ है, फिर कैसे रोटी में कमी आ गई।

जौने घर संपत्ति नहीं, ओसे भला बिदेस।

अ०— धन की कमी बहुत कष्टकारक होती है। यदि घर में धन की कमी हो तो उससे भला है परदेश चले जाना।

जौनै घर होवै पुरुष कुचाली
वहि घर होवै खीर क दाली।

अ०— जिस घर में पुरुष बदचलन हो ऐसे घर की बनी बनाई खीर भी दाल हो जाती है। उस घर की कलह, झंझट, झगड़े की सीमा नहीं होती, फिर घर बर्बाद न होगा तो और क्या होगा?

जौनी पत्तल मां खाय उही
मां छेद न करै क चाही।

अ०— जिसकी संरक्षा में रहे, जिसका अन्न खाये उसी का नुकसान न करना चाहिए। कहावत किसी नमकहराम व्यक्ति के ऊपर लागू होती है। जिसका खाय अन्न उसी की बड़ाई व भलाई करके एहसानमंद होना चाहिए।

जौ मन मोर चंगा, तौ कठौती मां गंगा।

मन की सफाई के ऊपर कहा गया है।

अ०— यदि मन साफ़ है तो गंगा जी न जाकर घर में ही गंगा का लाभ मिल सकता है।

जौने पेड़े क बोकला, उही मं लागत।

अपनत्व, अपना खून अपना ही होता है, वह अलग नहीं किया जा सकता है चाहे कितना ही बैर–भाव क्यों न हो।

अ०— जिस पेड़ का छिलका होगा वह उसी में ठीक बैठेगा वर्ना दूसरे पेड़ में लगने पर वह सही ढंग से उसमें लग ही नहीं सकता है।

जौ मार पड़ी समसेरन कै तौ,
महाराज मैं नाई हूँ।

कठिन परिस्थिति के समक्ष घुटने टेकना। आत्मरक्षा के लिए गुहार लगाना।

अ०— जब शमशेरों की कड़ी मार पड़ी तो नाई बोला— "मैं नाऊ हूँ"। मेरा कोई दोष नहीं।

जौ कबिरा कासी मरै तौ रामहि कौन निहोरा?

यह कहावत महात्मा कबीरदास के काव्य की पंक्ति है। किसी से यदि कोई आदमी एहसान नहीं लेना चाहता तो इस पंक्ति का उपयोग कहावत के रूप में करता है।

अ०— जो लोग काशी में प्राण त्याग करते हैं तो उन्हें स्वर्ग मिलता है। इसी पर कबीरदास ने कहा था कि यदि हम काशी में मरते हैं तो राम का क्या एहसान है? यहाँ मरने पर तो तर जाऊँगा ही। अतः इसी कारण महात्मा कबीरदास मरने के पूर्व मगहर (बस्ती) चले गये थे।

जो झकोरै चारो बाय, दुःख मां परजा जीव डेराय,
जोर झलो आकासै जाय, तौ पिरथी संग्राम कराय।

अ०— जब हवा चारो ओर की चौवाई चलती है तो सभी का मन भयभीत हो जाता है कि अब क्या होने वाला है? जब हवा ऊपर आकाश की ओर जाये तो समझना चाहिए कि अब धरती पर महायुद्ध होगा।

जौन रही बसुला मां धार,
उहौ लैगे पतलू लोहार।

अ०— कोई भी वस्तु अपनी पुरानी दशा में जैसी भी थी, कम से कम उसी से काम तो चलता था मगर कोई उसे भी बर्बाद करदे तो कहावत सामने आती है। जो कुछ बसुले में लकड़ी छीलने की धार थी उसे भी लोगों ने बर्बाद करके रख दिया। ठीक तो क्या करते, जो थी वह भी गई।

जौने दुःख छोड़ेउ गउरा घाट,
उहै दुःख गोहनवै लाग।

श०– गउरा घाट–स्थान, गोहनवै–साथ–साथ।

अ०– जब आदमी किसी व्यक्ति या स्थान या किसी बात से पीछा छुड़ाना चाहता है तो चाहता है कि जल्दी इससे पिंड छूट जाये? फिर भी जब साथ नहीं छूटता तो यह कहावत चरितार्थ होती है।

जौ ना होत अमेठी क ऊसर,
तौ राजा होते दइव क दूसर।

कहावत क्षेत्रीय विशेषता को लेकर कही गई है। अमेठी सुल्तानपुर ज़िले का एक क्षेत्र है जो कभी राज्य था।

अ०– यदि यहाँ पर इतना अधिक ऊसर न होता तो यहाँ का राजा भगवान का दूसरा रूप होता। ऊसरहीं ज़मीन होने के नाते इसकी उन्नति उतनी नहीं हो पाई जितनी कि होनी चाहिए थी।

जौ ना होत तिलोई मां ताल,
राजा कहवउतै दइव क लाल।

उपर्युक्त कहावत की भाँति यह भी क्षेत्रीय कहावत है। तिलोई रियासत में भी बहुत बड़ा ताल होने के नाते यहाँ की तरक्की भी रुक गई है।

अ०– यदि तिलोई में इतना बड़ा ताल न होता तो यहाँ का राजा भगवान का दूसरा पुत्र होता।

जौने मनई से जनमत नहीं बनतै
ओसे मरतौ नाहीं बनतै।

कहावत किसी अभागे के प्रति उद्धृत की गई है।

अ०– जो जन्म का अभागा होता है वह मरते समय भी अभागा ही रह जाता है। उसके भाग्य में दुःख ही दुःख उठाना लिखा होता है।

जौ नीके दिन आइहै, बनत न लगिहै देर।

अ०– समय का चक्र दुनिया में बराबर चलता ही रहता है। कभी सुख–कभी दुःख मानव के जीवन में बराबर आते–जाते रहते है। कहावत भी उसी पर चरितार्थ की मई है।

अ०– जब समय अच्छा आयेगा तो बनने में देर न लगेगी।

जौ क गयें सेतुआही क आयें।

कहावत से समय की अवधि का ज्ञान होता है।

अ०– जिस माह में जौ बोये जाते हैं, यानी कातिक माह में किसी स्त्री का पति परदेश जाता है और जौ कटने के समय यानी चैत माह में जब रबी की फसल कट जाती है वह वापस आता है। जौ बोने के समय गये और जब फसल पककर खेत खलिहानों से घर आकर सत्तू बनने लग गये तो पति का आगमन हुआ।

जो तुम देओ नील की झूठी,
सब खादन मं रहै अनूठी,
वही किसानी मं है पूरा,
जो छोड़ै हड्डी का चूरा।।

अ०– स्पष्ट है।

जौन पंच कहिहै वहिका मानब,
मुला खूंटा रहियै मं गाड़व।

श०– खूंटा–जिसमें गाय, बैल, भैंस, बंधते हैं।

कहावत उस समय लागू होती है जब कोई आदमी लाख समझाने पर भी अपनी ही ज़िद्द अपनी ही बात पर अड़ा रहे। अदालत, कचहरी, हाकिम, जज का भी कहना न माने।

अ०– जो बात हमारे पंच कहेंगे मानूंगा, मगर खूंटा रास्ते में ही गाड़ूंगा। इसी पर तो पंच को फैसला देना था, उन्होंने दिया भी , मगर समस्या फिर भी जहाँ की तहाँ ही रह गई। यानी तमाम झगड़े–झंझटों के बावजूद भी समस्या का हल न हो पाना।

जौ सावन पुरवा बहै, सालौ लाग करीन।

कहावत वर्षा ऋतु पर अवलंबित है।

अ०– यदि सावन महीने में पुरवा हवा बहती है तो वर्षा कतई न होगी। साल भर तब खेत को सींचना पड़ेगा।

'जां'

जांते क पीसा सबै खाथ

दांते क पीसा नास होइ जात है।

श०– जांत–चक्की, पत्थर की बनी वस्तु जिसमें स्त्रियाँ अनाज पीसती थीं, दाँते के पीसा–घर का कलह।

कहावत घर के कलह (झगड़ा–झंझट) पर कही गई है।

अ०– हमारे देश में गृह–कलह सदा से रहा है, इसका इतिहास साक्षी है। वह चाहे घर में हो या देश में। किसी विद्वान ने लिखा है–

'फूटहि से सब कौरव नासे भारत युद्ध मचायो।

जाको घाटो यहि भारत में अब लौं नहिं पूरयो।'

अथर्ववेद में लिखा है–

'मियो विघ्ना ना उपयन्तु मृत्युम्।

यानी कि परस्पर लड़ने वाले मृत्यु को प्राप्त होते हैं। उसी प्रकार से कहावत है कि जाँत का पिसा दाना तो दुनिया खाती है लेकिन दाँत का पीसना घर में कलह पैदा करता है। लड़ाई–झगड़ा, अन्याय घर का सत्यानाश कर देता है। कहा है–

'बन में फूटै सबकेव खाय,

घर माँ फूटै घर बहि जाय।

बन में फूटने का मतलब काँकर जो फूट कहलाती है उसे सभी खाते हैं मगर घर की फूट घर का नाश कर देती है। आपसी प्रेम के लिए कवि रहीम खानखाना ने बहुत सुंदर कहा है–

'टूटे सुजन मनाइये जौ टूटै सौ बार,

रहिमन फिर फिर पोइये टूटे मुक्ताहार।।

जैसे मोतियों की माला टूट जाने पर एक–एक मोती के दानों को चुनकर फिर से माला पिरोते हैं वैसे ही स्वजन यदि नाराज हैं तो उन्हें भी मनाइये, वे अपने मोतियों से ज्यादा ही मूल्यवान हैं।

'जांते मं कील नाहीं, पुरबहन के सील नाहीं'।

श०– पुरबहन–पूर्वी लोग, पूर्व दिशा के निवासी/ सील–संकोच।

कहावत पूर्व दिशा के लोगों के ऊपर कही गई है।

अ०– जैसे जाँत के बीच में कील न होने पर ऊपरी पाटा इधर–उधर होता है। उसमें आटा नहीं पीस सकते। वैसे ही पूर्वी निवासियों में संकोच नहीं के बराबर रहता है।

'ज्या'

ज्यादा खाय जल्द मरि जाय, सुखी रहै जो थोड़ा खाय।

रहै निरोगी जो कम खाय, बिगड़े काम न जो गम खाय।

यह कहावत अधिक भोजन करने और अधिक क्रोध करने पर कही गई है।

अतः अधिक किया गया भोजन व असमय पर किया गया क्रोध बुरा होता है।

'ज्यादा हलबुलानी तौ दुइनो हाथे खाई'।

श०– हलबुलानी–जल्दबाजी।

कहावत किसी को बेहद जल्दी करने के ऊपर कही गई है।

अ०– आवश्यकता से अधिक जल्दबाजी ठीक नहीं होती या तो काम बिगड़ जाता है या जितनी ही जल्दी करो उतनी ही देर भी हो सकती है। किसी काम को करने का एक तौर तरीका होता है। कहा है 'जल्दी का काम शैतान का होता है। 'इसका एक छोटा सा प्रमाण देखें– दो घोड़े एक साथ एक ही मंजिल पर चले। दोनों ही एक साथ चलना शुरू किये। बहुत तेज और जल्द पहुंचने की अकुलाहट में एक घोड़े ने तो इतना तेज दौड़ना शुरू किया कि थोड़ी ही देर बाद वह हाँफने लगा और थकते–थकते रफ्तार धीमी कर दी, वहीं पर दूसरे घोड़े ने चलते समय एक ही रफ्तार पकड़ी और वह ठीक समय पर मंजिल पर पहुंच गया। उसे कोई कष्ट तक नहीं हुआ। इसलिए काम और समय के तालमेल के हिसाब से कार्य करने में सहूलियत है।

'ज्यों'

ज्यों–ज्यों बाव बहै पुरवाई
त्यों–त्यों घायल अति दुख पाई।

श०– बाव–हवा, बयार।

कहावत पुरवइया बयार को लेकर कही गई है कि चोट खाये हुए लोगों पर उस का क्या असर होता है?

अ०– कहते हैं कि चोट–चपेट लगने पर, हड्डी टूटने पर, अंदर की चोट लगने पर जैसे–जैसे पुरवा वायु चलती है वैसे –वैसे घायल के शरीर में असह्य पीड़ा होने लगती है।

ज्यों–ज्यों भीजे कामरी, त्यों–त्यों भारी होय।

कहावत कमरी के माध्यम से किसी ऐसे व्यक्ति पर कही गई है जिसने पहले कभी कोई जिम्मेदारी नहीं उठायी थी हमेशा जिम्मेदारी से दूर रहा हो।

अ०– कहते हैं जैसे–जैसे कमरी भीगती है वैसे–वैसे भारी होती जाती है। यानी मनुष्य के ऊपर जैसे–जैसे जिम्मेदारियाँ बढ़ती हैं वैसे–वैसे वह सब कुछ वहन करने लग जाता है। वही आदमी गृहस्थी का सारा बोझ उठाने लगता है। कहा है–

'भूलि गये राग रंग भूलि गई चौकड़ी,
याद रही तीन चीज नोन, तेल, लकड़ी।

तो समय पड़ने पर आदमी सब–कुछ कर सकता है।

ज्यों–ज्यों मुर्गी मोटी होय
त्यों–त्यों दुम छोटी होय।

कहावत बहुत कंजूस आदमी पर कही गई है।

अ०– जैसे–जैसे बड़ा आदमी और बड़ा होता जाता है वैसे–वैसे उसका हाथ कंजूसी की तरफ बढ़ता जाता है। यानी पेट तो बड़ा होता जाता है और पूंछ अंदर की तरफ धंसती जाती है।

'झ'

झउवा में गूलर खाई रानी घिनाय–घिनाय।

श०– झउवा–अरहर के रहंटे का बनाया गया बड़ा सा टोकरा, गांव में जिससे बैलों को भूसा दिया जाता है। गूलर–एक प्रकार का बनफल। घिनाय–घृणा के साथ।

जब कोई आदमी या औरत खाने–पीने के मामले में पचास नखरे दिखाती है तो उपरोक्त कहावत कही जाती है।

अ०– आखिर में रानी ढेर सारी गूलर खा गईं मगर नखरे कर–करके।

झगड़ा झूठ कब्जा सही।

श०– कब्जा–अधिकार।

कहावत हकीकत पर कही गई है।

अ०– मूल बात होती है किसी जमीन, सामान आदि पर अधिकार करने की न कि झगड़े की। लाख झगड़ते रहो अधिकार तो उसी का सच माना जायेगा जो अधिकार ले ले।

झटपट की घानी, आधा तेल आधा पानी।

श०– झटपट–जल्दी। घानी–एक बार कोल्हू में पेरी जाने की मात्रा।

कहावत जल्दबाजी में काम के बिगड़ने पर कही गई है।

अ०– कोई भी काम जल्दी का अच्छा नहीं होता है। कोल्हू में एक घानी सरसों की डालकर ऊपर से उसका आधा पानी डाल दिया जाता है, ताकि जल्दी से तेल निकल आये, मगर फायदा क्या हुआ सिवाय नुकसान के! तेल में आधा तेल मिला, आधा पानी। तेल खराब हो गया, इसलिए कहा गया है कि बहुत जल्दबाजी में काम नहीं करना चाहिए।

झगड़े की तीन जड़–जर, जोरू, जमीन।

श०– जर–धन। जोरू–पत्नी, स्त्री।

कहावत जर, जमीन, जोरू पर कही गई है।

अ०– झगड़े–झंझट हमेशा उपरोक्त तीन विषयों पर ही होते हैं।

झरबेरी के वन में बिल्ली सेर।

अ०– जिस जंगल में झाड़–झंखाड़ होते हैं वहाँ पर बिल्ली भी शेर की तरह रहती है क्योंकि उसे किसी का भय नहीं है। इसी प्रकार से जिस घर में घर का मालिक नहीं होता है उस घर में निर्बल भी बलवान बन जाता है।

झउवन लरिका खचियन सोक
दुइ हजार रुपिया भले न होय।

श०– झउवन–ढेर सारे। खचियन–जिसमें भूसा भरकर नापा जाता है।

कहावत अधिक बच्चों के होने पर कही गई है। पहले के ज़माने में लोगों के बहुत सारे बच्चे होते थे। आज के युग में अधिक बच्चे अभिशाप माने जाते हैं। कहा है–

'दुइ माता के पांडव पांच, कभी न आने पाई आँच।
एक माता कौरव सौ भाई, राज–पाट सब दिहे गंवाई।'

'झा'

झाड़–फूंक अच्छा कीन, करमै लै जाय तौ मैं का करूँ?

कहावत भाग्यवादी है जो भूत–प्रेत बाधा पर कही गई है। भूत–प्रेत–बाधा निवारण बहुधाः ओझा–सोखा आदि किया करते हैं। इनका कहना है कि मैंने तो झाड़–फूंक कर अच्छा किया था मगर यदि भाग्य में नहीं था बचना तो इसके लिए मैं क्या कर सकता हूँ?

झाड़ि बिछाई कामरी, रहे निमाने सोय।

श०– कामरी–कमरी। निमाने–जमीन।

कहावत कमरी की उपयोगिता पर कही गई है।

अ०– कमरी ऐसी वस्तु है कि जब जहां जैसे चाहो उसका इस्तेमाल कर सकते हो चाहे खाट पर बिछा लो चाहे जमीन में बिछा लो।

'झि'

झिनगा खटिया बातल देंह, तिरिया लंपट हाटे गेह।
भाई बिगरि मुद्दई मिलंत, घाघ कहैं यह विपत्ति क अंत?

श०– झिनगा–ढीली, टूटी हुई। बातल–बहुबक्की। बुरा भला बोलने वाली तथा वायुरोग से पीड़ित शरीर। तिरिया–स्त्री। हाटे–बाजार। बिगरि–नाराज। मुद्दई–बैरी। मिलंत–मिलना।

कहावत घाघ कवि की है जो उपरोक्त विषयों पर कही गई है।

अ०– यदि जमीन तक लटकी टूटी खाट हो। शरीर में वायुरोग का प्रकोप हो, स्त्री बदचलन हो, भाई नाराज होकर बैरी से मिल जाये और बाजार के पास घर हो, तो इससे बढ़कर दूसरी कोई विपत्ति नहीं हो सकती है।

'झीं'

झींगुर बकुचा प बइठा जानो बजाजा वही क आय।

श०– बकुचा–कपड़े की गठरी।

अ०– छोटा आदमी जब थोड़ी देर के लिये भी किसी अधिकार से कहीं पर बैठ जाता है तो अपने को ही मालिक समझने लगता है। जैसे झींगुर बजाज की गठरी पर बैठा तो मालिक अपने को ही समझने लग गया।

'झू'

झूठ के पाँव नाहिं होत।

अ०– झूठ बोलकर कोई आदमी भाग कर कहीं नहीं जा सकता है।

झूरे बदरे पानी आय।

अ०– जब अचानक कहीं पर कोई बिना कीचड़ – पानी के गिर पड़ता है तो कहते हैं कि न पानी, न बादर, न बूँदी कैसे गिर पड़े?

झूठ न बोलै तो पेट न भरै।

अ०– बहुत लोगों की आदत होती है जब तक वे झूठ का रास्ता न पकड़ लें तब तक उनके पेट का दाना–पानी नहीं हज़म होता है। तुलसीदास जी के शब्दों में–

'झूठइ लेना झूठइ देना झूठइ भोजन झूठ चबैना।
जो काहू कै सुनहिं बड़ाई, सांस लेहिं जनु जूड़ी आई।

झूठ क बोलब मइला क खाब एक्के आय।

अ०– झूठ का बोलना और गंदी वस्तु का खाना एक ही बराबर होता है।

झूठा मरै मोहल्ला साफ होय।

अ०– जैसे एक मछली सारा तालाब गंदा कर देती है वैसे ही यदि एक झूठ बोलने वाला होता है तो उससे

पूरा मोहल्ला परेशान रहता है। लोग तंग होकर यहां तक सोचने लग जाते हैं कि मर जाता तो अच्छा होता।

झूठ बोलयवालेन कै पहिले मउतियो आवत रही, अब मूड़व नहीं पिरातै।

अ०— कहावत युग का प्रभाव प्रकट करती है। एक समय था जब झूठ बोलना पाप समझा जाता था किन्तु आज का समय है कि चाहे जितना झूठ बोलें उनकी सेहत पर कोई असर नहीं पड़ता है।

'झूठे क बोलबाला सच्चे का मुँह काला।

अ०— आज के युग में झूठ बोलने वाले की वाहवाही होती है और सच बोलने वाला बदनाम हो जाता है।

झूठे का कुछ पत नहीं सज्जन कुछ ना बोल, लखपती का झूठ से दो कौड़ी का मोल।

अ०— झूठे की कोई इज्जत नहीं है। सज्जन लोग कुछ बोल ही नहीं पाते तथा लखपतियों के लिये झूठ की कीमत मात्र दो कौड़ी की होती है।

झूठन क घर नहीं बसतै।

अ०— स्पष्ट है।

झूठन के सरदार हैं।

अ०— सरल है।

'झो'

झोरी मं टका नहीं सराय मं डेरा।

श०— झोरी—थैला। टका— पहले के समय का एक छोटा सिक्का। सराय— जहां पर मुसाफिर लोग रात में बसते हैं।

श०— कहावत ऐसे व्यक्ति पर कही गई है जिसके पास पैसा है नहीं मगर मन इतना ऊंचा है कि सराय धर्मशाले में रुकने की कामना करते हैं।

झोंकेवारे जानत है कि गुरवै गुर खात है।

श०— झोंकेवारे—जो भट्ठी के नीचे पत्ते आदि झोंकता है।

अ०— भट्ठी का झोंकने वाला भी गुड़ खाता है न कि बनाने ही वाला खाता है।

झोपड़ी मा रहै औ सपन देखय महलन कै।

अ०— मनुष्य की आकांक्षायें बहुत बड़ी होती हैं। कोई झोपड़ी का रहने वाला भी महलों का काल्पनिक सुख ले सकता है।

दूसरे अर्थ में कहावत व्यंग्यपरक भी है। यानी रहते हैं झोपड़ी में दिमाग महलों के रहने वालों जैसा है।

'ट'

टका कै मुर्गी नौ टका बेहनाई।

श०— टका—थोड़ी कीमत की।

कहावत किसी वस्तु पर खर्च को लेकर कही गई है।

अ०— जितने की तो मुर्गी न आई उससे कहीं अधिक खर्च तो उसकी सफाई में लग गया।

टका के कारन मंदिर ढहा।

अ०— थोड़े खर्च के पीछे बड़ा नुकसान होना। यदि मंदिर की मरम्मत करा दी जाती तो मंदिर क्यों गिरता।

टका कराई गंडा कै दवाई।

जितना तो बैद्य डाक्टर को दिखाने का न लगा उससे कहीं अधिक खर्च दवा में हो गया।

टका जेहिकै हाथ मं ऊ बड़ा जात मं।

अ०— जिसके हाथ में पैसा है वही बड़ा आदमी है। कहावत के अनुसार पैसे को अधिक महत्त्व दिया गया है।

टका कै लौंग बानिन खांय कहो घर रहय कि जाय।

कहावत व्यापार पर है जिससे हानि—लाभ होने की आशंका होती है। जब बानिन दुकान पर बैठकर अपना सामान खुद ही खा लेगी तो भला घर के खाने—पीने का क्या हाल होगा? खाना – खर्च कैसे चलेगा?

टट्टर खोल निखट्टू आया।

श०— टट्टर—टाटी जो झोपड़ी के दरवाजे को बंद करने को होती है। निखट्टू—बेकार घुमक्कड़, ग़ैर ज़िम्मेदार।

अ०– कोई स्त्री अपने पति की कायरता घुमक्कड़बाजी से परेशान होकर कहती है– आ गया निखट्टू खोल के दरवाजा।

एक कहावत है–

बेज़र का मर्द चाहे बिल्ली घर रहे या दिल्ली।
ज़र का मर्द नाहर, चाहे घर रहे चाहे बाहर।

टहल न टकोरी लावा मजूरी।

कहावत स्पष्ट है।

टहलिये को टहल सोहै बहेलिये को बहल सोहै।

श०– टहलिये–कामकाजी / बहेलिया–चिड़ीमार।

अ०– कहावत 'जेके काम वही का सोहै' पर कही गई है। यानी जिसका जो काम हो वह उसी को करते हुए अच्छा लगता है।

'टा'

टाट कामला दोलड़ा तीनों जात गुलाम।
जित चाहे तित बैठकर तुरत करो विश्राम।

श०–टाट–बोरा / कामला–कमरी / दोलड़ा–दोहर।

अ०– उपरोक्त तीनों चीजें जैसा चाहो इस्तेमाल कर लो चाहे जमीन में बिछा कर, कहीं गर्द गुबार में बिछा कर, मन चाहे ढंग से उठो–बैठो चाहे जितनी बेरहमी के साथ काम में लाओ गंदे होने का कोई सवाल ही नहीं उठता। गंदे होने पर बड़े आराम से धुल भी सकता है।

टाट कामरी घर यूं धरय
साल दुसाला बहिरे करय।

अ०– टाट कमरी का इस्तेमाल घर में और शाल दुशाला बाहर देखावटी में इस्तेमाल करना चाहिए।

टाट की अंगिया मूंज की तनी
देख मेरे देवर मैं कैसी बनी।

श०– अंगिया–चोली। मूंज–गांव में कास को भिगोकर उसे बरते हैं। तनी–बांधने की डोरी।

श०– अंगिया–चोली / मूंज–गांव में कास को भिगोकर उसे बटते हैं। तनी–बांधने की डोरी।

अ०– कोई भाभी टाट की चोली पहनकर अपने देवर से कहती है– देखो तो कैसी लग रही हूँ।

टायर ट्टटू गज गऊ पूत मीत धन माल।
कोऊ संग ना जात है जब लै जीव निकाल।

श०– टायर–घोड़ा। टट्टू– छोटी जाति का घोड़ा। गज–हाथी। गऊ–गाय। पूत–पुत्र। मीत–दोस्त। माल–खजाना।

कहावत अंतिम समय के प्रति कही गई है जब मनुष्य दुनियां छोड़कर जाने लगता है।

टायर भला न लांगड़ा पेड़ भला न झांखड़ा।

अ०– लंगड़ा घोड़ा और कांटेदार वृक्ष अच्छा नहीं होता है।

टाल न भूखे को कभी जो दे तुम्हें भगवान।
पास से आधी दे उसे ईश्वर को पहचान।

कहावत दया धर्म पर कही गई है। कहा है–

जाके दया धरम नहिं तन में
मुखड़ा क्या देखे दरपन में।

अ०– यदि तेरे दरवाजे पर कोई भूखा आया है तो उसे अपने हिस्से की आधी ही रोटी दे दो उसे भगाओ नहीं। कहा है–

ना जाने केहि भेस में नारायन मिलि जाँय।

टाट की चटाई पै रेसम की बखिया।

जो वस्तु जिसके लिए अनुपयोगी हो उसे इस्तेमाल करने पर कहावत कही गई है। भला बोरे की सिलाई कहीं रेशम से होती है। मगर मूर्खता का कोई जवाब नहीं है। किसी अच्छी, कीमती वस्तु की बेइज़्ज़ती करना बुद्धि की विडम्बना नहीं तो और क्या है?

टाट की लंगोटी नवाब से यारी।

कहावत बेशर्मी और मूर्खता की हद पर कही गई है। ऐसी दशा में नवाब से यारी बिना क्या बिगड़ा जा रहा था मगर नहीं, अहम् की भावना को कहा ही क्या जाय। एक घटना याद आ गई– किसी की भैंस मर गई तो दूसरा पड़ोसी अपनी काली हांडी चूल्हे से ले जाकर तुरंत सड़क पर फोड़ आया, फिर कहा 'हमरे

तुमरे करिया चीज नहीं सहतै' और रोने लग गया। इसीलिए किसी ने बहुत सच कहा है– दोस्ती, दुश्मनी, विवाह, मित्रता, उठना–बैठना बराबर वालों से ही करना चाहिए।

'टि'

टिकुली में रंग नाहीं पुरबियन के ढंग नाहीं।

अ०–. कहावत स्पष्ट है।

टिकुली चमकदार काजर फुलेहरा,
आप स्यामसुंदरी, भतार गुड़मुड़हा।

श०– चमकदार–चमकनेवाली। फुलेहरा–नोंकदार भतार–पति। गुड़मुड़हा–जो बार–बार आंखें झपकाता हो।

'टिकुली सेंदुर गा तो गा अब तो खाइव मं बजर परा'।

अ०– स्त्री अपने पति पर खीझती है कि शौक–सिंगार गया तो गया अब तो पेट की रोटी की भी मोहताजी आ गई है।

टीम टाम कै पगड़ी बांधिन उहौ कपड़ा जोरू क
पाक पूक के चउका लइन गोबर गाय के गोरू क।

अ०– कहावत व्यंग्यात्मक है। यानी बड़े पाक साफ से चउका लगाया फिर कपड़ा अपनी औरत का पहना। दहेज वाली पगड़ी बांधी। गाय के गोबर से आंगन लीपा। सब ढोंग करके पूजा करने बैठे हैं।

टिक–टिक समझे आ–आ समझे कहे सुने से रहे खड़ा
कहै कबीर सुनो भइ साधू ऐसे मनुस से बैल भला।

श०– टिक–टिक–घोड़े को हांकना। आ–आ–बैल या कुत्ते को बुलाना। कहावत किसी मंदबुद्धि या मूर्ख आदमी पर कही गई है जिसे जानवर की तरह बुलाना या हांकना पड़े। कबीरदास का कहना है कि इससे भला तो बैल ही अच्छा होता है कम से कम जानवर आवाज तो पहचानता है। अपना खूंटा तो पकड़ लेता है।

'टु'

टुक–टुक कै के मन भर खाई,
तनिका बेगम नाम बताई।

श०– टक–टूका, थोड़ा, तनिक, जरा सा।

कहावत किसी महिला के अधिक खाने पर कही गई है।

अ०– थोड़ा–थोड़ा करके मन भर खा गई जरा सा बेगम अपना नाम तो बताइये।

टुकड़ा खाये मन बहलावै
कपड़ा फाटय घर को आय।

कहावत मनुष्य की आवश्यक आवश्यकताओं के प्रति कही गई है।

अ०– रोटी, कपड़ा, मकान, मनुष्य की आवश्यक आवश्यकता है। कहा है कि खाना तो कोई दो समय का खिला भी दे मगर जब कपड़ा चाहिये तो घर का ही सहारा है।

टुकड़ा दे–दे बछड़ा पाला
सींग हुई तो मारन आया।

आदमी का जब काम निकल जाता है तो वह एहसान फरामोश हो जाता है। कहावत इसी पर चरितार्थ की गई है।

अ०– पहले तो आया कि मुझे बड़ी भूख लगी है बस पेट की रोटी दे दो और कुछ भी नहीं चाहिये। मगर जब वह पलकर जवान हो गया, बछड़े को सींग निकल आई तो वही मालिक को मारने लगा। कहा है– 'पाल–पाल, होबै तोर काल'। यही हाल बछड़े ने किया है।

'टू'

टूट कर मत चल रे बरलिके सबसे मिलकर चाल
टूटी हांड़ी देत है सबै गली में डाल।

श०– टूटकर–घमंड करके, ऐंठकर, बुरा बनकर। चाल–चलो।

कहावत व्यवहार कुशलता पर कही गई है। अनावश्यक किसी से लड़ाई–झगड़ा नहीं करना चाहिए।

अ०– किसी से बैर करके रहना अच्छा नहीं होता है। सबसे मिलकर रहने में ही भलाई है। वर्ना जैसे हांड़ी को लोग गली में फेंक देते हैं वैसे ही झगड़ालू लोगों

को लोग पसंद नहीं करते हैं। लोग अपने मन से ऐसे निकाल देते हैं जैसे टूटी हांडी। यानी घर, बाहर, समाज हर तरफ से वह बेइज़्जत होता है।

टूटा मत रह टोली से राह भीर के बीच
एक अकेले मनुज को सूझै ऊंच न नीच।

श०– टोली–समूह, साथ के लोग। मनुज–आदमी। ऊँच–नीच–अच्छा, बुरा।

कहावत संगठन की सार्थकता के ऊपर कही गई है। रास्ते में या जहां कहीं भी जिसके साथ जाओ उसके साथ बराबर रहो। बीच रास्ते कभी भी अपनों का साथ नहीं छोड़ना चाहिए क्योंकि अकेले आदमी को अच्छा बुरा वक्त जल्दी समझ में नहीं आता। इसीलिए कहा जाता है–

'राह चलत की दुइजन होई'।

'टे'

टेक उन्हीं की राखै साईं
गरब कपट नहिं जिन मन माहीं।

अ०– भगवान भी उन्हीं लोगों की मदद करता है जिनका मन शुद्ध होता है तथा जिसके मन में कुविचार नहीं रहते हैं। गोस्वामी तुलसीदास के शब्दों में–

'मोहि कपट छल छिद्र न भावा'।

टेंट, बइर ये काल के मीत
खाय किसान औ गावै गीत।

श०– टेंट–करील नामक वृक्ष का फल जो खाने में कडुवे होते हैं। बइर–बेर।

जब किसी असज्जन व्यक्ति की आलोचना होती है तो यह कहावत कहते हैं।

अ०– करील तथा बेर का फल बहुत अच्छा नहीं माना गया है किंतु अकाल के समय किसान भाई इसी फल को खाकर अपना गुजारा करते हैं और प्रसन्न रहते हैं।

टेंटें लड़िका गांव गोहार या कहीं–कहीं पर इसी कहावत को कहते हैं **'बगल में लल्ला गांव में हल्ला'**।

श०– टेंटें–बगल, कमर। गोहार–हल्ला।

जब कोई वस्तु या कोई घर का प्राणी अपने इर्द–गिर्द, आसपास में ही हो और उसके लिए चारों ओर गोहार मच जाय कि कहाँ गया या क्या हुई चीज तो यह कहावत कही जाती है।

अ०– बच्चा गोद में है और उसे चारों ओर ढूंढ़ा जा रहा है कि बच्चा गया कहां?

टेढ़ जानि संका सब काहू
बक्र चंद्रमा ग्रसहिं न राहू।

श०– संका–संदेह, भय। बक्र–टेढ़े, ग्रसहि–लीलना। राहू–एक ग्रह का नाम है।

जो आदमी बिगड़ैल दिमाग का होता है, कहावत उस पर कही गई है।

अ०– किसी क्रोधी, जिद्दी व्यक्ति से सभी डरते हैं। उसी प्रकार से जैसे जब चंद्रमा टेढ़ा होता है तो उसमें ग्रहण नहीं लगता है, राहु उसे निगल नहीं सकता है मगर जब वह सीधा हो जाता है यानी जब पूर्णमासी की तिथि आती है तभी ग्रहण लगता है। ठीक यही दशा सूर्य की भी है उसमें अमावस्या को ग्रहण लगता है। इसीलिए क्रोधी, बिगड़ैल आदमी से सभी डरते हैं।

'टेंटे पइसा नहीं पतुरिया देखे रोवाई आवै'

जब आदमी के पास पैसा न हो तथा उसे कोई बुरा व्यसन हो तो कहावत कही जाती है।

अ०– पास में पैसा न होने मनमानी इच्छायें पूरी न होने पर किसी वेश्या को देखने के बाद अफसोस करना।

'टो'

टोइयां खाय गोसइंया, लहबरिया खाय पिसान।

श०– टोंइया– अपशकुन जाति का सुग्गा। गोसइंया– मालिक। लहबरिया– एक अच्छी जाति का सुग्गा।

कहावत तोते के ऊपर कही गई है।

टोइयां जाति का सुग्गा जिसकी चोंच हल्की पीली होती है, बड़ा अपशकुनी होता है। उसको

पालने वाला मालिक अपनी जान तक से हाथ धो बैठता है और लहबरिया सुग्गा जिसकी पूंछ लम्बी होती है वह आटा खाता है। लोगों को लहबरिया तोता ही पालना चाहिए।

टोटे का मारा बनिया धर जोगी का भेस
हांड़ी भिख मागंत फिरत घर–घर देस–बिदेस।

श०– टोटे–टूटा होना, हानि का होना।

कहावत व्यापार सम्बन्धी है।

अ०– जब व्यापार में किसी बनिये को हानि होती है और अपने व्यवसाय में वह एकदम से टूट जाता है तो चारों ओर भटक कर वह भीख तक मांगने लगता है।

टोलन मं घर–टोल भला
सब बाजन मं ढोल भला।

श०– टोलन– मानव का एक छोटा सा समुदाय जहाँ रहता है।

कहावत अपने टोला के प्रति कही गई है।

अ०– सभी टोलों से बढ़कर अपने घर वाले लोगों का टोला–परिवार अच्छा होता है। इसी प्रकार से सब बाजों में ढोल भली होती है जो घर–घर मिलती और बजाई जाती है।

टोना टामक टोटरू छान रह्या न भूल
यूं परगट हो जगत में, ज्यों लस्कर में धूल।

श०– टोना–नजर या दीठ लगना। टामक–जादू। टोटरू–टोटका। कहावत टोटका, जादू टोना, भूत–प्रेत उतार–पतार पर कही गई है।

अ०– मानव जीवन में भूत–प्रेत, बैताल आदि की शंकायें बहुत रहती हैं। वैसे आमतौर पर अनपढ़ छोटी जातियों में इसका भेद अधिक देखा जाता है। कहा गया है कि इन सब को छाने यानी पैर बांधकर रखना चाहिए। ये सब बाधायें भीड़–भाड़ मेला–ठेला में उभरकर सामने आ जाती हैं जैसे भीड़ में धूल उठने लग जाती हो। आज भी गांव, शहर, कस्बे की लगभग ५० प्रतिशत स्त्रियां तो इस बाधा को मानती हैं चाहे अंधविश्वास हो, चाहे उनका अपना विश्वास हो। किन्तु महात्मा तुलसीदास जी ने इस गति को सत्य नहीं माना है। भरत जी के मुंह से कहलवाया है–

'जे तजिके हरिहर चरन भजहिं भूत घनघोर।
तेहिकै गति मोहि देउ विधि जौ जननी मति मोर।।

यानी भूत–प्रेत बाधा मानने वालों को भी कष्ट कम नहीं होता है।

'ठ'

ठठेरे–ठठेरे बदलौना नहीं होत।

श०– ठठेर–बर्तन बनाने वाले। बदलौना–अदला–बदली करना।

कहावत बर्तन का व्यवसाय करने वालों के प्रति कही गई है।

अ०– व्यवसाय कोई भी हो आपस में ये सब एक–दूसरे से हानि–लाभ नहीं लेते हैं।

ठसक बड़ा जिव नीकय नाहीं।

श०– ठसक–नखरे।

अ०– कहां तो तबीयत इतनी खराब है कि शरीर दुर्बल होकर कांटा हो गया है और नखरे बड़े भारी हैं।

ठग ना देखे ऊ देखे कसाई सेर ना देखे ऊ देखे बिलाई।

श०– ठग– जो राहजनी करता हो, किसी के साथ धोखाधड़ी करता हो। कसाई–जो जानवरों का वध करते हैं।

अ०– ठग आदमी के माल– पानी की ठगी करता है। उसी प्रकार से कसाई जानवर का वध करता है। दोनों में कोई अंतर नहीं है। शेर और बिल्ली की शक्ल भी देखने में एक सी लगती है। दोनों देखने में एक जैसे लगते हैं।

'ठा'

ठाढ़ी तो ठाढ़िन रही, बइठी तो गोहरावै लाग।

श०– गोहरावै–बुलाने लगना।

कुछ स्त्रियों की आदत होती है कि वे काम कम या न के बराबर करती हैं मगर शोर– शराबा बेहद मचाती हैं कि हम काम करते–करते मरे जा रहे हैं।

अ०— जो काम कर रही थी वह तो खड़ी की खड़ी रही मगर जो बैठी थी वह लगी शोर मचाने।

ठाढ़िन खेती गाभिन गाय

दइव करै तौ मुंह मं जाय।

श०— ठाढ़िन–खड़ी खेत की फसल। गाभिन–गर्भवती गाय। दइव–भगवान।

कहावत दैवी दुर्घटना के प्रति कही गई है।

अ०— खेत की फसल जो पक चुकी हो कब पाला–पत्थर, बारिश शुरू हो जाय कुछ पता नहीं, उसी तरह से गाभिन गइया जब तक बच्चा न दे दे कब नुकसान हो जाय कुछ कहा नहीं जा सकता है। ये दोनों बातें जब भगवान की इच्छा होती है तभी मनुष्य को प्राप्त होती हैं।

ठाढ़ होय देआ बइठे के जगहा तौ कइन लेबै।

अ०— कोई कहीं पर भीड़ में या किसी से मदद मांगने में कहता है कि जरा सा सहारा खड़े होने भर को मिल जाता तो बैठने की जगह तो बना ही लेंगे।

ठाढ़े बढ़ई बइठ लोहार, अबहीं अबहीं करय सुतार।

अ०— बुलाये जाने पर बढ़ई जल्दी आता है। लोहार कहता है — बस अब्बे सामान बनाइत है तनी सुतार पाय जाई तौ।

ठाठ साहिबी माल कंधारी

श०— ठाठ–शौकीनी, दिखावा। माल–सामान। कंधारी–कथरी, पुराने, फटे कपड़ों से सिली गई गूदड़।

अ०— ऊपरी शान क्या कहना, पहिनावा एकदम अंग्रेजी है और पास में लिये हैं कथरी।

ठांव गुन काजर ठांव गुन करिखा।

श०— ठांव–आसपास में ही। गुन–गुण। करिखा–कालिख। एक ही वस्तु का कई तरह से प्रयोग करना।

अ०— कहीं कालिख को काजल के रूप में आंखों में लगाते हैं तो कहीं पर उसे धो–पोंछ कर साफ कर दिया जाता है।

ठाकुर पाथर माला लक्कड़ गंगा जमुनी पानी,

जब लग मन में सांच न उपजै चारों वेद कहानी।

कहावत 'मन मोर चंगा तौ कठौती मं गंगा' की तरह है। यदि मन सच्चा नहीं है तो शालिग्राम की बटिया पत्थर, माला काष्ठ, गंगा–यमुना का पावन जल पानी और चारों वेद कहानी मात्र हैं।

ठाला बनिया का करै

यहि कोठी क धान वहि कोठी करै।

श०— ठाला–खाली।

कहावत खालीपन को लेकर कही गई है। कहा ही है— 'खाली दिमाग शैतान का।

अ०— बनिया का व्यापार चलता नहीं तो खाली बैठे–बैठे भी क्या करे वह एक घर का सामान कभी इधर करता है तो कभी उधर रखता है।

ठैर–ठैर के चलिये जब होय दूर पड़ाव।

डूब जांत अधियाय के दौड़ चलय जब नाव।

श०— ठैर–ठैर–थमकर, धीरे–धीरे–रुक–रुक कर। पड़ाव–मंजिल। अधियाय–आधे रास्ते पर।

कहावत धैर्य और संतोष की महत्ता के प्रति कही गई है। कहा गया है–

'धीर धरय तौ पावै पारा

नाहीं तौ बूड़य बीचे धारा।'

अ०— जब दूर जाना हो तो सुस्ता कर चलो ताकि मंजिल पर आराम से पहुंच सको वर्ना दौड़कर चलने वाली नाव बीच नदी में ही डूब जाती है।

'ठो'

ठोठी बाली खा गदेलो देन तौ देइहै दादा।

श०— ठोठी–चने के बीज का बाहरी आवरण, बाली–खेतों में अनाज की बालियां। कहावत बच्चों की बेफिक्री पर कही गई है।

अ०— जो कुछ खेत में है बच्चो। ख़ूब खाओ, कौन परवाह तुम्हें है खेत का देन, पोत, लगान तो दादा देंगे ही।

ठोकर लगी पहाड़ की तोड़े घर की सील

श०— सील–जिस पर मसाला पिसता है।

कहावत बाहर का गुस्सा घर के अंदर आकर उतारने पर कही जाती है।

अ०– ठोकर तो लगी बाहर पहाड़ से और जब बाहर गुस्सा उतारने को न मिला तो आकर घर में रखी सिल को तोड़ने लग गये। विशेष बात यह कि जब आदमी बाहर से अपमानित होता है तो घर पर आकर सारा क्रोध उतारता है।

ठोकर जब लागै तो बुद्धि ठेकाने आवै।

अ०– कभी–कभी आदमी के लिए कष्ट बहुत जरूरी हो जाता है इसलिए कि उसे अपने आपको सबसे ऊपर रखने की आदत होती है। जो अपने आगे किसी की सुनता – समझता नहीं है, उसके लिए ठोकर लगना बहुत जरूरी इसलिए हो जाता है कि उसकी आंख अब तो खुल जाय, थोड़ी समझ आ जाय।

ठोंक बजा के वस्तु ले ठोंक बजा के दाम,
बिगड़त नाहीं बालिके देखभाल के काम।

किसी वस्तु के खरीदने या कहीं भी किसी लेन–देन के मामले में बहुत देखभाल के, सोच समझ के काम करना चाहिए। बाजार में सामान लेना है तो बाजार भाव का पता घूम कर लगाना तथा अच्छा सामान कहां, किस भाव पर मिल रहा है, देख समझ लेना चाहिए। इससे धोखा नहीं होता। कहा है–

'माटी के हांड़िव मनई ठोंक बजाय के लेत है।'

'ठं'

ठंडा लोहा गरम लोहे के काटत है।

लोहे के माध्यम से कहावत मनुष्य की सीख के विषय में कही गई है।

अ०– यह सही है कि जब लोहे को तपाकर लाल करके काटा जाता है तो देनी से ही वह गरम लोहा कटता है। इसी प्रकार से कोई आदमी जब क्रोध से बौखला उठता है तो उसके साथ चुपचाप रह जाने में ही कल्याण है। कहा है–

'एक चुप हजार बला टारत है।'

'ड'

डग-डग डोलन फरका फेंकन
कहां चले तुम बांड़ा
पहिले खाया रान परोसी
फिर गोसंइये कब छांड़ा।

श०– डग–डग–डगमगा कर, डोलन–चलना। फरका –ऊँच डीलडौल वाला, छप्पर में घुसते ही छप्पर में जिसकी पीठ छू जाती हो।

रान, परोसी–आसपास पड़ोस के लोग। गोसंइये–मालिक।

कहावत बैलों की पहचान पर कवि घाघ की है।

अ०– ऐसा बैल जो डगमगाते हुये चलता हो बताओ तो तुम कहां चले? छप्पर में घुसते ही अपनी पीठ से छप्पर उजाड़ दिया। उसके बाद पड़ोसियों का अमंगल किया और फिर मालिक को ले लिया। ऐसे बैल कभी नहीं लेना चाहिए।

'ड'

डइनिव क दमाद पियार होत है।

श०– डाइन–एक ऐसी दुष्टात्मा है जो सभी को मार कर खा जाती है। कहावत दामाद पर कही गई है।

अ०– जो डाइन सभी के लिए मौत का पैगाम बनी है दामाद जैसा व्यक्ति उसे भी प्रिय होता है। इसलिए कि लड़की का भाग्य दामाद के बदौलत ही होता है।

डरा सो मरा।

अ०– डरने वाला हमेशा भयभीत रह कर जीता है। इसलिए न्याय की बात पर कभी किसी से भयभीत नहीं रहना चाहिये।

डरे लोमड़ी से नाम दिलेर खां।

श०– दिलेर खां–दिलवाला, हिम्मतवाला।

अ०– लोमड़ी जैसे छोटे जानवर से तो डर गये और नाम है हिम्मत वाला।

कहावत नाम की विडम्बना पर कही गई।

'डा'

डाल क चूका बंदर
बात का चूका आदमी फिर नहीं संभलता।

अ०– जब मनुष्य कहीं पर चूक जाता है तो उस पर यह कहावत कही जाती है।

बंदर का जब डाल से अचानक हाथ छूट जाता है तथा आदमी के मुंह से बात अचानक निकल जाती है तो फिर वह उसे नहीं संभाल पाता है।

डारय क दाली मं डार दिही भातें मं
आव दाल–भात सानि खा, माना नोन दाली मं।

अ०– कार्य करते समय ध्यान से उतरते ही कोई न कोई गलती जरूर हो जाती है। किसी स्त्री ने नमक दाल में डालने के बजाय चावल में डाल दिया और कहा कि दाल चावल मिलाकर खालो समझ लो कि नमक दाल में पड़ा है।

'डु'

डुग–डुग बाजै तौ बहुत नीक लागै
नउआ नेग मांगै तौ उठि बैठ लागै।

श०– नउआ–नाई। नेग–शुभकाम में अपना हक। उठि–बैठ–बुरा लगना।

कहावत किसी शुभ समय पर प्रजाओं के नेग मांगने के उपलक्ष्य में कही गई है।

अ०– जब बाजा बज रहा था, कार्यक्रम बड़ी धूमधाम से संपन्न हो रहा था उस समय बड़ा अच्छा लग रहा था। मगर जब नेग देने की बारी आई तो घर के मालिक का खर्चे के मारे बुरा हाल हो रहा था।

'डू'

डूंडी गइया सदा कलोर।

श०– डूंडी–नाटे कद की। कलोर–बिन ब्याई।

अ०– नाटे कद का आदमी या गाय सदा ही कम उम्र का लगता है।

डूबते को तिनके का सहारा।

आपत्तिग्रस्त आदमी को जब कहीं पर किसी का जरा सा भी सहारा मिल जाता है तो पर्याप्त होता है।

ले डूबेगा भंडू भंडुआ
रात समय नहीं देते झडुआ।

श०– भंडुआ–वेश्याओं के यहां रहने वालें, ग्राहक ले आने वाले आदमी। कोई भंडुआ रात को झाडू लगा रहा था तो देखने वाले ने कहा–अरे भंडुवे! तू तो घर–गृहस्थी में रहता नहीं है। लोकरीति में रात को झाडू लगाना मना है। तू तो घर को ले डूबेगा।

'डे'

डेढ़पाव आटा पुल पै रसोई।

गरीब रहते हुए भी अहम् की भावना रखना। दिखावा करना।

अ०– जरा सा आटा सेंकने बैठी तो सबसे ऊंची जगह पर बैठी कि हमारे घर भी खाना बनता है।

डेहरी के भूत होइगे।

अ०– हर समय दरवाजे को छेंक कर बैठ जाना। हर समय उठना–बैठना बनाये रखना।

डेढ़ चाउर कै खिचरी अलगै पकत रहत है।

सबसे अलग हटकर जब कोई आदमी हर समय अपनी राय, बात, विचार देता रहेगा तो उस पर कहावत कही जाती है।

डेढ़ सेर बाजरा बजरी–सांवा।
कोदो काकुन सवइया भै बोआ।

श०– बाजरा–बजरी, सांवा, कोदौ, काकुन सभी अनाजों के नाम हैं।

कहावत घाघ कवि की है जो खेती विषयक है।

अ०– एक बीघे खेत में बजरी–बाजरा, सांवा, डेढ़ सेर बोना चाहिए और कोदो, काकुन आधा सेर बोना चाहिए।

'डो'

डोले हथवा तो बोले मितवा।

अ०– हाथ का शाहखर्च जो होता है उसके सभी मीत होते हैं। कहा है–

'हाथा डोलन मीठा बोलन' यानी जो मधुर वाणी बोलेगा और लोगों से लेने–देने का व्यवहार बनायेगा उसी से लोग दोस्ती रखते हैं।

डोली न कहार बीबी भई तयार।

अ०– मैके या ससुराल जहां भी जाना है वहां से न कोई लेने आया न डोली आई मगर बीबी जाने को तैयार बैठी हैं।

डोली आई–डोली आई बड़ा मन मं चाव
डोली में से निकला भोंडा बिलार।

किसी व्याह– शादी में पहले के समय में दूल्हा या बहू डोली में आती थी। दूल्हा बहू को देखने की उत्सुकता किसके मन में नहीं होती है। यहां तक कि गांव–गिरांव में दूर–दूर के लोग भी इसी प्रतीक्षा में खड़े रहते हैं कि दूल्हा देख लिया जाय। चलो फलां के घर दुल्हन आई है, देख आयें। मगर कहावत से 'नाम बड़े दर्शन थोड़े' सामने आया। डोली में से एक भोंड़ा सा बिलार निकला। यानी दूल्हा बुद्धू किस्म का बदशक्ल दिखाई दिया।

डोला से भतार के घर कब जयबू ए लबलब लोला।

श०– लबलब लोला–चंचल स्वभाव की लड़की।

किसी चंचल स्वभाव की हलबल लड़की के प्रति कहावत कही गई है।

अ०– ऐ चंचल लड़की, तू कब डोले में बैठकर अपने पति के घर जायेगी?

'डौ'

डौल चिथरौ के नहीं हबिस कनातन कै।

कहावत पैसे की विडंबना पर कही गई है।

अ०– घर में चिथरा तक तो है नहीं और शौक कनात लगवाने की है कि उसे घेरवा कर बैठा जाय।

'ढा'

ढाल बांधूं तलवार बांधूं कसके बांधूं फेंटा
बीच बजार में डाका मारूं तब बाप का बेटा।

कहावत से विरासती कार्य की अनुभूति होती है।

अ०– ढाल, तलवार बांधकर सिर पर फेंटा बांधूं और बीच बाजार में जाकर डाका मारूं तो समझो कि अपने बाप का बेटा हूं।

ढांढ़िन के घरे कै बिलारिव
गौनहर होत है।

श०– ढांढ़िन–गाने वाली जो बच्चे के होने पर सोहर आदि गाती हैं।

यह बहुत पुरानी परंपरा थी।

कहावत उस समय कही जाती है जब किसी पेशेवर के घर में या साथ में रहने वाला भी बहुत कुछ कला सीख लेता है। उसे भी पूरा नहीं तो आधा–अधूरा ज्ञान तो हो ही जाता है।

अ०– ढांढ़िन के घर की बिल्ली भी गीत सुनते–सुनते गौनिहारिन हो जाती है।

ढाक के उहै तीन पात रहि गये।

सदा एक सी स्थिति पर कहावत कही जाती है।

अ०– घर से सब चले गये वही पुराने लोग इने गिने बस रह गये। ढाक के तीन पात।

ढाक तर कै फूहर महुआ तर कै सूघर।

श०– फूहर–बेसहूर। सूघर–सराहनीय।

अ०– ढाक के तीन पात मशहूर है इसलिए ढाक के पेड़ के नीचे बैठने वाली स्त्री फूहड़ है क्योंकि उसे छाया नहीं मिल पायेगी क्योंकि पत्ते कम होते हैं और महुये का पेड़ घना छायादार होता है तो उसके नीचे बैठनेवाली स्त्री चतुर कहलाती है। कहावत का तात्पर्य है कि समृद्ध व्यक्ति के पास बैठने से लाभ होता है। अतः साथ अच्छे और सामर्थ्यवान का पकड़ना चाहिये।

'ढि'

ढिलढिल बेंट कुदारी हंसिके बोलै नारी
हंसिके मांगै दामा तीनों काम निकामा।

श०– ढिलढिल–ढीला। कुदारी–जिससे जमीन की गोड़ाई होती है। बेंट–कुदार, कुल्हाड़े आदि को पकड़ने का लकड़ी का हत्था। दामा–पैसा।

अ०– यदि कुदार का बेंट ढीला है और नारी हंस के पराये पुरुष से बोलती है तथा कर्ज दिया धन यदि

कोई हंसकर मांगता है तो ये तीनों काम बेकार होते हैं।

'ढी'

ढीठ पतोह धिया गरियार
खसम बेपीर न करै विचार।
घरे जलावन अन्न न होई
घाघ कहै सो अभागी होई।

श०– ढीठ–जबर, निडर। घिया–लड़की। गरियार आलसी, गाली देने वाली, मुँहफट खसम–पति। बेपीर–बेदर्द। जलावन–लकड़ी।

कहावत घाघ कवि की है।

अ०– यदि पतोह निडर हो, बेटी आलसी हो, पति दुख–सुख का ध्यान देनेवाला न हो और घर में चूल्हे जलाने तक की लकड़ी भी न हो तो इससे बढ़कर दयनीय दशा क्या हो सकती है?

ढीली धोती बनिया, उल्टी मूंछ सोनार
बड़ा पैर कोंहार कै तीनों कै पहिचान।

अ०– बनिया हमेशा ढीली धोती पहनता है। सोनार की मूंछ ऊपर की ओर और कोंहार का पैर बड़ा होता है, यह तीनों की पहचान है।

'ढे'

ढेला ऊपर चील जौ बोलै
गली–गली मं पानी डोलै।

अ०– ढेले के ऊपर बैठकर यदि चील बोलती है तो समझो कि पानी खूब बरसेगा।

ढेकी सरगे जाई तौ उहूं धान कूटै क परी।

कहावत का मतलब है कि जिसका जो काम है वह उसे मरने के बाद भी करना पड़ेगा, छुट्टी नहीं मिलेगी। जैसे कहा गया है कि बेगार करे वालेन क सरगेव मं बेगारी करै क परी।

'ढो'

ढोर मरय ना कउवा खाय।

श०– ढोर–सुअर।

अ०– सुअर मैला खाता है तो कहते हैं कि मरने पर कौवे भी उसे नहीं खाते।

ढोल क घर पोल।

जब कोई आदमी अंदर से थोथा रहता है तो कहावत कही जाती है। जैसे–ढोल दोनों ओर से मिढ़ी होती है मगर अंदर से एकदम से खाली होती है। वैसे ही आदमी अंदर से दमदार नहीं होता।

ढोवै क पलरी गावै क गीत।

अ०– किसी गरीब आदमी को जो मजदूर की तरह हो, उसके लिए कहा गया है कि ढो रहे हैं बोझ और गा रहे हैं गीत। आदमी कभी–कभी जहाँ रहता है वहीं पर मौज–मस्ती ले लेता है किन्तु अन्य लोगों को यह बात बेतुकी प्रतीत होती है।

ढोकी बोलस जाय अकास
अब नाहीं बरखा के आस।

श०– ढोकी– एक पंछी है जो बरसात के अंत में बोलने लगता है तो समझो कि वर्षा समाप्त हो गई।

ढोगीं ढोंग करे अढ़ाई घरी सांस भरे।

कहावत ऐसे आदमी व पाखंडी व्यक्ति पर लागू है जो पूजा करने का स्वांग करता है। घंटों पूजा करते हैं मगर दया– धर्म के नाम पर शून्य हैं।

'त'

तवा कै तोर खपरी कै मोर।

कोई जल्दबाज आदमी अपना मतलब जल्दी ही सिद्ध करना चाहता है तो यह कहावत कही जाती है।

अ०– तवे की रोटी तुम्हारी और जो सिंक कर रखी है वह हमारी है।

तकदीर के आगे तदबीर नहीं लगतै।

कहावत भाग्यवाद पर है।

अ०– किस्मत के आगे चाहे जितना भी उपाय लगाओ सारा बेकार हो जाता है। कवि रहीम के शब्दों में–

राम न जाते हरिन संग सीय न रावन साथ।
'जौ रहीम भावी कतहुं होत आपने हाथ।।

तकाजे का हुक्का भी हराम है।

श०— तकाजे—बकाया धन मांगने जाना।

कहावत मांगने पर कही गई है।

अ०— धन वसूली के समय बकाया धन व्यवहार के नाम पर हुक्का पीना भी बुरा है। उसे नहीं पीना चाहिए।

तब किछु हाथ न लगिहै,
मूंस जाहि जब चोर।

अ०— आदमी के लिए समय की चूक बहुत बड़ी हानि होती है। उस समय कुछ भी हाथ न लगेगा जब चोर सब लेकर चले जायेंगे।

तड़के क भूला सांझ की
घर आवै तो भूला नहीं कहते।

अ०— किसी गलती के बाद यदि आदमी शीघ्र ही सुधर जाय तो उसे गलती नहीं मानते। जैसे सुबह घर से बाहर जाकर भटक गया हो और शाम को घर वापस आ जाय तो उसे भूला नहीं कहा जाता है।

तत्ता कौर न निगलै मं न उगिलै मं।

अ०— कुछ काम ऐसे होते हैं कि उनमें बड़ा धर्म संकट उत्पन्न हो जाता है। न वह करते बनता है न बिना करे रहा ही जाता है। जैसे बहुत गरम भोजन न खाते ही बनता है और न उगलते ही बनता है।

'तन का उज्जर मन का सांवर बगुला जैसा भेस
तो ते तौ कउवा भला बाहर भीतर एक।

किसी धूर्त, कपटी, धोखेबाज आदमी के प्रति कहावत कही गई है।

अ०— देखने में तो तन के सुंदर हो मगर मन के काले हो, बगुला बरन वस्त्र पहने भले आदमी लगते हो। मगर मन इतना गंदा घृणित है कि तुमसे भला तो कौवा ही है जो भीतर—बाहर एक जैसा तो है, उसमें धोखा नहीं है। तुलसीदास के शब्दों में —

'मन मलीन तन सुंदर कैसा।
विष रस भरा कनक घट जैसा।'

तन का बैरी ताप है मन का बैरी नेह
जिस जीवन में दो रमे गये जीव औ देह।

श०— ताप—क्रोध, गर्मी। नेह—प्रेम।

अ०— शरीर की दुश्मन गर्मी है और प्राणों का दुश्मन प्रेम है। जिसमें ये दोनों बसते हैं वह प्राण और शरीर दोनों से जाता है।

तन तकिया मन विश्राम
जहै परि रहे उहीं आराम।

अ०— शरीर रूपी तकिया को लगाकर मन चैन से जहां भी लेट जाय वहीं पर आराम मिलता है।

तन पर कपड़ा न घर मं अनाज
ददिया ससुर क रोपी काज।

श०— ददिया ससुर—ससुर के बड़े भाई। रोपी—ठानी। काज—क्रिया कर्म।

जब आदमी अपनी औकात को देखे, जाने, समझे बिना कोई काम शुरू कर दे तो उसकी मूर्खता पर दुःख होता है।

अ०— बताइये घर में न अनाज है, न पानी है। न पहनने को कपड़ा है मगर न जाने क्या समझ कर ददिया ससुर का क्रिया—कर्म करने की ठान ली। आगे क्या होगा, भगवान ही मालिक है। सामर्थ्य के बाहर कोई काम कभी नहीं करना चाहिए।

तन कै फूहर भैंस से भारी।
कहै—कहो 'मुझे नाजो प्यारी।'

कहावत किसी बेहद कुरूपा व बेहद मोटी स्त्री के प्रति कही गई है।

अ०— शरीर के रहन—सहन में फूहड़पन फूटा पड़ रहा है। मोटाई का हाल यह कि भैंस क्या होगी। उस पर नखरे ये कि मुझे नाजो प्यारी कहो। इससे बढ़कर व्यंग्य क्या होगा?

तन लगी धुपड़ी तो का छावै झोपड़ी।

श०— धुपड़ी—धूप।

कहावत आलस्य के प्रति कही गई है। यानी आग लगने पर कुआं खोदने से क्या लाभ?

अ०— जब शरीर में धूप लगी तो झोपड़ी छाने की याद आई। इस पर एक कथा है जो इस प्रकार है—

एक बुढ़िया जब रात को बहुत जगती तो कहती– सुबह झोपड़ी छाऊंगी और जब सुबह की धूप में जाड़ा कम हो जाता तो वह फिर आलस कर बैठती। अब तो धूप लगी अब कौन झोपड़ी छावे।

तन सीतल होय सीत सो
मन सीतल होय मीत सो।

अ०– शरीर को ठंढक शीत से मिलती है और मित्र मिल जाता है तो मन प्रसन्न हो उठता है।

तपै जेठ तौ बरखा हो भरपूर।

अ०– जब जेठ खूब तपता है तो निश्चय ही पानी खूब बरसता है।

तब लग झूठ न बोलो जब लग काम बसाय।

अ०– तब तक झूठ न बोलना चाहिये जब तक अपना काम चल जाय।

तलवरिया वो ही भली जो रन में हाथ दिखाय।
बैरी का टुकड़ा करै आप साफ बचि जाय।

अ०– तलवार वही भली होती है जो लड़ाई के मैदान में अपना कौशल दिखाये। जो बैरी को मारकर आप स्वयं बच जाय। यानी अपने कार्य में कुशलता दिखाये।

तलवार का घाव भरि जात है
मुला बात कै घाव नहीं भरतै।

अ०– कभी–कभी घर में बाहर के लोग ऐसी बात कह जाते हैं जो मनुष्य को जीवन भर नहीं भूलती। उसकी गांठ सदैव मन में सालती रहती है। कवि रहीम का कथन है–

रहिमन धागा प्रेम का मत तोड़ो चटकाय
टूटे से फिर ना जुरै–जुरै गांठ परि जाय।

गोस्वामी जी के शब्दों में–

तुलसी मीठे वचन से सुख उपजै चंहु ओर
वसीकरण एक मंत्र है तजि दे वचन कठोर।

बात सही है, तलवार का घाव तो समय के मलहम से भर जाता है मगर बात का घाव मनुष्य को जीवन भर कष्ट देता है।

तउल तउल के मोती चीन्हे
घोड़ा चीन्हे काने से
चाल ढाल से रानी चीन्हे
राजा चीन्हे दाने से।

अ०– मोती की पहचान तौलने पर और घोड़े की कान से, रानी की पहचान उसके चाल–ढाल से तथा उसकी उदारता से होती है।

तलवार मारै एक बार एहसान मारै बार–बार।

अ०– तलवार तो एक बार में वार करके टुकड़े कर देती है मगर किसी के साथ किया गया एहसान भलमनसाहत बार–बार उसके भले होने की याद दिलाता है।

तवा न तगारी काहे कै भठियारी।

कहावत किसी पेशेवर के पास सामान न हो उस पर कही जाती है।

अ०– जब भठियारिन के पास उसके काम का सामान कुछ है ही नहीं तो किस काम की भठियारिन है।

तवा तगारी आग जल अन्न ईंधन जौ होय
जंगल दूर उजाड़ में भूखे मनुज न रोय।

कहावत मनुष्य की आवश्यक वस्तुओं के प्रति कही गई है।

अ०– तवा, बर्तन, आग, पानी, जलाने की लकड़ी यदि किसी आदमी के पास है तो वह दूर जंगल में भी खुश रह सकता है।

तसलवा तुम्हार कि हमार।

यह कहावत एक कथा के आधार पर कही गई है।

'एक समय की बात है कि मिथिला में अकाल पड़ गया था। लोग दूसरों का छीनकर खाने लग गये थे। कोई यदि भात बनाता तो कुछ लोग पहुंच जाते कहते तसला तुम्हार कि हमार? जो लोग तुम्हार कहते तो उसे माफ कर देते और जो कहते हमार तो उनका भात छीन कर खा जाते थे।

तपा जेठ मं जौ चुइ जाय
सब नखत हलुकै परि जाय।

अ०– जेठ माह जब तपे और पानी बरस जाय तो सभी नक्षत्र धीमें पड़ जाते हैं।

तपै मिरिगसिरा तड़पै चारि
बन, बालक औ भैंस उखार।

श०– मिरिगसिरा–एक नक्षत्र का नाम है। तड़पै–व्याकुल उखार–ईख। कहावत मौसम संबंधी है।

अ०– जब मृगशिरा नक्षत्र की तपन बढ़ती है तो जंगल, बालक, भैंस और ईख सभी तपन से व्याकुल हो जाते हैं क्योंकि उस समय सूर्य के कर्क रेखा पर होने के कारण धरती तवे के समान जलने लगती है। भैंसों को इतनी गर्मी होती है कि उनका दूध सूखने लगता है। बन सूखने लगते हैं और ईख के पौध मरणासन्न हो जाते हैं। बच्चे छटपटा जाते हैं।

तब दूध दही कै नदी रही
अब काव कहीं नहि जाय कही।

कहावत अपने भारतदेश की पुरानी याद दिलाती है।

अ०– एक समय हमारे देश में दूध, दही की नदियां बहती थीं।

युग बदला, मान्यतायें बदलीं। आज सम्पन्नता के स्थान पर विपन्नता सामने आकर खड़ी है।

तरकारी है तरकारी या में पानी की अधिकारी।

कहावत साग सब्जी की उपज के प्रति कही गई है।

अ०– साग भाजी बोने के बाद इसमें पानी की बड़ी आवश्यकता पड़ती है।

तरने को गंग मरने को कासी।

अ०– हमारे हिन्दू धर्म में तरने को गंगा और मरने को काशी का स्थान बड़ा ही महत्वपूर्ण माना गया है। कहा गया है–

चना चबैना गंग जल जो पुरवै करतार
कासी कबहुं न छांड़िये विश्वनाथ दरबार।

इस समय महात्मा कबीरदास की एक पंक्ति स्मरण हो आई है। उन्होंने कहा है 'जौ कबिरा कासी मरै तौ रामहि कवन निहोरा इसी बात को लेकर अपने अंतिम समय में महात्मा कबीरदास काशी को छोड़कर मगहर चले गये।

'सकल जनम सिवपुरी गंवायो मरत बेर मगहर उठि धायो'।

तपै भदइंया मं जालिम सिंह
खपड़ाडीह तपै हरपाल।

श०– भदइंया और खपड़ाडीह ये दोनों ही स्थान जनपद सुल्तानपुर में हैं।

अ०– एक समय था जब भदइंया में जालिम सिंह और खपड़ाडीह में हरपाल सिंह का बहुत ही बोलबाला था। अपने शौर्य के लिए दोनों ही बहुत प्रसिद्ध थे।

तन पै नहिं लत्ता पान खाय अलबत्ता।

कहावत आदत पर व ऊपरी दिखावे पर कही गई है।

अ०– घर में औकात यह कि खाने–पहनने को तो है नहीं मगर पान जरूर खायेंगे।

तन सुखी तो मन सुखी।

कहावत से गोस्वामी जी की पंक्ति स्मरण हो आती है–

'तुलसी धन धाम सरीरहि लै'।

संस्कृत में एक श्लोक है–

'शरीरमाद्यम् खलु धर्म साधनम्'।

तन ताजा तो कलंदर राजा।

श०– ताजा–स्फूर्त, प्रसन्न। कलंदर–एक प्रकार के फकीर होते हैं जो अपने को बादशाह समझते हैं।

अ०– शरीर स्वस्थ हो । पेट भरा हो, मन प्रसन्न हो तो फकीर भी अपने को राजा समझता है।

तन गुदड़ी मन धागा क्यों कुछौ कहै मन लागा।

श०– शरीर पर गुदड़ी हो, मन धागा अर्थात् अनुरक्त हो उसके बाद कोई कुछ भी कहे मन उसी में लगा रहता है।

तन सोहे कपड़ा और रन सोहै रनजीत।
वीर पुरुष वो ही भला जो सबसे राखै प्रीत।।

अ०– शरीर पर कपड़ा सोहता है और बहादुर लड़ाई में अच्छा लगता है। पुरुष वही भला जो सबसे अच्छा व्यवहार करता है।

तर मुड़िया पताल ढुंढ़िया।

यह कहावत धूर्त के प्रति कही गई है जो लाक्षणिक है।

अ०— जो आदमी नीचे सिर गड़ा कर बैठे वह हर समय कुछ न कुछ शरारत सोचने वाला होता है। बड़ा दगाबाज होता है।

तरे कै सांस तरेन ऊपर के ऊपरै रहिगै।

अ०— अचानक किसी के दुर्घटनाग्रस्त होने की बात सुनते ही आश्चर्य में अवाक् रह जाना।

तवाइफ के बिछौनों पर बना है काम सोने का
न ठहरी ई मुलम्मा आय रास्ता जर के खोने का।

श— तवाइफ–वेश्या। ठहरी–रुकना। मुलम्मा–ऊपरी चमक–दमक। जर–रुपया–पैसा।

कहावत वेश्यागामी लोगों के प्रति कही गई है।

अ०— जो लोग रंडी के यहां जाने के आदी होते हैं वे ऊपरी चमक–दमक में इतना खो जाते हैं कि आदत और इज्जत तो जो बिगड़ती है, वह तो खराब होती ही है इसी के साथ घर का सारा धन बर्बाद हुए बिना नहीं रहता है। आदमी तबाह हो जाता है। स्त्री–बच्चे सभी के भीख मांगने तक की नौबत आ जाती है।

तबेले की बला बंदर के सिर।

श०— तबेले— जहां पर घोड़े बांधे जाते हैं। बला–रोग–दोष।

ऐसा लोगों का विश्वास है कि यदि घोड़साल में बंदर बांध दिये जांय तो घोड़ों का रोग बदंर को लग जाता है। घोड़े स्वस्थ हो जाते हैं।

अ०— जब किसी की गलती किसी के सिर मढ़ी जाती है तो कहावत कही जाती है।

जस मुकुंद तस पादन घोड़ी विधिना आन मिलाई जोड़ी।

अ०— जब दो आदमी एक ही जैसे होते हैं तो कहावत कही जाती है। जैसा चढ़ने वाला वैसी ही घोड़ी भी है। भगवान ने दोनों की जोड़ी खूब बनाई है।

तवा चढ़ाय बइठी मिसराइन, घर मा आग न आंगन पानी।

अ०— बिना सामान जुटाये हुये भोजन बनाने वाली स्त्री पर कहावत कही गई है।

घर में किसी सामान की व्यवस्था नहीं है और मिसराइन खाना बनाने के लिये बैठी हैं। कैसे बनेगा खाना?

'ता'

ताते दूधे बिलार नाचै।

किसी भूखे आदमी के सामने खाने–पीने का सामान मांगते ही तुरंत न मिल पाये तो उसकी दशा बड़ी ही शोचनीय होगी, उसकी छटपटाहट देखते ही वनेगी। इसी प्रकार से खौलते दूध को देखकर बिल्ली चारों ओर घूम रही है। कैसे किस तरह से दूध पा जाऊं और पी लूं।

ताली बिन कस ताला,
जोरू बिन कस साला।

अ०— जब ताला खोलने की कुंजी ही न हो तो ताला लगाना ही व्यर्थ है। इस प्रकार बिना पत्नी के साला कैसा? क्या नाता साले का है?

ताते पोव कोरौरव खा।

श०— तातय— गरमा–गरम। पोव–बनाना। कोरौरव–खरा–खरा।

अ०— गरम–गरम बनाओ और खरी–खरी खाओ, इसी में खाने का आनंद है।

ताक झांक कर मत चलो यह है बुरा स्वभाव।
'जार' कहे या चोरटा या फिर ऊदबिलाव।।

श०— तांक–झांक–चुपके इधर–उधर देखता हुआ।

अ०— चोरी–छिपे इधर–उधर ताकते हुये किसी के यहां झांकते हुये, मत चलो क्योंकि ऐसा करे तो वह चोर है या ऊदबिलाव है।

ताका भैंसा गादर बैल नारि कुलच्छन बालक छैल
इनसे बचै चतुरा लोग राज छोड़कर साधय जोग।

श०— ताका–तिरछा देखने वाला भैंसा। गादर–चलते–चलते बैठ जाने वाला बैल। कुलच्छन–चरित्रहीन नारी कुलक्षिणी। छैल–बचपन से ही शौकीन स्वभाव का बालक। रसिक तबीयत का व्यक्ति। चतुरा–चतुर। साधय–साधना, एकाग्र मन का होना।

कहावत कवि घाघ की है जिन्होंने उपरोक्त लक्षणों वाले लोगों से बचकर रहने की बात कही है।

अ०– जो भैंसा तिरछा ताकता हो। बैल बैठ जाने वाला गादर हो। नारी चरित्र की दुष्टा हो। जो बालक आरंभ से ही शौकीन हो, इन सबका साथ छोड़ देना चाहिए। चाहे घर छोड़कर संन्यास ही क्यों न लेना पड़ जाय।

ताली एक हाथ से नहीं बजतै।

अ०– दोस्ती, दुश्मनी, प्रेम, शादी इत्यादि एक तरफ से नहीं होता है। यह दोनों पक्षों का विषय होता है। जिस तरह से ताली एक नहीं दोनों हाथ से बजती है।

ताल उलझ कर उलझे क्यार
तब बरखा हो पूरंपार।

अ०– ताल में पानी इतना लबालब भरा हो कि उबलकर एक दूसरे के ऊपर चढ़ता उतरता रहे, इतना कि उबल कर बाहर आ जाय, पानी बहने लगे तो समझो कि वर्षा खूब होगी।

ताकत कमर मं चाही औलाद के लिये
राखिय भरोसा बस मदार के लिये।

श०– औलाद–लड़का। मदार–मुसलमानों के देवता।

कहावत का आशय है कि कोई भी कार्य या तो अपने बलबूते पर करो या भगवान के नाम पर छोड़ दो। दूसरे पर भरोसा करना मूर्खता है।

यदि औलाद चाहिये तो कमर में बूता होना चाहिये। यदि दैवी गति के कारण बच्चा नहीं हो रहा है तो मुल्ला–मौलवी, मदार–फकीर, खुदा पर भरोसा करो, मगर किसी आदमी पर भरोसा मत करो।

ताल से तलइया गहरी
सांप से संपोला जहरी।

श०– संपोला–सांप का बच्चा। जहरी–जहरीला।

कहावत विरासती मामले पर कही गई है। लोग किसी छोटी उम्र वाले को व्यंग्य बोलते सुनेंगे तो कह बैठते हैं 'अरे सांप के सांपै होत है, या नाग के संपोला है।' यानी बेटे को बाप से भी अधिक खतरनाक कहा जाता है।

'ति'

तिनका गिरा गयंद मुख नेक न घटो अहार,
सो लै चली पिपीलिका पालन को परिवार।

श०– तिनका–खर, घास का टुकड़ा। गयंद–हाथी। घटो–कम। अहार–भोजन। पिपीलिका–चींटी। पालन–खिलाने को। परिवार–कुटुम्ब। घर के सदस्य।

कहावत सम्पन्न व्यक्ति पर कही गई है। उसके अपार धन के एक अंश की क्षति का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। यदि वही धन किसी निर्धन को मिल जाता है तो उसके जीवन का आधार हो जाता है।

अ०– हाथी के मुंह से तिनका गिरता है तो उसके खाने में कहीं कोई कमी नहीं होती मगर वही तिनका जब चींटी पा जाती है तो उससे उसके परिवार का पालन हो जाता है।

तिनका कै चटाई नौ बिगहा फैलाई।

कहावत दिखावे के प्रति कही गई है।

अ०– घास–फूस की चटाई को काफी जगह में फैलाकर जाहिर किया जा रहा है कि हमारे पास भी यह सामान है।

तिरिया चरित औ चोर की घात
पाई पड़य न कह गये नाथ।

श०– तिरिया–स्त्री। चरित–चरित्र, स्वभाव, चालचलन। घात–दांव, समय का इंतजार करना, ताकझांक में रहना।

अ०– स्त्री का चरित्र और चोर की चालबाजी कोई पकड़ नहीं सकता। स्त्री चरित्र पर कहा है–

'त्रिया चरित्रम् पुरुषस्य भाग्यम्
दैवो न जानामि कुतो मनुष्यः।
तिरिया चरित जानय नहिं कोय
खसम मारि के सत्ती होय'।

अ०– दुष्टा स्त्री इतनी हाव–भाव बदलने वाली, तरह–तरह की कलाकारी दिखानेवाली होती है कि कोई भी उसे समझ नहीं पाता वह अपने पति को मरवाकर चलती है सती होने।

तिरिया बिख की बेल है यासूं बचकर चाल
याको नेहा खोवतु है दीन, धरम, धन, माल।

श०– बेल–लतर। याको–इसका। नेहा–प्रेम। खोवतु–नाश करना।

कहावत. स्त्री के प्रति आसक्ति के लिए कही गई है।

अ०– स्त्री विष की बेलि है उससे बँच पर चलना चाहिए। उससे प्रेम करने वाला ईमान, धर्म, धन, माल सब कुछ खो बैठता है।

तिरिया जाति कमान है
जित चाहो तित तान।

अ०– स्त्री जाति इतनी नाजुक है, इतनी कमजोर होती है कि जिधर चाहो उधर धनुष की तरह मोड़ लो।

तिरिया तुझसे जो कहे भूल न तू वह मान
तिरिया मत पर जो चले वह नर है निरिज्ञान।

अ०– इसमें नारी–शिक्षा की निन्दा है। स्त्री तुझसे जो कुछ कहे उसे भूल कर न मानो। स्त्री के कहने पर चलने वाला ज्ञान शून्य होता है।

तिरिया तुझमें तीन गुन, अवगुन हैं लख चार
मंगल गावै लत रचे, कोखन उपजै लाल'।

श०– मंगल–उत्सव–आयोजनों के गीत। लत–आदत रचे–रचना या कला, कोखन–गर्भ। उपजै–पैदा हो। लाल–बालक रत्न।

अ०– नारी में तीन गुण बड़े भले होते हैं, उत्सवों में गीत गाना, रचना करना और पेट से बालक रत्न को जन्म देना।

तिरिया थिरकत जो चले, वाको भला न जान,
जैसे हाथ लिखेर का कांपत हो नुकसान।

श०– थिरकत–ठुमकती हुई। लिखेर–चित्रकार। कांपत–कांपना, हिलना।

कहावत नारी की चाल–ढाल पर कही गई है।

अ०– जो स्त्री ठुमकती हुई चले वह ठीक नहीं है जैसे चित्र बनाते समय चित्रकार का हाथ कांपने पर तस्वीर खराब हो जाती है।

तिरिया के बिना नर है ऐसा
राह बटाऊ होवै जैसा।

अ०– स्त्री के बिना पुरुष उसी प्रकार से है जैसे राह चलन्तू कोई राहगीर हो।

तिरिया नर के बिन है ऐसी
बिन मालिक के खेती जैसी।

अ०– बिना पुरुष के नारी उसी प्रकार से है जैसी बिना मालिक के खेती हो।

तिल तीखुर, दाना, घी सक्कर में,
साना, बूढ़ा होय जवाना।

श०– तिल–तेल वाला एक पौधा। तीखुर–एक पेड़। कहावत स्वास्थ्य विषयक है।

अ०– तिल, तीखर, पोश्ता का दाना, इसको घी शक्कर में सान कर खाने से बूढ़ा आदमी भी जवान हो जाता है।

तिरिया तेरह, मर्द अठारह।

अ०– कन्या का विवाह १३ वर्ष और लड़के का विवाह १८ वर्ष में कर देना चाहिए।

राजस्थान की कहावत है 'छोटो दूल्हो बड़ो सुहाग'। यानी दूल्हा छोटा होने पर सुहाग लंबा होता है।

तिरिया तो है सोभा घर की
जो हो लाज रखावन नर की।

अ०– स्त्री तो घर की शोभा होती है। वह अपने पति की इज्जत बढ़ाती है। कुशल गृहणी, कुल–खानदान, नाते–रिश्ते, पास–पड़ोस सभी की मान मर्यादा का ध्यान रखती है। 'चाणक्य नीति दर्पण' में चाणक्य ने कहा है–

'सा भार्या या शुचिर्दक्षा सा भार्या या पतिव्रता
सा भार्या या पतिप्रीता सा भार्या सत्यवादिनी'।

इसका अनुवाद हिंदी में है–

'सत्य मधुर भाखे वचन, और चतुर शुचि होय।
पति प्यारी जो पतिब्रता तीय जानिये सोय।।

संस्कृत विद्वानों का मत है–

'यस्य पुत्रा वशीभूतो, भार्या छन्दानुगामिनी
विभवे यस्य सन्तुष्टस्तस्य स्वर्ग इहैव हिं।

हिन्दी में है–

'सुत आज्ञाकारी जिनहिं, अनुगामिनि तिय जानि,
विभव अल्प संतोष तेहि, सुरपुर इहां पिछान।

तिरिया पुरुष बिन है दुखी जैसे अन्न बिन देह
जरे बरे है जियरा, जस खेती बिन मेह।

अ०– पति के बिना स्त्री का जीवन वैसे ही है जैसे अन्न के बिना खाये शरीर है। शरीर में जलन–तपन इस तरह होती है जैसे बिना पानी के खेत की होती है।

गोस्वामी तुलसीदास के शब्दों में–

'जिव बिनु देह नदी बिनु बारी,
तैसेइ नाथ पुरुष बिन नारी।
तन धन धाम धरनिपुर राजू
पति विहीन सब सोक समाजू।'

पति परमेश्वर होता है उसके बिना नारी–जीवन नरक तुल्य हो जाता है। गांव में कहते हैं–

'एक लाख नैइहर सवा लाख सासुर
हाय राम! एक्कै मनइया बिन बिगड़ी'।

तिरिया भली वही है भाई
पुरुष संग जो करै भलाई।

अ०– स्पष्ट है।

तिरिया रोवै पुरुस बिन,
खेती रोवै मेह बिन।

अ०– स्पष्ट है।

तिल रहे तो तेल बहुत होये।

अ०– जब अपने पास मूल वस्तु है तो संबंधित तमाम वस्तुयें प्राप्त हो सकती हैं। यदि तिल पास में है तो जब चाहेंगे तेल पिरवा लेंगे।

तिनका होय तो तोड़ दूं प्रीति न तोड़ी जाय।

कहावत प्रेम के तोड़ने पर कही गई है।

अ०– कोई खर हो तो तोड़ा जा सकता है मगर प्रीति का छोड़ना बहुत कठिन हो जाता है।

तिल कोड़े उर्द बिलोरे'।

अ०– तिल की खेती गोड़ाई से और उर्द की निराई से होती है।

तिल मं तेले नाहीं।

अ०– कहावत बेहद कंजूस आदमी के प्रति कही गई है। यह नीरस– रूखे स्वभाव वाले व्यक्ति पर भी कहावत लागू होती है।

तिलरी तोहरे मनाये न खाबै,
तो केकरे मनाये खाबै?

श०– तिलरी–पहले के जमाने में गले में पहनने का एक प्रकार का जेवर होता था। मनाये–मनवनिया कराना, मनुहार।

अ०– यह नारी सुलभ कमजोरी होती है कि स्त्रियों को गहनों से बड़ा ही लगाव होता है। कहावत में किसी स्त्री को तिलरी का बहुत शौक था। जब वह उसे मिल गई तो भला वह प्रसन्न क्यों न होती? वह कहती है अब तुम मना रही हो तो मैं जरूर मान जाऊंगी और खाना खा लूंगी। इसकी एक कथा है।

'एक बार किसी आदमी ने अपनी पत्नी से कहा तनिक सिल तो उठा लाती, काम है। पत्नी बोली– अरे मेरे मान कै नहीं है, बहुत भारी है। कुछ समय पत्नी ने पति से हमेल (जो स्त्रियां गले में पहनती थीं, काफी भारी भी होती थी) बनवाने को कहा। पति ने किया क्या कि वही सिल ले जाकर उस पर सोने का पत्ता चढ़वाकर लाया। बोला ये रही हमेल। तुरन्त पत्नी ने बड़ी प्रसन्नता के साथ उसे पहन लिया। दूसरे दिन पति बोला भारी नहीं लग रही है? यह वही सिल है इस पर सोने का पत्ता चढ़वा कर लाया हूं जो उस दिन तुम्हें उठाने में उठ ही नहीं रही थी। इस कदर का प्रेम होता है नारी जाति को गहनों से।

तिरिया तेल हमीर हठ, चढ़ै न दूजी बार।'

श०– तेल– जो विवाह के पूर्व दूब तेल से लड़की को चूमा जाता है। हम्मीर हठ–हम्मीर बादशाह था

उसकी हठ मशहूर थी कि एक बार जो कहता था उसे पूरा करता था।

अ०— हम्मीर की हठ और स्त्री को विवाह में तेल एक ही बार चढ़ता है।

'ती'

तीत बोल, मीठ खाब बिसरते नाहीं।

श०— तीत–कडुवा। बिसरतै–भूलता नहीं।

अ०— कहावत बोली–बानी व अच्छे व्यवहार के प्रति कही गई है कि कटु बोलना और मीठा खाना किसी को भूलता नहीं। एक दोहा है–

'का कउवा कछु लै गयो का कोयल कछु दीन
मीठी–मीठी बोल से जग आपन कै लीन।

तीन खवइया, तेरह चूल्हा।

कहावत घर परिवार के विघटन का बोध कराती है।

अ०— एक ही घर में इतना दुराव है कि चूल्हा तेरह और खाने वाले कुल तीन लोग हैं।

तीतिर बरनी बादरी, विधवा पान चबाय।
इह पानी लै आवै, ऊ पानी लै जाय।।

अ०— तीतिर–एक प्रकार की भूरे रंग की चिड़िया। बरनी–वर्ण, रंग।

पानी में यमक अलंकार है। यानी एक पानी का मतलब पानी से है। दूसरे पानी का मतलब इज्जत से है।

अ०— कवि घाघ का कहना है कि यदि तीतिर रंग के बादल आसमान में उठें और विधवा नारी पान खाय तो बादल से पानी बरसता है और नारी पराये पुरुष से सम्बन्ध जोड़कर इज्जत गवां लेती है।

तीन उड़ाने तितिरो नहिं रहि जात।

कहावत किसी वस्तु को बार–बार उखाड़ –पछाड़ करने या काटपीट करने पर कही गई है कि बार–बार किसी वस्तु के सुधारने में वस्तु बिगड़ जाती है।

जैसे तीन बार के उड़ान में तीतिर भी नहीं रह जाता है।

तीन कनौजिया, तेरह चूल्हा।

कहावत ऊपर आ चुकी है।

तीसौ दिन दिया–दिया, देवारी के दियै नाहीं।

जब ऐन मौके पर कोई काम न हो, कार्य प्रयोजन पर सामाजिकता न हो तो कहावत कही जाती है।

अ०— कहां तो तीसो दिन दिया जलता है और कहां आज दीपावली के अवसर पर भी अंधेरा पड़ा है।

तीन देय तेरह गोहरावै तो कलजुग मां लेखा पावै।

कहावत ऐसे लोगों पर कही गई है जो कुछ लेकर धोखा देने के चक्कर में रहते हैं।

अ०— जिसे तीन की रकम दी गई है उसे तेरह चिल्लानेपर ही अपनी पूरी सही रकम मिल पाती है। जमाना ऐसा है। गांव की कहावत है–

'देत की बाबू लेत की बाबू, न देय तो कौन काबू'।

तीतिर पंख मेघा उड़ै जौ विधवा मुस्काय।
कहै 'डाक' सुनु डाकिनी यह बरसै वह जाय।।

अ०— कहावत महाकवि 'डाक' की है जो विधवा नारी व बादलों के प्रति कही गई है।

अ०— तीतिर पंख रंग के मेघ यदि आसमान में हैं तो पानी जरूर बरसेगा और यदि विधवा नारी मुस्करा के किसी पुरुष से बात करे तो उसका चरित्र अच्छा नहीं होता है।

तीर नहीं तीरंदाज देखो।

अ०— किसी के गुण को सीखना है तो गुणी को देखो कि वह कैसे किस प्रकार से काम कर रहा है। तीर को मत देखो निशाने को देखो।

तीन दबावै नीक के पातक, राजा, रोग।

श०— दबावै–रोक करना। नीक के–अच्छी तरह से। पातक–पापी। राजा–शासन करने वाला। रोग–बीमारी।

अ०— तीन को दबाना ठीक से चाहिए, राजा, पापी, और बीमारी।

तीन कियारी तेरह गोड़,
तब तुम देखो ऊख क पोर।

अ०— ईख के खेत को तीन बार क्यारी बनाकर तेरह बार गोड़ने से खेती बहुत बढ़िया होती है।

तीन बैल, घर में दो चाकी पूरब खेत, राज की बाकी।

श०— चाकी—जांत। राज की—खेत का देनपोत, लगान, राजस्व कर।

अ०— किसी किसान के घर में यदि चार बैल के बजाय तीन बैल हों, घर में दो जात हैं यानी आपस में एकता नहीं है, अपने घर के पूर्व दिशा की ओर खेत हो तथा राजस्व कर बाकी हो तो उस किसान की दशा बहुत बुरी होती है।

तीतिर बरनी बादरी रहै गगन पर छाय।
कहै घाघ सुनु भड्डरी बिन बरसे ना जाय।।

अ०— स्पष्ट है।

तीरथ कोन न बूंद परै, राजा परजा दुइनो मरै।
पच्छिम बहै नीक करि जानो परै तुसार तेज डर मानो।

श०— तीरथ कोन—पूर्वोत्तर का कोना। तुसार—पाला। कहावत वर्षा सम्बन्धी है।

अ०— यदि पूर्वोत्तर दिशा से पानी न बरसा, तो राजा प्रजा दोनों ही भूखे मरेंगे। यदि पश्चिम में हवा बहती है तब भी अच्छा है। उसमें पाला पड़ने का भय नहीं रहता है।

तीतिर भेड़ा सुरमादानी।
दगाबाज कै तीन निसानी।

कहावत धोखेबाजों के ऊपर कही गयी है।

अ०— कहा है कि दगाबाज लोगों की निशानी होती है तीतिर पालना, भेड़ा पालना और सुरमेदानी को पास रखना।

तीन बोलाये तेरह आये।
देव दाल मं पानी।

कहावत इस समस्या पर कही गई है कि बुलाया था तीन आदमियों को खाने पर और आ गये १३ लोग। तो अब बने—बनाये भोजन में १३ लोगों को खिलाना समस्या हो गई।

अ०— जब इतने लोग आ ही गये हैं तो दाल में पानी डालकर भोजन की व्यवस्था पूरी करो।

तीन लोक से न्यारी कासी।

श०— न्यारी—अनोखी।

कहावत काशी नगरी के प्रति कही गई है। काशी की महिमा ही अद्‌भुत और अकथनीय है।

अ०— काशी तीनों लोक से निराली नगरी है।

तीरथ गये मुड़ायेन सिद्ध।

कहते हैं जब किसी तीर्थस्थान पर जाय तो सिर अवश्य मुड़वाना चाहिए। बिना सिर मुड़ाये तीर्थ का पूरा फल नहीं मिलता है।

तीन कोस तक मिलै जो काना, लउटि परै सो बड़ा सयाना।

श०— लउटि—वापस। सयाना—समझदार। काना—एक आंख वाला।

कहावत शकुन—अपशकुन पर कही गई है।

अ०— यात्रा के समय यदि दूर—दूर तक कोई काना आदमी मिल जाय तो यात्रा पर न जाकर लौट आने वाला बहुत समझदार माना जाता है।

तीर नहीं तुक्का ही सही।

अ०—यदि तीर नहीं सीख पाये तो तुक्का ही, यानी तदबीर ही लगाओ। धीरे—धीरे तदबीर लगाते—लगाते तीर चलाना भी आ जायेगा। हिम्मत मत हारो।

तीतिर बरनी बादरी विधवा काजर देय
ये बरसैं वै घर करे कहै भड्डरी देख।

श०— बरनी—तरह। घर करै—दूसरा आदमी करना।

कहावत महाकवि भड्डरी की है।

अ०— यदि आकाश में तीतिर चिड़िया के रंग की बदरी उठे और विधवा नारी काजल आंख में लगाये तो समझो कि बादल बरसे बिना नहीं जायेगा और स्त्री बिना दूसरे पुरुष से सम्बन्ध रखे नहीं रहेगी।

तीतिर पालै चूतिया आसिक पालै लाल।
कबूतर पाले चोट्टा जे तकै पराया माल।।

श०— चूतिया—बेवकूफ। आसिक—पराई स्त्री से प्रेम करने वाला रसिक स्वभाव का व्यक्ति। तकै—देखे। पराया—दूसरे का।

अ०– कहावत लाक्षणिक है। तीतिर पालने वाले बेवकूफ होते हैं, जो रसिक स्वभाव के होते हैं वे लाल चिड़िया पालते हैं और कबूतर चोर लोग पालते हैं जो दूसरे का माल चुराने के चक्कर में रहते हैं।

तीन तिगाड़ा काम बिगाड़ा।

अ०– जहां पर तीन लोग होते हैं वहां पर काम खराब हो जाता है, ऐसा लोगों का मानना है।

तीतिर के मुंह में लछमी।

अ०– कुछ लोगों का विश्वास है कि तीतिर चिड़िया जो बात कहती है वह सही हो जाती है। ऐसा कुछ अंध विश्वास है लोगों का। आज भी बहुधा सड़कों पर लोग तीतिर विचार वाले बैठे मिलते हैं।

तीज परे खेत मं, बीज परे रेत मं।

कहावत खेती सम्बन्धी है जिसमें खेत बोने के समय की चेतावनी दी गई है।

अ०– खेत में बीज यदि सावन मास की तीज तक पड़ गया तो समझो कि दाना हो जायेगा। वर्ना देर से बोने पर बीज मानो बालू में डाला गया हो।

तीतिर बायें बोल जौ सकल काज हो ठीक।
दाहिन बोलत ना भला सांच जान यह सीख।।

अ०– तीतिर पक्षी यदि यात्रा के समय बायें हाथ बोले तो समझो कि सभी कार्य सफल होंगे और यदि वह दायें हाथ की तरफ बोले तो अच्छा नहीं है।

तीन के टट्टू तेरा की जीन।

अ०– किसी वस्तु पर लागत से अधिक खर्च। टट्टू तीन रुपये का और जीन (बैठने की गद्दी) तेरह रुपये की है।

तीन गुनाह तौ खुदौ बख्स देथ।

अ०– तीन गल्ती तो अल्लाह भी नहीं गिनता, वह भी माफ कर देता है।

तीन टांग के घोड़ी नौ मन के लदनी।

कहावत उस समय कही जाती है जब आदमी या पशु को उसकी ताकत से ज्यादा बोझ दे दिया जाय।

अ०– घोड़ी बेचारी तीन टांग की है उस पर नौ मन का बोझ लाद दिया है। भला चले भी कैसे चले?

तीन टिकट महाविकट चार का मुंह क़ाला
पांच हों तो भला।

अ०– कहावत में तीन व चार की गिनती को अशुभ माना गया है।

तीन तिताला चौथे क मुंह काला।

उपरोक्त कहावत की भांति यह भी है।

तीन थान चौथी जान
सबका अल्लाह निगहवान।

श०– थान–कपड़े का गट्ठर। निगहवान–देखने वाला।

अ०– यहां पर कपड़े के तीन थान की तरह किसी ने अपने लड़कों की गिनती की है, यानी तीन लड़के हैं चौथी अपनी जान है। सबको देखने वाला मालिक खुदा है।

तीन दिन तौ कबुर मं भारी होत।

अ०– जब किसी आदमी को हिसाब–किताब देना पड़ता है तो कहावत कही जाती है कि मरने के बाद भी तीन दिन तो खुदा के यहां भी अपने नेकी–बदी का हिसाब देना होता है।

तीन दिन का छोकरा हमें सिखावै बात।
जब लै उठे ढेला तब लै मारब लात।

अ०– जब छोटे लोग बड़ों को पूर्वजों की सी बातें बताने लगते हैं तो कहा जाता है कि कल के लड़के हैं मुझे चले हैं बुद्धि सिखाने। जब तक वह मारने के लिए ठेला (मिट्टी का बड़ा टुकड़ा) उठायेगा तब तक मैं उसे लातों से मार दूँगा।

तीन देय तौ तेरह पाये
कइसे लालच बिआज कै जाये।

श०– बिआज–ब्याज।

अ०– जब किसी को ब्याज पर पैसा दिया जाता है तो उससे अधिक से अधिक धन वसूल किया जाता है। उसी पर कहावत है कि जो तीन देकर तेरह प्राप्त करे तो उसे ब्याज का लोभ कैसे जायेगा?

तीन पाव की तीन पकाई सवासेर की एक
जेठ निपूता तीनों खा गये मैं संतोखिन एक।

श०– पाव–पहले के जमाने की तौल, निपूत–गाली।

अ०– तीन पाव की एक रोटी बनाई तो निःसंतान जेठ सब खा गया और मैं संतोषी केवल एक खा कर रही गयी। यानी खुद पांच पाव की खाकर संतोषी बनी बैठी है।

तीन बोलाये तेरह आये देखी यहां की रीत
बाहर वाले खाय गे घरवाले गावैं गीत।

अ०– सरल है।

तीन मं न तेरह मं न सेर भर सुतरी मं
न करवा भर राई मं।

श०– सुतरी– बोरा आदि सीने के काम में आती है। राई–सरसों से छोटा दाना जो सरसों की जाति का होता है। करवा–कोसा।

अ०– जो आदमी कहीं पर किसी समय किसी काम का नहीं पाया जाता है उसके प्रति कहावत कही जाती है। न किसी जाति के न किसी काम के हैं। बेकार का आदमी होना।

तीन है साहू किसान के
झांद, जाल, औ कैर।

श०– साहू–मालिक। झांद– एक तरह की टोकरी जिसमें मछली पकड़ी जाती है। कैर–जंगली लकड़ी जो जलाने के काम में आती है।

अ०– किसान को जब खेती से कुछ नहीं मिल पाता है तो उपरोक्त तीनों वस्तुएं व्यवहार में लाकर वे अपना जीवनायापन करते हैं।

· तीर, तुरगनी, स्त्री छूटत बस ना आय।
झूठ जो मानै यह वचन सो नर मूढ़ कहाय।।

श०– तीर–बाण। तुरगनी–बाज पक्षी। स्त्री–नारी। वचन–बात। मूढ़–मूर्ख।

अ०– तीर, बाज पक्षी और स्त्री ये हाथ से छूट जाने पर फिर किसी प्रकार से हाथ नहीं आते; इनका आना कठिन हो जाता है। इस बात को जो नहीं मानते हैं वे पुरुष मूर्ख माने जाते हैं।

तीरथ, मूरत पूजते मत फिर उमर गंवाय
पूजा कर करतार की जो तुरत मुक्त होइ जाय।

श०– कहावत समय के महत्व पर कही गई है। यानी 'उमर सिरानो ऐसेइ–ऐसे।

अ०– तीर्थ और मूर्तिपूजा में अपना समय व उम्र मत बर्बाद करो। समय बहुत कम है, घर बैठे उस सृष्टि रचयिता की पूजा करो। उस सृष्टि रचयिता की, उससे ही मुक्ति प्राप्त हो सकती है।

तीर न कमान काहे के पठान।

अ०– जब अपने कार्य का कोई साधन नहीं है तो फिर काहे के तुर्रम खां बने हो? न लड़ाई लड़ने को तीर है न कमान है फिर लड़इया पठान कैसे बने हो?

'तु' / 'तू'

तुही मियां दर दरबार, तूही मियां चूल्ह दुआर।

श०– दर–दरबार–किसी जगह और बाहरी दुनिया में कार्यकर्ता। चूल्ह–चूल्हा। दुआर–द्वार।

जब आदमी एकदम से अकेला हो जाता है और उसे अंदर बाहर की सारी जिम्मेदारियों को संभालना होता है तो यह कहावत कही जाती है।

कोई स्त्री अपने मियां से कहती है ऐ मियां! तुम्हीं को घर–बाहर चारो ओर देखना–संभालना है। चाहे कहीं पर बाहर आना–जाना हो और चाहे घर में खाना बनाना हो।

तुलसी धन धाम सरीरहिं लै।

अ०– मनुष्य के जीवन में स्वास्थ्य से बढ़कर कुछ भी नहीं होता है।

गोस्वामी जी का ही कहा है कि धन धाम शरीर तक है।

तुरत दान महा कल्यान।

कहावत दान की महत्ता पर कही गई है। अतः दान तुरंत देने का प्रभाव बड़ा ही कल्याणकारी होता है।

तुम पीटो छप्पर छानी।

हम यहै करत बुढ़ानी।

श०– पीटो–पीटना। छप्पर छानी–गांवों में जो ओसारे में छान छाई रहती है। यहै–यही। बुढ़ानी–बुड्ढी हुई।

कहावत किसी बुजुर्ग के द्वारा अपने बच्चों की असफलता को या कठिनाई को देखकर कही गई है।

अ०– जिस छान– छप्पर को उठाने में तुम्हें दांतों पसीना आ रहा है, क्रोध के मारे उसको धर पटक रहे हो, कभी बनाते हो तो कभी बिगाड़ कर तहस–नहस करते हो, बच्चा, वही छान बनाते छातें मेरी सारी जिन्दगी ही बीत गई, बुढ़ौती आ गई है।

तुरत बनाओ तुरत खाओ

बासी खाय न ओज बढ़ाओ।

श०– तुरत–शीघ्र। बासी–रात का, दोपहर का रखा भोजन। ओज–गर्मी। कहावत बासी खाने से हानि पर कही गई है।

अ०– भोजन जैसे ही बनाओ वैसे ही खा लो, रखा हुआ भोजन खाने से शरीर में गर्मी बढ़ती है। वह हानिकारक होता है। किसी ने कहा है 'सौ काम छोड़ के नहाव, हजार काम छोड़ के खाव।

तुलसी बिरवा बाग में सींचत ही कुँभिलाय।

राम भरोसे जे रहै पर्वत पर हरियाय।।

अ०– कहा है 'राम भरोसा भारी, और सब धोखाधाड़ी'। पेड बाग में रहने व सींचने पर सूखने लगता है और पहाड़ के ऊपर बिना सींचे ही हरा–भरा बना रहता है।

तुलसीदास से तुलसी भयो परो तुलसिया नांव।

तुलसी तहां न जाइये जहां बाप को गांव।।

श०– ठांव–जगह, स्थान।

कहावत उस समय कही जाती है जब अपनों के ही द्वारा, अपने ही गांव में किसी प्रकार से अपमानित होना पड़ता है। इसीलिए कि अपनों का अपमान असहनीय होता है।

अ०– तुलसीदास का कहना है कि पहले तो गांव के लोग तुलसीदास कहते थे, फिर तुलसी हुआ, उसके बाद तुलसिया हो गया। जहां पर इस प्रकार से अपमान हो वहाँ पर कभी नहीं जाना चाहिए। चाहे वह अपने बाप का ही घर क्यों न हो।

तुम्हार चरन चापर करन।

अ०– कहा है 'किसी–किसी के पांव बड़े अपशकुन होते हैं।' वह आदमी जहाँ–जहाँ भी जाता है वहीं पर दैवी दुर्घटना घट जाती है।

तुम्हार सपन रावन कै सपन आय।

जिस समय कोई आदमी घमंड से चूर होकर अपनी बहादुरी का सोते–जागते हर समय बखान करता रहे, स्वप्न में भी उसे वही घमंड की बातें सूझें, सपने में भी आयं बांय शांय बके, तो कहा जाता है कि तुम्हारा यह स्वप्न रावण की तरह का है।

तुझे पराई क्या पड़ी अपने आप निबेड़।

श०– पराई–दूसरों की। निबेड़–निपटाना, सुलझाना।

अ०– हर आदमी के पास समस्यायें हैं अपनी–अपनी। समस्या को स्वयं निबटाना ही अच्छा होता है। दूसरों को दूसरों से क्या पड़ी है?

तु जा घरे क, हम जाईं तरे क।

कहावत किसी के चले जाने के बाद फिर से उसी दशा में हो जाने पर कही गई है। गांव में घास छीलते समय किसी ने यह कहावत कही थी। पूछने पर ज्ञात हुआ कि यह मोथा नाम के एक तृण के लिए कहा गया है। मोथा कहता है कि छील कर तुम जैसे ही घर को जाओगे वैसे ही हम फिर ऊपर को आ जायेंगे। यानी मोथा इतना जिद्दी खर होता है कि वह छीलने से कभी नहीं जाता है।

तुलसी बांह सपूत की सपनेहुं मां छुइ जाय।

आप निबाहै जनम भर, औरन को कहि जाय।

अ०– दोहा गोस्वामी जी का है जो लोकोक्ति के रूप में लोग कहा करते हैं। यदि सपूत की बांह स्वप्न में भी यानी क्षणिक रूप से भी छू जाती है तो वह खुद तो आखिर तक निबाहेगा ही दूसरी पीढ़ी को निभाने को कह जायेगा कि तुम भी ऐसा ही करना।

तुनतुनी बजाय मियां खाय शक्कर घी
नौकरी की ऐसी तैसी अबकी बचे जी।

अ०– कोई सिपाही कहता है कि अब तक तो तुनतुनी बजाकर घी–शक्कर खाते रहे। नौकरी की ऐसी–तैसी, किसी तरह प्राण तो बचे रहें।

तुम काटो मेरी नाक कान।
मैं ना छोड़ूं अपनी बान।

श०– बान–आदत।

कोई हठी प्रकृति की नारी जो कुसंगत के कारण बुरी आदत की आदी है कहती है तुम चाहे मेरी नाक कान काट लो मैं अपनी आदत नहीं छोड़ूंगी।

तुम कौन खेत के बथुआ हौ।

श०– बथुआ – एक प्रकार का साग होता है जो गांव के खेतों में अपने आप ही जमा करता है।

कहावत किसी को अधिक महत्त्व न दिये जाने पर कही जाती है।

अ०– तू कौन से खेते के बथुआ हो यानी तुमको हम कुछ नहीं समझते हैं।

तुमरे मुँह मं घी सक्कर।

अ०– जब कोई शुभ बात कहता या कामना करता है तथा होने की आंशका पैदा करता है तो लोग मारे खुशी के कहते हैं यदि ऐसी बात हो तो तुम्हारा मुंह मीठा कराऊं।

तु भले मार्‌या हम रोवइये रहे।

अ०– जब कोई आदमी पहले से ही मन में दुखी हो, किसी न किसी बहाने अपने मन का बोझ उतारने वाला हो, उसे जैसे ही दूसरे के प्रति मौका मिला नहीं कि उसी बहाने अपने दुख को प्रकट करना चाहे अथवा रोने लग जाय और कहे कि तुमने अच्छा किया मारा हम रोने ही वाले थे।

तुमरे बैल हमरे भैंसा, हमार तुमार साथ कैसा।

कहावत भिन्न–भिन्न परिस्थितियों के लोगों के ऊपर कही गई है।

अ०– तुम्हारे पास बैल है तो तुम खेती–बारी वाले आदमी हो मेरे पास भैंसा है, हम भैंसागाड़ी वाले आदमी हैं। हमारा–तुम्हारा किसी प्रकार का कोई साथ नहीं है।

तुमरे मरे देस खाक
हमरे मरे देस पाक।

श०– खाक–मिट्टी। पाक–पवित्र।

जब कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति को अधिक महत्व देता है तो कहावत कही जाती है।

अ०– तुम न रहोगे तो देश का नाश हो जायेगा। मेरा क्या, मैं न रहूंगा तो देश पवित्र हो जायेगा। ऐसे आदमी धरती के बोझ होते हैं।

तुनक, ततैया, तोतरा ना काहू के मीत।
भीड़ परत मुंह फेर लें राखैं ना परतीत।

श०– तुनक–तनिक में बदल जाने वाला आदमी। ततैया–बर्र। तोतरा–तोता।

अ०– तुनक मिजाज आदमी, बर्र, तोता किसी के मित्र नहीं होते हैं। संकट के समय, झगड़े–झंझट होने के समय अवसर आने पर तुरंत डस लेते हैं या अलग हो जाते हैं।

तुरत होय काम मुट्ठी मं होय दाम।

अ०– यदि किसी के पास पैसा हो तो काम होने में देर नहीं लगती है।

तुलसी आम कुलीन है नवै बड़प्पन पाय
ओछा पेड़ अरंड का, रहै सीस पर छाय।

श०– कुलीन–अच्छे वंश का, शालीन। नवै–झुकै। बड़प्पन–बड़ा होना। ओछा–ओछापन। अरंड–रेंड़। छाय–फैले रहना। कहावत अच्छे और बुरे कुल–खानदान के ऊपर कही गई है।

अ०– जो अच्छे कुल का–कुलीन–आदमी होता है वह आम के पेड़ की तरह जितना ही फलदार होता है उतना वह नम्र होता है और जो ओछे कुल का असभ्य होता है वह उतना ही अरंड के पेड़ की तरह ओछी प्रकृति का होता है।

तुलसी ऐसी प्रीत कर जैसे भोर तला।
झोलझाल कर पी लिया फिर भी लगा गला।।

उपरोक्त लोकोक्ति गोस्वामी जी की है जो एकता का बहुत बढ़िया उदाहरण है।

अ०– प्रीति ऐसी करनी चाहिए जैसे कि भोर के तालाब की काई होती है। भोर में लोग आकर काई को हाथ से अलग करके पानी पी लेते हैं, मगर उनके जाते ही दोनों ओर से काई फिर एक होकर मिल जाती है।

तुलसी ऐसे नरन से मन फाटे जस दूध।
नीके काम को ना चलै बुरे को हरदम ऊब।

अ०– ऐसे आदमी जो अच्छे काम के लिए तो न चलें और बुरे काम को करने के लिये सबसे पहले तैयार रहें, उनसे मन इस तरह से फटता है जैसे दूध।

तुलसी ऐसे मित्र के कोट फांद के जाय।
आवत की तो हंसि मिलै और चलत मुरझाय।।

अ०– गोस्वामी जी की लोकोक्ति से स्पष्ट होता है कि मित्रवत् व्यवहार किस प्रकार से होना चाहिए। ऐसा जो पहुंचते ही हंस कर मिले और जाते समय उदास हो जाय उसके पास चाहे कितनी भी ऊंची–नीची स्थिति, दूरी हो, अवश्य पहुंचना चाहिए।

तुलसी कबहूं न छांड़िये क्षमा सील संतोष।
ज्ञान, गरीबी, हरि–भजन कोमल वचन अदोस।।

अ०– तुलसीदास जी कहते हैं –ज्ञान, विवेक, शील और संतोष को कभी मत छोड़ो। भगवान का भजन, कोमल वचन, निश्छल वाणी यही दुनिया में मनुष्य के लिए वरदान हैं।

तुलसी कहत पुकार के सुनो सकल दे कान।
हेम दान, गज दान से बड़ा दान सम्मान।।

अ०– दुनिया में स्वर्णदान, हाथीदान से भी बड़ा दान है मनुष्य द्वारा मनुष्य का आदर करना।

तुलसी जग में जस रहे, या रहे राम का नाम।

अ०– तुलसीदास जी का कथन है कि इस संसार में या तो राम का नाम अमर है या फिर कर्मों के द्वारा जिसने यश कमाया है उसका नाम अमर है।

तुलसी तहां न जाइये जहां न वर्न, विवेक।
रांगा, रुपा, रूआ भुआ सेंत–सेंत सब एक।।

श०– वर्ण–जाति। विवेक–ज्ञान। रांगा– एक धातु। रुपा–चांदी । भुआ–सेमर का फूल। रूआ–रुई। भुआ–रुई के उड़ने वाले कण।

कहावत हर एक वस्तु की कीमत एक ही भाव की लगाई जाने के प्रति कही गई है।

अ०– जहां पर रांगा, चांदी, सोना, रूपा, रूई, भुआ सभी वस्तुओं की कीमत एक ही भाव से आंकी जाय वहां पर कभी नहीं जाना चाहिए।

तुलसी मूढ़ न मानिहै जबलगि खता न पाय।
जैसे विधवा स्त्री गरभ रहे पछिताय।।

अ०– मूर्ख आदमी जब तक गलती सामने नहीं आ जाती है तब तक गलत काम को गलत नहीं मानता है। उसी प्रकार से जैसे कि किसी विधवा नारी को जब तक गर्भ नहीं रह जाता तब तक वह अपनी गलती को कभी मानने को तैयार नहीं होती है।

तुलसी धीरज के धरे हाथी मन भर खाय
टूक एक के कारने स्वान घरै–घरै जाय।

कहावत में धैर्य–संतोष का बहुत अच्छा रूप दिखाया है।

अ०– हाथी धीरज के साथ मन भर का खाना एक ही जगह रह कर संतोष के साथ खाता है। मगर कुत्ता दो कौर खाने के लिए एक नहीं कितने घर घूम–घूम कर जाता है। उसके पीछे मार, गाली, अपमान दो डंडे भी सहन करता है मगर जब मन में संतोष नहीं है तो कुछ भी नहीं है। अतः धैर्य से कठिन से कठिन काम भी आसान हो जाते हैं। विपत्ति के समय भी मनुष्य की परीक्षा धैर्य से ही की जाती है। कहा है– 'धीरज धरै तो उतरै पारा, नहीं तो बूड़े बीचे धारा।' कहा है जो अटल सत्य है।

धरा को प्रमान यही तुलसी
जो फरा सो झरा, जो जरा सो बुताना।

अ०— इस संसार की यही रीति है जो अटल सत्य है। जो फलता है वह फल झड़ता जरूर है और जो मनुष्य आवश्यकता से अधिक अकारण क्रोध करता है वह कभी न कभी बुझता भी है। यानी समय के साथ अच्छे–बुरे कर्मों का फल सभी को मिलता है।

तुरत भलाई वह नर पावै, जो धन दाता नाव लुटावै।

श०— तुरत— शीघ्र ही। नर–मुनष्य। धन–पैसा, रुपया आदि। दाता–दानी। लुटावै–भली भांति देना।

कहावत दानी के ऊपर कही गई है। देने वाले का हाथ सदैव ऊपर होता है। गोस्वामी जी ने बहुत सुंदर कहा है–

'तुलसी कर पर कर धरो, करतल कर न धरो
जा दिन कर तल कर धरो ता दिन मरन खरो।

अ०— किसी की हथेली पर अपनी हथेली धरो यानी दान दो। किन्तु अपनी हथेली पर किसी की हथेली न धराओ। जिस दिन अपनी हथेली पर किसी की हथेली रखोगे उस दिन मरन ही समझो।

तुरता फुर्ती काम में अच्छा नाहीं जान
सांच कहिन है साधने जल्दी मां नुकसान।

अ०— किसी काम की जल्दबाजी में सदैव हानि होती है। साधना और धैर्य से काम करने वाले ने सच ही कहा है कि जल्दी का काम शैतान का होता है।

तुलसी अच्छर करम का मेंटि सक़ै ना कोय।
मेंटे पर अचरज नहीं समझ लिया है जोय।।

अ०— भाग्य का लिखा कोई मेंट नहीं सकता है। यदि कोई मेंट सकता है तो वह हैं भगवान शंकर जी। जैसा कि तुलसीदास जी ने लिखा है–

'भाविउ मेंटि सकै त्रिपुरारी' तो भगवान के लिये यह संभव है, मगर अपने–अपने कर्मों का फल हर आदमी भोगता है। तुलसी ने कहा है

जो जस करइ सो तस फल चाखा।
तुलसी कलयुग के समय देखो यह करतूत
राम नाम को छांड़िके पूजत हैं अब भूत।

अ०— कलि का प्रभाव आज के लोगों के ऊपर इस तरह से है कि लोग देवी–देवता को भूलकर भूत–प्रेत, पिशाच, दानव आदि को पूजने लग गये हैं। जरा सी कोई बात हुई नहीं कि ओझा–सोखा को भूत प्रेत–बाधा के लिये बुलाने चले गये या उतार–पतार खुद ही करने लग गये। एक–एक बात पर भूत की पूजा, तमाम टोटका, टापर, झाड़–फूंक। यह सब लोगों की मानसिक कमजोरी का नतीजा है कि आज आदमी संग–कुसंग का विचार किये बिना कुसंगत में बैठकर अपना ही नुकसान कर रहा है।

किसी ने कहा है 'जैसी संगत बैठिये तैसे ही बुधि होय'।

तुलसी ऐसे नरन की कइसे गत मत होय
बाप ने राखी पातुरी ताके ढिग रह सोय।

अ०— तुलसीदास की लोकोक्ति है–ऐसे मनुष्य की कैसे गति हो और कैसे बुद्धि मिले जिसका ऐसा घृणात्मक कृत्य हो कि जिस वेश्या को बाप ने रखा हो उसी के पास जाकर बेटा भी सोता है। गोस्वामी जी का ही लिखा है जो रामचरितमानस में उद्धृत है। 'कलिकाल बेहाल किये मनुजा, नहिं सूझत कोउ अनुजा तनुजा'। जब बेटी बहिन किसी को नहीं सूझ रही है तो वेश्या की तो बात ही क्या है।

तुलसी ऐसे जीव क्यों नरक कुंड नहिं जाय।
मन के कपटी मित्र है पाग उतारन चाह।

श०— नरककुंड–नरक के गड्ढे में। कपटी–छली। पाग–पगड़ी।

अ०— ऐसे जीव जो कपटी–कुटिल, कलह प्रिय हों वे भला नरक कुंड क्यों न जायेंगे जो अपने मित्र की इज्जत ले लेना चाहते हों।

तुलसी बुरा न मानिये जो गंवार कहि जाय।
सावन केरे नरदंवा बुरा भला बहि जाय।।

श०— गंवार–मूढ़, बेवकूफ, मूर्ख। केरे–के। नरदंवा–नाबदान, जिस नाली से घर की टट्टी–पेशाब और कचरे का गंदा पानी बहता हो।

अ०– तुलसीदास का कहना है कि यदि कोई मूर्ख भला–बुरा कहकर चला जाता है तो उसकी बात को बुरा नहीं मानना चाहिए। वह उसी प्रकार है जैसे सावन माह का अच्छा–खराब पानी नाली में बहकर निकल जाता है।

तू कर अपना काम कुत्ता भूकन दे।

अ०– जब कोई आदमी भला काम कर रहा हो उसमें भी लोग मीन–मेख निकालें तो परवाह नहीं करना चाहिए। कहा है 'हाथी जाता है कुत्ते भूकते हैं।'

उसी प्रकार से तू अपना काम करता जा, बकने वाले को बकने दे। उनकी आदत है वे 'बातुल भूत बिबस मतवारे, ते नहि बोलय वचन संभारे' उन पर बातों का भूत सवार है।

तू खोल मोरा मकना मैं घर संभालूं अपना।

श०– कोई नई–नवेली बहू अपने पति से कहती है–तू मेरा घूंघट खोलो मेरा मुंह देखो मैं अपना घर संभालूं।

तू गड्ढा खोदो मोका
मै गाड़ि आवों तोका।

अ०– जब कोई आदमी किसी के साथ बुरा व्यवहार करता है तो कहावत कही जाती है। यदि तू मेरे लिये गड्ढा खोदता है तो मैं तुझे जिंदा ही जमीन में गाड़ दूंगा। कोई सेर है तो दूसरा सवासेर से कम नहीं है। इसलिए कि दुष्ट के साथ दुष्टता परम आवश्यक है।

तू चाह मेरी जाई मैं चाहूं तेरे खाट की पाई–पाई।

अ०– कोई सास अपने दामाद के लिए कहती है कि यदि तू मेरी जाई, पैदा की हुई बेटी को प्यार करेगा तो मैं तेरे खाट के पाये से प्यार करूंगी। ऐसा दामाद तो कहा है कि डाइन को भी प्रिय होता है।

तू छक्क छुई मैं मुई।

अ०– कहावत किसी सुकुमार स्त्री के प्रति कही गई है। वह नारी इतनी कोमलांगी है कि छूते ही मर जायेगी। ऐसे में छुई–मुई का पौधा याद आ जाता है जिसकी पत्तियाँ छूते ही मरणासन्न हो जाती हैं, सिकुड़ जाती हैं।

तू तेली का बैल, कइस मउज,
कइस सैर, लगा रहु घानी से।

श०– तेली–तेल पेरनेवाली एक जाति। मउज–मस्ती। घानी–पेरने वाली वस्तु का वजन जो घानी के माप के अनुसार कोल्हू में डाली जाय।

अ०– किसी का अथक परिश्रम देखकर कहावत कही जाती है। यानी तू तेली के बैल की तरह कोल्हू में चारों ओर घूम–घूम कर चला कर, तेरे लिये मौज मस्ती हंसी–खुशी क्या है?

'तूने की राम लली तो मैंने की राम लला'।

अ०– जब तूने दूसरी स्त्री कर ली तो मैंने भी दूसरा आदमी कर लिया। यानी 'जैसे को तैसा'।

तू भी रानी मैं भी रानी
अब कौन भरे पानी।

जब दो में, से कोई एक भी अपने को कम नहीं मानता तो कहावत कही जाती है।

अ०– हम–तुम दोनों ही बड़े आदमी हैं फिर कौन पानी भरने को जाय?

सभी को काम करने में हीनता की भावना लगती है तो कौन अपनी प्रतिष्ठा को बिगाड़े? इस झूठे बड़प्पन की बू पर किसी ने कहा है–

'ऊंचे पानी ना चढ़े नीचे ही ठहराय।
नीचा होय सो भरि पियै ऊंच पियासा जाय'।।

इसलिए यदि प्यास बुझानी है तो नीचे होकर पानी तो भरना ही पड़ेगा।

तू मुझको तो मैं तुझको।

अ०– तू मेरे लिये करेगा तो मैं तेरे लिए करने को तैयार हूं।

तूल, तेल, तापना, जाड़ मास हो आपना।

श०– तूल–रुई के बने कपड़े। तेल–खाने व बदन में लगाने को कडुवा तेल हो। तापना–तापने को आग, तपता।

अ०– जाड़े के मौसम में यदि पहनने को रुई के कपड़े, लगाने, खाने को तेल और तपता हो तो समझो कि जाड़ा बहुत अच्छा महीना है।

तूफान सैतान अल्लाह निगहवान।

अ०— तूफान और शैतान यदि साथ पड़ जायें तो जिंदगी अकारथ हो जाती है। इन पर कोई वश नहीं चलता। इनसे अल्लाह ही बचाये।

तू मोरा लड़िका खेलाव
तो मैं तोर खिचड़ी पकाऊं।

अ०— स्त्री का बराबरी का व्यवहार पाने के लिए अपने आदमी से कहना कि तुम मेरा बच्चा खेलाओ तो मैं तुम्हारे लिए खाना बनाऊं। यानी घर का काम भी तभी होगा जब तुम मेरे साथ काम में मदद कराओगे।

तू मेरे बारे को चाहे तो मैं तेरे बूढ़े को चाहूं।

श०— बारे–बच्चे।

कहावत उपरोक्त कहावत की ही भांति है।

जब तुम मेरे बच्चे को प्यार करोगे तो मैं तुम्हारे बूढ़े की सेवा करूंगी।

'ते'

तेरह कातिक तीन असाढ़
जो चूका सो गया बजार।

कहावत खेती संबंधी है।

अ०— कहते हैं कि आषाढ़ और कातिक का मास खेती के लिए होता है।

कार्तिक मास में खेत को जोतने में १३ दिन लगते हैं। आषाढ़ में कम मेहनत में तीन दिन के अंदर खेत बो जाता है। यदि इस समय कोई खेती बोने से चूक गया तो समझो कि उसे खाने के लिए अनाज बाजार से लाना पड़ेगा।

तेल न मिठाई चूल्हा धरी कराही।

कहावत व्यंग्यपरक है।

अ०— जब घर में कोई वस्तु बनानी हैतो उसके लायक सामान भी तो होना चाहिए वर्ना कैसे कोई वस्तु बन जायेगी? घर में न तेल है, न सामान में डालने को चीनी, शक्कर, गुड़ है, फिर चूल्हा जलाकर कड़ाही रखने से क्या सामान बन पायेगा?

तेरा दिन का देखो पाख
महंगा अन्न मिले बैसाख।

श०— पाख–पक्ष, जो १५ दिन का होता है।

अ०— यदि किसी मास में १३ दिन का पाख पड़ जाता है तो बैशाख माह में अन्न बहुत महंगा बिकता है।

तेऊ तैसे तेऊ तैसे।

अ०— जब दो आदमियों के स्वभाव या रहन–सहन के प्रति बराबरी की जाती है तो कहा जाता है कि दोनों एक ही जैसे हैं। जैसे वो हैं वैसे ये और जैसे ये वैसे ही वो भी हैं।

तेल तिल से निकलत।

कहावत वस्तु विशेष की आमदनी या लाभ पर कही गई है।

अ०— घर का खर्च तेल का तिल से ही चलता है। कहा है 'पैसे को पैसा खींचता है।

तेली के बैल क घर ही पचास कोस।

जो आदमी रात–दिन एक ही काम में जुटा रहता है उस पर कहावत कही गई है।

अ०— जैसी तेली का बैल बेचारा रात दिन कोल्हू में ही चलकर पचास कोस की दूरी तय कर लेता है।

तेतर कहे बहेतर से तू खा माई
हम खाईं बाप। कूदि –कूदि ननिअउरे आय।

श०— तेतर– तीन लड़कियों के बाद जो लड़का होता है। बहेतर– उस तेतर के बाद जो दूसरा लड़का हो उसे बहेतर कहते हैं। खा–खत्म कर दे। माई–मां। बाप–पिता।

लोक विश्वास में तेतर और बहेतर लड़को बड़े अपशकुन माने जाते हैं। कहावत उन्हीं पर कही गई है।

अ०— तेतर पुत्र पिता के लिए बहेतर माता के लिए बड़े हानिकारक होते हैं। इनसे प्राण तक की हानि भी हो सकती है।

तेजस्वी कै उमर नहीं देखी जाती।

श०— तेजस्वी–जिसका चेहरा तेज से भरा हो।

यह लोकोक्ति महाकवि कालिदास की है जो बहुधा पढ़े–लिखे लोगों के मुंह से स्वतः निकल जाती है।

अ०– तेजस्वी की उम्र से क्या लेना–देना। उस तेजवान का चेहरा ही उसके सत्कर्मों को बता देता है।

तेरा पानी मैं भरूं मेरा भरे कहार।

कहावत केवल झूठे बड़प्पन पर कही गई है। कैसे संभव है कि जिसके घर में पानी भरने वाला नौकर लगा हो, वह दूसरों का पानी भरेगा?

तेतरी बेटी राज रजावै तेतरा बेटा भीख मंगावै।

अ०– यहां पर तेतरी यानी तीन लड़कों पर जन्मी लड़की को भाग्यवान बताया है जो राज करावेगी और यदि तीन लड़कियों पर तेतरा बेटा हो तो वह भीख मंगाता है। लड़की को पराया धन मान कर संभवतः ऐसा कहा गया है।

तेते पांव पसारिये जेती लांबी सौर।

श०– तेते–उतना ही। पसारना–फैलाना। जेती–जितनी। लांबी–लंबी। सौर–चादर।

कहावत एक सीमा के अंदर रहने के प्रति कही गई है।

अ०– अपनी आमदनी के अनुसार खर्च करना चाहिए और ज्यादा बिना सोचे समझे यदि खर्च होगा तो उसी प्रकार से लज्जित होना पड़ेगा जैसा कि छोटी चादर से पैर खुल ने पर हँसाई होती है।

तेल डाला कमरी मं साझा।

श०– साझा–हिस्सा।

इस कहावत में एक कथा है। 'किसी गड़रिये ने कंबल बनाने के बाद एक आदमी को कंबल को चिकना करने को कहा। इस पर वह बोला इसमें तेल लगाकर मैंने चिकना कर दिया है, जब बिके तो दाम में हमारा भी आधा हिस्सा लगना चाहिए।

तेल देखो तेल की धार देखो।

प्रत्येक कार्य धीरज के साथ सोच–समझकर करना चाहिए। कहावत इसी पर कही गई है।

अ०– कथा इस प्रकार है। 'किसी राजकुमार के चार मित्र थे सिपाही, ब्राह्मण, उँटेरा और तेली। पिता के मरने के बाद जब राजकुमार गद्दी पर बैठा तो चारों को मंत्री बना दिया। पड़ोस के राजा ने जब राजकुमार को चारों मूर्ख मंत्रियों से घिरा व भोग विलास में डूबा पाया तो राजकुमार पर चढ़ाई कर दी। राजकुमार ने जब चारों मंत्रियों को बुलाकर पूछा तो सिपाही ने तुरंत लड़ने को कहा। ब्राह्मण ने कहा– जल्दी ही जैसे हो सुलह कर लो। उँटेरे ने कहा–जल्दी किस बात की है। देखिये ऊंट किस करवट बैठता है। तेली ने उसी बात का समर्थन करते हुए कहा–घबड़ाइये नहीं अभी तो तेल देखिये, तेल की धार देखिये अर्थात् उतावलापन मत कीजिए।

तेल जले घी घी जले तेल।

यह कहावत स्त्रियां बहुधा कहती हैं।

अ०– कड़ाही में जब तेल खूब जलाकर कोई सामान बनता है तो स्वादिष्ट भी होता है और तेल की झाग भी समाप्त हो जाती है। वह घी जैसा स्वाद देता है और जब घी अधिक जल जाता है तो वह तेल बनकर जलने का स्वाद उत्पन्न करता है।

तेली का तेल गिरा कम भवा
बनिया क नोन गिरा दूना भवा।

अ०– स्वाभाविक ही है जमीन पर तेल गिरने के बाद उठाया नहीं जा सकता है। इसलिए कम हो जाता है और बनिये का नमक यदि जमीन पर गिरा तो उठाने के साथ मिट्टी, कंकड़ मिलकर दुगुना बढ़ जाता है।

तेली का तेल जले मसालची क जिव जले।

कहावत परसंताप पर कही गई है।

अ०– सामान किसका खर्च हो रहा है और कष्ट किसको हो रहा है। मगर जलाने वाले, उजाला दिखाने वाले मशालची की नानी मर रही है कि हाय बहुत तेल खर्च होता जा रहा है।

तेली खसम किहीं तबौ रूखै खांय।

श०– खसम–पति। रूखै–सूखा।

कहावत ऐसे कंजूस के प्रति कही गई है जो घर में वस्तु के रहते हुये भी कष्ट उठाये या अपने ही घर में पति के द्वारा उसे पर्याप्त सुविधा न मिल पाये।

अ०– तेली पति होने के बाद भी रोटी सूखी खानी पड़ती है। ऐसी कंजूसी भी किस काम की?

तेलिया–तेलिया बेलिया जोड़े
रहिमान ढकेलै कुप्पा।

श०– बेलिया– जिससे तेली लोग तेल निकालकर देते हैं। कड़ुवे बेल को खोखला करके तेल देने का पात्र बनता है। रहिमान–किसी का नाम है जो तेली के सम्पर्क में हो। कुप्पा– तेल के लिये चमड़े का बना पात्र।

कहावत दूसरों के द्वारा किसी वस्तु के दुरुपयोग पर कही गई है।

अ०– कोई तो कण–कण जोड़े और दूसरा है कि जमा पूँजी का नुकसान कर दे। तेली बेचारा तो एक–एक बेलिया जोड़–जोड़ कर मटकी भर देता है और रहमान कुप्पे का कुप्पा तेल जमीन पर गिरा देता है।

तेली रोवै तेल क मकसूद रोवै खरी क।

श०– खरी–तेल पेरवाते समय सरसों का हिस्सा जो बच जाता है उसे खरी कहते हैं। इसे जानवरों को खिलाया जाता है।

कहावत उस समय कही जाती है जब किसी आदमी को सामान की आवश्यकता है।

अ०– तेली को तेल की जरूरत है तो वह तेल के लिए परेशान होता है। दूसरे व्यक्ति मकसूद को खरी चाहिए तो वे अपनी खरी की चिन्ता में परेशान है। सबको अपनी–अपनी चिन्ता लगी हुई है।

तेलिन से का धोबिन घाट
इनके मूसर उनके लाट।

श०– तेलिन–तेली की स्त्री। धोबिन– जो कपड़े धोता है, उसकी स्त्री। कहावत तुलनात्मक रूप में कोई किसी से कम नहीं है, पर कही गई है।

अ०– तेलिन से धोबिन कोई कम नहीं है, इसलिए कि तेलिन के पास यदि कोल्हू के बीच में लगने वाली लकड़ी यानी मूसल है तो धोबिन के पास भी कपड़ा धोने का पत्थर। कोई किसी से किसी मायने में कम नहीं है।

"तो"

तोका न मोका लै भारे क झोंका।

श०– तोका–तुझको। मोका –मुझको। भारे–भाड़। झोंका–डालना। आपस में जब कोई वस्तु एक दूसरे के काम नहीं आती है तो कहावत कही जाती है।

अ०– न तुम्हारे काम में आने की, न मेरे काम में, तो ले जाओ भाड़ में डाल आओ। जल जाय संतोष ही मिल जायेगा कि वह किसी के काम नहीं आई।

तोर नइहर मोर जाना बा
नौ से गदहा बांधा बा।

कहावत कटूक्ति के रूप में कही गई है। कहते हैं किसी नारी के मैके की बुराई उसके लिए असह्य बात है। वह कभी भी अपने मैकेवालों की बुराई नहीं सहन कर सकती है, यह स्वाभाविक बात है।

अ०– कोई स्त्री या पुरुष कहता है कि अरे तुम्हारा नैहर मेरा देखा है वहां पर तमाम गधे वंधे हैं।

तोहरे मुंहे घिव गुर।

अ०– जब कोई आदमी कोई शुभ संदेश दे या किसी अच्छी बात की कामना प्रकट करे तो कहावत कही जाती है। यदि ऐसा हो तो तुम्हें मिठाई खिलायेंगे।

तोला भर की चार कचौड़ी खुरमा ढाई माशे का
लाला जी ने ब्याह रचाया लंहगा बेंच लुगाई का।

श०– तोला–एक रुपये भर का। खुरमा– एक मिष्ठान्न

लहंगा– स्त्रियों के पहनने का वस्त्र। लुगाई–स्त्री।

अ०– लाला जी के यहां ब्याह का आयोजन हुआ तो एक–एक तोले की चार कचौड़ी, ढाई–ढाई माशे का खुरमा बनवाया और अपनी पत्नी का लहंगा बेंचकर खर्च निकाला। राजस्थान में इस कहावत को इस प्रकार से कहते हैं–

'तोला भर की चार कचौड़ी, खुरमा ढाई माशे का
घर में रोवै बहिन भांजी बाहेर रोवै नाई का।

लाला जी ने ब्याह रचाया लहंगा बेंच लुगाई का
धीरे–धीरे जीमो पंचो देखो गजब खोदाई का।

तोला भर की तीन चपाती कहें–जीमने चलो साथी।

अ०– रुपये भर की तीन पतली रोटी बनी है उस पर कह रहे हैं आओ साथी, चलो खाना खाने चलें। इस पर एक कहावत याद आ गई है–

'सुपारी ऐसी लोई, पान ऐसी पोई
तनिका पूछा तौ देवान जी से और पातर पोई।

खाने के नाम पर इससे बढ़कर अतिशयोक्ति और क्या हो सकती है?

तोरई होइगै मूरी खरपतवा होइगा साग
अगवारे पिछवारे बइठैवाला सब होइगा सरदार।

श०– तोरई–तरोई। मुरई–मूली। खरपतवा–खरपतवार। सरदार–महान, बड़े आदमी, सबसे बड़ा सदस्य घर का।

कहावत समय के साथ आदमी का मूल्यांकन कराती है।

अ०–समय की बात है कि तरोई जैसी तरकारी मूली गाजर हो गई, खरपतवार साग हो गये और वह आदमी जो निठल्लों की तरह दरवाजे–दरवाजे घूमता और कभी इधर कभी उधर बैठता था आज बड़के सरदार बने बैठे हैं।

तोरि आयें छीमी औ खेत क किहिन इजारा।

श०– छीमी–हरी मटर की फली। इजारा–कब्जा।

कहावत जबरदस्त आदमी के ऊपर कही गई है।

अ०– खेत में जाकर छीमी भी तोड़ आये और खेत पर कब्जा भी दिखा रहे हैं।

तोहरे बूते कन भूसी एक्कौ न छूटी।

श०– कन–भूसी पछोरने पर अनाज के सरसों जैसे कण निकलते हैं। भूसी– जो धान के छिलके निकलते हैं।

कहावत किसी ऐसी स्त्री के प्रति कही गई है जिसमें न काम करने का साहस है न अक्ल है।

अ०– तुम्हारे इतना जांगर नहीं कि तुमसे धान की भूसी व कण निकल पायेंगे।

'तं'

तंग जूतियों से नंगे पांव रहना भला है।

श०– तंग–कसी, पैर में काटने वाली। नंगे–बिना जूता पहने।

आवश्यक वस्तु यदि कष्टकारक है तो उससे भला है कि वह नहीं हो।

कवि घाघ के शब्दों में– 'नसकट पनही बतकट जोय' तो नसकट पनही हो तो उससे अच्छा नंगे पांव ही है। गांव की कहावत है–'वा सोने को जारिये जासों टूटे मान'।

तंग मोहरी जंग लड़ावै।

श०– तंग–सकेत, छोटी।

कहावत कसी हुई मोहरी यानी चूड़ीदार पैजामे के ऊपर कही गई है।

अ०– पहले के जमाने में चूड़ीदार पैजामे का बड़ा ही रिवाज था। वैसे आज भी लोग चूड़ीदार पैजामा, शेरवानी पहनने के शौकीन है। यह मुगल काल की प्रसिद्ध पोशाक थी। इसको प्रहनने में बड़ी मेहनत लगती थी।

'थ'

थका ऊंट सरांय ताकै।

श०– थका–अधिक परिश्रम करने के कारण सुस्त हो जाने वाला। सरांय–ठहरने की जगह। ताके–देखता है।

कहावत अधिक परिश्रम के बाद शरीर की सुस्ती पर कही गई है।

अ०– थकने के बाद ऊंट अपने सुस्ताने की जगह की तलाश में रहता है।

थका तैराक फेन चाटै।

श०– तैराक–तैरने वाला।

अ०– नदी या तालाब में जब आदमी तैर करके बहुत थक जाता है तो वह मारे थकान के किनारे का फेना ही चाटने लगता है कि कुछ तो राहत मिले। आदमी मुसीबत में कुछ भी कर सकता है।

थाकी देह गोन भइ भारी।

अब का लादौ ए ब्यापारी।।

श०– गोन–पीठ पर रखने की काठी। भारी–बोझिल, कठिन। लादौ–लादना, बोझ रखना। व्यापारी–बनिया जो वाणिज्य का काम करता हो।

कहावत वृद्धावस्था पर कही गई है। बुढ़ापे में आदमी या जानवर की ताकत घट जाती है।

अ०– हे व्यापारी, अब तो शरीर थककर जर्जर हो चला है। यह समय अब मरने का है, अब मेरे ऊपर क्या बोझ लाद रहे हो?

'था'

थारी बाजी पूता रहें हमार

ढोल बाजी पूता भये तोहार।

श०– पूता–पुत्र।

कहावत परंपरागत अधिकारों को लेकर कही गई है।

अ०– थाली बाजी तो लोक परंपरागत रीति–रस्म के अनुसार समझ लेते हैं कि घर में पुत्र का जन्म हुआ है। सास–बहू से कहती है कि जब थाली बजी तो पुत्र हमारा था और ढोल बजने के बाद तुम्हारा हो गया।

थारी का नांद मा नहीं ढूंढ़तै।

श०– नांद– मिट्टी का बना एक ऊंचा गोल पात्र।
अ०– थाली इतनी बड़ी होती है कि नाद में समा सकती है तो थाली नाद में खोजी जाती है। खोई वस्तु के जहां मिलने की संभावना नहीं है वहां पर देखकर शंका मिटा ली जाती है।

थारी गिरी झंनकार भै

फूटै चाहै न फूटै।

अ०– जब घर में कलह होगा तो निश्चय ही सभी को पता चलेगा। जब थाली गिरी तभी उसकी झंकार सभी लोगों ने सुनी। वह फूटे या न फूटे। अलगाव हुआ कि नहीं यह बाद की बात है।

'थू'

थूक से सेतुआ नहीं सानि जात।

किसी चीज को बनाने में कितना सामान लगेगा यह जानना बहुत आवश्यक है। यदि कोई कंजूसी करना चाहेगा तो निश्चय ही काम बिगड़ जायेगा। कहावत ऐसे ही समय के लिए कही गई है।

अ०– सतुआ सानने के लिए पर्याप्त पानी की जरूरत होती है, वह दो बूंद पानी से नहीं साना जा सकता है।

'थो'

थोड़ मोल की कामरी करे बड़ों का काम

महमूदी औ बाफता रक्खे सबका मान।

श०– मोल–कीमत। महमूदी– एक प्रकार का मलमल है। कोई–कोई इसे मामद कहते हैं। बाफता–रेशमी कपड़ा।

कहावत कमरी के गुण पर कही गई है कि वह कितने काम की चीज होती है।

अ०– कमरी जो बहुत कम दाम की वस्तु होती है वह बड़े काम की होती है। छोटे–बड़े आदमी का मान रखती है। चाहे वह रेशमी कपड़े वाला हो या मलमलवाला हो कहीं भी बिछ जाती है। सभी की जरूरत पर काम आती है।

थोर करै गाजी मियां ढेर करै डफाली।

श०– थोर–थोड़ा। गाजी मियां–गाजी सालार उर्फ गाजी मियां जो महमूद गजनवी के भतीजे थे। बहराइच. में इनकी समाधि बनी है। डफाली–डफ या ढोल बजाने वाला।

कहावत बीच में कूद कर यश लेने के ऊपर कही गई है।

अ०– गाजी मियां चाहे कम ही करें मगर उनके यहां के डफ बजाने वाले आगे ही बढ़कर अपनी धारणायें प्रकट करने लग जाते हैं।

थोर खाना इज्जत से रहना।

फजूल खर्च करके वाहवाही लेने में कोई फायदा न होने पर कहावत कही गई है।

अ०– अपनी औकात के हिसाब से खान–पान रहन–सहन में खर्च करना चाहिए।

किसी की झूठी वाहवाही लेकर अधिक खर्च करने से कोई लाभ नहीं है। ऐसा कार्य करे जिसमें अपनी इज्जत भी बनी रहे और घर परिवार का काम भी चलता रहे।

थोड़ा खाना बनारस में रहना।

संतुष्ट रहकर थोड़ा भोजन करके रहने में जो सुख है वह कहीं भी नहीं है। कहते हैं–

'चना चबैना गंग जल जो पुरवे करतार

कासी कबहुं न छांड़िये विश्वनाथ दरबार।

भोले बाबा की काशी नगरी की महिमा ही अपार है।

थोड़ा खाना जवानी में मौत।

कहावत युवा अवस्था के खान–पान पर कही जाती है।

अ०– जैसे बिना ईंधन के दुनिया की कोई मशीनरी नहीं चल सकती है वैसे ही बिना भोजन के शरीर कमजोर हो जाता है। फिर यदि भूख के अनुसार समय–समय पर पूर्ण रूप से भोजन न मिला तो समझो कि जवानी में ही शरीर टूट जाता है तो वह जीवन भर नहीं संभलता।

थोर करै भवानी ढेर करै पंडा।

अ०– स्पष्ट है।

थोड़ी आस मदार की बहुत आस गुलगुलों की।

श०– मदार– मुसलमानों के एक पीर, गुलगुला–आटे में शक्कर मिलाकर कड़ाही में बनी गोल–गोल मीठी बरी होती है।

कहावत किसी बड़े आदमी का साथ पकड़ने या देवी–देवता, मंदिर–मजार पर प्रसाद के लालच के प्रति कही गई है।

अ०– मदार के दर्शन की उत्सुकता भक्त लोगों में कम होती है। गुलगुले के प्रसाद की अधिक होती है। मकनपुर में इनकी दरगाह है। प्रतिवर्ष वहां पर बहुत बड़ा मेला लगता है। मदार साहब पर गुलगुलों का प्रसाद चढ़ाया जाता है तो दर्शन के लिए जाते हुए लोगों को सबसे अधिक प्रसन्नता तो उस प्रसाद को खाने की होती है जिससे लोग खिंचे चले आते हैं।

थोथा चना बाजे घना।

श०– थोथा–खाली। घना–अधिक।

अ०– जिस चने में दाने नहीं होते, खाली छिलका होता है वह ज्यादा बजता है। उसी प्रकार से मनुष्य जो हाथ का खाली होता है वह अधिक बोलता व रोब मारता है। कहते हैं–

'अधजल गगरी छलकत जाय, भरी गगरिया चुप्पे जाय'।

जिस मनुष्य के न कोई गुण है न प्रभुता है, न यश है, वह अपने मुंह मियां मिट्ठू बनता रहे तो कौन उसकी परवाह करेगा?

थोथा फटकै उड़ि–उड़ि जाय।

श०– थोथा–खाली, भूसी। फटकै–सूप से पछोरना।

अ०– जब घुना सड़ा दाना सूप से पछोरा जायेगा तो वह निश्चय ही उड़ जायेगा क्योंकि उसमें वजन नहीं है। इसी तरह हल्की–फुल्की बात करने वाले आदमी की न कोई ईज्जत होती है न उसंकी कोई परवाह करता है।

थोर खाय ढेर ढकारै।

अ०– थोड़ा खाना खाकर डकारना। अभाव में भी पूर्ण संतोष का भाव होना।

थोर जोताई बहुत हेंगाई, ऊंचे बांधे आरी

उपजै तौ उपजै नहीं देय घाघ का गारी।

श०– जोताई–खेत जोतना। हेंगाई–खेत की मिट्टी के रोड़ों को फोड़ना। ऊंचे–ऊपर। आरी–मेड़।

कहावत घाघ की है जो खेती विषयक है।

अ०– खेत की जोताई चाहे कम करो मगर हेंगाई इतनी अधिक होनी चाहिए कि सब रोड़े फूट कर भुरभुरी मिट्टी बन जायं तथा खेत के चारों ओर की मेड़ खूब ऊंची हो ताकि सिंचाई के समय पानी से खेत भरा रहे। घाघ कवि कहते हैं कि यदि इतने पर भी अनाज न हो तो मुझे गाली देना।

थोर जोत बहुत हेंगावै ऊंच न बांधै आड़

ऊंचे पै खेती करै पैदा होवै झाड़।

अ०– यदि खेती की जोताई व हेंगाई हो मगर मेड़

ऊंची न बनाई जाय और खेत की ऊंची जमीन हो तो उस खेत में झाड़–झंखाड़ के अलावा और कुछ भी नहीं होगा।

थोरे दूध बहुते पूत आदर नहीं होत।

अधिक पुत्र और कम दूध की इज्जत इसलिए नहीं होती है कि थोड़े से दूध से न दही बन सकती है न मट्ठा और न घी। अधिक पुत्र के रहने पर माता–पिता का प्यार बंटकर थोड़ा हो जाता है।

'द'

दइव न मारै अपुनै मरै।

श०– दइव–भगवान। अपुनै–अपने आप ही।

कहावत कर्मफल पर कही गयी है

अ०– मनुष्य हमेशा अपने ही कर्मों का फल भोगता है। कोई अपनी जान अपने दुष्कर्मों के कारण देता है या उसका फल भोगता है तो वह अपने को दोष न दे कर भगवान को दोष देता है।

'चलत दसानन डोलत धरती।'

जो भगवान शंकर को अपना मस्तक काट–काट कर चढ़ाता था ऐसे दसशीश बीस भुजाधारी रावण का अनाचार और घमंड ही उसके नाश का कारण हुआ। सोने की लंका जलकर खाक हो गई।

जाके दया धर्म नहिं तन मं
मुखड़ा क्या देखे दर्पन मं।

श०– मुखड़ा–मुख। दर्पन–शीशा।

कहावत दयाशीलता पर कही गई है।

अ०– जिस मनुष्य में दया–धर्म नहीं है वह यदि अपना मुख शीशे में देखता है तो क्या लाभ?

दवा से ज्यादा दुआ फायदा करत।

श०– दुआ–प्रार्थना, विनती, आराधना, पूजापाठ के द्वारा अपने कष्टों के लिए मांगन मांगना। दवा से अधिक प्रार्थना, आराधना आदि से लाभ होता है।

दमड़ी कै हांड़ी गै, कुत्ता
कै जाति पहिचानी गै।

श०– दमड़ी– पैसे का आठवां भाग।

कहावत आदतों के ऊपर कही गई है चाहे मनुष्य की हों या जानवर की।

अ०– थोड़ा सा नुकसान जरूर हुआ मगर कुत्ते की आदत तो जानी गई कि यह हांड़ी देखते ही बिना मुंह डाले नहीं रह सकता है। कहा है–

'केतनौ सींचै नीम सदा घिव–गुर से
जेकै जौन सुभाव छूटे नहिं जिव से'।

इसी तरह से हर गलत आदमी अपने स्वभाव से मजबूर होकर गलती करने से रुक नहीं पाता है।

दस पांच क लकड़ी एक क बोझ।

अ०– यदि काम का बोझ अधिक है और काम करने वाले कम हैं तो वह काम भारी पड़ता है और यदि काम करने वाले अधिक हों तो वही काम हल्का हो जाता है। जो लकड़ी एक आदमी के लिए बोझ रूप में है वही यदि दस पांच लोग हों तो सबके लिये बोझ न होकर थोड़ी–थोड़ी लकड़ी के रूप में आसानी से हाथों–हाथ स्थान पर पहुंचाई जा सकती है।

दलिद्रै कै बिटिया लाख टका कै सपन देखैं।

श०– दलिद्र–गरीब, टका–पैसा, धन। सपन–स्वप्न।

कहावत व्यंग्यपरक है।

अ०– किसी गरीब घर से आई बहू को कहा जा रहा है कि गरीब घर से आकर यहां अमीरी की इच्छा रखती है। बढ़–चढ़ कर बातें करती है जैसे बड़े आदमी की बेटी हो।

दइव देत है तो छप्पर फाड़ कै देत है।
नहीं तौ चमड़ी उधेर लेत है।

कहावत ईश्वरवादी है। जो करता है वही करता है। उसकी इच्छा के बिना सींक नहीं गिर सकती है।

अ०– भगवान जब देता है तो ऐसा देता है कि पता ही नहीं चलता कि कहां से पैसा आ गया? और ज़ब नहीं देता तो ऐसी गति बना देता है कि कष्टों के मारे बोलती बंद हो जाती है।

दखिनी कुलछिनी माघ पूस सुलछिनी।

श०— दखिनी–दक्षिणी। कुलछिनी– बुरे लक्षण वाली, हानिकारक। सुलक्षिणी–अच्छे लक्षण वाली, लाभकारी।

अ०— दक्षिणी हवा किसान भाइयों के लिए हानिकारक होती है। वही हवा माघ पूस के माह में किसान भाइयों के लिए लाभकारी भी होती है।

दस घर राव आठ घर राजा
चार हले का बड़ा किसाना।

श०— राव–सबसे बड़े आदमी की पदवी होती थी।

अ०— जिसके पास दस हल की खेती है वह राव है, जिसके पास आठ हल है वह राजा है और जिसके पास चार हल है वह किसानों में सबसे बड़ा किसान है।

दसे असाढ़ी कृस्न की मंगल रोहिनि होय
सस्ता धान बिकाइहै हाथ न छुइहैं कोय।

श०— दसे–दसमी। असाढ़ी–आसाढ़ मास। कृस्न–अंधेरा पाख। रोहिनि–रोहिणी नक्षत्र। बिकाइ है–बिकेगा। कोय–कोई।

कहावत घाघ कवि की है जो नक्षत्रों के ऊपर कही गई है।

कहावत है–यदि आषाढ़ कृष्ण दशमी के दिन मंगलवार और रोहिनी नक्षत्र पड़ती है तो धान बहुत सस्ता बिकता है।

दमड़ी क भजन गावैं और
छ आना क मंजीरा फोरै।

श०— दमड़ी–पुराने जमाने का एक छोटा सिक्का होता था। मंजीरा–ढोलक के साथ बजाया जाने वाला एक प्रकार का वाद्ययंत्र है। फोरै–फोड़ना, टुकड़े कर देना।

अ०— जरा सा भजन क्या गाया और इतना कीमती मंजीरा ही फोड़ डाला।

दबी बिल्ली चूहा से कान कटावै।

कहावत विवश आदमी पर कही गई है।

अ०— दबने वाली बिल्ली के चूहे भी कान काट लेते हैं।

दबे पर चींटिव चोट करत है।

अ०— आदमी की तो बात ही दूसरी है। चींटी भी यदि दबाव में पड़ जाती है तो बलवान बनकर चोट पहुंचा सकती है।

दसो संख जोगी दसो संख राजा।

यह कहावत हस्तरेखा के ऊपर कही गई है।

दर्जी की सूई कभी रेशम में तो कभी टाट में।

कहावत पेशेवर व्यक्ति पर कही गई है जिसे मोटा–महीन सब तरह का काम करना पड़ता है।

अ०— दर्जी को कभी रेशम के कपड़े सिलने पड़ते हैं तो कभी टाट भी सिलना पड़ता है। वही सूई हर स्थान पर काम आती है।

दलाल का दिवाला क्या
मसजिद में ताला क्या।

श०— दलाल–बिचौलिया जो लेन–देन वालों के बीच में पड़कर दोनों से पैसा खाता हो। दिवाला–जिसको अपने पेशे में लगातार घाटा ही घाटा होता चला जाय।

अ०— जो दलाली का पैसा खाता हो उसके लिए व्यापार में चाहे घाटा हो चाहे फायदा हो, चाहे व्यापारी का व्यापार डूब ही क्यों न जाय, उसे तो बिचौलिया के पैसे मिल ही चुके हैं फिर क्या परवाह है? इसी तरह से मस्जिद में ताला बंद करने का कोई काम ही नहीं है। यह तो नमाज सिजदे की जगह है, लोग आये नमाज पढ़ी चल दिये। चढ़ावे का कोई प्रश्न ही नहीं उठता तो ताला क्यों कर लगे।

दइजा क आगम जानि परा
जब दुलहिन क नांव 'निरासा' धरा।

कहावत में बहुत चुटीला व्यंग्य किया गया है।

अ०— 'निरासा' शब्द ही दहेज को नकार देता है। बहू का जब नाम ही ऐसा है तो रूप रंग, दान, दहेज आदि भविष्य के लिए क्या सोचा जाय?

सही स्थिति बहू के नाम से ही पता लग जाती है।

दइव क घर बड़ा भारी होत।

अ०— ईश्वर की गति बड़ी निराली है उसे जाना नहीं जा सकता है।

दहिव–दहिव कै के बचै क होइगा।

कहावत किसी वस्तु के खराब होने की संभावना पर कही गई है। जब घर में कोई सामान या कोई कच्चा माल सड़ने–गलने, खराब होने लगता है तो उसे लोग सोचते हैं कि किसी तरह से जो कुछ भी पैसा मिल सके वही वसूल लिया जाय।

कहावत है कि दही–दही पुकार कर बेंचना पड़ गया जिससे सामान से कुछ तो पैसा निकल पाये।

दक्खिन गये न लौटे रहे चंदेरी छाय।

कहावत उन लोगों के प्रति कही गई है जो परदेश जाने के बाद घर वापस ही नहीं आते। इसकी कथा इस प्रकार है–अलाउद्दीन की फौज जब लड़ाई पर गई तो वह वहीं घेरा डाले पड़ी रही। इस ऐतिहासिक कथा को लोग उस समय कहावत में कहते हैं जब परदेश गया आदमी अरसे तक घर नहीं आता है।

दबाय पाये ग्वालिन तो गहिर बासन लाव।

कहावत किसी को मजबूर कर नाजायज फायदा उठाने के समय कही जाती है।

अ०– ग्वालिन जो दूध दही बेंचती है उस पर दबाव डालकर बड़े बर्तन में दही डालने के लिए विवश करके ज्यादा दही ले लिया।

दबा हाकिम मातहत क ताबेदार।

श०– दबा–हाकिम–आफीसर। मातहत–नौकर, नीचे काम करने वाले। ताबेदार–नौकर।

अ०– गलत काम करने के कारण दबा अधिकारी अपने अधीनस्थों का नौकर होता है।

दबा बनिया पूरा तौले।

अ०– बनियों के लिए मशहूर है कि वे कम सामान तौलते हैं। यहां पर बनिया यदि दबाव में है तो पूरा सामान देगा, कम नहीं तौलेगा।

दमड़ी कै अरहर, सारी रात खंड़हर।

श०– अरहर–अनाज जिसकी दाल बनती है।

कहावत बहुत मामूली या कम वस्तु पर जब पहरेदारी की जाती है, तो कही जाती है।

अ०– थोड़ी सी अरहर पर रातभर की पहरेदारी भला कहां तक उचित है? कम वस्तु पर अधिक परिश्रम करना।

दमड़ी की गुड़िया क टका कै डोली।

अ०– जितने की गुड़िया नहीं उससे ज्यादा दाम की तो उसके लिए पालकी आई है।

दमड़ी कै घोड़ी दस पसेरी दाना।

अ०– जितने की घोड़ी नहीं उससे ज्यादा उसके खाने में लगना। घोड़ी तो बड़े शौक से लाये मगर खिलाने के समय खर्च का भारी पड़ना।

दमड़ी की पाग अधेली क जूता।

श०– अधेली–दमड़ी से बड़ा सिक्का। पैसे का आधा।

अ०– महंगा सामान सस्ते में और सस्ता सामान महंगे में लेना। उल्टा–सीधा काम करना। पगड़ी का दाम कम और जूते का ज्यादा देकर आये।

दमड़ी कै लाई बनैनी खाय, ई घर रहै कि जाय।

अ०– बानिन जब घर में ही दुकान का सारा सामान खा जायेगी तो वह बेंचेगी क्या?

दमड़ी कै हांडिव मनई ठोंक बजाय के लेत।

श०– हांडिव– मिट्टी की बनी हांडी।

कहावत किसी वस्तु के देखभाल कर लेने पर कही गई है।

अ०– कोई भी सामान चाहे बड़ा हो या छोटा आदमी जब खरीदने लगता है तो देखभाल कर, सोच–समझ कर लेता है। मिट्टी का कोई बर्तन तक ठोंक बजा कर लेते हैं कहीं टूटा तो नहीं है।

दम है तो क्या गम है?

अ०– जब शरीर में ताकत है तो फिर क्या परेशानी है?

दमा दम के साथ जात।

अ०– दमें की बीमारी कभी नहीं जाती चाहे जितना भी दवा दारू करो। वह मरने के बाद ही प्राण के साथ जाती है।

दया धर्म का मूल है पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छांड़िये जब तक घट में प्रान।।

अ०– तुलसी का यह दोहा मनुष्य को पाप कर्म के प्रति सचेत करता है। दया सबसे बड़ा धर्म है। दया से बढ़कर संसार में कोई अच्छा धर्म नहीं है और अभिमान से बढ़कर कोई पाप नहीं है। इसलिए जब तक जिओ दया अपने मन में अवश्य बनाये रखो।

दरिद्दर के घरे नोनै पकवान।

कहावत अति दरिद्रता के प्रति कही जाती है।

अ०– दरिद्र के घर में नमक ही पकवान का स्वाद देता है। कम से कम रोटी का बोरन नमक तो है।

दही चली बेंचन तो पीठ पै धरी कमोरिया।

श०– कमोरिया–मटकी जिसमें दही भरकर ग्वालिन बेंचने जाती है। कहावत अपने काम में शर्म के प्रति कही गई है।

अ०– दही बेंचने निकली तो मगर शर्म के मारे कमोरी सिर पर रखने के बजाय पीठ पर रखी कि कहीं कोई देख न ले।

दही क गवाह चिउरा।

अ०– चिउरा दही का बड़ा भारी जोड़ माना गया है।

दस नकटी मं नाकवाला नक्कू।

श०– नकटी– जिसकी नाक कटी हो। नक्कू–बुरा, बदनाम, हास्यास्पद।

अ०– जहां गलत विचारों के लोगों का बाहुल्य हो या एक ही तरह के बहुत लोग हों वहाँ पर उनके विरोधी हास्य– व्यंग्य के पात्र बन जाते हैं।

जहां पर दस नकटे हैं वहां पर एक नाक वाला आदमी नक्कू–व्यंग्य का पात्र–बन जाता है।

दमड़ी की दाल, बुआ पतली न हो।

कहावत अपनी लायकी और झूठी शान पर कही जाती है।

अ०– जरा सी तो दाल बनाने को दिया है उस पर भतीजी का वह तुर्रा कि पतली भी न होने पावे और मिल सबको जाय।

दलिद्रे क लड़िका रोटी क सपन देखे।

अ०– गरीब लोगों को रोटी तक नसीब नहीं होती हैं। वे बेचारे रोटी का स्वप्न में देखते हैं।

दरबार गये घरबार न सूझे।

श०– दरबार–राजसभा, घरबार–घर–द्वार। सूझै–स्मरण।

अ०– जहां पर आदमी को सुख सुविधा, आराम मिलता है वहां पर उसे अपने घर स्वजनों की याद नहीं आती है। दरबार में रहने पर घर का स्मरण नहीं आता है।

दहिने सुर भोजन करै बायें सुर पाखाने जाय।

श०– सुर–श्वास। पाखाने–दीर्घशंका, शौच।

कहावत पहले जमाने की है जब धमनियों की सांसों के ऊपर विचार किये जाते थे।

अ०– कहते हैं कि जब नाक के दाहिने छेद से सांस चले तो भोजन करना चाहिए और बांये छेद से सांस चले तो पाखाने जाना चाहिए।

दरिया मं रहिके मगर से बैर।

श०– दरिया–नदी। मगर–पानी का एक बड़ा जीव है। बैर–दुश्मनी।

कहावत आस–पास, पड़ोस, नाते–रिश्ते से दुश्मनी के प्रति कही जाती है।

अ०– जिस स्थान पर रहना हो, जिसके साथ रहना हो, जिसके पड़ोस में रहना हो उससे दुश्मनी कभी नहीं करनी चाहिए। कहा गया है 'दूर के दोस्त से पास का दुश्मन अच्छा होता है'। इसलिए कि दूर का आदमी तो बुलाने से ही आयेगा। उसके आने में समय लगेगा मगर वक्त पड़ने पर नजदीक का आदमी ही काम आयेगा वह चाहे दुश्मन भी हो तो भी। तो जल में रहकर मगर से बैर नहीं करना चाहिए इसी में बुद्धिमानी है।

दरिया मं गये पियासे आये।

किसी विशेष स्थान पर पहुंचकर या किसी विशेष व्यक्ति के पास जाकर लाभ के अवसर से चूक जाना। नदी तक जाकर प्यासे लौट आये।

दया पर रोटी मिल सकत है मुल इज्जत नहीं मिल सकत।

अ०— यदि तुम किसी के दया के पात्र हो तो वह तुम्हें भोजन भले ही दे मगर इज्जत चाहो तो नहीं पा सकते हो।

'दा'

दाई से पेट नहीं छिपत।

अ०— जो स्त्री दाई का काम करती हो, बच्चे पैदा कराती हो उससे यदि चाहो कि गर्भ का बालक छिपा लें तो असंभव है।

दाने—दाने पै लिखा है
खाने वाले का नाम।

कहावत भाग्यवादी है। जिसके भाग्य का जहां पर दाना पानी लिखा है वह वहां बिना बुलाये अचानक पहुंच जाता है। इस कहावत पर एक कथा याद आ गई। कथा इस प्रकार है—

किसी स्वामी और उनकी पत्नी में एक बार इसी बात को लेकर विवाद छिड़ गया। स्वामी जी ने कहा भगवान सबको खाने को देता है। किसी को भूलता नहीं। उसकी दुनिया में दाने—दाने पर खाने वाले का नाम लिखा है। उनकी पत्नी इस बात को मानने को तैयार नहीं हुई। उन्होंने क्या किया कि अपनी सिंदूर की डिबिया में एक चींटी डालकर रख दिया। सोचा देखें कैसे भगवान शाम तक इसे खाना देते हैं? जब शाम हो गई तो स्वामी जी की पत्नी ने कहा चलो देखें भगवान कैसे शाम तक सबको खाना देते हैं। उन्होंने क्या किया कि अपनी सिंदूर की डिबिया को खोला तो देखा वह चींटी उसी डिबिया में पड़े चावल को मुंह से पकड़े खा रही थी। इस पर स्वामी जी ने कहा देखा, मैं जो कह रहा था वह सच हुआ। कभी किसी समय पूजा आदि करते समय वह चावल डिबिया में गिर गया होगा वही चावल चींटी का आहार बन गया।

दाना न भूसा खरहरा दुइनो जून।

श०— दाना—खाने को। खरहरा—घोड़े की पीठ का गर्द ठीक करने की वस्तु। जून—समय।

कहावत ऐसे मौकों पर कही जाती है जब किसी आदमी या जानवर से काम तो भरपूर लिया जाय, उस पर डांट मार भी पड़े मगर खाने को न के बराबर दिया जाय। घोड़े के खाने का भरपूर इंतजाम न होने पर भी उसकी गर्द जरूर साफ कर दी जाती हो।

दान की बछिया कै दांत नहीं निहारि जात।

अ०— सेंत मेंत में दान की मिली वस्तु की अच्छाई—बुराई नहीं देखी जाती है।

दाहिन काग सुखेन सुहावा
नकुल दरस सब काहू पावा।

यह लोकोक्ति बाबा तुलसीदास की है जो सगुन के प्रति कही गई है।

अ०— यात्रा के समय दाहिने हाथ की तरफ कौवा बैठा मिले तथा नेवला रास्ते में मिल जाय तो यात्रा बड़ी शुभ होती है।

दाना अरसी बोवा सरसी।

श०— अरसी एक प्रकार का अनाज होता है। इसके फूल श्याम रंग के होते हैं।

कहावत घाघ कवि की है। कहा है— अलसी नम खेत में बोनी चाहिए।

दानी दान करै भंडारी क पेट पिराय।

अ०— जो मालिक है वह तो दान दे रहा है और जो धन को सुरक्षित रखने वाला भंडारी है दान देते देखकर उसके पेट में दर्द हो रहा है, बुरा लग रहा है।

दारा सुत बित बंधु, नदी नाव संबंध।

श०— दारा—स्त्री। सुत—पुत्र। बित—धन। बंधु—भाई।
अ०— उपरोक्त सभी सदस्यों का एक दूसरे से बहुत गहरा संबंध होता है जिस प्रकार से नदी और नाव का सम्बन्ध होता है।

दादू वक्ता बहुत हैं मथि काढ़त ते और।

श०— दादू—एक संत। वक्ता—बोलने वाले। मथि—किसी बात को गहराई से जानना। काढ़त—निकालना, ते—वे लोग। और—दूसरे।

अ०— दादू कवि का कहना है कि बोलने, भाषण देने

वाले लोग तो संसार में बहुत हैं मगर जो किसी विषय को गहराई से जानते हैं, जो गहन अध्ययन, मनन के बाद उसका निचोड़ निकाल कर बताते हैं, वे दूसरे ही लोग हैं जो विरले हैं।

दाई कै कठोलिया माई क धरी अहै।

श०– कठोलिया–काठ की बनी परात।

कहावत पारंपरिकता के ऊपर कही गई है। जैसा पहले से होता आ रहा है।

अ०– दाई की वही पुराने जमाने की रोटी रखने वाली कठोलिया आज भी रोटी रखने के लिए है जिसमें माँ रखती थी।

दादा के राज न बाबा के राज टिकुली दीन दमादे राज।

दादा–बाबा–पूर्वज। दमादे–लड़की का पति। राज–समय में।

दामाद के साथ रहने पर यदि कोई अनुचित काम करना पड़ता है तो कहावत व्यंग्य में कही जाती है।

अ०– जो काम आज तक पुरखे पुरनियों के समय में न किया था वह आज दामाद के समय में मजबूरन करना पड़ रहा है।

दाता के घर लछमी ठाढ़ी रहत हुजूर।
जैसे गारा राज को भर–भर देत मजूर।

श०– दाता–दानी, देनेवाला। लछमी–लक्ष्मी, धन। हुजूर–नम्रता के साथ। राज–मकान बनाने वाला मिस्त्री। गारा–मिट्टी का गाढ़ा लेप जिससे चुनाई होती है।

कहावत दानी व भाग्यवान के प्रति कही गई है।

अ०– दाता के घर में सम्पत्ति यानी धन–दौलत इतनी जल्दी सुलभ हो जाती है जैसे किसी राजगीर को कोई मजदूर गारा लाकर ला कर देता हो मकान बनाने के लिए।

दाढ़ी मूंछे मर्द सींगी पूंछी बर्द।

अ०– मर्द की पहचान है दाढ़ी और मूंछ तथा बैल पहचान है सींग और पूंछ।

दाना पानी संजोग से मिलत।

अ०– अचानक कहीं पर खाना–पानी का मिलना भी एक भाग्य की बात होती है।

दाई चमेली मिर्जा मोंगरा।

अ०– दो लोगों में अधिक भिन्नता हो तो कहावत कही जाती है। दाई तो चमेली का फूल है और मिर्जा मोंगरे के फूल हैं। दोनों सुगंधिपूर्ण हैं और अपने को बहुत बड़ा आदमी समझते हैं। एक बेहद कमजोर दूसरा मोटा–ताजा होना।

दाइव मीठ माइव मीठ
भला सरगे को जाय?

कभी–कभी मनुष्य के जीवन में असमंजस की स्थिति आ जाती है तो कहावत कही जाती है।

अ०– धर्मसंकट यह है कि दाई जो दूध पिलाती है वह भी बड़ी प्रिय है और मां जो पालती–पोसती है, जिसने जन्म दिया वह अत्यन्त प्रिय है। तो भला किसको अपने से दूर करे? न मां को छोड़ते बनता है न दाई को छोड़ते बनता है।

दागे क सांड़ क दाग दीन लोहार क।

श०– दागे–सांड़ को गरम लोहे से दागा जाता हैं जिसे लोहार दागता है।

अ०– एक आदमी लोहार के पास सांड़ दगवाने आया। उसे किसी ग्राहक से बात करने में देर होती देखकर वह आदमी जलते लोहे को लेकर लोहार को दाग दिया। इस तरह से जल्दबाजी का काम बहुत खराब होता है।

दाता के नाम पहाड़ चढ़ै।

दाता के नाम की महत्ता बहुत होती है। उसका नाम लेना लोग बड़ा पुण्य समझते हैं। नाम लेने में बड़ा गर्व समझते हैं।

दाता देवे औ सरमावे।
बादल बरसे औ गरमावे।

अ०– जो देने वाला दानी होता है बहुत देने के बाद भी उसको यही लगता है कि हमने बहुत कम दिया।

उसी जगह बादल बरसता है और गरजता है कि मैंने इतना अधिक पानी बरसा दिया। यही दशा कंजूस आदमी की होती है जो बादल की तरह थोड़ा देकर गरजता है कि मैंने इतना दिया है।

दाता पुन्य करे कंजूस झुर–झुर मरे।

अ०– दाता पुण्य करता है, दान देता है। उसी जगह कंजूस आदमी इतना दान देते देखकर सूखते चला जाता है कि सब दिये डाल रहे हैं।

दादा कहे से बनिया गुर देत।

कहावत मीठी बोली पर कही गई है।

अ०– मीठी वाणी से मनुष्य दूसरों को भी अपना बना लेता है। बनिया दादा के कहने पर गुड़ खिलाता है। महात्मा कबीरदास ने कहा है–

'मधुर वचन है औषधी
कटुक वचन है तीर'
श्रवण द्वार ह्वै संचरै
साले सकल सरीर'।

दाहिन धोवे बांवा, बांवा धोवै दाहिन।

श०– दाहिन–दाहिना हाथ। बांवा–बाँया हाथ।

कहावत एक दूसरे के सहयोग के प्रति कही गई है।

अ०– दाहिना हाथ बांयें को धोता है और बांया हाथ दाहिने को धोता है।

यानी दोनों एक दूसरे की मदद करते हैं।

दाल भात मा मूसरचंद।

जब दो आदमियों के बीच में कोई तीसरा आदमी अपनी टांग अड़ाता है या अपने विचारों को थोपता है तो कहावत कही जाती है।

अ०– जब दो आदमी आपस में बात करते रहें तो किसी तीसरे को कभी दख़ल नहीं देना चाहिये। बीच में बोलनेवाला मूर्ख होता है।

दाता क बेड़ापार सूम कै मिट्टी ख्वार।

श०– बेड़ापार–नाव पार हो जाना। ख्वार–खराब।

कहावत दाता व सूम के प्रति कही गई है।

अ०– देने वाले का जीवन तो सुख से पार हो जायेगा मगर कंजूस की बड़ी दुर्दशा होती है।

दाता की कमाई मं सबै क साथ।

अ०– देने वाले के सभी साथी हो जाते हैं। पाने की अपेक्षा देने वाले से ही की जा सकती है कंजूस से नहीं।

दाता दान से फरै सूम अदावत से जरै।

अ०– दाता का भला दान से होता है और कंजूस सदा दुश्मनी से ही जलता रहता है।

दाता से वह सूम भला जो ठाढ़े देय जवाब।

अ०– कभी किसी को आशा में नहीं रखना चाहिये। काम करना हो तो कर दो वर्ना नहीं करना है तो सीधे उसे मना कर दो। देने वाले से वह कंजूस ही अच्छा है जो सीधे मना कर देता है।

दाता से सूम कहै हमहूँ राजकुमार।

अ०– दाता को धन देते देखकर कोई कंजूस कहे कि हम भी तुम्हारी तरह राजकुमार हैं। झूठे बड़प्पन की कामना करना।

दादा राज मं न खाये पान।
दांत निकारे निकरे प्रान।

अ०– जब कोई काम बाप–दादों के राज में नहीं किया तो आज उस काम को करने में कौन सा बड़प्पन है? पहले कभी पान खाया नहीं अब खाने को मिला है तो सबको दांत ही दिखाते बीत रहा है कि हम भी पान खाये हैं।

दाल खाय मोठ कै पानी पिये सोंठ कै।

श०– मोठ–बनमूंग जो दाल बनाने के काम आती है। सोंठ–एक वस्तु है मसाले में काम आती है।

कहावत मोठ की दाल के बादीपन पर कही गई है।

अ०– मोठ की दाल वायुयुक्त होती है। इसको खाने के बाद सोंठ, जो पाचक वस्तु होती है, उसका पानी अवश्य पीना चाहिये।

दाना न घास घोड़े की आस।

कहावत मतलबी आदमी के प्रति कही गई है जो मतलब के समय किसी से काम तो ले और खाने पीने के लिए कोई चिन्ता ही न करे।

अ०– घोड़े से उम्मीद तो बहुत करे कि इसी की आशा है हमें, मगर उसके खाने पीने की कोई परवाह ही न करे।

दाम करै सबै काम।

अ०– दुनिया में पैसा होना चाहिए जिसके पास पैसा है उसका सब काम हो जाता है।

'दि'

दिन माँगे तो दिया भर।
रात मांगे तो दिया भर।।

अ०– दरभंगा जिले में कहते हैं 'दिन मांगला तो सवासेर, रात मांगला तो सवासेर'। जब परिश्रम अधिक करने के बाद भी परिणाम सही न निकले तो कहावत कही जाती है।

अ०– चाहे दिन भर मांगे चाहे रात भर मांगे तो उतनी ही–दिया भर–ही भिक्षा मिलती है।

दिन की भइया, रात की संइयाँ।

श०– भइया–भाई। संइयाँ–पति।

कहावत ऐसी चरित्रहीन नारी पर कही गई है जो किसी पुरुष के साथ प्रत्यक्ष कुछ और परोक्ष कुछ संबंध रखती है।

अ०– जिस पुरुष को दिन में सबके सामने, खुलेआम भइया कहे उसी पुरुष से रात को पति की तरह व्यवहार करे।

दिया देवारी कोने मं बारा रोज डिठौने मं।

श०– देवारी–दीवाली त्योहार। कोने–किनारे, एक तरफ। रोज–दिन। डिठौने–बड़ी एकादशी जिसमें बच्चे हड़ा–हड़ाई खेलते हैं।

कहावत बड़ी एकादशी का संकेत देती है कि कब पड़ती है।

अ०– दीपावली के बारहवें दिन बड़ी एकादशी का पर्व पड़ता है। इसे कोई देवोत्थानी एकादशी, कोई डिठौनी एकादशी कहते हैं।

दिन की गर्मी रात की ओस
घाघ कहै बरखा सौ कोस।

कहावत घाघ कवि की है जो वर्षा के लक्षण पर है।

अ०– यदि दिनमें गर्मी और रात में ओस गिरे तो समझना चाहिए कि अभी पानी बरसने में बहुत समय लगेगा।

दिन को बादर रात को तारे
चलो कंत जहँ जीवें बारे।

श०– कंत–पति। जीवै–जीना। बारे–छोटे बच्चे।

अ०– यदि दिन में बादल छाये रहें और रात के समय आकाश साफ रहे तो वर्षा न होने के कारण खेत में दाना न होगा। पत्नी कहती है कि जब ऐसा लक्षण आसमान का हो तो तुरंत लड़के बच्चों को लेकर किसी ऐसी जगह चलें जहां पर ये नन्हें–नन्हें बच्चे तो जी सकें।

दिन की सात चलै जो घाड़ा
सूखै धान जल सातौ खाड़ा।

श०– घाड़ा–दक्षिणी हवा। सातौं खाड़ा–पृथ्वी के सातोंखंड।

यदि सात दिन तक दक्षिणी हवा बराबर चलती रहे तो समझो कि धरती के सातों खंड सूखने पर बहुत बड़ा अकाल पड़ सकता है।

दिन को बद्द रात निबद्दर
बह पुरवाई झब्बर–झब्बर।
घाघ कहे कछु होनी होई
कुंआ के पानी धोबी धोई।।

अ०– कहावत घाघ कवि की है। कहा है यदि दिन में बादर हो, रात को बिना बादर के आकाश हो और धीरे–धीरे पुरवा हवा बह रही हो तो वर्षा इतनी भी न हो पायेगी कि धोबी कपड़े तो धो लें, उसे कुयें के पानी से कपड़े धोना पड़ेगा।

दिवाली के बोये दिवालिया।

कहते हैं कि जब दीवाली के बाद खेत बोया जाय तो अनाज होने की कोई उम्मीद न करनी चाहिए।

दियरा क अहिर भदंइया बारी।
ए सब देय भलमनई क गारी।।

श०— दियरा—कछार में हैं। भलमनई— पढ़े—लिखे सभ्य इंसान।

अ०— कहते हैं दियरा के अहिर व भदंइया के बारी ये सभी को अधिक गाली देते हैं।

दिन गा आरे—बारे, जुआं हेरे दिया बारे।

कहावत किसी घर—घुमनी, बातूनी स्त्री पर लागू होती है।

अ०— दिन तो उनका घूमते रहने में बीत गया अब रात में चली हैं दिया जलाकर सिर की जुआं खोजने।

दिन को बादर रात तरैया
ना जाने प्रभु काह करैया।

अ०— स्पष्ट है।

दिन भै मिमियानी तौ मुसरी बिआनी।

अ०— मिमियानी—बकरी की तरह से बोलना। में—में कराहना यानी धीमें—धीमें स्वर में कहरना। मुसरी—एक बहुत छोटी सी चुहिया। बिआनी—पैदा की।

अ०— दिन भर धीरे—धीरे कांख—कांख कर, बकरी की तरह मिमिया कर पैदा भी किया तो मुसरी जैसी बिटिया।

दिशाशूल लै जाओ बायें राहु भोगिनी पूठ।
सन्मुख लेवे चंद्रमा लावै लक्ष्मी लूट।।

कहावत भड्डरी की है जिन्होंने ज्योतिष विचार के अनुसार यात्रा का लाभ बताया है।

अ०— दिशाशूल यदि बायें, राहु पीठ की ओर हो तथा चन्द्रमा सन्मुख हो तो यात्रा में अधिक से अधिक लाभ मिलता है।

दिन मं बूढ़ा—बूढ़ा रात की बराबर कूरा।

अ०— दिन के समय तो काम करने के लिए बूढ़ा बन जाता है और रात को जब खाने—पीने का समय होगा तो उसमें जवानों के बराबर हिस्सा बंटवा लेगा।

दिन की ऊंघी—ऊंघी
रात की चर्खा पूनी।

श०— ऊँघी—निंदाई सी। चर्खा—सूत कातने वाला यंत्र। पूनी—धुनी रुई लम्बी बत्ती जिससे सूत बनता है।

अ०— दिन भर तो सो—सो कर गंवाया अब रात में चली हैं सूत कातने। असमय का कोई भी काम बुरा होता है।

कहा है— 'जब सारी दुनिया सोवै, तो भगवंता रोटिया पोवै।'

दिन मं सोवै रोजी खोवै।

अ०— जो आदमी दिन में सोयेगा वह भला कोई नौकरी या व्यापार संबंधी काम क्या कर पायेगा? रोजी—रोटी किस प्रकार चलेगी?

दिल्ली कै बिटिया मथुरा कै गाय
करम फूटै तौ बाहेर जाय।

अ०— स्पष्ट है।

दिन खसा मजूर हँसा।

कहावत एक मजदूर के लिये कही जाती है।

अ०— दिन भर के अथक परिश्रम के बाद जब शाम होने लगती है तो मजदूर सोचता है अब छुट्टी मिलेगी, घर जाऊंगा, पैसे मिलेंगे तो खाने का सामान लूंगा। यही सब सोचकर वह हँस देता है और एक इत्मिनान की सांस लेता है कि अब छुट्टी मिल गई।

दिन जब बहुरत तो माटिव सोन होइ जात।

श०— बहुरत—अच्छे दिन आना। माटिव—मिट्टी।

कहावत भाग्यवादी है।

अ०— जब आदमी का दिन पहले जैसा अच्छा हो जाता है या फिर जब आदमी के पास पैसा हो जाता है तो मिट्टी भी सोना बन जाती है।

'दी'

दीमक क खाई लकड़ी चिन्ता क खाय सरीर नाहीं उबरत।

श०– दीमक– वह कीड़ा है जो लकड़ी में लगकर उसे खा जाता है। चिन्ता–परेशानियाँ तरह–तरह की शंकायें/खाय–खा जाना, समाप्त हो जाना। कहावत चिंता जैसी परेशानियों के प्रति कही गई है।

अ०– जिस पेड़ या लकड़ी में दीमक लगा हो और जिस शरीर में तमाम निर्मूल आशंकायें समा गई हों वह शरीर एकदम बर्बाद हो जाता है। गोस्वामी जी के कथनानुसार–

'चिंता पापिनि केहि नहिं खावा'। किसी ने कहा है–

'चिंता चिता समान'। जिस प्रकार से चिता मरा शरीर जलाती है उसी प्रकार से चिंता मनुष्य का जीवित शरीर जला डालती है।

दीवाने को बात बताई तो उसने कर दी चढ़ाई।

श०– दीवाने–सनकी, पागल, झक्की।

कहावत किसी नासमझ आदमी के प्रति कही गई है।

अ०– कोई आदमी यदि किसी आदमी को उसकी भूल या दुर्बलता बताता या समझाता है तो वह उलटे अपनी भूल न मानकर उसी पर धावा बोल देता है। किसी मूर्ख को अच्छी बात बताना भी हानिकर होता है।

दीवाल के भी कान होत।

अ०– किसी के प्रति कोई कही गई बात कभी छिपती नहीं है। चाहे जैसी बात हो फैल जरूर जाती है! कहावत है– 'मुंहे निकरी देस पसरी'। यानी कि कोई भी बात मुंह से इधर निकली नहीं कि चारों ओर फैल जाती है।

दीवाल खोई आलों ने
घर खोया सालों ने।

श०– आलों–ताख। खोया–बिगड़ा। सालों–पत्नी का भाई।

कहावत नाते–रिश्तों के प्रति कही जाती है। ये नाते–रिश्ते वाले साले किसी बहनोई के घर में रहकर किस कदर से उस घर की बर्बादी करते हैं।

अ०– दीवाल में यदि जाली या ताखा बने हैं तो दीवाल को कमजोर करते हैं इसलिए कि एक ईंटा बाहर से कोई भी तोड़कर घर में घुस सकता है। इसी प्रकार साला जिस घर में रहता है वह भी बर्बाद या कमजोर हो जाता है क्योंकि उसकी बहन उसके सामने किसी की नहीं सुनती।

दिल्ली से मैं आऊं जाऊं
खबर कहे मेरा भाई।

अ०– झूठा बड़प्पन दिखाना। दिल्ली खुद आते–जाते हैं और कोई समाचार हो तो भाई के द्वारा कहलाते हैं।

दीरघ होय न नेकहू, फारि निहारे नैन।

अ०– जो जैसा होगा उसमें प्राकृतिक बदलाव नहीं आ सकता है। यदि आंखें छोटी हैं तो वे आंख फाड़कर देखने से बड़ी नहीं लगेंगी।

दीन न जाय, बिनि–बिनि खाय।

अ०– लालची आदमी खुद तो बिन–बिन कर खा रहा है मगर उससे किसी को खाने के लिये देते नहीं बनता।

'दु'

दुखिया दुख रोवै, सुखिया जेब टोवै।

श०– दुखिया–दुखी मनुष्य। दुख–कष्ट, तकलीफ। रोवै–रोना। सुखिया–सुखी। टोवै–टटोलना।

कहावत दुखी और सुखी लोगों के प्रति कही गई है।

अ०– कोई तो दुख से परेशान अपना दुख सुना कर मन हलका करना चाहता है और दूसरा आदमी उसकी जेब टटोलकर कुछ पैसे लेने के चक्कर में पड़ा है कि इसी परेशानी में मैं भी अपना हाथ साफ कर लूं।

दुनिया है दुरंगी मकंदरी सराय
कहीं खूब खूबा कहीं हाय–हाय।

श०– दुरंगी–दो तरह की। मकंदरी–धोखेबाज। सराय–ठहरने का स्थान। खूब–खूबा–हँसी, ठट्ठा, खुशहाली। हाय–हाय–दुःख गमी, शोक।

अ०– इस संसार का भी क्या नजारा है, कहीं धोखा है,

कहीं ठहरने का स्थान है, कहीं खुशियों के कहकहे हैं तो कहीं गमी की हाय–हाय है।

दुर्बल कुनबा सराय की आस।

अ०– परिवार का कमजोर होना भी अभिशाप है। जिसके घर–बार नहीं है उसे कहीं सराय में रहना पड़ा सकता है। उसकी सारी उम्र खानाबदोशी में ही बीतती है।

दुविधा में दोऊ गये माया मिली न राम।

कहावत द्विधा स्थिति पर कही गई है।

अ०– जो माया–मोह के बंधन में पड़ा है उसे न धन–लक्ष्मी, परिवार का सुख मिल पाता है न भगवान में मन लग पाता है।

दसी तेल दोस।
एकादसी अन्न दोस।।

द्वादसी तिथि को तेल और एकादसी को अनाज खाने में दोष है।

दुइ हर खेती एक हर बारी
बूढ़े (एक) बैल से भली कुदारी।

कहावत खेतों की जुताई पर कही गई है।

अ०– जिसके दो हल हैं उसकी खेती खेती है। एक हल वाले की बारी है और जिसके एक बैल है या बूढ़ा बैल है उससे भला तो कुदाल से ही खेत को जोत ले।

दुइ पइसा कै हांड़िव मनई ठोंक बजाय के लेत।

अ०– स्पष्ट है।

दुखिये–दुखिये रोवा घोंघा होइगै आंखि।'

अ०– जब दो दुखी व्यक्ति आपस में मिलते हैं तो अपने–अपने मन का दुख कह सुन कर, रो–गाकर मन की भड़ास निकाल कर ही शांति पाते हैं।

दुइ गांव के उहा पाही, लरिकै मरिगे आवा जाही।

श०– उहापाही–भागदौड़, झंझट। लरिकै–बच्चे आवाजाही–आने जाने में।

अ०– जब दो तरफा जिम्मेदारियां बढ़ जाती हैं तो कहावत कही जाती है। दो तरफ की भाग–दौड़ में बच्चों को अधिक कष्ट होता है।

दुनिया ठगिये मक्कर से
रोटी खाइये शक्कर से।

श०– मक्कर–मक्कारी से।

कहावत धोखा, छल, मक्कारी, बेईमानी के प्रति कही गई है।

अ०– संसार में आकर घी शक्कर से रोटी मौज से खाओ और दुनिया के साथ मक्कारी करके उसे खूब छलो।

दूसरे के ऊंच लिलार देखिके आपन
कपार न फोरै क चाही।

श०– ऊंच–ऊंचा, बड़ा, लिलार–मत्था। कपार–सिर। फोरै–पटकना।

अ०– दुनिया में सब की किस्मत एक जैसी नहीं होती है। किसी के भाग्य से अपने भाग्य की बराबरी करने में कष्ट के सिवा कुछ भी नहीं मिलता। इतनी बड़ी दुनिया में किस–किस से किस–किस बात में बराबरी करोगे?

दुख गर्दन क कि दुख बर्दन क'।

कहावत घर की आर्थिक स्थिति को संभालने के प्रति कही गई है।

अ०– पुरुष यदि काम पर न गया तो घर के खाने–पीने की दशा क्या होगी और बैल यदि खेत में जाकर जुताई न किये तो खेत में अन्न क्या पैदा होगा। इसलिए घर की दशा को बनाने में दोनों का हाथ होता है।

दूसरे की पतरिया क लंबा–लंबा भात।

अ०– दूसरे की चीज बड़ी अच्छी व भली लगती है। दूसरे के पत्तल के चावल देखने में बड़े अच्छे लगते हैं।

दुस्मन की किरपा बुरी, भली मित्र की त्रास।'

अ०– दुश्मन की कृपा भी खराब है इसलिए कि वह तुम्हारा बुरा ही चाहेगा। मित्र यदि भयभीत भी करता है तो भी उसके मन में तुम्हारे प्रति बुरी धारणा नहीं है। महात्मा कबीरदास के शब्दों में–

'कबिरा संगत साधु की बेगि करीजै जाय
दुरमति दूरि गंवाइसी देसी सुमति बताय।'

दुइ पहिया के बिना गाड़ी नहीं चलत।

कहावत सहयोग के प्रति कही गई है।

अ०– अकेला इंसान चाहे कि हम कोई काम कर लें तो असंभव होता है। गृहस्थी या समाज की गाड़ी हो बिना दोनों पहियों के चलना कठिन हो जाता है। इसलिए दोनों को अधिकार की बहुत आवश्यकता है। कहा है–

**'पांच सात मिल कीजै काजा,
हारै जीते होई न लाजा'।**

या अकेला चना भाड़ नाहीं फोरत।

दुइ पइसा के हांड़ी गै कुत्ता कै जाति पहिचानी गै।

कहावत में कुत्ते के माध्यम से नीचे, ओछे मनुष्य की पहचान बताई गई है।

अ०– भले ही थोड़ा नुकसान हुआ मगर किसी नीच, आदमी का स्वभाव तो समझ में आ गया। किसी ने कहा है– 'नीम न मीठी होय सिंचै घीव गुड़ से
जेकै जोने सुभाव छुटै नहिं जीव से।

दुलहिन देखय सारे से घर देखय पिछवारे से।

कहावत बहू की सुंदरता एवं घर की पहचान पर कही गई है।

अ०– बहू कैसी होगी जानना है तो उसके भाई को देखकर कुछ अनुमान लगाया जा सकता है कि कुछ न कुछ अपने भाई के अनुरूप होगी ही और यदि घर की पहचान करनी है तो पीछे से देखकर जाना जा सकता है कि इस घर की सम्पन्नता कितनी है?

दुखत चोट औ काने से भेंट।

अ०– एक तो वैसे ही चोट में दर्द हो रहा था उस पर काने के रास्ते में मिलने पर और भी मन में दुराशा भर गई। कहीं कुछ आगे और न हो जाय।

दुख उठावै केव, मेवा खाय केव।

कहावत भाग्यवादी है। कोई तो कष्ट उठा रहा है, रोटी भी पेट भर नहीं मिल पा रही है और कोई मेवा खा रहा है।

दुखत दांत उखड़वायेन भल है।

कहावत वस्तु विशेष के कष्ट के ऊपर कही गई है।

अ०– कोई वस्तु या कोई प्रियजन कितना भी अपना हो या आवश्यक हो, यदि उससे कष्ट हो तो उसे त्यागने में ही सुख है। यदि दांत में पीड़ा है तो उस दांत को उखड़वाने में ही भलाई है।

दुस्मन कै निगाह जूती पै।

अ०– किसी भी गलत काम करने वाले की निगाह कभी ऊपर नहीं हो सकती है। दुश्मन की आंखें सदैव पैर की जूती की तरफ ही होंगी। इसलिए कि वह अपनी करनी को जानता है कि उसने गलत काम किया है।

दुस्मन के बीच मं जइसे दांतन मं जीभ की तरह रहै क परत।

अ०– दुश्मनों के बीच में बहुत नम्र होकर रहना पड़ता है जैसे बत्तीस दांत के बीच में जीभ हो। न जाने कब खतरा कर दें।

**दुइ कि एक संग होइ भुआलू
हंसब ठठाइ फलाउब गालू।**

यह लोकोक्ति गोस्वामी जी की है। इसमें दो काम एक साथ करने पर विरोध किया गया है।

श०– भुआलू–राजा। ठठाइ–ठठाकर, जोर से। फुलाउब–गाल फुलाना। गालू–गाल।

अ०– एक साथ, एक बार में दो काम नहीं हो सकता है। चाहे हंस ही लो चाहे गाल फुलाकर चुपचाप बैठे रहो।

दुखिया दुख कहै निरगुनिया पांचर मारै।

निरगुनिया– मूर्ख, बेवकूफ। पांचर–ताना।

अ०– स्पष्ट है

दुस्मन क ऊंच पीढ़ा देय चाही।

अ०– कहावत दुश्मन को सम्मान देने पर कही गई है। दुश्मन को बैठने के लिए ऊँचा आसन देना चाहिए जिससे उसे यह अनुभव न हो कि दुश्मनी के कारण उसकी उपेक्षा हुई।

'दू'

दूती रे तैं काहे दूबर, चारि घरां के आये गये एक घरां बिसरिगा दूती क जियरा निसरिगा।

श०— दूबर–कमजोर, बिसरि–भूलना। जियरा–जिव। निसरि–निकल जाना।

कहावत ऐसी स्त्री के प्रति कही जाती है जो घर–घर में जाकर एक घर की दूसरे घर, करने से बाज न आवे।

अ०–किसी ने पूछा ऐ दूती, तू आजकल काहे को दुबली हो रही है? उसका कहना है कि कई घर आते–जाते एक घर भी भूल जाता है तो मन दुखी हो जाता है। इसलिए दुबली हूं।

दूजे तीजे किरबरो रस कुसमय मंहगाय
पिछले छठवें आठवें फिर भी परलय जाय।

श०— किरबरो– संक्रान्ति, खिचड़ी का पर्व।

अ०— कवि भड्डरी का कहना है कि संक्रान्ति काल से पूर्व छठे या आठवें दिन पृथ्वी पर प्रलय की सी हालत है तो संक्रान्ति के दूसरे–तीसरे दिन रसवाले पदार्थ और तेल आदि महंगे हो जायेंगे।

दूरी हंसे परोसे नांय।

अ०— कहावत बहुत सही कही गई है कि अपने पास–पड़ोस के किसी के ऊपर हंसना व्यंग्य करना ठीक नहीं होता है। मजाक बनाना ही है तो दूर रहने वालों का बनायें जो उलाहना न दे सकें।

दूध के धोये हैं न नेबुआ के मांजे हैं।

जब कोई आदमी अपने को बहुत पाक साफ कहता है तो कहावत कही जाती है।

अ०— न दूध से नहाये हैं, न नीबू से रगड़कर साफ किये गये हैं। इतने बड़े सत्यवादी या ईमानदार नहीं हैं।

दूध रहे तो दोहनी बहुत मिलिहै।

श०— दोहनी–जिस मटकी में दूध–दही रखा या जमाया जाता है। कहावत वस्तु विशेष पर कही गई है।

अ०— जब अपने पास विशेष वस्तु रहती है तो उसके लायक सामान तो आ ही जाता है। जब अपने पास दूध है तो उसके रखने, जमाने का इन्तजाम तो हो ही जायेगा। छोटी–छोटी वस्तुओं के लिए चिंता नहीं करनी चाहिये। जब दूध जैसी कीमती वस्तु अपने पास है तो मटकी आने में क्या देर है?

'दूध औ पूत इनमें नाहीं छूत।

अ०— कहते हैं दूध और पूत में कोई छूत, भेदभाव नहीं रखना चाहिये।

दूर गुड़ासा दूर पानी, नियर गुड़ासा नियर पानी।

श०— गुड़ासा–एक पक्षी का नाम है, उसका बोलना वर्षा का सूचक है। नियर–पास।

कहावत पानी बरसने के लक्षण को लेकर कही गई है।

अ०— यदि गुड़ासा पक्षी बोलता है तो समझो कि पानी बरसने ही वाला है। यदि उसकी बोली नहीं सुन पड़ी तो अभी वर्षा आने में देर है।

दूध के साथ करैला न खैर
मधु के साथ मिश्री न बैर।

कहावत स्वास्थ्य विषयक है, खान–पान के सम्बन्ध में।

अ०— दूध के साथ करैला नहीं खाना चाहिये और मधु के साथ मिश्री नहीं खानी चाहिये। ये दोनों वस्तुयें स्वास्थ्य के लिये हानिकारक होती हैं।

दूब से मिताई करै चरै कहां जाय।

कहावत दूब के चरने के माध्यम से मित्रता पर कही गई है।

अ०— घोड़ा या गाय, भैंस चाहे कि दूब से दोस्ती करके मित्रवत् व्यवहार करे तो वही तो उनका भोजन है, फिर क्या खाये, पेट भरना भी तो आवश्यक है। इसी प्रकार से कोई पेशेवर आदमी यदि व्यापार

करके चाहे कि रोज–रोज नाते–रिश्ते में अपरिचित–परिचित में, यार–दोस्त में दुकान का सामान बिना लाभ लिये या दोस्ताने में या उधारखाते में लोगों को देते ही रहें तो वह बेचारा तो उसी में बिक जायेगा। क्या दुकान करेगा क्या खायेगा?

दूध क जरा मनई माठा फूंक के पियत।

एक बार धोखा खा लेने के बाद आदमी दूसरी बार के लिए सचेत हो जाता है।

अ०– जो आदमी दूध से जल जाता है वह मट्ठे को फूंक–फूंक कर होता है। मट्ठा तो ठंडा ही होता है मगर उसे पीने में डरता है। यानी धोखा खाने के बाद जीवन में बहुत फूंक–फूंक कर पैर रखना पड़ता है।

दूर के ढोल सोहावन।

कहावत पास और दूर के विषय पर कही गई है। जो पास में रहता है उसकी ओर ध्यान आकर्षित नहीं होता है जितना कि दूर के प्रति मन में उत्सुकता पैदा होती है।

दूधन नहाव पूतन फलो।

अ०– उपरोक्त कहावत आशीष के रूप में है। बड़ी–बूढ़ी स्त्रियां अपनी बहू–बेटियों को आशीर्वाद देती हैं। यानी दूध से नहावे, घर में लक्ष्मी हो और पुत्र से गोद भरी रहे।

दूध के दांत अबै नहीं उखड़े।

अ०– अभी बहुत बचपना है। दूध के दांत अभी भी लगे हैं।

दूध की माखी तरह निकार के फेंक दिहिन।

अ०– जब कोई आदमी घर–परिवार से उपेक्षित होता है तो कहावत कहते हैं कि मुझे तो सबने बहुत बेकार समझ लिया। किसी भी काम में मुझे नहीं पूछा गया।

दूलहा क पत्तल, न बजनिया क भात।

कहावत आई हुई बारात में बारातियों के स्वागत के समय में कही जाती है। जब किसी नाते–रिश्ते में आदमी को नीचा देखना पड़ता है तो कहा जाता है कि न तो दूल्हे के सामने खाने का पत्तल आया और न बाजा बजाने वालों के सामने भात खाने को आया।

दूध क उबाल अस आवा और चला गा।

कहावत किसी व्यक्ति के गुस्से के प्रति कही गई है अथवा कोई आया और शक्ल दिखाकर चला गया।

'दे'

देसी चिरैया मरहठी बोल।

अ०– जब कोई आदमी अपने देश की बोली–बानी को परदेश में रहकर छोड़ देता है और परदेश की भाषा बोलने लगता है तो कहावत कहते हैं कि देशी चिरैया और मरहठी बोली बोले जा रही है।

देसी मुर्गी विलायती चाल।

अ०– पाश्चात्य लोगों की नकल करने पर कहावत कही गई है।

अ०– देश में रहने वाली मुर्गी की चाल विदेशी है।

देवारी के खाये पड़वा न मोटाये।

श०– देवारी– दीवाली। पड़वा–भैंस का बच्चा।

कहावत किसी दुर्बल आदमी को देखकर कही गई है।

अ०– दीवाली के एक दिन के ढेर सारा खाना खाने पर पड़वा मोटा न होगा। यानी किसी भी आदमी को हमेशा भरपूर भोजन मिलना चाहिये तभी स्वास्थ्य अच्छा हो सकता है।

देबिन चढ़ी सोहारी
कूकुर खांय चहै बिलारी।

श०– देबिन–भवानी। सोहारी–पूड़ी।

कहावत देवी का प्रसाद चढ़ाने पर व्यंग्य में कही गई है।

अ०– अपनी तरफ से पूड़ी बनाकर देवी को चढ़ाकर आई हूँ। अब चाहे चढ़ी पूड़ी को कुत्ते खांय चाहे बिल्ली खाय। हमसे क्या मतलब?

देखत की बउरहिया आवै पांचो पीर।

श०– बउरहिया–बहुत सीधी। पांचो पीर–सब कुछ जानने वाली, प्रपंची। कोई स्त्री जो ऊपर से तो देखने में बड़ी सीधी–सादी एकदम अबोध सी लगती हो किन्तु अन्दर से बड़ी प्रपंच करने वाली हो उस पर कहावत कही गई है।

अ०– देखने में तो पगली लगती है किन्तु उस पर पाँचों पीर आते हैं।

देखत की थोर नाहीं बांटत की चुरकुना।

श०– थोर–कम। बांटत–हिस्सा लगाते समय। चुरकुना–बहुत कम।

कहावत वस्तु के बंटवारे पर कही गई है।

अ०– कोई वस्तु जो इकट्ठा रखी हो वह देखने में तो अधिक लगती है मगर जब उसे बांटने लगो तो कई लोगों में बंटकर एकदम कम हो जाती है।

देखी देखा साधै जोग
छीजै काया बाढ़े रोग।
सादा हिस्की हिस्का बाढ़े रोग।

श०– देखी–देखा–किसी की नकल करना। साधे–शुरू करना। जोग–योग–साधना, छीजै–घटना, कमजोर होना। हिस्की, हिस्का– दूसरे के काम की नकल या बराबरी करना।

कहावत उन लोगों के प्रति कही गई है जो दूसरों के काम की नकल दूसरों को देख– देख कर केवल उनसे प्रतिस्पर्धा करने के लिए करते हैं।

अ०– जब अपने अंदर किसी काम को करने की क्षमता न हो तो दूसरों की बराबरी करने के लिए जो मनुष्य यदि कोई काम करता है वह उससे नुकसान उठाता है। दूसरे चाहे जितना अच्छा काम कर रहे हों किन्तु यदि उस काम को करने का साहस स्वयं में न हो तो कभी काम द्वेषवश नहीं करना चाहिये कि मैं भी उनके बराबर हो जाऊं। उससे हानि उठानी पड़ सकती है।

देत की बाबू लेत की बाबू
न देय तो कोने काबू।

श०– काबू–वश, अधिकार।

कहावत रुपये– पैसे के उधार देने और लेने तक पर कही गई है।

अ०– जब आदमी की गर्ज अटकती है, उसे किसी दूसरे से कोई काम करवाना या कुछ लेना होता है तो वह बड़ी नम्रता और प्यार से अपना काम करवा लेता है, मगर गर्ज निकलने के बाद वह सीधे मुंह बात भी नहीं करना चाहता। कर्ज जब मांगना हुआ तो बाबू भइया करके बात की और जब देने की बारी आई तो आना–कानी करने लगा।

देखा तेरा गांव, बावन पुरा उजाड़।

श०– गांव–देहात की आबादी। बावन–५२ की गिनती। उजाड़–उजड़ा हुआ जिसमें कोई न रहता हो, न खेती–पाती होती हो।

कहावत किसी गांववाले को नीचा दिखाने के प्रति कही गई है कि तुम्हारे गांव में कुछ भी नहीं है। वह उजड़ा बेकार सा पड़ा है।

अ०– तुम्हारा गांव ५२ पुरवे का उजड़ा गांव है।

देखो ऊंट कौने करवट बैठत।

कहावत किसी काम के अंतिम परिणाम के प्रति कही गई है। इसकी एक अन्तर्कथा है–

'एक कुम्हार और एक कुंजड़े ने एक ऊंट किराये पर लिया। एक ओर कुम्हार ने अपने बर्तन लादे, दूसरी ओर कुंजड़े ने अपनी साग–सब्जी लादी। रास्ते में ऊंट ने साग–सब्जी पर अपना मुंह मारना शुरू कर दिया तो कुम्हार खुश हुआ कि मेरा बर्तन तो मिट्टी का है उसे ऊंट क्या खायेगा? तब कुंजड़ा

बोला– घबड़ाओ नहीं देखो ऊंट किस करवट बैठता है? और अंत में नतीजा यह हुआ कि ऊंट कुम्हार के बर्तन की करवट से बैठ गया। कुम्हार के सारे बर्तन चूर–चूर हो गये। इसलिए कभी किसी के नुकसान पर हंसना या व्यंग्य नहीं बोलना चाहिए। बिना परिणाम के देखे या समझे किसी को कुछ भी मत कहो।

लेना भला न बाप का, बेटी भली न एक
चलना भला न कोस का साईं राखै टेक।

अ०– बाप से भी कर्ज नहीं लेना चाहिए, बेटी एक भी बुरी है तथा पैदल एक कोस भी न चलना चाहिये यदि भगवान ने जिद पूरी की तो।

देर आयद दुरुस्त आयद।

अ०– कोई भी काम हो भले ही उसमें देर हो जाय मगर काम पूर्णरूप से सही हो तभी अच्छा है।

देस–देस की चाल, कुल–कुल क ब्योहार।

चाल–रहन–सहन, आचार व्यवहार, सभ्यता, नैतिकता। कुल–वंश–परंपरा, खानदान। ब्योहार–आचार–विचार, बोली–बानी।

कहावत अपने–अपने देश, गांव, कुल खानदान, परंपरा के प्रति कही गई है।

अ०– प्रत्येक देश, गांव, शहर की अपनी–अपनी सभ्यता होती है। वैसे ही अपने–अपने कुल की मर्यादित एक कुल रीति, लोकरीति होती है जो हर स्थान हर जगह की अपनी–अपनी या भिन्न–भिन्न होती है।

देसी गदहा पंजाबी रेंक।

अ०– जब कोई भी आदमी परदेश जाकर या कहीं भी रहकर बोलने में, रहन–सहन में दूसरी परंपरा अपनाता है तो कहावत कही जाती है।

गधा तो अपने देश का है मगर उसका रेंकना पंजाबी में होता है। कहावत व्यंग्यपरक है।

देह पर न लत्ता घूमे चले कलकत्ता।

अ०– अपने पास पहनने को तो कपड़े तक नहीं हैं और कलकत्ते जाकर घूमने की इच्छा है। शेखचिल्ली की तरह अपनी इच्छायें बनाना। अपनी औकात से ज्यादा ही किसी कार्य के लिये दुस्साहस करना।

देखा दासी कै चतुराई
चाउर काढ़िके माँड़ परसाई।

श०– दासी–नौकरानी। मांड़–चावल बनाते समय चावल में पानी अधिक होने पर जो पानी चावल पकाने पर निकलता है।

कहावत चालाक नौकरानी के प्रति कही गई है जो यह समझती है कि रसोई में खाना जब ज्यादा बचेगा तो हमें ही खाने को मिलेगा।

अ०– नौकरानी की होशियारी तो देखो कि चावल परोसवाने की जगह उसमें से निकला मांड़ परोसवा दिया। इसी तरह से जब कोई स्त्री रसोई में खाना परोसने में गड़बड़ी करती है तो कहावत कही जाती है।

देखा सहर बंगाला, दांत लाल मुंह काला।

कहावत बंगालियों पर कही गई है जिनका रंग कुछ सांवला होता है और पान खाने के बड़े शौकीन होते हैं।

देवदार औ चंदन सोहागा, खस के इतर मिलावै
एकर उटन जौ रोज लगावै गर्मी मां सुख पावै।

श०– देवदार–एक प्रकार का वृक्ष, चंदन–चंदन। सोहागा–सोहागा सुनार लोग सोने को साफ करते समय डालते हैं। इससे रंग साफ होता है।

अ०– उपरोक्त वस्तुओं का उबटन यदि गर्मी के माह में कोई लगाता है तो उसे गर्मी से बड़ी बचत होती है।

'दो'

दो दिन पछुआ छै पुरवाई गोहूं जौ के लेय दंवाई
ताके बाद ओसावै सोई भूसा दाना अलगै होई।

श०– पछुआ–पश्चिम दिशा से चलने वाली वायु।

पुरवाई—पूरब दिशा से बहने वाली हवा। दंवाई बैलों को अनाज पर चलवाकर दाने को अलग करवाने की क्रिया।

कहावत खेत के अनाज की दंवाई और ओसाई के प्रति कही गई है।

अ०— अनाज की दंवाई कराने के लिये यदि दो दिन पछिवा और छै दिन पुरवा हवा मिल जाय तो गेहूं—जौ की दंवाई करवा लेना चाहिये।

दो तोई घर खोई।

श०— तोई—तवा। खोई—बिगाड़ना।

कहावत अलगाव के प्रति कही गई है।

अ०— जिस घर में चूल्हा अलग हो उस घर में विघटन की स्थिति में परिवार बिखर जाता है।

दो आश्विन, दो भादौं, दो अषाढ़ के माह
सोना चांदी बेंचि के नाज बेसाहू साहु।

श०— आश्विन—क्वार। भादौं—भादौं का माह। असाढ़—माह का नाम है।

अ०— जिस वर्ष में दो क्वार, दो भादों का माह या दो अषाढ़ का महीना पड़ता है उस वर्ष में अनाज बेहद मँहगा हो जाता है। बड़े—छोटे सभी आदमियों को हानि उठानी पड़ती है।

दो पत्ती क्यों न निराये
अब बीनत की क्यों पछिताये।

अ०— जब खेतों में दो पत्ती थी, पौध छोटे—छोटे थे तो खेत की घास क्यों नहीं निरायी? उसी समय सफाई कर देते तो आज क्यों पछताना पड़ता?

दो सेर मोथी अरहर मास
डेढ़ सेर बिगहा बोओ कपास।

अ०— मोथी, अरहर, उर्द एक बीघे में दो सेर बोना चाहिये तथा कपास का बीज एक बीघे में डेढ़ सेर बोना चाहिये ऐसा कवि घाघ का कहना है।

दोनों बेर जो घूमै फिरै, तीन बेर जो खाय
सदा निरोगी चंग रहै जो प्रातः उठिके नहाय।

कहावत स्वास्थ्य विषयक कही गई है।

अ०— दोनों समय जो घूमने जाता हो और तीन समय खाता हो, साथ ही जो बड़े सबेरे नहाता हो, वह हमेशा स्वस्थ रहता है।

दोनों हाथे पगड़ी सम्भारै क परत।

अ०— एक जमाना ऐसा भी था जब सिर की पगड़ी का बड़ा मान था, शान थी, पगड़ी की इज्जत थी, पगड़ी जान, माल, ताज, राज सब कुछ थी। इसीलिये पगड़ी को बड़ी शान के साथ संभालते थे।

दो मां तीसर आंख मां ठीकर।

श०— तीसर—तीसरा व्यक्ति। ठीकर—किरकिरी, तिनका।

कहावत, जब दाल—भात में मूसरचंद की तरह कोई तीसरा आदमी अनायास ही घरेलू समस्याओं में आ जाता है, तो कही जाती है।

अ०— दो आदमियों के बीच में तीसरा आदमी वैसे ही बुरा लगता है जैसे आंख में किरकिरी गड़ती हो।

दो जोरू क खसम, चौसर क पांसा।

श०— जोरू—पत्नी। खसम—पति। चौसर—जुआ। पांसा—दांव, गोटी।

कहावत दो पत्नियों के बीच में रहने वाले पति की दुर्दशा के प्रति कही जाती है।

अ०— दो पत्नियों को रखने वाले आदमी की दशा पांसा खेलने वाली गोट की तरह होती है कभी हार तो कभी जीत, जैसी जिस ओर गोटी पड़ गई।

'दं'

दंतवा रोवा जिभिया टोवा
पेटवा कहै कहां आगि लागि।

श०— दंतवा—दांत। जिभिया—जीभ। टोवा—छूना। पेटवा—पेट।

कहावत खाने पीने की वस्तु की कमी पर कही गई है।

अ०– खाने वाला कहता है कि दांत में कुछ पता ही न लगा, जीभ टटोलती रही और पेट में तो जैसे कुछ असर ही न हुआ। पेट में तो जैसे भूख की आग ही लगी रही। क्षुधा किंचित् शान्त न हो पाई।

दांत जब लै बाहेर न आवै तबै लै।

जैसे बड़े दांत को छिपाया नहीं जा सकता है वैसे ही कोई बात जब तक मुंह के अंदर रहती है कोई जान नहीं सकता है मगर मुंह के बाहर आते ही सब जान जाते हैं।

दांत मिटै औ खुर घिसै, पीठ न बोझा लेय
ऐसे बूढ़े बैल को कौन बांध भुस देय।

कहावत बृद्धापन पर कही गई है जिस अवस्था में पेट की रोटी भी कठिन हो जाती है। फिर ऐसे बूढ़े को जो काम के लायक न हो, उसे कौन बैठा कर खिलायेगा?

'ध'

धधाये ऊ बुताये।

श०– धधाये–धधकना, जलना। बुताये–बुझना।

कहावत बहुत क्रोध, उद्दंडता या किसी भी बात में अतिरेक होने पर कही गई है।

अ०– जो किसी बात में, किसी काम में अति करेगा, वह एक न एक दिन नीचा अवश्य देखेगा।

धन चाहे तू धरम कर मुक्ति चहै भज राम।

अ०– धन चाहता है कि हमें दान दिया जाय। दान से धर्म की वृद्धि होती है और भगवान के भजन से मुक्ति मिलती है।

धन के पंद्रह मकर पचीस।
चिल्ला जाड़ा दिन चालीस।

कहावत जाड़े के मौसम पर कही जाती है।

अ०– धन–मकर दोनों ही राशियों के नाम हैं। मकर राशि पर सूर्य १४ जनवरी को आता है। कहावत के अनुसार धनु राशि पर सूर्य के अंतिम १५ दिन तथा मकर राशि पर सूर्य के २५ दिन बाद तक कुल मिलाकर ४० दिन तक अधिक जाड़ा पड़ता है।

धनवंती को कांटा लगा दौड़े लोग हजार
निर्धन गिरा पहाड़ से कोई न पूछनहार।

श०– धनवंती–पैसे वाली। निर्धन–बिना पैसे का आदमी।

कहावत धनी और निर्धन के प्रति कही गई है।

अ०– पैसे वाले को कांटा लगते ही लोगों की भीड़ इकट्ठा हो जाती है। उसी जगह किसी निर्धन को जानलेवा चोट भी आई तो राह चलते भी कोई नहीं पूछता है कि 'तुम्हें क्या हो गया है? चाहे वह मरे, चाहे जिये।

धरम रहे तो ऊसर जुरे।

श०– धरम–धर्म–कर्म, सुबुद्धि। ऊसर– जिस खेत में दाना न पैदा हो। यदि आदमी की नियत ठीक हो तो उसे वहां भी खाने को मिल जाता है जहां से कोई उम्मीद भी न हो।

धन कै सोच न रिन कै सोच
वै धमधूसर काहे मोट।

श०– सोच–चिंता। रिन–कर्ज। धमधूसर–मोटा आदमी।

कहावत किसी मस्तमौला, मोटे, ताजे–बेफिक्र आदमी को देखकर कही गई है।

अ०– किसी आदमी की बेफिक्री की जिन्दगी का एक अपना राज होता है। किसी को मौज–मस्ती से जीवन गुजारते देखकर किसी ने पूछा–यह आदमी इतना मोटा ताजा निश्चिंत क्यों घूम रहा है?उत्तर मिला–जिसे न धन की सोच है न कर्ज देना लेना है तो वह मस्ती का जीवन न बितायेगा तो क्या दूसरा बितायेगा। क्या चिन्ता है उनको? खा–पीकर मस्त जीवन गुजार रहे हैं।

धरती न पड़ेन मोगलई करै लागे।

श०— मोगलई—बदमाशी, शरारत।

कहावत ऐसे बच्चों पर कही गई है जो अभी छोटे हैं किन्तु बड़े शरारती।

अ०— धरती पर गिरे नहीं कि अपनी उम्र से ज्यादा गुंडई करने लगे हैं।

धरतै छान बवंडर आय।

श०— धरतै—रखते ही / छान—छप्पर / बवंडर—आंधी, तूफान।

कहावत किसी काम को करते ही कोई उत्पात मच जाय अथवा बाधा आ जाये तो उस पर कही जाती है।

अ०— काम में हाथ लगाते ही बाधा उत्पन्न हो जाना। छान रखते देर न हुई कि तूफान आ गया।

धर्मों के राहे में ठेलम ठेला।

अ०— अच्छे काम में धक्कम—धुक्का, ठेलम—ठेला, मारपीट लाग—डांट यह कहां का नियम है? जहां पर शांतिपूर्वक सब काम होने चाहिये वहां पर यह वाद—विवाद कैसा?

धनी क दान निर्धन क स्नान।

अ०— धनी आदमियों के लिये धर्म का महत्व दान है और निर्धन आदमी के लिये स्नान ही बहुत महत्व रखता है।

धनि वह राजा, धनि वह देस
जंहवा बरसे अगहन सेस,
पूस में दूना माघ सवाई,
फागुन बरसै घरौ से आई।

कहावत घाघ कवि की है। कहते हैं— वह राजा धन्य है और वह देश धन्य है जहां पर अगहन माह में पानी बरसे। यदि पूस में बरसे अन्न दूना होता है, माघ में बरसे तो अन्न सवाया और फागुन में बरसा तो घर का रखा अनाज भी चला जाता है।

धरम नहावै पाप डेरवाये।

अ०— हमारे देश में धर्म—कर्म का बड़ा महत्व है। कहावत जाड़े के मौसम के ऊपर कही जाती है। जब जाड़ा भयंकर रूप से पड़ रहा हो ऐसे समय में जाड़े के मारे जब लोग दांत किटकिटाते रहते हैं तो जो धर्मात्मा होते हैं वे तो नहाने में नहीं डरते हैं और जो पापी होते हैं उन्हें नहाने से भय—सा लगता है। उनकी हिम्मत पानी छूने की नहीं होती है।

धन सोनार कै, सोभा संसार कै।

कहावत सोनार के गहने के प्रति कही जाती है।

अ०— सोनार तरह—तरह के गहने बनाकर बेंचता है। उसे स्त्रियां पहन कर सुंदर एवं शोभायमान लगती हैं। जिससे कहावत है—

'एक नूर मनई हजार नूर कपड़ा।
लाख नूर गहना करोड़ नूर नखरा।

धरम छोड़िके धन को खावे।
अपजस छोड़ि न जस को पावे।

श०— धरम—धर्म। खावे—खर्च करे। अपजस—बुराई, कलंक, बदनामी। जस—यश, सम्मान, इज्जत।

कहावत अधर्म के प्रति कही जाती है।

अ०— जब कोई मनुष्य अपना दीन— ईमान छोड़कर बेईमानी का पैसा खायेगा तो उसे जीवन में कभी भी यश नहीं मिल सकता है।

धनी धनी होइगा,
दीन के दीमक लागि गा।

श०— दीन—गरीब। दीमक वह कीड़ा जो लकड़ी को खा जाता है।

अ०— गरीब और गरीब होता चला गया तथा अमीर अधिक अमीर होता गया।

'धा'

धान पान पनियाये से
छोट जाति कुछ पाये से।

श०— पनियाये—पानी देने से।

कहावत धान और पान में पानी अधिक देने के विषय में कही गई है।

अ०– धान और पान पानी बहुत मांगते हैं। इन दोनों में यदि पानी की कमी हुई तो ये पौधे सूख जाते हैं। उसी प्रकार से छोटी जाति के लोगों को कुछ पा जाने के बाद ही संतोष मिलता है।

धान पान पानी, कातिक स्वाद जानी।

कहावत उपरोक्त वस्तुओं के स्वाद से संबंधित है।

अ०– धान कातिक मास में पक कर तैयार हो जाता है। पान भी इसी मास में पुष्ट होकर अच्छे और स्वादिष्ट हो जाते हैं और पानी भी कार्तिक मास में स्वच्छ हो जाता है। तो इन वस्तुओं का स्वाद कार्तिक मास में ही अच्छा लगता है।

धान क कूटब औ कखरी क ढांकब
दुइनों साथ नहीं होत।

अ०– दो विपरीत बातें हो पाना असंभव हैं। यदि कोई स्त्री धान कूटती है तो उसे निश्चित ही पूरा हाथ ऊपर की तरफ उठाना होगा तो वह भला कांख या बगल का हिस्सा कैसे ढंक पायेगी?

धान, पान औ केला
तीनों पानी क चेला।

अ०– धान, पान और केला के पेड़ में पानी की बड़ी आवश्यकता पड़ती है।

धान, पान, उखेरा तीनों पानी क चेरा।

श०– उखेरा–ईख।

अ०– धान, पान और ईख तीनों में पानी की बड़ी आवश्यकता होती है।

'धि'

धिया पूत के गांती नहीं
बिलरिया के गांती।

श०– धिया–लड़की। पूत–पुत्र। गांती–अंगौछा जिसे गले में बांधते हैं।

जब कोई आदमी घर की आवश्यक आवश्यकताओं को पूरी किये बिना अपनी कमाई का पैसा बेकार उठाता है तो कहावत कही जाती है।

अ०– यहां घर के बच्चों के पास तो पहनने को कपड़े नहीं हैं। दूसरी तरफ बिल्ली के गले में कपड़े की गाँती बंधी है।

धिया छोड़ दमाद पियारा।

अ०– कहा है 'डायन को भी दामाद पियार होत' लड़की का सौभाग्य ही दामाद से होता है, इसलिए दामाद प्यारा होता है।

धिया पराई आंख लजाई।

कहावत घर की लड़ाकू बहू पर कही जाती है।

अ०– बहू के लिए कहा गया है कि दूसरे घर की लड़की इस घर में आकर मेरी आंख नीची कर दी। मेरी बेइज्जती करवा दी। पराई लड़की जबसे इस घर में आई तब से लज्जित होना पड़ा है।

धिया मारूं पतोहू क त्रास।

श०– धिया–लड़की। पतोहू–लड़के की बहू। त्रास–भय, डर।

अ०– बेटी के बहाने बहू को डरवाना। बहू को कहने में बुराई होती है, इसलिए बेटी को भयभीत करके बहू को चेतावनी देना।

धिया मुई जंवाई चोर।

श०– जंवाई–दामाद।

अ०– जब बेटी मर गई तो दामाद से क्या संबंध रहा? दामाद में बुराई ही बुराई नजर आती है। कहा है–

धी मोर मरिगै दमाद मोर के
पूत मोर मरिगा पतोह मोर के?

तो दामाद या बहू से तो रिश्ते अपने बेटे बेटी से ही जुड़ते हैं।

'धी'

धीरज करै तो उतरै पारा

नहीं तो बूड़े सब संसारा।

कहावत धैर्य, संतोष के प्रति कही गई है।

अ०— दुख में, कठिनाई में धैर्य से काम लेना चाहिए। धैर्य रखने से मनुष्य के कठिन से कठिन काम आसानी से हो जाते हैं।

धी के चलै भड़ेसर हालै।

बहू के चले सबै घर हालै।

श०— भड़ेसर—मिट्टी के बर्तन जहाँ रखे जाते हैं। इज्जत।

अ०— बेटी के चलने से तो भड़ेसर हिलती है लेकिन बहू के चलने से सारा घर हिलता है।

धी जंवाई भान्जा ये तीनों नहिं आपना।

अ०— बेटी, दामाद और भान्जा यानी ननद का पुत्र ये तीनों अपने नहीं होते।

धी न धियाना, आपही कमाना, आपही खाना।

अ०— जिसके कोई नहीं होता उसे तो खुद ही पैसे कमाना और खुद ही बनाना खाना पड़ता है। किसी ने कहा है—

'आगे नाथ न पाछे पगहा

उनके पाछे रोवै गदहा।'

'धी'

धी न बेटी उड़ गई समधेरी।

श०— समधेरी—समधियाना, बेटी या बेटे की ससुराल।

अ०— जब बेटा—बेटी कोई नहीं है तो किसकी शादी करके समधियाने का रिश्ता किया जा सकता है?

'धु'

धुर आसाढ़ी बिज्जुली धमक निरंतर होय

सोमा, सुक्रा, सुरगुरू तौ भारी जल धोय।

श०— निरंतर—लगातार। सोमा—सोमवार। सुक्रा—शुक्रवार। सुरगुरू—वृहस्पतिवार। यदि आषाढ़ की पूर्णिमा सोम, शुक्र और वृहस्पति को पड़े तथा विजली चमके तो जलवृष्टि होती है।

धुर आसाढ़ की अष्टमी, ससि निर्मल जो दीख

पीव जइहैं मालवा, मांगत फिरिहैं भीख।

कहावत आषाढ़ मास में पानी न बरसने के प्रति कही जाती है।

अ०— यदि आषाढ़ की अष्टमी तिथि को आसमान में निर्मल चंद्रमा निकले तो निश्चय ही अकाल पड़ जायेगा, पति को परदेश जाकर भीख मांगनी होगी।

धूप पड़त जो दांय चलावै

रास नाज वह तुरत उठावै।

श०— दांय—अनाज के बोझों की जो बैलों के द्वारा मड़ाई, दँवरी। रास—अनाज का ढेर।

कहावत खलिहान में लगे अनाज के बोझों को दंवाने पर कही जाती है।

अ०— धूप के निकलते ही जो अनाज की दंवाई करना शुरू कर देते हैं वे अनाज जल्दी दांय के घर उठा लेते हैं।

धूलकोट का खरबूजा जैसे मिश्री क गूंजा।

श०— धूलकोट—दिल्ली के पास एक कछार की भूमि।

अ०— कहते हैं कि धूलकोट का खरबूजा इतना मीठा होता है जैसे मिश्री।

'धे'

धेला सिर मुंड़ाई टका बदलाई।

श०— धेला—पहले के जमाने में पैसे का आधा। टका—दो पैसा।

अ०— सिर मुंड़वाने में तो एक अंधेला लगा और रुपये भुनाने में एक टका भुनवाई का बट्टा कट गया।

'धो'

धोबी बसिके का करै

जो होय दिगंबर गांवई।

श०– धोबी–कपड़े धोनेवाला। बसि–रहकर। दिगम्बर–नंगे, जैनियों के संप्रदाय में नग्न रहने वाले।

जहां पर किसी आदमी या वस्तु की कोई उपयोगिता न हो वहां उसका रहना व्यर्थ ही होता है।

यदि पूरे गांव के लोग दिगंबर है तो धोबी उस गाँव में रहकर क्या करेगा?

धोबी के घर पड़े चोर

यह न लुटा लुटे और।

दुश्मनी किसी और से, सिर पर पड़ी किसी और के, तो कहावत कही जाती है।

अ०– दुश्मनी थी धोबी से तो उसके घर में चोर जा घुसे और धुलने के लिए या धुलकर रखे दूसरों के कपड़े उठा लिये।

धोबी क कुत्ता न घर का न घाट का।

जब कोई आदमी हेल का मारा बैल हो जाता है, कहीं का नहीं होता है तो कहावत कही जाती है।

अ०– वे कहीं के भी न रह गये। न घर के ही रहे और न घाट पर ही जाने लायक रहे।

धोवत रहें दुइ पांव, धोवै क परिगा चार पांव।

अ०– किसी बहू का यह सोचना है कि विवाह के बाद ससुराल में काम अधिक करना पड़ गया। पहले था तो अपना ही पैर धोती थी अब ससुराल में दो लोगों का अपने पति का भी या सास ननद का धोना पड़ गया।

धोबी के घर ब्याह गधे के सिर पर मौर।

अ०– यदि धोबी के घर में ब्याह पड़ा है तो गधे की भी इज्जत करनी ही पड़ेगी।

धोबी छोड़ भिश्ती किया रही घाट की घाट।

श०– भिश्ती– वह जाति जो मशक से पानी भरती है।

अ०– जिस पानी के डर से धोबी का साथ छोड़कर भिश्ती के साथ आई वह पानी हमारे पीछे पड़ गया। घाट पर तो जाना ही पड़ता है। यानी जो कष्ट पहले था वह आदमी बदलने के बाद भी।

धोबी रोवै धुलाई क मियां रोवै कपड़े क।

अपनी–अपनी सब को पड़ी है। कहावत इसी को लेकर कही गई है।

अ०– धोबी को कपड़े धुलाई के पैसे चाहिए और ग्राहक को अपने कपड़े चाहिए। अपनी–अपनी सभी को पड़ी है।

'धौ'

धौले भले हैं कापड़े, धौले भले न बार।

अच्छी काली कामरी, काली भली न नार।।

श०– धौले–श्वेत। बार–सिर के बाल। कामरी–कमरी। नार–स्त्री।

अ०– कहावत है कि श्वेत कपड़े अच्छे लगते हैं मगर सिर के श्वेत बाल अच्छे नहीं लगते हैं। उसी प्रकार से कमरी तो काली ही भली होती है किन्तु स्त्री काली भली नहीं लगती है।

'न'

नई घोसिन कंडा कै तकिया।

कहावत नौसिखिये के प्रति कही जाती है।

अ०– नई–नई घोसिन ने जब दूध का व्यापार करना शुरू किया तो कंडों की तकिया लगाने लगी। चूंकि कंडे उसे अधिक दिखाई पड़े तो एक उठाया सिर के नीचे रख लिया।

नई जवानी मांझा ढील।

कहावत नई उम्र वालों को ढीलाढाला देखकर कही जाती है।

अ०– नयी जवानी में ही कमर ढीली हो गयी है।

नई नौ छदाम पुरानी छः छदाम।

शo— छदाम— बहुत पुराना छोटा सिक्का।

अo— नई वस्तु का दाम अधिक और पुरानी वस्तु का दाम कम होना स्वाभाविक ही है।

नई बहू टाट का लहंगा।

कहावत बेइज़्जती की स्थिति पर कही जाती है।

अo— घर में नई बहू का स्वागत होना चाहिए तो उसकी बेइज़्जती की जा रही है।

नई बस्ती में अरंडी क फुलेरा।

शo— अरंडी—जिसका तेल बनता है। फुलेरा—रुई में इत्र आदि लगाकर कुछ लोग कान में खोंसते थे।

कहावत मूर्ख लोगों के प्रति कही जाती है जिनको कोई काम करने का सहूर नहीं है।

अo— नई—नई बस्ती में लोग आये हैं तो हर बात नई होनी है। आने वाले इत्र फुलेल के स्थान पर अरंडी का इत्र लगाकर आये हैं।

नवा धोबी कथरी मं साबुन लगावै।

शo— कथरी—गांव में फटे कपड़ों को तह बनाकर मोटी सी बिछावन बनाते है जो बिछाने—लेटने के काम आती है।

कहावत नौसिखिये धोबी पर कही गई है जो अभी अनुभवहीन है।

अo— नया धोबी कथरी जैसी भारी वस्तु को जिसमें तमाम चीकट गंदगी भरी हुई है, बजाय रेह लगाने के साबुन से साफ कर रहा है। भला उसमें कितना साबुन लगेगा और उसके बावजूद भी साफ होगी कि नहीं?

नाऊ के घर चोरी भै तीन चोंगा बार गये।

किसी धनहीन के यहाँ चोरी पर कहावत कही गई है।

अo— नाई के यहाँ चोरी हुई। चोर सामान के धोखे में बाल से भरे तीन चोंगे (टीन या बाँस की नली) लेकर चले गये।

नकटा जीवै बुरा हवाल।

शo— नकटा—बदनाम। हवाल—हाल।

अo— बदनाम आदमी का जीवन बहुत बुरी तरह बीतता है। उसका हाल हमेशा ही बेहाल रहता है।

नकटा बूंचा सबसे ऊंचा।

शo— नकटा—नककटा या बदनाम। बूंचा—कनकटा।

कहावत नकटे व बूचे पर व्यंग में कह जाती है कि वह सबसे बड़ा है। उसे सभी पहचानते हैं।

नगारखाने में तूती कै आवाज के सुनत।

शo— नगारखाने—जहां पर तमाम नगाड़े ही बज रहे हों। तूती—एक छोटा सा वाद्य जो मुंह से बजाया जाता है।

कहावत ऐसे समय में कही जाती है जहां पर बड़े लोगों के सामने किसी छोटे की कोई गिनती न हो।

अo— जहां नक्कारखाना हो वहां पर तूती की आवाज़ एकदम दब जाती है।

न गाय के थन न किसान के भांड़े।

शo— थन—गाय—भैंस के दूध देने का अंग। भांड़े—मिट्टी का बर्तन गांवों में जिस बर्तन, में दूध—दही रखा जाता है।

कहावत दोनों ओर की परिस्थितियों पर कही गई है।

अo— न तो गाय के थन में दूध ही है और न किसान के पास दूध रखने के लिये कोई बर्तन ही है। दोनों ही जैसे के तैसे हैं।

न गूहै मं ढीला फेंको न छीट परै।

कहावत नीच लोगों के प्रसंग पर कही गई है।

अ०— न तो नीच लोगों के साथ रहो न कलंक लगने का भय रहे। उसी प्रकार से जैसे मैले या गंदी जगह यदि ढीला फेंकोगे तो निश्चय ही उसका छिट्टा अपने कपड़ों पर पड़ेगा। कवि रहीम खानखाना के शब्दों में—

'रहिमन' नीचन संग रहि लगत कलंक न काहि।
दूध कलारी हाथ में मद समुझे सब ताहि।।'

न रहे की खुशी न गये क गम।

कहावत से नीरसता—उदासीनता का भाव प्रकट होता है।

अ०— जब किसी आदमी के प्रति कोई उदासीन हो जाता है कि न रहने पर प्रसन्नता है और न जाने के बाद कोई दुःख है। यानी—

'जैसे कंता घर रहे वैसे रहे विदेस'।

नदिया नाव घाट बहुतेरा
कहै कबीर नाम को फेरा।

कहावत ईश्वरवादी है।

अ०— नदी, नाव और घाट बहुत से हैं किन्तु सबमें नाम का अंतर है। वैसे ही भगवान का नाम व भक्ति एक ही है उन्हें चाहे जिस नाम से पुकारो। चाहे राम कहो या कृष्ण कहो, अल्ला कहो, ईसा कहो। कबीरदास का कहना है सबका मतलब एक ही है।

ननद न ननदोई, गले लाग रोई।

अ०— जो अपना न हो, कोई नाता—रिश्ता न हो, स्वजन न हों उनके प्रति एक झूठे दिखावे पर कहा गया है कि न मेरे कोई सगे संबंधी हैं, न कोई स्वजन हैं। उनसे झूठा प्रेम दिखाने से कोई लाभ नहीं है।

न नौ मन तेल होई, न राधा नचिहैं।

जब कोई काम न करना हो या उसे टरकाना हो तो कोई ऐसी बड़ी शर्त रख दे कि शर्त ही पूरी न हो सके तो काम होने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता है। उपरोक्त कहावत पर एक कथा है— 'राधा नाम की एक वेश्या थी। नाचने के लिए वह जितनी मशहूर थी उतना नाच नहीं पाती थी। इसलिए उसे जब कोई नाचने के लिए कहे तो कहती—पहले नौ मन तेल लेकर आओ और उससे चिराग जलाओ तो मैं नाचूंगी।

न पूत से घर सूना, मूर्ख का मन सूना
दलिद्री का सबकुछ सूना।'

अ०— बिना पुत्र के घर सूना होता है। मूर्ख मनुष्य का मन सूना होता है और जो दरिद्र होता है उसका सबकुछ सूना होता है।

न तू कहे मेरी न मैं कहूं तेरी।
जो तू कहे मेरी तो मैं कहूं तेरी।

अ०— मेरी गलतियों को तू न कहे तो मैं तेरी गलतियों को मैं भी न कहूंगा और यदि तू मेरी बातों को बतायेगा तो मैं भी तेरी बातों को कह दूंगा।

नया जोगी गाजर की संख।

जब किसी को कोई काम करने की अक्ल न हो, या अनुभव न हो तो वह हमेशा ही उलटे—पुलटे काम करेगा।

अ०— नये—नये साधू बने हैं तो गाजर की शंख लेकर बैठे हैं। इससे जगहँसाई के सिवा और क्या होगी? इसलिए कोई भी काम करो अपने से बड़ों की राय जरूर लेनी चाहिये। बिना सोचे—समझे कोई काम करने से नुकसान होता है।

नवा—नवा राज ढब—ढब बाज।

श०— राज—अधिकार मिलना, राजा होना, जो पहले पहल गद्दी पर बैठा हो।

कहावत ऐसे लोगों पर कही जाती है जो नये—नये मालिक हुये, अफसर हुये या नये—नये राजकाज को संभाले हैं तो उस दशा में कोई न कोई नया काम जरूर होता है।

अ०— नई—नई जिम्मेदारियों को संभालते ही ढब—ढब बाजा ही बजवाने लग गये। बेसमय की शहनाई बजवाने में मूर्खता ही प्रकट होती है। कहा है—

'नये के बूढ़ा मालकिन भई तो कथरी ले के सरगे गई।'

नवा—नवा राज भवा गगरिये अनाज भवा।

जब आदमी को कोई छोटा सा भी अधिकार मिल जाता है तो वह अपनी वाहवाही लूटने के लिए मूर्खता में ऐसे काम कर जाता है कि जो असंभव होते हैं।

अ०— नये मालिक बने तो मारे तारीफ के गगरी में ही अनाज पैदा करने लगे।

दूसरे अर्थों में जब गगरी में थोड़ा सा अनाज देख पाये तो नई—नई बातें शुरू कर दीं।

नवा नौ दिन पुरान सौ दिन।

कोई भी वस्तु दुनिया में अधिक समय तक नई नहीं रह सकती है। कुछ दिनों के बाद हर वस्तु पुरानी हो जाती है और उसी वस्तु का इस्तेमाल जीवन में होता है। कहावत इसी पर कही जाती है।

अ०— नवा नौ दिन ही होता है पुराना सदा काम आता है। किसी का कहना है— 'चार दिन की चांदनी फिर अंधेरी रात।'

नये—नये हाकिम नई—नई बात।

श०— नये अफ़सर बनकर आये हैं तो हर बात में नयापन घुसेड़ बैठे हैं।

अ०— नये अफसर आकर आफिस में नये काम करने से बाज़ नहीं आये। कायदा—कानून कुछ न कुछ उन्हें बदलना जरूर है।

नये नबाब आसमान पर दिमाग़।

अ०— स्पष्ट है।

नये बावर्ची साग क़ शोरबा।

श०— बावर्ची—खाना बनाने वाले। शोरबा—रसा।

अ०— नये खाना बनाने वाले आकर खाने के साथ साग का रसा बनाये हैं।

न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी।

जब किसी वस्तु से किसी को बेहद नाराज़गी होती है और उससे पिंड छुड़ाना हो तो कहावत कही जाती है।

अ०— जब बांस ही न रहेगा तो बांसुरी कहां से बनेगी और जब बांसुरी ही न रहेगी तो बजेगी ही क्या? चलो बांसुरी से छुट्टी मिली।

न धाय मिलै न अढ़ुक गिरै।

अ०— बहुत जल्दबाजी में किसी से दौड़कर मिलने में गिरने का डर रहता है।

इसलिए किसी से जल्दबाजी में दौड़कर न मिले, न गिरे।

व्यावहारिक तौर पर न तो किसी से इतना घनिष्ठ संबंध बना लेना चाहिए कि बिगाड़ की नौबत आ जाय। कहा है 'बहुत मिठाई कीरा परत'। इसी प्रकार से 'ना काहू से दोस्ती ना काहू से बैर' की स्थिति रखनी चाहिये। एक साधारण व्यवहारपूर्ण जीवन ही रखना चाहिए।

न रंग लागै न फिटकरी रंग आवै चोखा।

श०— फिटकरी—एक प्रकार की वह वस्तु है जो किसी रंग में या शीरा बनाते समय डालने से गंदगी छूट जाती है। चोखा—बढ़िया, गाढ़ा।

कहावत कंजूसी के प्रति कही जाती है।

अ०— किसी काम में खर्च कम लगे और काम बढ़िया हो जाय। जैसे कपड़े को रंगने में फिटकरी न डालना पड़े और रंग भी बढ़िया चमकदार हो जाय। ये कहां तक संभव हो सकता है?

न पहरू जागै न कुकुरू भूकै।

श०— पहरू—रात में जागकर पहरा देने वाले, पहरेदार, 'जागते रहो' की चेतावनी देने वाले।

कहावत किसी आदमी के आने की या किसी बात की जानकारी के प्रति कही जाती है।

अ०– जब कुत्ते भूकेंगे ही नहीं तो पहरा देने वाले जागेंगे भी नहीं। यानी बात को बहुत छिपाकर रखना। किसी को मालूम न होने पावे।

न करै न करै देय, हाथे क मूसर छोर–छोर लेय।

श०– छोर–छीनना। जब कोई काम दो जनों के बीच में पड़ा रह जाता है तो कहावत कही जाती है।

अ०– न अनाज कूटने ही देती है और न कूटकर पूरा ही करती है। जब काम करने या कूटने बैठो तो हाथ से मूसर छीन लेगी मगर खुद भी काम पूरा न करेगी।

नहिं कोउ अस जनमा जग माहीं।
प्रभुता पाइ जाहि मद नाहीं।

श०– जनमा– पैदा हुआ। जग–संसार। प्रभुता–यश, बड़प्पन, धन–लक्ष्मी, राजपाट, द्रव्य।

यह बाबा तुलसीदास का कथन है जो धन संबंधी घमंड के प्रति कही गई है।

अ०– संसार में ऐसा कोई भी आदमी नहीं पैदा हुआ है जिसके पास लक्ष्मी हो और उसको घमंड न हो। यह मानव स्वभाव की कमजोरी है।

न सौ पढ़ा, न एक गढ़ा।

अ०– जब कोई मनुष्य ईश्वर प्रदत्त बुद्धि को पा जाता है तो उसकी इज्जत सौ पढ़े लिखों से कहीं ज्यादा होती है क्योंकि पढ़ी शिक्षा मनुष्यकृत होती है। पैदाइशी बुद्धि ईश्वर प्रदत्त होती है। दूसरा तात्पर्य है कि सौ पढ़े लोगों से एक अनुभवी अधिक कुशल होता है।

नई–नई बिटिया नई–नई रीति।

कहावत आगे आने वाली पीढ़ी पर व्यंग्य रूप में कही जाती है।

अ०– नई उम्र के बेटियों की अपनी कुछ नई–नई रीतियाँ होती हैं।

नइहर जाबै नौ दिन रहिबै
पूड़ी पोउबै जिव भरि खइबै।

श०– नइहर–मैका, पिता का घर। रहिबै–रुकना। पोउबै–बनाना जिव–मन।

कहावत उस ज़माने की है जब बहुओं के ऊपर ससुराल में बड़े बंधन होते थे, उनका हिलना–डुलना, चलना–फिरना, खाना–पीना सब कुछ ससुराल वालों के मन से होता था। वे एकदम पराधीन जीवनयापन करती थीं। इसी मनोविज्ञान के प्रति कहावत कही जाती है।

अ०– बहू सोचती है–मैके जाऊंगी और नौ दिन रहूंगी वहां अपनी मनपसंद की चीजें बना–बना कर खाऊंगी।

न ऊधौ के लेने न माधौ के देने।

जब कोई आदमी अपने में सीमित रहता है तो कहावत कही जाती है।

अ०– न किसी से लेना न देना, केवल अपने मतलब से मतलब रखना। किसी से न कोइ झगड़ा–झंझट, न खैर न दोस्ती, साधारण रूप में जीवन चलाना।

नरसी गोहूँ सरसी जवा
अति के बरसै चना बवा।

श०– नरसी–जिस खेत की मिट्टी भुरभुरी हो जाय। सरसी–नम, गीला। बवा–बोना।

यह कहावत घाघ कवि है।

अ०– जब खेत की मिट्टी खूब भुरभुरी हो जाय तो गेहूँ बोना चाहिए। जौ बोने के लिए खेत सीलनदार होना चाहिए और जब पानी बरसा हो तो चना बोना चाहिए।

नसकट खटिया दुलकन घोर
घाघ कहै ई विपत्ति क जोर।

श०– नसकट–चुभने वाली छोटी खाट। दुलकन–लुढ़कने वाला। घोर–घोड़ा।

अ०– घाघ कवि का कहना है कि जिसके पास छोटी खाट सोने को हो और ढनगने वाला घोड़ा हो वह बड़ा ही अभागा है।

नसकट पनही, बतकट जोय
जो पइलौठी बिटिया होय
दूबर खेत बौरहा भाय
घाघ कहै दुख कहां समाय।

श०— नसकट–नस को दबाने वाला। पनही–जूता। बतकट–बात काटना। जोय–पत्नी, स्त्री। पइलौठी–पहले पहल। दूबर–कमजोर। बौरहा–सनकी, पगलेट। भाय–भाई।

घाघ कवि का कहना है कि जूता यदि पैर को काटने वाला हो, पत्नी पति की बात को काटकर नकार दे, खेती कमजोर हो और भाई सनकी हो तो यह दुख संभालने वाला नहीं होता है।

न तोहरे जोय न हमरे जोय
असकुछ होय कि बेटवै होय।

श०— जोय–जवानी। बेटवै–बेटा।

कहावत ताकत के प्रति कही जाती है कि बिना ज़ोर के कोई काम होता नहीं।

अ०— कोई स्त्री अपने पति से कह रही है कि न तो अब हमारे जवानी है और न तुम्हारे ही पास ताकत है। मगर तरकीब कोई ऐसी होनी चाहिए कि हम दोनों के लड़का ही पैदा हो।

न पाका क छोट कहै न सौत क हीन।

श०— पाका–फोड़ा। छोट–नन्हा। सौत–पति के द्वारा दूसरी ब्याहता स्त्री।

कहावत विशेष रूप से सौत के प्रति कही गई है।

अ०— कष्टकारक व्याधियों को कभी कम नहीं समझना चाहिये चाहे वे कितने छोटे रूप में रहें। कब उभर पड़ें कोई ठीक नहीं रहता है?

अ०— न तो कभी फोड़े–फुंसी को छोटा समझना चाहिये और न कभी सौत को छोटा समझना चाहिये। लोकाचार में 'सौतियाडाह' बहुत प्रसिद्ध है। रामचरितमानस में मंथरा ने कैकेई को फोड़ने में इसी का सहारा लिया था।

'रचि पचि कोटिक कुटिलपन कीन्हेसि कपट प्रबोध।
कहिसि कथा सत सवति कै जेहि बिधि बाढ़ विरोध।।'

न धान बोवै न बदरन कइती चितवै।

कहावत धान की खेती विषयक है जिसमें पानी की सख़्त ज़रूरत पड़ती है।

अ०— न धान बोवे न बादल की ओर देखकर पानी बरसने की प्रतीक्षा करे।

इसी तरह से जहां स्वार्थ टकराता है वहां पर आदमी को उस वस्तु की बड़ी ही आवश्यकता होती है।

न धोबी के दूसर परोहन
न गदहा के दूसर गोसइयां।

श०— परोहन–बोझ ढोने वाला वाहन। गोसइयां–मालिक।

कहावत में एक–दूसरे पर निर्भर रहने की बात कही गई है।

अ०— न तो धोबी के पास लादी लादने को दूसरा गधा है और न गधे का कोई दूसरा मालिक है।

न माघे जाड़ न पूसे जाड़
जबै पवन तबै जाड़।

अ०— जाड़ा तो हवा के साथ बढ़ता है। न माघ में और न पूस में ही जाड़ा होता है।

न छोटे से परसावै न बड़े से भरवावै।

श०— परसावै–भोजन दिलाना। भरवावे–कहलावै।

कहावत अमीर–गरीब के प्रति कही जाती है।

अ०— छोटे या कम औकात के आदमी ठीक से खिलाना–पिलाना नहीं जानते हैं। उनसे खाना परसवाने पर बेइज़्जती का डर रहता है और बड़ों की तो बात ही क्या है? उनसे कुछ करने का, कुछ देने का वादा

करवाकर काम में धोखा ही होता है। वे कब भूल जायं, कब क्या कर पायें राम ही मालिक है।

नपुंसक के पास नपुंसक गया।

श०– नपुसंक–नामर्द।

अ०– एक ही मर्ज़ के दो मरीज का होना। एक ही दुख से दोनों ही पीड़ित हैं। न एक में पुरुषार्थ है न दूसरे में। अपने–अपने दुख की एक ही गाथा दोनों ही कह रहे हों। कहा है– दुखिये–दुखिये रोवा घोंघा होइगै आंखि।

नजर चूकी माल यारों का

अ०– कुछ लोग दुनिया में ऐसे भी होते हैं जो आंख का अंजन काढ़ लेते हैं। तो नज़र की बात क्या कहना, ज़रा सा गाफिल पड़े नहीं कि माल गायब हुआ। यानी आँख में धूल झोंककर सामान उठा लेना।

नये गांव मं ऊंट आय, ऊंट कै बड़ी बड़ाई।

एक ज़माना था जब कहीं किसी के यहां कोई विशेष वस्तु आती थी तो पूरा गांव सुनकर देखने दौड़ता था। वह वस्तु चर्चा का विषय बनी रहती थी कि फलां आदमी परदेश से आया है। वह फलां सामान लाया है।

नख में तोरय गलख भै होय
राम करै मकुनी बहुत के होय।

श०– नख–नह। गलख–गाल भरके। मकुनी–जौ चने की या जौ मटर या गेहूं–चने की रोटी।

कहावत जौ चने की रोटी पर कही गई है।

अ०– मकुनी रोटी ऐसी भुरभुरी होती है कि ज़रा सा कौर तोड़कर खाने पर मुंह भर जाता है, तो कहा गया है कि राम करे मकुनी बहुत के होय।

न नौ नगद न तेरह उधार।

श०– नगद–मूलधन, खरा पैसा। उधार–कर्ज का पैसा, बाकी।

अ०– नकद रुपया तुरंत काम में आता है। इसलिए नक़द नौ रुपये उधार के १३ रुपये से कहीं अधिक अच्छे हैं।

नटे के घरे कै मुसरिव कलाकार होत।

श०– नट–करतबी, बाज़ीगर। मुसरिव–मुसरी। कलाकार–पांरगत, होशियार, गुणी।

कहावत संगत व वातावरण पर कही जाती है।

अ०– व्यक्ति जैसी संगत या वातावरण में रहता है उसका असर उसके ऊपर अवश्य पड़ता है। यानी किसी नट के यहां कोई मुसरी भी रोज़–रोज़ वही कलाकारी देखती है तो वह भी नट की तरह कार्य करना शुरू कर देती है। जब जानवर तक गुण ग्रहण कर सकते हैं तो आदमी की तो बात ही और है।

नई मांग सेंदुर देंय मांग चर्राय।

श०– चर्राय–खिंचाव आना, खुजलाना।

अ०– किसी नये काम में थोड़ा सा बदलाव का आना स्वाभाविक है।

गरम खाय, ठंडा नहाय।

अ०– भोजन थोड़ा गर्म व ताजा खाना अच्छा होता है तथा स्नान हमेशा ठंडे पानी से करना ही स्वास्थ्यप्रद होता है।

न कहतै लाज न सुनतै लाज।

अ०– कोई बात ऐसी भी होती है जो कहने और सुनने दोनों ही स्थितियों में बुरी लगती है किन्तु बेहया आदमी न कहते शर्म करता है और न बेशर्म सुनने में बुरा मानता है।

नइहरे के छिया–छिया, ससुरे न पूछय पिया।

श०– छिया, छिया– छी–छी, थू–थू। ससुरे–ससुराल में। पूछय–इज्ज़त न देना। पिया–पति।

कहावत स्त्रियों के सम्मान के विषय में कही जाती है।

अ०– कोई स्त्री अपने मैके व ससुराल दोनों ही जगह से उपेक्षित है। मैके में उसे कोई पूछता नहीं और ससुराल में भी अपने पति द्वारा उपेक्षित है। हर जगह उसे अनादर की नज़र से देखा जाता है।

न लेना एक न देना दो।

अ०– जब किसी से कोई व्यवहार न रखे तो कहावत कहते हैं कि न मुझे कुछ लेना है न देना है। किसी प्रकार का संबंध–सम्पर्क न रखना।

न कूटै के न पीसै के न डारै के पिसान
ऐसे घरे बियाह बाबा सोय–सोय करीं बिहान।

अ०– घर की कोई कन्या अपने बाबा से अपने विचार प्रकट करती है – ए बाबा, मेरी शादी ऐसे घर में करना जहां पर न कूटना पड़े, न पीसना पड़े और न बैलों को, गाय–भैंस को सानी, पानी, आटा डालना पड़े। बस मैं रात दिन सो–सो कर सबेरा करूं। यानी ससुराल में कोई काम न करना पड़े बस आराम ही आराम हो।

नये घर मं पुरखिन भईं कथरी लैके सरगै गईं।

श०– पुरखिन–मालकिन। कथरी–घर के पुराने कपड़ों को जोड़कर बना मोटा सा बिछावन। सरगै–स्वर्ग।

घर के मालिकी में जब कोई नई या अनहोनी बात होती है तो कहावत कही जाती है।

अ०– बूढ़ा मां क्या नयी मालकिन बनी हैं। वे इतनी कंजूस हैं कि कथरी लेकर मरने जा रही हैं। मरते समय भी मन में घबराहट है कि अरे, हमार कथरिया तो इहीं रही जात है।

न पांड़े हेलुवे क भये न मांड़ेन क भये।

कहावत लालच के ऊपर कही जाती है। जब कोई आदमी दो नाव में पैर रखता है तो वह डूबता ही है। किसी ओर का नहीं रह जाता है।

अ०– पांड़े एक तरफ तो हलुवे के लिये दौड़े गये दूसरी तरफ मांड़ के लिये गये, तो ऐसी दशा में न हलुआ ही मिल पाया और न मांड़ ही पा सके। इसीलिए कहा है 'लालच बुरी बला।'

न गूलर फोरै न मसा उधिरांय।

श०– गूलर एक प्रकार का जंगली फल है। फोरै–फोड़ना। मसा–भुनगै। उधिरांय–चारों ओर फैलना।

कहावत किसी ऐसे प्रपंची, खुराफाती, झगड़ा–झंझट करने वाले आदमी पर कही जाती है जो ज़रा सा इशारा पाते ही झंझट शुरू कर दे।

अ०– ऐसे आदमी तो इशारा मिलते ही ऐसा प्रपंच बढ़ाते हैं जैसे गूलर के फल को फोड़ते ही उसमें के मसे चारों ओर निकल कर मनकने लगते हैं।

न कर सास बुराई तोहरिव धी के आगे आई।

श०– सास–पति की माता। धी–लड़की। आगे–सामने।

कहावत सास को चेतावनी देने के प्रति बहू के द्वारा कही जा रही है।

अ०– सास जी! मेरी बुराई न करो। तुम्हारी भी लड़की ससुराल गई है, उसके सामने भी यही बात आ सकती है। जैसा व्यवहार तुम मेरे साथ कर रही हो वैसा ही तुम्हारी लड़की को भी झेलना पड़ेगा।

न तोहरे सूप न हमरे चलनी।
चल परोसिन खईं करी।

श०– सूप–अनाज पछोरने वाली वस्तु। चलनी–आटा चालने वाली वस्तु। परोसिन–आसपास, बगल में रहने वाली। खई–लड़ाई, कहा–सुनी। जब गांव की औरतों के पास कोई काम न हो या काम का कोई साधन न हो तो फिर क्या है, खाली समय ज़रा सा मिला नहीं कि आपस में बात, बतंगड़ शुरु हो गई।

अ०– एक पड़ोसिन दूसरी से कहती है कि इस समय तो हमारे पास न चलनी है न तुम्हारे पास पछोरने को सूप है। जब कोई काम नहीं है तो आओ हम सब

बैठकर कुछ न कुछ कहासुनी ही करें। कुछ तो करना ही चाहिये।

नमक से नमक नहीं खावा जात।

कहावत आपसदारी के प्रति कही जाती है।

अ०– एक व्यापारी दूसरे से मुनाफा नहीं ले सकता है। जैसे ठठेरे–ठठेरे बदलौना नहीं होत।'

नटिया बैल छोटिया हारी
दूब कहै हमका काह उखारी।

श०– नटिया–नाटा। छोटिया–छोटा। हारी–हारना। उखारी–उखाड़ना।

कहावत नाटे खोटे बैलों के प्रति कही जाती है।

अ०– दूब कहती है कि जो बैल नाटा, खोटा, छोटा, एवं मजबूत नहीं है वह हमारी जड़ क्या उखाड़ पायेगा? उससे खेत की सफाई ठीक से नहीं हो सकती है।

नदी किनारे क पेड़ कब होय जाय बेड़।

श०– बेड़–तिरछा।

अ०– नदी किनारे के लगे पेड़ इतनी नम जमीन में होते हैं कि इनका कोई भी ठिकाना नहीं होता है कि कब करवट ले लें क्योंकि नदी के बहाव के कारण जड़ कमजोर हो जाती है। इस पर एक कथा है– 'दो पेड़ एक साथ खड़े थे। दोनों में बड़ी दोस्ती थी। एक दिन आंधी आई तो दूसरा पेड़ गिर गया। उसने अपने साथी से पूछा–तुम तो खड़े हो यार मैं भला कैसे गिर पड़ा? तुमने मुझे बचाया भी नहीं। खड़ा हुआ पेड़ बोला– मैं क्या करता तुम्हारी जड़ ही खोखली थी। इसलिए जिस वस्तु की नींव कमजोर होगी वह कभी भी गिर सकता है।

नवाब कै माई पियाजू क तरसैं।

श०– नवाब की बहुत बड़े आदमियों में गिनती होती थी, लखनऊ नवाबों का गढ़ था। ये बड़े नज़ाकतपसंद होते थे। कहते हैं एक बार एक नवाब साहब हाथी पर चढ़े जा रहे थे तो उनके हाथी के पांव के नीचे ककड़ी का टुकड़ा पड़ गया तो नवाब साहब को जुकाम हो गया। लखनऊ के नवाब बहुत मशहूर थे। अपना राज–रियासत संभालते थे। इनकी अपनी रियासत रहती थी। अपनी एक अलग ही शान थी। माई–माता। पियाजू–प्याज। तरसै–लालायित रहना, ललचाना।

कहावत बड़े आदमियों की कंजूसी व लापरवाही पर कही गई है।

अ०– इतने बड़े आदमी– नवाब हैं उनकी मां प्याज के लिए तरस रही है। कितनी शोचनीय बात है मगर यही सच है। इसी पर कहा है–

'बड़ी बखरिया क बड़ा मोहार
आधा ढाका आधा उघार।'

इतने बड़े आदमियों के यहां अंदर कुछ है तो बाहर कुछ है। कौन किसी की सुनता है? सब अपने राग–रंग में मस्त हैं।

न सौ बाभन न एक भैने।

श०– बाभन–ब्राह्मण। भैंने–बहन का लड़का।

हमारे देश में मान्य को बड़ा सम्मान दिया जाता है उस पर यदि बहन का पुत्र हो तो उसे ब्राह्मण का ब्राह्मण मानते हैं। कहावत भांजे की महत्ता पर कही जाती है।

अ०– एक भांजे को खिलाना सौ ब्राह्मण के बराबर है। कहते हैं कि मामा भांजे को मार नहीं सकता है। लोकाचार में है कि मामा मारता है तो उसका हाथ काँपता है। कुछ क्षेत्रों में मामा–भांजे की मरने–जीने की मौखिक गाली भी चलती है जो पौराणिक कंस और कृष्ण की अन्तर्कथा को लेकर होती है।

न पक्की होय न घिया लागय।

श०– पक्की–पूड़ी।

कहावत किसी कंजूस के प्रति कही जाती है।

अ०— पूड़ी बनने में तो घी का खर्च होगा ही। इसलिये न पूड़ी बनेगी न घी का खर्च होगा।

न रांड़ की कुरिया बैठे न रेंड़ की छाया।

श०— कुरिया—मड़ई।

अ०— किसी विधवा स्त्री के यहां बैठने पर कलंक लगने का भय होता है, उसी प्रकार से रेंड़ के नीचे बैठने से क्या छाया मिलेगी?

न सौ गोती न एक परोसी।

श०— गोती—गोत्र के यानी अपने घर के। परोसी—पड़ोस के।

कहावत पड़ोस और पड़ोसी के महत्व पर कही जाती है।

अ०— घर के चाहे जितने लोग हों यदि वे दूर हैं तो काम पड़ने पर समय से नहीं आ सकते हैं, जितना कि एक पड़ोसी वक़्त पड़ने पर किसी भी समय आपकी मदद कर सकता है।

न लोटियो मं न धौपापे मं।

श०— लोटया—लोटे के द्वारा। धोपाप—जनपद सुल्तानपुर के ग्राम दियरा के गोमती घाट पर यह स्थान आज भी है, जहां पर जेठ की उजाली दशमी तिथि को लोग दूर—दूर से स्नान करते आते हैं। यहां उस दिन बहुत बड़ा मेला लगता है। कहते हैं जब रामचन्द्र जी रावण का वध करके अयोध्या लौट रहे थे तो इसी स्थान पर ब्रह्म हत्या का पाप धोने के लिए स्नान किया था।

कहावत में कहा है कि न लोटा भर पानी ही नहाने को हुये और न धौपाप ही जा पाये। यानी किसी तरफ का न होना।

'न खाय न खाय देय।'

अ०— न कोई काम खुद करे और न करने दे। कार्य में बाधा उत्पन्न करना।

'नइहरे मं कम—कम ससुरे मं ज्यादा।
अपने से कम—कम दूसरे से ज्यादा।'

श०— कहावत पर्दे को लेकर कही जाती है।

अ०— पर्दा नैहर में कम और ससुराल में ज्यादा करना चाहिये। इसी तरह से अपने स्वजनों से कम पर्दा करना चाहिये दूसरों से ज्यादा करना चाहिये।

नहन्नी से बरगद नहीं काटा जात।

श०— नहन्नी—जिस औजार से नाई लोग नाखून काटते हैं। बरगद—एक प्रकार का बड़ा सा जंगली पेड़ होता है।

जब किसी काम को करने के लिये कार्य के विशेष साधन नहीं होते तो कहावत कही जाती है।

अ०— बरगद का इतना मोटा भारी पेड़ भला कहीं नहन्नी से काटा जा सकता है।

न बढ़िकै बोलै न आनकै बिपदा खोलै।

अ०— यह बकवादी आदमी के प्रति कही जाती है।

अ०— न तो अपनी बात को बहुत बढ़ा—चढ़ाकर बोलना चाहिये और न किसी के पाप व कष्ट को कहना चाहिये।

नगर नष्ट सरिता बिना, धाम नष्ट बिनु कूप,
पुरुष नष्ट बिनु सील के, नारि नष्ट बिनु रूप।

श०— नगर, शहर से जुड़ी मनुष्यों की बस्ती/सरिता—नदी। धाम—तीर्थस्थल, घर। सील—संकोच।

अ०— जिस नगर में नदी न हो, जिस घर या तीर्थ स्थल में कुआं न हो, जिस पुरुष में शील—संकोच न हो और नारी में रूप न हो, वह बेकार होती है।

नन्हें होय के रहिये जैसे नन्हीं दूब।

श०— नन्हें—छोटे, नम्र। दूब— एक प्रकार की घास होती है जिसकी जड़ें मजबूत होती हैं। गुरु नानक के शब्दों में—

'नानक नन्हें होय रहो जैसे नन्हीं दूब।

घास–पात सब जल गईं रही दूब की दूब।।

कहावत मनुष्य की गंभीरता व नम्रता पर कही जाती है।

अ०– आदमी को बहुत नम्र, बहुत शालीन होना चाहिये जैसे कि नन्हीं दूब। दूब की यह तारीफ है कि वह जेठ माह में भले ही जल जाय मगर बरसात आते ही पुनः हरी–भरी हो जाती है।

नवा हकीम दे अफीम।

श०– अफीम–एक नशीला पदार्थ। हकीम–यूनानी दवा के डाक्टर। कहावत नये हकीम के प्रति कही जाती है। 'नीम हकीम खतरे जान'।

अ०– जब भी कोई नया आदमी आता है तो निश्चय ही वह जानकार तो होगा नहीं।

पढ़ने से अनुभव नहीं हो जाता है, कार्य करने से ही अंदाज़ लगता है किसी काम का। नये हकीम ने इलाज में अफीम देदी। राम जाने मरीज़ की क्या दशा होगी?

न दौड़ के चलै न ठेस लागै।

अ०– जल्दी काम बुरा होता है। दौड़कर चलने पर ठोकर लग ही सकती है। इसलिये साधारण चाल में ही चलना चाहिये।

नवा नौकर मारे हिरना।

कहावत नये कार्यकर्त्ताओं के प्रति कही जाती है।

अ०– नया–नया नौकर आया है तो वह हिरन का शिकार करने चला है।

बुढ़िया न मरै न मांचा छोड़ै।

अ०– जब कोई आदमी न काम करने दे न स्वयं करे तो कहावत कही जाती है। बुढ़िया मर भी नहीं रही है कि मांचा यानी खटिया खाली हो जाय।

न हगै न राह छोड़ै।

श०– हगै–शौच जाना।

बीच रास्ते में बाधा उत्पन्न करने पर कहावत कही जाती है।

अ०– बीच रास्ते में शौच के लिये बैठ गये हैं। न उठ ही रहे हैं और न रास्ता ही छोड़ रहे हैं।

न राम मं न रहीम मं।

कहावत थाली के बैगन जैसे लोगों पर कही गई है। जो थाली में बराबर लुढ़का करते हैं उनकी कोई दिशा नहीं होती है।

अ०– न राम का भजन–पूजन करते हैं न खुदा को ही मानते हैं। जिसका कोई सिद्धान्त ही न हो। कहा है– तीन मं न तेरा मां बीन बजावै डेरा मां'।

'ना'

नांव लखपतिया जनम कै भिखारी

या

नांव लछमिनिया बहारै पतई।

श०– पतई–पाती।

दोनों ही कहावत नाम की विडंबना पर कही जाती हैं।

अ०– नाम तो है लखपती – लाखों की मालकिन है और काम है घर–घर में जाकर भीख मांगना अथवा नाम है लक्ष्मी और सड़क पर पत्ते बहारती है।

नांव कपूरचंद, महक गोबरेव कै नाहीं।

अ०– नाम है कपूरचंद जो खूब महकता है और महक गोबर जैसी भी नहीं है।

नांव फत्तेसिंह, जाय क अढ़ाई कोस।

अ०– नाम फत्ते सिंह है अर्थात् लड़ाई जीतने वाले और ताक़त तो इतनी है कि ढई कोस पैदल चलने की क्षमता शरीर में नहीं है।

नांव निर्मलसिंह, देह मं कोढ़

अ०– स्पष्ट है।

नांव पहाड़ सिंह देंह चिंया अस।

श०– चिंया–पकी इमली का बीज।

अ०– नाम है पहाड़ और देंह है नन्हें से बीज की भांति।

नांव फूल सिंह गोड़ चैला अस।

श०– चैला–जलाने की लकड़ी।

अ०– स्पष्ट है।

नांव इमिरती खवावै विष।

अ०– नाम तो इमरती यानी मिठाई के नाम पर है। मगर खिलाती–पिलाती जैसे ज़हर मिला हो। यानी व्यवहार कुशलता न हो।

नांव बन्नी उठाय लै जांय धन्नी।

श०– बन्नी–बच्ची, नाजुक, कोमल। धन्नी–वह मोटी सी लकड़ी होती है जो गांव के ओसारे आदि में लगाने के काम में आती है।

अ०– नाम तो इतना प्यारा कोमल सा मगर धन्नी उठाकर चली जा सकें, शक्ति इतनी है।

नांव के बाबू जी करनी खाक की।

अ०– नाम कुछ है काम कुछ और ही है। हैं बाबू जी मगर कर्म ऐसे हैं कि कहा नहीं जा सकता है।

नांव ऊंचा काम बूचा।

अ०– नाम बड़ा भारी और काम बहुत छोटा करना।

नाम बड़ेरे दर्शन थोड़े।

अ०– नाम तो बड़ा है मगर देखने–सुनने में बेकार के हैं।

नाम बड़ा कि दाम।

अ०– यहां पर नाम से बड़ा पैसे का मूल्य माना गया है।

नानी के आगे ननिअउरै क बखान करे।

अ०– छोटे मुंह बड़ी बात करना। कहावत इसी आधार पर कही गई है। नानी को अपने नैहर की बात जितनी मालूम होगी उतनी नाती को कैसे मालूम होगी?

अ०– अपने से बड़े लोगों, अनुभवी लोगों के सामने बड़े जानकार बनना।

नाच न आवै आंगन टेढ़।

श०– टेढ़–ऊंचा–नीचा, वक्र।

अ०– जब कोई काम आदमी को नहीं आता या कम आता है तो अपनी कमी छिपाने के लिये वह तरह–तरह का दोष निकालता है।

नाचना आता नहीं तो कहती है कि आंगन ही टेढ़ा है।

नाऊ–नाऊ केतने बार
घबड़ाव न सामने आवत।

किसी बात का या व्यक्ति का कोई परिणाम जब सामने आने वाला होता है तो उस पर कहावत कही जाती है।

अ०– कोई बाल बनवाने वाला नाई से पूछता है कितने बाल हैं तो वह कहता है धीरज रखो, अभी तुम्हारे सामने सब आ जाते हैं।

ना काहू से दोस्ती ना काहू से बैर।

अ०– अपने आप में सीमित से रहना। न किसी से दोस्ती न किसी से बैर, अपनी राह चलना।

नाऊ के बरातै मं सब ठकुरे ठाकुर।

अ०– जब–जब किसी भी जाति की बारात जाती है तो सबकी बारात में नाई शामिल रहता है। आज जब नाई की बारात जा रही है तो सभी लोग उसकी बारात में शामिल हो रहे हैं।

ना बारे कै माय मरै ना बूढ़े के जोय।

श०– बारे–छोटे, नन्हें बच्चे। माय–माता। जोय–पत्नी।

कहावत अवस्थानुकूल मृत्यु पर कही जाती है।

अ०– भगवान न करे कि किसी नन्हें–मुन्ने की मां मर जाय, तो उसका पालन पोषण कौन करेगा? इसी

प्रकार से किसी बूढ़े आदमी की स्त्री यदि बुढ़ापे में मर गई तो समझो बूढ़े की बड़ी दुर्दशा होती है। पत्नी के मरने के बाद वृद्ध आदमी की पूछ घर में पैसे के बराबर भी नहीं होती है।

नारि कर्कशा कटहा घोर, हाकिम होइ के खाय अँकोर
कपटी मित्र पुत्र हो चोर, घघ्घा इनको गहिके बोर।

श०– कर्कशा– झगड़ालू, प्रपंची, दुर्गुणों से भरी। घोर–घोड़ा। कटहा–काट खाने वाला। अंकोर–घूसखोर। कपटी–छल करने वाला, धोखेबाज। पुत्र–लड़का।

अ०– कहावत घाघ कवि की है जिसमें कर्कशा स्त्री, काटनेवाला घोड़ा, घूसखोर हाकिम, कपटी मित्र तथा चोर पुत्र इन सबको पकड़कर बोर देने की बात कही गई है। ऐसे लोगों को दंडित करने में कोई हानि नहीं है।

नाटा खोटा बेंचिके चार धुरंधर लेहु।
आपन काम निकारि के औरन मंगनी देहु।।

श०– नाटा–छोटा। खोटा–बुरा। धुरंधर–अच्छे बड़े, बलवान।

कहावत घाघ कवि की है जिसमें बैलों के प्रति सावधान किया गया है।

अ०– छोटे छोटे बुरे बैलों को बेंचकर बढ़िया अच्छे बैल खरीदना चाहिये जिससे स्वयं भी खेती करे और आवश्यकता पर दूसरों को भी दे सके।

नासुर करे राज कै नास।

श०– नासुर–जिन बैलों के शरीर में नसें ज्यादा हों।

अ०– अधिक नसवाले बैल मालिक का नाश कर देते हैं।

नाते क नात पनाते क पगहा।

श०– नाते क नात– रिश्ते से भी दूर के रिश्ते ऐसे जैसे कि किसी रस्सी से जानवर बंधे हों। जिन रिश्तों से कोई खास मतलब न हो।

नारी नासै पुरुष के बोल,
खेत नासै कोल बेकौल।

श०– नासै–नाश हो। पुरुष–आदमी। बोल–कीमत लगाना। कोल बेकोल–खेत में बोने के लिये क्यारी बनाना, विभाजन करना।

कहावत वेश्यावृत्ति पर कही गई है।

अ०– नारी का नाश उस समय होता है जब पुरुष की नज़र में बिकने के लिये आ जाती है और खेत का नाश उस समय होता है जब उसमें ऊँचे–नीचे, छोटे–बड़े टुकड़े हो जाते हैं। ऐसे खेत बेकार हो जाते हैं।

नाई, दाई, वैद्य, कसाई।
इनके सूतक कभी न जाई।।

श०– दाई–बच्चे पैदा कराने वाली। वैद्य–इलाज करने वाला। कसाई–जो पशु–वध करता है।

अ०– नाई की यजमानी में कोई न कोई ज़रूर मरता रहता है। दाई रोज़ ही बच्चे पैदा कराती रहती है। बहुधा बच्चे मरते–जीते रहते ही हैं। इलाज करने के कारण वैद्य के यहाँ बीमार का मरना–जीना लगा रहता है और कसाई की तो बात ही क्या है? पशु बलि रोज़ ही होती रहती है। इसलिये ऐसे लोगों के यहां सूतक यानी जन्म–मरण के अशौच रोज़ ही लगे रहते हैं।

नाऊ कइसी आरसी हर कोई के पास।

श०– आरसी–शीशा।

कहावत ऐसे सामान के प्रति कही जाती है जिसका उपयोग सभी को करना ज़रूरी होता है।

अ०– जैसे नाई को हर समय शीशे की आवश्यकता होती है।

नाक कटी बला से, दुश्मन क नास तौ भा।

कहावत अदावत, दुश्मनी के प्रति कही जाती है।

अपनी नाक भले ही मैंने कटवा ली मगर दुश्मन का नाश तो हो गया। बहुत से लोग अपना नुकसान करके दुश्मनों से दुश्मनी निभाते हैं।

नककटी की नाक कटी
अढ़ाई बीता रोज बाढ़ी।

कहावत बेहया के प्रति कही जाती है।

अ०— किसी चरित्रहीन नारी के लिये नेकनामी या बदनामी कोई महत्व नहीं रखती। रोज़ आये दिन बदनामी हो रही है मगर उनके ऊपर कोई असर नहीं है। सुबह हुई कि वही रंगत फिर हो जाती है।

नाचय आवै न, आंगन टेढ़।
या
रीधै आवै न लकड़ी गील।

श०— रीधै—खाना बनाना। गील—ओद, गीली।

अ०— जब किसी को कोई काम करना नहीं आता है या काम में बहाना या आनाकानी होती है तो कहावत कही जाती है।

नाचै निकरीं तो घूंघट कैस?

अ०— जब नाचने ही निकली है तो घूंघट काढ़ के कैसे नाचेगी? कहा है—

नाचै कूदै बनरा औ माल खाय मदारी।

श०— बनरा—बंदर। मदारी—बंदर नचानेवाला।

परिश्रम दूसरा करे और मज़ा दूसरा मारे, तो कहावत कही जाती है।

अ०— नाचने का काम तो बंदर करता है और बंदर की बदौलत मिला पैसा मदारी उड़ाता है।

नाता न गोता बांटा मांगै बाप का।

श०— नाता—रिश्ता। गाता—गोत्र। बांटा—बंटवारा। बाप—पिता।

कहावत ऐसे लोगों के प्रति कही जाती है जिसका कोई नाता—रिश्ता नहीं है मगर सम्पत्ति में हिस्सा ज़रूर चाहिये।

नाती पढ़ावै आजा क सोरा दूनी आठ।

श०— नाती—लड़की का लड़का। आजा—बाबा।

जब छोटे लोग बड़े अनुभवी बनकर बड़ों को शिक्षा देने लगते हैं तो कहावत कही जाती है।

अ०— नाती आजा को पढ़ा रहे हैं कि सोलह दूनी आठ होता है। यह हुई नई पीढ़ी की उलटी दुनिया।

नादान की दोस्ती जी का जंजाल।

श०— नादान—बेवकूफ, नासमझ। जंजाल—झंझट, कष्ट।

अ०— मूर्खों से दोस्ती कष्ट देनेवाली होती है। इसलिए दोस्ती बहुत सोच—समझ कर करनी चाहिये।

नाना क टुकड़ा खावै
बाबा क पोता कहावै।

कहावत इसी कहावत पर आधारित है—

'हाथी घूमै गांव—गांव
जे कै हाथी वही क नांव।'

अ०— ननिहाल में रहकर नाना के घर रोटी खाने वाला नाती यानी लड़की का लड़का अपने वंश परिवार का ही—बाबा का ही—पोता कहलायेगा।

नानी खसम करे नवासा चट्टो भरे।

श०— नवासा—जो नाती नाना की गद्दी पर बैठे। चट्टो—चटोर हो, खूब उड़ाने वाला हो, जो अपने नाना की गद्दी पर बैठने के बाद बिरादरी भोज करे।

अ०— नानी ने दूसरा आदमी किया तो नाती गद्दी पर बैठकर बिरादरी को भोज—भात देकर पक्का कर रहा हो।

नानी दुआरे मरी नेवासे क सत्रह स्नान।

अ०— नानी के मरने पर जो नेवासे में गद्दी पर नाती आकर बैठा है, सत्रह बार स्नान करके यह प्रमाणित करना चाहता है कि सम्पत्ति का अधिकारी कोई दूसरा नहीं है, वह ही है।

नानी मरी नाता टूट।

अ०– ननिहाल में गहरा नाता नाना–नानी से ही होता है। जब नानी मर गई तो रिश्ता ही टूट गया।

नापै सौ गज फारै एक गज।

अ०– कथनी और करनी और। यानी बात तो करे सौ गज कपड़े फाड़ने की और जब फाड़ना पड़े तो एक गज ही फाड़े। गप्पें ज्यादा करना काम कुछ भी न करना।

नांव काव, सक्करपारा
रोटी कै खाई? दस बारा।
पानी कितना पिये? मटका सारा।
नांव करै लड़िका बेचारा।

कहावत का आशय है शरीर के अनुपात में भोजन की अधिकता।

अ०– नाम क्या है? शक्करपारा, रोटी दस बारा खाई। इतना खाने के बाद पानी कितना पिया? मटका भरके। जब इतना खाने–पीने के बाद काम की बारी आई तो कहा गया 'बेचारा अभी बच्चा है।'

नाम बड़े दर्सन थोरे।

अ०– नाम के बड़े होना, मगर देखने में कुछ भी नहीं है। कोई गुण या कोई व्यक्तित्व न होना।

नामी साह कमाय खाय।
नामल चोर मारा जाय।।

श०– नामी–नामवाला। साह–ईमानदार। नामल – नामवाला – कहीं पर नाम से लाभ उठाया जा सकता है और कहीं पर नाम से हानि उठानी पड़ सकती है।

अ०– ईमानदार अपने नाम के बदौलत कमाकर खा लेता है और कोई चोर अपने नाम के बदौलत मार खाता है।

नारि सुलछिनी कुटुम छकावै।
आप तले की खुरचन खावै।।

श०– सुलछिनी–अच्छे गुणवाली। कुटुम–परिवार। छकावै–भोजन से तृप्त करना। तले – नीचे। खुरचन–करौनी।

कहावत घर की अच्छे लक्षणवाली नारी पर कही जाती है जो सफल गृहणी होती है।

अ०– अच्छे लक्षणों वाली वही नारी 'गृहलक्ष्मी' होती है जो अपने परिवार को खिलाकर, स्वयं भोजन करती है। भोजन नहीं बचता तो रूखा–सूखा खाकर अपना पेट भर लेती है मगर किसी से कुछ कहने नहीं जाती है। यहां तक कि घरवालों को भी पूर्णरूप से पता नहीं लगने पाता है।

नांव पिरथीपाल भुंइ बिस्सो भर नाहीं।

कहावत नाम की विडंबना पर कही जाती है, नाम है पृथ्वीपाल और ज़मीन एक बिस्वा भी नहीं है।

नांव स्यामसुंदरी मुंह कुकुरौ अस नाहीं।

स्पष्ट है।

नारि सोहागिन जल घट लावै,
दधि मछली जो सनमुख आवै,
सनमुख धेनु पियावै बाछा,
मंगल करन सगुन है आछा।

श०– सोहागिन–सौभाग्यवती, पतिवाली। घट–घड़ा। धेनु–गाय–बाछा–गाय का बछड़ा।

कहावत शकुन के प्रति कही जाती है।

अ०– यदि सोहागिन नारी पानी का घड़ा भरा हुआ लेकर सामने मिले या दही और मछली सामने आये, तथा गाय बछड़े को दूध पिलाती हुई मिले तो यात्रा के समय यह शकुन बड़ा ही फलदायक होता है।

चलै ना हर न चलै कुदारी
बैठे भोजन देय मुरारी।

कहावत ईश्वर की कृपा और भाग्य पर कही गई है।

अ०– न हल चलता है न कुदाल फिर भी भगवान खाने भर को भोजन दिये जाते हैं।

इसी पर कवि मलूकादास ने कहा है–

'अजगर करै न चाकरी, पंछी करै न काम।

दास मलूका कहि गये सबके दाता राम।।

नांव गांव एतना पतोह पहिरै पोतना।

श०— पोतना—जिस फटे कपड़े से रसोई में संइता पोता जाता है।

कहावत कोरे बड़प्पन पर कही जाती है।

अ०— गांव बडा सा है, नाम सभी जानते हैं मगर घर की दशा इतनी बुरी है कि बहू के पहनने को ठीक से धोती तक नहीं है।

नाव विद्याधरी, पढ़िबो न लिखबो।

अ०— नाम है विद्या ग्रहण करने वाली मगर पढ़ने—लिखने में शून्य है।

नाऊ बड़े छतीसा खाय आन क पीसा

ओहू मं लगावै हींसा।

कहावत में नाई जाति को बहुत होशियार माना गया है।

अ०— अपने हिस्से आटा पिसान खाकर भी दूसरे के हिस्से में भी अपना हिस्सा मांगते हैं।

नाऊ, धोबी, दर्जी, तीन जाति अलगर्जी।

श०— अलगर्जी—बेगर्ज वेपरवाह।

अ०— नाई, धोबी दर्जी ये तीनों ही जातियां बड़ी मोटासी होती हैं। इनके पास काम इतना अधिक होता है कि ये काम करने में बड़ां ही आनाकानी करती हैं।

ना मोहें नाधो उलिया कुलिया

ना मोहें नाधो दांये।

बीस बरस तक करूं बरदई

जौ ना मिलिहै गायें।

श०— उलिया कुलिया—छोटे—छोटे खेत के कोल। गायें—गइया।

कहावत उन बैलों पर कही जाती है जिनकी बद्धी हो चुकी हो।

अ०— यदि बैलों को बद्धी करवा दिया गया है, गायों से नहीं मिले हैं तो बीस वर्षों तक हल चला सकते हैं।

नारियल में पानी मीठा है कि खट्टा।

कहावत अंदर की बात को जानने के प्रति कही जाती है।

अ०— नारियल एक बंद फल है। उसके अंदर क्या है कोई कैसे बता सकता है? उसी प्रकार से किसी आदमी के मन की बात कोई क्या जान सकता है?

नाक जब दबत तौ मुंह खुलत।

कहावत अनुशासन के प्रति कही जाती है।

अ०— सांस आदमी या तो मुंह से ले सकता है या फिर नाक से ले सकता है। जब नाक दबती है तब मुंह खुलता है। बात निकलती है।

ना हंस करके कर गहे ना रिस खैंचिन केस।

जस कंता के घर रहे तैसे रहे विदेस।।

श०— कर—हाथ। गहेन—पकड़ना। खैंचिन—खींचा। केस—बाल।

अ०— कोई स्त्री अपने पति के दुख—सुख के प्रति बड़ी उदासीन भावना से कहती है कि न तो कभी हंस के प्यार से हाथ पकड़ा और नहीं गुस्से में कभी सिर के बाल ही खींचे। इसलिए जैसे मेरे पति के घर रहने पर था वैसे ही विदेश जाने पर है। न ग़म है न खुशी है।

नाहीं मामा से काना मामा भल।

अ०— किसी वस्तु या आदमी या नाते—रिश्ते न होने से तो अच्छा यही है कि कहने—सुनने को कोई तो होता, चाहे बुरा ही होता।

नाके कै नैनू पिसाने क दीवट है।

श०— नाक क नैनू—बेहद सुकुमार। पिसान के दीवट—आंटे की चिमनी।

अ०— कोई आदमी बहुत कोमल और नाजुक हो तो कहा जाता है कि आटे के दिये की तरह इतने मुलायम हैं कि संभल नहीं पाते हैं।

ना लरकोरी कै लरिका थामै ना हरवाहे की मूंठ।
ना रांड़ की कुरिया बैठे ना रेंड़ की ठूंठ।।

श०— लरकोरी—बच्चेवाली माँ। थामै—पकड़े। हरवाहे—हलवाहा जो खेत में हल चलाता है। मूंठ—हल की मुठिया। रांड़—विधवा स्त्री। रेंड़— जिसमें छाया ही नहीं होती।

कहावत सिद्धांतवादी है।

अ०— कभी—कभी बच्चेवाली मां का बच्चा ले लिया तो वह काम में इतना व्यस्त हो जाती है कि 'अबै—अबै' करती रहेगी काम पूरा करती रहेगी। जल्दी बच्चे को लेगी नहीं। हलवाहे का हल थामने में भी यही हाल होता है वह भी जल्दी हल नहीं संभालता तथा विधवा स्त्री की कुरिया में बैठने में कलंक लगने का भय रहता है एवं रेंड़ के पेड़ में इतनी छाया नहीं होती कि गर्मी शान्त हो जाय।

ना कर तीन सौ पैंसठ दिन ना कर लगन विचार।
गिन नौमी आसाढ़ बदी होवै कौनो बार।।
रबि अकाल मंगल खग तरपै बुध समान भाव मं परै।
सोम शुक्र जो बीफय होय पुहुमी फूल फलंती होय।।

श०— गिन—गिनती। तीनसौ पैंसठ—साल में तीन सौ पैंसठ दिन होते हैं। लगन—लग्न। असाढ़ बदी—अषाढ़ मास का अंधेरा पाख। बार—दिन।

कहावत लग्न—तिथि विचार पर कही गई है।

अ०— वर्ष भर का ब्योरा लेने से कोई लाभ नहीं है. यह देखो कि अषाढ़ माह की कृष्ण की नौमी को कौन सा दिन पड़ा है? उससे ही आनेवाले समय की स्थिति का पता लग जायेगा। यदि रविवार का दिन है तो अकाल पड़ेगा। मंगल हो तो पक्षियों को कष्ट होगा। यदि बुध है तो समय साधारण होगा, यदि सोम, शुक्र, बृहस्पति है तो समय बहुत फलदायी होगा।

'नांव महरानी बसय कंजर टोलिया'।

श०— महरानी—राजा, महाराजा की पत्नी। कंजर टोलिया—टीन कबाड़, घर के रद्दी सामान, अख़बार फटी बोरिया आदि ख़रीदने व बेंचने वालों के रहने का स्थान।

अ०— कहावत नाम की विडंबना पर कही गई है कि है तो बड़े घर की, नाम है महारानी मगर रहती हैं कंजरों की बस्ती में।

'नांव पहाड़सिंह, देंह सरकंडा'

अ०— नाम तो पहाड़सिंह और शरीर एकदम जैसे सरकंडा की तरह हो।

'नादान दोस्त से दाना दुश्मन अच्छा।'

श०— दाना—समझदार।

अ०— यदि दोस्त मूर्ख हो दुश्मन समझदार हो तो उस दोस्त से वह दुश्मन भला होता है। वह दुश्मन होते हुये भी बेवकूफी का काम तो नहीं करेगा।

'नाती कै का बांह थामें हैं?'

अ०— जब कोई आदमी किसी काम के लिये जल्दी नहीं उठता, या बहाने बनाता है तो कहते हैं कि का नाती को लेकर बैठे हो? लोगों को नाती बहुत प्यारा होता है उसे छोड़कर जाना कठिन लगता है।

'नाऊ देखे हजामत बाढ़ै।'

अ०— किसी आदमी को देखकर उससे संबंधित कार्य की याद आना या उससे काम करवाने की इच्छा जाहिर करना। बाल कटाने तब आये जब नाई दिखाई पड़ा वर्ना आराम से बैठे थे।

'नाऊ के घर मां नहन्नी क अकाल'

अपने पेशे से संबंधित वस्तु तो सभी के पास

होती ही है यह स्वाभाविक बात है। मगर जब ऐसा न हो तो कहावत कही जाती है।

अ०– भला नाऊ के घर में नख काटने की नहन्नी न मिले? मगर जब नहीं होती है तो या होते हुये भी न मिले तो कहावत कही जाती है। दुर्दशा के समय और भी अधिक दुर्दशा होना।

'नारि लक्ष्मी, भई कुलछिनी, घरै रहै तौ आवै कंखनी।'

श०– कंखनी–कराहना।

अ०– कहावत आज के युग की उन नारियों पर है जो दिनभर इधर–उधर घूमती हैं और जब घर आती हैं तो कांखना–कराहाना शुरू कर देती हैं, जैसे कि बहुत ज्यादा तबीयत खराब है। ऐसी कुलक्षणी नारी घर–परिवार का नाश करके रख देती है।

'नारी जो उठि जाय सबेरे, घर मां बसै लच्छमी नेरे'

श०– नेरे–नजदीक, निकट, पास।

अ०– कहा गया है कि जो नारी सबेरे उठ जाती है उसके घर में लक्ष्मी का बास रहता है।

'नाना के धर पर नेवासा पेंड़ा फिरै।'

श०– नेवासा–किसी को अपने यहां रखकर अपनी सम्पत्ति का मालिक बनाना। किसी को बसा कर अपने बेटे का सा अधिकार देना।

अ०– नाना के धन पर नाती ऐंठता फिरे। जब ऐसी स्थिति होती है तो कहावत सामने आती है।

'नारि बिबस नर सकल गोसाईं, नाचहिं नट मरकट की नाईं'

श०– बिबस–विवश होकर, मजबूर। नर–मनुष्य। नट–जो कलाबाज़ी दिखाता है। मर्कट–बंदर।

यह श्री रामचरितमानस की पंक्ति है जो कलियुग वर्णन में कही गई है।

अ०– मनुष्य जब स्त्री के वश में होगा जो बंदर की तरह नाचता फिरेगा।

'नार कै कटाई उहै, उहै सौरी कै पोताई।'

श०– नार–बच्चे के होने में दायी पहले के समय में नार काटने आती थीं। उहै–वही। मोताई–जिस कोठरी में बच्चे होते थे उसकी लिपाई–पोताई की जाती थी।

कहावत दाई के नेग पाने के प्रति कही गई है।

अ०– दाई का कहना है कि जो नाल काटने का नेगचार मिला है उसी में सौर की पोताई भी न हो सकेगी। दोनों का नेग अलग–अलग मिलना चाहिये।

'नि'

'निरबल के बल राम, तो के हमसे बलवान।'

अ०– कमज़ोर, गरीब का रखवाला यदि भगवान है तो उससे बलवान, सबल कौन हो सकता है?

'निमिया केतनो करुई, तबहूँ सीतल छांह।
भइया केतनौ बैरी तबहूँ दाहिन बांह।।'

अ०– नीम का पेड़ कितना भी कड़ुआ क्यों न हो मगर उसमें एक गुण बहुत बड़ा है। उसकी छाया बहुत ही ठंढी होती है। उसी प्रकार से भाई कितनी ही दुश्मनी क्यों न करे किन्तु समय पड़ने पर वही मददगार होकर दाहिने हाथ बना खड़ा रहता है।

निपछ राजा मन हो हाथ
साधु परोसी नीमन साथ।
हुकुमी पुत्र धिया सतवार
तिरिया भाई रखे विचार।
कहै घाघ हम करत विचार
बड़े भाग से दे करतार।।'

श०– निपछ–निष्पक्ष। मन को हाथ–मन वश में हो। नीमन–अच्छा, सीधा–सादा। हुकुमी–आज्ञा को मानने वाला। धिया–पुत्री। सतवार–सतवंती, अच्छे स्वभाव व चरित्रवाली। तिरिया–स्त्री, पत्नी। करतार–भगवान, ब्रह्मा।

कहावत कवि घाघ की है जो अच्छी संगत के प्रति कही गई है।

अ०– यदि राजा न्यायप्रिय हो, पड़ोसी साधु के समान सीधा समझदार हो, दोस्त निष्कपट और सम्पन्न हो, बेटा आज्ञाकारी व पुत्री सच्चरित्र हो, स्त्री, भाई अच्छा व्यवहार करनेवाले हों, तो बड़े भाग्य की बात है। ईश्वर ऐसे लोगों को बड़ी किस्मत से देता है।

'नित्ते खेती दूसरे गांव, नाहीं देखे ते कर जाय।,
घर बैठे जो बनवै बात, देह पै वस्त्र न पेट में भात।।'

श०– नित्ते, नित्य, रोज़–रोज़। वस्त्र–कपड़ा। भात–चावल, भोजन।

कहावत खेती विषयक है जिसमें कहा गया है कि आलसी किसान की क्या गति होती है?

अ०– दूसरे गांव की खेती जो किसान देखने नहीं जाता, जो घर बैठे–बैठे बात करना जानता हो, कोरी गप्पें हांकता हो, उस किसान के तन पर न तो वस्त्र होंगे और न पेट भरने को अन्न होगा।

'निमरै के मेहरिया, गांव भर के भौजाई।'

अ०– कमजोर आदमी की स्त्री पर सभी अधिकार समझते हैं। वह गांव भर की भौजाई बनी रहती है।

'मिउन चलीं बरा क अदहन धरें।'

जब भी कोई अनजान या फूहड़ स्त्री कोई गलती करती है तो उसे इस कहावत के द्वारा चेतना देते हैं और उसके फूहड़पने को भी व्यक्त करते हैं।

अ०– कोई नवसिखिया स्त्री जब बड़ा बनाने चली तो उसके लिये चूल्हे पर पानी – अदहन – रखने चली।

'निर्बंसी के माई निःसील होति।'

अ०– जिस स्त्री के वंश नहीं होता, निःसंतान होती है वह शील संकोच नहीं करती। यही कारण है कि उसे किसी का उलाहना नहीं सुनना पड़ता था।

'नियाव चला निर्धन से मिलने।'

अ०– कहावत व्यंग्य में कही गई है। भला वह भी आज के युग में निर्धन बेचारा क्या जाने न्याय–अन्याय? उसे कब न्याय मिलता है? न्याय–अन्याय का प्रश्न तो पैसेवालों के यहां उठता है। निर्धन न्याय से मिलकर निराशा ही पायेगा।

'निश्चय पीठ परै सुख पावै।
परै कांख प्रिय बंधु मिलावै।।'

उपरोक्त कहावत छिपकली गिरने के शुभाशुभ फल पर कही गई है।

अ०– पीठ पर गिरने से सुख मिलता है और कांख पर गिरने से अपने प्रिय भाई–बंधु से मिलन होता है। दोनों स्थान पर गिरने से लाभ होता है।

'निमरे पड़वा छत्तिस रोग।'

श०– निमरे–नीमर, कमजोर, दुर्बल। छत्तीस–कई तरह की।

जब कोई आदमी या बच्चा अधिक कमजोर होता है तो निश्चय ही उसे कोई न कोई बीमारी लगी ही रहती है।

अ०– दुर्बल बच्चे को देखकर कहा गया है कि कमजोर को तमाम बीमारियां लग जाती हैं। यानी दुर्बल होने पर बीमारी ही बीमारी घेरे रहती है।

'निकली हलक से चढ़ी खलक से।'

श०– हलक–गले से। खलक–संसार।

हलक से बात निकलने का संकेत है। किसी विद्वान कहा है– 'मुंह से निकली बात हाथ से निकला तीर वापस नहीं आता। यही बात कहावत में भी कही गई है।

अ०– कोई भी बात यदि गले से बाहर आई तो वह हवा की तरह चारो ओर फैले बिना नहीं रह सकती है।

'निकरा चंदा तो अंधेर भवा मंदा।'

अ०– जब प्रकाश सामने होता है तो फिर अंधेरे की

नहीं चल पाती। यानी सच के आगे झूठ की, पुण्य के आगे पाप की, नहीं चल पाती है। चांद के निकलते ही अंधेरा गायब हो जाता है।

'निकाही न ब्याही

बहू कहाँ से आई'?

न तो मुसलमानी रीति से निकाह पढ़ा गया और न ब्याह की कोई रस्म हुई तो बहू कैसे बन गई? झूठा रिश्ता लगाकर अपना महत्व बढ़ाने वाले पर कहावत कही गई है।

'निठलिया गये हाट, ककरी देखे जियरा फाट।'

श०– निठलिया–निठल्ले, जिनके पास न कोई काम है, न हाथ में दाम है। हाट–बाजार। जियरा फाट–कलेजा बैठ गया।

अ०– कोई बाजार गया तो पैसे तो पास थे नहीं, कंकड़ी जैसी सस्ती वस्तु का भी नाम सुनते ही कलेजा मुंह को आ गया। जब पास में पैसा नहीं है तो क्या महंगा क्या सस्ता?

'निखट्टू आगे लड़ता है कमाऊ आगे डरता है।'

श०– निखट्टू–बेठौल, बेकार।

बिना कमानेवाला आगे बढ़कर झगड़ा करता है और कमाने वाला झगड़ा करने से डरता है। कमजोरी ही मनुष्य के क्रोध का कारण होती है।

'निठल्ला बनिया पाथर तौले।'

अ०– जो बेकार में बैठा–बैठा ऊबता है तो वह व्यर्थ का काम भी करता है। कहावत उसी पर कही गई है कि बनिया ख़ाली बैठा अनाज नहीं तो पत्थर ही तोलता है। किसी तरह समय बीतना चाहिये।

'निसि दिन खाब, काम करत की असकिताब।'

श०– निसिदिन–निशिदिन, रात–दिन। असकिताब – आलस्य करना।

अ०– खाने को तो मिले तो रात दिन खाते रहें और काम के समय आलस्य दिखाना। इस पर एक दोहा स्मरण हो आया –

'राम नाम मां आलसी' भोजन मां हुसियार।
तुलसी ऐसे नरन को बार–बार धिक्कार'।।

हमारे मनीषी भर्तृहरि ने लिखा है–

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः।
नास्त्युद्यमसमोवन्धुः कुर्वाणो नावसीदति'।।

यानी आलस्य ही मनुष्य के शरीर में रहनेवाला सबसे बड़ा शत्रु है। उद्यम के समान मनुष्य का कोई बन्धु नहीं है। उसे मित्र बनाकर मनुष्य कभी भी दुःखी नहीं होता है।

'नियारे चूल्हे बलि–बलि जाऊं

सब कुछ खाती, अब आधा खाऊं'।

कहावत सास–बहू के अलगाव की ओर संकेत देती है।

श०– नियारे–न्यारे, अलग, अनोखे। बलि–बलि–न्योछावर होना।

अ०– जब बहू सास से अलग हो गई तो उसने अपने अलग चूल्हे पर खाना बनाया तो बोली– ऐ चूल्हे, मैं तेरे ऊपर बहुत प्रसन्न हूं, न्योछावर हूं, इसलिए कि अभी तक जो कुछ सास बनाती थीं वह मुझे देती थीं तो मैं सारा का सारा खा जाती थी तो भी मेरा पेट नहीं भरता था और एक आज है कि अब जो कुछ भी मैं बनाती हूं उसमें से आधा खाती हूँ आधा बचाकर रख भी आती हूँ। सारांश यह कि अपने राज में तो घर सिरजे बिना काम कैसे चलेगा? इसी कारण कुछ खाती हूँ कुछ बचाती हूँ।

'निकसै घिव न बिना दहि भये'।

अ०– किसी काम को करने व उसके परिणाम को निकालने के लिये बड़ा परिश्रम करना होता है। बिना दही को मथे हुये मक्खन नहीं निकलता है। बिना मक्खन गरमाये घी नहीं निकलता।

'निहंगम लाड़ला सदा सुखी'

श०– निहंगम–बेकार।

अ०– जो दीन–दुनिया से अलग रहता है वह निश्चित रहकर मस्त रहता है।

'निश्चय सोवै हेरू, जिनके गाय न गोरू।'

श०– गोरू–जानवर।

अ०– जिनके पास कोई जानवर न हो उसका काम होगा ही क्या सिवाय सोने के? अतः हेरू के पास न गाय है न और कोई जानवर ही है तो वह अपना आराम से सोया ही करते हैं। कहावत तब कही जाती है जब किसी बेफिक्र आदमी का जिक्र आता है।

'नित कुंआ खोदै क नित पानी पियै क है।'

श०– नित–रोज–रोज।

कहावत उसके प्रति कही जाती है जिस आदमी को बिना रोज़–रोज़ कमाये हुये रोटी नहीं मिलती। जिसके पास रोज़ काम करके पेट भरने के अलावा और कोई साधन जीने का नहीं है।

अ०– जब रोज़ कुआं खोदेंगे तभी पानी पीने को मिलेगा। बिना कुआं खोदे पानी बिना प्यासे ही रह जाना होता है। यानी रोज परिश्रम करने पर ही दाना–पानी मिल सकता है।

'नित प्रातः खटिया से उठिके पीवै ठंडा पानी।
ता घर बैद कबौ नहिं आवै बात घाघ की मानी।।'

श०– नित–रोज। कबौ–कभी।

कहावत स्वास्थ्य विषयक है।

अ०– नित्य सबेरे खाट पर से उठते ही जो लोग ठंडा पानी पीते हैं उनका स्वास्थ्य उतना अच्छा रहता है कि उन्हें कभी कब्ज या पेट संबंधी कोई बीमारी नहीं होती है, न कभी डाक्टर, वैद्य की जरूरत ही पड़ती है।

'निद्रा अउर जमाई आवै
करिके मेहनत दूर भगावै।'

श०– निद्रा–नींद। जमाई–उबासी।

कहावत आलस्य के प्रति कही गई है।

अ०– जिसे नींद और जमाई असमय में आवे उसे चाहिये कि तुरंत उठ जाये कोई काम करे या घूमे फिरे तो आलस्य दूर हो जाता है।

'नी'

'नीम के किरवा क नीमै मिठात।'

अ०– जो जहां पैदा होता है, जिस वातावरण में पैदा होता है उसे वही साथ व संगति पसंद आती है। जैसे नीम कड़ुई होती है किन्तु नीम के कीड़े को नीम ही अच्छी लगती है। किसी के स्वाभाव पर कहावत कही जाती है।

'नींद न जानै टूटी खाट,
भूख न जानै बासी भात'
प्रेम न जानै जात कुजात'।

हर चीज का अपना–अपना महत्व होता है। भूख–नींद और प्रेम के प्रति कहावत कही गई है।

अ०– जब नींद लगे तो टूटी खाट ही क्यों न हो, बिस्तर हो या न हो आदमी सो जाता है। उसी प्रकार से भूख लगी हो तो खाना बुरा भी हो तो अमृत लगता है। प्रेम का जहां तक प्रश्न है कहते हैं प्रेम अंधा होता है। वह यह नहीं देखता कि मैं किससे प्रेम कर रहा हूँ। जात परजात कोई भी हो, प्रेम हो गया तो टूट नहीं पाता।

'नीचे धरती ऊपर अल्ला।
बीच मं दूनो के शेख अब्दुल्ला।।'

इस कहावत के पीछे शेख अब्दुल्ला की एक कथा है।

अ०– पिंडारियों के सरदार शेख अब्दुल्ला थे, जिसे अंग्रेजों ने डाकू कहा है, मगर ये बाग़ी थे। १८२४ का समय था जब शेख अब्दुल्ला ने अंग्रेजों को नाकों चने

चबवा दिये थे। उन्हीं के ऊपर कहावत है। यानी नीचे धरती, आकाश में अल्लाह और दोनों के बीच में यदि कोई भी शक्तिशाली है तो वह शेख अब्दुल्ला हैं।

'नीचे ओद ऊपर बदराई।

घाघ कहै अब गेरुई छाई।।'

अ०— घाघ कवि का कथन है कि खेत जब नीचे से गीला हो और ऊपर बादल कई दिनों तक छाये हों तो समझो कि अनाज (गेहूँ) में गेरुई नामक कीड़े लग जायेंगे।

'नीचन से व्यवहार बसावै, हंसि के मांगै दम्मा'

आलस 'नींद' निगोड़ी, घेरे घघ्घा तीन निकम्मा'।

श०— दम्मा—दाम, पैसा। निकम्मा—बेकार।

अ०— घाघ कवि की धारणा है कि जो नीचों से मित्रता करे, जो हंसकर अपना पैसा मांगे और जिसको आलस्य नींद हर समय घेरे रहें ये लोग तीनों बड़े निकम्मे यानी बेकार होते हैं।

'नीला कंधा बैंगन खुरा,

कभी न निकले बरधा बुरा।'

अ०— कहावत बैलों की पहचान पर है। जिस बैल का कंधा नीला, खुर बैगनी हो तो वह कभी बुरा नहीं निकलता।

'नीम हकीम ख़तरे जान'।

श०— नीम हकीम —बिना पढ़ा—लिखा हकीम—वैद्य, डॉक्टर।

अ०— बिना डिग्री हासिल किये हुये डाक्टर से इलाज कराने में जान खतरे में पड़ सकती है।

'नीम न मीठी होय सींचै घिवगुर से।

जे के जौन सुभाव छूटै नहिं जिव से।।'

श०— सुभाव—आदत। छुटै—छूटना, रुकना।

अ०— कहावत स्वभाव पर कही जाती है कि नीम के पेड़ को चाहे जितना भी घी—गुड़ से सींचो मगर उसका स्वाद कडुआ का कडुआ ही रहेगा। उसी प्रकार से किसी आदमी के स्वभाव को बदलना चाहो तो असंभव है। वह जो संस्कार लेकर जन्मा है उसी संस्कार के अनुसार रहेगा। इस पर तुलसीदास जी ने बड़े सुन्दर ढंग से लिखा है—

'फूलहिं फरहिं न बेंत, जदपि सुधा बरसहिं जलद।

मूरख हृदय न चेत, जौ गुरु मिलहिं बिरंचि सम।।'

तो स्वभाव की कोई दवा नहीं होती है।

'नीमर घोड़ी सांझेन पयान।'

श०— नीमर—दुर्बल, पयान—प्रयाण, प्रस्थान करना—जाना।

जब किसी कमज़ोर आदमी को किसी काम के लिये योग्य नहीं पाते हैं तो यह कहावत कहते हैं या बहुत धीरे काम करने वाला हो तो भी कहते हैं।

अ०— घोड़ी दुबली है तो यात्रा करने में अधिक समय लगेगा। अतः बहुत पहले से ही यात्रा शुरू कर देनी चाहिये।

'नीच न छोड़े निचाई, नीम न छोड़े तिताई'।

अ०— नीच की नीचता वैसे ही नहीं छूटती जैसे नीम अपनी तिताई, कड़ुवाई नहीं छोड़ सकती है।

'नीलकंठ जिस सिर मंडरावे

मुकुटपती सूं लाभ उठावे।'

श०— नीलकंठ—नीलकंठ पक्षी। भृकुटीपति—राजा।

अ०— नीलकंठ पक्षी जिसके सिर पर मंडराता है वह राजा की तरह लाभ उठाता है।

'नीम मुल्ला खतरा ईमान।'

यदि मुल्ला को धर्म का अधूरा ज्ञान है तो ईमान धर्म के लिये बड़ा खतरा उत्पन्न हो सकता है। जिसे स्वयं अक्ल नहीं है वह दूसरों को क्या सिखायेगा?

'नीलकंठ कीड़ा भखे, मुखहिं बिराजै राम,

खोट कपट क्या देखिये, दर्शन से ही काम।'

अ०– नीलकण्ठ पक्षी कीड़ा खाता है और मुंह से राम का भजन करता है। उसके अंदर क्या अच्छा है, क्या बुरा है इससे क्या मतलब है? उसका दर्शन ही बड़ा महत्वपूर्ण माना गया है। कहते हैं नीलकंठ पक्षी का दर्शन यदि दशहरे के दिन हो जाये तो शुभकारी है क्योंकि वह भगवान शंकर का रूप माना जाता है।

'नीचे से जड़ काटे ऊपर से पानी देय'।

कहावत ओछे, धोखेबाज आदमी के प्रति कही गई है जो भीतर ही भीतर गला काटता है।

अ०– ऊपर से दिखावे में तो शुभचिंतक बने हैं और अंदर ही अंदर हानि पहुंचाने पर आमादा रहते हैं।

'ने'

'नेकी कर कुयें में डाल।'

अ०– अच्छा काम करके उसे भूल जाना ही अच्छा है, जैसे कि कुछ किया ही नहीं। किसी के साथ भलाई करने व उसे बार–बार न कहने की ओर संकेत किया गया है।

'नेकी और पूछ–पूछ'।

श०– नेकी–भलाई।

अ०– किसी के साथ अच्छाई भलाई करना ही है तो उससे बार–बार पूछने से क्या लाभ? जो करना है उसे तुरंत कर डालना चाहिये।

'नेकी न बदी, जस न निहोरा।'

श०– नेकी–भलाई। बदी–बुराई। जस–यश, प्रशंसा। निहोरा–एहसान।

जब आदमी किसी के साथ भलमनसाहत करता है और वह एहसान फ़रामोश होता है, तो कहावत का प्रयोग किया जाता है।

अ०– कितनी भलाई करो उसका न यश है न एहसान है।

'नेक नांव बनिया, बदनाम नांव चोर'।

अ०– बनिया की एक अपनी साख होती है। बनिया चोरी करे, कम तोले तब भी बनिया तो कम तोलता ही है कहकर लोग चुप हो जाते हैं मगर चोर का नाम इतना बदनाम होता है कि चोरी न करने पर भी उस पर शंका की जाती है।

'नेमी पांड़े करिहाई मं जटा।'

कहावत ढोंगी आदमी के प्रति कही गई है। पांडे बड़ा नेम–धरम से रहते हैं। वे नयापन दिखाने के लिए कमर में बड़े–बड़े बाल यानी जटा रखाये हुये हैं। अपने काम की तारीफ के लिए अनर्गल काम करना।

'नो'

'नोन वाले का नोन गिरा, दूना हुआ
तेलवाले का तेल गिरा, ऊना हुआ'।

जब किसी का कोई नुकसान होता है तो किसी का तो नहीं के बराबर होकर रह जाता है और किसी का अधिक हो जाता है।

अ०– नमक वाले का जब नमक गिरा तो उठाने में थोड़ी धूल, कंकड़ी भी उठ आई तो उसका तो नुकसान न के बराबर हुआ मगर जब तेल जैसी कोई वस्तु गिरती है तो उसका उठ पाना मुश्किल ही होता है। थोड़ा–मोड़ा चाहे ऊपर से उठ आये।

नोखे के नाउन बांसे कै नहन्नी'।

अ०– नयी–नयी नाउन ने काम क्या शुरू किया है बजाय लोहे की नहन्नी के बांस की नहन्नी रखी है। उससे भला क्या नाखून कट पायेगा? इसीलिये अपने पेशे का काम अच्छी तरह समझ लेना चाहिए। कंजूसी के पीछे सामान में कमी या रद्दी लेकर पेशे को बदनाम नहीं करना चाहिए।

'नोखे के धनिया भुंइ रहै न कनिया।'

श०– धनिया–पत्नी, स्त्री। कनिया–गोदी।

कहावत किसी छोटे बच्चे के ऊपर कही गई है। कुछ लोग नखरीली पत्नी पर भी लागू कर देते हैं।

अ०– नयी बच्ची है कि न ज़मीन में बैठे न गोद में रहे।

'नोखे की भगतिन भई, गरारी के माला पहिरी'।

श०– गगरी–कुयें पर जिससे पानी भरा जाता है।

अ०– अनोखी भक्तिन है रुद्राक्ष की माला के बजाय कुयें पर पानी भरनेवाली गड़ारी की माला पहनी है। आडंबर प्रदर्शन करना।

'नोखे कै घर क नौकर, चूनी खाय न चोकर'।

श०– चूनी– दाल के छोटे–छोटे टुकड़े। चोकर–आटा चालने पर जो वस्तु चलनी में बच जाती है।

अ०– घर में अनोखा नौकर क्या आया है न वह चूनी की रोटी खाता है न चोकर ही खाता है। कहने का मतलब यह कि वह भी अच्छा खाना चाहता है।

'नोखे के भगतिन, कोलिया मं संध्या करै'।

अ०– नयी–नयी भगतिन क्या भई, चली हैं एकदम संकरे रास्ते में बैठकर भजन, पूजा करने। नये काम पर– विशेषतः नयापन पर व्यंग्य में कहावत का उपयोग किया जाता है।

नौकर के चाकर मंड़ई क ओसारा'।

श०– चाकर–नौकर। ओसारा–बरामदा।

एक तो आदमी स्वयं ही किसी दूसरे के यहां नौकर है और यह भी चाहे कि हमारा हुक्म माननेवाला भी कोई हो।

अ०– नौकर के भी नौकर तो वैसे ही हुआ जैसे कि मंड़ई का बरामदा हो।

'नोना पानी घोड़ा गाड़ी अउर रंडी के धक्का।
ये तीनिउ से बच पावै तो केलि करै कलकत्ता'।।

श०– नोना–पानी– नमकीन, खारा पानी, रंडी– वेश्या। केलि–मनोरंजन, आराम।

कहावत कलकत्ता शहर के ऊपर कही गई है।

अ०– कलकत्ता के खारे पानी, वहां की घोड़ा गाड़ी और वेश्याओं के धक्के यदि बरदाश्त कर ले तो फिर कलकत्ते में बड़े मौज से समय व्यतीत कर सकता है।

'नौ'

'नौ नसी न एक कसी'।

श०– नसी–जोताई। कसी–गोड़ाई।

कहावत घाघ कवि की खेती संबंधी है।

अ०– धरती की कई बार जोताई करने से अच्छा है कि गोड़ाई एक ही बार खूब बढ़िया ढंग से कर ले तो अच्छा है।

'नौमी माघ अंधेरिया, मूल रिच्छ को भेद।
हो भादों नौमी दिवस, जल बरसे बिन खेद।।'

कहावत भड्डरी की है। उनका कहना है कि–

अ०– यदि माघ मास के कृष्णपक्ष की नवमी तिथि को मूल नक्षत्र पड़ता है तो समझो कि भाद्रपद नवमी के दिन पानी अवश्य बरसेगा।

'नौ की लकड़ी नब्बे खर्च'।

अ०– किसी काम में अधिक ऊपरी खर्चों का हो जाना।

'नौ दिन चले अढ़ाई कोस।'

जब कोई किसी काम में बहुत देर लगाता है या बेहद आलसी होता है तो कहावत चरितार्थ की जाती है।

अ०– नौ दिन में ढाई कोस ही चल पाते हैं।

'नौ नगद न तेरह उधार'।

अ०– नकद पैसे की कीमत अलग ही होती है। तेरह रुपये उधार से नौ रुपये नकद मिलने अच्छे हैं क्योंकि वे अपने पास आ जाते हैं।

'नौ कनौजिया नब्बे चूल्हा।'

कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की फूट पर कहावत कही गई है।

अ०– नव कनौजियों के नब्ब चूल्हें जलते हैं क्योंकि भेदभाव के मारे साथ खाना नहीं खा सकते हैं।

'नौ सौ चूहे खाय के बिलार भई भगतिन'।

कहावत उन पर है जो जीवन भर तो बुरे काम करते रहे हैं और अंत में बड़े महात्मा बनते हैं। नौ सौ चूहे खाने के बाद अब बिल्ली भगतिन हो गई है।

'नौ महीना पेट मं कइसे रहे'।

जब कोई बच्चा ज्यादा ही शैतान होता है या फितूरबाजी करता है तो लोग ऐसे समय पर कहते हैं कि भइया! तुम इतने शैतान हो भला बताओ तो नौ महीने मां के पेट में कैसे रहे होगे?

'नौमी गूंगापीर मनाऊं, ना चरखे के हाथ लगाऊँ'।

गूंगापीर एक पीर थे, जिनके नाम पर भादों के शुक्लपक्ष नौमी को मेला लगता है। जब किसी को काम न करना हो तो कोई न कोई बहाना ज़रूर खोज लेता है तो यहां है गूंगापीर का बहाना।

अ०– आज तो नवमी गूंगापीर का मेला है, इसलिये मैं उन्हीं को मनाऊंगी तथा चरखे को हाथ न लगाऊंगी यानी कि कोई काम न करूंगी।

'नं'

'नंगा खड़ा उजाड़ में, है कोई, कपड़े ले।'

जिसके पास कुछ हो ही नहीं उसके पास कोई क्या पायेगा? कहावत ऐसे ही लोगों के प्रति उद्धृत की गई है।

श०– उजाड़–निर्जन। नंगा–निर्वस्त्र।

अ०– जो निर्वस्त्र खड़ा हो वह कहे कि कोई कपड़े लेना चाहे तो ले ले, तो उससे किसी को क्या मिलेगा?

'नंगा खोदायो से जबरदंगा।'

अ०– नंगे आदमी से सभी डरते हैं क्योंकि वह बड़ा ज़िद्दी व ज़बरदस्त होता है। इसीलिये कहा गया है कि नंगा आदमी भगवान से भी बड़ा होता है।

'नंगा का नहाये का निचोड़े।'

जिसके पास कुछ भी नहीं है वह क्या अपने पर खर्च करेगा और क्या दूसरे पर ख़र्च करेगा? नंगा नहाने वाला कपड़ा क्या गारेगा, कपड़े सूखे ही हैं।

**'नंगी हो के काता सूत
बुड्ढी हो के जाया पूत।'**

अ०– समय निकलने पर कोई काम शोभा नहीं देता है। कहावत असमय में काम के प्रति कही गई है कि नंगी हुई तो सूत कातने व वस्त्र बनवाने की सूझी। पहले नहीं सोचा कि क्या पहनूंगी और जब बुढ़ाई आ गयी और बेटे की ज़रूरत महसूस हुई तो बेटा जन्मने का शौक चढ़ा।

'नंगा नाचे फाटे का।'

अ०– नंगा यदि नाचेगा तो उसका फटेगा ही क्या? जिसके पास इज्ज़त ही नहीं है तो उसकी इज्जत जाने का सवाल ही नहीं उठता।

'नंगा देय गारी, तिलंगा देय गारी, नादेहंदा देय गारी, इन सबकी गारी ससुरार सम पियारी।'

श०– नंगा–नंगई मचानेवाला, जिद्दी। तिलंगा–अंग्रेजों की फ़ौज के हिन्दुस्तानी सिपाही। नादेहंदा–जो कर्ज का पैसा लेकर देने का नाम नहीं लेता है। सम–तरह। कहावत नंगे व जबर लोगों के प्रति चरितार्थ की गई है।

अ०– जो लोग नंगई पर उतर आते हैं या अंग्रेजों के फौज में रहने वाले हिन्दुस्तानी सिपाही हैं या फिर जो कर्ज़ का पैसा लेकर देना ही नहीं चाहते, इन सब का गाली देना तो स्वाभाविक है। इसलिये ये गालियां इतनी प्यारी लगती हैं मानों कि ससुराल में कोई गाली दे रहा हो।

'घर आये आगन्तुक के आसन, बासन, डासन का और ध्यान रखो घर के अनुसासन का।'

अपने घर आये मेहमान को बैठाने का फिर खाने–पीने का, उसके बाद सोने का ध्यान रखो और अपने घर की व्यवस्था का ध्यान रखो कि कहीं मेहमान के स्वागत में कमी तो नहीं हो रही है?

**'नंगू नाचे, ढीठू गावे,
सबसे बेहया ढोल बजावै।'**

अ०– नंगा नाचता है, धृष्ट या निडर गाता है और सबसे बेहया, बेशर्म जो होता है वही ढोलक बजाता है।

'नंगा देखि बुढ़ौती मचलै।'

अ०– बुढ़ापे में मनुष्य की कामेच्छा समाप्तप्राय होती है। मगर बहुत से ऐसे भी रसिक होते हैं जिन्हें बुढ़ौती में युवा लोगों को देखकर अपनी जवानी याद आ जाती है।

'नंगी रोकिन घाट, न नहाय न नहाय देय।'

श०– नंगी–बेशर्म, बेहया। घाट– नहाने व पानी भरने का स्थान।

कहावत न कार्य करे और न दूसरे को करने दे, पर कही गई है।

अ०– बेशर्म स्त्री खुद नहाने बैठी तो न स्वयं नहाकर उठ ही रही है और न किसी को नहाने का स्थान ही दे रही है। कौन जाय निर्लज्ज के सामने नहाने?

'पहिला सुख निरोग हो काया, दूसरा सुख घर में हो माया।'

तिसरा सुख सतवंती नारी, चौथा सुख सुत आज्ञाकारी।

श०– निरोग–रोग न हो। काया–शरीर। माया–धन, रुपया, पैसा, सम्पत्ति। सतवंती–चरित्रवान, पतिव्रता। सुत–पुत्र। आज्ञाकारी–कहना माननेवाला।

अ०– पहला सुख है शरीर में रोग न हो। दूसरा सुख है घर में खाने–पीने की सम्पन्नता हो। तीसरा सुख है पत्नी का चरित्र अच्छा हो। चौथा सुख है बेटा कहना मानने वाला हो।

'पाखंडी पूजै देवता, देवता लोटि–लोटि जाय।'

श०– पाखंडी छंद करनेवाला, ढोंग रचानेवाला।

अ०– कहावत दिखावा करने वालों के ऊपर कही गई है। ऐसे लोग जो दिखावा करने के लिये देवी–देवता पूजते हैं, उनसे देवता भला क्या प्रसन्न होंगे? उन्हीं पर व्यंग किया गया है कि उन लोगों के देवता पूजने पर इतने प्रसन्न होते हैं कि लोट–लोट जाते हैं।

'पढ़े नहीं मगर कढ़े हैं।'

अ०– अनपढ़ किन्तु होशियार व्यक्ति पर कहावत कही गई है। भले ही अनपढ़ हों किन्तु होशियार बहुत हैं।

'पइसा के माई पहाड़ चढ़ै।'

अ०– जिसके पास पैसा होता है वह दुनिया में बड़ा एवं कठिन से कठिन काम कर सकता है।

'परका घोड़ भुसौले ठाढ़

जब देखा तब भूसा खाय।'

श०– चाहे आदमी हो चाहे जानवर हो जहां कहीं भी आ–जाकर खा–पी जाता है फिर वह स्थान जल्दी नहीं भूलता है। कहावत ऐसे ही लोगों के प्रति कही गई है।

अ०– परका हुआ घोड़ा जब देखो तब भुसौले के दरवाज़े पर खड़ा है। इसलिये कि उसे खाने को कुछ न कुछ भूसा मिल जाता है। अतः रोज़–रोज़ आकर यही खड़ा होता है।

'हरका मानै परका न मानै,।'

श०– परका– जो आने–जाने का अभ्यस्त हो। हरका– मना करना।

अ०– मना करने पर कोई आदमी मान जाता है परन्तु जहां जिसके आने की आदत पड़ गई है वह मना करने भी नहीं मान सकता है।

'परी ढोलक प थाप मुये भाग जायंगे।'

कहावत अपने विरोधियों की चुनौती में कही जाती है।

अ०– अब ढोलक पर थाप पड़ी है अर्थात् मुकाबला के लिए पूरी तैयारी हो गई है। अब कोई प्रतिपक्षी नहीं दिखेगा, सब भाग जाएंगे।

'पइसा पास नहीं पतुरिया देखे रोआई आवै।'

श०– पतुरिया– जो नाचनेगाने का काम करती हो, वेश्या।

अ०– पास में पैसा न होने पर पतुरिया को देखकर आंसू आते हैं।

'पैसा दूध, टका गगरी, आग लागै यहि महंग नगरी।'

अ०– कहावत महंगाई के ऊपर कही गई है। एक पैसे का दूध मिलता है व एक टके की गगरी मिलती है। ऐसी महंगी नगरी को आग लगे।

'पर संतापी सदा दुखी, सुखी कबौ न होय।'

श०– परसंतापी– जो दूसरों से जलन करता है। दूसरों से द्वेष की भावना रखता हो।

अ०– जो दूसरों से जलन की आदत बनाये रखता है वह सदैव दुखी रहता है। कभी सुखी नहीं हो पाता है, क्योंकि इतनी बड़ी दुनिया में कोई न कोई अवश्य ही जलने को मिल जाता है।

'पट्टीदार केतनौ सोझ

तबौ हंसिया क नोंक।'

श०– पट्टीदार–भाई–बंधु जो हिस्सा बँटाते हैं।

कहावत पैतृक हिस्सेदारों पर कही जाती है।

अ०– कहा गया है कि हिस्सेदार कितने भी सीधे होंगे फिर भी वे हंसिया की नोंक के जितने टेढ़े और धारदार होंगे। इसलिये हिस्सेदारों को कभी सीधा नहीं समझना चाहिये।

'पनबुड़की बूड़ै बीस हाथ

पनबुड़की क बच्चा तीस हाथ।'

जब बाप से बढ़कर बेटा या मां से बढ़कर बेटी हो जाती है तो कहावत कही जाती है।

अ०– पनबुड़की यदि बीस हाथ पानी के अंदर जाती है तो उसका बच्चा उससे भी ज्यादा गहरे तीस हाथ तक जाता है।

'पइसा न कउड़ी बजार जायं दउड़ी।'

कहावत खाली हाथ वालों के प्रति कही गई है। कहावत 'ए छूंछा तोहका के पूछा' पर कही गई है।

अ०– पास में पैसा न कौड़ी कुछ है नहीं, फिर बाज़ार क्या करने दौड़ी जाती हो?

'पहिले पिये जोगी,

बीच मां पिये भोगी

अंत में पिये रोगी।'

अ०– भोजन के पहिले पानी योगी लोग पीते हैं। भोजन के बीच में भोगी और अंत में रोगी पीते हैं। इसलिए भोजन के पहिले पानी पीना ही लाभकर है।

'पढ़ब लिखब कै ऐसी तैसी।

खोदब घास चराउब भंइसी।।'

अ०– जब कोई बच्चा पढ़ने लिखने से आना–कानी करता है तो कहावत चरितार्थ होती है कि पढ़ने–लिखने की ऐसी–वैसी। क्या करोगे पढ़–लिखकर चलो घास खोदो और भैंस चराओ। घर गृहस्थी का काम करो।

'पहिला छेड़ी, दुहिला गाय,

तिसरे भैंस दुहाबै जाय।'

अ०– पहली बार बच्चा देने वाली बकरी का दूध अधिक होता है। दूसरे बियान में गाय और तीसरी बार जब भैंस को बच्चा होता है तो दूध खूब होता है। इसलिये इन जानवरों को खरीदते समय इस बात का ध्यान अवश्य रखना चाहिए कि कौन सा बियान है?

'पहिले आत्मा तो परमात्मा।'

इस पर एक पंक्ति याद आती है–

'भूखे भजन न होंय गोपाला,

आपन लै लेव कंठी माला।'

अ०– भूखे–पेट कोई काम नहीं हो सकता है। तो पहिले अपनी आत्मा को संतुष्ट करो तब पूजा–पाठ में या किसी काम में मन को लगाओ क्योंकि बिना आत्मशांति के किसी काम में मन नहीं लगेगा।

'पराई थारी मां घिव ज्यादा देखाय परत।'

श०– पराई–दूसरे की।

अ०– दूसरे की वस्तु या दूसरे के सामने की वस्तु अपनी वस्तु से अधिक व अच्छी दिखाई पड़ती है।

'पहिला लड़िका काने का खूंट, दूसरे लड़िका आंचर छूट तिसरे लड़िका भयो लरकोर, लेय दइव कब आहट मोर।'

श०– लरकौर–बच्चेवाली। आहट–खबर, सुधि।

अ०– कहावत आमतौर पर स्त्रियों में बच्चा जनने के ऊपर कही जाती है कि पहिले बच्चे में कम खलता है। जैसे किसी ने कान की गंदगी निकाल ली हो। दूसरे में थोड़ा अधिक कष्ट होता है और तीसरे में उससे भी ज्यादा कष्ट का अनुभव होता है। तात्पर्य यह है कि जैसे–जैसे शरीर की ताकत व जवानी ढलती जाती है वैसे–वैसे बच्चा का होना अधिक कष्टकर होता जाता है।

'पटियइतै क चून बुरा होत।'

श०– पटियइते–पट्टीदार, अलग रहने वाले भाई–बंधु। चून–आटा।

भाई पट्टीदारों के बीच किसी प्रकार की हीनता को प्रकट करना अत्यधिक कष्टकारक होता है। इसी पर कहा है–

अ०– पट्टीदार के यहां का आटा भी मांगकर उधार में आया हो तो वह भी बुरा है। बिना खाये रह जाओ मगर आपसदारी में मांगो मत।

'पहसुल क बिआह, खुरपा क गीत गावै।'

श०– पहसुल–हंसिया की तरह बेंट की वस्तु जिससे कोंहड़ा, कटहल जैसी बड़ी वस्तु काटी जाती है। उलटा काम करने पर या असमय में काम करने पर कहावत कही गई है।

अ०– ब्याह किसका हो रहा है, ब्याह का गीत गाया किसका जा रह है। इतनी बड़ी मूर्खता को क्या कहा जाय?

'पढ़े फारसी बेचै तेल, यह देखो कुदरत का खेल।।'

श०– भाग्य के ऊपर कहावत कही गई है।

अ०– पढ़ाई–लिखाई इतनी करके बैठे हैं और काम क्या मिला है तेल बेचने का, पढ़ना–लिखना बेकार हो गया। जाना था किसी ऊंचे पद पर मगर भाग्य के आगे कोई वश न चला। बहुत से लोग इस कहावत को व्यंग्य में भी कहते हैं।

'पहिला पवन पुरब से आवै
बरसै मेघ अन्न झरि लावै।'

अ०– जब पहिले पहिल पूरब की दिशा से हवा का वेग आता है तो पानी खूब बरसता है और अनाज भी खूब पैदा होता है।

'पर की पीर न जानै चारि
राजा, दुखिया, जाचक, नारि।

श०– पर–दूसरे की। पीर–पीड़ा, दर्द। जाचक–मांगनेवाला।

कहावत चार लोगों के ऊपर कही गई है।

अ०– चार लोग ऐसे होते हैं जो दूसरे की पीड़ा को नहीं समझते हैं। राजा जो अपने राज्य व अभिमान में चूर रहता है। दुखिया जो स्वयं दुखी है। याचक जो मांगनेवाला है, उसे अपनी आवश्यकता है, चाहे जिसके ऊपर जो कुछ भी दुख–सुख हो वह मांगने व पाने के लिये, अपना मतलब निकालने के लिये परेशान है, उससे आपके दुख से क्या मतलब? नारी उसे अपने काम से काम है, उसका काम होना चाहिए।

'परोसी बेना पर क सुखवन नहीं देखि सकते'।

श०– सुखवन–जो वस्तु सूखने के लिये धूप में रखी गई हो।

कहावत पड़ोसियों के ऊपर लागू की गई है।

पास–पड़ोस के आदमी इतने ईर्ष्यालु प्रकृति के होते हैं कि किसी एक पड़ोसी का सुख दूसरा पड़ोसी

नहीं देख सकता है। यानी एक पड़ोसी यदि आराम से है तो यह दूसरे पड़ोसी के लिये जलन, कष्ट, ईर्ष्या का विषय बन जाता है।

'पहिले छावै तीन घरा
सार, भुसौला और बड़हरा।'

श०— सार—पशुओं के बांधने का स्थान। भुसौला—जिसमें भूसा रखा जाता है। बड़हरा—कंडा रखने का स्थान।

कहावत वर्षा के समय की कही गई है। बरसात आने से पहिले सचेत हो जाना चाहिए। जहां गांव हैं वहां बरसात का जीवन बड़ा ही संकटपूर्ण होता है। वहां क्या करना चाहिए बारिश आने के पहले?

अ०— सबसे पहले तीन घरों को छवाने का ध्यान रखना चाहिए। जहां जानवर बांधे जाते हों, जहां जानवरों के खाने का भूसा रखा जाता हो और जहां पर जलाने वाले कंडे रखे जाते हों। ये स्थान ऐसे आवश्यक हैं जिनके खुले रखने पर भींग जाने के बाद कोई भी अक्ल व कारीगरी काम नहीं आती। इसलिये इन तीनों को तुरंत छवा देना चाहिए।

'पछुवा हवा ओसावै जोई
घाघ कहै घुन कबौ न होई'

श०— घुन—अनाज में लगने वाले कीड़े।

अ०— घाघ कवि का कहना है कि जब पछिवा हवा चलने लगे तो उसमें अनाज को ओसाया जाय तो उस हवा में ओसाने के बाद अनाज में घुन कभी नहीं लगते हैं।

'पढ़ब्या लिखब्या होब्या नवाब,
खेलब्या कुदब्या होब्या खराब।'

अ०— अर्थ स्पष्ट है।

'परदेस नरेस, कलेस।'

अ०— दूसरे देश में जाने पर छोटे आदमी की तो बात ही क्या है, बड़े आदमी को भी कष्ट उठाना पड़ता है।

'पछिवा क बादर लबार क आदर न करै क चाही।'

श०— लबार—झूठा, बेईमान।

अ०— पश्चिम दिशा का उठता बादल बरसता नहीं है। उसी प्रकार से झूठ गप्पें हांकने वाला आदमी किसी काम का नहीं होता है। इन दोनों का आदर नहीं करना चाहिए। इनसे कोई लाभ नहीं हो सकता है।

'पहिला पानी नदी उफनाय
तौ जानौ वर्षा रितु आय।'

श०— उफनाय—बढ़जाय।

अ०— जब पहला पानी बरसते ही नदी खूब वढ़ जाय तो जानो कि अब वर्षाऋतु आ गई है।

'पतली पेंडुरी मोटी रान, पूंछ होय भुंइ तरियाय,
जाके होवे ऐसी गोई, वाको तकै और सब कोई।'

श०— पेंडुरी—पैर की गांठों के नीचे का भाग। रान—जांघें। तरियाय—नीचे तक। गोई—बैल की जोड़ी। कहावत बैलों के ऊपर चरितार्थ की गई है।

अ०— जिसके पास पतली पेंडुरी व मोटी जांघवाले बैल हों, जिसकी पूछ ज़मीन को छू रही हो ऐसे बैलों की जोड़ी जिस किसान के पास हो उस किसान की ओर सभी की नज़रें लगी रहती हैं। यह बड़ा भाग्यशाली समझा जाता है।

'पर मुख देखि अपन मुख नोचै, चूड़ी कंकन वेसहिं के टोवै
आँचर टारि के पेट देखावै, अब छिनारि का ढोल बजावै।

श०— पर—दूसरे का। टोवै—पश्चाताप। आंचर—आंचल। छिनारि—दुश्चरित्र नारी। ढोल बजावै—शोर मचाना।

कहावत स्त्री पर कही गई है।

अ०— दूसरे का सुंदर मुख देखकर अपना मुख बुरा लगने पर उसे नोंचने की इच्छा करने वाली, चूड़ी, कंगन आदि श्रृंगार की वस्तुयें लेकर उन पर पश्चाताप करने वाली, अपना पेट दिखाने वाली स्त्री कभी सच्ची नहीं होती है। इतनी बेहयाई के बाद क्या अब वह ढोल पीटे तभी सब जानें।

'पवन थक्यो तीतिर लवै, गुरुहिं सु देवे नेह

कहें भड्डरी जोतिषी ता दिन बरसै मेह।'

श०– मेह–पानी बरसना। गुरुहिं–बृहस्पतिवार।

अ०– जब वायु चलते–चलते रुक जाय, तीतिर जोड़े से सहयोग करें तथा बृहस्पतिवार को पुष्य नक्षत्र हो तो वर्षा का योग होता है।

'पहिले कांकर, पीछे धान

ताको कहिये पूर किसान।'

अ०– जो किसान पहिले कांकर व पीछे धान बोता है वही सच्चा किसान कहलाता है।

'पढ़े से कढ़ा भल।'

अ०– कभी–कभी पढ़े लिखे लोगों से अनपढ़ होशियार लोग कहीं अक्लमंद होते हैं।

'पहिले रहे रेसम फिर भये पेचक

बटत – बटत भये ठर्रा

न छोड़ाये छूटब न तोरे से टूटब।'

श०– रेशम– मुलायम रेशमी धागा। पेचक–मशीन से बरकर पेचक में लपेटते हैं जिससे सिलाई होती है। बरत–बरत बटते–बटते। ठर्रा–जो बटते–बटते खूब मजबूत हो जाता है और तोड़ने से भी नहीं टूटता।

कहावत स्त्रियों के प्रति कही गई है।

अ०– पत्नी अपने पति से कहती है कि पहले जब मैं गौने में आई थी तो रेशमी धागे की तरह थी। कुछ समय के बाद पेचक के धागे की तरह हुई यानी कुछ मजबूत हुई और अब तो मैं ठर्रा धागा बनकर इतनी मजबूत हो गई कि अब तुम हमको तोड़ना या छोड़ने की धमकी देकर भी मुझे न छोड़ सकते हो और न तोड़ सकते हो। अब मैं किसी के मान की नहीं रही।

'पइसा–पइसा क खींचत।'

अ०– जहां पैसा लगाओगे वहीं पैसा पाओगे। पूँजी लगाने के बाद पूँजी आती है।

'पउला पहिरि के हर जोतै, औ सुथना पहिरि निरावै।

कहै घाघ ये तीनिउ भकुआ, सिर बोझा औ गावै।।'

कहावत घाघ कवि की जो मूर्ख लोगों के ऊपर कही गई है।

श०– पउला–खड़ाऊँ का दूसरा रूप है जिसमें खूंटी की जगह सुतली का फीता लगा रहता है। सुथना – पैजामा। भकुआ–बुद्धू।

अ०– घाघ कवि का कहना है कि जो किसान पउला पहनकर जोते, जो सुथना पहन कर खेत में काम करे, तथा जो सिर पर बोझ लिए गीत गाये ये तीनों मूर्ख होते हैं।

'पतुरिया रूठी धरम बचा।'

कोई भी खराब, दुष्ट आदमी, व्यभिचारिणी नारी यदि नाराज़ रहे तो बड़ा अच्छा होता है।

अ०– अच्छा ही हुआ कि वेश्या नाराज़ हो भई। कम से कम धर्म तो बच गया, इज्ज़त तो बच गई।

'परकी गाइ गोलइँदा खाय।

बार–बार महुआ तर जाय।।'

जहां भी आदमी या पशु खाने–पीने की सुविधा पाता है वह वहीं बार–बार जाता है।

अ०– परची गाय महुवे का पका फल खाने के बाद बार–बार महुए के पेड़ के नीचे जाती है क्योंकि वह उस स्वाद से परिचित है।

'पर उपदेस कुसल बहुतेरे

जे आचरहि ते नर न घनेरे।'

उपरोक्त पंक्ति गोस्वामी तुलसीदास जी की है जो लोगों को सीख देने के लिये कहावत के रूप में बहुधा सामने आती है।

अ०– दूसरे को ज्ञान देनेवाले तो बहुतेरे लोग होते हैं किन्तु वे उपदेश पर स्वयं आचरण नहीं कर पाते। अपनी बार सारा ज्ञान रखा रह जाता है।

'परधन जोगवे मूरख चंद।'

दूसरे का धन जो सहेजने का जिम्मा ले लेते हैं वे मूर्ख हैं।

'पर मरी सास असौं आई आँस।'

श०– पर–परसाल, सालभर पहले। असौं–इस वर्ष।

जब कोई आदमी समय पर तो अफ़सोस न करे और समय निकल जाने पर दुःख मनाये या उसका रोना लेकर बैठ जाय तो कहावत कहते हैं।

अ०– सास तो मरी साल भर पहले और रोने बैठी है आज। मरने के समय व सालभर तक तो अफसोस ही न था अब इस वर्ष रोने की सूझी है। झूठा दिखावा करना।

'परहथ बनिज, संदेसन खेती, बिन बर देखे ब्याहै बेटी।
द्वार पराये गाड़ै थाती, चारिउ मिलि ये पीटै छाती।।'

श०– परहथ–दूसरे के हाथ। वर–विवाह के लिये लड़का। भाती–थाती–धन, सम्पत्ति। बनिज–व्यापार।

अ०– कहावत लोगों के ऊपर कही गई है। दूसरे के हाथ व्यापार कराना, संदेश के द्वारा खेती करना, दूसरे के घर में अपनी संपत्ति गाड़ना या छिपाना तथा बिना लड़के को देखे हुए कन्या का विवाह करने वाले ये चारों लोग बाद में पश्चाताप करते हैं।

'पराई पतरी क बरा बहुत मीठ होत।'

अ०– दूसरे की वस्तु अधिक अच्छी लगती है।

'पराधीन सपनेहु सुख नाहीं।'

पंक्ति तुलसीदास जी की है।

अ०– परतंत्र रहकर कभी कोई सुख नहीं पा सकता है।

'पराये करेजे डंडा करै
जाना भूसा मां गा।'

अ०– दूसरे के दुख–दर्द को न समझने पर कहावत कही गई है कि दूसरे को दंडित करते समय इतनी निर्दयता का व्यवहार करे कि मानों आदमी नहीं किसी निर्जीव वस्तु को प्रताड़ित किया जा रहा हो। मानो डंडा किसी के पेट में नहीं किसी भूसे के अंदर डाला जा रहा है।

'पहिले गड़ही मं मुंह धोय आओ।'

श०– गड़ही–जहां गड्ढे में गंदा पानी इकट्ठा हो।

अ०– किसी व्यक्ति को लज्जित करने के लिए कहते हैं जाओ गड़ही में मुंह धोलो तो बात करो।

'पराये पीर क मलीदा
घर के देव को धतूरा।'

अ०– मलीदा मुसलमानों के यहां बनता है आटे में घी का मोयन डालकर।

दूसरों के देवता का अधिक सम्मान और अपने देवता का अपमान करना। अपने घरवालों से अधिक आदर दूसरे लोगों को देना अथवा अपने घरवालों की परवाह न करना।

'पहिले जागै पहिले सोवै
जो वह सोचे वो ही होवै।।'

कहावत स्वास्थ्य संबंधी है।

जो आदमी पहिले यानी जल्दी सो जाता है और जल्दी सुबह उठ जाता है उसका सारा काम उसकी इच्छानुसार होता है। उसका हर काम नित्य नियमानुसार होना स्वाभाविक भी है।

'पलकी क सगवा सोहाग मोर लउटा
मोर पिय हांकै मोरे माछी।'

इस कहावत में एक छोटी सी कथा है।

'किसी नारी का पति उसे तनिक भी न मानता था। एक दिन वह बैठी पालकी का साग समेट रही थी। चूंकि साग के ऊपर तमाम मक्खियां बैठी थीं तो पति से न रहा गया। उसने साग पर की मक्खी उड़ा दी। अब क्या बात थी, पत्नी को लगा कि आज तो

मेरे पति ने मेरे ऊपर से मक्खी उड़ाई है तो वह निहाल होकर उपरोक्त पंक्तियां कह बैठी।

अ०– पालकी का साग क्या हुआ कि मेरा तो जैसे सुहाग ही लौट आया हो। मेरे पति मेरे ऊपर की मक्खी उड़ा रहे हैं।

'पइसा–पइसा जोरि के निधन होय धनवान।
अच्छर–अच्छर के पढ़े मूरख होय सुजान।।'

श०– निधन–निर्धन, गरीब। मूरख–मूर्ख। सुजान–समझदार।

कहावत लगन व प्रयास के ऊपर कही गई है।

अ०– एक–एक पैसा बटोरकर ग़रीब भी पैसेवाला हो सकता है और थोड़ा–थोड़ा पढ़ते रहने पर मूर्ख भी समझदार हो सकता है।

'पछिवा चले खेती पले।'

खेती के लिये पछिवा हवा बहुत लाभप्रद होती है।

'पठान क पूत घड़ी मां औलिया, घड़ी मं भूत।'

अ०– जिसका विचार जरा–जरा सी देर में बदलता रहे उसके लिये कहा गया है कि पठान का बेटा कभी एक बात नहीं कहता। कभी मुसलमानों का संत बन ज़ाता है तो कभी भूत बन जाता है। विचारों का दृढ़ न होना।

'पड़ोसी के पानी बरसे छीटा अपने पर भी परी।'

कहावत पड़ोसियों के प्रति कही गई है। अच्छाई–बुराई का असर पड़ोसियों के ऊपर सबसे पहले पड़ता है।

अ०– जब आसपास में पानी बरसेगा तो पानी अधिक न सही किन्तु बौछार तो पड़ोसी के यहां तक अवश्य ही जायेगी।

'परवा गमन न कीजिये, जो सोने का होय।'

श०– परवा–परीवा, प्रथम तिथि। एक माह में दो बार पड़ती है उजाले व अंधेरे दोनों का प्रथम दिन। गमन–यात्रा।

कहावत यात्रा के शकुन विचार पर कही गई है।

अ०– परीवा तिथि को कभी यात्रा नहीं करनी चाहिए, चाहे सोना ही क्यों न बरसता हो। कितना ही लाभ क्यों न हो। ज्योतिषियों के अनुसार परीवा तिथि को यात्रा अशुभ है।

'पर की खेती पर की गाय
वह पापी जो मारन जाय।'

अ०– दूसरे की खेती का नुकसान हो या दूसरे की गाय जो मारे वह पापी है।

क्या मतलब है दूसरे के पीछे परेशान होने से।

'पर क कुंआ खोदै, अपुयै डूबि–डूबि मरै।'

अ०– जो दूसरों का बुरा चाहता है वह खुद ही बुरा फल पाता है।

'घर–घर नाचै तीन जन
कायथ, बैद, दलाल।'

अ०– दूसरों के घर जा–जाकर तीन लोग हैं जो घूमते रहते हैं, कायस्थ, यानी लाला, वैद्य जो दवा–दारू करते हैं और तीसरे दलाल जो सौदा देने, दिलाने में बीच में पड़ते हैं, क्योंकि उनकी रोज़ी ही यही होती है।

'परदे की बीबी चटाई का लहंगा'।

इज्ज़त के अनुसार पहनावा न होने पर कहावत कही जाती है।

अ०– परदा तो बीबी जान का इतना है और पहने हैं चटाई का लहंगा।

'पराई थैली का मुंह संकरा।'

श०– पराई–दूसरे। संकरा–छोटा।

अ०– दूसरे की जेब से पैसा बड़ी मुश्किल से निकलता है तो कहावत चरितार्थ होती है।

'पहिलेन चुम्मा गाल काटा।'

जब कोई आदमी किसी नये आदमी को कोई काम सौंपे और वह काम खराब कर दे तो कहावत कही जाती है।

अ०– पहली बार चूमते ही गाल काट लिया। हानि होना।

'पहिले पहरे सब कोई जागे, दूसरे पहरे भोगी।
तिसरे पहरे चोर जागें, चौथे पहरे जोगी।।'

कहावत सोने के समय पर कही गई है कि कौन किस समय जागता है?

अ०– पहले प्रहर में सभी जागते रहते हैं। दूसरे प्रहर में भोगी, विलासी जगते हैं। तीसरे प्रहर चोर लोग जागते हैं और चौथे प्रहर योगी लोग जागते हैं, जो भोर में चार बजे उठकर नित्य के कार्यक्रम में लग जाते हैं।

'पहिले पीये भकुवा, फिर पीवै तमखुवा पीछे पीवे चिलमचट्ट।'

कहावत तम्बाकू पीने वालों के ऊपर कही गई है।

अ०– पहले चिलम चढ़ाते समय पीनेवाले भकुवा अर्थात् मूर्ख होता है, दूसरी बार जो सही तम्बाकू के ताव को जानता है वह पीता है। अंत में तो जब केवल राख बचती है तो वह चिलमचट्ट संतोष के लिये भले पिये मगर उसमें कोई स्वाद नहीं होता है।

'पक्का होना चाह तो पक्के के संग खेल।,
कच्ची सरसों पेर के ख़री होय ना तेल।।'

कहावत उस समय कही जाती है जब किसी को शिक्षा दी जाती है।

अ०– यदि योग्य बनना है तो ज्ञानी, सज्जन, सत्पुरुष का साथ पकड़ो जिससे जीवन में अच्छे कार्य सीख सको। उसी प्रकार से जैसे पकी सरसों को पेरने से तो तेल मिलता है मगर कच्ची सरसों को पेर ही नहीं सकते न उसमें तेल होगा न खली।

'पर उपकारी धरमधारी'।

कहावत परोपकार के संबंध में कही गई है।

अ०– जो दूसरों की भलाई करता है उससे बढ़कर धर्मात्मा दुनिया में कोई नहीं है।

'परजा क मरन, राजा क हंसी।'

कहावत उस समय लागू होती है जब निर्बल मनुष्य पीड़ित हो और सबल उसकी हंसी उड़ाये।

अ०– प्रजा तो मौत के मुंह में हो और राजा को हंसी सूझे।

'पहिला पानी भरिगा ताल, घाघ कहै अब परिगा अकाल।'

घाघ की कहावत है।

अ०– जब वर्षा के पहले पानी के बरसने पर ही ताल भर जाय तो समझो कि अब अनाज की फसल कुछ भी न होगी, अकाल पड़ जायेगा।

'पहिर ओढ़ि लेव सुंदर लगबू, छोरि लेब छछुंदर लगबू।'

किसी की मंगनी की वस्तु जब कोई पहनता है, कहावत उस समय कही जाती है।

अ०– पहिर–ओढ़ के सुंदर लगोगी मगर जब हम अपनी चीज़ तुमसे ले लेगें तो ऐसी लगोगी जैसे छछूंदर। मंगनी की वस्तु कभी भी लेकर पहनना नहीं चाहिए।

'पतोह मरै भागवाने के, दमाद मरै अभागे के।'

कहावत लोकाचार के ऊपर कही गई है कि यदि बहू मर जाती है तो हमारे समाज में पुरुष का दूसरा विवाह रचाया जाता है मगर दामाद के मरने पर लड़की को वैधव्य जीवन व्यतीत करना होता है जो हमारे समाज के लिये अभिशाप है। कहावत इसी पर कही गई है।

अ०– बहू भाग्यवान की मरती है और दामाद अभागे का मरता है।

'पहिले अपनी दाढ़ी की आग बुताई जाति।'

अ०– पहले अपना काम निबटाया जाता है।

'पढ़े में अनपढ़ जस हंसन मं कउवा।'

अ०– स्पष्ट है।

'पतिबरतन क कपड़ा नाहीं, बेसवा ओढ़ै थान।'

श०– पतिबरतन–पतिव्रता स्त्री। बेसवा–वेश्या, पतुरिया।

अ०– जो पतिपरायणा है उनके लिये तो पहनने को कपड़ा तक नहीं है और वेश्या को कपड़े का थान मिले।

'पर की आसा नित उपवासा।'

अ०– दूसरे की आशा में रहने पर अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। चाहे तो वह खिलाये नहीं भूखा ही रख दे।

'पर घर कूदें मूसरचंद।'

अ०– जो बिना बुलाये किसी के घर जाता है उसके लिये कहावत चरितार्थ की गई है। दूसरे के घर बिना बुलाये, मूर्ख जाते या बिना राय मांगे व मूर्ख राय देते हैं।

'पहिले सोच विचार पीछे कीजै कार।'

अ०– बिना सोचे–समझे कोई काम नहीं करना चाहिए। बुद्धिमानों की यही शिक्षा है। कहा है– 'बिना विचारे जो करे सो पाछे पछिताय।'

'पहिले घर मं दिया जलाओ फिर मंदिर में।'

अ०– पहले घर की दशा में सुधार हो तब बाहर की दशा पर ध्यान देना चाहिए।

'पलिहरे क बानर अहै।'

श०– पलिहर– जो खेत बिना–जोते बोये पड़ा रह जाता हो।

कहावत उस व्यक्ति के प्रति उद्धृत की जाती है जो दिन भर भूखा–प्यासा इधर से उधर घूमता–फिरता रहता हो।

अ०– जैसे बिना बोये खेत में जब बन्दरों को कुछ खाने को नहीं मिलता तो वे भूख के मारे कभी इधर कभी उधर दौड़ते रहते हैं वैसे ही कभी–कभी आदमी की दशा भी हो जाती है।

'परिगा राम कुकुर से पाला।'

जब किसी भले आदमी का किसी नीच आदमी का साथ पड़ जाता है तो कहावत स्पष्ट की जाती है।

अ०– स्पष्ट है।

'पहिलेन मियां बाव़ले ऊपर से पिये भांग।'

अ०– मियां पहले से ही सनकी थे ऊपर से भंग चढ़ा लिया।

'पा'

'पानी पियै छान के, बात कहै जान के।'

कहावत स्वास्थ्य व व्यवहार के प्रति कही गई है।

अ०– पानी हमेशा छानकर पीना चाहिए क्योंकि स्वास्थ्य के लिये लाभकर होता है। उसी प्रकार से बात जो मुंह से निकालो उसे बहुत सोच–समझकर निकालो। किसी विद्वान का कहना है कि 'मुंह की निकली बात और हाथ का निकला तीर वापस नहीं आता।'

'पाहन में क्या मारिये, चोखा तीर नसाय।'

श०– पाहन–पत्थर। चोखा–तेज। नसाय–बेकार होना।

कहावत ऐसे व्यक्ति या ऐसे कार्य के प्रति कही गई है जिसको करने से कोई फायदा न हो, मात खाना पड़े या जिससे विनती करने से कोई फायदा न हो पाये।

अ०– पत्थर में तीर क्या मारना, इससे तो तीक्ष्ण तीर नष्ट हो जाता है। किसी ने लिखा है–

लिखा परदेस किस्मत में, वतन को याद क्या करना,

जहां बेदर्द हाकिम हो, वहां फरियाद क्या करना?

'पाप परोसिव का खात।'

अ०– किये गये पाप की आग में वह आदमी तो जलेगा ही उसी के साथ–साथ आस–पास के पड़ोसी पर भी आंच आये बिना नहीं रह सकती। पड़ोसी की क्षति भी हुये बिना नहीं रह सकती है।

'पातर कोखा सरबस सोखा।'

श०– कोखा–पेट। सरबस–ढेरसारा। सोखा–पचाना।

कहावत उस समय कही जाती है जब किसी बेहद दुबले–पतले आदमी की भोजन में पूरी खुराक हो और वह सब खाकर पचा जाय।

अ०– पतला पेट सब कुछ भी सोख लेता है। खा जाता है भरपूर खाना किन्तु शरीर देखो तो कमजोर है।

'पानी जस का तस कुनबा बूड़ा कस?'

श०– कुनबा–वंश, परिवार। बूड़ा–डूबना।

जब कोई स्थिति ज्यों की त्यों होने के बाद अचानक कोई परिवर्तन आता है तो कहावत कही जाती है।

अ०– स्थिति ज्यों की त्यों रही किन्तु वंश का नाश कैसे हुआ? परिवार रूपी नाव को खेने के लिये परिवार के मुखिया को बहुत सतर्क रहना पड़ता है।

'पावक, बैरी, रोग, रिस

इन्हें न बाढ़य देय।'

कहावत सिद्धांतवादी है। ,

अ०– आग, दुश्मनी, बीमारी और क्रोध को कभी बढ़ने नहीं देना चाहिए।

'पानी बरसे आधे पूस।'

आधा दाना, आधा भूस।'

अ०– जब पानी आधा पूस माह में बरसता है तो अनाज में लाभ की संभावना नहीं होती है। फिर आधा अन्न व आधा भूसा होता है।

'पाही जोत के जो घर जाय,

वहि गिरहस्त भवानी खाय।'

कहावत किसान की लापरवाही पर कही गई है।

श०– पाही–दूसरे गांव में।

अ०– जो किसान पाही अर्थात् दूसरे गांव में खेती करे ऊपर से अपने घर भी चला जाय भला क्या खेती संभाल पायेगा?

'पाल–पाल होबै तोर काल।'

श०– पाल–पाल– पालन –पोषण करो। काल–मौत, दुश्मन।

जब कोई एहसान फरामोश आदमी उपकारी व्यक्ति का एहसास न माने, तो कहते हैं।

अ०– पाला–पोसा सेवा किया क्या इसीलिये कि मेरे जीवन का काल बन जावे?' मेरे लिये ऐसी समस्या खड़ी कर दी कि मरने की नौबत आ गयी?

'पानी क हगा उतिराये बिना नाहीं रहत।'

अ०– जब कोई आदमी छुपाकर गलत काम करेगा तो उसके उजागिर होने पर कहते हैं कि पानी में यदि कोई टट्टी करता है तो वह निश्चय ही पानी के ऊपर तैरेगा। उसी प्रकार से कोई चाहे कि पाप करे और पता न लगे, असंभव है।

'पानी पिये छान के गुरु करै जान के।'

अ०– पानी छानकर पीना चाहिए जिससे कि स्वास्थ्य ठीक रहे और ज्ञान पाने के लिये विद्वान गुरु की शिक्षा लेनी चाहिए। वैसे ही अज्ञानी पुरुष को गुरु बनाने से अज्ञानता नहीं जाती, बुद्धि भ्रष्ट होती है।

'पावस घन चातक चहे

चहत स्वाति घन बूंद।'

श०– पावस–वर्षा ऋतु। घन–बादल। चातक–पपीहरा। स्वाति–स्वाती नक्षत्र का पानी।

कहावत जीवन की आवश्यकता क्या है, उस पर कही गई है।

अ०— पपीहा वर्षाकाल के मेघ को इसलिये चाहता हैं कि उसे स्वाती नक्षत्र का पानी मिलेगा, जिसकी एक बूंद को पा जाने के बाद उसकी साल भर की प्यास बुझ जाती है। इसलिये वह वर्षाकाल के समय ऊप्पर की ओर मुंह ताकता रहता है कि कब बूंद मुंह में पड़े और कब प्यास बुझे?

'पानी पी के जात नाहीं पूछी जात।'

कोई काम करने के बाद विचार करना बेकार होता है। पहले सोचना फिर काम करना अक्लमंदी है। किन्तु बाद में किसी बात का पता लगने से सिवाय पश्चाताप के कुछ हाथ नहीं लगता'।

'पानी क पइसा पानी मां जात।'

अ०— जो हराम की कमाई होती है, जो बिना परिश्रम के धन आता है उसको व्यर्थ में ही खर्च करना पड़ जाता है। गलत काम का परिणाम भी गलत साबित होता है।

'पाप क धन प्रायश्चित मं जात।'

अ०— पाप के द्वारा कमाया धन लोग पूजा—पाठ, दान के आडंबर में खर्च करके पाप से मुक्त होना चाहते हैं। इससे भला कि थोड़ा ही कमाव, थोड़ा ही खाव, व्यर्थ की कमाई के पीछे क्यों भागते हो?

'पापी क मन शंका मां।'

पाप करने वाले मनुष्य का हृदय हमेशा चिन्ता में रहता है क्योंकि पापी भी जानता है कि यह गलत काम की कमाई है।

'पाप ऊंचे चढ़ि के चिल्लात।'

अ०— पापी का पाप स्वयं ही प्रकट हो जाता है। उसके कहने—सुनने की आवश्यकता नहीं होती।

'पानी मां पाथर नहीं सड़तै।'

कहावत किसी ज्ञानी समझदार व्यक्ति के प्रति कही गई है।

अ०— विद्या या धन किसी निपुण, सज्जन, गुणी व्यक्ति के पास होने पर सुरक्षित रहता है। जैसे पानी में पत्थर न सड़ता है न गलता है।

'पाप का घड़ा भरेन पै डूबत।'

अ०— घड़ा जब तक खाली रहता है तब तक वह डूबता नहीं है और जब भर जाता है तभी डूबता है। पाप बोझिल होने पर ही पापी को ले डूबता है।

'पान और ईमान फेरेन अच्छा रहत।'

अ०— कहावत है पान और ईमान को बार—बार हाथ लगाते रहकर संभालते रहना पड़ता है, तब जाकर स्वस्थ रूप आता है।

'पान पुराना घृत नया, औ. कुलवंती नारि।
यह तीनों तब पाइये, जब प्रसन्न मुरारि।'

अ०— पुराना पान, नया घी और सच्चरित्र पत्नी तभी मिलती है जब ईश्वर प्रसन्न हों।

'पात कसौदी विष हरै जड़ से सांप डराय।
फल से बाघ डरात है, फूल रतौंधी जाय।'

कहावत कसौदी नामक वृक्ष के लाभ के प्रति चरितार्थ की गई है।

अ०— कसौदी का पत्ता विष खींचता है। जड़ से सांप डरता है, फल से बाघ डरता है और फूल से रतौंधी रोग यानी जिन्हें रात को दिखाई नहीं देता उन्हें लाभ करता है।

'पानी मथे से घिव नाहीं निकरत।'

जब कोई आदमी व्यर्थ का काम करता है तो कहा जाता है।

अ०— पानी को मथने पर भी घी कदापि नहीं निकल सकता है।

'पाप अपुये मूड़े चढ़ि के बोलत।'

अ०— पापी का पाप अपने आप ही कभी न कभी सिर चढ़ कर बोलता है जिसका परिणाम उसे स्वयं भुगतना पड़ता है।

'पापी क माल अकारथ जाय।'

अ०— कहावत पापियों के प्रति कही गई है कि पाप का पैसा हमेशा बेकार जाता है।

'पापी के मन मं पाप बसत।'

अ०— स्पष्ट है।

'पार उतरीं तो बकरा चढ़ाईं।'

कहावत गर्ज पर और, गर्ज निकलने पर कुछ और, पर कही जाती है।

कहावत उस समय के लिये है जब कोई आदमी संकट में पड़ा होता है तो देवी—देवताओं की मनौती मानता है कि यह काम होने पर बकरे की बलि दूंगा।

'पारवाले कहें धारवाले अच्छे, धारवाले कहें पारवाले अच्छे।'

जब मनुष्य को मन में संतोष नहीं होता तो ऐसी ही बातें कही जाती हैं।

अ०— नदी के पार वाले समझते हैं कि धार के बीच वाले सुखी हैं और धारवाले सोचते हैं कि नदी पारवाले ही ज्यादा सुखी हैं।

'पास क कुत्ता न दूर क भाई।'

अ०— अपने पास का आदमी बड़े काम का होता है। कहने का मतलब पड़ोसी खराब भी अच्छाँ होता है। दूर के सगे संबंधी भी समय पर देर से पहुंचते हैं।

'पि'

'पितरी की नथुनी प इतना गुमान,
सोने के होते तो चलतीं उतान।'

श०— नथुनी—स्त्रियों का नाक में पहनने का जेवर। गुमान—घमंड। चलतीं उतान— ऊंची होकर ऊपर को तनकर घमंड के साथ चलना।

कहावत रहन—सहन को लेकर घमंड की भावना पर कही गई है।

अ०— जब पीतल की नथिया पहनकर इतना गरूर है तो सोने की होती तो न जाने क्या होता?

'पियासा कुआं के लगे जात,
कुआं नहीं पियासे के लगे आवत।'

अ०— गर्जमंद ही अपनी गर्ज लेकर में दूसरे के पास जाता है। जिसको कोई गर्ज नहीं वह क्यों किसी के पास जायेगा? वैसे ही जैसे प्यासा कुयें की तलाश में रहता है न कि कुआं प्यासे को ढूंढ़ता है कि पानी पिला दूं कहां हो तुम?

'पिसनहरी के पूत क चबैना लाभ।'

श०— पिसनहरी—जांत चलाने वाली। चबैना—भुना दाना।

अ०— जो जात में अनाज पीसने वाली ग़रीब हो उसके बच्चे को यदि चबैना ही मिल जाय तो बहुत है। यानी ग़रीब आदमी को कुछ भी मिले खाने को वह उससे ही संतुष्ट हो जाता है।

'पिय जेहि मानै, वही सुहागिन।'

अ०— सुहाग पति से होता है। कहने का मतलब है कि जिस स्त्री को उसका पति सम्मान देता है वही सुहागन कहलाने लायक है।

'पी'

'पीसे के मकरा गावे के सीता हरन।'

पुराने जमाने में गांवों में स्त्रियां अनाज घर की चक्की में ही पीसा करती थीं। आमतौर पर जांता पीसते समय वे दुखद ही गाना गाया करती थीं। कहते हैं जांत पीसते समय गाना गाने में थकावट अधिक नहीं लगती है। अतः भले ही वे मोटा अनाज क्यों न पीसतीं हों गाना दुखद होता था। कहावत उसी पर कही गई है।

अ०— पीस तो रही हैं मकरा जैसा मोटा अनाज और गा रही हैं सीता हरन जैसा गीत।

'पीठ पीछे मनई, राजे के गरियावत।'

अ०— कोई कितना ही बड़ा आदमी क्यों न हो आदमी पीठ पीछे उसे भी गाली दे देता है। बड़ा आदमी वह अपने घर व राज्य का भले ही हो यदि ग़लत काम करता हैं तो सामने से हटते ही उसे भी गाली देकर लोग अपना आक्रोश प्रकट करते हैं।

'पीपर पात सरिस मन डोला।'

श०— पीपर—एक पेड़। पात—पत्ता। सरिस—तरह। डोला—चलायमान होना, हिलना।

चंचल मन की स्थिति के प्रति कहावत है।

अ०— जैसे पीपल का पत्ता हवा में डोलता है वैसे ही मन की गति हो रही है।

'पीपर पात खराखर डोलै
धकरै कै बिटिया अंकरै के बोलै।'

श०— खराखर—हरहरा कर। धकरै—धाकर या बारह बिस्वा से कम के ब्राह्मण। अंकरै—कुलीन, उच्चवर्ग की जाति। जब कोई कुल की हीन व दहेज धन की हीन कन्या ससुराल आकर लंबी चौड़ी बातें करती है तो कहावत कही जाती है।

अ०— धाकर कन्या को देखो कुलीन घर में आकर कैसी—कैसी बाते छांट रही है? कैसी बोली बोल रही हैं?

'प्रीति करी थी नीच से, पल्ले लागी कीच।
सीस काट आगे धरा, अंत नीच का नीच।।'

अ०— नीच से सम्पर्क न रखना ही अच्छा है। कितना भी नीच के साथ भलाई करो किन्तु बुराई ही हाथ आती है। रहीम के शब्दों में—

'रहिमन नीचन संग बसि लगत कलंक न काहि।
दूध कलारी हाथ में मद समुझहि सब वाहि।।'

कवि वृंद ने बहुत बढ़िया लिखा है—

'कुछ कहि नीच न छोड़िये भलो न वाको संग।
पत्थर डाले कीच में, उछरि बिगारै अंग।।'

'प्रीति तो ऐसी कीजिये, जैसे रुई कपास
जीते जी तो संग रहै, मुए पै होवै साथ'

अ०— कहावत शिक्षाप्रद है। प्रेम ऐसा करना चाहिए जैसे कपास की रूई जो जीते जी भी साथ देकर अंग ढाकती है और मरने पर कफ़न के रूप में अंतिम समय में भी साथ देती है।

'पीपल काटे पाल बिनासे, भगवा भेस सतावे।
काया गढ़ी में दया न ब्यापै, जरा मूर से जावै।'

श०— पाल—मेढ़। बिनासे—नाश करना। भगवा—साधु।

अ०— जो पीपल का पेड़ काटता है, मेढ़ या बांध काटता है, जो साधुओं को सताता है और जिसके मन में दया नहीं है उसका सर्वनाश हो जाता है।

'पीपल पूजन मैं चली, निगम बोध के घाट
पीपर पूजत पी मिले, एक पंथ दो काज।'

अ०— जब एक काम में कई कार्यों की सफलता मिलती है तो कहावत का उपयोग किया जाता है। पीपल के पेड़ की पूजा करने चली और पूजा करते—करते पति की प्राप्ति भी हो गई।

'पीर क न सहीद क पहिले नकटे देव क।'

जब कोई विशेष वस्तु किसी अयोग्य व्यक्ति को दी जाती है तो कहावत चरितार्थ होती है।

'पुरुष साठा तो पाठा, स्त्री तीसी तो खीसी।'

श०— साठा—साठ साल। पाठा—युवा, जवान। तीसी—तीस साल। खीसी—खीस निकलना, स्वास्थ्य गिरना।

कहावत स्त्री—पुरुष की उम्र के प्रति कही गई है।

अ०— आदमी के इतनी ताक़त होती है कि वह साठ वर्ष का होने पर भी जवान लगता है और स्त्री तीस साल की होते—होते बुढ़िया लगने लगती है।

पुरुब से आई चटनी, पच्छिव से आई चट्ट,
बीचे मां जो मिलि गई, तो होय झटापट्ट।।'

पहले का ज़माना था जब सम्मिलित परिवार के लोग एक साथ रहते थे। चारों दिशाओं से बहुयें आती थीं। परिवार में तो सबका अपना–अपना रहने का ढंग होता था तो उसी पर कहावत चरितार्थ की जाती थी।

श०– चटनी–चटोरी। चट्ट–झट खा जाने वाली। झटापट्ट–झगड़ा, लड़ाई।

अ०– पूरब दिशा से चटोरी बहू आ गई, पच्छिम से जल्द भोजन करने वाली आई। वे दोनों जब आपस में मिल गईं तो झगड़े शुरू हो गये।

'पुन्न नहवावै पाप डरवावै।'

जाड़े के दिनों में लोगों की नहाने की हिम्मत कम ही पड़ती है। कहावत है–

अ०– जिसका पुण्य उदय रहता है वह तो स्नान कर लेता है, किन्तु पापी आदमी नहाने की हिम्मत कम ही कर पाता है, कभी–कभी दो–दो तीन–तीन दिन तक नहाता ही नहीं है।

'पुरवा जो पुरवाई पावै, झूरी नदिया नाव चलावै।'

जब पूर्वा नक्षत्र में पुरवा हवा चलने लगती है तो वर्षा जोरों से होती है। यहां तक कि यदि नदी सूखी है तो पानी इतना बरसता है कि उसमें नाव चल सकती है।

'पुरवा क बहब, रांड़ का रोउब एक्के आय।'

पुरवा हवा बड़े वेग के साथ बहती है।

अ०– जिस प्रकार से पुरवाई ज़ोर से चलती है उसी प्रकार से विधवा नारी से इतनी दर्दनाक रुलाई सुमाई पड़ती है जो वातावरण को झकझोर कर रख देती है।

'पूत मांगन गये, भतार गंवाय आये।'

जब हानि पर हानि होती ही चली जाती है तो कहावत चरितार्थ की जाती है।

अ०– कोई स्त्री पुत्र मांगने गई तो पुत्र तो न मिला, पति से भी हाथ धोना पड़ गया।

'सोम शनीचर पुरुब न चालू, मंगर बुध उत्तर दिसि कालू।
बीफै का जो दक्खिन जाय, बड़ी भाग जो घर का आय।।

उपरोक्त कहावत भी यात्रा संबंधी ही है, जिसमें समयानुकूल यात्रा का महत्व बताया गया है।

अ०– पूर्व दिशा को गोधूली में, पश्चिम दिशा को सुबह, उत्तर को दोपहर और दक्खिन दिशा को रात में यदि प्रस्थान किया जाये तो भद्रा या दिशाशूल का भेद समाप्त हो जाता है। ऐसा कवि या ज्योतिषी भड्डरी का कहना है।

'पुरवा मां जनि बोया भइया,
एक धान मां सोरा पइय्या।'

कहावत खेत में धान बोने के प्रति कही जाती है।

अ०– पुरवा नक्षत्र में धान कभी मत बोना, उससे धान के बजाय भूसा ही भूसा होगा।

'पुष्य पुनर्वस बोवै धान
असलेखा जोन्हरी परमान।'

अ०– पुष्य और पुनर्वस नक्षत्रों में धान बोना चाहिए और अश्लेखा नक्षत्र में जोन्हरी (ज्वार) बोना चाहिए, ऐसा कहा गया है।

'पुरुष सिंह जो उद्यमी, लक्ष्मी ताकी चेरि।'

श०– उद्यमी–काम धंधे को करने वाले व अधिक परिश्रम करने वाले। लक्ष्मी–धन, सम्पदा। चेरि–दासी।

कहावत पुरुषों के पुरुषार्थ पर कही गई है।

अ०– पुरुषों में अधिक मेहनत करने की क्षमता है तो फिर उन्हें सम्पदा की कहां कमी है? उनके पास हर प्रकार का सुख रहता है।

'पुन्न की जड़ सदा हरी।'

अ०– कहावत पुण्य के प्रति कही गई है कि पुण्य करने वाले का सदा भला होता है।

'पुरुष की माया, बिरिछ की छाया।'

कहावत पुरुषों की क्षणिक बुद्धि पर कही गई है। वह कब किस क्षण क्या कर बैठे कहा नहीं जा सकता।

'पुरवा के बहे से चोट पिराय।'

अ०— पुरवा हवा के बहने से चोट दर्द करती है।

'पुल बंधावै सास जाय, पतोह खेले कजरिया धाय।'

श०— पुल बंधावै—किसी मज़दूरी के काम करना, नदी के ऊपर का रास्ता जो बनता है उसे पुल कहंते हैं। धाय—दौड़—दौड़कर।

इस कहावत से स्पष्ट है कि सास तो रातदिन काम में लगी हो और बहू घर की ज़िम्मेदारी से मुक्त होकर आनंदयमय जीवन व्यतीत करती है।

'पू'

'पूत आंधर पतोह काजय देय।'

अ०— पुत्र तो अंधा है मगर बहू काजल लगाकर बैठी है। जैसे किसी बात का ग़म ही न हो।

'पूत कपूत तो क्यों धन संचय
पूत सपूत तो क्यों धन संचय?'

श०— कपूत—नालायक। सपूत—लायक। संचय—इकट्ठा करना।

कहावत पुत्र की लायकी—नालायकी के प्रति कही गई है।

अ०— यदि बेटा नालायक है तो उसके लिये धन इकट्ठा करने की आवश्यकता ही क्या है? वह सारा धन बुरे कार्यों में लगा सकता है। इस प्रकार से योग्य लड़के के लिये धन इकट्ठा करने से क्या लाभ?

'पूत के पांव पालने में।'

बच्चा जब पैदा होता है तो उसके होनहार व प्रतिभावान होने का लक्षण कुछ—कुछ तो अवश्य ही मिल जाता है। उसकी प्रतिभा, लक्षण, क्रिया—कलाप, कुछ अद्भुत बातें धीरे—धीरे आगे चलकर पता लगने लग जातीं हैं।

अ०— बच्चे के प्रतिभाशाली होने का प्रमाण पालने में ही पता लग जाता है।

'पूरी देखत जात जो, आधी लेय बंटाय।'

अ०— यदि कोई सम्पत्ति देखे कि यह सबकी सब चौपट होने वाली है तो निश्चय ही अपना हिस्सा बंटवा लेना चाहिए, ताकि जो भी बच जाय वही सही।

पूत भये सयाने दुख गये पयाने।'

श०— पयाने—पीछे।

अ०— पुत्र जब बड़ा हो जाता है तो घर का व अपना क्लेश कट जाता है। कहावत उसी पर कही गई है।

अ०— बेटा जब बड़ा हो गया तो सारे दुख—क्लेश पीछे की ओर भाग जाते हैं।

'पूस अमावस मूल को, सरसै चारों ओर
निहचय बांधो झोपड़ी, बरखा होय सेवाय।'

श०— सरसै—हवा का चारों ओर का बहना, चौवाई हवा जो चारों दिशाओं में बहती है। निहचय—निश्चय। सेवाय—ज्यादा।

अ०— यदि पौष मास की अमावस्या को मूल नक्षत्र पड़े और हवा चौमुख होकर बहे तो अपने रहने का झार अवश्य छा लेना चाहिए। इसलिए कि वर्षा ज़ोरों पर होगी।

'पूस बदी जो तेरसे चहुंदिस बादर होय'
सावन पूनों मास से, जलधर अति ही जोय।'

अ०— पूस बदी त्रयोदशी तिथि को चारों दिशाओं में बादल हों तो सावन की पूर्णिमा को पानी अवश्य बरसेगा।

'पूस अंधेरी सत्तमी, जो पानी नहिं होय
तौ अद्रा बरसै सही, जल—थल एक करेय।'

अ०— पूस माह की अंधेरी सत्तमी को पानी न बरसे तो अद्रा नक्षत्र अवश्य बरसेगा, धरती पर पानी ही पानी भर जायेगा।

'पूस अंधेरी सत्तमी, अष्टमी नौमी गाज'
मेघ होय तो जान लो अब शुभ होवै काज।'

अ०– पूस की उजाली सत्तमी, अष्टमी, नौमी को यदि बादल गरजें और बिजली, चमके तो बड़ा शुभ होता है। सभी कार्य सिद्ध होते हैं।

'पूस अंधेरी सत्तमी, बिन जल बादर होय'
सावन सुदी पूनों दिवस बरखा अवसहिं होय।'

अ०– पूस माह की अंधेरी सत्तमी को यदि पानी न बरसे तो सावन की पूनों को वर्षा अवश्य होगी।

'पूस मास दशमी दिवस, बादल चमकै बीज,
तो बरसै नहिं भादवां लाधौ खेलों तीज।'

श– दिवस–दिन। भादवा–भादो माह।

अ०– पूस की दशमी को बादल में बिजली चमकती है तो भादों भर बरसात न होगी। प्रेमपूर्वक कजरी तीज का त्यौहार मनाओ व खेलो।

'पूरब धनुही पच्छिम भान
घाघ कहे बरखा नियरान।'

श०– धनुही–आकाश में इन्द्रधनुष। भान–सूर्य। कहावत इन्द्रधनुष के उदय होने के लक्षण पर कही गई है।

अ०– घाघ कवि का कथन है कि यदि सूर्यास्त के समय पूर्व आकाश में इन्द्रधनुष दिखाई पड़े तो निश्चय ही पानी बरसेगा।

'पूरी केकी? स्वयं सेती,
आधी केकी? जो देखे तेकी,
बिगड़े केकी?
जो घर बइठे पूछय तेकी।'

कहावत खेती विषयक विचारों के प्रति किसानों के ऊपर कही गई है।

अ०– किसी ने पूछा– पूरी खेती किसकी है? उत्तर मिला –जो किसान अपनी खेती स्वयं करता है। आधी किसकी? उत्तर मिला– जो खेती के काम में समय देखता रहता है और बिगड़ती किसकी है? उसकी जो केवल घर पर बैठे–बैठे दूसरों के सहारे खेती करवाना चाहता है। वह केवल खेती के हाल को पूछकर ही खेती करने के विचार में रहता है।

'पूर्वा रोपे पूर किसान,
आधा खखड़ी आधा धान।'

श०– पूर्वा–नक्षत्र। रोपै–लगाना। पूर–पूरा। खखड़ी–भूसा पैया (सारहीन)।

अ०– जो किसान पूर्वा नक्षत्र में धान लगाता है उसकी फसल में आधा पैया आधा धान हो पाता है।

'पूत न माने आपन डांट,
भाई लड़े चहै नित बांट।'
'मेहर कलही कर्कस होय
नियरे बसे दुष्ट सब कोय।
मालिक नाहिंन न करै विचार
घाघ कहे ई बिपति अपार।।'

घाघ कवि ने प्रत्येक लोगों के लक्षण पर कहावत कही है।

अ०– बेटा यदि अपना कहना न माने, भाई जायदाद का बंटवारा ही कराने पर तुला हो, पत्नी झगड़ालू कर्कशा, घर में कलह मचानेवाली हो, निकट दुष्ट रहता हो तथा मालिक किसी बात की परवाह न करने वाला हो और न समस्याओं पर कोई विचार करे, तो इससे बढ़कर कष्ट का अनुभव क्या होगा?

'पूरब दिसा जो बहै बाई, बहु भीजै, बहु कोरी जाई'
दक्खिन बाउ बहै बघनासा, समय उपजै सनई घासा।'

श०– वायु–हवा। कोरी–खाली। बघनासा–बाघ का भी नाश करने वाली, कष्टकर। बाई–हवा।

अ०– जो हवा पूरब दिशा से बहती हो, बादलों के

हलके छींटों से भूमि पर पानी से भीगती हो, कहीं पर छींट भी न पड़ती हो, दक्खिन में सूखी हवा जो छेदने वाली हो, ऐसे समय में केवल सनई व घास की ही उपज होती है।

'पूसै पौधे पीसे खाय।'

अ०— पूस में रबी की फसल होने से अनाज मिलने की काफी संभावना होती है।

'पूतो मीठ भतारौ मीठ, केके किरिया खांव।'

श०— भतारौ—पति। किरिया—कसम। पूत—पुत्र।

जब आदमी किसी धर्म संकट में पड़ जाता है तो कहता है कि मेरे लिये तो पुत्र भी प्यारा और पति भी प्यारा है किसकी कसम खाऊं? पति—पुत्र दोनों की कसम खाने पर अपनी ही हानि की संभावना है।

'पूत मनौ किहिस तौ पतोह टांगै बटोर लिहिन।'

जब कोई काम दो व्यक्तियों की मर्जी से होना होता है तो यदि एक ने चाहा दूसरे ने नकार दिया तो असंभव हो जाता हे। इसी पर कहावत है।

अ०— बेटे ने काम की इच्छा भी प्रकट की तो बहू ने पैर सिकोड़कर अस्वीकार कर दिया। यानी कार्य में रुकावट का होना।

'पूत मांगे गये, भतार कै कांचे निकरि आय।'

श०— पूत—पुत्र। भतार—पति। कांच—मलद्वार पर शौच करते समय मांस निकलना।

कहावत के दो अर्थ हैं। एक तो है कि एक परेशानी या समस्या को दूर करने गये तो उधर दूसरी परेशानी ने आ घेरा। पुत्र मांगने गई तो पति को भी कष्ट हो गया।

'पूत मांगय गई तो भतारौ गंवाय आई।'

अ०— जो कुछ भी पास था उससे भी हाथ धोना। कहां तो बेटा मांगने गई और कहां पति भी खो आई। अतः जो कुछ भी ईश्वर ने दिया है उससे ही संतोष करना आवश्यक है।

'पुरुब के बादर पच्छिव जायं,
पतरी छांड़ि के मोटी पकाव।'

तथा

पच्छिव के बादर पुरुब जायं,
मोटी छांड़ि के पतरी पकाव।'

यहां पर कहावत मौसम के अनुसार रोटी के विषय में कही गई है कि किस समय रोटी स्वादिष्ट लगती है।

अ०— जब पूर्व दिशा के बादल पच्छिम को जाये तो समझो कि वर्षा होगी उस समय में पतली रोटी का बनाना छोड़कर मोटी रोटी बनाकर खाने में स्वादयुक्त होती है और जब पच्छिम के बादल पूर्व दिशा की ओर जाये तो पतली रोटी बनाकर खाने में स्वादयुक्त होती है। यहां पर मोटी रोटी से तात्पर्य मोटे अनाज की रोटी या दाल की खड़ोरी की रोटी, बेसन की रोटी से है। कारण बरसात में सोंधी वस्तुयें आमतौर पर खाने की इच्छा होती है।

'पुरुब गोधूली पच्छिम प्रात, उत्तर दोपहर, दक्खिन रात का करै भद्रा दिकसूल कहै भड्डर सब चकनाचूर।'

श०— भद्रा—एक प्रकार का योग है जिसमें यात्रा करना निषिद्ध होता है। दिशा—सूल—हररोज़ हर दिशा में नहीं जाया जाता। ज्योतिष में यात्रा—मुहूर्त के अनुसार बताया गया है कि किस दिन किस दिशा में जाने से लाभ व किस दिन किस दिशा को जाने से हानि होने की संभावनायें होती हैं।

यहां बताया गया है कि समयानुसार यात्रा करने का क्या परिणाम निकलता है?

अ०— कवि भड्डरी के कथनानुसार यदि यात्रा करनी अति आवश्यक है और जाने वाले दिन दिशाशूल पड़ रहा है तो समय के अनुसार यात्रा आरंभ करनी चाहिए। कहावत के अनुसार यात्रापूर्व दिशा की ओर करनी है तो गोधूली के समय, पश्चिम में जाना है तो

प्रातःकाल और यदि उत्तर की दिशा में जाना है तो दोपहर में और यदि दक्खिन की दिशा में जाना है तो रात के समय जाने से भरनी, भद्रा, दिशाशूल आदि का भेदभाव समाप्त हो जाता है।

'पूसमास दसमी अंधियारी, बदरी होय घोर कजरारी
सावन बदी दशमी के दिन में, भरै मेध चारो दिशि बरसे।'

पहले के ज्योतिषी अपनी ज्योतिष विद्या के अनुसार समय, नक्षत्र, महीने, पाख के अनुसार प्रकृति के लक्षणों को देखकर भविष्य का निर्णय लेते थे। उनका बताया योग सही भी निकलता था। जैसे– हमारे कवि भड्डर का कहना है–

पूसमास की कृष्णपक्ष की दशमी को यदि आकाश में घनघोर घटायें छाईं हो तो निश्चय ही सावन की उजाली दशमी को घनघोर वर्षा का योग है।

'पूरब मंगलकारी, अगिनकोन शुभ भारी,
दखिनै छींक निडर हो जारी, वायुकोन बिरधै कै हारी,
पश्चिम छींक भोजन मिले, नैरित छींक विवाद करे
उत्तर खूब झगड़ा होय, ईशान धन प्राप्ति करे।'

कहावत छींक के शकुनापशकुन के प्रति कही गई है।

अ०– पूर्वदिशा, अग्निकोण, व दक्षिण दिशा में होनेवाली छींक शुभ है। वायव्य कोण, नैऋत्यकोण और उत्तर दिशा की छींक अशुभ है और कलह पैदा करने वाली है। पश्चिम दिशा की छींक में स्वादयुक्त भोजन मिलता है और ईशानकोण की छींक में धन प्राप्ति होती है।

'पूनो पड़वा गाजै, दिना बहत्तर बाजै।'

श०– पूनों–पूर्णमासी। पड़वा–परीवा। गाजै–गर्जना।

कहावत तिथि के अनुसार पानी बरसने के प्रति कही गई है।

अ०– जेठ मास की पूर्णमासी को, परीवा को बादल गरजे तो समझो कि बहत्तर दिनों तक पानी बरसेगा।

'पूस बनावै माघ खाय।'

कहावत खिचड़ी या संक्रांति के ऊपर कही गई है। पूस माघ के सम्मिश्रण काल में ही संक्रांति बदलती है।

अ०– पूस माह में खिचड़ी बनाते हैं तो माघ में खाई जाती है जिसे संक्रांति बदलना कहा जाता है। कहने का मतलब यह कि दिन उस समय में इतना छोटा होता है कि बनाने–खाने में ही सांझ हो जाती है।

'पूजा के दिन बकरी हेरान।'

श०– हेरान–खोना।

जब किसी विशेष अवसर पर कोई आवश्यक सामान नहीं मिल पाता या मिलना असंभव हो जाता है तो कहावत लागू की जाती है।

अ०– पूजा के समय बकरी का खोना या न मिल पाना कार्य में अवरोध पैदा करता है। कहावत का अर्थ है कि किसी ख़ास मौके पर किसी वस्तु के बिना व्यवधान उत्पन्न होना। पूजा के समय पूजा की जाय कि बकरी खोजी जाय।

'पूत भये सयाने, दुख गये पयाने।'

जब लड़का बड़ा हो जाता है तो जीवन के बहुत कष्ट समाप्त हो जाते हैं। घर की समस्या, दुःख, कष्ट, क्लेश सब धीरे–धीरे जाने लगते हैं। उसी पर कहावत कही गई है।

अ०– लड़का बड़ा हो गया है कि अब सारे दुख समाप्त हो गये हैं।

'पूत जाति क सौ जोखिम।'

श०– जोखिम–खतरे, व्याधियां, परेशानियां, बीमारी।

कहते हैं कि लड़कियों को कुछ नहीं होता। वे अधिक बीमार नहीं पड़ती। हर परेशानी का कोई असर नहीं होता। मगर लड़कों को तमाम कष्ट उठाने पड़ते हैं।

अ०– पुत्र तमाम बीमारियां, कष्ट झेलने के बाद ही बच पाते हैं।

'पूत की रात दुर्लभ होथ।'

अ०– पुत्र रत्न होता है। घर का दीपक होता है। कहावत इसी पर है कि पुत्र पाने की बड़ी–बड़ी कठिन तपस्या की जाती है। इसमें सफलता भाग्यवानों को ही मिलती है यानी बेटा बड़े भाग्य से मिलता है।

'पूरब जाओ चाहे पच्छिम, वही करम के लच्छन'।

श०– करम–भाग्य। लच्छन–रंगढंग।

कहावत भाग्यवादी है। यानी कि चाहे पूरब जाओ चाहे पश्चिम जो भाग्य में होगा वही होगा। कर्म हर जगह साथ रहता है।

'पूरी से पूर परै तो सबै खाय।'

अ०– रोज़–रोज़ पूड़ी बनाकर खाने से यदि घर का खर्च चले तो सभी खाने लगें। यानी घर में साहखर्ची से काम नहीं चलता। जिसकी जितनी चादर हो उतना ही पांव फैलाना चाहिए वर्ना पांव खुलने का डर रहता है। इसलिए महात्मा कबीर के शब्दों में–

'रूखा–सूखा खायके ठंडा पानी पीव
देखि पराई चूपड़ी मत ललचावै जीव।'

'पूस कोने मं घुस।'

अ०– पूस का माह जाड़े का होता है इसलिए लोग कोने में घुसकर बैठते हैं। दूसरे अर्थों में पूस का माह इतना छोटा होता है कि जरा बैठ जाओ दिन समाप्त हो गया।

'पूरे गुरु घंटाल है।'

अ०– पूरी तरह से चालू, चालबाज है।

'पूत न भतार, अनायासै छाती प सवार।'

श०– अनायास–व्यर्थ में।

कहावत उस समय कही जाती है जब दूसरे के झगड़े में कोई तीसरा बेमतलब ही बीच में चीखना–चिल्लाना शुरू कर देता है।

अ०– तुम्हारे तो न पूत है न भतार फिर बीच में व्यर्थ को क्यों चिल्लाती हो?

'पूत फकीरेक चाल अमीरे क।'

कोई ग़रीब लड़का अपनी औक़ात से ज्यादा ही शान बघारता है तो कहावत कही जाती है।

अ०– बेटा ग़रीब, फ़कीर, भिखमंगे का है मगर शान देखो, चाल देखो तो मालूम होता है कि किसी बड़े भारी अमीर का पुत्र है।

'पूरी परै तो सपूत कहवावै।'

अ०– पुत्र की कमाई में घर के खर्चे पूरे पड़ते रहें तो वही पुत्र सपूत कहलाता है।

'पे'

'पेट कुंई, मुंह सुई।'

जो बहुत खाता हो और मुंह की अवार देखने में छोटी हो तो कहावत सामने आती है।

अ०– मुंह तो भगवान छोटा सा फाड़ा है और खाते समय खाना ढेर सारा खाया जाता है।

'पेट पिटारी मुंह सुपारी।'

अ०– उपरोक्त कहावत की भांति है।

'पेटव खाली, गोदव खाली।'

यानी कि खाने–पीने को ही घर में नहीं है और बाल–बच्चे भी नहीं हैं।

शून्यतापूर्ण जीवन व्यतीत करना।

'पेट मा परा चारा, तो कूदे लोग बेचारा।'

अ०– खाना मिलने के बाद ही आदमी की उछल–कूद शुरू हो जाती है। दुनिया में जितनी भी बदनामियां व खुराफात हैं वह पेट भरने के बाद ही सूझती है। यानी भूखे पेट तो भगवान का भजन भी नहीं होता।

'पेट मा परी बूंद, तो नाव रखिन महमूद।'

श०– बूंद–वीर्य।

अ०–पुत्र होने की प्रबल कामना रखना। पेट में बच्चा आया नहीं कि उसका नाम महमूद रखा कि लड़का ही होगा। लड़का होने का उतावलापन।

'पेटहा चाकर, घसहा घोड़
खाय ढेर काम करे थोड़।'

श०– पेटहा–अधिक खाने वाला। चाकर–नौकर। घसहा–घास खानेवाला।

कहावत खाने व काम के ऊपर है जो नौकर व घोड़े के माध्यम से कही गई है।

अ०– अधिक खाने वाला नौकर व ज्यादा घास खाने वाला घोड़ा काम कम करता है। स्वाभाविक ही है अधिक खा लेने के बाद काम कम ही हो पाता है।

'पेटू मरै पेट का, नामी मरै नांव क।'

कहावत उन लोगों के प्रति चरितार्थ की गई है जो अपना यश, नाम दुनिया में बनाना चाहते हैं। इज्जत वाला चाहेगा कि और क्या करूँ कि मेरा यश व नाम बढ़े, लोग अधिक से अधिक जाने मानें। समाज में भलेमानुसों में गिनती हो। किन्तु जिसे पेट भरने के ही चिंता हैं वह पहले अपना पेट भरेगा फिर नाम की सोचेगा।

अ०– पेटू जो खाने पर ही आमादा है वह खा–पीकर खर्च करके रख देगा मगर जो अपने यश के लिये सोचता है वह खाने से कुछ पैसे बचाकर दूसरा कोई काम इज्जत बनाने का करेगा।

'पेट न भरै तो का मुंहौ न पिराय।'

किसी व्यक्ति को भोजन के समय शर्मिंदा करने में कहावत कही जाती है।

अ०– जब कोई आदमी खाने में अधिक समय लगाता है या अधिक खाना खाता है तो कहते हैं कि पेट नहीं भर रहा तो क्या खाते–खाते मुंह भी दर्द नहीं कर रहा है?

'पेटव जरै, पीठिव जरै।'

जब कोई स्त्री किसी ऐसे धर्मसंकट में पड़ जाती है जिसमें पति व पुत्र के प्रति किसी प्रकार की सफाई देनी पड़ती है, या दो तरफा मामले में दोनों ही उसके पक्ष में होते हैं तो वह क्या बोल सकती है? न किसी को सही साबित कर सकती है न झूठ, न किसी को भला कह सकती है न बुरा तो कहावत सामने आती है।

अ०– किसको क्या कहा जाय? पेट व पीठ दोनों ही शरीर के ही अंग हैं। दो में से एक को भी ठोकर लगती है तो शरीर को कष्ट पहुंचता है। झेलना शरीर को ही पड़ेगा। इसलिए दोनों की रक्षा करनी है।

'पेटकटा से मुड़कटा भल होत।'

यहां पर पेट कटे से मतलब है जो लोग आधा पेट भोजन कराते हैं। दूसरे शब्दों में बोलते तो वे बड़ा ही मीठा हैं मगर दांव लगे तो सिर ही काट लें। कहावत उन्हीं लोगों पर उद्धृत की गई है।

अ०– पेट भर भोजन न कराने से अच्छा है कि सिर ही काट ले। जो व्यक्ति पेटकसरी होता है और ऊपर से मीठा बोलता है ऐसे आदमी बड़े ख़तरनाक होते हैं। उनसे भले तो वह होते हैं जो सीधे सिर ही काट लें।

'पेट न परजा क भरै
दइव करे अस राजा मरै।'

कहावत राजा व प्रजा के प्रति कही गई है। गोस्वामी तुलसीदास ने कहा है–

'जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी,
सो नृप अवस नरक अधिकारी।'

ऐसे राजा से क्या लाभ कि प्रजा का पेट न भर पाये? राजा–प्रजा का स्वामी होता है। अपने राज्य की प्रजा के दुःख–सुख का पूरा ध्यान रखना ही उसके पद की गरिमा है।

'पेट आपन पालयं तो कुत्ता जानथै।'

किसी स्वार्थी मनुष्य पर करारा व्यंग्य किया गया है।

अ०– पेट भरना तो कुत्ता भी जानता है मगर मनुष्य के लिए इतना ही पर्याप्त नहीं है। उसे तो जीवन में ऐसे भी कार्य करने चाहिए जिससे समाज, परिवार, मानव का कल्याण हो। खाली खाना और मर जाना यह तो जीवन रखने के लिए पशु भी कर लेता है

किन्तु इंसान को जीवन बनाने के लिये दुनिया में बहुत से कार्य करने चाहिये।

'पेट कै रोटी भारु होइगै।'

किसी आदमी को जब खाने का कष्ट कोई देता है तो कहावत कही जाती है।

अ०— पेट की दो रोटी खिलाने में अखरता है और तो क्या कहे रोटी देना कठिन हो गया।

'पेट पर पट्टी बांध के काम नहीं होतै।'

जब किसी आदमी से भूखे पेट काम कराया जाता है तो कहावत चरितार्थ होती है।

श०— पेट खाली रखकर पेट की भूख सहकर कोई काम नहीं कर सकता है।

'पेट म परी रोटी, तौ बात सूझै मोटी।'

इंसान के लिये दुनिया में सबसे बढ़कर भोजन है। कहावत भोजन के प्रति ही लागू की गई है।

अ०— जब पेट में रोटी गई तो बड़ी—बड़ी बातें सूझने लगीं। किसी ने कहा है—

'पेट में पड़ा चारा तो नाचे लाग बेचारा।'

या

भूखे भजन न होय गोपाला, लै ल आपन कंठी माला।'

'पेट मं घुसे तो बात (भेद) मिले।'

यानी जब किसी के मन की बात जाननी हो तो उससे बात करके उसके मन की बात निकाल सकते हो।

'पै'

'पैसा गांठ का, जोरू साथ की।'

अ०— कहते हैं कि समय पड़ने पर अपने पास का पैसा व साथी पत्नी ही काम आती है।

'पैसा नहीं हाथ चले हैं नवाब के साथ।'

अ०— हाथ में पैसा नहीं है मगर नकल करने चले हैं बड़े आदमी की। बड़प्पन की झूठी शान में रहने की इच्छा रखना।

'पैर गरम सिर ठंडा, घर में आवै डाक्टर तो मारे डंडा।'

कहावत स्वास्थ्य संबंधी है।

अ०— यदि पैर गरम है और सिर ठंडा हो तो डाक्टर का क्या काम घर में है? शरीर का तापक्रम ठीक चल रहा है।

'पैर बना रही तो जूती हजार मिलिहै।'

कहावत वस्तु विशेष पर कही गई है।

अ०— जब पैर रहेगा तो जूतियों की क्या कमी? वस्तु होने के बाद तो साधन अपने आप ही निकल आयेगा।

'पैग—पैग पर बाजरा, मेढक कुदौनी ज्वार
ऐसे बोवै तो कोई घर का भरे भंडार।'

श०— पैग—पैग—कदम—कदम। मेढक कुदौनी—जितनी दूर—दूर मेघा कूदता हो। भण्डार—वस्तुओं का ढेर, कोठिला जिसमें अनाज भरा जाता है। कहावत खेती विषयक है। अनाज बोने के प्रति कही गई है।

अ०— यदि एक—एक कदम पर बाजरा व मेढक कूदने की दूरी पर जोन्हरी बोयी जाय तो घर में अनाजों का भंडार भर जायेगा।

'पैसा गुरु और सब चेला।'

किसी ने कहा है—

'आप बड़ा ना भैया, जग में बड़ा रुपइया'।

खाली हाथ कौन किसको पूछता है? कवि रहीम के शब्दो में—

'जब लगि बित्त न आपने तब लगि मित्र न कोय।'
रहिमन अम्बुज, अम्बु बिनु रबि ताकर रिपु होय।।'
'दुरदिन परे रहीम कहि, भूलत सब पहिचानि।
सोच नहीं बित हानि की जौ न होय हित हानि।।'

'विपत्ति भये धन ना रहे होय जो लाख करोर।
नभ तारे छिप जात हैं, जिमि रहीम भये भोर।।'

'पैसा नहीं पास में कैसे सूंघे बास?'

श०— बास—महक, खुशबू।

पैसे की विडंबना मनुष्य के जीवन में एक ऐसी हीनता पैदा कर देती है कि क्या कहा जाय?

सुबास तो आदमी की मौज—मस्ती, रास—रंग में विलास का साधन है।

'पं'

'पंच का भला तो आपन भला।'

कहते हैं दुनिया में दूसरों का भला भी मनाना चाहिये। जब सभी के घर खुशियां होगीं तो अपने घर भी ढोलक बजते अच्छी लगेगी वर्ना अकेले न कोई खुश हो सकता है न ग़म मना सकता है। कहावत भी इसी संदर्भ में कही गई है—

अ०— जब सभी का भला है तो अपना भी भला है।

'पंच परमेश्वर होत।'

बात पुराने ज़माने की है जब हमारे समाज में लड़ाई—झगड़े के लिये न कोई न्यायालय था, न कचेहरी। सभी का न्याय पंच करता था एक पंचायत बैठती थी। जो दूध का दूध पानी का पानी करके न्याय करती थी। उसका रूप ही ईश्वर का रूप माना जाता था। इसी पर ऊपर कहा गया है —

अ०— पंच परमेश्वर होता था। वह हंस की भांति 'नीर—क्षीर विवेक' द्वारा अपना न्याय लोगों को देता था और उसकी बात को लोग निष्पक्ष रूप में मानते थे। उसी रास्ते पर पूरा समाज चलता था।

'पंथ बुढ़ाई नरन को, हयन बांध इक ठांम।
जरा अमैथुन तियन को, ओ बस्त्रन को घाम।।'

कहावत सामूहिक रूप से कई विषयों पर उदधृत की गई है।

श०— पंथ—रास्ता। नरन—मनुष्यों को। हयन—घोड़े। ठांम—स्थान। अमैथुन—पति के साथ पत्नी का सहवास न होना। तियन—स्त्री। वस्त्रन—कपड़ा।

अ०— पुरुषों के लिये बुढ़ौती रास्ता का चलना है। घोड़ों की बुढ़ौती है उन्हें एक ही स्थान पर बांध कर रखना। स्त्रियों की बुढ़ौती है उनके साथ पति का संभोग न करना और कपड़ों के लिये बुढ़ौती है धूप में अधिक देर तक पड़े रहना।

'पंच का कहना सिर माथे, मगर नाला यहीं बही।'

अ०— पंच का कहना तो मान्य है मगर पनारा यहीं पर बहेगा।

अ०— पंच का कथन भी ठीक ही है मगर मेरी भी अपनी बात है कि परनाला जहां पर बहता आया है वहीं पर बहेगा।

'पंडित जी की जौन पोथिया मं,
हमरी कनगुरिया मं।'

श०— कनगुरी—हाथ की सबसे छोटी उंगली।

कहावत उस समय लागू की जाती है जब कोई अपने को ज्यादा ही समझदार समझता है, या वाक़ई में किसी जानकार से ज्यादा बुद्धि उसके पास होती है।

अ०— जो पंडित जी अपनी पोथी—पत्रा से देखकर बतायेंगे उसे हम ज़रा सी देर में बिना देखे ही बता देंगे।

'पंडित भये तो क्या भये, गले लपेटे सूत।
भाव—भगत जानी नहीं भे जंगल के भूत।'

पंडितों के आचार—व्यवहार, कर्मकांडों के ढकोसले पर व्यंग्य किया गया है।

अ०— पंडित होने और गले में सूत लपेटने का मतलब क्या है? जनेऊ पहनने से क्या हुआ जब सही भक्ति—भाव, ज्ञान नहीं रखते। झूठ—मूठ के देवता भूतों की तरह अज्ञान की बातें करते हैं।

'पां'

'पांच पंच मिलि कीजे काजा,

हारे जीते क नाहिन लाजा।'

कहावत सामाजिक स्तर पर किसी कार्य के प्रति कही गई है।

अ०– कोई भी काम आपस में पांच–सात की राय–सलाह या संगठित होकर किया जाता है तो उसमें हारने–जीतने का महत्व सभी को मिलने के कारण जग–हंसाई नहीं होती। उसंमें नुकसान या बदनामी भी हो तो सभी का नाम आता है। अकेले अपयश नहीं लगता।

पांचे आम और पचीसे महुवा,

तीस बरिस पर इमली क फउवा।

कहावत आम इमली के वृक्ष में फल के प्रति कही गई है। इसलिए कि आम का पेड़ तो पांच वर्ष में फलने लगता है मगर इमली ३० वर्षों में फलती है।

'पांचे मीत; पचासे ठाकुर।'

कहते हैं कि पांच रूपये में मित्र व पचास में ज़मींदार लोग मान जाते थे।

'पांचो अंगुरी घिव मां, सिर कड़ाही मां।'

कहावत उसके प्रति चरितार्थ की जाती थी जिसको लाभ ही लाभ होता हो। जिसकी दाल खूब गल रही हो।

अ०– पांचों उंगलियां घी में यानी फायदे ही फायदे में है और सिर की क्या बात वह तो मजे ही में खपाये हैं।

'पांचो अंगुरी बराबर नहीं होते।'

जब किसी के भाग्य की तुलना या समानता की भावनायें देखी जायें तो कहते हैं।

अ०– एक ही हाथ की पांच उंगलियां हैं मगर सब एक नाप की नहीं होती हैं। सबके भाग्य एक से नहीं होते।

'पांडे जी पछतायेंगे, वही चने की खायेंगे।'

जब कोई आदमी हठ करके किसी के समझाने–बुझाने से कोई काम न करे और वही काम सही काम मानकर अपने मन से करे तो ऐसी परिस्थिति में लोग कहावत का उपयोग करते हैं।

अ०– जब पांडे से कहा गया कि चने की रोटी खा लो तब तो नहीं खाये और अंत में पछता कर अपने मन से वही रोटी खाये।

'पांसा पड़े अनाड़ी जीते।'

अ०– जब पांसा पड़ जाता है तो बेवकूफ भी जीत जाता है। भाग्य की बात होती है।

'पांव पकड़ कै बिनती, सौ लो गिनती।'

अ०– जैसे सौ से आगे गिनती नहीं होती वैसे ही पांव पकड़ने से अधिक कोई प्रार्थना नहीं मानी जाती है।

'पांव पसार्‌या कब से?

हाथ बटोर्‌या जब से'

यह लोकोक्ति जनजीवन से जुड़ी तो है ही इसके साथ बादशाह अकबर की कथा भी जुड़ी है। जो इस प्रकार है–

एक बार अकबर के दरबार में बीरबल कई दिनों तक नहीं गये तो अकबर बादशाह को चिंता हुई कि आज कई दिनों से बीरबल नहीं आये। तो वे स्वयं ढूंढ़ने निकले। ढूंढ़ते–ढूंढ़ते एक जंगल में पहुंचे, तो देखा एक पेड़ के नीचे बीरबल अपने पैर फैलाकर बड़े आराम से लेटे थे। देखते ही बादशाह अकबर बोले–अरे पांव पसार्‌या कबसे? बीरबल बोले– हाथ बटोर्‌या जब से।' यानी जब से तुमने लेना–देना बंद कर दिया तब से मैंने भी पांव पसारना शुरू कर दिया है।

कहने का तात्पर्य यह कि आदमी जब तक देने–लेने में विश्वास रखता है तब तक उसका काम कभी नहीं रुकता है। उसे किसी भी सहयोगी की कमी नहीं होती।

'पांड़े बोले सुभ तो मंड़ये मां सब रांड़य रांड़।'

कहावत एक ऐसे पंडित के प्रति व्यंग्य में कही

गई है जिन्होंने जितने भी विवाह अपने मंत्रों के द्वारा करवाये सभी असफल निकले।

अ०– जहां भी पांड़े शुभ बोले वहां मंडप में सब विधवा ही विधवा दिखाई पड़ीं।

'पांड़े मरै जान से, पड़ाइन माछैं माठा।'

कहावत उन स्त्रियों के लिये व्यंग्य में कही गई है जिन्हें अपने पति की बीमारी में भी चिंता नहीं रहती। उनका काम होना ही चाहिए चाहे पति या घर में कोई मरे या जिये।

अ०– पांडेय तो बीमारी के कारण अपनी जान से जा रहे हैं, बेहद तकलीफ में हैं और पड़ाइन अपना मट्ठा मथने में मगन है, उनसे जैसे पांड़े से कोई मतलब ही न हो।

'पांच शनीचर, पांच रबि, पांच मंगर जो होय,
छत्र टूटि धरनी परै, अन्नौ मंहगा होय।'

कहावत कवि भड्डरी की है।

अ०– यदि किसी वर्ष एक माह में पांच इतवार, पांच शनिवार, व पांच मंगलवार पड़ें तो समझना चाहिए कि राजवंश का अशुभ होगा और अनाज बेहद महंगा हो जायेगा।

'पांत मां दुइ भांति नहीं होत।'

श०– पांत–जहां पर खाने वालों की पंगत, जमात बैठी हो। भांति–तरह।

अ०– कहते हैं कि जहां पर अधिक लोग खाने–पीने वाले हों वहां पर दो प्रकार का खाना कभी नहीं परोसना चाहिए। यानी कि भोजन सबको एक समान देना चाहिए। चाहे कोई बड़ा आदमी हो या छोटा। दो आंख नहीं करनी चाहिए।

'पांस परय तो खेत, नहीं तो कूड़ा रेत।'

श०– पांस–खाद। रेत–मिट्टी।

कहावत खेत सम्बंधी है।

अ०– खेत में खाद–पानी पड़ता है वह खेत तो खेत कहलाने लायक है और यदि खाद नहीं पड़ती तो वह खेत मिट्टी के बराबर होता है।

'पांच वर्ष लौं लाड़िये, दस लौं ताड़न देय।,
सुत को सोलह साल में, मित्र सरिस गनि लेय।।'

अ०– लाड़िये–प्यार करना। ताड़न–ताड़ना, मारना। सुत–लड़का। मित्र–दोस्त, बराबर का। सरिस–तरह। गनि–गिनाना।

इसमें ज्ञानोपदेश दिया गया है कि पुत्र के साथ किस समय कैसा व्यवहार करना चाहिये?

अ०– बच्चे को पांच वर्ष तक प्यार करना चाहिए। पांच से दस वर्ष के बीच उसे समझाना, ताड़ना देना, मार–पीटकर सीख देनी चाहिए। उसके बाद सोलह साल के लड़के के साथ मित्रवत् व्यवहार करना चाहिये क्योंकि वह आपके कंधे के बराबर होकर आपका दोस्त, एवम् सलाहकार बनने की क्षमता रखता है।

'मंगिबौ भलो न बाप सों, जो विधि राखै टेक।'

महात्मा कबीरदास के शब्दों में

'मांगन मरन समान है, मति कोई मांगो भीख।,
मांगन ते मरना भला, यह सतगुन की सीख।।'

इसलिये किसी से भी मांगना अच्छा नहीं है। भले ही पिता क्यों न हों।

'पूं'

पूंछ झपा औ छोटे कान, ऐसे बरद मेहनती जान।'

अ०– कहावत बैलों के प्रति कही गई है। जिन बैलों की पूंछ लहरदार हो और छोटे कान हों ऐसे बैल मेहनती माने जाते हैं।

'प्र'

'प्रभुता पाय काहि मद नाहीं।'

गोस्वामी तुलसीदास के इन शब्दों में बहुत बड़ा सत्य निहित है। ऐश्वर्य, धंन, पद, अधिकार पाने के

बाद मनुष्य में अभिमान होना स्वाभाविक है। सत्ता व महत्ता पा जाने के बाद आदमी में अभिमान आ ही जाता है।

अ०— प्रभुत्व को पाकर किसे घमंड नहीं होता है? किन्तु यह न भूलना चाहिए कि घमंड आदमी का नाश कर देता है।

'प्रा'

'प्रातकाल करो स्नाना, रोग दोस तुमको नहिं आना।'

कहावत स्वास्थ्य विषयक है।

अ०— प्रातःकाल यदि उठकर नहाओ तो कोई भी ब्याधि नहीं होगी।

'प्रातकाल खटिया से उठि के पिये तुरंते पानी,
ता घर बैद कभी ना आवै, बात घाघ की जानी।'

कहावत स्वास्थ्य विचार पर आधारित है।

अ०— सबेरे खाट पर से उठते ही जो पानी पीता है उसके घर वैद्य कभी नहीं आते। वह सदैव स्वस्थ रहता है।

'प्रान जाइ, बरु वचन न जाई।'

गोस्वामी जी की इस पंक्ति में वचनबद्धता का जो प्रमाण मिलता है वह और कहीं नहीं मिलता। प्राण भले ही चले जाएं किन्तु वचन खाली नहीं जाता है।

जो कहते तो बहुत कुछ हैं किन्तु करते कुछ भी नहीं। उनके लिये 'प्रान जाय पर वचन न जाई' का सवाल ही नहीं उठता। किन्तु जो अपने वचनों पर अडिग होते हैं उनके लिए वचन का महत्व है।

'प्री'

'प्रीत घटे कछु मांगते, मान घटे नित जाय।'

कहावत सिद्धांतवादी होते हुये स्वाभाविक है।

अ०— रोज़–रोज़ किसी के घर जाने में सम्मान कम होना स्वभाविक ही है तथा हमेशा किसी से कोई वस्तु मांगने से आदमी की इज्ज़त कम होने लगती है।

'प्रीति करे सो बावला, करके छोड़े छैल।
गल में रस्सां डाल के और निबाहै बैल।।'

कहावत प्रेम की वफादारी के प्रति कही गई है।

अ०— प्रेम करने वाला पागल और करके छोड़ देने वाला रसिक है, जो मन की मौज के लिये प्रेम करता है। गले में फंदा पड़ जाने पर जो अंत तक निर्वाह करता है, वह बैल है। कहते हैं गले में रस्सी पड़ने के बाद तो बैल भी अपनी ज़िम्मेदारी अंत तक निबाहता है। फिर आदमी को तो वफ़ादार होना ही चाहिये।

'प्रीति डगर जब पग रखा, होनी हो सो होय।
नेह नगर की रीति है, तन–मन दोनों खोय।।'

अ०— स्पष्ट है।

'प्रीति न टूटे अनमिले, उत्तम मन की लाग।
सौ जुग पानी में रहे, चकमक तजे न आग।'

अ०— प्रीति यदि सही है तो वह बिना मिले भी टूट नहीं सकती। कितना भी पानी में चकमक रखा हो मगर उसमें निहित आग समाप्त नहीं होती है।

'प्रेम न जानै जात कुजात,
नींद न जानै टूटी खाट।
भूख न जानै बासी भात,
प्यास न जानै धोबी घाट।'

कहावत ज़रूरत व समय की पुकार पर कही गई है। मनुष्य अपने जीवन की आवश्यक आवश्यकताओं के बिना जीवित नहीं रह सकता है।

अ०— आदमी प्रेम करने में जाति–कुजाति की परवाह नहीं करता। उसी प्रकार से जब आदमी को अच्छी–खासी नींद लगी हो तो बिस्तर या खाट की परवाह नहीं करता, उसे टूटी खाट पर भी गहरी नींद आ सकती है। भूख लगने पर क्या ताजा है, क्या बासी है, क्या अच्छा है या बुरा है, इसकी चिंता नहीं रहती। मतलब ख़ाली पेट भरने से होता है तथा प्यास लगने पर पानी साफ़ है या गंदा, चाहे वह धोबी–घाट का पानी क्यों न हो, पीने से मतलब।

'फ'

'फलाने की माई खसम किही, बहुत बुरा,
कै के छोड़ दिही और बुरा।'

श०– फलाने–कोई आदमी जिसका नाम प्रकट करना न हो। खसम–आदमी, पति।

कहावत किसी गलत काम को करने व करके उसे भी छोड़ देने के प्रति कही गई है। उस पर निर्वाह न करना, दूसरी बुराई हो गई।

अ०– किसी स्त्री ने एक तो अपना आदमी छोड़कर दूसरे के आदमी को पति बनाया और उसके बाद उसको भी छोड़ दिया। यह उससे भी ज्यादा खराब काम किया।

'फल न फलहार, बगीचा क नांव।'

जब किसी वस्तु के रहते उससे कोई लाभ न हो तो कहावत कही जाती है।

अ०– जिस बाग़ में कोई फल न फले और वह बगीचा कहलाये?

'फटक चंद गिरधारी, न लोटा न थारी।'

कहावत फाकेमस्त लोगों के प्रति कही गई है जिनको दुनिया में किसी वस्तु की कोई परवाह न हो। वे अपने में मस्त हैं न उन्हें अपनी गृहस्थी से काम है और न दूसरे किसी से।

अ०– ऐसे व्यक्ति जिसके पास कुछ भी न हो। वही कहावत हुई–

'मस्तराम मस्ती में, आग लगे बस्ती में'। क्या लेना देना किसी से? जहां बैठ गये खा–पी लिया। पा गये तो भी ठीक, न मिला तो भी ठीक।

'फलदार पेड़ तरे क आवत।'

कहावत उन लोगों के ऊपर कही जाती है जो सम्पन्न होने के बाद भी गंभीर होते हैं। जो सब प्रकार से सम्पन्न होते हैं वे फलदार पेड़ों की तरह नीचे को झुक जाते हैं।

'फरा सो झरा जो बरा सो बुताना।'

अ०– जो पेड़ फलेगा उसका फल कभी अवश्य झड़ जायेगा। उसी प्रकार से जो मनुष्य बहुत अधिक उन्नति करेगा उसका समय भी कुछ नीचे को जा सकता है। दिन किसी के एक समान नहीं होते।

'फाटक टूटा, गढ़ लूटा।'

अ०– जहां कहीं भी सीमा टूट जाती है वहीं गड़बड़ी होने का भय रहता है। जैसे फाटक टूटने के बाद चोरी, डकैती कुछ भी हो सकती है।

'फाट दूध औ फाट मन नहीं मिल पावत।'

अ०– जब किसी से वैमनस्य हो जाता है तो जैसे फटा दूध बेकार हो जाता है उसी प्रकार हृदय फट जाने के बाद एक नहीं हो पाता। कवि रहीम के शब्दों में–

'रहिमन धागा प्रेम का मत तोड़ो चटकाय
टूटे पै फिर ना मिलै, मिलै गांठ परि जाय।'

'फावड़ा न कुदार, बड़ा खेत हमार।'

श०– फावड़ा, कुदार–जमीन खोदने, गोड़ने की वस्तु।

अ०– किसी की जबरदस्ती पर कहावत कही गई है। न तो फावड़ा है न गोड़ने को कुदाल है मगर मुंह बाये बैठे हैं कि जो सबसे बड़ा खेत है वही हमारा है।

'फागुन मां बाबा देवर लागै।'

यह हास्य–व्यंग्य की कहावत मौसम का आभास कराती है।

अ०– फागुन के मद–मस्त महीने में जब होली होती है तो ससुर भी देवर लगने व होली खेलने के हक़दार होते हैं। इस माह में जीजा–साली, देवर–भाभी में तो होली का हुरदंग व छीना–झपटी चलती है उस धमाचौकड़ी में बाबा भी आ जाते हैं। फागुन माह में बाबा, जेठ सभी ऐसे रास–रँग में डूबे व अबीर–गुलाल के रंग में रंगे रहते हैं।

'फागुन मास बहै पुरवाई,

तब गोहूं मां गेरुई आई।'

श०– पुरवाई–पूरब से चलने वाली हवा। गेरुई–गेहूं में लगने वाला रोग।

कहावत गेहूं की फसल की हानि के प्रति कही गई है।

अ०– जब फागुन माह में पूर्वी हवा बहने लगती है तो गेहूं की फसल में गेरुई नामक रोग लग जाता हैं।

'फागुन बदी दुइज दिन, बादर होय न बीज,

बरसै सावन भादवां हिलमिल खेलो तीज।'

अ०– फागुन शुक्लपक्ष दुइज को यदि बादल न हों तो समझो कि सावन भादों माह में पानी खूब बरसेगा। उस समय आनंद से तीज–त्यौहार मनाओ।

'फि'

'फिसल परे तो हर गंगा।'

जब कोई काम अनिच्छा से हो जाय तो मज़बूरन आवश्यकता ज़ाहिर करना।

अ०– जब कोई अचानक फिसल कर गिर पड़ा तो बोला हर गंगा। नहाने का इरादा तो न था मगर जब गिर ही पड़े तो समझो कि स्नान हो गया। इसी प्रकार कोई काम करने का इरादा न हो और अचानक किसी कारण वहां काम करना ही पड़े तो कहावत का प्रयोग होता है।

'फिरि गये सोनवा, फिरि गये रुपवा,

फिरि आई पितरी, मनहिं मन उतरी।'

जब एक वस्तु मन से उतर जाए और दूसरी वस्तु पसंद आने लगे तो कहावत चरितार्थ होती है।

अ०– एक बार सोना–रूपा मन भाया तो पीतल के गहने मनसे उतर गये मगर एक समय फिर ऐसा आया क़ीमती सोना–रूपा मन से उतर कर फिर पीतल अच्छा लगने लगा।

'फिकिर करै फाका करै,

तेहि कर नांव फकीर।'

श०– फिकर–चिंता। फाका– उपवास, भूखा रहना। फकीर–भिखमंगा, जो घर परिवार से उदासीन रहक़र सादा जीवन व्यतीत करे।

अ०– जो हर समय ईश्वर की चिंता करते हैं तथा उसे प्रसन्न करने के लिए उपवास आदि करते हैं, वे फकीर कहलाते हैं।

'फू'

'फूहर के दुइ काम हगै, उठावै।'

श०– फूहर–मूर्ख, नासमझ, लौधड़, बेशऊर, बेअक्ल।

कहावत ऐसी बेसहूर स्त्री पर कही गई है जिसको किसी काम का सहूर नहीं है।

अ०– फूहड़ नारी के दो ही काम हैं –खुद ही टट्टी करना और खुद ही साफ़ करना। यानी ऐसी जगह टट्टी करना जहां खुद ही को साफ करना भी पड़े। कहने का मतलब यह कि हर काम में फूहड़ होना।

'फुहरी क लपटा, न खाइन मां,

न परइन मां, न फेंकइन मां।'

श०– लपटा–आटे या महुए की मीठी व गाढ़ी गीली लप्सी।

यदि कोई वस्तु बनाने में गीली या ख़राब हो गई तो लोग बड़ी आसानी से कहावत का प्रयोग करते हैं।

अ०– फूहड़, मूर्ख स्त्री ने लपटा बनाया तो वह भी इतना ख़राब कि न खाने के काम में आया और न फेंकने के।

'फूहर चलल रसोइयाँ तो

कुसल करै गोसइयाँ।'

श०– गोसइयाँ–मालिक, भगवान।

यह कहावत भी फूहड़ों के ऊपर कही गई है। रसोई यानी कि भोजन बनाना नारी का सर्वोपरि गुण है। यदि भोजन बनाने वाली फूहड़ है तो समझो कि पुरुष का जीवन बर्बाद है। इसी पर संस्कृत में एक कहावत है–

'दिनम् नष्टम् कुभोजनम्, जन्म नष्टम् कुभार्या।'

अर्थात् ख़राब खाना खाने से दिन बर्बाद हो जाता है और दुष्टा स्त्री के साथ से जन्म नष्ट हो जाता है। कहावत कुभोजनम् व कुभार्या के ही ऊपर स्पष्ट की गई है।

अ०– फूहड़ स्त्री खाना बनाने रसोई में चली तो भगवान ही मालिक है। वह कच्चा–पक्का, जला–भुना, क्या बनाकर रख देगी ईश्वर ही जाने?

'फूहर चलै तो नौ घर हालै।'

अ०– किसी फूहड़ नारी के पड़ोस में होने पर अपना ही नहीं पड़ोसियों के घर तक उनका असर पहुंच जाता है। अपने फूहड़पने से आसपास के लोगों को भी तंग किये रहती हैं।

'फूहड़ चलीं देवता मनावै
देवता लोटि–लोटि जायँ।'

अ०– फूहड़ स्त्री देवी–देवता पूजने में किस प्रकार की मूर्खता करती है इसकी ओर संकेत है। बेवकूफ़ स्त्री चली है देवता पूजने तो देवता भी लोट–लोट जाएंगे।

'फूहर पोतै चूल्हा, औ मटकावै कूल्हा'

श०– मटकावै–हिलाना, चलाना। कूल्हा–कूल–कमर के दोनों ओर का भाग।

अ०– मूर्ख नारी जब चूल्हा पोतने चली तो अपने कमर को मटकाने लगी।

'फूटे से बहि जातु है, ढोल, गंवार, अंगार।,
फूटे ते बनि जातु हैं, फूट, कपास, अनार।।'

कहावत फूट पर कही गई है।

अ०– ढोल, गंवार और आग का अंगार ये फूटते बिखरते हैं तो नष्ट हो जाते हैं किंतु ककड़ी जिसे फूट कहते हैं, कपास जिससे रुई निकलती है और अनार का फल ये सब फूटने के बाद इस्तेमाल करने लायक होते हैं।

'फूहड़ तीन जगह बूड़थि,
हाथे, गोड़े, नाके।'

अ०– कोई हो, अपनी बेवकूफी से कम से कम तीन बार धोखा खाता है। जैसे कोई फूहड़ स्त्री पैर में कुछ लगने पर हाथ से देखती है, कि क्या है? उसके बाद हाथ नाक की ओर ले जाती है कि कैसी बू आ रही है? इस प्रकार से वह तीन जगह अपनी बेवकूफी का इज़हार करती है।

'फूले फूल कुंहण के कोयल भई अनंद,
बोली – हमतौ जानी निक फर फरब्या।

मन की इच्छा न पूरी होने पर निराशा मिले तो कहावत चरितार्थ होती है।

श०– कुंहण–कोंहणा। निक–अच्छा। फर–फल।

अ०– कोयल ने जब कोंहड़े का फूल देखा तो बहुत खुश हुई कि जब फूल इतने अच्छे हैं तो फल तो बहुत ही ज्यादा सुंदर लगेंगे। मगर उसने कोंहड़े की शक्ल देखी तो बड़ी निराशा हुई बोली–हम तो समझती थी कि कोई बढ़िया सा फल लगेगा मगर तुम तो बड़े ही भद्दे, बेढंगे रूप लेकर सामने आये हो।

'फूंक देय तौ उड़ि जांय।'

किसी दुर्बल व्यक्ति को देखकर कहावत कहते हैं।

अ०– इतने दुर्बल हैं कि फूंक के लगते ही उड़ जायेंगे।

'फूंकै क न फांकै क, टांग उठाय के तापै क।'

अ०– काम कुछ नहीं करना चाहते। आग को फूंक कर जलाते हैं नहीं, बस कोई जला दे तो आराम से पैर उठाकर सेंकना जानते हैं।

'फूल कै बैरी धूप,

घी कै बैरी कूप।'

अ०– फूल में धूप लगने पर सूखने लगते हैं वैसे ही घी का दुश्मन कुप्पा होता है, जिसमें रखने पर घी खराब हो जाता है।

'फूल न सही, पंखुड़िन सही।'

जहां पर कुछ न हो वहां थोड़े में ही संतोष करना।

अ०– जो मिल गया वही बहुत है। फूल नहीं तो उसकी पंखुड़ी से ही काम निकल जायेगा।

फूली फिरै गौने मां,

ठसक निकरि गै रोने मां।'

अ०– किसी अच्छे काम का शौक तो पहले बहुत लगता है मगर जब उसकी परेशानी भी सामने आती है तो मुसीबत हो जाती है। किसी लड़की का गौना थां तो बड़ी खुश थी कि मेरा गौना होने जा रहा है, मगर जाते समय रोने की बारी आई तो सारी शेखी गायब हो गई।

'फूहर करै सिंगार, मांग ईंटा से फोरे।'

किसी मूर्ख के श्रृंगार पर कहावत कही जाती है।

अ०– कोई मूर्ख स्त्री अपनी मांग में सेंदुर की जगह ईंट रगड़ने लगी।

'फूहर के घर उई चमेली,

गोबर, मांड़ उसी पर बेरी।'

श०– चमेली– एक फूल। मांड़–चावल बनाने के बाद उसका पानी जो निकाला जाता है।

अ०– किसी फूहड़ नारी के घर में चमेली का फूल–खिला तो वह उस पर गोबर और भात का मांड़ ले जाकर डाल आया करती थी।

'फूहर के घर खिरकी लगी, तो कुत्तन की चिंता परी, बंडा कुत्ता करै विचार, लागी तो है के बंद करी यार?'

कहावत फूहड़ों की लापरवाही पर कही गई है, जिसमें साधन होते हुए भी काम का न होना दिखाया गया है।

अ०– फूहड़ के घर में खिड़की को लगे देखकर सभी कुत्तों को चिंता हुई कि खिड़की बंद होने के बाद हमारा दांव कैसे लग पायेगा? बहुत विचार कर एक बंडा कुत्ता बोला– कि खिड़की तो जरूर लगी है मगर फूहड़ उसे बंद भी करेगी? इसलिए हम सबका दांव तो लगेगा ही।

'फौ'

'फौज की अगाड़ी, आंधी की पिछाड़ी'

जे न संभारे ते अनाड़ी।'

श०– फौज–सेना। अगाड़ी–आगे। पिछाड़ी–पीछे। संभारै–ध्यान रखना। अनाड़ी–मूर्ख, बेवकूफ।

अ०– फौज़ यानी सेना के आगे और आंधी के पीछे बहुत ही संभल कर रहना पड़ता है। इन दोनों स्थितियों में बहुत सचेत रहना पड़ता है। जो नहीं संभल पाता है वह नासमझ है।

'ब'

'बहू के तीते तीनिउ तीत,

नातिव तीत तउ तीत।'

श०– तीते–बुरा होना। पूत–पुत्र। नातिव–पोता।

कहावत पारिवारिक जीवन की कटुता पर उद्धृत की गई है।

अ०– किसी सास का कथन है कि बहू तो कड़वी थी ही उसके बदौलत बेटा व नाती भी बुरा लगने लगा।

'बकरा क माई, कब तक खैर मनाई।'

श०– खैर–कुशल।

होनी को कोई कब तक रोक सकता है? कभी न कभी तो वह समय आ ही जायेगा जब वह अनहोनी होकर रहेगी। इसी पर बकरे के माध्यम से कहावत उद्धृत की गई है।

अ०— जब बकरे की बलि चढ़नी ही है तो वह कभी भी, किसी भी समय बलि की बेदी पर चढ़ाया जा सकता है। उसको कौन रोक सकता है? उसकी मां कब तक अपने बेटे की कुशल मनायेगी?

'बड़ा दुलार, आँखी माँ अंगुरी।'

कहावत बच्चे के लाड़—प्यार के ऊपर कही गई है। कोई भी बच्चा या लड़का यदि गलत काम करता है तो कहावत लागू होती है।

अ०— ऐसा भी क्या दुलार बच्चे का किया है कि वह आंख में उंगली ही डाल दे।

'बन मां नाचय मोर,

केव देखय केव नाहीं।'

जब कोई आदमी अपने घर, गांव, नाते, रिश्तों से बहुत दूर जाकर अत्यधिक उन्नति करता है, ऐसी स्थिति में कहावत चरितार्थ होती है।

अ०— वन के अंदर का नाचता हुआ सुंदर मनोहारी मोर को भला बस्ती में कौन देख पाता है, वह चाहे जितना भी खूबसूरत हो? उसी प्रकार से बाहर परदेश गये परदेशी की हैसियत का पता अपने देश—गांव में क्या लग सकता है?

'बइठा बनिया का करै

यहि कोठी क धान वहि कोठी करै।'

किसी बैठोल, आलसी, नाकाम आदमी के प्रति कहावत का इस्तेमाल किया जाता है।

अ०— बनिया जिसे माल बेचना चाहिये वह यदि खाली घर में बैठा है तो व्यर्थ का ही काम करेगा। एक जगह का सामान दूसरी जगह, दूसरी जगह का कहीं और, इस प्रकार वह व्यर्थ ही अपना समय गंवाता है।

'बरसौ राम पकै धनिया,

खांय किसान मरै बनिया।'

कहावत किसानों की भलाई व फसल अच्छी होने पर कही गई है जो व्यंग्यात्मक है।

अ०— हे भगवान! पानी बरसाओ जिससे फसल अच्छी हो। किसान सुखी हों और बनिया भूखों मरें उनका अनाज कोई खरीदने वाला ही न हो।

'बगुला मारै पंखै हाथ।'

कहावत किसी निर्बल आदमी को सताने के प्रतिफल में कही गई है।

अ०— बगुला को मारने की हत्या भी लगे और मिले भी तो क्या? उसके पंख। ऐसे लोगों को सताने से क्या लाभ? जैसा कि कहा गया है—दमड़ी नहीं चमड़ी हाथे आई।'

'बछवन चलै, तौ बैल को बेसाहै।'

यदि बलवान का काम कोई कमजोर आदमी ही कर ले तो कोई बलवान को क्यों ढूंढ़े? कम पैसे के खर्च करने से कोई काम बन जाय तो कोई अधिक पैसा उस काम के लिये क्यों लगायेगा? कहावत ऐसे ही विषय पर लागू की गई है।

अ०— यदि बछवा हल में चलने लगे तो कोई बड़ा बैल क्यों खरीदे? यानी जो काम बुद्धिमान, बड़े व अनुभवी आदमी कर सकते हैं वही यदि कोई अनपढ़ कम आयु का कर सकता तो बड़ों के बिना काम ही क्यों रुकता?

'बजार न लाग, गरकटा आय पहुंचे।'

श०— गरकटा—बलि देने वाले, कसाई।

कहावत मतलबी, स्वार्थी, अपना काम बनाने वाले अवसरवादी लोगों के प्रति कही गई है।

अ०— काम की शुरुआत भी न हो पाई कि उससे स्वार्थ पूरा करने वाले पहले ही आ पहुंचे।

'बड़े—बड़े बहा जायं, गड़रियऊ थाह मांगे।'

जब छोटे आदमी किसी बात में, अपना बड़ा महत्व लगाते हैं तो कहावत चरितार्थ होती है।

अ०— बड़े—बड़े तो जिस काम को कर न पाये उस पर चले हैं छोटे निर्बल, अपनी ताकत आज़माने

जिसकी कोई बिसात ही नहीं है। यानी जिस धारा में बलवान बह गये उसमें गड़रिया अपनी हस्ती दिखाना चाहते हैं।

'बटुई ब्योहारे क, चटुई त्योहारे क।'

श०– बटुई– बटलोई, जिसमें दाल–चावल आदि भोजन बनाये जाते हैं।

कहावत समय की मांग के प्रति कही गई है। कब क्या शोभा देता है?

अ०– बटुई कोई अपने घर के काम के लिए मांगता है तो उसे व्यवहार में दी जाती हैं और स्वादिष्ट, तरह–तरह के व्यंजन तो त्योहार ही में खाने को मिलते हैं।

'बड़ी रे बड़ी कहां लै के परी, का करै बड़ी तवा के तरे ढांकी धरी।'

कभी–कभी स्त्रियां घरेलू सामानों को भी ऐसी जगह रखकर भूल जाती हैं कि स्वयं ही ढूंढ़े नहीं पातीं, यानी पास ही की रखी वस्तु न मिल पाना।

अ०– बड़ी यानी पकौड़ी या कोहड़ौरी तू कहां है? उसका उत्तर होता है कि मैं क्या करूं मैं तो तवे के नीचे ढंकी पड़ी हूं।

'बनिया जोरे परी–परी, रहिमान ढकेलै पांच परी।'

श०– परी–पहले के जमाने में लोहे की एक गहरे किस्म की ऐसी वस्तु जिससे तेल व घी निकाला जाता था।

कहावत उस समय लागू होती है जब कोई घर का सदस्य या बाहरी ही आदमी क्यों न हो, किसी बचाई हुई वस्तु का दुरुपयोग करे या आमदनी से ज्यादा खर्च करे तो कहावत कही जाती है।

अ०– बनिया बेचारा तो एक–एक परी तेल–घी बटोर–बटोर कर इकट्ठा करता है और रहिमान सरीखे लोग पांच परी जमीन में ही गिरा देते हैं।

'बर न विवाह, छट्ठी क धान कूटै ।'

श०– बर–लड़का, विवाह के लिए दूल्हा। छट्ठी जो संतान जन्म के छठे दिन मनाई जाती है, यानी नवजात बच्चे की छठी। जब कार्य में विलम्ब हो, उसका कहीं नाम–निशान भी नहो तब भी मारे उत्सुकता के भविष्य की सुखद कल्पना मे सारे कामों को कर डालना, अधिक जल्दबाजी में कार्य करने पर व्यंग्य के रूप में कहावत चरितार्थ की गई है।

अ०– न कहीं अभी तक लड़के का अता–पता है न शादी–विवाह होने की संभावना ही है मगर नाती होने की उत्सुकता में पहले से ही छट्ठी मनाने के लिए धान कूटकर चावल निकाला जा रहा है।

'बड़े–बड़े बहा जांय, गदहा कहे केतना पानी?'

जिस काम में बड़ों की बुद्धि न लग पाये उसे मूर्ख व साधारण आदमी क्या कर पायेगा? कहावत उसी पर कही गई है।

अ०– बड़े–बड़े तो पानी के बहाव में बहते चले गये, और गधा पानी की थाह लेना चाहता है कि कितना पानी है?

'बइठे से बेगारे भली।'

जब कोई आदमी बिल्कुल बिना काम के हरदम बैठा रहे तो कहावत चरितार्थ की जाती है।

अ०– खाली बैठे रहने से कहीं भला है कि किसी काम को करे चाहे वह बेगार ही क्यों न हो। भले उसे पैसा न मिले मगर खाली बैठने से तो अच्छा ही है।

'बलिराज बाप के, उत्तम भतार के,
थोरथार बेटवा के, अधम दमाद के।'

श०– बलिराज–राजा बलि की तरह का सबसे अच्छा राजा। उत्तम–बढ़िया। अधम–सबसे बुरा, निकृष्ट।

कहावत उस समय कही जायेगी जब किसी कन्या या स्त्री को उसके गृहस्थ जीवन के सुखों की व्याख्या की जायेगी कि स्त्री जीवन में कहां कितना सुख उसे किसके द्वारा मिल सकता है?

अ०– कन्या के जीवन में सबसे सुखकर बाप के राज में होता है। उसके बाद उत्तम, समय पति के साथ होता है। पुत्र के काल में थोड़ा–बहुत सुख संभव होता है और दामाद के समय में कोई सुख की उम्मीद नहीं करनी चाहिए। वह समय सबसे बुरा समय होता है।

'बलई आपन घोड़ी पायेन,
सहिबाला बनय से बाजि आयेन।'

श०– बलई–नाम है। सहिबाला–दूल्हे के साथ ससुराल जाते समय डोली में एक साथी के रूप में लड़का बैठाला जाता था जिसे सहिबाला कहा जाता था।

कहावत उस समय कही जाती है जब किसी आदमी ने अपना सामान कहीं किसी को दिया हो और उसे भय हो कि कहीं सामान खराब न हो जाय या खो न जाय।

अ०– बलई अपनी घोड़ी सुरक्षित पा गये, उन्हें सहिबाला नहीं बनना है।

'बदरी के बहुरिया, कलेवै न खाय।'

श०– बदरी–बादल, बरसने के समय आकाश का अंधेरापन। बहुरिया–बहू–दुल्हन। कलेवा–नाश्ता।

कहावत उस समय कही जाती है जब किसी कारणवश समय का ध्यान न रहे या धोखे में कोई काम होने से रह जाय।

अ०– आकाश में बादलों के छा जाने के कारण इतना अंधेरा छाया है कि नववधू सोचती है कि अभी तो बहुत ज्यादा सबेरा है, अभी कैसे कलेवा खा लूँ?

'बनिया देय काठ कि बनिया देय खाट'

श०– काठ–डंडा करना। खाट–बीमार होने पर।

कहावत व्यवसायीजनों पर कही गई है कि वे कंजूस होते हैं। तथा पैसे को किस प्रकार से दांत से पकड़ते है?

अ०– बनिया से या तो काठ मारकर पैसे वसूल करो या फिर वह मरणासन्न हो तो पैसे देगा उसके पहले नहीं देगा।

'बसीकरन एक मंत्र है, तजि दे वचन कठोर।'

श०– बसीकरन– यह एक प्रकार का मंत्र होता है जिसको पढ़ने से जिस आदमी को चाहे अपने वश में कर ले। तजि–छोड़ना। वचन–बोलना। कठोर–कड़े, कर्कश।

कहावत रूखे व कठोर वाणी के बोलने के प्रति उद्धृत की गई है।

अ०– वशीकरन ऐसा मंत्र है जो सबको वश में करता है। वह है मीठा बोलना। अपनी जबान से कटु वाक्य न कहना।

'बड़े भाग मानुष तन पावा।'

अ०– योनियां ८४ लाख हैं उसमें सबसे भाग्यवान वह है जिसने मनुष्य का शरीर पाया है। इसलिए कहा गया है कि मनुष्य का जन्म बड़े भाग्य से मिलता है।

'बर्रै बालक एक सुभाऊ।
इनहिं न संत बिदूषइ काऊ।।'

यह पंक्ति गोस्वामी जी की है। किसी भी बालक की चंचलता को देखकर लोग इस पंक्ति को उपदेशात्मक रूप से कह देते हैं।

अ०– बर्रै व बालक का एक ही स्वभाव होता है। ये अनजान जीव हैं जैसे बर्रै कहीं भी बैठने पर डंक मार देती है वैसे ही बच्चे बिना अपना पराया देखे हुये शरारत कर बैठते हैं जिसे सज्जन पुरुष बुरा नहीं मानते हैं।

'बउरंहवा के भंइस बिआन,
सारा गांव दोहनी लै के दउड़ा।'

श०– बउरहवा– बेहद सीधे आदमी के लिये प्रयोग किया गया है। बिआन– पैदा होना या भैंस का बच्चा होना। दोहनी– जिसमें दूध जाता है वह हांड़ी या मटकी।

कहावत ऐसे समय पर कही जाती है जब किसी सीधे–साधे आदमी को बेवकूफ बनाया जाता है। वह लोगों से अपनी सिधाई के कारण कुछ बोल नहीं पाता और लोग उसे बेवकूफ समझकर उससे फायदा उठाने की फिराक में रहते हैं।

अ०– गांव में बउरहा अर्थात् कोई सीधा–सादा आदमी, जिसकी भैंस ने बच्चा दिया था तो लोग उसके यहां रोज ही अपनी मटकी लिये दूध के लिए पहुँचे रहते थे।

'बहुत मयानी पितिया सास
कंडा लैके पोंछें आँस।'

श०– पितिया सास–चचेरी सास। कंडा–उपले। आंस–आंसू।

कहावत उस समय कही जाती है जब किसी का मोह भी चिढ़ाने के लिए हो या दिखावटी हो। आंसू कहीं कंडे से पोंछे जाते हैं?

अ०– बहू से चचिया सास ने बड़ा प्रेम दिखाया तो किसी कपड़े या अपने आंचल को कौन कहे कंडा लेकर आंसू पोंछने लगीं। आराम के बदले और भी कष्ट पहुंचाना।

'बद अच्छा, बदनाम बुरा।'

अ०– जो बुरा हो वह तो बुरा है ही मगर जो बुरा न हो उसका नाम बुरे-लोगों में होना यह और भी बुरा है।

'बहुत चलै सो बीर न होई।'

कोई आदमी जब बहुत तेजी से काम करता है या समझता है कि किसी काम को समय के पहले कर लेंगे तो उसका काम बन जायेगा।

बहादुर वह नहीं है जो ज्यादा भाग कर थक कर बैठ जाय, बहादुर वह है जो कार्य को समय से सिद्ध कर ले जाय। भले ही कार्य में कुछ देर ही हो जाये।

'बदरी–बदरी होइगै सांझ,
फूहर जानी भा भिनसार'।

यह कहावत किसी फूहड़ स्त्री के प्रति कही गई है जो सांझ के समय के आकाश के घिरे बादलों को देखकर सुबह होने का अंदाज लगाती है।

'बड़े घाघ के हिस्सै नहीं।'

जब किसी विशेष अवसर पर किसी सदस्य या प्रियजन के लिये खाने–पीने की वस्तु में हिस्सा लगाने में भूल हो जाती है तो कहावत चरितार्थ की जाती है।

अ०– जो सबसे बड़े गण्यमान हैं उनका तो हिस्सा ही न लगा। भूल व लापरवाही के प्रति कहावत कही जाती है।

'बहू अइहै– बहू अइहै, खाबै लटीपटा,
बहू क बदन देखि के मोहे लागय चटीपटा।'

श०– लटीपटा– स्वादिष्ट।

कहावत पारिवारिक नाउम्मीदों के प्रति कही गई है, विशेष कर अपनी पुत्रवधू यानी लड़के स्त्री के प्रति लागू की गई है।

अ०– सास सोचती है कि बहू आयेगी तो उसका बनाया बढ़िया–बढ़िया व्यंजन खाऊंगी, बहू सेवा करेगी। मगर बहू ऐसी आई कि सारी आशा पर पानी फिर गया। उसको देखकर मन में क्रोध की भावना उत्पन्न हो जाती है।

'बगल मां बिटिया गांव गोहार।'

श०– बगल मां–पास ही में। गांव–पूरे गांव, आबादी भर में। गोहार–चिल्लाहट।

कहावत उस समय लागू होगी जब पास ही रखी चीज के लिये तमाम दूर तक चारों ओर शोर मच जायेगा और वस्तु मिलेगी कहीं अपने ही पास में रखी।

अ०– बगल में यानी कि गोदी में या अपने पास ही में अपनी कन्या को सुला रखा है और सारी जगह ढूंढ़ने को लोग जा रहे हैं। अपनी भूल पर कहावत कही गई है।

'बहुती मिठाई गुर लिटहा होत।'

बात चाहे कितनी भली ही क्यों न हो मगर अधिकता किसी भी बात व वस्तु की बुरी है। किसी ने कहा है

'अति परिचय से होत है, अती अनादर भाय,
मलयागिरि की भीलनी चंदन देत जलाय।'

यानी मलयागिरि की भीलनी चंदन की लकड़ी से खाना बनाती है। उसकी कोई कीमत नहीं लगाती।

'बक्र चंद्रमा ग्रसहिं न राहू।'

श०– बक्र–टेढ़ा। ग्रसहि–निगलना। राहू–एक ग्रह।

यहां पर कहावत दुष्ट व असज्जन व्यक्ति के ऊपर कही गई है।

अ०— चंद्र ग्रहण हमेशा पूर्णमासी को ही लगता है। उस समय चंद्रमा पूर्ण होता है। जब चंद्रमा अपूर्ण रहता है तो ग्रहण नहीं लगता है। अतः टेढ़े आदमी से सब डरते हैं। वही सबका नुकसान कर सकता है, उसका नुकसान कोई नहीं कर सकता है।

'बड़र बखरिया क बड़ा मोहार,
आधा ढांका आधा उघार।'

श०— बखरिया—पहले के जमाने में जमींदार—रईसों के मकान को बखरी कहा जाता था। मोहार—आने जाने का मुख्य दरवाजा।

कहावत ऐसे बड़े घरों पर लागू की गई है जिनकी अंदरूनी दशा बहुत खराब, बाहरी दशा बहुत अच्छी हो। यानी जिन घरों में पुरुषों का बाहरी दिखावटीपन कहीं ज्यादा हो और अंदर की स्त्रियों की हालत खराब हो।

अ०— बड़ी व ऊंची बखरी के ऊंचे दरवाजे को देखा है जिसकी बाहरी दशा कुछ और है और अंदरूनी दशा कुछ और ही है। यानी आधे की इज्जत बनी और आधे की हालत बेहद खराब है। दो तरह का व्यवहार होना। देखने को तो बखरी का दरवाजा काफी ऊंचा और बड़ा है मगर अंदर औरतों की हालत दयनीय है।

'बर मरै चाहे कन्या,
पंडित को दछिना से काम।'

श०— बर—दूल्हा। कन्या—लड़की। पंडित— जो विवाह करवा रहा है।

कहावत स्वार्थपन पर कही गई है जिसमें अपना काम बनना जरूरी है किसी का काम बने या बिगड़े।

अ०— चाहे दूल्हा मरे चाहे दुल्हन विवाह कराने वाले पंडित जी को अपने पैसे से मतलब है।

'बर्रै के छत्ता मां के हाथ डारै?'

बर्रै के माध्यम से दुष्ट लोगों के प्रति लोकोक्ति कही गई है। वहां खतरा है कि हाथ डालते ही काट खायेगी, जिससे अत्यंत ही कष्ट होगा। उसी प्रकार से दुष्ट लोगों से भिड़ने में बड़े ही संकट का सामना करना पड़ता है।

अ०— जहां बर्रै का छत्ता ही लगा हो वहां किसकी हिम्मत है जो हाथ डालेगा? सभी डंक मारना शुरू कर देगीं।

'बखानी धिया डोम धरे जायं।'

श०— बखानी— प्रशंसित, जिसकी तारीफ की गई हो। धिया—पुत्री। डोम— जो मुर्दा जलाते हैं, जो दौरी, सूप आदि बनाते व बेंचते हैं। कहावत तब कही जाती है जब अत्यधिक लाड़—प्यार के कारण लड़की मनमाना एवं स्वच्छंद व्यवहार करती है। वह बिना विवेक के उलटे—सीधे सभी काम करती है।

अ०— बखानी लड़की डोम के घर जाती है।

'बहु बंसेव निरबंस, बिन बंसेव निरबंस।'

श०— बहु—बहुत। बंसेव— वंश, औलाद, पुत्र। निरबंस— बिना संतान के।

कहावत आमतौर पर उस समय कही जाती है जब अधिक संतान होने पर सभी नालायक निकल जाती हैं।

अ०— कहा गया है कि जैसे बिना पुत्र के लोग निर्वंश कहे जाते हैं वैसे ही ज्यादा लड़के होने पर भी इसलिये निर्वंशी कहलाते हैं कि उन लड़कों की नालायकी से बदनामी ही उठानी पड़ती है। इससे भला कि ऐसी औलाद न होती तब ही अच्छा था।

'बहावा ढीला हाथ नहीं अउतै।'

कहावत उस समय चरितार्थ होती है जब अवसर देखे बिना काम कर दिया जाय और उसका सुफल न मिले या कोई काम या बात अपने अधिकार से बाहर हो और उसमें कोई वश नहीं चल पाये।

अ०— हाथ से फेंका गया पत्थर जो दूर चला जाता है वह फिर हाथ में कभी नहीं आता।

'बड़ा कौर खाय लेय, बड़ी बात न बोले।'

जब लोग तमाम गप्पें हांकने लगते हैं, बढ़ा—चढ़ाकर बातें करते हैं तो कहावत उद्धृत की जाती है।

अ०— कोई बड़ा कौर यानी ग्रास कोई भले ही खाले

लेकिन बेकार की बड़ाई व गप्पें न हांकनी चाहिये।

'बउरान कुत्ता हन्ना खदेरै।'

श०– बउरान–बौखलाया। हन्ना–हिरन। खदेरै–दौड़ाना।

जब कोई कमजोर अपने से बलवान का मुकाबला या बराबरी करना चाहता है तो कहावत कही जाती है

अ०– कहां हिरन और कहां कुत्ता? कैसे कुत्ता हिरन को दौड़ा पायेगा? मगर वही बात है कि कुत्ता बौराया है जो उसे दौड़ा रहा है। वह भला हिरन की चाल को कैसे पायेगा?

'बनिया के बकुचा पर झींगुर बइठा।'

कहिस सब हमरय आय।'

श०– बकुचा–बजाजा। जब कोई आने–जाने वाले या नौकर–चाकर मालिक की जगह अपने को ही मालिक या अधिकारी समझने लगते हैं, या अधिक छूट के मिलने पर स्वयं को ही सब कुछ समझकर काम करते हैं तो कहावत उदघाटित की जाती है।

अ०– 'बनिया के बजाजा पर कहीं से आकर कोई झींगुर जा बैठा तो गट्ठर पर बैठकर वह मालिक बन बैठा और बोला–बजाजा हमारा है।

'बझिंनी क नाव छूट भले राम बन जइहै।'

नारी जीवन में पति–पुत्र के प्रति या किसी भी कमी के होने पर जो व्यंग्य या कटूक्तियां सुनने को मिलती हैं वह असहनीय हो जाती हैं। जिस स्त्री के कोई संतान नहीं होती उसे दुनिया बांझ कहकर ताने देती है और वह हीनता की नजर से देखी जाती है। कहावत ऐसे ही समय में उदधृत की जाती है।

अ०– राम के जन्म के बाद कौशिल्या जी यह जानते हुये भी कि राम वन जायेंगे यह सोचकर प्रसन्न हैं कि भले ही राम वन जायेंगे मेरा बांझ होने का नाम तो छूटा, अभागी कहने वाला तो अब कोई न होगा?

'बइठौं तोरी गोद, उखाड़ौं तोरी मोंछ।'

ज़बरदस्ती करने वाले लोगों के ऊपर कहावत कही गई है जो सिर पर सवार भी रहना चाहते हैं और अपने मनचाही ग़लितयां भी करना चाहते हैं।

अ०– तुम्हारी गोद में बैठेंगे और मूंछ भी उखाड़ेंगे यानी परेशान करके ठीक से रहने भी न देंगे।

'बयार चले ईसाना, ऊंची खेती करो किसाना।'

श०– बयार–हवा। ईसाना– ईषान कोण से, पूरब–उत्तर के कोने से। कहावत खेती संबंधी कही गई है।

अ०– ऐ किसान! जब पूरब उत्तर की ईशान कोण की वायु चले तो ऊंची जमीन पर खेती करना।

'बहुत करे सो और को,

थोड़ी करे सो आप।'

अ०– यदि कोई आदमी कोई भी काम अपने लिये करता है तो थोड़ा ही करता है और यदि ज्यादा करता है तो समझो कि अधिक काम का मतलब दूसरों के लिये भी कर रहा है। अपने साथ–साथ दूसरों के खर्च भी चला रहा है।

'बरद बेसाइन जाओ कंता,

कबरा कर जनि देखो दंता।'

श०– बरद–बैल। बेसाइन–खरीदने। कंता–पति। कबरा– वह बैल जिसकी आंखें सुंदर और पलकें महुवे के कोये के समान लाल तथा चिकनी हों।

अ०– बैलों को जब लेने जाओ तो हे पति! यदि उनकी आँखें सुंदर और महुए के कोये के समान लाल व चिकनी हों तो बिना दांत की परवाह किये हुये खरीद डालो।

'बरद बेसाहन जाओ कंता, खैरा कै जनि देखो दंता,

जहां परै खैरा कै खुरी, तौ करि डारै चापर पूरी

जहां परै खैरा के राल, बढ़नी ले के बुहारो सार।'

श०– खैरा–कत्था के रंग का। खुरी–खुर। चापर–चौपट। राल–लार, मुंह से निकलने वाला तरल पदार्थ। बढ़नी–झाड़ू। बुहारी–बहारो। सार–सरिया, जानवरों के रहने का स्थान।

कहावत बैलों की पहचान पर कही गई है।

अ०– जब बैल खरीदने जाओ तो ध्यान रखो कि कत्थई रंग के बैलों के दांत भी सही हों तो भी मत खरीदो, क्योंकि ऐसे बैलों के खुर जहां पड़ते हैं वहां

वे पूरी तरह से चौपट करके रख देते हैं। उनकी राल जहां–जहां गिरे वहां झाड़ू लेकर बहारते ही रहना होगा। ऐसे बैल बड़े ही अपशकुनी होते हैं। घाघ कवि का ऐसा विचार है।

'बड़ी छान बहुत चुवथ।'

श०– छान–सरपत की छान जो गांवों में लोग ओसारे में छवाते हैं। चुवथ–चूना, टपकना।

कहावत बहुधा बड़े आदमियों की घरेलू अव्यवस्था के प्रति छान के माध्यम से उद्‌घाटित की गई है।

अ०– बड़ी सी छान होने पर उसमें कहीं न कहीं ऐसी खामी हो जाती है कि वह जगह–जगह से टपकने लगती है क्योंकि उसके बनाने में लापरवाही होती है।

'बड़े–बड़े गयें तो चिथरू आयें।'

श०– चिथरू–दरिद्र।

जब किसी बड़े, गुणी, बुद्धिमान व्यक्ति के स्थान पर कोई दरिद्र व्यक्ति पहुंच जाता है तो कहावत कही जाती है।

अ०– जिस स्थान से बड़े–बड़े लोग चले गये, जिन समस्याओं को हल न कर पाये आज उस स्थान पर कोई महा निकम्मा आदमी आकर बैठा है।

'बरियार के पनही मूड़े पै।'

श०– बरियार– जबरदस्त। पनही–जूता। मूड़–सिर।

कहावत ऐसे लोगों के प्रति कही जाती है जो बड़े ही जबरदस्त होते हैं। नंगे उद्‌दंड लोगों से कौन भला आदमी न डरेगा? वह कब इज्जत उतारकर रख दें दस भले आदमियों के सामने, इसीलिये कहावत में जबरदस्त आदमियों से डरने के लिये कहा गया है।

अ०– जबर आदमी यदि जूता भी मारता है तो सिरमाथे पर।

'बड़ी भाग घर पाहुन आये।'

श०– पाहुन–मेहमान।

कहावत उस समय कही जाती है जब कोई मेहमान अपने घर आता है। पहले के जमाने में अतिथि का आना बड़ा कल्याणकारी व भाग्यप्रद माना जाता था। अतिथि सेवा का बड़ा ही महत्व था। लोग अतिथि सेवा को अपना परमधर्म समझते थे। विष्णु पुराण में लिखा है–

'अतिथि यस्य भग्नाशो गृहात्प्रतिनिवर्तते।,
स तस्मै दुष्कृतं दत्वा पुण्यमादाय गच्छति।'

अर्थात् जिसके घर से अतिथि निराश होकर लौट जाते हैं उसे वह अपने पाप देकर उसके शुभ कर्मों को ले जाते हैं। इसलिये अतिथि के आगमन में बड़ी शक्ति है। उसी पर कहावत चरितार्थ की गई है।

अ०– आतिथेय कहता है कि यह हमारा परम सौभाग्य है कि आप हमारे घर आये हैं।

'बड़ मनई चाहै ओद हगैं, चाहै गील।'

कहावत सम्पन्न व सम्भ्रान्त जनों के ऊपर कही गई है कि उन्हें कोई कुछ नहीं बोलने वाला है चाहे वे अच्छा –बुरा जो भी काम करें।

अ०– बड़े आदमियों का क्या है? चाहे पतला पाखना करें चाहे गीला कोई कुछ बोलने वाला ही नहीं है।

'बड़ मनई की बिटिया क पेट बड़ा,
छोट मनई की बिटिया क ठसक बड़ा।'

श०– बड़मनई–बड़े आदमी; छोट मनई– गरीब, दरिद्र। ठसक–नखरे, बड़े आदमी बनने का स्वांग।

अ०– खाये–पिये घर की लड़की की खाने पीने में ज़बान तेज़ होना स्वाभाविक ही है क्योंकि वह हमेशा बढ़िया खाना खाया करती है तो उसे मामूली व रद्दी खाना नहीं पसंद आता है। इसलिये वह अच्छा से अच्छा भोजन चाहेगी। इसी प्रकार से छोटे आदमियों के घर में खाने–पीने का कोई स्तर तो होता नहीं, उसके घर की लड़की जो भी कहीं देखकर आती है वह उसी बात की नकल करने लग जाती है। समझती है कि तरह–तरह के नखरे दिखाने आदमी बड़ा बनता है। अतः वह अपनी ऊपरी चाल–ढाल, चमक–दमक–ठसक में रह जाती है।

'बड़े बर्तन का खुरचने बहुत होथ।'

श०– खुरचन–करौनी, कड़ाही या भगोने के पेंदे में

जो सामान लग जाता है। कह.वत बड़े लोगों के प्रति कही गई है या जहां पर वस्तु अधिक हो वहां उसकी थोड़ी सी मात्रा भी पर्याप्त होती है।

अ०– बड़े बर्तन में यदि कोई चीज चूल्हे पर बनाई गई है तो उसका सामान निकालने के बाद भी नीचे जो कुछ बचता है वही काफी निकल आता है। इसी प्रकार से बड़े आदमियों के हाथ से थोड़ा सामान भी अधिक हो जाता है।

'बगल मां तोसा, मंजिल पे भरोसा।'

श०– बग़ल–पास में। तोसा–खाने, पीने का सामान।

कहावत यात्रा के समय अपने पास पर्याप्त खाने–पीने का सामान व सुविधा होने पर कही गई है।

अ०– यात्रा में कहीं जाते समय यदि अपने पास भोजन पर्याप्त है तो मंजिल यानी जहां तक जाना हो बड़े आराम से पहुंचा जा सकता है।

'बकरी दूध दिहिस, मुल मेंगनी डालके।'

श०– मुल–लेकिन। मेंगनी–बकरी की लेंड़ी।

जब कोई किसी को कोई सामान दे या कहीं से कुछ मिल जाये किन्तु वह इतनी खराब या बेकार की वस्तु हो कि उसका इस्तेमाल ही न हो पाये तो कहावत चरितार्थ की जाती है।

अ०– बकरी के दूध देने से लाभ ही क्या कि उसमें उसने अपनी लेंड़ी डाल दी। वह किस काम का दूध हुआ जो इस्तेमाल के लायक नहीं और उसके देने से फायदा ही क्या हुआ?

'बनिया कै पैलगी बेगर्जू नहीं होत।'

श०– पैलगी–प्रणाम, नमस्कार। बेगर्जू–बिना गर्ज के, बिना मतलब या स्वार्थ के।

कहावत गर्जमंदों के प्रति कही गई है।

अ०– बनिया जब भी पैलगी करता है तो उसकी गर्ज उसमें अवश्य रहती है।

'बनिया पुत्र जाने कहा
गंठ लेव की घात'

श०– गंठ–गांठ, गठरी। घात–दांव पर चढ़ना, घात लगने पर।

कहावत बनिये के पुत्र के ऊपर कही गई है जिसमें उसके दो काम बतलाये गये हैं।

अ०– बनिया का बेटा दो काम जानता है या तो गांठ ढोना या फिर अपने दांव में रहना। उसे तो अपने पेशे की बात आती है। उतार–चढ़ाव लाभ–हानि में दांव से काम लेना।

बहुती मिठाई कीरा परथ।'

कहावत दोस्ती या मेल–जोल अधिक बढ़ाने पर कही गई है कि प्रेम व्यवहार बनाने की भी सीमा होती है।

अ०– जो वस्तु अधिक मीठी होती है उसमें कीड़े पड़ जाते हैं वैसे ही अधिक दोस्ती बढ़ाने पर भी दुश्मनी होने की संभावना हो जाती है। कहा है 'अति सर्वत्र वर्जयते।'

'बसै बुराई जासु तन ताही को सनमान,
भलो–भलो कह छांड़िये, खोटे ग्रह जप दान।'

इस दोहे को लोग कहावत के रूप में भी कहा करते हैं।

अ०– जो टेढ़ा आदमी होता है उसी से सब डरते हैं गोस्वामी तुलसीदास के शब्दों में–

'टेढ़ जानि संका सब काहू, वक्र चंद्रमहि ग्रसै न राहू।'

टेढ़े आदमियों से सभी डरते हैं और सीधे लोगों की लोग कोई परवाह ही नहीं करते। उसी प्रकार खोटे ग्रहों को जप–तप करके शांत करते हैं और अन्य ग्रहों को कोई नहीं पूछता।

'बर्‍रय कोदो सेर बोवावै, डेढ़सेर लौं तीसी नावै,
डेढ़ सेर बजरा, बजरी, सांवां, कोदों काकुन सवइय्या बोवावै।'

श०– बर्‍रय, कोदों, बजरा–बजरी, सांवा, काकुन सभी अनाज मोटे अनाजों में आते हैं। सवइय्या–सवा सेर।

कहावत खेती विषयक है जिसमें यह बताया गया है कि कितने बड़े खेत में कितना बीज बोने पर अनाज की उपज अच्छी होगी।

अ०– बर्रे, कोदो एक बीघे में सेर भर। अलसी डेढ़ सेर और बाजरा, बजरी, सांवा, कोदो, काकुन आदि के बीज सवा सेर बोआने पर खेती अच्छी होती है।

'बनिया क सखर, ठाकुर क हीन, वैद क पूत व्याधि नहिं चीन्ह
पंडित क चुप चुप, बेसुआ कमइल, कहै घाघ पांचो घर गइल।'

श०– सखर–खरा, सच बोलने वाला। हीन–दीन हीन कमजोर। पूत–पुत्र। बैद–दवा करने वाला। व्याधि–रोग। चीन्ह–पहचानना। पंडित–पूजा पाठ कराने वाला ब्राह्मण। बेसुआ– वेश्या। मलिन–गंदी। गइल–नष्ट हो गये।

कहावत उपरोक्त लोगों के स्वभाव के ऊपर कही गई है।

अ०– घाघ कवि का कथन है कि यदि बनिया का पुत्र खरा हुआ, वैद्य के पुत्र को रोग की पहचान न हो ठाकुर के पुत्र में वीरता के बजाय कमजोरी हो, पंडित का पुत्र वक्ता न होकर चुप रहे, तथा वेश्या सज–धज के रहने के बजाय गंदी बदरूप रहे तो पांचों की रोज़ी रोटी नहीं चल सकती है।

'बड़सिंगा जनि लीजो मोल,
कुयें में डारो रूपया खोल।'

श०– बड़सिंगा–बड़ी सींग का बैल। कहावत बैलों के प्रति कही गई है।

अ०– बड़ी सींग वाला बैल भूलकर भी न खरीदना चाहिये बल्कि रुपया कुयें में डाल दो वह अच्छा है।

'बड़ी कमाई पर नौ दोना पहिती।'

श०– कमाई–आमदनी। पहिती–पकी हुई दाल।

कहावत उस समय की है जब मामूली घरों में रूखा–सूखा भोजन ही परिवार को मिल पाता था। यह पारिवारिक अभाव के विषय में है।

अ०– किस कमाई पर दाल खाने को दे दूं? यानी कि खर्च के लिए पैसा घर में चाहिये। कौन सा पैसा देकर गये थे जो दाल मंगवा कर पहिती बनाती।

'बहरेन–बहरेन क कोवा फोरत अहै।'

जब कोई आदमी घर से परदेश जाता है और बहुधा परदेश में ही जिसका रहना होता है, अपने देश में कम ही आना हो पाता है तो कहावत कही जाती है।

अ०– बाहर ही बाहर रहना होता है।

'बनै दिन क साथी सबै होत।'

अ०– अच्छे दिन में सभी साथ देते हैं। किसी ने कहा है–

'बिगड़े भाय न बिगड़े बंधु, बिगड़े बैल न रोके पंथ।'

अतः बिगड़े दिनों का साथी कोई नहीं होता।

'बहिन रोंवइयै रहीं, कि भइयो आयगे।'

किसी कार्य को करने में जब कोई बहाना या मदद मिल जाय तो कहावत कहते हैं।

अ०– बहिन को रोना तो था ही मगर चलो इज्ज़त रह गई कि भाई आ गया तो रोने का सही बहाना मिल गया।

'बहता पानी बहि जइहै, थिरिवाही पानी रहि जइहैं।'

श०– बहता पानी–बहने वाले पानी, ऊपरी जल, अधिक जल। थिरवाही, पानी जो थिर हो, जलाशय के तल में हो।

जब किसी के घर में किसी अन्य के कारण कलह हो जाय तो कहावत कही जाती है।

अ०– बहने वाला पानी तो सदैव बहता जाता है और स्थिर पानी ही रह जाता है। अतः कुछ परिस्थितियां जीवन में भी अस्थाई होती हैं जो समयानुसार स्वयं ही समाप्त हो जाती हैं।

'बर से ब्याह, बरद से खेती होत।'

अ०– वर से ही ब्याह होता है और बैल से ही खेती होती है, इसलिये दोनों ही बहुत सोच–समझकर पसंद करना चाहिये।

'बछड़ा खूंटे के बल कूदत है।'

अ०– कोई छोटा आदमी बिना किसी बड़े के सहारे के कभी नहीं बोल सकता है। जैसे बछड़ा जब खूंटा मज़बूत गड़ा हो तो तभी उछल–कूद मचाता है।

'बड़े चोर क हिस्सय नाहीं।'

अ०– उसके दो अर्थ हैं पहला यह कि बड़ा चोर अपना हिस्सा पहले ही ले लेता है। दूसरा यह कि जिसको सबसे ज्यादा मिलना था उसका हिस्सा ही न लग पाया।

'बद बदी से न जाय तो नेक, नेकी से भी न जाय।'

श०— बद–बुरा। बदी–बुराई करना। नेक–अच्छा आदमी। नेकी–अच्छा काम।

अ०— बुरा आदमी यदि अपनी बुराई को न छोड़े तो अच्छे आदमी को भी अपनी अच्छाई कभी नहीं छोड़नी चाहिए।

'बदरी में दिन न दीसै, फूहर बइठी पीसै।'

कहावत फूहड़ स्त्रियों के ऊपर कही गई है।

अ०— बदली होने के कारण दिन का पता न लगने के कारण मूर्ख स्त्री बैठी हुई जांता चलाकर अनाज पीसती जा रही है।

'बनि आई कुकुरै कै, जे चढ़ा मियाना जाय।'

कहावत नीचों, अनपढ़ लोगों के सम्मान मिलने के प्रति कही गई है।

अ०— धन्य भाग उस कुत्ते का जो जाकर पालकी में बैठ गया।

'बन लीन बिलारी, तो मूस कहय 'जोय हमारी।'

श०— बन–जंगल। जोय–स्त्री, पत्नी।

घर के बड़े लोगों के कहीं चले जाने पर या न रहने पर छोटे लोग किस प्रकार से स्वतंत्र होकर अनाप–सनाप बोलते हैं, कहावत इसी पर कही गई है।

अ०— जब बिल्ली वन की ओर चली गयी तो मूस ने कहा कि 'वह तो मेरी स्त्री लगती थी। 'छोटे लोग घर में किस प्रकार की आजादी पाते हैं, यह कहावत से स्पष्ट होता है।

'बन बालक, औ भैंस, उखारी,
जेठ मास में चार दुखारी।'

श०— बन–कपास का खेत। उखारी–ईख का खेत।

अ०— कपास व ईख का खेत, भैंस और बच्चे ये चारों गर्मी के कारण बेहद परेशान रहते हैं।

'बनिया मारे जान, ठग मारे अनजान।'

श०— जान–प्राण। अनजान–बिनाजाने। ठग–जो दूसरों का माल धोखे से ले लेते हैं।

अ०— ठग से भी बनिया बुरा होता है क्योंकि ठग तो अनजाने के साथ ठगी करता है मगर बनिया तो जाने समझे लोगों के साथ ठगी कर लेता है।

'बनिये का जी धनिये के बराबर।'

अ— बनिये का ह्रदय धनिया जैसे छोटा होता है। वह थोड़े से घबड़ा जाता है।

'बहिरे के आगे गाना, गूंगे के आगे गल्ल।
अंधेरे के आगे नाचना, तीनों अल बिलल्ल।'

कहावत ऐसे लोगों के प्रति कही गई है जिनके आगे वह काम करना ही व्यर्थ है। ऐसे मूर्खों पर कथनी कही गई है।

अ०— जो बहरा हो उसके आगे गाना, गूंगे के सामने किसी बात का उत्तर चाहना और अंधे के आगे नाचने से क्या लाभ होगा?

'बहिन के घर भाई कुत्ता, ससुरे जंवाई कुत्ता
कुत्ता पाले वह कुत्ता, सब कुत्तों का वह सरदार जो बाप रहे बेटी के बार।'

श०— ससरे–ससुराल। जंवाई–दामाद। सरदार–बड़ा। बार–घर।

कहावत बेज्ज़ती के ऊपर कही गई है। कहा किसको नहीं रहना चाहिए, इस कहावत से स्पष्ट है।

अ०— बहिन के घर भाई की इज्ज़त कुत्ते की तरह होती है। ससुराल में रहने पर दामाद की, जो कुत्ता पालने वाले होते हैं उनकी जिन्दगी भी कुत्ते की तरह बीतती है तथा सभी कुत्तों के सरदार वे बाप हैं जो अपना जीवन बेटी के घर व्यतीत करते हैं।

'बहुत उपद्रवी जिव का काल।'

अ०— जो रोज़–रोज़ लड़ाई–झगड़े मचाये रहते हैं, असामाजिक काम करते हैं वे जान की आफ़त हो जाते हैं।

'बहुत सोना दरिद्र कै निसानी।'

अ०– जो व्यक्ति बहुत ज्यादा सोता है उसके घर में दारिद्रय रहता है।

'बने क सौ सार, बिगड़ी क एक बहनोइव नांय।'

श०– बने–अच्छे दिन। सार–पत्नी का भाई। बिगड़े–बुरे दिन। बहनोई–बहिन का पति।

कहावत अमीरी व ग़रीबी पर उद्धृत की गई है।

अ०– जब दिन अच्छे होते हैं तो सभी अपनी बहिन ब्याहना चाहते हैं। तमाम साले ही साले बनने को तैयार रहते हैं और जब दिन ख़राब होते हैं तो कोई भी बहनोई बनने से कतराता है कि ग़रीब की बहिन के साथ कोई क्यों शादी कर ले?

''बकुला धोबी क भाई।'

जब दो समान स्थितियों की तुलना दी जाती है तो कहावत कही जाती है।

अ०– बगुला और धोबी दोनों ही पानी में रहने वाले हैं तो बगुला का भाई धोबी को बताया गया है।

'बच्चा क खवावै दूध औ भात,
बड़े भये पर मारय लात।'

जब किसी बच्चे से लोग निराश हो जाते हैं, वह कहना नहीं मानता या फिर अनचाहे काम करने लग जाता है तो कहावत चरितार्थ की जाती है।

अ०–बच्चे को बड़े लाड़–प्यार से पालो–खिलाओ–पिलाओ, मगर जब वह बड़ा हो जाता है तो मां–बाप की एक नहीं सुनता है।

'बड़ा जाने किया, बच्चा जाने हिया।'

कहावत सिद्धांतवादी है।

अ०– बड़ा आदमी तो अपने साथ किये गये कार्यों का स्मरण कर किसी से संबंध रखता है मगर छोटा बच्चा बड़ों का प्रेम पाता है तो उन्हीं के पास जाता है।

'बड़ी ननद सैतान की छड़ी, जब देखो तब तीर सी खड़ी।'

कहावत ननद के प्रति भौजाई की है।

अ०– बड़ी ननद बड़ी शैतान है। जब देखो डाटने, डपटने, रौब दिखाने में आगे ही तीर की तरह खड़ी रहती है।

'बड़ी बहू बड़ा भाग, छोट दुलहा बड़ा सोहाग।'

अ०– जब किसी की बहू अपने दूल्हे से उम्र में बड़ी होती है तो लोग तसल्ली देने को कहते हैं कि बहू यदि दूल्हे से बड़ी है तो बड़े सौभाग्य की बात है उसका सोहाग भी बड़ा होता है।

'बड़े घर पड़्यो तो पत्थर ढो–ढो मर्‌यो।'

अ०– कहने को बहू बड़े घर में पड़ी मगर उसे काम इतना करना होता है कि वह ऊब जाती है।

'बड़े क समुझाउब औ अंवरा क खाब बाद मं मिठात।'

कहावत सिद्धांतवादी है जो स्वाभाविक है।

अ०– बड़ों का समझाना और आंवला का खाना उस समय तो बहुत बुरा लगता है मगर जब कोई समस्या सामने आती है तो बड़ी सही बात मालूम होती है। उसी प्रकार से आंवला खाने में पहले तो कसैला लगता है मगर बाद में पानी–पीने पर मीठा लगता है।

'बड़ा बिस बिखधर के चलत है सीस नवाय,
थोड़ा बिस बीछी के चलत है दुम अलगाय।'

कहावत लोग थोड़ी वस्तु को पाने पर या अधिक अभिमान के प्रति कही गयी है।

अ०– सर्प के पास अधिक ज़हर होता है मगर वह सिर झुकाकर चलता है और बिच्छू के पास थोड़ा ही विष होता है वह आंड़े को उठाकर चलती है। अपनी वस्तु कम होने के बाद भी उसे कितना अभिमान रहता है?

'बदन मं जोर नाहीं नाव जोरावर सिंह।'

अ०– शरीर में ताक़त नहीं है नाम पड़ा है जोराव। कहावत व्यंग्य में कही गई है।

'बदन प लत्ता नहीं, पान खाय अलबत्ता।'

अ०– कहावत ऐसे आदमी पर व्यंग्य में कही गई है

जिसके खाने–पहनने का ठिकाना नहीं है मगर पान की इतनी ललक कि बिना खाये रहा ही नहीं जाता।

'बन क पात बनहिं मां खड़िका, केलि करत बारी क लड़िका।'

जो जहां भी रहता है, जिसके पास जो साधन होता है वह उसी में अपना जीवन बिताता है।

अ०– कहते हैं कि बन का पत्ता बन में ही गिरता है, खड़कता है और उसमें जाने वाला बारी का लड़का पत्तों से ही खेलता है।

'बनज करि सकय बनिये और करेंगे हीन,
बनज करा था भाट ने रहिगे, सौ के तीन।'

श०– बनज–व्यापार। सौ के तीन– घाटा होना। भाट– जो गाते–बजाते हैं।

अ०– कहावत पेशे के संबंध में कही गई है कि 'जिसका काम उसी को भाता है। व्यापार बनिये ही कर सकते हैं। व्यापार किसी भाट ने किया तो उसका सबकुछ घाट़े में चला गया।

'बैल एक गांव दुइ जोत, केहि विधि होय, लागिगा पोत।'

श०– जोत– जमीन की जोताई। पोत–किसान को भूस्वामी को लगान देना पड़ता है उसे पोत कहा जाता था।

कहावत साधन की जब कमी हो, गरीबी के कारण सामान न होने पर कठिनाइयां होती हैं तो कही जाती है।

अ०– बैल पास में एक है और खेत दो गांवों में है तो कैसे जोताई, बोआई हो? उस पर ऊपर से पोत भी देना पड़ेगा। किस प्रकार से काम चले?

'बरसात बर के साथ भल होत।'

कहावत किसी नई नवेली दुलहन के प्रति कही गई है। बरसात में एक नई दुलहन की इच्छायें उमंग, रंगीनियां, किस प्रकार से अपने पति के साथ रहने को कहती है?

अ०– बरसात अपने 'बर' यानी पति के साथ ही भली लगती है। उस समय का प्रकृति दर्शन, हरियाली, बादलों की उमड़–घुमड़, बिजली की चमक, रात भर का मेह किस प्रकार नायिका के मन को उद्वेलित करते हैं, यह तो नवदम्पति ही बता सकते हैं।

'बरसे सावन तौ होय पांच क बावन।'

अ०– सावन की वर्षा खेती के लिये लाभकर होती है।

'बसब सहर के, खेत नहर के।'

अ०– दोनों ही अपनी–अपनी जगह भले लगते हैं। यानी बसना तो शहर में ही अच्छा लगता है और खेत नहर के किनारे कि ठीक से सिंचाई का साधन भी रहे।

'बर का न मिले भूसा, बराती मांगे चिउरा।'

कहने का मतलब है कि जो उस समय खास व्यक्ति है उसकी तो कोई इज्जत ही नहीं, दूसरे लोग अपनी इज्जत के लिये परेशान हैं।

अ०– जो ब्याहने आया है दूल्हा उसको तो लड़की वाले घास तक नहीं डाल रहे हैं और बराती परेशान हैं कि उन्हें चिउड़ा क्यों नहीं मिला?

'बने तो भाई नहीं दुश्मनाई।'

किसी ने सही कहा है 'मन पटे का मेला, नहीं तो रहै अकेला।' यही कहावत भी है।

अ०– यदि आपस में पटती है तो भाईचारा, नहीं तो कोई संबंध नहीं रह जाता।

'बनिया क बेटवा कुछ देख गिरै निचवा।'

बनिया का हर काम मतलब का होता है। इस कहावत के अंतर्गत एक कथा है।

'एक बनिये का लड़का सिर पर तेल का घड़ा लिये आ रहा था कि रास्तें में पैर फिसलकर गिर पड़ा। किसी ने उसके पिता से इस बात को बताया तो वह बोला–मेरा लड़का बेमतलब नहीं गिरा होगा उसने कोई चीज जरूर सड़क पर गिरी देखी होगी। बात सही निकली लड़के को एक अशर्फी सड़क पर मिल गई थी।

'बा'

'बाछा बैल, बहुरिया जोय,

ना घर रहै न खेती होय।'

श०– बाछा–बछड़ा। बहुरिया–बहू, लड़के की स्त्री। जोय–पत्नी, स्त्री।

कहावत नये बैल, व घर में आई नई बहू के प्रति उद्धृत की गई है।

अ०– कहा गया है कि यदि बछड़े को बैल बनाकर खेती करना चाहे तो जोतने के समय वह खेत में टिक न पायेगा और न खेती हो पायेगी। जमीन की जोताई ठीक न होने से खेती ठीक न होना स्वाभाविक है।

दूसरी बात बहू के प्रति कही गई है कि यदि कोई बहू न तो घर में रह पायेगी और न घर संभाल पायेगी।

'बाप न मारे पेढ़की, बेटा तीरंदाज।'

श०– पेढ़की–मेढक का स्त्रीलिंग मेघी। एक बहुत छोटी चिड़िया। तीरंदाज–निशाना लगाने वाला, तीर चलाने वाला।

कहावत किसी को नीचा दिखाने के प्रति कही गई है।

अ०– कोई आदमी किसी बड़े काम के लिये कोई बात कहता है या जिसका कभी अभ्यास न किया उसे करने की कोशिश करता है तो लोग उस पर व्यंग्य कहते हैं।

अ०– तुम्हारे बाप ने एक पेढ़की तक न मारी और तुम आज अपने को बड़े निशानेबाज, तीरंदाज समझते हो?

'बाप राज ना खाये पान,

दांत निकारै निकरा प्रान।'

या

उड़ि गई झोंटई रहिगा कान।

श०– बापराज– पिता के समय में। दांत निकारे–दांत दिखाते, खीस निकालते।

कहावत उस समय कही जाती है जब कोई आदमी जीवन में कोई सुख न पाये हो। अपने समय में भी कष्टों का सामना करता आया हो।

अ०– बाप के राज में जब बेफिक्री का जीवन था तब तो पान खाया नहीं, अब अपनी कमाई में खर्च के मारे सदा दांत निकालते, खीस काढ़े ही बीत रही है। कुछ लोग कहते हैं अपनी कमाई में तो झोंटई यानी चुटिया तो नुच गई अब बाकी बचे हैं कान।

'बासी बचै न कुत्ता खाय, अउंठा लेय अकबरसाय।'

श०– अउंठा–अगूंठा। अकबरसाय– अकबर बादशाह।

कहावत खाने–पीने की वस्तु को संतुलित रूप से बहुत नाप–तौल कर बनाने के प्रति कही गई है जो न तो कम पड़ी और न ज्यादा ही हुई।

अ०– न तो बासी बची और न इतनी अधिक थी कि कुत्ता ही खा पाता।

'बालू की भीत, ओछे की प्रीति थिर नहीं रहते।'

श०– भीत–दीवार। प्रीत–प्रेम। ओछे–नीच। थिर– स्थाई, हमेशा के लिये।

कहावत ऐसे व्यक्ति पर कही गई है जो छोटी बुद्धि का, नीच प्रकृति का हो, जिसका व्यवहार सही न हो धोखेबाज हो।

अ०– जैसे बालू की दीवार कभी भी नहीं रह सकती है वैसे ही किसी नीच कम, बुद्धिवाले धोखेबाज मनुष्य का प्रेम भी स्थाई नहीं रहता है।

'बार गा सिंगार गा, दांत गा स्वाद गा।'

श०– बार–सिर के बाल। सिंगार–श्रृंगार, शौक। सवाद–स्वाद, खाने का आनंद।

कहावत नारी प्रधान है। बाल स्त्री के मुख की शोभा है। जब सिर के बाल समाप्त हो जाते हैं तो नारी की सुंदरता बेकार हो जाती है। यानी बाल झड़ गये तो स्त्री का श्रृंगार समाप्त हो जाता है और जब बुढ़ौती में दांत गिर जाते हैं तो खाने का मज़ा ही खत्म हो जाता है।

'बात करै खरी, चाहे गोली लगै, चाहे छरी।'

श०– खरी–खरी, सही–सही। छरी–पत्थर या ईंट की बजरी। छोटी–छोटी कंकड़ी।

कहावत बात को कहने के प्रति कही गई है। बहुत से लोग ऐसे होते हैं, जो बात साफ और सही कहने और सुनने के आदी होते हैं। ऐसे व्यक्ति थोड़ा कटुभाषी ही हों मगर जो कुछ भी कहे–सुनेंगे वह सच व स्पष्ट कहेंगे।

अ०– बात को सही व स्पष्ट कहना चाहिए चाहे किसी को भला लगे चाहे बुरा लगे। उसके तन में, मन में चाहे गोली लगने की पीड़ा ही क्यों न हो मगर जो बात हो उससे हटना नहीं चाहिए।

'बासी भात तेवासी माठा, औ ककरी के बतिया।
आधी रात जुड़ावन आवै, भुंइ लै या कि खटिया।'

श०– बासी–रात का बना भात। तेवासी–तीसरे दिन का मट्ठा। जुड़ावन–जाड़ा। भुइं–जमीन।

कहावत स्वास्थ्य संबंधी है जो खाने–पीने के प्रति कही गई है।

अ०– किसी को बीमारी की हालत में या खाते देखकर स्वास्थ्य की चर्चा करते समय बात कही गई है कि बासी भात व तीसरे दिन का मट्ठा बासी पीने वाला और फूट खाने वाला आदमी अवश्य ही अस्वस्थ होता है। कहा गया है कि जो बासी भात व तीसरे दिन का मट्ठा तथा ककड़ी खाने वाले हैं उन्हें आधी रात को जाड़ा देकर बुखार आता है।

'बाप पूत बराती, माई धिया गौनहर।'

श०– पूत–पुत्र। धिया–कन्या, लड़की।

किसी मांगलिक अवसर पर जब लोग बहुत सीमित रूप से आते या रहते हैं तो कहावत चरितार्थ होती है।

अ०– बाप बेटा बराती बने हैं और मां बेटी गाने–बजाने वाली सोभइतिन बनी हैं।

'बासी पूड़ी ताजी दाल, जे खाय ते होय निहाल।'

कहावत खाने के प्रति कही गई है।

अ०– बासी– रात की रखी पूड़ी और तुरंत की बनी हुई ताजी दाल बहुत से लोग पसंद करते हैं और खाकर बड़े खुश होते हैं।

'बाप बटोरे कंडा, बेटा संकल्पे कंड़उर।'

श०– कंडा–उपले या उसके टुकड़े। कंड़उर– कंडों का ढेर, जहां पर कंडों का गोल घेरेदार ऊंचा सा बनाकर रखते हैं। संकल्पे–दान देना।

कहावत किसी को नीचा दिखाने पर व्यंग्य में या उसके घर की पुरानी दशा को जानने की कटूक्ति रूप में कही जाती है।

अ०– बाप की जिन्दगी बीत गई कंडे बिनते–बिनते और बेटा इतना बड़ा आदमी बना है कि कंड़ोर ही दान दिये डाल रहा है। यानी कि झूठी शान में औकात से ज्यादा खर्च किये जाना।

'बाप बड़ा ना मइय्या,
जग में सबसे बड़ा रुपइय्या।'

कहावत धन संबंधी है। आज इस कहावत का अत्यधिक महत्व सामने आता है क्योंकि आज का युग अर्थप्रधान है।

अ०– दुनिया में बाप बड़ा है न मां, यदि कोई भी बड़ा है तो केवल पैसा। जिसके पास लक्ष्मी है उसकी तूती बोलती है। वर्ना कहा है– 'ए छूछा तोहका के पूछा।' तो खाली हाथ वाले को कोई भी नहीं पूछता और न उसका कोई साथी ही होता है।

'बाटी कहै में आऊं–ताऊं, रोटी कहै मंजिल पहुंचाऊं,
भात कहै मैं हल्का खाना, मोरे भरोसे कहूं ना जाना।

कहावत उस समय लागू होगी जब कभी खाने–पीने की चर्चा चलती हो कि कोई वस्तु कितनी भारी व हल्की होती है।

अ०– बाटी–भौरी जो कंडे पर सिंकती है, वह कहती है कि मैं जल्दी ही पच जाती हूं, जो रोटी तवे पर बनती है उसका कहना है कि यदि कोई आदमी मुझे खाकर निकलते तो मैं उसकी यात्रा के पहुंचने तक पूरा साथ दूंगी क्योंकि जल्दी पचती नहीं और भात का कहना है कि यदि कोई मुझे खाकर घर से मेरे

भरोसे यात्रा पर निकले तो उसे धोखा ही होगा क्योंकि मैं इतना हल्का खाना हूं कि तुरंत पच जाता हूं। इसलिये भाई! मेरे भरोसे तो कहीं भी न जाना।

'बात गै तो जात गै।'

कहावत वचनबद्ध होने पर कही गई है।

अ०– यदि किसी की बात को पूरा करने की दृढ़ता न हो तो उसकी जाति भी बदनाम हो जाती है। अतः अपनी कही गई बात को पूरा करना वचनबद्ध पुरुषों का काम है।

'बातै हाथी पाइये कि बातै चार लात।'

अ०– मनुष्य अपनी बातों से चाहे तो हाथी पर बैठ जाय, पूरा–पूरा आदर सम्मान पाये और चाहे तो चार लात मारकर उस जगह से हटा दिया जाये।

'बाप धी राखै, पूतै साखी देय।'

श०– बाप–पिता। धी–लड़की। पूत–पुत्र। साखी–गवाही।

घर व समाज में कभी न कभी ऐसी भी अनहोनी बात घट जाती है जिसके कारण एक मछली सारा तालाब गंदा करने वाली कहावत चरितार्थ हो उठती है। ऐसी घटनायें कभी होती होंगी मगर कहावत के स्तर पर चूंकि समाज में देखी सुनी गयी हैं इसलिये लोग कह तो देते ही हैं।

अ०– पिता ने अपने कामुक स्वभाव से विवश होकर अपनी ही लड़की के समान वय लड़की से गलत संबंध जोड़ लिया यानी पत्नी बना लिया और उसका पुत्र इसकी गवाही दे रहा है कि उनका संबंध उचित है।

'बात गढ़े से रूखर होय,
काठ गढ़े से चीकन होय।'

श०– गढ़े– बनाने से, संवारने से। रूखर–खुरदरा। काठ–लकड़ी। चीकन–चिकनी, चमकदार।

कहावत बहुबक्कियों और लकड़ी की वस्तु के प्रति कही गई है।

अ०– अधिक बनाने की कोशिश करने से बात गड़बड़ा जाती है किन्तु लकड़ी की जितनी ही गढ़ाई हो, जितना ही रंदा चलाया जायेगा उतनी ही वह चिकनी और सुंदर होगी।

'बारे कै बांधी न होइत तौ गूदे खाइत।'

श०– बारे–बाल। बांधी–पकड़ी, बंधी। गूदे–गूदा, मांस।

अपनी विवशता या दूसरे की विवशता पर कहावत लागू होती है कि बंधन के कारण मजबूर है वर्ना वह क्या करता?

अ०– बालों में रहने वाली जूं कहती है कि यदि बालों ने मुझे बांधकर जकड़ न लिया होता तो मैं सिर के गूदे को भी खा जाती।

'बाहेर मिया छैल चिकनिया,
घरे मां बीबी बेंचै धनिया।'

श०– छैल चिकनिया–बने–ठने, ठाटबाट से रहना, साफ सुथरा व शौकीन।

जिन घरों की अंदरूनी दशा बेहद खराब हो और बाहरी रहन–सहन दिखावा कुछ और हो तो कहावत चरितार्थ होती है।

अ०– बाहर तो पति महोदय बने–ठने हुये घूम रहे हैं और घर के अंदर की दशा यह कि स्त्री धनिया, हल्दी, मिर्चा बेंचकर पेट की रोटी चला रही है। इसकी चिंता नहीं है कि बीबी की दशा को देखकर कोई क्या कहेगा?

'बोये बजरा आये पुक्ख,
फिर मनही मन जानो सुक्ख।'

अ०– यदि पुष्य नक्षत्र में बाजरा बोओगे तो बाजरे की पैदावार काफी अच्छी होगी जिससे मन को संतोष मिलेगा।

'बाड़ी में बाड़ी करे, करे ईख में ईख,
दे नर यों ही जायेंगे, सुने पराई सीख।'

श०– बाड़ी–कपास। ईख–गन्ना। पराई– दूसरे की। सीख–शिक्षा, समझाना।

कहावत दूसरे के सिखाने व ईख की खेती पर कही गई है।

अ०– कपास की खेती में कपास बोये और गन्ने के खेत में गन्ना बोये तो लाभ होता है। इसके अलावा कहा गया है कि जो अपने जनों की सिखलाई बात को छोड़कर दूसरे की सिखाई बात को सुनते हैं उनका घर बर्बाद हो जाता है।

'बाहे क्यों न अषाढ़ एक बार,
अब का बाहे बारंबार।'

कहावत खेती संबंधी है।

श०– बाहे–जोतें। बारंबार–बार–बार।

घाघ कवि का कहना है कि जब आषाढ़ मास में खेतों को जोतकर गेहूं के खेत की तरह नहीं बनाया तो अब तो समय निकल गया, अब क्या बार–बार जोत रहे हो? कोई लाभ न होगा। जोतना तो तब चाहिये था जब खेतों को तैयार करना था।

'बाली छोटी भई काहें, बिन असाढ़ की दो बाहें।'

अ०– खेतों में बालियों के छोटे होने का क्या कारण है? इसलिये कि आषाढ़ माह में बिना दो बार खेत को जोते ही बो दिया है, इसलिये बालियां छोटी हुई हैं।

'बादर ऊपर बादर धावै, कह भड्डर जल आतुर आवै।'

श०– आतुर–जल्दी। धावै–दौड़े।

यह कहावत कवि भड्डरी की है जो कि पानी बरसने के लक्षण पर कही गई है।

अ०– यदि बादल के ऊपर बादल चढ़ें तो समझो कि पानी बरसे बिना नहीं रह सकता है।

'बाढ़े पूत पिता के धरमे,
खेती उपजै अपने करमे।'

कहावत कर्तव्यपरायणता के ऊपर चरितार्थ की गई है।

अ०– पिता का किया गया धर्म–कर्म का पुण्य बेटे के ऊपर भलाई के रूप में उतरता है और खेती अपने कर्मों के द्वारा ही पैदा होती है।

'ब्राह्मन होय कि अगिन सब समूल जरि जाय।'

कहावत में ब्राह्मण व आग की तुलना की गई है। दोनों का तेज महान होता है।

ब्राह्मण हो या आग दोनों के प्रभाव से सारा दोष, दुर्गुण जलकर राख हो जाता है।

'बाप क जनमा पूत अन्यायी,
एहमा क टूटा बाढ़ी ओहमा जाई।'

श०– जनमा–पैदा किया। अन्यायी–गलत काम करने वाला। टूटा–बाढ़ी–ज्यादती।

कहावत बेटे की अच्छाई या बुराई को लेकर कही गई है।

कहते हैं कि बेटे में बाप का लक्षण होना स्वाभाविक है। उसमें कहीं कमी या ज्यादती भी जो होती है वह भी बेटे में आ ही जाती है।

'बायस पालहिं अति अनुरागा,
होय निरामिष कबहुं कि कागा।'

श०– बायस–कौवा। अति– अधिक। अनुरागा–प्रेम से। निरामिष–शाकाहारी। कागा–कौवा।

यह पंक्ति गोस्वामी तुलसीदास की है जिसको कि लोग किसी निकृष्ट व्यक्ति के प्रति उसकी आदतों को देखकर कहते हैं।

अ०– कौवा को कितने भी प्रेम से दूध, रोटी, मिष्ठान्न खिलाकर पालो मगर वह अपनी आदत के अनुसार बिना मांस खाये मान नहीं सकता। उसी प्रकार से नीच आदमी के साथ कितनी ही भलाई करो, कितने प्रेम से रखो वह अपनी गंदी, गलत आदतों से कभी भी बाज़ नहीं आता है। तुलसीदास जी के शब्दों में–

'नीच निचाई नहिं तजे, सज्जनहु के संग।
तुलसी चंदन बिटप बसि, विष नहीं तजत भुजंग।'

जिस प्रकार से चंदन के पेड़ पर सांप रहने पर भी उसकी शीतलता में अपना ज़हर नहीं छोड़ता, उसी प्रकार से नीच स्वभाव के दुष्ट लोग कितने भी भले, साधु लोगों के साथ रहें अपनी दुष्टता नहीं छोड़ते हैं। कवि बिहारी ने कहा है–

'कोटि जतन कोऊ करे, परे न प्रकृतिहि बीच,
नल–बल जल ऊंचो चढ़ै, अंत नीच के नीच।'

अतः कोई भी वह अपना स्वभाव नहीं छोड़

पाता। नल के बल से पानी ऊपर चढ़ता है किन्तु दबाव के कम होते ही वह पुनः नीचे की ओर बहने लगता है।

'बात लाख की, करनी खाक की।'

श०— लाख की— बहुत बड़ी–बड़ी बातें करना। खाक— मिट्टी के बराबर।

कहावत किसी की बड़बोली पर कही गई है।

अ०— बातें तो करते हैं मानों के बड़े भारी कलाकार हों, लाखों की नीचे की बात ही नहीं होती है, मगर करते क्या हैं? मिट्टी के बराबर की भी करनी नहीं कर पाते। इसी पर महात्मा कबीरदास जी की पंक्ति है—

'कथनी मीठी खांड़ सी, करनी विष की लोय।
कथनी तज करनी करै विष से अमृत होय।'

तो कहना आसान है मगर काम को करना बड़ा कठिन है।

'बादल फटे तो कहां तक थिगली लगे।'

श०— थिगली—पेबंद, चकती, जो कपड़े फट जाते हैं उनमें दूसरा कपड़ा लगाकर उस सुराख को बंद करना।

कहावत किसी बड़े काम के बिगड़ जाने के प्रति कही गई है।

अ०— जब कोई बड़ा काम बिगड़ जाता है तो उसको कितना भी ठीक करो वह ठीक नहीं हो सकता है। कहावत के अनुसार यदि आसमान फट जाय तो उसमें पैबंद कैसे लग सकता है? यानी कि जो काम असंभव हो उसे कर पाना किसी के वश की बात नहीं हो सकती है।

'बारा गांव का चौधरी, असी गांव का राव।
अपने काम न आवै, तो अपनी अइसी–तइसी मां जाव।'

श०— चौधरी—चारों ओर घूम–घूमकर गांव में जो छोटी–मोटी समस्याओं का समाधान करते हैं।

राव—दरबारी, सरदार, राजाओं की पदवी।

कहावत अपने स्वार्थ के प्रति कही गई है।

अ०— कोई आठ गांव का चौधरी हो, बारह गांव का राजा हो, बड़ा धनी व अमीर ही क्यों न हो जब वह अपनों के काम न आये तो वह अपनी ऐसी–तैसी में जाय। अपना बुरा–भला कराये।

'बाहर टेढ़ो फिरत है, बांबी सूंघै सांप।'

श०— टेढ़–मेढ़ा चलना–रोब, आवेश में होना। बांबी–सांप के रहने की बिल की मिट्टी।

सूंघय–सांस के द्वारा टटोलते हुये, सचेत होकर अंदाज लगाते हुये।

कहावत किसी ऐसे व्यक्ति पर कही गई है जो बाहरी दुनिया में तो बड़े रोब–गालिब करके, बड़े ताव से लोगों के साथ रहता हो, मगर घर में घुसते ही वह बड़ा सीधा व सिद्धांतवादी बन जाता हो।

अ०— सांप बाहर तो बहुत टेढ़ा–मेढ़ा होकर चलता है, किन्तु जब वह अपनी बांबी में घुसने लगता है तो एकदम सीधा होकर व सूंघता हुआ घर में घुसता है कि कहीं कोई बात तो नहीं हो गई? अतः कितने भी टेढ़े आदमी हों घर में आते ही उनकी सारी शेखी–पटाखी भूल जाती है। घर की सरकार से सभी डरते हैं।

'बाल न बांका करि सके जो जग बैरी होय।'

कहावत ईश्वरपरक है। जब भगवान सीधा होता है तो कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता है।

अ०— ईश्वर की कृपा है तो दुश्मन से दुश्मन भी बाल बराबर हानि नहीं पहुंचा सकता।

'बाप क बदला जो नहिं लेई,
ओके जनम अकारथ जाय।'

श०— बदला—दुश्मनी निकालना। अकारथ—व्यर्थ, बेकार। यहां पर बेटे के कर्तव्य के प्रति कहावत उद्धृत की गई है।

अ०— बाप के द्वारा की गई दुश्मनी का बदला यदि बेटा नहीं लेता तो वह बेकार है, उसका जन्म ही बेकार को हुआ। कहते हैं कि 'बाप का धन व बाप के द्वारा लिये गये कर्ज का बेटा ही जिम्मेदार होता है। उसी प्रकार के बाप के द्वारा की गई दुश्मनी का बदला लेने वाला भी बेटा ही होता है।

'बादी तीर–तीर, गवाह बीच मां टहरै।'

श०– बादी–जो मुकदमा दायर करे, मुद्दई। तीर–तीर–किनारे रहना। गवाह– जो मुकदमें की गवाही देता है।

कहावत अपने ही काम की लापरवाही के प्रति कही गई है।

अ०– जिसका काम है वह तो बाहर–बाहर रहे जैसे कि कोई मतलब ही न हो और गवाह बेचारा बराबर मुकदमें की चिंता में गवाही देने के लिये बीच कचहरी में टहलता रहे।

'बारह महीने क कुत्ता, बारह साल क पुत्ता।'

श०– पुत्ता–पुत्र, पूत, लड़का।

अ०– बारह माह तक बच्चे कुत्ते की तरह रहते हैं, जहां देखो वहां पहुंचे हुये हैं और बारह साल होने पर वह लड़का कहलाने लायक हो जाता है।

'बाग मां सियार गये, का ओढ़िहैं, का पहिरि हैं।'

जब किसी के लिये कोई वस्तु बेकार की हो तो कहते हैं।

अ०– बाग़ में सियार गये जहां कपास की खेती है तो सियार से कपास से क्या काम? वह क्या ओढ़ेगा क्या बिछायेगा?

'बाघ मार बांगर मां डारी,
बिल्ली देखि हैरानी।'

श०– बाघ–शेर। बांगर–ऊसरही, बंगरही जमीन।

कहावत किसी ढीठ नारी के प्रति कही गई है जो ऊपर से तो दिखावे में डरपोक है अंदर से निडर व तेज हैं।

अ०– शेर मारकर तो सूने में डाल आई और बिल्ली को देखकर डर गई।

'बाजार के सेतुआ बापौ खाय, बेटवा खाय।'

सत्तू के माध्यम से कहावत उन बाजारू औरतों के ऊपर कही गई है जो वेश्या का पेशा करती हैं।

अ०– वेश्याओं के लिये क्या है जिस कोठे पर बाप जा चुका है उस पर बेटा भी जाता है। कोई परहेज नहीं है।

'बाटे राहे कुतिया मरी, साधु कहै मोरि वाचा फली।'

कहावत अपनी भविष्यवाणी को सही ठहराने का ढोंग करने वाले के ऊपर कही गई है।

अ०– राहे–बाटे में कुतिया मर गई तो कोई साधु बोला देखा, मेरी भविष्यवाणी सही हुई।

'बात कहिये जग भाती, रोटी खाइये मन भाती।'

श०– जग–संसार। भाती–अच्छी लगने वाली।

अ०– बात ऐसी करो कि लोगों को भली लगे और रोटी खाओ जो अपने मन भावे।

'बात क चूका मनई, अउर डाल क चूका बंदर संभलत नाहीं।'

अ०– जब किसी आदमी के मुख से गलत बात निकल जाती है और बंदर का हाथ पेड़ की डाल से छूट जाता है तो फिर वह नीचे ही दिखाई देता है। आदमी यदि अपनी बात से गया तो फिर उसकी वह मर्यादा नहीं रह जाती है।

'बात करे मैना सी, आंख तरेरे तोता सी।'

चरित्रहीन स्त्रियों के प्रति कहा गया है।

अ०– बातें तो मीठी करती हैं मगर आंख तोते सी पलटती हैं। ऐसी औरतें स्वभाव की ठीक नहीं मानी जाती हैं।

'बातन हाथी पाइये, कि बातन हाथी पांव।'

अ०– बात करने का ढंग व महत्ता बड़ी होती है। बात के ढंग से आदमी हाथी के ऊपर बैठा दिया जाता है और बात करने के ढंग से ही आदमी हाथी के पांव के नीचे फेंकवा दिया जाता है।

'बान वाले की ठान न जाय,
कुत्ता मूंते टांग उठाय।'

अ०– जिसकी जो आदत होती है वह जीवन भर नहीं छूटती है।

'बाप का नाव दमड़ी, बेटा का नाव छकौड़ी, नाती क पचकौड़िया, तीन पुरसा बीता, छदाम न पूरा भा।'

श०– दमड़ी– १२ कौड़ी। छदाम–२४ कौड़ी।

कहावत ऐसी स्त्री के द्वारा कही गई है जो कई पीढ़ी से गरीबी से परेशान है। व्यंग्य में कहती है।

अ०– बाप का नाम है दमड़ी, बेटे का नाम छै कौड़ी और नाती का नाम है पचकौड़िया। इस प्रकार से १२–६–५ कुल २३ कौड़ी हुई। तीन पुस्त के पुस्त बीत गये किन्तु आज तक एक छदाम, यानी २४ कौड़ी पूरी न हो पाई।

'बाप क नाव साग–पात,
बेटवा क परोड़ा।'

श०– परोड़ा– एक बेल का फल जिसका साग बनता है।

अ०– कहावत बाप–बेटे को लेकर व्यंग्य में कही गई है। बाप का नाम तो अनाप–शनाप, साग–पात कुछ भी रख दिया गया है। बेटे का नाम परवल रखा है।

'बाप की गटई मां मोंगरा,
बेटा की गटई रुद्राक्ष।'

श०– मोंगरा–फूल का नाम है। रुद्राक्ष– एक पेड़ के फल की माला होती है जिसे भक्त लोग जपते हैं और मंत्र लेने वाले हर शिष्य के गले में डाले रहते हैं।

कहावत में बहुत व्यंग्य छिपा है। यानी कि पूजा–पाठ, जप–तप किसे करना चाहिये पर कौन कर रहा है? उम्र के ऊपर कहावत चरितार्थ की गई है।

अ०– पिता जो इस समय बुजुर्ग हैं उनके गले में तो मोंगरे के फूलों की माला है और बेटे के गले में रुद्राक्ष की माला है। यानी बाप तो बड़े रसिक, रंगीन तबीयत के हैं और बेटा इसी उम्र से साधुवेश में है। उलटा हो गया।

'बाप पंडित भये, पूत छिनार भये।'

अ०– बाप तो कर्म–धर्म करने वाले सात्विक स्वभाव के हैं और बेटा आवारा, ऐय्याश निकला।

'बाप बनिया अहे, पूत नवाब अहे।'

अ०– बाप तो बनिया है और बेटा बड़ा खर्च वाला निकला।

'बाप कमावै, बेटा उड़ावै।'

अ०– बाप तो किसी तरह पैसे घर में काम करके लाता है और बेटा है कि फालतू में पैसों को खर्च कर देता है।

'बाप के राजे सतुबा महंग, भइया के राजे नमको महंग।'

अ०– बाप के राज से भाई का राज और भी कठिन हो जाता है। बाप के राज में तो सत्तू ही महंगा था यहां भाई के समय में तो मांगे नमक भी नहीं मिल पाता ठीक से।

'बारह बरस की कन्या, छठी रात का वर,
मन माने की बात, करना हो तो कर।'

कहावत बाल विवाह के प्रति कही गई है।

अ०– कन्या बारह साल की और वर छठी के दिन का। यदि विवाह करना हो तो करो। यह तो मन माने की बात है। हमारे देश में पहले समय में बाल–विवाह का बड़ा रिवाज था। आज के युग में यह प्रथा न के बराबर रह गई है। फिर भी कहीं–कहीं गांवों में आज भी देखा जाता है।

'बारा बरस पर तो घूरेव क दिन फिरथ।'

श०– घूरेव– जहां पर कूड़ों के ढेर लगाते हैं।

कहावत किसी बदनसीब को देखकर कही गई है या फिर अर्से के बाद किसी का दिन अच्छा आया होगा तो भी कही जाती है।

अ०– बारह बरस के बाद तो उस घूरे पर जहां लोग कूड़ा फेंकते हैं उसका समय भी लौट आता है। कुछ न कुछ उस स्थान पर बन जाता है और वह जगह भी सुंदर लगने लगती है।

'बारह बरस तक सेई कासी,
मरत बेर मगहर के बासी।'

श०– सेई–सेवन करना, रहना। कासी–काशी, बनारस। बेर– समय। मगहर–स्थान।

लोक विश्वास है कि जब कोई काशी विश्वनाथ

'बादी तीर–तीर, गवाह बीच मां टहरै।'

श०– बादी–जो मुकदमा दायर करे, मुद्दई। तीर–तीर–किनारे रहना। गवाह– जो मुकदमें की गवाही देता है।

कहावत अपने ही काम की लापरवाही के प्रति कही गई है।

अ०– जिसका काम है वह तो बाहर–बाहर रहे जैसे कि कोई मतलब ही न हो और गवाह बेचारा बराबर मुकदमें की चिंता में गवाही देने के लिये बीच कचहरी में टहलता रहे।

'बारह महीने क कुत्ता, बारह साल क पुत्ता।'

श०– पुत्ता–पुत्र, पूत, लड़का।

अ०– बारह माह तक बच्चे कुत्ते की तरह रहते हैं, जहां देखो वहां पहुंचे हुये हैं और बारह साल होने पर वह लड़का कहलाने लायक हो जाता है।

'बाग मां सियार गये, का ओढ़िहैं, का पहिरि हैं।'

जब किसी के लिये कोई वस्तु बेकार की हो तो कहते हैं।

अ०– बाग़ में सियार गये जहां कपास की खेती है तो सियार से कपास से क्या काम? वह क्या ओढ़ेगा क्या बिछायेगा?

'बाघ मार बांगर मां डारी,
बिल्ली देखि हैरानी।'

श०– बाघ–शेर। बांगर–ऊसरही, बंगरही जमीन।

कहावत किसी ढीठ नारी के प्रति कही गई है जो ऊपर से तो दिखावे में डरपोक है अंदर से निडर व तेज हैं।

अ०– शेर मारकर तो सूने में डाल आई और बिल्ली को देखकर डर गई।

'बाजार के सेतुआ बापौ खाय, बेटवा खाय।'

सत्तू के माध्यम से कहावत उन बाजारू औरतों के ऊपर कही गई है जो वेश्या का पेशा करती हैं।

अ०– वेश्याओं के लिये क्या है जिस कोठे पर बाप जा चुका है उस पर बेटा भी जाता है। कोई परहेज नहीं है।

'बाटे राहे कुतिया मरी, साधु कहै मोरि वाचा फली।'

कहावत अपनी भविष्यवाणी को सही ठहराने का ढोंग करने वाले के ऊपर कही गई है।

अ०– राहे–बाटे में कुतिया मर गई तो कोई साधु बोला देखा, मेरी भविष्यवाणी सही हुई।

'बात कहिये जग भाती, रोटी खाइये मन भाती।'

श०– जग–संसार। भाती–अच्छी लगने वाली।

अ०– बात ऐसी करो कि लोगों को भली लगे और रोटी खाओ जो अपने मन भावे।

'बात क चूका मनई, अउर डाल क चूका बंदर संभलत नाहीं।'

अ०– जब किसी आदमी के मुख से गलत बात निकल जाती है और बंदर का हाथ पेड़ की डाल से छूट जाता है तो फिर वह नीचे ही दिखाई देता है। आदमी यदि अपनी बात से गया तो फिर उसकी वह मर्यादा नहीं रह जाती है।

'बात करे मैना सी, आंख तरेरे तोता सी।'

चरित्रहीन स्त्रियों के प्रति कहा गया है।

अ०– बातें तो मीठी करती हैं मगर आंख तोते सी पलटती हैं। ऐसी औरतें स्वभाव की ठीक नहीं मानी जाती हैं।

'बातन हाथी पाइये, कि बातन हाथी पांव।'

अ०– बात करने का ढंग व महत्ता बड़ी होती है। बात के ढंग से आदमी हाथी के ऊपर बैठा दिया जाता है और बात करने के ढंग से ही आदमी हाथी के पांव के नीचे फेंकवा दिया जाता है।

'बान वाले की ठान न जाय,
कुत्ता मूंते टांग उठाय।'

अ०– जिसकी जो आदत होती है वह जीवन भर नहीं छूटती है।

'बाप का नाव दमड़ी, बेटा का नाव छकौड़ी, नाती क पचकौड़िया, तीन पुरसा बीता, छदाम न पूरा भा।'

श०– दमड़ी– १२ कौड़ी। छदाम–२४ कौड़ी।

कहावत ऐसी स्त्री के द्वारा कही गई है जो कई पीढ़ी से गरीबी से परेशान है। व्यंग्य में कहती है।

अ०– बाप का नाम है दमड़ी, बेटे का नाम छै कौड़ी और नाती का नाम है पचकौड़िया। इस प्रकार से १२–६–५ कुल २३ कौड़ी हुई। तीन पुस्त के पुस्त बीत गये किन्तु आज तक एक छदाम, यानी २४ कौड़ी पूरी न हो पाई।

'बाप क नाव साग–पात,
बेटवा क परोड़ा।'

श०– परोड़ा– एक बेल का फल जिसका साग बनता है।

अ०– कहावत बाप–बेटे को लेकर व्यंग्य में कही गई है। बाप का नाम तो अनाप–शनाप, साग–पात कुछ भी रख दिया गया है। बेटे का नाम परवल रखा है।

'बाप की गटई मां मोंगरा,
बेटा की गटई रुद्राक्ष।'

श०– मोंगरा–फूल का नाम है। रुद्राक्ष– एक पेड़ के फल की माला होती है जिसे भक्त लोग जपते हैं और मंत्र लेने वाले हर शिष्य के गले में डाले रहते हैं।

कहावत में बहुत व्यंग्य छिपा है। यानी कि पूजा–पाठ, जप–तप किसे करना चाहिये पर कौन कर रहा है? उम्र के ऊपर कहावत चरितार्थ की गई है।

अ०– पिता जो इस समय बुजुर्ग हैं उनके गले में तो मोंगरे के फूलों की माला है और बेटे के गले में रुद्राक्ष की माला है। यानी बाप तो बड़े रसिक, रंगीन तबीयत के हैं और बेटा इसी उम्र से साधुवेश में है। उलटा हो गया।

'बाप पंडित भये, पूत छिनार भये।'

अ०– बाप तो कर्म–धर्म करने वाले सात्विक स्वभाव के हैं और बेटा आवारा, ऐय्याश निकला।

'बाप बनिया अहे, पूत नवाब अहे।'

अ०– बाप तो बनिया है और बेटा बड़ा खर्च वाला निकला।

'बाप कमावै, बेटा उड़ावै।'

अ०– बाप तो किसी तरह पैसे घर में काम करके लाता है और बेटा है कि फालतू में पैसों को खर्च कर देता है।

'बाप के राजे सतुबा महंग, भइया के राजे नमको महंग।'

अ०– बाप के राज से भाई का राज और भी कठिन हो जाता है। बाप के राज में तो सत्तू ही महंगा था यहां भाई के समय में तो मांगे नमक भी नहीं मिल पाता ठीक से।

'बारह बरस की कन्या, छठी रात का वर,
मन माने की बात, करना हो तो कर।'

कहावत बाल विवाह के प्रति कही गई है।

अ०– कन्या बारह साल की और वर छठी के दिन का। यदि विवाह करना हो तो करो। यह तो मन माने की बात है। हमारे देश में पहले समय में बाल–विवाह का बड़ा रिवाज था। आज के युग में यह प्रथा न के बराबर रह गई है। फिर भी कहीं–कहीं गांवों में आज भी देखा जाता है।

'बारा बरस पर तो घूरेव क दिन फिरथ।'

श०– घूरेव– जहां पर कूड़ों के ढेर लगाते हैं।

कहावत किसी बदनसीब को देखकर कही गई है या फिर अर्से के बाद किसी का दिन अच्छा आया होगा तो भी कही जाती है।

अ०– बारह बरस के बाद तो उस घूरे पर जहां लोग कूड़ा फेंकते हैं उसका समय भी लौट आता है। कुछ न कुछ उस स्थान पर बन जाता है और वह जगह भी सुंदर लगने लगती है।

'बारह बरस तक सेई कासी,
मरत बेर मगहर के बासी।'

श०– सेई–सेवन करना, रहना। कासी–काशी, बनारस। बेर– समय। मगहर–स्थान।

लोक विश्वास है कि जब कोई काशी विश्वनाथ

बाबा के धाम में मरता है तो उसे स्वर्ग मिलता है और यदि वह मगहर में मरता है तो उसे नरक मिलता है। इस कहावत से कबीरदास की एक पंक्ति स्मरण हो आई है–

'सकल जनम शिवपुरी गंवायो, मरत बेर मगहर उठि धायो।'

कबीरदास तो ईश्वर की परीक्षा के लिये काशी से मगहर भागे थे कि काशी में तो सभी मरते हैं मैं मगहर में मर कर देखूं कि वहां पर मरने पर तरता हूं कि नहीं?

'बावली को आग बताई, उसने लै के घर मां लगाई।'

श०– बावली–सनकी, मूर्ख नारी।

अ०– किसी बेवकूफ स्त्री को तो बताया गया कि आग रही। उसने सोचा आखिर यह आग मुझे बताई क्यों गई? तो चलो इसे घर–भर में फैला दूं। ऐसा सोच कर उस मूर्ख ने घर–भर में आग लगा दी। यानी किसी मूर्ख को कोई काम कभी नहीं बताना चाहिए।

'बावली खाट क बावला पाया,
बाउली रांड़ क बावला जाया।'

श०– पाया–चारपाई के पाये। जाया–जन्मा।

अ०– जब खाट टेढ़ी होगी तो उसका पाया भी टेढ़ा या ऊंचा–नीचा होगा। उसी प्रकार कोई सनकी विधवा स्त्री के जो बच्चा होगा वह भी पागल, मूर्ख, सनकी होगा।

'बाहर के खांय, घर के गीत गायें।'

अ०– वाहवाही में घर की परवाह न करे, बाहर वालों को खिलाये–पिलाये, अपने घर के लोग चाहे उपवास ही करें।

'बाहर लंबी धोती, भीतर मंडुये की रोटी।'

अ०– बाहर का ठाट बड़ा हो, पैर के पंजे तक की धोती पहनकर निकलें और घर में मंडुआ जो बहुत मोटा व रद्दी अनाज होता है, की रोटी बनाई जा रही है। यानी ठीक से खाने को नहीं है।

'बाहर मियां सूबेदार, घर में बीबी झोंके भार।'

अ०– उपरोक्त कहावत की भांति यह भी दिखावटीपने के ऊपर कही गई है कि बाहर पतिदेव तो सूबेदार हैं और घर में पत्नी चूल्हा झोंक रही है।

'बाहर मियां छैल चिकनिया,
घर में लिबड़ी जोय।'

श०– मियां–पति। छैल चिकनियां–ठाट बाट। लिबड़ी–मैली कुचैली।

अ०– बाहर तो पति महोदय बड़े साफ–सुथरा बने ठने रहते हैं और अंदर पत्नी हमेशा ही गंदी मैली–कुचैली सिलबिल्ली की तरह रहती है। यानी कि ऊपरी ठाट–बाट, दिखावा अधिक होना।

'बाप बनिया पूत नवाब।'

जब दो समान व्यक्तियों में अत्यधिक अंतर आता है तो कहावत चरितार्थ की जाती है।

अ०– बाप तो बनिये की तरह कंजूस है और बेटा नवाबों की तरह पूरा खर्चबाज है।

'बाप भिखारी, पूत भंडारी।'

अ०– यह उपरोक्त कहावत की ही भांति है।

'बाबा मरे तो निहलू आये,
रहे तीन के तीन।'

घर की जनसंख्या में न तो कुछ बढ़ोत्तरी हुई न घटोत्तरी।

इधर तो बाबा मरे तो उधर घर में निहलू का जन्म हो गया। इस प्रकार से उतने के उतने ही लोग फिर रह गये।

'बि'

'बिलारी के भंइस नहीं लगते।'

किसी गरीब को महंगी वस्तु अचानक खाने को मिल जाती है, या फिर बिल्ली घर में आकर दूध पी जाती है तो बिल्ली को बहुत बुरा–भला कहते हैं। जो उसको मारने दौड़ते हैं तो लोग हंसी में कहते हैं कि ऐसे ही घरों में बिल्लियां ताक लगाये बैठी रहती हैं। कहीं दूध पीने को पाती हैं और क्या उनके कोई भैंस थोड़े ही लगती है?

'बिन मारे बैरी मरे, ठाढ़िन ऊख बिकाय।
बिन ब्याही बिटिया मरे, ई सुख कहां समाय।'

श०— ठाढ़िन— खेत में ही। ब्याही—ब्याह।

जब कोई मनचाहा काम अचानक हो जाता है तो लोगों को बड़ी प्रसन्नता होती है कि 'चलो सांप भी मरा और लाठी भी न टूटी।'

अ०— बिना मारे दुश्मन मर जाये, खेत में ही बिना काटे, पेरे हुये ईख बिक जाये, ब्याहने योग्य लड़की बिना ब्याह किये मर जाय तो इससे बड़ा सुख और क्या हो सकता है?

'बिगड़े जोत, पुराने बिया,
तिनकी खेती छिया—छिया।'

अ०— जिस खेत की जोताई न हुई हो, बीज पुराने हों उनके खेत में भला क्या पैदा हो सकता है? उनकी खेती थू—थू हो जाती है। ऐसी खेती करने से लाभ ही क्या?

'बिधि का लिखा को मेंटन हारा।'

कहावत भाग्यवादी है।

अ०— भगवान का लिखा कोई भी हटा नहीं सकता है।

'बिन घरनी घर भूत का डेरा।'

श०— घरनी—पत्नी, घरवाली, घर की मालकिन।

कहावत किसी के सूने घर को देखकर या पत्नी के न रहने पर उदधृत होती है। कहावत में पत्नी का बड़ा महत्व बताया गया है।

अ०— बिना घरवाली के पति के घर की दशा भूतों के रहने की सी हो जाती है या घर में भूत लोट रहे हों।

'बिना बैल के खेती करै, बिना भाय के रार।
बिन मेहरारू घर करै, चंदा लाख लबार।'

श०— भाय—भाई। मेहरारू—औरत, स्त्री। लबार— झूठा, मक्कार।

अ०— बिना बैल के खेती करना, बिना अपने भाई के झगड़ा करना, बिना पत्नी के घर बसाना, यह सब काम झूठे लबार का होता है।

'बिजया पीवे सेजा सोवे, ताके बैद पिछाड़ी रोवै।'

श०— बिजया—भांग। सेजा—चारपाई। पिछाड़ी—पीछे से।

अ०— जो भंग पीकर सो जाता है। बैद्य फिर उसका इलाज नहीं कर पाता। वह मरीज के मरने पर रोता है।

'बिजली क मारल, लुआठ देख भागल।'

श०— लुआठ—जलती लकड़ी।

कहते हैं कि जिसे बिजली का करेंट लगा होता है वह इतना भयभीत हो जाता है कि जलती हुई लकड़ी को देखकर डर जाता है।

'बिन विद्या नर नारि, जैसे गधा कोंहार।'

श०— नर—पुरुष। नारि—स्त्री। कोंहार—कुम्हार, मिट्टी के बर्तन बनाने वाला।

अ०— बिना पढ़े—लिखे आदमी हो या औरत जैसे कुम्हार के गधे की तरह लगता है।

'बिन बोलाये अमहक, ले के दौड़े सनहक।'

श०— अमहक—नीच। सनहक—खाने का बर्तन।

अ०— बिना बुलाये ही खाने का बर्तन लेकर खाना खाने आ गये। यानी बेहया जिसे अपनी इज्ज़त की परवाह न हो।

'बिन मांगे मोती मिले, मांगे मिलय न चून।'

श०— मोती—कीमती नग। चून—आटा।

कहावत मांगने पर कही गई है कि मांगना, कितना बुरा होता है। कवि रहीम का दोहा देखें—

'बिन मांगा सो दूध सम, मांगा मिले सो पानि।
सुनु रहीम वह रक्त सम जाने ऐंचातानि।'

एक शेर इसी विषय का देखें—

'जो कुछ मांगना हो खुदा से मांग ए अकबर
यही वो दर है कि जिल्लत नहीं सवाल के बाद।'

'बिना बसीले चाकरी, बिना बुद्धि के देह।
बिन गुरु का बालका, सिर में डाले खेह।'

श०— बसीले—सहारे, हिल्ला, जटिया। चाकरी—नौकरी। खेह—मिट्टी, रेत।

अ०— बिना किसी के कहे—सुने नौकरी नहीं लगती है। बिना अक्ल के शरीर बेकार है तथा बिना गुरु या बड़ों के समझाये बच्चा सिर पर मिट्टी डालता है। इसलिये उपरोक्त सभी कार्य में सुधार बिना सहारे के नहीं होते हैं।

बिन मांगे मोती मिलै, मांगे मिलै न भीख।

अ० — स्पष्ट है किसी से कुछ मांगना नहीं चाहिए।

'बिपत बराबर सुख नहीं जो थोरे दिन होय।'

समयानुकूल हो तो थोड़े समय का दुख भी बुरा नहीं होता है। कवि रहीम खानखाना के शब्दों में—

'रहिमन बिपदा हू भली, जो थोरे दिन होय।'
हित अनहित या जगत में जानि परय सब कोय।'

'बिटिया के माई रानी, बुढ़ाई दांव भरावै पानी।'

अ०— जिन महिलाओं के बेटी रहती है उन्हें बड़ा आराम काम—काज में मिलता है। मगर जब उसकी शादी हो जाती है तो मां को बुढ़ौती में काम करने के कारण बड़ा कष्ट उठाना पड़ता है। फिर काम करने की आदत नहीं बन पाती है।

'बिना बिचारे जो करय सो पाछे पछिताय।'

अ०— बिना सोचे—समझे जो आदमी कोई काम करता है वह फिर बाद में पश्चाताप करता है। उपरोक्त पंक्ति कवि गिरधर कविराय की है जो लोग कहावत के रूप में प्रयोग करते हैं। उनका कथन है —

बिना बिचारे जो करय सो पाछे पछताय,
काम बिगारे आपनो जग में होय हंसाय।
जग में होय हंसाय चित्त में चैन न पावै
खान—पान सम्मान राग—रंग मनहिं न भावै।'

'बिगड़े भाय न बिगड़े बंधु,
बिगड़े बैल न रोकै पंथ।'

श०— बिगड़े—नाराज होने पर। भाय—भाई। बंधु—परिवार कबीला। पंथ—रास्ता।

कहावत समय बिगड़ने के प्रति या बिगाड़ के समय की बात पर कही गई है।

अ०— जब दिन बुरे आते हैं तो कोई किसी का सहारा नहीं होता है। दुनिया में बहुधा देखा गया है कि बुरे दिनों में न मां, न बाप, न भाई, न बंधु, न नाते रिश्ते वाले कोई साथ नहीं देते हैं। उसी प्रकार से जैसे बैल बिगड़ने पर रास्ते में नहीं रुकते भागते ही चले जाते हैं।

'बिलारी के बच्चन की तरह सात डेहरी डंकावै क भा अहै।'

जब किसी स्त्री का बच्चा होने के बाद मर जाता है। ऐसा हादसा कई बार होने पर कहते हैं कि बिल्ली के बच्चे की तरह जीने के लिये कई स्थानों पर लेकर भागना पड़ता है।

'बिल्ली के भाग छींका टूटा।'

कहावत अचानक लाभ के प्रति कही गई है।

अ०— छींका तो इतना मजबूत बंधा था मगर दूध या कोई भी छींके पर रखी वस्तु बिल्ली के भाग्य में थी जो छींका टूट गया और उसे खाने को मिल गया।

'विषधर पकड़ जहर ले चाट, पर नारी संग चलै न बाट।'

श०— विषधर—सांप। पर—दूसरे। बाट—रास्ता।

कहावत दूसरे की स्त्री के साथ रहने व रास्ता चलने के कलंक पर कही गई है।

अ०— दूसरे की स्त्री के साथ चलने पर सिवाय कलंक के और क्या मिलेगा?

किसी विद्वान ने कहा है—

'पर नारी पैनी छुरी, मत कोइ कीजो संग।
रावन इससे मिल गया, हुआ वंश का भंग।।'

तो दूसरे की स्त्री से बहुत बच कर रहना चाहिये।

'बिटिया बिआनी डेहरि पर बइठी,
उतरि गई सबके मन से।'

श०— बिआनी— पैदा किया। डेहरि—डेहरी, चौखट।

अ०— कहा गया है कि बेटी को पैदा करने के बाद घर भर के मन से जच्चा इतनी उतर गई कि उसको घर से बाहर की डेहरी यानी कि एक प्रकार से लोग

इतना घृणा करने लग गये कि घर से बाहर तक निकालने की नौबत तक आ जाने की संभावना बन बैठी।

'बिना रोये न लड़िका दूध पावे,
बिना रोये न माई गोद उठावै।'

अ०– बच्चा बिना रोये दूध नहीं पाता इसलिये कि मां काम में लगी है। जब तक बच्चा न रोवेगा तब तक उसको खेलने दिया जायेगा। न उसे कोई गोद उठाता है न पेट में कुछ डालता है। इसलिये अपनी आवश्यकता जब तक कोई भी हो, जाहिर न करेगा तब तक किसी को क्या मालूम कि उस व्यक्ति को क्या चाहिए?

'बिना लोहा गरम भये, हथौड़ी नहीं चलते।'

श०– लोहा गरम–ताव पर आना। हथौड़ी– जिससे लोहे पर चोट की जाती है। कहावत ताव की बात पर कही गई है। जब तक कोई भी वस्तु या मनुष्य अपने पूरे जोश में नहीं आता काम नहीं हो पाता है।

अ०– लोहा गरम होता है तभी उस पर हथौड़ा चल पाता है। लोहे के बिना गरम होने पर हथौड़ा उस पर प्रभाव नहीं डाल सकता है।

'बिटिया क चरा घर, भेड़ी क चरा बन।'

श०– चरा–खाया हुआ। भेड़ी–भेड़ ।

कहावत विशेष रूप से घर में यदि अधिक लड़कियां हों तो कही जाती है।

अ०– जिस घर में लड़कियां अधिक होती हैं वह घर शादी, विवाह करते, दहेज– देते–देते चुक जाता है। ठीक उसी प्रकार से जैसे बन के पेड़ों की पत्तियां बकरी खा जाती हैं और पेड़ ठूंठ हो जाते हैं।

'बिप्र टहलुआ अजा धन औ कन्या के बाढ़ि,
जो इनसे धन ना घटे तो करै बड़ेन से रारि।'

श०– बिप्र– ब्राह्मण। टहलुआ–नौकरी, घर के काम करने वाला। चोरि–चोरी का। अजा–बकरी। बड़ेंन–बड़े आदमियों से।

कहावत कुछ कार्यों व स्थितियों के प्रति कही गई है।

अ०– ब्राह्मण से नौकर के रूप में काम कराना, बकरी को पालकर और बेंचकर धनार्जन करना और घर में कन्यायें उत्पन्न होना यदि इन तीनों से धन नहीं घटता है तो बड़े लोगों से शत्रुता करे जिससे ध ान–हानि अवश्यंभावी है। इन सभी कार्यों से धन–हानि होती है।

'बिगड़ी फौज तिलंगन कै,
बनि आई नंगा–नंगिन कै।'

श०– फौज–सेना। तिलंगन– अंग्रेजी फौज के सिपाही जो हिन्दुस्तानी होते थे। नंगे–नंगिन–लुच्चे लफंगों की।

अ०– हिन्दुस्तानी सिपाही जब अंग्रेजों की फौज में भर्ती होने लगे तो समझो कि कोई भला आदमी उसमें नहीं जाता था। देश के लुच्चे–लफंगे लोगों की सेना में जाकर बन आई थी।

'बिटिया, बेटवा क धरै कै के,
फत्ते चलें बराते क।'

कहावत व्यंग्य में कही गई है।

अ०– बच्चों को घर की जिम्मेदारी सौंप कर फत्ते बारात मौज करने चले। वैसे भी कोई आदमी यदि अपने बच्चों पर घर का काम छोड़कर कहीं जाता है तो कहावत कही जाती है।

'बिना दूल्हा के कौन बरात।'

कहावत किसी विशेष मनुष्य को लेकर कही गई है जिसके बिना काम चलना असंभव हो।

अ०– बारात तो दूल्हे की ही जाती है। फिर बिना दूल्हा के बारात की क्या शोभा हो सकती है? इसी प्रकार से जहां जिस आदमी का विशेष महत्व हो वह न रहे तो कहावत चरितार्थ होती है।

'बिडरे खेत पुरानी बीया, ताकी खेती छीयाबीया।'

श०– बिडरे–दूर–दूर। बीया–बीज। छीयाबीया– बेकार, छीछालेदर।

अ०– जिस किसान के खेत दूर–दूर हों और पुराना बीज खेत में डाला गया हो उसकी खेती बर्बाद हुये बिना नहीं रहती है।

'बिगड़ बिराने जो रहे, माने तिय की सीख।

तीनों योंही जायेंगे, पाही, बोवै ईख।।'

श०– बिगड़–नाराज होना। बिराने–दूसरी जगह। तिय–स्त्री, पत्नी। सीख–सिखाना। पाही–घर से दूर खेत बनाना। ईख–ऊख।

कहावत तीन विषयों पर कही गई है।

अ०– जो बिगड़ैल तबीयत का आदमी नाराज होकर अपना घर छोड़कर दूसरे के घर में जाकर रहता है, जो स्त्री की सिखाई गई बात को मानता हो तथा जो दूसरों के गांव में ईख की खेती करता हो ये तीनों आदमी हमेशा हानि उठायेंगे।

'बिना माघ घिव खिचरी खाय, बिना गौन ससुरारी जाय।

बिन वर्षा के पहिरे पउवा, कहै घाघ ये तीनों कउव्वा।'

श०– माघ–माघ का महीना। गवन–गौना। पउव्वा–पहले के जमाने में खड़ाऊं की तरह ही पैर में पहनने को बनाया जाता था। कठनहीं जिसमें खूंटी की जगह सुतली बर कर लगाई जाती थी।

कहावत घाघ कवि की है।

अ०– बिना माघ माह लगे हुये घी के साथ खिचड़ी खाना, बिना गौना हुये ससुराल का जाना बिना, बरसात के पैर में पउला का पहनना ये सब कार्य करने वाले मूर्ख होते हैं।

कहते हैं कि उपरोक्त कहावत का उत्तर घाघ की बहू ने यों दिया–

'मन चाहे घिव खिचड़ी खाय, मन चाहे ससुरारी जाय।

करे जोग तो पहिरेय पौवा, कहे पतोहूं घाघे कउवा।'

यानी जब मन करे तो घी खिचड़ी बनाकर खाय, जब मन कहे तो ससुरारी जाय तथा जब पूजा–पाठ, यज्ञ, योग करे तो पउवा पहिरे। पुत्रवधू कहती है कि दूसरा नहीं, घाघ ही कौवा हैं।

'बिना दाम के तीन निसानी, आव बइठ पी ले पानी।'

कहते हैं अपने घर आये मेहमान को आदर देना चाहिए।

अ०– आओ, बैठो तथा पानी पी लो। इस कहने में एक भी पैसा खर्च नहीं लगता।

'बिंध जाय तो मोती, नहीं तो सीप।'

श०– बिंध–छिदना।

सीप से मोती निकलता है। कहते हैं कि जब स्वाती नक्षत्र का पानी सीप के मुंह में जाता है तो वह मोती बन जाता है। कहावत इसी पर चरितार्थ होती है।

अ०– बिंध गया, उसमें स्वाती का पानी चला गया तो मोती नहीं तो सीप का सीप ही रह गया।

'बिना हाथ से उठाये, मुंहे कौर नहीं जात।'

अ०– बिना परिश्रम के खाना नहीं मिलता है। कहते हैं कि सब कुछ तैय्यार होने के बाद भी जब तक हाथ मुंह तक न ले जाओ मुंह के अंदर भोजन नहीं पहुंचता है।

'बिल्ली के सरापे सिकहर नहीं टूटत।'

अपने स्वार्थ में जब कोई किसी का बुरा चाहे तो उसका बुरा नहीं होता है।

अ०– बिल्ली चाहे कि छींका टूट जाय और दूध मैं पी लूं तो असंभव है। जब कोई आदमी अनायास ही किसी को गाली दे या शाप दे तो कहावत कही जाती है।

'बिद्या होवै कंठ की, रुपिया होवै गंठ की।'

बिद्या बिना याद किये नहीं आती, वह गले में रहती है, उसे स्मरण रहना चाहिए। वैसे ही पैसा रुपया अंटी में रहता है, रुपये का स्थान गांठ में होता है।

'विष का विषे औषधि है।'

श०– विष–ज़हर। विषे–विष ही। औषधि–दवा।

यहां पर कहा गया है कि विष ही विष को मारता है।

अ०– जब किसी को विषैला जीव काट लेता है तो उसका इलाज भी विष के द्वारा ही संभव है। इंजेक्शन भी जहर का ही लगता है। जैसे लोहे को लोहा ही काटता है वैसे ही विष को विष ही उतारता है।

'बिटिया कोनो गदेल अही, कठोलिव कउनौ बासन आय,

छेड़िव कउनो जानवर अही, कि सागव कउनो सालन आय।'

श०— गदेल—बच्चा। कठौली—काठ की बनी परातनुमा वस्तु। बासन—बर्तन। छेड़िव—बकरी। सागौ—साग—सालन—तरल खाद्य।

कहावत कई विषयों को लेकर कही गई है।

अ०— लड़की कोई बालक नहीं है। काठ की खोली कठोली की गिनती बर्तन में नहीं है। बकरी की गिनती किसी जानवर में नहीं की जाती है और साग को किसी पकवान में नहीं जोड़ा जा सकता है।

यानी कि इन सबकी कोई गणना नहीं की जाती है।

'बिनु भय होय न प्रीति।'

कभी—कभी ऐसा भी देखा जाता है कि कुछ लोग बिना भय के काम में आनाकानी करते हैं। ऐसे लोगों के साथ स्वभावनुकूल काम करना पड़ता है। इन्हें फिर साम, दाम, भेद से काम न चलने पर दंड के द्वारा थोड़ा भयभीत करके काम कराना पड़ता है। फिर वे डर वश काम करने लग जाते हैं।

'बिरान धान औ मंगनी क अहिबात।'

श०— बिरान—पराया। मंगनी—मंगा गया, उधार। अहिबात—सुहाग।

कहावत दूसरों के धन व पति को अपना समझने व्यंग्य में कही गई है।

अ०— दूसरों के धन पर अपना अधिकार रखने या दूसरे के पति पर अपने को सुहागन समझने वाली स्त्री निरा मूर्ख होती है। अतः कभी किसी पराई सम्पति पर या दूसरे के पति पर अपना अधिकार नहीं रखना चाहिये।

'बिलार खाई तो खाई नहीं फैलाय आई।'

दुष्ट लोगों और ईर्ष्यालु लोगों का काम ही ऐसा होता है कि यदि ये किसी वस्तु का उपयोग न कर सके तो उसे नष्ट अवश्य कर देंगे। बिल्ली का भी यही काम होता है कि खा—पी न पाई तो गिरा अवश्य देगी।

'बिलार क भितूर नहीं सौंपा जाते।'

श०— भितूर—भोज, भण्डार— भीड़ में जहां पर पूड़ियों का भंडार रखा रहता है। सौंपा—दिया जाना—मालिक बनाना। कहावत उस समय कही जाती है जब किसी गैरजिम्मेदार आदमी को कोई जिम्मेदारी का काम दे दिया जाय। जिसे इज्जत की कोई परवाह न हो वह अनायास ही दूसरे लोगों को सामान देकर स्वयं भला बनना चाहे।

अ०— बिल्ली को भितूर सौंप कर कोई चाहे कि सामान सुरक्षित रहेगा तो असंभव है।

'बिटिया बिआनी देवरे की आस।'

श०— बिआनी—पैदा किया।

बहुधा कहावत व्यंग्य में कही जाती है। जब दूसरा यह समझने लगता है कि काम की जिम्मेदारी मेरे ही ऊपर है या दूसरा लगातार किसी काम में आनाकानी कर रहा होता है।

अ०— बेटी पैदा किया है तो अपने बूते पर नहीं देवर की आशा पर कि वे पढ़ा—लिखा कर ब्याह—शादी कर देंगे।

'बिटिया के जियतेव रोवै क मरेव रोवौ क।'

श०— जियतेव— जीते जी।

कहावत उस समय कही जाती है जब लड़की पराई होकर ससुराल जाने लग जाती है।

अ०— लड़की तो पराया धन होती ही है। इनके जीते भी रोना पड़ता है और मरे पर भी रोना पड़ता है।

'बिना कसौटी पर धरे सोन नहीं परखा जाय सकत।'

सोने और आदमी की परख सदैव समय पर या आग में तपाने पर ही होती है। मनुष्य समय की कसौटी पर चढ़ने खरा उतरता है और सोना आग में तपाये जाने के बाद ही खरा ज्ञात होता है।

'बिआहे न लाई पोति, गौने लाई जब जोति।'

कहावत व्यंग्य में उस समय कही जाती है जब कोई नई बहू गौने यानी दूसरी बार अपनी ससुराल आती है और शादी से ज्यादा सामान लेकर आती है।

अ०— पहली बार जब ब्याह के आई तो तब तो एक

पोतना भी न लेकर आई थी और गौने जब आई तो जगउजागिर सामान लेकर आई। यानी पहली बार तो नाक कट गई अब दूसरी बार चली है सामान लेकर। कारण है कि हमारे समाज में एक परंपरा सी बन गई है कि बहू के ससुराल आने पर सामान आदि को स्त्रियां बड़ी उत्सुकता से देखतीं व उनका हिसाब लगाया करती हैं कि क्या–क्या मिला है?

'बिटिया के के बखाने, बिटिया कै माई।'

कहावत उस समय चरितार्थ होती है, जब कोई आदमी या स्त्री अपनों की प्रशंसा करते नहीं अघाता।

अ०– किसी ने कहा कि बिटिया का बखान हुआ तो किया किसने? उसकी मां ने। अतः मां तो बेटी की बड़ाई करेगी ही।

'बिना बदे नहिं होय गोसाई
बहि–बहि मरे बैल की नाई।'

कहावत भाग्यवादी है।

अ०– जब तक भाग्य में बदा नहीं होता तब तक कुछ भी नहीं होता चाहे जितना कठिन परिश्रम क्यों न करे।

'बिलार गोसाई किरपा करै, मूस बांड़य रहिहै।'

जब किसी को किसी के द्वारा संभावित खतरा रहता है तो वह उससे बहुत ज्यादा सचेत रहता है। यदि वह उसकी मदद भी करना चाहता है तो वह उसे स्वीकार नहीं कर सकता।

अ०– चूहा बिल्ली से सचेत होकर कहता है कि ए बिल्ली महारानी, मेरे ऊपर कृपा बनाये रखो, बस मैं तो बाँड़ा ही भला हूं। तुम्हारी मदद की आवश्यकता नहीं है।

'बिना बोलाये अपने बापौ के घर न जाय क चाही।'

कहावत सिद्धांतवादी है कि बिना बुलाये अपने बाप के घर भी नहीं जाना चाहिये।

बिलारी का बार भारू।'

कहावत उस समय कही जायेगी जब किसी स्त्री को कोई छोटा सा सामान भी उठाने में कठिन व कष्टदायक लगेगा।

अ०– बिल्ली को अपनी पूंछ के बार ही लेकर चलने में भारी लगते हैं।

'बिना मरे सरग नहीं देखाय परत।'

जो काम बिना अपने किये न हो पाये या दूसरे के भरोसे पर बहुत समय तक बैठे रहने पर भी कार्य पड़ा रहे तो कहावत चरितार्थ होती है।

अ०– जब आदमी अपने ही मरता है तो स्वर्ग के दर्शन होते हैं। यानी कोई काम अपने ही हाथों संवरता और हो पाता है।

'बिनौले की लूट पै बर्छी क घाव।'

अ०– किसी छोटी वस्तु के लिये महान कष्ट उठाना।

'बिना सींग पूंछ क जानवर अही।'

जब कोई आदमी जानवरों का सा बर्ताव करेगा तभी उसे कहा जाता है।

अ०– ये बिना सींग पूंछ के जानवर हैं। इनका हर काम ना समझी का होता है।

'बिसुनी बिलार, भितूरे मं डेरा।'

अ०– दौड़ी–दौड़ी बिलार आई और भितूर यानी जहां पर भोज–भात का सामान रखा था वहीं पर चुपचाप जा बैठी। कहावत ऐसे लोगों के प्रति कही जाती है जो किसी भीड़–भाड़ के समय चुपचाप खाने के सामान के पास आकर बैठ जाते हैं और मालिक बन जाने के फेर में रहते हैं। उनसे भला क्या सुरक्षा हो पायेगी? कहावत व्यंग्य में चरितार्थ की गई है।

'बी'

'बीती ताहि बिसारि दे आगे की सुधि लेय।'

कहावत बीते समय की बातों को भूलने व भविष्य की चिंता करने पर कही गई है।

अ०– बीती बातों को भूलकर आगे की खबर लेनी चाहिए। कल क्या होना चाहिए इसकी चिंता आवश्यक है।

'बीहा मिलै करम से ओढ़रा आंखी देख।'

श०– बीहा–विवाह करने पर। ओढ़रा–ब्याहा पति के मरने पर या उसके छोड़ देने पर स्त्री दूसरा आदमी कर लेती है।

कहावत छोटी जाति वालों के प्रति कही गई है।

अ०— ब्याहा अपनी तकदीर का मिलता है और ओढ़रा अपनी आँखों से देखकर उससे प्रभावित होने पर प्राप्त होता है।

'बीरन बिन नैहर न जांव,
पिय बिन सासुर न ठांव।'

श०— बीरन—भाई। ठांव—जगह।

अ०— बिना भाई के मैका न जाने का मन करता है और बिना पति के ससुराल में जगह नहीं मिल पाती।

'बीछी क काटा रोवै, सांप क काटा सोवै।'

अ०— बिच्छू डंक मारता है तो अत्यंत पीड़ा होती है और जब सांप काटता है तो फिर उसके बचने की कोई उम्मीद नहीं रह जाती है।

'बीछी क मंतर न जानै,
सांप के बिल मां हाथ डारै।'

अ०— जब लोग मामूली सा काम न जानें और बड़ा से बड़ा काम हाथ में लेना चाहें तो कहते हैं। बीच्छू उतारने का मंत्र तो आता नहीं चले हैं सांप की बिल में हाथ डालने। पहले छोटे कामों से बड़ा काम सीखा जाता है।

'बीहै नहीं गये तो बराते तौ गये हैं।'

श०— बीहे—ब्याह।

कहावत किसी काम को न करने के बावजूद जानकारी के विषय में उद्धृत की गई है।

अ०— यदि ब्याह नहीं किया है तो कम से कम बरात करने तो गये ही हैं जिससे ब्याह के तौर—तरीके मालूम हैं।

'बीरबल कै खिचरी होईगै।'

जब किसी काम में अत्यधिक देर होती है तो उस काम की तुलना बीरबल की खिचड़ी से की जाती है।

'बीबी मारे बांदी खाय, घर के बला घरहिं रहि जाय।'

श०— बीबी—पत्नी। बारै—पकवान या आंटे की लोई उतारना। बांदी—नौकरानी।

कहावत घर की बला घर में ही रह जाने की बात पर कही गई है।

अ०— बीबी अपने लड़के की बीमारी की उतार—पतार पकवान से अथवा आटे की लोई करती है तो उसे अपनी नौकरानी को खाने के लिए दे देती है। इस तरह से घर की बला घर में ही रह जाती है। वह बाहर नहीं जाती।

'बीसी ते खीसी।'

अ०— कहावत से आशय से निकलता है कि बीस वर्ष की हो जाने पर भारतीय नारियां बुड्ढी दिखाई देने लगती हैं।

'बीबी बड़ी भरमाली, कान पितरी क बाली।'

अ०— किसी छोटी और ओछी प्रकृति की स्त्री के प्रति कहावत कही गई है कि बीबी को अपनी पीतल की बाली पर ही बड़ा घमंड है।

'बु'

'बुढ़च्चर एक गये बड़गांव, डेरा पावन तर ऊंचे ठांव,
अहै बयार आड़ नहिं पावय, फटै करेज मलारिहि गावै।'

श०— बुढ़च्चर—बूढ़ा या मूर्ख। डेरा—रहने की जगह। ठांव—स्थान। बयार—हवा। आड़—ओट। मलार—सावन माह का गीत।

अ०— कहावत किसी ऐसे उम्रदार व मूर्ख आदमी पर कही गई है जो मूर्खता से कष्ट उठा रहा है। किसी गांव में ठिकाना तो नीचे रहने का है और वह जाकर किसी ऊंची जगह पर बैठा है। वहां इतनी हवा है कि कहीं कोई रुकावट नहीं है तो परेशानी से तंग आकर सावन के गीत गा रहे हैं।

'बुध बोउनी, सूक क लउनी।'

श०— बोउनी—बोना—काटना।

कहावत खेती संबंधी है।

अ०— खेत बुध को बोना और शुक्रवार को काटना चाहिए ऐसा कृषिशास्त्रियों का कहना है।

'बुड्ढा मरे चाहे जवान, हत्या से काम।'

कहावत अपना उल्लू सीधा करने से है। चाहे कुछ भी हो, कैसा भी हो, अपना काम होना चाहिए। क्या होता है इससे मतलब नहीं है।

अ०— चाहे बूढ़ा हो चाहे जवान, अपना काम तो हत्या कर देना है।

'बुध कहै मैं बड़ा सयाना, मोरे दिन जनि करो पयाना,
कौड़ी से ना भेंट करउबे, क्षेम कुशल से घर पहुंचबे।'

श०— सयान–अच्छा, समझदार। पयाना–यात्रा पर जाना। कौड़ी–पैसा, धन। क्षेमकुशल–कुशलता से, भलीभांति।

कहावत यात्रा पर जाने के प्रति कही गई है।

अ०— बुध का दिन लोग खाली दिन मानते हैं। इस दिन यात्रा करने पर लोग अच्छी तरह घर तो आ जायेंगे मगर लाभ एक पैसे का भी न होगा।

'बुध मिठाई, बीफे राई, सूक कहे मोहे दही सोहाई,
सनि कहय जो अदरक पाऊं, कालहु जीति कोटि घर लाऊं।'

उपरोक्त कहावत यात्रा में जाते समय घर से क्या खाकर निकलने के विषय पर है।

अ०— बुद्ध को मिठाई, बृहस्पति को राई, शुक्रवार को दही, शनि को अदरक खाकर यात्रा पर जाने से अनिष्ट समाप्त हो जाता है।

'रवि को पान, सोम को दर्पन,
मंगर को गुड़ धनिया अर्पन।'

इतवार को पान, सोमवार को शीशा देखकर, और मंगल को गुड़धनिया खाकर जाना चाहिए।

'बुढ़वा भतारे पै एतना गुमान।
लंउडा जो होते तो चलती उतान।।'

श०— भतारे–पति। गुमान–घमंड। लउंडा–छोकरा। लड़का सा। उतान–छाती फुलाकर, उल्टी होकर–ऐंठकर।

अ०— घमंडी स्त्री के ऊपर कहावत कही गई है जो अपनी मामूली सी वस्तु पर इतना ऐंठ दिखाती है। कहीं कोई वस्तु मूल्यवान या बढ़िया होती तो क्या होता?

'बुधे, बीफे हो भला, सुक्र न भला बखान
रबि मंगल बोउनी करै, धान न आवै द्वार।'

अ०— खेत में बीज डलवाते समय ध्यान रखना चाहिए कि दिन बुध या बृहस्पति का हो ये दो दिन बहुत अच्छे माने गये हैं। इतवार, मंगल को धान बोने से धान की फसल अच्छी न होगी।

'बुढ़ऊ के सीख, करै काम नीक।'

अ०— बूढ़े आदमियों का समझाना छोटों के लिए बड़ा ही लाभप्रद होता है।

'बुड़बक क धन फहीम खाय।'

मूर्ख की सम्पत्ति का उपयोग सभी कर लेते हैं।

'बुड़बक गये मछरी मारे, जाल गंवाय आये।'

मूर्ख आदमी चला मछली का शिकार करने, परन्तु जाल भी चोरी चला गया। इस प्रकार से मूर्खों के सभी काम हानिकारक होते हैं।

'बुड़बक गये हरवाही, दुइ बैल मं एक्को नाहीं।'

अ०— स्पष्ट है।

'बुड़बक धनइते के अहै एक बात।
कोठ में चाउर, घर मं उपास।।'

श०— धनइते–पैसेवाला।

अ०— मूर्ख आदमी को क्या कहा जाय, घर में अनाज रहते भी घर में उपवास का योग बन जाता है।

'बुड़बक बर क सांझेन बिछौना।'

जब कोई मूर्ख नये पद पर कहीं पहुंच जाता है अथवा किसी के घर या नाते–रिश्ते में पहुँचता है तो वह कुछ ज्यादा ही ठाट व शान बघारना चाहता है तब कहावत कही जाती है।

अ०— किसी मूर्ख दूल्हे को लगा कि ससुराल में ज्यादा ही रोब रखना चाहिए तो वे शाम से ही बिस्तर लगवाकर लेट गये।

'बुड़ऊ विआह किये, परोसिन क सुख भवा।'

कहावत व्यंग्य के रूप में कही गई है।

अ०— बूढ़े आदमी ने ब्याह किया तो पड़ोसियों को सुख मिला।

'बुड्ढी घोड़ी लाल लगाम।'

जब कोई बूढ़ी स्त्री रंग–बिरंगे कपड़े पहने या जवान स्त्रियों की भांति व्यवहर करे तो कहावत व्यंग्य में कही जाती है।

अ०– घोड़ी बूढ़ी को लाल लगाम लगी हुई है।

'बुलाये न बइठाये, मोर तीन हिस्सा।'

कोई जबरदस्ती किसी से हिस्सेदार लगाये तो कहावत कही जाती है।

अ०– न बुलाया गया, न बुलाकर बैठाया ही गया, न कुछ कहना सुनना, अब क्या कि मेरे भी हिस्से लगने चाहिएं। जहां कोई हिस्सा न हो वहां हिस्सेदारी प्रकट करना।

'बुलाये न चलाये मैं तो दुलहिन की चाची।'

जबरदस्ती का रिश्ता लगाना। दुल्हन की चाची बनने में इज्जत पाने की उम्मीद में।

अ०– कोई बात न चीत, न बुलाया गया न बैठाया गया। आकर धीरे से रिश्ता जोड़ बैठना कि मैं तो दुल्हन की चाची लगती हूँ।

'बू'

'बूढ़ तोता राम राम नहीं जपत।'

कहावत उन बुड्ढे लोगों के प्रति कही गई है जो नया काम सीखने की कोशिश करें।

अ०– बूढ़ा तोता राम–राम नहीं कह पायेगा।

'बूढ़े मुंह मुहांसा, लोग देखै तमासा।'

बुढ़ापे में जवानी का जोश या बुढ़ापे की कोई अनहोनी बात देखकर लोग मजाक बनाते हैं।

'बूढ़ भये, बछौनै नाव।'

अ०– बूढ़े हो चले हैं मगर नाम है बछौना (बछड़ा)।

'बूढ़ा जाने किया, बच्चा जाने हिया।'

श०– किया–कराया काम। हिया–मन, हृदय।

अ०– बूढ़ा व्यक्ति किया गया काम जानता है किन्तु बच्चा हृदय को पहचानता है। वह मीठा बोलने वाले का वशीभूत हो जाता है।

'बूढ़ भइंव गोइंया, ठसक मोर ओतनै।'

अ०– बूढ़ी हूं तो क्या हुआ, शान मेरी वही है।

'बूढ़ा बैल बेसाहे, झीना कपड़ा लेय,
आपन करै नसैनी, देवहिं दूसन देय।'

श०– बेसाहे–खरीदना। झीना– खांखर। नसौनी–नाश। देवहिं–दैव। दूसन–दोष।

कहावत अपनी बेवकूफी पर कही गई है।

अ०– बूढ़ा बैल भला क्या हल में चलेगा? उसको यदि कोई खरीदे और पतला कपड़ा तो उन्हें ज्यादा नहीं टिकना और कितने दिन कोई पहनेगा? लोग ऐसा स्वयं करके ईश्वर को दोष देते हैं।

'बूड़ा बंश कबीर का उपजा पूत कमाल।
हरि का सुमिरन छाड़ि के लै आया घर माल।'

जब किसी का लड़का कपूत, नालायक निकल जाता है तो लोग कबीरदास की इन पंक्तियों का इस्तेमाल करते हैं।

अ०– ऐसा कुपुत्र हुआ है कि अच्छे कामों को न करके तमाम गलत काम करता है। ऐसे लड़के से तो कुल, खानदान ही डूब जाता है जो अच्छे काम को छोड़कर चोरी–डकैती करके कुल की नाक ही कटा लेता है।

'बूढ़ नाउन, ठकुराइन के अढ़वय।'

श०– नाउन–नाइन, एक जाति होती है जो बाल बनाती है शादी विवाह में काम करती है। ठकुराइन–ठाकुर की पत्नी। अढ़वय–काम करवाना।

अ०– बूढ़ी नाइन ठकुराइन को काम बताये। यहां पर बूढ़े होने का फायदा यह कि नाइन अपनी मालकिन को काम करने का हुक्म दे रही है।

'बूढ़ बेसुआ तपस्वनी।'

श०– बेसुआ–वेश्या, रंडी, पतुरिया। तपस्वनी–पुजारिन, तप–जप करने वाली।

कहावत समयकी बात पर कही गई है। वेश्या का काम शरीर–संबंध के द्वारा धनार्जन होता है किन्तु बुढ़ापे में वेश्या को भला कौन पूछता है? अतः वह अपने शेष बुढ़ापे के दिनों में पूजा–पाठ करने

लग गई। यानी समय के अनुसार आदमी को विवश होकर स्वयं को बदलना पड़ता हैं।

'बूढ़ा बुढ़ाई दांव कोलिया मां संध्या करैं।'

श०– कोलिया– दो दीवारों के बीच की पतली सी गैलरी, दांव–अवस्था। संध्या–शाम के समय की पूजा, संध्या–बंदन।

कहावत उस बूढ़ी स्त्री पर व्यंग्य में कही गई है जो जीवन भर तो खुराफात में रही हो मगर बूढ़ी होने पर धर्म, कर्म, पूजा–पाठ करने में लगी हो।

अ०– बूढ़ा माई बुढ़ापे में संध्या करने बैठीं तो कोलिया में अर्थात् संकरी जगह में जाकर पूजा करने लगीं।

'बूढ़ा बुढ़ाई दांव भगतिन भई,
कथरी ले के सरगे गंई।'

श०– भगतिन–पुजारिन। कथरी–गूदड़, गांवों में फटे कपड़ों को जोड़–बटोरकर मोटी सी बिछौनी बनाकर सोते हैं।

कहावत बुढ़ापे में भी लालच न छोंड़ने पर कही गई है।

अ०– बूढ़ा माता इस उम्र में जब किसी प्रकार से भगतिन भी हुईं तो पुरानी आदतों को छोड़ने से मजबूर रहीं। वे मरते समय भी अपनी कथरी ओढ़कर मरीं।

'बूचा सबसे ऊँचा।'

श०– बूंचा– जिसका कान कटी हो।

अ०– जो आदमी सबसे अलग दिखाई देता है उसी पर कहावत स्पष्ट की जाती है कि जो सबसे भिन्न हो वही सबसे अच्छा है। कम से कम पहचान तो रहती है।

'बूढ़ भइंव गोइंया, दिमाग मोर ओतने।'

कोई बूढ़ी स्त्री अपने को बूढ़ी नहीं समझती वह अपने पुराने समय के ताव में ही रहती है।

अ०– मैं बूढ़ी हूं तो क्या हुआ, दिमाग हमारा उतना का उतना ही है। उम्र के हिसाब से कोई बुढ़ापे के लक्षण नहीं हैं।

'बूढ़ भये पिलौने नाव।'

अ०– आदमी बूढ़ा हो जाता है मगर उसे जवान कहलाने की बड़ी इच्छा मन में होती है। इसी पर किसी ने व्यंग्य में कहा है– कुत्ता बूढ़ा हो गया मगर वह अपने को पिल्ला ही कहलाना चाहता है।

'बूढ़ गवइया के, के सुने गीत?'

जब आदमी बूढ़ा हो जाता है तो उसके काम ठीक ढंग से नहीं हो पाते। अतः कहावत बूढ़े लोगों के ऊपर ही कही गई है।

अ०– बूढ़े आदमी का गाना भला कौन सुने? न राग है, न आवाज है, न स्वर है और न मिठास है। अतः बूढ़े आदमी का बेसुरा– बेताल गीत कौन सुने?

'बे'

'बेहया की पीठी पर रूख जामा कहेस, हमका छांह भै।'

श०– बेहया– बेशर्म। जो अपनी लाज हया धो चुका हो। पीठी–पीठ। छांह–छाया।

कहावत किसी बेशर्म आदमी को देखकर कही गई है।

अ०– कोई बेहया था उसकी पीठ पर पेड़ जमा तो उसे शर्म तो क्या आये? बेशर्मी के साथ बोला–कोई हर्ज नहीं यह मेरे ऊपर छाया हुई है।

'बेरामी तौ आय अरामी, जौ कांखत बने तौ।'

कहावत व्यंग्य में किसी कम बीमार आदमी के प्रति कही गई है जो थोड़ी सी तबीयत खराब होने पर चारपाई पकड़ ले और बहाना बड़ी बीमारी का करे।

अ०– बीमारी तो आराम करने की बात है यदि मरीज से कराहते बने, बीमारी की गंभीरता को जाहिर करते बने।

'बेकारी से बेगारी अच्छी।'

अ०– व्यर्थ में बैठे रहने से तो कहीं अच्छा है कि किसी का काम बिना पैसे के कर दे। कम से कम काम में मन तो लगा रहेगा। कहते हैं– **'खाली दिमाग शैतान का घर होता है।'** जो खाली बैठा रहता है उसके दिमाग में खुराफात ही आती है।

'बेझड़ा क पीसे वाली, गोहूं क गउनई गावै।'

श०– बेझड़ा– जौ, मटर या चने का मिश्रित नाज।

अपनी औकात से अधिक काम व बात करने वाली स्त्री पर कहावत उद्धृत की गई है।

अ०– पीसने को तो हैं बेझड़ का अनाज और गीत गा रही है गेहूं के अनाज की।

'बेटा मरे तिस्सर न परे।'

कहावत तीसरे बेटे के जन्म के समय पर कही गई है जिसे लोकाचार में 'तेंतर' कहते हैं। हमारे यहां ऐसा लोकविश्वास है कि तीन लड़कियों पर जन्मा लड़का बहुत अशुभ माना जाता। इस पर एक कहावत भी है– 'तेंतर कहे बहेतर से तू खा माई हम खाईं बाप।' यानी कहते हैं कि तेंतर लड़का बाप के लिये दोषी माना जाता है और उसके बाद का हुआ बहेतर मां के लिये दोषी होता है। कहावत इसी को लेकर कही गई है।

अ०– चाहे बिना पुत्र के घर रहे मगर तेंतर लड़के का मर जाना ही अच्छा है।

'बेटवा हुआ तब जानौ जब पोता खेलै द्वार।'

अ०– बेटे होने की कई गुनी खुशी तो उस समय होती है जब घर में पोता पैदा होता है तो उस समय लगता है कि आज मेरे वंश के आगे बढ़ने की आशा हुई।

'बेधर्मो भये तो बेहना के साये।'

श०– बेधर्म– धर्म का टूटना। बेहना–जुलाहों की एक जाति।

कहावत ऐसी दशा में कही गई है जब कोई अपना बहुत कुछ गंवाने के बाद भी संतुष्ट न हो।

अ०– धर्म छोड़ दिया कि अब सुख, आराम मिलेगा किन्तु वह भी मुयस्सर न हुआ। बेहना के साथ भी वही दुख मिला।

'बेटी औ घास बराबर बढ़ती है।'

अ०– बिटिया घास की तरह बढ़ती है।

'बेटी की जीतेव रोवय क मरैव रोवय क होय।'

अ०– लड़की के जीते तो जब वह ससुराल जाती है तो रोना होता है और मरने पर भी रोना पड़ता है।

'बेबिआही बिटिया रोटी खाय,
बिआहे के बाद बोटी खाय।'

कहावत लड़की के ससुराल जाने पर कही गई है।

अ०– बिना ब्याह के लड़की रोटी खाती है मगर ब्याह हो जाने पर जब वह ससुराल जाती है तो उसको देने लेने में खर्च अधिक बढ़ जाता है। फिर वह माता–पिता का मांस निचोड़ने लग जाती है। उस समय इज्जत की बात होती है कि देना ही होगा।

'बिना मेंह की डांवरी, घोड़ा बिना लगाम।
बे नाथ के लसकर, तीनों भये बेकाम।'

श०– वरी–लेव लगाना। नाथ– स्वामी। लस्कर–सेना।

कहावत कई विषयों पर उद्धृत की गई है।

अ०– बिना पानी बरसे खेत में लेव लगाना, बिना लगाम के घोड़े की सवारी करना तथा बिना सेनानायक की फौज ये तीनों व्यर्थ हैं।

'बेटवा बिआनी खुरपी कै बेंट।'

अ०– किसी नारी ने लड़के को जन्म दिया भी तो बेहद कमजोर बच्चे को जन्म दिया। प्रसूता नारी पर व्यंग्य किया गया है। लड़का उत्पन्न हुआ वह भी खुरपी के बेंट की तरह पतला।

'बेलिया–बेलिया तेलिया जोरै,
रहिमान ढकेलै कुप्पा।'

श०– बेलिया–जिससे तेली लोग तेल निकालते हैं, वह छोटे से बेल का बना रहता है। रहिमान– वस्तु बर्बाद करने वाले का उपनाम। कुप्पा–छोटी लुटिया के नाप की बनी चमड़े की चीज।

कहावत किसी दूसरे के द्वारा वस्तु के दुरुपयोग के प्रति कही गई है।

अ०– तेली बेचारा तो एक–एक बेलिया तेल जुटाता है और रहिमान भाई हैं कि वे कुप्पा का कुप्पा तेल जमीन पर ही गिरा देते हैं।

'बेटवा बिआय नै के रहे
गहना पहिरय ढांके के रहे।'

यह कहावत उपदेशात्मक है। घर की बड़ी बूढ़ी स्त्रियां अपनी बेटी–बहू को शिक्षा के रूप में कहा करती थीं।

अ०– बेटा पैदा हो तो फल से लदे वृक्ष की तरह झुक कर रहना चाहिए और गहना पहिनने के बाद उसे ढंक कर रखना चाहिए ताकि किसी प्रकार का दिखावापन न प्रकट हो। गंभीरता ही समृद्धिपने की निशानी होती है।

'वेस्या बिटिया नील है, ब्न सांवा पुत जान।
वो आई सब घर भर्‌या दरब लुटावत आन।।'

श०– वेस्या बिटिया– पतुरिया की लड़की। नील की खेती से पैसा बहुत आता है। सांवा– एक प्रकार का मोटा अनाज है जिसमें कोई फायदा नहीं होता है।

कहावत वेश्या की संतान के ऊपर कही गई है।

अ०– वेश्या की लड़की नील की खेती के समान होती है उसे वह अपने जैसे अपकर्म में लगाकर पैसा पैदा करवा लेती है और पुत्र बनैले सांवा के जैसा होता है उससे उसको कोई लाभ नहीं होता।

'बेलज्ज बहुरिया, घर–घर नाचै'

श०– बहुरिया–नई बहू। घर–घर–सभी के यहां।

कहावत नई आई हुई बहू के प्रति कही गई है।

अ०– नई बहू ऐसी कि वह दूसरों के घर–घर जाकर घूमती है।

'बेल पाक तो कौवों के बाप का क्या?'

जो वस्तु जिस आदमी के लिये सुलभ न हो या काम की न हो तो कहावत चरितार्थ होती है।

अ०– बेल जिसका छिलका इतना कड़ा होता है तो उसे कौवे कैसे खा सकते हैं तो कहा है कि बेल पका तो कौवों के पुरखों को क्या मिला? उनके लिये बेल का फल बेकार है।

'वेस्या न सती होय, न कागा जती होय।'

श०– सती–पतिव्रता नारी। जती–साधु। कागा–कौवा। कहते हैं कि कोई भी चरित्रहीन नारी कभी सती नहीं हो सकती है।

अ०– न कोई चरित्रहीन नारी या वेश्या सतवंती हो सकती है और न कौवा साधु ही बन सकता है।

'बेटा पर कै बेटी लिलारे पर कै मोती।
छोड़ पिया खेती, खेलाब मोरी बेटी।'

अ०– बेटे के ऊपर की बेटी बड़ी लाड़ली व प्यारी होने पर कहा है कि ऐ प्रियतम! खेती–बारी का काम छोड़कर मेरी बेटी को खिलाओ। वह बड़ी प्यारी व बड़े अरमानों की है।

'बेंचै के साग, करै मोती क मोल।'

अ०– हैसियत तो है साग लेकर दुकानदारी करने की, साग का मोल ही बताना है मगर दाम मोतियों का पूछते हैं। असंगत बात करना।

'बेटवा बिआने बुढ़ौती की ताई, आई पतोहिया छूटि गया नाता
अमवा लगायेन खांय की ताई, वही पुरवइय्या, लागि गवा लासा।'

श०– बिआने– पैदा किया। लासा– ऐसे कीटाणु होते हैं जो आम की बौर में लगकर फल को नष्ट कर देते हैं।

कहावत संतान के प्रति निराश व दुखी होकर कही जाती है।

अ०– बेटे को पैदा किया कि बुढ़ौती में सेवा करेगा उससे सुख मिलेगा मगर बहू के आते ही जैसे मां–बेटे का नाता ही समाप्त हो गया हो। उसी प्रकार से आम के पेड़ लगाये थे कि आम फलेंगे तो खाने को मिलेंगे मगर बीच में ही पुरवइया हवा ऐसी बही कि बौर में लासा लग गया। कोई भी काम यदि इच्छा के खिलाफ होता है तो लोग कहावत का उपयोग करते हैं।

'बै'

'बैपार करे तो, बेचे घोड़
खेती करे तो जोते तोड़।'

श०– बैपार–व्यापार, बेचना। तोड़–खेत के निखरने या नमी रहने पर।

अ०– यदि रोजगार करना है तो घोड़े का करे और खेती करना है तो खेत बिखरने पर जोतकर बीज बोयें।

'बैले चौंकना, टुटही नाव,

ई कउनौ दिन देइहैं दांव।'

श०— चौंकना—उचकनेवाला, चौंक कर भागने वाला। बांव— दगा देना, धोखा देना।

अ०— चौंकना कर भागने वाले बैल व टूटी नाव ये दोनों किसी दिन धोखा जरूर देंगे।

'बैठी बुढ़िया मंगल गावै।'

अ०— बूढ़ी स्त्रियाँ करें क्या, बैठे—बैठे गाना ही गाती रहती हैं। खाली समय का सदुपयोग करना।

'बैठे—बैठे तो कारू का खजाना खाली होय जात।'

श०— कारूं—हजरत मूसा का बड़ा भाई। खजाना—धन का भण्डार।

कहावत बिना काम के खाने पर कही गई है।

अ०— जब बैठे रहकर खाना है तो कितना भी बचाओ घर का पैसा जो बहुत थोड़ा है, खत्म हो सकता है। जब मूसा का खजाना समाप्त हो सकता है तो इसकी क्या बात है?

'बैद करे बैदई, चंगा करे खोदाय।'

अ०— डाक्टर, हकीम, बैद्य तो अपनी दवा ही करते हैं। मरीज को भगवान की कृपा होती है तभी अच्छा होता है। कहावत ईश्वरवादी है।

'बैशाख द्वितीया याम, उत्तर ऊंचो चांद।

यह निश्चय ही जानिये, धरती मेंह सुलाभ।।

अ०— यदि बैशाख की द्वितीया को चांद ऊपर आकाश में ऊंचा निकला है तो निश्चय ही पानी बरसेगा।

'बैर—प्रीति नहिं दुरै दुराये।'

अ०— दूसरे के मन में क्या है इसकी पहचान आसानी से हो जाती है। कवि रहीम खानखाना के शब्दों में—

'खैर, खून, खांसी, खुसी, बैर, प्रीति, मदपान।

रहिमन दाबे ना दबे, जानै सकल जहान।'

तो बैर व प्रीति की भावनायें छिपाने से नहीं छिपतीं।

'बैला बेसहन जाओ कंता, भूरे का मत देखो दंता।'

अ०— किसान की पत्नी अपने पति किसान से कहती है कि यदि बैल लेने जाना तो भूरे बैल मिलने पर उसका दांत मत देखना, तुरंत खरीद लेना यानी कि ऐसे बैल अच्छे माने जाते हैं।

'बैल चमकना जोत में औ चमकीली नार,

ये बैरी हैं जान के लाज रखे करतार।'

श०— चमकना—चमकने वाला। चमकीली—तरह—तरह के भाव बदलने वाली, आंख, मुंह, हाथों को मटकाकर बोलने वाली स्त्री। नार—स्त्री।

अ०— चौंकने वाला बैल व चमकने वाली स्त्री यदि घर है तो उस पुरुष की इज्जत भगवान ही रख सकते हैं। यानी ऐसे स्वभाव की स्त्री चरित्र की अच्छी नहीं कही जाती है।

'बैल लीजिये कबरा, दाम दीजै अगरा।'

श०— अगरा—अग्रिम।

अ०— कबरे बैल के लिए अगवड़ पैसा देकर लेना चाहिए।

'बैल मुसहरा जो कोइ लेय, राज भंग पल में करि देय।

बिया—बाल सब कुछ छुट जाय, भीख मांग के घर—घर खाय।'

श०— मुसहरा—जिन बैलों की पूंछ के बाल काले—सफेद यानी खिचड़ी हों, शरीर का रंग दूसरा हो और शरीर लटका हो। राजभंग—राज्य का नाश। पल—क्षण में।

अ०— यदि कोई मुसहरा बैल खरीदता है तो वह राजपाट तक को नष्ट कर देता है। ऐसे किस्म के बैल लेने से मालिक का धन समाप्त हो जाता है। बाल—बच्चों के लिए अनिष्ट है। ये घर—घर भीख मंगवाने तक की नौबत ला देते हैं।

'बैल मरकना चमकुल जोय,

वहि घर ओरहन नित नित होय।'

अ०— जिसके घर में मारने वाला बैल हो और मटक दिखाने वाली स्त्री हो उसके घर में पड़ोसियों के यहां से हमेशा शिकायतें आया करती हैं।

'बैशाख सुदी प्रथम दिवस, बादर, बिज्जु करेय।

दाम बिना बैसाहिये, पूरा साख भरेय।।'

अ०– बैशाख मास की उजाली प्रतिपदा को यदि बादल बिजली आकाश में हो तो फसलें बहुत अच्छी होंगी।

'बैल बगौधा, निरधिन जोय,

तो घर ओरहन कबौ न होय।'

श०– बगौधा– खूंटे से बंधे रहने वाला। निरधिन– रुपये–पैसे का लेन–देन न करने वाली। जोय–स्त्री।

अ०– जिस घर में बैल खूंटे से बंधने वाले और घर की मालकिन रुपये–पैसे उधार न लेने न देने वाली हो उस घर में शिकायत कभी नहीं आती है।

'बैरी क बोल, बसुला क छोल।'

अ०– दुश्मन की बोली ऐसी लगती है मानो कोई बसुले से शरीर को छील रहा हो। जिस प्रकार से वह ताना व्यंग्य, कटूक्तियों को कहता है असह्य हो जाती हैं।

'बैरी सोवै, न सोवै देय।'

अ०– दुश्मन न तो खुद ही चैन लेता है और न चैन लेने देता है।

'बो'

'बोया पेड़ बबूल का, आम कहां से होय।'

जब किसी आदमी की करनी के ऊपर कोई घटना घटती है, तो यह कबीरदास जी की पंक्ति बहुधा लोग कह देते हैं।

अ०– जब करनी अच्छी नहीं होती है तो कहावत कहते हैं, बबूल के पेड़ यदि बोये हैं तो आम कैसे मिल सकेंगे? यानी–जैसी करनी, वैसी भरनी।' गोस्वामी जी ने कहा है– 'करै जो कर्म पाव फल सोई, निगम नीति अस कह सब कोई।'

'बोली लोखरी फूली क़ास, अब नाहीं बरखा कै आस।'

अ०– कास जो एक प्रकार की घास है। उसके फूलने पर बरसात समाप्त हो जाती है। कवि तुलसीदास जी के शब्दों में– 'फूले कास सकल महि छाई, जनु बरखा कृत प्रगट बुढ़ाई।'

कहावत इसी पर कही गई है।

अ०– लोमड़ी बोलने लगी है और कास के फूल फूल चुके हैं इसलिये अब पानी बरसने की आशा समाप्त हो चुकी है।

'बोये गोहूं, उपजा जौ।'

अ०– नेकी के बदले बुराई हाथ आना।

'बोय न जोता, राम ने दिया पोता।'

अ०– अचानक भाग्य का खुल जाना।

'बोली तौ तब बोलौ, जब बोलन की बुध होय।'

अ०– बात तभी करो जब बोलने का ढंग हो।' मूर्खतापूर्ण बोली बोलने से भला न बोलना ही है।

'बोलय मोर महातुरो, खाटी होय जो छाछ

मेह मही पर परन को, जानो काछोकाछ।'

श०– महातुरो–आतुरता के साथ, उत्साह से। खाटी–खट्टी। छाछ–मट्ठा। मेह–पानी। मही–पृथ्वी। कोछोकाछ–कीचड़।

अ०– यदि मोर अपनी पूरी आवाज में बोले और मट्ठा खट्टा होने लगे तो समझो कि धरती पर पानी खूब बरसेगा और सर्वत्र कीचड़ होगा।

'बोलिया है करतुतिया नाहीं,

मेहर है घर टटिया नाहीं।'

श०– बोलिया–बोलना। करतुतिया–करनी। मेहर–स्त्री, पत्नी। टटिया–झोंपड़ी में बंद करने का दरवाजा।

अ०– कहावत गरीबी को लेकर कही गई है कि 'बोली ही बोली है, करनी एक पैसे नहीं है। उसी तरह औरत लाने की लालसा तो मगर घर में आड़ तक नहीं है कि कम से कम बैठने की तो कोई जगह होती।

'बोलो चालो बको मत, खाओ–पीओ,

छको मत, चलो फिरो थको मत।'

अ०– बोलना–चालना बुरा नहीं है मगर व्यर्थ की बातें करके बकवादीपना मत करो। खाना–पीना अच्छा है मगर अपना पेट इतना न भर लो कि भोजन हानिकारक हो जाय। उसी प्रकार से चलो फिरो मगर इतना नहीं कि थक जाओ। तात्पर्य यह कि किसी बात की अति बुरी होती है।

'बोये बजरा, आये पूख, फिर मन कैसे पाये सूख।'

अ०– बाजरा बोने के समय पुष्य नक्षत्र लग गया है अब पैदावार कैसे अच्छी हो सकती है?

'बोओ गोहूं, काट कपास, न हो ढेला न हो घास।'

अ०– स्पष्ट है।

'ब्याज मोटा तो मूल टूटा।'

जब अधिक धन कर्ज में दिया गया होता है तो उसका ब्याज देने में बड़ी परेशानी हो जाती है। जो लोग उतना पैसा दे नहीं पाते, फलतः ब्याज की कौन कहे मूल भी लौटना मुश्किल हो जाता है।

'ब्याह क असगुन तबै मिला जब लहकौरे मां आय भुट्टा।'

कहावत उस समय कही जाती है जब बरातियों के आदर–सम्मान का समय हो और बर–बरातियों के स्वागत में खाने को मक्के का व्यंजन आये।

श०– लहकौर–लहकौर की एक रस्म होती है जिसमें बर के लिये स्त्रियां भोजन लेकर आती हैं। भुट्टा–मक्का।

अ०– ब्याह में बरातियों का क्या स्वागत–सत्कार होगा यह तो तभी पता लग गया जब बर के लिये जनवासा में मक्के की भुट्टी खाने को आयी।

'ब्याह के पीछे पत्तल भारी।'

जब कोई काम समाप्त हो जाता है तो उसके बाद एक पैसे का खर्च भी खल जाता है।

अ०– ब्याह हो जाने के बाद कोई कहे कि पत्तल ही मंगवा दो तो वह बहुत बुरा लगेगा।

'ब्याह न भा गौने का झगड़ा।'

'ब्याह अभी हुआ नहीं कि बहू की विदाई की बात आकर अड़ गई।

'ब्याही न बरात चढ़ीं, डोली में बैठी न चूं–चूं भई।'

यहां पर किसी बिनब्याही कन्या को व्यंग्य में कहावत कही गई है।

अ०– न ब्याह हुआ, न बारात आई, न डोली में बैठी, न रोना धोना ही हुआ।

'ब्याही धिया परोसिन की तरह।'

अ०– जब लड़की की शादी हो चुकी हो तब तो जब बुलाई जायेगी तभी आयेगी। वह तो पड़ोसिन की तरह हो जाती है। मायका उसका पराया हो जाता है। ससुराल उसका अपना घर हो जाता है। अतः लड़कियां फिर मैके बहुत कम आती हैं।

'बं'

'बंदर का जानै अदरक का स्वाद'।

कहावत किसी मूर्ख या अल्पबुद्धि के लिए कही जाती है।

अ०– भला बंदर अदरक का स्वाद क्या जाने? उसके लिये उसकी कीमत ही क्या है?

'बंदर का हाल मुछंदर जानै'।

अ०– बंदर का हाल मुछंदर यानी मूछों वाला ही जान सकता है– जो बंदरों का सरदार होता है।

'बंदर के गले में मोतियों की माला'।

अ०– किसी अयोग्य व्यक्ति को ऐसी वस्तु मिलना जिसकी कद्र न जाने।

'बंदर नाचे ऊंट जल मरे'।

जो काम कोई आदमी न जानता हो उसको यदि दूसरा करता है तो उसे उससे जलन होती है।

अ०– बंदर जब नाचता है तो ऊंट उससे जलता है इसलिये कि ऊंट को नाचना नहीं आता।

'बंदर क घाव होइगा'।

कहते हैं कि बंदर की चोट या फोड़ा जल्दी ठीक़ नहीं होता है। किसी के साथ ऐसी स्थिति आने पर कहावत कही जाती है।

'बंदगी तस क तस इनाम बस क बस'।

जब किसी आदमी को अधिक परिश्रम और सेवा के बदले में इनाम कम मिलता है तो कहावत चरितार्थ की जाती है।

अ०– सेवा तो ज्यों की त्यों है मगर इनाम इतना कम क्यों?

'बां'

'बांटा पूत पड़ोसी दाखिल'।

अ०– जब लड़का अपना ही क्यों न हो, अलग रहने लग जाता है तो वह एक पड़ोसी की भांति हो जाता है। तात्पर्य यह कि जब वह अपने मां–बाप के दुख–सुख मे पहुंचेगा तो माता–पिता भी उसके दुख–सुख में शरीक होंगे।

'बांझ का जाने पेट पिराय'।

श०– बांझ– जिस नारी के बच्चा हुआ न हो। पेट पिराय–बच्चे के होने का दर्द, प्रसव–वेदना।

अ०– जो किसी बात का भुक्तभोगी नहीं होता वह उस स्थिति को नहीं समझ सकता है। जब किसी नारी को बच्चा हुआ ही न हो तो वह बच्चे के होने का दर्द क्या समझ सकती है? तुलसीदास के शब्दों में 'बांझ का जान प्रसव कै पीरा?'

'बांझ बिआनी तो सोंठ हेरानी'।

जब कभी कोई काम कठिन हो तो उसके होने या सफलता मिलने में बड़ी प्रतीक्षा करनी होती है। उसके बाद भी यदि कार्य हुआ तो उसके साधन की कमी कभी–कभी और भी दुखदाई प्रतीत होती है।

अ०– किसी प्रकार से बांझिन स्त्री को बच्चा हुआ भी तो सौर की विशेष वस्तु सोंठ ही खो गयी। एक न एक बाधा का सामने आ जाना।

'बांगर जमीन के अन्ने औ जोलाहा के धन्ने
मां कउनों दम नहीं होतै।'

श०– बांगर–जहाँ बाढ़ का पानी न पहुँचता हो। धन्ने–अनाज, धन। जोलाहा–बुनकर, जो करघे पर कपड़ा बुनता हो। दम–ताकत।

अ०– बंगरही जमीन का अन्न व जोलाहा का धन व्यर्थ होता है। उसमे बरक्कत नहीं होती है।

'बांधे बनिया बजार नहीं लगावत'।

किसी से कोई काम जबरदस्ती नहीं कराया जा सकता है।

अ०– बनिया को चाहो कि पकड़कर जबरन बाजार लगवायें तो असंभव है। किसी से भी कोई काम धर–पकड़ कर नहीं करवाया जा सकता है।

'बांड़ा पूत बहेडुआ, बांड़ी धिया छिनार'।

श०– बांड़ा–अकेला, जानवरों में पूंछ कट्टा। धिया–लड़की। छिनार–चरित्रहीन, बदचलन।

अ०– जब संतान अकेली होती है तो वह माता–पिता के अधिक दुलार के कारण बिगड़ जाती है। कहावत आवश्यकता से अधिक लाड़–प्यार के कारण बिगड़ने पर कही गई है।

अ०– अकेला पुत्र व अकेली कन्या अपनी मनमानी करने के कारण गलत रास्ते पर चलने के आदी होने लगते हैं क्योंकि वे मां–बाप के अनुशासन में रहना पसंद नहीं करते।

'बांस, बाग, बिगहा, बिया, नारी, बेटा, बैल।
व्यवहार, बढ़ई, बन, बबूल, बात सुनो यह छैल,
जो बकार बारह बसे, सो पूरन गृहस्त
औरन को दुख दे सदा, आप रहैं अलमस्त।'

अ०– उपरोक्त बारहों वस्तु जिस किसान के पास हों समझो कि वह पूर्णरूप से निश्चित किसान है। उसे अपने काम की हर वस्तुएं सुलभ हैं।

'बांट चोट खाय, सदा अघाय'

श०– बांट चोट–आपस में बटवारा करके। अघाय–पेटभर जाय।

अ०– आपस में शांति से मिलजुलकर बांट कर खाने से ही सुख व सम्पन्नता रहती है।

'बांध कुदारी खुरपी साथ, लाठी हंसिया राखै हाथ।
बिने घास औ खेत निरावै, तो पूरा किसान कहवावै।

श०– कुदार, खुरपी–किसानों का औजार है। निरावै–घास को साफ करना।

अ०– किसान के लक्षण हैं कि अपने साथ कुदाल खेत गोड़ने के लिए, खुरपी खेत निराने के लिए, कंधे पर लाठी और खेत काटने की हंसिया रखे तो वही पूरा किसान कहलाता है।

'बांह गहे की लाज'।

कहावत किसी काम को हाथ में लेने के बाद उसे पूरा करने की जिम्मेदारी के प्रति कही गई है।

अ०– यदि किसी की बांह पकड़ी है, किसी के साथ जिम्मेदारी पूरी करने का वायदा किया है तो उसे निभाना ही पड़ेगा। उससे छुटकारा पाना कठिन है।

'बांबी में हाथ तू डाल, मंत्र मैं पढ़ूं'।

श०– बांबी–सांप के बिल के ऊपर की मिट्टी। मंत्र–सांप का मंत्र।

अपनी जान बचाकर दूसरे को खतरे में डालना हो तो कहावत का इस्तेमाल होता है।

अ०– तू सांप की बांबी में हाथ डाल तो मैं विष उतारने का मंत्र पढ़ता हूं।

'बांझ भल एकोझे नाय'।

श०– एकोझे–जिसके एक ही बार बच्चा हो के बंद हो गया हो।

अ०– लोक विश्वास है कि जिसके एक ही संतान होकर दुबारा न हो उसका मुख सुबह नहीं देखना चाहिए।

कहा है कि बांझ स्त्री अच्छी है किन्तु एक संतान वाली भली नहीं।

'बांदी के तर बांदी आई, क्यों जानै आंधी आई'।

श०– बांदी–नौकरानी, सेविका।

कहावत नौकरानी के नौकरानी आने की बात पर कही गई है।

अ०– नौकरानी के ऊपर दूसरी नौकरानी क्या आई है समझो कि घर में तूफान आ गया है।

'बांस बढ़े झुकि जाय, अरंड बढ़े टुटि जाय।'

कहावत बड़प्पन से संबंधित है। बांस का पेड़ लचीला होता है इसलिये वह टूटता नहीं। अरंड का पेड़ कड़ा होता है इसलिए बढ़ने पर टूट जाता है।

'बांस की जड़ में घमोय जामे'।

श०– घमोय–भड़भाड़।

कहावत घर के किसी नालायक व्यक्ति या पुत्र पर कही जाती है।

अ०– बांस के पास घमोय जमा है जिससे बांस नष्ट हो जायेगा। उसी प्रकार से कुल में कुपुत्र के जन्म होने से वंश का हास होता है।

'बांध खीसा ले हींसा'।

श०– खीसा– जेब या कोई भी वस्तु जिसमें सामान रखा जा सके। हींसा–भाग, अधिकार।

कहावत व्यंग्य में कही गई है। जब कोई हिस्सा ही नहीं है तो कैसा हिस्सा?

अ०– चलो बांधो खीसा और लो अपना हिस्सा, जो बड़े ताव से हिस्सा लेने आये हो।

'बूं'

'बूंद–बूंद से घट भरत।'

कहावत शिक्षा के रूप में कही जाती है या संचित सामग्री को देखकर कही जाती है।

अ०– थोड़ा–थोड़ा इकट्ठा करने से बहुत कुछ इकट्ठा हो जाता है।

'भवा बिआह मोर करबे का।'

जब तक काम न हो तब तक तो गर्ज अटकी रहे और जब काम हो जाय तो कोई परवाह न करना। कहावत गर्ज निकलने पर कही गई है।

अ०– अब तो विवाह हो गया अब क्या बिगाड़ोगे हमारा?

'भइ छछूंदर सांप गति उगिलत बनै न खात'।

जब कोई आदमी किसी बड़े चक्कर में फंस जाता है, जिससे न वह उबर सकता है और न डूब ही सकता है। ऐसा काम जिसको करे तो मरे, न करे तो मरे, न करते बने न छोड़ते ही बने, तो कहावत सामने आती है।

अ०– कठिन समस्या का आ जाना। कहते हैं कि सांप यदि छछूंदर को पकड़ लेता है तो न निगल पाता है और न उगल पाता है।

'भकुआ भीजै गांव के गोयड़े'।

श०– भकुआ–बेवकूफ, मूर्ख। गोयड़े–किनारे।

कहावत उस मूर्ख आदमी पर कही गई है जिसे कष्ट सहने के बाद भी ज्ञान न हो।

अ०— कोई मूर्ख गांव के पास ही भींगता रहे मगर अक्ल न आई कि किसी के घर की छाया में ही चला जाय या अपने ही घर चला जाय।

'भागते भूत की लंगोटिन हाथ।'

जब कोई आदमी कोई वस्तु लेकर भाग रहा हो तो उससे जो भी मिल जाय वही बहुत है।

अ०— भागते भूत या चोर की लंगोटी ही बहुत है। कुछ तो हाथ आया।

'भट, भटियारिन वैस्या, तीनों जाति कुजाति।
आते का आदर करें, जात न पूछें बात।'

श०— भट, भाट, यशगान सुनाने व मांगने वाले। भटियारिन–शराब बेचने वाली स्त्री।

अ०— भाट–भटियारिन और वेश्या तीनों जाति ऐसी होती हैं जो आने के समय तो बहुत आदर देती हैं और जाते समय बात भी नहीं पूछतीं।

'भउजी का घर दुआर, ननदी क लबलब'।

कहावत घर की कुलवधू के प्रति व घर की लड़कियों के लिये कही गई है जिसमें बहुओं को बड़ा ही महत्व दिया गया है लड़कियों का उतार किया गया है।

अ०— भाभी का तो घरदुआर है। लड़कियां–ननदों का तो केवल इधर–उधर का काम रहता है। ठोस काम की मालकिन तो घर की बहू ही होती है। ननदें तो पराये घर की हो जाती हैं।

'भड़क भारी, खीसा खाली'।

श०— भड़क–शान–शौकत, दिखावा। खीसा–जेब।

अ०— ऊपरी शान–शौकत इतनी और अंदर की जेब एकदम खाली पड़ी है। झूठी शान बनाये रखना।

'भय बिनु होय न प्रीत'।

अ०— कोई भी काम बिना डर के नहीं होता है। डर से प्रेम भी बढ़ता है। बिना अंकुश के हाथी भी ठीक तरह से नहीं चलता है।

'भले तू मारया, हम रोवइयै रहे।'

किसी को कोई काम करने का बहाना मिल जाना, काम तो उसे करना ही था, एक बहाना भी उसी में मिल गया।

अ०— रोने का मन तो पहले ही था उसी में किसी ने मार दिया तो कहने को हुआ कि मारने के कारण रोना आया।

'भरी जवानी मांझा ढील'।

किसी जवान आदमी का ढीलापन देखकर कहावत कही गई है।

अ०— इसकी जवानी की उम्र में यह हाल है कि अंग–अंग पर सुस्ती, दुर्बलता, आलस्य चढ़ा है। आंखें गड्ढे में चली गई हैं, चेहरे पर हवाइयां उड़ रही हैं।

भड़भड़ी भल, पेट क पापी बुरा'।

श०— भड़भड़ी–भड़भड़िया, साफ बात को कहने वाला, पेट में बात को न रखने वाला, दिल का साफ।

कहावत बात के साफ कहने वाले तथा उसके विपरीत जो पेट में बात को पचाकर घात करते हैं, उन पर कही गई है।

अ०— जो आदमी मन की बात को साफ–साफ कह देता है वह बहुत अच्छा होता है। इसलिये कि उसके मन की भड़ास निकल जाती है तो वह पेट में पाप नहीं रखता और जो पेट में पाप किसी की बुराई रखे रहते हैं वे बिच्छू के डंक की तरह कब मार बैठे पता नहीं लगता। इसलिये 'बात कहै खर्रा चहै गोली लगै चाहे छर्रा'।

'भड्डुवे के मुंह पर भड्डुवा नहीं कहा जात'।

श०— भंडुवा–जो रंडियों के यहां तबला बजाते, उनके लिये गाहक ठीक करते हैं।

अ०— बुरे आदमी के मुंह पर बुरा नहीं कहना चाहिए।

'भरम मारे, भरम जिआवै'।

अ०— भ्रम में मारा भी जाता है और भ्रम में ही वह जीवित भी रहता है।

'भरी नाव मां सूप भारी'।

जब कहीं पर तमाम आदमी भरे हों या कहीं पर तमाम सामान रखा हो उस भीड़ में एक बच्चा आकर

बैठ जाय या सामान की जगह कोई एक छोटा सा हल्का सामान भी रख दिया जाय उससे लोगों में खलबली मचनी शुरू हो जाती है तो कहावत चरितार्थ होती है।

अ०– भारी नाव में एक हल्का सा सूप ही भारी पड़ जाता है। प्रश्न भारी से ज्यादा जगह घिरने का है।

'भरसार लीपै हाथ करिया क करिया'।

श०– भरसार–भाड़ जिसमें चबेना भुजाया जाता है। लीपै–गोबर और पानी के द्वारा पोतना, करिया–काला।

जब कोई आदमी काम, गाढ़ी टहल करने के बाद भी अपयश पाता है तो कहते हैं।

अ०– कितना भी ठीक से भरसार को साफ करो मगर हाथ की कालिख नहीं छूटती, कलंक मिलता ही है।

'भगवान के घरे मां देर अहै, अंधेर नाहीं।'

जब किसी काम में विलम्ब होता है या कोई काम बड़ी प्रतीक्षा के बाद लंबे अरसे के बाद हो तो कहावत इन स्थितियों में कही जाती है।

अ०– ईश्वर बड़ा है। उनके यहां देर भले हो मगर न्याय जरूर मिलेगा।

'भरे पेट शक्कर खारी'।

श०– खारी–नमकीन।

अ०– जब पेट भारी होता है तो अच्छी से अच्छी वस्तु खाने में बुरी लगती है।

'भड़भूज कै बिटिया, केसर क तिलक देय'।

अ०– कहावत व्यंग्य में कही गई है। अपना पेशा व औकात को देखकर कोई काम करना चाहिए। कहां तो भड़भूज की लड़की जिसे दिन रात भाड़ झोंकने से फुर्सत नहीं, राख कोयला, कालिख का ही काम है वह केशर जैसी महंगी वस्तु का तिलक लगायी है। वस्तु का दुरुपयोग करना। मतलब यह कि बढ़िया वस्तु गलती से ऐसे आदमी के हाथ पड़ना जो उसकी दुर्गति करके रख दे।

'भरम आय भूत संका आय डाइन'।

अ०– भ्रम और शंका दोनों ही बातें बुरी होती हैं। भ्रम के कारण आदमी की स्थिति बड़ी डांवाडोल रहती है। आज मनुष्य को उसकी भ्रामक स्थितियों ने ही डांवाडोल कर रखा है। वह स्वयं समझ नहीं पा रहा है कि कौन सा रास्ता अपनाये?

'भरा कहार, खाली कोंहार जल्दी जात है'।

श०– कहार– एक जाति होती है जो पहले समय में घर के बर्तन आदि को साफ करती है। कोंहार–जो मिट्टी का बर्तन बनाता है।

अ०– कहार जब पानी का घड़ा लेकर चलता है तो जल्दी–जल्दी चलता है और कुम्हार जब मिट्टी का बर्तन खांची में भरकर चलता है तो वह संभाल–संभाल कर चलता है कि कहीं बर्तन टूट न जायें? जब खाली चलता है तो जल्दी चलता है।

'भले भा पिया क बघवा खाइस, बघवा बेगारी से बचा'।

कोई स्त्री अपने पति से अत्यधिक जलभुन कर कह रही है।

अ०– अच्छा हुआ कि मेरे पति को शेर ने खा लिया। वह भी बेगार से बचा।

'भइसिये मिलिके अंड़ेर किहीं कचरिगे पड़उन'

श०– अंड़ेर–अड़िलाना, आपस में एक दूसरे से उलझना, लिपटना, कचरना–दबना। पड़उनू–भैंस का बच्चा, पड़वा।

जब कोई दो व्यक्ति आपस में लड़ाई–झगड़ा करें या आपस में लिपटें कोई कमजोर आदमी चपेट में आ जाय तो कहते हैं।

अ०– दो भैंसों ने आपस में लड़ाई की और बीच में दबा पंड़वा। यानी उस बेचारे की क्या गलती थी? दो आदमियों के बीच में पड़ने पर निर्बल लोगों की यही दशा होती है।

'भले संग रहिये खाइये मुंह भरि पान
रहय छोटे संग कहावै नाक, कान'।

कहावत सज्जन एवं असज्जन के साथ करने पर कही गई है।

अ०–संगत का असर होता है कि भले आदमी के साथ रहने पर इज्जत होती है। मुंह भर पान खाने

को मिलता है और वही नीच लोगों की संगत करने पर सिवाय बेइज्जती के कुछ नहीं मिलता है। महात्मा कबीरदास के शब्दों में–

'कबिरा संगत साधु की, हरै और की व्याधि,'

संगत बुरी असाधु की आठों पहर उपाधि।'

'भले का भाई बनो, बुरे का जवाई बनो।'

अ०– कोई भला आदमी हो तो उसके साथ भले का सा व्यवहार करके भाई–चारे का रिश्ता जोड़ लेना चाहिए और कोई बुरा है तो उसका दामाद बनकर गाली देना बुरा नहीं।

'भले दीदी गौने गई, दीदी की फरिया मोको मिली'।

जब किसी का छूटा हुआ सामान किसी दूसरे को मिलता है तो उसमें बड़ा आनंद आता है।

अ०– कोई छोटी बहिन अपनी बड़ी बहिन के लिये कह रही है– कि अच्छा ही हुआ कि दीदी ससुराल चली गईं उनके कपड़े मुझे पहनने को मिले।

'भलमनई क एक बात और समझदार घोड़ा एक चाबुक, बहुत आ'।

श०– चाबुक–घोड़े को चलाने वाली संटी।

भले आदमी के लिये एक बात और समझदार घोड़े को एक चाबुक पर्याप्त होता है।

'भले बाबा बड़े के परी, गोबर छोड़ कसीदै परी।'

कोई लड़की जब सुख में पड़ जाती है तो उसकी दूसरी परेशानी हो जाती है क्योंकि वह अपनी आदतों के अनुसार वैसा वातावरण न पाने पर अटपटा सा महसूस करती है।

अ०– कन्या अपनी ससुराल से वापस आकर बतलाती है कि अच्छा बाबा, आपने किसी बड़े आदमी के यहां मेरी शादी कर दी, शादी क्या की एक बड़ा बंधन मेरी जान को लग गया। यहां तो गोबर पाथती, कंडे बनाती, बाहर निकलने की आजादी थी मगर वहां तो एक कोने में बैठकर बूटा–कशीदा बनाने को छोड़ दूसरा कोई काम ही नहीं है। अंदर रहने में जी ऊब गया।

'भरे समुंदर धोंधा हाथ'।

कहावत व्यंग्य में किसी–सामर्थ्यवान व्यक्ति पर उद्‌घाटित की गई है या अपनों के द्वारा किसी प्रकार की कमी, बेइज्जती या आशा पर पानी फिरने के प्रति कही गई है।

अ०– समुद्र तो अमूल्य रत्नों की खान है। वहां बड़ी आशा लेकर कोई जाता है कि कुछ न कुछ कीमती रत्न हाथ आयेंगे मगर मिला क्या एक सीप?

'भले घर बायन दीने।'

जब किसी आदमी के ईंट का जवाब दूसरा आदमी पत्थर से देने का विचार रखता है तो कहते हैं कि अच्छे घर बायन दिया है तुमने। तुम्हारी चुनौती मंजूर है मुझे।

'भड़क भारी खीसा खाली।'

अ०– शान–शौकत इतना ज्यादा और जेब खाली। पैसे एक नहीं पास में मगर दिखावा जरूरी है।

'भागवाने क हर भूत जोतै'।

कहावत किसी ऐसे आदमी के प्रति कही गई है जो तकदीर का अच्छा है। जिसके काम कभी रुकते न हों या होने वाले कठिन काम भी सरलतापूर्वक हो जाते हों।

अ०– जो आदमी भाग्य का बली होता है उसके काम आदमी तो क्या भूत भी कर जाते हैं। जिसकी कोई संभावना भी न हो वह भी सहयोगी बन जाता हैं

'भाई ऐसा हिती नहीं कि भाई ऐसा दुश्मन नहीं।'

अ०– भाई जो सहोदर होता है वह चूंकि एक ही मां–बाप का पुत्र होता है तो वह आपस में भाइयों में भी बराबर का हिस्सा चाहेगा। यदि बांट–बंटवारे में कहीं भी बेईमानी हुई या कैसे भी बैर का भाव कहीं उत्पन्न हुआ तो उससे बढ़कर बैरी भी कोई नहीं होता।

'भाई ऊपर भाव करे, नीचे से तलवार मारे'।

अ०– भाई ऊपर से तो अपने भाई से बड़ा प्रेम प्रकट करे और अंदर ही अंदर, 'मुंह में राम बगल में छूरी' की भावना बनाये रखे।

'भाई दूर पड़ोसी नेरे।'

अ०– अपना भाई दूर हो जाता है, समय पर पास–पड़ोस के लोग ही काम आते हैं क्योंकि वे

निकट रहने के कारण समय पर शीघ्र ही पहुंच जाते हैं।

'भाई समझ के न दे,/भाव समझ के दे'।

अ०– कोई भी सौदा हो किसी को व्यवहार में कभी नहीं देना चाहिए। उसमें सिवाय बैर के कुछ भी हाथ नहीं आता है। इसलिये किसी को भी कोई दुकानदारी का सामान दे तो उसका पैसा तत्काल ले लेना चाहिए। उसमें लिहाज मुरव्वत नहीं करनी है।

'भादों की छठ चांदनी जो अनुराधा होय,
ऊबड़–खाबड़ बोय दे, अन्न धनेरा होय'

अ०– भादों के शुक्ल पक्ष की छठ को यदि अनुराधा नक्षत्र लगा हो तो खेतों में बीज चाहे जैसे डाल दो अनाज काफी मात्रा में पैदा हो जायेगा।

'भादों मासे अंजोरी, लखो मूल रविवार,
यों तो भाखै भड्डरी, साख भली निरधार'।

श०– मासे–मास, महीना। अंजोरी–उजाला पाख। लखो–देखो प्रतीक्षा। मूल– एक नक्षत्र का नाम है। रविवार–इतवार। भाखे–कहना, भाखना। निराधार–बहुत सारा।

कहावत खेती विषयक कही गई है।

अ०– भादों मास के उजाले पक्ष को यदि इतवार के दिन मूल नक्षत्र पड़ता हो तो उसमें यदि खेत में बीज डाले जायं तो अन्न बहुत अधिक पैदा हो सकता है। ऐसा भड्डरी ज्योतिषी का विचार है।

'भादों सुदी पंचमी, स्वाति संयोगी होय,
दोनों सुभ जोगे मिलै, मंगल बरती होय'।

श०– स्वाति– स्वाती नक्षत्र। संयोगी–संयोग से। जोगे–योग–समय। मंगल–शुभ, अच्छा।

अ०– यदि भादों की उजाली पंचमी को स्वाती नक्षत्र हो तो लोगों को प्रसन्नता होती है और शुभचिंतकों से भेंट होती है।

'भादो बदी एकादशी, जो ना छिटके मेह,
चार मास बरसे नहीं, कहे भड्डरी पेख'

श०– बदी–उजाला पाख। एकादशी तिथि। पेख–देखना, विचारना।

अ०– ज्योतिषी भड्डरी का कथन है कि यदि भादों के शुक्ल पक्ष की एकादशी को आसमान में बादल न दिखाई दे तो समझो कि चार माह तक वर्षा न होगी।

'भाड़ा ब्याज, दच्छिना, परै कुलच्छना'।

श०– भाड़ा–किसी घर अथवा सवारी का किराया। ब्याज–मूलधन के दिये गये रुपये के एवज में उस रुपये पर लगाया गया पैसा/दच्छिना–दान देने वाला पैसा।

अ०– किसी सवारी पर आने के बाद उस सवारी का किराया, कर्ज के पैसे का ब्याज और पंडित जी की दक्षिणा लोग एकदम से पीछे पड़कर ले लेते हैं।

'भात रही तो कउव्वा लगबै करिहै।'

कहावत सम्पन्नता के प्रति कही गई है।

अ०– घर में भात गिरेगा तो कौवे अवश्य खाने को पहुंच जायेंगे।

'भादों क माठा मूतन क, कातिक माठा पूतन क'।

कहावत स्वास्थ्य विषयक कही गई है।

अ०– भादों माह का मट्ठा स्वास्थ्य के लिये हानिकारक होता है इसलिये स्वास्थ्य का ध्यान रखकर कहावत कही गई है। कार्तिक में मट्ठा फायदेमंद होता है तो वह बच्चों को पीने को कहा गया है।

'भारी ब्याज मूल को खाय।'

अ०– जब मूल धन के रुपये का ब्याज बहुत ज्यादा बढ़ जाता तो फिर ब्याज को कौन कहे, मूल धन भी लोग नहीं दे पाते।

'भानु उदय, दीपक केहि कामा'।

श०– भानु– सूर्य। दीपक–दिया। कामा–काम का।

कहावत प्रकाश से संबंधित बड़ी वस्तु को देखकर छोटी वस्तु की उपेक्षा रूप में कही गई है।

अ०– जब सूर्य का प्रकाश चारो ओर उजाला किये है तो दिये की क्या आवश्यकता है?

'भी'

'भीख न देई केउ तो कमंडलु तो न फोरि डारी'।

श०– कमंडलु– भिखारी जिस बर्तन में भिक्षा लेते हैं। कहावत फायदे, नुकसान या देने न देने पर कही गई है।

अ०– यदि कोई भीख न देगा तो न सही, उसकी मर्जी, मगर वह हमारा नुकसान तो न करेगा, बर्तन तो न फोड़ डालेगा।

'भीख मांगे अउर पूछे गांव क जमा'।

अ०– छोटी औकात का आदमी, बड़ी–बड़ी बातें जब करता है तो कहावत कही जाती है कि मांगते तो घूम–घूम कर भीख और पूछ रहे है गांव का खजाना कि कहां किसके पास कितना क्या है?

'भीत टरे, बात न टरै।'

अ०– अपनी बात पर अटल रहने वाले आदमी के ऊपर कहावत कही गई है कि चाहे बनी हुई दीवाल टल जाय किन्तु बात नहीं टल सकती है।

'भीतौ के कान होथै'।

अ०– कोई गूढ़, छिपी बात को बहुत संभालकर कहना चाहिए। कभी–कभी ऐसा भी होता है कि लोग समझते हैं कि कोई सुन नहीं रहा है मगर सचेत रहना चाहिए कि दीवारों के भी कान होते हैं। यानी कि कोई न कोई बात को सुन सकता है या कोई ऐसा चिह्न या घटना ही घट जाती है कि उससे बात का पता लग जाता है।

'भीतर कै मार दहिजरू जानै'।

या

भीतर के मार राजा जानै कि रानी जानै'।

दोनों का मतलब एक ही है। कहावत भीतरी दुख या कष्टों या किसी के द्वारा पाये गये ताड़न के ऊपर कही गई है।

अ०– अंदर क्या है, यह तो जो भोगता है वही समझ व झेल सकता है दूसरे किसी को क्या पता है? स्थिति ऐसी है कि वह बाहर किसी से कुछ भी नहीं सकता है। अपनी पीड़ा को उसे खुद ही सहना पड़ता है। जैसा कि कहा गया है कि घरेलू झगड़ों को तो आपस में पति–पत्नी ही जान सकते हैं।

'भीख मांग के खाय औ बजार मां डकरै'।

अ०– झूठी शान दिखाना। अपने को बड़ा आदमी जाहिर करना।

'भीख मांगै और आंख दिखावै'।

अ०– स्पष्ट है।

'भु'

'भुंइ बिसुवव भै नाहीं नांव पिरथी पाल'।

श०– भुंइ–जमीन। बिस्सा–पहले के जमाने में जमीन का नाप बिस्वा में होता था। पिरथीपाल–जो जमीन का मालिक हो, राजा या बड़ा जमीनदार।

कहावत ऐसे लोगों के ऊपर कही गई है जिनके नाम गुण के विपरीत होते हैं। यानी नाम की विडंबना पर व्यंग्य किया गया है।

अ०– नाम से कोई कहेगा कि बहुत बड़े आदमी हैं किन्तु मालूम होने पर लगा कि नाम ही नाम है असलियत कुछ भी नहीं है। यानी नाम है पृथ्वी का पालन करनेवाले और उनके पास खाने भर को भी जमीन नहीं है।

'भुवरी भंइस गले दुइ कंठा, करिया क दूध न भुवरी क मट्ठा'।

कहावत भैंस के रंग के ऊपर कही गई है कि कौन सी भैंस का क्या अच्छा होता है?

अ०– भूरे रंग की भैंस जिसके गले में दो कंठ हों यानी दो दूसरे रंग की धारियां हों उसका दूध बहुत स्वादयुक्त होता है और भूरे रंग की भैंस का मट्ठा पीने में स्वादयुक्त होता है।

'भुखान पेट बात से नहीं भरतै।'

अ०– भूखे रहने पर बातें अच्छी नहीं लगतीं। कहा गया है–

'भूखे भजन न होय गोपाला, आपन ले ला कंठी माला।'

'भू'

'भूलि गये राव रंग, भूलि गई चौकड़ी।
याद रहिगे तीन चीज नोन, तेल, लकड़ी।'

कहावत घर – गृहस्थी के प्रति कही गई है। जैसा कि गोस्वामी जी ने कहा है–

'गृह कारज नाना जंजाला' तो आदमी के लिये गृहस्थ आश्रम में रहकर अनेकानेक झंझटों का सामना करना पड़ता है। कोई भी हो पहले के जीवन में और गृहस्थ जीवन में प्रवेश करने के बाद में बड़ा अंतर होता है। कहावत मौज मस्ती के समय को भी लेकर कही गई है कि अब वे दिन समाप्त हो गये हैं।

अ०– अब पहले के आनंद के समय व स्वतंत्रतापूर्वक घूमना भूलकर केवल घर का नमक, तेल, लकड़ी के प्रबंध करने में ही जीवन बीता जा रहा है।

'भूख क आगे भोजन का, नींद के आगे डासन का।'

अ०– जब जोरों की भूख लगी हो और जोरों से नींद आ रही हो तो फिर उसमें जो कुछ भी खाने को मिले वही अमृत लगता है और नींद लगी हो तो जमीन पर भी सोने को मिले तो आराम की नींद आ जाती है।

'भूख गये भोजन मिले, जाड़ा गये जड़ाव।
उमिर गये तिरिया मिलै, तीनों देव बहाय।।'

कहावत समय के बीत जाने पर किसी काम को होने या किसी इस्तेमाल की वस्तु पर कही गई है।

अ०– जब भूख के बाद भोजन, जाड़े के बाद में ऊनी कपड़े तथा उम्र समाप्त होने पर स्त्री मिले तो वह व्यर्थ होती है। असमय की मिली तीनों वस्तुओं को त्याग देना चाहिए। फिर इनका क्या उपयोग है?

भूख मां गूलर पकवान अस।'

कहावत भूख के समय कही जाती है कि भूख अधिक लगने पर आदमी क्या नहीं खा सकता है? कहावत भी कुछ ऐसी ही है।

अ०– भूख लगने पर आदमी गूलर जो एक जंगली फल है, पकवान की तरह खाता है।

'भूख लाग तौ घर कै सूझी'।

अ०– भूख लगने पर घर की ही याद आती है। कहावत बहुत से लोग व्यंग्य में भी कहते हैं कि भूख लगी तो घर की याद आई वर्ना आते ही नहीं।

'भूखा उठाता है, पर भूखा सुलाता नहीं।'

कहावत उस दयालु भगवान पर कही गई है जो दीनबन्धु है।

अ०– वह भूखा उठाता है सुबह किन्तु रात में बिना पेट भरे सोने नहीं देता है।

'भूख न जाने बासी भात, नींद न जाने टूटी खाट'।

अ०– स्पष्ट है।

'भूखे भजन न होय गोपाला, आपन लेल कंठी माला'।

अ०– भक्त भगवान को संकेत करके कहता है कि हे ईश्वर! मुझसे तो ऐसे भूखे पेट भजन–भाव नहीं होगा, यह अपनी कंठी माला ले लो। तात्पर्य यह कि भगवान की पूजा, भाव–भजन भी आदनी भूखे रहने पर नहीं कर सकता है।

'भूखे बइर, अघाने गाड़ा, ता ऊपर मूली कै डांड़ा'।

अ०– भूखे रहने पर बेर व पेट भरे में गन्ना चूसना चाहिए। उसके ऊपर मूली खानी चाहिए यानी बेर से भूख शान्त होती है और भरे पेट में गन्ने का रस बहुत फायदा करता है।

'भूरी हथिनी चंदुली जोय, पूस महावर बिरले होय'।

अ०– भूरे रंग की हथिनी और गंजी– जिसके सिर में बाल न हो ऐसी स्त्री तथा पूस माह में पानी की बरसात कम ही देखने में आती है।

'भूखा सो रूखा'।

अ०– भूखे को क्रोध जल्दी आता है।

'भूमियार तो भूमि क मरै, तू काहे मरी बटेर'।

श०– भूमियार–जमीनवाला, जिसके पास भूमि हो। बटेर–एक पक्षी का नाम है।

कहावत बटेर पक्षी के माध्यम से किसी छोटे आदमी पर कही गई है।

अ०– भूमिवाला तो अपनी जमीन के लिये लड़ रहा है मगर तू तो बहुत मामूली प्राणी है भला तू क्यों लड़ रही है? कहावत किसी साधारण आदमी के प्रति कही गई है।

'भूला फिरय किसान जो, कातिक मांगे मेह।'

श०– कातिक–माह का नाम है, इस माह में किसान

खेतों की जोताई, बोआई का काम करता है। मेह—पानी।

कहावत आदत से मजबूर लोगों के ऊपर कही गई है।

अ०— किसान का जीवन पानी है इसलिये वह हर समय पानी—पानी रटता रहता है। इस रटन की अपनी आदत में वह इतना भूल बैठा कि भला कातिक माह, जो गेहूं आदि के बोने व खेत जोतने का समय है, उस महीने में भी वह पानी मांगने लग गया।

'भूखा कब पतियाय, जब चार कौर भित्तर जाय।'

कहावत किसी भूखे के ऊपर कही गई है। वैसे किसी को भी जिस चीज की आवश्यकता होगी वह उस वस्तु को पाने के बाद ही विश्वास मानेगा।

अ०— भूखा आदमी जब खाने को पा जायेगा और थोड़ा बहुत उसके पेट में जायेगा तभी उसे यकीन आयेगा कि अब भरपेट भोजन मिला है।

'भे'

'भेदिया नौकर, सुंदर नारी, जीरन पट, कुराज दुख भारी'

कहावत कई विषयों की चिंताजनक स्थितियों पर कही गई है।

श०— भेदिया—घर का राज, घर की अंदरूनी बातों को बताना। जीरन—बहुत ही पुराना, पतला, झांखर। पट—कपड़ा। कुराज— बुरा शासन का होना, अन्यायपूर्ण हुकूमत।

अ०— घर का भेद बताने वाला नौकर, सुंदर स्त्री, बहुत पतला कपड़ा और राज्य में राजा की अन्यायपूर्ण हुकूमत— ये चारों बातें बहुत ही दुखदाई होती हैं। इनसे बड़ा कष्ट पहुंचता है। इसलिये कि नौकर भेद देकर चोरी करवा सकता है। पत्नी की सुंदरता के कारण हर समय सुरक्षा का ध्यान रखना पड़ता है, पतले कपड़े से हर समय लज्जा को संभालना होता है और राजा का शासन न्याय का नहीं है तो प्रजा को हमेशा कष्ट उठाना पड़ता है।

'भेड़ा मोट, भवानी दूबर'।

भेड़ा या खसी लोग देवी को बलि देते हैं।

कहावत व्यंग्य में कही गई है।

अ०— भेड़ा तो बहुत मोटा है और देवी दुर्बल है। यानी भवानी से बलशाली तो बलि पर चढ़ने वाला ही है।

'भेड़ पूंछ, भादौं नदी, के गहि उतरै पार'।

जब कोई काम कठिन हो तो उसमें मामूली सहयोग या सहारा वांछित नहीं होता। उसमें कोई चाहे कि मामूली बुद्धि से काम कर ले तो असंभव है।

अ०— जब भादों मास की भरी नदी में जोरदार लहरें उठ रही हों इस स्थिति में भेड़ की पूंछ पकड़कर पार होना चाहे तो बड़ा कठिन काम है। कठिन कार्य के लिये कठिन साधन की आवश्यकता होती है।

'भेंड़ कै ऊन के भला छोड़ देथ।'

कहावत उस समय कही जायेगी जब किसी अमीर आदमी से कुछ लाभ पाने की आशा हो, तो भला उसे कौन है जो छोड़ देगा?

अ०— भेंड़ की जाति सीधी मानी जाती है। उसके पास बाल तो होता ही है जिसका ऊन बनाया जाता है। तो उस भेड़ के बाल को कौन छोड़ देगा? लोग कान ऐंठकर उस भेड़ के बाल ले लेते हैं। उसी प्रकार से सीधे धनवान आदमी से धन भी लोग ऐंठ लेते हैं।

'भेड़ जहँ जात, मूड़ी जात।'

इस कहावत के दो अर्थ हैं।

एक तो जिसके पास कोई काम की चीज होगी तो उसे सभी लेना चाहेंगे। भेड़ के पास उसका बाल इतना जरूरी व कीमती वस्तु है कि बेचारी जहां ही जाती है वहीं लोग उसका बाल काट लेते हैं। दूसरे सीधे आदमी को सभी परेशान करते हैं। भेड़ें अपनी सीधाई व बाल के कारण हर जगह मूड़ ली जाती है।

'भेजा खाय, खोपड़ी सहलाय।'

किसी खुशामदी आदमी के लिये कहावत कही गई है।

श०— भेजा— दिमाग, खोपड़ी। सहलायें— धीरे—धीरे हाथ से छूना।

अ०— खुशामदी आदमी खोपड़ी खा जाता है। अपनी गर्ज के लिए, फिर खुद ही सिर भी सहलाता है।

भेड़ का मांस खाना बदन में आग लगावे के बराबर है।

अ०– भेड़ स्वयं में इतनी गर्म होती है कि उनके बाल से ऊनी कमरी आदि बनती है तो सोचने की बात है कि यदि उनका मांस खाया जायेगा तो आदमी के शरीर की क्या दशा होगी?

भेंड़िन नाल बंधावा'।

यह कहावत किसी को देखकर नकल करने के ऊपर कही गई है। जब कोई आदमी बिना सोचे समझे दूसरे की नकल करता है तो उसका क्या परिणाम निकलता है? नाल घोड़ों के पैरों में लगायी जाती है जो इक्का, तांगा खींचने तथा पीठ पर सवारी के काम आता है।

अ०– भेंड़ ने देखा कि नाल घोड़ों के पैरों में बंधती है तो वे खूब तेज–तेज दौड़ते हैं। अब क्या था? भेड़ें भी अपने पैरों में नाल बंधाने चलीं। घोड़े की तरह दौड़ने का साधन तो जरूर मिला मगर वह कला न मिल पाई। इसलिये नाल बंधाने का शौक बेकार हो गया।

'भेड़ जलती है ठेलुअई करने वाले बदन सेंकते हैं।'

श०– ठेलुअई– निठल्लेबाजों की मजाकें, मटरगश्ती। धींगामस्ती करना।

कहावत ऐसे लोगों के प्रति कही गई है जो दूसरे के कष्ट के समय भी व्यंग्य–विनोद में मस्ती से उसका फायदा उठाते हैं।

अ०– भेड़ें तो अपने बदन के जलन के मारे परेशान हैं और मौज मस्ती लेने वाले अपना हाथ पैर उनके बदन से लगाकर सेंकते हैं। भेंड़ कितनी गर्म होती है यह वह खुद भी नहीं जानती है। लोग उसका कान भी ऐंठ दें तो उसे कुछ भी नहीं पता चलता है।

'भेंड़ के सींग नहीं होते।'

अ०– भेड़ की सींग होती है मगर इतनी छोटी कि वह अंदर ही होती है। उसका उपयोग वह नहीं कर सकती है। अतः जो वस्तु काम में नहीं आती उसकी गिनती नहीं की जाती है।

'भैं'

'भैंस क दूध जो कटुआ पीवै, ताकत घटे न जब तक जीवै'

श०– कटुआ–तुरंत का निकाला हुआ दूध।

अ०– भैंस का दूध जो तुरंत थन से निकाला जाय, उसे पीने से ताकत बहुत ज्यादा होती है।

'भै गति सांप छछूंदर केरी'।

जब किसी आदमी की आगे–पीछे मुसीबत होती है तो कहावत कही जाती है जिसका अर्थ है कि किसी प्रकार से भी चैन न पाना। यानी कि 'दुहूं भांति भई मरन हमारी' की नौबत जब आने वाली होती है तो कहावत कही जाती है।

अ०– कहते हैं कि सांप यदि छछूंदर को पकड़ लेता है तो यदि वह निगल जाय तो अंधा हो जाता है और यदि छोड़ दे तो कोढ़ी हो जाता है।

'भैंस बरद कै खेती करे, कर्जा काढ़ि के खाय'
'बैला खींचे यहि कइती का, भैंसा अंतय जाय।'

अ०– भैंस व बैल के जोड़ से खेती करने में हानि होती है क्योंकि दोनों का कोई जोड़ नहीं होता है। बैल भैंसे को ऐसा खींचता है कि भैंसा कहीं और जा गिरता है। भैंसे व बैल को हल में लगाने वाला किसान तथा जो कर्ज लेता है उसकी हानि होती है।

'भैंसा लादै लोहिया खाय, तेकै पाप परोसिन जाय'।

श०– लोहिया–लोहा।

अ०– जो भैंसे पर सामान लादता है और लोहे के बर्तन में भोजन करता है उसका पाप पड़ोसियों तक को खा जाता है।

'भैंस के आगे बीन बजावै, भैंस खड़ी पगुराय।'

श०– पगुराय–मुंह चलाना, जुगाली करना। वैसे भी स्वस्थ भैंसें पगुराया करती हैं।

अ०– कहावत मूर्ख लोगों के ऊपर कही गई है कि मूर्ख को कुछ भी समझाओ उसकी समझ में कुछ आने अवाने का नहीं होता। जिस प्रकार से भैंस के सामने बीन बजाओ उस पर कोई असर नहीं पड़ता।

'भैंस कन्देलिया पिया लै आये, मांगे दूध कहां से आये'?

श०– कन्देलिया–जिस भैंस के मत्थे पर सफेद दाग हो।

अं०– कन्देलिया भैंस का दूध नहीं के बराबर होता है। इसलिये भैंस के रहते हुये भी दूध मंगनी लाना पड़ता है।

'भैंस सुखी जब मड़िया परै, रांड़ सुखी जब सबका मरै'।

अ०– भैंसे तब प्रसन्न होती हैं जबकि कीचड़ वाले पानी में बैठती हैं। विधवा स्त्री तब प्रसन्न होती है जब वह देखती है कि मेरी तरह सब विधवा हैं।

'भैंस पांच षट स्वान, एक बैल एक बकरी जान।
तीन गाय, गज सात प्रमान, चलत मिलैं मत करों पयान।।'

श०– षट–छः। स्वान–कुत्ता। गज–हाथी। प्रमान–प्रमाण माना जाना। पयान–जाना।

कहावत यात्रा के समय जाने के प्रति कही गई है।

अ०– यदि रास्ते में पांच भैंस, छः कुत्ते, एक बैल, एक बकरी या तीन गाय, सात हाथी मिल जाये तो यात्रा पर नहीं जाना चाहिए।

'भैंस चली गै पानी मां'।

जब किसी वस्तु का पूर्ण रूप से नुकसान हो जाय तो कहते हैं कि भैंस पानी में चली गई।

अ०– पूरा का पूरा नुकसान हो गया।

'भैंस क आपन सींग भारी नहीं लगतै'।

अ०– अपना या अपने परिवार को खिलाना–पिलाना, उस पर खर्चे का तनिक भी बुरा नहीं लगता। उसी प्रकार से जैसे भैंस के सींग कितनी भी बड़ी टेढ़ी–मेढ़ी क्यों न हो उसको बुरी और भारी नहीं लगती।

'भो'

'भोजपुर जाय जिन, जाय तौ खाय जिन। खाय तो सोहराय जिन, सोहराय तो टोया जिन, टोय तो रोय जिन।।'

श०– भोजपुर– आज के बहुत पहले करीबन ९वीं, १०वीं शताब्दी में भोजपुर एक राज्य था जहां के राजा भोज थे। सोहराया–सहलाना। टोया–टटोलना, छूना।

कहावत भोजपुर राज्य के प्रति कही गई है। यानी वहां क्या होता है?

अ०– भोजपुर पहली बात तो जाना ही मत, यदि जाना तो खाना मत और यदि खा भी लेना तो सोना मत और यदि सो जाना तो फिर टटोलना मत और टटोलना तो रोना मत। कहने का सारांश यह है कि उस तरफ के लोग इतने चोर होते हैं कि उनको पकड़ पाना या उनसे बच पाना बड़ा मुश्किल काम होता है। यदि आप गये भी और खाना खाकर कहीं सो गये तो फिर टेंट में जो भी पैसे होंगे वे निकले बिना नहीं रह सकते हैं? फिर टटोलने से क्या फायदा होगा। फिर तो पश्चाताप ही करना पड़ेगा।

'भा बिधना प्रतिकूल जबै, तब ऊंट चढ़े पर कूकुर काटै'

श०– भा–हुआ। बिधना–भगवान। प्रतिकूल–नाराज, विपरीत।

कहावत भगवान के रुष्ट होने पर कही गई है।

अ०– ईश्वर के रुष्ट होने पर ऊंट जैसी इतनी ऊंची सवारी पर बैठने के बाद भी एक छोटा सा कुत्ता काट लेता है। यह भगवान के लिये खेल है किन्तु मनुष्य के लिये आश्चर्य की बात है। ईश्वर क्या नहीं कर सकता है?

'भोगी सो रोगी।'

अ०– जो बहुत ज्यादा भोग–विलास में रहने का आदी हो जाता है वह स्वास्थ्य से हाथ धो लेता है।

'भोंदू भाव न जानै पेट भरन से काम।'

अ०– मूर्ख आदमी को किसी बात–व्यवहार से कोई मतलब नहीं होता उसे तो बस केवल पेट भरने से मतलब है।

'भोर भया तब जानिये, जब बादल पीले होंय।'

अ०– बादलों के पीले या लाल होने के लक्षण पर भोर का होना बताया गया है।

'भोजन न भात, नैहर न समात'।

कहावत विधवा नारी के प्रति कही गई है।

अ०– उसका आदर कहीं पर भी नहीं होता है। न कोई खाने पीने को पूछता है और न मैके–ससुराल कहीं कोई रहने का ठिकाना ही देता है।

'भोर समय डर डम्बरा, रात उजेली होय।
दुपहरिया सूरज तपै, दुरभिछ तेऊ जोय।।'

श०— डर–डरावना। डम्भरा–डराने वाला आकाश। दुरभिछ–अकाल। कहावत है कि दुरभिक्ष पड़ने के क्या लक्षण होते हैं?

अ०— वड़े सवेरे यदि आकाश में डरावने बादल उठें, रात को चांदनी उगे, दुपहर के समय सूर्य तपे तो समझो कि अकाल पड़ने के रंग–ढंग हैं।

'भौ'

'भौंह का गिला आंख के सामने'।

अ०— किसी की शिकायत उसके निकटतम संवंधी से ही की जाय।

'भं'

'भंडुवा क जात का, झूठे क बात का'।

अ०— भंडुवा की क्या जाति और झूठे की बात का क्या विश्वास किया जाय? जो जन्म का लबार हो वह भला क्या सही बात कहेगा और कहेगा भी तो लोग उसकी बात का विश्वास नहीं मानेंगे।

'भंग कहे मैं रंगी जंगी पोस्ता कहे मैं साहजहां।

नशा चढ़ने पर आदमी किस प्रकार वह अपना होशोहवास गंवा बैठता है, उपरोक्त कहावत से पता लगता है।

अ०— भांग पीने वाला कहता है मैं रंगीन पहलवान हूं। पोश्ता का नशा करने पर नशेबाज अपने को शाहजहां बादशाह से कम नहीं समझता है।

'भंग गांजा मत देहु गंवारन का, हंडिया भर भात बेगारन का'।

अ०— गांजा, भंग का नशा करने वाला आदमी खाना खाते समय खाता ही चला जाता है। वह नहीं समझ पाता कि कितना खा रहा है।

अ०— गांजा, भांग पीने वाले गंवारों को खाना मत दो, वे सिवाय हांड़ीभर भात खाने के और कोई काम न करेंगे।

'भां'

'भांड़न साथे खेती कीन, गाय बजाय सब भांड़न लीन'।

श०— भांड़न–जो शादी, उत्सवों में घर–घर जा–जाकर गाते–बजाते हैं। तरह–तरह के अपने हाव–भाव व गाने आदि सुना कर लोगों को प्रभावित करते हैं।

अ०— भांड़ों के साथ खेती क्या की वे उछल–कूदकर गाने के बहाने, अपने नेग–न्यौछावर के बहाने या किसी न किसी प्रकार से हंस–बोलकर सब ले गये। अपने पल्ले तो कुछ भी न पड़ा। किसी के साथ काम करने पर जब कोई भी लाभ नहीं मिलता तो लोग इस प्रकार की कहावत कहते हैं।

'भांग पीना आसान है, नशा जान मार लेती है'।

अ०— भांग का पीना तो ठीक ही है किन्तु जब उसका नशा चढ़ता है तो कठिन स्थिति आ जाती है।

'भुं'

भुइंया खेड़े हर हो चार, घर हो गिहथिन गऊ दुधार,
अरहर की दाल, जड़हना का भात, गागल नेबुआ ओ घिव तात
दही खांड़ जौं घर मां होय, बांके नयन परोसय जोय,
घाघ कहै तव सबही झूट, उहां छाड़ि हिंयई बैकुंठ'।

श०— खेड़े–पास। गिहथिन–गृहस्थिन, पत्नी, घर की मालकिन। गऊ–गाय। दुधार–दूध देने वाली। जड़हन–एक प्रकार के धान की जाति होती है जिसका चावल जड़हनी या अगहनी कहलाता है। गागल–रसदार। नेंबुआ–नींबू। बांके नयन–सुंदर व रसीली आंखें। जोय–स्त्री, पत्नी। हिंयवै–यहीं पर। बैकुंठ–स्वर्ग। कहावत कई वस्तुओं और घर के सुखों व खाने–पीने के विषयों पर उद्धृत की गई है।

अ०— जिसकी गांव के पास में जमीन हो, चार हल की खेती हो, अरहर की दाल और अगहनी धान का भात हो, रसदार नींबू और गरमागरम घी हो, दही और उसमें खांड़ पड़ी हो और ऐसे भोजन को कोई सुंदर रसीली आंखों वाली प्रेम से परोस कर खिलाती हो तो समझो कि घर में ही स्वर्ग है।

'भुइयां लोट बहे पुरवाई, तब जानौं बरखा रितु आई'

अ०— पुरवा हवा ऐसी बहती हो जो जमीन को छूती हो तो समझ लो कि अब बरसात का समय आ गया है।

'म'

मन न रंगाये, रँगाये जोगी कपड़ा'।

यह पंक्ति महात्मा कबीरदास जी की है। जब

कोई आदमी ढोंगी, बनतू व अपने को बड़ा महात्मा लगाता हो, पाक साफ बनता हो तो कहावत का प्रयोग किया जाता है।

श०— रंगाना— यहां पर मन का साफ होना है।

अ०— मन तो गंदा है उसमें तो कोई बदलाव है नहीं, केवल ऊपर से भगवा कपड़ा पहनने से कोई महात्मा या मन का बहुत साफ थोड़े ही बन सकता है।

'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।'

कहावत किसी निराश, हताश होते हुये मनुष्य के प्रति कही गई है।

अ०— मन जब हार जाता है तो आदमी सब कुछ हार जाता है और मन में आशा बनी रहती है तो आदमी कठिन से कठिन काम भी कर डालता है। उर्दू में एक शेर है—

'जिन्दगी जिंदा दिली का नाम है
मुर्दा दिल क्या खाक जिया करते हैं'?

महात्मा कबीरदास ने कहा है—

'कबिरा जोगी, जगतगुरु जब तक मन में आस'।
जब मन में आसा लगी, जग गुरु जोगी दास'।।

'मन चंगा, त कठौती मां गंगा'।

यदि मन शुद्ध है तो. घर की कठौती में पानी रखकर पूज लो, गंगा जी का ध्यान कर लो तो गंगा घर में ही मिल सकती है।

एक बार संत रैदास ने गंगा स्नान के यात्रियों को कुछ कौड़ियां देकर कहा—जब गंगा जी स्वयं प्रकट हों तो देना। ऐसा ही हुआ। गंगाजी ने हाथ बढ़ाकर कौड़ियों को लेकर बदले में सोने का एक कंगन रैदास जी को देने को कहा। यात्रियों ने वह कंगन रैदास के पास न ले जाकर राजा को भेंट दे दिया। रानी उस पर प्रसन्न हो गईं और दूसरा कंगन मांगने की हठ कर बैठीं। राजा हारकर रैदास के पास पहुंचे। सारी बातें बताईं तो रैदास जी ने अपनी चमड़ा भिगोनेवाली कठौती जिसमें पानी भरा रहता था गंगा का ध्यान किया तो उसमें से दूसरे कंगन की जोड़ी निकालकर दे दी। तब से इस कहावत का प्रचलन हुआ।

'मर्द का नहाना, औरत का खाना किसी ने जाना किसी ने न जाना'।

अ०— पुरुषों को जल्दी नहाना और स्त्रियों को जल्दी खाना खाना चाहिये।

'मजबूरी क नांव महात्मा गांधी अहै'।

कहावत किसी विवशता के समय की है। यानी जब किसी को विवशता के समय गांधी जी का सिद्धांत मानना पड़ता है, वह शान्तिवादी बन जाता है तो कहावत कही जाती है कि महात्मा गांधी बनने का कारण है हमारी मजबूरी।

अ०— मजबूरी के समय महात्मा गांधी बन जाना भी उचित है क्योंकि दूसरा कोई रास्ता ही नहीं है।

'मक्के गये न मदीने गये, बीच—बीच में हाजी भये'।

श०— मक्का—मदीना— मुसलमानों का तीर्थस्थल है।

अ०— कहावत मुसलमानों के प्रति कही गई है कि न मक्के गये न मदीने जो मुसलमानों का तीर्थ स्थल है, मगर हाजी बनने का ढोंग करते रहे।

'मगहर मरै, सो गदहा बनै'।

अ०— मगहर—एक स्थान पर जहाँ कबीर की समाधि है।

अ०— कहावत मरने पर कौन सी गति मिलती है इस पर कही गई है। मगहर में मरने पर नर्क मिलता है। या अगले जन्म में आदमी गधा होता है।

'मछली के बच्चों को तैरना कौन सिखवै'।

श०— जो जिस स्थान पर जिस माहौल में जन्म लेता है वह वहां की बोली—बानी, भाषा, व्यवहार, रहन—सहन का जानकार होता है।

अ०— मछली तो पानी का जीव ही है उसके बच्चे भी उसी पानी में जन्म पाते व रहते हैं, फिर भला वे तैरना नहीं जानेंगे? उन्हें तैरना कौन सिखा सकता है। वे स्वयं जान जाते हैं।

'मन करै कि पहिरीं हार, करम न लिखी भेड़ी कै बार'।

श०— हार—स्त्रियों के गले में पहनने का भारी गहना। करम—भाग्य, कर्म।

कहावत भाग्य के ऊपर कही गई है।

अ०— मन में आता है कि गले में सोने का हार पहनूं मगर भाग्य में भेड़ का बाल भी नहीं लिखा है।

'मन जाने पाप न माई न बाप'।

अपने मन का पाप आदमी स्वयं जान सकता है उसे कोई सगे–संवंधी भी नहीं बता सकते हैं।

'मन मलीन तन सुंदर कैसे, विष रस भरा कनक घट जैसे'।

यह पंक्ति गोस्वामी जी की है। कपटी मनुष्य के प्रति कही गई है।

अ०– मन इतना गंदा और शरीर इतना सुंदर जैसे सोने के घड़े में विष भरा हो।

'महिमा घटी समुद्र की रावन बसइ परोस'।

अ०– नीचों के साथ रहने पर सिवाय कष्ट के कुछ भी नहीं मिलता है। सही कहा है 'पाप परोसिव क खात'। यदि रावण के पड़ोस में समुद्र न होता तो वह इतना अमर्यादित क्यों होता? इसलिये दुर्जनों का साथ कभी नहीं पकड़ना चाहिए। उससे बड़ी हानि उठानी पड़ जाती है।

'मरता क्या न करता'?

अ०– विवश आदमी चाहे जिस बात से मजबूर हो वह कुछ भी कर सकता है।

'मरे बरदवा कै बड़ी–बड़ी अंखिया'।

अ०– जो आदमी इस दुनिया से चला जाता है उसकी लोग बड़ी तारीफ करने लगते हैं। उसका यशोगान करते हैं कि बहुत अच्छा आदमी था।

'मन मोर महुआ तर, चित मोर भुसउल'।

श०– चित–दिमाग। भुसउल–भुसौला, जहां भूसा रखा होता है।

कहावत किसी चरित्रहीन नारी पर कही गई है।

अ०– मन से तो महुआ बिन रही है किन्तु चित्त चंचल है। वह भुसौले की कोठरी की तरफ लगा है। दिल दिमाग चंचल होना।

'मरी जाय मल्हारें गायें'।

अ०– कोई जब परेशान भी हो और उसी में हिम्मत से काम लेकर प्रसन्न भी रहे तो कहावत बनती है कि एक तरफ तो परेशान है दूसरी तरफ गाने का शौक सवार है।

'मघा भूमि अघा'।

अ०– मघा नक्षत्र का पानी पाने के बाद धरती एकदम तर होकर सरस हो उठती है। मघा में ही पृथ्वी का पेट भर जाता है, जलन शान्त हो जाती है।

'मरी बछिया बांभन के नांव'।

अ०– जो वस्तु खराब होनेवाली या खराब हो जाती है उसे लोग दूसरे को दान में देने के लिये रखे रहते हैं। उसी प्रकार किसी ने मरी या मरणासन्न बछिया दान में दी तो कहावत यह इसलिये चरितार्थ हुई कि जो वस्तु किसी को दान में दी गई वह बेकार थी। इस दान के नाम पर 'बदनामी' बटोरी गयी है।

'महा क घर कहां, जहां पहुंचै तहां'।

जो आदमी निःसंकोच जहां चाहे वहीं बैठ गया, रुक गया, सो गया, खाने पीने लगा तो फिर उसके लिये क्या है? कहावत ऐसे ही लोगों के प्रति कही गई है।

अ०– किसी ने पूछा फलां का घर कहां है? दूसरा बोला– उनका क्या, जहां ही बैठ गये वहीं समझो कि घर ही है।

'मघा के बरसे, माता के परसे, भूखा न मांगय फिर कुछ हरषे'।

श०– मघा– एक नक्षत्र का नाम है, परसै–भोजन का देना। हरषै–प्रसन्न होना।

अ०– जिस प्रकार से माता के परोसे भोजन से संतान को संतोष हो जाता है उसी प्रकार से मघा नक्षत्र के बरसे पानी से धरती की प्यास शांत हो जाती है। माता चाहे जिस प्रकार पुत्र को खाना खिलाये किन्तु भोजन से तृप्ति तो मां के हाथों से बच्चों को होती है। उसके बाद कोई कुछ देना भी चाहे तो वह नहीं लेना चाहेगा।

'मरी सौत सतावै, काठेव कै ननद बिरावै'।

श०– सौत–पति की पहले वाली पत्नी जो या तो मर चुकी है या किन्हीं परिस्थितियों के कारण दूसरी शादी करनी पड़ी। बिरावै–तरह–तरह के मुंह बना–बनाकर चिढ़ाना। कहावत इन दो लोगों से बेहद सतर्क रहने के लिए कही जाती है।

अ०– सौत इतनी बुरी होती है कि मरने के बाद भी

पिंड नहीं छोड़ती। अपने बाद आई सौत को हर प्रकार से तंग करने की कोशिश करती है।

'मर्द मरै नांव क, निमर्द मरै रोटी क'।

श०– नांव–यश के लिये, निमर्द–जिस आदमी में मर्दानगी की कमी हो, निकम्मा।

अ०– जो पुरुष पुरुषार्थ से भरा है, वह तो सम्पन्न होकर यश पाना चाहता है किन्तु जो कायर है, जो काम करने से कतराता है, ऐसे आदमी पेट की रोटी तक को मोहताज हो जाता है। इसलिये कि काम कुछ करना नहीं चाहता तो खाने को कहां से मिले?

'मढ़्यो दमाता जात है, कहुं चूहे के चाम'।

श०– दमामा–नगाड़ा।

जब सामान बड़ा हो और उसे छोटे सामान से ढकने की कोशिश की जाती है तो कहते हैं।

अ०– कहीं नगाड़ा जैसी बड़ी वस्तु का मुंह चूह के चमड़े से ढांका जा सकता है?

'मतलबी यार किसके, दम लगाये खिसके'।

कहावत मतलबी लोगों के प्रति कही गई है कि इतने स्वार्थी होते हैं कि स्वार्थ जब सिद्ध हो जाता है तो गायब हो जाते हैं।

अ०– काम निकला कि तुरंत उठकर चल दिये। यंहा नशे की बात भी आई है कि दम लगाने के लिये बैठे थे, दम लगाया और चल दिये।

'बूढ़ा मरैं न माचा छोड़ैं'।

श०– मांचा–चारपाई ।

जब कोई काम न खुद करे और न दूसरे को करने ही दे या कोई भी बात हो जब दूसरे को भ्रम में डाले रहे तो तंग आकर लोग कहावत कहते हैं।

अ०– बूढ़ा न तो मरते ही हैं कि जान छूटे और न जगह ही छोड़ते हैं कि दूसरा कोई काम आगे बढ़ाया तो जा सके।

'महि, मेघा, घोड़ा औ धान, मोर पपीहा, भंइस किसान।
बाढ़ी नदी मच्छ लपटानी, दस अनंद जो बरसे पानी।'

श०– महि–पृथ्वी। मेघा– मेढक। मच्छ–मछली। अनंद–खुश।

अ०– उपरोक्त दस पानी बरसने से प्रसन्न रहते हैं।

'मनई क कर्ज अस मेघा क सांप जस'।

अ०– जो आदमी बलवान है उसके लिये कोई भी वस्तु आसान होती है मानो कर्ज लेकर दे देंगे और जो कमजोर होता है उसके लिये कोई भी चीज इतना भयावह बन जाती है जैसे मेढक के लिये सांप।

'मानुस कीन सुख सोवै क कि पाटी धै के रोवै क'।

कहावत आमतौर पर स्त्रियां ही कहती हैं।

अ०– पति का साथ किया कि सुख से सोयेंगी इसलिये नहीं कि रात भर चारपाई की पाटी पकड़कर अपने भाग्य को रोयेंगी।

'मक्का जोन्हरी और बाजरी, इनको बोवै कछुक बीड़री'

श०– मक्का–मकाई। बाजरी–बाजरा। बीड़री–बिड़र, दूर–दूर।

अ०– कहावत है कि मकाई, जोन्हरी, बजरी, इन सब अनाजों को दूर–दूर बोना चाहिए।

'मग्घा मारै, पुरवा संवारै, उत्तरा भरि–भरि मेंड़ निहारै'।

श०– मग्घा–मघा नक्षत्र। निहारै–देखै।

अ०– जड़हनी फसलों को मघा में बोकर पूर्वा नक्षत्र में ठीक से देखभाल करे। तो उत्तरा में फिर खेत देखने लायक होता है।

'मत कोई होय मुसहरा वाहन, खसम मारि के डारय पायन'।

श०– मुसहरा–एक जंगली आदिवासी जाति, जो दोना पत्तल बनाती है। वाहन–सवारी। खसम–पति, स्वामी।

अ०– मुसहरों की सवारी जैसे टट्टू, खच्चर, ऊंट पर सवारी नहीं करना चाहिए, ये सवारियां मनहूस होती हैं। जोश आने पर अपने स्वामी को ही पैर के नीचे डालकर रौंद डालती हैं। यानी ये सवारियां बड़ी बेवफा होती हैं।

'मरद निरौनी बरदे दायें, दुभरी चलने में दुख पायें।'

श०– मरद–मर्द। निरौनी–खेत की निराई करना, खर–पतवार निकालना। दुभरी–गर्भवती स्त्री।

अ०– पुरुष को खेत की निराई करने, बैल को दायें

चलने तथा जिस स्त्री के पेट में बच्चा हो उसे चलने में कष्ट होता है।

'मभयनी बैल बड़े बलवान, तनिक में करिहै ठाढ़े काम'।

श०— मभयनी—तिरछी सींग वाले।

अ०— तिरछी सींग वाले बैल बड़े तेज होते हैं, वे जल्दी—जल्दी अपना सब काम पूरा कर लेते हैं।

'मकड़ी घासा डावै जाला, बीज चने का भरि—भरि डाला'।

अ०— कहा है कि जब मकड़ी घास में जाला लगावै तब चना बोना चाहिए।

'मंडुवा मीन पीन संग दही, कोदौं क भात दूध संग लही'।

श०— मंडुआ— एक प्रकार का मोटा अनाज। मीन— मछली। कोदों—एक प्रकार का मोटा अनाज है।

अ०— मंडुआ के भात का पीन मछली के संग कोदों के भात के साथ दूध का जोड़ है।

'मन मां कुईं अस फुलान अहै'।

अ०— बहुत प्रसन्न होने वाले को देखकर कहावत कही गई है।

'मरा हाथी तबौ सवा लाख कै'।

अ०— वस्तु यदि कीमती है तो वह गिरी हालत में होगी तो भी लोग उसकी अच्छी कीमत लगायेंगे। हाथी इतना महंगा जानवर है कि मरने के बाद भी कहते हैं सवा लाख अब भी इसका कोई दे देगा।

'मजनूं क लैला क कुकुरा पियार रहा'।

मजनूं—पागल, आशिक, लैला पर मरने वाला। अरबी प्रसिद्ध प्रेम कथा जिसमें मजनूं आशिक था और लैला महबूबा।

जब मनुष्य को किसी से प्रेम हो जाता है तो जो वस्तु प्रेमिका को पसंद होगी, वह प्रेमी को भी पसंद आयेगी।

अ०— मजनूं को लैला का कुत्ता भी प्यारा था।

'मन उमराव, करम दलिद्री'।

अ०— मन तो राजा का सा व्यवहार करना चाहता है, वस्तुस्थिति गरीब की है। कहावत भी भाग्यवादी है।

'मन क लड्डू खाये जाव'।

जब कोई आदमी मन ही मन तमाम सुन्दर कल्पनायें करे और उन कल्पनाओं के द्वारा प्रसन्न होता रहे तो कहावत चरितार्थ होती है। यानी मन ही मन प्रसन्न होते रहो। होना क्या है इसे कौन जानें?

'मरे तो सहीद औ मारे तो गाजी'।

श०— सहीद—शहीद, जो रणभूमि में योद्धा मारे जाते हैं। गाजी—काफिरों से धर्मयुद्ध में लड़ने वाला मुसलमान।

अ०— यदि लड़ाई में मारे गये तो शहीद कहलायेंगे और यदि लड़ाई में मरे तो गाजी समझे जायेंगे।

'मकरा कुम्भ जो शनि आवै, दोनों अन्न कबौ ना खावे'।

श०— मकर व कुंभ राशि पर जब भी शनिश्चर की दशा हो तो मिला हुआ अन्न भी सामने से उठ जाता है। कहते हैं शनिदेव की दशा किसी—किसी के ऊपर इतनी खराब होती है कि उसके सब कर्म हो जाते हैं। जब शनि मकर—कुंभ राशि पर रहे तो उस समय का अन्न खाना भी भाग्य में नहीं होता।

'मनई औ बन के पातर न कहै क चाही'।

अ०— आदमी और जंगल को कमजोर नहीं समझना चाहिए। जंगल में एक से एक विषैले जीव जन्तु होते हैं और आदमी कितना अच्छा से अच्छा और बुरा से बुरा हो सकता हो इसका अनुमान तो सामना पड़ने पर ही लग सकता है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने बहुत सुंदर ढंग से मनुष्य की पहचान बताई है देखिये—

'विचार लो कि मर्त्य हो, न मृत्यु से डरो कभी
मरो परन्तु यों मरो कि याद जो करें सभी।
हुई न जो सुमृत्यु तो बृथा मरे, बृथा जिये
मरा नहीं वही कि जो जिया है और के लिए
यही पशु प्रवृत्ति है कि आप—आप ही चरे
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिये मरे'

किसी उर्दू के शायर ने लिखा है—

'सफ़ीनों से जो टकराये उसे तूफान कहते हैं।
जो तूफानों से टक्कर ले उसे इंसान कहते हैं।'

श०– सफीनों–नौका। तूफान–अंधड़, काली आंधी।

यानी जो नाव तूफानों से टक्कर लेकर आगे बढ़ती जाये उसे तूफान कहते हैं और जो आदमी तूफान से टक्कर ले पाये उसे इंसान कहते हैं।

'मलयागिरि की भीलनी, चंदन देय जलाय'।

श०– मलया–चंदन। गिरि–पहाड़। भीलनी एक आदिवासी जाति होती है।

जब कहीं पर किसी वस्तु का बाहुल्य हो तो कहावत के माध्यम से वह बात कही जाती है। मलयागिरि की रहने वाली भीलनी तक चंदन की लकड़ी को जलाकर खाना बनाती है।

'मरै का मारै न चाही'।

किसी विवश आदमी के प्रति कहावत कही गई है जो हर तरह से कमजोर है। स्वयं में ही मजबूर को और भी मजबूर करने से क्या लाभ? बदले की भावना उससे रखनी चाहिए जो बराबर का हो। निर्बल से बल दिखाने से क्या मिलेगा?

'मन मिले क मेला, चित्त मिले क चेला'।

श०– मन मिले तो लोगों को बुलाना, सम्मान करना, भीड़ जुटाना अच्छा लगता है और जिससे चित मिले, विचारों का मेल हो उसी को अपने गुण देना चाहिए, उसे ही साथी बनाने में कल्याण है तभी दिये गये विचारों का प्रचार–प्रसार हो पायेगा।

'मन भै गावै ऊपर से रोवै, मूस भतार से सुख से सोवै'।

कहावत ऐसी स्त्री पर कही गई है जिसका आदमी उसकी उम्र से बेजोड़ हो।

'मन में तो स्त्री खुश होती है कि मूस ऐसे भतार को पाने पर स्वतंत्रता तो मिली। कोई कुछ कह तो न पायेगा और ऊपर से दिखावे के लिये रोना–धोना करे।

'मन मरजी तो जोरू क कहै मौसी'।

मन का मौजी आदमी किसी को क्या कह बैठे कुछ नहीं पता। कुछ नहीं तो यही मजाक सही कि अपनी पत्नी को मौसी बना लिया।

'मर–मर न जाते तो घर भर जाते'।

आमतौर पर यह कहावत उन स्त्रियों के मुख से सुनने को मिलती है जिनके बच्चे होने के बाद बचते नहीं। यानी मर न जाते तो बच्चों से घर भर जाता।

'मन भै मोती देय तो बिआह, मन भै चाउर देय तो बिआह'।

अ०– चाहे सस्ते तौर पर करे चाहे महंगे तौर पर वह अवसर तो महत्वपूर्ण है ही। विवाह, जन्म आदि शुभ अवसरों पर कोई बहुत उत्साह से करता है कोई कम उत्साह से। किन्तु घर में यदि पुत्र का जन्म हुआ है तो वह पुत्र ही कहलायेगा चाहे अमीर का हो चाहे गरीब का हो।

'मरइव चलीं तो सूक सामने'।

कहावत मरने को लेकर व्यंग्य में कही गई है। मरने चली तो शुक्र सामने था।

अ०– आज जब कोई काम करने चली तो साइत खराब निकली। यानी कार्य में रुकावट आ जाना। मरने भी चलीं तो सामने शुक्र है जिसमें यात्रा करने की मनाही है।

'मरा रावन फजीहत होइके'।

अ०– जब कोई काम बड़ी बेइज्जती के साथ सम्पन्न हो, उसके लिये तमाम उपायों व तमाम मुश्किलों का सामना करना पड़े तो कहावत कहते हैं। आखिर रावण मरा, मगर बड़ी बेइज्जती के साथ। रावण की सारी दुर्दशा हुई तो प्राण निकले।

'मरिहौं, मुल टरिहौं ना'।

अ०– प्राण चाहे निकल जायें मगर यहां से हटूंगा नहीं। यानी जिद्द कर लेना।

'मरे क केव नाहीं, जियत क सबै साथी हैं।

अ०– स्पष्ट है।

'मरै न जिये, हुकुर, हुकुर करै'।

अ०– कोई बूढ़ा आदमी जब मरने के झूले में झूलता रहता है तो कहावत स्पष्ट हो जाती है।

'मसालची आंधर होत'।

श०– मशालची– जो हाथ में मशाल लेकर चलता है।

अ०– मशालची चूंकि हाथ में मशाल लेकर चलता है

इसलिये उसके पैरों के नीचे कुछ भी नहीं दिखाई देता।

'मटका में पानी गरम, चिड़िया नहावे घूर।
चिउंटी अंडा लै चले, तो बरखा भरपूर।।'

अ०– कहावत वर्षा सम्बन्धी है। यदि गगरी में पानी गरम हो, चिड़िया धूल में सिर से नहाती हो, चींटियाँ अपने–अपने अंडों–बच्चों को लेकर कतार बनाकर चलती हों तो समझो पानी खूब बरसेगा।

'मकरा अन्न सेम तरकारी, हरहट गाय महभा महतारी।
यदि चारिव क तजन करै, बस कमरी बिछाय के भजन करै।'

श०– मकरा– एक प्रकार का इतना मोटा अन्न है। हरहट–मरकही। मइभा–सौतेली।

अ०– मकरा अनाज, सेम की तरकारी, मारने वाली गाय, सौतेली मां इन चारों को छोड़कर भजन भले ही कर लो मगर साथ रहने की लायक नहीं हैं।

'मक्खी बैठी सहद पर, पंख गये लपटाय।
हाथ मले औ सिर धुने लालच बड़ी बलाय।'

कहावत लालच के प्रति चरितार्थ की गई है।

अ०– मक्खी शहद पर बैठी हो तो उसके पंख शहद में लिपट गये। कोई वश नहीं चला कि क्या करे? इसी प्रकार से लालची मनुष्य को कभी न कभी धोखा खाना ही पड़ता है।

'मन भाये तो ढेलय गुर'।

कहावत तब कही जाती है। जब किसी को अपनी मनपसंद की चीज खाते देखी जाती है चाहे वह वस्तु कितनी ही रद्दी क्यों न हो। यहां पर विशेष रूप से कहावत उस समय कहते हैं जब कोई गर्भवती नारी सोंधी वस्तु खाने की इच्छा में खपड़े या चूल्हे की मिट्टी खाती हो।

'मरै के बाद डोमव राजा'।

अ०– कहावत है किं मरने के बाद सभी की तारीफ होती है। डोम जो श्मशान में रहता है मरने के बाद उसे भी लोग सराहते हैं।

'मा'

'माघ का जाड़ा, जेठ का धूप'
बड़े कष्ट से उपजे ऊख'।

अ०– ईख की खेती के विषय में कहा गया है कि माघ का जाड़ा और जेठ मास की धूप को सहन करके ही ऊख मिल पाती है। गन्ने के लिये बड़ा ही कष्ट सहे तो जाकर गन्ना पाये।

'माघ तिलै तिल बाढ़ै, फागुन गोड़ पसारै'।

कहावत दिन के बड़े होने के प्रति कही गई हे। यानी दिन कब से कितना बढ़ना शुरू होता है?

अ०– माघ माह से तिल तिल करके दिन बढ़ते–बढ़ते फागुन माह तक काफी बड़ा होने लग जाता है।

'मारि जाय अगाड़ी कि मारि जाय पिछाड़ी'।

श०– अगाड़ी– आगे, सबसे पहिले। पिछाड़ी–सबसे पीछे।

कहावत, पहले और पीछे दोनों स्थितियों में लोगों के ऊपर क्या प्रतिक्रिया होती है, उस पर कही गई है। कभी–कभी ऐसी कहावतें घरों में उस समय भी कही जाती हैं जब भोजन पहले करने वाले को सभी वस्तुएं मिल जाती हैं और जिसने खाना बनाया उसे सभी को खिलाने में चीजें समाप्त होने के कारण नहीं भी मिल पाती हैं। तो यह तो हुई पिछाड़ी की मार। और कभी–कभी ऐसा भी होता है कि कहीं जाने की जल्दी में उसने पहले भोजन कर लिया जबकि अभी रसोई में कुछ सामान बनने को भी बाकी है तो यह हुई अगाड़ी की मार है कहावत उसी पर कही गई है।

अ०– या तो मारा जाता है आगे वाला या पीछे का, यही स्थिति लड़ाई–झगड़े से भी होती है।

'माटी छुइ देय तो सोन होय जाथाय'।

कहावत किसी भाग्यवान व्यक्ति के प्रति लागू की गई है।

अ०– वह आदमी जो कुछ भी काम करता है उसमें उसे यश ही मिलता है। यदि मिट्टी ही हाथ से छू दे

तो वह सोना बन जाय। इतने अच्छे कर्मों के होते हैं कुछ लोग।

'माथे क बुंदा, लोभावै दस गुंडा'।

अ०— स्पष्ट है।

'माई बाप क लातन मारै, मेहरी देखि जुड़ाय।
चारों धाम जो कैके आवै, तबहूं पाप ना जाय'।।

अ०— माता–पिता का अपमान करके पत्नी का मान करने वाला आदमी चाहे कितना ही तीर्थ–व्रत करे, चाहे चारों धाम की तीर्थयात्रा करके आये किन्तु वह पाप नहीं जाता।

'माटक माट ही बिगड़ा है'

श०— माट–मिट्टी के उस बर्तन को कहते हैं जिसमें रंगरेज रंग तैयार करता है। बहुत पुराने जमाने की बात है जब रसायनिक रंग नहीं थे तो नील, आलू, टेसू, हरश्रृंगार के फूलों व टहनियों को मिट्टी के बर्तन में डालकर सड़ने अर्थात् खमीर उठने तक डाल देते थे, यदि कोई त्रुटि रहती तो रंग नहीं उतरता था। इसी को माट बिगड़ना कहते थे।

अ०— जब कोई वस्तु सब की सब खराब हो जाती है या घर समाज बिगड़ जाता है तो उसी पर कहावत कही गई है।

'माड़ न जुरै, औ मांगै ताड़ी'।

श०— माड़–चावल बनाते समय जो पानी चावल से पसाकर निकाला जाता है ताकि चावल छिटका बने। ताड़ी– जो रस खजूर के पेड़ से पानी निकलता है। वह पीने में नशा करता है। महंगा भी मिलता है।

'माता का साथ भाई का हाथ'।

अ०— दोनों ही दुर्लभ हैं। बड़े भाग्य से माता का साथ व प्रेम मिल पाता है। उसी प्रकार से भाई का प्रेम व सहयोग भाग्यवानों को ही मिल पाता है। किसी ने कहा है– 'केतनौं भइया बैरी तबहूं दाहिन बांह'।

'माटी के मूरत सकल न सूरत'।

अ०— किसी कुरूप व भोंड़ी स्त्री के प्रति कहावत कही गई है कि न शक्ल है न सूरत जैसी मिट्टी की कोई मूर्ति बनाकर रख दे।

'माई न पूंछै मैहर, लड़िकय कहैं ननियाउर कहां?'

अ०— मां जब अपने मैहर की याद नहीं करती तो बच्चों का पूछना एक व्यंग्य सा लगता है। यानी जिसका निकटतम रिश्ता वह तो कभी उस स्थान व आदमी की याद ही नहीं करता, फिर उसके बच्चों का नाता तो एक पुश्त और दूर का हो जाता है।

'मान न मान मैं तेरा मेहमान'।

किसी से जबरदस्ती कोई काम करवाना, कोई उसे माने न माने। अपना महत्व आवश्यकता से अधिक प्रकट करना।

अ०— मानो या न मानो मैं तुम्हारा मेहमान हूं, मुझे सम्मान देना होगा तुम्हें।

'माई क जियरा गाई क, पुतवा क जियरा कसाई क'।

श०— जियरा–जिव, हृदय। गाई–गाय सा, बहुत कोमल। कसाई–जो पशुओं का वध करते हैं।

अ०— माता का मन तो गाय जैसा सीधा और स्नेह से भरा है और पुत्र का मन मां की तरफ से अति कठोर व निर्दयी होता है। संस्कृत में एक श्लोक कहा है–

'कुपुत्रो जायेत् क्वचिदपि कुमाता न भवति'।

यानी पुत्र कुपुत्र हो सकता है मगर मां कभी भी कुमाता नहीं हो सकती है। माता का स्नेह पुत्र के प्रति कभी घट नहीं सकता।

'माघ सकारे, जेठ दुपहरे, भादों आधी रात,
जेकरे लाग तलाये ओके छाती फाट'।

श०— सकारे–सबेरे, तड़के। तलाये–शौच, टट्टी।

कहावत एकदम गांव के वातावरण की है जहां पर जनता बाहर शौच को जाती है।

अ०— माघ मास की ठिठुरन भरी सुबह में, जेठ मास की दुपहरी में तथा भादों मास की अंधेरी आधी रात में जिसको टट्टी लगी समझो कि उसका कलेजा बैठ जाता है। वह शौच करने में कितना कष्ट उठाता है यह तो भुक्तभोगी ही बता सकता है।

'मानै तो देव नाहीं तो पाथर'।

अ०— देवी देवता हो या मनुष्य किसी को मानने न

मानने की श्रद्धा तो अपने मन की होती है। जब देवी– देवता मन की कामनायें नहीं पूरी करते तो उनके प्रति भी विश्वास घट जाता है। फिर वे देवता पत्थर का रूप लगने लगते हैं।

'माई के कोखे कोंहारे क आंवा'।

श०– माई–माता। कोख–पेट, गर्भ। कोंहार–कुम्हार जो मिट्टी के बर्तन बनाते हैं। आंवा–जिस भट्ठी में बर्तन पकता है।

जब लोग एक ही मां–बाप के बच्चों को भिन्न–भिन्न शक्ल में पाते हैं तो कहावत कही जाती है।

अ०– जैसे कुम्हार के आंवे में तरह–तरह के बर्तन पका करते हैं वैसे ही मां की कोख भी होती है कि जिसमें बच्चे अलग–अलग रूप–रंग के दिखाई पड़ते हैं।

'माई निहारै पेट, मेहर निहारै टेंट'।

श०– पेट–पेट भरा है कि खाली है। मेहर–स्त्री, पत्नी। टेंट–पहले लोग अपना पैसा कमर में धोती में मोड़ कर रखते थे।

कहावत मां की ममता के प्रति कही गई है।

अ०– पुत्र जब बाहर से घर आता है तो मां चिंतातुर हो उठती है कि लड़का भूखा होगा, बाहर से आया है, भोजन चाहिये मगर पत्नी छिपी नजरों से देखती है क्या लाये हैं?

राम बिना दुख कौन हरे, वर्षा बिन सागर कौन भरे?'

'माता बिन आदर कौन करे, नारी बिन धीरज कौन धरे।

अ०– स्पष्ट है।

'माघ मास जो परै न सीत
महंगा नाज जान्यो मेरे मीत'।

अ०– माघ मास में जो ठंडक न पड़े तो समझना चाहिए कि अनाज महंगा बिकेगा।

'मार के आगे भूत भागै'।

अ०– कहते हैं दुष्ट के साथ दुष्टता करनी बहुत ही आवश्यक है। जब मार पड़ने लगती है तो उसके सामने सारी दुष्टता दूर हो जाती है।

'माह असाढ़ जो गंवही कीन
ताकी खेती होवै हीन'।

श०– गंवही–मेहमानी में जाकर रुकना। हीन–खराब, बेकार।

कहावत खेती संबंधी–खेतों को बोने, जोतने के समय की है।

अ०– किसान भाइयों के लिये आषाढ़ का मास एक ऐसा मास है जिसमें खेतों को जोतना, बोना होता है। इस मास में कोई किसान एक दिन को भी अपना काम छोड़कर कहीं बहुत आवश्यक काम से बाहर नहीं जा सकता है। फिर भला कोई किसान आषाढ़ मास में किसी रिश्तेदारी में जाकर आराम से रिश्ता निभाये तो उसकी खेती का क्या हाल हो सकता है? कैसी होगी उस किसान की खेती?

'माथे पै गठरी, गावै बसंती गीत'।

अ०– कहां तो गठरी का बोझ और कहां रस भरे गाने गाना? बसंत के मदमाते गीतों को तो आराम से लोग गाते हैं। परिश्रम से पीड़ित आदमी क्या गायेगा?

'माथे गठरी मधुरी चाल, आज न पहुंचे, पहुंचे काल'।

अ०– सिर पर गठरी हो, धीमी चाल हो, तो भी धीरे–धीरे मंजिल पर पहुंच ही जायेंगे। यानी बेफिक्र आदमी को कोई चिंता नहीं, होती है।

'मान का पानय बहुत आय'।

अ०– आदर के साथ दिया गया पान ही बहुत है चाहे कुछ भी न खिलाये पिलाये।

'मान क पान हीरा समान'।

अ०– स्पष्ट है।

'माघे मास बहै पुरवाई, तब सरसों क मांहू खाई'।

अ०– कहावत खेती विषयक कही गई है।

यदि माघ मास में पुरवा हवा बहेगी तो सरसों के खेत में एक प्रकार का कीड़ा होता है जो हरे रंग का लिसलिसा होता है, लग जायेंगे।

'माया तेरे तीन नाम, परसा, परसू, परसराम'।

कहावत धन संबंधी है। यानी जब किसी के पास लक्ष्मी होती है तो उसके प्रति लोगों की भावनायें कैसी हैं और जब कोई निर्धन होता है तो लोगों के विचार उसके लिये क्या बनते हैं?

अ०— जब आदमी धनहीन हो जाता है तो उसे अनादर में 'परसा' नाम से पुकारते हैं, थोड़ा धन होने पर 'परसी' तथा धनवान होने पर 'परशुराम' संबोधन देते हैं।

'मारे चूहा नाव परा फत्ते'।

अ०— डींग हांकने वाले जो होते हैं वे ऐसे ही हांकते हैं। चूहा मारने पर नाम की महिमा गाते हैं कि मैंने तो शेर ही मार डाला।

'मार गोसइंया मार तोहारिन आसा'।

अ०— चाहे जितना मारो ठिकाना तो तुम्हारे ही पास है।

'मारे मेहर, भागे परोसिन'।

कहावत भय पर कही गई है। कोई अपनी स्त्री को मार रहा है तो डर के मारे पड़ोसिन भाग रही है कि कहीं मेरी भी ऐसी दशा न होने लगे।

'मारै सिपाही, नाँव सरदार का,
वार करै जोधा नाँव तलवार का'।

अ०— काम कोई करे नाम किसी का हो। नाम भी उसी का होता है जो नायक होता है। जैसे मारते सिपाही हैं और नाम सरदार का होता है। लड़ाई में वार करते हैं योद्धा मगर नाम तलवार का होता है।

'मालवाला हार गा गालवाला जीत गा'।

श०— मालवाला—पैसे वाला। गालवाला—गलार, जो बेहद बोलता हो।

अ०— जिसका असली हक है पैसे व हिस्से में, वह तो चुप रहने के कारण हार गया और जो झूठ—सच चिल्लाता जा रहा वह जीत गया।

'मारते का हाथ पकड़ा जा सकता है
बोलते की जीभ नहीं पकड़ी जा सकती है'।

कहावत अतिबोलनेवाले पर कही गई है।

अ०— जो मार रहा है उसका हाथ तो थामा जा सकता है किन्तु जो बोल रहा हो उसकी जुबान नहीं थामी जा सकती है। गांवों में इसी पर कहावत है—

'गगरी, कूंडा क बंद कीन जाय सकत,
मुल आदमी की जबान नहीं बंद की जा सकत'।

बात सही है जो गलार है उससे कोई भी नहीं जीत सकता है। इस पर गोस्वामी जी की पंक्ति देखिये— 'बातुल भूत बिबस मतवारे, ते नहिं बोलहिं वचन संभारे' यानी जो बात के भूत से मजबूर होते हैं वे कोई भी बात सोच—समझकर नहीं बोलते।

'माटी के भवानी, टीका—टीका मां बिलानी'।

श०— भवानी—देवी। टीका—टीका लगाने में, बिलानी—समाप्त।

अ०— जब कोई वस्तु जरा सा छूते ही या इतनी कमजोर हो कि काम में आने के साथ ही बिगड़ने लगे तो कहते हैं कि एक तो मिट्टी की भवानी ही बनी है दूसरे टीका लगाने में धीरे—धीरे समाप्त होती जा रही हैं।

'माटी की भवानी क पिन्नी क परसाद'।

अ०— मिट्टी की भवानी को पिन्नी का प्रसाद,जो चावल के आटे में चीनी डालकर, बनता है, भला वह चढ़ाया जाय? जो जैसा हो उसका स्वागत उसी के अनुसार करना चाहिए।

'मारा चोर, उपासा पाहुंन लउटि के नाही अउतैं'।

श०— पाहुन—मेहमान।

अ०— मारा हुआ चोर और बिना खाना खिलाया हुआ मेहमान फिर वापस नहीं आता है।

'माली चाहे बरसना धोबी चाहे धूप
साहू चाहे बोलना चोर चाहे चूप।'

अ०— कहावत सिद्धांतवाली है। माली इसलिये पानी बरसने की प्रतीक्षा करता है कि उसकी फुलवारी हरी भरी रहे। धोबी इसलिये धूप चाहता है कि उसके

कपड़े सूखते रहें। साहू बोलकर अपने घर की रखवाली करना चाहता है और चोर चोरी करने के लिए एकदम चुपचाप रहना चाहता है। अपने पेशे के अनुसार सभी कमनायें करते हैं।

'मास खाये मास बाढ़ै घिव खाये बल होय।
साग खाये झोंझर बाढ़ै बल कहां से होय।।'

कहावत खाने –पीने के ऊपर कही गई है।

श०– झोंझर–पेट।

अ०– मांस खाने से मांस बढ़ता है। घी खाने से बल अधिक होता है। साग खाने से पेट बढ़ता है तो बल भला कहां से आये?

'मासे भर की चार कचौड़ी, खुरमा ढाई मासे का
घर में रोवै बहिन भौजी बाहर रोवै नाई का।
धीरे–धीरे जीमो पंचों, देखो गजब खोदाई का
लाला जी ने ब्याह रचाया, लहंगा बेंच लुगाई का'।

श०– मासे–माशा। पहले के जमाने में तोला, माशा–रत्ती का एक पैमाना होता था जिससे सोना या बहुत मूल्यवान वस्तु तौली जाती थी। लुगाई–पत्नी, स्त्री।

कहावत किसी कंजूस आदमी के ऊपर कही गई है।

अ०– माशे–माशे भर की चार कचौड़ियां बनीं और ढाई मासे के खुरमे बने। इस पर भीं लोगों से कहा गया है कि धीरे–धीरे खाओ। घर में भूख के मारे बहिन व भौजी रो रहे हैं तथा बाहर नाई भूखा है। लाला जी ने अपनी स्त्री का लहंगा बेंचकर सब कुछ किया है।

'माँ से मास, छ मासे बाप और लोग सब बारा मास'।

कहावत छोटे बच्चे के ऊपर लागू होती हैं।

अ०– छोटा बच्चा एक माह में मां को, छः माह में बाप को तथा बारह महीने यानी साल भर में और लोगों को पहचानने लगता है।

'मारूं हरिनी तोड़ू कास, बोऊं उर्द हथिया की आस'।

श०– मारूं–समाप्त करना। हरिनी–अगस्त नामक तारा, जिसके उदय होने पर वर्षा की समाप्ति समझना चाहिये। तुलसीदास जी ने लिखा है– 'उदित अगस्त पंथ जल सोखा'। आस–आशा। हथिया–एक नक्षत्र है। कास– एक प्रकार की घास है।

अ०– कवि घाघ की कहावत है कि जब अगस्त तारा उदय हो जाय और कास फूल जायं तो उसे काटकर उर्द हथिया नक्षत्र में बोना चाहिए।

''माघ पूस जौ दखिना चलै, तो सावन मां लच्छन भले'।

श०– दखिना–दक्षिण दिशा से चलने वाली वायु। लच्छन–लक्षण, दशा। कहावत खेती सम्बन्धी है।

अ०– माघ के महीने में जब दक्षिण दिशा से वायु चले तो समझना चाहिए कि सावन मास में फसल के लिये वर्षा खूब होगी।

'माघ मां बादर लाली धरै, तो सच मानो पाथर परै'।

अ०– यदि माघ के मास में आसमान में लाली दिखाई पड़े तो समझना चाहिए कि ओले पड़ने के आसार हैं।

'माघ मां डारै, जेठ मां जारे, भादों सारे,
तेकर मेहरी डेहरी पारै'।

श०– मेहरी– स्त्री। डेहरी–गांवों में अनाज रखने के लिये ऊंचे–ऊंचे कोठ बनाये जाते हैं जिनमें मनों अनाज रखे जा सकते हैं। बहुत से लोग बखार, कोठ, कोठिला कई नामों से बोलते हैं।

कहावत खेतों को किसी प्रकार से बोने लायक बनाना चाहिए, उसके ऊपर है।

अ०– माघ में जोते, जेठ माह में खूब तपाये, कूड़ा कर्कट जला दे और भादों माह में मिट्टी को खाद देकर सड़ाये तो उस खेत में इतनी बढ़िया फसल होगी और इतना अनाज होगा कि उस किसान की स्त्री कोठ भरने में ही लगी रह जायेगी।

'माघे गर्मी जेठे जाड़, कहे घाघ हम होब उजाड़'।

श०– उजाड़–उजड़ जाना, तबाह हो जाना।

घाघ कवि का कहना है कि यदि माघ मास में गर्मी और जेठ में जाड़ा हो तो समझो कि फसल गई। कुछ भी अनाज न मिल पायेगा।

'माघ मां उमस, जेठ मां जाड़ पहिले बरखा भरिगा ताल
कहै घाघ हम होब बियोगी कुआं के पानी धोइहै धोबी'।

अ०— माघ में गर्मी, जेठ में ठंडक तथा पहली बरसात में इतना पानी बरसे कि ताल भर जाये तो समझो कि फसलें गई। उस साल पानी बिल्कुल नहीं बरसेगा यहां तक कि कुआं से पानी निकालकर धोबी कपड़ों को धोयेगा।

'माघ उजारी तीज को, बादर बिज्जु को देख,
गेहूं जौ संचय करो महंगो होसी पेखु'।

अ०— माघ की उजाली तीज को यदि आसमान में बादल बिजली दिखाई दें तो अनाज बहुत महंगा मिलेगा। इसलिये पहले से ही अनाज संचित करना शुरू कर दो।

'माघ उजारी चौथ को मेंह बादरो जान।
पान और नारियर तै महंगौ आब बिकान'

अ०— स्पष्ट है।

'माघ उजारी पंचमी परसै उत्तम बाय
तौ जानों यों भादवों बिन जल कोसे जाय'।

अ०— यदि माघ मास की उजाली पंचमी को बढ़िया हवा चल रही है तो समझो कि भादों मास में पानी नहीं बरसेगा।

'माघ छठी गर्जे नहीं महंगो होय कपास
सातें देखा निर्मला तो नहीं कछु है त्रास'।

श०— कपास—रुई जिससे निकलती है।

अ०— माघ की षष्ठी को यदि बादल आकाश में नहीं है तो कपास महंगा होगा। सत्तमी को आकाश कुछ साफ दिखे तो समझो कि वर्षा होगी।

'माघु सुदी जो सत्तमी सोमवार दीसन्त।
काल परै राजा लड़ै सगरै नरा भ्रमन्त'।।

श०— सुदी—उजाली। नरां—आदमी।

अ०— यदि माघ की उजाली सत्तमी को सोमवार दिन पड़े तो समझो कि अकाल के लक्षण हैं और राजा—राजा लड़ेंगे। सभी आदमी कष्ट और भ्रम में रहेंगे कि अब क्या होने वाला है?

'माघु सुदी जो सत्तमी भौमवार को होय।
तो भड्डर जोसी कहै नाज किरानो होय।।'

अ०— माघ की उजाली सप्तमी को यदि मंगलवार का दिन पड़े तो अनाज में कीड़ें लग जाते हैं।

'माघ सुदी आठे दिवस कृतिका नखत जो होय।
की फागुन पाथर परै, की सावन महंगी होय।।'

श०— सुदी— उजला पाख। कृतिका—नक्षत्र।

अ०— माघ मास की उजाली अष्टमी को यदि कृत्तिका नक्षत्र पड़े तो या तो फागुन माह में पत्थर पड़ेगा या फिर सावन मास में अनाज महंगा होगा।

'माघो नौमी निर्मली बादर रेख न होय।
तौ भाखै यों भड्डरी अन्न जु महंगा होय।।'

अ०— माघ की अंजोर पक्ष की नवमी को यदि बादल नहीं होंगे तो समझो कि अनाज महंगा हो जायेगा।

'मारि के टरि रहय, खाय के परि रहय'।

कहावत सिद्धांतवादी है।

अ०— मार करने के बाद वहां से हट जाना चाहिए और खाना खा लेने के बाद लेट जाना चाहिए।

'मार्ग बदी आठें परा बादर बिज्जु जो होय।
तो सावन बरसै भलो नाज सवाया होय।।'

अ०— अगहन की अंधेरी अष्टमी को बादल बिजुली हो तो समझो कि अनाज सवाया गुना होगा।

'मार्ग बदी आठे घन दरसे,
तो मग्घा भरि सावन बरसे'

श०— आठे—अष्टमी। घन—बादल। दरसे—दिखाई पड़े।

अ०— माघ मास की अष्टमी को यदि बादल दिखाई पड़े तो सावन भर मघा बरसता है।

'माघ पांच जो हों रविवार, तो भी जोसी समय विचार'।

अ०— माघ महीने में पांच इतवार पड़ें तो विचारना चाहिए कि क्या होगा?

'माघ सुदी जो कज्जली, आठे बादर होय।
तो असाढ़ में धुरवा बरसे जोसी होय।।'

अ०– माघ की उजाली तीज व अष्टमी को यदि बादल हैं तो विचार करना चाहिए कि आषाढ़ में पानी बरसेगा कि नहीं?

'माघ सत्तमी उजली, बादर मेघ करंत।
तो असाढ़ में भड्डरी घनो मेघ बरसंत।।'

श०– करंत–करते हैं। घनों–घनघोर। बरसंत–बरसते हैं।

अ०– कवि भड्डरी का कथन है कि यदि माघ की उजाली सत्तमी को बादल होवें तो आषाढ़ में घनघोर बादलों से बरसात होगी।

'माघ अंधेरी सत्तमी मेघ बिज्जु दमकंत।
मास चार बरसे सही मत चूको तू कंत।।'

अ०– स्पष्ट है।

'माघ अमावस गर्भ में जो केहु भांति विचार।
भादों की पूनों दिवस वर्षा पहर जु चार।।'

अ०– माघ की अमावस्या के छिपे बादल पर विचार करने से ज्ञात होता है कि भादों की पूर्णिमा को चार पहर पानी बरसेगा।

'माघ पूस की बादरी और कुँवारी घाम।
ये दोनों जो कोइ सहै करै पराया काम।।'

अ०– कहते हैं कि माघ और पौष मास की बदली और क्वार की धूप बड़ी तेज होती है। इनको जो सहन कर सकता है वही दूसरे के यहां मजदूरी व नौकरी कर सकता है।

'मघा में मक्कर पूर्वा डांस, उत्तरा में भया सबका नास'

श०– मक्कर–मकड़ी। डांस–पशुओं को काटने वाला मच्छर।

अ०– मघा नक्षत्र में मकड़ी, पूर्वा में जानवरों को डसने वाले मच्छर, तथा उत्तरा नक्षत्र के लगते सबका नाश हो जाता है।

'मार–मार पढ़इयो तो हड़ा–हड़ा को कही?'

कहावत व्यंग्य में कही गई है। खेती गृहस्थी का काम भी करवाना और पढ़ाना भी दोनों कैसे सम्भव हो सकते हैं?

अ०– यदि मार–मार कर पढ़ाओगे तो खेती का काम कौन करेगा? खेत कौवों से कौन रखायेगा?

'मार खायं गाजी मियां, धक्का खायं मुजावर'।

अ०– गलती करे कोई दूसरा सजा भुगते कोई दूसरा। मुजावर बेचारे की क्या गलती? किन्तु साथ रहने के कारण वह बेचारा भी चोट खा गया, चाहे थोड़ी ही क्यों न हो?

'मारे चलें मेहरी, ठठावै लागें डेहरी'।

श०– मेहरी–पत्नी, स्त्री। ठठावै–मारना। डेहरी–चौकठ, घर के अंदर जाने के द्वार के बीच में करीबन एक बालिश्त चौड़ा लकड़ी का रोक बना होता है उसे डेहरी कहते हैं।

कहावत किसी का गुस्सा किसी पर उतारने या जिस पर वश चलता है उसी पर क्रोध उतारने, से संबंधित है।

अ०– कहां तो अपनी स्त्री के ऊपर गुस्सा कर उसे मारने चले थे और कहां बीच रास्ते की चौखट पर ही क्रोध उतारने लग गये।

'मान क बीरा हीरा समान होथ'।

अ०– आदर से खिलाया गया पान बहुत कीमती होता है।

'मारते की अगाड़ी, भागते की पिछाड़ी'।

अ०– मारने वाले के आगे और खदेड़ने वाले के पीछे होने पर बचत हो पाती है।

'माघ के दुआ आगे आय, बेटवा कै मुन्नी निकरि आय'।

श०– दुआ– आशीष। मुन्नी–छोटे बच्चे का गुप्तांग।

कहावत व्रत, नेम, धर्म के प्रति कही गई है।

अ०– माघ के महीने में लोग गंगा स्नान का बड़ा महत्व मानते हैं। कहावत भी गंगा स्नान के अवसर पर कही गई है कि गंगा स्नान करके जो लड़का पाने की मनौती की गई उसकी दुआ सामने आई, घर में पुत्र का जन्म हो गया।

'माटी के कूंड़व गगरी मनई बजाय के लेथ'।

अ०– कोई भी वस्तु देखभाल कर, सोच समझ कर खरीदनी चाहिए। आवश्यकता के लिये ही आदमी

मिट्टी का घड़ा खरीदता है, यदि वह फूटा निकला तो पैसे डांड़ चले जाते हैं। इसलिये छोटी हो या बड़ी वस्तु देखकर लेनी चाहिए।

'माटी छुए सोन होइ जात'।

अ०– कहावत किसी भाग्यवान आदमी के प्रति कही गई है कि फलां व्यक्ति यदि मिट्टी को भी छू ले तो वह सोना हो जाती है। यानी हाथ इतना यशस्वी है कि मामूली नगण्य वस्तु को हाथ लगाते ही मूल्यवान हो जाती है। किसी ने कहा है कि भाग्यवान का हल भूत जोतते हैं। कहने का अर्थ यह कि जो किस्मत का बली होता है उसका काम कभी रुकता नहीं, चाहे जैसे जिस तरह हो, होके ही रहता है।

'माघ उजारी दूज दिन, बादर बिज्जु समोय।
तो भाखै यों भड्डरी, अन्न जु महंगो होय।।'

कहावत समय के पानी, वर्षा पर कही गई है।

अ०– कवि भड्डरी का कथन है कि यदि माघ के दूसरे पक्ष की द्वितीया को आकाश में बादल व बिजली चमकती है तो निश्चय ही अनाज महंगा होगा।

'माघ जु परिवा उजेली, बादर वायु जो होय।
तेल और सरपी सबै, दिन–दिन महंगो होय।।'

अ०– माघ की उजाली प्रतिपदा को यदि बादल व हवा हो तो तेल और घी दिन पर दिन मँहगे होते जायेंगे।

'माया को माया मिले कर–कर लंबे हाथ।
तुलसीदास गरीब को कोइ न पूछे बात।।'

यह गोस्वामी जी का दोहा है जिसमें बताया है कि पैसा को पैसा खींचता है।

अ०– पैसे वाले को ही पैसा मिलता है। जो गरीब है उसकी कोई बात ही नहीं पूछता।

कवि रहीम के शब्दों में–

'जे गरीब पर हित करै ते रहीम बड़ लोग।
कहा सुदामा बापुरो कृष्ण मिताई जोग।।'

'माई के पेटे से कोऊ नहीं सिखि के अउतै'।

यह बात बच्चों को सिखाई जाती है।

अ०– कोई मां के पेट से काम सीखकर नहीं आता। सब किसी के साथ लगकर, देखकर, सुनकर, समझ के काम को सीखते हैं।

'माई टोनहिन, बाप कुलंग, बच्चे निकले रंग–बिरंग'।

अ०– माता टोना करने वाली तथा पिता कुलक्षण है तो बच्चें क्यों न बेढंगे होंगे?

'माई न माई क जाया सबै लोग पराया।।'

श०– माई–मां। जाया– पैदा किया, यानी भाई। पराया–दूसरा।

यहां पर कहावत उस समय लागू होती है जहां आदमी अपनों से दूर हो, कोई अपना दिखाई न दे उस स्थान पर या फिर अपनत्व की बात या व्यवहार उसे न मिले।

अ०– यहां न तो मां है और न मां का पैदा किया दूसरा कोई भाई ही दिख़ता है। सभी लोग यहां पर बेगाने से लगते हैं। इसी पर हमारे गोस्वामी जी ने कहा है?

'तुलसी या संसार में भांति–भांति के लोग।
सबसों दिल मिल़ चालिये, नदी, नाव संयोग।।'

'माई नौरंगी, बाप कोइला,
बेटवा भा बा सिराजुद्दौला।'

श०– सिराजुद्दौला–एक मुसलमान बादशाह था।

अ०– मां–बाप का ध्यान नहीं है कि कौन हैं, किस देश में, कैसे हैं? बेटा बादशाह बना घूमता है।

'माई रोवै तीर के घाव, बाप रोवै तलवार के घाव।'

कहावत उस समय लागू होती है जब किसी का पुत्र नालायक निकल जाता है। उस समय माता–पिता के ऊपर क्या बीतती है यह तो वे ही बता सकते हैं। रहीम कवि ने लिखा है–

'जो रहीम गति दीप की, कुल–कपूत गति सोय।
बारे, उजियारी करै बढ़ो अंधेरो होय।।'

श०– कुल–वंश, खानदान। कपूत–नालायक लड़का। बारे–दीप जलाना, बचपना। बढ़ो बुझने पर, बड़े होने पर।

यानी कुल के कपूत की दशा वैसी ही होती है जैसे जलाने पर दीप की। बचपन में तो 'पूत के पांव पालने में देखकर लगता है कि लड़का होनहार होगा मगर जैसे दीप बढ़ने (बुझने) पर अंधेरा करता है वैसे ही पुत्र बड़े होने पर मनमानी करके कुसंगति से कष्ट देता है।

कहावत का सारांश भी यही है।

अ०– बेटे की नालायकी का कष्ट पिता से अधिक मां को होता है। बाप को तो तलवार का मारा घाव सा लगता है मगर मां के कलेजे में ऐसे चुभता है जैसे तीर, लगा हो।

'माया गंठ की, बिद्या कंठ की'।

अ०– पैसा गांठ का और पढ़ाई रटकर अभ्यास करने की सराहनीय है।

'मानै तो देव, नाहीं तो पाथर।'

कहावत उस समय कही जाती है जब किसी के प्रति श्रद्धा या अश्रद्धा की भावना होती है। यदि अपने को फलता है तो देवता नहीं पत्थर है।

अ०– यदि प्रेम है, श्रद्धा है तो लोग पत्थर को पूजते हैं। उस पर विश्वास करते हैं। देवता स्वरूप मानते हैं और यदि अविश्वास हो, घृणा हो, प्रेम न हो तो उसी पत्थर को लोग देवता नहीं पत्थर के रूप में देखते हैं।

'मि'

'मिरग, बांदरा, तीतर, मोर,
ये चारों खेती के चोर।'

अ०– हिरन, बंदर, तीतर और मोर ये चारों खेत को नष्ट कर देते हैं।

'मिजाज आय कि तमासा, घड़ी मं तोला, घड़ी मं मासा।'

अ०– तुनकमिजाजी व्यक्ति के प्रति कहावत कही गई है कि क्या दिमाग पाया है कि जरा सी देर में खुश तो जरा सी देर में नाराज। यानी चित्त का स्थिर न होना।

'मियां की दाढ़ी वाह वाही में गई।'

अ०– किसी व्यक्ति की झूठी बड़ाई करने में ही उसकी सारी सम्पत्ति उड़ गई।

'मियां फिरें लाल गुलाल, बीबी के हैं बुरे हवाल।'

अ०– मियां तो बाहर बने–ठने घूमें और अंदर बीबी की हालत खराब है कि ठीक से पहनने को कपड़े भी नहीं हैं।

'मियां बीबी राजी तो क्या करेगा काजी?'

अ०– कहावत उस समय कही जाती है जिस समय आपस में लोग किसी की बीबी या मियां के लिये या किसी भी दो व्यक्ति के बीच की बात को लेकर व्यर्थ की बातें करने लग जाते हैं। मगर जब दो व्यक्ति आपस में प्रेम से हैं तो उनका कोई भी कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता है।

'मियाँ की जूती मियाँ के सिर'।

कहावत तब कही जाती है जब आदमी अपनी ही गलती से अपनी बातों में फंस जाता है या अपनी ही वस्तु से अपना नुकसान होता है।

अ०– मियां जी को मार पड़ी तो उन्हीं की जूती उन्हीं के सिर पर गिरी।

'मियां के हाथ अंगूठी, बीबी के कनपात।
लौंड़ी के दांत मिस्सी, तीनों की एक ही बात।।'

श०– कनपात– कान में पहनने वाला जेवर। मिस्सी– बहुत पहले के जमाने में शौकीन औरतें अपने दांतों में एक प्रकार की वस्तु लगाती थीं जिससे दांत एकदम काले हो जाते थे, आमतौर पर मुसलमान घरों की औरतें मिस्सी का बड़ा प्रयोग करती थीं।

अ०– मियां के हाथ में अंगूठी, बीबी के कान में कनपत्ता और नौकरानी के दांतों में मिस्सी लगने के कारण तीनों ही शौकीन हैं। जैसा मालिक वैसी मालकिन वैसी ही घर का काम करने वाली दासी है।

'मिर्च, कुलिंजन, बाबची, बच, पीपल, औ पान।
इनको सहद में खाइये, कंठ कोकिला जान।।'

श०– सहद–शहद। कोकिला–कोयल के जैसा।

कहावत गले के स्वर को मीठा व सुरीला करने के प्रति कही गई है।

अ०– गोली मिर्च, कुलिंजन, बावची, बच, पीपल और

पान को शहद में मिलाकर दवा के रूप में खाने से गले की आवाज सुरीली होती है।

'मिचकुरियन मदारन चलीं।'

श०– मिचकुरियन–मेंढकी। मदारन–मदार का पेड़।

कहावत किसी साधारण आदमी के असाधारण काम करने पर व्यंग्य के रूप में कही गई है।

अ०– कहां मेढकी और कहां मदार का पेड़? मेंढकी मदार के पेंड़ के ऊपर चढ़ने को चली है। यानी काम करने की क्षमता नहीं है मगर दिखावे का जोश बेतहाशा है।

'मियां की दौड़ महजिद ले।'

जब किसी आदमी के हर काम की केवल एक ही सीमा हो या एक ही रास्ता हो अथवा एक ही लक्ष्य हो तो कहावत कही जाती है।

अ०– मियां जी जायेंगे तो जायेंगे कहां? उनकी दौड़ तो केवल मसजिद तक ही है। उनकी सीमा बस वहीं तक है। आगे जाना उनके लिये असंभव है।

'मियां के दाढ़ी चुम्मइन भर के भै।'

श०– चुम्मइन–चूमने भर को।

कहावत किसी वस्तु के बहुत थोड़ी होने पर कही गई है। यानी खाने वाले ज्यादा और चीज कम हो तो वह ओंठो तक जायेगी ही।

अ०– मियां जी की दाढ़ी इतनी है कि वह चूमने में ही खत्म होती जा रही है।

'मिजाज जस क तस कुनबा बूड़ा कस।'

अ०– स्थिति तो वही की वही फिर नुकसान हुआ कहां? हिसाब–किताब तो वही है फिर घर–परिवार की हानि कैसे हुई?

'मियनी बैल बड़ा बलवान, तनिक देर में ठाढ़ करय कान।'

कहावत बैल के प्रति उद्धृत की गई है।

अ०– मियनी बैल की एक जाति होती है जो इतना होशियार व सतर्क रहने वाला होता है कि जरा सी देर में अपने कानों को खड़ा कर लेता है कि क्या हो रहा है या होने वाला है?

'मीठा–मीठा गप्प, कडुवा–कडुवा थू।'

जब कोई आदमी ऐश आराम, सुख, मौज–मस्ती ही केवल चाहता हो और काम करने या खर्च करने के समय अथवा किसी जिम्मेदारी के समय चुपचाप निकलकर अलग हो जाय तो कहावत कही जाती है।

अ०– मीठा–मीठा तो गप्प से खा गये और कडुवा थूक दिया।

'मीठ खाब औ तीत बोल नहीं भूलत।'

अ०– जब इन दोनों बातों का किसी को अनुभव होता है तो कहावत सामने आती है कि किसी का खिलाया गया अच्छा स्वादिष्ट भोजन कभी नहीं भूलता उसी प्रकार से किसी के द्वारा बोला गया कटु वाक्य व्यंग्य, विषाक्त वचन कभी नहीं भूलता। किसी महान विद्वान ने कहा है –तीर का घाव समय भर देता है, किन्तु बात का घाव कभी नहीं भरता'। अतः ये दोनों ही बातें आदमी भूल नहीं पाता है।

'मीठ जौ भरि कठवत।'

जब कोई आदमी अधिक लाभ लेना चाहता है तो कहावत कही जाती है।

अ०– एक तो मीठा स्वादिष्ट भोजन दिया जाय उस पर थोड़ा नहीं कठौती भर कर।

'मुंह कहे खाया–खाया, गटई कहे सवाद न आया।'

जब कोई वस्तु इतनी कम हो और खाने वाले अधिक हों तो निश्चय ही हिस्सा–बांट में वस्तु कम मिलेगी। लोग उसी पर कहावत कह देते हैं।

अ०– मुंह तो कहता है कि वस्तु खाई मगर गले के नीचे वह उतर ही न पायी तो फिर स्वाद क्या आयेगा?

मुड़ मुड़े पानी पैर तरे क ढला।'

कहावत किसी बेशर्म आदमी को इंगित करती है जिसके ऊपर किसी की बात का कोई असर ही नहीं पड़ता।

अ०– जैसे मुड़ मुड़ाये आदमी की दशा होती है कि सिर पर पानी डाला तो वह बह गया। उसी प्रकार से बेशर्म लोगों के लिए बात होती है। पानी की तरह

बात का उन पर कोई असर नहीं पड़ता। 'एक कान से सुना दूसरे कान से बात उड़ गई।'

'मुई खाल की सांस सों सार भसम होइ जाय।'

यह पंक्ति महात्मा कबीरदास की है। पढ़े-लिखे लोग शिक्षा के रूप में लोगों को समझाते हैं।

अ०— जैसे मरे जानवर की खाल की लोहार की धौंकनी से लोहा भस्म हो जाता है उसी प्रकार से जो लोग गरीबों की हाय बटोरते हैं वे सुखी नहीं रहते हैं।

'मुंह काला, समय उजाला।'

अ०— दुष्ट या बदनाम आदमी जो कलंकित होकर समाज में रह रहा है उसका समय बलवान होना। समय ने उसे भाग्यवान बना दिया है।

'मुद्दई सुस्त, गवाह चुस्त।'

श०— सुस्त-धीमा, आलसी। चुस्त तेज। मुद्दई-वादी।

कहावत ऐसे समय कही जाती है जब कार्य से संबंधित व्यक्ति कार्य की जिम्मेदारी में ढीला-ढाला अथवा लापरवाह हो और जो मददगार हो वह तेजी या मुस्तैदी दिखाये।

अ०— जो मुकदमा लड़ रहा हो वह तो पैरवी करने में सुस्त हो और गवाही देने वाला बहुत पहले से ही बैठ गये हो।

'मुर्गी क घर घूर उहीं खाय उहीं हगय।'

श०— घूर— जहां पर गांव, घर का कूड़ा डाला जाता है। जब कोई आदमी एकांत प्रिय हो, जहां का तहां ही रहता हो, न किसी से मिलना न बात करना, न किसी से कोई व्यवहार संबंध बनाना, तो कहावत कही जाती है।

अ०— मुर्गी का क्या है, उसका घर वहीं होता है जहां से वह कूड़े के दाने बिनकर खाती है और उसी घूरे में टट्टी भी करती है।

'मुंहे खाय पेट ललाय।'

अ०— कोई आदमी मुंह से तो खाना खा रहा है मगर इतना भूखा है या लालची है कि पेट ही नहीं भरने को आ रहा है। खाये जाने के बाद भी उसे लगता है कि जितना मिलता जाये और उतना खाता जाऊं।

'मुंह चिकन पेट खाली।'

अ०— ऊपर से तो चिकने चुपड़े शौकीन बने घूमते हैं और अंदर की हालत एकदम खराब है। खाने तक को नहीं है।

'मुंह देख के बीड़ा और चूतर देख के पीढ़ा।'

श०— बीड़ा-पानी की गिलौरी। चूतड़-नितंब।

अ०— जो जिस औकात का हो उसका सम्मान भी वैसा ही करना उचित होता है। अमीर की इज्जत अमीर की तरह और गरीब की इज्जत गरीब की तरह करनी चाहिये।

'मुंह देखी बात सब करत, राम देखी कोउ नहीं करत'।

अ०— मुंह के सामने सभी उसके जैसी बातें कर लेते हैं। मगर सही क्या है? उसे कोई भी नहीं कहता है।

'मुंहे न नूर, पेट नसबूर।'

अ०— किसी अभागे आदमी पर कहावत कही गई है जिसके मुंह पर न रौनक है और न पेट ही भर पाता है।

'मुंह पर कहे मूंछ के बाल, पीछे कहे पूंछ के बाल।'

अ०— जब आदमी मुंह पर मुंहदेखी कहे और पीठ पीछे कुछ और कहे।

'मुंह पर पूत पीछे हरामी भूत।'

यानी मुंह पर कहे कि मेरा बेटा है और पीठ पीछे गाली दे, हरामी व भूत बनाये।

'मुई सवति सतावै, काठेव कै ननद बिरावै।'

श०— मुई-मरी। सवत-सौत, पति की दूसरी स्त्री। सतावै-तंग करना। काठेव-काठ, लकड़ी। नंद- पति की बहिन। बिरावै-मुंह चिढ़ाना।

कहावत लोकाचार या व्यवहार के प्रति कही गई है।

अ०— सौत इतनी बुरी होती है कि मर जाने के बाद भी परेशान करती है। अपने पति पर अधिकार करने वाली दूसरी पत्नी को भी वह सुखी नहीं देखना चाहती। उसे मरने पर भी ईर्ष्या होती है। ननद काठ की भी बुरी होती है। यदि काठ की भी बनी हो तो वह भी मुंह चिढ़ाया करती हैं।

'मुंह निकली, देस पसरी'

श०– पसरी–फैली।

कहावत बात के ऊपर कही गई है कि बातें किस प्रकार एक कान से दूसरे काम तक पहुंचती है।

अ०– बात मुंह से निकलते ही चारों ओर हवा की तरह फैल जाती है।

'मुई बछिया बभने के नाँव।'

अ०– जब बेकार की चीज किसी दूसरे के सिर दान रूप में मढ़ी जाती हैं तो कहावत कही जाती है कि बछिया मरने के करीब है तो जल्दी से दान दे दिया। इतनी निर्बल, बीमार है तो दान का क्या लाभ?

'मुआ घोड़ा कहूं घास खात।'

यह कहावत पितरों को श्राद्ध देने पर व्यंग्य में कही गई है। जो लोग पितृपक्ष में अपने मरे हुये पुरखों को श्राद्ध–तर्पण करते हैं उन्हीं पर कहा गया है।

अ०– मरा हुआ घोड़ा कहीं घास खाता है। यानी कि मरे लोगों को यह श्राद्ध का अन्न नहीं मिलता है।

'मुई माई टूटी सगाई।'

अ०– मां के मरते ही मायका छूट जाता है जैसे कोई रिश्ता ही न रहा हो।

'मुकुत माल बानर लिये, वेद लिये अज्ञान।
परम सुंदरी जोगी लिये, कायर लिये कमान।।'

श०– मुकुत–मोती। अज्ञान–मूर्ख। वेद–पौराणिक धर्म ग्रंथ। कायर–भीरु पुरुष।

विपरीत लोगों के पास किस प्रकार से वस्तुयें पड़ जाती हैं, कहावत उस पर कही गई है।

अ०– मोतियों की मूल्यवान माला बंदर के हाथ में, वेद, शास्त्र अज्ञानी के हाथ, कोई परम सुंदरी योगी के हाथ में तथा धनुष कायर के हाथ में रहने में क्या महत्व है? वह उनके हाथों में रहने पर हास्यास्पद नहीं है तो और है क्या? उपरोक्त वस्तुयें ऐसे पात्रों के हाथों में व्यर्थ की होती हैं।

'मुंह में राम बगल में छूरी।'

ऐसे समय में कहावत का उपयोग होता है जब कोई आदमी ऊपर से तो बहुत भला बना रहे मगर अंदर से गला काट लेने के चक्कर में रहे। यानी छली, धोखेबाज।

अ०– मुंह से तो मीठा वचन बोले मगर पास में छूरी लिये रहे कि कब अवसर पा जाऊं गला काट लूं।

'मुझे और न तुझे ठौर।'

अ०– न मेरे लिये तेरे सिवा कोई और है और न तुझे मेरे अलावा ठिकाना है। यानी दो आदमियों का जब एक दूसरे के बिना ठिकाना न हो या एक के बिना दूसरे का काम न चल पाये तो कहावत कही जाती है।

'मुफ्त का सिरका शहद से भी मीठा।'

अ०– बिना पैसे के पाई गई वस्तु बुरी भी होती है तो भी वह सबसे मीठी व अच्छी होती है।

'मुफ्त में बिना पैसे दिये हुये कोई काम हो जाय तो क्यों पैस खर्च किया जाय?

'मुरगा न बोले तो का सबेर न होये।'

जब कोई यह समझता है कि मेरे बिना काम न हो पायेगा तो कहावत कही जाती है।

अ०– एक मुर्गा न बोलेगा तो सुबह न होगी। यानी कि बोलने वाले और भी बहुत से मुर्गे हैं।

'मुरगी जान से गई खाय वाले क स्वादै नहीं आय।'

अ०– जब कोई आदमी जी जान से किसी की सेवा में तत्पर हो, अपने अथक परिश्रम और तन मन धन से सेवा करे उसके बाद भी किसी को सुख न मिले या संतोष न हो तो कहावत सामने आती है।

'मुर्गी की दौड़ घूरे लै।'

श०– घूरे–जहां पर लोग अपने घर का कूड़ा फेंकते हैं।

मुर्गी अपने दाना–पाखाना के लिये वहीं जायेगी।

अ०– मुर्गी जायेगी कहीं तो घूर तक इसलिये कि लोगों के घर के कूड़े में उसे कुछ अनाज आदि खाने की वस्तुएं मिल जाती हैं और वह उसी में रहना भी

चाहती है। उसी प्रकार से आदमी को भी जहां कोई सहारा मिलेगा बहुधा वह वहीं चल पड़ता है।

'मुये चाम से चाम कटावै, संकरी भुंइ मं सोवै।
घाघ कहे ये तीनिव भकुआ, ओढ़रि गये पर रोवै।।'

शः— मुये—मरे हुये। चाम—चमड़ा। संकरी तंग, कम जगह। भकुआ—बेवकूफ। ओढ़रि—बहका कर लाई गई स्त्री।

अः— जो आदमी छोटी पनही पहनते हैं जिससे उनके पैर कट जाते हैं वे मरे हुये चमड़े से अपना चमड़ा कटवाते हैं तथा जो किसी तंग स्थान पर सोते हैं और जो आदमी अपनी दूसरी लाई गई औरत के चले जाने के बाद पश्चाताप करके रोते हैं, ऐसे तीनों लोग बेवकूफ होते हैं।

'मुंह के मोट माथ क महुआ, इन्हें देखि जिनि मूलो रहुआ।
धरती नहीं हराई जोरै, मेंड़ के ऊपर पागुर भरै।।'

शः— महुआ—जिसका मत्था पीला महुवे के रंग का हो। रहुआ—राही, रहो। हराई—खेत में हल चलाने से बनी नाली। पागुर—जानवर खाते समय जुगाली करते हैं, यानी बराबर मुंह चलाते रहते हैं। मेंड़—दो खेत के बीच की सीमाबंदी जिसे बांधकर खेत को अलग किया जाता है।

यह कहावत भी घाघ की ही है जिससें बैलों की पहचान के प्रति चरितार्थ की गई है।

अः— जो बैल मुंह के मोटे हों, जिसका मत्था महुवे के रंग की तरह पीला हो ऐ राही! ऐसे बैलों को देखकर कभी न लेना। ये हल में न चलके केवल मेंड़ पर खड़े होकर पागुर करते रहते हैं। यानी खेत जोतने के लिये बेकार होते हैं।

'मुंह देखे क बेउहार।'

अः— सामने लिहाज मानना। मुंह के ऊपर खुशामद की बातें करना।

'मुंह मां दांत न पेट मं आंत'

अः— जो बहुत बुड्ढा आदमी होता है उसके कहते हैं कि मुंह में न दांत है पेट में आंत ही है। बूढ़े लोगों की दोनों ही वस्तुयें कमजोर होती हैं।

'मुंह रहत नाक से पानी पियत।'

अः— जब कोई काम सुविधा होते हुये भी उलटे ढंग से किया जाता है तो कहते हैं कि मुंह से पानी न पीकर नाक से पानी पीते हैं।

'मुल्ला न होंगे तो मस्जिद पै अजानै न होये।'

अः— किसी एक के न रहने पर दुनिया का काम ही न होगा?

'मुहरन पै लूट, कोहला पै मोहर छाप।'

जब कोई बड़ी वस्तु को लूटे ले जा रहे है और कोयले की रखवाली की जा रही है।

'मूं'

'मूंड़ मुड़ाये जटा रखाये, नगन फिरै ज्यों भैंसा।
खलड़ी ऊपर राख बिरावै, मन जैसे को तैसा।।'

शः— खलड़ी— चमड़ा, खाल। जटा— सिर पर बड़े—बड़े बाल। नगन—नंगे।

कहावत बने हुये पाखंडी साधुओं के ऊपर कही गई है।

अः— सिर मुंड़ाकर दाढ़ी जटा बढ़ाकर नंग—धड़ंग ऐसे घूमते हैं मानो भैंसा हों। शरीर में राख की परत रमाये हैं मगर मन में तनिक भी बदलाव नहीं है। वह पहले के ही जैसा है।

'मूड़ मुड़ाये तीन गुन, गई माथ की खाज।
बाबा होय तो जग फिरै खाय पेट भर नाज।।'

अः— कहावत संन्यासियों के प्रति कही गई है कि मूंड़ का बाल बनवा देने के तीन गुण हैं। एक तो सिर की खुजली चली जाती है। दूसरे साधु बनने पर सभी स्थान पर आदर मिलता है। तीसरे पेट भर खाने को मिलता है।

'मूरी अपनेन पाते भारी।'

जब कोई अपनी जिम्मेदारी से ही बोझिल हो तो वह दूसरे का काम नहीं कर सकता।

अः— मूली अपने ही पत्ते का बोझ नहीं संभाल पाती है। उसे अपना ही पत्ता बोझिल लगता है।

'मूंड़न गौन अंजोरे पाख, अगहन फागुन औ बैसाख।'

अ०— कहा गया है कि बच्चे का मुंडन और गौना ये दो शुभ कार्य अगहन, फागुन और बैशाख के दूसरे पक्ष में किये जाते हैं।

'मूस मोटाये लोढ़ा होय।'

कहावत उस समय कही जाती है जब कोई बहुत ही दुर्बल शरीर का आदमी मोटे होने पर भी कोई खास मोटा न दिख पाये। छोटा आदमी अपनी ही सीमा तक बड़प्पन पा सकता है।

अ०— मूस की औकात ही कितनी? यदि वह मोटा भी होगा तो लोढ़े के जितना ही हो सकता है। इससे अधिक उसकी बिसात ही नहीं है।

'मूरख ह्रदय न चेत, जो गुरु मिलै बिरंचि सम।'

कहावत मूर्खों के ऊपर उधृत की गई है। बिरंचि–ब्रह्मा।

अ०— जो मूर्ख होता है उसको चाहे ब्रह्मा स्वयं ही क्यों न आकर समझायें वह समझ नहीं सकता है।

'मूल से ज्यादा बिआज पियार होत।'

कहावत रुपये पैसे के कर्ज देने व ब्याज लेने के माध्यम से पोते के ऊपर कही गई है।

अ०— कर्ज में मिले ब्याज का पैसा मूल से भी अधिक प्यारा है कि अपना पैसा तो मिलेगा ही। ब्याज के रूप में जो पैसा आयेगा वही आमदनी होगी। इसी प्रकार से मूल पुत्र हुआ मगर उससे पैदा किया पोता ब्याज है। अतः पुत्र से अधिक प्यारा पोता होता है।

'मूल गयो, रोहिणी गयो, अद्रा बाजी जाय।
हाली बेंचौ बैलिया, खेतौ लाभ नसाय।।'

श०— मूल रोहिणी–दोनों ही नक्षत्रों के नाम हैं। नसाय–नाश हो।

अ०— कहावत खेती विषयक है। किसान की स्त्री कहती है कि मूल व रोहिणी नक्षत्र तो गया अब अद्रा भी जाने वाला है। बरसात अभी तक न हो पाई तो हे किसान! बैलों को बेंच दो, खेती से कोई लाभ नहीं मिलने वाला है।

'मूड़ मुड़उते ओला परा।'

श०— ओला–पत्थर।

कहावत उस समय कही जाती है जब किसी काम को शुरू करते ही कार्य में बाधायें उत्पन्न हो जायें।

अ०— जैसे ही मूड़ बनाया कि पत्थर पड़ने लग गये। यानी जो बचत थी भी वह भी खत्म हो गई तो आफत आ गई।

'मूरख के सींग पूंछ नहीं होत।'

अ०— मूरख आदमी की बनावट में कोई अंतर नहीं होता। वह भी सभी की तरह रहता है केवल बुद्धि में अंतर होता है। किसी मूर्ख को देखकर उसकी बेवकूफी का नमूना पाकर कहावत कही गई है।

'मूड़ काटि लेय, बारे का छोहाय।'

श०— छोहाय–मोहाय, प्रेम करे।

जब कोई आदमी किसी का भारी नुकसान करके छोटे से नुकसान के लिये अफसोस जाहिर करता है तो कहावत चरितार्थ की जाती है।

अ०— सिर तो काट लिया अब बाल में क्या रखा है? मगर बाल के लिये अफसोस करना कि बाल बड़े सुंदर थे। उससे क्या लाभ है?

'मूड़े मढ़े भूत या सनीचर सवार है।'

जब किसी आदमी को क्रोध आ जाय या फिर वह लगातार ऐसी परिस्थितियों में ही पड़ा रहे तो कहावत उद्धृत की जाती है।

अ०— सिर पर भूत या शनि सवार है जो ऐसी क्रिया कर रहे हैं।

'मूड़े का लाग गोड़े के बुतान।'

जब किसी को बेहद क्रोध आता है तो कहते हैं कि इतना क्रोध आया कि सिर से चढ़ा और पैर तक जाकर बुझा यानी क्रोध अपनी सीमा पार कर गया।

'मूरख को समझाइये ज्ञान गांठ को जाय।'

अ०— किसी भी बेवकूफ आदमी को समझाना अपने समय का व ज्ञान का नाश करना है क्योंकि उसकी समझ में नहीं आ सकता है।

'मूरख को समझाना सरस बीज चलि जाय।
ज्यों पत्थर को मारने चोखो तीर नसाय।।'

अ०– किसी मूर्ख को समझाने का मतलब है कि अच्छी बातों की हानि करना। जैसे पत्थर को मारने से तीर चाहे जितना भी तीक्ष्ण हो उसकी नोक नष्ट हो जाती है।

'मूरख, मूढ़, गंवार को सीख न दीजो कोय।
कूकुरवर्गी पूंछड़ी कभी न सीधी होय।।'

अ०– मूर्ख को शिक्षा देने से कोई लाभ नहीं है जैसे कुत्ते की पूंछ कभी सीधी नहीं होती वैसे ही मूढ़ और गँवार समझाने से नहीं सीखते।

'मुरदा के सौ मन माटी तो एक मन और सही।'

जब किसी के ऊपर बोझ लादा जाता है तो अधिक रखने पर कहावत कही जाती है।

अ०– जब इतना लाद दिया तो यह थोड़ा सा क्या भार है? रख दो यह भी चला ही जायेगा। जैसे मुर्दे के ऊपर सौ मन माटी है तो एक मन और सही।

'मूड़ मुड़ाये और छूरा क डेराय।'

जब कोई काम करना ही है तो उसके कष्ट या आराम का ध्यान नहीं रखना चाहिये। वह तो झेलना ही होगा।

अ०– जब सिर मुड़ाना है तो छूरे से कब तक डरेगा आदमी ? कहावत वैसी ही हुई–

'धान की कोख में जन्म लै के मुसरे की धमक क कब तक डेराय।'

'मूंड़ मुड़ाये तीन नफा, गर्दन मोटी सिर सफा,
कंघी, सीसा तेल बचा।'

अ०– सिर मुंड़ाने पर सब फायदा ही फायदा है। न कंघी की जरूरत होती है न शीशा–तेल का काम पड़ता है।

'मूंज की चटाई प रेशम की कढ़ाई।'

श०– मूंज– एक प्रकार की घास होती है जिससे रस्सी आदि बनायी जाती हैं। कढ़ाई–कसीदा काढ़ना, फूल पत्ती बनाना।

अ०–कहावत व्यंग्य में उस समय कही जाती है जब किसी सस्ती कम कीमती सामान पर महंगी वस्तु को साज श्रृंगार के रूप में लगाया जाय। चटाई मूंज की है उस पर रेशम की कढ़ाई करके रेशम की कीमत को कम करना और रेशम का दुरुपयोग करना हुआ।

'मुंह गंधाय, मांग सेंदुर देय।'

आदमी को जीवन में हर बात का ध्यान रखना पड़ता है। औरतें आमतौर पर ऊपरी सफाई ही देखती हैं अंदर का ख्याल नहीं रख पातीं।

अ०– मुंह से तो बदबू आ रही है मगर ऊपर से चिकनी बनकर मांग में सेंदुर लगाकर अपने को बहुत सुंदर दिखाती हैं।

'मूंड़े मुड़ाय भये संन्यासी।'

अ०– स्पष्ट ही है।

'मूछ रहै खड़ी, चाहे छोट रहे चाहे बड़ी।'

आज को क्या कहूं आज तो मूंछ रखने का फैशन ही न रहा। पहले के जमाने में मूंछ को खड़ी रखना बहुत बड़ी शान थी। मुहावरे थे 'मूंछ पर ताव देना– मूंछ ऐंठना, मूंछ नीची होना आदि। दाढ़ी मूंछे मर्द, सींगी पूंछे बर्द' कहावत इसी पर है।

अ०– मूंछ चाहे छोटी हो चाहे बड़ी हमेशा खड़ी रहनी चाहिये नीची न होनी चाहिये। यानी अपने मान सम्मान, इज्जत का बहुत ध्यान रखना चाहिये।

'मूं माठा क नाहीं मांगै जाउर।'

श०– जाउर–खीर।

कहावत व्यंग्य में कही गई है। जिसे अच्छी चीज खाने–पीने को मिलने का सौभाग्य नहीं मिल पाता हो। जिसकी इच्छायें बड़ी हों मगर भाग्य साथ न दे रहा हो।

अ०– मुंह को तो माठा तक पीने को नहीं मिल पाता और मन खीर खाने की इच्छा करता है।

'मे'

मेरी बिल्ली मुझी से म्याऊं।'

कहावत उस समय कही जाती है जब कोई आदमी किसी के आधीन रहे और उसी पर रोब जमाये।

अ०– मेरी बिल्ली जिसे मैंने पाला और मेरे ही ऊपर गुस्सा दिखा रही है।

'मेरे मन कछु और है, कर्ता के कछु–और।'

श०– कर्ता–करने वाले, यानी भगवान।

जब कोई काम मनमाफिक न हो या आदमी जो कुछ चाहता है उसके हिसाब से नहीं होता तो कहावत स्पष्ट की जाती है।

अ०– मैंने कुछ चाहा मगर ईश्वर को कुछ और ही मंजूर था।

'मेरे मियां के दो कपड़े एक पैजामा, एक नाड़ा।'

कोई स्त्री अपने पति का मजाक बनाती है। उसके निकम्मेपन पर व्यंग्य करती है।

अ०– मेरे पति के बस दो ही कपड़े हैं एक पैजामा, एक पैजामा बांधने का नाड़ा।

'मेरे लाल के सौ–सौ यार, धुनिया, जोलाहा, औ मनिहार।'

श०– लाल–पुत्र। धुनिया– जो रुई धुनते हैं। जोलाहा– जो कपड़े बुनते हैं। मनिहार– जो चूड़िया पहनाते हैं।

कोई मां अपने लड़के को व्यंग्य में कह रही है कि मेरे लड़के की संगत कैसे लोगों से है?

अ०– हमारे लड़के के सौ दोस्त हैं। वे है धुनिया, जुलाहा, चूड़ी पहनाने वाले।

'मेहर न लरिका, मुंहे लाग करिखा।'

श०– मेहर– पत्नी, स्त्री। करिखा– कालिख।

कभी–कभी लोग जिनकी शादी–ब्याह नहीं हुआ रहता या मौके पर पत्नी मैके गई हो निकट न रहे तो व्यंग्य में कहावत चरितार्थ की जाती है।

अ०– घर में न स्त्री है न बच्चे तो झेंपते क्यों हो ब्याह कर लो या बच्चों को जल्दी घर ले आओ। यानी किसी को झेंपने के लिये कहावत कही जाती है।

'मेदनी, मेघा, भैंस, किसान, मोर, पपीहा, घोड़ा धान। बाढ़यो मच्छ लता लपटानी दसौ सुखी जब बरसै पानी।।'

कहावत घाघ कवि की है जो पानी बरसने पर कही गई है।

अ०– उपरोक्त दसों जब पानी बरसता है तो प्रसन्न रहते हैं।

'मेंडरी क पिसान अस बटुरि गई।'
तबौ न बुद्धि ठेकाने भई'

श०– मेंडरी–जांता पीसने के समय जो पिसान किनारे से गिरता है वह जांत की मेंड़री कहलाती है। बटुरि–बटोरना, सिमटजाना।

कहावत किसी ऐसी स्त्री पर कही गई है जो एकदम बूढ़ी है जिसका शरीर बुढ़ापे के कारण सिमट गया हो।

अ०–जैसे मेड़री का पिसान इकट्ठा करने पर बटुर कर थोड़ा हो जाता है। उसी प्रकार से शरीर एकदम सिमट गया है फिर भी बुद्धि ठिकाने नहीं आई।

'मेहर मारै थपरा, दुआरे करे झगरा।'

अ०– पत्नी की मार पड़ने पर घर में हिम्मत न पड़ी आकर बाहर झगड़ा करना शुरू कर दिया।

'मेंढकी क जोखाम होइगा।'

जब कोई बहुत साधारण आदमी अपना बहुत ज्यादा महत्व लगाये तो कहावत कही जाती है।

अ०– जो जीव रात दिन पानी में रहता हो उसे जुकाम होने का सवाल नहीं उठता। मगर मेंढकी सोचती है कि मुझे जुकाम होता नहीं और कोई मेरी परवाह नहीं करता।

'मेरे लला की उलटी रीत, सावन मास उठावै भीत।'

श०– लला– पुत्र। रीत–रिवाज, चलन। भीत–दीवार।

अ०– कोई अपने पुत्र पर व्यंग्य कस रही है कि मेरे

बेटे की उलटी चलन है। जब सावन के महीने में जोरों की बरसात होती है तो वह अपना घर बनवाने लग जाता है जिसमें मिट्टी की दीवाल भला क्या हो पायेगी।

'मेहरी क रोक, जान क सोक।'

कहावत पत्नी के हठ के प्रति कही गई है।

अ०— जब किसी पुरुष की पत्नी तिरिया हठ कर लेती है तो बड़ी मुसीबत हो जाती है।

'मेहर के आगे सगुनौ, असगुन।'

अ०— स्त्री इतनी संदेह के वशीभूत होती है कि अच्छी बात में भी बुराई का शक करती है। शकुन की बात भी होगी तो उसमें भी उसे संदेह बना रहता है।

'मे'

मेरी एक बोली, दो बोली, नकटी सटासटा बोली।'

कहावत आपस में औरतों की लड़ाई के प्रति कही गई है।

अ०— कोई स्त्री कह रही है कि मैं तो एक, दो बोली—बोली मगर वह नककटी, बदनाम औरत तो बराबर बोलती ही चली गई।

'मेहर गे, मुहब्बत गे, गई नान औ पान।
हुक्का से मुंह झुलुस कै बिदा कीन मेहमान।।'

बहुत कंजूसी से किसी मेहमान का सत्कार करना।

अ०— औरत घर में नहीं है इसलिये नान—एक प्रकार की रोटी है, वह गई। पान भी घर में नहीं है। तो फिर हुक्का पिलाकर मेहमान की मेहमानदारी करके उसे रवाना किया। जान बची लाखों पाये। मेहमान से छुट्टी मिली।

'मेहरी कै रोक, जिव कै सोक।'

तिरिया हठ मशहूर है। कभी—क़भी औरत गलत जिद्द कर बैठती है तो वह पुरुष की जान को संकट में डाल देती है।

'हम समझे ये इस वाईफ से हक दिकश वाइफ आयेगी।
मैं बाज आया इस शादी से इसने तो नीलाम किया।।'

अ०— जहां पर पत्नी की रोक लग जाती है, वहां पर अजीब उलझन दिमाग में आ जाती है।

'मेला मं झमेला होत।'

अ०— स्पष्ट है।

'मेहनत करे जो दंड उठाय, कहै घाघ यह ब्योरा गाय।
कभी बीमार पड़े ना भाय, वहिके बाद दे दूध जमाय।।'

कहावत परिश्रम करने पर कही गई है। यानी इंसान मेहनत करे तो क्या काम है मुश्किल?

अ०— मेहनत करना स्वास्थ्य के लिये अमृत के समान है। घाघ कवि का कथन है कि जो आदमी हाथ उठाकर भरसक मेहनत करता है और उसके बाद दूध पीता है वह कभी बीमार नहीं पड़ सकता है। किसी महान अनुभवी ने लिखा है—

'पुरुषार्थ नहीं जिस पुरुष में, वह वृथाकार है।
पुरुषार्थ बिन उस पुरुष के जीवन पै शत धिक्कार है।'

'मेंड़ बांधि हल जोतै देय, दस मन बिगहा मोसे लेय।'

अ०— यदि खेत में मेड़बंदी करके खेत को जोतने दिया जाय तो किसान कहता है कि एक बीघे में दस मन अनाज दे सकता हूं।

'मैं'

'मैदे गोहूं, ढेले चना।'

अ०— गेहूं का खेत जब तक मिट्टी एकदम भुरभुरी न हो जाय तब तक नहीं बोना चाहिए। वैसे ही चने का खेत ढेलेदार होता है तो बहुत अच्छा होता है।

'मैं रहौ बखरी की आसा, बखरी क लड़िकै नित उपवासा।'

श०— बखरी—पुराने जमाने में जमींदार, रईसों के लंबे—चौड़े, भारी मकानों को गांव में लोग बखरी कहते थे। नित—हमेशा। उपवासा—भूसे।

कहावत उस समय कही जाती है जब किसी छोटे आदमी को बड़े घर से पेट भरने को भी भोजन न प्राप्त हो पाये।

यानी बड़े नाम व बड़े आदमी बड़ी बखरी की आशा करने पर भी निराश होना।

'मैं तो करूं भलाई, तू मेरी आंख में करे सलाई।'

जब कोई किसी की भलमनसाहत का बदला बुराई से करता है तो कहावत कही जाती है।

अ०– मैं तो हर समय तेरा भला करूं और तू है कि मेरे साथ बुरा से बुरा व्यवहार करके मेरी आंख ही फोड़ देना चाहता है।

'मैं ही पाल कीन मुस्तंडा, मोही को तू मारे डंडा।'

अ०– मैंने ही तो तुझे पाल–पोस कर बड़ा किया, जवान कर दिया और मुझी को डंडा मारता है? यानी भलाई का बदला बुराई से चुकाना चाहता है।

'मैला कपड़ा पातर देह, कुत्ता काटै कौन संदेह।'

कहावत गंदा रहने वाले के ऊपर कही गई है।

अ०– कोई भी दुबला–पतला आदमी मैला कुचैला कपड़ा पहने हुये रास्ते में चला जा रहा है, तो उसे कोई भी तंग कर सकता है।

'मैके में पसु रही चरावत नारि धरम कछु एक न आवत।'

यह कहावत मूर्ख नारी पर कही गई है जिसको पैसे भर की भी अक्ल नहीं है।

अ०– कहा गया है कि अपने नैहर में यह खाली जानवरों को चराती रही है इसी कारण इसे स्त्रियों के क्या कर्तव्य होते हैं, एक भी नहीं आता है। अतः किसी भी नारी जाति को ससुराल या मैके वालों के प्रति क्या करना चाहिए उसकी शिक्षा बहुत आवश्यक है।

'मो'

'मोका न तोका, लै भारे मां झोका।'

श०– झोंका– डाल देना।

कहावत उस समय कही जायेगी जब कोई वस्तु आपस के दो व्यक्तियों के अलावा किसी अन्य के अधिकार में हो।

अ०– न मेरे काम आ रहा है न तुम्हारे तो तीसरे ही को क्यों मिले? लेकर इसे नष्ट कर दो।

'मोजा क घाव हम जानी या हमार पांव।'

कहावत भुक्तभोगी के प्रति कही गई है।

अ०– जो कोई आदमी किसी बात का कष्ट झेलता है वह तकलीफ वही बता सकता है। यानी मोजे से कहां कट रहा है? इसका कष्ट या तो हमारे मन को मालूम है या इन पैरों को जो पहने हुये हैं।

'मोर पिया चिकनियां, पचास बीड़ा खायं।
आगे–पीछे रिनिया, दीवाने बन जायं।।'

श०– चिकनियां–छैल रसिक। बीड़ा–पान। रिनिया– कर्ज मांगने वाले। दीवाने–मस्ती में।

कहावत ऐसे व्यक्ति पर कही गई है जो कर्ज लेने के बाद दिन भर मस्ती से जीवन बिता रहा हो। पान के पचासों बीड़े कूचता हो, मस्त घूमता हो।

अ०– कोई स्त्री कहती है कि मेरे प्रियतम ऐसी मस्ती में रहते हैं कि पचासों बीड़े पान चबा डालते हैं। कर्ज देने की चिन्ता तनिक भी नहीं है । फजूल खर्च करके खुद दीवाने बने रहते हैं।

'मोरी कै ईंट चौबारे चढ़ी।'

श०– मोरी–नाली की मोहरी। चौबारे–चौपाल, बरामदा।

कहावत उस समय कही जाती है जब कोई छोटा आदमी ऊंचे पद पर जा बैठता है या छोटे कुल की लड़की किसी बड़े खानदान में आ जाती है।

अ०– नाली में लगी ईंट जाकर बरामदे के ऊपर जा लगी। नीच जगह से ऊंची जगह पहुंच गई।

'मोरे बाप के भवा कपास, मोरे लेखे परा तुसार।'

श०– बाप–पिता। कपास– जिससे रूई निकलती है। लेखे–लिये। तुसार–पाला जिसके पड़ने से फसलें बर्बाद हो जाती हैं।

कहावत अपने मैके वालों के प्रति निराश किसी लड़की की दुर्भावनायें प्रकट करती हैं।

अ०– मेरे पिता के घर कपास खूब पैदा हुआ है मगर हमारे लिये उसकी कोई प्रसन्नता नहीं है। ऐसा लगता है जैसे पाला पड़ गया, कुछ हुआ ही नहीं। लड़कियां मैके में मां–बाप से बड़ी उम्मीद लगाती हैं। आशा पूरी न होने पर मन में एक खीझ की भावना उत्पन्न हो जाती है।

'मोर पिया मोसे बात न पूछे, मोर सोहागिन नांव'

अ०– अपने पति से निराश पत्नी की कहावत है कि मेरे पति मुझसे बोलते तक नहीं और लोग मुझे सोहागिन कहते हैं।

'मोर पेट हाहूं, मैं ना देइहौ काहूं।'

अ०– कोई अति खाने वाले के प्रति कहावत कही गई है कि मेरा पेट इतना बड़ा है कि मैं दूसरे को कुछ भी खाने को नहीं दे सकता।

'मोर जियरा ना पतियाय, सवत क गोड़वा हालत जाय।'

श०– जियरा–मन। पतियाय–विश्वास माना। सवत–पति की दूसरी पत्नी। हालत–हिलता।

कहावत सौतियाडाह यानी सौत के भय या जलन को लेकर कही गई है कि सौत कितनी बुरी होती है।

अ०– पति की दूसरी आई हुई पत्नी को अपनी सौत का भय है। वह कहती है कि मेरा मन विश्वास नहीं करता है कि सौत का पैर हिलता हुआ मेरी ही तरफ चला आ रहा है।

यानी जिंदा की कौन कहे, मरी सौत का इतना भय खाये जाता है।

'मोर पंख बादर उठे रांड़ जौ काजर देय।
वह बरसै, वह घर करै, या में मीन न मेष।।'

श०– मोरपंख– मोर पक्षी के पंखे की भांति। मीन न मेष–कोई टीका टिप्पणी का न होना, निःसंदेह।

कहावत बादल व विधवा नारी के प्रति कही गई है।

अ०– यह लाक्षणिक है कि यदि आकाश में मोरपंखी बादल उठें तो वे बिना बरसे नहीं रहते। उसी प्रकार से यदि विधवा स्त्री आंख में सुरमा या काजल लगाये तो समझो कि वह बिना दूसरा पुरुष किये या पराये पुरुष से प्रेम किये बिना नहीं रह सकती है।

'मौके का घूंसा तलवार से बढ़कर।'

अ०– समय के अनुसार किये गये काम का बड़ा महत्व होता है। कहा है कि 'असमय की शहनाई नहीं बजाई जाती।' समय की मार बड़ी तीखी व असरदार होती है। समय पर मारा गया एक घूंसा तलवार की धार से कम असरदार नहीं होता है।

'मौत व गाहक का पता नहीं कब आ जाय?'

अ०– मौत और सौदा लेने वाला कब आ टपके कुछ पता नहीं लग पाता है।

'मौला यार तो बेड़ा पार।'

श०– मौला– भगवान। यार–दोस्त। बेड़ा–नाव।

कहावत ईश्वरवादी की है।

अ०– यदि मौला की दया बनी रही तो बेड़ा पार हो जायेगा। जिंदगी अच्छी तरह से गुजर जायेगी।

'मौन अमावस्या मूल बिन, रोहिनि बिन अखतीज।
सावन, सरवन ना मिलै, बृथा बिखेरी बीज।।'

श०– मौन अमावस्या–माघ मास की नहावन वाली मौनी अमावस्या। मूल–नक्षत्र का नाम है। रोहिनि–एक नक्षत्र है। अखतीज–अक्षय तृतीया।

कहावत खेतों में अनाज बोने के प्रति चरितार्थ की गई है।

अ०– यदि मौनी अमावस्या को मूल नक्षत्र न पड़ा और बिना रोहिणी के अक्षय तृतीया पड़े तथा सावन की पूर्णमाशी शुद्ध न पड़ी तो सावन में पानी नहीं बरसता है। खेतों में बीज का डालना बेकार है।

'म'

'मंगिबौ भलो न बाप सो जो विधि राखै टेक।'

श०– विधि–ब्रह्मा। टेक–जिद्द, ऐंठ।

कहावत मांगने के ऊपर कही गई है।

अ०– मांगना किसी से भी अच्छा नहीं होता है। चाहे वह अपना पिता ही क्यों न हो।

'मंगरवारी होय देवारी, हंसय किसान रोवै बैपारी।'

श०– देवारी–दिवाली। बेपारी–व्यापारी।

अ०– यदि मंगलवार के दिन दिवाली का पर्व पड़ता है तो किसानों को सुख और व्यापारियों को हानि उठानी पड़ती है।

'मंगर बुध, उत्तरदिसि कालू, सोम सनीचर पुरुब न चालू।
बीफय का जो दक्खिन जाय, बिना गुनाहे पनही खाय।।'

श०– कालू–काल, कारण, अनिष्ट। गुनाहे–गलती। पनही–जूता।

कहावत यात्रा के दिन के आरंभ पर कही गई है।

अ०– सोमवार व शनिवार को पूर्व दिशा की यात्रा

नहीं करनी चाहिए। दिशाशूल माना गया है। मंगल, बुध को उत्तर दिशा को नहीं जाना चाहिए और बृहस्पति को जो दक्षिण दिशा को आता है वह बिना गलती के भी मार खाकर आता है।

'मंगरवारी मावसी, फागुन चैती जोय।

पसु बेंचो कन संग्रहो, अवसि दुकाली होय।।'

श०— मावसी—अमावस्या। कन—कण, अनाज। संग्रहो—इकट्ठा करना। दुकाली—अकाल, सूखा।

अ०— यदि मंगलवार फागुन व चैत की अमावस्या को पड़े तो चाहिये कि किसान जानवरों को बेंचकर अनाज खरीद ले, क्योंकि सूखा पड़ने के लक्षण हैं।

'मंगर, सोम होय सिवराती पछिवा बाउ बहै दिन राती।

घोड़ा, रोड़ा, टिड्डी उड़ै, राजा मरै, धरती परै।।'

श०— सोम—सोमवार का दिन। सिवराती—शिवरात्रि का त्यौहार। पछिया—पश्चिम से चलने वाली हवा। रोड़ा—रेत, बालू। टिड्डी— एक ऐसा कीड़ा है जिससे फसलों को हानि पहुंचती है।

अ०— कहावत लाक्षणिक है। यदि मंगलवार, सोमवार को यदि शिवरात्रि का पर्व पड़ता है तो देश में रेत—बालू उड़ेगी, अकाल पड़ेगा या राजा की मौत होगी।

'मंगर चलै तो भू चलै बुध को पड़ै अकाल।

फागुवा होय सनीचरा, निहचै पड़े अकाल।।'

कहावत लाक्षणिक है कि किस दिन क्या पड़ने पर क्या होता है?

अ०— कहते हैं कि फगुआ यदि मंगल को पड़े तो भूचाल आता है, बुध को पड़े तो समय खराब बीतता है और यदि शनिवार को पड़े तो सूखा पड़ता है।

'मंगन का खंगन काव'।

अ०— मांगने वाले को किसी वस्तु की क्या कमी हो सकती है?

'मंगल रथ आगे चलै, पीछे चलै सो सूर।

मंद बृष्टि तब जानिये, पड़ती सगले धूर।।'

अ०— यदि मंगल ग्रह आगे और सूर्य पीछे चले तो समझो कि निश्चित ही अकाल पड़ेगा।

'मंगनी मां चंगनी, बिलरिया मांगे आधी।'

किसी के द्वारा मांगकर पाई गई वस्तु को भी जब कोई और मांगने आता है तो कहावत कही जाती है।

अ०— मंगनी की वस्तु एक तो वैसे माँगे—जांचे मिली उसमें कहीं कोई दूसरा मांगने लग जाय तो बहुत कष्ट होता है। यहां माँगी वस्तु में से बिलरिया के आधा बंटा लेने का मतलब यही हुआ।

'मां'

'मांग न आवै भीख तो सुरती खाय सीख।'

कहावत सुरती, खइनी खाने पर कही गई है जिसमें बिना दूसरे से मांगे रहा ही नहीं जाता।

अ०— यदि भीख मांगना न आता है तो सुरती खाने लगो तो खुद ही आ जायेगा। सुरती खानेवालों पर व्यंग्य में कहावत कही गई है।

'मां पर पूत पिता पर घोड़ा, और नहीं तो थोड़ा—थोड़ा।'

अ०— पुत्र माता पर तथा घोड़े की नस्ल बाप पर जाती है अधिक न सही तो थोड़ा ही थोड़ा सही। जब किसी बच्चे को उसकी मां—बाप की शक्ल के अनुसार देखा जाता है तो कहावत कही जाती है।

'मांगे बनिया गुर ना देय, मारे घूंसा भेली देय।'

श०— कहावत का अर्थ है कि बनिया की जाति इतनी कंजूस होती है कि उससे मांग कर चाहे कि कुछ पा ले तो असंभव है और हड़का कर या मारकर चाहे कि ले ले तो वह दुगना सामान दे देगा।

'मांगे क भीख, पूंछे गांव क पता।'

जब कोई आदमी अपनी सीमा से बढ़कर बात को जानना चाहता है तो उस पर क्रोध आता है।

अ०— मांगने तो चले हैं भीख और बातें कर रहे है किसकी कितनी औकात है, किसके पास क्या जायदाद है? हिसाब—किताब जानने के चक्कर में रहना।

'मांग के खाय, बहिन के दुआरे न जाय।'

अ०– कहावत सिद्धांतवादी है कि भीख मांगकर खाना भला है मगर बहिन या रिश्तेदारी में खाना, रहना अच्छा नहीं होता।

'मां मरिगै, बहिन मरिगै, दवा फेटेन मां धरी रहिगै।'

श०– फेटा–मर्द लोग जो धोती बांधते हैं उस पहनी गई धोती का लांकने वाला हिस्सा फेटा कहलाता है।

कहावत ऐसे महान मूर्ख के प्रति उद्‌धृत की गई है जो पास में रहते हुये सामान का समय पर सदुपयोग न करके अपना ही नुकसान कर ले।

अ०– दवा अपने पास धोती के फेटा में रखी रह गई मगर मां मर गई, बहिन मर गई किसी को दिया नहीं।

'मांगी मुंह मउतौ नहीं मिलतै।'

अ०– और तो और मांगी जाय तो मौत भी नहीं मिलती है, फिर वस्तु की क्या बात है।

'मांगन से मरना भला यह सतगुर की सीख'

कहावत मांगने के ऊपर कही गई है जो महात्मा कबीरदास की है।

अ०– मांगना मरने के बराबर होता है। कभी किसी से कोई वस्तु मांगनी नहीं चाहिए। कवि खानखाना रहीम के शब्दों में–

'बिन मांगा सो दूध सम, मांगा मिलै सो पानि।
सुनु रहीम वह रक्त सम जामें ऐंचातानि।।'

किसी उर्दू शायर ने लिखा है–

'जो कुछ मांगना हो खुदा से मांग ए अकबर।
यही वो दर है कि जिल्लत नहीं सवाल के बाद।।

हमारे संस्कृत में कहा गया है–

'भिक्षुका नैव भिक्षन्ते, बोधयन्ति गृहे–गृहे।
दीयन्तं–दीयन्तं नित्य मदातुः फलमिदन्मम्।।

अ०– भिक्षुक मांगते नहीं हैं अपितु द्वार–द्वार पर जाकर लोगों को चेतावनी देते हैं कि नित्यप्रति दान करते रहो, क्योंकि दान–शून्य मनुष्य की अवस्था हमारे जैसी होती है।

'मूंड़ मुड़ाये हरि मिलै, सबकेव लेय मुड़ाय।

यह पंक्ति महात्मा कबीरदास की है जिन्होंने पाखंडियों के कृत्य के प्रति व्यंग्य में कही है।

अ०– यदि मूंड़ का बाल बनवाने से भगवान मिलते हों तो सभी को बनवा लेना चाहिए।

'मृ'

'मृगशिरा में जो बोये चेना, जमींदार को कछु नहिं देना।'

श०– मृगशिरा– एक नक्षत्र का नाम है। चेना–चना। जमींदार–पहले के जमाने में जिसके पास बहुत ज्यादा जमीन होती थी और वह उसका मालिक होता था

अ०– यदि मृगशिरा नक्षत्र में चना बोया जाय तो जमींदार को देन पोत देने भर को भी चना न मिल पायेगा।

'मृगशिरा वायु ना बाजिया, रोहिणी तपै न जेठ।
गोरी बीणै कांकरा, खरी खेखड़ी खेत।।'

श०– बाजिया– बहना। रोहिनि–एक नक्षत्र है। तपै–गर्मना, तपना। बीणे–बिनना। बीणै राजस्थानी शब्द है। कांकरा–कंकड़। कांकरा भी राजस्थानी शब्द है। खरी–खड़ी, खरी ब्रजभाषा का शब्द है।

कहावत नक्षत्रों के अनुसार पानी न बरसने पर कही गई है।

अ०– यदि मृगशिरा में हवा न चले और रोहिणी नक्षत्र खूब न तपे तो समझो कि पानी न बरसने के कारण फसलों को बेहद नुकसान होगा। किसानिन खेत में खड़ी होकर बजाय अनाज के कंकड़ बिनेगी।

'य'

'यह घोड़ा किसका? जिसका मैं नौकर।
तू नौकर किसका? जिसका यह घोड़ा।।'

यह कहावत किसी बात का साफ व सही उत्तर न देने पर कही गई है।

अ०– किसी से किसी ने पूछा कि यह घोड़ा किसका है? उसने उत्तर दिया जिस आदमी का मैं नौकर हूं। उसने पूछा किसके नौकर हो? उसने कहा– जिसका यह घोड़ा है।

'यह तू शिक्षा साथ की, निहचै चित में ला।

भेद न अपने जीव का, औरन को बतला।।'

अ०– कहावत शिक्षाप्रद है कि यह विचार मन में बना लो कि अपने मन का भेद किसी से मत कहो क्योंकि वह बात 'मुंह निकरी देस पसरी' हो जाती है।

'यह मुंह औ मसूर की दाल।'

जब किसी आदमी को कोई वस्तु दी जाय जिसकी कदर करना वह न जानता हो तो उसे नीचा दिखाने के लिये कहा जाता है कि यह मुंह और यह खान–पान?

'यह भी शिक्षा निपट आछी,

रोटी भूल के खा मत कांची।'

अ०– रोटी कभी भूलकर भी कच्ची न खाओ। वह स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है।

'यह मेरी शिक्षा समझ ले चेला, कभी बाट मत चलो अकेला।'

श०– चेला–शिष्य। बाट–रास्ता।

अ०– यह बात मेरी समझ लो कि रास्ता कभी अकेले मत चलो। किसी ने कहा है–

'राह चलत की दुइ जन होई।'

'यह वह गुड़ नहीं जो चिटें खायं।'

जब कोई वस्तु किसी से आसानी से नहीं निकलती है तो कहावत कही जाती है।

अ०– यह वह आदमी नहीं है कि इनसे कुछ पाया जा सकता है। इस गुड़ को चींटे लगकर नहीं खा सकते हैं।

'यह शिक्षा तू मान सहेली, पर नर संग मत बैठ अकेली।'

अ०– पराये पुरुष के साथ अकेली स्त्री को कभी नहीं बैठना चाहिये।

'यदि अगहन मां बोवै जौवा, होय तो होय नहिं खावै कौवा।'

कहावत खेती विषयक कही गई है कि जौ किस समय बोना चाहिये।

अ०– यदि अगहन में जौ बोया जाय तो कुछ हो जायेगा नहीं तो उसे कौवा ही खाते हैं। यानी कुछ हो नहीं पाता।

'यथा राजा, तथा प्रजा।'

श०– यथा–जैसा। तथा–वैसा।

कहावत संस्कृत की होते हुये भी गांवों में कही जाती है।

अ०– जैसा राजा होगा उसी के अनुसार प्रजा भी होगी। जैसा घर का मालिक होगा वैसे ही घर के लोग भी होंगे।

'या'

'या करे दर्दमंद, या करे गर्जमंद।'

अ०– किसी गर्जमंद या पीड़ाग्रस्त आदमी पर कहावत कही गई है कि खुशामद या तो गर्जवाला या फिर दुःख से पीड़ित आदमी ही कर सकता है।

'या केउ क कै के रहै, या केउ क होय के रहै।'

अ०– कहावत साधारण रूप में उद्‌धृत की जाती है कि दुनिया में दो तरह के लोग होते हैं, वे या तो किसी के ऊपर एहसान करके रहते हैं या फिर किसी का एहसान मान कर रहते हैं।

'या भैंसा भैंसों में या कसाई के खूंटे पर।'

जब किसी आदमी का गलत स्थानों पर उठना बैठना हो जाता है तो कहावत कही जाती है।

अ०– या तो भैंसा भैंसों के पास होगा या फिर वह कसाई के यहां बंधा होगा।

'या मारे साझे का काम

या मारे भादौ का घाम।'

जब कोई दो आदमी सम्मिलित रूप में किसी काम को करते हैं तो कहावत विशेष रूप से कही जाती है।

अ०– दो आदमियों के सम्मिलित काम में बड़ी परेशानी उठानी पड़ती है। वे एक दूसरे के काम से संतुष्ट नहीं होते। कोई समझता है कि मै बहुत करता हूं दूसरा कहता है कि मैं बहुत कर रहा हूं। अतः साथ का काम या भादों माह का घाम कष्टदायक होता है। लोग धूप में काम नहीं कर पाते।

'यार का गुस्सा भतार के ऊपर।'

श०— यार—दोस्त, यहां पर यार से मतलब आशिक, प्रेमी से है।

अ०— प्रेमी का क्रोध अपने पति के ऊपर जब कोई स्त्री उतारती है तो कहावत कही जाती है।

'यार को करूं प्यार खसम को करूं भसम।'

श०— खसम—पति। भसम—भस्म करना, जला देना, राख कर देना।

अ०— कहावत किसी दुश्चरित्र स्त्री के प्रति कही गई है कि प्रेमी से प्रेम करके पति को भस्म कर डालूं।

'यार वही पक्का, जिसने मन यार का रक्खा।'

सच्चा मित्र वही होता है जो मित्र का साथ दे।

'यारी करे सो बावरा, करके छोड़े क्रूर।,
या तो और निबाहिये, या फिर रहिये दूर।।'

श०—यारी—दोस्ती, प्रेम। बावरा—पगला। क्रूर—कठोर। निबाहिये—निर्वाह करना, पार लगाना।

कहावत प्रेम करने पर कही गई है।

अ०— प्रेम करने वाला पगला है और उसको करके छोड़ देने वाला कठोर व निर्दयी होता है। प्रेम करके निबाहना चाहिये या फिर दूर रहना चाहिये।

'यो'

'योगी था सो उठ गया, आसन रही भभूत।'

जब कोई महान व्यक्ति दुनिया से मरकर चला जाता है या वह कहीं और दूर चला जाता है तो लोग उसकी निशानी को देखकर उसकी महानता को याद करते हैं।

अ०— योगी तो चला गया अब उसके स्थान पर बची है उसकी राख।

'र'

रहेन खांड़ अस, बहि गयेन मांड़ अस।'

श०— खांड़— गन्ने के रस को गाढ़ा कर खांड़ बनाया जाता है। मांड़—चावल बनाते समय पानी की मात्रा जो अधिक होती है उसे निकाल दिया जाता है।

कहावत किसी के बिगड़ने व खराब होने पर ही कही जाती है।

अ०— किसी की खराब आदतों के प्रति कहा जाता है। पहले तो खांड़ की तरह अच्छे, नरम, मीठे स्वभाव के बहुत भले आदमी थे मगर अब तो जैसे चावल का मांड़ फेंक दिया जाता है, वैसे ही हो गये। स्वभाव खराब हो जाना।

'रन्दा गये वसूला आये।'

श०— रंदा—जिस औजार से बढ़ई लकड़ी रेतते हैं। वसूला— जिस औजार से बढ़ई लकड़ी छीलते हैं। सीधी करते हैं, लकड़ी काटकर सुडौल बनाते हैं।

जब कोई बुरा आदमी जाता है और उसकी जगह उससे भी कहीं ज्यादा बुरा आ जाता है तो कहावत कही जाती है।

अ०— रंदा तो गये, उनकी जगह वसूला आ गये हैं जो सीधे—सीधे छिलाई ही कर देते हैं। यानी घाघ की जगह महा घाघ का आ जाना।

'रहै बड़ेन संग खाय मुंह भरि पान।
रहै छोटन संग कटावै दुइनो कान।।'

श०— बड़ेन— बड़े आदमियों के साथ। छोटन संग— नीच लोगों के साथ।

कहावत संगति के गुणों के प्रति कही गई है कि कैसा साथ करने पर क्या असर पड़ता है?

अ०— बड़ों व सज्जनों के साथ रहने पर आदमी मुंह भर पान खाने का पात्र बन जाता है और नीचों के साथ रहने पर अपनी बदनामी कराने के सिवा और भी कुछ नहीं पाता। कहा भी है—

'संगत ही गुन होत है, संगत ही गुन जाय।
बांस फांस औ मीसरी एके भाव बिकाय।।'

यानी मिश्री जिस बांस की डंडी में जमाई जाती है वह भी जब मिश्री बिकने लगती है तो उसी के साथ उसी दाम में बिक जाती है। तो साथ का गुण व असर बहुत होता है।

'रत्ती भै दान न दिही धिया क, देख समधिन के हिया क।'

श०— धिया— पुत्री। दान—दहेज। समधिन—लड़की की मां। हिया— मन।

अ०– अपनी ही बेटी को तनिक भी समधिन ने नहीं दिया। जरा मां के कठोर मन तो देखो।

'रत्ती भर की तीन चपाती, खाने बैठे सात संगाती।'

जब किसी के यहां खिलाने में बेहद कंजूसी करते हैं तो कहावत चरितार्थ की जाती है।

अ०– एक–एक रत्ती के सात रोटी बनी जिसे संगी–साथी को लेकर खाने बैठे।

'रपट पड़े तो हर गंगा।'

अ०– नहाने का मन तो न था मगर जब फिसल कर गिर ही पड़े तो फिर नहाने लग गये। मुंह से हर–हर गंगा की आवाज करने लगे मानों नहाने ही आये थे। इच्छा के विरुद्ध कार्य का अचानक हो जाना।

'रबि को पान सोम को दर्पन, धनिया घोंटे भूमि के नंदन
बुध को गुड़, गुरु को राई, सूक दही, सनि को घृत भाई।
रवि को पान सोम को दर्पन, बुध को धनिया, बीफै सौंफ।
सूक दही सनीचर घिव पाई, काल होय तो मार गिराई।।'

अ०– स्पष्ट है।

'रवि कै कर धनवंतरि होय सोम कहे सवा फल होय।
बुध बीफय सुक भरे भंडार शनि मंगल अति जाय न द्वार।।'

कहावत खेतों की बोआई के प्रति कही गई है।

अ०– इतवार, सोमवार, बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार को बोआई करे तो घर भर जाता है। मंगल व शनि को बोने पर अनाज घर में कम आता है।

'रबि उगन्ता भादवां, अमावस रविवार।
धनुष उगंते पश्चिम होसी हाहाकार।।'

श०– उगन्ता–उदय होना। रबि–सूर्य। भादवां–भादों माह में। अमावस–अमावस्या की तिथि। धनुष–इंद्र धनुष जो वर्षाकाल में आकाश में सात रंगों का दिखाई देता है।

कहावत अकाल पड़ने के लक्षण पर कही गई है।

अ०–यदि भादों माह में सूर्योदय होते ही अमावस्या लग जाय और दिन रविवार का हो, उसी की शाम को पश्चिम के आकाश में इंद्रधनुष दिखाई पड़े तो निश्चय ही सूखा पड़ता है।

'ररा के घर आये ररा, खीस निपोरे दुइनों परा।'

श०– ररा–गरीब, बेहया। खीस–हँसी। निपोरे–निकारे। परा–पड़े रहना।

कहावत दो बेशर्मों के ऊपर कही गई है। अब ऐसी ही स्थिति किसी समय आ जाती है तो कहावत चरितार्थ की जाती है।

अ०– किसी बेहया के यहां उसी के जैसा कोई दूसरा बेशर्म पहुंच गया तो देखा गया कि दोनों ही बेशर्म लेटे हुये हँस रहे हैं। स्वागत–सत्कार से कोई मतलब नहीं है।

'रसरी आवत जात ते सिल पर होत निसान।'

श०– रसरी–रस्सी, जिससे कुयें में पानी भरा जाता है। निसान–निशान, चिन्ह।

यह कहावत किसी को शिक्षा देने में कही जाती है।

अ०– रस्सी से लगातार पानी भरते रहने के फलस्वरूप कुयें का पत्थर भी घिस जाता है। उस पर भी रस्सी के निशान पड़ जाते हैं।

'रसरी जरि गै ऐंठन न गै।'

कहावत एक ऐसे घमंडी, ऐंड़बाज, जिद्दी, ऐंठोल आदमी के प्रति कही गई है जिसकी सब गति हो गई, हर दुर्दशा को पहुंच गया मगर उसकी वह ऐंठ फिर भी बनी ही रही।

अ०– रस्सी तो जल गई मगर उसकी ऐंठ वहीं की वहीं रही। वही अकड़, वही बातचीत बोली–बानी अब भी है।

'रहना भला विदेश का जहां न अपना कोय।'

कभी–कभी जब आदमी अपनों से इतना ऊब जाता है तो अपनों से दूर रहने में ही उसे सुख मिलता है। फिर वह अपनों के प्रति घृणा करने लगता है।

अ०– परदेश में दूर रहना ही अच्छा है जहां पर कोई भी अपना न हो।

'रह–रह मेघवा होय दे बिहान, तोहि पर सजबै तीर कमान।'

श०– मेघवा–मेघा, मेढक। बिहान–सबेरा। सधबे–साधना, निशाना लगाना।

कहावत बंदरघुड़की पर कही गई हैं। कभी–कभी लोग झूठी डींग मारते हैं, झूठी घुड़कियां दिखाते हैं तो कहावत उन्हीं पर उद्धृत की गई है।

अ०– रुका रहु मेढक, होय दे सबेरा, फिर तेरे ऊपर तीर का निशाना लगाऊंगा।

'रहा करिमवा तबौ घर गया, गया करिमवा तबौ घर गया।'

कहावत किसी उत्तरदायित्वहीन आदमी के प्रति कही गयी है।

अ०– जब करीम घर पर था तब भी घर की हालत वैसी ही थी और जब घर से बाहर चला गया तब भी घर की हालत वैसी ही है।

'रही बात थोड़ी, जीन, लगाम, घोड़ी।'

जब कोई आदमी एक छोटी सी वस्तु पाने पर उससे सम्बंधित बड़ी–बड़ी वस्तुओं का सपना देखने लग जाता है तो कहावत स्पष्ट की जाती है। इसे शेखचिल्ली का सपना या कल्पना ही कहा जा सकता है।

अ०– किसी आदमी को रास्ते में जाते हुए एक चाबुक पड़ी हुई मिली तो फिर क्या है उसने सोचा कि चाबुक तो पास में है ही बस अब एक जीन, लगाम व घोड़ी और मिल जाय तो अपना काम बन जाये।

'रहे महमूद के अंडा देय मसूद के।'

अ०– जब कोई आदमी नमकहरामी करता है तो कहावत कही जाती है कि रहे व खाय महमूद के यहां और अंडे मसूद को दे आये। कमाई दूसरे को देना।

'रहिला क चबाब सहनाई क बजाउब साथे नहीं होत।'

श०– रहिला–चना। सहनाई–शहनाई एक प्रकार का बाजा है जो मुंह से फूंक कर बजाया जाता है।

कहावत ऐसे समय पर कही जाती है जब कोई आदमी एक साथ एक साधन से दो–दो काम करने का प्रयास करे।

अ०– चना चबाते समय कोई चाहे कि शहनाई भी बजा लें तो वह काम असंभव है।

'रबिहू की एक दिवस में तीन अवस्था होय।'

श०– रबि–सूर्य। दिवस–दिन। अवस्था–दशा।

जब किसी मनुष्य की जीवन दशा बदलती रहती है कभी अच्छी, कभी बुरी, कभी सामान्य तो कहावत कही जाती है।

अ०– आदमी तो आदमी ही है, ग्रहों की गतिविधियां बदलती रहती हैं। प्रातः 'रविबाल' रूप होता है। दोपहर में वह और अधिक ताप की दशा में आता है तथा सायंकाल अवसान के समय उसका रूप तेजहीन हो जाता है और फिर धीरे–धीरे पश्चिम आकाश में ढलता हुआ अस्त हो जाता है।

'रमता जोगी बहता पानी।'

अ०– अमुक सज्जन एक योगी की तरह जहां बैठ गये बैठ रहे, जहां सो गये सोते रहे, उनका कोई समय या स्थान का अता पता नहीं रहता।

'रहु–रहु अंखिया सब कुछ देखिया।'

कभी–कभी मनुष्य के मन में अपने विरोधियों के प्रति प्रतिशोध की भावनायें उठ जाती हैं जिनका बदला तुरंत दे पाने में वह विवश होता है तो इसी प्रकार की कहावत कहकर मन को संतोष कर समय की प्रतीक्षा करता है।

अ०– ऐ आखें, धीरज धरो सब कुछ तुम्हें देखना है। दुश्मनों का बुरा होने में देर नहीं है।

'रक्तचाप हो लो या हाई, अमृत मट्ठा एक दवाई।
डायबिटीज क पेसेंट, अच्छा हो जाय सौ परसेंट।
माठा सोवत भूख बढ़ावै, पाचनसक्ति सहित जगावै।।'

श०– रक्तचाप–खून का दबाव होना। लो–धीमा। हाई–ज्यादा। डायबिटीज–पेशाब में या रक्त में शक्कर का अधिक मात्रा में होना। सौ परसेंट–एकदम, पूरा का पूरा ठीक हो जाना। सोवत–सोते समय।

कहावत स्वास्थ्य विषयक है।

रक्तचाप चाहे अधिक हो चाहे कम हो तथा जिस

मरीज के पेशाब में या खून में चीनी की मात्रा अधिक हो उसके लिये मट्ठे से बढ़कर कोई दवा नहीं होती है। मट्ठे से बीमारी एकदम ठीक हो जाती है। मट्ठा गई भूख को वापस करता है। पाचन क्रिया में मदद करने से स्वास्थ्य बहुत अच्छा रहता है।

'रजवा रिसियान, मोर कूली झूली छोड़'

श०— रजवा–राजा। रिसियान–गुस्सा होना। झूली–झुलना जो बच्चों को पहनाया जाता है। कूली–टोपी, कुल्हिया।

कहावत उस समय सामने आ जाती है जब कोई आदमी किसी के ऊपर नाराज होने पर अपने द्वारा दी गई वस्तु को वापस करने को कहे। यानी मैंने जो कुछ भी तुम्हें दिया था वह तुरंत मुझे वापस करो, मेरा सारा सामान मुझे दो।

अ०— जब राजा नाराज हुआ तो बोला–ला मेरी झूली कूली जो कुछ भी मैंने तुम्हें दिया था वापस कर दो। आज भी गांवों में जब भी ऐसी स्थिति आती है तो औरतें यह कहावत कहती हैं।

'रा'

'राई भै बिटिया, भांटा भै पेट।'

श०— कहावत किसी बेडौल आदमी को देखकर कही जाती है।

अ०— बिटिया तो राई भर की है और पेट भांटा भर का बहुत बड़ा है।

'रानी धना घिनानी, बीफय करुये तेल नहानी।'

श०— धना–धन, ऐश्वर्य। घिनानी–घृणा करना, नफरत करना।

कहावत धन के ऊपर कही गई है कि रानी के पास इतना धन हो गया कि वृहस्पतिवार को कड़ुये तेल से नहा रही हैं। यानी इस दिन तेल लगाने से धन की हानि होती है।

'रातुल मनई सातुल घोड़।'

श०— रातुल–रात भर में। सातुल–सात दिन में।

कहावत, आदमी व घोड़े के चेहरे में कितने दिन में बदलाव आ सकता है, इस पर कही गई है।

अ०— रात भर में आदमी का और सात दिन में घोड़े का रंग–रूप बदल जाता है।

'राम की माया, कहीं धूप कहीं छाया।'

कहावत ईश्वरीय माया के प्रति कही गई है कि भगवान की माया, उसका खेल निराला है तनिक देर में धूप और तनिक देर में छाया होने लगती है।

'राम क बन केकई क अपजस बदा रहा।'

जब कोई आदमी अपने कार्यों के द्वारा बिना गलती के कलंकित माना जाने लगता है तो कहते हैं।

अ०— राम को वन जाना तो विधि ने लिखा ही था मगर सारा कलंक केकई को लगा। गोस्वामी तुलसीदास के शब्दों में–

'हानि लाभ जीवन मरन, जस अपजस विधि हाथ।'

'राह चलत की दुइजन होई, झारि बिछौना दासन लेई।।'

अ०— कहावत सिद्धांतवादी है कि आदमी को किसी समय कितना सचेत रहना चाहिए? यानी रास्ते चले तो दो के साथ, अकेले कभी नहीं चलना चाहिए और रात में बिस्तर झाड़ ले तो फिर लेटना चाहिए। इस पर एक छोटी सी कथा है–

'एक आदमी अपनी रिश्तेदारी में गया। उसकी ससुराल वालों से बीबी को लेकर झगड़ा–झंझट चल रहा था। वह अपनी स्त्री को लेने गया तो ससुराल वालों ने सोचा कि इस आदमी को कैसे समाप्त किया जाय कि 'सांप मरे ना लाठी टूटे' की बात बन जाय। उन्हें तरकीब सूझी– एक बड़ा सा गड्ढा खोद कर खाट उसी पर बिछा दी। खाट तो बीच से टूटी थी ऊपर खूब सुंदर सा बिस्तर लाकर बिछा दिया कि जैसे ही मेहमान आकर खाट पर बैठेंगे वैसे ही धड़ाम से गहरे अंधेरे गड्ढे में गिरकर खत्म हो जायेंगे। मगर मेहमान की एक आदत थी कि बिना बिस्तरा अपने हाथ से झाड़े हुये कभी खाट पर पैर नहीं रखते थे। उन्होंने खाट व गड्ढा देखा तो दंग रह गये। वे तुरंत समझ गये कि यह साजिश मुझे मारने की है। अतः याद रखना चाहिए कि कहीं भी रहो अपना बिस्तर अवश्य झाड़ कर देख लो।

'राजा गे बिदेसवा मैं कहां कहां जांव।

सासु गई हटियै मैं का–का खांव।।'

कहावत बहुत पुराने जमाने की है जब घर की बहुओं को बहुत ज्यादा परतंत्रता थी। वहुएं अपने मन के माफिक खा–पी नहीं पाती थीं और पति के अनुशासन के मारे बाहर निकल नहीं पाती थीं।

अ०– बहू कहती है कि आज घर में पति नहीं हैं मैं कहां जाऊं और घर में सास नहीं हैं वे बाजार गई हैं तो क्या–क्या बनाकर खा लूं?

'राम मिलायें जोड़ी, एक आंधर एक कोढ़ी।'

अ०– जब दोनों में ऐब होता है तो कहावत कही जाती है कि अच्छी जोड़ी मिली है एक अंधा है तो दूसरा कोढ़ी है।

'राम की चिड़िया राम के खेत,

खाओ चिड़ियों भर–भर पेट।'

जब किसी आदमी को कहीं पर खाने पीने की खुली छूट मिल जाती है तो कहावत कही जाती है कि राम की चिड़िया भी है और राम का खेत भी है। ए चिड़ियो! पेट भर कर खूब खाओ।

'रानी कै ना छूटे बानी, चेरिया क ना छूटे सुभाव।'

जब दो औरतों में जो एक तो घर की मालकिन हो दूसरी सेवा करनी वाली दासी हो और दोनों का स्वभाव ऐसा हो कि आदत के अनुसार दोनों ही आपस में खटपट मचाये रहें तो कहते हैं।

अ०– न रानी की आदत छूटने वाली है और न दासी का स्वभाव ही छूटने वाला है। दोनों ही अपनी आदत से मजबूर हैं।

'राई से पर्वत करे, पर्वत राई माहिं।'

कहावत ईश्वरवरीय लीला के प्रति कही गयी है–

अ०– पर्वत को राई और राई को पहाड़ बनाने वाला ईश्वर ही होता है।

'राखनहार भये भुज चार तो क्या बिगड़े भुज दो के बिगाड़े।'

अ०– जब पालन करने वाले चारभुजाधारी हैं तो फिर दो भुजा रखने वाले मनुष्य क्या बिगाड़ सकते हैं?

'राचे का पान, बिराचे क मेंहदी।'

श०– राचे–रचना, चढ़ना, लाल होना।

अ०– मुंह रचे तो पान नहीं तो मेंहदी है।

'राजपूत, जाट, मुसलमान की धनुही।

टूट जाय भले नवै नहिं कबहीं।।'

अ०– राजपूत, मुसलमान व जाट टूट भले ही जायं पर कभी झुक नहीं सकते हैं।

'राजा क दान, प्रजा क स्नान बहुत है।'

अ०– जो जिस स्थिति में हो वह उतना ही दान–पुण्य कर सकता है। राजा का दान देना प्रजा का नहाना बराबर है।

'राजा करे सो न्याव, पांसा पड़े सो दांव।'

अ०– राजा का किया न्याय और जुए में पांसा सही पड़ जाय तो यही दांव कहलाता है।

'राजा के घर मोतियन क अकाल।'

अ०– राजा के यहां मोतियों की क्या कमी है? जब कोई वस्तु बड़े आदमी के यहां लोग ढूंढने लगते हैं और मिलती नहीं है तो कहावत कही जाती है।

'राजा के छुये रानी होय।'

अ०– किसी भी बड़े आदमी की कृपा होना।

'राजा, जोगी, अगिन जल इनकी उल्टी रीति।

डरते रहिये परसराम ये थोड़ी पालें प्रीति।।'

अ०– राजा, जोगी, आग, पानी इनकी उलटी रीति होती है इनसे डरते रहना चाहिए।

'राजा नल पर विपत पड़ी।

भूंजी मछरी जल मां परी।।'

अ०– बुरे दिन आने पर सब काम उलटे ही होते हैं। उसकी कथा है।

राजा नल अपना राजपाट जुये में हार गये तो दमयंती को लेकर जंगल में चले गये। वहां एक दिन कुछ खाने को नहीं मिला तो उन्होंने भूख से व्याकुल होकर तालाब से मछली पकड़कर आग में भूना। जब राख को पानी में धोने गये तो वह जिंदा होकर पानी में तैर गयी। तब से यह कथा आपदाग्रस्तों के प्रति कही जाने लगी है।

'राजा बुलावे तो ठाढ़े आवै।'

कहावत राजा महाराजाओं के हुक्म पर कही गई है।

अ०– जब राजा किसी को बुलाता था तो आदमी ठाढ़े बैठे जैसे भी रहता था वैसे ही चला आता था। जिसकी हुकूमत में रहे उसके हुक्म को तामील करना होगा।

'राजा क नियाव परजा क चैन।'

श०– नियाव–न्याय। चैन–आराम, निश्चिंतता।

अ०– जब राजा के राज्य में न्याय होगा तो प्रजा भी अमनचैन से रहेगी।

'राजा रिसियाये राज लेय, का केव क भाग लेय।'

श०– राज– यहां पर राज का मतलब भेंट में दी गई वस्तु या कृपा पर दी गई वस्तु। भाग– किस्मत, तकदीर।

अ०– राजा यदि नाराज होगा तो बहुत करेगा अपनी दी गई वस्तु वापस ले लेगा, क्या किसी की किस्मत थोड़े ही ले लेगा? अपना भाग्य तो अपने साथ ही रहता है।

'रात नर्बदा उतरीं दिन की कुंआ देखि डरीं।'

श०– नर्बदा– एक नदी का नाम है। उतरीं–पार करना।

कहावत किसी ऐसी स्त्री पर कही गई है जो चरित्रहीन है। उसे नदी नाला, रात–दिन में कोई अंतर नहीं पड़ता है।

अ०– रात समय तो नर्बदा नदी तैर कर पार उतर गई और दिन को कुंआ देखकर डर गई।

'रात के उपासी दिन की हेरै बासी।'

अ०– रात भर कुछ खाया नहीं तो दिन को बासी खाना ढूंढ़ रही है।

'रात हटाई फिर सबेरे आई, भूख की पीड़ा बुरी रे भाई।'

कहावत भूख पर कही गई है कि मनुष्य के लिये रोटी कितनी आवश्यक है?

अ०– रात को तो खा–पीकर किसी तरह से भूख को दूर किया मगर देखो तो सुबह फिर हाजिर हो गई। सच बात है, भूख की पीड़ा सही नहीं जाती है।

'रात भै क़ाता कातना।
न सिर परा नातना।।'

श०– काता–सूत कातना। नातना– सिर पर तना नहीं, पड़ा नहीं।

कहावत से परिश्रम के बाद भी कुछ परिणाम का न निकलना साबित करता है।

अ०– रात भर सूत काता मगर न मिला कुछ कि सिर तो ढक जाता।

'राम नाम जपना पराया माल अपना।'

अ०– मुंह से राम–राम कहना और अंदर ही अंदर से दूसरे के माल पर नजर रखे रहना कि कब पाऊं और लेकर चलता बनूं।

'राजा कै बिटिया पियाजू क तरसै।'

अ०– जो इतना बड़ा आदमी हो उसके घर में छोटी–छोटी वस्तुओं की कमी कैसी?

'राजा क पतै नहीं, बनिजारै बन बांट लिहै।'

श०– बनजारे–व्यापारी।

कहावत उस समय कही जाती है जब किसी बड़े आदमी को अपनी वस्तु का कोई ध्यान ही न हो, कर्तव्य में लापरवाही बरती जाय। इसी प्रकार से साधारण घरों में जब घर के मालिक को सामान का पता न रहने पर, वस्तु गायब हो जाने या फिर लोग उसे ले दे के बराबर कर दें, तो कहावत कही जाती है।

अ०– राजा को पता ही न चल पाया कि बन बनजारों ने कब बांट डाला?

'राम नाम मां आलसी, भोजन मां होसियार।
तुलसी ऐसे नरन को बार–बार धिक्कार।।'

अ०– जो केवल खाना ही जानें काम न करें उनके लिये कहा गया है कि राम नाम लेने में तो जान छुड़ाते हैं और खाने में आगे हैं। उसमें कमी नहीं आनी चाहिये।

ऐसे आदमी का जीवन धिक्कारने के लायक है।

'राम का नाम्र सदा मिसिरी, सोवत जागत ना बिसरी।'

अ०— ईश्वर का नाम सदैव सुखकर होता है उसे सोते–जागते कभी नहीं भूलना चाहिए।

'राज नीति बिनु धन बिनु धर्मा।'

यह पंक्ति गोस्वामी जी की है।

अ०— नीति के बिना राज्य चलाना व बिना धर्म किये धन की प्राप्ति असंभव है। धन की शोभा दान देने में ही है।

'राम से अधिक राम कर दासा।'

किसी सम्मानित व्यक्ति के यहां जो उस व्यक्ति का सहयोगी होता है या जो उसका अधिक प्रिय होता है उसका मान लोग इसलिये करते हैं कि वह अपने आराध्य या मालिक तक किसी की प्रार्थना या अरदास पहुंचाने में काबिल होता है। उसकी पहुंच हमेशा ही वहां तक रहती है। तुलसीदास जी की यह पंक्ति भी राम से अधिक रामकर दासा को स्थान देती है। एक तो राम तक पहुंच दूसरे जो भक्त होता है वह अपनी सेवा, पूजा, आराधना के कारण अधिक महत्वपूर्ण होता है।

'रात निबद्दर दिन की छाहीं, कहै घाघ अब बरखा नाहीं।'

अ०— यदि रात को बादल और दिन को छाया हे तो फिर पानी न बरसेगा।

'रात्यो बोलै कागला, दिन को बोलै स्यार।
कहै भड्डरी समुझि मन निहचै परय अकाल।।'

श०— कागला— कौवा।

अ०— भड्डरी का कथन है कि यदि रात को कौवा बोलता है और दिन को स्यार तो समझो कि यह सूखा पड़ने के लक्षण हैं।

'रात निर्मली, दिन को छांही, कहै भड्डरी पानी नाहीं'

अ०— स्पष्ट है।

'रात भर अंडे पकाये फिर भी कच्चे रह गये।'

कहावत से स्पष्ट होता है कि काम इतने परिश्रम के साथ किया उसमें सफलता न मिल पाई। कभी ऐसी स्थिति उत्पन्न होने पर कहावत चरितार्थ होती है।

'रात की खाय भिनसारे क पछताय।'

कोई कंजूस, मक्खीचूस आदमी जब अपने खाने को ही बोझ समझता है तो दूसरे कहते हैं।

अ०— रात को खाये और सुबह के लिये सोच में पड़ जाये कि कल क्या खायेंगे या खाने में फिर इतना ही खर्च होगा।

'राहे मां हगे औ आंख तरेरे।'

श०— हगे–टट्टी करना। तरेरे–आंख दिखाना।

कहावत जबरा के ऊपर कही गई है जो अपनी गलती नहीं मानता, उस पर से अपना रोब भी जमाना चाहता है।

अ०— एक तो रास्ते में शौच और उस पर भी आँख दिखाना।

'राम राम कहि जे जमुहाहीं, तिनहि न पाप पुंज समुहाहीं'

पंक्ति तुलसीदास की है। लोग शिक्षा देने या ईश्वर के प्रति अधिक विश्वास बढ़ाने के लिये कह देते हैं।

अ०— जम्हाई आते समय जो राम का नाम लेता है उसके निकट पाप कभी नहीं आते हैं।

'राम हो राम, रामौ के राहे मां ठेली का ठेला।'

कहावत उस समय उद्धृत की जाती है जब कोई आदमी पूजा–पाठ, अच्छे भले काम को करने में लगा रहे और लोग उसमें भी बाधायें उत्पन्न करें, कटु आलोचनायें करके हीनता की भावना उत्पन्न करें या कहीं मंदिर, धर्मस्थल में दर्शन आदि में बाधा या अशान्ति उत्पन्न करें।

अ०— हे राम! भगवान के काम व नाम जप के समय भी धक्का–मुक्की लोग करते हैं।

'रानी से को कहै कि आगे ढापि लेव।'

अ०— बड़े आदमी कोई काम अनुचित भी करें तो किसी की हिम्मत नहीं कि उनसे मना कर दे कि यह काम मत करो।

अ०— रानी बेपर्दगी से बैठी हो तो उन्हें कौन है जो कहे कि तनिक कपड़ा संभाल कर बैठो या गलत काम को मत करो।

'रातिन छोट कि चोरय भकुआ।'

श०– भकुआ–बुद्धू, बेवकूफ।

कहावत कार्य में असफलता पाने वाले व्यक्ति के ऊपर कही गई है या मूर्ख व्यक्ति पर बड़ी कुशलतापूर्वक व्यंग्य किया गया है।

अ०– समझ में नहीं आता कि रात इतनी छोटी है जो जल्द समाप्त हो जाती है कि चोरी करने को मौका नहीं मिलता या चोर इतना बुद्धू है कि झटपट चोरी करके निकल नहीं पाता।

'राह बतावै तो आगे चलै।'

कहावत ऐसे समय पर कही जाती है जब कोई आदमी किसी को कोई बात बताये या बुद्धि दे कि ऐसा करो वैसा करो तो वह स्वयं करके दिखाये तभी साहस बढ़ता है। इसलिये कथनी व करनी में बड़ा अंतर होता है।

अ०– जो रास्ता बताये वही आगे चले तो चलने वाले को आसानी होगी। कभी–कभी कहावत व्यंग्य में भी कही जाती है कि बताना ही काफी नहीं है चलके दिखाओ तो हम भी चलें।

'राजा रिसियाये बन लेये, दइव रिसियाये जिव लेये।'

जब कोई भी व्यक्ति किसी के दबाव, अनुशासन से बेहद परेशान हो जाता है तो कहता है।

अ०– राजा नाराज होगा तो बहुत करेगा अपनी जमीन ले लेगा और भगवान नाराज हो जायेंगे तो प्राण ले लेंगे। इससे ज्यादा क्या हो सकता है?

'राधे–राधे रटत हैं, आक ढाक अरु केर।
तुलसी या ब्रजभूमि में कहा राम से बैर।।'

श०– रटत–बार–बार उसी नाम को कहना। आक–मदार। ढाक–ढाक का पेड़ जंगलों में पाया जाता है। केर–केला।

एक बार तुलसीदास मथुरा गये तो वहां देखा कि पेड़–पौधे, तृण–तृण राधे–राधे की रट लगाये हैं तो उपरोक्त दोहा कहा था।

यह दोहा जब भी अनायास कोई किसी से चिढ़ता या नाराजगी रखता है तो कहता है कि आखिर ब्रज भूमि में राम से बैर क्यों? भाई, उनसे तुम्हारा क्या बैर है जो नाम तक लेने पर चिढ़ जाते हो?

'राजा क रानी पियार, काने क कानी पियार।'

अ०– अपनी–अपनी वस्तु सभी को बेहद अच्छी लगती है चाहे वह बुरी ही क्यों न हो। यदि राजा को रानी से प्रेम है तो काने को कानी ही भली लगती है।

'राम न मारै आपुयै मरै।'

अ०– अपने बुरे कामों का फल आदमी को खुद ही भोगना पड़ता है मगर वह अपनी गलती कभी नहीं देखता, भगवान पर ही दोष लगाता है।

'राम भरोसे बैठके सबका मोजरा लेय।
जैसी जाकी चाकरी, वैसा वाको देय।।'

श०– मोजरा– हाल–चाल, अच्छा–बुरा।

अ०– ईश्वर का नाम लेकर ईश्वर के भरोसे चुपचाप सबके कारनामों को देखते रहना चाहिए। जो जैसा करे उसी के मुताबिक उसके साथ भला–बुरा व्यवहार करना चाहिए।

'रात बहुरिया नट कूदें, दिन कउवा देखि डराय।'

श०– बहुरिया–बहू, नई गौने की स्त्री। नट–नाटक करने वाले, कौतुक दिखाने वाले।

कहावत ऐसी नारी पर कही गई है जो स्वभाव की बुरी हो। जो रात को तो न डरे, रात भर कूद–कूद कर तमाशा लोगों को दिखाये और सुबह जब कौवा दिखाई दे तो डर कर अंदर को भागे।

'रात टकाटक दिन की मही, केहि कारन पुरवइय्या बही।'

श०– रात को बादलों का नाम निशान भी नहीं होता और दिन को बादल छाये रहते हैं। फिर हवा बहने का क्या कारण है? ऐसे में पुरवा हवा नहीं बहती है।

'राजहंस बिन को करे नीर–छीर अलगाव।'

श०– राजहंस–हंस,क्षीर–दूध। नीर–पानी। अलगाव–अलग करना। कहावत न्याय करने के प्रति कही जाती है जब सही न्याय पाने की कामना होती है।

अ०– राजहंस के अतिरिक्त नीर–क्षीर विवेक कौन कर सकता है?

'राह चलत की ठोकर लागै।'

'कभी–कभी आदमी दूसरों के साथ कितना भी अच्छा व्यवहार करे मगर अपयश मिल ही जाता है। तभी निराश होकर कहावत कही जाती है।

अ०— क्या बताऊं रास्ते जाते हुये ठोकर लगती है। कुछ करता भी नहीं तब भी लोग अपयश देते हैं।

'रात तो आपनि आय।'

जब आदमी को कोई इत्मिनान का काम करना होता है तो कहता है।

अ०— दिन तो काम करने में बीतता है मगर रात को कौन बोलेगा, वह तो सोने के लिये होती है, उसी में आराम से काम होगा।

'रात मां इहां उल्लू बोलथि।'

अ०— जब कोई स्थान वीरान हो जाता है तो कहते हैं कि यहां पर रात में अब उल्लू ही रहते हैं। यानी इलाका एकदम सूनसान वीरान हो चुका है।

'राग, रसोई, पागड़ी, कबहुं–कबहुं बनि जाय'

श०— राग–गाने का स्वर, ताल, लय। रसोई–खाना पकवान। पागड़ी–सिर पर बांधने वाली पगड़ी।

अ०— कहा गया है कि राग, भोजन, पगड़ी कभी–कभी बहुत बढ़िया बन जाती है। इसका भी तालमेल होता है।

'राह चलिन न पावै, रजाई क फाड़ बांधै।'

श०— फाड़–मर्द लोग जो धोती में लांग बांधते हैं।

कहावत ऐसे आदमी पर कही गई है जो शरीर से कमजोर या बीमार या एकदम निर्बल है।

अ०— चलने का बूता तक है नहीं और चले हैं रजाई लपेट कर चारो ओर घूमने।

'रात भै चिचियानी, तो मुसरी बियानी।'

श०— चिचियाना–चीखी, चिल्लाई। मुसरी–एकदम से छोटी सी नन्हीं सी मुसरी। बिआनी–पैदा करना।

कहावत उस समय कही जाती है जब किसी गर्भवती स्त्री को बच्चे के होने में बेहद दर्द के बावजूद कमजोर बच्चे का जन्म हो।

अ०— रात भर तो हाय तौबा मचाती रहीं और हुई क्या मुसरी जैसी बिटिया।

'राम नाम लड्डू गोपाल नाम घी
कृष्न नाम मिश्री तू घोर–घोर पी।'

अ०— स्पष्ट है।

'राखो मेल कपूर मां, हींग न होय सुगंध।'

कहावत ऐसे व्यक्ति पर कही गई है जिसको कितना भी साथ अच्छा मिले मगर उस पर कोई असर नहीं पड़ता।

अ०— हींग को कितना भी कपूर में बंद करके रखो मगर उस पर कोई असर नहीं पड़ता।

'राम बढ़ाये सो बढ़े बल कर बड़ा न कोय।
बल करके रावन बढ़ा, छिन में डारा खोय।।'

अ०— जिस पर भगवान की कृपा होती है वही दुनिया में आगे बढ़ता है तथा उन्नति कर पाता है। अपना बल दिखाकर कोई चाहे कि मैं बड़ा बलवान हूँ, सब कुछ कर सकता हूँ तो यह असंभव है। रावण अपने को बड़ा बलवान समझता था। वह था भी बलवान मगर बिना ईश्वर की कृपा के उसका बल बेकार हो गया। उसका सर्वस्व नाश हो गया।

'राम बिना दुख कौन हरे, बरखा बिन सागर कौन भरे।
बिन आदर कौन करे बिन भोजन कौन धरे।।'

अ०— बिना ईश्वर के दुख नहीं हर सकता है। बिना पानी के बरसे समुद्र नहीं भरता, बिना अपने पास पैसे, धन, वैभव के दुनिया में कोई आदर नहीं करता और बिना माता के प्रेम का भोजन कोई नहीं करा सकता है।

'राम नाम जे लेय ऊ धक्का पावै, कमर हिलावै सो टक्का पावै।'

अ०— दुनिया की अजीब हालत है। अच्छा काम करने पर कोई नहीं पूछा जाता– लेकिन जो हाव–भाव से दूसरों को रिझाता है, लोगों को प्रभावित करता है तो लोग उसे पैसे देते हैं।

'राह छोड़ कुराह चले।'

अ०— गलत राह पर चलने वालों के प्रति कहावत कही गई है कि रास्ता छोड़कर बुरी राह पर चल दिये।

'रात भर सोहर भा, बेटउना के छुन्निन नाय।'

जब बहुत अधिक आशा करने के बाद परिणााम निराशाजनक होता है तो कहावत कही जाती है।

अ०— रात भर गाया—बजाया बाद देखा तो लड़के की जननेन्द्रिय नहीं है।

'राम कहो आराम मिली।'

अ०— स्पष्ट है।

'रि'

'रिन के सोच न धन के सोच, वे धमधूसर काहे न मोट।'

श०— रिन—कर्ज। धमधूसर—मोटा आदमी।

कहावत किसी भी मस्तमौला मोटे ताजे आदमी पर कही गई है।

अ०— जिसको न धन की चिंता है न इसकी चिंता है कि कर्ज के रुपये वापस देने हैं, वे मस्त आदमी फिर क्यों न मस्ती से अपना समय काटेंगें?

'रिस खाय आप क, बुद्धि खाय आन क।'

अ०— क्रोध अपने तन, मन को चिंतित करके नुकसान करता है और बुद्धि से यदि काम कोई लेता है तो वह दूसरे को नुकसान कर सकता है।

'रिस हमरे, फउज नवाब के।'

श०— फउज—फौज, सेना। नवाब—शासक।

कहावत विसंगति पर कही जाती है। जब किसी साधन व वस्तु की कमी के कारण विवशता होती है तो कहते हैं—

अ०— क्रोध तो हमारे पास है कि अभी दुश्मनों पर धावा बोल दें। मगर करे क्या विवशता है कि अपने पास फौज नहीं है। सेना नवाब के पास होने के कारण मजबूरी है।

'रिन ले कबहूं न खाय, बरु भूखन मरि जाय।'

अ०— कर्ज लेकर कभी भी खाना न चाहिए चाहे भूखों मर ही क्यों न जाय? इसका उलटा व्यंग्य संस्कृत में कहा है— 'ऋणम, कृत्वा घृतम पीवेत्'। कर्ज लेकर घी पियो।

'री'

'रीते भरे, भरे ढुलकावै, राम करे तो फिर भर जावै।'

श०— रीते—खाली। ढुलकावै—गिराना। कहावत ईश्वरवादी है।

अ०— ईश्वर की इच्छा बहुत बड़ी होती है। वह चाहे तो भरा को खाली और खाली को भर दे। बड़ी ही प्रबल माया है परमात्मा की।

'खाली हाथ मुंह तक नहीं जात।'

यानी खाली हाथ मुंह तक नहीं जाता है।

'रीछ क एक बालै बहुत आय।'

यानी कीमती वस्तु थोड़ी ही बहुत होती है। रीछ का बाल बच्चों को नजर न लगने के लिये ताबीज में पहनाते हैं।

'रीत न सतवांसा, मेरा लड़का नवांसा।'

श०— रीत—रिवाज, रस्म। सतवांसा—गर्भ के सातवें माह में बहुत से घरों में सतवांसा पूजा जाता है, कहीं—कहीं पंचमासा भी पूजा जाता है।

अ०— कहावत गर्भ के बच्चे का सतवांसा न पूजने पर कही गई है। बहू की शिकायत है कि मेरे गर्भ के बच्चे के लिये जब सतवांसे की कोई रस्म ही नहीं हुई, न पूजा हुई, न मैका—ससुराल वाले साथ पूजा पर बैठे तो जब नौ माह में होना था हुआ फिर वह कैसे लाड़ला पोता बन गया?

'रू'

'रूप रोवै भाग्य खाय।'

श०— रूप—सुंदरता। भाग्य—तकदीर, किस्मत।

कहावत किसी भाग्यवान व्यक्ति पर कही गई है।

अ०— रूप कितना भी बुरा हो, रो रहा हो मगर यदि आदमी भाग्यवान है, उसकी किस्मत जोरदार है तो फिर उसे सभी पूछते हैं।

'रूखी सूखी खाय के ठंडा पानी पीव।
देखि पराई चूपरी मत ललचावै जीव।।'

कहावत संतोषी होने के लिये कही गई है।

अ०— रूखा— सूखा भोजन करके प्रेम से ठंडा पानी

पीकर मन में तसल्ली रखो। दूसरे की घी चुपड़ी रोटी को देखकर ललचाओ मत। जो भगवान दे उसी में संतुष्ट रहो।

'रूँध बांधि दे फाग दिखाये, सो किसान मोरे मन भाये।'

अ०– जो किसान खेत को रूँध बांधकर सुंदर ढंग से बनाकर फागुन तक दिखाता है वही सच्चा किसान कहलाता है।

'रूपया से राजा नहीं तो जोलाहा।'

श०– रूपया, धन है तो आप राजा हैं नहीं तो बहुत छोटे आदमी हैं।

'रूपया वाले को रूपया, मोको राम की आस।'

यानी पैसे वाले को तो अपने पैसे की आशा है मगर मुझे तो बस भगवान का सहारा है।

'रूख बिना ना नगरी सोहै, बिन बरगन ना कड़िया।
पूत बिना ना माता सोहै, लख सोने की जड़िया।।'

श०– रूख–पेड़। नगरी–नगर गांव, सोहै–सुहावनी लगना। बरगन–पटिया से छत को पाटने के लिये रखी जाने वाली लंबी चौपहली लकड़ी।

अ०– पेड़ों के बिना गांव अच्छा नहीं लगता, बिना पटिये के छत भली नहीं लगती। बिना पुत्र के माता नहीं सुहाती चाहे वह सोने में जड़ी हो।

'रूखा खाना, धरती सोना, नहिं आसान है फक्कड़ होना।'

अ०– कहा जाता है कि फक्कड़ लोग बड़े मस्तमौला किस्म के होते हैं। मगर फाकेमस्त होना आसान नहीं है। जो साधु, संन्यासी का रूप रख लेते हैं उन्हें रूखा–सूखा मिलता है, जमीन पर सोने को मिलता है, कोई आराम की जिन्दगी नहीं होती कि सभी ऐसा जीवन बिता लें।

'रूठे बाबा दाढ़ी प हाथ।'

अ०– बूढ़ा आदमी यदि नाराज होता है तो उसका हाथ आमतौर पर बार–बार अपनी दाढ़ी पर ही जाता है।

'रूप न सिंगार, खतरानी की साथ'

कहते हैं खत्राणियां सुंदर होती हैं और वे बन–ठन, साज–श्रृंगार के साथ भी बहुत रहती हैं। कहावत है कि बनने ठनने को तो बड़ी तेज हैं खत्राणियों की जोड़ी बनना चाहती हैं मगर न रूप है न रंग है।

'रूठी बहुरिया खोदी आग, दुइनों रूकैं तो बड़ भाग।'

अ०– नाराज बहू और बार–बार की खोदी आग कभी नहीं ठहरती, वह बुझे बिना नहीं रहती। कोई–कोई इसे कहते हैं– खोदी आग उललाई पतोह नहीं रहतै।'

खोदी हुई आग और बार–बार हर काम को करने पर बहू के ऐब निकालने पर बहू उस घर में टिकती नहीं है।

'रे'

'रेशम क लहंगा मां मूंजी कै सिलाई।'

किसी कीमती वस्तु की बेइज्जती करना।

अ०– लहंगा रेशमी है तो उसमें रेशमी धागे से सिलाई करनी चाहिए मगर मूंज से सिलाई हुई जिससे टोकरी बिनी जाती है।

'रेगिस्तान औ छाया की आसा।'

श०– रेगिस्तान–बलुहे देश में जहां केवल बालू ही बालू चारो ओर फैली है।

अ०– रेगिस्तान में छाया की आशा नहीं करनी चाहिए। जहां जो बात असंभव हो उसकी आशा करना मूर्खता है।

'रोगी का जो रोगी मिला'

तो कहिस कि

'नीम कै पाती पिया।'

अ०– जिसको जिस बात का अंदाज या ज्ञान होता है वह अपना ज्ञान दूसरों को भी बताता है।

'रोज–रोज के दवाइव खोराक बनि जात।'

अ०– बात बिलकुल सही है कि जब बीमार रोज़–रोज़ दवा खा–खाकर अपनी आदत दवा खाने की बना लेगा तो फिर उसे दवा क्या फायदा करेगी? उसकी तो दवा खाने की आदत ही बन जायेगी। इसलिये छोटी–मोटी बीमारियों में दवा नहीं खानी चाहिए तथा अधिक दवा का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

'रोजी का मारा दर–दर रोवै, पूत का मारा बैठ के रोवै।'

श०— रोज़ी—कामकाज, बेरोजगारी, खाली हाथ बैठा रहना। दर—दर—जगह—जगह। कहावत घर की लड़ाई, झगड़े पर कही गई है।

'रोउनी पतोह, चुअना घर, नीक न होय कही बात खर।'

श०— रोउनी—हर समय रोने वाली। पतोह—बहू, लड़के की पत्नी। चुवना— जो घर पानी बरसने से टपकता हो।

कहावत साधारण बातों के प्रति कही गई है जो घर—गृहस्थी सम्बन्धी है।

अ०— घर में रोने वाली बहू तथा घर की टूटी छत चू रही हो तो वह कुलक्षण है। बहू प्रसन्न मन वाली होनी चाहिए और घर की देखभाल इतनी होनी चाहिए कि पानी बरसने पर टपके न, नहीं तो दुर्दशा हो जाती है।

'रोटी मोटी, जोय छोटी।'

श०— जोय—पत्नी, स्त्री।

अ०— रोटी खाने में मोटी ही अच्छी होती है और स्त्री छोटे कद की भली होती है।

'रोगिव आधा बैद होथ।'

अ०— एक बीमार बराबर दवा खाते—खाते व अपनी बीमारियों की दवायें बैद्य के अनुसार बताते रहने के कारण आधी दवाइयां तो वह खुद ही जान जाता है।

'रोट से दिन छोट।'

श०— रोट—मीठी पूड़ी। रोट बनाकर हनुमान जी को चढ़ाते हैं। भादों के महीने में रोट का त्योहार पड़ता है।

अ०— रोट जब से शुरू होता है तो दिन भी तभी से छोटा होना शुरू हो जाता है। यानी भादों के माह से दिन की छोटाई शुरू हो जाती है।

'रोटी न कपड़ा सेंत के भतरा।'

श०— सेंत— बिना पैसा दिये या बिना खिलाये—पिलाये। भतरा—पति।

कहावत उस समय कही जाती है जब किसी के यहां बिना मजूदरी लिये कोई आदमी बेगार में करता है। यहां पर कोई स्त्री अपने पति को कह रही है—

अ०— न रोटी ठीक से खाने को मिलती है न कपड़ा मिलता है फिर काहे के लिये पति बने हैं? संतमेत से काम नहीं होता।

'रोजे कुआं खोदे, रोज पानी पिये।'

जिसकी आमदनी इतनी कम हो कि पेट भरने के लिए रोज पैसा कमाना पड़ता है तो कहावत कही जाती है कि रोज मेहनत करे। रोज कुआं खोदकर पानी निकाले तो पिये।

'रोगी होय जो होय एकलंत, घाघ कहै ई बिपत क अंत।'

श०— एकलंत—अकेला। अंत— अंतिम सीमा होना।

घाघ कवि के शब्दों में कहावत उस बीमार पर कही गई है जो बीमारी की हालत में अकेला हो।

अ०— यदि कोई बीमार अकेला रहे तो इससे बढ़कर विपत्ति क्या हो सकती है?

'रोय के पूछ लेय, हंस के उड़ाय देय।'

कहावत बड़ी स्वाभाविक है और धूर्तता से भरे आदमी या औरत के लिये कही गई है जो बहुधा जीवन में देखने में आती है।

अ०— किसी स्त्री से कोई दूसरी कुटनी या धूर्त स्त्री पहले तो उसके दुख को रो—धोकर पूछ ले, उसके मन की सारी बात को ले ले, फिर पीठ पीछे उसकी हंसी उड़ाये।

इसी पर रहीम ने कहा है —

'रहिमन निज मन की बिथा मनहीं राखो गोय।
सुनि अंठिलइहैं लोग सब बांटि न लेइहैं कोय।।'

'रोग कै घर खांसी, लड़ाई के घर हांसी'

अ०— बीमारी की जड़ खांसी होती है और बहुत ज्यादा हंसी—मजाक का करना ही झगड़े की जड़ बन जाता है।

'रोगिये जौन भावै उहै बैद बतावै।'

अ०— जो कुछ बीमार को अच्छा लगता है वही वैद्य खाने को कहे।

'रोटी बेटी का रिश्ता है।'

अ०— जब बेटी दे दिया तो रोटी का रिश्ता तो अपने आप ही हो जाता है।

'रोहिनी मृगिसिरा बोये मक्का।
उरद मड़ुआ दे नहिं टक्का।'

श०– रोहिनी– एक नक्षत्र का नाम है। मृगिसिरा–नक्षत्र है। टक्का–टका, पैसा।

अ०– रोहिणी व मृगसिरा में मकई बोनी चाहिये इससे लाभ होता है। उड़द व मड़ुआ से कोई विशेष फायदा नहीं होता है।

'रोहिनि खाट, मिगिसिरा छउनी।
अद्रा आये धान की बोउनी।।'

अ०– कहावत में नक्षत्रों के अनुसार काम करने के लिये बताया गया है।

यदि खाट बिनवानी हो तो रोहिणी नक्षत्र में बिनवानी चाहिए। मृगिसिरा में घर की छवाई करनी चाहिए तथा अद्रा में धान बोआना चाहिए तभी धान की खेती अच्छी हो पायेगी।

'रोहिणि बरसे मृग तपे कुछ–कुछ अद्रा जाय।
घाघ कहे सुन घाघिनी स्वान भात नहिं खाय।।'

घाघ ने अपनी पत्नी घाघिन से खेती व नक्षत्र के सम्बन्ध में स्पष्ट किया है।

अ०– यदि रोहिणी नक्षत्र में पानी बरसे और मृगशिरा (हिरनदाह) खूब तपै, अद्रा नक्षत्र के कुछ दिन व्यतीत होनेपर पानी बरसे तो धान की इतनी अच्छी फसल होगी कि आदमी तो क्या कुत्ते तक भात न खायेंगे, वे भी ऊब जायेंगे।

'रोटी करो सत्तू करो भात बरोबर नाय।
मौसी रहे फूफी रहे माय बरोबर नाय।।
रोटी कारन छोड़कर कुटुंम देस, घरबार।
लाख कोस जाकर बसे, रोटी ढूंढ़नहार।।
रोटी कारन सीखते विद्या है सब लोग।
जिस घर में रोटी नहीं वह घर पूरा सोग।।
रोटी कारन लश्करी रन में सीस कटाय।
रोटी कारन रैन दिन गीत गवेसर गाय।।
रोटी कारन जाल में फंसे पखेरू आय।
रोटी कारन आदमी लाखों पाप कमाय।।

अ०– उपरोक्त पांचों कहावतें रोटी को लेकर पेट भरने व परिवार पालने के संदर्भ में कही गई हैं। इसी पर एक कहावत याद आती है। 'रोटी की आवाज पैसे की खनक से कहीं ज्यादा तेज होती है। वह बहुत दूर–दूर तक सुनाई देती है।

'रोटी किस्मत की, हुक्का पाव दौड़ी का।'

अ०– रोटी तो भाग्य से मिलती है मगर हुक्का तो पता लगा कि कहीं प्रर लोग पी रहे हैं, चढ़ा हुआ है तो वहां तक भागकर गये तो पीने को पा गये।

'रोवत काहे क अहा, ऐसे सकलिये बनी बा।'

अ०– किसी को रोनी शक्ल देखकर किसी ने पूछा कि रो क्यों रहे हो? तो दूसरा बोला रो नहीं रहे हैं ऐसी शक्ल ही बनी हुई है।

'रोटी का ही ब्याह है, रोटी का अब काज।
सांच भोतने कहा है, सबसे भला अनाज।।

अ०– दुनिया में रोटी के मुकाबले कुछ भी नहीं होता है। दुखः–सुख, अच्छे–बुरे, शादी, मरण, बात, व्यवहार सभी काम रोटी से हो पाता है।

रोटी पर ही कहा गया है– 'रोटी के ही कारने दर–दर मांगे भीख' तो रोटी के बिना संसार का काम नहीं चल सकता है।

'रोटी खाय घिव सक्कर से, दुनिया ठगे मक्कर से।'

कहावत कूटनीति पर कही गई है कि रोटी घी शक्कर से खाय और दुनिया को अपनी मक्कारी से खूब ठगे। कहावत ठगों पर व्यंगोक्ति में कही गई है।

'रोटी गई मुंह में, जात गई गुह में।'

श०– गुह–मैले में।

रोटी के लिये लोग जाति भी छोड़ देते हैं। जब भूख की आग में रोटी खाने को मिल गई तो जाति कौन पूछता है?

'रोटी पै रोटी धै के खाव।'

अ०– एक प्रकार का आशीर्वाद है कि खूब रोटियां खाओ बनाओ।

'रोहिणी महीं जो रोहिणी एक घरी जो दीख।

हाथ में खपरी मेदनी, घर–घर मांगे भीख।।

श०– मेदनी–धरती।

अ०– घाघ कवि का कथन है कि रोहिणी नक्षत्र में रोहिणी एक घंटा भी हो तो समझो कि पूरी धरती में अकाल का योग है। लोग हाथ पात्र लेकर घर–घर भीख मांगेंगे।

'रोहिणी जो बरसे नहीं बरसे जेठ नित मूर।

एक बूंद स्वाती परै लागै तीनों तूर।।'

कहावत नक्षत्रों पर व पानी बरसने के ऊपर कही गई है।

अ०– यदि रोहिणी न बरसे और ज्येष्ठा व मूल नक्षत्र बरस जाय तथा स्वाती बरस जाय तो गेहूं, चना, जौ तीनों प्रकार के अनाज खूब होंगे।

'रोजगार व दुश्मन बार–बार नहीं मिलतै।'

अ०– रोजी व बैरी बार–बार नहीं मिल पाते हैं इसलिये रोजगार को संभाल कर रखना चाहिए और बैरी यदि मिल जाय तो उससे तुरंत बदला ले लेना चाहिए।

'रोबदार चेहरा, खिजाबदार मूंछ।

आंख चतुराई भरी, कान बहुत सून।।'

कहावत बनिये के लिये कही गई है। वह अपनी गद्दी पर बड़े रौब से बैठा है। अपनी मूंछ में खिजाब इसलिये लगाता है कि जवान लगे, आंखों में चतुरता, और कान से खूब सुनता है।

'रोग बढ़त है साग से, पय से बढ़ै शरीर।

घी खाये धीरज बढ़ै, मांस खाय गंभीर।।'

कहावत स्वास्थ्य सम्बन्धी खान–पान पर कही गई है।

अ०– साग खाने से रोग बढ़ता है, दूध से शरीर बढ़ता है और घी खाने से वीर्य व बुद्धि बढ़ती है और मांस खाने से मांस बढ़ता है। कुछ लोग इसे इस प्रकार से कहते हैं–

'साग खाये झोंझरि बाढ़य, घी खाये बल होय।

मांस खाये मांस बाढ़ै, बल कहां से होय।।'

'रोहिणी अक्षत तीज को, मूल अमावस पूस।

कतकी पर कृतिका नहीं, बाढ़ै खल, दलखूस।।'

श०– मूल–नक्षत्र है। कतकी–कार्तिक माह की पूर्णिमा। कृत्तिका–नक्षत्र। खल–दुष्ट। दलखूस–जुआरी, चोर लोगों की जमात।

कवि कहना है कि यदि अक्षय तृतीया को रोहिणी नक्षत्र न पड़े और पूस की अमावस्या को मूल नक्षत्र न पड़े, कार्तिक की पूर्णमासी को कृतिका नक्षत्र न हो तो चोर, जुआरी आदि दुष्टों की बाढ़ आ जाती है।

'रोजा छुड़ावै गे, नमाज गले पड़ी।'

अ०– जब एक काम को करने जाय तो दूसरा काम साथ लग जाये तो कहावत कहते हैं कि कहां तो रोजा छुड़ाने गये यहां नमाज पढ़नी पड़ गई।

'रोटी क रोवै खपरी टोवै।'

अ०– कहावत से बेहद गरीबी का आभास होता है। रोटी के लिये लालायित खपरी को टटोलता है।

'रोटी गई जो पेट में, होइगा मस्त सरीर।

सूझन लागे जीव क, लाख जतन तदबीर।।

श०– मस्त–मगन, सुख में, प्रसन्न हो जाना। तदबीर–तरह–तरह के खुराफात, तरकीबें।

कहावत पेट भर जाने के बाद क्या प्रतिक्रिया होती है, उस पर कही गई है।

अ०– रोटी जब पेट में जाती है तो मन प्रसन्न हो जाता है जिससे शरीर मस्त हो जाता है। फिर उस आदमी को एक के बजाय लाख–लाख बातें सूझने लग जाती हैं।

अ०– पेट में खाना पहुंचते ही सब बातें याद आ जाती हैं। भूखे पेट कुछ भी नहीं समझ पड़ता कि क्या करें, क्या नहीं?

'रोटी प घी गिरा कहिन किह इहका सूखिन नीक लागत।'

किसी का एहसान न लेना तथा काम भी बनाने के चक्कर में रहना।

अ०– घी देते समय किसी के हाथ से जब रोटी पर घी अधिक गिर गया तो खाने वाला बोला– हमें तो सूखा ही अच्छा लगता है। बेकार ही इतना नुकसान हो गया।

'रोटी बिन भोंड़े लगे, सकल कुटुम्ब के लोग।
रोटिन से ही होत है, टेंट मिलन को जोग।।'

कहावत स्पष्ट है।

'रोटी खाय हुंआ, पानी पियो हियां।'

जब किसी को बहुत जल्द बुलाना होता था तो पहले के जमाने में लिखते थे कि चिट्ठी को तार समझना, उसी प्रकार से यह भी है। रोटी वहां पर खाना पानी यहां पीना, अत्यधिक जल्दी करना।

अ०– यदि वहां रोटी खा रहे हो तो खाना परन्तु हाथ का जूठन, यहां आकर धोना। यानी कि बहुत जल्द से जल्द यहां पर जरूरत है, चले आओ।

'रां'

'रांड़ रोवै सेर–सेर, अहिबाती रोवै दुइ दुइ सेर।'

श०– रांड़–विधवा नारी। अहिबाती–सुहागिन, जिसका पति जिंदा हो।

जब किसी सुहागिन नारी को विधवा से ज्यादा कष्ट होता है, जीवन में उसे दुख झेलने पड़ते हों तो कहावत कही जाती है।

अ०– विधवा तो रोवे तो बात भी है वह बेआसरा है मगर सधवा को देखो तो उससे दूना आंसू बहा रही।

'रांड़य रंड़ापा तो खेव लै जाय।
जो रंडुवन के मारै खेवै पावै।'

श०– रंडुअन–जिन पुरुषों की स्त्रियां मर गई हों। विधुर। रंड़ापा–विधवापन।

कहावत उन सामाजिक गतिविधियों पर कही गई है जिनमें पुरुष समाज नारी को कितना गलत समझता है, उस पर यदि नारी विधवा है तो उनकी नीयत विधवाओं के प्रति कितनी निम्नस्तर की होती है?

अ०– विधवायें तो अपने विधवा जीवन की नौका जैसे–जैसे पार ही कर लें, मगर जब इस कुत्सित पुरुष समाज के मारे करने पायें तब तो। विशेष रूप से विधुर–विधवा को तो इतनी हेय दृष्टि से देखते हैं कि उनका जीना दूभर कर देते हैं।

'रांड़ मेहरिया, अनाथ भैंसा।
जब चितवै तो होवै कैसा।।'

अ०– बिना रस्सी की नाथ के भैंसा और बिना स्वामी के नारी की इतनी बिगड़ैल नजर होती है कि देखने पर भय उत्पन्न हो जाता है। अपनी खूनी नजर से लड़ने वाला भैंसा और बिना दबाव के विधवा नारी जब बिगड़ जाती है तो कोई समझाने व छुड़ाने वाला भी नहीं मिल पाता है। किसी की हिम्मत नहीं जो इन दोनों को संभाल सके। अतः दोनों से बहुत बचकर रहना चाहिए।

'रांड़ सांड़ होयि।'

अ०– विधवा स्त्री के ऊपर कोई प्रतिबंध तो होता नहीं है। इसलिये वह पूरी तरह से स्वयं को आजाद समझती है। इसलिये वह जब जहां भी मन होता है वहां एक सांड़ की तरह मनमानी घूमती फिरती रहती है। उसके ऊपर रोक–टोक लगाने वाला कोई भी नहीं रहता।

'रांड़, सांड़, सीढ़ी संन्यासी, इनसे बचे तो सेवइ कासी।'

श०– सेवइ–सेवा करना, रहना। कासी–काशी, बाबा विश्वनाथ की नगरी।

कहते हैं कि काशी नगरी में रांड़, सांड़, सीढ़ियां और साधु बहुत ही ज्यादा पाये जाते हैं। ऐसी स्थिति में कहावत कही गई है।

अ०– यदि बनारस जैसी नगरी में रांड़, सांड़, सीढ़ी व साधु सन्यासियों से पिंड छूटा रहे तभी कोई रह सकता है। तभी वहां रहने का सुख मिल सकता है।

'रांड़ के सांड़ अहै।'

जब किसी विधवा नारी का पुत्र लाड़–प्यार से

इतना ज्यादा बिगड़ जाता है कि वह किसी की परवाह न करके मनमानी उद्‌दंता करने पर आमादा हो जाता है तो कहावत कही जाती है।

अ०— रांड़ के सांड़ की तरह बेटा पैदा हुआ है जो रात–दिन चारों ओर घूम–घूम कर मनमानी करता रहता है।

'रांड़ मरै ना खंडहर ढहै।'

बनी हुई चीज बिगड़ते देर नहीं लगती, मगर बिगड़ने के बाद वह जल्द समाप्त नहीं होती, अपनी कोई न कोई छाप अवश्य बनाये रखती है जैसे कि महल गिरने के बाद खंडहर होने पर वह ढहता नहीं बहुत दिनों तक खंडहर के रूप में खड़ा रहता है। मिट्टी में मिलने में उसे समय लग जाता है। कहावत का आशय भी यही है।

अ०— न तो रांड़ स्त्री जल्दी मरती है और न खंडहर जल्दी ढहता ही है। दोनों के अंत होने में बहुत समय लग जाता है।

'रांधड़ गूजर, दुइ, कुत्ता, बिल्ली, दुइ।
ये चारों न होय तो खुले केवाड़ सो।।'

रांधड़ और गूजर अहिर व क्षत्रियों की एक जाति होती है। कहावत इन्हीं पर कही गई है।

अ०— यदि रांधड़ व गूजर दो जातियां और कुत्ते–बिल्ली, यानी चार प्रकार के प्राणि न रहें तो चाहे किवाड़ खोलकर ही सोइये कोई चिंता नहीं है।

'रांड़–खांड़ क जोबन रातै मं रहत।'

अ०— विधवा नारी रात में ही आवारापन कर सकती है और मिठाई आमतौर पर लोग ऐश आराम के समय पत्नी के साथ बैठकर खाना पसंद करते हैं।

'रांड़ क सांड़,
सौदागर क घोड़ा।
चलै बहुत खाय थोड़ा।।'

अ०— विधवा स्त्री का बेटा व सौदागर के यहां लाया गया घोड़ा चलता बहुत है मगर खाता कम है।

'रांड़ के आगे भारी काव।'

अ०— रांड़ की गाली इतनी बुरी होती है कि उसके बाद देने को कोई गाली ही स्त्री के लिये नहीं बचती है।

'रांड़, भांड़, सांड़ तीनों बिगड़ै तो बुरा।'

अ०— विधवा स्त्री, रंडी का भांड़ जो चिकारा, तबला आदि बजाते हैं और सांड़ ये तीनों यदि नाराज हो जाय तो कोई संभाल नहीं सकता है।

'रांड़ रोवै, कुंवारी रोवै, साथे–साथे सत भतरी रोवै।'

श०— कुंवारी–जिसकी शादी न हुई हो। सतभतरी–जिसने एक नहीं दो नहीं सात–सात आदमी से अपना सम्बन्ध जोड़ा है, ऐसी स्त्री।

अ०— विधवा नारी रोती है तो ठीक ही है, कुंवारी भी अपनी शादी की चिंता करके रोवे, मगर जो तमाम पराये पुरुषों से गलत सम्बन्ध बनाये है वह भला क्यों रोवे?

'रांधो न सिलाओ, बैठके खिलाओ।'

श०— रांधो–बनना। सिलाओ–ठंडा होना।

कुछ आदमियों को खाने के मामले में इतनी जल्दी होती है कि क्या कहा जाय?

अ०— कहावत में हैं कि बना भोजन ठंडा न होने दो। लाओ जल्दी से बस खिला ही दो। आवश्यकता से अधिक जल्दबाजी करना।

"ल"

'लच्छन एक कुलच्छन चारी।
काव करै भुइली बिलार बेचारी।।'

श०— लच्छन–अच्छे, शुभ गुण, कुलच्छन–बुरे गुण, भुइली–भूरी बिल्ली।

कहावत किसी कुलक्षणी स्त्री के प्रति कही गई है जो स्वयं तो खराब गुणों वाली है मगर दोष किसी दूसरे पर मढ़ना चाहती है। अपने दोष से बचने के लिए दूसरे को दोषी ठहराना चाहती है।

अ०— घर में जब उसके साथ कोई दुर्घटना घटती है या कोई बुरा भला उसे कहता है तो वह बिल्ली को दोषी ठहरा कर कहती है कि क्या करूं सुबह–सुबह उठते ही बिल्ली का मुंह देखा इसी कारण यह दुर्दशा हुई। भूरी बिलार का ही सब दोष है। इतना सुनने के बाद बिल्ली कहती है कि अपने को दोष तो न दोगी

कि यदि एक अच्छे लक्षण हैं तो चार बुरे लक्षण मौजूद है भला उसमें भुइला बिलार क्या करे?

अ०– कहने का तात्पर्य यह कि हर आदमी अपने भाग्य या दुर्भाग्य का उत्तरदायी स्वयं होता है। अपनी बिगड़ी आदतों को आदमी खुद ही सुधारता है। उसमें किसी दूसरे को दोष देना ठीक नहीं होता।

'लड़इया हाथ भर के, पूँछ नौ हाथ के।'

श०– लड़इया–लड़ने वाला, पूँछ–पुछल्ला, आवश्यकता से ज्यादा–फालतू सामान का होना

जब भी कोई किसी को अनावश्यक सामान को लिये हुए या बेढंगी पोशाक पहने हुए देखता है तो कहावत कहता है।

अ०– लड़ने वाला तो एक हाथ का है और पूंछ बेकार नौ हाथ की लगी हुई है। अपनी औकात से ज्यादा किसी वस्तु का बोझ उठाना।

'लड़िकन से हम बोलित नाहीं, जवान लगै मोर भाई बुढ़वन का हम छोड़ित नाहीं, चाहै ओढ़ै चार रजाई।'

यहाँ कहावत जाड़े पर कही गई है।

अ०– जाड़े के कथनानुसार कि हम बच्चों से बात नहीं करते यानि कि जाड़ा बच्चों को एकदम ही नहीं लगता, जवानों से भाईचारा मानकर उन्हें बराबर का सम्मान मिलता है।। बस बुड्ढों को हम नहीं छोड़ते। बुड्ढ़ों को जाड़ा हमेशा ही ज्यादा इसीलिये लगता है कि शरीर कमजोर हो जाता है। ताकत न होने से जाड़े के मौसम में उन्हीं को अधिक परेशानी हाती है।

'लड़िका मुंह पाये, कुकुर कौरा पाये।'

अ०– कहावत अपनी जगह पर एकदम सही है। छोटे बच्चे बड़ों से प्रेम पाते हैं तो वे छोड़ते नहीं। इतने मुँह लग जाते हैं कि सदैव पास रहना चाहते हैं। उसी प्रकार से कुत्तों को रोटी का कौर दे दो फिर वे दरवाज़ा कभी भी न छोड़ेंगे। जब देखो पूँछ हिलाते बैठे ही रहेंगे, दरवाज़े के पास।

'लकड़ी के बल बंदर नाचै।'

अ०– बिना भय के कोई भी काम नही हो पाता। लकड़ी के भय से ही बंदर नाचते हैं।

'लग गई जूती तो उड़ गई रेह वइसी के तइसी होय गई देह।

श०– रेह–बालू, मिट्टी

अ०– कहावत किसी ऐसे बेशर्म के प्रति कही गई है जिसके ऊपर मार डांट का कोई असर ही न हो। चाहे जितना भी बुरा व्यवहार उसके साथ करो उसके लिये जैसे का तैसा है। जूती से मारने पर देह की मिट्टी झड़ गई देह फिर ज्यों की त्यों हो गई।

'लगा तो तीर नहीं तुक्का।'

अ०– कोई बात बन गई तो ठीक नहीं तो अंदाज़ था। काम करने का कुछ न कुछ तो नतीजा आयेगा ही।

'लटा हाथी भिटउर बराबर।'

श०– लटा–बुढ़ाया, कमजोर, भिटउर–जो कंड़े का ऊँचा सा गोल–गोल बनाया जाता है।

कहावत किसी के बुढ़ापे के ऊपर कही गई है।

अ०– बुढ़ापा बुरा होता है। चाहे हाथी जैसा बलवान जानवर ही क्यों न हो? जब वह बूढ़ा हो जाता है तो उसकी उपमा एक निर्जीव वस्तु भिटउर से दी जाती है।

'लजाधुर पतोह सराय मा डेरा।'

श०– लजाधुर–शर्माने वाली, पतोह–बेटे की नई बहू या फिर कोई भी नई बहू।

कहावत व्यंग्य में कही गई है या फिर अनुचित बात पर कही गई है।

अ०– शर्माने वाली बहू है तो उसे सराय, यानि जहां पर यात्री लोग आते जाते हों वहां पर टिकाना उचित नहीं है। दूसरे बहू यदि अपने मन से सराय में टिकी है तो फिर वह शर्माने वाली क्यों कही जाय?

'लजान लड़िका ढोंढी टोवै।'

श०–ढोंढी–पेट की बोड़री।

कहावत बच्चों के मनोविज्ञान पर कही गई है जो सही है।

अ०– बच्चे जब शर्माते है या भूखे रहते हैं तो वे बार–बार अपना पेट टटोलते हैं।

'लज्जत चोटव कै नाहीं, नाव चीनी परसाव।''

श०— लज्जत स्वाद–अच्छाई, मिठाई, चोटा–शक्कर बनाने में जो सीरा बन जाता है।

कहावत नाम की विडंबना पर कही गई है।

अ०— नाम के अनुसार गुण का न होना। चाहे वह वस्तु हो या मनुष्य।

'लग्गी से पानी नहीं पियाय जात।'

श०— लग्गी–पतले बांस की लंबी कंटवासी जिससे आम, दातून आदि तोड़ी जाती है

कहावत ऐसे समय में सामने आयेगी जब कोई आदमी किसी से अपनी गर्ज चाहे निकल जाय मगर उसके पास तक न आना चाहे। ऐसी स्थिति में काम कभी संभव न हो पायेगा।

अ०— दूर–दूर से काम का हो पाना असंभ्व है। लग्गी से कोई चाहे कि पानी पी ले तो संभव नहीं है। उसे तो कुंये के या जल के घड़े तक जाना ही पड़ेगा।

'लरकोरी के मुंह चीकन, बांझ कै फुफुनी।'

श०— लरकोरी–जिस स्त्री की गोद में छोटा बच्चा हो, चीकन–चिकना, साफ़–/बांझ–जिस स्त्री के कोई संतान न हो, फुफुनी–धोती का वह हिस्सा जिसे स्त्रियां सामने की ओर चुनिया कर खोसती हैं।

कहावत बच्चे वाली और बिना बच्चेवाली स्त्रियों पर कही जाती है।

अ०— बच्चे वाली माँ का मुंह चिकना होता है इसलिये कि वह बच्चे को तेल मालिश करते समय या उबटन लगाते समय आमतौर पर अपने मुंह पर भी लगा लेती है, चाहे वह हाथ का तेल ही सुखाने के लिये करती हो। किन्तु जिसकी कोई संतान ही नहीं है तो न उनका मुंह चिकना होता है और न कपड़े ही गंदे होते हैं। उसकी धोती, साड़ी हमेशा साफ रहेगी क्योंकि कोई बच्चा धूल से भरा या तेल से लगा शरीर लेकर गोद में चढ़ने वाला नहीं है।

'लगा अगस्त फूले बन कास।
अब छोड़ो बरखा की आस।।'

कहते हैं कि जब कास के फूल दिखाई पड़ने लग जाते हैं तो बरसात समाप्त हो जाती है। गोस्वामी जी के शब्दों में–

'फूले कास सकल महि छाई।
जनु बरखा कृत प्रगट बुढ़ाई।।'

'लम्बे कान और ढीला मुतान
छोड़ो किसान न तो जात है परान।।'

श०— मुतान–मूत्र स्थान

कहावत बैलों की पहचान पर घाघ कवि की है।

अ०— जिस बैल के कान लम्बे हों और मूत्र का स्थान ढीला हो वे बैल भले नहीं होते हैं। उनकी आशा छोड़ो वर्ना हल में ऐसे बैलों की जान तक निकल सकती है, उन्हें मत जोतो।

'ललही किही बिआह, कौरही आई नेवते।'

श०— ललही–ललचही, कौरही–भीख मांगने वाली स्त्री, मूर्खा स्त्री।

कहावत किसी पर व्यंग्य में कही गई है। जो जैसा होगा, वैसे ही उसके घर लोग भी आयेंगे।

अ०— भला जिसको शादी, ब्याह में भी ठीक से खाना खिलाना दूभर हो जाय तो उसके घर कौन जायेगा ही? वही भिखमंगिन, रोटी के टुकड़े की मोहताज ही जा सकती हैं। तभी कहावत कही गई है।

अ०— लालची स्त्री के लिये ब्याह शादी में कौरही को खिलाना ही पहाड़ हो गया तो भला कैसे किसी को बुलाती। ऐसे लोगों के यहाँ घर में भिखारी, कंगाली न्यौते पर न बुलाये जायेंगे तो आयेगा कौन?

लंबे घुंघुट चप्पे पायं।
घुंघुट भीतर बड़े उपाय।।'

कहावत उन चुप्पी और चरित्रहीन औरतों के ऊपर कही गई है जो अपने को बड़ी ही चरित्रवान समझाने की कोशिश करती हैं।

अ०— जिस स्त्री के घूंघट बड़े लम्बें हों और बहुत चुपके से कहीं आती जाती हो ऐसी नारी के घूंघट के भीतर ही भीतर गलत भावनायें रहा करती हैं। वह बड़ी भेदवाली होती है।

'लरिका न छोहरी, बूढ़े कै मेहरी।'

कहावत ऐसे बूढ़े पुरुष पर कही गई है जिसे बाल बच्चों की फ़िक्र न हो बस अपनी स्त्री की ही चिन्ता हो। कहा है किसी ने—

'लरिका मरिगा उठइय्या डांड़गै।'

श०— उठइय्या—सौर में के धुलने वाले कपड़े जब धोबी के यहां जाते हैं तो उसका पैसा व अनाज अलग से दिया जाता है। उसी पर कहावत कही गई है।

अ०— जब कोई काम करने के बाद कार्य विशेष में सफलता नहीं मिलती है तो कहावत कही जाती है कि होने वाली संतान तो मर गई उसे पहले के नेग में दिये गये पैसे बेकार हो गये। शुभारंभ में ही हानि का होना।

'लरिका रोवै बारे क, नाऊ रोवै मुड़ाई क।'

अ०— बच्चा तो रो रहा हैं कि मेरा बाल काट ले रहे हैं और नाई रो रहा है कि मेरी बाल बनवाई मिलनी जरूरी है। यानि अपने—अपने मतलब की बातें सभी सोचते हैं।

'लड़का मुंहे लगावै तो दाढ़ी नोचे,
कुत्ता के मुंहे लगावै तो मुंह चाटै।'

कहावत उस समय कही जाती है जब किसी नासमझ से परेशानी हो जाती है।

अ०— बच्चों को परचने पर वे दाढ़ी मूँछ के बाल ही उखाड़ने लगते हैं और कुत्ते को परचा लो तो वह मुंह ही चाटने लग जाता है।

'लकड़ी के भार पाती झोके न अंचाये।'

जब भारी आदमी को सम्मानित करना हो तो उसका खर्च मामूली नहीं होता है, उसके लिए अधिक पैसे व अधिक परिश्रम की आवश्यकता होती है।

अ०— कोई चाहे कि सूखी पत्ती से भारी लकड़ियों को जला लें तो असंभव है।

'लतिका मा क्योंऊ गरम पानी नहीं डउते।'

श०— लतिका—लतर, जो झाड़ पेड़ों के सहारे ऊपर चढ़ती हैं, बेल।

कहावत उस समय कही जाती है जब कोई कोमल, सुकुमार वस्तु या नारी के साथ कठोर व्यवहार करे।

अ०— पेड़ के सहारे चढ़ती हुई बेलों में कोई गरम पानी नहीं डालता। वे तुरन्त ही नष्ट हो जाती हैं। किसी कोमल वस्तु के साथ कठोर दंड या निर्दयता का व्यवहार नहीं करना चाहिए।

'लड़ाई क घर हांसी, रोग क घर खांसी।'

अ०— लड़ाई कभी—कभी हंसी—हंसी में हो जाती है या घर का झगड़ा दूसरे लोगों के लिये हँसी का कारण बनता है और बीमारी का घर खांसी होती है इसलिये हांसी व खांसी से सचेत रहना चाहिए।

'लड्डू लड़ै, चूरा झरै।'

अ०— जब भी दो बड़े आदमी आपस में लड़ते है। और उससे दूसरे लाभ पाते हैं तो कहावत सामने आती हैं लड्डू आपस में भिड़ते हैं तो वह चूर बन कर झड़ते हैं। आपस की लड़ाई में बड़े—बड़े लोग टूट जाते हैं।

'लड्डू न टूटै चूरा झार खाय।'

कहावत का कहना उस समय होता है जब किसी मूल वस्तु को बचाना हो।

अ०— मूल धन को हाथ न लगाकर उसके ब्याज से काम चलाना चाहिए। यानि लड्डू जैसा का तैसा बना रहे चूरे से काम चलाना।

'लड्डू—लड्डू कहे मुंह न मीठा होये।'

अ०— किसी मीठी वस्तु के नाम से मुंह मीठा न होगा, मीठी वस्तु को खिलाने के बाद मुंह में मिठाई का स्वाद जायेगा। यानि कहने से ही कोई काम न होगा। उसके करने की जरूरत होती है।

'लरिका मां लरिका, बूढ़े मां बूढ़।'

अ०– जब कोई आदमी दूसरों की उम्र के हिसाब से अपने को समायोजित करता है बच्चों में बच्चा बन कर बूढ़ों में बूढ़ा हो कर तो कहते हैं कि जो जैसा होता है उसके साथ वैसे ही रहने की कला आती है।

'लरिका न रोवै तो का दूध न पावे?'

अ०– जरूरतमंद वस्तु की सभी को आवश्यकता होती है। कहावत के माध्यम से कहा गया है कि क्या बच्चा रोवे न तो दूध न मिले, भूख तो उसे लगती ही है। संतोष की भी सीमा होनी चाहिए। इसलिये समय पर आवश्यकतानुसार जरूरी सामान सभी को मिल जाना चाहिए।

'लैगे घुंघुटाही, लाग चिरकुटाही।'

श०– घुंघुटाही–इज्जतदार, घूंघटवाली। चिरकुटाही– फटेहाल होना, गरीबी का होना

कहावत तब लागू होती है जब कोई आदमी अच्छी भली लज्जादार स्त्री को अपने घर में लाकर उस दुर्दशा को पहुंचा दे कि उसके पास तन ढकने को वस्त्र भी न हो।

अ०– ले कर आये तो बड़ी इज्जत के साथ घूंघट, पर्दे के साथ और आज यह दशा है कि वह बेचारी नारी चिरकुट, फटेहाल कपड़े को भी तरस रही है, यानि घर का हाल बेहाल होना।

'लड़ाका के चार कान होत।'

अ०– जो लड़ने वाला होता है वह बातों को बहुत ध्यान से सुनता हैं। एक–एक बात के दस–दस अर्थ लगाता है, अर्थ का अनर्थ कर देता है।

'लड़ैं न भिड़ै तरकस बाँधे फिरै।'

जब कोई आदमी बिना प्रयोजन के अपना महत्व जताने के लिये कोई सामान लेकर घूमता है तो कहते हैं।

अ०– लड़ना न भिड़ना बस कंधे पर तरकस लेकर घूमते रहना। झूठा अभिमान करना।

'लड़ै सिपाही नाव सरदार क।'

कार्य कोई दूसरा करे नाम किसी दूसरे का हो तो कहावत कहते हैं।

श०– यान–फौज में लड़ते तो सिपाही है मगर नाम कमान्डेन्ट का होता है।

"ला"

'लाव सीपी खुरचौं भीती,
मोरे संइयुया पे एतनी बीती?'

श०– सीपी–सीप जो समुद्र, नदी आदि में पाई जाती है जिससे गांव की स्त्रियां आम छीलती हैं। खुरचों–खुरचना, छीलना–भीती–भीत्ति–दीवाल, बीती– बीतना, भुगतना–दुख सहना।

कहावत स्त्रियों की है। इस कहावत में एक कथा है। 'एक स्त्री अपनी ससुराल जब आई तो देखा कि दीवार पर भात चिपका है। वह भात दीवार पर रस्म के कारण लगाया गया था। उस स्त्री ने समझा कि बेकार को लगा है तो उसने जरूरत से ज्यादा ही अपने पति के प्रति प्रेम दर्शाया व अपनी कर्मठता दिखाई। ऐसे ही अवसर जब आते हैं तो लोग इस कहावत का उपयोग करते हैं।

अ०– लाओ तो सीपी मैं दीवार ही खुरच डालूं। मेरे पति पर इतने कष्ट आये कि दीवार ही बर्बाद होती जा रही है। इस तरह से घर खराब हो रहा है। अनावश्यक सतर्कता दिखाना।

'लाख का घर खाक मा मिल गा।'

जब कोई वस्तु, घर या द्वार, सामान बर्बाद होने लगता है तो कहते हैं।

अ०– लाखों की सम्पत्ति धूल में मिल गई।

'लाख तदबीर एक तरफ।
एक तकदीर एक तरफ।।'

कहावत भाग्यवादी है।

अ०– कितना ही करो तकदीर के आगे सारी तदबीर, सारे उपाय व्यर्थ हो जाते हैं।

'लागी लगी तब लाज कहां?'

कहावत प्रेम–मुहब्बत हो जाने पर कही गई है।

अ०– जब प्रेम की लगन लग गई तो भला फिर शर्म किस बात की?

'लाचार क बिचार कुछ न होय।'

श०– लाचार–विवश, मजबूर।

किसी विवश आदमी पर कहा गया है।

अ०– जो विवश है, दीन–हीन है उसके भला विचार क्या हो सकते हैं? तुलसीदास के शब्दों में– जिमि आरत चित रहै न चेतू'। लाचार तो हमेशा ही दुखी रहता है। वह अपना कौन सा विचार दे सकता है?

'लाचारी पर्वत से भी भारी।'

अ०– विवशता मनुष्य के लिये अभिशाप है। वह बिताये नहीं बीतती।

'लाज कै आंख जहाज से भारी।'

अ०– शर्म आने पर आदमी की आंख ऊपर को उठ ही नहीं पाती।

'लाठी के हाथ मालगुजारी बेबाक'

श०– मालगुजारी–भूमिकर, जमीन का लगान, बेबाक– सम्पूर्ण भुगतान, अदायगी।

अ०– पहले जमाने में लाठी डंडे के जोर से जमीन का कर वसूल होता था। भय से काम हुआ करता है।

'लालच ले परलोक नसावा।'

श०– परलोक–स्वर्गलोक, नसावा–नाश होना।

कहावत लालच के ऊपर कही गई है कि लालच करना कितना खराब होता है।

अ०– लालच करने वाले का यह लोक तो बर्बाद होता ही है, मरने के बाद स्वर्गलोक भी बर्बाद हो जाता है।

'लावा मुंह बावा, रहिलै पानि पियावा।'

श०– रहिलै– चना, पानि– पानी, लावा– धान, मकई, जोन्हरी आदि का होता है। यहां धान के लावा के प्रति कहा है।

अ०– लावा तो फूला रहता है अतः उसे खाने पर मुँह भर जाता है किन्तु भूख नहीं मिटती है। चना से पेट भी भरता है और उसमें पानी भी खूब पिया जाता है।

'लाद दे लदाय दे लादनवाला साथ कै दे।'

जब कोई आदमी अपनी जिम्मेदारी किसी दूसरे पर करके चुपचाप बैठ जाता है तो कहावत कही जाती है।

अ०– कोई सामान दो तो उसे लाद दो, लदवा दो और लादने वाला भी साथ कर दो तो काम पूरा हो? जब सब काम दूसरा ही कर दे तो फिर तुम्हारा क्या काम है?

'लादै, पादै औ जौ भुआय,
सत्य न कहै चाहे जिय जाय।'

अ०– सामान लादने वाला, जंभाई लेने वाला और पेट से हवा निकालने वाला कोई कितना भी कहे उसे सही नहीं मानता है कि उसने ऐसा किया है।

'लाठी मारे काई नाहीं फाटत।'

कहावत उस समय कही जाती है जब अपनों के बीच किसी बात पर मतभेद हो जाय या कोई कहासुनी हो जाय।

अ०– लाठी मारने पर काई नहीं फटती है। वह फटकर फिर एक हो जाती है। कहावत एकता स्थिर करने के प्रति कही जाती है।

'लात क देवता बात से नहीं मनते।'

जो जिसका पात्र होता है उसकी आवश्यकता के अनुसार व्यवहार करना पड़ता है। जो आदमी मार–डांट का आदी होता है वह सीधी बात कहने पर नहीं मानता।

'लाग बसंत ऊख पकंत।'

श०– बसंत– माघ मास में आधे माह के बाद वसंत लगता है, पकंत– पकना।

अ०– कहा गया है कि अब वसंत ऋतु लग गयी है इसलिये ईख पकने का समय आ गया है।

'लाल पियर जब होय अकासा।
तब जानो बरखा की आसा।।'

अ०– जब आकाश में ललाई व पियरई छाने लगे तो समझो कि अब बरसात का समय आ गया है। कहावत लाक्षणिक है जो लक्षणों को देखकर कही गई है।

'लाख टका कहिके? कि तो लखिया की जेब मां खपा की जबान मां।'

दुनिया में जबानी जमाखर्च करने वाले बहुत से लोग होते हैं। अतः कहावत उन्हीं जबानी जमाखर्च वालों के प्रति कही गई हैं।

अ०– डींग हाँकने वाले की जबान में लाख टका है या फिर लखिया की जेब में है। लाख टका कोई बहुत बड़ी धनराशि नहीं है मगर लंतरानी हांकनेवाले के लिये तो बहुत बड़ी कीमत है ही।

'लाठी हाथ क भाई साथ क।'

अ०– लाठी हाथ में रहने पर काम आती है उसी प्रकार से भाई जो साथ या नजदीक रहता है, वही समय पर काम आता है।

'लाड़ला लड़का जुआरी, लांड़ली लड़की छिनाल।'

अ०– बच्चों को आवश्यकता से अधिक दुलार नहीं करना चाहिए। अधिक प्यार में पला पुत्र जुआरी, होता है और अधिक प्यार में पली पुत्री अवारा हो जाती हे।

'लावै दाम तो बनै काम।'

अ०– बिना पैसे के कोई काम संभव नहीं होता।

'लात मोर अहिबात – घूसा मोर चबेना।'

यह कहावत उस स्त्री के द्वारा कही जाती है जिसका पति या घरवाले हमेशा उसे मारते–पीटते रहते हों। वह सभी से अत्यन्त दुखी रहती हो।

अ०– उसका कहना है कि लात ही मेरा सुहाग रह गया है और मूंका–घूसा खाना ही मेरा पनपियाव (नाश्ता) हो गया है। यानि ससुराल में सदैव प्रताड़ित किया जाना।

'लाल गुदड़ी में नहीं छिपते।'

कोई भी गुण या कीमती वस्तु गंदे स्थान पर रहने पर भी छुपकर रह नहीं पाती।

अ०– लाल कभी दुरवस्था में रहकर नहीं छिपते।

'लाल क घोड़ा, खाय बहुत, चलै थोड़ा।'

अ०– जिस काम में आदमी का घाटा होता है वह उसे बहुत कम करना चाहता है।

अ०– लाल नामक व्यक्ति इसीलिये घोड़े को नहीं रखना चाहते हैं कि वह काम कम करता है और खाता बहुत ज्यादा है।

'लि'

'लिखतम के आगे बकतम नहीं चलतै।'

श०– लिखतम– लिखना, बकतम– बोलना, जबानी

अ०– लिखा–पढ़ी के सामने जबानी बात नहीं चल सकती है।

'लिखै मूसा पढ़ै ईसा।'

किसी की गंदी लिखावट के प्रति कहावत कही गई है।

अ०– लिखने को लिखते कुछ हैं और पढ़ते कुछ हैं।

'लिखै आवे न, मिटावै दुइनों हाथ।'

कहावत मूर्खों के लिये कही गई है।

अ०– लिखना तो एक अक्षर नहीं आता। दूसरा जो लिखे रहता है उसे सत्यानाश करना या मिटाना जरूर आता है।

'ली'

'लीपी पोती ओबरिया, पहिरी ओढ़ी मेहरिया।'

श०– ओबरिया– घर, मकान।

कहावत घर व नारी पर कही गई है।

अ०– जिस प्रकार से घर–द्वार साफ–सुथरा, लीप–पोत कर रखने में अच्छा व सुन्दर लगता है उसी प्रकार से नारी जब पहिर ओढ़कर साफ सुथरा रहती है श्रृंगार सहित तो अच्छी लगती है।

लीक छोड़ि तीनिहुं चलैं सायर, सिंह, सपूत।।

अ०– कवि, सिंह तथा सुपुत्र परंपरागत मार्ग से थोड़ा अलग चलते हैं।

'लु'

'लुगरी मां उजरी, बिटिया मां सुंदरी।'

श०– लुगरी– जनानी धोती।

कहावत सुन्दरता को लक्ष्य कर कही गई है।

अ०– धोती में सफेद धोती और लड़की में सुन्दर बेटी अच्छी होती है।

'लुहार के कूची अस कबो आग मां कबौ पानी मां।'

कहावत अस्थिरता पर कही गई है कि लोहार की कूची कभी आग के पास कभी पानी के पास मिलती है।

'लुहकारा कुत्ता पोंगा पकड़े।'

श०– लुहकारा– किसी पर धावा बोलने को उकसाना, पोंगा– पैर की गांठ के नीचे का हिस्सा, पिंडली।

जब कोई किसी से लड़ने के लिये इशारा करता है तो कहावत कही जाती है।

अ०– कुत्ते को ललकार दिया तो आकर पैर की पिंडली ही पकड़ लिया।

'लू'

'लूट कोयलों की मार बरछी की।'

अ०– परिश्रम और कष्ट अधिक, लाभ कम होना।

'लूट क मुसरे बहुत।'

अ०– लूटे–खसोटने से चाहे रद्दी माल भी मिले तो बहुत अच्छा है।

'लूट मां चरखा नफा।'

अ०– जबरन लूट कर लाये माल का चरखा ही मिला वही बहुत है। कहावत फायदे पर कही गई है।

'ले'

'लेआ जेठानी गगरी, हमहूँ तुहूं बरबरी।'

कहावत घरेलू आपसी बराबरी होने के कारण कही गई है।

अ०– ऐ जिठानी, मैंने पानी भर लिया अब पानी भरने की तुम्हारी पारी है क्योंकि हम तुम दोनों बराबरी पर हैं। दोनों देवरानी–जिठानी हैं। जहाँ भी बराबर व पट्टीदार का मामला पड़ता है वहीं पर कहावत लागू की जाती है।

'ले दे आटा कठौली में।'

अ०– किसी भी वस्तु को घुमा–फिरा कर अपने ही पास रखकर दूसरे को न देना।

'लेना एक न देना दो।'

अ०– न किसी से एक लेना और न किसी को देना।

'लेना न देना, गाड़ी भर चना तौल देना।'

जब कोई व्यर्थ की बातें करता है तो कहा जाता है।

अ०– न कुछ लेना है न देना है कहते हैं कि गाड़ी भर चने तौल दो। जबरन हक जाहिर करना।

'ले लुगरी चल चल डगरी।'

श०– लुगरी– धोती–कपड़े, गुदड़ी– पुआल को सीकर गरीब लोग बिछाने के लिये बनाते हैं। डगरी– डगर, रास्ता।

अ०– कहावत झगड़े के समय कही जाती है। ले अपनी लुगरी और चल दे अपनी डगर को मैके या जहाँ जाना हो जाओ।

'लेत देत मन संक न धरई।'

यह तुलसीदास जी की पंक्ति है जिसे लोग कहावत के रूप में प्रयोग करते है।

अ०– देते–लेते समय मन में शंका नहीं करनी चाहिए। जो शंकित नहीं रहते वे साफ मन के होते हैं। वे देने लेनें के समय कोई बेईमानी नहीं करते।

'लेता मरे कि देता मरे।'

कहावत कर्ज पर कही गई है।

अ०– या तो कर्ज लेने वाला मरेगा, या फिर देने वाला मरेगा। यानि लेने वाला जब देगा ही नहीं तो फिर देने वाले की शामत आयेगी और जब लेने वाला देगा तो फिर कर्ज़ अदायगी में उसकी नानी याद आयेगी।

'लो'

'लोहेव मां रहथि लोहारेव मां रहथि।'

कुछ लोगों का स्वभाव होता है कि वे दोनों तरफ रहते हैं यानि कि किसी के साथ में भी रहेंगे और दूसरे पक्ष में भी रहते हैं। ऐसे आदमी के प्रति कहावत कही गई है।

अ०– लोहे की ओर भी रहते हैं और लोहार की ओर भी रहते हैं। एक के सामने उसके जैसी, दूसरे के

सामने उसकी जैसी। थाली के बैंगन की तरह ढनगते रहेंगे।

'लोधइन का चइत लाग बा।'

श०– लोधइन– एक जाति। जब कोई गरीब या नासमझ स्त्री अनायास अन्न का दुरुपयोग करे तो कहावत सामने आती है।

अ०– लोधइन को चैत का माह लगा है। यानि कि चैत में अनाज मिलता है, खेत कटते हैं। जैसे गेहूँ, चना, मटर आदि अनाज मिलने पर कुछ जातियां ग़रूर से भर जाती हैं।

'लोवा फिर–फिर दरस देखावा।
बांये ते दाहिन मृग आवा।।'
भड्डर रिषि यह सगुन बतावै,
सिगरे काज सिद्ध होय जावै।।'

श०– लोवा–लोमड़ी, दरस–दर्शन, सिगरे–सारे, सिद्ध–पूरे होना

कहावत कवि भड्डर की शकुन के ऊपर कही गई है।

अ०– यदि यात्रा के समय लोमड़ी रास्ते में मिल जाय तथा बाई ओर से दाहिने को हिरन की पंगत जाती मिले तो रास्तें में ही समझ लो कि सभी काम पूरे हो जायेंगे। इस शकुन पर गोस्वामी जी ने लिखा है– 'लोवा पुनि–पुनि दरस देखावा, सुरभी सनमुख सिसुहिं पियावा। मृगमाला फिर दाहिन आई।' ऐसे शकुन यात्रा के लिये बड़े शुभकारक सिद्ध होते हैं।

'लोखरी क अस बिहान भा।'

श०– लोखरी– लोमड़ी, बिहान– सबेरा।

यह कहावत उन लोगों के ऊपर व्यंग्य में कही जाती है जो किसी काम को 'कल' पर टालते रहते हैं और उनका वह 'कल' कभी आता ही नहीं तथा अपना रहने का एक निश्चित स्थान नहीं बना पाते। यानि कि खानाबदोशों की तरह आज यहां तो कल वहां जिन्दगी बिताते रहने के आदी हो जाते हैं।

कहते है कि लोखरी रात में बसेरा लेने के पहले बड़ा शोर मचाती है तो लोगों का यह अनुमान हुआ कि यह रोज बसेरे के लिये परेशान होती है। मानों रोज कहती है कि अब जैसे ही सुबह होगी वैसे ही अगले बसेरे का इन्तजाम कर लूंगी। मगर अगले रोज वह फिर अपने बसेरे का स्थान निश्चित नहीं कर पाती है।

'लोमड़ी क शिकार करै जाय तो शेर का सामान लै के जाय।'

खतरे का काम हो या चाहे आसान काम क्यों न हो, सामान पूरा होना चाहिए। न जाने कब किस वस्तु की आवश्यकता पड़ जाय।

अ०– शिकार चाहे छोटी सी लोमड़ी का ही हो मगर सामान शेर के शिकार की तरह साथ रखना जरूरी है। किसी कार्य में साधन के प्रति ब्रहुत सावधान रहना चाहिये।

'लोढ़ा हँस कै करे बड़ाई, हम हैं महादेव के भाई।'

जब कोई छोटा आदमी किसी बड़े या काबिल आदमी से अपना सम्बन्ध जोड़कर उतना ही सम्मान लेना चाहे तो कहावत कही जाती है।

अ०– सिल का लोढ़ा अपनी बड़ाई में कहता है कि हम भी महादेव शंकर जी के भाई हैं।

'लोहे की मंडी में मार ही मार।'

जब किसी स्थान पर मारपीट की बातें हों या मारपीट होती रहती है तो कहावत कहते हैं।

अ०– लोहे के बाजार में जायें तो देखने में आता है कि वहां हथौड़ा ही हथौड़ा चल रहा है। यानी जो स्थान जिस वस्तु का होता है वहां का माहौल भी वैसा होता है।

'लोहे को लोहा काटता है।'

कहावत का सारांश है 'जैसे को तैसा'। यानी जो जैसा होता है वह वैसे ही आदमी से दबता है। बात अपनी जगह पर बिलकुल सही है कि लोहे को लोहा ही काटता है दूसरी वस्तु से लोहा कट ही नहीं सकता है।

'लौ'

'लौंड़ी की जाति का, रंडी क साथ का।

भेड़ क लात का, औरत क बात का।।'

अ०— किसी दासी की बात का क्या एतबार कि कौन सी जाति की है? रंडी के साथ रहने में बुराई छोड़ भलाई कहां है? भेड़ की लात कब लगे यह निश्चित नहीं है। स्त्री की बात का विश्वास नहीं करना चाहिए।

'लौट के बुद्धू घर को आये।'

घर से बाहर जाने वाला किसी काम से यदि घर से बाहर गया हो और असफल होकर घर को आये तो कहावत कही जाती है।

'लं'

'लंका मा सब बावनै हाथ।'

कहावत तब कही जाती है जब किसी विशेष स्थान के लोग एक ही तरह के हों।

अ०— लंका में कोई किसी से कम नहीं है। सभी एक से एक भयंकर बावन हाथ के शरीर वाले हैं।

'लंगड़ी कट्टो आसमान मं दिमाग।'

जब कोई ऐबी आदमी या औरत अपनी हीनता के बावजूद भी घमंडी हो तो यह कहावत कही जाती है।

अ०— एक तो लंगडी दूसरे कटखनी, उस पर दिमाग तो देखो जो आसमान पर चढ़ा रहता है।

'लंगड़े लूले गये बरात, भात कि बिरिया खायें लात।'

तथा

'लंगड़े लूले गये बरात, दो—दो जूता दो—दो लात।'

उपरोक्त दोनों ही उक्तियां बच्चों की हैं।

अ०— लंगड़े लूले जब शुभ काम के समय शादी, ब्याह में जायेंगे तो और होगा ही क्या, यही सलूक उनके साथ होगा ही कि दो—दो जूता लात खायेंगे।

'लंगड़ी घोड़ी मसूर क दाना।'

अ०— किसी अयोग्य व्यक्ति को सम्मान देना।

'लुंज नाउन नह काटै कि महाउर देय।'

श०— लुंज—जिसके हाथ निर्जीव हो गये हों। लकवा की मारी नाउन। महावर—पैरों में रंग लगाना।

कहावत किसी कमजोर दुर्बल स्त्री पर कही गई है जिसे तनिक सा काम भी भारी मालूम दे।

अ०— जिस नाउन के हाथों में दम नहीं है वह क्या—क्या करे? नाखून काटे कि पैर में महावर दे।

'व'

'वकीलों का हाथ पराई जेब मां।'

श०— वकील—अधिवक्ता।

कहते हैं कि वकील अपने मुवक्किलों से पैसा बहुत लेता है। मेहनताना के रूप में या मुकदमें की पेशी के समय तथा अन्य कामों में भी वकील मुवक्किलों से वसूलने के चक्कर में रहता है, कहावत उन्हीं पर कही गई है।

अ०— वकीलों का हाथ किसी न किसी मुवक्किल के जेब में ही रहता है कि उसमें भरपूर पैसा हो कि ले लें।

'वह किसान है पातर, जो बरदा रक्खे गादर।'

श०— पातर—गरीब, दुर्बल, पैसे से हीन। गादर—जो बैल चलने के साथ ही बैठ जाता हो।

अ०— वे किसान कमजोर होते हैं जो गादर बैल रखते हैं।

'वह सोने को जारिये जासों टूटै कान।'

कोई भी वस्तु हो उससे यदि कष्ट मिलता है या अपने अनुकूल न हो तो कितनी भी कीमती क्यों न हो उसे छोड़ देना चाहिए, उसका त्याग कर देना ही अच्छा होता है।

कहावत भी इसी आशय की है।

अ०— उस सोने को जला दो जिससे कान कटने की संभावना हो।

'वहि दाता से सूम भला जो ठाढ़ेन देय जवाब।'

श०— दाता—दानी, देने वाला। सूम, कंजूस, पैसे को दांतों से पकड़ने वाला। ठाढ़ेन—तुरंत। जवाब—उत्तर।

कहावत उस समय कही जाती है जब कोई आदमी किसी को आशा देकर भी उसका काम न करे।

अ०— उस देने वाले से तो वह भला है जो तुरंत बिना

किसी चीं चपड़ के नकार दे कि मैं यह काम न कर पाऊंगा। किसी को झूठी आशा देना ठीक नहीं होता।

'वही मियां दर दरबार, वही मियां चूल्ह दुआर।'

एक ही व्यक्ति के ऊपर घर बाहर दोनों ओर की जिम्मेदारी हों तो कहावत कही जाती है।

अ०– जो व्यक्ति दरबार में हैं और वही घर के चूल्हे में भी काम करते हैं। सभी तरफ एक ही आदमी की जिम्मेदारी कां होना।

'वक्त गुलाम और वक्त बादशाह है।'

कहावत समय की गति के प्रति कही गई है कि किसी का समय सदैव एक सा नहीं रहता। कभी अनुकूल होने पर काम बनता रहता है और प्रतिकूल होने पर बर्बाद कर देता है।

अ०– समय से बढ़कर दुनिया में कोई भी बलवान नहीं है। समय चाहे तो राजा को रंक और रंक को राजा बना दे।

'वखत का रोउब बेवखत के हंसे से भला है।'

समय के प्रति कहावत कही गई है।

अ०– समय का रोना असमय हंसने से कहीं अच्छा है। इसलिये कि गम के समय रोना ही उचित होता है। बृंद कवि के शब्दों में–

'नीकी पर फीकी लगे बिन अवसर की बात।
जैसे बरनत युद्ध में रस शृंगार की बात।।

अतः अवसर के हिसाब से रोना–गाना भला लगता है।

'वख़त परै पै जानिये को बैरी, को मीत।'

कहावत कष्ट के समय मित्र और शत्रु की पहचान पर कही है।

अ०– जब दुःख या बुरे दिन आयें तभी जाना जा सकता है कि कौन मित्र है कौन शत्रु है?

'वह कौन सी किसमिस जेमा तिनका नहीं।'

श०– किसमिस–मेवा। तिनका–तृन, खर।

कहावत ऐसे समय कही जाती है जब यह कहना होता है कि कौन आदमी है जिसमें ऐब नहीं है।

अ०– ऐसी कोई किसमिस नहीं जिसमें खर की डांड़ी न लगी हो। जो स्वभाविक है उसे हटाया नहीं जा सकता है।

'वह गुड़ नहीं जहां चिउंटी लागै।'

कहावत बहुधा कंजूसों के लिये कही जाती है जिससे खर्चा कराना कठिन हो।

श०– यहां पर वैसा गुड़ नहीं है जिसे चींटियाँ खा सकें।

'वह तिरिया तो नित सुख पावै,
जा का पति तिरिया को चावै'

श०– तिरिया–स्त्री। नित–सदैव। चावै– चाहे, माने।

अ०– वह स्त्री हमेशा सुखी रहती है जिसका पति उसे चाहता है।

'वह नारी तो दिन–दिन रोवै,
जा का पती निखट्टू होवै।'

अ०– जिस स्त्री का आदमी काम–धाम न करे, पत्नी को न माने उसकी स्त्री हमेशा ही रोती रहती है।

'वह राजा मरता भला, जिसमें न्याव न होय।
मरी भली वह स्त्री, लाज न राखय जोय।।'

कहावत सिद्धांतवादी है।

अ०– वह राजा मरने के लायक है जो अपने राज्य में न्याय न करे और वह स्त्री मरने के काबिल होती है जो अपनी लज्जा को न रख सके। कहते हैं लज्जा ही स्त्रियों का आभूषण है।

'वही आपन जो अपने काम आवै।'

अ०– जो समय पर अपने काम आ जाय,वही अपना होता है।

'वही राग गाना, वही बजाना।'

अ०– जब कोई आदमी एक ही बात को बार–बार कहता रहे तो कहावत कही जाती है।

'वही मनुष जो दे सके 'मानुष को सिख ज्ञान।
जो ना राखे लोभ धन, धरे हाथ पर जान।।'

अ०– वही मनुष्य सही है जो औरों को ज्ञान दे तथा मन में लोभ आदि को स्थान न दे।

'वही तीन बीसी, वही उम्र साठ।
वही चारपाई, वही पड़ी खाट।।'

यानी जो दशा पहले थी वही पुरानी स्थिति अब भी है।

'वाको अच्छा मत कहो जो तेरे घर आय।
करे बुराई आन की, अपनी करे बड़ाय।।'

अ०– स्पष्ट है।

'वा'

'वाकी गति वही जानैं।'

अ०– जो जैसा होता है अपनी गति वही जान सकता है दूसरा नहीं बता सकता कि कौन कैसा है? उसी पर कहावत कही जाती है।

'वा नर से मत मिल रे मीता।
कबहूं मिरग कबहूं हो चीता।।'

जिस आदमी की बात का विश्वास न हो, जो कहे कुछ करे कुछ, जो स्वयं ही अनिश्चित ढंग से रहता हो उससे कभी मित्रता नहीं करनी चाहिये। वह कभी हिरन की तरह असहाय बन जाता है तो कभी चीते की तरह हिंसक।

'वा तिरिया तो एक दिन भागे।
जे कै आंखि कबौ ना लाजै।।'

श०– तिरिया–स्त्री। भागे–दूसरे आदमी के साथ चली जाय। लाजै–शर्म।

अ०– जिस स्त्री की आंखों में शर्म–हया न हो वह कभी न कभी पराये पुरुष के साथ अवश्य जाती है।

'वायु चलेगी उत्तरा, मांड़ पियेंगे कुत्तरा।'

कहावत वायु और धान की फसल के सम्बन्ध पर कही गई है।

अ०– यदि उत्तरा हवा चलेगी तो धान की फसल इतनी अच्छी होगी कि कुत्ते तक चावल का मांड़ पियेंगे।

'वा तिरिया संग बैठ न भाई।
जाको जगत कहे हरजाई।।'

श०– हरजाई–व्यभिचारिणी, चरित्रहीन नारी।

अ०– ऐसी स्त्री के पास कभी भी मत बैठो जिसे संसार चरित्रहीन कहे। कहा है कुलटा नारी जहर की झाड़ी।

'वा पुरखा की दिन–दिन ख्वारी।
जाकी तिरिया हो कलहारी।।'

श०– कलहारी–कलह करने वाली। ख्वार–खराबी।

अ०– जिसकी स्त्री कलह, प्रपंच, झगड़ा मचाने वाली हो उसके आदमी की दिन पर दिन बड़ी दुर्दशा होती है।

'संका डाइन, मंसा भूत।'

अ०– शंकालु होना मनुष्य के हित में नहीं है और उस पर किसी के प्रति बुरा करने की सोचना और भी भयानक है।

'सकल भूत कै, नाव अलबेलेलाल।'

कहावत नाम की विडंबना पर कही गई है।

अ०– सूरत–शक्ल तो भूतों के जैसी है और नाम है अनोखा, अलबेला।

'सरम के बहुरिया भूखी मरै।'

अ०– कभी–कभी शर्माना हानिकारक भी हो जाती है। कोई नई आई बहू इतना शर्माती है कि भूखी रह जाती है मगर खाने को नहीं कह सकती है।

'सहर क सलाम, दिहात का दाल–भात।'

अ०– शहरों में अभिवादन का दिखावा रहता है मगर देहात में लोग अभिवादन तो करते ही हैं साथ ही स्वागत भी करते हैं।

'सहर मां ऊंट बदनाम।'

जब कोई आदमी बदनाम हो जाता है तो कहावत कही जाती है कि शहर भर में यही ऊंट बुरा है।

'साकिर क सक्कर, नीच क टक्कर।'

अ०– जो भला आदमी होता है उसे तो मिठाई मिलती है और जो नीच होता है उसे धक्के दिये जाते है।

'सखी न सहेली, हम भली अकेली।'

जो स्त्री अकेले ही खाना व रहना चाहती है उसके प्रति कहावत कही जाती है।

अ०– मैं साथ जोड़ना पसन्द नहीं करती हूं। मैं अकेली ही अच्छी रहती हूं।

'सगरी उमर तो पाप कमाया, जनम न कीना पुन्न।
लेखनहारा आय गा तो तन, मन होइगा सुन्न।।'

श०– सगरी–सारी। कमाया–बटोरा, इकट्ठा किया। जनम–जन्म भर। पुन्न–पुण्य, दान। लेखनहारा–लेखा लेने वाला, भगवान। सुन्न–शून्य, निर्जीव सा। कहावत दान, पुण्य करने पर उद्धृत की गई है।

अ०– जन्म भर तो पाप की कमाई की और जब अंत समय जीवन के कर्मों का लेखा–जोखा होने लगा, अंतिम यात्रा के समय शरीर की दुर्गति होने लगी तो मुंह से आवाज न निकली।

'सगे बिन सगाई कस, भले बिन भलाई कस।'

श०– सगे–अपने खास रिश्ते–नाते के लोग। सगाई–विवाह के पूर्व का छेका, रिश्ता पक्का करना।

कहावत सगे सम्बन्धियों के लिये कही गई है।

अ०– जब अपने सगे सम्बन्धी नहीं मौजूद हों तो फिर रिश्ता कैसे पक्का हो और जब भले आदमी न हों तो उनके साथ भलमनसाहत कैसे हो सकती है?

'सच कहना आधी लड़ाई मोल लेना होता है।'

अ०– बात सही है कि किसी के प्रति यदि सही बात कही जाय तो उससे बात का बतंगड़ हो जाने की सम्भावना रहती है। सच तो सच ही है और कटु सच का कहना तो और भी संकट की स्थिति प्रकट कर देता है।

'सांच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप।'

अ०– यह पंक्ति महात्मा कबीरदास की है जिसको उपदेशात्मक ढंग से लोग बच्चों को बताते है कि सच बोलने से बढ़कर कोई पुण्य नहीं होता और झूठ बोलने से बढ़कर कोई पाप नहीं होता है।

'सगी सासु मोरि अइसी तइसी, धोबहन दीदी पंइया लागूं।'

जब कोई घर का आदमी घर के लोगों का अपमान करता है या पूर्ण सम्मान नहीं देता तो कहावत कही जाती है। यह कहावत स्त्रियों के प्रति कही गई है।

अ०– घर की बहू अपनी सास का तो अपमान करती है और घर में धोबिन जो कपड़े धोती है उससे दीदी कहकर पैलगी करती है। वही कहावत हुई–

'घर के देव ललचाय बाहेर कै पूजा मांगै।'

'समरथ कहं नहिं दोस गोसाईं।
रबि, पावक, सुरसरि की नाईं।।'

श०– समरथ– जो सबल हो, बलवान। रवि–सूर्य। पावक–आग। सुरसरि–गंगा नदी। कहावत किसी बलवान के सामर्थ्य के प्रति कही गई है।

अ०– किसी बलवान व्यक्ति को उसके किसी कर्म के लिये दोषी नहीं कहा जाता है, उससे कितना ही कष्ट क्यों न हुआ हो। जैसे सूर्य के ताप से प्राणी व्याकुल हो जाते हैं पानी सूख जाता है, हवा गर्म हो जाती है, आग से कितने ही प्राणी और सम्पत्ति जल जाती है तथा गंगा में कितने ही मुर्दे तथा गंदगी डाली जाती है किन्तु वह सदा पवित्र समझी जाती है। सूर्य और अग्नि पूजित होते हैं।

'सन्मुख छींक लड़ाई भाखै।'

कहावत यात्रा के शकुनापशकुन पर या किसी शुभ काम के समय छींक का क्या प्रभाव होगा, पर कही गई है।

अ०– यदि यात्रा के समय या किसी शुभ कार्य के समय सामने छींक हो तो निश्चय ही संकट संभावना बनती है।

'सावन सुक्ला सत्तमी बादर बिजुरी होय।
करि खेती पिय भवन में निश्चिंत रहिये सोय।।'

श०– सरवन–सावन। शुक्ल–उजाला पाख। भवन–घर। निश्चिंत–चिंतारहित।

कहावत वर्षा के लक्षणों को देखकर कही गयी है।

अ०– यदि आकाश में सावन की उजाली सप्तमी को बादल–बिजली हों तो स्त्री पति से कहती है कि खेती करने के बाद आराम से घर में सोओ क्योंकि खेती बहुत अच्छी होगी।

'सरि गलि जाय गोतिया न खाय।
गोतिया के खाये अकारथ जाय।।'

श०– गोतिया–गोत्र के पट्टीदार, भाई बिरादरी। अकारथ–बेकार, व्यर्थ। कहावत अपने भाई, पट्टीदारों के प्रति कही गई है।

अ०– चाहे वस्तु सड़गल कर खराब हो जाये, उसे फेंक ही क्यों न देना पड़े मगर अपने गोत्र के लोगों को नहीं खिलाना चाहिए।

'सरग न भा मकरी क जाला होइगा।'

कहावत उस समय कही जाती है जब कोई आदमी अपने आगे ईश्वर की गति को नकार देता है या बिना भय के भगवान को उल्टा–सीधा मानने लगता है।

अ०– स्वर्ग न हो गया जैसे कि मकड़ी का जाला हो गया कि अंतरिक्ष में कहीं झूलती हुई पृथ्वी की तरह स्थित होगा।

'सच्चे का बोलबाला झूठे का मुंह काला।'

अ०– सच्चा तो सच्चा ही होता है उसके मुंह में चंदन लगता है और झूठ बोलने वालों को हमेशा ही झेंपना पड़ता है।

'सइंया भये कोतवाल, अब डर काहे का।'

कहावत कोई अपनों को पद मिलने या महत्वपूर्ण स्थान पर पहुंचने पर कही जाती है।

अ०– पहले के जमाने में कोतवाल होना गवर्नर होने से कम नहीं था। पत्नी कहती है कि अब तो मेरे पति कोतवाल हो गये हैं। अब कौन मुझे पकड़ सकता है? अब मुझे किसी का डर नहीं है।

'सत के चेरि लच्छमी।'

अ०– जिसके पास सत्य वचन है उसी के यहां सम्पन्नता होती है।

'सबै पठान मेख को गाड़य।'

जहां पर सभी अपने को महत्वपूर्ण समझते हैं तो फिर काम कैसे हो?

अ०– सभी तो अपने को पठान (एक मुसलमान जाति होती है) समझतें हैं तो यहां पर हल में लगने वाली लकड़ी यानी मेख कौन गाड़े।

'सनि आदित औ मंगर, पौस अमावस होय।
दुगुना, तिगुना चौगुना, अनाज महंगा होय।।'

कहावत ज्योतिष विचार के अनुकूल उद्धृत की गई है।

अ०– यदि शनिवार, इतवार और मंगलवार पूस माह के अमावस को पड़े तो समझो कि अनाज ज्यादा से ज्यादा महंगा होने की संभावना होती है।

'सस्ता रोवै बार–बार, महंगा रोवै एक बार।'

जब कोई वस्तु सस्ती समझकर ली जाय और वह जल्दी ही खराब हो जाती है, कहावत इसी पर है।

'सरकार के मुंह मां गा पइसा।
भंइस के मुंह मां गा टटैला फिर नहीं लउटतै।।'

कहावत तब कही जाती है जब सरकारी स्तर पर कोई काम बिगड़ जाये या किसी प्रकार का व्यक्तिगत सामान कोई हड़प ले और फिर उसके मिलने की कोई आशा न हो।

श०– टटैला–टाटी। ज्वार–बाजरे का सूखा डंठल।

अ०– सरकार के यहां दिया गया पैसा या कर्ज का बाकी पैसा तथा भैंस के मुंह में गयी टाटी का चारा भला कैसे वापस आ सकता है?

'सब जगह बकरी कटत, हिंया सेर कटत।'

जब कोई वीरता पूर्ण कठिन कार्य हो तो कहावत कही जाती है।

अ०– सब जगह तो बकरी कटती है जो स्वाभाविक है। मगर शेर का काटा जाना कठिन है। यानी कुछ ऐसी बातें होती हैं जो आश्चर्यजनक हैं।

'सबसे भले मूढ़ जिनहिं न ब्यापै जगत गति।'

श०– मूढ़–मूर्ख, बेवकूफ। जगतगति–संसार की अच्छाई–बुराई।

कहावत उन ज्ञानशून्यों के प्रति कही गई है जिन्हें संसार की अच्छाई–बुराई से कोई मतलब ही न हो। आग लगे चाहे पानी बरसे उनके सामने जो भी

स्थितियां आती हैं जैसे–तैसे सहन कर लेते हैं जैसे सब स्वभाविक ही हो।

'सग सास मोर ऐसी तैसी।

पितिया सास मोर पाद ऐसी।।'

श०– सग सास– अपने पति की मां। ऐसी–तैसी– एक प्रकार की गाली भी है और जिसकी कोई परवाह न की जाय। पितिया सास–पति की चाची।

कहावत उस समय बहू कहती है जब घरवालों की उपेक्षा करना चाहती है।

अ०– सगी सास की तो परवाह ही नहीं है और चचिया सास की तो क्या बिसात?

'सबसे सेवक धर्म कठोरा।'

यह पंक्ति गोस्वामी जी की है। लोग सेवा भाव के प्रति शिक्षा के तौर पर कहते हैं।

अ०– सेवा का काम सबसे कठिन होता है। लक्ष्मण जैसा सेवक की तुलना में आज कौन हो सकता है? बनवास तो राम को हुआ था लक्ष्मण को नहीं किन्तु वन में राम की १४ वर्ष सेवा करने ही वे भी साथ गये। सेवा–साधना के लिये हमारे भारतीय इतिहास में लक्ष्मण जी का चरित्र तो प्रमाणस्वरूप है।

'सब तीरथ बार–बार गंगा सागर एक बार।'

अ०– ऐसा कहा गया है कि और तीर्थ स्थलों में तो बार–बार जाया जाता है मगर गंगासागर केवल एक ही बार जाना चाहिए। एक बार में ही समस्त पुण्य मिल जाते हैं।

'सरा–सरा जोलाहा पियाज रोटी खांय।'

जब कोई वस्तु लोग इस्तेमाल करने में अधिकता दिखाते हैं या प्रयोग में लाते रहते हैं तो कहावत कही जाती है।

अ०– मामूली से मामूली आदमी वस्तुओं को खा रहे हैं तो बड़े आदमी की क्या बात है।

'सरी सास गली पतोहू बिन करिहांव की नंद।'

श०– सरी–एकदम बुड्ढी। गली– बहुत ही ज्यादा लुंज–पुंज हो जाना। बिन करिहांव–बिलकुल ही ताकत का न होना। बैठ न पाना।

कहावत घर के सदस्यों के प्रति तब कही जाती है जब घर में सभी की हालत इतनी बिगड़ी हो कि कोई काम ही करने लायक न हों या काम ही न कर पाने का स्वांग रचें।

अ०– सास ऐसी सड़ी सी है, बहू गली है, कमजोर नंद है कि उसका बैठ पाना ही कठिन है। सभी के ऊपर व्यंग्य किया गया है।

'सबहिं नचावत राम गोसाईं।'

कहावत उस समय कही जाती है जब किसी को अत्यंत परेशानी का सामना करना पड़ता है। ईश्वर के आगे मनुष्य की कोई कारीगरी नहीं चल पाती। मनुष्य स्वेच्छा से नहीं ईश्वर की इच्छानुसार ही अपने कृत्य सम्पन्न करता है।

अ०– पंक्ति तो मानस की है लोग समयानुसार कहावत के रूप में कहते हैं कि भगवान ही दुनिया को नचा सकते हैं। राम के आगे किसी का कोई जोर नहीं चलता कहा है– 'विधि गति अति बलवान'। समय बड़ा बलवान होता है।

'सजन बिन सिंगार कैसा।'

अ०– स्पष्ट है।

'सज्जन जन चित ना धरै दुर्जन जन के बोल।

पाहन मारै आम में तउ फल देत अमोल।।'

श०– सज्जन–सत्पुरुष, भली प्रकृति के लोग। जन–मनुष्य। चित–मन में। दुर्जन–बुरे आदमी, दुष्ट प्रकृति के आदमी। पाहन–पत्थर, ईंटा। अमोल– अमूल्यवान।

अ०– सज्जन पुरुष किसी दुष्ट आदमी की बात की परवाह नहीं करते। उसी प्रकार से जैसे आम के पेंड़ पर कितना भी कंकड़, पत्थर मारो वह बहुत सुंदर व मीठा फल ही बदले में देता है।

'सच मत छांड़ो हे पिया, सत छाड़े पत जाय।

सत की बांधी लक्ष्मी, फेर मिलेगी आय।।'

श०– सत–सत्य। लक्ष्मी–सम्पदा। पत–इज्जत।

अ०– पत्नी का कहना है कि हे पिया, सच कभी मत छोड़ो सच को छोडने पर इज्जत तो जाती ही है घर में धन सम्पत्ति की भी हानि होती है। घर की सम्पदा

सच की दासी है सच रहेगा तो लक्ष्मी फिर से वापस आ जायेगी।

'सतवंती कै लाज बहु, छिनारी क बतबढ़।'

श०– सतवंती–सती स्त्री, पतिव्रता नारी। छिनारी–दूसरे पुरुषों से प्रेम करने वाली स्त्री। बतबढ़–बातों को बढ़ा–चढ़ाकर बोलने वाली, बात में बात बनाने वाली, झूठमूठ का फरेब गढ़ने वाली।

अ०– पतिव्रता नारी की लज्जा ही उसका सबकुछ है। और छिनाल स्त्री के पास बातें बनाने के लिये सबकुछ होता है।

'सत्य का हारा सदा गया मारा।'

अ०– जो मनुष्य सच बोलने में हार जाता है यानी कि झूठ बोलता है वह सदा ही मात खाता है।

'सती कूच, भुजंग मणि, केसरि केस, गजदंत।
सूर कटारी, बिप्र धन, हाथ लगे जब अंत।।'

श०– सती–पतिव्रता स्त्री। कुच–छाती, स्तन। भुजंग मणि–सांप की मणि। केसरि–सिंह। केस–बाल। सूर–वीर। कटारी–तलवार, कटार, जो युद्ध के अस्त्र होते हैं। बिप्र–ब्राह्मण। हाथ लगे–मिले। अंत–आखिरी समय में। मरणोपरांत।

कहावत सामूहिक रूप से कई विषयों के ऊपर कही गई है।

अ०– सती नारी का स्तन, सर्प के सिर पर की मणि, सिंह के सिर का बाल, हाथी के दांत, वीर की कटार, ब्राह्मण का धन तभी मिलता है जब वे सब मर जाते हैं। जीते जी ये वस्तुयें सुलभ नहीं हो पाती हैं।

'सत्तर मूस खाय के बिलार भई भगतिन।'

बुरे कामों को करते हुए धर्मात्मा बनना। जब कोई आदमी धोखा देता है तो कहावत कही जाती है।

'सदा न फूले केतकी, सदा न सावन होय।
सदा न जीवन थिर रहै, सदा न जीवे कोय।।'

अ०– स्पष्ट है।

'समय के फेर ते सुमेरु होय माटी को।'

श०– समय के फेर–समय के बदलाव। सुमेरु–सुमेरु पर्वत।

कहावत वख्त के ऊपर कही गई है कि समय किसी का कभी एक सा नहीं रहता है।

अ०– समय के बदलाव से सुमेरु पहाड़ जो सोने का है वह भी मिट्टी का हो जाता है।

'सकल न सूरत माटी कै मूरत।'

अ०– न शक्ल है न सुंदरता है, बस मिट्टी की मूर्ति सी लगती है। यानी किसी काम की न होना। कहावत किसी कुरुपा नारी पर उसकी किसी कटु उक्ति पर उग्र होकर कही गई है।

'सन घना बन बेगरा, मेढक फन्दे ज्वार।
पैर–पैर पर बाजरा, करै दलिद्र पार।।'

श०– सन–सनई, जिससे रस्सी बनाई जाती है। बन–कपास–बेगरा– दूर–दूर। फन्दे–फासले। पैर–पैर के बराबर।

कहावत घाघ कवि की खेत बोने के प्रति कही गई है।

अ०– सन पास–पास, कपास–दूर–दूर, ज्वार मेढक के उछलने तक यानी निकट तथा बाजरा एक कदम की दूरी पर बोया जाय तो खेती बहुत अच्छी होगी। अनाज खूब मिलेगा।

'सवा सेर बीघा साँवा मान। तिल्ली, सरसों अंजुरी जान।।'
बर्रै कोदौं सेर बोआओ डेढ़ सेर बीघा तीसी नाओ।।'

श०– सांवा–एक प्रकार का मोटा अनाज है। कोदौं–मोटा अनाज। तीसी–अलसी।

अ०– खेत में एक बीघा में सवासेर सांवा, तिल्ली व सरसों एक अंजुरी, बर्रै और कोदों एक सेर, अलसी एक बीघे में डेढ़ सेर बोना चाहिए।

'सबका हर तर, जो खसम सिर पर।'

अ०– खेती संभालने के लिये यदि अपना मर्द घर पर हो तो सबका हल कितना भी होगा, कैसा भी संकट हो, वह सब कुछ संभाल लेगा। कोई चिंता करने की आवश्यकता नहीं है।

'समथर जोते, पूत चलावै लगते जेठ, भुसौला छावै।
भादों मास उठै जो गरदा, बीस बरस तक जोतो बरदा।।'

श०— समथर—बराबर। भुसौला—भूसा रखने का घर। कहावत घाघ की है जो बैलों की सेवा के ऊपर कही गई है।

अ०— खेत यदि बराबर का हो, अपना ही बेटा बैलों को चलावे, जेठ लगते ही भुसौले का ऊपर छा ले ताकि बैलों के खाने को भूसा अच्छा मिले। भादों मास में भूसे का गर्द उठे तो बैलों को बीस वर्षों तक हल में जोता जा सकता है।

'सरसे अरसी, नीरस चना।'

अ०— ठंडे खेत में अलसी और सूखे खेतों में चना बोना चाहिए।

'सधुवै दासी, चोरे खांसी, प्रेम बिनासै हांसी।
घघ्घा उनकी बुद्धि बिनासै खांय जो रोटी बासी।।'

श०— सधुए—साधु। दासी—चेरी, सेविका। बिनासै—नाश करना।

अ०— साधु को दासी, चोर को खांसी, प्रेम को हंसी, नाश करती है। घाघ कवि का कहना है कि जो बासी रोटी खाता है उसकी बुद्धि का नाश होता है।

'सबका कर, हरि से डर।'

अ०— कहावत आस्तिक बनने व भलाई करने के लिये कही गई है। यानी कि सबकी भलाई करो और भगवान से डरो।

'सर्व तपै जो रोहिनी, सर्व तपै जो मूर।
परिवा तपै जो जेठ की उपजै सातो तूर।।'

अ०— रोहिणी नक्षत्र पूर्ण रूप से तपे, मूल भी पूरी तपे और जब जेठ परिवा तपे तो समझो कि सातों प्रकार के अनाज होंगे।

'सगुन सुभासुभ पास हो, अथवा होवै दूर।
दूरि से दूरि निकट से जल्दी, समझो फल भरपूर।।'

अ०— शुभ या अशुभ फल पास हों या दूर हो, देर—सबेर परिणाम अवश्य मिलता है।

'सन्मुख आवै जौ नौ नार।
कहै भड्डरी अशुभ बिचार।।'

अ०— कहावत कवि भड्डरी की है। यानी यदि राह में नौ स्त्री मिलें तो अशुभ होता है।

'सन्मुख छींक लड़ाई भाषै।
पीठ पाछिली सुख अभिलाषै।।'
छींक दाहिनी धन को नासै।
बाम छींक सुख सदा प्रकासे।।
ऊंची छींक सदा सुख जानो।
नीची छींक अधिक भय मानों।।

कहावत छींक विचार पर उधृत की गई है कि कहां की छींक का क्या असर होता हैं?

अ०— सामने की छींक से झगड़ा होने की संभावना होती है। पीठ पीछे की छींक अच्छी मानी गई है। दाहिने हाथ की छींक धन की हानि करती है। बाम भाग की सुखदाई होती है। ऊँची छींक अच्छी तथा नीची छींक नुकसान देह मानी गई है।

'सनि चक्कर की सुनिये बात।
मेष राशि भुगतौ गुजरात।।'

कहावत शनि देवता की गृहदशा पर कही गई है। यानी शनि की कुदृष्टि मेष राशि पर हो तो परदेश जाना तथा कष्ट उठाना पड़ता है।

'सरग से गिरा खजूरी मां अंटका।'

कोई काम होते—होते यदि बीच में रुक जाता है तो कहते हैं।

अ०— ऊपर से किसी प्रकार से नीचे को आया भी तो आकर खजूर के पेड़ पर रुक गया।

'सब दढ़िजरा तो चूल्हा के फूंकै।'

श०— दढ़िजरा—दाढ़ी रखने वाले।

कहावत उस समय लागू होती है जब काम को करने वाला कोई तैय्यार न हो। सभी एक न एक समस्या बतला दें।

अ०— सभी लोग तो दाढ़ी रखे हैं तो भला फिर चूल्हा कौन जलावे?

'सबके गोड़वा धोवै नउनिया, आपन धोवय लजाय।'

अपना कार्य करने में किसी को लज्जा लगे या काम में विलम्ब हो तो कहावत कही जाती है।

अ०– नाइन सभी का पैर तो धोती है मगर अपना ही पैर धोने में शर्माती है या अपना ही पैर धो नहीं पाती।

'सब रस नोनै आय।'

जहां पर नमक का महत्त्व बताना होगा या फिर किसी वस्तु में नमक ही न पड़ा हो तो कहते हैं।

अ०– सारा स्वाद खाने के नमक में ही है। बात सही है, किसी भी साग, सब्जी, दाल आदि में नमक न पड़े तो उसमें स्वाद ही क्या रह जाता है?

'सकल भलै मिलै दुइ आदमी कै, अकिल नहीं मिलतै।'

श०– सकल–शक्ल, सूरत। अकिल–बुद्धि।

इस कहावत से संस्कृत की एक कहावत स्मरण हो आई है–

'मुण्डे–मुण्डे मतिर्भिन्ना' यानी कि हर आदमी की बुद्धि में अंतर होता है। सभी के विचारों में, सोचने–समझने में अंतर होता है। इसी बात को लेकर कहावत भी चरितार्थ की गई है।

अ०– दो आदमियों की शक्ल तो भले ही मिल जाय मगर अक्ल कभी एक नहीं हो सकती है।

'सपूते क उहै बखरी, कपूतै क उहै जंजाल।'

श०– सपूत–लायक पुत्र। बखरी–भवन, बड़ा सा मकान। कपूत–कुपुत्र, नालायक बेटा। जंजाल–झंझट, परेशानी।

कहावत लायक और नालायक बेटे पर कही गई है।

अ०– जो घर, द्वार, गृहस्थी का सामान लायक लड़के के लिये शोभा है, उसका अपना घर होता है उसे सिरजने में, संभालने में उसे आनंद आता है उससे वह जीवन का सुख पाता है वही नालायक लड़के के लिये झंझट व परेशानी का कारण बन जाता है।

'सहरी मछरी अस गंधाय गे'

श०– सहरी–छोटी मछली की किस्म। गंधाय–बदबूदार होना।

जब कोई आदमी किसी के द्वारा घृणित रूप में देखा जाता है तो यही कहावत कही जाती है।

अ०– छोटी मछली की तरह गंध देने लगे।

'सत्तर बुढ़िया, खेलै धुरिया।'

अ०– खाली बैठी बुढ़िया करे क्या बैठी–बैठी धूल ही उड़ा रही है।

'सब गुन भरी बैतरा सोंठ।'

श०– गुन–गुण। बेतरा सोंठ–ऐसी सोंठ जिसे बैद्य लोग कई दवाओं के द्वारा पाग कर यानी शोध कर बनाते हैं। वह बड़ी ही गुणकारी होती है।

जब कोई आदमी बहुत ज्यादा ही दुष्ट, चालबाल या मक्कार होता है तो उसके ऊपर कहावत व्यंग्य में कही जाती है।

अ०– वे सब गुणों वाली बंतरा सोंठ की तरह पगे हुए हैं। सोंठ की तरह जड़वत हो गये हैं पिघलने तक का नाम नहीं लेते हैं यानी कि मन के कठोर होना।

'सब गुड़ लिटायगा।'

अ०– सारा मामला बिगड़ गया। गुड़ गीला होने का मतलब खराब हो गया है।

'सब गुड़ गोबर होइगा।'

अ०– ऊपर लिखा है।

'सब धान बाइस पसेरी अहै।'

अ०– ऊंच, नीच, अच्छे, बुरे में कोई भेदभाव ही न होना। धान की कई किस्में होती हैं तो सभी धान बाइस पसेरी के बिक रहे हैं। यानी अच्छे–बुरे, मूर्ख विद्वान में कोई अंतर ही नहीं रखा गया है। सभी को एक ही लाठी से हांका जा रहा है चाहे हाथी हो चाहे बकरी।

'समुद्र की गहराई नापै के गा, नोंन क पुतला।'

श०– गहराई–समुद का तल। पुतला–मूर्ति।

अ०– कहावत में व्यंग्य में कही गई है। किसी काम को उसके अनुरूप करने वाला भी होना चाहिए।

अ०– पानी की सतह तक समुद्र में नमक का पुतला क्या पहुंच पायेगा? वह तो समुद्र में पड़ते ही गल जायेगा।

'सब दिन न होत एक समान।'

अ०– सबके सभी दिन एक तरह के नहीं जाते। मनुष्य के जीवन में तो धूपछांह लगी रहती है। कभी दुःख कभी सुख लगा ही रहता है।

'सहज पावै सो मीठ।'

अ०– जो वस्तु आसानी से बिना किसी के दिल दुखाये मिल जाय वही मीठी होती है। जैसे पेड़ का पका आम अपने आप ही पेड़ से गिरकर जो स्वाद देता है वह जबरन तोड़कर पाल में डालने या अधपके आम में नहीं होता।

'संउरी कै टूटी मेहरारू, कातिक के टूट बरधा, नहीं संभरते।'

श०– संउरी–सौर, प्रसव गृह। टूटी–कमजोर होना, शरीर का टूट जाना। बरधा–बैल। कहावत सिद्धांतवादी है।

अ०– बच्चा होने के बाद उस नौ माह की कमजोरी व शारीरिक भार से छुटकारा पाने के बाद बच्चे को जन्म देने के घोर कष्टों के बाद यदि सौर की स्त्री की पूर्णरूप से सेवा सुश्रूषा न हो पाई तो समझो कि कमजोरी जीवन भर को हो जाती है। फिर कभी शरीर स्वस्थ नहीं रह पाता है। उसी प्रकार से कार्तिक माह में बैलों को खेत–जोतने की कठिन मेहनत के बाद यदि ठीक ढंग से खिलाई–पिलाई न हुई तो उनका शरीर दुर्बल और रोगग्रस्त हो जाता है।

'सतयें सरगे धोती झुरात।'

जब कोई आदमी बेहद घमंड में रहता है तो कहावत कही जाती है।

अ०– इतना गुमान है कि हमेशा सातवें आसमान में कपड़े सूखते हैं।

'सब चिंता को छांड़िके कर प्रभु में विश्वास।
वाके थापे सब थपै, बिन थापे हो नास।।'

अ०– स्पष्ट है।

'सपूती रोवै टूक क, निपूती रोवै पूत क।'

अ०– कोई भी सुखी नहीं है जिसके बेटा है वह रोटी के लिये तरस रही है और जिसके बेटा नहीं है वह बेटा के लिये तरस रही है।

'सब केव झूमर पहिरै तो लंगड़ी कहै 'हमहूं।'

अ०– लंगड़ी है तो क्या हुआ। वह भी तो जेवर पहनना चाहेगी, उसे भी शौक है झूमर पहनने का।

'सब का ठेल मैं अकेल।'

अ०– सभी को धक्का देकर खुद अकेले रहने की इच्छा रखना। किसी की परवाह न करना।

'सब गुन पूरी, के कहै अधूरी।'

कहावत व्यंग्य में कही गई है।

अ०– वे तो सब गुण की भरी हैं फिर भला उन्हें कौन कह सकता है कि सहूर नहीं है?

'सब्जी न देव गंवारन क।
हंड़िया भर भात बेगारन क।।'

कहावत गंवारों के प्रति कही जा रही है।

अ०– गंवार को पेट भरने और ढेर सा खाने से मतलब है। उन्हें साग–भाजी दो न दो, कोई फर्क नहीं पड़ता है। एक हंड़िया भर भात दे दो तो वे बड़े प्रसन्न होंगे।

'सब दिन चंगे, त्योहार के दिन नंगे।'

स्त्रियां अपने बच्चों के प्रति कहती हैं।

अ०– सब दिन तो अच्छे–अच्छे कपड़े पहनेंगे और जब पहनना चाहिए तीज त्योहार या किसी पर्व पर तो फटेहाल घूमेंगे।

'सबकी बात झूठी, सिरे दाल रोटी।'

रोटी मनुष्य के जीने का साधन है। बिना उसके कभी भी आदमी का काम नहीं चलता।

अ०– दुनिया में सभी बात झूठी है बस एक यही सही है कि खाने को रोटी–दाल मिलती रहे।

'सभी बिगारै तीन जन, चुगल, चूतिया, चोर।'

कहावत उन आदमियों के ऊपर कही गई है जो भरी सभा में हमेशा ही नाक कटाने के चक्कर में रहते हैं।

अ०– किसी भी सोसायटी, उत्सव, समारोह आदि को बिगाड़ने वाले लोगों में हैं– चुगलखोर– जो एक की बात दूसरे से जाकर कहते रहते हैं, चूतिया–जिनको

किसी बात की अक्ल न हो, जब जहां जो बात न भी कहनी हो तो कह डालेंगे, तीसरे होते हैं चोर जो किसी के सामान को चुरा लेने के के चक्कर में रहते हैं।

'सभी पदारथ पान है, एकहि अवगुन आह।

जाके कर पर धरत है विदा करत है ताहि।।'

श०– पदारथ–बढ़िया चीज। कर–हाथ।

कहावत पान के प्रति कही गई है। कहते हैं– 'मान का पाने बहुत है'। पान प्रेम का प्रतीक है, पान दोस्ती का माध्यम है। पान के माने किसी को इज्जत देना। कहा है कि 'पान के बिना मान अधूरा होता है अतः कहावत पान पर ही कही गई है।

अ०– पान बहुत अच्छी चीज है किन्तु उसमें एक ही बुराई है कि जब किसी के हाथ पर रखते हैं तो मेहमान को विदा करते समय देने के कारण बिछोह भी पैदा करता है। किन्तु प्रसन्नता भी होती है कि किसी को मान के साथ विदा किया।

'सभी सहायक संबल के, कोउ न निबल सहाय।

पवन जगावत आग को दीपक देत बुझाय।।'

उपरोक्त पंक्ति कवि बृंद की है जिसमें गरीब–अमीर, छोटे–बड़े के भेद पर कही गई है।

अ०– दुनिया में यही दस्तूर है कि गरीब–कमजोर की सहायता कोई नहीं करता, अमीर व बलवान की सभी मदद करते हैं। जैसे हवा आग को जला देती है मगर दिये को बुझा देती है।

'समझदार की मौत है।'

कहावत बुद्धिमानों के लिये कही गई है।

अ०– समझदारों की मौत इसलिये है कि वे सब कुछ समझते हैं। अतः उनसे काम लिया जाता है।

'समझे सो गया, अनाड़ी की जाने बला।'

समझदारों की मुसीबत है। यानी जो समझे उसकी तो आफत है और जो बेवकूफ हैं उनकी बला से कोई काम बने या बिगड़े।

'समझी न बूझी, खूंटा लै के जूझी।'

बिना समझे अपनी ही बात पर अड़े रहने के ऊपर कहावत है।

अ०– न जाना, न समझा बस खूंटा के लिये झगड़ा शुरू कर दिया।

'समय–समय की बात बाज पर बगुला झपटे।'

कहते हैं समय बड़ा ही बलवान होता है। उसके आगे किसी की नहीं चलती है। समय के पीछे सभी बड़े–बड़े लोग बिक गये। कहावत समय की प्रबलता पर उद्धृत हुई है।

अ०– समय की बात है कि बाज के ऊपर बगुला चढ़ाई कर दे। जो बाज पक्षियों पर खुद ही मार देता है उस पर बगुले जैसे पक्षी की क्या बिसात है?

'ससुरार सुख क सार।

जो रहै दिना दुइ चार।।'

श०– सुख सार–सुख का घर।

अ०– ससुराल सुख का स्थान अवश्य है मगर जो दो–चार दिन ही रहे।

'सस्ता गेहूं घर–घर पूजा।'

जब कोई वस्तु अच्छी भी हो और सस्ती भी हो तो उसका क्या कहना?

अ०– गेहूं सस्ता हो तो उसे सभी खाते हैं। सस्ता समझकर लोग वस्तु का इस्तेमाल करते हैं।

'सस्ता ऊंट, पट्टा महंगा।'

उल्टी बात पर कथनी गई है।

अ०– महंगा ऊंट होना चाहिए तो यहां उसके गले का पट्टा ही महंगा कहा गया है।

'सस्ता हंसावै, महंगा रुलावै।'

अ०– सस्ती वस्तु सभी को भली लगती है तो आदमी प्रसन्न होता है और महंगी वस्तु से सभी दुःखी होते हैं।

'सब दिन बरसे दखिना बाय

कभी न बरसे बरखा पाय।'

अ०– दक्षिणी हवा चलने पर सदैव पानी बरसता है। वर्षा के मौसम में कभी भी पानी नहीं बरसता।

'सतयें कै दंतुली खाय दूध भतुली।
अठयें के दंतुली खाय मामा मतुली।।'

कहावत छोटे बच्चे के दांत निकलने के विचार के ऊपर चरितार्थ की गई है।

अ०– कहते हैं यदि बच्चों के दांत छठें या सातवें माह में दिखाई पड़ें तो बड़े शुभकारक होते हैं मगर यदि आठवें माह में दांत दिखाई दें तो वह मामा या माता के ऊपर दोषी होते हैं।

'सत्तर खेल बसावन खेलें ताहि खेलावै चांदा।'

जब किसी होशियार व्यक्ति को उससे भी होशियार आदमी मिल जाता है तो कहावत चरितार्थ होती है।

अ०– तमाम खेल तो बसावन खुद ही लोगों को खेला चुके हैं, लोगों को मूर्ख बना चुके हैं अब आज चांदा उनके भी बाप बनने की कोशिश कर रहे हैं कि बसावन को भी खेलाना चाहते हैं।

'ससुर क जिव जाय, पतोह काजर देय।'

अ०– कहां तो ससुर के प्राणों पर आ बनी है और कहां बहूरानी, श्रृंगार करने में व्यस्त है।

कोई मरे चाहे जिये कोई मतलब नहीं। बहू में सेवाभाव के गुण का न होना।

'सजन चले परदेस, धर घोड़े की जीन।
जो मैं ऐसा जानती, लेती चाबुक छीन।।'

अ०– स्पष्ट है।

सबकी दांव अंडा बच्चा, हमारी दांव कुकडूं कू।'

अ०– जब किसी को कोई वस्तु न मिले तो कहावत कहते हैं कि सबको तो खाने–पीने को मिल रहे हैं और हमारी दफे सामान सब खत्म हो गये।

'सबके दाता राम।'

अ०– स्पष्ट है।

'समय करे, नर का करे, समय–समय की बात।
केहु समय के दिन बड़े, केहु समय की रात।।'

अ०– मनुष्य के बूते का जब कुछ नहीं होता तो कहावत कही जाती है कि समय बलवान होता है। इसमें कभी तो दिन बड़े होते हैं, कभी रात भारी होती है। जैसा आदमी के ऊपर पड़ता है वह झेलता है।

'सराय क कुत्ता, मुसाफिर क भार।'

कहावत मुफ्तखोरों के प्रति कही गई है जो गली कूचे में घूमते हैं।

अ०– आवारा कुत्ते जो सराय में घूमा करते हैं जिसे भी देखा कि भौंकना शुरू कर दिये। वे सबके लिये आफत बने रहते हैं। मालिक न होने के कारण उन पर कोई बंधन नहीं रहता।

'सावन पंछी ना घर छोड़ै, ना बनिजार बनिज का जाय।'

कहावत सावन माह के प्रति चरितार्थ की गई है।

श०– बनिजार–व्यापारी। बनिज–व्यापार।

अ०– सावन का माह पानी–बादलों का होता है उसमें न कोई अपना घर छोड़ना चाहता है न पक्षी ही घोसले से बाहर जाना चाहते हैं।

सावन घोड़ी, पूसे गाय।
मग्घा भंइस गोसंइयै खाय।।'

श०– मग्घा–माघ माह। गोसइंये–मालिक।

कहावत पशु सम्बन्धी है। किस माह में ब्याने पर क्या हानि होती है?

अ०– यदि श्रावण मास में घोड़ी, पौष में गाय तथा माघ में भैंस बच्चा देती है तो स्वामी को ही खा जाती है। उसका अनिष्ट होता है।

'सावन की पुरवाई, भादौं का पछियाव।
हर कुदार बेंचि के लड़िकन क जिआव।।'

श०– पुरवाई–पुरवा हवा। पछियाव–पश्चिमी हवा। हर–कुदार–हल व कुदाल जिससे खेत गोड़ा जाता है।

अ०– यदि सावन में पुरवा व भादों में पश्चिमी हवा चले तो खेती के लिये हानिकारक होती है। किसान्नि का कहना है कि हल कुदाल बेंचकर बच्चों के खाने पीने का इन्तजाम करो।

'सावन साग न भादौं दही।
क्वार करेला न कातिक मही।।

अगहन जीरा, पूसे धनिया।
माघै मिश्री, फागुन चना।।
चइतै गुर बैसाखो तेल।
जेठय पंथ असाढ़े बेल।।'

कहावत स्वास्थ्य सम्बन्धी है कि किस माह में क्या-क्या वस्तु नहीं खानी चाहिए। कहावत के अनुसार ये वस्तुयें तन्दुरुस्ती के लिये हानिकारक व देर से पचने वाली होती हैं।

अ०— सावन में साग, भादों में दही, क्वार में करैला, कातिक में मट्ठा, अगहन में जीरा, पूस में धनिया, माघ में मिश्री ठंडी पहुचाती है। फागुन में चना, जेठ में रास्ता नहीं चलना चाहिये क्योंकि वह धूप असह्य होती है। चैत में गुड़, बैशाख में तेल, आसाढ़ माह में बेल नहीं खाना चाहिए।

'सावन हर्रै भादौ चीत।
क्वार मास गुड़ खायो मीत।।
कातिक मूली, अगहन तेल।
पूस मां करै दूध से मेल।।
माघ मास घिव खिचरी खाय।
फागुन उठि के प्रात नहाय।।
चइत मास मां नीम बेसहती।
बैसाखे मां खाय जड़हती।
जेठ मास जे दिन मां सोवै।
ओके जर असाढ़ मां रोवै।।

श०— चीत-चिरायता, जो बनियों की दुकान पर मिलता है। आमतौर पर बुखार आदि में काढ़ा बनाकर पिलाया जाता है। मीत-मित्र, दोस्त। जर-बोखार, जूड़ी।

कहावत स्वास्थ्य सम्बन्धी है। इससे पहले की कहावत में था कि किस माह में क्या नहीं खाना चाहिए। इसमें है कि किस माह में क्या खाने से लाभ होता है।

'सावन में हर्रै का चूर्ण, भादों माह में चिरायते का काढ़ा पीने से बुखार, जुकाम, खांसी आदि के लिये फायदा करता है। क्वार में गुड़, कार्तिक में मूली, अगहन में तेल, पूस में दूध, माघ में खिचड़ी, फागुन में प्रातः ही स्नान करना चाहिए। चैत में नीम की जड़ पत्ती सींका दतून आदि का इस्तेमाल अधिक करना चाहिए। बैसाख में जड़हनी धान का चावल और जेठ के माह में सोना नहीं चाहिए उसका असर स्वास्थ्य पर असाढ़ माह में पड़ता है।

'सावन सुक न दीखे, निहचै परै अकाल।'

अ०— शुक्र यदि सावन के महीने में आकाश में न दिखाई दे तो निश्चय ही सूखा पड़ जाता है।

'सावन सांवा, अगहन जवा, जेतना बोवे ओतने लवा।'

अ०— सावन के माह में सांवा तथा अगहन में जौ बोया जाता है तो अधिक लाभ मिलता है।

'सावन सेवाती, धान उचाटी।'

श०— सेवाती-स्वाती नक्षत्र। उचाटी-उचारने लायक।
अ०— धान यदि स्वाती नक्षत्र में बोया जाय तो बहुत जल्दी ही उचारने के लायक हो जाता है।

'सावन सुक्ला सप्तमी गगन स्वच्छ जो होय।
कहे घाघ सुनु भड्डरी पुहुमी खेती होय।।'

श०— गगन- आकाश। पुहुमी-पृथ्वी।

कहावत कवि घाघ की है जो खेती के प्रति कही गई है।

अ०— घाघ कवि कहते हैं कि यदि सावन माह में अंजोरी सत्तमी को आकाश में बादल न हों तो समझो कि खेती अच्छी होगी।

'सावन सूख स्यारी, भादों, सूखा उन्हारी।'

श०— स्यारी- खरीफ की फसल। उन्हारी-रबी की फसल।

कहावत फसलों के ऊपर उद्धृत की गई है।

अ०— फसलें तीन होती हैं- रबी, खरीफ, जायद। सावन में पानी न बरसा तो खरीफ की तथा भादों में पानी न बरसा तो रबी की फसलों का नुकसान होता है।

'सावन मास बहै पुरवाई, बरधा बेंचि बेसाहौ गाई।'

अ०– यदि सावन में पूर्वी हवा चले तो बैल बेंचकर गाय खरीद लो ताकि दूध बेंचकर ही कुछ घर का काम चला सको।

'सावन क पंछुवा दिन दुइ चार।
चूल्ही के पाछा उपजै सार।।'

अ०– यदि सावन में दो–चार दिन भी पछिवा हवा बह जाय तो समझो कि खेती में बड़ा लाभ होगा।

'सावन भादौं खेत निरावै।
वह किसान बहुतै सुख पावै।।'

अ०– जो किसान सावन भादों माह में खेत की निराई करके उसके खर–पतवार को निकाल फेंकता है वह बहुत ही सुखी रहता है। यानी उसके खेत में अनाज खूब होता है।

'सावन सूखे न भादों हरे।'

यानी जिस आदमी की एक ही सी स्थिति रहे। न कभी समृद्धि (सुख) में प्रसन्न हो न कभी दुख में दुखी हो।

'सावन शुक्ला सत्तमी उगत न दीखे भान।
तब लगि देव बरसिहैं, जब लगि देव उठान।।'

श०– भान–सूर्य। बरसिंहै–बरसना। देव उठान देवोत्थानी एकादशी।

कहावत कवि घाघ की है।

अ०– उनका कहना है कि यदि सावन की उजाली सप्तमी को सूर्य उगा न दिखाई दे आकाश बादलों से भरा हो तो समझो कि कार्तिक माह की देवोत्थानी एकादशी तक पानी अवश्य बरसेगा।

'सावन सोवै ससुर घर, भादों खाये पुआ।
चैत मां छैला पूछत डोले, तोहरे केतना हुआ।।'

कहावत उन लोगों पर व्यंग्य में कही गई है जो आलस्य के कारण खेती नहीं करते हैं।

अ०– सावन माह में जाकर ससुराल में खा–पीकर सो रहे। फिर भादों में पुआ खाये। उसके बाद अब चैत में सबके खेत–खेत में पूछते घूम रहे हैं कि बताओ तुम्हारे खेत में कितना अनाज हुआ? बताओ तुमने कितना पाया?

'सावन् पहली चौथ में जौ मेघा बरसाय।
तौ भाखे यों भड्डरी फसल सवाई जाय।।'

अ०– सावन की अंधेरी चौथ में जब पानी बरसे तो समझो कि फसल अच्छी होगी।

'सावन केरे प्रथम दिन, उगत न दीखै भान।
चार माह तक बरसै पानी याको है परमान।।'

श०– भान–सूर्य। परमान–प्रमाण।

अ०– यदि सावन के पहने दिन आकाश बादलों से घिरा हो तो समझो कि चार महीने तक पानी बराबर बरसेगा।

'सावन बदी एकादशी बादल उगै न सूर।
तो यों भाखै भड्डरी घर–घर बाजै तूर।।'

श०– भाखे–कहे। तूर–तुरही, तुतुही जो एक प्रकार का बाजा है।

अ०– सावन शुक्ल पक्ष की एकादशी को यदि सूर्य न दिखे तो समझो कि इतना अनाज खेत में होगा कि घर–घर में आनंद के बाजे बजेंगे।

'सावन पंछिवा भादो पुरवा, आसिन बसे इसान।
कातिक कंता सींक न डोलै, गाजै सबै किसान।।'

श०– आसिन–क्वार माह। ईसान–ईंशान कोंण यानी उत्तर पूर्व के कोने से। कंता–पति। सींक न डोले–तनिक भी हवा न चलै।

अ०– यदि सावन माह में पछिवा हवा, भादों में पुरवा, तथा क्वार में उत्तर पूर्व के कोने से हवा चले और कार्तिक माह में तनिक भी हवा न चले तो किसान मस्त रहते हैं। यह खेती के अच्छे लक्षण हैं।

'सावन ऊखम भादों जाड़, बरसा मारे ठाढ़ कछाड़।'

श०– ऊखम–गर्मी। कछाड़–धोती की लाँग को जब पीछे की ओर समेटकर खोंस लेते हैं।

अ०– यदि सावन में गर्मी और भादों में जाड़ा पड़ता है तो समझो कि बरसात बहुत ज्यादा ही होगी।

'सावन पहली पंचमी गरभे उदये भान।

बरखा होगी अति घनी ऊंचो जानो धान।।'

अ०— यदि सावन की पहली पंचमी को सूर्य बादलों के बीच में है तो वर्षा बहुत होगी और धान की खेती अच्छी होगी।

'सावन शुक्ला सत्तमी जो गरजै अधीरात।

बरसै तो सूखा परै नहीं तो समझो सुकात।।'

कहावत भड्डरी कवि की वर्षा व खेती पर है।

अ०— सावन शुक्ल सत्तमी को आधी रात को यदि बादल गरजें बरसें तो सूखा पड़ेगा, नहीं तो समय अच्छा जायेगा।

'सावन मां पुरवाई चलै, भादों में पंछियाव।

बैल डंगरवा बेंचिके लरिका जाय जियाव।।'

श०— डंगरवा–डांगर बैल, जो एकदम मरतुक–दुर्बल हो।

अ०— सावन की पुरवा व भादों माह की पछिवा से वर्षा कम होती है और खेत में दाने नहीं के बराबर पड़ते हैं। किसानिन का कहना है कि जो डंगार बैल हैं उन्हें बेंचने तक की नौबत आ जायेगी।

'सावन कृष्न एकादशी गर्जि मेघ घहरात।

तुम जाओ प्रिय मालवे हम जाबै गुजरात।।'

अ०— यदि सावन के कृष्ण पक्ष की एकादशी को बादल गरजते हैं तो निश्चय ही अकाल की दशा आयेगी। अतः प्रिय ! तुम मालवे जाओ, मैं गुजरात जाऊँगी।

'सावन कृष्न पक्ष को देखो।

तुमको मंगल होय बिसेखो।।'

'कर्क राशि पर गुरु जौ आवै।

सिंह राशि में शुक्र सुहावै।।

ताल भी सोखे बरसै धूर।

कहूं न उपजै सातो तूर।।'

सावन कृष्ण पक्ष के तुम्हारे मंगल कष्टकारक हैं। इसलिये कि कर्क राशि होने से गुरु का होना व सिंह राशि पर शुक्र का होना हानिकारक है। कहा है—

जब कर्क राशि पर बृहस्पति हो, सिंह राशि पर शुक्र हों तो ये तालाब को सोखते हैं। धूल की बरसात होती है और सातों प्रकार में किसी प्रकार के अनाज नहीं पैदा होते हैं।

'सावन उजरे पाख में जौ यह सब दरसाय।

दुंद सबै छत्री लड़ै गिरै भूमिपतिराय।।

जब सावन शुक्ल पक्ष में ऐसा लक्षण दिखाई दे तो समझो कि क्षत्रियों में युद्ध होगा और पृथ्वी का मालिक यानी राजा भूमि पर गिरेगा।

'सावन शुक्ला सत्तमी उगत न दीखे भान।

या जल मिलिहै कूप मां या गंगा स्नान।।'

अ०— सावन शुक्ला सप्तमी को यदि बादल आकाश में हैं तो निश्चय ही सूखे की स्थिति आ सकती है। पानी या तो कुयें में मिलेगा या गंगा स्नान करने के समय दिखेगा।

'सावन शुक्ला सत्तमी चंदा छिटिकि करेय।

की जल देखो कूप में की कामिनि सिर धरेय।।'

अ०— स्पष्ट है।

'सावन पहिली पाख में रोहिणि दशमी होय।

महंगा नाज अल्प जल बिरला बिलसै कोय।।'

श०— बिरला–कोई–कोई। बिलसै–विलास करना।

अ०— सावन के पहले पक्ष की दशमी को यदि रोहिणी नक्षत्र में पड़े तो अनाज महंगा होगा तथा कोई भी आराम से न रह पायेगा।

'सावन सोवै रोगी, भादौं सोवै जोगी।'

अ०— बीमार आदमी ही सावन के माह में दिन में सोते हैं और भादों के माह में योगी संन्यासी सोते हैं। स्वस्थ और गृहस्थ सावन भादों के माह में दिन में नहीं सोते हैं।

'सावन मां अंधराय तो हरियै सुझाय।'

कहावत का मतलब है कि जिस स्थिति में जो रहता रहा हो, वही स्थिति उसे दिखाई देती है। जो सावन की हरियाली में अंधा हो हर समय हरियाली ही हरियाली ही दिखाई पड़ती है।

'सावन खीर जो खाय सकारे।
मिरग ढाल पर चालै मारै।।'

श०– सकारै–सबेरे। मिरग–मृग, हिरन। चालै–चले। ढाल–दौड़ना।

कहावत स्वास्थ्य व खीर के फायदे पर कही गई है।

अ०– सुबह–सुबह सावन माह में रोज खीर खाये वह हिरन की तरह कुलांचे मारने लगे। यानी बहुत फायदा करती है।

'सावन की ना सीत भली।
जातक की ना प्रीत भली।।'

श०– सीत–ओस। जातक–साधु, संन्यासी।

अ०– सावन माह की सीत नुकसान देह होती है और साधु के साथ प्रेम करना बुरा होता है। वह भला क्या साथ देगा प्रेम में?

'सावन के रपटे हाकिम के डपटे कै कोन डर।'

श०– रपटे–फिसलकर गिरना। हाकिम–अफसर। डपटै–डाटना।

अ०– सावन का माह पानी बरसने का होता ही है, न जाने कितने ही लोग फिसल कर गिरा करते हैं। सब स्वाभाविक सा होता है और अफसर हमेशा ही देर–सबेर पहुंचने पर या छोटी–छोटीं बातों पर डांट दिया करते हैं, इसलिये कभी ज्यादा बुरा नहीं लगता है।

'सावन माह चलै पुरवइय्या।
खेलै पूत बला ले मइय्या।।'

अ०– सावन के माह में यदि पुरवा हवा चल गई तो सूखा पड़ने के कारण किसान की स्त्री बच्चे को खिलाती जाती है और कुशल मनाती जाती है कि हे भगवान, अनाज–पानी कुछ तो दे देना।

'सावन सोवै सांथरे, माघ खुरेरी खाट।
आपहिं वे मर जायेंगे जेठ चलै जो बाट।।'

श०– सांथरे–चटाई। खुटेरी–खाली। बाट–रास्ता।

अ०– कहा गया है कि सावन के महीने में चटाई पर नहीं सोना चाहिए क्योंकि जमीन में सीलन होती है और माघ मास में खाली खाट पर यानी बिना कुछ बिछाये नहीं सोना चाहिये सर्दी के कारण तथा जेठ की तपती धूप में रास्ता नहीं चलना चाहिये, स्वास्थ्य के लिये, ये सभी बातें हानिकारक होती हैं।

'सावन बदी एकादशी जो तिथि रोहिणि होय।
खेती समया उपजै, चिंता करै न कोय।।'

श०– बदी–अंधेरा पक्ष। समया–समय से।

अ०– सावन माह के अंधेरे पाख की एकादशी को रोहिणी नक्षत्र पड़े तो खेती के लिये बहुत लाभकर है अनाज की बहुलता होती है।

'सावन पहिले पाख में जो कोइ तिथि घट जाय।
कहूं–कहूं केव देस में लरिका बेंचै माय।।'

कहावत तिथियों के कम होने पर कही गई है जिसका ज्योतिष विद्या के अनुसार उलटा असर पड़ता है।

अ०– सावन मास के पहले पाख में यदि कोई तिथि घट गई यानी कि १४ दिन का ही पाख पड़ा तो किसी–किसी देश में सूखा पड़ने के कारण स्त्रियां अपने बच्चों तक को बेंच देती हैं। इतना भयंकर अकाल पड़ता है।

'साख गये फिर हाथ न अइहैं।'

कहावत विश्वास के ऊपर कही गई है।

अ०– यदि लोगों के बीच से अपना विश्वास उठ गया तो वैसी इज्जत फिर नहीं वापस आ सकती है।

'साख लाख से भली है।'

अ०– इज्जत व विश्वास की कीमत लाखों से भी कहीं अधिक होती है। रुपया पैसा आया चला गया मगर इज्जत और विश्वास आदमी के जीवन में एक बार गया तो जीवन भर को चला जाता है।

'साझा कै खेती सियार खांय।'

श०– साझा–एकाधिक लोगों का मिलकर कृषि कार्य।

किसी रोजगार में या खेती में या किसी भी काम में दो या दो से अधिक आदमी जब सम्मिलित होते हैं तो साझे का यह काम खराब कहा गया है। इकट्ठे मिल कर काम करने में अपनी–अपनी जिम्मेदारी न समझने के कारण काम सही नहीं हो पाता। इसलिये

कहा है कि साझे का काम बुरा होता है। उसकी खेती स्यार ही खाते हैं कोई, देखने वाला नहीं होता। सब एक दूसरे पर काम टालते रहते हैं।

'साझा भला न बाप का ताव भला ना ताप का।'

अ०– साथ में मिलकर काम करना अपने बाप से भी ठीक नहीं है और अधिक गर्मी का ताप सहना ठीक नहीं होता।

'साझे क काम उखाड़े चाम।'

श०– चाम–चमडी।

साझा के काम में बड़ी ही परेशानी होती है। मारपीट तक की नौबत आ सकती है और घाटा होता है।

'साझे कै माई गंगा न पाई।'

अ०– जब बेटे दो या अधिक हों तो कहा है कि उनके झगड़े में मरने पर उनकी मां को गंगा के किनारे तक ले जाना और अंतिम दाह संस्कार करना भी लड़कों के लिये कठिन हो जाता है।

'साझे कै होली भली।'

अ०– कोई उत्सव, त्योहार मिल जुलकर, सामूहिक रूप से मनाना सुन्दर और आनन्ददायक होता है।

'साठा तबो पाठा, तीसी सो खीसी।'

अ०– पुरुष साठ साल का होने के बाद भी जवान दिखता है और स्त्री तीस साल की होते ही बुढ्ढी दिखाई पड़ने लगती है।

'साठी होवै साठ दिना जब पानी बरसे रात दिना।'

श०– साठी–एक प्रकार का मोटा धान होता है जो बहुत जल्दी ही यानी कि साठ दिन में तैय्यार हो जाता है।

अ०– साठी धान तो साठ दिन में ही हो जाता है यदि उसे बराबर पानी मिलता रहे।

'साढू के घर साढू आये सब बातन मां हीरा।

भितरा से सढ़ुवाइन निकरीं, मारि दहिजरा क पीढ़ा।।'

अ०– दोनों बहनों के पति एक दूसरे से मिले तो सभी बातों में अच्छे निकले। मगर जब साली आई तो वह कुछ होकर पीढ़ा लेकर मारने दौड़ी, जैसे दो बहनों में पटती न हो अथवा ईर्ष्या हो।

'सात पांच की लकड़ी एक जने क बोझ'

अ०– जो काम कम लोग करेंगे वह ज्यादा व भारी मालूम देगा और जो काम ज्यादा लोग मिलकर करेंगे, वह हल्का हो जाता है।

'सात पांच मिल कीजै काजा।

हारे जीतै कै नहिं लाजा।।'

कहावत पंचों के मत के अनुसार काम करने पर कही गई है।

अ०– जो काम एक आदमी करता है उसमें एक ही नाम लगता है। इसलिये कोई काम हो यदि उसे सात–पांच लोग मिलकर करते हैं तो हारने–जीतने में एक का नाम नहीं सभी का नाम सामने आयेगा। अच्छाई–बुराई सभी को मिलेगी।

'सात मामा का भानजा, न्यौते–न्यौते फिरे।'

श०– मामा–मां का भाई। भान्जा–बहिन का लड़का।

अ०– सात मामा का भान्जा होने के कारण हर एक मामा सोचते हैं कि किसी के यहां खाना खा लिया होगा। इसी के कारण बेचारा भूखा ही रह जाता है। दूसरे अर्थ में जब भांजा एक और मामा सात हैं तो समयानुसार वह सात घरों में घूम–घूमकर दावत खायेगा।

'सात हाथ हाथी से रहिए, पांच हाथ सिंगहारे से।

बीस हाथ नारी से रहिए, तीस हाथ मतवारे से।।

श०– सिंगहारे–सींगवाले–जानवरों से। मतवारे–नशा करने वालों से।

अ०– हाथी से सात हाथ दूर रहना चाहिए। सींगवाले जानवरों से पांच हाथ दूर रहो। स्त्री से बीस हाथ और मतवाले से तीस हाथ दूर रहना चाहिए।

'सात बार मां नौ त्योहार।'

यहां पर सात बार का अर्थ है कि हफ्ते के सात दिन। हिन्दू के त्यौहार व व्रत–उपवास पर कहावत कही गई है।

अ०— हमारे देश में रोज ही कोई न कोई त्यौहार, पर्व, व्रत, उत्सव पड़ा ही करते हैं। जैसे सात दिनों में नौ त्यौहार पड़ते हों। त्योहारों के बाहुल्य पर कहावत कही गई है।

'सात अकिल के झूले, झालैं, नौ बुधि परी उतान।
एक अकिल के भले सियरऊ, असी कोस लै तान।'

कहावत अधिक बुद्धिवाले से काम पूरा न होने पर कही गई है।

अ०— सात बुद्धिवाले तो इसी उधेड़बुन में रहते हैं यह हो कि वह हो, क्या करना चाहिए? कैसे न हो आदि के चक्कर में काम ही नहीं हो पाता। जो नौ बुद्धि रखने का दावा करते हैं वे ऐन मौके पर हाथ–पैर फैलाकर बैठ जाते हैं। उनसे और भी कुछ नहीं हो पाता। सबसे भले एक ही बुद्धिवाले होते हैं जो अपनी बुद्धि से सारा काम स्वयं ही कर डालने की ताकत रखते हैं। जैसे कोई सियार अपनी अक्ल से अस्सी कोस जमीन चलकर पूरी यात्रा कर लेता है। तात्पर्य यह कि अधिक बुद्धिवाले अपनी बुद्धि से भी काम नहीं कर पाते। वे कार्य करने में भ्रमित हो जाते हैं। इसलिये सुनो सबकी करो अपने मन की।

'सात दांत उदंत क रंग जो काला होय।
इनको कबहूं न लीजिये दाम चहै जो होय।।'

कहावत बैलों के प्रति कही गई है।

श०— उदंत–जिस बैल के दांत निकल रहे हों।

अ०— सात दांत वाले बैल जिनके दांत दूध के हों और रंग काला हो उसे कभी न लेना चाहिए चाहे कितना भी दाम कम हो।

'साते पांच तृतीया, दशमी, एकादशी जीव।
यहि तिथिया पर जोतिये तो प्रसन्न हों सीव।

श०— सीव–शिव जी।

कहावत में नये बैलों को किस तिथि पर हल में जोतना चाहिए, बताया गया है।

अ०— सत्तमी, पंचमी, तृतीया, दशमी, एकादशी को खेत में नये बैल जोतने से शंकर जी प्रसन्न होते हैं।

'साथ केव न आय, साथ केव न जाये।'

कहावत उस समय कही जाती है जब इस दुनिया से आदमी अकेला चला जाता है।

अ०— न कोई किसी के साथ आता है और न मरने के समय जाता है।

'साथी एक नहीं टट्टू पांच ठू।'

श०— टट्टू–छोटे घोड़े की जाति।

जब किसी के पास सामान या साधन हो किन्तु उसका इस्तेमाल करने वाला ही न हो।

अ०— साथी बराती का पता ही नहीं और टट्टू कई मौजूद हैं।

'सादा जीवन उच्च विचार।'

अ०— कहावत आदमी के साधारण रहने खाने–पीने के प्रति कही गई है कि मनुष्य का जीवन जितना ही ऊपरी बनावटपने से दूर रहे उतना ही अच्छा होता है। उसके विचार तथा आचरण अनुकरणीय होने चाहिये।

'शादी बिआह नदी नाव संयोग आय।'

अ०— शादी–ब्याह तो भाग्य की बात है। जिससे जिसका संयोग होता है वह हुए बिना नहीं रहता। इसी प्रकार नदी पार करना और नाव चढ़ना भी संयोग से ही होता है।

'साधु बुराई ना करै ना मूरख से प्रीत,
चतुर सो बैरी भला, मूरख भला न मीत।'

श०— पीत–प्रीति। चतुर–होशियार। मीत–दोस्त।

अ०— साधु या सज्जन लोगों की बुराई नहीं करनी चाहिये न मूर्खों से प्रेम करना चाहिये क्योंकि उनसे होशियार बैरी भी अच्छा होता है क्योंकि वह समझदारी से कार्य करता है। मगर मूर्ख हमेशा ही मूर्खतापूर्ण काम करेगा। अतः मूर्ख से मित्रता नहीं करनी चाहिये।

'साधु भगत की करै जो सेवा।
पार तुरत हो वाकी खेवा।।'

श०— खेवा–नौका, बोझ।

अ०— साधु व सज्जनों की जो सेवा करता है उसकी नैय्या वड़ी आसानी से पार होती है।

'साधु भगत दे जिसे असीस।

सुखी रहे वे बिस्वे बीस।।'

अ०– साधु महात्मा जिसे आशीर्वाद देते हैं वे निःसंदेह सुखी रहते हैं।

'साधु भूखा भाव का, धन का भूखा नाय।'

अ०– सच्चे साधू भाव के भूखे होते हैं वे धन नहीं चाहते।

'साधु मिलन औ हरि भजन, दया, धरम, उपकार।
तुलसी या संसार में पांच रत्न हैं सार।।'

अ०– साधु का साथ, भगवान का दर्शन, दया, धर्म, दूसरों की भलाई यही पांचों रत्न इस दुनिया में है।

'साधू कहिये सूप को पइय्या फेंकै हलोर।
ओछी कहिये चालनी, भूसी राखे बटोर।।'

श०– सूप– जिससे अनाज आदि साफ किया जाता है। पइय्या–सारहीन अन्न। हलोर–हवा करने पर, खोखले वस्तुओं को निकालने को हलोरना कहते हैं। ओछी–नीची। चालनी–चलनी।

कहावत सूप व चलनी के गुणों के माध्यम से आदमी के प्रति कही गई है।

अ०– सूप साधु की तरह है कि सारे कूड़े–कर्कट पछोरकर अनाज साफ करता है इसी प्रकार व्यक्ति को जीवन से समस्त त्रुटियां निकाल देनी चाहिए किन्तु वह चलनी की तरह अच्छाई के बदले बुराई का संग्रह न करे जो भूसी को बटोरकर अपने में रख लेती है।

'साधू वही जो साधन करे, क्रोध, लोभ मोह को हरे।'

अ०– जो दुनिया में क्रोध, लोभ मोह नहीं करता वही साधू है।

'सिंहन के लेहड़े नहीं, हंसन की नहिं पांत।
लालन की नहिं बोरियां, साधु न चले जमात।।'

अ–० स्पष्ट है।

'साबुत नहीं कान, झुमका का अरमान।'

श०– साबूत–पूरा, ठीक।

कहावत उस समय कही जाती है जबकि खुद किसी बात से विवश हो मगर उस काम की इच्छा मन में बहुत हो।

अ०– कान ठीक नहीं हैं मगर झुमका पहनने का शौक बेहद हो तो कैसे हो सकता है?

'सारा गांव जरिगा, फूहर कही' कहूं लत्ता गंधान।'

श०– फूहर–मूर्खा, नादान स्त्री। लत्ता–कपड़ा।

अ०– कहावत किसी मूर्ख स्त्री पर कही गई है। पूरा गाँव जल गया किन्तु मूर्ख स्त्री ने कहा कि कहीं से कपड़ा जलने की गंध आ रही है।

'सारा गंउना सोवै, भगवंता रोटिया पोवै।'

जब कोई स्त्री बहुत रात गये तक अपना काम समाप्त करती हो या रात में काम अधिक करती हो तो उस पर व्यंग्य में कहावत कही जाती है।

अ०– जब सारा गांव सोता रहता है तो भगवंता खाना बनाने चलती हैं।

'सारा जाता देखिये तो आधा लीजै बांट।'

कहावत किसी बंटवारे पर कही गई है कि उस समय अक्लमंदों को क्या करना चाहिये।

अ०– जब आप देख रहे हों कि घर की कोई वस्तु सारी की सारी नष्ट हो रही हो तो उसे आधा बाँट या बचा लेनी चाहिए।

'सारा धड़ देखय मोरवा, पांव देखि लजाय।'

कहते हैं कि मोर के पांव बहुत खराब होते हैं। इसी प्रकार आदमी के भी जो अंग देखने में बुरा लगता है उसे ढक कर रखता है।

अ०– अपनी सारी देह तो मोर देखता है तो प्रसन्न हो जाता है मगर पांव को देखकर शरमा जाता है।

'साभार जाय अलोना खाय।'

श०– साभार–एहसान के साथ, बड़ी इज्जत के साथ। अलोना–बिना नमक के।

जब किसी को बड़ी इज्जत व तमन्ना के साथ बुलाये और आने के बार आने वाला समझे कि वह वहां बोझ बनकर आया है, कहावत इसी पर चरितार्थ हुई है।

अ०– आदर के साथ तो बुलावे और खिलाते समय इतना भी परवाह न करे कि साग–भाजी में नमक भी पड़ा है कि नहीं? आहार–व्यवहार–दोनों से सम्मान दे तो मेहमान कृतज्ञ होकर विदा लेता है।

'सास उठलिया, बहू छिनरिया, ससुर भार झोंकावे।
फिर दुलहवा सास–बहू क सीता, सती बतावै।।

श०– उठौलिया–दूसरे आदमी के साथ भाग जाना। छिनरिया–बदचलन। सीता सती– चरित्रवान, सती–सावित्री।

कहावत बदचलन औरतों पर कही गई है।

अ०– सास दूसरे पुरुष के साथ चली गईं, बहू बदचलन है, ससुर भाड़ झोंकता है उस पर भी दूल्हेराम अपनी मां व पत्नी को चरित्रवान सती–स्त्री कहते हैं।

'सास का ओढ़ना, बहू क गोड़ पोंछना।'

श०– ओढ़ना–जो वस्त्र ओढ़े जाते हैं। गोड़ पोंछना–पैर पोंछने का कपड़ा।

कहावत अपने से बड़ों की इज्जत न करने पर चरितार्थ की गई है।

अ०– जो कपड़े सास ओढ़ती हैं उससे बहू अपने पैर पोंछती है। इसी प्रकार सास का अनादर किया जाता है।

'सास की चेरी, बहू की जठेरी।'

सास की नौकरानी से सभी बहुएं डरती हैं।

अ०– जो नौकरानी सास की है उसे बहुयें अपनी जिठानी समझती हैं। उससे रिश्ता जोड़कर रहती हैं।

'सास के रिस पतोह के माथे।'

अ०– कोई महिला जब सास के ऊपर क्रोधित हुई तो उसने अपनी बहू पर सास का सारा क्रोध निकाला।

'सास बिना ससुरार न भावै।
लाभ बिना रोजगार न भावै।।'

अ०– सास के बिना दामाद को ससुराल अच्छी नहीं लगती और बिना लाभ के कोई भी व्यवसाय अच्छा लगता।

'सास झांके निहुरी, बहू चली बैकुंठे।'

श०– निहरी–झुकक़र। बैकुंठे–तीर्थ करने।

अ०– सास तो सिकुड़ी–बटुरी झुकी खड़ी है और बहू बैकुंठ पाने के लिये चल पड़ी तीर्थयात्रा पर। कहावत बहू के प्रति व्यंग्य में कही गई है।

'सास के कारन बैद बुलाया।
सौत कहे तेरा यार आया।।'

कहावत सौतियाडाह पर है।

अ०– सास के लिये तो बैद्य बुलवाया कि बीमारी देखकर दवा होगी। सौत कहती है कि तेरा प्रेमी आया था।

'सास न नंदी, आपही अनंदी।'

अ०– सास ननद किसी के न होने पर बहू बड़ी प्रसन्न है कि मैं अकेली ही भली हूँ।

'सासरे, सुख की बास रे।'

श०– सासरे–ससुराल। बास–बसना, रहना।

अ०– कहावत बहुधा लड़कियों के ऊपर कही जाती है कि सुख से रहना हो तो ससुराल में रहो, वहीं सुख मिलता है।

'सास से बैर नगर से नाता अस अपजस जिन दिहा बिधाता।'

श०–. नाता–रिश्ता। अपजस–कलंक, बुराई। विधाता–ब्रह्मा।

कहावत उस समय कही जाती है जब सास से घर में विवाद चल रहा हो।

अ०– बहू सास से तो बैर रखती है, और नगर भर से नाता जोड़ती है तो भगवान करे कि ऐसी बहू किसी को भी न मिले।

'सास क अपना, पतोहू के अपना, नाती क सपना।'

अ०– जब सबको अपनी–अपनी पड़ी हो तो कहते हैं कि सास को अपनी पड़ी है, बहू को अपनी पड़ी है तो नाती को कौन संभाले? या नाती का सपना ही देखते रह जाना।

'सास के मारे अलगे भया, सासू हमरे बांट परीं।'

जब कोई किसी के मारे तंग आकर उससे दूर रहना चाहे तो कहावत कही जाती है।

अ०– बहू कहती है कि जिस सास से तंग आकर तो मैंने उनसे बंटवारा कर लिया था वही मेरे ही हिस्से में मेरे मत्थे पड़ीं। उनसे पिंड न छूटा।

'सास गई हटिये मैं का–का खांब।
संइया गे बिदेसे मैं कहां–कहां जांव।।'

कहावत उस समय की है जब बहुत पुराना जमाना था। सास के मारे कोई बहू मनपसंद खाना नहीं खा पाती थी और पति के मारे पर्दे के कारण कहीं बाहर निकल नहीं पाती थी।

अ०– बहू सोचती है कि आज तो सास बाजार गई हैं तो मैं क्या–क्या बनाकर खा लूँ? पति परदेश चले गये हैं तो कहां–कहां जाकर किससे–किससे मिल आऊं?

'सास लुकाय, लुकाय, बहू गोहराय, गोहराय।'

अ०– जो काम सास चुपचाप करती हैं बहू उसे आवाज देकर किया करती है।

'सारी खुदाई एक तरफ जोरू का भाई एक तरफ।'

अ०– साले की लोग बड़ी इज्जत करते हैं इसलिये कि उसकी बहन से शादी हुई है। बहन को खुश करने के लिए मायके वालों को खुश तो करना ही होता है उस पर भला भाई, वह जोरू का?

'सारी रात किहनी भै, सबेरे पूना पूछीं'
चन्द्रलेखा मेहरारू रहीं कि मंसेधू।'

जब किसी आदमी का किसी काम के समय मन और कहीं हो ध्यान कहीं और कहीं हो, तो फिर वह बात को ठीक से न सुन सकता है न समझ सकता है।

अ०– कहानी तो रात भर चलती रही और रात भर पूना कहानी सुनती भी रही। कहानी जब समाप्त हो गई तो पूछ रही है कि फला पात्र कौन था औरत था कि मर्द? इससे मूर्खता, अज्ञानता ही परिलक्षित होती है।

'सारे दिन ऊनी–ऊनी, रात को चरखा पूनी।'

जब कोई भी स्त्री दिन भर तो इधर–उधर डोलती– घूमती फिरे और रात को काम लेकर बैठ जाय तो कहते हैं।

अ०– दिन भर तो फालतू के कामों में बातचीत करने व इधर–उधर में बिता देती है और रात को बड़ा काम कि चर्खा लेकर सूत कातने बैठ गई।

'सारे गांव मां दुइयै, कि तौ धुनक्कर, कि तो भुजक्कर।'

श०– धुनक्कर–रूई धुनने वाला। भुजक्कर–भाड़ में दाना भुजने वाला भुजवा।

जब कोइ बहुत सीमित लोगों में दो चार की प्रशंसा बार–बार करता है तो कहावत कही जाती है कि बस गांव में दो ही तो बसे हैं या भुजवा या धुनिया हैं।

'साली निहाली, चाहे ओढ़ी, चाहे बिछाली।'

साली ऐसी होनी चाहिए कि उसे चाहे ओढ़ो, चाहे बिछाओ।

'साली आधी घरवाली होथि।'

अ०– साली से लोग खूब हंसी–मजाक करते हैं। कहावत है कि साली पूरी नहीं तो आधी घरवाली यानी पत्नी के रूप में होती है।

'सास बखानी गौने मां, लूका लागीं थौने मां।'

श०– बखानी–तारीफ करना। गौने –जब पहली बार कन्या शादी के बाद ससुराल जाती है। लुका–लुकारा, क्रोध, खलता, बुरा लगना। थौने–जब कन्या गौने के बाद मैके आने पर ससुराल जाती है।

कहावत उस समय कही जायेगी जब कोई कन्या दूसरी बार ससुराल गई हो और उसे वहां पर बहुत से व्यंग्य, ताने, बातें सुनने को मिली हो। पहली बार आने के बाद दूसरी बार ससुराल आने पर ससुराल वालों का व्यवहार बदल गया हो या किसी प्रकार की कोई कमी महसूस हुई हो।

अ०– एक बार गौना होने पर ससुराल आई हुई बहू का कहना है कि जब गौने में गई तो सास ने बहुत तारीफ की। बड़े प्यार–दुलार के रखा मगर जब गौने के बाद थौने में आई तब तो ऐसा व्यवहार मिला कि शरीर में जैसे आग ही लग गई हो।

'सारी चोट निहाय के सिर पै।'

श०– निहाय–लोहारों और सुनारों का यह चौकोर ठीहा जिस पर वे सामानों को रखकर गढ़ते और कूटते हैं।

जब घर के बड़ों के सिर पर ही सारी जिम्मेदारी का बोझ आता है तो कहावत कही जाती है।

अ०— वैसे निहाय के ऊपर सारे हथौड़े की चोट पड़ती है वैसे ही किसी घर मालिक के एक के ऊपर पूरे घर की जिम्मेदारी का बोझ रहता है।

'साहजहां के बगल मं ताज, खात पियत की गिरि गै गाज।'

श०— ताज–राजमुकुट, ताजमहल। गाज–आफत, बिजली।

जब किसी आदमी के अच्छे दिनों में अचानक अपनों के द्वारा कोई कठिन संकट आ जाता है तो कहावत चरितार्थ होती है।

शाहजहां मुगल सम्राट था। जब वह बूढ़ा हो गया तो उसका पुत्र औरंगजेब ने उसे कैद कर लिया और खुद गद्‌दी पर जाकर बैठ गया, उसने शाहजहां के मर जाने पर मुमताज महल (पत्नी) की बगल में इसकी भी कब्र बनवा दी।

'साधू नहीं बिआधू अही।'

अ०— बने हुये साधुओं के प्रति कहा गया है कि साध ु नहीं ये व्याधि, यानी एक प्रकार के रोग हैं। व्यर्थ को परेशान करने पहुंच आते हैं।

'साठ सास, नंद हो सौ, मां की होड़ न इसने हो।'

अ०— कितनी ही सास ननदें भरी हों मगर अपनी माता के बराबर कोई नहीं होती।

'ससुरे तोरे साग, बहू तोर भाग।
बाप के तेरे राज, पर तू बैठी झांक।।'

कहावत उस समय चरितार्थ की जाती है जब कोई बहू ससुराल की कमियों पर अपने भाग्य को कोसती है और अपने मैके की बड़ाई व सुखों की प्रशंसा करती हो। उस पर सास कहावत कहती है।

अ०— बहू तेरी ससुराल में तो साग ही है, यह तेरे भाग्य की बात है। तेरे बाप के यहां बहुत कुछ है तो क्या करोगी, तुम्हारा उसमें क्या अधिकार है? तू बैठी–बैठी देखती रह। यानी कि मैके में लड़की का कोई वश या अधिकार नहीं होता। ससुराल में ही जो होता है उसी में बहू को संतुष्ट और प्रसन्न रहना पड़ता है।

'सावन में करइला फूले, नानी देख नेवासा भूले।'

श०— नेवासा–दोहिता, लड़की का लड़का जो ननिहाल में रहता हो।

अ०— नानी को दोहिता बहुत ही प्यारा होता है। कहा है कि नाती को देखकर नानी सबकुछ भूल जाती है।

'साधुन पियै, संतन पियै पियै कुंवर कन्हाई।
जो बिजया की करै बुराई वहिका खाय कलिका माई।।

अ०— कहावत भंग की तारीफ में कही गई है कि इसे साधु, महात्मा, कृष्ण, शिव सभी पीते हैं। जो इसकी बुराई करे उसे माई उठा ले। यानी वह मर जाय।

'साधु दुखिया सब संसारा।
जो सुखिया सो राम अधारा।।'

अ०— स्पष्ट है।

'सि'

'सिर बड़ा सरदार क गोड़ बड़ा गंवार क।'

कहावत सिर की रचना से संबंधित है।

अ०— जिस आदमी का सिर बड़ा हो तो उसका लक्षण है कि वह सरदार होता है और जिसका पैर बड़ा हो वह गंवार होता है।

'सिर पर गिरै राज सुख पावै।
औ ललाट ऐश्वर्य ले आवै।।'

श०— राजसुख–राजा की भांति सुख पाना। ललाट–मत्थे पर। ऐश्वर्य–सम्पन्नता, भाग्य।

यह कहावत छिपकली गिरने के विचार में कही गई है।

अ०— यदि सिर पर गिरती है तो राजा की भांति सुखकारक है और यदि मस्तक पर गिरे तो भाग्य को बढ़ाती है।

'सिकारी सिकार खेलै चूतिया साथ फिरै।'

अ०— शिकारी तो अपना शिकार करने के चक्कर में है और बेवकूफ लोग उसके साथ घूम रहे हैं। यानी काम करने वाले अपना काम करते हैं और मूर्ख उनके साथ बेकार में अपना समय गंवाते हैं।

'सिखवा पूत दरबारे न जायं।'

जब किसी आदमी को कोई बात सिखाई जाती है तो वह उसके दिमाग में सही नहीं बैठती।

अतः किसी से कोई काम बलात् नहीं कराया जा सकता है। पुत्र को दरबार के लिये जो भी बात सिखाई–समझाई गई है वह उसके दिमाग में न आने के कारण वह दरबार तक जाने में डर रहा है।

'सियारे के मुंहें मंगल नहीं निकरते।'

किसी–किसी आदमी की आदत होती है कि वह हमेशा ही कुभाख बोला करते हैं। जब भी कुछ कहेंगे तब कुछ न कुछ गलत ही बोलेंगे। कहावत उस समय कही जाती है।

अ०– जैसे स्यार के मुंह से अच्छी आवाज नहीं निकलती है। वैसे ही किसी व्यक्ति के मुंह से भी बुरे वचन ही निकला करते हैं।

'सिर पर जूती, हाथ में रोटी।'

अ०– बड़ी बेहयाई से खाना मिलना। यानी कि रोज ही अनादर की रोटी खाना।

'सिपाही की रोटी सिर बेंचे की।'

जब किसी की नौकरी ऐसी हो कि चौबिसों घंटे उसकी जान हथेली पर रखी रहे तो कहावत कहते हैं।

अ०– सिपाही जो काम करता है उससे उसकी रोटी मिलती है तो उसकी रोटी सिर कटाने अथवा बेंचने के बाद ही मिल पाती है। यानी जीवन सदैव खतरे में रहता है।

'सिर झाड़, मुंह पहाड़।'

अ०– जब किसी की शक्ल बहुत ज्यादा भद्दी होती है तो कहावत कही जाती है। सिर पर झाड़–झंखाड़ की तरह बाल हैं और मुंह पहाड़ की तरह भारी और बदशक्ल है।

'सिर में बार नहीं, भालू से लड़ाई।'

अ०– जब कोई कमजोर आदमी किसी बलवान से मुठभेड़ करने के लिए निकलता है तो कहा जाता है कि सिर की रक्षा करने वाले बाल तो हैं नहीं तो भालू से लड़ाई करने में कौन सी बुद्धिमानी है?

'सिर–सिर अकिल, गुरु–गुरु विद्या।'

अ०– संस्कृत में एक श्लोक है– 'मुण्डे–मुण्डे मतिर्भिन्ना' यानी कि हर आदमी की अक्ल में अंतर होता है। सबकी बुद्धि एक तरह नहीं पाई जाती। लोगों के विचार अलग–अलग होते हैं। हर सिर की बुद्धि और हर गुरु की विद्या भिन्न–भिन्न होती है।

'सिर सुहरावै भेजा खाय।'

श०– भेजा–दिमाग। सुहरावै–सहलाना।

अ०– एक तरफ तो सिर सहलाकर आराम दे रहे हैं दूसरी तरफ व्यर्थ की बातें कर–करके दिमाग खराब कर डाला है।

'सीख उसी को देनी आछी।
जो तेरी शिक्षा माने सांची।।'

अ०– स्पष्ट है।

'सीख देत औरों को घांड़ा, आप भरें पापों का भांड़ा।'

अ०– दूसरों को तो शिक्षा देते–फिरते है और खुद तमाम तरह के पाप करते हैं।

गोस्वामी जी के शब्दों में 'पर उपदेस कुसल बहुतेरे,' जे आचरहिं ते नर न घनेरे।'

'सीखे नाऊ क काटै बटाऊ क।'

श०– नाई– जो बाल बनाते हैं। बटाऊ–राही, बटोही।

यहां पर कहावत जेबकतरों के प्रति कही गई है।

अ०– नाई का बाल काटने का गुण सीखने वाले कभी–कभी राहगीरों की जेब भी काटनी सीख लेते हैं।

'सीख भइया वही, जामें हंड़िया खुद–बुद होई।'

अ०– कोई आदमी अपने बच्चे से कहता है कि वही काम सीखो जिसमें खाने पीने की डौल भी बन पाये। हांड़ी में चावल दाल पक पाये, यानी रोजी सीखो कि घर–परिवार का खर्च निकाल सको।

'सील बिना हील बेकार है।'

अ०– किसी मनुष्य का कितना भी लंबा–चौड़ा शरीर क्यों न हो यदि उसमें शील, सरसता, संकोच, सहृदयता, सहानुभूति के गुण नहीं हैं तो वह मनुष्य बेकार होता है।

'सीत से बचय, हवा मां सोवै।
ओके दूख गोड़वारी रोवै'।।

श०– सीत–ओस। गोड़वारी–पैर की तरफ।

अ०— कहावत स्वास्थ्यपरक है कि जो मनुष्य ओस से बचता है और हवा में सोता है वह सुख पाता है। उसका दुख–क्लेश उसके पैताने बैठ कर खुद ही रोते हैं कि यह आदमी बीमार नहीं हो पा रहा है।

'सीत दूध, जेहिका देय साईं, वहिका है बैकुंठ यहां हीं।'

श०—सीत–मट्ठा। साईं–भगवान। बैकुंठ–स्वर्ग।

अ०— जिसको ईश्वर ने मट्ठा दही, दूध दिया है उसके घर में सब सुख ही सुख है।

'सीधी अंगुरी जो घिव निकरै तो टेढ़ काहे क करै।'

अ०— जब कोई काम आसानी से हो जाय तो फिर उसमें कड़ाई करने की क्या जरूरत है? जैसा कि किसी ने कहा है 'गुर दिहे मरै तो जहर काहे क देय?'

'सीलवंत गुन ना तजै, अवगुन तजै न गुलाम।
हरदी जरदी ना तजै, खटरस तजै न आम।।'

श०— सीलवंत–संकोची स्वभाव का व्यक्ति, गुलाम–नौकर, जरदी–पीलापन। षटरस–खटाई।

अ०— जिसके स्वभाव में सील, संकोच है वह अपना गुण और गुलाम अपना अवगुण उसी प्रकार से नहीं छोड़ सकता है जैसे हल्दी अपना पीलापन और आम अपनी खटास को नहीं छोड़ता है।

'सु'

'सुभाग तब जानी जो घर बरै आग, घड़ा मां रहे पानी।'

श०— सूभाग–सौभाग्य, अच्छे भाग्य।

कहावत अपने भाग्य के प्रति कही गई है। कि कब भाग्य को सराहूं?

अ०— जब घर में आग जले, कुछ खाने–पीने की व्यवस्था बने, घड़े में ठंडा पानी हो, तभी समझो कि भाग्य है। यानी रोजी–रोटी का ठिकाना ही मनुष्य के जीवन की पहली मांग है।

'सुतरी न सइंठा, चुप मारि के बइठा।'

किसी काम के करने के समय जब कार्य विशेष की साधन–सामग्री मिल न पाये तो लोग कहावत चरितार्थ करते हैं कि जब सामान ही नहीं है तो काम कैसे हो? चुपचाप बैठो, जब सामान हो जायेगा तो रस्सी बनेगी।

'सुई, कतरनी, गज, उंगलेटा, रक्खे सो दरजी का बेटा।'

सामान की पहचान से पेशे का अनुमान लगाना।

श०— कतरनी–कैंची, उंगलेटा–सिलाई करते समय उंगली में दर्जी लोग पहनते हैं ताकि सुइयों के चुभने से बचा जाय।

अ०— सुई, कैंची, नापनेवाला गज और उंगली में पहनने वाला उँगलेटा जब किसी के पास हो तो समझो कि वह दर्जी का लड़का ही होगा।

'सुई कहे छेदू छेदू, अपुना छेद कराये।'

आदमी में स्वयं दोष हो और उसे न देखकर दूसरों के दोष को देखे तो कहावत कहते हैं।

अ०— सुई कपड़ों में छेदने ही छेदने के लिए कहती है मगर वह यह भूल गई है कि उसमें स्वयं छेद है।

'जहां सुई न जाय, उहां फार घुसेड़ते हो।'

श०— फार–हल में लगा लोहा जिससे जमीन जोती जाती है।

अ०— जबरदस्ती किसी काम को करना। जहां सुई न जा सकती हो वहां पर फाल कैसे जा सकता है?

'सुअरी क सेंदुर, गिरगिटे क माला नहीं सोहातै।'

किसी बहुत बदशक्ल स्त्री एवं पुरुष के प्रति कहावत व्यंग्य में कही गई है।

अ०— सुअर को सिंदूर लगा दो और किसी गिरगिट के गले में माला पहना दो तो वह क्या सुंदर लगेगा? यानी कि अपनी शक्ल–सूरत को देखकर ही साज श्रृंगार करना चाहिए।

'सुअरी क गू अस, न लीपै लायक न पोतै लायक।'

किसी आदमी को जब किसी काम के लायक नहीं समझा जाता है तो कहावत सामने आती है।

अ०— जैसे सुअर का विष्टा किसी काम में नहीं आता, न लीपने के न पोतने के, न कंडे बनाने के, ठीक उसी प्रकार के तुम किसी काम के नहीं हो।

'सुअरी क अस बिआन अही।'

सुअर बच्चे बहुत व जल्दी–जल्दी पैदा करती है तो जब किसी औरत की यह दशा रहती है तो कहावत व्यंग्य में कही जाती है।

अ०– जैसे सुअर बार–बार बच्चे पैदा करती है वही हाल है उस स्त्री की है।

'सुक्कर केरी बादरी, रही सनीचर छाय।
तो यों भाखै भड्डरी बिन बरसे ना जाय।।'

कहावत भड्डरी कवि की है जिन्होंने बदली के ऊपर कही है।

अ०– यदि शुक्रवार के उठे बादल शनिवार तक आकाश में छाये रहें तो भड्डरी का कहना है कि वे बिना बरसे नहीं जायेंगे। अवश्य वर्षा होगी।

'सुख–सुख राती देव उठान, तेकरे बरहैं करो नेवान।
तेकरे बरहें खर, खरिहान, तेकरे बरहैं कोठिला धान।।'

श०– सुख–सुख राती–दीपावली की रात। देव उठान–देवोत्थानी एकादशी। नेवान–नया अन्न ग्रहण करने का दिन।

कहावत त्योहारों व अनाज के ऊपर कही गयी है।

अ०– सुख–सुख राती–दीवाली के बारहवें दिन बड़ी एकादशी पड़ती है जिसके लिये कहा गया है 'दिया दिवारी कोने मां, बारा रोज डिठौने मां' तो दीवाली के बारहवें दिन डिठौनी एकादशी यानी देवोत्थानी एकादशी पड़ती है। उसके बारहवें दिन फिर 'नेवान' करना चाहिए। फिर उसके बारहवें दिन फसलों की कटाई करके खेत से अनाज के बोझों को ढोकर खलिहान में लाना चाहिए और फिर अनाज को दांय, ओसाय के उसके बारहवें दिन क़ोठिले में भरना चाहिए। ऐसा ही खेती का प्राविधान होता है। इस तरह से एक दूसरे के बारहवें दिन साइत अपने आप ही बनती व पड़ती है।

'सुख से बढ़े, मोटापा चढ़े।'

अ०– सुख होने पर शरीर पर मोटापा अधिक वढ़ता है।

'सुख से सोवै सेख, चोर न भाड़े लेय।'

श०– सेख–फकीरों की एक जाति।

अ०– शेख के यहां चुराने की कोई वस्तु ही नहीं होती जिससे चोर उनके घर चोरी करे।

'सुखन बीबी पीना नहीं पीतीं।'

श०– पीना–कोई भी पीनेवाली वस्तु।

अ०– बीबी सुख से इतनी सुकुमार है कि पीने का कोई भी सामान तक पीना उन्हें बुरा लगता है।

'सुगंध लगाऊं तो मन ऊभ मरूँ, ऊभ मरूँ पहिरे तन सारी।
हार चमेली का भारी लगत, तुम जानत हो तन की सुकुमारी।।'

किसी रूपगर्विता नायिका के ऊपर व्यंग्य में कहा जाता है।

अ०– स्त्री कहती है कि यदि कोई मँहकने की वस्तु लगाती हूं तो मन ऊभता है, साड़ी पहनती हूँ तो तन पर भारी लगती है। यदि गले में चमेली के फूलों का हार पहनती हूँ तो वह भी भारी प्रतीत होता है जानते हो कि मैं कितनी सुकुमारी हूँ?

'सुघरी कै बिटिया भल कुघरी क बेटवा नाहीं।'

श०– सुघरी–अच्छी साइत की। कुघरी–बुरी साइत की।

कहावत घर में संतान के जन्म की है। खराब लग्न का जन्मा पुत्र हानिकारक माना जाता है।

अ०– अच्छी साइत, लग्न की जन्मी कन्या भली है मगर खराब नक्षत्र का जन्मा लड़का नहीं। इससे अच्छा तो वह लड़का नहीं ही होता तो ठीक था।

'सुदी असाढ़ पंचमी गरज घमघमो होय।
सस्ता धान बिकाइहे, हाथ न छुइहे कोय।।'

कहावत में धान की पैदाइस के क्या लक्षण हैं, बताया गया है।

अ०– यदि असाढ़ माह की उजाली पंचमी को आकाश में बादलों का गर्जन हो तो समझो कि इतना ज्यादा धान पैदा होगा कि कोई हाथ से भी नहीं छुयेगा।

'सुदी असाढ़ नौमी दिना, बाहर झीनो चंद।
जाने भड्डर भूमि पर मानो होय अनंद।।'

अ०– यदि असाढ़ माह की उजाली नवमी को बादलों के बीच में झीना, धुंधला चन्द्रमा दिखाई दे तो समझो कि पृथ्वी पर प्रसन्नता ही प्रसन्नता होगी। ऐसा कवि भड्डरी का कहना है।

'सुदी असाढ़ में बुध को उदय भयो जो देख।
शुक्र अस्त सावन लखो महाकाल अब पंख।।'

अ०– यदि आषाढ़ शुक्ल पक्ष में को बुध नक्षत्र उदय होते हैं तथा पूरे सावन में शुक्रास्त हो तो निश्चत ही अकाल का योग है।

'सुदी बैसाख तीन गुरुवारी, अधिक अन्न से प्रजा सुखारी।'

अ०– यदि बैशाख के शुक्लपक्ष की तृतीया को बृहस्पतिवार पड़े तो अन्न से प्रजा सुखी रहेगी।

'सुनै सबकी, करै मन की।'

जो–जो लोग अपनी राय दें उन्हें सुनना तो चाहिये किन्तु उस पर आचरण अपनी ही समझ से करना चाहिए।

'सुप्पक मियां आगे लड़ै कि पाछे।'

जब एक ही आदमी को बाहर, भीतर हर स्थान पर काम करना हो या उसकी देखभाल में ही काम होने वाला हो तो कहावत कहते हैं।

अ०– बेचारे सुप्पक मियां आगे लड़े या पीछे लड़े।

'सुपारी अस लोई, पान अस पोई।
पूछा तो देवान जी से अउर पातर पोई।।'

कहावत व्यंग्य में बहुत ही पतली रोटी बनाने के प्रति कही गई है जिसकी गिनती तो होती है मगर पेट नहीं भरता।

अ०– सुपारी के बराबर आटे की लोई है और पान के जितनी पतली रोटी बनायी है। उस पर भी पूछो तो 'देवान साहन से कि इससे भी पतली बनाई जाय?

'सुक सारी राखै सबै काक न राखै कोय।
मान होत है गुनन के, गुन बिन ज्ञान न होय।।'

यह कवि वृंद जी का दोहा है। लोग जब गुणों की बात करने लगते हैं तो इस दोहे को कह देते हैं।

अ०– तोता–मैना तो सभी पालते हैं मगर कौवा कोई नहीं पालता क्योंकि उसके बोल कर्कश होते हैं और तोता व मैना के बोल मीठे लगते हैं। इसलिये गुणों की पूजा सब करते है गुणहीन व्यक्ति को कोई आदर नहीं देता है।

'सुन केउ हजार सुनावै, करो वही जो समझ में आवै।'
काबू हो तो करो करो न गफलत, वाजिब हो तो हार न हिम्मत।
आता हो तो हाथ लीजे, जाता हो तो गम ना कीजै।।'

अ०– स्पष्ट है।

'सुफल होय मन कामना, तुलसी प्रेम प्रतीत।
अपनो ऐपन लाय के तिरिया पूजै भीत।।'

श०– ऐवन– पिसे हुये चावल और हल्दी का घोल बनाकर स्त्रियां पूजन के समय दीवारों में लगातीं या पेड़ आदि की पूजा करती है।

अ०– प्रेम के ही कारण नारी दीवार में ऐपन से बनाकर पूजा करती है।

'सुर नर मुनि सबकी यह रीती।
स्वारथ लाइ करइ सब प्रीती।।'

अ०– संसार में देवता, मनुष्य, ऋषि, मुनि सभी की यही रीति है कि अपने स्वार्थ के लिये ही सब दूसरे से प्रेम करते हैं।

'सुहागिन के पूत पिछवाड़े खेलै।'

अ०– सुहागिन नारी के संतान की क्या कमी उनके बेटे तो जब चाहें मिल जाते हैं।

'सुहात कै लात, असुहाते के बातों खल जात है'

श०– सुहाते–जो अपना प्रेमी हो, अपनत्व हो, प्यारा हो। असुहात–जो बुरा लगे, जिससे कोई आपसी मनमुटाव हो, बैर हो।

अ०– जिससे प्यार होता है उसकी लात, प्रताड़ना भी बुरी नहीं लगती और जिससे किसी प्रकार का दुराव, छिपाव, दूरियां हों, उसकी बात ही बर्छी की भांति लगती है।

'सू'

'सूखा ढाक, बढ़ई क बाप।'

चूंकि ढाक की लकड़ी सूखने के बाद बहुत कड़ी हो जाती है। कहावत इसी पर लागू की गई है।

अ०– ढाक की लकड़ी को बढ़ई को बनाने में कठिनाई उठानी पड़ती है।

'सूआ सेमल देख के सभी गंवाई बुद्धि।
फूलि देखि के रम रहे, फल की रही न सुदि्ध।।'

श०– सूआ–तोता। सेमर–जिससे रुई निकलती है। गंवाई–खोना। रम–मोहित होना।

जब कोई आदमी ऊपरी सुंदरता को देखकर मोहित हो और उसका परिणाम न सोच सके कि इसमें क्या बुराई या अच्छाई है तो कहावत कही जाती है।

अ०– तोते ने सेमल के फूल के देखकर सुध बुध खो दी। वह विशेष मोहित हो गया मगर वह यह समझ न सका कि इसमें तो फल होता ही नहीं है।

'सूखिगै लकड़ी अस, खाय बकरी अस।'

किसी को दुर्बल या अधिक कमजोर देखकर कहावत कही जाती है।

अ०– दिनभर बकरी की तरह मुंह चलता रहता है। मगर देखो तो लकड़ी की तरह दुबले हैं।

'सूत न कपास कोरिया से लट्ठम लट्ठ।'

श०– कोरी–बुनकर एक की जाति होती है।

अ०– अकारण झगड़े जब किसी से हों तो कहते हैं कि जहां न सूत है न कपास है यानी झगड़े का कोई कारण नहीं फिर भी कोरी से झगड़ा करने लग गये।

'सूके पहिरै चीरा, सुख से रहै सरीरा।'

अ०– नया वस्त्र यदि शुक्रवार को पहिने तो धारक का शरीर स्वस्थ रहेगा। यानी नया कपड़ा पहनना हो तो शुक्रवार का दिन सबसे अच्छा माना गया है।

'सूके, सोमे, बुधे वाम, यदि सुर लंका जीतें राम'

श०– सुर–नाक द्वारा ली गयी सांस। बाम–बायें।

कहावत नाक से सुर (सांस) लेने के प्रति कही गई है। सांस प्रक्रिया नाक के किस ओर से चलती है तो क्या फल होता है?

अ०– कहावत भड्डरी कवि की है उन्हें सुर विचार का ज्ञान था। कहते हैं कि शुक्रवार, सोमवार, बुधवार को यदि बायें नाक के छेद से सांस चले और कोई कार्य के लिये यात्रा करे तो लाभ होता है। इन्हीं सुरों से राम ने लंका विजय की थी।

'सूख सुखौना सूख, सांझ के पहुना रहिहै कालि ल।।'

श०– खुखौना–जो अनाज धूप में सूखने के लिये डाला जाता है। पहुना–मेहमान।

इस कहावत में एक कथा है– 'किसी के घर मेहमान आये तो उस घर की स्त्री ने क्या किया कि अनाज को धोकर जल्दी से धूप में डाल दिया कि काहे को सूखेगा, काहे को पिसेगा, तो फिर खाना बनेगा। इतने में मेहमान अपने आप ही चले जायेंगे। मगर उस स्त्री का यह बहाना कामयाब न हुआ। मेहमान भी अड़ियल था वह भला इतनी जल्दी कब जाता, उसी पर कहावत है।

अ०– स्त्री निराश होकर कहती है ऐ सुखवने! सूख या अभी तो मेहमान कल तक रहेंगे।

'सूखे धाने पानी परा।'

जब किसी को अचानक लाभ मिलता है तो कहावत कही जाती है।

अ०– सूखते धानों में पानी पड़ गया। गोस्वामी जी के शब्दों में– सूखत धान परा जनु पानी'। चूंकि धान को पानी की आवश्यकता तो होती ही है उस पर सूखते धान में पानी का पड़ना। आशय है निराश व्यक्ति के जीवन में आशा का संचार हो जाना।

'सूखे हाड़ प कउव्वा नहीं बइठते।'

श०– हाड़–हड्डी। सूखे–जिसमें कुछ भी मांस न लगा हो।

अ०– सूखी–नीरस वस्तु को कोई भी नहीं पसंद करता। चाहे वह कौवा ही क्यों न हो?

तो सरसता ही जीवन है वर्ना नीरसता की ओर जानवर भी नहीं जाते।

'सूप बोलय तो बोलै, चलनिव बोलै जेकरे बहत्तर छेद।'

कहावत उन लोगों पर उद्धृत की जाती है जो अपना दोष तो नहीं देखते हैं दूसरों की निंदा करना ही उनका काम होता है।

किसी ने कहा है।

'दोष पराया देख के चलत हसन्त–हसन्त।
अपनी याद न आवई जाको आदि न अंत।।'
तिनका कबहुं न निन्दिये, पांव तले जो होय।
कबहूं उड़ि आंखिन पड़ै, पीर घनेरी होय।।'

उपरोक्त कहावत अपने दोषों को न देखते हुए दूसरों का छिद्रान्वेषण करने पर कही गई है।

अ०– सूप बोले तो भले ही बोले मगर यह चलनी क्या बोले जिसके एक नहीं, दो नहीं, बहत्तर हैं। पहले वह अपना छिद्र तो देखे तो फिर किसी का छिद्रान्वेषण करे।

'सूना खेत कुलच्छना, हरिनी ही चर जाय।
खेत बिराना बोय के, बिया अकारथ जाय।।'

श०– सूना खेत– जिस खेत की कोई रखवाली करने वाला ही न हो। बिराना, दूसरे का। अकारथ–बेकार।

कहावत उस समय की है जब खेत या तो जमींदार, रईस, रजवाड़ों के होते थे या फिर अधिया पर लोग खेत बोआते थे।

अ०– जिस खेत की कोई रखवाली करने वाला न हो उस खेत को जानवर ही चर जाते हैं, बेकार बीज बोकर नुकसान उठाना पड़ता है, लगान तो देना ही होता है। इसलिये यदि खेत बोना है तो उसकी निगरानी जरूरी है।

'सूनी सार से मरखना बैल ही भला।

श०– सूनी–खाली। सार–सरिया जिसमें जानवर रहते हैं। मरखना–मारने वाला, सींग दिखाने वाला।

कहावत तब चरितार्थ की जाती है जब किसी वस्तु की कमी महसूस होती है

अ०– सरिया खाली पड़ी रहने से अच्छा था कि मारू बैल ही होता। तब भी जगह भरी रहती, सूनापन न मालूम देता।

'सूम क धन सैतान खांय।'

श०– सूम–कंजूस।

अ०– सूम लोगों का धन जब किसी के काम में नहीं आता तो उसका उपयोग शैतान करते हैं।

'सूम के घर कुत्ता न जाय।'

अ०– कंजूस के घर कुत्ता भी नहीं जाता है।

'सूम पूछै सूम से काहे बदन मलीन?
का गाँठी से गिर परा, का काहू का दीन?'
ना गांठी से गिर परा, ना काहू को दीन।
देते देखा ओर को, ताते बदन मलीन।।'

अ०– एक सूम से दूसरा सूम पूछता है क्या गांठ से कुछ गिर गया है या किसी को कुछ दे दिया है, क्यों मन दुखी है? तो सूम कहता है कि न तो कुछ गिर गया है और न किसी को कुछ दिया ही है। दूसरे को देते देखकर मेरा मन दुखी हो गया है। कहावत में कंजूसों पर करारा व्यंग्य किया गया है।

'सूप क ओलारा, सूपे मां न रहिहै।'

जब कोई बच्चा होकर अपने कार्य में योग्यता एवं दक्षता दिखाने लगे तो कहावत जन्म समय की तुलना में कही जाती है क्योंकि हमारे देश की लोक–रीति है कि बच्चा पैदा होते ही सूप में लिटाया जाता है। उसमें स्त्रियां उस बच्चे की शुभकामना हेतु न्यौछावर आदि डालती हैं जो दाई लेती है। कहावत उसी पर है।

अ०– क्या सूप का लेटाया सूप में ही बने रहेंगे? बड़े हो गये हैं। समझदारी आ गई है।

'सूर उगे पश्चिम दिशा, धनुष उगंतो जान।
दिवस जो चौथे, पांचवें, संड, मुंड महि जान।।'

श०– सूर–सूर्य। उगंतो–उगना। सुंड–मुंड–धरती पर सिर का लोटना।

कहावत में युद्ध की भविष्यवाणी है।

अ०– यदि सूर्य के उदय होते ही पश्चिम दिशा में धनुष उदय हो तो समझो कि पृथ्वी पर उसके चौथे, पांचवें दिन महायुद्ध की संभावना है जिसमें लोगों के सिर धरती पर लुढ़केंगे और चारों ओर हाहाकार मच जायेगा।

• **'सूरज धूल डालने से नहीं छिपतै।'**

या

'सूरज पर थूके अपनेन ऊपर छिट्टा परत।'

कहावत ऐसे समय पर कही जाती है जब किसी गणमान्य व्यक्ति का किसी प्रकार से अपमान किया जाय, अनादर किया जाय।

अ०– यदि कोई चाहे कि सूर्य को धूल डाल कर छिपा लें तो यह तो उसका दुष्प्रयास ही होगा। धूल सूर्य तक पहुंच भी पायेगी? चाहें कि सूर्य पर थूक दें अपने पर छीटे पड़ेंगे।

'सूरज बैरी ग्रहन है, दीपक बैरी पौन।
जी का बैरी काल है, आवत रोकै कौन?'

श०– बैरी–दुश्मन। ग्रहन–ग्रहण।

पौन–पवन, हवा। काल–मौत।

अ०– सूर्य का दुश्मन ग्रहण है। दिया का बैरी पवन है और मनुष्य की जान का बैरी काल है मगर इन सबको कौन रोक सकता है?

'सूरदास की काली कमरी चढ़ै न दूजो रंग।'

कहावत उस समय कही जाती है जब किसी आदमी के ऊपर बात कहने–सुनने का कोई असर ही न हो।

सूरदास जी के कथनानुसार काली कमरी पर अन्य रंग नहीं चढ़ता है। वैसे ही किसी व्यक्ति विशेष पर अन्यों के कहने का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

'सूरत चुड़ैल सी मिजाज परियों का सा।'

अ०– स्पष्ट है।

'सूरत न शक्ल, परी की नकल।'

अ०– स्पष्ट है।

'सूरा सो पूरा।'

अ०– जो बहादुर होता है वह अपने पुरुषार्थ में संपूर्ण होता है।

'से'

'सेर भर के माल में पसेरी भर कै धोखा।'

जब बहुत ज्यादा नुकसान हो जाय तो कहावत कही जाती है।

अ०– सेर भर के माल में पसेरी की हानि है। लोगों का बहुत अधिक नुकसान होता है। तो कहावत कही जाती है।

'सेर भर के बाबा सवाव सेर की शंख।'

जब कोई आदमी अपनी उम्र या औकात से ज्यादा भारी सामान इस्तेमाल करता है तो कहावत कही जाती है।

अ०– बाबा जी तो सेर भर वजन के हैं और उनका शंख सवाव सेर तौल का है।

'सेर बकरी एक्के घाट के पानी पियत रहें।'

जब एकता, शांति एवं सामंजस्य की स्थिति होती है तो कहावत कही जाती है।

यानी एक समय ऐसा भी था, जब शेर– बकरी एक ही घाट पर पानी पिया करते थे। शेर में बकरी के प्रति हिंसा भाव न था। न्याय, शान्ति एवं समता का शासन था।

'सेतुआ मां गड़हा करै नहीं जनतीं।'

कहावत उस समय कही जाती है जब कोई स्त्री इतनी भोली बन जाती है कि जैसे वह कुछ दुनियादारी जानती ही नहीं है।

अ०– सेतुआ कैसे साना जाता है बेचारी क्या जाने? बड़ी भोली है।

'सेवा करे तो मेवा पावै।'

किसी को शिक्षा दी जाती है।

अ०– जो सेवा करता है वह मेवा खाता है। कहने का मतलब यह कि सेवा करने वाले को सेवा का फल मिलता है।

'सेवक सठ, नृप कृपन, कुनारी।
कपटी मित्र सूल सम चारी।

श०– सेवक–दास, नौकर। सठ–दुष्ट। नृपकृपन–कंजूस राजा। कुनारी–दुराचारिणी स्त्री।

उपरोक्त पंक्ति गोस्वामी जी की है।

अ०– कहा जाता है कि धूर्त नौकर, कंजूस राजा, दुराचारिणी स्त्री और कपटी धोखेबाज मित्र ये चारों मनुष्य के जीवन में शूल समान होते हैं।

'सेह क कांटा घर मां, लड़ाई जाना जर मां।'

श०– सेह–साही, एक जानवर होता है जिसकी पूंछ में तमाम कांटे ही कांटे रहते हैं। जर–जड़।

अ०– कहावत साही के कांटे के प्रति कही गई है। ऐसा लोक विश्वास है कि साही का कांटा यदि किसी दो पड़ोसियों के यहां जमीन में गाड़ आये तो उन दोनों पड़ोसियों से कभी भी पटरी नहीं खा सकती है।

वैसे भी जब किसी दो आपसदारों में या घर में झगड़ा अधिक होता है तो लोग कहते हैं 'केहू साही क कांटा तो नहीं गाड़ि देहे है'।

'सेर क जूठन गीदड़ खाय।'

अ०– आलसी आदमी पर कहावत व्यंग्य में कही गई है। शेर अपना शिकार खाने के बाद छोड़ जाता है उसी से गीदड़ अपना पेट भरता है। यानी आलसी आदमी अपने आलस्य में झूठा, अच्छा–बुरा जो मिल जाय उसी से पेट भर लेता है।

'सेर कब मुंह धोवत है?'

जब कहीं पर हाथ–मुंह धोने या सफाई की बात आ जाती है तो कहा जाता है कि शेर भला मुंह कहां धोता है? उसका मुंह हर समय वैसे ही साफ रहता है।

'सेर की कोखी सियार जनमें।'

किसी लायक, गुणी सज्जन महापुरुष का पुत्र जब नालायक हो तो कहते हैं।

अ०– कहां बाप शेर था और बेटा के कर्म स्यार की तरह हैं। किसी काम लायक नहीं है।

'सेर के सेरे होथि।'

अ०– बाप की तरह गुणवान, होनहार पुत्र के प्रति कहावत चरितार्थ है कि बाप जब शेर की तरह है तो फिर बेटा कैसे बाप से कम होगा? वह भी अपने पिता के समान तेजस्वी, कर्मठ, शौर्यवान होगा ही।

'सेज पर कै माछिव बेकार होत।'

जहां पर आदमी का अधिकार होता है वहां झूठे ही दूसरा व्यक्ति अधिकार जमाने के लिये आ जाय या वैसे ही उस स्थान पर केवल बैठ ही जाय तो बुरा लगता है।

अ०– सेज से यहां मतलब उस स्त्री की सेज से है जिस पर अपने पति के साथ रात्रि में सोती है तो उस पर यदि मक्खी भी जाकर बैठती है तो उसे बुरा लगता है।

'सै'

'सैयां क बिरता क नांव।
पहिर ओढ़ि धन सासुर जाव।।'

श०– सैयां–पति। बिरता–कमाई। धन–स्त्री, पत्नी।

कहावत आमतौर पर मैके के बड़ाई, नाम, यश कहने वाली स्त्रियों के प्रति कही गई है जो अपने नैहर की अत्यधिक प्रशंसा करती हैं।

अ०– पति की कमाई का पैसा नैहर ले जाकर सामान खरीदकर पहन, ओढ़कर ससुराल आने वाली पति का लगा और नाम भाई, मैकेवालों का हो रहा है।

'सैयां गे बिदेश, में तो कात–कात के मुई।
आगरे का चर्खा, बुरहानपुर की रूई।।'

अ०– सैयां तो परदेश चले गये मैं यहां पर चर्खा–रूई लेकर सूत–कात–कात कर मर रही हूं। यानी काम ही काम कर रही हूं।

'सैयां गये लदनी लदाइन धड़ाधड़।
सौ के पचास किहिन चले आये धर।।'

श०– लदनी–सामान लदवाने वाले। धड़ाधड़–जल्दी–जल्दी। सौ के पचास–घाटे पर रहना।

कोई स्त्री जिसका पति व्यापार करता है उसे व्यंग्य में कह रही है।

अ०– सैयां ऐसा व्यापार करते हैं कि सौ के बजाय पचास लदवा कर घर वापस आ गये।

'सैयां चले बिदेस को, कंत हाट मत खोल।
हुनर देख मेरे हाथ की, कातूं सूत अनमोल।।'

किसी स्त्री का पति विदेश जाकर वहां व्यापार करना चाहता है तो स्त्री उसे समझाती है–ऐ पति! विदेश जाकर दुकान मत खोल। मेरे हाथ का कौशल तो देखो कि कैसा बढ़िया सूत कातती हूं। ऐसे मजे में इसी कार्य से जीवन कट जायेगा।

'सैयां यदि दुनिया मां लाखो पाये बट्टे।
कबो न लेड्डू पेड़ा लायो, बाहर खवायो खट्टे।।'

श०– बट्टे–जेवर में बट्टा काटना।

कहावत व्यंग्य में किसी सुनार की पत्नी ने कहा है।

अ०— ऐ पति! दुनिया में आकर इतने पैसे कमाये, मगर कंजूस इतने हो कि कभी तो लड्डू, पेड़े लाकर न खिलाये। खिलाया क्या? खट्टे बेर।

'सो'

'सोना परखे घरी–घरी पै, मनई परखे एक घरी पै'

श०— परखै–पहचाने। घरी–घंटा।

कहावत सोने और आदमी की पहचान करने पर है।

अ०— सोने की पहचान कसौटी पर रखने के बाद ही हो पाती है। अतः सोने को बार–बार पहचाना जाता है और आदमी को एक ही बार में जाना जा सकता है।

'सोना कहे सुनार से, उत्तम मेरी जात,
काले मुंह की चिरमिटी, तुली हमारे साथ।
मैं लालों का लाड़िला, लाल ही मेरा रंग,
काला मुंह जबसे हुआ, तुला नीच के संग।।'

श०— चिरमिटी–घुंघुची, इससे सोना व रत्न आदि तौले जाते हैं जिसकी मात्रा रत्ती बराबर लगाई जाती है। तुली–तौली गई। लाल–एक रत्न का नाम है। लाड़िली–प्यारी।

कहावत सोने, घुंघुची और सुनार पर है।

अ०— सोना सुनार से कहता है–मेरी जाति तो बहुत अच्छी है। यह काले रंग की घुंघुची मेरे साथ तुलने की नीचता क्यों करती है? वैसे घुंघुची लाल रंग की होती है मगर उस पर एक काला निशान होता है। इसलिये सोने ने सुनार से पूछा। इस पर घुंघची ने उत्तर दिया कि मैं तो लालों यानी रत्नों की प्यारी हूं। यानी रत्न मुझसे तौले जाते हैं। मेरा रंग भी लाल है। पर नीच के साथ, यानी कि तुम्हारे साथ मैं तौली गई इसलिये मेरा मुंह काला हो गया। मैं बदनाम हो गई।

'सोना चांदी, आग में ही परखे जाते हैं'

अ०— सोने–चांदी की पहचान आग में तपाने के बाद ही होती है।

'सोना जाने कसे, मानुष जाने बसे।'

अ०— सोने को कसौटी पर चढ़ाने के बाद समझा जा सकता है और आदमी जब निकट रहता है तब समझा जाता है कि वह कैसा इंसान है?

'सोना पायेव दोख, सोना खोयेव दोष।'

ऐसा लोक विश्वास है।

अ०— सोने के खोने पर भी दोष माना गया है और सोने के पाने पर भी दोष माना जाता है। कहते हैं कि सोने के मिलने पर उसे दान कर देना चाहिए।

'सोना पहिरय ढांक के चलै।
बेटवा बिआय नै के चलै।।'

श०— ढांक–छिपाके, संभाल के। बिआय–पैदा करना। नै–झुक के, शालीनतापूर्वक।

यह कहावत स्त्री जाति को सीख दी जाने में कही जाती है। कहने का सारांश यह है कि सम्पन्न होने पर गंभीरता को बनाये रखना चाहिए। जो जितना ही ऐश्वर्यवान होता है वह उतना ही शीलवान व संतोषी होता है।

अ०— सोने का जेवर पहनो तो ढंक के चलो। ऐसा न हो कि किसी को तुम्हारे अंदर अभिमान की बू आये। दिखावटीपने व ओछेपने से बहुत दूर रहना ही अच्छा होता हे। इसी प्रकार से पुत्र के जन्म होने के बाद अभिमान मत करो। झुक कर नम्रतापूर्वक सबसे रहना चाहिए।

महात्मा कबीरदास के शब्दों में–

ऊँचे पानी ना टिकै, नीचे ही ठहराय।
नीचा होय सो भरि पिये, ऊंचो प्यासो जाय।।'

किसी शायर ने लिखा है–

'तना वो दरख्तों को आंधी गिराये।
मगर घास झुक– झुक के खुद को बचाये।।'

'सोने के कुदार गोड़ै क नाहीं बनी।'

कहावत उस समय कही जाती है जब किसी कीमती वस्तु का दुरुपयोग हो रहा हो या उसकी दुर्दशा हो रही हो।

अ०— सोने की कुदाल जमीन गोड़ने के लिये नहीं बनी है।

'सोना नीक, तो का कान फराय के।'

श०— फराय—फाड़के।

अ०— सोना अच्छा है तो क्या कान को काटके पहना जाय? यानी अच्छी वस्तु का सदुपयोग यदि नहीं किया तो उससे फायदा ही क्या? बेकार है वह उस व्यक्ति के लिये।

'सोना लेवे पिय गये, सूना करि गये देस।
सोना मिला, न पी मिले, रूपा हो गये केस।।'

श०— पी—पति, प्रियतम। रूपा—चांदी। केस—बाल।

जब कोई ऐसा काम आकर सामने फंस जाता है कि पास का पैसा, सुख, चैन, सब चला जाता है साथ ही काम भी नहीं हो पाता तो कहावत कही जाती है।

अ०— कोई स्त्री अपने पति की प्रतीक्षा में कहती है कि मेरे पति परदेश सोना लेने गये सो न पति ही लौटे, न सोना ही मिला, इन्तजार करते—करते सिर के बाल सफेद हो गये।

'सोना सोनार का, सोभा संसार का।'

गहना पहनने वाले का गहना भले ही हो जिससे उसकी शोभा दुनिया में बनती और नाम होता है मगर सोना तो सोनार का ही होता है।

'सोने क कौर खववावै, सेर के नजर राखै।'

कहावत बच्चों के ऊपर कही गई है।

अ०— अच्छा से अच्छा खिलाइये, पहनाइये, मगर अनुशासन कड़ा रखिये। निगरानी बच्चों पर कठिन होनी चाहिए। कहा है— 'माता बैरी, पिता शत्रुः जो न बालक ताड़न्तः। यानी कि वे माता—पिता शत्रु के समान हैं जो बालक को अच्छी बात के लिये समझाते या ताड़ना नहीं देते।

'सोने के गेड़ुआ मां पितरी कै पेंदी।'

जब किसी मनुष्य में या वस्तु विशेष में तनिक भी खराबी हुई तो कहावत कही जाती है।

अ०— सब अच्छाई के होते हुये ऐसी खराबी कैसे? यानी पूरा गेड़ुआ तो सोने का है उसमें पीतल के पेंदे की क्या आवश्यकता थी? अशोभनीय कार्य करने पर भी कहावत कही है।

'सोने कै कटार भोंकै क न आय।'

अ०— अच्छी—भली वस्तु का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। या कीमती चीज का मतलब यह नहीं कि अपनी जान ही दे डाले।

'सोने के कटोरा मां के न भीख डाले।'

धनी मनुष्य की कौन मदद नहीं करेगा? या सुंदर कन्या से कौन न विवाह कर लेगा?

अ०— सोने का कटोरा ही कोई लेकर भिक्षा मांगने निकलेगा तो भला कौन उस बर्तन में भीख न डालेगा? पात्र के अनुसार तो भिक्षा देना ही होगा, चाहे थोड़ा ही दे।

'सोने की चिड़िया हाथ लगी।'

अ०— किसी को कोई अच्छा ग्राहक मिल जाय या पेशे में कोई लाभ का व्यक्ति मिल जाय तो कहावत कहते हैं कि लाभ ही लाभ हुआ। सोने चिड़िया हाथ में आ गई है।

'सोउब औ मरब बराबर आय।'

अ०— सोना मरने के बराबर इसलिये है कि सोता आदमी कुछ भी जान नहीं पाता। वह चेतन अवस्था में न रहने के कारण चेतना—हीन हो जाता है। तभी लोग यह कहावत कहते हैं कि सोना मरने के बराबर है क्योंकि सोने के समय सावधानी असंभव है।

'सोया सो चूका।'

अ०— जो सोया वह खोया, आलस बुरी बला है।

'सोवत हाथी से जागत चींटी बलगर होथि'

श०— बलगर—बलवान।

अ०— हाथी कितना भी बलशाली और बड़ा जीव है मगर जागती हुई चींटी से वह कहीं कमजोर होता है क्योंकि वह सो रहा है। मगर जागती हुई चींटी छोटी और निर्बल होने के बाद भी सचेत रहती है कि क्या हो रहा है और क्या होने वाला है? इसी तरह भविष्य और वर्तमान से सचेत रहने वाला, निर्बल व्यक्ति भी ज्यादा सबल होता है।

'सोरठ मीठी रागिनी, रन मीठी तलवार।
जाड़े मीठी कामरी, सेजो मीठी नारि।।'

श०– सोरठ–एक प्रकार का राग होता है। रागिनी–गाने में राग–रागिनी स्वर पर आधारित और मात्राबद्ध स्वरों को कहते हैं। रन– लड़ाई। कामरी–कमरी। सेजों–खाट, पलंग। नार–नारि, स्त्री कहावत विषय विशेष पर कई वस्तुओं पर उधृत की गई है।

अ०– गाने में सोरठ रागिनी अच्छी लगती है। लड़ाई के समय में तलवार शोभा देती है। जाड़े में कंबल भला लगता है और पलंग पर नारी भली लगती है।

'सोवै राजा क पूत, कि तो जोगी, अवधूत।'

कहावत निश्चिंतता के प्रति कही गई है कि कौन बेफिक्री की नींद सो सकता है।

अ०– या तो राजा का बेटा या फिर साधु संन्यासी निश्चिन्त सो सकता है।

'सोम, सुक्र, सुरगुरु दिवस, पौष अमावस होय।
धर घर बजै बधावड़ा, दुखी नै दीखे कोय।।'

श०– सुरुगुरु–वृहस्पतिवार। दिवस–दिन। पौष–पूस का माह। अमावस–किसी भी माह के अंधेरे पक्ष का अंतिम दिन।

कहावत कवि भड्डरी की है जो पूस माह के अमावस के प्रति कही गई है।

अ०– कहावत है यदि पूस महीने की अमावस्या की तिथि सोमवार, शुक्रवार, वृहस्पतिवार को पड़े तो राजा–प्रजा दोनों के घर बड़ा आनंद होता है। देश, काल, मनुष्य के लिये बड़ा शुभ लक्षण है।

रवि गुरु, मंगल, एकै रेख।
कृतिका, भरनी औ असलेखा।।'
राज सत्तमी आठें जीया।
तामें भई विष कांवरि धीया।
अरुज मरै औ माता खाय।
धन छीजै औ पर घर जाय।।'
जे ध्रगरिन नरकटिया करै।
जेठ पूत बहू का मरै।।'
जे नाउन सउरी कमाय।
बरिस दिन रोजी से जाय।।'
बरम्हा, बिस्नु उतरि जो आवै।
भंवरी देत रांड़ हो जावै।।'

श०– रवि, गुरु, मंगल सभी दिनों के नाम हैं। कृतिका, भरनी, असलेख–सभी नक्षत्रों के नाम हैं। विष कंवरि–विष को बोने वाली। धीया–पुत्री, लड़की। छीजै–घटना, हानि होना। परस्पर–दूसरे के घर–यानी ससुराल। नरकटिया–नार काटना। बरिस–एक वर्ष भर। रोजी–काम। भंवरी–ब्याह की भांवरें। रांड़–विधवा।

कहावत विशेष रूप से किसी कन्या के जन्म के अवसर पर लग्न विचार के प्रति कही गई है। जैसा कि हमारे देश में नवजात संतानों के पैदा होने पर ज्योतिषियों के द्वारा जन्म के लग्न व साइत विचरवाई जाती है। आज भी इस बात का विशेष रूप से ध्यान दिया जाता है कि बच्चे का जन्म किस लग्न में हुआ?

अ०– रवि, वृहस्पति, मंगल एक रेखा में हों एवं कृतिका, भरणी या श्लेषा तथा सप्तमी जाते ही अष्टमी में यदि किसी कन्या का जन्म होता है तो वह कन्या अशुभ होती है क्योंकि उस समय का लग्न इतना खराब होता है कि या तो वह स्वयं मरेगी या माता को मारेगी। यदि जीवित भी रही, तो दूसरे के घर जाने पर यानी ससुराल में धन को चौपट कर देगी। जो दाई उसका नार काटेगी उसका पोता मर जायेगा और जो नाइन सौर कमायेगी उसको साल भर तक रोजी–रोटी के लाले पड़ सकते हैं। इसके बाद यदि कहीं ऐसी कन्या का विवाह हुआ तो चाहे बह्मा, विष्णु उतर आयें वह जैसे ही भांवरें पड़ेंगी विधवा हो जायेगी।

'सोमे जरै, सनीचर फाटै।
मंगर के दिन घर–घर नाचै।।'

यह कहावत नये वस्त्र को किस दिन पहनना चाहिए, इसका वर्णन है।

अ०– सोमवार को पहनने से जलने का भय रहता है। शनिवार को पहनने से फटने का भय रहता है और मंगल को पहनने से लोग बहुत ज्यादा घुमक्कड़ हो जाते हैं। इसीलिये कहा गया है–

'कपड़ा पहिरै तीन बार।

बुध, बीफय, शुक्रवार।

हारे गाढ़े इतवार।।'

कहते हैं यदि लाल वस्त्र हो तो मंगल को भी पहना जा सकता है।

'सोहर सदा नोहर।'

हमारे देश में पुत्र जन्म के अवसर पर सोहर गाते हैं। कहावत उसी पर लागू की गई है।

अ०— सोहर सदैव महत्वपूर्ण होता है। बड़ी मुश्किल के बाद सोहर गाने का अवसर मिलता है। जब घर में पुत्र का जन्म होगा तभी सोहर गाया जायेगा।

'सोवै घोड़सारी मां सपन देखै लाख टका क।'

श०— घोड़सवारी—जहां घोड़े बांधे जाते हैं। सपन—स्वप्न, सपना।

कहावत ऐसे आदमी पर व्यंग्य के रूप में कही गई है जो इतना गरीब हो कि रहने, सोने की जगह तक नहीं है मगर बातें बड़ी लंबी—चौड़ी करे। ऊंची—ऊंची बातों से हवाई महल तैयार करना।

अ०— सोते हैं घुड़साल में और रहने का सपना हमेशा महलों का देखते हैं।

'सोरह सिंगार किहीं, एक गोड़े मेहाउर दिंही।'

श०— सोरा—सोलह। सिंगार—श्रृंगार। मेहाउर—पैरों में लाल रंग लगाना।

कहावत किसी मूर्ख स्त्री पर उद्‌घाटित की गई है।

हमारे हिन्दू समाज में सुहागिन नारी के लिये सोलह श्रृंगार बताये गये हैं।

अ०— कोई नारी सोलहो श्रृंगार करके चली मगर वह अपने एक पांव में महावर ही लगाना भूल गयी। इससे बढ़कर मूर्खता का क्या प्रमाण होगा?

'सोने की अंगूठी में पितरी क टांका।

माई छिनार, पूत बांका।।'

श०— टांका—किसी टूटी या छेद हुई वस्तु को जोड़ने का काम। कहावत उस समय कही जाती है जब अच्छाई में कहीं जरा सी बुराई आने के बाद पूरी की पूरी वस्तु खराब हो जाती है।

अ०— सोने की अंगूठी में सोने का ही टांका शोभायमान होता है। पीतर के टांके से वस्तु की कीमत ही समाप्त हो जाती है।

'सोने की चिड़िया उड़ गई।'

अ०— जब कोई वस्तु या कोई अच्छा समय हाथ से निकल जाता है तो कहावत चरितार्थ की जाती है कि उतना अच्छा समय हाथ से निकल गया या वस्तु हाथ से बाहर हो गई जो अब पाई नहीं जा सकती है। किसी ने बहुत सही लिखा है—

'वख्त था वह जागने का और तू सोता रहा।

वख्त को बरबाद करके जिन्दगी खोता रहा।।'

'सोभा है यह मनुज की, सुरत, फुरत औ ज्ञान।

जेहिमा यह तीनिउ नहीं सो नर ढोर समान।।'

श०— शोभा—अच्छाई, सुंदरता, गुण। मनुज—आदमी। ढोर— जानवर। सुरत—सौन्दर्य, व्यक्तित्व। फुरत—शीघ्रता, जल्दवाजी, स्फूर्ति। ज्ञान—चातुर्य, अपने काम में चतुराई, समझदारी।

कहावत ज्ञानवर्द्धक एवं सिद्धांतवादी है। किसी महान विद्वान का कहना है कि मनुष्य में तीन गुणों का होना बहुत ही आवश्यक होता है।

अ०— मनुष्य की शोभा उसके आकर्षक व्यक्तित्व, शीघ्र कार्य करने की क्षमता तथा ज्ञान से है। यदि ये सब किसी में नहीं हैं तो वह आदमी पशु से भी बुरा है।

'सौकीन की जाति आली, मुंह चिक्कन पेट खाली।'

श०— सौकीन—शौकीन। चिक्कन—चिकना, सुंदर बनाये रखने वाला।

कहावत ऐसे लोगों के ऊपर कही गई है जो अपनी शौक के आगे खाने पीने की परवाह न करें। चाहे पेट भरे चाहे नहीं बस ऊपर का दिखावटीपन होना बहुत जरूरी समझें।

अ०— शौकीन लोगों की भी क्या बात है? उनका पेट चाहे खाली ही क्यों न रहे मगर ऊपर दिखावट में मुंह जरूर ही साफ—सुथरा हो।

'सौतन बुरी चून की, और साझे का काम।

कांटा बुरा करील का औ बदरी का घाम।।'

श०– सौतन–सौत, पति की दूसरी ब्याही पत्नी। चून–आंटा। साझे–साथ। करील–झाड़ी में उगने वाला कंटीला पौधा बदरी–बदरिहा।

कहावत कई विषयों पर उद्धृत की गई है।

अ०– सौत आंटे की भी बुरी होती है तथा साझे का काम भी खराब होता है। उसी प्रकार से करील का कांटा बुरा होता है। बदली की धूप भी तेज होती है।

माघ पूस कै बादरी और कुवारी घाम।

ये तीनिव जो सहै तो करै बिराना काम।।'

'सौ कपूत से एक सपूत भला।'

श०– कपूत–कुपुत्र, नालायक लड़का। सपूत–सुपुत्र, लायक लड़का।

कहावत लायक–नालायक लड़के के ऊपर कही गई है।

अ०– कुपुत्र कई हों तो उनसे क्या लाभ? अपयश कमा कर नाम पिता का बदनाम करते हैं। इससे अच्छा तो एक ही पुत्र हो मगर लायक हो जिससे कुल वंश का नाम तो उजागिर हो। किसी महान विद्वान ने लिखा है–

'एक वृक्ष की गंध से, सारा बन महकाय।

योग्य पुत्र से इस विधि कुल प्रदीप, हो जाय।।'

'सौ कै हानि हजार बखानी।'

श०– हानि–नुकसान। बखानी–कहना, बताना।

कुछ लोगों की आदत है कि एक की चार कहते हैं। 'किसी बात में नमक–मिर्च जरूर लगाते हैं। कहावत उसी पर चरितार्थ की गई है।

अ०– सौ रुपये की वस्तु का नुकसान हुआ तो हजार की बता रहे हैं।

'सौ कोसा, बराबर एक भरोसा।'

श०– कोसा–कोसना, गाली देना, शाप देना। भरोसा–विश्वास।

कहावत किसी के गाली देने और गाली सुनने वाले के चुप रह जाने के प्रति कही गई है।

अ०– कोई किसी को सौ गालियां दे और दूसरा वरदाश्त कर ले तो सहनशीलता सौ गालियां देने के बराबर है। इस पर एक कहावत है– 'एक चुप हजार बला टारत'।

महात्मा कबीरदास के शब्दों में–

'आवत गाली एक है, उलटत होत अनेक।

कहै कबीर न उलटिये, वाहि एक की एक।।'

'सौ कौवों में एक बगुलो राजा।'

कौवे की जाति धूर्त मानी जाती है। कहावत धूर्त मनुष्यों के ऊपर कही गई है।

अ०– सौ कौओं में बगुला राजा इसलिये कहा गया है कि बगुला भी धूर्त होता है। उसी प्रकार से धूर्तों का राजा भी धूर्त ही होता है।

'सौ दुष्टन के ऊ सरदार।

जेकरी छाती न एक्कौ बार।।'

कहते हैं कि जिस मर्द की छाती में बाल नँ हो वह बड़ा धोखेबाज होता है।

अ०– वह मर्द सौ दुष्टों का सरताज है जिसकी छाती में एक भी बाल न हों।

'सौ गाड़ी न एक छकड़ा।

सौ हरामजादे न एक मगरा।।'

श०– सकड़ा–छग्गड़, बैलगाड़ी। हरामजादे–इस गाली में मां को गाली पड़ती है। यानी कि जो अपने पिता का न होकर दूसरे की, हराम की औलाद हो। मगरा–हठी, उद्दंड, मठोल, चुप्पा, घुन्ना।

कहावत सीधे शब्दों में घुन्ने, घुरमुसहे, जो आदमी या औरत दिल की काली हो, मन में गलितयों की गांठ बनाये रखती हो। उसके लिए कही गई है।

अ०– घुन्ना, आदमी सौ हरामजादों से भी बुरा होता है।

'सौ गुंडा, न एक मुंछमुंडा।'

अ०– सौ गुडों से भी अधिक बुरा एक मुंछे मुड़ाने

वाला होता है। यह कहावत उस समय चली होगी जब मूंछे साफ करने का रिवाज चला होगा। उस समय मूंछें तब मुड़ती थीं जब किसी का पिता मर जाता था तो पुत्र पिता के नाम सिर के बाल और मूंछें बनवाता था। पिता के जीवित रहते मूंछ मुड़वाना बहुत बुरा माना समझा जाता था।

'सौक बड़ी, घर कोलिया मां।'

श०– कोलिया– एकदम अंदर, गलियों और पगडंडियों के भीतर।

कहावत में किसी बेहद शौकीन के प्रति, उसके घर के प्रति कटूक्ति है।

अ०– शौकीन तो इतने हैं मगर जहां घर है वह बहुत ही ज्यादा अंदर की तरफ है घुसकर गली में है। उसकी परवाह नहीं है, कि हम रहते किस जगह पर हैं?

'सौ अजान, न एक सुजान।'

अ०– सौ मूर्खों के बराबर एक जानकार होता है। किसी ने कहा भी है–

सौ मूर्ख मर जायं तो उतना दुख नहीं होता है जितना कि एक अक्लमंद के मरने पर होता है।

'सौ–सौ मूंस खायके बिलार भइ भगतिन।'

कहावत किसी मनुष्य के कर्मों के प्रति बिलार के माध्यम से उद्धृत की गई है कि तमाम अपराधों के करने के बाद अब चले हैं सफाई देने, धर्मात्मा बनने।

अ०– बिल्ली ने तमाम चूहों को तो खाया अब चली है भक्तिन बनने।

'सौ बात की एक बात यह।'

अ०– तमाम बातों के बावजूद एक बात यह कि सारी बातों का मतलब एक यही है।

'सौदा अच्छा लाभ का, राजा अच्छा दाव का।'

अ०– सौदा वही अच्छा होता है जिसमें कुछ फायदा हो और राजा अच्छा वही होता है जिसका दबदबा हो, जो रोबीला, असरदार हो।

'सौदा लीजै देख के, रोटी खाइये सेंक के।'

अ०– कोई भी सामान लेना हो तो उसको देखभाल कर लेना चाहिए और रोटी हमेशा बढ़िया जो सिंकी हो, उसे खानी चाहिए। नहीं तो जली या कच्ची रोटी पेट को हानि पहुंचाती है।

'सौ दिन चोर के, एक दिन साहु के।'

कहावत ऐसे आदमी के ऊपर कही गई है जो रोज–रोज चोरी करता है मगर उसमें एक दिन ऐसा भी आता है जबकि वह पकड़ा जाता है।

अ०– यदि सौ दिन चोर चोरी करता है तो एक न एक दिन वह जरूर ही पकड़ा जाता है और वह दिन साहु का होता है।

'सौ नकटन मां एक नाकवाला नक्कू।'

अ०– जब सौ लोग एक ही तरह के हों तो कोई एक दूसरी तरह का होने में लोग बार–बार उसी की ओर इशारा करते हैं। चाहे वह आदमी भला ही क्यों न हो।

'सौ बार तेरी, एक बार मेरी।'

अ०– किसी चालाक आदमी पर कहा गया है कि कई बार तेरे मन की हो गई। अब मेरे मन की भी होगी चाहे एक ही बार क्यों न हो।

'सौ मारय औ एक गिनै।'

अ०– कहावत किसी को मारने के प्रति कही गई है।

एक सौ जूता मारे जायें तो एक जूता गिने। यानी आवश्यकता से अधिक दंड का भागी होने पर कहावत कही जाती है।

'सौ मां सूर सहस मां काना।
सवा लाख मां ऐंचाताना।।
ऐंचाताना कहै पुकार।
कंजा से रहियो होसियार।।'

श०– सूर–अंधा। काना–जिसकी एक आंख फूटी हो। ऐंचाताना–भैंगा, जो तिरछा देखता हो। कंजा–जिसकी एक आंख की पुतलियां भूरी हो।

अ०– अंधा, काना, ऐंचाताना, सभी ऐबी माने जाते हैं मगर ऐंचातानी कहता है कि मुझसे ज्यादा कंजे से होशियार रहना। सभी में वह अधिक दुष्ट होता है।

'सौख बड़ा जिउ नीकय नाहीं।'

श०– सौक–शौक, शृंगार, बनावट, सजावट। नीकै–अच्छा।

कहावत किसी ऐसी नारी पर व्यंग्य के रूप में कही गई है जो अपने मन व शरीर से स्वस्थ नहीं है। देह कमजोर है, उठने की शक्ति नहीं है, मगर शौक–शृंगार की इच्छा है।

अ०– शौक करने की इच्छायें हैं मगर शरीर में दम उठने–बैठने तक का नहीं है।

'सौ लठैत, एक पटैत।'

सौ लट्ठबाजों से भी बढ़कर खतरनाक पट्टीदार होते हैं वे खेतीबारी, संपत्ति के लिये झगड़ते ही रहते हैं।

'सं'

'संइया से फुरसतै नाय।
देवरवा मांगै अंचरे कै छांह।।'

कहावत हास्य–व्यंग्य में कही गई है। देवर भाभी का मजाक हमारे यहां होता है।

अ०– यहां कहां तो पति से ही फुर्सत नहीं मिलती और देवर कहता है कि– 'मुझे अपने आंचल के नीचे छिपा लो।

'संख बजाव सोव साधू, जो सुख पावै काया।'

अ०– किसी ढोंगी साधु के प्रति कहावत कहते हैं कि ए साधू! आराम से शंख बजाकर सो जाओ, यदि शरीर को सुख मिलता है तो फिर कष्ट सहने की क्या जरूरत है?

'संख बाजे घर, तो बला टलै सत्तर।'

अ०– यदि घर में शंख बजता रहे तो लोक विश्वास है कि घर की बला टल जाती है क्योंकि शंखध्वनि से देवता प्रसन्न रहते हैं, यह देव वाद्य है।

'संगत से फल होत है, हि तिल्ली हि तेल।
जांत–पांत सब छोड़िके, परिगा नाव फुलेल।।'

अ०– संगत का प्रभाव तो इतना होता है कि वही तिल्ली और तिल्ली का तेल है मगर यदि फूलों के साथ मिल जाता है तो उसमें सुगंध आने के कारण फुलेल हो जाता है।

'तुलसी धीरज के धरे हाथी मन भर खाय।
टूक एक के कारने स्वान, घरौ घर जाय।।'

अ०– संतोष रखने से हाथी एक मन खाता है। अपने घर में रहता है। लालची कुत्ता खाता तो रोटी का टुकड़ा ही है मगर संतोष न होने के कारण घर–घर घूमा करता है। कौरा पा जाने पर फिर दूसरे घर की ओर भागता है। यह असंतोष का ही लक्षण है।

'संतन कहा, सीकरी सो काम।
आवत जात पनहिया टूटी बिसरि गयो हरि नाम।।'

श०– संतन–साधुओं को। सीकरी–फतेहपुरसीकरी पनहिया–जूता। बिसरि–भूलना। हरि–भगवान।

जब किसी आदमी को उस कार्य से मतलब नहीं होता जिसके लिये उसे बुलाया जाये या करने को कहा जाय तो लोग यह संत कुंभनदास की पंक्ति को कहावत रूप में प्रयोग करते हैं। कथा इस प्रकार की है।

'एक बार बादशाह अकबर ने संत कुभनदास को अपने दरबार में बुलवाया। संत महात्मा बुलाने से दरबार में चले तो गये मगर उन्हें अकबर का बुलाना इसलिये खल गया कि समय की बर्बादी और इस बुलाने की अनुपयोगिता पर उन्हें कष्ट हुआ तो उपरोक्त सूक्ति के द्वारा बादशाह पर कटाक्ष किया था।

अ०– भला हम संतों को सीकरी से क्या काम है, हम राजनीति को क्या जानें? आते–जाते पनही भी टूटेगी और भगवान का नाम लेने में भी बाधा पैदा हो जाती है।

'संदेशन खेती नहीं होत।'

अ०– खेती संभालने का काम आसान नहीं होता है। वह कोई समाचार नहीं है कि संदेश के द्वारा कहला दिया और हो गई। उसमें सब कुछ अपने हाथों से करना होता है।

'संवक कहै मोर देख कला, बिन मेंहरी का करौ घरा।'

श०– संवक–बैलों की एक जाति होती है जिसके मस्तक पर एक दूसरे रंग का निशान होता है।

ऐसे बैल बड़े ही अपशकुन होते हैं।

अ०— ऐसे बैल कहते हैं कि मुझे रखकर तो देखो मैं तुम्हारे घर की मालकिन का ही नाश कर दूंगा।

'संवक कहै मोर सखा मान, सौ मन जई सौ मन धान।'

अ०— उसी जगह संवक कहता है कि यदि तुम मुझे इज्जत से रखोगे तो मैं तुम्हारे खेत में अनाज खूब पैदा कराऊंगा। संवक को कहीं पर घाघ कवि ने बुरा माना है। कहीं पर अच्छा माना है।

'सां'

'सांझे देय सकारे पावै, पूत भतार के आगे आवै।'

कहावत दान के प्रति कही गई है कि दान का कितना महत्व होता है।

अ०— सांझ का दिया गया दान सबेरे ही फलित होता है। अपने बेटे व पति का भला होता है। किसी ने कहा है— 'तुरतदान महाकल्यान'। तुरंत का किया गया दान फलित होता है।

'सांप के सांपै होत।'

अ०— जो जैसा होता है उसकी औलाद भी वैसे ही होती है।

'सांवा साठी साठ दिना, जो पानी पावै आठ दिन।'

अ०— कहावत खेती सम्बन्धी है। यदि पानी बराबर पाता जाय तो सावां और साठ दिनों में होने वाला धान दोनों ही साठ दिनों में तैयार हो जाते है।

'सांच क आंच का।'

अ०— जो सच्चा है उसको क्या चिन्ता? उसके लिये कोई परेशानी नहीं है। उसको किसी प्रकार की झंझट नहीं हो सकती है।

'सांप निकरि गा लकीर पिटतै रहिगै।'

श०— लकीर— जो निशान सांप के चलने से जमीन पर बन जाता है। पीटते—मारते रहना। जब कोई आदमी समय निकलने पर काम करता है तो उसका कोई फल नहीं होता है।

अ०— सांप निकल गया अब लकीर पीटने से क्या लाभ? जो काम करना था वह तो करने का समय खो चुका है। अब व्यर्थ का काम करने से कोई लाभ नहीं।

'सांप समाये बिली मां जाये।'

दुश्मन यदि चुप होकर भी बैठेगा तो भी आखिर अपने घर में तो रहेगा ही। इसलिये खतरा तो दुश्मन से सदैव ही रहता है।

अ०— सांप यदि अब बाहर नहीं है तो अपने बिल में होगा। इसलिये दुश्मन चाहे घर में हो या बाहर सचेत रहना चाहिए।

'सांप मरै ना लाठी टूटै।'

काम हो जाय और नुकसान भी न होने पाये।

अ०— सांप भी मर जाये और लाठी टूटने भी न पाये।

'सांप के दूध नहीं पियाय जातै।'

अ०— दुश्मन को बलवान बनाने का अवसर नहीं देना चाहिए। रहीम कवि के शब्दों में—

'रहिमन लाख भली करो अगुनी अगुन न जाय।
राग सुनत पय पियत हूं, सांप सहज धरि खाय।।'

'सांप की लड़ाई मां जीभि, नाक के लपलपटवा।'

जब कोई आदमी जबान की लड़ाई में कमजोर होता है तो कहावत चरितार्थ की जाती है।

अ०— सांपों की लड़ाई बात से तो होती नहीं बस जीभों की व नाकों की मार होती है। दोनों अपनी—अपनी जीभ ही लपलपाते हैं।

'सांप छंछूदर के गति भै अहै।'

जब किसी आदमी को दो तरफा परिस्थितियों को संभालना पड़ जाता है तो कहावत सामने आती है।

अ०— कहते हैं कि सांप यदि भूल से छछूंदर को पकड़ ले तो उसको दोनों ही ओर से समस्या का सामना करना पड़ता है। यानी कि यदि वह छंछूदर को निगल जाय तो अंधा हो जाता है और छोड़ दे तो भूखा मरे। ऐसी दशा जब किसी आदमी के साथ आती है तो कहते हैं कि सांप छंछूदर की गति हो गई है। उसके आगे कोई विकल्प नहीं। वह किसी ओर भी नहीं बोल सकता है।

'सांप की तरह केंचुल छोड़ि दीने।'

अ०— सांप अपना ऊपरी आवरण बहुधा छोड़कर दूसरा ग्रहण करता है। जब कोई आदमी अपने पहनने का वस्त्र छोड़कर चुपके से कहीं चला जाय अथवा सांप के केंचुल छोड़ने के समान यदि अपना नया रूप धारण करे तो कहावत चरितार्थ होती है।

'सांप के मुंह मां या बिली मां हाथ नहीं डावा जातै।'

अ०— कोई खतरनाक काम नहीं करना चाहिए जिससे जान का खतरा हो।

'सांप मारि के संपोला न पालय क चाही।'

श०— संपोला—सांप का बच्चा।

कहावत उस समय कही जाती है जब किसी दुश्मन के साथ पूर्णरूप से दुश्मनी करने के बाद उसके बच्चों पर दया का भाव रखे।

अ०— सांप को मारकर उसके बच्चों के साथ दया का भाव न रखना चाहिए। इसलिये कि एक कहावत है— 'सांप के सांपै होथ' तो ऐसा करने पर आपका दुश्मन तो आपके लिये फिर से तैयार रहता है।

'सांच कहै तो मारा जाय।
झूठ कहै तो जग पतियाय।।'

यह उलटवांसी युग ऐसा है कि यदि सत्य कहा जाय तो उसे दुनिया न माने और झूठ कहा जाय तो संसार विश्वास कर लेता है।

'सांझे धनुष, बिहाने पानी।
कहै घाघ सुन पंडित ज्ञानी।।'

श०— सांझे—सांझ। धनुष—इंद्रधनुष। बिहाने—दूसरे दिन।

अ०— घाघ कवि का कथन है कि सांझ को यदि धनुष आकाश में दिखाई दे तो समझो कि दूसरे दिन पानी अवश्य बरसेगा।

'सांझे से परि रहती खाट, पड़ी भड़ेहरि बारा घाट।
घर आंगन, सब घिन—घिन होय, घाघ गहिरे देव डुबोय।।'

श०— भड़ेहरि—साज—सज्जा, सामान। घिन—घिन—गंदा, घिनौना।

कहावत ऐसी मूर्खा, आलसी औरत के प्रति कही गई है जो घंर में गंद वातावरण रखती है। उसे न अपनी चिन्ता है, न बच्चों की, न घर परिवार की। शाम से ही खाट बिछाकर सोना शुरू कर देती है।

अ०— सांझ से ही खाट पर सो रही है। घर में गंदगी चारो ओर भिनक रही है। घाघ कवि का कथन है कि ऐसी औरत को ले जोकर पानी में डुबो देना ही अच्छा है।

'सांझे मुंह फैलावै, आधी रात खोंखी आवै।'

जब कोई काम शुरू तो बहुत पहले कर दे मगर काम खटाई में पड़ा रखकर बहुत समय बाद में पूरा हो तो कहावत कही जाती है।

अ०— मुंह तो फैलाया सांझ से ही मगर खांसी आई आधी रात को।

'सांस ऊपर के ऊपर औ तरे के तरे रहिगै।'

अ०— ऐसी कोई आश्चर्यजनक घटना, बात सुनकर, या कोई बुरा समाचार सुनकर स्तब्ध रह जाना। परेशानी में पड़ जाना।

'सांच क समय बहुरै, झूठ क समय जाय।'

अ०— जो सच बोलता है उसका दिन यदि खराब भी है तो उसकी सत्यता से फिर अच्छे दिन वापस आ सकते हैं मगर झूठ बोलने वाले का समय कभी भी अच्छा नहीं आ सकता है।

'सांई अपने चित्त की भूल न कहिये कोय।
तबलगि मन में राखिये जब लगि काम न होय।।'

अ०— अपने मन की कमजोरी को कभी भूलकर भी किसी से नहीं कहना चाहिए जब तक कि काम पूरा न हो जाय, ऐसा सिद्धांत है।

'सांझ जाये भोर आये, कइसे न छिनार कहाये।'

कहावत किसी चरित्रहीना नारी पर कही गयी है।

अ०— जो स्त्री शाम को ही कहीं जाय और सबेरे आये उसके लक्षण ऐसे हैं कि उसके चरित्र पर आक्षेप लग ही सकता है।

'सांझी चली सांझ के, साथ बसंता पूत।
माधो भी तो जात है, बांध करिहाईं सूत।।'

यह कहावत एक कथा पर आधारित है जो किसी के कर्ज लेने पर कही गई है।

कथा है– 'एक गांव में माधो नाम का एक आदमी था। उसकी स्त्री का नाम सांझी और लड़के का नाम बसंता था। जब माधो के ऊपर कर्ज का बोझ भारी हो गया तो उसने लोगों से कहा – मैं भागूंगा नहीं और जब भी जाऊंगा तो कहकर जाऊंगा'। एक दिन उपरोक्त कहावत को कहकर वह कमर में फेंटा बांधकर चंपत हो गया।' अतः जब भी ऐसी घटना किसी के साथ घटती है तो जिन्हें मालूम है वे इस कहावत का उपयोग करते हैं।

'सांझ भई दिन ढल गया, चकई दीनीं रोय।
चल चकबे वहि देस को, जहां सांझ ना होय।।'

जब शाम होती है तो चकवा–चकई का जोड़ा एक दूसरे से बिछड़ जाता है।

कहावत ऐसे समय पर कही जाती है जब कोई दम्पति आपस में बिछड़ने की अवस्था में होते हैं।

अ०– चकई चकवे से कहती है कि कहीं ऐसे देश में हम लोग चलें जहां सांझ ही न होती हो ताकि एक–दूसरे से कभी अलग न हों।

'सांप क काटा सोवै, बीछी क काटा रोवै।'

अ०– सांप के काटने से आदमी या तो बेहोश हो जाता है, या फिर मर ही जाता है। मगर बिच्छू के काटने पर जो जहर चढ़ता है तो मरीज की हालत बिगड़ जाती है। उसे चिल्लाते ही बीत जाता है।

'सांप, चोर दबे पर चोट करथि।'

अ०– कहते हैं कि यदि सांप किसी के पैर के नीचे पड़कर घायल हो चुका होता है तभी उसके सामने जो मिल जाता है उसे काट खाता है। उसी प्रकार से चोर कहीं से चोरी का दांव न पाने पर या आघात होने पर अपना दांव कही और लगाता है।

'सांप क काटा, पानी नहीं मांगत।'

अ०– स्पष्ट है।

'सांप क मारै, तो मूड़य कुचले।'

अ०– कहते हैं कि सांप के फन में ही जहर होता है। अतः सांप को यदि मारें तो उसका सिर कुचल देना चाहिए ताकि फिर सिर न उठा सके। यह कहावत आमतौर पर दुश्मन को मारने के लिये लोग कह देते हैं कि दुश्मन को जड़ से ही साफ कर देना चाहिए।

'सांप बारा बरिस पर बदला लेथि।'

कहते हैं कि सांप के जोड़े में किसी एक को मार दिया जाय या सांप को ही जान से मार न दिया गया हो तो मारने वाले की आकृति सांप की आंखों में बराबर बनी ही रहती है। वह उस आदमी से बारह साल बाद तक अपना बदला चुकाता है। इसीलिये कहा जाता है कि यदि सांप को मारना है तो जान से ही मार डालना चाहिए।

'सांप सत्रु औ ठगिया, तीनिउ जीउ निकास।
जब लगि पार बसाय तो बैठ न इनके पास।।'

अ०– यह सिद्धांत है कि सांप, दुश्मन और ठग इनके पास कभी नहीं बैठना चाहिए। ये तीनों ही प्राणों के दुश्मन होते हैं।

'सांप के भापो खराब होथ।'

अ०– जब कोई आदमी बेहद खतरनाक होता है, उसके मन में सदैव ही जहर ही भरा होता है तो कहावत के रूप में कहा जाता है कि सांप इतना जहरीला होता है कि उसकी सांस भी यदि किसी आदमी को लग गई तो वह बेहोश हो जाता है।

'सिं'

'सिंह चढ़ी देवी मिलै, गरुड़ चढ़े भगवान।
बैल चढ़े सिव जी मिलै, अड़े संवारै काम।।'

अ०– कहावत शकुन के प्रति कही गई है। यदि सिंह पर सवार देवी मिले और गरुण पक्षी पर सवार भगवान विष्णु जी मिले और बैल पर चढ़े शंकर जी यदि (स्वप्न में भी) दिखाई पड़ जायं तो सभी कार्य संवर जाते हैं। यानी भगवान का, देवी का दर्शन ही सारे कार्यों को सिद्ध करता है।

'सिंह पराये देस मं नित मारै, नित खाय।'

कहावत चोर, डकैतों पर कही गई है कि वे दूसरे क्षेत्र में निडर होकर, मार काट करके रोज ही खाते कमाते हैं।

'सिंह गरजै, हथिया लरजै।'

श०— सिंह–नक्षत्र का नाम है। हथिया–नक्षत्र का नाम है।

कहावत नक्षत्रों के लक्षणों को लेकर कही गई है।

अ०— जब सिंह नक्षत्र लगता है तो आकाश में बादलों की उमड़–घुमड़ शुरू हो जाती है। उस समय हस्त नक्षत्र धीमा पड़ जाता है क्योंकि हस्त नक्षत्र में वर्षा का योग कम हो जाता है।

'सीं'

'सींगी, पूंछी बरद, डाढ़ी, मोछे मरद।'

कहावत उम्र को लेकर मर्दानगी पर कही गई है।

अ०— जब बछड़ों को सींग निकल आये, पूंछ बढ़ने लगे तो समझो कि अब वे बैल हो गये हैं, हल में चलने के लायक बन गये हैं। उसी प्रकार से जब किशोर यानी १५–१६ वर्ष के बालकों को दाढ़ी–मूंछें निकलने लगें तो समझो कि अब वे युवा हो चुके हैं। दोनों की युवा अवस्था इसी प्रकार से आंकी जाती है।

'सींग गिरैला बरद को, औ मनई कै कोढ़ि।
ये नीके ना होइहै चाहे बद लो होड़।।'

अ०— जिन बैलों की सींग गिरकर टेढ़ी हो गई हो और आदमी को चर्मरोग का भयंकर रूप कोढ़ की असाध्य बीमारी हो वह कभी भी अच्छी नहीं हो सकती है।

'सींग मुड़ा माथा उठा, मुंह का होवै गोल।
रोम नरम, चंचल करन, तेज, बैल अनमोल।।'

श०— उठा–ऊंचा। रोम–रोयां, देह के बाल।

अ०— कहावत बैलों की पहचान पर कही गई है। यानी कि जिस बैल की सींग मुड़कर आपस में जुटी हो, मत्था ऊंचा हो, मुंह गोल हो और शरीर के बाल मुलायम हों स्वभाव से जल्दबाज हो, ऐसे बैल, बड़े अच्छे माने जाते हैं, उनका जितना ही दाम हो उतना ही कम है।

'सें'

'सेंत मेंत के दवाई गदापुन्ना के जरि।'

श०— सेंतमेंत–बिना पैसे की। गदापुन्ना कै जरि–पुनर्नवा की जड़।

कहावत उस समय कही जाती है जब कोई वस्तु बिना पैसे के मिले या उस वस्तु को बिना दाम दिये लिया जाय।

अ०— जिस मरीज को जब कोई दवा लंबे अरसे तक लाभ नहीं करती तो कहते हैं कि जैसे बिना पैसे की दवा लाये हो वैसे ही तो लाभ होगा। जब पैसा नहीं लगा तो वैसे ही घास–फूस की दवा भी मिल गई।

'सेंत्र मेंत के चाउर, मउसिया का सराध।'

श०— मउसिया–मउसी यानी मां की वहन का पति। सराध–श्राद्ध, मरने के बाद जो मृतआत्मा को पिंडा दिया जाता है।

अ०— मउसिया से क्या मतलब उनकी श्राद्ध तो उनके घर में होनी थी। मगर जब बिना पैसे के चावल मिला तो सोचा कि चलो एहसान लें मउसिया की श्राद्ध करके। तात्पर्य यह कि दूसरे के सामान पर अधिकार करके गैर जिम्मेदारी के काम को भी करने का दावा करना।

'सेंतिन गुर पाके तौ के गपाके।'

अ०— जब सेंत–मेंत में कोई वस्तु मिले तो कौन नहीं खाता? यहां गुड़ मुफ्त में मिल रहा है तो खाया ही जायेगा वह तो सबसे अच्छी बात है।

'सों'

'सोंचर नोन, सोहागा, गांधी।
सहिजन के रस बरिया बांधी।।
बारा सूल बहत्तर बाई।
कहै घाघ सब जड़ से जाई।।'

श०— सोंचर–एक प्रकार का नमक होता है। सोहागा–एक नमकीन पदार्थ, जिससे सोनार लोग सोने को साफ करते हैं। वह दवा के काम भी आता है। गांधी–हींग। सहिजन–एक पेड़ होता है जिसके फूल व फल की लोग सब्जी भी बनाते हैं।

कहावत घाघ कवि की स्वास्थ्य के विषय में कही गई है।

अ०— सोंचर नोन, सोहागा और हींग की बरिया सहिजन के रस में बनाकर खाने से १२ तरह के शूल के दर्द और ७२ तरह की वायु के लिये फायदा करता है।

'स'

'स्वान धुने जौ आपन अंग अथवा लोटे भूमिपर।
तौ निज कारज भंग, अति ही असगुन मानिये।।'

श०– स्वान–कुत्ता। धुनै–पटकना, मारना। भूमि–पृथ्वी।

कहावत अपशकुन पर उद्‌धृत की गई है।

अ०– यदि कहीं मार्ग में जाते समय कुत्ता अपने शरीर को अपने हाथों से मारता हो, या जमीन पर लोटता हो तो समझ लीजिये कि बड़ा ही अपशकुन है। आप जिस काम के लिये जा रहे हैं वह पूर्ण न होगा। इसका एक ही उपाय होता है कि यात्रा रोक देनी चाहिए।

'स्वाति बिसाखा, चित्तरा, जेठ सुकेरा जाय।
पिछलो गरब गल्यो कहा बनी साख मिटि जाय।।'

कहावत खेती के समय वर्षा के प्रति कही गई है।

अ०– स्वाती, बिशाखा, चित्रा व जेठ माह में पानी न बरसा तो समझो कि जो खेती की रही सही इज्जत है वह भी समाप्त हो जायेगी। यानी कि खेती में नुकसान हो जायेगा यदि इनमें पानी की कमी हो गई तो।

'स्वाती दीप जौ बरै, खेल बिसाखा गाय।
धना गयंदा, रन चढ़े उपजी साख नसाय।।'

श०– स्वाती–बिशाखा–दोनों नक्षत्रों के नाम हैं। धनागयंदा–राजा रजवाड़े। रन–लड़ाई। साख– जो पहले का बना बनाया था। नसाय–नाश।

कहावत खेती के ऊपर कही गई है।

अ०– यदि स्वाती नक्षत्र में दीपावली पड़ जाय और बिशाखा नक्षत्र में गायें खेलने लग जायं तो जो कुछ खेती में होना है वह भी नहीं हो पाता।

'स्वाति बूंद सीपी, मुकुत कदली भयो कपूर।
कारे के मुख बिख भयो, संगति सोभा सूर।।'

कहावत संगत के अच्छे होने पर कही गई है।

अ०– वही स्वाती नक्षत्र का जल सीपी में पड़ने पर मोती, केले के पेड़ में पड़ने से कपूर और सर्प के मुख में पड़ने से विष बन जाता है। जैसा जिसकी संगत होती है वह वैसा ही बन जाता है।

'स्वेत रंग औ पीठ बरारी।
ताहि देखि जिन मूल्यो अनारी।।'

अ०– जिस बैल के पीठ की हड्‌डी दबी हो, सफेद रंग का हो, उसे भूलकर भी न खरीदना चाहिए।

'ह'

'हक कहै ते मारा जाय।'

अ०– अधिकार मांगनेवाला मारा जाता है। इसी पर लोग कहते हैं 'जबरा मारै रोवै न देय'। हक देने वाले को हक देने को कौन कहे? मांगने पर मारने की धमकी देते हैं।

'हक मांगे ते डाढ़ीजार।'

अ०– स्त्रियां बहुधा गाली देती हैं। यहां पर किसी अधिकार मांगने वालो को दाढ़ी जलने की गाली देकर हिस्सा नहीं देना चाहतीं।

'हक क साथी खुदा।'

अ०– जो अपने अधिकारी को हिस्सा दे देता है उसका साथी भगवान होता है।

'हकदार तरसे, जाहि पर अंगार बरसै।'

अ०– जब किसी हिस्सेदार को हिस्सा नहीं मिलता तो उसके लिए लगता है कि जैसे कोई उस पर अंगार, आग का जलता कोयला डाल रहा हो।

'हग न पावै तौ पेट पीटै।'

कहावत उस समय कही जायेगी जब अपना तो काम कर न सके और दूसरे को दोषी बनाकर उसे सजा दे।

अ०– जब पाखाना न उतरे तो पेट पर गुस्सा निकालकर पेट ही को पीटने लगे।

'हग्गा के तीन काम।
हगै उठावै, औ डारे जाय।।'

अ०– कहावत किसी मूर्ख के ऊपर कही गयी है जिसका काम फूहड़पने का है। कहा है कि पाखाना

करने वाले के पास केवल तीन काम ही हैं पाखाना करना, उसे उठाना और ले जाकर बाहर फेंक आना।

'हगै क राहिन नाहीं, लीलै क बेल।'

जब इच्छायें तो बहुत हो मगर उसके लिये कोई साधन ही न हो तो फिर काम कैसे हो सकता है?

अ०– पाखाने के लिए रास्ता ही नहीं है और इच्छा अत्यधिक भोजन करते रहने की हो। असंभव काम को संभव कर पाना बड़ा कठिन होता है।

'हगै न जातेव तो तानय तनौतेव।'

काम न करने वालों के लिये जब कोई बहाना बनाना होता है तो वे एक न एक बात लेकर बैठ जाते हैं।

अ०– काम करने वाला कह रहा है कि क्या बतावें कि यदि पाखाना न चला जाता तो न जाने कितना काम करके रख देता।

'हजार इलाज, एक परहेज।'

श०– इलाज–दवादारू/परहेज–बचाव, बराना, न खाना।

कहावत रोगी और दवादारू व बचाव के प्रति कही गई है।

अ०– दवा करने से ज्यादा तो रोगी को परहेज से रहना लाभकारी होता है।

परहेज करने वाला मरीज ही पूर्ण रूप से स्वस्थ हो सकता है।

'हजार काम छोड़ि के नहाय।
सौ काम छोड़िके खाय।।'

अ०– मनुष्य के जीवन में समय से खाना–नहाना बहुत आवश्यक है। कहा है कि हजार काम घर में पड़ा होने पर भी समय से नहाना चाहिए और सौ काम होने पर समय से भोजन करना जरूरी है। ऐसा करना स्वास्थ्य के लिये बहुत ही जरूरी है।

'हजारों टांकी सहिके महादेव बनत।'

श०– टांकी–छेनी जिससे पत्थर आदि तराशा जाता है। महादेव–शंकर जी की प्रतिमा।

अ०– कहावत किसी को सीख के समय कही जाती है कि जब किसी पत्थर पर हजारों टांकी पड़ती है तो किसी प्रतिमा का जन्म होता है। तब वह पूजने के योग्य बनती है। यानी कष्ट झेलने के बाद ही मनुष्य के जीवन में निखार आता है।

'हथिया पूंछ डोलावै, घर बइठे गोहूं आवै।'

कहावत फसलों के ऊपर कही गयी है।

अ०– हथिया नक्षत्र के बाद ही यदि पानी थोड़ा सा भी बरस जाय तो गेहूं की पैदावार बहुत अच्छी होती है।

'हथिया बरसे तीन होय, साठी, सक्कर, मास।
हथिया बरसे तीन जायं, तिल, कोदौ, औ कपास।।'

श०– हथिया–एक नक्षत्र है। साठी–जो धान साठ दिनों में हो जाता है। मास–उर्द। कोदौ–एक प्रकार का बहुत मोटा अनाज है। कपास–जिससे रुई निकलती है।

अ०– हथिया के बरसने से तीन वस्तुएं बहुत पैदा होती हैं। साठ दिनों वाला धान, ईख जिससे शक्कर बनाई जाती है और उर्द। हथिया के बरसने से तीन वस्तुयें नहीं हो पाती हैं तिल, कोदो, और कपास।

'हथिया बरसे चित्रा मंडराय।
घर बइठे किसान रिरियाय।।'

श०– चित्रा– एक नक्षत्र का नाम है। मंडराय–बादलों की घेरघार।

अ०– यदि हथिया में पानी बरसे, चित्रा में बादलों की घेरघार हो तो किसान को बहुत कष्ट होता है।

'हथिया मां हाथ गोड़, चित्रा मां फूल'
चढ़त सेवाती मां कौवा झूल।।'

श०– हाथ, गोड़–फसलों में शाखाओं का होना। स्वाती–नक्षत्र है।

घाघ कवि ने उर्द की फसल के ऊपर कहावत कही है।

अ०– हथिया में तो शाख फूटती है। चित्रा में फूल आते हैं और स्वाती के लगते ही फलियों के झोंप तैयार हो जाते हैं।

'हथेली पर दही नहीं जमतै।'

किसी गाढ़े व तरल पदार्थ के लिये गहरा बड़ा बर्तन होना चाहिए।

अ०– दही जमाने के लिये गहरे बर्तन की आवश्यकता होती है।

'हथेली पे सरसों नहीं जमते।'

किसी वस्तु विशेष के लिये उचित पात्र चाहिए या स्थान चाहिए। असंभव को संभव करना बहुत कठिन हो जाता है।

अ०– कोई चाहे कि हाथ की हथेली पर सरसों बो दे तो असंभव है। इसलिये काम की क्षमता के अनुसार स्थान का चुनाव भी करना चाहिए।

'हन्ना अपनी घात।
बहेलिया अपनी घात।'

श०– हन्ना–हिरन। बहेलिया–शिकारी, जानवरों का शिकार करने वाले।

कहावत उस समय कही जाती है जब कोई किसी के दांव–पेंच से बचने के लिए सतर्क हो।

अ०– शिकारी यदि हिरन की दांव में है तो हिरन भी अपनी दांव में सचेत है। दोनों ही अपनी–अपनी दांवपेंच में लगे हैं।

'हमरिन बिल्ली, हमहीं से म्याऊं।'

अपनी ही छत्रछाया में पलने रहने वाला व्यक्ति जब किसी प्रकार की बेअदबी करता है तो कहावत चरितार्थ होती है।

अ०– हमीं ने पाला पोसा, सारी मदद की और हमीं पर गुर्राते हो।

'हमारी चियारी पै दिया न लेसया।'

श०– चियारी–मजार, समाधि। लेसया–जलना।

जब कोई बाहर का बच्चा होता है, जो वंश परम्पराओं में नहीं आता तो लोग कहते हैं।

अ०– मेरे मरने के बाद हमें पिंडा पानी न दोगे, या मेरी समाधि पर जाकर दिया न जलाओगे। यानी कि तुम हमारे वंश खानदान के नहीं हो जो इतना रोब मार रहे हो।

'हम, हम, हम्मन, बाप, पूत जुम्मन।'

जब कोई आदमी किसी से पूछता है कि तुम्हारे घर में कितने लोग हैं तो वह उत्तर में कहता है।

अ०– हम, हम्मन और मेरे बाप, पूत, जुम्मन हैं। बस इतने ही लोग इस घर में हैं।

यानी एक ही व्यक्ति को कई बार कहकर गिनती बढ़ाना।

'हम ना कहबै, कहिहैं राम।
देखबे, अंखियां सुनबै कान।।'

कहावत उस समय चरितार्थ की जाती है जब कोई भी आदमी किसी के साथ अन्याय कर रहा होता है। उस पर वह निराश होकर कहता है।

अ०– हम तो कुछ भी न कहेंगे इसका बदला भगवान लेगा और मैं आंखों से देखूंगा और कान से सुनूंगा कि वे इस फल को प्राप्त हो रहे हैं, क्या परिणाम निकल रहा है?

'हमका केव ना मारै तो हम गांव भर का मारि आई।'

यह एक हास्य– व्यंग्य की कहावत है। जिसे अपनी ताकत पर भरोसा नहीं है मगर गांव भर को मारने का जिम्मा लिये हुये हैं।

अ०– यदि मुझे कोई भी न मारे तो मैं गांव भर को मार कर गिरा दूंगा।

'हम सांप नहीं है जो माटीं चाटि के जिये।'

प्रश्न पेट की रोटी का है। कोई भूखा तो नहीं ही रह सकता है? उसी पर कहावत है।

अ०– हम भी खाना खाते हैं, आदमी हैं, कोई सांप नहीं हैं जो मिट्टी खाकर जिंदा रह पायें।

'हमरे ससुर के चार पतोहिया, एक मन चिकनी, एक छिनार।
एक कुचकुचही, एक चले दियना झलकार।।'

यह कहावत भी है और बुझनी भी। पूरे वर्ष भर के चार बड़े त्योहारों को कहा गया है।

श०– पतोहिया–बहू। मनचिकनी–नागपंचमी, गुड़िया। छिनार–होली। कुचकुचही–खिचड़ी, मकर संक्रान्ति। दियना झलकार–दीवाली।

अ०— हमारे ससुर जी के चार बहुए हैं। यानी वर्ष रूपी ससुर के चार पतोहें हैं।

एक तो बड़ी चिकनी, छैलछबीली है। वह है गुड़िया। दूसरी है जो चरित्र की अच्छी नहीं है जिसमें लोग गाली—गलौज करते हैं। नंद, भौजाई, देवर भाभी, जीजा, साली तमाम आसपास के पड़ोसियों से हुरदंगेबाजी व व्यंग विनोद चलते हैं। कहा तो यहां तक गया है कि होली मां बाबा देवर लागै'। अब लीजिये होली क्या आई ससुर भी देवर बन जाते हैं तो वह छिनाल है। तीसरे कुचकुचही, यानी मकरसंक्रान्ति की खिचड़ी, जिसमें लोग गंगा—स्नान करके उर्द के दाल व चावल की मिली खिचड़ी का दान देते व खाते हैं। चूंकि चावल, दाल का सम्मिश्रण होता है इसलिये कुचकुचही कहा गया है। चौथी है दीपावली तो दुनिया में लोग दिया जलाकर दीपमालिका का त्यौहार मनाते हैं। इसलिये दिया झलकाकर बहू चलती है। इस तरह से सालरूपी ससुर के चार बहुयें गिनाई गई हैं।

'हमका रांड़ कै पतोहू अही।'

गांव, घर में जब कोई किसी स्त्री को तंग करना या लड़ाई, झगड़े में कुछ दंगा—फसाद करना चाहता है तो कहावत सामने आती है।

अ०— क्या हम किसी रांड़ सास की बहू हैं? जो जिसके मन में आयेगा कह ले जायेगा। हमारे घर में भी मर्द है, ससुर है, आदमी है, कोई अनाथ थोड़े ही हूं।

'हमहीं खुरमा, हमहीं सबाब।'

श०— खुरमा— एक प्रकार के पकवान की मिठाई, मुसलमानों के यहां खुरमा, छुहाड़े को भी कहते हैं । में सबाब—पुण्य।

कहते हैं कि मुसलमानों के यहां खुरमा, यानी छुहाड़े को खाना बहुत पुण्य माना जाता है। कहावत उसी पर लागू की गई है।

अ०— छुहाड़ा का कहना है कि मैं छुहाड़ा का छुहाड़ा हूं और पुण्य का पुण्य हूं।

'हम चौड़े, बजार सकरा।'

श०— चौड़े—फैले, ज्यादा दूर तक। सकरा—पतला, संकेत।

कहावत किसी घमंडी आदमी के प्रति कही गई है जो स्वयं तो बड़ा आदमी बनता है और दूसरों को छोटा समझता है।

अ०— हमारे पास तो बहुत पैसे हैं हम समाज में चौड़े होकर रहते हैं और दूसरे गरीब होने के कारण सिमट जाते हैं।

'हम परदेशी पाहुने, आन किया बिसराम।
भोर भये उठ जायेंगे, बसो आपने गांव।।'

श०— परदेशी—दूसरे देश के रहने वाले, विदेशी। पाहुने—मेहमान। आन—आकर विश्राम—आराम। भोर—सुबह। बसो—रहो।

ऐसी कहावत उस समय कही जाती है जिस समय कोई किसी के घर मेहमान बनकर आया हो या घर में कोई वृद्ध अथवा वृद्धा हो जिसे लोग व्यंग्योक्ति या कटूक्ति से बराबर परेशान करते हों या कोई लड़की हो ससुराल से आई हो तो उसके ससुराल जाने के लिए उसे ताने दिये जा रहे हों। फिलहाल ऐसी ही स्थितियों में उपरोक्त दोहा कहा जा सकता है।

अ०— हम परदेशी हैं केवल आराम करने की नियत से यहां रात बिताने आये हैं। सबेरा होते ही हम अपने देश को चले जायेंगे। रहो तुम अपने गांव में आराम से।

'हमसे बहू बड़ी सयानी, मांग के लाये पानी।'

कहावत उस समय कही जाती है जब अपने किसी आदमी को अधिक से अधिक होशियार दिखाने की कामना हो।

अ०— कोई सास अपनी बहू को बहुत होशियार इसलिये बताती है कि वह इतनी अधिक चालाक है कि दूसरों के घर से रोज—रोज पानी तक उधार इसलिये लेकर आती है कि कोई पड़ोसी उसके घर कोई वस्तु उधार मांगने न आये।

'हमरे दादा घी खायें, और हमार हाथ सूंघो'

श०— दादा—पुरखे। सूंघो—सूंघना, नाक के द्वारा खुशबू लेना।

जब कोई आदमी अपने पुरखों की बड़ाई करके अपनी हीनता दिखाता है तो कहावत कही जाती है।

अ०— हमारे पुरखों ने दादा–बाबा ने तो घी खाये हैं हमारा हाथ सूंघकर देखो जो अब भी सुगंधित है।

'हमरे घर मां आग लगाय के, नाव धराये भस्मंदर।'

किसी अन्य की भौतिक अथवा बौद्धिक सम्पदा पाकर कोई अपना वैभव बना ले और मूल बात का उल्लेख किये बिना अपने ही पुरुषार्थ का वर्णन करे, ऐसी स्थिति में कहावत कही जाती है।

'हर्र लागय न फिटकरी, रंग आवै चोखा।'

यह कहावत तब कही जाती है जब बिना सम्पूर्ण साधन के कार्य अच्छे ढंग से बन जाये।

अ०— कपड़े को रंगते समय हर्र फिटकरी न लगे और रंग बढ़िया आ जाय। उसी प्रकार के सामान न लगे और वस्तु अच्छी बन जाये।

'हर सटके गुड़ मीठा।'

अ०— जब कोई स्वार्थी आदमी बार–बार अपने मतलब व स्वार्थ की बातें करता है तो कहते हैं कि हरबोली में तुम्हारा ही मतलब सिद्ध हो?

'हर लाग पताले तो टूटिगा अकाल।'

श०— हर–हल, जिससे खेत जोता जाता है। पताले–गहरे जमीन में। अकाल–सूखा। कहावत हल से गहरे जोतने पर कही गयी है।

अ०— खेतों को जोतते समय यदि हल का फार गहराई तक ले जाया जाय और खेत कई बार जोतकर जमीन की गहराई तक पहुंचाया गया है तो फिर फसलें अच्छी न हों, यह हो नहीं सकता है। अनाज इतना होगा कि कम अन्न की नौबत ही न आयेगी।

'हरहंटी के साथे, कपिलौ के नास।'

श०— हरहंटी–हरहट, उद्दंड, कपिलौ–गाय जो बहुत ही सीधी होती है। कहावत उस समय कही जाती है जब किसी उद्दंड आदमी के साथ कोई सीधी स्त्री पड़ जाती है।

अ०— एक हरहंट गाय के साथ कपिला की भी दुर्दशा होती है।

**'हरहट नारी, बास एकाह गादर बैल, सुहुत हरवाह।
रोगी होय, होय एकलंत, कहे घाघ ई विपति क अंत।।'**

श०— हरहंट–उद्दंड, लड़ाका, तेज, दुश्चरित्र। बास–बसना, रहना। एकाह–अकेले बरद–बैल। सुहुत–सुस्त। हरवाह–हल चलाने वाला, हलवाहा। एकलंत–अकेले।

कहावत कई लोगों पर मिलाकर कही गई है। उपरोक्त में से किसी एक की चर्चा के समय कहावत उद्धृत की जा सकती है।

अ०— दुष्टा, दिनभर घर में घूमनेवाली स्त्री जो मनमानी हो, अकेले ही घर में रहती हो। गादर बैल, सुस्त, धीमा काम करने वाला हलवाहा, वह रोगी जो घर में अकेले रहता हो ऐसे लोगों से जब पाला पड़ता है तो घाघ कवि का कथन है कि इससे बढ़कर विपत्ति कुछ भी नहीं हो सकती है।

'हरखै पितर तिलंजलि पाये।'

श०— हरखै–प्रसन्न होना। पितर–मृत पुरखे। तिलंजलि–पितरों के श्राद्ध करते समय तिल–पानी अंजलि में लेकर अर्पन करते हैं।

कहावत उस समय कही जाती है जब किसी मरे हुये पित्तर का श्राद्ध करते हैं।

अ०— पितर तिलांजलि पाने से प्रसन्न होते हैं। श्राद्ध और पितृपक्ष में वे सोचते हैं कि हमारी सन्तानें मरने के बाद भी ख्याल रखती हैं।

'हर दिन कुआं खोदे क हर रोज पानी पिये क होति।'

अ०— रोज ही मेहनत की कमाई खाने को मिलती है। रोज कुआं खोदो तो रोज पानी पीने को मिलता है।

'हराम के बोल उठथ, हलाल के झुकथ।'

मनुष्य के जीवन में कुछ ऐसे क्षण भी आते हैं जब आदमी को सही होने के बाद भी नीचों के सामने चुप हो जाना पड़ता है। उपरोक्त कहावत तब कही जाती है जब कोई सही आदमी, गलत आदमी के सामने सिर झुकाकर अपनी ही गलती स्वीकार कर लेता है।

अ०— जो हरामखोर होते हैं वे ऐबी होने के कारण चहककर, चिल्लाकर बोलते हैं और जो नमकहलाल होता है, जो मानता है अच्छाइयों को, वह झुक जाता है।

'हराम की कमाई हराम में गंवाई।'

बुरे कामों से की गई कमाई बुरे कामों में लगती हैं।

'हरिगुन गावै धक्का पावै।
चूतड़ डोलावै टक्का पावै।।'

श०– हरिगुन–भगवान का नाम, भजनगाना। चूतड़ डोलावै–नाचै कूदै। टक्का–पैसा, नाचना।

अ०– जो भगवान का नाम लेता है उसे लोग धक्का देकर निकाल देते हैं और जो नाच–कूदकर लोगों को रिझाता है उसे पैसे मिलते हैं।

'हरिन फलांग काकरी, पेग–पेग पर कपास।
जाय कहो किसान से बोवै घनी उखार।।'

अ०– हिरन फलांग– जितनी दूर पर हिरन छलांग लगाता है। काकरी–ककड़ी। पैग–पैग– कदम–कदम पर। कपास–जिस पेड़ से रुई निकलती है। उखार–ईख।

कहावत कई विषयों पर कही गई है।

अ०– जितनी दूर में हिरन छलांग लगाता है उतनी दूर–दूर पर ककड़ी, एक–एक कदम पर कपास और ईख को घना बोना चाहिए।

'हरिया हाथी, हाकिम चोर।
दोनों बिगरैं तो ओर न छोर।।'

श०– हरिया–जंगली। हाकिम–अफसर, मालिक। चोर–जो सामान की चोरी करता हो।

अ०– यदि जंगली हाथी, चोर तथा अधिकारी नाराज हो जाय तो फिर इनके बिगड़ने की कोई सीमा नहीं होती।

'हरियर खेती गाभिन गाय।
मुंह तक जाय तो जानी जाय।।'

श०– गाभिन–गर्भवती, ब्यानेवाली गाय।

अ०– हरियर खेती का जब अनाज घर आ जाय और गाभिन गाय जब ब्याय जाय और इसका दूध पीने को मिले तो समझो कि दूध भी मिला और अनाज भी मिल गया। उसका कारण है हरी खेती पर कभी तुषार, पाला गिर सकता है, कभी सूख सकती है, उसी प्रकार से गाभिन गाय के ब्याते समय खतरा हो सकता है, गाय या बच्चा मर सकता है। किसी भी प्रकार की अड़चन आ सकती है।

'हरि सेवा सोलह बरस, गुरु सेवा पल चार।
तो भी नहीं बराबरी, बेदों किया विचार।।'

कहावत गुरु के महत्व के प्रति कही गई है।

अ०– भगवान की सेवा यदि सोलह बरस तक की जाय और गुरु की केवल चार पल की सेवा कर दे तब भी कोई बराबरी नहीं है ऐसा वेदों ने कहा है। इस पर महात्मा कबीर का दोहा स्मरण हो आता है–

'गुरु, गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूं पायं,
बलिहारी गुरु आपने जिन गोविंद दियो दिखाय।।'

हमारे महात्मा तुलसीदास ने लिखा है–

'बंदउ गुरु पद कंज, कृपा सिंधु नर रूप हरि।
महा मोह तम पुंज, जासु वचन रविकर निकर।।'
'गुरु पद रज मृदु मंजुल अंजन, नयन अमिय दृग दोस विभंजन।
तेहि कर विमल विवेक विलोचन, बरनौ राम चरित भव मोचन।।'

इस प्रकार से गुरु का महत्व ईश्वर से भी ज्यादा बताया है हमारे महात्मा कबीरदास ने।

'हलक का न तालू का, माल मियां लालू का।'

श०– हलक–गले। तालू–गले के बीच का।

कहावत किसी कंजूस आदमी पर कही गयी है।

अ०– कंजूस आदमी का माल न खाने में गले के नीचे आया न बीच में पता ही चला। दूसरे अर्थों में दूसरे का माल लेकर आये तो मगर कुछ पता ही न चला। जहां का तहां रह गया।

'हलकन बेंट कुदारी।
हो गोहरावै नारी।।
भइया कहिके मांगय दम्मा।
ये तीनों काम निकम्मा।।'

श०– कुदारी–जिससे खेत गोड़ा जाता है। हलकनबेंट–ढीला पड़ने वाला बेंट। दम्मा–दाम, पैसे। गोहरावै–बुलाना।

अ०— खेत गोड़नेवाली कुदाल की बेंट यदि ढीली हो, पत्नी हो, कहकर बुलाने वाली तथा दादा भइय्या कहकर पैसा मांगनेवाला ये तीनों ही काम बुरे हैं।

'हलक रोवै जीभ टोवै।'

जब कोई खानेवाली वस्तु बहुत कम मिले तो कहते हैं।

अ०— गले के नीचे ही गया तो वह रो रहा है और जीभ चारों ओर मुंह में चक्कर लगाकर सोच रही है क्या चीज है यह जो मैं खा रही हूं?

'हलक से निकली, खलक मां परी।'

अ०— कोई भी बात हो यदि गले से बाहर को आई तो समझो कि सारी जगहों में फैल गई। उसे सभी लोग जान जायेंगे।

'हलुक पछोरे उड़ि–उड़ि जाय।'

श०— हलुक–हल्का, थोथा।

कहावत किसी थोथे आदमी पर कही गई है। जिससे कोई आशा नहीं रहनी चाहिए।

अ०— जैसे हल्की वस्तु को सूप से पछोरने पर सब उड़ जाता है और सूप खाली हो जाता है। उसी प्रकार से घमंडी आदमी पर विश्वास नहीं करना चाहिए। वह बहुत हल्का होता है।

अंग्रेज कवि टेलर ने कहा है–

'ज्ञान का गर्व करना पहले दर्जे की मूर्खता है।'

महर्षि दयानन्द के शब्दों में– 'जिसने गर्व किया, उसका अवश्य पतन हुआ है।

'हलवाई की जाई, सोवै साथ कसाई'

श०— हलवाई– जो मिठाई बनाता है। जाई–पैदा की पुत्री, लड़की। कसाई– जो जानवरों का वध करते हैं।

जब किसी प्रकार की चरित्रहीनता कन्या के अंदर पाई जाती है, कुजाति व्यक्ति के साथ संबंध या प्रेम हो जाय तो कहावत कही जाती है।

अ०— हलवाई की लड़की किसी कसाई के लड़के के साथ सोती है। धर्म के विरुद्ध काम का होना, नीच कर्म, व्यभिचार करना।

'हरदी कै गांठ हाथे आय, तो मूस पंसारी बन बइठा।'

श०— पंसारी–बनिया, किराना का सामान बेचने वाला।

अ०— कहावत उन लोगों पर व्यंग्य में कही गई है, जो थोड़ा सा धन या विद्या या सम्मान पा गये तो विद्वता का घमंड करने, बड़ा समझने लग गये। जैसे कि कहा है– चूहा हल्दी की गांठ पा जाने के बाद अपने को बनिया ही समझ बैठा।

'हरदी लाग न फिटकरी, फटाक बहू आय गई'

अ०— कुछ खर्च भी न हुआ और बहू अपने यहां आ गई।

'हवन करत हाथ जरै।'

श०— हवन–पूजा, पाठ, अग्नि को आहुति देना। जरै–जलना।

जब कोई अच्छा काम करते हुए भी हाथ जलता है यानी कि किसी के साथ अच्छाई करो और उस पर भी अपयश मिले तभी लोगों के मुंह से यह कहावत सुनने को मिलती है।

'हराम क बरकत, हलाल क हरकत।'

श०— हराम– मुफ्त का। हलाल– उद्योग से, प्रयास से, प्राप्त। बरकत–वृद्धि, बढ़ना। हरकत–कष्ट होना, दुख पाना।

कहावत हराम व हलाल के प्रति कही गई है।

अ०— दुनिया की अजीब रीति है कि जो हलाल का खाता है, परिश्रम करके भी उसकी अभिवृद्धि नहीं होती और जो हराम का, सेंत–मेंत बिना परिश्रम के पाता है उसकी बरक्कत होती है। अच्छे काम करने वाले को कष्ट होता है और गलत काम करने वाले को आराम मिलता है यह है कलियुग का हाल।

'हजार कहे मुला कान में जुंयें नहिं रेंगतै।'

जब किसी आदमी पर बात का कोई असर न पड़े तो कहावत चरितार्थ होती है।

अ०— कितना भी कहो, सुनो मगर दिमाग में उनके कोई बात आती ही नहीं। जैसे हवा बह रही हो, बात पर जरा सा भी ध्यान नहीं जाता है।

'हमार तोहसे, तोहार हमसे, कहब बेकार आ।'

अ०— चुगलखोरी अच्छी बात नहीं होती।

'हम करीं तोहार भलाई।
तू हमरिन आंख मं डाल सलाई।।'

अ०— भलाई का बदला बुराई से चुकाना।

'हा'

'हाथी घूमै गांव—गांव, जे के हाथी, वही क नांव।'

अपनी वस्तु पर सबको बड़ा गर्व होता है। कहावत किसी वस्तु के प्रति या अपने वंश या अपने नाम के लिये ही समयानुसार उद्धृत की जाती है।

अ०— हाथी चाहे जिस गांव में जाकर रहे व घूमे कहलायेगा तो जिसका हाथी होगा उसी का। नाम तो उसी का होगा दूसरे का नहीं होगा।

'हाकिम की अगाड़ी, घोड़े की पिछाड़ी बचै क चाही।'

श०— हाकिम—अफ़सर, मालिक, इन्चार्ज। अगाड़ी—आगे। पिछाड़ी—पीछे।

कहावत सैद्धांतिक है। अपने ऊपर के अफसरों से सतर्क रहना ही चाहिये। कब किस समय उनका दिमाग खराब हो जाये कोई ठीक नहीं है।

अ०— अफसर के आगे व घोड़े के पीछे नहीं रहना चाहिये। घोड़ा या गधा कब दुलत्ती झाड़ दे पता नहीं लगता है।

'हाकिम के आंख नहीं काने होत।'

अ०— अफसरों की हालत है कि वे आंखों—देखी बात को नहीं मानते लेकिन कान भरने वालों की बातों को सुनकर उसे सही मानते हैं।

'हाकिम हारे, मुंह ही मुंह मारे।'

अ०— जिसके पास शक्ति हो उससे बहस नहीं करनी चाहिए। वह जबानी ही हरा देता है।

'हाट गाई, बाट गाई, सभाबीच न गाई।'

कहावत स्त्रियों के प्रति कही गई है।

श०— हाट—बाजार। बाट—रास्ता। सभाबीच—किसी उत्सव, आयोजन के समय।

अ०— जब कोई स्त्री कोई काम चारों तरफ तो कर आती है लेकिन जब विशेष समय करने को कहा जाय तो नहीं करती तो कहावत कही जाती है कि हाट—बाट में तो गा आई मगर जब उत्सव, जलसे के समय गाना हुआ तो चुप होकर बैठ गई।

'हाजिर मारे, गाफिल रोवे।'

श०— हाजिर—जो मौजूद हो। गाफिल—जो आराम से बैठा हो, चूका हुआ इंसान।

अ०— जो समय पर मौजूद है वह तो अपना हिस्सा पा जाता है और जो चूक गया वह काम से गया। कौन उसे बुलाने जाता है?

'हाजिर में हुज्जत नहीं, गये की तलाश नहीं।'

अ०— जो मौजूद है उसके लिए कोई बात ही नहीं और जो नहीं है उसकी कोई खोज नहीं करनी चाहिए।

'हाट—हाट पुकारै वैसा, जैसा करे सो पावै तैसा।'

अ०— यहां पर 'वैसा' नाम के फकीर पर कहा गया है कि वह राह, बाट, बाजार में पुकार—पुकार कर कहता था कि जो जैसा करेगा वैसा ही फल पायेगा।

'हाड़ होये तो मांस बहुत चढ़ि आये।'

अ०— शरीर में हड्डी होगी तो फिर मोटे हो जायेंगे।

'हाथ कंगन तो आरसी का।
पढ़े लिखे को फारसी का।।'

श०— कंगन—स्त्रियों के हाथ में पहनने का गहना। आरसी—शीशा। फारसी एक भाषा है।

कहावत पढ़े—लिखे लोगों पर कही गई है।

अ०— जब स्त्री कंगन पहने हो तो फिर उसे देखने को शीशे की क्या आवश्यकता है? वैसे ही पढ़ा—लिखा व्यक्ति फारसी भाषा को आसानी से पढ़ सकता है।

'हाथे कसीदा, आसमान पै दीदा।'

श०— कसीदा—कपड़ों पर रेशमी धागों के द्वारा फूल—पत्ती बनाना। महीन कढ़ाई करना। आसमान—आकाश। दीदा—नजरें, निगाह, आंखें।

कहावत उन लोगों के प्रति कही जाती है, जिन लड़कियों या स्त्रियों का मन किसी काम में नहीं लगता है।

अ०— काढ़ रही हैं कसीदा और नजर है ऊपर और कहीं पर।

'हाथ से दिया कर्ज, बैर बनाना।'

अ०— स्पष्ट है।

'हाथ क हथियार, पेट के अधार'

श०— हथियार—जिसका जो पेशा हो, पेशे के अनुसार जो भी वस्तु काम में आये।

अ०— जिसके हाथ का हथियार होता है वही उसकी रोजी—रोटी का सहारा होता है।

हाथे न कउड़ी, बजार मां लेखा।'

श०— हाथ न कउड़ी—पास में पैसा न होना। लेखा—हिसाब—किताब।

अ०— कोरी शान झाड़ना। पास में टका नहीं है और तुर्रा यह कि बाजार में बनियों के यहां मेरा हिसाब—किताब है।

'हाथ गोड़ सिरकी, पेट नंदकोका।'

श०— सिरकी—सींक की तरह पतले। नंदकोका—नांद, गांवों में जिस मिट्टी के बड़े बर्तन में अनाज पानी रखते हैं।

अ०— हाथ पैर सींक जैसे, पेट नांद की तरह है।

'हाथे न गाले, नाकी मां पियाज डाले।'

अ०— नारी जाति को गहने से इतना प्रेम होता है कि क्या कहा जाय?

जब किसी स्त्री के पास जेवर नहीं होता तो कहा जाता है कि हाथ पैर गले में कुछ नहीं तो शौक के मारे नाक में नकबेसर बनाकर प्याज ही पहन ली।

'हाथ गोड़ पतले—पतले, पेट जबदंग।'

अ०— पेट भारी होना। रोटी अधिक खाना।

'हाथ के पकड़त पहुंचा पकड़े।'

जब कोई आदमी किसी की कोई चीज धीरे—धीरे हथियाता है तो कहावत कही जाती है।

'हाथ न पहुंचे तौ थू कउड़ी।'

अ०— जो वस्तु अपनी पहुंच से बाहर हो तो वह निकृष्ट है।

समानार्थक कहावत है—

'वह बार—बार लपकी पर हाथ में न आये।
तो मुंह बनाकर बोली, खट्टे हैं कौन खाये।।'

अंगूर के गुच्छे जब बार—बार उचकने के बाद भी हाथ के बाहर रह गये तो बोली ऊह, खट्टे हैं इन्हें कौन खाये?

'हाथ झारि के चले जुआरी।'

जब किसी का कोई नुकसान हो जाता है तो कहते हैं।

अ०— हाथ झाडकर इस प्रकार से चले मानों जूये में हारकर जा रहे हैं।

'हाथन ऊपर जो कहुं गिरई।
सम्पत्ति सकल गेह में धरई।।'

कहावत छिपकली गिरने पर कही गई है।

अ०— हाथ के ऊपर गिरने से सम्पत्ति, धन का लाभ होता है।

'हाथ पांव दिया सलाई, बातन मं फजल इलाही।'

अ०— काम करने में कमजोर और बात करने में बड़े तेज।

'हाथ में न गात में, मैं धनवंती जात में।'

श०— गात—शरीर। धनवंती—पैसे, रूपये वाली।

अ०— कहावत ऐसी स्त्री के प्रति कही गई है जिसके पास न पैसा है, न शरीर देखने सुनने लायक है। मगर कहती क्या है— 'जात मेरी धनवानों की है। मेरे पास बड़ा पैसा है। मैं धनवंती हूं। बड़े आदमियों में मेरी गिनती है।

'हाथ में लिया काँसा, तो रोटी कै का साझा।'

श०— कांसा—कांसे का बर्तन, कटोरा। साझा—हिस्सा।

अ०— जब भीख मांगने को कटोरा उठा ही लिया तो फिर रोटी की क्या सांसत? भीख मांगकर खाना मिल जायेगा।

'हाथ सुमिरनी, पेट कतरनी।'

श०— सुमिरनी—माला। कतरनी—कैंची।

अ०— धूर्त धोखेबाज आदमियों के लिये कहा गया है।

कहावत के अनुसार हाथ में तो माला लेकर जपते हैं और दूसरे के पेट पर कैंची चलाया करते हैं।

'हाथी अपने हाथापाई पै आय जाय तौ मनई भुनगा है।'

कहावत किसी सबल की रुष्टता पर कही गई है।

अ०– यदि हाथी झगड़ने पर आमादा हो जाय तो फिर आदमी उसके सामने कुछ भी नहीं है।

'हाथी आवै, घोड़ा जाय, ऊंट बेचारा गोता खाय।'

जब परिस्थितियां बहुत खराब होती हैं तो कहावत कही जाती है।

अ०– हाथी आवे, घोड़ा जाय तो फिर कमजोर ऊंट बेचारा क्या करे? वह कैसे निकल पाये? इसी प्रकार से सबलों के बीच में गरीब आदमी बेचारा पिस जाता है।

'हाथी आय– हाथी आय, हथिया पादिस पूं।'

किसी वस्तु का नाम तो बहुत सुना गया हो या आने के पहले बड़ी चर्चा हो कि फलां वस्तु ऐसी वैसी मगर आने के बाद वह उतनी प्रशंसा या कीमत की न हो तो कहावत कही जाती है।

अ०– गांव भर में चर्चा हो गयी कि फलां के हाथी आ रहा है मगर जब हाथी आया तो उसके दम ही नहीं, किसी काम का नहीं रहा। पेट से हवा भी निकली तो बहुत धीमी 'पूं' से।

'हाथी केतनो दूबर तबो सवाव लाख क।'

कीमती और भारी वस्तु कितनी भी कम दाम की होगी तब भी उसकी कीमत ज्यादा ही होगी।

'हाथी क दांत खाय के अउर, देखावै के अउर होत।'

जब अंदर से बाहर की स्थिति में अंतर होता है तब यह उक्ति चरितार्थ की जाती है।

अ०– हाथी के दांत खाने वाले दूसरे और बाहर दिखाने को दूसरे होते हैं। ऊपरी व अंदरूनी मामले में बड़ा अंतर होना।

'हाथी क कंधा खाली नहीं रहतै।'

अ०– हाथी के कंधे पर कोई न कोई बैठा रहता है या फिर साज–बाज रहता है।

'हाथी क बोझ हाथिन उठाय सकत।'

अ०– भारी बोझा भारी जीव ही ढो सकता है। हाथी का बोझ गधे पर रख दो तो वह कैसे संभाल पायेगा? इसी प्रकार से बड़े आदमी का खर्च बड़े ही उठा सकते हैं। छोटे आदमी के मान का नहीं होता।

'हाथी घोड़ा बहे जांय, गदहा कहे कितना पानी।'

कहावत तब कही जाती है, जब कोई बड़ा काम बड़े–बड़े लोग न कर पायें तथा उसे छोटे लोग करने का प्रयत्न करें।

अ०– जिस बहाव में हाथी और घोड़े बहे चले जा रहे हों उसमें गधा कहे कि कितना पानी है? गधा वैसे भी मूर्ख जीव होता है। उसकी समझ के बाहर की बात है कि काम कैसा है? मुझमें कर पाने की क्षमता है कि नहीं?

'हाथी क बोझ हाथी क, चिउंटीं क बोझ चिउंटी क।'

किसी बड़े आदमी व छोटे आदमी की औकात की बात उठने पर कहा जाता है।

अ०– हाथी बड़ा जीव है तो उसका बोझ उस पर लादने पर भारी होता है। उसी प्रकार चींटी का बोझ कितना भी कम हो उसकी औकात के अनुसार उसका बोझ उसके लिये भारी होता।

'हाथी के बच्चा क लवांगे के घूंटी।'

श०– जब किसी बड़े आदमी को बहुत थोड़ी सी वस्तु खाने को मिलती है तो कहावत चरितार्थ की जाती है।

अ०– हाथी के बच्चे को लौंग के बराबर की घूंटी क्या पता लगेगी?

'हाथिन के साथे गन्ना खाये।'

जब कोई काम बड़ों या बलवानों के साथ निर्बल को करना पड़ता है तो कहावत कही गयी है।

अ०– हाथी के साथ खेत में घुसकर कोई कमजोर जानवर भी गन्ने को चूसने पहुंच गया। उसने गन्ना तो चूसा मगर हाथी के बदौलत। अगर कहीं अकेले में जाता तो किसान उसकी धज्जी उड़ा देता। इसलिये कभी सबल का साथ पाने पर भी अपनी ताकत नहीं भूलनी चाहिए। समय पर अपनी ही ताकत काम आती है।

'हाथी क पेट पिराय, गदहा दागा जाय।'

अजीब सी बात है। बीमार कौन है और इंजेक्शन किसको लगे? मगर बात वही है कि बड़ों की बातें बड़ी हैं घड़े में पड़ी घड़ी है' तो बड़े आदमी से कौन कहे कि दवा खाओ, इलाज कराओ। छोटों के बहाने उन्हें बताया जाता है कि कष्ट के समय ऐसा करने से लाभ होगा। मगर बड़ों को यह सुझाव भाये कि नहीं राम ही जाने। ऐसे अवसर पर कहावत उद्धृत की गई है।

अ०– हाथी का पेट दर्द कर रहा है मगर बेचारा गधा इसलिये दागा जा रहा है कि कम से कम हाथी यह तो समझे कि पेट दर्द दागने से ही जायेगा। कहने की हिम्मत किसको है कि हाथी से कहे और दाग दे।

'हाथी निकल गा, दुम रहिगै।'

जब कोई कठिन कार्य तो हो जाय परन्तु उसका छोटा सा और आसान भाग होने को रह जाय तो कहावत कही जाती है।

अ०– हाथी तो निकल गया अब बस दुम और बची है।

'हाथी के पावं मां सबके पांव होत।'

बड़े आदमी की बात सभी मानते हैं।

अ०– हाथी के साथ सभी जाना–आना चाहेंगे। बड़े लोगों के बीच सभी उठना, बैठना, आना–जाना चाहते हैं। यानी कि बड़ों के साथ छोटों की भी गुजर हो जाती है या छोटों की भी इज्जत बनी रहती है।

'हाथी जात कुत्ता भूंकत।'

बड़े लोग अपना काम करते रहते हैं। वे किसी के कुछ भी कहने–सुनने की परवाह नहीं करते। जिसके जो मन में आये बकते रहते हैं। उसी प्रकार से हाथी अपने रास्ते जाता रहता है और कुत्ते भूंका करते हैं वह बिलकुल ही परवाह नहीं करता।

'हाथी क जग साथी, चींटी पैरन पीटी।'

श०– जग–संसार। दुनिया में बड़े आदमियों के साथी सभी होते हैं मगर छोटे लोगों को कोई भी नहीं पूछता है।

अ०– हाथी का तो संसार साथ देता है मगर चींटी को लोग पैरों से दबा देते हैं।

कवि रहीम के शब्दों में–

'दीन सबन को लखत है, दीनहिं लखैं न कोय।
जो रहीम दीनहिं लखै दीनबंधु सम होय।।'

हाथी क पीर अंकुश।'

श०– पीर–पीड़ा, जिससे भय हो। जिसका अदब माने। अंकुश–जिससे हाथी वश में होता है।

अ०– हाथी को संभालने वाला अंकुश ही होता है। वह उसी से भय खाता है। उसी को भगवान मानता है। उसी को पीर, औलिया, महात्मा सबकुछ मानता है। इसी प्रकार जिसका जो बंधन होता है वह उसी के वश में रहता है।

'हाथी पर चढ़िके गदहा पर चढ़िगै।'

हाथी पर चढ़ने वाला एक शानदार, सौभाग्यशाली आदमी माना जाता है। गधे पर चढ़ना दुर्भाग्यपूर्ण माना जाता है। कहावत इसी पर कही गई है।

अ०– भाग्यवान से आज अभागे बन गये। हाथी पर चढ़े थे गधे पर आ गये। दुर्भाग्यपूर्ण समय की घटना पर कही जाती है कहावत।

'हारे को हरि नाम।'

अ०– जो अपने जीवन से हार खाया हो, जो विवश हो उसके लिये भगवान का नाम ही सबकुछ है।

'हिम्मत हारिये न, बिसारिये न हरि नाम।'

कहावत ईश्वरवादी है।

अ०– हिम्मत कभी नहीं हारना चाहिये न कभी भगवान का नाम भूलना चाहिये।

'हारा हुआ सिपाही, चोट खाये नाग जस भयानक होत।'

सिपाही का काम और लक्ष्य होता है अपनी सीमा में जीतना। मगर वह जब हार जाता है तो क्या हालत होती है, कहावत का आशय यही है।

अ०– हारा हुआ सिपाही फिर इतना खूंखार हो जाता है कि जैसे दबा हुआ नाग जो दबने के बाद जिसको ही पाता है डस लेता है। वही आक्रोश सिपाही को भी होता है वह इतना क्रोधातुर रहता है उस समय किसको पाये कि मन ही हबिश उतार ले।

'हाली क पेट सोहारी से नहीं भरत।'

किसी भी मजदूर को भरपूर खुराक खाना चाहिए। उसका पेट पूड़ियों से नहीं भर सकता है। उसको मोटी–मोटी रोटियां, दाल, चावल आदि आधा किलो खाना चाहिए। इसलिये कि मेहनत करके आया है और फिर दुबारा मेहनत करने जाना है।

'हानि, लाभ, जीवन, मरन, जस अपजस, विधि हाथ।'

अ०– पंक्ति तुलसीदास की है। नुकसान, फायदा, जिंदगी, मौत, यश, अपयश सब भगवान के देने की बात है। उसमें आदमी कुछ नहीं कर सकता है। कहा है 'तुलसी जस भवितव्यता तैसी मिलै सहाय।

'हि'

'हिम्मते मर्द, मरदे खुदा।'

श०– हिम्मते–साहस। कहावत फारसी की है।

अ०– जो आदमी हिम्मत रखता है उसकी मदद खुदा भी करता है।

'हिलाव न डोलाव, हमैं बइठ के खिआव।'

कहावत कामचोर व्यक्ति के ऊपर कही गई है

अ०– उसका कथन है कि 'मुझे न हिलाओ, न डुलाओ, कुछ काम करने को मत कहो बस खाना दे दो।

'हिंजड़ा कै कमाई मुड़ाई में गई।'

श०– हिंजड़ा–जो पैदायशी न स्त्री होते हैं, न मर्द। मुड़ाई–हजामत बनवाना। जब किसी आदमी का पैसा उसके साज श्रृंगार में या किसी अनर्गल कार्य में खर्च हो तो कहा जाता है।

अ०– हिजड़ों की कमाई का पैसा रोज–रोज दाढ़ी बनवाने में ही खर्च होता है क्योंकि उन्हें गाने–बजाने के लिये हमेशा ही अपनी शक्ल को स्त्रियों के जैसा बनाये रखना पड़ता है।

'हिसकन–हिसकन गदही बिआय।
गदही क बच्चा मरि–मरि जाय।।'

श०– हिसकन–देखादेखी, ईर्ष्यावश। बिआन–बच्चे का होना।

कहावत तब लागू होती है जब कोई स्त्री या आदमी किसी की देखादेखी, या जलन के मारे वही काम करे चाहे उस काम में उसको सफलता मिले, न मिले।

अ०– देखादेखी किसी के गधी ने बच्चा देने की सोची मगर भाग्य की बात कि उसके बच्चे मर जाते थे। जिंदा ही नहीं रहते थे। तात्पर्य यह कि कोई किसी के भाग्य की बराबरी करना चाहे तो असंभव है। कहा है–

'केऊ क ऊंच लिलार देखिके कपार न फोरै क चाही।'

'हित अनहित पसु पछिव जाना।'

पंक्ति गोस्वामी जी की है। जब किसी मनुष्य के हित के लिये बात आती है तो कही जाती है।

अ०– अपना भला बुरा तो जानवर, चिड़िया सभी जानते हैं फिर मनुष्य की क्या बात है?

आदमी तो इतना समझदार होता है कि अपना भला–बुरा समझता ही है। गोस्वामी जी की पंक्तियां इतनी सरल, सुबोध और जन–हित के लिये होती हैं कि लोकोक्तियां जनता की जीभ पर बहुधा रहती हैं।

'हियां तो हम दुइनों मेहमान।
ना केव पंडित ना जजमान।।'

जब दो व्यक्ति आपस में एक ही तरह से एक सी स्थिति में मिलते हैं तो कहते हैं।

अ०– यहां तो हम तुम एक ही काम के लिये आये हैं जो मेहमान के रूप में बैठे हैं। न कोई पंडित है न यजमान है। एक से दोनों ही हैं।

'हिरन मुतान जो पतली पूंछ।
बैल बेसाहो कंत बेबूझ।।'

कहावत बैलों की खरीदारी पर उद्‌धृत की गई है।

श०– हिरनमुतान– हिरन चूंकि टेढ़े–मेढ़े चलता है तो पेशाब करते समय भी उसकी धार टेढ़ी–मेढ़ी ही पड़ती है। बेबूझ–बिना सोचे–समझे।

अ०– घाघ कवि की कहावत है कि यदि बैल खरीदने जाओ तो जो हिरन की तरह पेशाब करने वाला हो और जिसकी पतली पूंछ हो उसी को बिना सोचे–समझे ले लो।

'हिर फिर खेतेन के राहु।'

अ०– कोई जब बार–बार उसी रास्ते पर आता है तो कहते हैं कि घूमफिर कर वही राह– उसी रास्ते को पकड़ लिया है।

'हिमाइती कै घोड़ी, बिलइती क लात मारै।'

श०– हिमाइती–पक्षधर। बिलहती–अंग्रेज, बिलायती आदमी।

अ०– जब किसी आदमी को बड़े आदमी का सहारा मिल जाता है तो वह अपने को बड़ा आदमी समझ कर बड़ों से मोर्चा लेना चाहता है।

'ही'

'हीरे की कदर जौहरी जानै।'

अ०– कीमती वस्तु की इज्जत तो वही जान सकता है जो उसका पारखी होगा। जिसे किसी वस्तु का ज्ञान ही न होगा वह उसकी कीमत क्या समझ सकता है? किसी ने कहा है–'जहां रहे गुनवंत नर, ताकी शोभा होत, जहां धरे दीपक वहां, निहचय करै उदोत'। अतः गुणी नर ही वस्तु को परख सकता है। जिस प्रकार से सच्चा सोना सोनार ही बता सकता है उसी प्रकार से सच्चे हीरे को जौहरी ही परख सकता है।

'हीसा न पाती खाइन पै तो बाटी।'

श०– हीसा– हिस्सा का न होना। बाटी– हूं।

अ०– यह कहावत में ऐसे आदमी पर लक्ष्य हैं जो पेट की रोटी पर ही गुजर कर रहा हो। आमतौर पर घर की लड़कियां कहती हैं कि इस घर में मेरा कोई हिस्सा नहीं। मैके में तो हम "सब बश खाने पर ही रहती हैं।

'हींग मं पानिव नहीं डउतीं।'

अ०– कोई भी काम नहीं कर पातीं। यहां तक कि हींग में पानी डालने तक का छोटा सा काम भी इस औरत से नहीं होता।

'हीरा पर लूट कोयले पर मोहर छाप।'

जब कहीं पर भारी वस्तु या माल का नुकसान होता हो और मामूली वस्तु पर लोग प्रतिबंध लगाये रहते हों तो कहते हैं।

अ०– मोहर तो उधर लुट रही है और कोयले पर सरकारी छाप लगी है कि कहीं कोई उठा न ले जाय?

'हीले रोजी, बहाने मौत।'

श०– हीले–हिल्ले, किसी के सहारे। बहाने–किसी न किसी कारण से।

अ०– किसी न किसी के सहारे नौकरी मिलती है और मौत को कोई न कोई बहाना कोई दुर्घटना, कुछ न कुछ कारण मनुष्य के साथ अवश्य ही लगा रहता है।

'हु'

'हुकूमत की घोड़ी, छः पसेरी दाना खाय।'

श०– हुकूमत–जो शासन चलाता हो, अफसर, हाकिम। छः पसेरी–पांच सेर का नाप। हुकूमत की घोड़ी छः पसेरी दाना खा जाती है।

'हुक्का चार बखत का अच्छा, सोके, खाके, नहाके, मुंह धोके।।'
और चार बखत का बुरा आंधी में, अंधेरे में, भूख में और धूप में।।'

अ०– कहावत है कि हुक्का पीना चार समय का अच्छा होता है– सोकर उठने, मुंह धोने, खाना खाने और नहाने के बाद और आंधी आ रही हो तब, अंधेरा हो तब, भूख लगी हो तब और धूप हो तब नहीं पीना चाहिए।

'हुक्का भरके बड़ों को दीजै, जब सुलगै तो आपहुं लीजै।'

अ०– हुक्के का यही तरीका है कि चिलम चढ़ाकर पहले बड़ों को पिलाना चाहिए फिर बाद में स्वयं भी पिये।

'हुक्का–सुक्का, हुरकनी, गूजर होय कि जाट।
एहमा कउनो अटक नहिं, बाबा जगन्नाथ कै भात।।'

श०– हुरमनी–वेश्या। गूजर–अहिरों में एक प्रकार की जाति होती है। जाट–पश्चिमी उत्तर प्रदेश, पंजाब, राजपूताना में बसने वाली एक जाति होती है।

जगन्नाथ कै भात– जगन्नाथपुरी–यह हिन्दुओं का तीर्थ स्थल है जहां सभी को एक साथ खिलाया जाता है बिना छूतछात या भेदभाव के। सुक्का–सुंघनी तम्बाकू, जिसे लोग सूंघते हैं। अटक–रुकावट।

अ०– हुक्का–सुक्का और वेश्या सबके पास जाते हैं चाहे वह गूजर हो या जाट हो, कोई सवर्ण पीने वाला हो या कोई इतर इसमें कोई भेदभाव जगन्नाथ के भात की तरह नहीं रहता।

'हुक्का हर का लाड़ला, रक्खे सबका मान।
भरी सभा में यों फिरे ज्यों गोधिन में श्याम।।'

अ०– स्पष्ट है।

'हुकुम हाकिम का मउत के समान।'

अ०– किसी अधिकारी का हुक्म मौत के बराबर होता है।

'हू'

'हुनरमंद भूखा नहीं रहता।'

श०– हुनरमंद–गुणवान, बुद्धिमान।

अ०– स्पष्ट है।

'हूर की सौतन भी डायन से बुरी।'

श०– हूर–बहुत सुंदर, हूर की परी को लोग बहुत सुंदर बताते हैं।

अ०– सौत चाहे कितनी भी सुंदर, गुणवान हो, वह बुरी होती है।

'हे'

'हेर फेर आवै तो ककरी देखावै।'

कहावत एक कथा के आधार पर कही गई है। कथा है– 'किसी गांव के आदमी को एक मोहर पड़ी मिल गई। उसने उसकी कीमत नहीं आंकी और एक शरीफ आदमी के हाथ बेंच दी। उससे यह तय हुआ कि वह उसे रोज एक पैसा ककड़ी खाने को दिया करेगा। बहुत दिनों तक ग्रामीण को एक पैसा रोज ककड़ी खाने को मिलता रहा। अंत में एक दिन उस शरीफ आदमी ने टरका दिया। तब उसने यह कहावत कही।

अ०– रोज–रोज आने पर ककड़ी ही दिखाते हैं। दूसरे अर्थ में कोई किसी को एक ही वस्तु खिलाये तो भी कहावत कही जाती है।

'है'

'है मनई, है काम, नहीं न मनई नहीं न काम।'

कहावत उस समय कही जाती है जब घर में आदमी अधिक हों।

अ०– आदमी हैं तो काम है, आदमी नहीं है तो काम भी नहीं है।

'है घरनी घर गाजत है, बिन घरनी घर काटत है।'

श०– घरनी–गृहस्वामिनी, घर की मालकिन, स्त्री। गाजत–भरा–पूरा होना, शोभित होना।

कहावत स्त्री पर कही गयी है। 'बिन घरनी, घर भूत का डेरा'।

अ०– जब घर में स्त्री है तो समझो कि घर शोभायमान है। जब घर में स्त्री नहीं है तो घर काट खाने को दौड़ता है, अव्यवस्थित रहता है।

'हों'

'होठवां हिला, न जिभियै खोली, फिरौ सास बहै बड़बोली।'

जब किसी को कुछ भी न कहने–सुनने के बाद भी बदनामी सुननी पड़ती है तो कहावत कही जाती है।

अ०– सास की बात पर न तो होंठ ही खुले और न जीभ ही हिली मगर तब भी सास का कहना है कि बहू बहुत बोलती है।

'होंठ से निकली, कोठे चढ़ी।'

अ०– कोई भी बात जब होंठों से बाहर आ जाती है तो वह बहुत आगे व बहुत ऊपर तक पहुंच जाती है। उसका प्रचार–प्रसार हो जाता है।

'होनहार बिरवान के होत चीकने पात।'

श०– होनहार–प्रतिभावान, दूरदर्शी, अनोखा। बिरवान–पेड़। चीकने–चिकने, सुंदर। पात–पत्ता।

पौधे के माध्यम से यह कहावत किसी बच्चे के प्रति कही गई है।

अ०– होनहार जो पेड़ होते हैं उनके पत्ते जन्म से ही चिकने और हरे–भरे होते हैं। उसी प्रकार से जो बच्चे दुनिया में आगे चलकर कुछ कर सकने लायक होते

हैं वे आरंभ से निराले ही होते हैं। उनके हर काम, उनका स्वभाव, उनके क्रिया–कलाप सब कुछ साधारण बच्चों से भिन्न होते हैं।

'होइहै सोइ जो राम रचि राखा।

की करि तरक बढ़ावै साखा।।'

यह पंक्ति गोस्वामी जी की है। जब लोग भगवान के ऊपर विश्वास कर लेते हैं तो यह पंक्ति कही जाती है।

अ०– जो कुछ भी होगा भगवान का ही किया–धरा होगा। उसके अलावा दूसरा कुछ हो नहीं सकता चाहे कोई कितना भी अपनी बुद्धि लगावे?

'होली सूक सनीचरी, मंगरवारी होय।

चाक चहोड़े मेदनी, बिरला जीवे कोय।।'

श०– चाक–चहोड़े–अधिक पानी का बरसना। मेदनी–पृथ्वी, धरती।

कहावत घाघ कवि की है।

अ०– यदि होली शुक्रवार, शनिवार या मंगलवार को पड़ती है तो धरती पर इतना पानी बरसेगा कि तमाम जीवों के मर जाने का भय रहेगा।

'होली झर को करो विचार, सुभ औ असुभ महाफल सार।

पश्चिम वायु बहे अति सुंदर, समया भींजै सजल बसुंधर।।

श०– सजल–पानी सहित, बसुंधर–पृथ्वी।

अ०– घाघ कवि का कहना है कि होली जलते समय यदि पछिवा हवा बहती है तो अतिशुभ है। पृथ्वी पर हरियाली व हल्के पानी के आसार है।

'होड़ का कार, जी का भार।'

श०– होड़–बाजी लगाकर कोई काम करना।

अ०– शर्त बद कर कोई काम करने से जान को बवाल हो जाता है।

'होत का बाप, अनहोत की मां।'

जब पैसा पास हो तो बाप और न हो तो मां काम आती है।

.'होनहार मिटती नहीं होवै बिस्वै बीस।'

श०– होनहार– जो कुछ भी होना होता है। बिस्वै–पहले के जमाने की जमीन की नाप थी जिसका पैमाना था–बीघा, बिस्वा, बिस्वान्सी।

अ०– जिसको जो होना होता है वह मिट नहीं सकता है। चाहे किसी के पास कितना ही धन क्यों न हो?

'होते की बहिन और बाप, बिन होते की जोय।

तुलसी रुपया पास है सबसे नीका होय।।'

श०– जोय–पत्नी।

अ०– जब पैसा पास होता है तो बाप–बहिन पूछते हैं और जब कुछ भी पास न हो तो पत्नी होती है। तुलसीदास कहते हैं कि पैसा ही सबकुछ है। उसी से सब पूछते हैं।

'होड़ लीजै गोड़, उधार दीजै छोड़।'

अ०– उधार का पैसा तो भले ही छोड़ दो मगर जिसमें शर्त लगी हो उस पैसे को कभी नहीं छोड़ना चाहिए।

'हं'

'हंसते ठाकुर, खंसते चोर, इन दुइनों का आया और।'

श०– खंसते––खांसते हुये। और– खात्मा।

अ०– ठाकुर जो पहले के जमाने में जमींदार होते थे, प्रजा से बात करते समय यदि हंस दिये तो वह रोब फिर गालिब नहीं कर सकते थे क्योंकि भय समाप्त हो जाता था। उसी प्रकार से चोर को यदि चोरी करते समय खांसी आ गई तो उसकी उपस्थिति पता हो जाने से उसे सफलता नहीं मिलती। ऐसे वातावरण में दोनों का काम सत्यनाश हो जाता है।

'हंसा रहे सो मरि गये, कौवा भये देवान।

जाहु ब्रिप्र घर आपने इहां न कोउ जजमान।।'

श०– हंसा–हंस पक्षी जो दूध का दूध, पानी का पानी करता है। 'संत हंस गुन गइइ गयइ पय'। देवान–मंत्री, दीवान, राजदरबार में रहनेवाले सलाहकार। विप्र–ब्राह्मण। जजमान–यजमान, यज्ञ, पूजापाठ कराने

वाला पंडित। यह दोहा अव्यवस्था के प्रति बहुधा कहा जाता है। जब अधिकारी अनाप–शनाप कार्यों को करना शुरू कर देते हैं तो निराश, दुखी मन से यह पंक्ति दुहरायी जाती है।

अ०– जो हंस सरीखे थे जो, दूध का दूध और पानी का पानी करके अच्छा–बुरा अलग कर देते थे वे तो कबके उड़ गये। जब कौवा जैसे लोग, जो सबकी जूठन खाते हैं, मंत्री हैं। तो ऐ ब्राह्मण! तुम अब अपने घर जाओ यहां न अब कोई किसी का यजमान है, न कोई किसी का पुरोहित? सब इस कुशासन में अपनी–अपनी ढपली बजाकर सर्वेसर्वा बने बैठे हैं।

'हँस–हँस खाय फुहरी क माल।'

श०– फुहरी–मूर्खा।

कहावत ऐसी स्त्री के लिये कही गई है जो खाने को खिलाती जाय और हँस–हँस उसकी प्रशंसा करके खाता जाय। यानी किसी स्त्री को बेवकूफ बनाकर खाना।

'हँसता बाभन, खँसता चोर।
कुपढ़ कायथ कुल का बोर।।'

अ०– हँसकर बोलने वाला ब्राह्मण, खांसी से परेशान चोर, बिना पड़ा कायस्थ, लाला ये तीनों कुल का नाश कर देते हैं।

'हँस गुन पावै, तेवर गुन जावै।'

कहावत क्रोध के प्रति और हँसमुख स्वभाव पर उद्धृत की गई है।

अ०– हँसने के गुण से कोई भी वस्तु मांगने पर या वैसे भी मिल जाती है और चाहे कि किसी से कोई रोब दिखाकर कुछ पाये, तो संभव नहीं होता है।

'हंसा चले भाग तो केव न संगे लाग।'

श०– हंसा–यहां पर हंसा प्राण के लिये कहा है। संगे–साथ।

अ०– जब कोई प्राणी मर गया तो उस समय कोई उसके साथ न जा सका। न कोई साथ जाता ही है।

'हंसी तो फंसी।'

अ०– जो नारी हंसती है वह स्वभावतः चरित्रहीन होने के कारण दूसरे पुरुष के साथ चली जाती है।

'हँसी हँसी मां बहड़ेर होइ जाव।'

कभी–कभी हंसी–मजाक में आवेश व क्रोध की भावना भर जाती है। इसलिये हंसी–मजाक की भी एक सीमा होती है। कहा गया है अधिक मात्रा में कोई भी काम अच्छा नहीं होता है।

'हँसिया के बिआहे मां, खुरपी के गीत गावै।'

जब कोई असंगत काम किया जाता है तो कहा जाता है।

अ०– काम क्या करना है और हो क्या कर रहा है? ब्याह है हंसिया का और गीत गाये जा रहें हैं खुरपी के ब्याह के। उचित काम न हो के अनुचित काम का होना।

'हंसिया न चोख, खुरपा भोथर।'

श०– भोथर–कुंठित, बिना धार के।

अ०– जब कोई काम करते समय उचित समान न मिल पावे तो कहावत कही जाती है कि न तो हंसिया तेज है और न खुरपी तेज है, काम कैसे हो? अतः जो वस्तु जिस काम के लिये आवश्यक हो वह ठीक होनी चाहिए वर्ना कार्य करने में बाधा उत्पन्न होती हैं।

'हंसुवा रे, तू काहे टेढ़?
आव तो बताऊं, मतलब से।।'

कहावत उस समय कही जाती है जब कोई काम आसानी से नहीं हो पाता। जैसा कि किसी ने कहा है– 'बिना टेढ़ी अंगुरी के घिव नहीं निकरतै' तो यही बात इस कहावत में भी है।

अ०– किसी ने पूछा हँसिया से कि तू टेढ़ा क्यों है? तो उसने कहा आ तो बताऊं अपने मतलब से, क्योंकि टेढ़ा न रहूं तो किस प्रकार काम कर पाऊँगा? अतः अपना काम बनाने के लिए टेढ़ा हूं वर्ना कौन पूछेगा?

'हंसे तो औरों को, रोवै तो अपने को।'

जब कोई आदमी दुनिया में खुश रहता है तो दुनिया उसका साथ देती है और जब वह दुखी होता है तो उसका साथ कोई नहीं देता है। किसी ने कहा है– 'जब तुम हंसते हो तो दुनिया हंसती है और जब रोते हो तो अकेले ही रोते हो', उस समय कोई साथ नहीं देता।

हंड़िया, न बटलोई सब पत खोई।'

श०– बटलोई–बटुई। पत–इज्जत, आबरू खोई बिगाड़ी कहावत घर की हीनता के प्रति कही गई है।

अ०– घर में कोई सामान ही नहीं है जिसके कारण सारी इज्जत समाप्त हो गई है। कहने का मतलब है कि जिस घर में घर–गृहस्थी के रोज इस्तेमाल करने के सामान भी न हों उस घर की क्या हालत हो सकती है? काहे में बनावै, काहै में खाय?

'हांजी, हांजी, कहत रहै, अपने मन कै करत रहै।'

कहने का तात्पर्य है कि किसी की बात को सुनने के बाद हां–हां करता जाय मगर काम अपने ही मन का करना चाहिए।

'अर्ज, गर्ज, बिनती, विनय, औ घोड़े की तंग।
अपने हाथ संभारिये लाख लोग हों संग।।'

अ०– स्पष्ट है।

'हूं'

'हूंह पुरउते हूंड़ दादा काहै आंखि निकारयो।'

श०– हूंड़–बदला, बराबरी, व्यवहार। दादा–भाई या पिता के बड़े भाई। पुरउतै–पूरा करना।

कहावत व्यवहार व बदले की भावना को लेकर कही गई है।

अ०– किसी आदमी ने दूसरे के साथ वैसा ही व्यवहार किया जैसा कि वह उसके साथ पहले कर चुका था तो उस आदमी को बेहद बुरा लगा। तभी पहले आदमी ने कहा कि हमने भी जैसा जैसा आपने किया था, किया तो इसमें अब बिगड़ने या आवेश में आने की क्या आवश्यक्ता है?



॥ इति ॥





श्रीमती कमला शुक्ल

जन्म – २६ फरवरी १६३२, प्रतापगढ़ (उ.प्र.)

शिक्षा – बी.ए. मध्यमा

अभिरुचि – साहित्य सृजन एवं समाज सेवा

प्रकाशित कृतियां – मेरे गीत, मेरे मीत (काव्य) १६७४, ढलती शाम (कहानी) १६७५ अनेक स्फुट कृतियां विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित।

प्रकाश्य – 'अवधी बृहत् लोकोक्ति कोश' के अतिरिक्त अवध संस्कृति तथा अवधी लोकसाहित्य से सम्बन्धित सामग्री।

अलंकरण – अनेक रचनाओं पर पुरस्कार तथा प्रशस्ति पत्र प्राप्त।

विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं तथा वरिष्ठ साहित्यकारों द्वारा समादृत।

संपर्क – 'शांताकारम्' बढ़ैयाबीर मार्ग,

सिविल लाइन (२) सुलतानपुर (उ.प्र.)

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान से प्रकाशित
कोश सम्बन्धी पुस्तकें

उर्दू हिन्दी शब्दकोश	मु. मु. मद्दाह	२००.००
हलायुध कोश	हलायुध भट्ट	२२०.००
साहित्यिक ब्रजभाषा कोश (तीन खण्डों में)	सम्पा. डॉ. विद्यानिवास मिश्र	३३५.००
बृहद् मुहावरा कोश भाग – १	सम्पा. प्रतिभा अग्रवाल	१४०.००
हिन्दू धर्म कोश	डॉ. राजबली पाण्डेय	१२५.००
सूक्ति सागर	रमाशंकर गुप्त	६४.००
भारतीय इतिहास कोश	अनु. सच्चिदानन्द भट्टाचार्य	१३१.००